मुग़ल कालीन भारत

हुमायूँ भाग १

HISTORY OF THE MUGHUL RULE IN INDIA

HUMAYUN Part I

समकालीन तथा निकट-समकालीन इतिहासकारों द्वारा

(ख्वन्द मीर, मीर्ज़ा हैदर, मीर अलाउद्दौला, गुलबदन बेगम, जौहर आफ़ताबची, बायजीद ब्यात तथा शेख़ अबुलफ़ज़ल)

अनुवादक

सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी

एम० ए०, पी-एच० डी०

यू० पी० एजूकेशनल सर्विस



प्रकाशक

हिस्ट्री डिपार्टमेंट, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी

अलीगढ़

१९६१

Publication of the Department of History, Aligarh Muslim University, No. 21

Source Book of Medieval Indian History in Hindi

Vol. IX

HISTORY OF THE MUGHUL RULE IN INDIA

HUMAYUN Part I

By Saiyid Athar Abbas Rizvi, M. A., Ph. D.

FIRST EDITION

1961

PRINTED BY THE JOB PRINTERS, 99 HEWETT ROAD, ALLAHABAD
FOR THE DEPTT. OF HISTORY, ALIGARH MUSLIM UNIVERSITY

डाक्टर ज़ाकिर हुसेन खां

राज्यपाल बिहार

के

कर कमलो में

सादर समर्पित

भूमिका

देहली के सुल्तानों (१२०६–१५२६ ई०) से सम्बन्धित फारसी तथा अरबी इतिहासों का हिन्दी अनुवाद ६ भागो में प्रकाशित करने के उपरान्त मुगल बादशाहो मे बाबर के इतिहास से सम्बन्धित आधारभूत सामग्री का हिन्दी भाषान्तर १९६० ई० में प्रकाशित किया गया था जिसमें लगभग पूरे "बाबर नामे" का तो अनुवाद सम्मिलित था ही साथ ही साथ अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का भी अनुवाद प्रस्तुत किया गया था। देहली के सुल्तानो के इतिहास से सम्बन्धित जो भाग प्रकाशित हो चुके है उनमे कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथ पूरे के पूरे हिन्दी भाषा में आ गए हैं। इनमें मिनहाज सिराज की "तबकाते नासिरी" (हिन्दुस्तान से सम्बन्धित भाग), जियाउद्दीन बरनी की "तारीखे फीरोजशाही", इब्ने बत्तूता की यात्रा का विवरण (हिन्दुस्तान से सम्बन्धित भाग), "मसालिकुल अबसार फी ममालिकुल अमसार" (हिन्दुस्तान से सम्बन्धित भाग), अफीफ की "तारीखे फीरोजशाही" एव "फुतूहाते फीरोजशाही" सम्मिलित है। "तारीखे मुबारकशाही", "तारीखे मुहम्मदी", "तबकाते अकबरी", "वाकेआते मुश्ताकी", "तारीखे दाऊदी", "तारीखे शाही" तथा "अफसानये शाहान" के देहली के सुल्तानो से सम्बन्धित पूरे भागो का हिन्दी भाषान्तर प्रकाशित हो गया है। एसामी की "फुतूहुस्सलातीन", और अमीर खुसरो की रचनाओं में से "दीवाने वस्तुल हयात", "केरानुस्सादैन", "मिफ्ताहुल फुतूह" "खजायनुल फुतूह", "दिवलरानी खिज्र खा", "नुह सिपेहर", तथा "तुगलुक नामा" का सक्षिप्त भाषान्तर प्रकाशित किया जा चुका है और केवल उन्ही शेरो का अनुवाद नही किया गया है जो भाषा के सौन्दर्य की दृष्टि से लिखे गए थे और जिनमे कोई भी ऐतिहासिक विवरण प्राप्त नही। इस ग्रंथ माला मे कुछ ऐसे ग्रंथो के भी अनुवाद प्रकाशित किए गए हैं जिनका इलियट के समय में पता न था और या जो उसकी दृष्टि मे महत्वपूर्ण न थे। इन्ही में "तारीखे फख्रउद्दीन मुबारक शाह", "आदाबुलहर्ब वश्शुजाअत", "जफरुल वालेह", "सियरुल औलिया", "खैरुल मजालिस" तथा "इन्शाये माहरू", "फतावाये जहाँदारी", तथा 'दीवाने मुतहर" सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त अन्य आवश्यक ग्रथो के अनुवाद भी प्रस्तुत किए गए है। तीमूर के बाद के उत्तरी हिन्दुस्तान के स्वतंत्र प्रान्तीय राज्यों के इतिहास से सम्बन्धित आवश्यक ग्रथो का भी बिना कुछ छोडे हुए अनुवाद प्रकाशित किया गया है। मूल ग्रथो की पृष्ठ-सख्या कोष्ठ मे लिख दी गई है।

जिन ग्रंथों के सक्षिप्त अनुवाद किए गए हैं उनका अनुवाद करते समय इस बात का प्रयत्न किया गया है कि कोई भी महत्वपूर्ण घटना अथवा सास्कृतिक, सामाजिक एव आर्थिक महत्व की बात छूटने न पाये। अंग्रेजी अनुवाद के ग्रथो में पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी अनुवाद मे दोष रह गए हैं। इस कारण मध्यकालीन भारतीय इतिहास में अनेक भ्रमपूर्ण रूढियो को आश्रय मिल गया है। इस प्रकार की त्रुटियों से बचने के उद्देश्य से पारिभाषिक और मध्यकालीन वातावरण के परिचायक शब्दों को मूल रूप ही में ग्रहण किया गया है। ऐसे शब्दों की व्याख्या टिप्पणिया मे कर दी गई है। समकालीन मिथ्या प्रवादो का विवेचन भी, समकालीन तथा उत्तरवर्ती इतिहासो के आधार पर टिप्पणियो में किया गया है। नगरो के नाम प्राय समकालीन रूप में ही रहने दिए गए हैं। अपरिचित स्थानो की व्याख्या भी टिप्पणियो में कर दी गई है किन्तु खेद है कि कुछ

व्याख्याये इस लिए न की जा सकी कि जिस समय अनुवाद प्रकाशित हुए उस समय मुझे कुछ आकर ग्रथ न मिल सके। "खलजी कालीन भारत" का इतिहास तो बडी ही विचित्र परिस्थिति मे प्रकाशित हुआ। इस कारण उसमे व्याख्याओ की कमी है किन्तु अगले सस्करण में इसका समाधान कर दिया जायेगा।

प्रस्तुत ग्रथ मे ख्वन्द मीर के "कानूने हुमायूनी", मीर्जा हैदर की "तारीखे रशीदी", मीर अलाउद्दौला की "नफायसुल मआसिर", गुलवदन बेगम के 'हुमायूँ नामे', जौहर आफ्तावची के "तजकिरतुल वाकेआत", वायजीद व्यात के 'तजकिरये हुमायूँ व अकबर" एव शेख अबुलफज़ल के 'अकबर नामे" का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। इसमे "कानूने हुमायूनी" तथा "तजकिरतुल वाकेआत" नामक दो ग्रथ पूरे के पूरे अनूदित हैं। गुलबदन बेगम का बाबर से सम्बन्धित इतिहास "बाबर नामा" मे प्रकाशित किया गया था। शेष भाग का अनुवाद इस ग्रथ मे प्रस्तुत किया जारहा है। इस प्रकार इस पूरे ग्रथ का अनुवाद भी समाप्त हो गया। अबुलफजल के "अकबर नामा भाग १" का बाबर से सम्बन्धित इतिहास पिछले ग्रथ मे प्रकाशित किया गया था और हुमायूँ से सम्बन्धित इतिहास इस ग्रथ में प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकार लगभग पूरे ग्रथ का अनुवाद हिन्दी भाषा में प्रकाशित हो गया। वायजीद के 'तजकिरये हुमायूँ व अकबर" का आधा भाग हुमायूँ से सम्बन्धित है। इसका पूरा अनुवाद इस ग्रथ मे प्रस्तुत किया जा रहा है। शेष भाग अकबर से सम्बन्धित है जो आगे के ग्रथो में प्रकाशित किया जायेगा।

हुमायूँ के इतिहास की जानकारी के लिए अफगानो के इतिहास का भी अध्ययन परमावश्यक है। यद्यपि शेर शाह तथा उसके उत्तराधिकारियो से सम्बन्धित इतिहास अलीगढ विश्वविद्यालय ने अलग से प्रकाशित करना निश्चय किया है किन्तु हुमायूँ तथा शेर शाह के सघर्ष से सम्बन्धित अब्बास खा सरवानी के "तोहफये अकबरशाही' अथवा 'तारीखे शेरशाही" के महत्वपूर्ण अशो का अनुवाद प्रस्तुत ग्रथ के फुटनोट मे प्रकाशित कर दिया गया है। "तारीखे शेरशाही" अभी तक प्रकाशित नही हो सकी है अत अनुवाद करते समय इलाहाबाद विश्वविद्यालय, अलीगढ विश्वविद्यालय तथा डा० परमात्मा शरण की हस्तलिपियो के अतिरिक्त बाडलीएन पुस्तकालय की हस्तलिपि न० १७६, १७७ तथा १७८ का भी प्रयोग किया गया है। हस्तलिपि न० १७६ तो ईलियट की ही हस्तलिपि है और इसी के आधार पर उसने अपना अग्रेजी अनुवाद अपने प्रसिद्ध ग्रथ के भाग ४ में प्रकाशित किया था। बाडलीएन की हस्तलिपि न० १७७ तथा १७८ इबराहीम बतनी द्वारा सम्पादित की गई है। अब्बास खा सरवानी की हस्तलिपि मे कुछ अश बडे ही अस्पष्ट है किन्तु उनका समाधान इबराहीम बतनी द्वारा सम्पादित ग्रथ से हो जाता है, अत इसके प्रयोग द्वारा "तारीखे शेरशाही" के जो अश फुटनोट मे प्रकाशित किए जा रहे है, उनका महत्व बहुत ही बढ गया है।

इसी प्रकार जौहर आफ्तावची के "तजकिरतुल वाकेआत" का भी अभी तक कोई सस्करण तैयार नही हो सका। अलीगढ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष डा० नूरुल हसन ने इस कार्य को कुछ वर्ष पूर्व प्रारम्भ किया था और लगभग आधे ग्रथ का बडी विद्वत्ता से सम्पादन कर भी डाला है किन्तु अभी तक कार्य पूरा नही हो सका है। प्रस्तुत ग्रथ में उनकी पाडुलिपि से बडा लाभ उठाया गया है। इसके अतिरिक्त यह अनुवाद अलीगढ विश्वविद्यालय की चार हस्तलिपियो तथा ब्रिटिश म्युजियम की हस्तलिपि के आधार पर तैयार किया गया है। "तजकिरतुल वाकेआत" का दूसरा सस्करण "हुमायूँशाही" के नाम से अकबर के ही राज्यकाल मे

फैजी सरहिन्दी ने तैयार किया था। इस सस्करण द्वारा "तजकिरतुल वाकेआत" के अनेक भ्रमात्मक अश स्पष्ट हो जाते हैं, अत 'हुमायूँशाही' की कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी की हस्तलिपि तथा इडिया आफिस, लन्दन की हस्तलिपियों का भी प्रयोग किया गया है। 'तजकिरतुल वाकेआत" तथा "हुमायूँशाही" के अतिरिक्त इसका एक अन्य सस्करण "जवाहरशाही" के नाम से भी इडिया आफिस में उपलब्ध है। अनुवाद में इसका भी प्रयोग किया गया है। इस प्रकार इस अनुवाद को अधिक से अधिक प्रामाणिक बनाने का पूरा प्रयत्न किया गया है।

हुमायूँ से सम्बन्धित "तारीखे इबराहीमी", "तारीखे एलचीए निजाम शाह", "तारीखे अल्फी" "तबकाते अकबरी", "मुन्तखबुत्तवारीख", मीर अबू तुराब वली की "तारीखे गुजरात", 'मिरआते सिकन्दरी", "जफरुल वालेह", सैयिद मुहम्मद मासूम की "तारीखे सिन्ध", "वाकेआते मुश्ताकी", "मखज़ने अफगानी", "तजकिरये तहमास्प' तथा "आलम आराये अब्बासी" से हुमायूँ से सम्बन्धित अशों का अनुवाद भी अलीगढ विश्वविद्यालय द्वारा इसी ग्रथ में प्रकाशित होना निश्चय किया गया था किन्तु पृष्ठों के अधिक बढ जाने के कारण इन महत्वपूर्ण ग्रथों का अनुवाद प्रस्तुत ग्रथ में नही प्रकाशित किया जा रहा है। इन्हे शीघ्र ही प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जायेगा।

पिछले ग्रथों का प्रकाशन डा० जाकिर हुसेन खा, भूतपूर्व उप-कुलपति, अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के सतत् प्रयत्नो के फलस्वरूप हुआ। डा० राम प्रसाद त्रिपाठी मुझे "खलजी कालीन भारत" के प्रकाशन के बाद से सर्वदा ही प्रोत्साहन देते रहे हैं। इन दोनो महानुभावो के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मेरा परम कर्त्तव्य है। प्रस्तुत ग्रथ की पाडुलिपि यूनिवर्सिटी के आदेशानुसार प्रसिद्ध इतिहासकार डा० तारा चद के पास आवश्यक सुझावो के लिए भेजी गई थी। डा० साहब ने बहुत ही कम समय मे हस्तलिपि का अध्ययन करके मुझे बडे बहुमूल्य सुझाव दिए और उन्ही सुझावो के आधार पर पाडुलिपि में सशोधन करके प्रस्तुत ग्रथ प्रकाशित किया जा रहा है, अत उनके प्रति आभार प्रदर्शित करने के लिए मुझे किसी प्रकार शब्द मिल ही नही सकते। इस ग्रथ माला की तैयारी मे अलीगढ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर डा० नूरुल हसन, एम० ए० डी० फिल् (आक्सन) द्वारा मुझे विशेष प्रेरणा तथा सहायता मिलती रही है। उन्होने मेरी कठिनाइयो को दूर किया है और अपने सत्परामर्श एव अपनी मृदु आलोचनाओ द्वारा मेरे कार्य को सुचारु बनाने की कृपा की है। अलीगढ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग की रिसर्च तथा पब्लिकेशन कमेटी के अध्यक्ष एव अलीगढ विश्वविद्यालय के उप कुलपति कर्नल सैयिद बशीर हुसेन जैदी एव अन्य सदस्यो ने इस ग्रथ के प्रकाशन मे जो सहृदयता प्रदर्शित की उसके लिए मैं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। पुस्तको के मिलने की समस्त कठिनाइयाँ विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री सैयिद बशीरुद्दीन की उदार कृपा से दूर होती रही। उनको धन्यवाद देना भी मेरा कर्त्तव्य है। अलीगढ विश्वविद्यालय के राजनीति विभाग के भूतपूर्व प्रोफेसर मुहम्मद हबीब द्वारा मुझे बराबर प्रोत्साहन मिलता रहा है। इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। डा० सतीश चन्द्र मिश्रा, रीडर इतिहास विभाग, बडौदा यूनिवर्सिटी ने "तारीखे शेरशाही" की बाडलीएन पुस्तकालय की हस्तलिपि न० १७६, १७७ तथा १७८ के माइक्रो-फिल्म मुझे भेजने की कृपा की जिसके फलस्वरूप मैं उनका प्रयोग इस ग्रथ में कर सका। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के असिस्टेन्ट प्रोफेसर डा० एम० ए० अन्सारी ने बायजीद ब्यात के "तजकिरये हुमायूँ व अकबर" का रोटोग्राफ भी कुछ समय के लिए इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पुस्तकालय से लेकर मुझे दिया। इन महानुभावो के प्रति आभार प्रदर्शित करना मेरा परम कर्त्तव्य है।

प्रुफ की देख-भाल का कार्य सदा की भाँति श्री श्रवण कुमार श्रीवास्तव द्वारा बडी ही सलग्नत मे होता रहा। इडेक्स की तैयारी में तथा अन्य कठिनाइयो में इतिहास परामर्श समिति के रिस असिस्टेन्ट्स, टाइपिस्ट्स तथा मेरे स्टेनोग्राफर ने भी मुझे बडी सहायता दी। इसके लिए इन सबको विशेष धन्यवाद देता हूँ। जाब प्रिन्टर्स, इलाहाबाद, के सहयोग से पुस्तक इस रूप प्रस्तुत की जा रही है अत मै उनका भी आभारी हूँ।

अपने इस कार्य में मुझे अपने सभी मित्रो से हर प्रकार की सहायता मिलती रही है। स्थाना भाव के कारण मैं उनके नाम नही लिख सका हूँ, किन्तु मुझे विश्वास है कि वे अपने प्रति मेरे भाव से परिचित है।

सैयिद अतहर अब्बास रिजवी
एम० ए०, पी-एच० डी०
यू० पी० एजुकेशनल सर्विस

सचिव
स्वतन्त्रता सग्राम इतिहास
परामर्श समिति, नजरबाग,
लखनऊ
मार्च १९६१

समीक्षा

ख्वन्द मीर

क़ानूने हुमायूनी

गयासुद्दीन मुहम्मद, जिसकी उपाधि ख्वन्द मीर थी, ख्वाजा हुमामुद्दीन मुहम्मद का पुत्र तथा प्रसिद्ध इतिहासकार मीर ख्वन्द[1] का नाती था। निज़ामुद्दीन सुल्तान अहमद सद्र[2] उसका मामा था। ख्वन्द मीर का जन्म ८७९ अथवा ८८० हि० (१४७४ अथवा १४७५ ई०) में हुआ होगा[3]। उसकी शिक्षा-दीक्षा उसके नाना मीर ख्वन्द की देख-रेख में हुई[4] अतः ख्वन्द मीर की बाल्यावस्था से ही इतिहास से रुचि हो गई थी और बड़े होकर उसने अपने जीवन काल का अधिकांश समय ऐतिहासिक ग्रंथों की रचना में व्यतीत किया।

उसकी युवावस्था में ही उसकी इतिहास से रुचि एवं विद्वत्ता की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई। अबुल गाज़ी सुल्तान हुसेन बिन मन्सूर बिन बाईकरा (८७३ हि०/१४६८ ई०–९११ हि०/१५०५ ई०) उस समय हिरात का सुल्तान था। उसका दरबार बड़े-बड़े विद्वानों का केन्द्र था।

१ मुहम्मद बिन खावन्द शाह बिन महमूद, जो मीर ख्वन्द के नाम से प्रसिद्ध था, सैयिदों के एक वंश से सम्बन्धित था जो बुखारा में निवास करने लगा था किन्तु उसका पिता बुरहानुद्दीन खावन्द शाह बल्ख चला गया और वहीं मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसका जन्म ८३७ हि० (१४३३ ई०) में हुआ था। मीर अली शेर नवाई उसका बहुत बड़ा आश्रयदाता था। उसकी मृत्यु २ रजब ९०३ हि० (२४ फ़रवरी १४९८ ई०) को ६६ वर्ष की अवस्था में हो गई। उसने **रौज़तुस्सफ़ा** नामक ग्रंथ की रचना की जिसका पूरा नाम **रौज़तुस्सफ़ा फ़ी सीरतुल अम्बिया वल मुलूक वल ख़ुलफ़ा** है। यह एक मुक़द्दमे (प्रस्तावना) ७ क़िस्मों (भागों) एवं एक खातिमे में विभाजित है

(१) सृष्टि की रचना से यज़्दजर्द के समय तक।

(२) हज़रत मुहम्मद तथा प्रथम चार ख़लीफ़ा।

(३) १२ इमामों तथा उमय्या एवं अब्बासी ख़लीफ़ाओं के वंश का इतिहास।

(४) अब्बासियों के समकालीन वंशों का इतिहास।

(५) चिंगीज़ ख़ाँ तथा उसके उत्तराधिकारी।

(६) तीमूर तथा उसके उत्तराधिकारी, अबू सईद (८७३ हि०/१४६९ ई०) तक।

(७) सुल्तान हुसेन एवं उसके पुत्रों का इतिहास ९२९ हि० (१५२२-२३ ई०) तक। (**हबीबुस्सियर** के इस भाग तथा इसमें कोई अन्तर नहीं)।

खातिमा (परिशिष्ट) —इसे ८वां भाग भी कहा जाता है। इसमें भौगोलिक विवरण है।

२ मीर ख्वन्द का पुत्र जो हिरात में सुल्तान बदी उज़्ज़मान मीर्ज़ा के समय में सद्र था। (**हबीबुस्सियर** भाग ३, खंड ३, पृ० १९८)।

३ उसने **हबीबुस्सियर** में लिखा है कि उसकी रचना के समय अर्थात् ९२७ हि० (१५२० ई०) में उसकी अवस्था ४७ तथा ४८ वर्ष के मध्य में थी।

४ **हबीबुस्सियर** भाग ३, खंड ३, पृ० ३३९, **रौज़तुस्सफ़ा** भाग ७, पृ० ८९।

उसका वजीर मीर अली शेर नवाई[1] विद्वानों का बहुत बड़ा मित्र तथा आश्रयदाता था। मीर अली शेर नवाई ने ख्वन्द मीर को भी दरबार में बुला लिया और उसे हर प्रकार की सहायता का आश्वासन दिया। उसी के प्रोत्साहन से उसने "मआसिरुल मुलूक" नामक ऐतिहासिक ग्रंथ की रचना की। इस ग्रंथ की प्रस्तावना से पता चलता है कि उसका नाना मीर ख्वन्द उस समय तक जीवित था। ९०४ हि० (१४९९ ई०) में मीर अली शेर नवाई ने एक बहुत बड़ा पुस्तकालय प्राप्त कर लिया जिसमें बहुत से उत्तम ग्रंथ थे। ख्वन्द मीर ने इस पुस्तकालय से बड़ा लाभ उठाया। ९०६ हि० (१५०० ई०) में मीर अली शेर नवाई की मृत्यु हो गई।

९०९ हि० (१५०३ ई०) में मावराउन्नहर के सुल्तान मुहम्मद शैबानी खां ने, जो शाही बेग खां (९०६ हि०/१५००–९१६ हि०/१५१० ई०) कहलाता था, अत्यधिक शक्ति प्राप्त कर ली और खुरासान पर आक्रमण की तैयारी करने लगा। यह देखकर सुल्तान हुसेन बाईकरा के पुत्र मीर्जा बदी उज्जमान ने अपने राज्य के मुख्य पदाधिकारियों के परामर्श से कुन्दुज के हाकिम अमीर खुसरो शाह के पास अपने राजदूत भेजे। मीर्जा बदी उज्जमान के आदेशानुसार ख्वन्द मीर को भी उनके साथ जाने का आदेश दिया गया। ख्वन्द मीर ने बड़ी प्रशंसनीय सेवायें सम्पन्न कीं।

९११ हि० (१५०६ ई०) में सुल्तान हुसेन बाईकरा की मृत्यु हो गई। उसके दो पुत्र, बदी उज्जमान मीर्जा एवं मुजफ्फर हुसेन मीर्जा मिलकर अपने पिता के स्थान पर राज्य करने लगे। बदी उज्जमान मीर्जा ने ख्वन्द मीर को सद्र नियुक्त कर दिया। ९१३ हि० (१५०७ ई०) में शैबानी खां उजबेक ने खुरासान तथा आस-पास के देशों पर अधिकार जमा लिया। हिरात के प्रतिष्ठित लोगों ने उजबेकों की सेवा में एक प्रार्थना-पत्र भेजना निश्चय किया। इस प्रार्थना पत्र की पाँडुलिपि ख्वन्द मीर ने तैयार की। 'हबीबुस्सियर' की एक कहानी से पता चलता है कि उजबेकों के राज्य काल में ख्वन्द मीर तथा हिरात के अन्य प्रतिष्ठित लोगों को अत्यधिक कष्ट भोगने पड़े। ख्वन्द मीर को सद्र के पद से भी वंचित कर दिया गया तथा आर्थिक हानि भी उठानी पड़ी[2], किन्तु उजबेक हिरात को अधिक समय तक अपने अधिकार में न रख सके। शाह इस्माईल सफवी (९०७ हि०/१५०२ ई०–९३० हि०/१५२४ ई०) ने ९१६ हि० (१५१० ई०) में खुरासान पर आक्रमण कर दिया। शैबानी इस युद्ध में पराजित हुआ और मार डाला गया। शाह इस्माईल सफवी ने जैहून[3] से फारस की खाड़ी तथा कन्धार से फुरात नदी तक के देश ईरान के राज्य में सम्मिलित कर लिये।

ख्वन्द मीर को उसकी विद्वता इतिहास के ज्ञान, राजनीति में कुशलता तथा प्रतिभा के कारण शाह इस्माईल ने हर प्रकार से आश्रय प्रदान किया जिसके फलस्वरूप उसने 'हबीबुस्सियर'

१ मीर अली शेर का जन्म ८४४ हि० (१४४० ई०) में हुआ और उसकी मृत्यु १२ जमादि उस्सानी ९०६ हि० (३ जनवरी १५०१ ई०) को हुई। वह स्वयं बहुत बड़ा कवि एवं कवियों तथा विद्वानों का आश्रयदाता था। वह अबुल गाजी सुल्तान हुसेन बिन मन्सूर बिन बाईकरा का वजीर था। उसने **मजालिसुन्नफायस** नामक एक ग्रंथ की चग़ताई तुर्की में रचना की जिसमें कवियों एवं विद्वानों की जीवनियों का उल्लेख किया गया है। उसने एक फारसी दीवान की भी रचना की।

२ **हबीबुस्सियर** भाग ३, खंड ३, पृ० ३५९ ३६१।

३ आक्सस नदी।

मे शाह इस्माईल सफवी की अत्यधिक प्रशसा की है। शाह इस्माईल सफवी द्वारा खुरासान विजयोपरान्त भी ईरानी राज्य के कुछ स्थान तीमूर के वशजो के अधिकार ही मे रहे। इन्ही मे बदी उज्जमान मीर्जा का पुत्र मुहम्मद जमान मीर्जा था जो कैस्पियन सागर के दक्षिण-पूर्व मे स्थित जुर्जान मे राज्य करता था। दूसरी ओर अमीर उर्दू शाह बिन अमीर सुल्तान मुहम्मद ने, जो मीर्जा बदी उज्जमान की सेवा मे रह चुका था, गर्जिस्तान में स्वतत्र राज्य स्थापित कर लिया। मीर्जा मुहम्मद जमान ने अपनी शक्ति को दृढ बनाने के उद्देश्य से आसपास के छोटे-छोटे राज्यो को अपने अधिकार मे करने के लिए ९२० हि० (१५१४ ई०) में गर्जिस्तान पर चढाई की। अमीर उर्दू शाह ने अपना राज्य उसे समर्पित कर दिया। ख्वन्द मीर उस समय गर्जिस्तान के पुस्त नामक ग्राम मे, जो जाग पर्वत के समीप स्थित है, था। मुहम्मद जमान मीर्जा ने ख्वन्द मीर का अत्यधिक आदर-सम्मान किया और उसे अपने साथ ले गया। ख्वन्द मीर ने मीर्जा मुहम्मद जमान की प्रशसनीय सेवायें की। ९२३ हि० (१५१७ ई०) मे मीर्जा मुहम्मद जमान ने ख्वन्द मीर को गर्जिस्तान चले जाने की अनुमति दे दी[1]।

९२७ हि० (१५२० ई०) मे हिरात के काजी तथा हाकिम गयासुद्दीन मुहम्मद हुसैनी ने उसे एक वृहत् विश्व-इतिहास लिखने का आदेश दिया। ख्वन्द मीर अपने इतिहास के प्रथम भाग ही की रचना कर सका था कि गयासुद्दीन मुहम्मद हुसैनी की हत्या करा दी गई (९२७ हि०/१५२० ई०) जिसके कारण कुछ समय वहाँ अराजकता रही। करीमुद्दीन हबीबुल्लाह हिरात का हाकिम नियुक्त हुआ। उसने भी ख्वन्द मीर को अत्यधिक आश्रय प्रदान किया और उसे विश्व-इतिहास, जिसकी रचना उसने प्रारम्भ की थी, पूरा करने के लिए सुविधाये प्रदान की। इसकी रचना ९३० हि० (१५२४ ई०) में समाप्त हुई।

९३० हि० में ही शाह इस्माईल सफवी की मृत्यु हो गई। ईरान की तत्कालीन उथल पुथल के कारण ख्वन्द मीर वहाँ न ठहर सका। शव्वाल ९३३ हि० (जुलाई १५२७ ई०) के मध्य में वह हिरात से कन्धार की ओर रवाना हो गया। १० जमादि-उल-अव्वल ९३४ हि० (१ फरवरी १५२८ ई०) को वह कन्धार से हिन्दुस्तान की ओर चल खडा हुआ और ४ मुहर्रम ९३५ हि० (१९ सितम्बर १५२८ ई०) को आगरा पहुँचा[2]। बाबर ने उसे अत्यधिक प्रोत्साहन प्रदान किया और वह ९३५ हि० (१५२९ ई०) के पूर्व के अभियान में उसके साथ गया। बाबर के निधन के उपरान्त हुमायूँ ने भी ख्वन्द मीर के प्रति अत्यधिक आदर-सम्मान प्रदर्शित किया और उसे अमीरुल अख्बार[3] की उपाधि प्रदान की। ख्वन्द मीर ने उसके आदेशानुसार "कानूने हुमायूनी" नामक ग्रथ की रचना की। वह हुमायूँ के साथ ९४१ हि० (१५३४ ई०) में गुजरात गया किन्तु ९४२ हि० (१५३५ ई०) में गुजरात से वापसी के समय उसकी मृत्यु हो गई। उसकी लाश देहली मे शेख निजामुद्दीन औलिया तथा अमीर खुसरो के मकबरे मे दफन कर दी गई[4]।

१ **हबीबुस्सियर** भाग ३, खंड ३, पृ० ३७१-३७३।

२ **बाबर नामा** (रिजवी : **मुग़ल कालीन भारत—बाबर**, पृ० २७३)।

३ **कानूने हुमायूनी**, पृ० ६०; मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी ने **मुन्तखबुत्तवारीख** में उसकी उपाधि 'अमीर मुवर्रिख' लिखी है। (**मुन्तखबुत्तवारीख** भाग १, पृ० ३४३)।

४ मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी : **मुन्तखबुत्तवारीख** भाग १, पृ० ३४३; फिरिश्ता : **तारीखे फिरिश्ता** मक़ाला २, पृ० २१५।

ख़्वान्द मीर की रचनायें

(१) मआसिरुल मुलूक

यह बादशाहो एव अन्य विद्वानो की सूक्तियो का सग्रह है। इसकी रचना उसने मीर अली शेर नवाई के प्रोत्साहन के कारण की। उस समय उसका नाना मीर ख्वन्द, "रौजतुस्सफा" का लेखक (मृत्यु ९०३ हि०/१४९८ ई०), भी जीवित था।

(२) खुलासतुल अख्वार फी बयाने अहवालिल अख्वार

हजरत आदम के समय से लेकर ९०५ हि० (१४९९ ई०) तक का विश्व के उन समस्त देशो का इतिहास है जिनका तत्कालीन मुसलमान विद्वानों को ज्ञान था। वास्तव में यह लेखक के नाना मीर ख्वन्द की "रौजतुस्सफा" का सक्षिप्त सस्करण है। उसने प्रस्तावना में लिखा है कि उसके आश्रयदाता मीर अली शेर नवाई ने उसे अपने पुस्तकालय के, जिसमें बहुत बडी सख्या में बहुमूल्य ग्रथ थे, प्रयोग की अनुमति दे दी थी। उसने इस अवसर से लाभ उठाकर अत्यधिक ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त किया। इसकी रचना ६ मास में समाप्त करके इसे मीर अली शेर नवाई को समर्पित किया।

(३) मकारिमुल अख्लाक

इसमें मीर अली शेर नवाई की जीवनी तथा उसके गुणो का उल्लेख है किन्तु पुस्तक के पूरा होने के पूर्व ही मीर अली शेर का निधन हो गया अत ख्वन्द मीर ने इसे सुल्तान हुसेन बाईकरा को समर्पित किया।

(४) वस्तूरुल वुजरा

इसमें इस्लाम के पूर्व से लेकर ९१५ हि० (१५०९-१० ई०) तक के प्रसिद्ध वजीरो की जीवनियो का सक्षिप्त उल्लेख किया गया है।

(५) अख्बारुल अख्यार

इस रचना की ख्वन्द मीर ने "हबीबुस्सियर" में चर्चा की है किन्तु इसकी किसी हस्तलिपि का पता नही।

(६, ७) गरायबुल असरार तथा जवाहिरुल अख्बार

इन दोनो की भी हस्तलिपियाँ प्राप्य नही।

(८) मुन्तखबे तारीखे वस्साफ

यद्यपि इस रचना की भी किसी हस्तलिपि का पता नही किन्तु शीर्षक से पता चलता है कि यह अब्दुल्लाह बिन फज्लुल्लाह अश् शीराजी, जो 'वस्साफ अथवा वस्साफे हजरत' के नाम से प्रसिद्ध था, के ग्रथ "तारीखे वस्साफ[1]" का सक्षिप्त सस्करण है।

१ उल्जैतू (७०३ हि० / १३०४ ई०—७१६ हि० / १३१६ ई०) के प्रसिद्ध वजीर रशीदुद्दीन फजलुल्लाह ने लेखक और उसके इतिहास को २४ मुहर्रम ७१२ हि० (१ जून १३१२ ई०) को पादशाह की सेवा में प्रस्तुत किया। रशीदुद्दीन ने तारीखे वस्साफ में से कहीं-कहीं से कुछ पढ़कर उल्जैतू को समझाया। उल्जैतू ने प्रभावित होकर

(९) नामये नामी

इस ग्रंथ में विभिन्न प्रकार के पत्र एवं दस्तावेजों की रचना के नियमों का उल्लेख किया गया है और उस समय के बहुत से पत्रों एवं दस्तावेजों के नमूने भी उदाहरण स्वरूप दिए गए हैं।

(१०) रौज़तुस्सफा भाग ७

इसमें सुल्तान हुसेन बाईकरा का सविस्तार इतिहास दिया गया है। सम्भवतः इसका थोडा सा भाग उसके नाना ख्वन्द मीर की पांडुलिपि पर आधारित है।

(११) हबीबुस्सियर फी अख्बारे अफरादुल बशर

इसमें हज़रत आदम से लेकर विश्व के विभिन्न भागों का ९३० हि० (१५२४ ई०) तक का इतिहास दिया गया है। ख्वन्द मीर ने इसकी रचना सैयिद गयासुद्दीन मुहम्मद बिन यूसुफ हुसेनी के आग्रह पर ९२७ हि० (१५२० ई०) में प्रारम्भ की किन्तु वह इसके प्रथम भाग की ही रचना में संलग्न था कि उसके आश्रयदाता की मृत्यु हो गई और उसे इस ग्रंथ को पूरा करने की आशा न रही। अन्त में उसके उत्तराधिकारी करीमुद्दीन हबीबुल्लाह के प्रोत्साहन से उसने अपनी रचना को समाप्त कर लिया और इसका नाम "हबीबुस्सियर" रक्खा। यद्यपि यह भी बहुत कुछ "रौज़तुस्सफा" पर आधारित है किन्तु बहुत से वंशों, जिनका उल्लेख "रौज़तुस्सफा" में नहीं है, की भी चर्चा "हबीबुस्सियर" में की गई है। इसके अतिरिक्त ख्वन्द मीर ने प्रत्येक वंश के इतिहास के अन्त पर उससे सम्बन्धित प्रमुख लोगों की संक्षिप्त जीवनियों का भी उल्लेख किया है।

यह इतिहास १ इफ्तिताह (प्रस्तावना) ३ मुजल्लद (भाग) एवं १ इख्तिताम (परिशिष्ट) में विभाजित है।

इफ्तिताह — सृष्टि

मुजल्लद १

जुज़ (खंड) अ पैगम्बरों का इतिहास

ब ईरान तथा अरब के इस्लाम के पूर्व के बादशाहों का इतिहास

स हज़रत मुहम्मद का इतिहास

द प्रथम चार खलीफाओं का इतिहास

मुजल्लद २

जुज़ (खंड) अ १२ इमामों का इतिहास

ब बनी उमय्या का इतिहास

उसे 'बरमाके हज़रत' की उपाधि प्रदान की। इस ग्रन्थ की रचना शैली ने ईरान के सभी इतिहासकारों को अत्यधिक प्रभावित किया और उसके अनुकरण में फारसी इतिहासकारों ने अपने इतिहासों को क्लिष्ट बनाने की प्रथा सी चला दी।

ख़्वान्द मीर की रचनायें

(१) मआसिरुल मुलूक

यह बादशाहो एव अन्य विद्वानो की सूक्तिया का सग्रह है। इसकी रचना उसने मीर अली शेर नवाई के प्रोत्साहन के कारण की। उस समय उसका नाना मीर ख्वन्द, "रौजतुस्सफा" का लेखक (मृत्यु ९०३ हि०/१४९८ ई०), भी जीवित था।

(२) खुलासतुल अख़्बार फी बयाने अहवालिल अख़्बार

हजरत आदम के समय से लेकर ९०५ हि० (१४९९ ई०) तक का विश्व के उन समस्त देशो का इतिहास है जिनका तत्कालीन मुसलमान विद्वानो को ज्ञान था। वास्तव में यह लेखक के नाना मीर ख्वन्द की "रौज़तुस्सफा" का सक्षिप्त सस्करण है। उसने प्रस्तावना मे लिखा है कि उसके आश्रयदाता मीर अली शेर नवाई ने उसे अपने पुस्तकालय के, जिसमें बहुत बडी सख्या में बहुमूल्य ग्रथ थे, प्रयोग की अनुमति दे दी थी। उसने इस अवसर से लाभ उठाकर अत्यधिक ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त किया। इसकी रचना ६ मास में समाप्त करके इसे मीर अली शेर नवाई को समर्पित किया।

(३) मकारिमुल अख़्लाक

इसमे मीर अली शेर नवाई की जीवनी तथा उसके गुणो का उल्लेख है किन्तु पुस्तक के पूरा होने के पूर्व ही मीर अली शेर का निधन हो गया अत ख्वन्द मीर ने इसे सुल्तान हुसेन बाईकरा को समर्पित किया।

(४) दस्तूरुल वुज़रा

इसमें इस्लाम के पूर्व से लेकर ९१५ हि० (१५०९-१० ई०) तक के प्रसिद्ध वजीरो की जीवनिया का सक्षिप्त उल्लेख किया गया है।

(५) अख़्बारुल अख़्यार

इस रचना की ख्वन्द मीर ने "हबीबुस्सियर" मे चर्चा की है किन्तु इसकी किसी हस्तलिपि का पता नही।

(६, ७) ग़रायबुल असरार तथा जवाहिरुल अख़्बार

इन दोनो की भी हस्तलिपियाँ प्राप्य नही।

(८) मुन्तख़बे तारीख़े वस्साफ

यद्यपि इस रचना की भी किसी हस्तलिपि का पता नही किन्तु शीर्षक से पता चलता है कि यह अब्दुल्लाह बिन फजलुल्लाह अश् शीराजी, जो 'वस्साफ अथवा वस्साफे हजरत' के नाम से प्रसिद्ध था, के ग्रथ "तारीख़े वस्साफ[१]" का सक्षिप्त सस्करण है।

१ उल्जैतू (७०३ हि० / १३०४ ई०—७१६ हि० / १३१६ ई०) के प्रसिद्ध वजीर रशीदुद्दीन फजलुल्लाह ने लेखक और उसके इतिहास को २४ मुहर्रम ७१२ हि० (१ जून १३१२ ई०) को पादशाह की सेवा में प्रस्तुत किया। रशीदुद्दीन ने तारीख़े वस्साफ में से कहीं-कहीं से कुछ पढकर उल्जैतू को समझाया। उल्जैतू ने प्रभावित होकर

(९) नामये नामी

इस ग्रंथ में विभिन्न प्रकार के पत्र एवं दस्तावेजों की रचना के नियमों का उल्लेख किया गया है और उस समय के बहुत से पत्रों एवं दस्तावेजों के नमूने भी उदाहरण स्वरूप दिए गए हैं।

(१०) रौजतुस्सफा भाग ७

इसमें सुल्तान हुसेन बाईकरा का सविस्तार इतिहास दिया गया है। सम्भवत इसका थोड़ा सा भाग उसके नाना ख्वन्द मीर की पांडुलिपि पर आधारित है।

(११) हबीबुस्सियर फी अख्बारे अफरादुल बशर

इसमें हजरत आदम से लेकर विश्व के विभिन्न भागों का ९३० हि० (१५२४ ई०) तक का इतिहास दिया गया है। ख्वन्द मीर ने इसकी रचना सैयिद गयासुद्दीन मुहम्मद बिन यूसुफ हुसेनी के आग्रह पर ९२७ हि० (१५२० ई०) में प्रारम्भ की किन्तु वह इसके प्रथम भाग की ही रचना में सलग्न था कि उसके आश्रयदाता की मृत्यु हो गई और उसे इस ग्रंथ को पूरा करने की आशा न रही। अन्त में उसके उत्तराधिकारी करीमुद्दीन हबीबुल्लाह के प्रोत्साहन से उसने अपनी रचना को समाप्त कर लिया और इसका नाम "हबीबुस्सियर" रक्खा। यद्यपि यह भी बहुत कुछ "रौजतुस्सफा" पर आधारित है किन्तु बहुत से वंशों, जिनका उल्लेख "रौजतुस्सफा" में नहीं है, की भी चर्चा "हबीबुस्सियर" में की गई है। इसके अतिरिक्त ख्वन्द मीर ने प्रत्येक वंश के इतिहास के अन्त पर उससे सम्बन्धित प्रमुख लोगों की संक्षिप्त जीवनियों का भी उल्लेख किया है।

यह इतिहास १ इफ्तिताह (प्रस्तावना) ३ मुजल्लद (भाग) एवं १ इख्तिताम (परिशिष्ट) में विभाजित है।

इफ्तिताह सृष्टि

मुजल्लद १

जुज (खंड) अ पैगम्बरों का इतिहास
ब ईरान तथा अरब के इस्लाम के पूर्व के बादशाहों का इतिहास
स हजरत मुहम्मद का इतिहास
द प्रथम चार खलीफाओं का इतिहास

मुजल्लद २

जुज (खंड) अ १२ इमामों का इतिहास
ब बनी उमय्या का इतिहास

उसे 'बम्माफे हजरत' की उपाधि प्रदान की। इस ग्रन्थ की रचना शैली ने ईरान के सभी इतिहासकारों को अत्यधिक प्रभावित किया और उसके अनुसरण में फारसी इतिहासकारों ने अपने इतिहासों को क्लिष्ट बनाने की प्रथा भी चला दी।

स बनी अब्बास का इतिहास

द अब्बासियो के समकालीन वशो का इतिहास

मुजल्लद ३

जुज़ (खड) अ तुर्किस्तान के खानो, चिगीज खा तथा उसके उत्तराधिकारियो का इतिहास

ब मिस्र के ममलूको, किरमान के करा खिताइयो, मुज़फ्फरी वश, लुरिस्तान के अताबको, रुस्तमदार के बादशाहो, माजन्दरान के बादशाहो, सरबदारा एव कुर्तो का इतिहास

स तैमूर तथा उसके उत्तराधिकारियो से सुल्तान हुसेन के पुना तक का इतिहास

द शाह इस्माईल सफवी का इतिहास

इख्तिताम ससार की विचित्र एव आश्चर्यजनक बातें।

(१२) क़ानूने हुमायूनी

ख्वन्द मीर की अन्तिम रचना "कानूने हुमायूनी" है। हुमायूँ ने ख्वन्द मीर को ९३७ हि० (१५३० ई०) मे इसकी रचना का ग्वालियर में आदेश दिया[१]। इसमे हुमायूँ के अधिनियमो, आविष्कारो एव भवनो के निर्माण का उल्लेख है। इसके अध्ययन से हुमायूँ की ज्योतिष के प्रति विशेष रुचि का पता चलता है। यद्यपि ख्वन्द मीर ने अपनी सभी रचनाओ मे बडी क्लिष्ट भाषा का प्रयोग किया है किन्तु "कानूने हुमायूनी" की भाषा सबसे अधिक काव्यमय तथा कुरान के उद्धरणो से परिपूर्ण है। उसने अपनी रचना में हुमायूँ के प्रत्येक आविष्कार की अत्यधिक प्रशसा की है किन्तु फिर भी आविष्कारो की रूप-रेखा अधिक स्पष्ट नही हो सकी है। सम्भवत लेखक ने बहुत सी बातो के विषय में यह समझ लिया होगा कि लोग उन्हे जानते ही होगे और उसके लिए केवल उनकी प्रशसा ही आवश्यक है किन्तु इस दोष के बावजूद इस ग्रथ मे बहुत सी सामाजिक तथा सांस्कृतिक महत्व की बातो का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त हुमायूँ के प्रारम्भिक राज्यकाल की तिथियो के निर्धारण में भी इस ग्रथ से बडी सहायता मिलती है। अभी तक इस ग्रथ की केवल एक ही हस्तलिपि का पता चल सका है जो ब्रिटिश म्यूजियम लन्दन मे प्राप्य है। इसी के आधार पर रायल एशियाटिक सोसाइटी बगाल द्वारा "कानूने हुमायूनी" नामक ग्रथ प्रकाशित किया गया है।

मीर्जा हैदर

रीखे रशीदी

मीर्जा हैदर, मुहम्मद हुसन गूरगान का पुत्र था। उसका जन्म ९०५ हि० (१४९९-५०० ई०) में शाश नामक प्रान्त की राजधानी ताशकन्द में हुआ था। ६ वर्ष पूर्व मुग़लिस्तान

कानूने हुमायूनी, पृ० १७।

तथा काशगर के खान महमूद द्वारा उसका पिता वहाँ का हाकिम नियुक्त हो चुका था। वह दूगलात कबीले से सम्बन्धित था। अपनी माता खूब निगार खानम की ओर से वह बाबर बादशाह का सम्बन्धी होता था। खूब निगार खानम मुगलों के खान, यूनुस खा की पुत्री तथा बाबर की माता कुतलुग निगार खानम की छोटी बहिन थी। ९१२ हि० (१५०६-७ ई०) में उसके पिता ने बाबर के विरुद्ध काबुल में एक बहुत बड़ा षड्यन्त्र रचा किन्तु बाबर ने उसे क्षमा कर दिया[१]। कुछ ही समय उपरान्त वह ऊजबेकों के सरदार शाही बेग खा, जो शैबानी खा के नाम से प्रसिद्ध है, के हाथ लग गया किन्तु शैबानी का भी उसके प्रति सदेह हो गया और वह खुरासान की राजधानी हिरात की ओर भाग गया। शाही बेग खा ने उसके षड्यन्त्रकारी स्वभाव के कारण हिरात में उसकी हत्या करवा दी। मुहम्मद हुसैन के साथ उसके कुछ परिवार वाले भी थे जिनमें मीर्जा हैदर भी सम्मिलित था। उस समय उसकी अवस्था बहुत कम थी। मुहम्मद हुसैन के परिवार वालों ने इस भय से कि कहीं मीर्जा हैदर की भी हत्या न करा दी जाय उसे बुखारा में ले जाकर किसी स्थान पर छिपा दिया। १५०८ ई० में जब उसकी अवस्था लगभग ९ वर्ष की थी तो उसके पिता का खलीफा[२], मौलाना मुहम्मद, ऊजबेकों से उसकी रक्षा की दृष्टि से उसे नगर से लेकर भाग गया। खुतलान तथा कोलाब को बड़ी कठिनाई से पार करते हुए वे बदख्शाँ पहुँचे। एक वर्ष उपरान्त ९१५ हि० (१५०९ ई०) में बाबर ने उसे काबुल बुलवा लिया और उसे अत्यधिक आश्रय एवं प्रोत्साहन प्रदान किया। ९१८ हि० (१५१२ ई०) में वह सुल्तान सईद खा के दरबार के सेवकों में सम्मिलित हो गया। ९२० हि० (१५१४ ई०) में सुल्तान सईद काशगर का खान नियुक्त हुआ। खान के अधीन उसने अनेक महत्वपूर्ण युद्धों में भाग लिया। १५३१ ई० में मीर्जा हैदर ने सुल्तान सईद खा के आदेशानुसार लद्दाख, कश्मीर, बालतिस्तान तथा तिब्बत विजय के उद्देश्य से लद्दाख की ओर प्रस्थान किया। लद्दाख पर अधिकार जमा लेने के उपरान्त मीर्जा हैदर ने कश्मीर पर आक्रमण किया किन्तु मुगुल सैनिकों के पारस्परिक विरोध एवं षड्यन्त्र के कारण उसे कश्मीर छोड़कर लद्दाख वापस चला आना पड़ा। जुलाई १५३३ ई० में वह ल्हासा तक पहुँच गया किन्तु १५३४ ई० के प्रारम्भ में उसे पुन लद्दाख वापस चला आना पड़ा। इसी बीच में सुल्तान सईद खा की मृत्यु हो गई और उसके स्थान पर अब्दुर्रशीद खा सिंहासनारूढ़ हुआ (९३९ हि०/१५३३ ई०)। उसने अपने कई सम्बन्धियों की हत्या करा दी थी जिसमें मीर्जा हैदर का चाचा सैयिद मुहम्मद मीर्जा भी सम्मिलित था। मीर्जा हैदर इन दुर्घटनाओं के कारण बड़ा प्रभावित हुआ। इस भय से उसके लिये काशगर वापस जाना सम्भव न था अत वह बदख्शा चला गया। १५३६-३७ ई० में वह बदख्शा में निवास करता रहा। तदुपरान्त ग्रीष्म ऋतु में वह काबुल पहुँचा और वहाँ से लाहौर। बाबर के पुत्र मीर्जा कामरान ने, जो उस समय लाहौर का हाकिम था उसे अत्यधिक आश्रय प्रदान किया और वह कुछ समय तक के लिए अपने कष्ट भूल गया।

उसी समय ईरानियों ने कन्धार पर अधिकार जमा लिया था। कामरान कन्धार की पुनर्विजय हेतु प्रस्थान के समय मीर्जा हैदर को अपने स्थान पर लाहौर में हाकिम नियुक्त कर गया। मीर्जा हैदर ने उसकी अनुपस्थिति में शासन की सुव्यवस्था का बड़ा उत्तम प्रयत्न किया।

१ बाबर नामा (मुगुल कालीन भारत—बाबर, पृ० ६६ ७२)।
२ धर्म गुरु।

१५३८ ई० में कामरान पंजाब वापस आ गया किन्तु उसी समय शेर शाह ने हुमायूँ को बंगाल में बुरी तरह घेर लिया था। हुमायूँ ने अपने भाइयों से आगरा पहुँचने का आग्रह किया और स्वयं राजधानी की ओर रवाना हुआ। मीर्ज़ा कामरान बीस हजार सैनिकों को लेकर सर्व प्रथम देहली और वहाँ से आगरा पहुँचा। मीर्ज़ा हैदर भी उसके साथ था। हुमायूँ चौसा की पराजय के उपरान्त जब आगरा पहुँचा तो उसने भाइयों को मिलाने का अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु उसे कोई सफलता न प्राप्त हो सकी। संयोगवश मीर्ज़ा कामरान उसी समय बुरी तरह रुग्ण हो गया। लोगों ने उसे यह समझा दिया था कि हुमायूँ के आदेशानुसार उसे विष दे दिया गया है। वह लाहौर की ओर वापस जाने का आग्रह करने लगा। हुमायूँ ने उसे बहुत रोका किन्तु उसने किसी बात पर ध्यान न दिया। वह मीर्ज़ा हैदर को भी अपने साथ ले जाना चाहता था किन्तु मीर्ज़ा हैदर हुमायूँ से इतना अधिक प्रभावित हो गया था कि वह उसके साथ न गया और कन्नौज के समीप गंगा तट के युद्धों में उसने हुमायूँ का साथ दिया और हुमायूँ की सेना का नेतृत्व उसी के अधीन रहा, किन्तु वे विजय न प्राप्त कर सके और उन्हें आगरा और फिर वहाँ से लाहौर भागना पड़ा। लाहौर में उसने हुमायूँ के खोये हुए राज्य को पुनः अधिकार में करने के लिए कई योजनाये बनाई किन्तु पारस्परिक विरोध के कारण कोई भी सफलता न प्राप्त हो सकी। अन्त में हुमायूँ ने उसे कश्मीर पर आक्रमण करने की अनुमति दे दी। २२ रजब ९४७ हि० (२२ नवम्बर १५४० ई०) को उसने पूँछ नामक दर्रे से प्रविष्ट होकर बिना किसी युद्ध के कश्मीर विजय कर लिया। २० रबी उस्-सानी ९४८ हि० (१३ अगस्त १५४१ ई०) को उसने पूर्ण रूप से कश्मीर पर अधिकार जमा लिया। अबुलफ़ज़ल ने उसकी कटु आलोचना करते हुए लिखा है कि, 'उसे हज़रत जहाँबानी के नमक के उत्तरदायित्व के कारण, दिरहम एवं दीनार में मुख तथा मिम्बरों को हज़रत जहाँबानी के पवित्र नाम से सुशोभित करना चाहिये था किन्तु उसने ऐसा नहीं किया[1]। किन्तु जब हुमायूँ ने काबुल विजय कर लिया तो उसने हुमायूँ के नाम का खुत्बा पढ़वा दिया। ९५८ हि० (१५५१-५२ ई०) में कश्मीर वालों ने रात्रि में एक छापा मारा जिसमें उसकी मृत्यु हो गई। उसने अपने संक्षिप्त राज्य-काल में कश्मीर के शासन प्रबन्ध में अनेक सुधार किए।

मीर्ज़ा हैदर की विद्वत्ता की उसके समकालीनों तथा प्रमुख विद्वानों ने भी अत्यधिक प्रशंसा की है। बाबर तथा शाह इस्माईल के सम्बन्ध का उल्लेख करते हुए उसने जिस प्रकार बाबर की आलोचना की है उससे पता चलता है कि उसमें वह उदारता न थी जो बाबर, हुमायूँ तथा अकबर में पाई जाती थी।

मीर्ज़ा हैदर की "तारीखे रशीदी" एन० इलियेस तथा ई० डेनीसन रास के अंग्रेजी अनुवाद के कारण बड़ी प्रसिद्ध हो गई है और इसका अत्यधिक प्रयोग हुआ है। यह दो भागों में विभाजित है —

१—प्रथम भाग कश्मीर में ९५२ हि० (१५४६ ई०) में तैयार हुआ। इसमें मुगुलिस्तान एवं काशगर के मुगुल शासकों—तुगलुक तिमूर (सिंहासनारोहण ७४८ हि०/१३४७-१३४८ ई०) से अब्दुर्रशीद—जिसको यह ग्रंथ समर्पित हुआ, के समय तक का इतिहास है।

१ अबुलफ़ज़ल, अकबर नामा भाग १, पृ० ११८, प्रस्तुत अनुवाद पृ० १३०।

२—दूसरे भाग में उन घटनाओं का विवरण है जो कि इतिहासकार के जीवनकाल में ९४८ हि० (१५४१ ई०) तक घटी।

उन वर्षों के इतिहास के अध्ययन के लिए जिनके पृष्ठ "बाबर नामा" से नष्ट हो गए हैं, इस इतिहास की उपेक्षा असम्भव है। इसके अतिरिक्त बाबर के पूर्वजों एवं बाबर से सम्बन्धित अन्य घटनाओं का भी उसने बड़े रोचक ढंग से उल्लेख किया है। हुमायूँ के कन्नौज के युद्ध एवं हुमायूँ तथा उसके भाइयों के सम्बन्ध के इतिहास और कश्मीर तथा तिब्बत के वृतान्त ने इस ग्रंथ को अत्यधिक बहुमूल्य बना दिया।

हुमायूँ के इतिहास से सम्बन्धित मीर्ज़ा हैदर ने निम्नांकित महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख किया है —

१—मीर्ज़ा कामरान द्वारा कन्धार पर अधिकार।

२—मीर्ज़ा कामरान का मीर्ज़ा हैदर को लेकर आगरा पहुँचना तथा मीर्ज़ा कामरान की लाहौर में वापसी।

३—कन्नौज के समीप गंगा-तट पर हुमायूँ तथा शेर शाह का युद्ध।

४—हुमायूँ का पलायन तथा लाहौर में सब भाइयों का एकत्र होना और मीर्ज़ा कामरान द्वारा विरोध।

५—मीर्ज़ा हैदर द्वारा कश्मीर विजय।

इन घटनाओं का भी उल्लेख "तारीख़े रशीदी" में बड़े संक्षिप्त रूप से हुआ है किन्तु मीर्ज़ा हैदर की रचना शैली ने उसके विवरण को बड़ा ही महत्वपूर्ण बना दिया है। उसके थोड़े से वाक्य पूरे दृश्य को आँखों के सामने प्रस्तुत कर देते हैं और विभिन्न पात्रों की कृतियाँ पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाती हैं। कन्नौज के युद्ध का वर्णन "नफ़ायसुल मआसिर" तक में "तारीख़े रशीदी" से ही उद्धृत किया गया है।

यह ग्रंथ अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। अनुवाद अलीगढ़ विश्वविद्यालय की हस्त-लिपि से किया गया है किन्तु अंग्रेज़ी अनुवाद से भी सहायता ली गई है।

मीर अलाउद्दौला बिन यहया सैफ़ी हुसेनी कज़वीनी

नफ़ायसुल मआसिर

"नफ़ायसुल मआसिर" में लेखक ने समकालीन कवियों की जीवनियों तथा उनके पद्यों के उद्धरणों का संकलन किया है। लेखक ने इसकी रचना ९७३ हि० (१५६५-६६ ई०) में प्रारम्भ की और संभवतः ९९८ हि० (१५८९-९० ई०) में यह रचना समाप्त हुई। ब्रिटिश म्यूज़ियम के कैटलाग के लेखक रियु[1] के अनुसार इसकी रचना ९७३ हि० एवं ९८२ हि० (१५६५-६६ ई०) के बीच में हुई किन्तु लेखक ने अपनी इस रचना में मीर सैयिद अली गिज़बी की मृत्यु का उल्लेख किया है जो ३ मुहर्रम ९९८ हि० (१२ नवम्बर १५८९ ई०) में हुई। अपने समकालीन कवियों

१ Rieu *Catalogue of the Persian Manuscripts in British Museum*, Vol III, p 1022.

के अतिरिक्त लेखक ने पहिले के भी महत्वपूर्ण कवियो का उल्लेख किया है। उसने अपनी प्रस्तावना में लिखा है कि उसे कविता से बडी रुचि थी और वह बाल्यावस्था ही से कवियो के शेरो को रटा करता था। इसके अतिरिक्त उनकी जीवनियो के विषय में भी वह टिप्पणियाँ सुरक्षित करता जाता था किन्तु वह किसी ग्रथ की रचना न कर सका। हिन्दुस्तान पहुँचकर पादशाह गाजी अकबर के प्रोत्साहन से जो कुछ सकलित किया था उसकी रचना उसने पुस्तक के रूप में कर डाली[1]। उसने यह भी लिखा है कि पहिले के कवियो का उल्लेख 'तोहफये सामिया[2]' नामक ग्रथ में हो चुका है अत उसने केवल अपने समकालीन कवियो का ही उल्लेख किया है, परन्तु आशीर्वाद के रूप में पहिले के मुख्य कवियो की भी चर्चा कर दी है। उसने अपनी रचना को एक मतला (प्रस्तावना), २८ बैत[3] (अध्याय) तथा १ खातेमा (परिशिष्ट) मे विभाजित किया है। प्रस्तावना में उसने कविता का इतिहास और परिभाषा दी है, २८ बैतो (अध्यायो) में उसने फारसी वर्णमाला के क्रम से कवियो की सक्षिप्त जीवनियाँ एव उनकी रचनाओ से उद्धरण दिये हैं।

खातेमा (परिशिष्ट) को उसने तीन भागो में विभाजित किया है। पहले में बाबर का उल्लेख किया है दूसरे में हुमायूँ का और तीसरे में अकबर का। वह अकबर की विजयो के विषय मे भी पृथक् ग्रथ लिखना चाहता था[4] किन्तु सम्भवत वह उसकी रचना न कर सका और यदि उसने उसकी रचना कर भी ली हो तो वह हमें अभी तक प्राप्त नही हो सका।

कवियो की जीवनियो के सम्बन्ध में उसने अपने समकालीन महान् अधिकारियो एव अमीरो की जीवनियो का भी जो कवि थे उल्लेख कर दिया है। इस प्रकार कवियो की जीवनियो का भाग भी राजनीतिक इतिहास की दृष्टि से बडा ही महत्वपूर्ण हो गया है। इन जीवनियो के साथ साथ लेखक ने बहुत से देशो तथा नगरो का भौगोलिक विवरण दे दिया है। यद्यपि देशो तथा नगरो का उल्लेख अधिकाश हमदुल्लाह इब्ने अबी बक्र इब्ने अहमद इब्ने नस्र मुस्तौफी कजवीनी की 'नुजहतुल कुलूब' नामक रचना पर आधारित है किन्तु उसने कहीं-कहीं पर अपनी जानकारी के आधार पर भी कहानियाँ एव कविताए लिखी हैं। हिन्दुस्तान का उल्लेख करने में वह अमीर खुसरो की रचनाओ तथा "तुजुके बाबरी" और कश्मीर के वृतात में मीर्जा हैदर की तारीखे रशीदी' से प्रभावित हुआ है।

लेखक मीर अलाउद्दौला "कामी" मीर यहया इब्ने अब्दुल्लतीफ अल हुसनी अल सैफी अल कजवीनी का पुत्र था। अब्दुल कादिर बदायूनी के अनुसार सैफी सैयिद बडे कट्टर सुन्नी होते थे[5]। मीर यहया अपने समय का बहुत बडा इतिहासकार था। कहा जाता है कि वह मुहम्मद साहब के जन्म से लेकर अपने समय तक की समस्त महत्वपूर्ण घटनाओ को, जो कि ग्रथो में लिखी हुई

१ **नफायसुल मआसिर**, अलीगढ़ विश्वविद्यालय हस्तलिपि, पृ० ४ब ६अ।

२ **तोहफये सामिया अथवा तोहफये सामी**—लेखक अबुन्नस्र साम मीर्जा (प्रकाशन तेहरान १३१४ हि०/१९३६ ई०)। इसकी रचना लगभग ९५७ हि० (१५५० ई०) में हुई।

३ बैत का अनुवाद 'शेर' है किन्तु यहा अध्याय से तात्पर्य है।

४ **नफायसुल मआसिर** (अलीगढ़ हस्तलिपि), पृ० २७२ब।

५ बदायूनी, अब्दुल कादिर **मुन्तखबुत्तवारीख** भाग ३, पृ० ९७।

तथा उसके पुत्र नकीब खां[1] की तरह हिन्दुस्तान में अधिक प्रसिद्ध न हो सका। वह कवियों के साथ वाद-विवाद की गोष्ठियों में भी सम्मिलित हुआ करता था और विभिन्न शेरों के उत्तर में शेरों की रचना भी किया करता था। उसने कुछ समय तक मीर्जा अजीज कोका तथा अब्दुर्रहीम खानेखाना के अधीन भी सेवाएँ की। उसका तखल्लुस "कामी" था।

उसके समकालीन कवियों तथा अमीरों में उसकी यह रचना बड़ी प्रसिद्ध थी। मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी के इतिहास से पता चलता है कि बहुत से अमीर तथा कवि "नफायसुल मआसिर" का अध्ययन किया करते थे। मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी ने "मुन्तखबुत्तवारीख" के तीसरे भाग में कई स्थानों पर "नफायसुल मआसिर" की बड़ी कटु-आलोचना की है। एक स्थान पर वह लिखता है कि "शेख फैजी ने मीर अलाउद्दौला का 'तजकिरा' मेरे हाथ में देखकर उसे मुझसे छीन लिया और उसमें उसके विषय में जो कुछ लिखा था उस पृष्ठ को फाड़ डाला[2]।" इसके अतिरिक्त मीर्जा अजीज कोका की भी टिप्पणियाँ मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी ने उद्धृत की हैं[3]। इन आलोचनाओं के बावजूद "मुन्तखबुत्तवारीख" के तीसरे भाग का कवियों से सम्बन्धित लगभग पूरे का पूरा इतिहास "नफायसुल मआसिर" ही पर आधारित है।

अकबर के राज्यकाल के इतिहास के लिए तो वह हमारा प्राचीनतम सूत्र है। मुहम्मद आरिफ कन्धारी का इतिहास भी ९८७ हि० (१५७९ ई०) के लगभग लिखा गया और उसमें केवल १५७९ ई० तक का ही इतिहास दिया गया है। बायजीद के "तजकिरये हुमायूँ व अकबर" में ९९९ हि० (१५९१ ई०) तक का इतिहास है। हुमायूँ के समय के इतिहासों में भी ख्वन्द मीर के "हुमायूँ नामे" अथवा "कानूने हुमायूनी" के अतिरिक्त उस समय तक कोई अलग से ग्रंथ न लिखा गया था। "नफायसुल मआसिर" का ऐतिहासिक भाग ९८२ हि० (१५७४–७५ ई०) तक ही आता है और यदि यह मान लिया जाय कि ऐतिहासिक भाग की रचना लगभग इसी समय समाप्त हुई और कुछ कवियों तथा गायकों की जीवनियाँ उदाहरणार्थ उरफी, गिजकी इत्यादि की बाद में जोड़ी गयीं तो यह बात प्रमाणित हो जाती है कि यह इतिहास आरिफ कन्धारी के इतिहास के पूर्व ही लिखा जा चुका था। मुहम्मद आरिफ कन्धारी के इतिहास तथा "नफायसुल मआसिर" का सावधानी से मुकाबला करने पर पता चलता है कि आरिफ कन्धारी ने 'नफायसुल मआसिर' ही पर अपने इतिहास को आधारित किया है। इस बात में तो कोई संदेह है ही नहीं कि अलाउद्दौला ने अपना इतिहास ९७३ हि० में लिखना प्रारम्भ किया और मुहम्मद आरिफ कन्धारी अकबर की सेवा में ९८५ हि० (१५७७–७८ ई०) में प्रस्तुत किया गया था।

के आरोप में बन्दी बनाने का प्रयत्न किया गया था। (अकबर नामा भाग २, पृ० १९)। वह ९६५ हि० (१५५७ ५८ ई०) में अकबर का गुरु नियुक्त हुआ और उसने अकबर को "दीवाने हाफिज" पढ़ाना प्रारम्भ किया। (मुन्तखबुत्तवारीख भाग २, पृ० ३०)।

१ महाभारत के अनुवादकों में उसे मुख्य स्थान प्राप्त था।

२ मुन्तखबुत्तवारीख भाग ३, पृ० ३२३।

३ मुन्तखबुत्तवारीख भाग ३, पृ० २७३, २७७, २७८।

यद्यपि जिन घटनाओं का उल्लेख "नफायसुल मआसिर" में किया गया है, वे हमें "अकबर नामा" तथा अन्य इतिहासों से भी मिल जाती हैं किन्तु हुमायूं तथा अकबर के समय का प्राचीनतम इतिहास होने के कारण इसकी उपेक्षा असम्भव है। हुमायूं की कज़वीन की यात्रा एव हुमायूं तथा शाह तहमास्प के सम्बन्ध पर भी 'नफायसुल मआसिर" से प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त होता है। उसने महत्वपूर्ण घटनाओं की तिथियों के सम्बन्ध में कवियों के शेरों को भी उद्धृत किया है जिससे उनके विषय में किसी प्रकार का कोई सदेह नही रह जाता।

"नफायसुल मआसिर" में हुमायूं के इतिहास के अतिरिक्त कवियों की जीवनियों एव उनकी रचनाओं के उद्धरण के प्रसग में मीर्ज़ा कामरान, मीर्ज़ा अस्करी, मीर्ज़ा हिन्दाल, अमीर शम्सुद्दीन मुहम्मद अतका खा, बैराम खा, अली कुली सुल्तान एव शाह अबुल मआली का भी सक्षिप्त विवरण एव उनकी रचनाओं के उद्धरण दिए गए हैं।

अलाउद्दौला ने केवल मुख्य घटनाओं का सक्षिप्त उल्लेख किया है किन्तु इस कारण कि उसकी जानकारी के सूत्र बडे ही विश्वस्त थे उसकी रचना बडी ही महत्वपूर्ण हो गई है। चौसा की पराजय के उपरान्त हुमायूं की आगरा को वापसी, कन्नौज की पराजय एव हुमायूं के पजाब तथा सिंध की ओर प्रस्थान का उल्लेख मीर्ज़ा हैदर की "तारीखे रशीदी" के आधार पर हुआ है। हुमायूं के ईरान के निवास काल की घटनाओं का ज्ञान उसे स्वय था। इसके अतिरिक्त उसे अपने पिता मीर यह्या इब्ने मीर अब्दुल्लतीफ तथा अपने बडे भाई से भी बहुत कुछ ज्ञात हुआ होगा। हुमायूं ने कज़वीन में यह्या से भी भेंट की और उससे इतिहास-सम्बन्धी कुछ प्रश्न किए जिनके उसने बडे सतोषजनक उत्तर दिए। हुमायूं इस भेंट से बडा प्रभावित हुआ। हुमायूं के कन्धार एव काबुल विजय तथा मीर्ज़ा कामरान के विश्वासघात का प्रामाणिक ज्ञान, अलाउद्दौला को हुमायूं की सेना के ईरानी अधिकारियो एव अन्य अमीरो से हुआ होगा। अलाउद्दौला ने सभी घटनाओं का अत्यन्त सरल भाषा में बडे निष्पक्ष भाव से उल्लेख किया है। बहुत सी घटनाओं के तारीख़ सम्बन्धी शेरों के उल्लेख से उसकी रचना की प्रामाणिकता में बडी वृद्धि हो गई है। मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी ने इनमें से अनेक तारीखें "मुन्तखबुत्तवारीख भाग १" में भी उद्धृत की हैं। हुमायूं तथा अन्य अमीरो की कविताओं के उद्धरण ने उसकी रचना को तत्कालीन साहित्यिक विकास की जानकारी के लिए भी अनुपेक्ष्य बना दिया है।

गुलबदन बेगम

हुमायूं नामा

गुलबदन बेगम ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर पादशाह की पुत्री थी। उसकी माता का नाम दिल्दार बेगम था। उसका जन्म लगभग १५२३ ई० में हुआ था। उस समय बाबर को काबुल पर अधिकार जमाए हुए १९ वर्ष व्यतीत हो चुके थे। कुन्दुज़ तथा बदख्शा भी उसके अधिकार में थे। १५१९ ई० में उसने बजौर पर भी अधिकार जमा लिया था और १५०८ ई० में उसने पादशाह की उपाधि धारण कर ली थी।

दिलदार बेगम के तीन पुत्रियां तथा दो पुत्र हुए। सबसे बडी पुत्री का नाम गुलरंग बेगम

या। उसके बाद भी उसके एक पुत्री हुई जिसका नाम गुलचेहरा बेगम रखा गया। १५१९ ई० में उसके पुत्र हिन्दाल का जन्म हुआ। उसके बाद गुलबदन बेगम पैदा हुई। दूसरा पुत्र हिन्दुस्तान में आगरा में पैदा हुआ और उसका नाम मीर्जा अलवर रक्खा गया किन्तु १५२९ ई० में ही उसकी मृत्यु हो गई।

जब गुलबदन की अवस्था २ वर्ष की हो गई तो १५२५ ई० में हुमायूँ की माता माहम बेगम ने उसे गोद ले लिया। इससे पूर्व १५१९ ई० में वह मीर्जा हिन्दाल को भी गोद ले चुकी थी कारण कि हुमायूँ के जन्म (६ मार्च १५०८ ई०) के बाद माहम के कई बच्चे हुए किन्तु कोई जीवित न रहा।

नवम्बर १५२५ ई० को जब बाबर की सेनाएँ हिन्दुस्तान की विजय हेतु काबुल से रवाना हुईं तो उसकी अवस्था लगभग दो वर्ष की थी। बाबर ने हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करते समय अपने परिवार को काबुल में ही छोड़ दिया था। इस प्रकार वह तीन वर्ष से कुछ अधिक समय तक अपने पिता से पृथक् रही। १५२८ ई० में अन्तःपुर को काबुल से हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करने का आदेश हुआ किन्तु यात्रा की व्यवस्था एवं अन्य कारणों से तत्काल प्रस्थान न हो सका। २१ जनवरी १५२९ ई० को हुमायूँ की माता माहम चल खड़ी हुईं। २१ मार्च को बाबर को उन लोगों के काबुल से प्रस्थान करने के विषय में प्रामाणिक समाचार प्राप्त हुए। माहम ने यात्रा अधिक तेजी से की और २६ जून को यह काफिला आगरा पहुँच गया।

१५३० ई० में बाबर की मृत्यु हो गई। माहम का अधिक समय अपने पति की आत्मा की शान्ति हेतु दान-पुण्य एवं अपने ज्येष्ठ पुत्र हुमायूँ तथा अन्य पुत्रों और पुत्रियों की देखरेख में व्यतीत होने लगा। हुमायूँ के इस समय तक कोई पुत्र न था। उसके एक पुत्र अल अमान का "बाबर नामा" में भी उल्लेख हुआ है किन्तु शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गई। माहम की इस विषय में चिन्ता स्वाभाविक ही थी। उसने स्वयं प्रयत्न करके मेवा जान से हुमायूँ का विवाह कराया और जब मेवा जान के पुत्र के जन्म के समाचार प्रसिद्ध हुए तो उसने जो तैयारियाँ कराईं उनका गुलबदन बेगम ने सविस्तार उल्लेख किया है। अपने पुत्र की प्रारम्भिक विजयों पर भी माहम ने बड़े उत्साह से जश्नों के आयोजन कराये और गुलबदन बेगम ने तो 'आईना-बन्दी' की प्रथा का उसे आविष्कारक बताया है। १३ शव्वाल ९४० हि० (२७ अप्रैल १५३४ ई०) को माहम की मृत्यु हो गई। गुलबदन को अत्यधिक शोक होना स्वाभाविक ही था। वह लिखती है, "मुझे बड़ा शोक, नैराश्य एवं घोर कष्ट हुआ। रात दिन मैं विलाप किया करती थी। हजरत पादशाह ने कई बार आकर मुझे तसल्ली दी और मेरे प्रति कृपा एवं दया प्रदर्शित की। मेरी आका (माहम बेगम) जब मैं दो वर्ष की थी तो मुझे अपने महल में ले गईं और पालन-पोषण किया। जब मैं १० वर्ष की हुई तो उनका निधन हो गया। मैं एक वर्ष और अपनी आका के महल में रही। जब मैं ११ वर्ष की हुई और हजरत पादशाह धौलपुर पहुँचे तो मैं अपनी माता के पास चली गई।"[1]

हुमायूँ अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् अपनी माताओं, बहिनों एवं भाइयों का अत्यधिक

१ गुलबदन बेगम : हुमायूँ नामा पृ० ३०, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ५०६।

आश्रय प्रदान करने लगा था किन्तु गुल्बदन बेगम के विवरण से पता चलता है कि माहम बेगम की मृत्यु के उपरान्त वह इन लोगो के प्रति और भी अधिक स्नेह प्रदर्शित करने लगा। मीर्ज़ा हिन्दाल का विवाह उसने बडी धूम-धाम से कराया। इन बेगमों के प्रति अधिक स्नेह के कारण हुमायूँ की पत्नियाँ बुरा भी मानने लगी थी। बेगा बेगम ने तो हुमायूँ की गुजरात यात्रा के समय शिकायत भी की किन्तु हुमायूँ ने उसे फटकारते हुए कहा कि, "बीबी! प्रातःकाल तुमने मुझसे क्या शिकायत की? वह शिकायत करने का स्थान न था। तुम जानती हो कि हम तुम्हारी बडी नेमतो (बुजुर्गों) के घर रहे। मेरे लिए उन्हे सतुष्ट रखना परमावश्यक है। इसके बावजूद मैं उनसे लज्जित हूँ कि मैं उनके दर्शन में विलम्ब करता हूँ[1]।" गुलबदन बेगम के प्रति हुमायूँ विशेष स्नेह प्रदर्शित किया करता था। चौसा की पराजय से लौटने के उपरान्त हुमायूँ ने गुलबदन बेगम के प्रति अपना स्नेह इन शब्दो मे व्यक्त किया, "गुलबदन! मैं तुझे बहुत याद करता रहता था और कभी-कभी पछताते हुए कहता था कि काश तुझे अपने साथ ले आता। जिस समय हलचल मची तो मैंने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और कहा कि, 'ईश्वर को धन्य है कि मैं गुलबदन को न लाया'[2]।"

गुलबदन बेगम की रचना से यह पता नहीं चलता कि उसका विवाह कब हुआ किन्तु हुमायूँ जब चौसा की पराजयोपरान्त आगरा पहुँचा और गुलबदन बेगम उसकी सेवा मे उपस्थित हुई तो सम्भवत उस समय गुलबदन का विवाह हो चुका था। उसका पति खिज्र ख्वाजा खा मुगुल, ऐमन ख्वाजा का पुत्र और उसकी माता हैदर मीर्ज़ा दूगलात की बहिन होती थी। उसके दो अन्य भाई महदी एव मसऊद भी हुमायूँ की सेवा में थे अत खिज्र ख्वाजा खा को चगताई वश में विशेष महत्व प्राप्त था। सम्भवत इसी महत्व के कारण मीर्ज़ा कामरान जब आगरा से पजाब जाने लगा और बडे-बडे मुगुल अमीरो को अपनी ओर मिलाने लगा तो उसने गुलबदन बेगम को भी उसकी इच्छा के विरुद्ध अपने साथ ले लिया। वह समझता होगा कि इस प्रकार खिज्र ख्वाजा खा एव उसके भाई भी उसके सहायक हो जायेंगे। गुलबदन बेगम मीर्ज़ा कामरान के साथ न जाना चाहती थी किन्तु उसका आग्रह स्वीकार न किया गया। गुलबदन बेगम ने आपत्ति प्रकट करते हुए हुमायूँ को लिखा कि "हजरत से मुझे यह आशा न थी कि इस तुच्छ को अपनी सेवा से पृथक् करेंगे और मीर्ज़ा कामरान को सौंप देंगे।" किन्तु हुमायूँ ने उसे सतुष्ट करते हुए लिखा, "मेरी स्वय इच्छा न थी कि तू मुझसे पृथक् हो किन्तु जब मीर्ज़ा ने अत्यधिक आग्रह किया एव विनयपूर्वक प्रार्थना की तो यह परमावश्यक हो गया कि तुझे मीर्ज़ा को सौप दूँ कारण कि इस समय हम भी युद्ध मे सलग्न हैं। यदि ईश्वर ने चाहा तो इस युद्ध के समाप्त होते ही सर्वप्रथम तुझे बुलवा लूँगा[3]।"

हुमायूँ कन्नौज में पराजित हो जाने के उपरान्त आगरा होता हुआ लाहौर पहुँचा। लाहौर मे गुलबदन बेगम को हुमायूँ के दर्शन का पुन अवसर मिला। उस समय भाइयो का मत-भेद अपनी चरम सीमा को पहुँच चुका था। गुलबदन बेगम इससे बडी दुखी थी। उसने यह आशा व्यक्त की कि काश वह सब भाइयो को एकत्र देख सकती। हुमायूँ को गुलबदन बेगम के यह मार्मिक शब्द याद

१ हुमायूँ नामा पृ० ३८, प्रस्तुत ग्रथ पृ० ५२१।

२ वही, पृ० ४३, प्रस्तुत ग्रथ पृ० ५२७।

३ वही, पृ० ४६, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ५३०।

थे। संयोग से १५४८ ई० में किश्म में जब सब भाई कुछ समय के लिए संगठित हो गए और हुमायूँ ने एक बहुत बड़े जश्न का आयोजन किया तो सब के समक्ष गुलबदन बेगम के शब्दों की बड़ी भावुकता से पुनरावृत्ति की[१]।

शेर शाह के लाहौर पहुँच जाने के कारण मुगलों को पंजाब छोड़ देना पड़ा। झेलम नदी के थोड़ा सा पश्चिम की ओर खुशाब के आगे मार्ग कुछ दूर जाकर दो भागों में विभाजित हो जाता था, एक उत्तर-पश्चिम की ओर काबुल चला जाता था और दूसरा दक्षिण पश्चिम की ओर सिन्ध चला जाता था। यहाँ तक वे साथ गए किन्तु यहाँ से कुछ वाद-विवाद के उपरान्त हुमायूँ सिन्ध की ओर तथा मीर्जा कामरान काबुल की ओर चला गया। बेगमें भी दो भागों में बट गईं। कुछ हुमायूँ के साथ और कुछ मीर्जा कामरान के साथ काबुल चली गईं। गुलबदन बेगम ने स्पष्ट रूप से कहीं नहीं लिखा है कि उसे काबुल जाना पड़ा किन्तु तत्कालीन घटनाओं के अध्ययन से पता चलता है कि उसे मीर्जा कामरान के साथ ही जाना पड़ा। हमीदा बानो बेगम के हुमायूँ से विवाह के समय यदि वह अपनी माता दिलदार बेगम के साथ होती तो इस सम्बन्ध में वह कोई न कोई सेवा अवश्य करती जिसका उसकी रचना में उल्लेख होता। काबुल विजय के उपरान्त १५४४ ई० में, जब काबुल में बेगमों की हुमायूँ से पुनः भेंट हुई तो उसमें हमीदा बानो बेगम भी थी। वह लिखती है "१२ तारीख (१२ रमजान ९५१ हि०/२७ नवम्बर १५४४ ई०) को मेरी माता दिलदार बेगम, गुलचेहरा बेगम तथा यह तुच्छ हजरत की सेवा में उपस्थित हुईं। क्योंकि ५ वर्ष से हम उनकी सेवा से वंचित थे और वियोग के कष्ट भोग रहे थे अतः उससे मुक्त होकर अपने आश्रयदाता की सेवा द्वारा सम्मानित हुए। उनके दर्शन-मात्र से हमारे दुखी हृदय को प्रोत्साहन एवं नेत्रों को ताज़ा प्रकाश प्राप्त हो गया। प्रसन्नतापूर्वक हम हर समय शुक्र के सिज्द करते रहते थे[२]।'

मीर्जा कामरान ने गुलबदन बेगम के प्रति कभी भी कोई अनुचित व्यवहार न किया। हुमायूँ द्वारा काबुल विजय के पूर्व तथा उसके बाद भी मीर्जा कामरान, गुलबदन के प्रति विशेष स्नेह प्रदर्शित करता रहा।

१५४७ ई० में जब मीर्जा कामरान ने काबुल पर पुनः अधिकार जमा लिया और अन्य बेगमों पर अत्याचार होने लगा तो उसने गुलबदन बेगम और उसकी माता को बुलवाकर आदेश दिया कि उसकी माता तो कूरबेगी के घर में रहे और गुलबदन बेगम उसके (मीर्जा कामरान के) साथ रहे। गुलबदन बेगम ने इसे स्वीकार न किया और स्पष्ट रूप से कह दिया कि, "यहाँ किस लिये रहूँ? जहाँ मेरी माता रहेगी वहीं मैं रहूँगी।" मीर्जा कामरान उससे इस बात का आग्रह करने लगा कि वह अपने पति खिज्र ख्वाजा खाँ को पत्र लिख दे कि वह उसकी सहायता करे किन्तु उसने यह बात भी स्वीकार न की और उत्तर दिया, 'खिज्र ख्वाजा खाँ मेरे पत्र को नहीं पहिचान सकते। मैंने उन्हें कभी भी पत्र नहीं लिखा है। जब वे बाहर होते हैं तो वे अपने पुत्र की ओर से लिखते हैं। आपके हृदय में जो आये लिख दें।" किन्तु बेगम ने खान को पहिले से ही चेतावनी दे दी थी, "आपके भाई मीर्जा कामरान के साथ होंगे। आप कदापि यह विचार न करें कि उनसे (हुमायूँ

१ हुमायूँ नामा पृ० ८४, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ५६५।
२ वही, पृ० ७१, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ५५७।

से) पृथक् होकर अपने भाइयों से मिल जायें। कदापि-कदापि हजरत से पृथक् होने का विचार न कीजियेगा।" उसने इस बात पर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की है कि उसने जो कुछ कहा था, खान ने उसके विरुद्ध कोई बात नहीं की[1]।

हिन्दुस्तान विजयोपरान्त हुमायूँ ने अपनी मृत्यु के पूर्व ही बेगमों को काबुल से बुलवाने की योजना बना ली किन्तु उसकी मृत्यु के कारण अकबर उन्हें तुरन्त न बुलवा सका फिर भी वे १५५७ ई० के प्रारम्भ में पश्चिमी सिवालिक में स्थित मानकोट नामक स्थान पर पहुँच गईं। अकबर का पड़ाव उस समय वहीं था। वह उनके स्वागतार्थ पहुँचा। बेगमों के इस काफिले में हमीदा बानो बेगम को मुख्य स्थान मिलना ही चाहिये था किन्तु गुलबदन बेगम, गुल्चेहरा बेगम, हाजी बेगम तथा सलीमा बेगम को भी कम महत्व प्राप्त न था।

उसके हिन्दुस्तान के आगमन से मक्का की यात्रा तक का हाल किसी भी इतिहास में नहीं मिलता। इस बीच में अकबर की माता हमीदा बानो बेगम से उसकी बड़ी घनिष्ठता रही होगी। १५७५ ई० में अकबर ने उसे हज करने की अनुमति दे दी। इस काफिले में उसके अतिरिक्त अन्य बेगमें भी थीं। बैराम खाँ 'खाने खानाँ' की विधवा एवं अकबर की पत्नी सलीमा सुल्तान बेगम, मीर्जा अस्करी की विधवा सुल्तानम, मीर्जा कामरान की पुत्रियाँ हाजी तथा गुलअजार बेगम, गुलबदन बेगम की दो पोतियाँ—उम्मे कुल्सूम तथा सलीमा खानम, बाबर के अन्तःपुर में गुलनार आगाचा, बीबी सरो कद अथवा सरो सेही, हुमायूँ के अन्तःपुर से बीबी सफीआ तथा शाहम आगा, भी साथ थीं।

१५ अक्तूबर १५७५ ई० को यह काफिला फतहपुर सीकरी से रवाना हुआ। शाहजादा सलीम एवं शाहजादा मुराद को, जिनकी अवस्था क्रमशः ५ तथा ६ वर्ष थी, उन्हें पहुँचाने का आदेश हुआ। कई अमीर काफिले के साथ नियुक्त किए गए जिनमें एक मुहम्मद बाकी खाँ कोका तथा दूसरा अल्पो का रूमी खाँ थे। सूरत में इस काफिले को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अकबर ने कुलीज खाँ को, जो ईदर में था, इन सब कठिनाइयों के समाधान का आदेश दिया और बेगमें १७ अक्तूबर १५७६ ई० को सूरत से रवाना हुई और उन्होंने मक्का पहुँच कर हज किया। १५७९ ई० में मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी का एक मित्र ख्वाजा यहया मीर हज नियुक्त हुआ और उसे बेगमों को हिन्दुस्तान लाने का आदेश हुआ। लौटते समय अदन में जहाज टूट गया और कुछ बेगमों को सात और कुछ को बारह मास तक वहाँ ठहरे रहना पड़ा किन्तु अप्रैल १५८० ई० में एक जहाज वहाँ पहुँच गया जिसमें बायजीद ब्यात अपने परिवार सहित मक्का जा रहा था। उसने इन लोगों की बड़ी सहायता की और मार्च १५८२ ई० में यह काफिला फतहपुर सीकरी पहुँच गया[2]। हिन्दुस्तान लौट आने के उपरान्त गुलबदन बेगम की सबसे बड़ी सेवा अकबर के आदेशानुसार "हुमायूँ नामा" की रचना थी। ६ जिल्हिज्जा १०११ हि० (७ मई १६०३ ई०) में उसकी मृत्यु हो गई।

"अकबर नामा" के लिए सामग्री एकत्र करने के उद्देश्य से बहुत से लोगों को अकबर ने यह आदेश दिया कि उन्हें बाबर तथा हुमायूँ के विषय में जो कुछ स्मरण हो, उसे वे लिपिबद्ध

१ हुमायूँ नामा पृ० ७९ ८०, प्रस्तुत ग्रंथ पृ० ५६० ६६१।
२ बायजीद तजकिरये हुमायूँ व अकबर, पृ० ३५५ ६६।

करें। इस आदेशानुसार मेहतर जौहर आफ्ताबची द्वारा रचित "तजकिरतुल वाकेआत" एवं बायजीद ब्यात द्वारा रचित "तजकिरये हुमायूँ व अकबर" अब भी प्राप्य है। गुलबदन बेगम के "हुमायूँ नामा" की रचना भी इसी आदेशानुसार हुई। गुलबदन बेगम ने लिखा है कि, "जिस समय हजरत फिरदौस मकानी परलोकगामी हुए, उस समय उसकी अवस्था ८ वर्ष की थी अत उनके विषय में उसे बहुत कम स्मरण रह गया था किन्तु शाही आदेशानुसार जो कुछ उसने सुना अथवा जो कुछ स्मरण रह गया था उसे लिपिबद्ध किया है।" उसने अपनी रचना को दो भागों में विभाजित किया– एक में बाबर का इतिहास और दूसरे में हुमायूँ का इतिहास। बाबर के इतिहास के विषय में उसने स्वयं लिखा है कि, "उसके बाबा हजरत बादशाह ने अपने 'वाकेआ नामा' में अपना इतिहास लिख दिया है अत उनका इतिहास केवल आशीर्वाद हेतु लिपिबद्ध किया जा रहा है[1]।" फिर भी बाबर के विषय में उसका इतिहास बड़ा ही महत्वपूर्ण है। उसने कई घटनाओं का बड़े ही रोचक ढग से विवरण दिया है। सुलतान इबराहीम की पराजय के उपरान्त बाबर ने दिल खोलकर दान दिया और काबुल तथा एराक के अपने किसी सम्बन्धी को भी इस समय वह न भुला सका। काबुल से बहुत दूर आगरा में रहते हुए भी वह अपने सम्बन्धियों से जिस प्रकार स्नेहपूर्वक व्यवहार करता था वह उसे उस समय भी पूर्ण रूप से स्मरण था। गुलबदन बेगम के 'हुमायूँ नामा' से पता चलता है कि उसने असस को तीन सेर पादशाही वजन की एक बड़ी अशर्फी प्रदान की जो उसकी आँखें बाँध कर उसके गले में लटका दी गई। इससे पूर्व बाबर के आदेशानुसार उसे केवल यही बताया गया था कि उसके लिए एक ही अशर्फी भेजी गई है। वह इस बात से बड़ा दुखी था किन्तु जब अशर्फी उसकी गरदन में पड़ी तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।

बाबर जिस प्रकार अपने परिवार वालों से स्नेह करता था उसका पता यद्यपि "बाबरनामा" से भी चलता है किन्तु 'हुमायूँ नामा' से इसकी और भी पुष्टि होती है। वह हर रोज शुक्रवार को अपने परिवार की बेगमों को देखने जाया करता था। गरमी की अधिकता के कारण माहम ने एक दिन उससे कहा कि, 'यदि शुक्रवार को न जायेंगे तो क्या हो जायगा? बेगमें इस बात से रुष्ट न होंगी।' बादशाह ने माहम की बात स्वीकार न की और कहा कि, "अबू सईद सुलतान मीर्जा की पुत्रियों को, जो अपने पिता और भाइयों से पृथक् हो चुकी हैं, यदि मैं प्रोत्साहन न दूँगा तो कौन देगा?" आगरा में महलों के निर्माण के समय भी उसे बेगमों का विशेष ध्यान था और उसने ख्वाजा कासिम मेमार को उनके महलों के निर्माण के विषय में खास ख्याल रखने का आदेश दिया[2]।

गुलबदन बेगम ने काबुल से आगरा की यात्रा की कई रोचक घटनाओं का उल्लेख किया है जिनसे पता चलता है कि बाबर कितनी उत्सुकता से उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। हुमायूँ से बाबर को जितना अधिक स्नेह था उसका मार्मिक विवरण सर्व प्रथम "हुमायूँ नामा" में ही हुआ है और "अकबर नामा" में उसे अधिक विस्तार से लिखा गया है। गुलबदन बेगम के वृतांत से पता चलता है कि बाबर की मृत्यु का कारण वही विष था जो इबराहीम की माता ने उसे २१ दिसम्बर

१ हुमायूँ नामा पृ० ३, मुगल कालीन भारत–बाबर, पृ० ३५५।
२ वही पृ० १४, मुगल कालीन भारत–बाबर, पृ० ३६५ ३६६।

१५२६ ई० को दिया था। अपनी रुग्णावस्था में भी बाबर को हिन्दाल की कितनी प्रतीक्षा थी और यह जानने के लिए कि हिन्दाल कितना बडा हो गया है वह कितना उत्सुक था इसका पता केवल "हुमायूँ नामा" से ही चलता है। इस प्रकार बाबर के सम्बन्ध में गुलबदन बेगम ने अपनी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर जो कुछ भी लिखा है, यद्यपि बडा सक्षिप्त है किन्तु अत्यन्त महत्वपूर्ण है और यदि उसने इसकी रचना न की होती तो बाबर के विषय मे हमारी जानकारी कितनी अधूरी रह जाती इसका अनुमान केवल "हुमायूँ नामा" के अध्ययन से ही लगाया जा सकता है।

गुलबदन बेगम की रचना का सबसे अधिक महत्वपूर्ण भाग हुमायूँ का इतिहास है। जहाँ तक बेगम की जानकारी के सूत्रो का सम्बन्ध है, इस इतिहास को तीन भागो मे विभाजित किया जा सकता है :—

(१) गुलबदन बेगम की अपनी जानकारी पर आधारित हुमायूँ के सिंध की ओर प्रस्थान तक का तथा हुमायूँ के काबुल पहुँचने के समय से मीर्जा कामरान के अधे बनाये जाने तक का इतिहास।

(२) हमीदा बानो बेगम द्वारा वर्णित सिंध से ईरान तक की यात्रा और काबुल विजय की घटनायें।

(३) खिज्र ख्वाजा खा तथा अन्य सम्बन्धियो द्वारा वर्णित घटनाये।

हुमायूँ के पजाब तथा सिंध की ओर पलायन के पूर्व की जिन घटनाओ का गुलबदन बेगम ने उल्लेख किया है उनमें अभियानो एव अन्य राजनीतिक घटनाओ का विवरण बडे सक्षिप्त रूप से दिया गया है। कुछ महत्वपूर्ण युद्धो का उल्लेख केवल थोडे से शब्दो मे कर दिया गया है किन्तु अन्त पुर के भीतर की घटनाओ तथा बेगमो के तत्कालीन जीवन का उल्लेख उसने विस्तार से किया है। हुमायूँ का अपनी माता तथा बहिनो के प्रति प्रेम, माहम बेगम की हुमायूँ के पुत्र के जन्म के विषय मे चिन्ता, बेगमो द्वारा पुत्र के जन्म की प्रतीक्षा, हुमायूँ के चुनार के अभियान से वापस होने के उपरान्त माहम बेगम द्वारा जश्न का आयोजन, तिलिस्म भवन एव मीर्जा हिन्दाल के विवाह के जश्न का उल्लेख केवल गुलबदन बेगम के 'हुमायूँ नामा' मे ही हुआ है। इस विवरण से हमे उस समय के उच्च वर्ग के सामाजिक एव सांस्कृतिक जीवन के सजीव चित्र प्राप्त हो जाते है।

हुमायूँ की सिंध-यात्रा के प्रसग में गुलबदन बेगम ने हुमायूँ तथा हमीदा बानो बेगम के विवाह का बडे विस्तार से उल्लेख किया है। इस विषय में उसे हमीदा बानो बेगम के अतिरिक्त अपनी माता दिलदार बेगम से भी बहुत कुछ जानकारी प्राप्त हुई होगी जिसने विवाह से सम्बन्धित कठिनाइयो के समाधान में बडी सहायता की थी। मालदेव के राज्य की ओर प्रस्थान एव वहाँ से वापसी के समय हुमायूँ को जो कष्ट भोगने पडे उनका सविस्तार उल्लेख गुलबदन बेगम ने किया है। मीर्जा शाह हुसेन द्वारा कदम कदम पर विश्वासघात के कारण हुमायूँ को जिन कठिनाइयो का सामना करना पडा, उनकी भी बेगम ने चर्चा की है। यद्यपि इन घटनाओ का उल्लेख जौहर ने भी किया है किन्तु बेगम की जानकारी के सूत्र भी कम विश्वस्त न थे। हुमायूँ द्वारा खानजादा बेगम को कामरान को समझाने के लिए भेजने, खानजादा बेगम के समझाने के बावजूद मीर्जा कामरान का कन्धार में अपने नाम का खुत्बा पढवाने के लिए आग्रह, का हाल गुलबदन बेगम को अपनी माता एव खानजादा बेगम से ज्ञात हुआ होगा। यह विवरण भी हमे किसी अन्य ग्रथ मे नही मिलता।

कन्धार से ईरान की यात्रा मे हमीदा बानो बेगम भी हुमायूँ के साथ थी। शाह तहमास्प द्वारा हुमायूँ की दावत का उल्लेख सभी इतिहासो मे हुआ है किन्तु हमीदा बानो बेगम की दावत का उल्लेख गुलबदन बेगम ने ही किया है। रोशन कोका एव ख्वाजा गाजी द्वारा हुमायूँ के लालो की चोरी, हमीदा बानो बेगम की चिन्ता एव ख्वाजा मुअज्जम द्वारा वह्नि की सहायता का उल्लेख गुलबदन बेगम ने बडे मार्मिक शब्दो मे किया है।

हुमायूँ के काबुल विजय के बाद की घटनाओ का उल्लेख बेगम ने अपनी जानकारी के आधार पर किया है। उस समय हमीदा बानो बेगम भी काबुल पहुँच गई थी। अन्य बेगमो ने भी उसे घटनाओ को क्रम से लिपिबद्ध करने मे सहायता दी होगी। मीर्जा कामरान ने हुमायूँ से काबुल के लिए सघर्ष के समय बेगमो को जो कष्ट दिए उन्हे गुलबदन ने स्वय भोगा था। इस काल मे थोडे थोडे समय के लिए जब कभी हुमायूँ तथा बेगम कष्टो से मुक्त हो जाती तो आमाद-प्रमोद एव दावतो का भी आयोजन होता था। इस काल के इतिहास की भी विशेषता स्त्रियो के जीवन के सजीव चित्र एव उनके चरित्र का रोचक विवरण है। सुलेमान मीर्जा मीरान शाही की पत्नी हरम बेगम द्वारा सेना के नेतृत्व का उल्लेख बेगम ने बडे स्पष्ट रूप से किया है। मीर्जा कामरान की मूर्खता एव हरम बेगम मे इश्क की घोषणा के दुष्परिणाम की गुलबदन बेगम ने सविस्तार चर्चा की है। मीर्जा हिन्दाल, बेगम का सगा भाई ही था। उसकी हत्या पर शाक एव मीर्जा कामरान के प्रति उसका क्रोध स्वाभाविक ही है। बेगम ने मीर्जा हिन्दाल के प्रति हुमायूँ के शोक एव बेगमो के विलाप तथा उसकी लाश के दफन का भी विस्तार से उल्लेख किया है। मीर्जा कामरान के बन्दी बना लिए जाने पर हुमायूँ ने जिस प्रकार उसकी हत्या के विरुद्ध आपत्ति प्रकट की उसका गुलबदन बेगम ने बडे मार्मिक शब्दो मे उल्लेख किया है। मीर्जा कामरान के अधा बना दिए जाने के बाद की घटनाये गुलबदन बेगम के प्रकाशित 'हुमायूँ नामे' मे प्राप्य नही। सम्भवत गुलबदन बेगम ने दोनो भाइयो की विदा का हृदय-विदारक दृश्य प्रस्तुत किया होगा। यदि गुलबदन बेगम की रचना के आगे के पृष्ठ कभी मिल गए तो सम्भवत बहुत सी तत्कालीन ऐतिहासिक समस्याओ का समाधान हो जायगा।

गुलबदन बेगम की रचना से पता चलता है कि उसे चगताई कबीला की बेगमो के प्रति बडा स्नेह था। उसने उनके जीवन काल की अनेक घटनाओ का बडा रोचक वर्णन किया है। अन्त पुर के भीतर की घटनाओ एव हुमायूँ के व्यक्तिगत जीवन के अतिरिक्त बहुत सी बातो का गुलबदन बेगम ने अधिक विस्तार मे उल्लेख नही किया। यद्यपि यह घटनायें हमे अन्य रचनाओ मे भी मिल जाती है, परन्तु गुलबदन बेगम ने यदि 'हुमायूँ नामा' की रचना न की होती तो बहुत सी बाते, जो हमें इसी ग्रथ में मिलती है, कही न मिल पाती। गुलबदन बेगम ने जिस सरलता एव भावुकता से विभिन्न घटनाओ का उल्लेख किया है और जिस रोचक ढग से अनेक चरित्र एव दृश्य प्रस्तुत किए है, वे उसकी रचना की बहुत बडी विशेषता है। अपने सगे भाई हिन्दाल के विद्रोह का उल्लेख करते हुए उसने तथ्य को छिपाने का प्रयत्न किया है और उस निष्पक्षता का प्रदर्शन नहीं किया जो उसके पिता की रचना का बहुत बडा गुण है किन्तु उसने अन्य घटनाओ का उल्लेख बडी ईमानदारी से किया है।

मिसेज बेवरिज, जिसने इस ग्रथ को सम्पादित करके इसका अंग्रेजी भाषातर प्रस्तावना सहित प्रकाशित किया है, ने लिखा है कि, हिन्दुस्तान के मुगुल काल का जिन लोगो ने इतिहास लिखा है, उन्हे साधारणत इस बात का ज्ञान नही कि गुल्बदन बेगम ने किसी ग्रथ की रचना भी की। इसका ज्ञान मिस्टर अर्सकिन को भी न रहा होगा अन्यथा वह बाबर एव हुमायूं के वश का इतिहास अधिक शुद्ध रूप से लिखते। इसी प्रकार प्रोफेसर ब्लाखमैन को भी इसकी जानकारी न रही होगी। और जब तक डा० रियु ने अपना कैटलाग न तैयार कर लिया यह ग्रथ 'साहित्यिक परदानशीन" रहा[१]।

अभी तक इसकी केवल एक ही प्रति का पता चल सका है जो ब्रिटिश म्युजियम द्वारा १८६८ ई० मे कर्नल जार्ज विलियम हैमिल्टन से क्रय की गई। इसके अन्त के पृष्ठ नष्ट हो चुके है और जो कुछ प्राप्य है वही मिसेज बेवरिज ने प्रकाशित कर दिया है अत कही कही कुछ सदेहजनक शब्द रह गए है जिनका समाधान बिना किसी अच्छी हस्तलिपि के सम्भव नही। लखनऊ से भी १९२५ ई० मे मिसेज बेवरिज के सस्करण के आधार पर इसे प्रकाशित किया जा चुका है और मिसेज बेवरिज द्वारा सकलित सस्करण को ताशकेन्त से १९५९ ई० मे रूसी भाषातर सहित भी प्रकाशित कर दिया गया है[२]।

जौहर आफतावची

तजकिरतुल वाकेआत

अबुलफज़ल के "अकबरनामा' की आधार-भूत सामग्री के लिए जिन ग्रथो की रचना कराई गई उनमे जौहर आफतावची के 'तजकिरतुल वाकेआत' को बडी प्रसिद्धि प्राप्त है। रमजान ९६० हि० (अगस्त १५५३ ई०) मे जब मीर्जा कामरान को अधा बनाने के लिए जौहर उसके पास पहुँचा तो उसने मीर्जा को बताया कि वह १९ वर्ष से हुमायूँ की सेवा मे है[३]। इस प्रकार वह ९४१ हि० (१५३४–३५ ई०) म हुमायूँ की सेवा मे पहुँचा होगा। १५४३ ई० मे जब हुमायू से शाल मस्तग मे एक समाचारवाहक ने मीर्जा अस्करी के समाचार पहुँचाने के लिए समस्त उपस्थितगणो को हटा देने का आग्रह किया तो हुमायू ने जौहर को न हटाया और यह कह दिया कि, "वह बालक है, कोई आपत्ति नही[४]।" इस प्रकार यह कहना बडा कठिन है कि जिस समय वह हुमायू की सेवा में पहुँचा तो उसकी क्या अवस्था रही होगी।

हुमायूँ के सिन्ध पहुँचने तक के विवरण मे जौहर ने अपने विषय मे कही कुछ नही लिखा किन्तु उच्च तथा भक्कर की यात्रा का उल्लेख करते हुए उसने कई घटनाओ के प्रसग मे अपनी चर्चा की है जिससे पता चलता है कि वह सर्वदा हुमायूँ के साथ साथ ही रहता था। जिस समय हुमायू कन्धार को कन्धार मे छोडकर ईरान की ओर रवाना हुआ तो जौहर भी कन्धार ही में रह गया किन्तु शीघ्र ही वह कन्धार से भागकर हिरात मे हुमायू की सेवा मे पहुँच गया[५]। उस समय स पजाब विजय

१ Gulbadan Begum (Princess Rose Body) History of Humayun (*Humayun Nama*) London 1902, Preface VII

२ उजबकिस्तान स स र फलार एकादिमिया सी नशियाती ताश्केन्त, १९५९।

३ प्रस्तुत ग्रथ, पृ० ७०१।

४ वही, पृ० ६४६।

५ वही, पृ० ६४७।

तक वह बराबर हुमायू के साथ रहा। हुमायू को उसपर अत्यधिक विश्वास था। उसने बहुत सी छोटी छोटी घटनाओ का, जिनसे उसका सम्बन्ध था, अधिक विस्तार से उल्लेख किया है। मीर्जा कामरान की आँखो में सलाई फेरने के लिए जिन लोगो को भेजा गया, उनमें जौहर भी सम्मिलित था। उसने इस घटना की बड़े ही मार्मिक शब्दो मे चर्चा की है। पजाब विजयोपरान्त हुमायू ने जौहर को हैबतपुर परगने का राजस्व वसूल करने के लिये नियुक्त कर दिया था। उसने इस परगने का प्रबन्ध इतनी योग्यता से किया कि हुमायू ने प्रसन्न होकर तातार खा लादी का खजाना एव उसके अधीनस्थ प्रदेश उसे प्रदान कर दिये। तदुपरान्त वह कुछ अन्य अधिकारियो के साथ पजाब एव मुल्तान का खजाची नियुक्त कर दिया गया। इस बीच में महमन्द एव खलील अफगानो ने ४०० अश्वारोहियो सहित लाहौर के आस पास आक्रमण कर दिया। जौहर के आग्रह पर उसके सहायको ने उन लोगो पर हमला करके उन्हे पराजित कर दिया[१]। हुमायू के देहली पर अधिकार जमा लेने के उपरान्त वह शाह अबुल मआली को सिकन्दर के विरुद्ध युद्ध के विषय में उचित परामर्श देता रहा[२]। हुमायू के निधन के समय भी वह खजाची के रूप में कार्य कर रहा था।

"तजकिरतुल वाकेआत" अथवा किसी अन्य ग्रथ से इस बात का पता नही चलता कि अकबर के राज्यकाल मे उसे कोई पद प्राप्त था अथवा नही। सम्भवत उसे कोई महत्वपूर्ण अधिकार न प्राप्त था अन्यथा बायजीद की भाति वह अकबर के राज्यकाल सबधी भी कुछ न कुछ अपने सस्मरण लिखता। "तजकिरतुल वाकेआत" की प्रस्तावना में उसने लिखा है कि, 'वह हर दशा में तथा हर समय हुमायू की सेवा में उद्यत रहता था अत उसके हृदय में आया कि आशीर्वाद के रूप में उन घटनाओ एव मामलो को अपनी योग्यतानुसार, न कि ससार के बादशाहो की प्रतिभा के योग्य, लिपिबद्ध करे।' इन घटनाओ की रचना ९९५ हि० (१५८६-८७ ई०) से प्रारम्भ हुई। प्रारम्भिक सनो एव पिछली तारीखो में जो घटनाये घटी वे लिख नहीं ली गई थी। यदि ऐसा होता तो प्रत्येक घटना की तारीख एव उसका सन् दिया जाता किन्तु हजरत के चरणो के आशीर्वाद से 'याद दाश्त' लिख ली गई ताकि उनकी सम्मानित दृष्टि इसे स्वीकार कर ले[३]।

इस प्रकार किसी डायरी के न होने के कारण घटनाओ के क्रम के उल्लेख में जौहर से कही कही भूल हो गई है। उसकी भाषा सरल, सुबोध एव बनावट से शून्य है। घटनाओ को भी उसने बडी सच्चाई से अपनी ओर से कुछ मिलाये बिना उल्लेख कर दिया है और इस ग्रथ को ३३ फस्लो (अध्यायो) में विभाजित किया है।

यह ग्रथ अभी तक प्रकाशित नही हो सका है। प्रस्तुत अनुवाद निम्नाकित हस्तलिपियो के आधार पर तैयार किया गया है

ब्रिटिश म्यूजियम मैनुस्क्रिप्ट ऐड १६७११ जो १०१९ हि० (१६१० ई०) मे नकल हुई। इसमें १४६ वरक हैं और यह १०$\frac{3}{4}$" लम्बी तथा ७" चौडी है। इसके प्रत्येक पृष्ठ में ३$\frac{1}{2}$" लम्बी १५ सतरें हैं। इसके प्रथम पृष्ठ पर एक टिप्पणी है जिससे पता चलता है कि इस सफ़वी शाहज़ादा अबुल फ्तह सुल्तान मुहम्मद मीर्जा को कुछ समय के लिए विलियम यूल ने १८०१

१ प्रस्तुत ग्रन्थ, पृ० ७१९ ७२०।
२ वही, पृ० ७२० ७२१।
३ वही, पृ० ५७९ ५८०।

ई० में अध्ययन हेतु दे दिया था। इस्लामी इतिहास सबंधी बीच बीच में जो कहानियाँ जौहर ने उदाहरण स्वरूप दी हैं उनकी कटु-आलोचना करते हुए शाहजादा अबुल फतह सुल्तान ने पुस्तक के हाशिये पर अपने विचार व्यक्त किए हैं[1]। चार्ल्स स्टीवर्ट ने इसी के आधार पर अपना अनुवाद तैयार किया जो ओरियटल ट्रांस्लेशन फंड लन्दन के तत्वाधान में १८३२ ई० में प्रकाशित हुआ है।

अलीगढ विश्वविद्यालय में रामपुर के नव्वाब अब्दुस्सलाम खा के हस्तलिपियों के संग्रह में "तज़किरतुल वाकेआत' की जो हस्तलिपि है वह जमादि उल-अव्वल १११७ हि० (अगस्त-सितम्बर १७०५ ई०) में नक़ल हुई थी[2]। अलीगढ विश्वविद्यालय को जो ग्रथ नव्वाब शेफ्ता ने प्रदान किए थे उनमें भी "तज़किरतुल वाकेआत' की एक प्रति है जो १२८३ हि० (१८६६-६७ ई०) में नक़ल की गई थी[3]। अलीगढ विश्वविद्यालय के हस्तलिपियों के संग्रह में भी १५०-२०० वर्ष पुरानी "तज़किरतुल वाकेआत" की एक हस्तलिपि है किन्तु इस पर कोई तारीख नहीं लिखी है[4]। इन चारों हस्तलिपियों में कोई विशेष अन्तर नहीं।

सम्भवत अकबर के राज्य-काल ही में जौहर की सरल भाषा को किसी ने अधिक विद्वता पूर्ण ढंग से एव कुछ घटनाओं को, जो 'तज़किरतुल वाकेआत" में अधिक स्पष्ट न थी, स्पष्ट करके "जवाहर शाही" के नाम से सकलित किया। इसमें बहुत से अमीरों तथा अधिकारियों के परिचय को उनके अकबर के समय के पद देकर और भी अधिक सुबोध बना दिया गया है। ५ बाब (खड) तथा प्रत्येक बाब (खड) कई कई फस्लों (अध्यायों) में विभाजित हैं और ग्रथ का नाम "जवाहरशाही' रक्खा गया है[5]। इसकी हस्तलिपि इडिया आफिस लन्दन में उपलब्ध है।

"जवाहर शाही" से भी अधिक काव्यमय भाषा में जौहर के संस्मरण को, अकबर की सेवा में प्रस्तुत करने के लिये शेख इलाहदाद फैजी सरहिन्दी[6] ने 'हुमायूं शाही" के नाम से सकलित किया है। इसमें घटनाओं को अधिक टीका टिप्पणी सहित प्रस्तुत किया गया है। इसकी हस्तलिपियाँ कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी[7] तथा इंडिया आफिस[8] लन्दन में प्राप्य हैं।

१ इसका नाम अनुवाद में (क) रक्खा गया है।
२ इसका नाम अनुवाद में (ख) रक्खा गया है।
३ इसका नाम अनुवाद में (ग) रक्खा गया है।
४ इसका नाम अनुवाद में (घ) रक्खा गया है।
५ इसका नाम अनुवाद में (ङ) रक्खा गया है।
६ शेख इलाहदाद फैज़ी बिन अब्दुल अलमा अली शेर सरहिन्दी बख्शियुल ममालिक शेख फरीद बुखारी," जिसे बाद में मुर्तुजा खा की उपाधि प्राप्त हुई, का सेवक था। उसकी रचनाओं में **मदारुल अफ़ाज़िल** नामक फ़ारसी शब्द कोश एव **अकबर नामा** बड़ी प्रसिद्ध हैं। **मदारुल अफ़ाज़िल** में शब्दों के अर्थ फारसी, अरबी, तुर्की तथा हिन्दी चारों भाषाओं में दिये गये हैं। पाकिस्तान से इसके कुछ खड प्रकाशित भी हो चुके हैं। **अकबर नामा** में लेखक ने अकबर का इतिहास **तबकाते अकबरी** एव **अकबर नामा** के आधार पर लिखा है किंतु कहीं-कहीं कुछ अपनी ओर से भी महत्वपूर्ण बातें लिख दी हैं। अकबर के दक्षिण के आक्रमण का इतिहास विशेष रूप से शेख फरीद बुखारी की सेवायें उसने बड़े विस्तार से लिखी है।
७ इसका नाम अनुवाद में (च) रक्खा गया है।
८ इसका नाम अनुवाद में (छ) रक्खा गया है।

वायज़ीद ब्यात

तज़किरये हुमायूं व अकबर

अबुलफजल के महत्वपूर्ण इतिहास "अकबर नामा" के लिए जो सामग्री अकबर के आदेशानुसार एकत्र कराई गई थी उसमें अब केवल तीन ही ग्रंथ प्राप्य हैं। गुलबदन बेगम का "हुमायूं नामा", जौहर का "तजकिरतुल वाकेआत" एवं वायज़ीद ब्यात का "तज़किरये हुमायूं व अकबर"। वायज़ीद ने लिखा है कि पादशाह ने आदेश दिया था कि, "दरबार के दासों में जिसको इतिहास लिखना आता हो, वह लिखे बल्कि हज़रत जन्नत आशियानी हुमायूं पादशाह के राज्य काल के विषय में (भी जिस) किसी को कुछ याद हो तो वह उसे लिपिबद्ध करके हमारे सम्मानित नाम पर समर्पित करे[१]।" वायज़ीद ब्यात उस समय अकबर का बकावल बेगी[२] था। शेख अबुल फजल ने अपने एक कातिब[३] को इस आशय से नियुक्त कर दिया कि वायज़ीद ब्यात जो कुछ बोलता जाय वह उसे लिख ले[४]। इस प्रकार यह ग्रंथ तैयार हो गया।

वायज़ीद ब्यात एक तुर्क कबीले से सम्बन्धित था किन्तु वह ईरान निवासी था और उसका पालन पोषण तबरेज में हुआ था। वायज़ीद बाल्यावस्था में अली कुली शैबानी का तबरेज में पड़ौसी रह चुका था[५]। वे वहां आवा नामक मुहल्ले के निवासी थे और साथ साथ खेलते कूदते थे। वह शाह वीरदी ब्यात का, जो सैनिक जीवन त्यागकर दरवेश हो गया था, और जिसने अपना नाम बहराम सक्का रख लिया था, भाई था[६]। जिस समय हुमायूं ने शाह तहमास्प से भेंट की और वे तख्ते सुलेमान नामक स्थान पर दावतों एवं सैर व शिकार में व्यस्त थे, वायज़ीद वहां पहुँच गया था। उस समय वह सैयिद मुहम्मद अरब का, जो शाह का इमाम था, सेवक था। उसे इमाम रिज़ा के रौज़े पर चढ़ावा ले जाने का आदेश हुआ था। वायज़ीद तथा उसका पिता भी, सैयिद मुहम्मद अरब के साथ मशहद पहुँचे। वायज़ीद वहां विद्याध्ययन में व्यस्त हो गया[७]। हुमायूं भी तबरेज होता हुआ अन्तिम रमज़ान को मशहद पहुँच गया[८]। वायज़ीद मशहद की ईदगाह में हुमायूं की सेवा में उपस्थित हुआ। मशहद से हुमायूं कन्धार की ओर रवाना हुआ और एक सेना को बुस्त के किले पर आक्रमण हेतु अपने पहिले भेज दिया। वायज़ीद उस सेना के साथ साथ गया[९]। बुस्त से हुमायूं कन्धार पहुँचा। वायज़ीद वहां भी उसकी सेना के साथ था[१०]। १५४५ ई० में कन्धार विजय के पूर्व हुमायूं ने बैराम खां को दूत बनाकर काबुल भेजा। बैराम खां ने काबुल पहुँचकर मीर्ज़ा कामरान, अकबर तथा मीर्ज़ा हिन्दाल इत्यादि से भेंट की। जिस समय बैराम खां अकबर की

१ वायज़ीद **तज़किरये हुमायूं व अकबर** पृ० १, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ७३८।
२ शाही रसोई का अध्यक्ष।
३ लिपिक, मुंशी अथवा सचिव।
४ वायज़ीद, पृ० २, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ७३५।
५ वायज़ीद, पृ० १८७, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ८८१।
६ वायज़ीद, पृ० ४७, ५५, २३४, २३५, २४२, २४३।
७ वायज़ीद, पृ० ३७, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ७४५।
८ १६ दिसम्बर १५४४ ई०।
९ वायज़ीद, पृ० ३६, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ७४७।
१० वायज़ीद, पृ० ४२, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ७४८ ७४६।

सेवा में उपस्थित हुआ तो वायजीद भी उसके साथ था[१] किन्तु वह बैराम खां के साथ कन्धार वापस न हुआ और अपने भाई बहराम सक्का के पास गिरदीज चला गया[२]। उस समय तक बहराम सक्का ने सैनिक सेवा न त्यागी थी। शीघ्र ही मीर्जा कामरान ने गिरदीज, नग्ज, एवं बगश, शाह बीरदी व्यात बहराम सक्का से लेकर खिज्र खां हजारा को इस आशय से दे दिये कि वह कन्धार तथा गजनी के मार्ग की रक्षा करे और बहराम सक्का को गूरबन्द, जुहाक एवं बामियान, जो काबुल के अधीनस्थ थे, प्रदान कर दिये। जब वह दौरी मे मीर्जा कामरान की सेवा में पहुँचा तो कामरान ने सेना की सुव्यवस्था तक उसकी यात्रा स्थगित करा दी। बायजीद भी उन दिनों बहराम सक्का की सेवा में रहता था[३]। जब हुमायूं की सेनायें काबुल के समीप पहुँची तो मीर्जा कामरान के सभी अमीर तथा पदाधिकारी हुमायूं के पास पहुँचने लगे। बाबूस बेग, बहराम सक्का एवं बायजीद भी काबुल विजय के पूर्व अरकन्दी में हुमायूं की सेवा में उपस्थित हो गए[४]। हुमायूं १२ रमजान ९५२ हि० (१७ नवम्बर १५४५ ई०) को काबुल में प्रविष्ट हो गया। काबुल वालों ने इस अवसर पर बड़ी खुशियाँ मनाई। बेगमों ने हुमायूं से भेंट की। हमीदा बानो बेगम भी कन्धार से काबुल पहुँची तथा अकबर के खत्ने का समारोह बड़ी धूम धाम से मनाया गया। इसी अवसर पर बहराम सक्का ने ईश्वर की भक्ति की भावनाओं से प्रेरित होकर सैनिक जीवन त्याग दिया और सक्का[५] बन कर दरवेशों के समान जीवन व्यतीत करने लगा[६]।

बायजीद तदुपरान्त हुमायूं के एक प्रतिष्ठित अमीर हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार का सेवक हो गया। हुमायूं ने भी उसकी सेवाओं से सतुष्ट होने के कारण उसे कई बार सम्मानित किया[७]। बायजीद को भी इसपर बड़ा गर्व था[८] और जब तक हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार जीवित रहा वह किसी अन्य अमीर की सेवा में न गया। १५४७ ई० के प्रारम्भ में हुमायूं बदख्शां की ओर से लौटते हुए मार्ग में रुग्ण हो गया। मीर्जा कामरान ने अवसर पाकर काबुल पर पुन अधिकार जमा लिया। हुमायूं ने भी काबुल पहुँच कर किले का घेर लिया। हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार को दरवाजये आहन के पास नियुक्त किया गया। बायजीद भी उसके साथ था और उसने उत्तम सेवायें सम्पन्न की[९]।

१ बायजीद, पृ० ४६, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ७८१।
२ बायजीद, पृ० ४७, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ७८२।
३ बायजीद, पृ० ५४ ५५, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ७८८।
४ बायजीद, पृ० ५६, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ७५१।
५ पानी भरने वाला, पानी पिलाने वाला, भिश्ती।
६ बायजीद, पृ० ५४ ५५। उसकी गजलों एवं अन्य कविताओं का सग्रह (दीवान) एशियाटिक सोसाइटी बगाल (कलकत्ता) के पुस्तकालय में भी प्राप्य है। बायजीद के अनुसार उसने फारसी कविताओं में शाह कासिम अनवार तथा तुर्की कविताओं में शाह नसीमी का अनुकरण किया। (प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ७८८ ७८९)।
७ बायजीद, पृ० ७१, ७७, १११, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ७७१, ७७६, ७६७।
८ बायजीद, पृ० ७८, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ७७५।
९ बायजीद, पृ० ८१, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ७७८।

१५५० ई० में किपचाक के युद्ध मे हुसैन कुली सुल्तान मुहरदार मीर्ज़ा कामरान द्वारा बन्दी बना लिया गया और मीर्ज़ा ने उसकी हत्या करा दी। हुमायूँ के सहायक पराजित होकर तीन मार्गों पर चल दिए। बायजीद उस समूह के साथ था जो इस्तालीफ की ओर रवाना हुआ था[१]। इसके बाद बायजीद हुमायूँ के साथ बलख के आक्रमण के समय एवं अन्य महत्वपूर्ण अवसरों पर रहा और इस अवसर पर जो घटनाये घटीं उनमे से कई रोचक घटनाओ का उल्लेख उसने किया है। इस बीच में वह ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद की सेवा में पहुँच गया और नवम्बर १५५१ ई० मे जब मीर्ज़ा हिन्दाल मारा गया, तो बायजीद ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद के, जो काबुल का दारोगा नियुक्त हो गया था, साथ था[२]। ९५९ हि० (१५५२ ई०) में हुमायूँ कामरान के विरुद्ध रवाना हुआ। प्रस्थान के पूर्व उसने कुछ अमीरों तथा ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को अफगानो पर आक्रमण हेतु आगे भेज दिया[३]। बायजीद भी उन लोगों के साथ था, किन्तु बगश के नीचे यूतग जी नामक पडाव मे हुमायूँ ने ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को काबुल का हाकिम नियुक्त करके लौटा दिया। बायजीद भी उसी के साथ वापस हुआ[४]। अत जिस समय मीर्ज़ा कामरान बन्दी बनाया गया वह हुमायूँ की सेना के साथ न था।

उस समय अमीरों के मतभेद के कारण हुमायूँ कश्मीर पर आक्रमण हेतु प्रस्थान न कर सका और काबुल लौट गया। वापसी के समय जब हुमायूँ जलालाबाद में पड़ाव किए हुए था तो बायजीद, जलालुद्दीन महमूद की ओर से पत्र एव उपहार स्वरूप बरफ इत्यादि लेकर उसकी सेवा में पहुँचा। हुमायूँ बरफ पाकर बडा प्रसन्न हुआ। वह उस समय एक नदी में स्नान हेतु गया हुआ था। उसने वही बरफ धोकर खाया और आबदारो को आदेश दिया कि एक टुकडा खाने के कूज़े में डाल दें। बायजीद को हुमायूँ ने आदेश दिया कि वह उसके साथ साथ रहे ताकि वह उससे काबुल, बल्ख, गज़नी, कन्धार एव बैरम खा इत्यादि के समाचार पूछ सके। उसने लिखा है कि वह जिस तेजी से पत्र लेकर हुमायूँ के पास पहुँचा और जितनी तेज़ी से वापस आया उसकी प्रशसा प्राचीन सैनिकों ने भी की[५]। १५५४ ई० मे हुमायूँ कन्धार पहुँचा। वहा से जब वह वापस आ रहा था तो बायजीद अकबर की ओर से उपहार स्वरूप फल लेकर हुमायूँ की सेवा में पहुँचा[६]। हुमायूँ ने उसे लेकर बैराम खा के पास भेजा[७]। बायजीद पत्र एव उपहार पहुँचा कर शीघ्र लौट आया[८]।

दिसम्बर १५५४ ई० में हुमायूँ हिन्दुस्तान विजय हेतु रवाना हुआ। इसी बीच में बायजीद का ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद के भाई से मतभेद हो गया अत वह उसकी सेवा से पृथक् होकर अली कुली दीवानी के पास, जिसका वह तबरेज में पडोसी रह चुका था, चला गया[९]। जब

१ बायजीद, पृ० १३० प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ८०९।
२ बायजीद, पृ० १४५-१४६, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ८१६।
३ बायजीद, पृ० १५०, १५१, १५२, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ८२२ ८२३।
४ बायजीद, पृ० १५२-१५३, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ८ ३।
५ बायजीद, पृ० १६३ १६४, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ८३० ८३१।
६ बायजीद, पृ० १७१, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ८३६।
७ बायजीद, पृ० १७२, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ८३६ ८३७।
८ बायजीद, पृ० १७४, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ८३८।
९ बायजीद, पृ० १८७, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ८५१।

वह काबुल के तत्कालीन हाकिम मुनइम बेग से विदा होने पहुँचा तो उसने बायजीद को जाने की अनुमति न दी। जब अली कुली को इसकी सूचना मिली तो वह हिन्दुस्तान की ओर रवाना हो गया[1]। इस प्रकार वह हुमायूँ के साथ हिन्दुस्तान न जा सका और मुनइम खा के साथ काबुल में रह गया और १५ शाबान ९६७ हि० (११ मई १५६० ई०) को मुनइम खा के साथ हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुआ[2]। शव्वाल ९६७ हि० के अन्त (जुलाई १५६० ई० के मध्य) मे वे लाहौर पहुँच गए[3]। बैराम खा की पराजय तथा उसे बन्दी बनाने के समय उसने सदेशवाहक के रूप मे प्रशसनीय सेवायें सम्पन्न की[4]। अकबर के जौनपुर के अभियान तथा मुनइम खा की इस प्रदेश मे नियुक्ति के कारण, बायजीद को उत्तर प्रदेश के पूर्व के बहुत से स्थानो पर जाने का अवसर मिला और उसने जौनपुर, बनारस, गाजीपुर तथा अवध से सम्बन्धित अनेक रोचक घटनाओ का उल्लेख किया है। थोडे थोडे समय के लिए उसे बनारस, जौनपुर एव चुनार का शासन-प्रबन्ध सिपुर्द होता रहा[5]। ९८४ हि० (१५७६ ई०) में उसे फतहपुर बुलवा लिया गया[6]। इन्ही दिनो मे जब अकबर उज्जैन के अधीनस्थ दीबालपुर परगने मे पहुँचा तो उसने वह सरकार बायजीद को प्रदान कर दी। जब उस सरकार की जरीब, जमा-बन्दी[7] इत्यादि का प्रबन्ध भी पूरा हो गया तो बायजीद ने अकबर से दरबार में उपस्थित होने की प्रार्थना की किन्तु इसी बीच में उसे एक फरमान प्राप्त हुआ कि नव्वाब शिहाबुद्दीन अहमद खा को सरकार सारगपुर से अहमदाबाद भेज दिया गया है अत बायजीद सारगपुर की सरकार का प्रबन्ध करे। बायजीद १५ रमजान ९८४ हि० (६ दिसम्बर १५७६ ई०) को उज्जैन सरकार से सारगपुर नामक सरकार मे पहुँचा और वहाँ का प्रबन्ध करता रहा। कुछ समय उपरान्त उसने दरबार में प्रार्थना-पत्र भेजा कि वह सरकार खालसे के योग्य नही। उसे शुजाअत खा को जागीर मे प्रदान कर दिया गया। बायजीद सारगपुर से दरबार मे पहुँचा। उस समय अकबर भीरा से वापस आ रहा था। बायजीद ने चनाब नदी पर अकबर से भेंट की और फतहपुर तक वह उसके साथ आया। मुहर्रम ९८५ हि० (मार्च १५७७ ई०) मे वह खजाने का दारोगा नियुक्त कर दिया गया किन्तु मुहर्रम ९८६ हि० (मार्च-अप्रैल १५७८ ई०) मे उसे मक्का जाने की अनुमति प्राप्त हो गई[8]। दो वर्ष तक उसे अकबर के आदेशानुसार सूरत ही मे ठहरना पडा। स्वार्थियो ने अकबर से यह शिकायत कर दी कि वह अत्यधिक सोना एव जवाहरात अपने साथ ले जा रहा है, अत नव्वाब कुलीज खा तथा उसके भाइयो को आदेश दिया गया कि वे बायजीद के असबाब के विषय मे पता लगायें। उसके पास एक लाख का माल असबाब एव नकद धन निकला। वह लिखता है कि, "अकबर ने कहा कि, 'लगभग वह २ करन[9] से इस वश की सेवा कर रहा

१ बायजीद, पृ० १८८, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ८५१।
२ बायजीद, पृ० २२४।
३ बायजीद, पृ० २२५।
४ बायजीद, पृ० २३२, २३३, २३८।
५ बायजीद, पृ० ३१० ३१४, ३५२।
६ बायजीद, पृ० ३५२।
७ भूमि की नाप एव बन्दोबस्त।
८ बायजीद, पृ० ३५३।
९ १०, २० अथवा ३० वर्ष की कोई अवधि।

है। इस समय जब वह मक्के-मदीने जा रहा है तो एक लाख का क्या मूल्य है जो लोग यह कह रहे हैं कि उसके पास अत्यधिक सोना एवं जवाहरात हैं? लोगों का यह उद्देश्य था कि मैं उसे पवित्र यात्रा से वंचित कर दूं[1]।" किन्तु अकबर एक वर्ष तक फिर भी उपेक्षा करता रहा और उसने आदेश दिया कि यदि वह उस समय दरबार में नहीं आना चाहता तो गुजरात में जहाँ उसकी इच्छा हो उसे तथा उसके पुत्रों को जागीर दे दी जाय किन्तु जब अकबर ने उसे इस यात्रा हेतु दृढ़ पाया तो उसे हज के लिए जाने की अनुमति दे दी और वह २४ मुहर्रम ९८८ हि० (११ मार्च १५८० ई०) को कश्तिये मुहम्मदी नामक जहाज पर, जिसे नव्वाब कुतुबुद्दीन खां एवं नव्वाब कुलीज खां ने मिलकर बनवाया था, बैठकर सपरिवार अदन की ओर चल दिया[2]। पुर्तगालियों का समुद्रीय यात्रा पर पूर्ण अधिकार होने के कारण वह बड़ी कठिनाई से मक्के पहुँच सका और तीन वर्ष तक वहाँ रहा[3]। वह अपने साथ एक लाख की जो धन सम्पत्ति लेकर आया था, उसे उसने दान पुण्य में व्यय कर दिया। मक्के तथा मदीने के मध्य में अरवान चाह नामक स्थान पर उसके पुत्र की तथा २१ रबी-उल-अव्वल ९८९ हि० (२५ अप्रैल १५८१ ई०) को उसकी पत्नी की भी मृत्यु हो गई। उसी वर्ष उसने अपने पुत्रों को अकबर के दरबार में भेज दिया और स्वयं आजीवन मक्का मदीना में निवास करने का संकल्प कर लिया[4]। ९९० हि० (१५८२ ई०) में उसे पता चला कि उसके पुत्र फिरंगियों द्वारा बन्दी बना लिए गए अतः वह भी उसी वर्ष हिन्दुस्तान की ओर वापस हो गया। मार्ग में उसे मुजफ्फर गुजराती के समाचार प्राप्त हुए जिसका उल्लेख उसने अपनी रचना में किया है[5]। लौटते समय भी उसे बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और वह गोआ तथा सूरत होता हुआ ९९२ हि० (१५८४ ई०) के अन्त में अकबर की सेवा में फतहपुर में उपस्थित हुआ। अकबर ने उसे अत्यधिक सम्मानित किया और सुनाम नामक परगना उसे तथा उसके पुत्रों को प्रदान कर दिया[6]। ९९३ हि० (१५८५ ई०) में उसे दारोगगीये कारखानाते ममालिके महरूसा[7] एवं फतहपुर में दारोगगीये दारुज्जर्ब[8] का पद प्राप्त हुआ। इसी वर्ष के अन्त में वह दारोगगीये दफ्तर खानये आली[9] के पद पर आरूढ़ हुआ और ५ वर्ष तक उस पद पर आरूढ़ रहा। उसने लिखा है कि इस बीच में एक दाम का भी अपहरण न हुआ। ९९४ हि० (१५८६ ई०) में उसे दोसदी का मंसब भी प्रदान कर दिया गया। ९९५ हि० (१५८७ ई०) में उसे बकावल बेगी एवं दरबारे हरम की ईशक आगाई का पद भी प्राप्त हो गया। इसी वर्ष लकवे के कारण उसका बायाँ हाथ बेकार हो गया[10]। ९९९ हि०

१ बायज़ीद, पृ० ३५४।
२ बायज़ीद, पृ० ३५५।
३ बायज़ीद, पृ० ३५६।
४ बायज़ीद, पृ० ३५७।
५ बायज़ीद, पृ० ३५८।
६ बायज़ीद, पृ० ३६३, ३७२।
७ अधीनस्थ राज्यों की खानों के अध्यक्ष का पद।
८ टकसाल का अध्यक्ष।
९ शाही कार्यालय का दारोगा।
१० बायज़ीद, पृ० ३७३।

(१५९०–९१ ई०) में उसे लाहौर मे शाही खजाने की अमीनी एव दारोगगी प्रदान हुई। वहाँ उसने कुछ भवनो तथा पुल का निर्माण कराया। पुल के समीप एक मस्जिद में कुछ परिवर्तन कराये तथा लाहौर के किले के द्वार में, जो देहली द्वार के समीप स्थित है, एक मस्जिद तथा सक्का खाने का निर्माण कराया[१]।

इन्ही दिनो में अकबर ने अपने अन्य प्रतिष्ठित अमीरो को बताया कि बायजीद उसके पिता तथा उसकी लगभग २ करन से सेवा कर रहा है। वह लिखता है "बन्देगान हजरत (अकबर) ने दरबार के उपस्थितगणो से, जिनमें नकीब खा कजवीनी नव्वाब हकीम गीलानी, काजी हसन, कासिम बेग तबरेजी, जो कुछ समय तक मीर अद्ल के पद पर आरूढ रहा, एव ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद गुजरात सरकार के बख्शी थे, कहा कि, 'लगभग दो करन से बायजीद हजरत जन्नत आशियानी एव हमारी सेवा कर रहा है।' दरबार के समस्त उपस्थित-गणो ने कहा कि, बायजीद बडा ही निष्ठावान् है। उस तारीख से लोगो को ज्ञान हो गया कि बायजीद उस दरबार का बडा प्राचीन सेवक है। वह आज तक उस सेवा पर, जिसका ऊपर उल्लेख हुआ, आरूढ है। आशा है कि उसे जीवन पर्यन्त इसी प्रकार इस दरबार के चेलो में सम्मिलित रहने का सौभाग्य प्राप्त रहे[२]।"

बायजीद ने अपनी रचना को चार अध्यायो में विभाजित किया है

(१) ९४९ हि० (१५४२ ई०) से ९५३ हि० (१५४६ ई०) तक का इतिहास।
(२) ९५३ हि० (१५४६ ई०) से ९५९ हि० (१५५१ ई०) तक का इतिहास।
(३) ९५९ हि० (१५५१ ई०) से ९६१ हि० (१५५३ ई०) तक का इतिहास।
(४) ९६१ हि० (१५५३ ई०) से ९९९ हि० (१५९० ई०) तक का इतिहास।

इस प्रकार बायजीद ने अपनी रचना मे हुमायूँ का पूरा इतिहास नही दिया है और उन घटनाओ का, जो हुमायूँ के कन्धार से एराक की ओर प्रस्थान के पूर्व घटी, कोई उल्लेख नहीं किया। हुमायूँ के कन्धार से एराक की ओर प्रस्थान के समय उसके साथ जितने लोग थे उनकी उसने प्रारम्भ में सूची दी है। शाह तहमास्प का पत्र, जिसमें उसने अपने अधिकारियो को हुमायूँ के आतिथ्य के विषय मे सविस्तार निर्देश दिए थे, बायजीद ने पूर्ण रूप से उद्धृत किया है। यह पत्र उसे १००० हि० (१५९१-९२ ई०) में अकबर के कार्यालय के दारोगा मुराद जुवैनी द्वारा प्राप्त हुआ अत इस पत्र को उसने पुस्तक की रचना के समाप्त हो जाने के उपरान्त अपने इतिहास में सम्मिलित किया। उसे मुल्ला अब्दुस्समद शीरी कलम द्वारा लाहौर मे ९९९ हि० (१५९०-९१ ई०) में वह पत्र भी प्राप्त हुआ जो हुमायूँ ने काशगर के बादशाह नव्वाब रशीद खा को लिखा था। इस पत्र को भी उसने अपनी रचना मे उद्धृत कर दिया है।

जिस समय उसकी भेंट हुमायूँ से हुई उस समय से लेकर हुमायूँ के काबुल विजय हेतु हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान के समय तक वह प्राय हुमायूँ के साथ रहा अत उसने जितनी घटनाओ का उल्लेख किया है वे सब की सब उसकी व्यक्तिगत जानकारी पर आधारित है। इन घटनाओ की चर्चा करते समय उसने इनमें स्वय जो भाग लिया उसका प्रत्येक स्थान पर बड़े

१ बायज़ीद, पृ० ३७४।
२ बायज़ीद, पृ० ३७६।

विस्तार से विवरण दिया है। उसने जिन घटनाओं का उल्लेख किया है उनसे तत्का सामाजिक एवं सांस्कृतिक दशा का बड़ा ही उत्तम ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

जिस समय उसने अपने संस्मरण लिखाना प्रारम्भ किए, वह वृद्धावस्था को प्र हो चुका था। उसके शरीर के बायें भाग पर लक्वे का भी कुप्रभाव हो गया था। रुग्णाव तथा वृद्धावस्था ही के कारण सम्भवतः वह स्वयं कुछ न लिख सका अपितु उसे जो कुछ स्मरण उसे उसने अबुलफजल के मुंशी को लिखवा दिया। इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि पढ़ा लिखा न था क्योंकि जिन पदों पर वह आरूढ़ रहा उनका कार्य, विशेष रूप से शाही कार्या की अध्यक्षता का कार्य, शिक्षित हुए बिना चलाना सम्भव न था। उसने लिखा है कि, "उ ९४९ हि० (१५४२–४३ ई०) की घटनाएँ जो जकान में हुमायूँ पादशाह के शिविर में घटी ९ हि० (१५९०–९१ ई०) में लाहौर के कस्बे में लिखी हैं। उसकी युवावस्था समाप्त हो च है तथा वृद्धावस्था आ चुकी है। उसकी स्मरण शक्ति भी अच्छी नहीं रही अतः यदि कोई भूल हो ज तो पाठकगण उसके अपराध को क्षमा कर दे[१]।' उसके पास कोई मसवेदा अथवा डायरी न थी कि अपनी जानकारी तथा शाही कार्यालय के अध्यक्ष होने के कारण उसने जो कुछ लिखा वह ब ही महत्वपूर्ण है। क्योंकि उसने स्वयं पाडुलिपि नहीं तैयार की और उसे जो कुछ ज्ञात था बोल दिया था अतः उसके वाक्य कहीं कहीं बड़े अस्पष्ट तथा भाषा के सौन्दर्य से शून्य हो गये इसके अतिरिक्त हुमायूँ के इतिहास के प्रसंग में उसने जितनी तिथियाँ लिखी हैं, उनमें से अधिक अशुद्ध हैं। सम्भवतः वृद्धावस्था के कारण उसे तारीखे ठीक से याद न रही हों किन्तु यह पाडुलि तैयार करने वाला तथा अन्य लोगों की भी भूल हो सकती है जिन्होंने इसकी प्रतियाँ तैयार कीं

बायजीद ने अपनी रचना का किसी स्थान पर नाम नहीं लिखा है। इसका परिच देते हुए उसने मुख्तसर[२]' शब्द का अधिक प्रयोग किया है। मुख्तसर' का अर्थ 'संक्षिप्त, स रूप, खुलासा, न्यून अथवा थोड़ा होता है अतः यह कहना कठिन है कि उसने इस रचना का ना "मुख्तसर" रक्खा था। उसका तात्पर्य केवल उस संक्षिप्त विवरण से है जो इस रचना में प्रा है। इसी प्रकार उसने इस रचना का परिचय देते हुए "तजकिरा[३]" शब्द का भी कई स्थानों प प्रयोग किया है। "तजकिरा' का अर्थ चर्चा, जिक्र, विवरण' होता है। इस प्रकार यह कहना भी सम्भ नहीं कि बायजीद ने इसका नाम "तजकिरा" रक्खा होगा। इंडिया आफिस की फारसी हस्तलिपि की सूची में इसका नाम "तारीखे हुमायूँ" लिखा गया है किन्तु कलकत्ते से प्रकाशित संस्करण में इसक शीर्षक "तजकिरये हुमायूँ व अकबर" रक्खा गया है, अतः प्रस्तुत अनुवाद में भी इसी नाम क प्रयोग किया गया है।

बायजीद ने अपनी रचना की प्रतियों के सम्बन्ध में लिखा है कि, 'इसकी ९ प्रति तैयार की गईं। दो प्रतियाँ शाही किताबखाने में है और तीन प्रतियाँ तीन शाहजादों तथा एक प्र गुलबदन बेगम के पुस्तकालय और दो प्रतियाँ शेख अबुलफजल के पुस्तकालय में भेजी गईं किन् एक प्रति के विषय में, जो शाही किताबखाने में थी, बायजीद को पता न चल सका कि वह कि

१ बायजीद, पृ० २, प्रस्तुत ग्रंथ पृ० ७३५-३६।
२ बायजीद, पृ० ११, ३३, ५७, ६८, १४८, २३५, २३७, ३१०, ३१२, ३३३, ३६६, ३७१, ३७३, ३७४, ३७
३ बायजीद, पृ० ४०, १००, १३६, २६६।

तहवीलदार[१] के सिपुर्द कर दी गई।" उसके अतिरिक्त अन्य बहुत से लोगों ने उसकी प्रतियाँ तैयार कराईं। बायजीद ने आशा व्यक्त की है कि, "बाद में भी लोग इसकी प्रतियाँ तैयार कराते रहेंगे।" खेद है कि बायजीद के समय में जो प्रतियाँ तैयार कराई गईं उनमें से अब कोई प्राप्य नहीं। केवल एक ही प्रति इंडिया आफिस में उपलब्ध है जो रमजान १०२५ हि० (सितम्बर-अक्तूबर १६१६ ई०) में नकल हुई थी और उसी के आधार पर कलकत्ते से इसे प्रकाशित कर दिया गया है। हुमायूँ से इतिहास से सम्बन्धित भाग का अंग्रेजी में संक्षिप्त अनुवाद डा० बनारसी प्रसाद सक्सेना ने इलाहाबाद यूनिवर्सिटी स्टडीज में १९३० ई० में प्रकाशित किया था[२]। डा० साहब ने अपना अनुवाद फोटो स्टैट के आधार पर तैयार किया था, किन्तु फिर भी वह बड़ा ही शुद्ध है। प्रस्तुत अनुवाद में उससे बड़ा लाभ उठाया गया है।

अबुलफजल

अकबर नामा

शेख अबुलफजल अल्लामी, शेख मुबारक नागौरी का पुत्र तथा शेख अबुल फैज फैजी[३] का छोटा भाई था। उसका जन्म ६ मुहर्रम ९५८ हि० (१४ जनवरी १५५१ ई०) को आगरा में हुआ। अकबर के शासन काल के १९वें वर्ष (१५७३–७४ ई०) में वह अकबर के दरबार में प्रस्तुत किया गया और शीघ्र ही अकबर का बहुत बड़ा विश्वासपात्र एवं मित्र बन गया। अकबर के समय के कट्टर आलिमों के जोर को तोड़ने में उसने अकबर की बड़ी सहायता की और अकबर के 'सुलह कुल[४]' के सिद्धान्तों के निरूपण एवं प्रचार में उसका बहुत बड़ा हाथ था। उस समय के समस्त विद्वान् एवं लेखक उसकी योग्यता से प्रभावित थे। उसने दक्षिण में सराहनीय सैनिक सेवाएँ भी सम्पन्न कीं और वहीं से लौटते समय शाहजादा सलीम ने, जिसने बादशाह होकर जहाँगीर की उपाधि धारण की, ४ रबी-उल-अव्वल १०११ हि० (२२ अगस्त १६०२ ई०) को वीर सिंह देव नामक बुन्देला सरदार द्वारा उसकी हत्या करा दी। वीर सिंह देव ने शेख अबुल्फजल का सिर सलीम के पास इलाहाबाद भेज दिया। ग्वालियर के समीप अन्तरी में उसकी लाश दफन कर दी गई।

१ बायजीद, पृ० ३७७। किसी वस्तु की देख रेख करने वाला, यहाँ पुस्तकों की देख रेख करने वाले से तात्पर्य है।

२ B P Saksena *Memoirs of Bayazid*, Allahabad University Studies, Vol VI, Part I, 1930 (pp 71-148)। इसके अतिरिक्त देखिये H Beveridge *The Memoirs of Bayazid Biyat* [Journal Asiatic Society Bengal (XVII), No 1 (1890) pp 296 316]

३ शेख अबुल फैज 'फैजी' का जन्म आगरा में ९५४ हि० (१५४७ ई०) में हुआ। अकबर ने उसे मलेकुश्शुअरा (कवियों के सम्राट) की उपाधि प्रदान कर दी थी। कविताओं के अतिरिक्त उस समय संस्कृत ग्रंथों के फारसी अनुवाद की योजना में भी उसका बहुत बड़ा हाथ था। उसने निजामी के सिकन्दर नामे के समान **अकबर नामा** नामक काव्य की रचना प्रारम्भ की जो उसके खमसे (५ मसनवियों के संग्रह) की पाँचवीं मसनवी थी किन्तु केवल उसका एक संक्षिप्त सा भाग ही लिखा जा सका और १० सफर १००४ हि० (१५ अक्तूबर १५९५ ई०) को आगरा में ही उसकी मृत्यु हो गई।

४ सभी से मेल।

"अकबर नामा" के अतिरिक्त उसने 'अयारे दानिश' की रचना की जो कि 'अनवारे सुहैली[१]' का ही सरल एवं सुबोध रूप है। महाभारत के अनुवाद तथा 'तारीखे अलफी' के प्राक्कथन की भी उसी ने रचना की। उसकी रचनाओं में उसके पत्रों का संग्रह, जिसे उसकी बहिन के पुत्र अब्दुस्समद बिन अफ्जल मुहम्मद ने १०१५ हि० (१६०६–७ ई०) में सकलित किया, बडा प्रसिद्ध है[२]। यह सकलन "मुकातेबाते अल्लामी", 'इन्शाए अबुलफजल' अथवा मुकातेबात अबुलफजल" के नाम से प्रसिद्ध है। यह तीन भागों में विभाजित है—

१—अकबर की ओर से बादशाहों तथा अमीरों के नाम पत्र।

२—बादशाहों तथा अमीरों के नाम अबुलफजल के अपने पत्र।

३—विभिन्न ग्रंथों के सम्बन्ध में टिप्पणियाँ तथा गद्य के अन्य नमूने।

उसकी एक अन्य रचना 'रुक्काते अबुलफजल[३]' अथवा अबुलफजल के पत्रों का सकलन" के नाम से प्रसिद्ध है किन्तु इसमें सभी पत्र जाली हैं और किसी ने अबुलफजल की प्रसिद्धि से लाभ उठाकर उसके नाम से यह रचना तैयार कर दी है। फैजी के पत्रों के संग्रह "लताएफे फैजी[४]" नामक ग्रंथ में अबुलफजल की एक अन्य रचना 'मुनाजात[५]' भी सम्मिलित है।

उसकी सबसे अधिक प्रसिद्ध रचना अकबर नामा तथा आईने अकबरी' ही है। उसने 'अकबर नामा' का जिस क्रम में विभाजन किया था उसके अनुसार 'आईने अकबरी' 'अकबर नामा" का तीसरा भाग है किन्तु यह पृथक् ग्रंथ ही के रूप में अधिक प्रसिद्ध है।

"अकबर नामा' निम्नांकित भागों में विभाजित है—

१—अकबर के जन्म, उसके पूर्वजों तथा अकबर के शासनकाल के १७वें वर्ष तक का इतिहास जो कि निम्नांकित २ खडों में विभाजित है—

(अ) अकबर का जन्म, तीमूरियों की वंशावली, बाबर तथा हुमायूँ के राज्य का सविस्तार हाल।

(ब) अकबर के सिंहासनारोहण से लेकर १७वें वर्ष के मध्य तक का हाल। यह भाग शाबान १००४ हि० (अप्रैल १५९६ ई०) अथवा अकबर के शासनकाल के ४१वें वर्ष में पूरा हुआ।

१ अनवारे सुहैली, शेख हुसैन वाएज काशिफी (मृत्यु १५०५ ई०) की बडी प्रसिद्ध रचना है। यह कलीला व दिमना नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ का अनुवाद है जिसमें बडी काव्य-मय भाषा का प्रयोग किया गया है।

२ इसका सकलन १०११ हि० (१६०२ ई०) में प्रारम्भ कर दिया गया था।

३ खुदाबख्श बाकीपुर के कैटलाग के सकलनकर्ता ने इसे बडा ही अप्राप्य ग्रंथ बताया है और इसका नाम 'चौथा दफ्तर' अथवा अबुलफजल के पत्रों का चौथा भाग रक्खा है किन्तु नवल किशोर प्रेस द्वारा प्रकाशित रुक्काते अबुलफजल तथा चौथा दफ्तर दोनों एक ही ग्रन्थ हैं।

४ अलीगढ़ विश्वविद्यालय, हस्तलिखित पोथियों का संग्रह"।

५ एस० ए० ए० रिजवी "मुनाजाते अबुलफजल', मेडीवल इंडिया क्वार्टरली अलीगढ़ नं० ३ (पृ० १३७ फारसी, व पृ० ११२ १२३ अंग्रेजी)।

२—अकबर के शासनकाल के १७वें वर्ष के मध्य से लेकर ४६वें वर्ष तक का उल्लेख।

प्रथम भाग के अ और ब खडो को साधारण रूप से अबुलफज़ल के समय के कुछ बाद से ही भाग १ और भाग २ के रूप में अलग अलग नकल किया जाने लगा और उसके दूसरे भाग को उपर्युक्त क्रम से तीसरा भाग कहा जाता था।

"अकबर नामा" का तीसरा भाग "आईने अकबरी" है किन्तु अबुलफज़ल ने "अकबर नामा" के साथ साथ इसकी भी रचना प्रारम्भ कर दी थी किन्तु इसने एक पृथक् ग्रथ का ही रूप धारण कर लिया है। इसमें अकबर के राज्य-काल से सम्बधित आँकडों तथा राज्य व्यवस्था सम्बन्धी अन्य नियमो एव समस्याओ का सविस्तार उल्लेख किया गया है। अबुलफज़ल की इन रचनाओं के लिए अकबर ने अपने राज्य के बहुत से लोगो को इस बात का आदेश दिया कि उन्हें बाबर तथा हुमायूँ के विषय में जो कुछ भी जानकारी हो उसे लिपिबद्ध करके उसकी सेवा में प्रस्तुत करे। इन्ही रचनाओं में गुलबदन बेगम का "हुमायूं नामा", मेहतर जौहर का "तज़किरतुल वाकेआत" एव बायज़ीद का "तज़किरये हुमायूं व अकबर" अब भी प्राप्य हैं। इस आदेशानुसार कुछ अन्य ग्रथ भी लिखे गए होगे जो अब हमें प्राप्य नही है। इसके अतिरिक्त अकबर के शासनकाल के १९वें वर्ष से वाकेआत नवीसी के अधिनियम भी तैयार हो गए थे[१]। उस समय के समस्त अभिलेख एव अमीरो के नाम पत्र, फरमान, शासन-सम्बन्धी अन्य कागजात अबुलफज़ल को प्राप्त थे अत उसने अपने इतिहास के सकलन के लिए जिस सामग्री का प्रयोग किया है वह बडी ही विस्तृत थी। इसके साथ साथ अबुल फज़ल ने अपनी सामग्री के प्रयोग में जिस परिश्रम एव जिस वैज्ञानिक नीति से काम लिया है वह बडी ही आश्चर्य-जनक है। जहाँ तक अकबर की राजनीति एव उसके व्यक्तिगत जीवन की कुछ विशेष बातो का सम्बन्ध है वहाँ उसने सत्य को कही कही भली-भाँति स्पष्ट नही किया है किन्तु फिर भी उसके शब्दो के जाल से मूल घटना का पता साधारण परिश्रम से चल जाता है। हुमायूँ के इतिहास के लिए उसने जितनी महत्वपूर्ण सामग्री का प्रयोग किया उसका अनुमान उसकी रचना एव अन्य प्राप्य ग्रथो की तुलना करके ही भली भाँति लगाया जा सकता है। बाबर के इतिहास के लिए उसने "तुज़ुके बाबरी", "तारीख़े रशीदी", "नफायसुल मआसिर" तथा अन्य ग्रथो का भली भाँति प्रयोग किया है और समस्त घटनायें सक्षिप्त रूप में बडे क्रम से लिपिबद्ध की है।

इतिहास के साथ साथ "अकबर नामा" से समकालीन राजनीति पर भी प्रकाश पडता है। प्रत्येक महत्वपूर्ण घटना के लिखने के पूर्व उसने हर स्थान पर छोटी छोटी प्रस्तावनायें दी हैं। इन प्रस्तावनाओं के विश्लेषण से अबुलफज़ल के राजनीतिक एव धार्मिक विचारो तथा समकालीन विचारधाराओं का भी पता चल जाता है और उस दृष्टिकोण का भी ज्ञान प्राप्त हो जाता है जिसके प्रचार का शासन की ओर से प्रयत्न किया गया। उसने लिखा है, "बुद्धि के अनेक रहस्य एव गूढ बातें विषयानुसार विभिन्न स्थानो पर लिख दी गई। यदि उन गूढ बातो तथा रहस्यो को मूल इतिहास से पृथक् कर दिया जाय तो बुद्धिमत्ता सम्बन्धी चुनी हुई बातो से परिपूर्ण एक चुना हुआ ग्रथ तैयार हो जायगा[२]।"

१ अकबर नामा भाग १, पृ० १० ।
२ अकबर नामा भाग १ पृ० ३६६, प्रस्तुत ग्रन्थ पृ० ३६५ ।

अबुलफ़ज़ल स्वयं समझता था कि उसकी व्याख्याओं को पढ़ कर लोग उसे चापलूस ही समझेंगे और इस बात के खंडन का भी उसने प्रयत्न किया है किन्तु उसकी रचना को पढ़ने के पूर्व यह समझ लेना परमावश्यक है कि वह अकबर को "इंसाने कामिल" और दैवी प्रकाश अथवा "नूर" का एक टुकड़ा समझता था। धर्मान्धता को समाप्त करके हिन्दुस्तान के समस्त निवासियों के लिये अकबर ने इस देश को जिस प्रकार स्वर्ग बनाने का प्रयत्न किया उससे अबुलफ़ज़ल बड़ा प्रभावित था। हुमायूँ की असफलताओं को उसने यह कहकर टाल दिया है कि ऐसे श्रेष्ठ पुरुष के जन्म के पूर्व ऐसी दुर्घटनाओं एवं कठिनाइयों पर कोई आश्चर्य न होना चाहिये कारण कि विधाता इस प्रकार की परीक्षायें लिया ही करता है।

विषय-सूची

भाग अ

भाग ब

भाग स

संकेत-सूची

संकेत	ग्रंथ का नाम
ईथे	Catalogue of the Persian Manuscripts in the Library of India Office.
ख्वन्द मीर	कानूने हुमायूनी
जौहर	तजकिरतुल वाकेआत
डा० बनारसी प्रसाद	Memoirs of Baizid, Allahabad University Studies 1930
फिरिश्ता	गुलशने इबराहीमी या तारीखे फिरिश्ता
बदायूनी	मुन्तखबुत्तवारीख
बाबर नामा	रिजवी मुगल कालीन भारत—बाबर
बायजीद ब्यात	तजकिरये हुमायूँ व अकबर
बेवरिज	The Akbarnama of Abul Fazal, translated by H Beveridge Part I
मिसेज बेवरिज	The History of Humayun (*Humayun Nama*) by Gulbadan Begam, translated and reproduced in Persian from the only known Mss by A S Beveridge
गुलबदन बेगम	उपर्युक्त का फारसी भाग
रियू	Catalogue of the Persian Manuscripts in the British Museum London
हादी हसन	The Unique Diwan of Humayun Badshah
होडीवाला	Studies in Indo-Muslim History

भाग अ

मुख्य इतिहासकार

शेख अबुलफजल अल्लामी

अकबर नामा भाग १

अकबर नामा भाग १

लेखक—शेख अबुलफजल अल्लामी

(प्रकाशन—कलकत्ता १८७७ ई०)

हज़रत जहांबानी जन्नत आशियानी[1] नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूं पादशाह गाजी

(१२०) सुबहानल्लाह[2] मानो नफ्से कुदसी[3] और नूरे कुद्दूसी[4] पर मानवता की नकाब

१ बाबर की उपाधि उनकी मृत्योपरान्त फिरदौस मकानी अथवा स्वर्ग में निवास करने वाले और हुमायूं की उपाधि उसकी मृत्योपरान्त जन्नत आशियानी अथवा जन्नत में घर रखने वाले रक्खी गई थी। जहाँबानी भी हुमायूं की उपाधि थी। इसका अर्थ संसार का सुव्यवस्थापक है। आगे के पृष्ठों में हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी अथवा "हज़रत जहाँबानी" या "हज़रत जन्नत आशियानी" का प्रयोग हुमायूं के लिये किया गया है। अकबर के लिये हज़रत शाहंशाह तथा अकबर की माता हमीदा बानो बेगम के लिये हज़रत मरियम मकानी लिखा गया है।

२ अल्लाह (ईश्वर) प्रशंसनीय है।

३ पवित्र आत्मा, यहाँ अकबर से तात्पर्य है।

४ पवित्र तेज अथवा प्रकाश। नूर शब्द का अरबी तथा फारसी साहित्य, विशेष रूप से सूफ़ी साहित्य, में बड़ा अधिक प्रयोग हुआ है। प्रायः विद्वानों ने कुरान शरीफ की निम्नांकित आयत (वाक्य) से निष्कर्ष निकाले हैं और विभिन्न सिद्धान्तों का निरूपण किया है "अल्लाह सारे आस्मान व ज़मीन का नूर है"। उसके नूर का उदाहरण ऐसा है जैसे कि एक आला है जिसमें एक जलता हुआ दीपक है और दीपक एक शीशे की कन्दील में हो और कन्दील (अपनी छटा में) मानो एक जगमगाता हुआ रोशन सितारा। (वह दीपक) जैतून के ऐसे शुभ वृक्ष (के तेल) से उद्भासित किया जाय जो न पूर्व की ओर ही और न पश्चिम की ओर (अपितु बीचों बीच मैदान में)। उसका तेल (ऐसा अच्छा हो कि) यद्यपि अग्नि उसे छुये भी नहीं किन्तु ऐसा ज्ञात हो कि स्वतः रोशन हो जायगा। (संक्षेप में एक नूर नहीं) अपितु नूर की ज्योति नूर पर पड़ रही है। अल्लाह अपने नूर की ओर जिसको चाहता है उसका पथ प्रदर्शन करता है और अल्लाह लोगों को समझाने के लिये उदाहरण देता है। वह हर बात से भली भाँति अवगत है। ईश्वर के ९९ नामों में से एक नाम नूर भी बताया गया है। मुसलमानों के मतानुसार नूर मुहम्मदी अथवा हकीकत मुहम्मदी (हज़रत मुहम्मद का नूर या उनके तथ्य) का सृजन संसार की सभी वस्तुओं के पूर्व हुआ। इमाम कस्तलानी ने मुवाहिबे लदुनिया नामक ग्रन्थ में लिखा है कि जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह अनसारी ने बताया कि हज़रत मुहम्मद कहा करते थे कि, "समस्त वस्तुओं से पूर्व तुम्हारे पैगम्बर के नूर का सृजन हुआ। यह नूर दैवी नूर से उत्पन्न हुआ। मेरा यह नूर ईश्वर की जहाँ-जहाँ इच्छा हुई वहाँ-वहाँ चक्कर लगाता रहा और जब ईश्वर ने संसार के सृजन का निश्चय किया तो ईश्वर ने मुहम्मद के इस नूर को चार भागों में विभाजित

और उन्सुर[1] का आवरण डाल दिया गया हो[2]। इबारत[3] का मैदान उसकी प्रशसा की दौड के लिये सकरा[4] और लेख के (घोडो) के धावे उसके मनाकिब[5] के शहरिस्तान[6] से कोसो[7] दूर रह जाते हैं। ईश्वर को धन्य है कि अब वह समय आ गया जब कि मैं बेइख्तियार[8] इस सम्मानित वंश के पूर्वजो का उल्लेख छोडकर अपने वास्तविक उद्देश्य[9] की ओर अग्रसर हूँ।

किया प्रथम से ईश्वर ने कलम, दूसरे से लौह (वह तख्ती जिस पर भविष्य में होने वाली सारी घटनायें ईश्वर की आज्ञा से लिख दी गई हैं जिन्हें कोई पढ नहीं सकता), तीसरे से अर्श (सब आसमानों से ऊपर का स्थान) का सृजन किया। चौथे भाग को चार खडो में विभाजित किया गया (१) हमलतुल अर्श अथवा ८ फ़िरिश्ते जो ईश्वर के सिंहासन को सभाले है —(२) कुर्सी अर्थात् ईश्वर के सिंहासन के नीचे का भाग, (३) फ़िरिश्ते, (४) इसे भी चार भागों में विभाजित किया गया—(१) सातों आकाश (२) धरती (३) सातों स्वर्ग तथा नर्क (४) चौथे भाग को भी चार भागों में विभाजित किया गया—(१) नेत्रों का प्रकाश, (२) मस्तिष्क का प्रकाश, (३) ईश्वर के ऐक्य से प्रेम, (४) सृजन का शेष भाग। (**मुवाहिबे लदुनिया** भाग १, पृ० १८)। वहाबी मुसलमान हज़रत मुहम्मद के इस प्रकार के सृजन को नहीं मानते।

प्रसिद्ध सूफ़ियों में से ग़ज़ाली (जन्म १०५८ ई०, मृत्यु ११११ ई०) ने **मिश्कातुल अनवार** (काहिरा १३४३ हि०/ १९२६ ई०) नामक ग्रन्थ में इस आयत पर सविस्तार टीका की है और यह सिद्ध किया है कि नूर (प्रकाश) शब्द का प्रयोग केवल उस अन्तिम प्रकाश के लिये किया जा सकता है जिसके ऊपर कोई अन्य प्रकाश नहीं और जिससे सभी प्रकाश प्राप्त करते हैं। ईश्वर ही वास्तविक प्रकाश है और उसके अतिरिक्त कोई अन्य प्रकाश नहीं।

अबुलफ़ज़्ल ने अकबर को इन्सान कामिल अथवा पूर्ण इन्सान सिद्ध करने के लिये नूर अथवा प्रकाश की रहस्यमय व्याख्याओं से बडा लाभ उठाया है। वह केवल **क़ुरान शरीफ़** की आयत अथवा सूफ़ियों की व्याख्या तक सीमित नहीं रहा अपितु मुग़ुलों की पूर्वज आलनकुवा के विषय में प्रसिद्ध इस कहानी से भी लाभ उठाया है कि वह ईश्वर के नूर से गर्भवती हुई और उसके तीन पुत्र हुये —बूकून, यूसुनी सालजी तथा बूजंजर कआन। वे नैरून अथवा नूर से उत्पन्न कहलाते थे। चिंगीज़ खां, बूजंजर कआन की पीढी में हुआ था अबुल फ़ज़्ल के अनुसार वह नूर जिससे आलनकुवा गर्भवती हुई, अकबर का नूर तथा ईश्वर के नूर का एक भाग था। (**अकबर नामा** भाग १, पृ० ६४ ६७)।

१ अग्नि, जल, वायु मिट्टी जिनसे मनुष्य का शरीर बना है, तत्व।
२ अकबर को एक पवित्र नूर तथा आत्मा मानते हुए यह बताया गया है कि उस नूर ने मनुष्य का चोला धारण कर लिया।
३ लेख, तहरीर।
४ लेख द्वारा उसकी प्रशसा सम्भव नहीं।
५ गुण-गान, विशेष रूप से बडे-बडे धार्मिक लोगों, इमामों इत्यादि की प्रशसा।
६ बडा नगर जिसके चारो ओर चहारदीवारी हो।
७ मूल में "फरसग दर फरसग", फरसग लगभग १२,००० हाथ का होता था।
८ बेइख्तियार शब्द का प्रयोग अबुलफ़ज़्ल ने "जब्र" के सिद्धान्त को दृष्टि में रखकर किया है इस सिद्धान्त का तात्पर्य यह है कि मनुष्य नितान्त बेबस है, जो कुछ करता है, ईश्वर करता है। इस रचना को भी वह अपनी इच्छा का परिणाम नहीं अपितु ईश्वर का वरदान समझता था।
९ अबुलफ़ज़्ल का वास्तविक उद्देश्य केवल अकबर के इतिहास की रचना था। अकबर के पूर्वजों के इतिहास की उसने प्रसगवश रचना की अत वह अब अपने उद्देश्य के निकटतम होता जाता है।

(१२१) अब मैं हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी का संक्षिप्त आश्चर्यजनक वृत्तान्त[1] प्रारम्भ करता हूँ कारण कि यह विवरण मेरे दूरदर्शी उद्देश्य की प्रस्तावना के निकटतम भी है और इससे मेरे पीर[2] व पादशाह के अहवाल[3] भी खुल जाते हैं। इस प्रकार मैं इस खदेवे इलाही[4] के खुदाये मजाज़ी[5] के (वृत्तान्त) पर जो परदे पड़े हैं उन्हें खोलकर ज्ञान के प्यासों[6] को मारेफ़त[7] के जल से तृप्त करूँगा और अपने प्यासे हृदय[8] को भी इस कामिलुज्जात[9] के पवित्र गुणों की प्रशंसा के समुद्र के निकट पहुँचा सकूँगा। इस जौहरे फ़र्द[10] के कमालों की तारीफ़ मुझ जैसे के बस में कहाँ? उसके गुणों की प्रशंसा करने वाला उसी के समान होना चाहिये। हाय! हाय! मारेफ़त के समुद्र का ऐसा अद्वितीय मोती कहाँ? मैं अपने लेख को स्वयं चमक-दमक प्रदान कर रहा हूँ और अपने लिए एक महान् कार्य कर रहा हूँ। अपने हृदय को मारेफ़त से परिचित कर रहा हूँ और ज़बान पर मआनी[11] की पालिश चढ़ा रहा हूँ।

हुमायूँ का जन्म

हे घटनाओं की खोज करने वालो[12]! सावधान हो जाओ और इस बात को जान लो कि हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी का पवित्र जन्म मंगलवार की रात्रि ४ ज़ीक़ाद ९१३ हि० (६ मार्च १५०८ ई०) को काबुल के किले में माहम बेगम[13] के पुनीत गर्भ से हुआ।

वे खुरासान के प्रतिष्ठित एवं सम्मानित वंश से थीं और उनकी रिश्तेदारी सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा[14] से थी। कुछ विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि जिस प्रकार हज़रत शाहंशाह की सम्मानित

१ 'बक़ाये बक़ाये'।

२ धर्मगुरु, मुर्शिद अर्थात् अकबर।

३ अरबी में पीर मानकर अहवाल शब्द का प्रयोग किया गया है अत: इस शब्द का अर्थ धार्मिक गुरुओं का वृत्तांत तथा उनसे सम्बन्धित घटनायें है।

४ दैवी पादशाह अर्थात् अकबर।

५ माता हुमा ईश्वर, पिता, अरबी तथा फ़ारसी साहित्य में पिता को खुदाये मजाज़ी लिखते हैं।

६ ज्ञान की खोज करने वाले।

७ दैवी ज्ञान।

८ प्रकाशित पोथी में "तिश्ना लब" है किन्तु बहुत सी हस्तलिपियों में "तिश्ना दिल" है। यही ठीक है।

९ वह व्यक्ति जो हर प्रकार से पूर्ण हो, अकबर से तात्पर्य है।

१० ऐसा सार अथवा मत जो अद्वितीय हो, अर्थात् अकबर।

११ गूढ़ रहस्य से तात्पर्य है।

१२ पाठकगण।

१३ मूल में "हज़रत कुब्बी हिजाब, पर्दा नशीने सरादक़ात अफ़ाफ़ माहम बेगम" अर्थात् पवित्रता का कुब्बा एवं सतीत्व के पर्दे में बैठने वाली, ये केवल सम्मान सूचक शब्द हैं।

१४ सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा के विषय में देखिये बाबर नामा, रिज़वी : मुग़ल कालीन भारत—बाबर (अलीगढ़ १९६० ई०) पृ० ५०२-५९६। आगे के पृष्ठों में बाबर नामा से तात्पर्य यही अनुवाद होगा।

माता का सम्बन्ध हज़रत शेख जाम[1] के वंश से था उसी प्रकार उस पुनीत आत्मा का भी सम्बन्ध उसी पवित्र वंश से था। हज़रत गेती सितानी फ़िरदौस मकानी[2] जिस समय सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के पुत्रों से संवेदना प्रकट करने के लिए हिरात पधारे तो उस समय उन्होंने उनसे विवाह किया।[3]

हज़रत (जहाँबानी) के जन्म की तारीख़[4] मौलाना मसनदी ने "सुल्तान हुमायूँ ख़ाँ" के अक्षरों से निकाली। "शाह फ़ीरोज़ क़द्र[5]", 'पादशाह सफ़ शिकन[6]" तथा 'खुश बाद[7]" भी उनके जन्म की पवित्र तारीख़ें हैं, जिनकी रचना उस युग के विद्वानों ने की है। ख्वाजा कलाँ सामानी ने कहा है

शेर

'यह उनके भाग्यशाली जन्म का वर्ष है,
हे ईश्वर! उनके ऐश्वर्य में वृद्धि कर।
मैंने उनकी तारीख़ से एक अलिफ़ निकाल लिया है,
ताकि मैं बुरा चाहने वालों की दोनों आँखों में सलाई[8] फेर दूँ।'

१ अबू नस्र अहमद जाम जिन्दा पील नीशापुर (ईरान) के बड़े प्रसिद्ध सूफ़ी थे। उनका जन्म ४४१ हि० (१०४९ ई०) में हुआ। वे १८ वर्ष तक जंगलों एवं पर्वतों में घोर तपस्या करते रहे। तदुपरान्त उन्होंने विवाह किया और कहा जाता है कि उनके ३९ पुत्र एवं ३ पुत्रियाँ हुईं। शेख अहमद जाम ने कई ग्रन्थों की रचना भी की। रजब ५३६ हि० (फ़रवरी १४४२ ई०) में उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के समय उनके पुत्रों में १४ पुत्र जीवित थे। वे सब भी अपने समय के बड़े भारी विद्वान् एवं सन्त समझे जाते थे।

२ मरने के बाद बाबर की उपाधि, आगे के पृष्ठों में बाबर के लिये इन्हीं शब्दों का प्रयोग हुआ है।

३ बाबर की ८ जमादि-उस्सानी ९१२ हि० (२६ अक्तूबर १५०६ ई०) को सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के पुत्रों से भेंट हुई। ७ शाबान (२४ दिसम्बर १५०६ ई०) को वह अपने साथियों को लेकर पर्वत की कठिन यात्रा करता हुआ हिरात से चल दिया। बाबर ने अपना इस यात्रा का **बाबर नामा** में बड़ा विशद् विवरण दिया और मासूमा सुल्तान से अपनी मँगनी का उल्लेख किया है किन्तु माहम अथवा माहाम बेगम से अपने विवाह का उल्लेख नहीं किया। (**बाबर नामा**, पृ० ५८६७)। माहम से बाबर के पुत्रों एवं पुत्रियों के लिये देखिये, गुलबदन बेगम **हुमायूँ नामा** (**मुग़ल कालीन भारत—बाबर**, पृ० ३५९)।

४ अरबी वर्णमाला में प्रत्येक अक्षर की संख्या निर्धारित है। प्रत्येक शब्द के अक्षरों के योग से तारीख़ अथवा तिथि निकाली जाती है। जब कभी किसी शब्द अथवा शब्द समूह के अक्षरों का योग निर्धारित तिथि के अनुसार ठीक नहीं बैठता तो उसमें से कुछ संख्यायें निकालनी या बढ़ानी पड़ती हैं। अक्षरों की संख्या इस प्रकार है —
अलिफ़ (ا) = १, बे (ب) = २, जीम (ج) = ३, दाल (د) = ४, हे (ه) = ५, वाव (و) = ६, ज़े (ز) = ७, हे (ح) = ८, तो (ط) = ९, ये (ي) = १०, काफ़ (ك) = २०, लाम (ل) = ३०, मीम (م) = ४०, नून (ن) = ५०, सीन (س) = ६०, ऐन (ع) = ७०, फ़े (ف) = ८०, स्वाद (ص) = ९०, क़ाफ़ (ق) = १००, रे (ر) = २००, शीन (ش) = ३००, ते (ت) = ४००, से (ث) = ५००, ख़े (خ) = ६००, ज़ाल (ذ) = ७००, ज़ाद (ض) = ८००, ज़ो (ظ) = ९००, ग़ैन (غ) = १०००।

५ विजयी शाहज़ादा (شاه فیروز قدر)।

६ पाँतों को तोड़ने वाला पादशाह (پادشاه صف شکن)।

७ वह प्रसन्न रहे (خوش باد)।

८ अलिफ़ अक्षर सलाई के समान सीधा लिखा जाता है।

मायूँ का सिंहासनारोहण

हज़रत (जहाँबानी) ९ जमादि-उल-अव्वल ९३७ हि० (२९ दिसम्बर १५३० ई०) को आगरा में सिंहासनारूढ़ हुए।[१] सम्मानित सिंहासनारोहण की तारीख "खैरुल मुलूक"[२] के अक्षरों से निकलती हैं। कुछ दिन उपरान्त वे नदी की सैर को निकले। हर्ष व उल्लास की नौकायें प्रसन्नता (१२७) की नदी में चलवाकर सोने से भरी एक कश्ती[३] उसी दिन बाँट दी और इस प्रकार सोना लुटाकर अपने राज्य की नींव सोने पर रक्खी[४]। निःसंदेह जब ईश्वर किसी को संसार का राज्य देता है तो उसे सर्वप्रथम दान पुण्य की योग्यता प्रदान कर देता है।

शेर

'प्रत्येक मनुष्य सम्मानित नहीं किया जाता,
वह व्यक्ति सरदार बनता है जो लोगों के प्रति उदार हो।
सिंह समस्त पशुओं का इस कारण बादशाह बन गया,
कि वह शिकार के समय मेहमान नवाज़ी[५] करता है।'

एक अन्य विद्वान् ने इस दान-पुण्य की तिथि "कश्तिये जर" के अक्षरों से निकाली। प्रारम्भ से सिंहासनारोहण के समय तक, जब कि उनकी सम्मानित अवस्था २४ वर्ष को प्राप्त हुई, उनके ललाट से प्रताप से सौभाग्य एवं सफलता के चिह्न दृष्टिगत होते रहे और ऐश्वर्य एवं राज्य-सत्ता का प्रकाश उनके गौरव एवं उनकी महानता से प्रकट होता रहा। उनके चमकते हुए ललाट से महत्ता एवं उदारता की किरणें क्यों न फूटतीं कारण कि वे शाहंशाह[६] के नूर को अपने व्यक्तित्व में लिये हुए थे और दैवी मारेफ़त के ख़ज़ाने के कोषाध्यक्ष थे। यही वह नूर था जो कि हज़रत गेती सितानी फ़िरदौस मकानी की विजयों में प्रकट था और यही वह नूर था जो हज़रत साहब क़िरान[७] की विश्व-

१ बाबर की मृत्यु एवं हुमायूँ के सिंहासनारोहण के विषय में देखिये Hodiwala. *Historical Studies in Mughal Numismatics*, pp 262-63, गुलबदन बेगम के अनुसार बाबर की मृत्यु ५ जमादि-उल-अव्वल ९३७ हि० (२६ दिसम्बर १५३० ई०) को हुई। (हुमायूँ नामा, मुग़ल कालीन भारत—बाबर, पृ० ३७३)। अकबर नामा में ६ जमादि-उल अव्वल है, (मुग़ल कालीन भारत—बाबर, पृ० ४११)। तबकाते अकबरी तथा तारीखे फ़िरिश्ता में गुलबदन बेगम का ही समर्थन हुआ है।

२ बादशाहों में सर्वोत्तम।

३ कश्ती का अर्थ नौका होना है किन्तु कश्ती समकोण चतुर्भुज के आकार के थाल को भी कहते हैं। यहाँ थाल से ही तात्पर्य है।

४ नदी की सैर के समय के दान का उल्लेख किया गया है।

५ आतिथ्य, सिंह जिस पशु का शिकार करता है, उसे पूरा नहीं खा जाता अपितु अधिक भाग छोड़ देता है जिसे अन्य वन-पशु खा जाते हैं अतः इसे मेहमान नवाज़ी करना लिखा गया है।

६ अकबर के नूर।

७ तीमूर।

विजय करने वाली ऊषा में अपनी छटा दिखा रहा था और यही वह नूर था जो आलकुवा[1] के सतीत्व के समुद्र के सीप से निकलकर शाही मोतियों का रूप धारण कर सतानों के आवरण में प्रकट होता रहा। यही वह नूर था जिसके प्रकाश से उगुज खां[2] यशस्वी हुआ। यही वह नूर था जो आदम[3] से नूह[4] तक भिन्न व्यक्तियों की योग्यतानुसार अपना प्रकाश दिखाता रहा। इस नूर की अनुभूति का रहस्य और इस तेज के वैचित्र्य का सीमित करके किसी प्रकार स्पष्ट नहीं किया जा सकता। प्रत्येक व्यक्ति में इस रहस्य की विशेषताओं को समझने का न तो सामर्थ्य है और न इन गूढ़ विषयों का ज्ञान प्राप्त करने की योग्यता[5]।

हुमायू का चरित्र

संक्षेप में हजरत जहाँबानी को उस दैवी नूर की शक्ति प्राप्त थी जो अनेक कालों एवं युगों में विशेष रूप से और खास किस्म के वस्त्र धारण करके संसार को उद्भासित करता रहा है और जो अब शीघ्र ही प्रकट होने वाला है[6]। इस कारण सांसारिक एवं आध्यात्मिक गौरव का प्रकाश उनके चमकते हुए ललाट से जाहिर हो रहा है और अपार मर्यादा एवं अत्यधिक वीरता उनके पवित्र व्यक्तित्व में एकत्र हो गई हैं। वे इसी कारण अपना उत्कृष्ट साहस अपने सम्मानित पिता की इच्छाओं की पूर्ति में लगाये रहते थे।[7] उन्होंने अपने अत्यधिक पौरुष का अपने ऐश्वर्य तथा गौरव से समन्वय कर रक्खा था। इतने अधिक गौरव एवं इतनी श्रेष्ठता के बावजूद वे अपनी इच्छाओं की पूर्ति की ओर कोई दृष्टि न डालते थे और अपने आप को कोई महत्व न प्रदान करते थे। इस कारण अपनी सद्भावनाओं के आशीर्वाद और उच्च साहस के कारण वे जिस कार्य की ओर ध्यान देते और जिस सेवा हेतु नियुक्त होते सब में सफल हो जाते थे। वे आजीवन बुद्धि का राज्य से तथा राज्य का दया से समन्वय करके संसार को शोभा प्रदान करते रहे। विभिन्न विज्ञानों विशेष कर गणित में उस युग में उनके समान अथवा अनुरूप कोई न था। उनके सम्मानित व्यक्तित्व में
(१२३) सिकन्दर का वैभव तथा अरिस्तू की बुद्धिमत्ता दोनों का समन्वय था।

राज्य का विभाजन एवं दान-पुण्य

सांसारिक राज्य के विभाजन में पिता की वसीअत का पालन करते हुए उन्होंने अत्यधिक न्याय का प्रदर्शन ही नहीं किया अपितु महान् उदारता एवं कृपापूर्वक कार्य किया। किन्तु

१ देखिये अकबर नामा भाग १, पृ० ९४ ९६।
२ सम्भवतः उगुज़ खां जो तुर्कमानों का पूर्वज बताया जाता है
३ हजरत आदम, जो सबसे पहिले पुरुष थे। उनकी पत्नी का नाम हव्वा था
४ एक पैग़म्बर जिनके समय में कहा जाता है कि इतना बड़ा तूफान आया कि केवल थोड़े से प्राणी, जो उनकी नौका में बैठ गये थे, बच गये और शेष नष्ट हो गये।
५ ऊपर के वाक्यों में यह बताया गया है कि आलकुवा से लेकर हुमायू तक, अकबर के जितने पूर्वज हैं, उन्हें किसी न किसी प्रकार अकबर के नूर द्वारा ही उन्नति प्राप्त होती रही।
६ अकबर के जन्म की ओर संकेत है
७ देखिये बाबर नामा, पृ० १३४, २५७, २८७-२९०।

आध्यात्मिक निपुणता जोकि वास्तविक राज-सत्ता है मात्र उनके लिए एक दैवी वरदान स्वरूप था जिसका सम्बन्ध विशेष रूप से उन्हीं के व्यक्तित्व से था और उनके किसी भाई को उस महान् देन की मीरास से कोई लाभ न प्राप्त हुआ[१]।

दरबार से सम्बन्धित सभी लोगों को मवाजिब[२] एवं मसब[३] प्रदान हुए। मीर्ज़ा कामरान को जागीर के महाल[४] काबुल तथा कन्धार निश्चित हुए। सम्बल[५] की सरकार[६] मीर्ज़ा अस्करी को दी गई। अलवर[७] की सरकार मीर्ज़ा हिन्दाल को प्रदान हुई। बदख्शाँ मीर्ज़ा सुलेमान के सिपुर्द किया गया। उचित युक्तियों द्वारा उन्होंने राज्य के समस्त उच्च पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित (व्यक्तियों) तथा विजयी सेना के सभी लोगों के हृदयों को अपनी मुट्ठी में ले लिया। जो कोई भी विरोध कर रहा था उदाहरणार्थ मुहम्मद जमाल मीर्ज़ा[८] बिन (पुत्र) बदी उज्ज़मान मीर्ज़ा बिन सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा (जो हज़रत गेती सितानी फ़िरदौस मकानी की सेवा में था और जिसे उनके जामाता होने का सम्मान प्राप्त था परन्तु अल्प दर्शिता एवं मूर्खता के कारण विरोध कर रहा था) (आदि), वह उनकी सेवा हेतु कटिबद्ध हो गया।

कालिंजर विजय

हज़रत स्वयं ५-६ मास उपरान्त कालिंजर[९] के किले की विजय हेतु रवाना हुए और लगभग १ मास तक किले का अवरोध किए रहे। जब किले वाले परेशान हो गए तो कालिंजर के हाकिम ने अधीनता स्वीकार करके १२मन[१०] सोना अन्य सामान सहित उपहार स्वरूप भेजा। हज़रत

१ अबुलफ़ज़ल ने यहाँ इस सिद्धान्त का निरूपण किया है कि वास्तविक राजसत्ता का विभाजन नहीं हो सकता। बाबर ने स्वयं लिखा है, "राज में साझा एक ऐसी समस्या है जिसके विषय में कभी कुछ नहीं सुना गया है।" (बाबर नामा, पृ० ५४)।

२ पेंशन, वृत्ति, वज़ीफ़ा।

३ पद।

४ महाल —मालगुज़ारी की वसूली की सुविधा हेतु कई ग्रामों का एक समूह।

५ सम्बल अथवा सम्भल।

६ सरकार मालगुज़ारी की वसूली के लिये कई परगनों को मिलाकर एक सरकार बनाई जाती थी।

७ २७°५' तथा २८°५ अक्षांश और ७६°१०' तथा ७७°१५' देशान्तर के मध्य में। (राजपूताना गज़ेटियर, भाग ३,१८८०, पृ० १६)।

८ वह बाबर की पुत्री मासूमा सुल्तान बेगम का पति था। उसकी माता का नाम भी मासूमा सुल्तान बेगम था। उसके जन्म के समय ही उसकी माता की मृत्यु हो गई और उसका नाम अपनी माता के नाम पर रख दिया गया। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा की चौसा में १५३९ ई० में मृत्यु हो गई। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा का उल्लेख बाबर नामा में कई स्थानों पर हुआ है। (बाबर नामा, पृ० १०२, ११६, २०२, २९३, २९४, ३००, ३१५, ३१७, ३१८, ३१९, ३२२, ३२३, ३२५, ३२७, ३२९, ३३३)। उसने बाबर के पूर्व के अभियानों में विशेष भाग लिया और अफ़ग़ान विद्रोहियों के दमन में बड़ी कुशलता का प्रदर्शन किया।

९ कालिंजर, तहसील गिरवान, ज़िला बाँदा। कालिंजर का प्रसिद्ध पहाड़ी किला तथा क़स्बा बाँदा (उत्तर प्रदेश) से ३५ मील पर सतौंड के प्राचीन मार्ग पर स्थित है। (*District Gazetteers*, Banda, Vol. XXI, 1909, p 234).

१० किलमन की ग्लासरी के अनुसार अकबर का मन ३४ पौंड तथा प्रिंसेप के अनुसार ५५ पौंड का था।

(जहाँबानी) ने उसके विनय एव उसकी दुर्दशा के कारण उसे क्षमा कर दिया और वहाँ से वापसी की पताका फहराकर चुनार[1] के किले की ओर रवाना हुए। देशों को विजय करने वाले (बादशाह) की सेनाओ ने वहाँ पहुँचकर उसका अवरोध कर लिया।

चुनार विजय

यह बात छिपी न रहनी चाहिए कि यह गगन-चुम्बी किला सुल्तान इबराहीम[2] के अधिकार में था और जमाल खा खासा खेल सारगखानी[3] उसकी ओर से उसका प्रबन्ध करता था। सुल्तान इबराहीम की हत्या के उपरान्त जब जमाल खा की उम्र का प्याला उसके कृतघ्न पुत्र की दुष्टता के कारण भर गया[4] तो शेर खा ने उसकी विधवा से जो चरित्र एव रूप-रग मे अद्वितीय थी और जिसका नाम लाड मुल्क था, बहला-फुसलाकर विवाह कर लिया और इस धूर्तता से ऐसे भव्य किले पर अधिकार जमा लिया[5]। शेर खा की जब विश्व विजय करने वाली सेनाओ के आगमन

१ चुनार, परगना हवेली चुनार, तहसील चुनार जिला मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)। यह प्रसिद्ध पहाड़ी किला २५°७' उत्तर (अक्षाश) एव ८२°५४' पूर्व (देशांतर) में मिर्जापुर से २१ मील तथा बनारस से १६ मील पर स्थित है। (*District Gazetteers*, Mirzapur, 1911, p 301)। बाबर ने वहाँ की जन १५२६ ई० की यात्रा का **बाबर नामा** में उल्लेख किया है। (**बाबर नामा**, पृ० ३३२-३३३)।

२ सुल्तान इबराहीम लोदी। [देखिये रिजवी · **उत्तर तैमूर कालीन भारत** भाग १, पृ० १८६ १६७ (**वाकेआते मुश्ताकी से**), तथा अन्य इतिहासकारों के लिये यही ग्रन्थ देखिए]।

३ अब्बास ख़ा शिरवानी के अनुसार ताज खा। **बाबर नामा** के अनुसार भी चुनार, ताज खा के ही अधीन था। (**बाबर नामा**, पृ० ३३४)।

४ उसके कृतघ्न पुत्र ने उसकी हत्या कर दी।

५ शेर खा के इतिहास के सकलनकर्ता अब्बास खा बिन शेख अली सरवानी ने चुनार के किले पर अधिकार जमाने का हाल अपने सम्बन्धियों एव रिश्तेदारों से जो शेर खा के साथ थे इस प्रकार सुना था "सुल्तान इबराहीम लोदी ने चुनार का किला ताज खा सारगखानी के सिपुर्द कर दिया था ताकि बादशाही खजाने वहाँ जमा कर दिये जायें। उक्त ताज खा अपनी पत्नी लाड मलका के प्रेम में बुरी तरह फँसा हुआ था और अपने राज्य तथा सैनिकों की देखभाल उसे सौंप दी थी। बुद्धि एव सूझ-बूझ में वह बहुत बढ़ी-चढ़ी थी। ताज खा ने अपनी नियाबत (प्रतिनिधित्व) तीन तुर्कमान भाइयों को सौंप दी थी—एक मीर अहमद, एक इस्हाक और एक मीर दाद यह तीनों सगे भाई बड़े योग्य, समझदार एव बुद्धिमान् थे। जब उन्होंने देखा कि वह (ताज खा) अपनी पत्नी के वश में है तो उन्होंने आवश्यकतावश लाड मलका से मेल कर लिया तथा वचनबद्ध हो गये थे और शपथ ले ली थी कि वे उसका विरोध न करेंगे और उसके हितैषी रहेंगे तथा उसके प्रति निष्ठा प्रदर्शित किया करेंगे। इस लाड मलका के कोई पुत्र न था किन्तु ताज खा के अन्य पत्नियों से कई पुत्र थे परन्तु लाड मलका के प्रेम के कारण उसकी, उसके पुत्रों से न निभती थी। लाड मलका के भय के कारण पुत्रों को शातिपूर्वक भोजन भी न मिलता था। यद्यपि पुत्र लोग बहुत कुछ आग्रह करते किन्तु उससे कोई लाभ न होता था। वे सर्वदा लाड मलका के प्रति ईर्ष्या रखते थे। एक दिन ताज खा के श्रेष्ठ पुत्र ने लाड मलका पर तलवार का वार किया किन्तु उसका अधिक प्रभाव न हुआ उसके सेवक चिल्लाने लगे। ताज खा तलवार खींचकर पुत्र की हत्या के उद्देश्य से पहुँचा और कहा कि "तूने भले भाँति तलवार नहीं चलाई (?) अब देख मैं कैसी तलवार चलाता हूँ।" पुत्र समझ गया कि वह पत्नी के कारण मेरी हत्या कर देगा। उसने अपने पिता पर तलवार का वार किया और घर के बाहर निकल गया। ताज खाँ की उस घाव के कारण मृत्यु हो गई। ताज खा के पुत्रों की लाड मलका के कारण अधिकाश सैनिकों से शत्रुता थी

(पिछले पृष्ठ से फुट नोट)

लाड मलका बड़ी योग्य स्त्री थी। समस्त सेना ताज खाँ के जीवन-काल में उसके साथ थी। उसकी मृत्योपरान्त भी उसके साथ रही किन्तु कुछ बुरे लोग ताज खाँ के पुत्रों के साथ थे। खजाने के लिये रोज झगड़ा रहा करता था। क्योंकि ताज खाँ के पुत्र अयोग्य थे अतः इसी कारण सेना वाले उनकी ओर आकृष्ट न थे। शेर खाँ ने मीर अहमद से गुप्त रूप से कहलवाया कि "मीर दाद को मेरे पास भेज दो। मेरे हृदय में कुछ बातें हैं। तुझे कहला भेजूंगा।" मीर अहमद ने मीर दाद को शेर खाँ के पास भेज दिया। उसने उससे कहा, "मीर अहमद से कह दो कि मैं उसे अत्यधिक लाभ पहुँचाने के लिये तैयार हूँ।" मीर अहमद ने जब यह बात सुनी तो अपने भाइयों से कहा, "लाड मलका में सेना सम्बन्धी योग्यता है किन्तु वह स्त्री है। बड़ी अधिक संख्या में लोग किले एवं खजाने का लोभ कर रहे हैं। लाड मलका किले की प्रतिरक्षा नहीं कर सकती अतः यही उचित होगा कि हम शेर खाँ को मिला दे दें और उसे अपना आभारी बना लें। वह हमारे काम आयेगा।" भाइयों ने मीर अहमद की राय को पसन्द किया और वे लाड मलका के पास पहुँचे। उन्होंने शेर खाँ का पत्र दिखाकर कहा, "हम तेरे आज्ञाकारी हैं। जो कुछ तू आदेश दे उसका पालन करें।" उसने कहा, "अधिकार तुम लोगों के हाथ में है। जो तुम कहोगे मुझे स्वीकार है। तुम लोगों के समान हमारा कोई हितैषी नहीं है। तुम लोग मेरे पिता के स्थान पर हो।" मीर अहमद ने निवेदन किया, "यदि तू रुष्ट न हो तो तेरे हित की एक बात कहें।" उसने कहा, "कोई संकोच न करो, जो तुम्हारे हृदय में हो वह बिना किसी भय के कह डालो।" मीर अहमद ने कहा, "यदि इस किले के लिये झगड़ा न भी होता तो भी तू इसे अपने पास न रख सकती थी कारण कि तू स्त्री है और तेरे कोई पुत्र नहीं है। किले पर अधिकार जमाने के बहुत से लोग इच्छुक हैं। यह बादशाहों का स्थान है, बादशाहों के अधिकार में रहने की वस्तु है। अभी तक किसी बादशाह ने इसपर आक्रमण नहीं किया है। किला शेर खाँ को दे देना चाहिये। तू उससे विवाह कर ले ताकि तू शांति से रह सके कारण कि कोई बादशाह खजाना तथा किला तेरे पास न रहने देगा।" लाड मलका ने कहा, "अपने भाई मीर दाद को शेर खाँ के पास भेज दे और वह उससे प्रतिज्ञा करा ले कि मैं उसे इस शर्त पर किला देती हूँ कि वह उस अभागे पुत्र के जिसने अपने पिता की हत्या की है, कान-नाक कटवा ले ताकि अन्य लोग इससे शिक्षा ग्रहण कर सकें।" जब मीर दाद शेर खाँ के पास पहुँचा तो उसने पुनः शपथ ली एवं प्रतिज्ञा करा ली कि वह लाड मलका एवं तीनों भाइयों के प्रति बुराई एवं शत्रुता न करेगा। शेर खाँ ने आतिथ्य का अत्यधिक प्रबन्ध किया और उसमें कोई कसर न उठा रक्खी। उसने अत्यधिक, स्नेह एवं निष्ठा का प्रदर्शन करते हुए कहा कि, "यदि लाड मलका मुझे किला प्रदान कर देगी और स्वयं मेरे निकाह में आ जायगी तो मैं तेरा बड़ा आभारी रहूँगा। हृदय के पक्षी का उपकार द्वारा बन्दी बनाना बड़ा ही प्रशंसनीय एवं उत्तम कार्य है।" मीर दाद ने कहा, "बादशाह के अतिरिक्त किला एवं खजाना किसी को देना उचित नहीं। इस समय मैं जब आपकी सेवा में आया तो आपने मेरे प्रति इतनी कृपा एवं उदारता प्रदर्शित की और मेरा इतना अधिक आदर-सम्मान एवं आतिथ्य किया कि मेरे हृदय में इसके अतिरिक्त इसका कोई अन्य बदला समझ में नहीं आता कि यह किला आपके अधिकार में आ जाय। प्रयत्न करने में कोई कसर न उठा रक्खूँगा। ईश्वर से आशा है कि वह मेरी बात का विरोध न करेगी। जब आपके राज्य के हित की बात पूरी हो जाय तो आप ऐसा व्यवहार न करें कि इन दासों की बदनामी एवं लज्जा का कारण हो।" शेर खाँ ने उसकी इच्छानुसार वचनबद्ध होकर एवं शपथ लेकर मीर दाद की तसल्ली कर दी कि, "जब तक मैं जीवित हूँ तुझे कोई हानि न पहुँचाऊँगा और यथा सम्भव कृपा एवं उदारता प्रदर्शित करूँगा ताकि अन्य लोगों को मेरे वचन एवं मेरी प्रतिज्ञा का विश्वास हो जाय और वे मेरी सेवा की इच्छा करने लगें।" मीर दाद ने निश्चय किया कि वह शीघ्र ही तैयारी करके रवाना हो जाय। मीर दाद ने पहिले पहुँचकर शेर खाँ के किले में पहुँचने के समाचार पहुँचाये और कहा, "किला प्रदान करने में विलम्ब न करना चाहिये।" लाड मलका एवं उसके भाइयों ने स्वीकार कर लिया। मीर दाद को पुनः इस आशय से भेजा कि वह शीघ्र ही उसे अपने साथ किले में ले आये ताकि उसके (लाड मलका के सौतेले) पुत्रों को पता न चलने पाये। जब

के समाचार प्राप्त हुए तो वह अपने पुत्र जलाल खां[1] को कुछ विश्वासपात्रो सहित वहाँ नियुक्त करके स्वय वहाँ से चल दिया और अनुभवी दूतो को भेजकर चिकनी चुपडी बाते करने लगा। हज़रत (जहाँबानी) ने स्थिति पर ध्यान देते हुए उसकी बाते स्वीकार कर ली। उसने (शेर खा ने) अपने पुत्र अब्दुर्रशीद[2] को हजरत जहाबानी की सेवा में इस आशय से भेज दिया कि वह स्वय शाही सेना की चोट सहने से बच जाये और अपने अभिमान एव गुरूर के साधना की व्यवस्था (१२४) करता रहे। उक्त पुत्र बहुत समय तक बादशाह की सेवा मे उपस्थित रहकर आज्ञाओ का पालन करता रहा यहाँ तक कि जब विश्व-विजय करने वाली पताकायें सुल्तान बहादुर को दड देने के लिए मालवा पहुँची तो वह अभागा भाग्यशाली सेना से भाग खडा हुआ।

बिबन एव बायजीद के विद्रोह का दमन

९३९ हि० (१५३२-३३ ई०) मे जब अफगाना के गरोह के (सरदार) बिबन[3] तथा बायजीद ने विद्रोह कर दिया तो हज़रत जहाबानी पूर्व की ओर रवाना हुए। बायजीद निष्ठावान् वीरो से युद्ध करता हुआ मारा गया और दुष्टो के इस समूह का कूडा-करकट साफ हो गया। सुल्तान जुनैद बरलास को जौनपुर तथा वह क्षेत्र प्रदान करके (हजरत जहाँबानी) राजधानी वापस चले गये।

सुल्तान बहादुर के दूत का आगमन

जब जहाँबानी की विजया एव सफलताओ की प्रसिद्धि विभिन्न राज्या मे फैल गई तो ९४० हि० (१५३३-३४ ई०) मे गुजरात के शासक सुल्तान बहादुर ने बुद्धिमान् दूतो के हाथ तुहफे और उपहार भेजकर मित्रता का सम्बन्ध स्थापित करने का प्रस्ताव रखवाया। हज़रत जहाँबानी ने उसके दूतो को शाही उदारता द्वारा सम्मानित करके कृपायुक्त फरमान भेजे और उसे सतुष्ट कर दिया।

दीन पनाह का बसाया जाना

उसी वर्ष राजधानी देहली के समीप यमुना-नदी के तट पर उन्होने एक नगर बसाया जिसका नाम दीन पनाह[4] रखा। एक विद्वान् ने उसकी तारीख "शहर पादशाहे दीन पनाह"[5] के अक्षरो मे निकाली।

मीर दाद ने जाकर शेर खां से किला तथा खज़ाना प्रदान किये जाने एव लाड मलका से निकाह के विषय में कहा तो वह उसके साथ किले के भीतर पहुँचा। लाड मलका से शेर खा का तत्काल निकाह कर दिया गया। (तारीखे शेरशाही डा० परमात्मा शरण की हस्तलिपि, पृ० ६३ ६८, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की हस्तलिपि, पृ० ८६ ९०; अलीगढ़ विश्वविद्यालय हस्तलिपि, पृ० ६४-१००, इलियट, बाडलीयन की हस्तलिपि)।

१　वह शेर शाह के उपरान्त इस्लाम खा की उपाधि धारण करके बादशाह हुआ।

२　वह कुतुब खा भी कहलाता था।

३　बिबन ने इबराहीम लोदी के विरुद्ध बाबर को कई पत्र प्रेषित किये थे। (बाबर नामा, पृ० १४६)। वह २५ फ़रवरी १५२६ ई० को बाबर की सेवा में जब वह अम्बाला से प्रस्थान कर चुका था, उपस्थित हुआ, (बाबर नामा, पृ० १५०)। बाद में उसने विद्रोह कर दिया और उसके कारण बाबर को बडी कठिनाई का सामना करना पडा।(बाबर नामा, पृ० १५२, २०७, २०८, २५३, २६६, २६७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३२, ३३६)।

४　धर्म की रक्षा करने वाला।

५　धर्म के रक्षक पादशाह का नगर।

मुहम्मद जमान मीर्ज़ा की पराजय

इसके बाद मुहम्मद जमान मीर्ज़ा, मुहम्मद मुल्तान मीर्ज़ा तथा उसके पुत्र उलुग मीर्ज़ा ने विरोध तथा विद्रोह का मार्ग अपनाया। हज़रत जहाँबानी ने अपने संकल्प की बाग उस समूह की ओर मोड़ कर गंगा तट पर भोजपुर[1] के समीप पड़ाव किया और यादगार नासिर मीर्ज़ा को एक भारी सेना सहित नदी पार करवा कर विद्रोहियों के विरुद्ध भेजा। उसने दैवी सहायता से युद्ध करके विजय प्राप्त कर ली। मुहम्मद जमान मीर्ज़ा, मुहम्मद मुल्तान मीर्ज़ा तथा वली ख़ूब मीर्ज़ा बन्दी बना लिये गए। मुहम्मद जमान मीर्ज़ा को बन्दी बनाकर बयाना[2] भेज दिया गया और शेष दोनों व्यक्तियों की आँखों में सलाई फिरवाकर उन्हें विश्वास की श्रेणी से नीचे गिरा दिया गया।[3] मुहम्मद जमान मीर्ज़ा ने सुरक्षा को नगण्य समझा और जाली फरमान दिखाकर बन्दी-गृह से भाग खड़ा हुआ और सुल्तान बहादुर के पास गुजरात पहुँच गया।

हुमायूँ की विजय

हज़रत जहाँबानी ने हिन्दुस्तान के अधिकांश हृदयग्राही प्रदेश, जो हज़रत फिरदौस मकानी गेती सितानी के काल में समयाभाव के कारण विजय न हो सके थे, अपने प्रताप से जीत लिये।

मीर्ज़ा कामरान का काबुल से पंजाब पहुँचना

जब मीर्ज़ा कामरान ने हज़रत गेती सितानी फिरदौस मकानी के निधन के समाचार सुने तो अपनी बुद्धिहीनता के कारण मीर्ज़ा अस्करी को कन्धार सौंप दिया और हिन्दुस्तान की ओर इस आशय (१२५) से चल पड़ा कि सम्भवतः उसे कोई लाभ प्राप्त हो सके। किन्तु जब सौभाग्य का मुकुट किसी भाग्यशाली के सिर को सुशोभित कर रहा हो और दैवी सहायता एवं प्रतिरक्षा उसकी हिफ़ाज़त कर रही हो तो (उसके विरुद्ध) नष्टकारी कल्पनाओं से विनाश के अतिरिक्त प्राप्त ही क्या हो सकता है ? कहा जाता है कि उन दिनों हज़रत गेती सितानी फिरदौस मकानी के आदेशानुसार मीर यूनुस अली[4] लाहौर का हाकिम[5] था। मीर्ज़ा कामरान ने एक षड्यंत्र रचा। उसने धूर्तता की दृष्टि से कराचा बेग[6]

१ भोजपुर : उत्तर प्रदेश के फ़र्रुख़ाबाद ज़िले का एक ग्राम जो २६°१७' उत्तर तथा ७९°४१' पूर्व में फतहगढ़ के दक्षिण में ६ मील पर स्थित है।

२ भरतपुर में २६°५५' उत्तर तथा ७७°८' पूर्व, भरतपुर नगर के दक्षिण-पश्चिम में दक्षिण की ओर। (*The Imperial Gazetteer of India*, Vol. VII, 1908, p. 137)। बयाना के क़िले के विषय में देखिये **बाबर नामा**, पृ० २०८।

३ उनके विश्वास का अन्त हो गया।

४ वह बाबर का बहुत बड़ा विश्वासपात्र था। **बाबर नामा** में उसका अनेक स्थानों पर उल्लेख हुआ है; (पृ० १०५, ११३, ११४, १५६, १५७, २०६, २२३-२२५, २७३, २९३, ३१७, ३२५, ३३४)।

५ गवर्नर।

६ वह ९५८ हि० (१५५१-५२ ई०) में हुमायूँ के विरुद्ध आक्रमण करते हुए काबुल के समीप मारा गया। (**अकबर नामा भाग १**, पृ० ३०४)।

हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी की शुभ सेना का बंगाला की विजय हेतु प्रस्थान, इस संकल्प को त्याग कर राजधानी में वापसी

हुमायूँ का पूर्व की ओर प्रस्थान तथा वापसी

जब हज़रत जहाँबानी का पवित्र हृदय ममालिके महरूसा[1] (के शासन प्रबन्ध) की समस्याओं (के समाधान की ओर) से मुक्त हो गया तो ९४१ हि० (१५३४-३५ ई०) में उन्होंने अपने संकल्प की लगाम पूर्व के प्रदेशों की ओर इस आशय से मोड़ी कि उनके प्रताप से बंगाल विजय हो जाय। सौभाग्य की पताकायें कनार[2] कस्बे में, जो कालपी[3] के क्षेत्र में है, पहुँच चुकी थी कि शाही कानों तक यह समाचार पहुँचे कि सुल्तान बहादुर ने चित्तौड़ के किले के अवरोध के बहाने से एक बहुत बड़ी सेना सुल्तान अलाउद्दीन[4] के पुत्र तातार खाँ के अधीन करके सर्वनाशकारी विचारों से प्रेरित असम्भव कल्पनाएँ करनी प्रारम्भ कर दी हैं। हज़रत (जहाँबानी) ने अपने जागरूक प्रताप की प्रेरणा से जमादि-उल अव्वल ९४१ हि० (नवम्बर दिसम्बर १५३४ ई०) में शत्रुओं का विनाश निश्चय करके वापसी का नक्कारा बजवा दिया।

सुल्तान बहादुर की योजनाएं

अनुभवी समीक्षकों से यह बात गुप्त न रहनी चाहिये कि सुल्तान बहादुर की कल्पनाएँ सर्वदा बड़ी ऊँची उड़ान उड़ा करती थी और सर्वनाशकारी आकांक्षाओं का काँटा उसके हृदय को बींधता रहता था[5] किन्तु गुजरात का हाकिम होने के पूर्व जब वह अकेला मारा-मारा फिरा करता था तो उसी समय अपनी शिक्षा ग्रहण करने वाले नेत्रों से हज़रत फ़िरदौस मकानी गेती सितानी तथा सुल्तान इब्राहीम के युद्ध को देख चुका था[6] और किसी भी दशा में इस सम्मानित वंश की विजयी सेनाओं से युद्ध न करना चाहता था। इस विषय में वह कई बार अपने विश्वासपात्रों से अपने विचार व्यक्त भी कर चुका था। जब तातार खाँ उसकी

१ अधीनस्थ राज्य।

२ **आईने अकबरी** के अनुसार कालपी (जिला जालौन, उत्तर प्रदेश) का एक महाल। बाबर अपनी पूर्व की यात्रा के समय वहाँ २३ दिसम्बर १५२७ ई० को पहुँचा था। (**बाबर नामा**, पृ० २६२-२६३)। प्राचीन गाँव अब लगभग नष्ट हो चुका है और कनारखेड़ा कहलाता है। इस स्थान के समीप एक नया गाँव जगमनपुर अथवा जगमोहनपुर बस गया है। [Elliot *Races* (p 95)] जगमनपुर कालपी से उत्तर पश्चिम में लगभग ४० मील पर है।

३ जिला जालौन (उत्तर प्रदेश) में प्रसिद्ध प्राचीन कस्बा जो ...६°८ उत्तर तथा ७९°४५ पूर्व में यमुना नदी पर स्थित है। (*The Imperial Ga etteer of India*, Vol XIV pp 318-320)

४ अफ़गान, (**बाबर नामा**, पृ० २४९)

५ उसके महत्वाकांक्षी होने से तात्पर्य है।

६ **तबक़ाते अकबरी** भाग ३, पृ० १९८-२०८, **मिरआते सिकन्दरी**, पृ० २०३-२०५, **ज़फ़रुल वालेह**, पृ० १३३-१३४ (रिज़वी **उत्तर तैमूर कालीन भारत** भाग २, पृ० २४६-२४९, ३९३-३९४, ४६०-४६१)। बाबर ने उसका उल्लेख करते हुए उसे अत्याचारी एवं निष्ठुर बताया है। (**बाबर नामा**, पृ० २१४-२१५)।

सेवा मे उपस्थित हुआ तो वह सर्वदा उसके हृदय मे मिथ्यापूर्ण बाते आरूढ किया करता तथा शिष्टाचार के क्षेत्र के उल्लघन को साधारण बात बताया करता था। सुल्तान बहादुर उसकी बातो में न आता था (१२७) यहाँ तक कि एक दिन उसने स्पष्ट रूप मे तातार खा से कह दिया कि, "मै इस आश्चर्यजनक सेना[1] के युद्ध की लीला देख चुका हूँ। गुजरात की सेना उनका मुकाबला नही कर सकती। मैं किसी न किसी उपाय तथा युक्ति से उनकी सेना को अपने जाल में फसा लूगा।" इसी उद्देश्य से उसने खज़ाने का मुह खोलकर धन लुटाना प्रारम्भ कर दिया। उसने एक ऐसी सेना एकत्र कर ली जो देखने में तो सेना थी किन्तु जिसे कोई महत्व नही दिया जा सकता था। उसमे १०,००० आदमी भरती किए गए।

मुहम्मद जमान मीर्ज़ा का पलायन

इसी बीच में मुहम्मद जमान मीर्ज़ा यादगार तगाई[2] के, जो उसका रक्षक था, सेवको से *मिल गया और बन्दी-गृह से भाग खडा हुआ। वह वहाँ से गुजरात पहुँचा। वहाँ का वाली[3] उस* ख्याली पुलाव के कारण जो वह पका रहा था, मीर्ज़ा के आगमन को अत्यधिक महत्वपूर्ण समझकर, उसकी बडी आवभगत करने लगा। हज़रत जहाबानी ने सुल्तान बहादुर को लिखा कि "जो प्रतिज्ञा-पत्र लिखे जा चुके हैं और जो सन्धिया हो चुकी हैं उनकी दृष्टि से यह आवश्यक है कि "जो लोग सेवा के उत्तरदायित्व का विरोध में परिवर्तित करके[4] उस ओर भागकर चले जायें, वे या तो सम्मानित दरबार में वापस भेज दिये जाये और या उन्हे अपने पास से निकाल दिया जाय ताकि ससार वालो को हमारे मेल-जोल का प्रमाण मिल जाय[5]।" सुल्तान बहादुर ने या तो अनुभवशून्यता या सामारिक मस्ती के कारण यह उत्तर लिखा कि, "यदि कोई उच्च वश का व्यक्ति मेरी शरण मे आ जाय और उसके प्रति कृपा प्रदर्शित कर दी जाय तो यह स्नेह एव निष्ठा के नियमो के विरुद्ध नही और इसमे प्रतिज्ञा-पत्रो तथा सधियो को कोई हानि नही पहुँचती। इस प्रकार सुल्तान सिकन्दर लोदी के समय में यद्यपि सुल्तान तथा सुल्तान मुज़फ्फर[6] में अत्यधिक घनिष्ठता थी किन्तु उसका भाई सुल्तान अलाउद्दीन और अनेक शाही वश वाले विभिन्न अवसरो पर आगरा तथा देहली से गुजरात आते रहे और उनके प्रति उदारता प्रदर्शित की गई। किन्तु इस कारण दोनो की मित्रता पर कोई कुप्रभाव न हुआ।" हज़रत जहाँबानी ने उत्तर में फरमान भेजा कि, "प्रतिज्ञा-पत्रो एव सधियो के मार्ग पर दृढ होने का इसके अतिरिक्त कोई अन्य प्रमाण नही कि जो बात निष्ठा के स्तम्भो के

१ पानीपत में बाबर तथा सुल्तान इबराहीम लोदी के युद्ध की ओर संकेत है।

२ वह हुमायू का ससुर था। नवम्बर १५२८ ई० में उसकी पुत्री से हुमायू के एक पुत्र का जन्म भी हुआ। (बाबर नामा, पृ० २८३)।

३ हाकिम ; गवर्नर सुल्तान बहादुर गुजराती।

४ सेवा त्यागकर एवं विद्रोह की दृष्टि से।

५ इन संधियों के विषय में आगे के पृष्ठों में मीर तुराब वली की **तारीखे गुजरात** तथा सिकन्दर बिन मंझू की **मिरआते सिकन्दरी** का अनुवाद देखिये।

६ सुल्तान बहादुर का पिता।

के समय वह विजयी[1] सेना के साथ था। तातार खा गुजरात पहुँचा। सुल्तान बहादुर ने उसका विश्वास कर लिया। हजरत गेती सितानी फिरदौस मकानी ने हिन्दुस्तान की विजय के उपरान्त उसकी दुर्भावनाओ से अवगत होकर उसे बदख्शाँ भेज दिया। अफगान व्यापारियो की सहायता से वह किलये जफर[2] से भाग कर अफगानिस्तान और वहाँ से बिलोचिस्तान और अन्त मे गुजरात पहुँचा।

तातार खा द्वारा ब्याना पर अधिकार

सक्षेप मे जब उक्त सेनाये रवाना हो गई तो तातार खा खजाने पर अधिकार जमा कर सेना एकत्र करने मे व्यस्त हो गया। लगभग ४० हजार अश्वारोही, जिनमें अफगान इत्यादि सम्मिलित थे, एकत्र हो गए यहां तक कि उसने वहा से ब्याना पहुँच कर उसे अपने अधिकार में कर लिया।

हुमायू का सेना भेजना

जब हजरत जहाबानी का, जो पूर्व के प्रदेशो की विजय हेतु रवाना हो चुके थे, यह समाचार प्राप्त हुए तो वे अपने ध्यान की लगाम इस ओर मोड कर शीघ्रातिशीघ्र राजधानी आगरा पहुँचे और वहाँ पडाव किया। मीर्जा अस्करी, मीर्जा हिन्दाल, यादगार नासिर मीर्जा, कासिम हुसन सुल्तान, मीर फकीर[3] अली, जाहिद बेग, तथा दोस्त बेग को १८,००० अश्वारोहियो सहित इस विद्रोह के दमन हेतु भेजा और आदेश दिया कि इस बडी सेना को जो कुत्सित विचारो से देहली आ रही है, नष्ट कर देने से वास्तव मे अन्य सेनायें भी नष्ट हो जायेगी। अत यही उचित होगा कि इसी सेना को रोकने का सकल्प किया जाय। जब विजयी सेना, शत्रु की सेना के समीप पहुँची तो शत्रु की सेना भयभीत हो गई। नित्य प्रति उनका कोई न कोई समूह उनसे पृथक होकर भागने लगा और शनै शनै कुछ ही समय मे उनके पास कुल ३००० अश्वारोही रह गये। क्योकि उसने यह सेना अत्यधिक आग्रह करके प्राप्त की थी और अपार धन व्यय किया था अत वह न तो भाग सकता था और न उसमे युद्ध करने की शक्ति थी। अन्त मे जान से हाथ धो कर उसने मदराएल[4] मे युद्ध प्रारम्भ कर दिया, यथा-सम्भव हाथ पाँव मारे, किन्तु अन्त में बिना हाथ पाव का होकर विनाश के बाण का लक्ष्य और खून बहाने वाले योद्धाओ की तलवार का भोजन बन गया[5]। (हजरत जहाबानी के) पवित्र हृदय मे इस सेना के छिन्न भिन्न होने का जो परिणाम प्रतिबिम्बित हुआ था, वह सब

१ बाबर की सेना।
२ किलये जफर में सम्भवत बडे बडे विद्रोही रक्खे जाते थे। शाह इस्माईल जुन्नून के पुत्र शाह बेग को भी कन्धार विजय के उपरान्त वहीं बन्दी बनाया था किन्तु शाह बेग अपने दास मेहतर सुम्बुल की सहायता से वहाँ से मुक्त हो गया। [मुहम्मद मासूम तारीखे सिंध (बम्बई १९३८ ई०), पृ० १०८ १०९, रिजवी मुगुल कालीन भारत—बाबर, पृ० ६५०-६५३]।
३ अन्य स्थानों पर फक्र अली भी लिखा गया है।
४ मंदराएल सम्भवत आईने अकबरी का मन्दरायल, आगरा के दक्षिण में, ब्याना के समीप।
५ अर्थात् मार डाला गया।

निकला, कारण कि विजयी सेना की विजय एवं सफलता के समाचार पाकर दोनों अन्य सेनायें भी आप ही आप छिन्न-भिन्न हो गईं।

हज़रते जहाँबानी जन्नत आशियानी का गुजरात की विजय हेतु प्रस्थान, सुल्तान बहादुर की पराजय तथा उन प्रदेशों की विजय

(१३०) यद्यपि विश्व विजय करने वाले[१] (बादशाह) के हृदय में गुजरात की विजय का कोई विचार न था कारण कि वहाँ का वाली[२] सर्वदा निष्ठा एवं मित्रता के मार्ग पर अग्रसर रहता था किन्तु जब विधाता यह चाहता है कि किसी न्यायशील के चरणों द्वारा किसी देश को गौरव प्रदान करे तो वह ऐसे साधन उपलब्ध कर देता है जिनकी उपेक्षा सम्भव नहीं। इस तथ्य का प्रमाण गुजरात के वाली का व्यवहार है जिसने अपने अभिमान, चापलूसों की भीड़ भाड़, मस्ती एवं मस्त व्यक्तियों के आधिक्य, सावधानी एवं सावधान व्यक्तियों की कमी के कारण बिना किसी वजह के प्रतिज्ञा भंग करके बाह्य मेल जोल में कमी कर दी और इतने अनुचित काम कर डाले कि उच्च साहस वाले (बादशाह) के लिये यह परमावश्यक हो गया कि वे उत्कृष्ट सेना गुजरात की ओर रवाना करें। तदनुसार जमादि उल-अव्वल ९४१ हि० (नवम्बर १५३४ ई०) के प्रारम्भ में (हज़रत जन्नत आशियानी ने) सौभाग्य के पथ प्रदर्शन एवं प्रताप के निर्देश में शुभ मुहूर्त में आशीर्वाद की रिकाब में पाँव रख कर गुजरात की विजय करने का सकल्प करके इक़बाल की लगाम को मोड़ा[३]।

हुमायूँ का गुजरात की ओर प्रस्थान

जब शाही सेना का पड़ाव रायसेन[४] के किले के समीप हुआ तो किले वालों ने बहुमूल्य उपहार सहित प्रार्थना-पत्र प्रेषित किए और निवेदन कराया कि, "किला पादशाह का है और हम पादशाह के दास हैं। जब उस समस्या का जो सुल्तान बहादुर के कारण उत्पन्न हुई है समाधान हो जायगा यह किला आपके किस काम आयेगा?" वास्तव में (हज़रत जहाँबानी) का उद्देश्य गुजरात प्रदेश की विजय था अतः वे वहाँ न रुक कर मालवा प्रदेश की ओर रवाना हुए। जब विजयी सेना सारंगपुर[५] पहुँची तो विश्व विजय करने वाले लश्कर के प्रस्थान का शोर एवं विजयी पताकाओं के निरन्तर कूच की सूचना सुल्तान बहादुर को, जो चित्तौड़ के किले का अवरोध किए हुए था, प्राप्त

१ हुमायूँ के।

२ हाकिम।

३ गुजरात की ओर प्रस्थान किया।

४ भोपाल के पूर्व में २३°२०' उत्तर तथा ७७°४७' पूर्व में। पूर्वी मालवा के इतिहास में इस स्थान को सर्वदा बड़ा महत्व प्राप्त रहा। अब यह साधारण सा स्थान बन कर रह गया है। (*The Imperial Gazetteer of India*, XXI, pp 62-63)। शेर शाह ने १५४५ ई० में इस पर अधिकार जमा लिया।

५ सारंगपुर —देवास (मध्य प्रदेश) में २३°३४' उत्तर तथा ७६°४९' पूर्व में, बम्बई से आगरा के मार्ग पर इन्दौर से ७४ मील की दूरी पर।

हुई। वह असावधानी की निद्रा से जागा और उसने अपने सेवकों से परामर्श किया। कुछ लोगों का मत यह था कि "किले पर जब इच्छा हो विजय प्राप्त हो सकती है और किले वालों से इस समय कोई हानि नहीं पहुँच रही है अतः इस समय यही उचित होगा कि किले की विजय को स्थगित करके हम शाही लश्कर का मुकाबला करें।" सद्र खाँ ने, जो अपने युग के विद्वानों एवं प्रतिभाशाली व्यक्तियों तथा सैनिकों के समूह में उच्च श्रेणी का था और अपनी बुद्धिमत्ता एवं उच्च परामर्श के लिए प्रसिद्ध था, कहा कि "किले का कार्य जिसे हमने लगभग पूरा कर लिया है समाप्त कर लेना चाहिये। हम काफ़िरों पर आक्रमण कर रहे हैं। मुसलमान पादशाह हम पर चढ़ाई न करेगा और यदि वह आक्रमण कर दे तो फिर गज़ा[1] त्याग कर उससे युद्ध करने पर हम विवश समझे जायेंगे।' सुल्तान बहादुर ने इस राय को पसन्द कर लिया और वह वहाँ दृढ़तापूर्वक जम गया यहाँ तक कि ३ रमज़ान ९४१ हि० (८ मार्च १५३५ ई०) को सुल्तान ने चित्तौड़ का किला विजय कर लिया और सम्मानित सेना के विरुद्ध जो उज्जैन[2] में पड़ाव किए हुए थी, रवाना हुआ। जब हज़रत (जहाँबानी) ने उत्कृष्ट कानों तक सुल्तान बहादुर की धृष्टता के समाचार पहुँचे तो वे शीघ्रातिशीघ्र रवाना हुए और मन्दसौर[3] के समीप जो मालवा के अधीन है एक झील[4] के दोनों ओर शाही सेना उतर पड़ी। वह झील समुद्र के बराबर लम्बी चौड़ी है।

सुल्तान बहादुर द्वारा प्रतिरक्षा का प्रबन्ध

(१३१) हज़रत जहाँबानी की सेना के हिरावल[5] से, जो बचका बहादुर के अधीन था, तथा सुल्तान बहादुर की सेना से जो सैयिद अली खाँ, मीर्ज़ा मुक़ीम (जिसकी उपाधि खुरासान खाँ थी) के अधीन था, युद्ध हुआ। शत्रु पराजित हुए। सुल्तान बहादुर का भी दिल टूट गया। ताज खाँ तथा सद्र खाँ ने उससे कहा कि, "हमारी सेना ने अभी-अभी चित्तौड़ विजय किया है और अभी उसने शाही सेना का युद्ध नहीं देखा है इस कारण वह दृढ़ हृदय से युद्ध करेगी, अतः अविलम्ब युद्ध छेड़ देना चाहिये।" रूमी खाँ[6] जिसके अधीन तोपखाना था एवं अन्य सैनिकों ने सुल्तान से कहा, "हमारे साथ बहुत बड़ा तोपखाना है। आग की वर्षा की इतनी बड़ी व्यवस्था के होते हुए तलवार चलाने का कोई अर्थ नहीं। यह उचित होगा कि हम अपने चारों ओर अराबों[7] का घेरा तैयार

१ धर्म-युद्ध, जिहाद

२ मालवा के मध्य में स्थित प्राचीन नगर, २३°११ उत्तर तथा ७५°४७ पूर्व में। (*The Imperial Gazetteer of India*, XXIV, pp 112-115)

३ २४°५' उत्तर तथा ७५°५ पूर्व, सिवाना नदी के, जो सिप्रा नदी की एक शाखा है, तट पर। यह उज्जैन के उत्तर-पश्चिम में लगभग ८० मील पर है। (*Gwalior State Gazetteer*, Vol 1, 1908, pp 265 66)

४ अब इस झील का पता नहीं। सम्भवतः जिस प्रकार अहमदाबाद के समीप स्थित काकरिया झील अथवा काकरिया ताल का कोई पता नहीं, उसी प्रकार इस झील का भी नहीं

५ सेना का अग्र भाग।

६ यह रूमी खाँ खुदावन्द खाँ है, रूमी खाँ सफ़र नहीं जिसने सूरत के किले का निर्माण कराया।

७ गाड़ियों।

कर लें और उसके चारों ओर खाई खुदवा दे[1]। सर्वप्रथम उन अस्त्रों से कार्य ले जो दूर से हानि पहुँचा सकते हैं ताकि शत्रुओं की सेना नित्य-प्रति कम होते होते छिन्न-भिन्न हो जाय। बाणों तथा तलवारों से युद्ध अपने अवसर पर होता है।"

अन्त में उन्होंने इस योजना का पालन किया। निरन्तर युद्ध होने लगा। किन्तु गुजराती सर्वदा पराजित होते रहे।

शाही सेना के एक दल का पराक्रम

एक दिन सौभाग्य से ऐसा हुआ कि कुछ वीर एवं चुने हुए जवान मदिरा-पान कर रहे थे। प्रत्येक मस्त हो होकर वीरता के विषय में डींग मारने लगा। एक व्यक्ति जो अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक मस्त था कहने लगा कि, "भूत काल के विषय में कब तक वार्ता होती रहेगी? आज शत्रु सामने है। उसपर आक्रमण करके अपनी वीरता का परिचय देना चाहिये।" विजयी सेना के सावधान लोगों को सूचना होने के पूर्व ये मद्यप जिनकी संख्या लगभग २०० थी अस्त्र-शस्त्र धारण करके शत्रु के शिविर की ओर अग्रसर हुए। जब वे निकट पहुँचे तो गुजरात का एक उच्च पदाधिकारी, जो लगभग ४००० सैनिकों सहित अपने शिविर के बाहर पहरा दे रहा था, युद्ध हेतु बढ़ा। ऐसा घोर युद्ध हुआ कि उसका उल्लेख सम्भव नहीं। गुजराती हताश हो गये और पराजित होकर अपने शिविर को वापस चले गये। ये युद्ध-प्रिय लोग यश प्राप्त करके लौट आये। इस वीरता एवं पौरुष की प्रसिद्धि ने सुल्तान बहादुर की सेना को व्याकुल कर दिया। तदुपरान्त अपने अरावों के किले से कोई व्यक्ति विरले ही निकलता, विजयी सेना आस पास चारों ओर धावे मार-मार कर खाद्य सामग्री के पहुँचने का मार्ग बन्द करने लगी। गुजरातियों की सेना में घोर अकाल फैल गया।

सुल्तान बहादुर की पराजय

रमज़ान की ईद के दिन (५ अप्रैल १५३५ ई०) मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा ५००-६०० आदमियों सहित साहस के साथ युद्ध हेतु अग्रसर हुआ। इस ओर से भी कुछ लोग युद्ध हेतु निकले। दो-(१३२) तीन बार गुजरात वाले बाण चला कर भाग खड़े हुए और धूर्तता एवं छल द्वारा विजयी सेना को तोपखाने की मार के समीप पहुँचा दिया। एकबारगी तोपें चलनी प्रारम्भ हो गईं। उस दिन कुछ शाही आदमियों की हानि हो गई।

१७ दिन उपरान्त शुभ मुहूर्त में हज़रत जहाँबानी ने सुल्तान बहादुर के शिविर पर आक्रमण करना निश्चय किया। इसी बीच में गुजरात वालों के भय एवं खौफ में वृद्धि होती जाती थी, और उनके दुर्भाग्य के चिह्न प्रकट होने जाते थे। अन्ततोगत्वा आदि काल से प्राप्त सौभाग्य के कारण २१ शव्वाल (२५ अप्रैल १५३५ ई०) रविवार की रात्रि में सुल्तान बहादुर ने

१ उसने बाबर के पानीपत के युद्ध का अनुकरण किया किन्तु हुमायूं को इस प्रकार के युद्ध का अधिक अनुभव था, अतः उसने बहादुर शाह की सेना पर अचानक आक्रमण न किया अपितु रसद रोक कर गुजरातियों को परेशान कर दिया।

परेशान होकर आदेश दिया कि समस्त जर्बजना[1] तथा बडी बडी तोपो को (बारूद मे भर कर) उनमे आग लगा दी जाय ताकि वे फट जाये।

सुल्तान बहादुर का पलायन

जब शाम हो गई तो सुल्तान बहादुर, मीरान मुहम्मद शाह[2] तथा अपने ५-६ निकटवर्तियो सहित अपने खेमे की एक दराज से निकल कर धोखा देने के लिए सर्व प्रथम आगरा की ओर रवाना हुआ और फिर मन्दू[3] की ओर चल दिया। सद्र खा तथा एमादुलमुल्क खासा खेल २०,००० अश्वारोहियो सहित सीधे मार्ग से मन्दू की ओर रवाना हुए। मुहम्मद जमान मीर्जा सेना के एक दल के साथ उपद्रव एव अशान्ति फैलाने के लिए लाहौर की ओर चल खडा हुआ। उस दिन गुजरातियो की सेना में विचित्र प्रकार का शोर गुल एव कोलाहल रहा। वास्तविक स्थिति की विजयी लश्कर मे कोई सूचना न थी।

हुमायूं की विजय

हजरत जहाँबानी ३०,००० अश्वारोहियों सहित सायकाल से प्रात काल तक अस्त्र-शस्त्र धारण किए खडे रहे और परोक्ष से विजय के सुखद समाचार की प्रतीक्षा करते रहे। यहाँ तक कि एक पहर[4] दिन चढ जाने के बाद पता चला कि सुल्तान बहादुर मन्दू की ओर भाग गया है। विजयी सेना के वीर सुल्तान बहादुर के शिविर मे प्रविष्ट होकर लूट-मार करने लगे। अपार धन-सम्पत्ति एव अत्यधिक घोडे, हाथी प्राप्त हुए। खुदावन्द खा[5], जो सुल्तान मुजफ्फर का गुरु तथा वजीर दोनो था, बन्दी बना लिया गया। हजरत (जहाँबानी) ने उसे शाही कृपाओ द्वारा सम्मानित किया और उसे अपनी सेवा मे रख लिया। यादगार नासिर मीर्जा, कासिम सुल्तान, तथा मीर हिन्दू बेग को भारी सेना के साथ भागी हुई सेना का पीछा करने के लिये भेजा।

हुमायूं का माडू पहुँचना

नि सन्देह[1] जो कोई भी मूर्खों के साथ उठता बैठता है वह मूर्ख हो जाता है। विशेष रूप से प्रतिज्ञा एव सधि भग करके, ससार के एसे स्वामी, जो निष्ठा एव सत्यता का किबला[6] है, के

१ एक किस्म की तोप। बाबर ने कई स्थानों पर इसकी चर्चा की है।

२ खान्देश का शाहजादा एव बहादुर की बहिन का पुत्र।

३ माडू अथवा माडूगड को मध्य कालीन फारसी इतिहासों में मान्दू अथवा मन्दू लिखा जाता था। यह २०°२१' उत्तर तथा ७५°-७ पूर्व में धार से २२ मील पर स्थित है। यह मालवा के सुल्तानों की राजधानी था और वहाँ के भवनावशेष अब भी दर्शनीय हैं। (*The Imperial Gazetteer of India*, XVII, pp 171-173)

४ ३ घटा

५ वह रूमी खाँ से भिन्न था। उसका नाम मस्नद हाजी मुहम्मद था।

६ किबला - वह दिशा (मक्का की ओर) जिधर मुख करके मुसलमान नमाज पढ़ते हैं। इसका आदेश कुरानशरीफ की सूरये बकर में दिया गया है।

प्रति जो धूर्तता-पूर्वक व्यवहार करता है, वह धोखे का जुआ खेलता[1] है और उसे ऐसा ही दिन देखना पडता है। सक्षेप में, सद्र खा तथा एमादुलमुल्क के वहाँ से भाग जाने के बाद जब हज़रत जहाँबानी की सेना मन्दू की ओर रवाना हुई तो हज़रत जहाँबानी भी विजयी सेना के पीछे-पीछे रवाना हुए और नालचा[2] मे पडाव किया। किले के चारो ओर शिविर लगा दिये। रूमी खा (१३३) शत्रु की सेना से भाग कर शाही सेना में प्रविष्ट हो गया और उसे खिलअत द्वारा सम्मानित किया गया।[3]

१४वे दिन[4] सुल्तान बहादुर अन्य मार्गो से होता हुआ चोली महेसुर[5] द्वार से मन्दू के किले मे प्रविष्ट हो गया और सन्धि की वार्ता (इस शर्त पर) प्रारम्भ कर दी कि गुजरात एव चित्तौड जो कि अभी विजय हुए है, सुल्तान (बहादुर) के पास रहे और मन्दू तथा समीपवर्ती स्थान हज़रत जहाँबानी के अधीन रहे। मौलाना मुहम्मद परगली[6] हज़रत जहाँबानी की ओर से और सद्र खा सुल्तान बहादुर की ओर से नीली मवील[7] मे सन्धि की शर्तों का निर्णय करने के लिये बैठ गये।

हुमायू की सेना का माडू पर आक्रमण

उसी रात्रि के अन्त म जब किले के रक्षक कष्ट उठाते-उठाते व्याकुल हो चुके थे, तो किले के पीछे से विजयी सेना के व्यक्ति जिनकी कुल सख्या २०० थी, कुछ सीढियाँ लगा कर और कुछ कमन्दे[8] फेक कर किले में प्रविष्ट हो गए और सैनिको ने दीवार से नीचे फाँद कर किले का द्वार, जो दूसरी ओर था, खोल दिया और अपने घोडो को लाकर उनपर सवार हो गये। अन्य सैनिक द्वार में प्रविष्ट हो गए। मोंन्चे[9] के अधीक्षक मल्लू खा का जो मन्दू का वाली था और

१ अर्थात् धोखा खाता है।

२ मूल पुस्तक में 'बदालचा'। आईने अकबरी के अनुसार यह माडू की सरकार का एक महाल है। मालवा के सुल्तानों ने इस स्थान को विशेष उन्नति दी। सुल्तान महमूद खलजी ने सन् १४४२ ई० में वहाँ अनेक भवनों एवं उद्यानों का निर्माण कराया। (तबकाते अकबरी भाग ३, पृ० ३-३, रिज़वी उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग -, पृ० ७८)। डा० कैम्पबेल के अनुसार यह माडू के दहली द्वार नामक स्थान से उत्तर की ओर ३ मील पर था। (Campbell Mandu, Journal Bombay Royal Asiatic Society XIX, 154).

३ रूमी खा के विषय में देखिये, आगे के पृष्ठों में मिरआते सिकन्दरी का अनुवाद। इस विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि खुदावन्द खाँ वज़ीर तथा रूमी खा भिन्न व्यक्ति थे।

४ यहा मास का उल्लेख नहीं है। सम्भवत हुमायू द्वारा किले का अवरोध प्रारम्भ होने के १४वें दिन उपरान्त की चर्चा है और उस दिन ६ मई १५३५ ई० रही होगी।

५ आईने अकबरी के अनुसार माडू का एक महाल।

६ मूल पुस्तक में 'पीर अली' किन्तु अन्य पाँडुलिपियों एव ग्रन्थों में 'परग़ली'।

७ नीला मार्ग, सम्भवत- नील कठ।

८ एक प्रकार का फंदा जिसे दीवार पर फेंक कर सीढ़ी सी बना ली जाती थी और जिसके द्वारा लोग दीवारों पर चढ़ जाते थे।

९ मोर्चा। इस सम्बन्ध में आगे के पृष्ठों में तबकाते अकबरी का अनुवाद देखिये।

करने के लिये भेजी। सुल्तान जब दीप पहुँचा, तो विजयी योद्धा दीप के समीप से अत्यधिक लूट की धन-सम्पत्ति लेकर खम्बायत लौट आये। दैवी कृपा से ९४२ हि० (१५३५ ई०) में मन्दू (१३५) तथा गुजरात विजय हो गये। वह व्यक्ति जो ईश्वर से लौ लगाये रहता है और जिसके विचारों में सत्यता होती है, उसके उद्देश्य निःसन्देह पूरे हो जाते हैं।

कामरान द्वारा कन्धार विजय

इस वर्ष के शाबान मास के प्रारम्भ में (जनवरी १५३६ ई०—अन्तिम सप्ताह) में मीर्ज़ा कामरान लाहौर से कन्धार[1] पहुँचा और शाह तहमास्प सफ़वी के भाई साम मीर्ज़ा[2] से घोर युद्ध करके उसपर विजय प्राप्त कर ली। इस घटना का संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है। साम मीर्ज़ा क़िज़िलबाशों[3] की एक बहुत बड़ी सेना लेकर कन्धार पहुँचा। कन्धार को ख्वाजा कलाँ बेग दृढ़ बनाये हुए था। ८ मास तक वह उसकी रक्षा करता रहा। इसी बीच में मीर्ज़ा कामरान ने लाहौर से अत्यधिक तैयारी करके प्रस्थान कर दिया। मीर्ज़ा कामरान तथा साम मीर्ज़ा में घोर युद्ध हुआ। अगज़ीवार खाँ जो क़िज़िलबाशों का बहुत बड़ा अमीर तथा मीर्ज़ा का अतालीक़[4] था, युद्ध में बन्दी बना लिया गया और उसकी हत्या करा दी गई। क़िज़िलबाश सैनिक बहुत बड़ी संख्या में मारे गये। मीर्ज़ा कामरान विजय तथा सफलता प्राप्त करके लौट गया और लाहौर के क्षेत्र में पहुँचा[5]।

मीर्ज़ा मुहम्मद ज़मान के विद्रोह का दमन

मीर्ज़ा मुहम्मद ज़मान ने जो विद्रोह कर रक्खा था, उसका दमन कर दिया गया। इस सौभाग्यपूर्ण घटना का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है। मीर्ज़ा मुहम्मद ज़मान सुल्तान बहादुर की पराजय उपरान्त शान्ति भंग करने के उद्देश्य से लाहौर पहुँचा। जब वह सिन्ध के समीप पहुँचा तो सिन्ध के वाली शाह हुसेन वल्द शाह बेग अरग़ून ने उसे अपने राज्य में स्थान न दिया और लाहौर

१ बेवरिज के अनुवाद में 'काबुल' किन्तु 'कन्धार' ही ठीक है।

२ अबुन्नस्र साम मीर्ज़ा शाह इस्माईल सफ़वी का पुत्र था। उसका जन्म मरागह में २१ शाबान ९२३ हि० (१९ सितम्बर १५१७ ई०) को हुआ। ९३९ हि० (१५३२-३३ ई०) में उसके भाई शाह तहमास्प ने, जो ९३० हि० (१५२४ ई०) में सिंहासनारूढ़ हुआ था, उसे हिरात का हाकिम नियुक्त कर दिया और अग़ज़ीवार खाँ को उसका अतालीक़ बना दिया। ९५१ हि० (१५४४ ई०) में उसे तथा उसके भाई बहराम मीर्ज़ा को शाह तहमास्प ने हुमायूं के स्वागतार्थ भेजा। उसकी ९७४ हि० (१५६६-६७ ई०) में मृत्यु हो गई। **तुहफ़ये सामी** नामक उसकी रचना, जो फ़ारसी कवियों का इतिहास है, बड़ी प्रसिद्ध है। मीर अलाउद्दौला ने **नफ़ायसुल मआसिर** को इसी ग्रन्थ पर आधारित किया है।

३ कहा जाता है कि वे उन बन्दियों की सन्तान में से थे जिन्हें तीमूर ने शेख हैदर को प्रदान कर दिया था। वे लाल टोपी, जो उन बन्दियों के लिये निर्धारित थी, पहनते थे। ईरानी सेना के सैनिकों में वे अत्यधिक प्रतिष्ठित थे किन्तु बाद में ईरानियों के लिये सामान्य रूप से इस शब्द का प्रयोग होने लगा।

४ सरक्षक, गुरू।

५ **तारीखे रशीदी** में भी इस युद्ध का उल्लेख है। मीर्ज़ा हैदर के अनुसार यह विजय ख्वाजा कलाँ के कारण प्राप्त हुई।

चले जाने की राय दी कारण कि मीर्ज़ा कामरान क़न्धार की ओर जा चुका था और इतना समृद्ध प्रदेश खाली था। अभागा मीर्ज़ा उस प्रदेश को खाली समझकर लाहौर पहुँचा और उसे घेर लिया। इसी बीच में मीर्ज़ा कामरान ने लाहौर पहुँचकर ऐश्वर्य का डंका बजवाया। मीर्ज़ा मुहम्मद ज़मान ने घबड़ाकर पुन गुजरात भाग जाने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न देखा। वह निराश एव हताश होकर फिर उस प्रदेश मे पहुँचा। इस वर्ष मीर्ज़ा हैदर गूरगान काशगर से बदख्शाँ होता हुआ लाहौर पहुँचा।

मीर्ज़ा हैदर का लाहौर पहुचना

शाह तहमास्प द्वारा कन्धार-विजय

दूसरी बहार में शाह तहमास्प स्वय कन्धार के क्षेत्र में पहुँचा। ख्वाजा कला बेग ने समस्त कारखाना[1], तूशकख़ाना[2], रिकाबख़ाना[3] इत्यादि को उचित रूप से सुव्यवस्थित किया और किले तथा कारखानो की कुजियाँ शाह के पास भेज दी और कहलाया कि, "मेरे पास किले की रक्षा का कोई साधन नही और न मुझमें युद्ध करने की शक्ति है। शाह की सेवा में उपस्थित होकर अभिवादन करना नमकख्वारी एव स्वामी-भक्ति के नियमो के विरुद्ध है। कोई अन्य उपाय न रहने पर घर सजाकर, अतिथि को सौप देना तथा स्वय पृथक हो जाना ही उचित है।" वह स्वय तत्ता[4] एव उच्च[5] के मार्ग से लाहौर पहुँचा।

मीर्ज़ा कामरान का कन्धार पर पुन अधिकार

(१३६) मीर्ज़ा कामरान ने एक मास तक उसे इस कारण अभिवादन की अनुमति न दी कि इतने दिन तक वह क्यों न रक्षा कर सका जब तक वह स्वय पहुँच जाता। इधर-उधर के प्रबन्धो के बाद मीर्ज़ा कामरान व्यवस्था करके दूसरी बार कन्धार पर आक्रमण के लिए रवाना हुआ।

१ कारखाना —बादशाहों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं से सम्बन्धित विभाग।

२ तूशकखाना —वह विभाग जहाँ तूशक (तोशक तथा तकिये) फर्श इत्यादि का प्रबन्ध होता था।

३ रिकाबखाना —वह विभाग जो भोजन का प्रबन्ध करता था।

४ थट्टा —इसे तत्ता, थत्ता, तट्टा, थट्टा, ठट्टा, एव टट्ठा कई प्रकार से लिखा जाता था। यह २४°४५' उत्तर तथा ६७°५८' पूर्व में सिन्ध नदी के दायें तट पर पश्चिम में ७ मील पर और कराची से पूर्व में ५० मील पर स्थित है। यह सुम्मा कबीले की राजधानी था। (*The Imperial Gazetteer of India*, XXIII, pp 254-256)

५ भावलपुर (पंजाब) की अहमदपुर नामक तहसील में २९°१४ उत्तर १°४ पूर्व, भावलपुर से ३८ मील दक्षिण-पूर्व में सतलज नदी के दक्षिणी तट पर। रैवर्टी के अनुसार यह मुल्तान के समीप भटिया नामक स्थान है। महमूद गज़नवी ने इसे १००६ ई० में विजय कर लिया। सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद बिन साम के राज्यकाल में ऊपरी सिंध का यह मुख्य नगर था और नासिरुद्दीन कुबाचा यहाँ का हाकिम था। जलालुद्दीन ख्वारिज़्म ने १२२३ ई० में इसे जलवा डाला किन्तु बाद में इल्तुतमिश ने इस पर अधिकार जमा लिया।

मीर्ज़ा हैदर को लाहौर के शासन-प्रबन्ध हेतु नियुक्त कर दिया। शाह तहमास्प, मीर्ज़ा के प्रस्थान के पूर्व बुदाग खां काचार को, जो उसका एक प्रतिष्ठित अमीर था, कन्धार का शासन सौंपकर जा चुका था। मीर्ज़ा कामरान ने वहाँ पहुँचकर कन्धार का अवरोध कर लिया। बुदाग खां[1] किला समर्पित करके चल दिया। मीर्ज़ा ने कन्धार पर अधिकार जमा लिया और उसकी प्रतिरक्षा का प्रबन्ध करके लाहौर वापस चला आया।

कोलियो द्वारा हुमायूँ के शिविर पर रात्रि में छापा

बात क्या हो रही थी और कहाँ पहुँच गई। यही उचित है कि इस ओर से उपेक्षा करके अपने उद्देश्य की ओर आकृष्ट हो जाऊँ।

संक्षेप में, जब हज़रत जहाँबानी थोड़े-से लोगों सहित खम्बायत में पड़ाव किए हुए थे तो मलिक अहमद लाड एवं रुक्न दाऊद ने, जो सुल्तान बहादुर के उच्च पदाधिकारियों में से थे और जिन्हें कोली बारह में बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त थी, उस भूभाग के कोलियों एवं गवारों[2] से मिलकर निश्चय किया कि हज़रत जहाँबानी की सेना के साथ थोड़े से लोग रह गये हैं, अतः अवसर से लाभ उठाकर रात्रि में छापा मारना चाहिये। वे लोग इस प्रस्तावानुसार तैयार हो गये। शाही प्रताप के उन्नति पर होने के कारण एक वृद्धा इस बात से अवगत हो गई और वह शाही शिविर के समीप पहुँची। उसने दरबार के एक विश्वास-पात्र से कहा कि "एक आवश्यक बात है जिसे मैं स्वयं (हज़रत जहाँबानी) से कहना चाहती हूँ।" जब उसने अत्यधिक आग्रह किया और इस कारण कि सत्यता के चिह्न उसके ललाट पर दृष्टिगत थे, उसे पादशाह की सेवा में उपस्थित होने की अनुमति दे दी गई। उसने रात्रि के छापे की योजना के विषय में (हज़रत जहाँबानी) से निवेदन किया। हज़रत (जहाँबानी) ने पूछा कि, 'निष्ठा के यह विचार तेरे हृदय में किस प्रकार आये?" उसने निवेदन किया कि, 'मेरा पुत्र शाही सेना के एक सेवक के पास बन्दी है। मेरी आकांक्षा है कि इस निष्ठा के बदले में मैं उसे मुक्त करा लूँ। यदि मेरी बात झूठ निकले तो मेरी तथा मेरे पुत्र की

१ शाह तहमास्प ने उसे तथा अपने पुत्र को पुनः हुमायूँ के साथ कन्धार की विजय हेतु भेजा। जब शाह के पुत्र की मृत्यु हो गई तो हुमायूँ ने बुदाग खां को पराजित कर दिया और वह कन्धार से भाग गया।

२ व कोलियान व गवारान आँ सरज़मीन क़रार दादन्द (کولیان و گواراں آن سر زمین قرار دادند)। इस वाक्य में गवारान शब्द की व्याख्या प्रायः इतिहासकार नहीं कर सके हैं। डा० ईश्वरी प्रसाद ने लिखा है, "The term Koli, meaning clansman, clubman or boatman, is applied to the middle classes of the military or predatory Hindus of Gujrat. The Gowars are not mentioned in the *Bombay Gazetteer* but they also seem to be a tribe akin to the Kolis. From the raid which they made upon the imperial camp it appears they were a wild tribe. They are mentioned along with Bhils." (*Bombay Gazetteer*, IX, pp. 237-239, *The Life and Times of Humayun* पृ० ७७)। होडीवाला ने इस विषय पर विस्तार से टीका करके इस प्रकार लिखा है — 'Here as well as below at p. 193, note 5, the true reading is گوار'' । (होडीवाला, पृ० ५८८)।

हत्या कर दी जाय।" शाही आदेशानुसार उसके पुत्र को बुलवाया गया और दोनों पर "मुवक्किल[1]" नियुक्त कर दिये गए। सावधानी की दृष्टि से विजयी सेना को तैयार करके वे स्वयं पृथक् हो गए। जब सुबह होने वाली थी तो ५-६ हजार भीलो एवं गवारो ने भाग्यशाली शिविर पर आक्रमण कर दिया। हजरत जहाँबानी भाग्यशाली सेना सहित एक टीले पर पहुँच गए थे। गवारों ने पहुँचकर शिविर को नष्ट करना प्रारम्भ कर दिया। अधिकांश उत्तम ग्रंथ, जो हजरत जहाँबानी के आध्यात्मिक मुसाहिब[2] थे और जिन्हें वे सर्वदा अपने साथ रखते थे, नष्ट हो गये। उनमें सुल्तान अली[3] के हाथ का लिखा हुआ 'तीमूर नामा'[4] था जिसमें उस्ताद बेहज़ाद[5] ने चित्र बनाये थे और जो इस समय हजरत शाहंशाह के पुस्तकालय में वर्तमान है।

संक्षेप में, थोड़ी देर बाद सौभाग्य के आकाश से कुशलता की ऊषा उदय हुई और वीर योद्धाओं ने इन विद्रोहियों की ओर अग्रसर होकर बाण द्वारा सभी अभागो को पराजित एवं छिन्न-भिन्न कर दिया। उस वृद्धा की सत्यता प्रमाणित हो गई और उसकी इच्छाओं की पूर्ति कर दी गई। पादशाही आतंक एवं वैभव उत्तेजित हो गया। खम्बायत के नष्ट-भ्रष्ट कर देने तथा जला डालने का आदेश दे दिया गया।

हुमायूं द्वारा चाम्पानीर का अवरोध

(१३७) तदुपरान्त हजरत जहाँबानी सुल्तान बहादुर का पीछा करने का विचार त्यागकर शाही सेना सहित चाम्पानीर पहुँच गए और चार मास तक उस क़िले को घेरे रहे।

१ पहरेदार।

२ साथ रहते थे।

३ सुल्तान अली मशहदी, सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा के दरबार का प्रतिष्ठित खुशनवीस था। उसने मीर्ज़ा एवं अली शेर नवाई के लिये बहुत से ग्रन्थ नक़ल किये थे। वह सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा के लिये रोज़ाना ३० शेर और अली शेर नवाई के लिये २० शेर नक़ल किया करता था। (बाबर नामा, पृ० ५६५)।

४ अब्दुर्रहमान जामी के भागिनेय अब्दुल्लाह हातिफी का तीमूर नामा, जो पद्य में है। यह मद्रास यूनीवर्सिटी से १९५८ ई० में प्रकाशित भी हो गया है। (आगे के पृष्ठों में **नफायसुल मआसिर** का अनुवाद देखिये)। उसका हिरात के जाम नामक नगर में जन्म हुआ और वहीं १५२१ ई० में उसकी मृत्यु हो गई। **तीमूर नामा** के अतिरिक्त उसने अन्य काव्यों की भी रचना की। डा० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार **ज़फर नामा** (लेखक शरफुद्दीन अली यज़्दी)। Ishwari Prasad: *The Life and Times of Humayun* 1955, p 78। यद्यपि **ज़फर नामा** को **तीमूर नामा** भी कहा जाता था किन्तु अबुलफ़ज़्ल ने **तीमूर नामा** शब्द का प्रयोग किया है। विद्वान् लेखक ने अबुलफ़ज़्ल के वाक्य का अनुवाद इस प्रकार किया है - "Among these was the Timurnamah translated by Sultan Ali"। बेवरिज के अनुवाद में "Transcribed by Mulla Sultan Ali" है। (*Akbar Nama*, p. 311)। अबुलफ़ज़्ल के शब्द इस सम्बन्ध में बड़े स्पष्ट हैं, "ब खत्ते मुल्ला सुल्तान अली"। अनुवाद (translated by Sultan Ali) का कोई प्रश्न नहीं उठता।

५ वह भी सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा के दरबार का बड़ा प्रतिष्ठित चित्रकार था। बाबर ने उसके विषय में लिखा है कि 'वह बिना दाढ़ी के चेहरे अच्छे न बनाता था। वह उस भाग को जो ठोढ़ी के नीचे होता है बहुत बड़ा बना देता था। दाढ़ी वाले चेहरे वह बड़े ही उत्तम बनाता था'। (बाबर नामा, पृ० ५६५)।

इख्तियार खा ने, जो उस प्रदेश के नरियाद[1] नामक कस्बे के काज़ियो के वंश से था और अपनी योग्यता एव कार्य कुशलता के कारण सुल्तान (बहादुर) का विश्वासपात्र हो गया था, किले की प्रतिरक्षा का घोर प्रयत्न किया। (शाही सेना द्वारा) इतनी देख-भाल[2] एव सावधानी के बावजूद भी कभी-कभी पर्वत के दर्रों से, जहाँ वृक्षो की अधिकता एव कांटेदार (झाडियो) की बहुतायत के कारण पैदल भी बडी कठिनाई से यात्रा हो सकती थी और जहाँ अश्वारोहियो का तो कोई प्रश्न ही न था, कुछ पहाडी लकडहारे लाभ के लोभ मे अनाज तथा घी-तेल अधिक मूल्य पर बेचने के लिए किले के नीचे ले जाते और किले वाले रुपया-पैसा[3] रस्सियो से लटकाकर सामान ऊपर खीच लेते थे। जब अवरोध मे अधिक समय लग गया तो हज़रत जहाँबानी स्वय किले के चारो ओर इस आशय से चक्कर लगाने लगे कि सम्भव है कि कोई ऐसा स्थान मिल जाय जहाँ से सेना प्रविष्ट हो सके। एक बार वे हालोल की ओर से, जो एक उद्यान था, सैर करते हुए आ रहे थे कि एक समूह जो अनाज तथा घी-तेल बेचकर आया था जगल की ओर से निकलता हुआ दृष्टिगत हुआ। हज़रत जहाँबानी ने आदेश दिया कि "पता लगाया जाय कि ये लोग क्या करते है ?" उन्होंने उत्तर दिया, "हम लकडहारे हैं।" क्योकि लकडी काटने का कोई सामान कुल्हाडी, कुठार इत्यादि उनके पास न था अत उनकी बात पर विश्वास न किया गया। शाही आदेश हुआ कि जब तक वे सच-सच न बताये उन्हे दड से मुक्ति न दी जाय। विवश होकर जो सच बात थी, वह उन्होंने कह दी। आदेश हुआ कि आगे-आगे चलकर वे उस स्थान को दिखाये। हज़रत जहाँबानी ने जब उसे देखा तो वह ६०-७० गज[4] ऊँचा और ऐसा सपाट निकला कि उसपर चढना बडा कठिन था। शाही आदेशानुसार ७०-८० लोहे की बडी मोटी मोटी कीले लाई गई। एक-एक गज की दूरी पर दाये और बाये पर्वत सरीखी दीवार मे कीलें ठोकी गई और वीरो को आदेश हुआ कि उनके द्वारा पौरुष के शिखर पर चढ जाये। ३९ व्यक्ति चढ चुके थे कि हज़रत (जहाँबानी) स्वय चढने के लिए बढे। बैराम खा ने निवेदन किया कि, "आप इतनी प्रतीक्षा करें कि लोग और ऊपर चढ जाये, उस समय स्वय चढें।" यह कहकर वह स्वय चढने लगा। बैराम खा के पीछे-पीछे हज़रत जहाँबानी स्वय चढने लगे। वे ४१वे थे। स्वय खडे होकर उन्होंने लगभग ३०० वीरो को इस फौलादी सीढी द्वारा और चढा लिया।

चाम्पानीर पर विजय

(१३८) आदेश हुआ कि विजयी सेना जो मोर्चों पर नियुक्त है किले पर आक्रमण कर दे। किले के भीतर वालो को इस घटना की सूचना न थी। वे बाहर वालो से युद्ध करने के लिए बढे और उन्होंने किले के कँगूरो से सिर निकाले ही थे कि अचानक इन ३०० वीरो ने पीछे से पहुँचकर बाणो की वर्षा द्वारा किले वालो को पूर्णत विवश कर दिया।

१ आईने अकबरी के अनुसार अहमदाबाद सरकार में। अहमदाबाद के रेल के मार्ग पर यह एक स्टेशन भी है।
२ हुमायूं की सेना द्वारा।
३ मूल में 'ज़र'।
४ गज की लम्बाई निश्चित रूप से ज्ञात नहीं, सम्भवत वह ३३ इंच लम्बा होता था।

जब अभागे शत्रुओ को यह ज्ञात हुआ कि हज़रत जहाँबानी स्वय विजय के ज़ीना पर चढ चुके हैं तो प्रत्येक किसी न किसी कोने में प्रविष्ट हो गया और विजय का नक्कारा बजा दिया गया। इख्तियार खा जिस स्थान पर था वहाँ से एक अन्य ऊँचे स्थान पर पहुँच गया जिसे मूलिया[1] कहते थे और वहाँ जाकर शरण ले ली। दूसरे दिन उसे हानि न पहुँचाने का वचन देकर बुलवाया गया। अनुभव एव शासन प्रबन्ध की योग्यता के साथ साथ उसे ज्ञान-विज्ञान, विशेष रूप से गणित एव ज्योतिष, में बडी निपुणता प्राप्त थी और कविता तथा मुअम्मा[2] का भी उसे ज्ञान था। उसे शाही गोष्ठी में विद्वानो के साथ बैठने की अनुमति देकर सम्मानित किया गया और शाही कृपाओ द्वारा उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि की गई। वह राज्य की चौखट के विश्वास-पात्रों में सम्मिलित कर लिया गया। एक विद्वान् ने इस विजय की तिथि "अव्वल हफ़्तये माहे सफर"[3] के अक्षरों से निकाली।

अहमदाबाद में सुल्तान बहादुर द्वारा राजस्व की वसूली की व्यवस्था

जब गुजरात प्रदेश महेन्द्री नदी[4] तक (हज़रत जहाँबानी के) राज्य के अधिकारियों के अधीन हो गया और (नदी के) उस पार[5] कोई पदाधिकारी नियुक्त न हुआ तो उस क्षेत्र की प्रजा ने सुल्तान बहादुर को प्रार्थना पत्र लिखा कि "राज्य का महसूल तैयार है और एक ऐसे आमिल[6] की आवश्यकता है जो तहसील-वसूल कर सके। अब यदि कोई नियुक्त कर दिया जाय तो प्रजा राजस्व के अदा करने के कर्त्तव्य का पालन कर ले।" सुल्तान ने अपने सेवकों में से जिस किसी से भी इस विषय में कहा उसे मौन पाया। एमादुलमुल्क ने साहस से काम लेकर इस सेवा के विषय में इस शर्त पर प्रार्थना की कि राज्य-व्यवस्था की आवश्यकता की दृष्टि से वह जिस स्थान पर भी और जिसे भी जो कुछ प्रदान कर दे उसके विषय में उससे कोई पूछ-ताँछ न की जाय। एमादुलमुल्क २०० अश्वारोहियो को लेकर अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ। मार्ग में वह जिस व्यक्ति से भी परिचित था उसे कुछ न कुछ मवाजिब[7] लिखकर देता जाता था। जब वह अहमदाबाद पहुँचा तो उसके पास १०,००० अश्वारोही एकत्र हो गये। जिस किसी के पास भी दो घोडे थे उसे वह एक लाख गुजराती देता जाता था। अल्प समय में ३० हज़ार व्यक्ति[8]

१ आईने अकबरी के अनुसार इसी किला 'पावह' कहलाता था।
२ पहेली; कविता में किसी समस्या का समाधान।
३ सफर ९४३ हि० का प्रथम सप्ताह (२०-२७ जुलाई १५३६ ई०)।
४ इसे माही नदी भी कहते हैं।
५ पश्चिम की ओर।
६ कर अथवा राजस्व वसूल करने वाला।
७ अनुदान।
८ अश्वारोही।

इकट्ठा हो गये। जूनागढ का हाकिम[1] मुजाहिद खां १०,००० अश्वारोहियों सहित उससे आकर मिल गया।

अबुलफ़ज़ल के शासन-प्रबन्ध सम्बन्धी विचार

उन दिनों हज़रत जहाँबानी चाम्पानीर की विजय तथा अपार धन-सम्पत्ति की प्राप्ति के कारण शाहाना जश्न करने में व्यस्त थे और सवदा दा राया" हौज के तट पर शाही जश्न एवं भोग विलास की महफ़िले आयोजित किया करते थे। शासन प्रबन्ध की शर्तों में सबसे महत्वपूर्ण शर्त यह है कि विशेष सेवकों एवं दरबार के निकट रहने वाले मुलाज़िमों के लिए कुछ अधिनियम निश्चित कर दिये जायें और प्रत्येक समूह में किसी न किसी सावधान बुद्धिमान् को इस आशय से नियुक्त कर दिया जाय कि वह उठते-बैठते चलते फिरते एवं आते-जाते इस समूह के विषय में सचेत रहे और उन्हें बुरी संगत में पड़ने से जो विनाशकारी कल्पनाओं की जन्मदात्री[2] है, बचाये रक्खे विशेष रूप से ऐसे अवसरों पर जब कि युग का बादशाह अत्यधिक व्यस्त होने के कारण साधारण (१३९) बातों की ओर ध्यान न दे सकता हो। इतने ही को पर्याप्त न समझना चाहिये अपितु सच्चे एवं चरित्रवान् गुप्तचरों को भी नियुक्त करना चाहिये ताकि वे जो बात सत्य हो तथा इस समूह की वास्तविक अभिलाषाओं को सौभाग्य के कानों तक पहुँचाते रहें अन्यथा साहसहीन लोग अधिक दिन सेवा कर लेने के कारण शाही ऐश्वर्य की ओर बहुत कम ध्यान देने लगते है। विश्वासपात्र होने का नशा उनके होश हवास को छीनकर उन्हे स्थायी विनाश के गर्त में गिरा देता है। फलत बड़े बड़े षड्यन्त्र उठ खड़े होते हैं। यह बात इस समय स्पष्ट हो गई[3]।

४०० सैनिकों का दक्षिण पर आक्रमण

इसका विस्तृत उल्लेख इस प्रकार है कि उस बीच जब कि परोक्ष से प्राप्त विजयों की खुशी मे नित्य प्रति जश्न हो रहे थे, कुछ साहसहीन तथा स्वभाव के खोटे जो अपने सौभाग्य से सम्मानित दरबार में प्रविष्ट हो गये थे यथा किताबदार[4], सिलहदार[5], दवातदार[6] इत्यादि, ने संगठित होकर हानाल[7] नामक उद्यान में, जहाँ के फूलों की सुगंधि नई उत्तेजना[8] उत्पन्न कर देती थी, और जहा की वायु जमे हुए रक्त में स्पन्दन पैदा कर देती थी, जाकर सुराही एवं प्याले की गोष्ठी

१ प्रान्त का गवर्नर।
२ मूल में 'माता पिता'।
३ इस स्थान पर अबुलफ़ज़ल ने पुन प्राचीन सेवकों की निन्दा की है।
४ पुस्तकालय का प्रबन्ध करने वाले।
५ अस्त्र शस्त्र का प्रबन्ध करने वाले।
६ दावात-कलम अथवा लेखन सामग्री की व्यवस्था करने वाले।
७ वर्त्तमान कस्बे से चार मील दूर।
८ मूल पुस्तक में 'जुनून' अथवा पागलपन किन्तु यहाँ उत्तेजना से तात्पर्य है।

आयोजित कर दी[1]। मदिरा के नशे में बुद्धि एवं होश को लुटाकर "जफर नामा[2]" नामक ग्रंथ खोल कर हजरत साहब किरानी की प्रारम्भिक विजयों का उल्लेख पढ़ने लगे कि किस प्रकार वे अपने ऐश्वर्य की बहार के प्रारम्भ में अपने चालीस निष्ठावानों को अपने साथ रखते थे। एक दिन उन्होंने प्रत्येक से दो-दो बाण लेकर उन्हें एक स्थान पर बाँधा और प्रत्येक को वह गट्ठर इस आशय से दे दिया कि वह उसे तोड़। उन लोगों ने उस गट्ठर को अपने जानू पर रखकर बड़ा जोर लगाया किन्तु उसपर कोई प्रभाव न हुआ। जब उन बाणों को खोलकर प्रत्येक को दो-दो बाण बाँट दिए तो हर एक ने बाणों को तोड़ डाला। हजरत (साहब किरानी) ने कहा, "हम ४० आदमी हैं। यदि हम बाणों के इस गट्ठर के समान सगठित रहें तो विजय हमारी सेवा में उपस्थित रहेगी।" इन सद्भावनाओं एवं उच्च विचारों को लेकर उन्होंने देशों की विजय प्रारम्भ की थी[3]।

उन असावधान मूर्खों ने इस घटना को सुनकर इस बात पर ध्यान न दिया कि उन ४० व्यक्तियों में से प्रत्येक दैवी सहायता के कारण एक सेना के बराबर था। केवल बाह्य अनुरूपता पर ध्यान देकर वे सर्वनाश तक पहुँचाने वाली कल्पनाओं का शिकार हो गये। जब उन्होंने अपने आप को गिना तो ४०० निकले। अपने पागलपन तथा अपनी असावधानी के कारण इस सयोग पर यह समझे कि '४०० की शक्ति तो और भी अधिक होगी' अतः दक्खिन[4] विजय का सकल्प करके उस बदमस्ती में मृत्यु के ऊबड़ खाबड़ मार्ग की यात्रा करने लगे। दूसरे दिन इन विश्वासघातों की बड़ी खोज कराई गई किन्तु किसी का कोई पता न चला। अन्त में उनके कुत्सित विचारों की सूचना मिल गई और १००० आदमी बन्दी बनाने के लिए भेजे गए। अल्प समय में उन अभागे लोगों को जिनकी मौत आ चुकी थी बन्दी बनाकर शाही दरबार में पहुँचाया गया।

सैनिकों को दंड

उस दिन मंगलवार था। हजरत जहाँबानी, मंगलग्रह की अनुरूपता[5] के कारण लाल वस्त्र धारण किए हुए क्रोध एवं कोप के सिंहासन पर आरूढ़ थे। अपराधियों के समूह लाये जाते थे और (१४०) प्रत्येक समूह के लिए उसके भाग्य के लिखे तथा पूर्ण न्यायानुसार आदेश दिये जाते थे। कुछ

१ मदिरापान प्रारम्भ कर दिया।

२ जफर नामा : लेखक शरफुद्दीन अली यज्दी। उसका जन्म यज्द में हुआ था। उसकी मृत्यु १४५४ ई० में हुई। जफर नामा दो भागों में कलकत्ते में प्रकाशित हो चुका है। हिन्दुस्तान में मुगलों के समय में इस ग्रन्थ को बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त हुई और प्रत्येक वर्ग के लोग इसका अध्ययन करते थे। अबुलफज्ल ने राजनीति की शिक्षा में इस ग्रन्थ को बड़ा महत्वपूर्ण बताया है। तीमूर के हिन्दुस्तान पर आक्रमण से सम्बन्धित अनुवाद के लिये देखिये, रिजवी तुगलुक कालीन भारत भाग २, पृ० २४१-२७२।

३ जफर नामा के कलकत्ते के संस्करण में इस कहानी का उल्लेख नहीं किन्तु इस बात की चर्चा है कि तीमूर के चालीस साथी थे। (जफर नामा भाग १, पृ० ७५)। सम्भवतः अबुलफज्ल के पास जो हस्तलिपि थी, उसमें इस कहानी का उल्लेख हो। इस प्रकार के अन्तर हस्तलिपियों में प्रायः मिलते हैं।

४ दक्षिण।

५ इस सम्बन्ध में भाग के पृष्ठों में कानूने हुमायूनी (लेखक ख्वान्दमीर) का अनुवाद देखिये।

के हाथ बंधवाकर पर्वत रूपी हाथियों के पाँव के नीचे कुचलवा दिया जाता था। अनुशासन की रेखा के बाहर सिर निकालने के अपराध में कुछ के शरीर को सिर के भार से मुक्त कर दिये जाने का आदेश दिया गया[1]। ऐसे समूह, जिन्हें हाथ-पाँव की सुध-बुध न थी और कुत्सित विचारों से प्रेरित होकर हाथ मारने लगे थे, बिना हाथ-पाँव के कर दिये गए।[2] जो समूह स्वेच्छाचार के कारण शाही आदेशों पर कान न धरता था, उसने अपने नाक-कान अपने स्थान पर न पाये। जो समूह अपनी अंगुली की नोक अपराध के अक्षरों पर रखने लगा था, उसे अंगुली के चिह्न, मुट्ठी में न मिले।[3]

इमाम को दंड

इस घटना के उपरान्त सायंकाल की नमाज़ का समय आ गया। इमाम ने जो मूर्खता से शून्य न था, प्रथम रकात[4] में *अलम तरा कैफ*[5] का सूरा पढ़ा। *सलाम*[6] *के उपरान्त शाही आदेश हुआ* कि इमाम को हाथी के पाँव के नीचे डलवा दिया जाय कारण कि उसने जान बूझकर फील[7] का सूरा संकेत के उद्देश्य से पढ़ा है और इस न्याय को अत्याचार बना कर एक अशुभ बात[8] कही है। मौलाना मुहम्मद फरग़ली ने निवेदन किया कि, यह इमाम कुरान का अर्थ नहीं समझता।' किन्तु क्रोध की अग्नि के अत्यधिक प्रज्वलित होने के कारण उसने क्रोध से भरे हुए वाक्य के अतिरिक्त उत्तर में कुछ न सुना। कुछ समय उपरान्त जब इमाम की सरलता पवित्र हृदय में प्रतिबिम्बित हुई और क्रोध की अग्नि शान्त हुई तो वे अत्यधिक पश्चाताप प्रकट करके रात भर रोते तथा विलाप करते रहे।

एमादुलमुल्क की पराजय

इस कार्य को पूरा कर लेने के बाद तरदी बेग खां को चाम्पानीर में छोड़कर विजयी पताकायें अहमदाबाद की ओर रवाना हुईं और महेन्द्री नदी पर पड़ाव किया गया। एमादुल-

१ सिर कटवाने का आदेश दिया गया।
२ हाथ पाँव कटवा डाले गये।
३ अर्थात् सब की हत्या करा दी गई या हाथ पाँव कटवा लिये गये अथवा अन्धा बनवा दिया गया।
४ नमाज़ के लिये खड़े होकर, कुरान से कुछ पढ़ने के उपरान्त घुटनों के बल झुकना फिर खड़ा होना, सिज्दा करना और सिज्दा करके खड़ा होना—यह पूरी क्रिया एक रकात कहलाती है।
५ कुरान में विभिन्न सूरे हैं। अलम तरा कैफ के सूरे में यमन के बादशाह अबरहा के किस्से का उल्लेख है जिसने हज़रत मुहम्मद के जन्म के वर्ष (५७१ ई०) मक्का पर हाथियों की एक सेना लेकर आक्रमण किया किन्तु *ईश्वर के आदेश से पक्षियों ने कंकड़ियाँ मार-मारकर सेना को भगा दिया। यह संक्षिप्त सूरा इस प्रकार है*: "हे रसूल क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे ईश्वर ने हाथी वालों के साथ क्या किया? क्या उसने उनकी समस्त योजनाओं का खंडन नहीं कर दिया? (अवश्य) और उन पर झुन्ड के झुन्ड पक्षी भेज दिये जो उन पर खरंजों की कंकरियाँ फेंकते थे तो उन्हें चबाये हुए भुस की भाँति नष्ट कर दिया", (सूरा १०५)।
६ नमाज़ की अन्तिम क्रिया।
७ हाथी का सूरा, "अलम तरा कैफ" के सूरे को सूरये फील भी कहा जाता है।
८ मूल में "फाल"—शकुन। हुमायूँ का शकुन पर बड़ा विश्वास था। उसने हिन्दुस्तान में सिंहासनारूढ़ होने से पूर्व ही इस प्रकार के शकुनों को महत्व देना प्रारम्भ कर दिया था। (देखिये ख्वान्दमीर कानूने हुमायूनी)।

मुल्क[1] भी धृष्टता प्रदर्शित करते हुए आगे बढा। प्रत्येक पडाव से जब शाही सेना प्रस्थान करती तो वह भी प्रस्थान करता। नरियाद कस्बे तथा महमूदाबाद[2] के मध्य मे मीर्जा अस्करी से, जो शाही सेना के अग्र भाग मे था और कुछ मंजिल आगे जा रहा था, उसका मुकाबला हो गया तथा घोर युद्ध हुआ। मीर्जा की पराजय होने वाली थी कि यादगार नासिर मीर्जा, कासिम हुसैन खा तथा हिन्दू बेग एक बहुत बडी सेना सहित पहुँच गए और ऐश्वर्य की पताका फहराकर वैभवशाली शाही सेना के आगमन का समाचार शत्रुओ के कानो तक पहुँचाया और यह प्रसिद्ध किया कि 'सम्मानित सेना आ गई'। यह बात कहते ही और इस आवाज के शत्रुओ के कानो मे पहुँचते ही यादगार नासिर मीर्जा को तत्काल विजय प्राप्त हो गई तथा शत्रु पराजित हो गए। यादगार नासिर मीर्जा सब के आगे था अत युद्ध का अधिक बोझ उसी पर पडा। शत्रुओ की ओर से आलम खा लोदी एव कुछ अन्य लोगो ने घोर विरोध किया, फलस्वरूप एमादुलमुल्क अपने आधे प्राण सुरक्षित ले जा सका। शुजाअत खा का पिता दरवेश मुहम्मद कराशेर उस युद्ध मे शहीद[3] हो गया। इसी बीच मे शाही पताकाओ की चमक दमक दृष्टिगत हुई और विजय पर विजय मिलती गई। जिस समय हजरत (जहाबानी) की पवित्र सेना पहुँची ३ हजार से अधिक तथा ४ हजार से कम शत्रु (१४१) मारे जा चुके थे। हजरत जहाबानी ने खुदावन्द खा[4] से पूछा, 'युद्ध की कोई अन्य शका रह गई है अथवा नही?" उसने उत्तर दिया, "यदि वह सफेद दाग वाला दास अर्थात् एमादुलमुल्क स्वय इस युद्ध मे रहा होगा तो युद्ध का अन्त हो गया और यदि वह स्वय इस युद्ध मे न रहा होगा तो एक अन्य झडप की सम्भावना है।" इस बात का पता लगाने के लिये कुछ लोग नियुक्त हुए। दो घायलो से जो लाशो मे अधमरे पडे थे पता चला कि यह युद्ध एमादुलमुल्क के नेतृत्व मे हुआ था। दूसरे दिन सम्मानित सेना ने प्रस्थान करके आगे पडाव किया। मीर्जा अस्करी भी भाग्यशाली सेनाओ के साथ उसी प्रकार आगे-आगे प्रस्थान करने लगा। जब काकरिया[5] हौज के इस ओर भाग्यशाली सेनाओ का पडाव हुआ तो मीर्जा अस्करी ने निवेदन किया कि, 'यदि पूरा लश्कर नगर मे प्रविष्ट हो जायगा तो सर्वसाधारण को बडा कष्ट पहुँचेगा।" शाही आदेश हुआ कि यसावल[6] लोग नगर के प्रत्येक द्वार पर खडे हो जायें और मीर्जा अस्करी तथा उसके आदमियो के अतिरिक्त किसी को भीतर प्रविष्ट न होने दें।

१ मीर्जा हैदर ने तारीखे रशीदी मे इसकी बडी निन्दा की है, वह भी सीमा मे डूब गया था।
२ अहमदाबाद के दक्षिण पूर्व मे और नरियाद से ११ तथा अहमदाबाद से १० मील दूर।
३ अकबर नामा मे शहीद शब्द का प्रयोग साधारण अर्थ से पूर्णत भिन्न है। साधारण रूप से इस्लाम के लिये युद्ध करते हुए मारा जाने वाला शहीद कहलाता था किन्तु अबुलफजल मुगल बादशाहों की ओर से मारे जाने वालों को शहीद समझता था चाहे वे मुसलमानों से युद्ध करते हुये मारे जायें और चाहे हिन्दुओं से।
४ खुदावन्द खाँ वजीर, रूमी खा नहीं।
५ यह अहमदाबाद के उत्तर में है। इसे 'हौजे कुतुब' भी कहते हैं और १४५१ ई० में इसका निर्माण हुआ था। यह ७२ एकड की परिधि में था। (*Bombay Gazetteer*, IV, p 17)
६ निम्न वर्ग के अधिकारी जो चोबदार के समान समाचार लाने, प्रतिरक्षा एव दरबार में अनुशासन रखने का कार्य करते थे, पहरेदार।

के हाथ बधवाकर पर्वत रूपी हाथियों के पाँव के नीचे कुचलवा दिया जाता था। अनुशासन की रेखा के बाहर सिर निकालने के अपराध में कुछ के शरीर को सिर के भार से मुक्त कर दिये जाने का आदेश दिया गया[१]। ऐसे समूह, जिन्हें हाथ-पाँव की सुध-बुध न थी और कुत्सित विचारों से प्रेरित होकर हाथ मारने लगे थे, बिना हाथ-पाँव के कर दिये गए[२]। जो समूह स्वेच्छाचार के कारण शाही आदेशों पर कान न धरता था, उसने अपने नाक-कान अपने स्थान पर न पाये। जो समूह अपनी अंगुली की नोक अपराध के अक्षरों पर रखने लगा था, उसे अंगुली के चिह्न, मुट्ठी में न मिले।[३]

इमाम को दंड

इस घटना के उपरान्त सायंकाल की नमाज का समय आ गया। इमाम ने जो मूर्खता से शून्य न था, प्रथम रकात[४] में अलम तरा कैफ[५] का सूरा पढ़ा। सलाम[६] के उपरान्त शाही आदेश हुआ कि इमाम को हाथी के पाँव के नीचे डलवा दिया जाय कारण कि उसने जान बूझकर फील[७] का सूरा सबेन के उद्देश्य से पढ़ा है और इस न्याय को अत्याचार बना कर एक अशुभ बात[८] कही है। मौलाना मुहम्मद परगली ने निवेदन किया कि, यह इमाम कुरान का अर्थ नहीं समझता।" किन्तु क्रोध की अग्नि के अत्यधिक प्रज्वलित होने के कारण उसने क्रोध से भरे हुए वाक्य के अतिरिक्त उत्तर में कुछ न सुना। कुछ समय उपरान्त जब इमाम की सरलता पवित्र हृदय में प्रतिबिम्बित हुई और क्रोध की अग्नि शान्त हुई तो वे अत्यधिक पश्चाताप प्रकट करके रात भर रोते तथा विलाप करते रहे।

एमादुलमुल्क की पराजय

इस कार्य को पूरा कर लेने के बाद तर्दी बेग खां को चाम्पानीर में छोड़कर विजयी पताकायें अहमदाबाद की ओर रवाना हुई और महेन्द्री नदी पर पड़ाव किया गया। एमादुल-

१ सिर कटवाने का आदेश दिया गया।
२ हाथ पाँव कटवा डाले गये।
३ अर्थात् सब की हत्या करा दी गई या हाथ पाँव कटवा लिये गये अथवा अन्धा बनवा दिया गया।
४ नमाज के लिये खड़े होकर, कुरान से कुछ पढ़ने के उपरान्त घुटनों के बल झुकना फिर खड़ा होना, सिज्दा करना और सिज्दा करके खड़ा होना—यह पूरी क्रिया एक रकात कहलाती है।
५ कुरान में विभिन्न सूरे हैं। अलम तरा कैफ के सूरे में यमन के बादशाह अबरहा के किस्से का उल्लेख है जिसने हजरत मुहम्मद के जन्म के वर्ष (५७१ ई०) मक्का पर हाथियों की एक सेना लेकर आक्रमण किया किन्तु ईश्वर के आदेश से पक्षियों ने कंकरियाँ मार मारकर सेना को भगा दिया। यह संक्षिप्त सूरा इस प्रकार है "हे रसूल क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे ईश्वर ने हाथी वालों के साथ क्या किया? क्या उसने उनकी समस्त योजनाओं का खंडन नहीं कर दिया? (अवश्य) और उन पर झुन्ड के झुन्ड पक्षी भेज दिये जो उन पर खरंजों की कंकरियाँ फेंकते थे तो उन्हें चबाये हुए भुस की भाँति नष्ट कर दिया", (सूरा १०५)।
६ नमाज की अन्तिम क्रिया।
७ हाथी का सूरा, "अलम तरा कैफ" के सूरे को सूरये फील भी कहा जाता है।
८ मूल में "फाल"—शकुन। हुमायूँ का शकुन पर बड़ा विश्वास था। उसने हिन्दुस्तान में सिंहासनारूढ़ होने से पूर्व ही इस प्रकार के शकुनों को महत्व देना प्रारम्भ कर दिया था। (देखिये ख्वन्दमीर कानूने हुमायूनी)।

मुल्क[1] भी धृष्टता प्रदर्शित करते हुए आगे बढ़ा। प्रत्येक पडाव से जब शाही सेना प्रस्थान करती तो वह भी प्रस्थान करता। नरियाद कस्बे तथा महमूदाबाद[2] के मध्य में मीर्ज़ा अस्करी से, जो शाही सेना के अग्र भाग मे था और कुछ मंजिल आगे जा रहा था, उसका मुकाबला हो गया तथा घोर युद्ध हुआ। मीर्ज़ा की पराजय होने वाली थी कि यादगार नासिर मीर्ज़ा, कासिम हुसेन खां तथा हिन्दू बेग एक बहुत बडी सेना सहित पहुँच गए और ऐश्वर्य की पताका फहराकर वैभवशाली शाही सेना के आगमन का समाचार शत्रुओं के कानों तक पहुँचाया और यह प्रसिद्ध किया कि 'सम्मानित सेना आ गई'। यह बात कहते ही और इस आवाज के शत्रुओं के कानों में पहुँचते ही यादगार नासिर मीर्ज़ा को तत्काल विजय प्राप्त हो गई तथा शत्रु पराजित हो गए। यादगार नासिर मीर्ज़ा सब के आगे था अत युद्ध का अधिक बोझ उसी पर पडा। शत्रुओं की ओर से आलम खां लोदी एवं कुछ अन्य लोगों ने घोर विरोध किया, फलस्वरूप एमादुलमुल्क अपने आधे प्राण सुरक्षित ले जा सका। शुजाअत खां का पिता दरवेश मुहम्मद करानी उस युद्ध में शहीद[3] हो गया। इसी बीच में शाही पताकाओं की चमक-दमक दृष्टिगत हुई और विजय पर विजय मिलती गई। जिस समय हजरत (जहांबानी) की पवित्र सेना पहुँची ३ हजार से अधिक तथा ४ हजार से कम शत्रु (१४१) मारे जा चुके थे। हजरत जहांबानी ने खुदावन्द खां[4] से पूछा, "युद्ध की कोई अन्य शंका रह गई है अथवा नहीं?" उसने उत्तर दिया, "यदि वह सफेद दाग वाला दास अर्थात् एमादुलमुल्क स्वयं इस युद्ध मे रहा होगा तो युद्ध का अन्त हो गया और यदि वह स्वयं इस युद्ध मे न रहा होगा तो एक अन्य झडप की सम्भावना है।" इस बात का पता लगाने के लिये कुछ लोग नियुक्त हुए। दो घायलों से जो लाशों में अधमरे पडे थे पता चला कि यह युद्ध एमादुलमुल्क के नेतृत्व मे हुआ था। दूसरे दिन सम्मानित सेना ने प्रस्थान करके आगे पडाव किया। मीर्ज़ा अस्करी भी भाग्यशाली सेनाओं के साथ उसी प्रकार आगे-आगे प्रस्थान करने लगा। जब कांकरिया[5] हौज के इस ओर भाग्यशाली सेनाओं का पडाव हुआ तो मीर्ज़ा अस्करी ने निवेदन किया कि, 'यदि पूरा लश्कर नगर में प्रविष्ट हो जायगा तो सर्वसाधारण को बडा कष्ट पहुँचेगा।" शाही आदेश हुआ कि यसावल[6] लोग नगर के प्रत्येक द्वार पर खडे हो जायें और मीर्ज़ा अस्करी तथा उसके आदमियों के अतिरिक्त किसी को भीतर प्रविष्ट न होने दें।

१ मीर्ज़ा हैदर ने तारीखे रशीदी में इसकी बडी निन्दा की है, वह भी चौसा में डूब गया था।

२ अहमदाबाद के दक्षिण पूर्व में और नरियाद से ११ तथा अहमदाबाद से १० मील दूर।

३ अकबर नामा में शहीद शब्द का प्रयोग साधारण अर्थ से पूर्णत भिन्न है। साधारण रूप से इस्लाम के लिये युद्ध करते हुए मारा जाने वाला शहीद कहलाता था किन्तु अबुलफ़ज़ल मुगल बादशाहों की ओर से मारे जाने वालों को शहीद समझता था चाहे वे मुसलमानों से युद्ध करते हुये मारे जायें और चाहे हिन्दुओं से।

४ खुदावन्द खां वज़ीर, रूमी खां नहीं।

५ यह अहमदाबाद के उत्तर में है। इसे 'हौजे कुत्ब' भी कहते हैं और १४५१ ई० में इसका निर्माण हुआ था। यह ७२ एकड की परिधि में था। (*Bombay Gazetteer*, IV, p 17).

६ निम्न वर्ग के अधिकारी जो चोबदार के समान समाचार लाने, प्रतीक्षा एवं दरबार में अनुशासन रखने का कार्य करते थे, पहरेदार।

के हाथ बंधवाकर पर्वत रूपी हाथियों के पाँव के नीचे कुचलवा दिया जाता था। अनुशासन की रेखा के बाहर सिर निकालने के अपराध में कुछ के शरीर का सिर के भार से मुक्त कर दिये जाने का आदेश दिया गया[१]। ऐसे समूह, जिन्हें हाथ पाँव की सुध-बुध न थी और कुत्सित विचारों से प्रेरित होकर हाथ मारने लगे थे, बिना हाथ-पाँव के कर दिये गए।[२] जो समूह स्वेच्छाचार के कारण शाही आदेशों पर कान न धरता था, उसने अपने नाक-कान अपने स्थान पर न पाये। जो समूह अपनी अंगुली की नोक अपराध के अक्षरों पर रखने लगा था, उस अंगुली के चिह्न, मुट्ठी में न मिले।[३]

इमाम को दंड

इस घटना के उपरान्त सायंकाल की नमाज़ का समय आ गया। इमाम ने जो मूर्खता से शून्य न था, प्रथम रकात[४] में अलम तरा कैफ़[५] का सूरा पढ़ा। सलाम[६] के उपरान्त शाही आदेश हुआ कि इमाम का हाथी के पाँव के नीचे डलवा दिया जाय कारण कि उसने जान बूझकर फ़ील[७] का सूरा संकेत के उद्देश्य से पढ़ा है और इस न्याय को अत्याचार बना कर एक अशुभ बात[८] कही है। मौलाना मुहम्मद परगली ने निवेदन किया कि, "यह इमाम कुरान का अर्थ नहीं समझता।" किन्तु क्रोध की अग्नि के अत्यधिक प्रज्वलित होने के कारण उसने क्रोध में भरे हुए वाक्य के अतिरिक्त उत्तर में कुछ न सुना। कुछ समय उपरान्त जब इमाम की सरलता, पवित्र हृदय में प्रतिबिम्बित हुई और क्रोध की अग्नि शान्त हुई तो वे अत्यधिक पश्चाताप प्रकट करके रात भर रोते तथा विलाप करते रहे।

एमादुलमुल्क की पराजय

इस कार्य को पूरा कर लेने के बाद तर्दी बेग खां को चाम्पानीर में छोड़कर विजयी पताकायें अहमदाबाद की ओर रवाना हुईं और महेन्द्री नदी पर पड़ाव किया गया। एमादुल

१ सिर कटवाने का आदेश दिया गया।
२ हाथ पाँव कटवा डाले गये।
३ अर्थात् सब की हत्या करा दी गई या हाथ पाँव कटवा लिये गये अथवा अन्धा बनवा दिया गया।
४ नमाज़ के लिये खड़े होकर, कुरान से कुछ पढ़ने के उपरान्त घुटनों के बल झुकना फिर खड़ा होना, सिज्दा करना और सिज्दा करके खड़ा होना—यह पूरी क्रिया एक रकात कहलाती है।
५ कुरान में विभिन्न सूरे हैं। अलम तरा कैफ़ के सूरे में यमन के बादशाह अबरहा के किस्से का उल्लेख है जिसने हज़रत मुहम्मद के जन्म के वर्ष (५७१ ई०) मक्का पर हाथियों की एक सेना लेकर आक्रमण किया किन्तु ईश्वर के आदेश से पक्षियों ने कंकरियाँ मार मारकर सेना को भगा दिया। यह संक्षिप्त सूरा इस प्रकार है "हे रसूल क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे ईश्वर ने हाथी वालों के साथ क्या किया? क्या उसने उनकी समस्त योजनाओं का खंडन नहीं कर दिया? (अवश्य) और उन पर झुन्ड के झुन्ड पक्षी भेज दिये जो उन पर खरंजों की कंकरियाँ फेंकते थे तो उन्हें चबाये हुए भुस की भाँति नष्ट कर दिया", (सूरा १०५)।
६ नमाज़ की अन्तिम क्रिया।
७ हाथी का सूरा, "अलम तरा कैफ़" के सूरे को सूरये फ़ील भी कहा जाता है।
८ मूल में "फ़ाल"—शकुन। हुमायूं का शकुन पर बड़ा विश्वास था। उसने हिन्दुस्तान में सिंहासनारूढ़ होने से पूर्व ही इस प्रकार के शकुनों को महत्व देना प्रारम्भ कर दिया था। (देखिये ख्वान्दमीर कानूने हुमायूनी)।

मुल्क[१] भी धृष्टता प्रदर्शित करते हुए आगे बढा। प्रत्येक पडाव से जब शाही सेना प्रस्थान करती तो वह भी प्रस्थान करता। नरियाद कस्बे तथा महमूदाबाद[२] के मध्य में मीर्जा अस्करी से, जो शाही सेना के अग्र भाग में था और कुछ मंजिल आगे जा रहा था, उसका मुकाबला हो गया तथा घोर युद्ध हुआ। मीर्जा की पराजय होने वाली थी कि यादगार नासिर मीर्जा, कासिम हुसेन खाँ तथा हिन्दू बेग एक बहुत बडी सेना सहित पहुँच गए और ऐश्वर्य की पताका फहराकर वैभवशाली शाही सेना के आगमन का समाचार शत्रुओं के कानों तक पहुँचाया और यह प्रसिद्ध किया कि 'सम्मानित सेना आ गई'। यह बात कहते ही और इस आवाज के शत्रुओं के कानों में पहुँचते ही यादगार नासिर मीर्जा को तत्काल विजय प्राप्त हो गई तथा शत्रु पराजित हो गए। यादगार नासिर मीर्जा सब के आगे था अत युद्ध का अधिक बोझ उसी पर पडा। शत्रुओं की ओर से आलम खाँ लोदी एवं कुछ अन्य लोगों ने घोर विरोध किया, फलस्वरूप एमादुलमुल्क अपने आधे प्राण सुरक्षित ले जा सका। शुजाअत खाँ का पिता दरवेश मुहम्मद करागोर उस युद्ध में शहीद[३] हो गया। इसी बीच में शाही पताकाओं की चमक-दमक दृष्टिगत हुई और विजय पर विजय मिलती गई। जिस समय हजरत (जहाँबानी) की पवित्र सेना पहुँची ३ हजार से अधिक तथा ४ हजार से कम शत्रु (१४१) मारे जा चुके थे। हजरत जहाँबानी ने खुदावन्द खाँ[४] से पूछा, 'युद्ध की कोई अन्य शंका रह गई है अथवा नहीं ?' उसने उत्तर दिया, "यदि वह सफेद दाग वाला दास अर्थात एमादुलमुल्क स्वयं इस युद्ध में रहा होगा तो युद्ध का अन्त हो गया और यदि वह स्वयं इस युद्ध में न रहा होगा तो एक अन्य झडप की सम्भावना है।" इस बात का पता लगाने के लिये कुछ लोग नियुक्त हुए। दो घायलों से जो लाशों में अधमरे पडे थे पता चला कि यह युद्ध एमादुलमुल्क के नेतृत्व में हुआ था। दूसरे दिन सम्मानित सेना ने प्रस्थान करके आगे पडाव किया। मीर्जा अस्करी भी भाग्यशाली सेनाओं के साथ उसी प्रकार आगे-आगे प्रस्थान करने लगा। जब कांकरिया[५] हौज के इस ओर भाग्यशाली सेनाओं का पडाव हुआ तो मीर्जा अस्करी ने निवेदन किया कि, 'यदि पूरा लश्कर नगर में प्रविष्ट हो जायगा तो सर्वसाधारण को बडा कष्ट पहुँचेगा।' शाही आदेश हुआ कि यसावल[६] लोग नगर के प्रत्येक द्वार पर खडे हो जायँ और मीर्जा अस्करी तथा उसके आदमियों के अतिरिक्त किसी को भीतर प्रविष्ट न होने दें।

१ मीर्जा हैदर ने तारीखे रशीदी में इसकी बडी निन्दा की है, वह भी चौसा में डूब गया था।
२ अहमदाबाद के दक्षिण पूर्व में और नरियाद से ११ तथा अहमदाबाद से १० मील दूर।
३ अकबर नामा में शहीद शब्द का प्रयोग साधारण अर्थ से पूर्णत भिन्न है। साधारण रूप से इस्लाम के लिये युद्ध करते हुए मारा जाने वाला शहीद कहलाता था किन्तु अबुलफजल मुगल बादशाहों की ओर से मारे जाने वालों को शहीद समझता था चाहे वे मुसलमानों से युद्ध करते हुये मारे जायें और चाहे हिन्दुओं से।
४ खुदावन्द खाँ वजीर, रूमी खाँ नहीं।
५ यह अहमदाबाद के उत्तर में है। इसे 'हौजे कुतुब' भी कहते हैं और १४५१ ई० में इसका निर्माण हुआ था। यह ७२ एकड की परिधि में था। (*Bombay Gazetteer*, IV, p 17)
६ निम्न वर्ग के अधिकारी जो चोबदार के समान समाचार लाने, प्रतिरक्षा एवं दरबार में अनुशासन रखने का कार्य करते थे, पहरेदार।

गुजरात का शासन-प्रबन्ध

वहाँ से प्रस्थान करके जब वे मरकोज[१] के समीप, जो एक बडा हृदयग्राही स्थान है, पहुँचे तो तीसरे दिन अपने कुछ विश्वस्त दरबारियों सहित नगर के भ्रमण हेतु रवाना हुए। तदुपरान्त गुजरात के शासन-प्रबन्ध की ओर ध्यान देकर उचित प्रबन्ध किया। हिन्दू बेग को एक भारी सेना सहित इस आशय से नियुक्त किया गया कि जिस स्थान पर भी कुमक की आवश्यकता हो, वह वहाँ पहुँच जाय। मीर्जा यादगार नासिर को पटन[२] तथा कासिम हुसेन सुल्तान[३] को बरोच[४], नौसारी[५] और सूरत[६] का बन्दरगाह प्रदान किया। दोस्त बेग ईशक आका का खम्बायत एवं बरोदा[७] दिए गए। महमूदाबाद, मीर बूचका बहादुर[८] को प्रदान किया गया।

आगरा तथा मालवा में विद्रोह

जब गुजरात के मामले सुव्यवस्थित हो गए तो हजरत जहाँबानी स्वयं बन्दरदीप की ओर रवाना हुए। जिस समय सम्मानित सेना दन्दूका[९] को, जो अहमदाबाद से ३० कुराह[१०] पर है, पार कर चुकी तो राजधानी आगरा से निष्ठावानों के इस आशय के प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए कि "चूंकि सम्मानित पताकायें राजधानी से बडी दूर हो गई हैं अतः इस क्षेत्र के विद्रोही बगावत एवं उपद्रव का सिर बुलन्द कर षड्यन्त्र के हाथ फैलाने लगे हैं।"[११] मालवा से भी दूतों ने आकर कहा

१ अहमदाबाद से लगभग ५ मील पर।

२ बडौदा में २३°५१ उत्तर तथा ७२°१०' पूर्व में जो पहिले अन्हिलवाडा कहलाता था।

३ उसका नाम कासिम हुसेन उजबेक था। उसे कासिम सुल्तान, कासिम खां एवं कासिम हुसेन कई प्रकार से लिखा गया है। वह सुल्तान हुसेन बायकरा की एक पुत्री का पुत्र था।

४ २१°२५' तथा २२°१५' उत्तर और ७२ ३१' तथा ७३ १० पूर्व जिसके उत्तर में माही नदी बहती है और इसे कैम्बे (खम्बायत) से पृथक् करती है। इसके पूर्व तथा दक्षिण पूर्व में बडौदा एवं राजपीपला, दक्षिण में कीम नदी है जो उसे सूरत से पृथक करती है। पश्चिम में खम्बायत (कैम्बे) की खाडी है। (*The Imperial Gazetteer of India*, IX, p 18).

५ बडौदा में २०°५७ उत्तर तथा ७०°५६' पूर्व में बम्बई से १४७ मील पर। यह बडा ही प्राचीन कस्बा है और टोलमी के भूगोल में इसका उल्लेख नसरिपा के नाम से हुआ है। ईरान में मुसलमानों की धर्मान्धता से तंग आकर वहाँ के जरतश्ती (पारसी) पर्याप्त संख्या में नौसारी पहुँचे और यहीं निवास करने लगे। (*The Imperial Ga etteer of India*, XVIII, p 425).

६ २१°१२' उत्तर तथा ७२°५०' पूर्व, ताप्ती नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है और बम्बई का एक जिला है।

७ बडौदा राज्य २०°४५ तथा २४°६' उत्तर और ७०°४२' तथा ७३°५६' पूर्व में स्थित था। बडौदा नगर २२°१८ उत्तर तथा ७३°१५' पूर्व में बम्बई से २२४½ मील पर तथा अहमदाबाद से ६१½ मील पर दक्षिण पूर्व में दक्षिण की ओर स्थित है। (*The Imperial Ga etteer of India*, VII, pp 25, 81)

८ इसे (बचका) भी लिखा गया है।

९ अहमदाबाद की दक्षिण पश्चिम दिशा की ओर।

१० कोस।

११ अर्थात् विद्रोह एवं षड्यन्त्र करने लगे हैं।

कि "सिकन्दर खा नया मल्लू खा ने विद्रोह कर दिया है और सरकार हंडिया के जागीरदार मेहतर जम्बूर पर आक्रमण कर दिया गया है। वह अपनी धन-सम्पत्ति को लेकर उज्जैन चला गया है। समस्त सैनिक जो इस प्रदेश मे इधर-उधर नियुक्त थे उज्जैन में एकत्र हो गये है। षड्यत्रकारियो के बहुत बडे समूह ने उस नगर का अवरोध कर लिया है। दरवेश अली किताबदार[1], (१४२) उज्जैन का हाकिम बन्दूक द्वारा आहत होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया है। शेष जो लोग किले मे घिरे हुए थे, उन्होने यह वचन लेकर कि उन्हे कोई हानि न पहुँचाई जायगी, अधीनता स्वीकार कर ली है।"

हुमायू का मालवा पहुँचना

हजरत जहाँबानी ने तदनुसार यह निश्चय किया कि लौटकर कुछ समय तक मालवा में रहे और मन्दू को राजधानी बनाये रहें ताकि मालवा भी विद्रोहियो से मुक्त हो जाय और गुजरात की विलायत भी, जो हाल ही में विजय हुई है, सुव्यवस्थित हो जाय और षड्यन्त्र एव अशान्ति की जो अग्नि राजधानी के उपान्त मे भडक उठी है वह बुझ जाय। तदनुसार उन्होने गुजरात मीर्जा अस्करी एव अमीरो के एक समूह को सौपकर, वापसी के लिए लगाम मोडी और खम्बायत मे पडाव किया। वहाँ से वे बरोदा, बरौच, और वहा से सूरत होते हुए, आसीर[2] तथा बुरहानपुर[3] पहुँचे। ७ दिन तक बुरहानपुर में ठहरे रहे। तदुपरान्त वहाँ से प्रस्थान किया और आसीर के किले की बगल से होते हुए, मन्दू मे भाग्यशाली शिविर लगवाये। षड्यत्रकारियो में से प्रत्येक भाग्यशाली पताकाओ की वापसी के केवल समाचार मात्र व्याकुल होकर किसी न किसी कोने में छिप गया। मालवा की जल-वायु हजरत (जहाँबानी) को बडी अनुकूल सिद्ध हुई। उन्होने भाग्यशाली सेना के अधिकाश सेवको को उस विलायत का जागीरदार नियुक्त कर दिया तथा सफलता एव इच्छाओ की पूर्ति के द्वार ससार वालो के लिए खोल दिये।

मीर्जा अस्करी का विद्रोह के विचारो के कारण गुजरात त्यागना

अमीरो द्वारा विद्रोह

जो सम्मानित व्यक्ति ईश्वर की देन एव सौभाग्य का मूल्य न समझकर कृतघ्नता प्रदर्शित करता है वह अपने हाथ में, अपने पाँव मे कुल्हाडी मारता है और अपने ही कार्यो से विनाश के नर्क मे गिर पडता है। इस तथ्य का प्रमाण मीर्जा अस्करी तथा गुजरात के अमीरो का व्यवहार है। वे अपने दुस्साहस के कारण साधारण सी सफलता-उपरान्त विद्रोह के विचारो मे लीन

१ पुस्तकालयाध्यक्ष।

२ निमर जिले की बुरहानपुर तहसील में २१°२८' उत्तर तथा ७६°१८' पूर्व खडवा से २६ मील पर। सपुडा की पहाडी श्रृंखला पर भूमि से ८५० फीट तथा समुद्र के धरातल से २२८३ फीट है। (*The Imperial Gazetteer of India*, VI, p 12).

३ २१°१८' उत्तर तथा ७६°१४' पूर्व में निमर जिले की एक तहसील। (*The Imperial Gazetteer of India*, IX, p. 104).

रहने लगे। अनुचित प्रकार से जीवन व्यतीत करने के कारण सर्वप्रथम आपस मे विरोध की धूल उडाने लगे और शत्रुता की आँधी ने उनकी दशा को अधकारमय बना दिया। इस प्रकार लगभग ३ मास व्यतीत हो जाने पर वे षड्यन्त्र रचने लगे। खाने जहाँ शीराजी तथा रूमी खा (जिसका नाम सफर था और जिसने सूरत के किले का निर्माण कराया था) ने सगठित होकर नौसारी की विलायत पर, जो कासिम हुसेन खा ऊजबेक के सम्बन्धी अब्दुल्लाह खा के अधीन थी, अपना अधिकार जमा लिया। अब्दुल्लाह खा उस क्षेत्र को छोडकर बरौच पहुँचा। इसी बीच मे उन लोगो ने सूरत के बन्दरगाह पर भी अधिकार जमा लिया। खाने जहाँ स्थल मार्ग से बरौच की ओर रवाना हुआ। रूमी खा समुद्र के मार्ग से युद्ध के जहाजो पर सवार होकर तोप-बन्दूक सहित बरौच पहुँचा। कासिम हुसेन खा के हाथ-पाँव फूल गए और वह चाम्पानीर और वहा से मीर्जा अस्करी (१४३) तथा हिन्दू बेग के पास अहमदाबाद कुमक की प्रार्थना करने पहुँचा। सैयिद इस्हाक ने, जिसे सुल्तान बहादुर द्वारा शिताब खा की उपाधि प्राप्त थी, खम्बायत को अधिकार मे कर लिया। यादगार नासिर मीर्जा, अस्करी मीर्जा के बुलवाने पर पटन मे अहमदाबाद पहुँचा। दरिया खा तथा मुहाफिज खा रायसेन से निकलकर सुल्तान के पास दीप जा रहे थे कि पटन को खाली पाकर उन्होने उस पर अधिकार जमा लिया। पारस्परिक असहयोग एव अल्पदर्शिता के कारण यह दुर्दशा हो गई कि यादगार नासिर मीर्जा का एक सेवक गजन्फर[1] ३०० अश्वारोहियो सहित सुल्तान बहादुर की सेवा मे चला गया और उसे आक्रमण हेतु प्रेरित किया[2]।

सुल्तान बहादुर द्वारा आक्रमण

सुल्तान बहादुर के निष्ठावानो के पत्र उसके पास निरन्तर आते रहते थे। यहाँ तक कि सुल्तान बहादुर अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ और शीघ्रातिशीघ्र सरकीज पहुँचकर पडाव किया। अस्करी मीर्जा, यादगार नासिर मीर्जा, हिन्दू बेग तथा कासिम हुसेन खा ने लगभग २०,००० अश्वारोहियो सहित असावल[3] के पीछे सुल्तान (बहादुर) का मुकाबला किया। तीन दिन तथा तीन रात तक मुकाबला होता रहा। इस कारण कि वे न तो हजरत जहाबानी के प्रति निष्ठावान् थे और न उनके विचार ही शुद्ध थे अत अधकारमय विचारो एव अशुद्ध कल्पनाओ के कारण युद्ध किए बिना चाम्पानीर की ओर चल दिए और नाना प्रकार की तबाही प्रकट हुई।

नमक खाना तथा स्वान पर प्याले को तोड डालना, कृतज्ञता प्रकट करने मे कमी करना और उचित सेवा न करना, नि सन्देह ऐसे ही दिन दिखाता है। ईश्वर को धन्य है! मै यह स्वीकार करता हूँ कि निष्ठावान् हृदय एक ऐसा अनमोल मोती है जो नश्वर ससार मे बहुत कम प्राप्त होता है किन्तु सूझ-बूझ एव साधारण व्यवहार जो इस (ससार के बाजार मे) प्रत्येक स्थान पर प्राप्त है, किस कारण हाथ से खो दिए जायें?

१ महदी कासिम खा का भाई तथा मीर्जा अस्करी का कोका।
२ अहमदाबाद में।
३ सरकीज के समीप

मीर्ज़ाओं का चाम्पानीर पहुँचना

संक्षेप में, सुल्तान बहादुर का, जिसे सहस्त्रों संकोच थे, साहस बढ़ गया और वह उनका पीछा करता हुआ रवाना हुआ। सैयिद मुबारक बुखारी सुल्तान (बहादुर) की सेना के अग्र भाग में था। वह शाही सेना के समीप पहुँच गया। यादगार नासिर मीर्ज़ा ने, जो शाही सेना के पीछे के भाग में था, पलटकर वीरता-पूर्वक युद्ध किया और सुल्तान बहादुर की सेना के अग्र भाग के बहुत से लोगों की हत्या कर दी। मीर्ज़ा के हाथ में घाव लगा। शत्रु (की सेना) महमूदाबाद में ठहर गई। मीर्ज़ा[1] वापस होकर मुख्य सेना में मिल गया। क्योंकि मीर्ज़ा अस्करी हताश हो चुका था, अतः उसने अपने मार्ग की महेन्द्री नामक नदी को निःसंकोच पार किया। बहुत से सैनिकों की जीवन सामग्री मौत के सैलाब में बह गई। सुल्तान (बहादुर) भी महेन्द्री नदी के तट तक आया। मीर्ज़ा (अस्करी) जब चाम्पानीर पहुँचा तो तरदी बेग खां ने आतिथ्य का प्रबन्ध किया और अपने स्थान पर लौट गया।

तरदी बेग खां के विरुद्ध षड्यन्त्र

दूसरे दिन मीर्ज़ाओं ने षड्यन्त्र के विचार से तरदी बेग खां के पास सन्देश भेजा कि, 'हम बड़ी दुर्दशा को प्राप्त हो चुके हैं और लश्कर की हालत बड़ी शोचनीय है। किले के खजानों में से थोड़ा-सा धन सहायतार्थ हमारे लिए भेज दो ताकि सेना को दे दें और जब यहाँ वे दम ले (१४४) लें तो शत्रु के विनाश हेतु प्रस्थान करें। मन्दू, जहाँ सम्मानित शिविर है, दूत ६ दिन में पहुँचते हैं। हम लोग वहाँ प्रार्थना-पत्र प्रेषित कर रहे हैं।" तरदी बेग खां ने यह बात स्वीकार न की। मीर्ज़ाओं ने उसे इस आशय से बन्दी बनाने के विषय में परामर्श किया कि समस्त खजाने पर अधिकार जमा लें और मीर्ज़ा अस्करी को सुल्तान बना दें। यदि (सुल्तान बहादुर) पर विजय प्राप्त हो जाती है तो अच्छा है अन्यथा हज़रत जहाँबानी को मालवा की जल-वायु अच्छी लगने लगी है और राजधानी आगरा खाली है, अतः हम उस ओर रवाना हो जायेंगे। तरदी बेग खां किले से उतर कर मीर्ज़ाओं की सेवा में जा रहा था कि उसे इसकी सूचना हो गई। वह वापस होकर किले में चला गया और किसी को मीर्ज़ा के पास भेजकर कहलाया कि, "आप लोगों का यहाँ रहना उचित नहीं"। मीर्ज़ाओं ने संदेश भेजा कि, "हम जा रहे हैं। तू आजा कि विदा हो लें और कुछ बातें करके चले जायें।" उसे उन लोगों के षड्यन्त्र का ज्ञान था अतः उसने उचित उत्तर भेज दिये। दूसरे दिन उसने (उनपर) तोप चलवा दी।

मीर्ज़ाओं का चाम्पानीर से प्रस्थान, सुल्तान बहादुर द्वारा चाम्पानीर पर अधिकार

मीर्ज़ा लोग षड्यन्त्र के विचार से वहाँ से प्रस्थान करके करजी[2] घाट के मार्ग से राजधानी

१ यादगार नासिर मीर्ज़ा।

२ बेवरिज ने लिखा है कि इस स्थान का पता नहीं चल सका है। (बेवरिज, पृ० ३२१)। मिरआते सिकन्दरी में इस नाम का कई स्थानों पर उल्लेख हुआ है। होडीवाला के अनुसार यह बामवाला के पूर्व में है। (होडीवाला, पृ० ५६६)।

आगरा की ओर रवाना हुए। जब तक विजयी सेना[1] चाम्पानीर के क्षेत्र में थी सुल्तान (बहादुर) ने महेन्द्री नदी, जो चाम्पानीर से १५ कुरोह[2] पर है, न पार की। जब उसे मीर्ज़ाओं की वापसी एवं आगरा की ओर षड्यन्त्र के उद्देश्य से प्रस्थान के समाचार प्राप्त हुए तो वह नदी पार करके चाम्पानीर के विरुद्ध पहुँचा। तरदी बेग खां किले की दृढ़ता एवं किले की रक्षा की सामग्री के उपलब्ध होने के बावजूद किला छोड़कर बुरहानपुर के मार्ग पर अग्रसर हुआ और मन्दू में अभिवादन करके सम्मानित हुआ तथा मीर्ज़ाओं के षड्यन्त्र के विषय में निवेदन किया।

हुमायूं का आगरा की ओर प्रस्थान एवं मीर्ज़ाओं को क्षमा करना

हज़रत जहाँबानी ने इस भय से कि कहीं मीर्ज़ा लोग सयम के मार्ग से निकलकर राजधानी की ओर उससे पहिले ही न पहुँच जायँ, चित्तौड़ के मार्ग से शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान किया। सयोग से मार्ग में चित्तौड़ के समीप उनकी (मीर्ज़ाओं से) भेंट हो गई। मीर्ज़ा लोग विवश होकर शाही सेवा में उपस्थित हुए। हज़रत (जहाँबानी) ने अपनी स्वाभाविक कृपा एवं नैसर्गिक क्षमा-शक्ति के कारण उनके दुराचार की ओर ध्यान न दिया। अपनी सामान्य कृपा के कारण उनके अपराधों को क्षमा कर दिया और उपकार को क्षमा का परिशिष्ट बना दिया तथा शाही कृपाओं द्वारा सम्मानित किया।

मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा एवं उलुग मीर्ज़ा का विद्रोह

युग की एक दुष्टता, जो हज़रत जहाँबानी की सम्मानित सेना के इस प्रदेश से आगरा के क्षेत्र में प्रस्थान का कारण[3] बनी, यह थी कि मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा और उसके पुत्र उलुग मीर्ज़ा ने विद्रोह कर दिया। वे (इससे पूर्व) आज्ञाकारिता के सन्मार्ग को त्यागकर, जैसा कि इससे पूर्व उल्लेख हो चुका है, विद्रोह एवं उपद्रव के मार्ग के पथिक हो चुके थे। उन्होंने इस समय पुन अपने दुर्भाग्य के कारण अपमान के कोने से निकलकर विद्रोह कर दिया। इसी प्रकार जो लोग उसको

१ सम्भवत यह पुस्तक नकल करने वाले की भूल है। अबुलफ़ज़ल ने मीर्ज़ाओं की सेना को विजयी सेना न लिखा होगा।

२ कोस।

३ फ़िरिश्ता ने इस सम्बन्ध में एक अन्य कारण यह बताया है "—इन्हीं दिनों में हज़रत पर अफ़ीम ने बुरी तरह अधिकार जमा लिया था। वे एकान्त में रहते और लोगों से बहुत कम मिलते। यह कारण अन्य कारणों के अतिरिक्त हुआ। इसी बीच में जौनपुर का हाकिम सुल्तान जुनैद बरलास, जो बहुत बड़ा अधिकार-सम्पन्न अमीर था और जो पूर्व के अफ़ग़ानों में से कुछ को तलवार से और कुछ को युक्ति द्वारा अपने वश में रखता था, ९४३ हि० (१५३६ ३७ ई०) में मृत्यु को प्राप्त हो गया। शेर खां, जो अफ़ग़ानों में सर्वश्रेष्ठ था, रोहतास के समीप अपने ऐश्वर्य एवं वैभव का प्रदर्शन करने लगा। उसकी धृष्टता सीमा से अधिक बढ़ गई। हज़रत (जहाँबानी) ने इसका उपचार इसके अतिरिक्त कोई अन्य न देखा कि वे स्वय आक्रमण करें। १८ सफ़र ९४४ हि० (२७ जुलाई १५३७ ई०) को वे रोहतास की ओर रवाना हुए। (तारीखे फ़िरिश्ता, नवल किशोर प्रेस सकाला २, पृ० २१६)।

अधा बनाने के लिये नियुक्त हुए थे उन्होने भी सावधानी प्रदर्शित न की थी। वे[1] बिलग्राम[2] के परगने (१४५) को नष्ट-भ्रष्ट करके कन्नौज[3] पहुँचे। खुसरो कूकुल्ताश[4] के पुत्रो ने, जो वहाँ थे, यह वचन लेकर कि उन्हे कोई हानि न पहुँचाई जायगी, कन्नौज उन लोगो को सौप दिया। मीर्जा हिन्दाल, जो आगरा में था, इस विद्रोह को शान्त करने के लिए आगे बढा। गगा नदी पार करने के उपरान्त बिलग्राम के क्षेत्र में दोनो सेनाओ का युद्ध हुआ। क्योकि कृतघ्न षड्यन्त्रकारियो की उन्नति घास की (अग्नि की) लपट के समान होती है,[5] अत क्षण भर मे, सौभाग्य की शीतल पवन के प्रवाह से ही वह अग्नि बुझ गई और विजय का पवन चलने लगा। विजयी सेना उनका पीछा करती हुई अवध[6] पहुँची। उस स्थान पर उलुग बेग मीर्जा एव उसके पुत्रो ने सेना एकत्र कर ली थी। उन्होने पुन युद्ध किया। इसी बीच में सम्मानित सेना के गुजरात से राजधानी आगरा में पहुँचने के सुखद समाचार प्राप्त हुए। अभागे विद्रोहियो ने पुन युद्ध किया और पराजित हुए। मीर्जा हिन्दाल विजय प्राप्त करके लौट गया और उत्कृष्ट चौखट चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया।

सुल्तान बहादुर की मृत्यु

जब हजरत जहाँबानी की उत्कृष्ट पताकायें आगरा पहुँची तो बीजागढ का हाकिम भूपाल राय मन्दू के किले को खाली पाकर धृष्टतापूर्वक उसमे प्रविष्ट हो गया। कादिर शाह भी उसके पीछे मन्दू पहुँचा। मीरान मुहम्मद फारूकी भी बुरहानपुर से आया। सुल्तान बहादुर लगभग दो सप्ताह चाम्पानीर में रहकर पुन दीप चला गया। क्योकि हजरत जहाँबानी के ऐश्वर्य एव वैभव तथा इस उत्कृष्ट वश के प्रताप के कारण, सौभाग्य ने उससे मुख मोड लिया था अत वह जो भी कार्य अपने लाभ के लिए सोचता था, वही उसकी हानि का कारण बन जाता था। इस प्रकार विजयी सेनाओ द्वारा पराजित होकर और ऐश्वर्य की सेनाओ की मार को देखकर उसने कुछ लोगो को उपहार सहित फिरग के वजरे[7] के पास, जो बन्दरगाहो का अमीरुल उमरा[8] था, भेजकर आमन्त्रित किया। इसी बीच में जब मीर्जा अस्करी गुजरात छोडकर चला गया था और सुल्तान दीप पहुँच गया था, वजरे युद्ध के जहाजो तथा सैनिको सहित समुद्र के मार्ग से बन्दरदीप पहुँचा। जब उसे सब हाल ज्ञात हुआ तो उसने सोचा कि, "क्योकि इस समय सुल्तान को हमारी सहायता की आवश्यकता नही रही अत सभवत वह भेंट के उपरान्त विश्वासघात करे।" उसने रुग्णावस्था

१ पूर्व पृष्ठों में इस बात का उल्लेख है कि मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा एव वली खूब मीर्ज़ा के नेत्रों में सलाई फिरवा दी गई थी।

२ बिलग्राम हरदोई (उत्तर प्रदेश) जिले का कस्बा, जो अब उस जिले की तहसील भी है। यह अक्षास २७°१८' उत्तर एव देशान्तर ८०°२' पूर्व में गगा-तट पर स्थित है। यह हरदोई से १६ मील दक्षिण में है। (*District Gazetteers*, Hardoi, 1904, p 176)

३ यह प्राचीन कस्बा फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) जिले की तहसील है। यह २७ ३' उत्तर अक्षाम एव ७९°५९' पूर्व (देशान्तर) में पहले गगा के तट पर स्थित था किन्तु अब नदी चार मील पूर्व की ओर हट गई है। (*District Gazetteers*, Farrukhabad, Vol IX, p 217).

४ उसके विषय में देखिये **बाबर नामा**, पृ० ७८ ८१, ९७, १३१, १४६, २४५, २९९।

५ शीघ्र समाप्त हो जाती है।

६ अयोध्या।

७ पुर्तगाली वाइसराय।

८ बन्दरगाह का मुख्य अधिकारी।

का बहाना करके सुल्तान के पास कुछ लोगो को भेजा और कहलाया कि, "मैं आपके बुलाने पर आया हूँ। जब स्वस्थ हो जाऊँगा तो सेवा में उपस्थित हूँगा।" सुल्तान सावधानी के सन्मार्ग से निकलकर[१] ३ रमजान ९४३ हि० (१३ फरवरी १५३७ ई०) को दिन के अन्तिम पहर में वजरे के स्वास्थ्य के विषय में पूछने के लिए पहुँचा। जैसे ही वह वहाँ पहुँचा तो पता चला कि बीमारी का केवल बहाना बनाया गया था। अपने आगमन पर लज्जित होकर वह तत्काल वापस चल दिया। फिरंगियो ने सोचा कि, "क्योंकि ऐसा शिकार हमारे जाल में फँस गया है अत यदि हम उससे कुछ बन्दरगाह ले ले तो बडा अच्छा होगा।" वजरे ने अग्रसर होकर निवेदन किया कि "आप थोडा-सा ठहर जायें तो हम कुछ उपहार प्रस्तुत करे।" सुल्तान ने कहा, "बाद में भेज देना।" यह कहकर वह शीघ्रातिशीघ्र अपने जहाज की ओर बढा। फिरग के काजी[२] ने सुल्तान का मार्ग रोक लिया और उसे ठहर जाने का आदेश दिया। सुल्तान ने सहनशीलता के अभाव के कारण तलवार खीचकर उसके दो टुकडे कर दिये और उनके जहाज से अपने जहाज में कूद गया। फिरग के जहाजो ने जो दूर-(१४६) दूर खडे थे, निकट आकर सुल्तान को घेर लिया। युद्ध होने लगा। सुल्तान तथा रूमी खा[३] जल में कूद पडे। रूमी खा को उसके एक फिरगी मित्र ने सहायता देकर ऊपर खीच लिया। किन्तु सुल्तान विनाश के समुद्र मे डूब गया[४]। सुल्तान के सहायक भी नष्ट हो गये। इस घटना की तारीख "फिरगियाने बहादुर कुश[५]" के अक्षरो से निकली। कुछ लोगों का मत है कि वह समुद्र तट पर पहुँच कर बच गया। तदुपरान्त गुजरात एव दकिन में उसके प्रकट होने के समाचार लोगों मे प्रसिद्ध होते रहते थे। इस प्रकार दकिन मे एक व्यक्ति पैदा हुआ और निजामुलमुल्क ने स्वीकार किया कि वह (बहादुर) था और उससे उसने चौगान[६] खेला। उसके चारो ओर भीड एकत्र हो गई। इस भीड के भय से निजामुलमुल्क ने उसकी हत्या कर देना निश्चय कर लिया। किन्तु उसी रात्रि मे वह अपने खेमे से गायब हो गया। लोगो का विश्वास था कि निजामुलमुल्क ने उसकी हत्या करा दी।

एक दिन मीर अबू तुराब[७] ने, जो गुजरात के प्रतिष्ठित लोगो में से है, बताया कि मुल्ला कुतुबुद्दीन शीराजी, जो सुल्तान बहादुर का गुरु था, उन दिनो दकिन में था। वह शपथ लेकर कहता

१ सावधानी त्यागकर।

२ सम्भवत: मेनुएल डा सोसा (Menoel de Sousa) डियू का गवर्नर।

३ यह रूमी खा स्वयं योरोपियन था। यह एक अल्बानियन पिता तथा इटालियन माता का पुत्र था। इसका जन्म बिरिन्दिसी में हुआ था। यह १५१६ ई० में पूर्व में पहुँचा। इसने ९४७ हि० (१५४०-४१ ई०) में सूरत के किले का निर्माण कराया। पुर्तगाली इसे ख्वाजा सफर अथवा सफर आगा कहते थे। यह १५४६ ई० में डियू के अवरोध में मारा गया।

४ सुल्तान बहादुर की मृत्यु का जो उल्लेख अबुलफजल ने किया है वह बडा ही सतुलित है। इसमें दोनों पक्षों के विश्वासघात को भली भाँति व्यक्त किया गया है। पुर्तगाली विवरणों में केवल सुल्तान बहादुर को दोषी बनाया गया है और उन्होंने लिखा है कि बहादुर, वाइसराय की हत्या करने गया था।

५ फिरगी बहादुर के हत्यारे।

६ पोलो।

७ मीर अबू तुराब वली बिन शाह कुतुबुद्दीन शुक्रुल्लाह, **तारीखे गुजरात** का लेखक, (अनूदित ग्रन्थों की समीक्षा देखिये)।

था कि निःसन्देह वह सुल्तान बहादुर था। उसने उससे कुछ ऐसे विषयो पर वार्ता की जिन्हे उसके तथा बहादुर के अतिरिक्त कोई अन्य न जानता था, और उसे ठीक-ठीक उत्तर मिले। दैवी शक्ति के विशाल क्षेत्र मे ऐसी घटनायें असम्भव न समझनी चाहिये।

मुहम्मद जमान मीर्जा की गुजरात में असफलता और उसका हुमायू की सेवा में पहुँचना

सक्षेप मे, जब सुल्तान बहादुर उस दिन जल मे डूब गया और उसके सम्बन्धी भूमि पर बैठ गये[1] तो मुहम्मद जमान मीर्जा ने सुल्तान (बहादुर) की मृत्यु पर नीले वस्त्र धारण कर लिये और धूर्तता के वस्त्र में गुजरात के खजाना मे से थोडा सा अपने अधिकार में कर लिया। थोडा सा फिरगियो के हाथ मे आगया तथा कुछ नष्ट हो गया। वह सुल्तान बहादुर की माता से पुत्र-का सम्बन्ध जोडकर कभी फिरगियो से सुल्तान के खून का दावा करता और कभी अपार धन-सम्पत्ति गुप्त रूप से उनके पास इस आशय से भिजवाता रहता था कि वे उसके नाम का खुत्बा पढवाने का प्रस्ताव रक्खे, यहाँ तक कि कुछ दिन तक सफा नामक मस्जिद मे उसके नाम का खुत्बा पढा गया। कुछ समय तक वह इसी प्रकार धूर्तता के सहारे जीवन व्यतीत करता रहा किन्तु एमादुलमुल्क ने उसकी सेना पर छापा मारकर उसे पराजित कर दिया। वहाँ से निराश एव लज्जित होकर वह हजरत जहाँबानी की चौखट चूमने पहुँचा। इस प्रकार उसका सक्षिप्त उल्लेख अपने स्थान पर किया जायगा। अब मैं इन बातो की ओर से जो केवल बात बढाने एव रचना की सुन्दरता का साधन हैं, उपेक्षा करके अपने मूल उद्देश्य की ओर अग्रसर होता हूँ।

आगरा में शाति

• जब हजरत जहाँबानी जन्नत आशियानी ने राजधानी आगरा मे स्थान ग्रहण किया तो आस पास के जिन लोगो ने विद्रोह कर दिया था और सघर्ष की गरदने ऊँची उठा रक्खी थी, उन्होंने आज्ञाकारिता एव अधीनता स्वीकार कर ली। बाज तथा खराज[2] को उन्होंने शान्ति प्राप्ति का साधन (१४७) बना लिया[3]। शाही राज्य के आस-पास के स्थान शान्ति एव दृढता द्वारा सुशोभित हो गये।

हजरत जहाबानी जन्नत आशियानी की पवित्र सेना का बंगाला तथा उस क्षेत्र के प्रदेशों की विजय हेतु प्रस्थान एव राजधानी को वापसी और इसी बीच में घटित घटनायें

जब ससार को सुव्यवस्थित करने वाला मस्तिष्क उन क्षेत्रो की सुव्यवस्था की ओर से निश्चिन्त हो गया तो उनका शाही साहस गुजरात के आक्रमण के प्रबन्ध में व्यस्त हो गया[4]। वे पुन सकल्प की लगाम उस ओर मोडना चाहते थे और उस प्रदेश को पूर्व के विरुद्ध ऐसे लोगो को प्रदान करना चाहते थे, जिनके आचरण से राज्य-व्यवस्था के कार्यों में दृढता के गुण प्रकट हो और जिनके

१ शोक प्रकट करने लगे।
२ राजस्व एवं अन्य कर से तात्पर्य है।
३ बाज तथा खराज अदा किया।
४ अर्थात् वे गुजरात के शासन-प्रबन्ध में व्यस्त हो गये।

स्वभाव में न तो नित्य प्रति परिवर्तन होता हो और न वे घबडा जाते हो। इस प्रान्त के शासन प्रबन्ध से निश्चिन्त होकर वे ऐश्वर्य एव वैभव की राजधानी में वापस होना चाहते थे कि इसी बीच म शेर खा के आक्रमण एव उस क्षेत्र में विद्रोह के समाचार शुभ कानो तक पहुँचे। बगाला विजय का सकल्प, जो गुजरात के अभियान के पूर्व उदार हृदय मे प्रतिबिम्बित था और उपर्युक्त कारण से स्थगित हो गया था, पुन ताजा हो गया। सम्मानित आदेश बगाला के आक्रमण के विषय म दिया गया और निश्चय हुआ कि इस सम्मानित अभियान में शेर खा को पराजित करके बगाला प्रदेश विजय कर लिया जाय।

शेर खा

शेर शाह के पूर्वज

शेर खा सूर अफगानो के कबीले का एक व्यक्ति था। उसका पहिले का नाम फरीद[1],

१ सुल्तान बहलोल (लोदी) के राज्यकाल में शेर खाँ का दादा इबराहीम खाँ अपने पुत्र मिया हसन सूर, शेर खा के पिता के साथ अफगानिस्तान के उस स्थान से, जिसे अफगानी भाषा में शरगरी (इलियट में रगरी) तथा मुल्तानी भाषा में रोहरी कहते हैं, आया। रोहरी पर्वत की एक शाखा है जो सुलेमान पर्वत से (इलियट में सुलेमान नहीं) निकली है। उसकी लम्बाई ६ या ७ कुरोह है और यह रूमालपुर (इलियट में रूमल) के किनारे स्थित है। हिन्दुस्तान में वे महाबत खा सूर (अलीगढ़ हस्तलिपि में मसही खा) दाऊद साहू खैल की सेवा में प्रविष्ट हो गये। सुल्तान बहलोल ने हरियाना एव बाकला (इलियट में फका) के परगने उसे (महाबत खा को) जागीर में दे दिये थे। वे बजवारा में निवास करने लगे। शेर खाँ का जन्म सुल्तान बहलोल के राज्यकाल में हुआ। उसका नाम फरीद रक्खा गया। (हरियाना तथा बजवारा, पजाब के होशियारपुर जिले में हैं। बाकला सम्भवत भगवाल अथवा बेगवाल है जो कपूरथला में है)।

कुछ समय के उपरान्त इबराहीम (खा) महाबत खा से विदा होकर, जमाल खा सारगखानी के पास हिसार फीरोजा पहुँचा और उसकी सेवा में सम्मिलित हो गया। उसने उसे परगना नारनौल मे कुछ ग्राम जागीर के रूप में प्रदान किये जिनसे ४० अश्वारोही रक्खे जा सकते थे। शेर खा का पिता मिया हसन, मसनदे आली उमर खा सरवानी कलकपुर (कल्कपुर अथवा कक्कूर देखिये होडीवाला पृ० ४४५) की सेवा में चला गया जिसकी उपाधि खाने आजम थी और जो सुल्तान (बहलोल) का परामर्श दाता एव मुसाहिब था। मसनदे आली तातार खा की मृत्यु के उपरान्त सुल्तान बहलोल ने लाहौर (की हुकूमत) मसनदे आली उमर खा कलकपुर सरवानी को प्रदान कर दी। मसनदे आली (उमर खा) की जागीर सरहिन्द सरकार में एव पायलपुर (भी) मसनदे आली उमर खा ने मिया हसन की जागीर में शाहाबाद परगने का पिहानी (इलियट में निहावनी) नामक ग्राम प्रदान कर दिया। कुछ समयोपरान्त फरीद ने मिया हसन से निवेदन किया कि, "आप मुझे मसनदे आली उमर खा की सेवा में ले चलें और मेरी ओर से निवेदन करें कि फरीद मसनदे आली के अधीन सेवा करना चाहता है। वह जिस सेवा योग्य हो उसे प्रदान कर दी जाय।' मियाँ हसन ने फरीद से कहा कि, 'अभी तू बालक है। कुछ दिन ठहर जा।" फरीद ने अपनी माता से (इस विषय में) कहा। फरीद की माता ने मिया हसन से कहा, 'उसका जी चाहता है कि वह मसनदे आली के दर्शन करे अत उसे अपने साथ लेते जाओ और इस विषय में निवेदन करो। सम्भवत मसनदे आली इस बालक की प्रार्थना से प्रसन्न हो जाय और उसे कुछ प्रदान कर दे।" मिया (हसन) फरीद एव उसकी माता को सतुष्ट करने के लिये फरीद को मसनदे आली की सेवा में ले गया। मसनदे आली

इब्न हसन इब्न इबराहीम सूर खेल था। इबराहीम सर्वदा घोड़ों का व्यापार करता था किन्तु व्यापारियों के समूह में उसे कोई सम्मान प्राप्त न था। नारनौल[1] के अधीनस्थ शमला नामक ग्राम में वह निवास करता था। उसके पुत्र हसन ने थोड़ी बहुत योग्यता प्राप्त कर ली और व्यापारियों के व्यवसाय को छोड़कर सैनिकों का पेशा करने लगा। वह बहुत समय तक राय साल दरबारी[2] के दादा राय मल की, जिसे इस समय शाहंशाह की सेवा में सम्मिलित होने का सम्मान प्राप्त है, सेवा

उमर खाँ ने कहा, "फरीद अभी बालक है, जब वह (सेवा) योग्य हो जायगा उसे मैं कोई सेवा प्रदान कर दूँगा। इस समय मैं पिहानी (इलियट में निहावनी) का मल्होर (महावली) नामक ग्राम फरीद को प्रदान करता हूँ।" मियाँ हसन एवं फरीद अत्यधिक प्रसन्न हुये। जब वह अपने घर पहुँचा तो उसने अपनी माता से कहा, "पिता जी, मुझे नहीं जा रहे थे। आपके कहने पर वे ले गये। मसनद आली ने मुझे ग्राम प्रदान कर दिया।"

कुछ वर्षोपरान्त मियाँ हसन के पिता इबराहीम की नारनौल में मृत्यु हो गई। मियाँ हसन, मसनद आली उमर खाँ की सेवा में शाहाबाद से सुल्तान बहलोल के लश्कर में पहुँचा और निवेदन किया कि, "मेरे पिता इबराहीम की मृत्यु हो गई है। उसके अधीन ४० अश्वारोहियों की जागीर थी। मसनद आली मुझे इस बात की अनुमति दे दें कि उन लोगों को सांत्वना देकर मसनद आली की सेवा में ले आऊँ कारण कि मैं सांसारिक लाभ की वजह से मसनदे आली की सेवा न त्यागूँगा।" उमर खाँ ने मियाँ हसन से कहा कि, "तुझे ज्ञात है कि जो कुछ मेरी जागीर में था उसमें से मुझे हिस्सा दे दिया। अब उसमें अधिक आदमियों की गुंजाइश नहीं, मैं जमाल खाँ से तेरे पिता की जागीर वृद्धि सहित दिलवा दूँगा।" मियाँ हसन प्रसन्न हो गया। मसनदे आली ने दूसरे दिन जमाल खाँ को अपने पास बुलवाया और मियाँ हसन की अत्यधिक सिफारिश करके उसके पिता की जागीर कुछ अन्य ग्रामों की वृद्धि सहित दिलवा दी और कहा कि, "आप मियाँ हसन के प्रति जो कृपा करेंगे उसके लिये मैं आपका आभारी रहूँगा।" उसने उसे घोड़ा एवं सरोपा प्रदान करके विदा कर दिया। तदुपरान्त मियाँ हसन ने जमाल खाँ की इस प्रकार सेवा की कि वह उससे सन्तुष्ट हो गया।

सुल्तान बहलोल की मृत्यु के उपरान्त सुल्तान सिकन्दर ने अपने छोटे भाई बारबक शाह से जौनपुर लेकर (इलियट में हैबत खाँ के विषय में कुछ अस्पष्ट रूप से लिखा है। अलीगढ़ हस्तलिपि में बारबक शाह से लेकर मस्त खाँ मूसा खेल को सौंप दिया और इबराहीम खाँ से लेकर जमाल खाँ को सौंप दिया) जमाल खाँ को प्रदान कर दिया और आदेश दिया कि "जमाल खाँ १२,००० अश्वारोही रक्खे और पादशाह की ओर से जागीर प्रदान करता रहे।" जमाल खाँ मियाँ हसन की अत्यधिक सेवा के कारण मियाँ हसन से बड़ा सन्तुष्ट था। उसने उसे अन्य परगने सहसराव (सहसराम), हाजीपुर व टाँडा (ख्वासपुर टाँडा) जो कि ५०० सवारों की जागीर थे, प्रदान कर दिये।

हसन के ८ पुत्र थे, फरीद एवं निज़ाम एक अफ़गानी माता से, अली तथा यूसुफ़ एक माता से, खुर्रम एवं शादी खाँ एक माता से और सुलेमान तथा अहमद एक माता से। मियाँ हसन, फरीद एवं निज़ाम की माता के प्रति प्रेम, विश्वास एवं स्नेह प्रदर्शित न करता था। सुलेमान एवं अहमद की माता से उसे बड़ा स्नेह एवं प्रेम था। उसने मियाँ हसन के प्रेम पर इतना अधिकार प्राप्त कर लिया था कि उसके कारण वह उस पर हुकूमत करती थी। इस कारण मियाँ हसन एवं मियाँ फरीद में क्रोध एवं मलिनता से परिपूर्ण बातें हुआ करती थीं। (तारीखे शेरशाही : डा० परमात्मा शरण की हस्तलिपि, पृ० ६-११, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की हस्तलिपि, पृ० ७-११, अलीगढ़ विश्वविद्यालय हस्तलिपि, पृ० ६-१०, इलियट, बाडलीयन लाइब्रेरी न० ३७१)।

१ आगरा में।

२ राय साल दरबारी, राय सोना का पुत्र था। राय सोना के पिता का नाम रायमल शैखावत था। कछवाहा राजपूत दो शाखाओं में विभाजित हैं—राजावत तथा शैखावत। राय साल, राना लोकरण इत्यादि शैखावत तथा मान सिंह कछवाहा शाखा से थे।

करता रहा। वहाँ से सहसराम के अधीनस्थ जौन[1] नामक स्थान पर नसीर खा लोहानी की, जो सिकन्दर लोदी के अमीरो में से था, सेना मे प्रविष्ट हो गया और अपनी सेवा एव कार्यकुशलता के कारण अपने बराबर वालो से बढ गया। जब नसीर खा की मृत्यु हो गई तो वह उसके भाई दौलत खा की सेवा में चला गया। वहाँ से वह बिबन के सेवको में, जो सुल्तान सिकन्दर लोदी के (१४८) प्रतिष्ठित अमीरो मे से था, शामिल हो गया। उसे थोडा बहुत सम्मान प्राप्त हो गया। अधिकाश महत्वपूर्ण प्रबन्ध उसके परामर्श से होते थे।

शेर शाह का प्रारम्भिक जीवन

उसका पुत्र फरीद अपनी उद्दडता एव दुष्टता के कारण अपने पिता को रुष्ट करके उससे पृथक् हो गया। बहुत समय तक वह ताज खा लोदी की सेवा मे रहा। कुछ समय तक अवध में कासिम हुसेन खा ऊजबेक का सेवक और बहुत समय तक सुल्तान जुनैद[2] बरलास का सेवक रहा। एक दिन सुल्तान जुनैद बरलास किसी कार्य से उसे तथा दो अन्य अफगानो को, जो उसके सेवक थे, हज़रत गेती सितानी फिरदौस मकानी की सेवा मे ले गया। जैसे ही हजरत की दूरदर्शिता से परिपूर्ण दृष्टि उसपर पडी उन्होने अपनी पवित्र जबान से कहा कि, "सुल्तान जुनैद! इस अफगान के नेत्रो से (फरीद की ओर सकेत करके) षड्यत्र एव विद्रोह टपकता है। इसे बन्दी बना देना चाहिये।' उन्होने अन्य दोनो के प्रति कृपा दृष्टि प्रदर्शित की। इससे पूर्व कि सुल्तान[3] उसे अपने आदमियो को सौपे फरीद, हजरत गेती सितानी के नेत्रो से शकित होकर, भाग गया[4]। इसी बीच मे उसके पिता

१ इसे चौंद अथवा चाद होना चाहिये। यह रोहतास सरकार में था। (देखिये Beames *Journal Asiatic Society Bengal*, 1895, p 81)।

२ सुल्तान जुनैद बरलास ने बाबर के पूर्व के राज्य की व्यवस्था में बडा महत्वपूर्ण भाग लिया। (बाबर नामा, पृ० ३२६)।

३ सुल्तान जुनैद।

४ **तारीखे शेरशाही** में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है मुहम्मद खा की ओर से सन्तुष्ट होकर (शेर खा) सुल्तान जुनैद के साथ फरीद, द्वितीय फिरदौस मकानी हज़रत बाबर पादशाह की सेवा में पहुँचा और चौखट चूमने का सम्मान प्राप्त किया। चन्देरी के युद्ध में (जनवरी १५२८ ई०) वह उनके साथ था। वह बहुत समय तक मुग़लों के मध्य में रहा और उसने उनकी युद्ध की विधि, शासन व्यवस्था एव उच्च पदाधिकारियों के हाल चाल का ज्ञान प्राप्त कर लिया। प्राय वह अफगानों से कहा करता था कि 'यदि भाग्य मेरा साथ दे और प्रताप मेरी सहायता करे तो मैं मुग़लों को सुगमतापूर्वक हिन्दुस्तान के बाहर निकाल सकता हूँ।' जब लोग यह बात सुनते तो उसकी खिल्ली उडाते थे। जब वे उसके पास से उठकर जाते तो कहते कि, 'शेर खा क्या डींग मारता है और ऐसी बातें करता है जो उसके सामर्थ्य के बाहर है।' शेर खा के इतिहास के सकलन कर्ता मुझ अब्बास ने अत्यधिक प्रतिष्ठित सूफी शेख मुहम्मद सवना (?) जो मेरे चाचा थे, तथा पहुँचे हुये सूफियों में चुने हुये शेख सलाही करताल से, जिनकी अवस्था लगभग ८० वर्ष थी, सुना है कि 'चन्देरी के युद्ध में मैं फरीदूं द्वितीय फिरदौस मकानी हजरत बाबर पादशाह की सेना के साथ खाने खाना यूसुफ खेल की सेवा में था। शेख इब्राहीम सरवानी ने मुझसे कहा 'आओ जहा शेर खा ठहरा है वहाँ चलें। जो बातें उसके सामर्थ्य के बाहर है और जिन्हें वह कहा करता है तथा उसकी वे बातें जिन पर लोग हँसते है, सुनें।' मैने कहा, 'बहुत अच्छा।' दोनों सवार होकर जहाँ शेर खा ठहरा था पहुँचे। बात-चीत के समय शेख इब्राहीम ने कहा कि, 'यह असम्भव है कि अफगान पुन मुल्के हिन्द पर अधिकार प्राप्त कर लें और मुग़ल हिन्द से चले जायें।' शेर खा ने कहा, 'शेख मुहम्मद! तू मेरे तथा शेख इब्राहीम के मध्य में साक्षी रहना। यदि सौभाग्य एव

(पिछले पृष्ठ का फुट नोट)

प्रताप मेरी सहायता करे तो मैं अल्प समय में मुग़ुलों को हिन्द से निकाल दूँगा कारण कि मुग़ुलों को युद्ध एवं तलवार चलाने की कला में कोई अधिक कुशलता नहीं प्राप्त है। अफ़गानों ने स्वयं अपने विरोध के कारण हिन्दुस्तान देश को खो दिया है। मैंने मुग़ुलों के बीच में रह कर उनकी युद्ध विधि देख ली है। वे रणक्षेत्र में दृढ़ एवं सुव्यवस्थित नहीं रह सकते। उनका पादशाह अपने उत्कृष्ट वंश एवं उच्च श्रेणी के कारण स्वयं राज्य व्यवस्था की ओर ध्यान नहीं देता। वह अपने राज्य का शासन-प्रबन्ध अपने अमीरों एवं उच्च पदाधिकारियों को सौंप कर उनके वचन एवं आचरण पर निर्भर रहता है। सैनिकों, प्रजा एवं विद्रोही ज़मींदारों की समस्याओं का समाधान घूस द्वारा हो जाता है। हितैषी अथवा विरोधी जिस किसी के पास धन है वह धन द्वारा अपनी इच्छानुसार अपने काम करा लेता है। जिसके पास धन नहीं वह चाहे सैकड़ों बार तलवार चलाये अथवा निष्ठा प्रदर्शित करे उसे कोई सफलता प्राप्त नहीं हो सकती।

शेर

हर द्वार पर जब तुझे घूस लेने वाले मिलें,
यदि तेरे पास धन है तो तू शांति से रहेगा।

धन के लोभ में वे स्वामी के मित्र तथा शत्रु की कोई चिन्ता नहीं करते। यदि भाग्य ने मेरा साथ दिया तो शीघ्र जिसु देखेंगे कि मैं मुग़ुलों को किस प्रकार बन्दी बना लेता हूं। उन्हें कदापि संगठित न होने दूँगा।'

कुछ दिन उपरान्त भोजन के समय शेर खां पादशाह के दरबार में उपस्थित था। शेर खां के सामने माहिचा (मोटी सेवईं के प्रकार की कोई चीज अथवा मछली रूपी मास) चीनी की प्लेट में रक्खी गई। वह माहिचा के खाने की विधि न जानता था। उसने चाकू से माहिचा को टुकड़े टुकड़े करके चम्मच में रखकर सुगमतापूर्वक खा लिया। हज़रत फ़रीदूं द्वितीय, फ़िरदौस मकानी बाबर पादशाह को शेर खां की सूझ-बूझ पर आश्चर्य हुआ। अपने वज़ीर ख़लीफ़ा से कहा, 'शेर खां की ओर से असावधान न रहना चाहिये कारण कि वह बड़ा प्रतिभाशाली है और बादशाही के चिह्न उसके ललाट से दृष्टिगत है। मैंने इससे बड़े बड़े भी अनेक अफ़ग़ान अमीर देखे हैं। कभी मेरे हृदय में कोई बात न आई किन्तु इसको देखते मात्र मेरे हृदय में आता है कि उसे बन्दी बना लेना चाहिये कारण कि प्रतिष्ठा का फर (प्रकाश) एवं श्रेष्ठता के चिह्न उसमें पाये जाते हैं।' सुल्तान जुनैद ने विदा होते समय ख़लीफ़ा से शेर खां की अत्यधिक सिफ़ारिश की थी। शेर खां ने भी ख़लीफ़ा को अत्यधिक पेशकश प्रदान की थी। उसने निवेदन किया कि, 'शेर खां निरपराध है। उसके पास इतनी सेना नहीं कि उसके प्रति कोई शंका की जा सके। यदि पादशाह शेर खां को बन्दी बना लेंगे तो जो अफ़ग़ान पादशाह की सेवा में हैं, वे सब भय भीत हो जायेंगे और अन्य अफ़गानों को फिर हमारे वचन तथा प्रतिज्ञा पर विश्वास न रहेगा। उससे बड़ी अव्यवस्था फैल जायगी।' पादशाह इस बात पर चुप हो गये। शेर खां अपनी सूझ-बूझ के कारण समझ गया कि मेरे विषय में कोई बात हो रही है। जब शेर खां उस स्थान पर जहां वह ठहरा था पहुँचा, तो लोगों से कहा कि, 'आज पादशाह ने मेरी ओर अनेक बार दृष्टि डाली और ख़लीफ़ा से कुछ बातें कीं। वे मेरी ओर ईर्ष्या की दृष्टि से देखते थे, मेरा इस स्थान पर रहना उचित नहीं। मैं जाता हूँ।' तत्काल वह सवार होकर लश्कर के बाहर चला गया। कुछ दिन उपरान्त पादशाह ने देखा कि शेर खां दरबार में नहीं है। पादशाह ने शेर खां को बुलवाया। लोग जहाँ वह ठहरा था उसे बुलाने पहुँचे। शेर खां जा चुका था। बादशाह ने ख़लीफ़ा से कहा कि, 'यदि तू न रोकता तो मैं उसे तत्काल बन्दी बना लेता। उससे द्वारा कोई बात होने वाली है।' (तारीखे शेरशाही - डा० परमात्मा शरण की हस्तलिपि, पृ० ६०-६५; इलाहाबाद विश्वविद्यालय की हस्त लिपि, पृ० ५६ ६०, अलीगढ़ विश्वविद्यालय हस्तलिपि, पृ० ५८-६३, इलियट, बाडलीएन न० ३७१)।

हसन अली खां द्वारा रचित तवारीखे दौलते शेरशाही में, जिसकी प्रामाणिकता संदिग्ध है, इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है: "जब जुनैद हज़रत सुल्तान ज़हीरुद्दीन बाबर के चरणों का चुम्बन करने के लिये रवाना हुआ तो हम लोगों (हसन अली तथा शेर खां) को उसने आदेश दिया कि हम हज़रत बाबर

की मृत्यु हो गई और उसकी धन-सम्पत्ति उसके अधिकार में आ गई। सहसराम के क्षेत्र में जौना के जंगलो में, जो रोहतास का एक परगना है, चोरी, डकैती एवं लूट मार तथा विद्रोह प्रारम्भ कर दिया।[1] अल्प समय में धूर्तता एवं दुष्टता में अपने युग के विद्रोहियों से आगे बढ़ गया। इस प्रकार

बादशाह की सेवा में उसके साथ रवाना हों। जब हम उसके स्वर्गरूपी दरबार में पहुँचे तो हजरत बाबर की सेवा का सम्मान प्राप्त करके उसके दरबार के सेवकों में सम्मिलित हो गये। बाबर ने उसके (शेर खां के) प्रति आदर सम्मान प्रदर्शित करके उसे खिलअत प्रदान की। सुल्तान जुनैद बरलास ने शेर खां की प्रशंसा की और कहा 'उसके लिये आवश्यक है कि वह इस जम मरतबे (बादशाह) की सेवा में सम्मिलित हो जाय कारण कि इसमें सम्मान एवं उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हो जायगी।' शेर खां ने तीमूरी सुल्तानों के दरबार की प्रथानुसार राज भक्ति की शपथ ली। बाबर ने दया एवं कृपा प्रदर्शित करते हुये दावत का प्रबन्ध किया और खान को उसमें आमन्त्रित किया। हजरत बाबर ने शेर शाह के उत्तम व्यवहार की बड़ी प्रशंसा की। भोजन के पश्चात् मदिरापान के समय उसने (शेर खां ने) हाथ हवाम खां दिया और उस गोष्ठी के महत्व को भूलकर मुझसे (हसनअली खां से) कहा, 'बाबा ईश्वर ने चाहा तो धर्मनिष्ठ मुसलमानों (मोमनीन) की सहायता से तीमूरी वंश को हिन्द से निकाल कर अफगानों का राज्य पुनः दृढ़ता पूर्वक स्थापित कर दूंगा।' संयोग से नासिर कुली एवं उसके भाई ने यह बात सुन ली। उन्होंने इसे हजरत बाबर के कानों तक पहुंचा दिया। वे इस बात से बड़े रुष्ट हुये। नासिर कुली एवं मेहरबान कुली को आदेश दिया कि शेर खां पर दृष्टि रक्खें और प्रातःकाल उस अफगान को बन्दी गृह में पहुँचा दें। जुनैद बरलास को बड़ी परेशानी हुई। सौभाग्य से मुझे इस बात का पता चल गया। शेर खां को खतरे से सचेत कर दिया। उसी रात्रि में दो द्रुतगामी घोड़े लेकर वह अपने स्थान को चला गया किन्तु जुनैद बरलास की सेवा में प्रार्थना पत्र भेज कर क्षमा याचना करते हुये लिखा कि 'बिना आज्ञा मेरे चले आने का कारण यह था कि मुझे आस पास के सरदारों का भय था। अपनी धन सम्पत्ति की रक्षा के लिये आवश्यक था अन्यथा मैं अपने आपको हजरत सुल्तान के दरबार के दासों एवं प्राणों की बलि देने वालों में समझता हूँ।' (हसन अली खां तवारीख दौलते शेरशाही डा० परमात्मा शरण हस्तलिपि, पृ० १३ १४)। शेर खां बाबर से इसके बाद भी सम्बन्ध बनाये रहा। बाबर नामा से पता चलता है कि बाबर को ३१ मार्च १५२६ ई० को भी शेर खां का पत्र, जब बाबर चौसा की ओर जा रहा था, प्राप्त हुआ। (बाबर नामा, पृ० ३१५)।

१ अबुलफ़ज़ल ने इतिहासकार के उत्तरदायित्व से उपेक्षा करते हुये अपने आश्रयदाता के शत्रु की जो कटु आलोचना की है उसमें सत्य का अंश नहीं। किन्तु अफगान इतिहासकारों ने भी उसके प्रारम्भिक जीवन के विषय में कुछ इसी प्रकार की कहानियों का उल्लेख किया है, किन्तु शेर शाह के व्यक्तित्व का दर्शन हुये इन कहानियों को अधिक महत्व नहीं दिया जा सकता। वाकेआते मुश्ताकी में एक कहानी इस प्रकार है सारंगपुर तथा उज्जैन की ओर सेना सहित प्रस्थान करते समय शेर शाह ने मल्लू खां को बताया कि प्रारम्भ में मेरा नाम किसी ने न सुना था। रातों को धनुष बाण लेकर १५ १५ कोस शिकार हेतु पैदल चला जाता था और मारा-मारा फिरा करता था। शिकार करके पुनः घर लौट आता था। एक बार मैं चोरों तथा डाकुओं के समूह में फँस गया और उनके साथ भिन्न प्रदेशों (विलायत) में लूट मार किया करता था। एक दिन मैं अपने साथियों के साथ एक नौका में था। इसी बीच में शत्रु हम पर टूट पड़े। मुझ में युद्ध की शक्ति न थी। जब मैंने देखा कि वे लोग विजय प्राप्त किये लेते हैं तो मैंने सिर पर धनुष बाण बाँध लिया और नदी में कूद पड़ा। ३ कुरोह तक नदी में तैरता निकल गया।' मल्लू खां ने दांतों तले अँगुली दबा ली और आश्चर्यचकित हो गया'। (शेख रिज़कुल्लाह मुश्ताकी वाकेआते मुश्ताकी—ब्रिटिश म्यूजियम की हस्तलिपि पृ० १०३)।

इस प्रसंग में अबुलफ़ज़ल के शब्द इस प्रकार हैं राहजनी, दुज़्दी व मर्दुम कुशी। वाकेआते मुश्ताकी में लिखा है कि 'दरीं मुद्दत शेर खां कज़्ज़ाकी व राह जनी मी कर्द' (इस बीच में शेर खां चोरी-डकैती करता रहा)। क़ज़्ज़ाकी शब्द का प्रयोग बाबर नामा में भी बहुत हुआ है। वहाँ इस शब्द का अर्थ छापे मारना है किन्तु इस स्थान पर सम्भवतः डकैती ही तात्पर्य है। (वाकेआते मुश्ताकी—ब्रिटिश म्यूजियम की हस्तलिपि, पृ० ६६)।

सुल्तान बहादुर गुजराती ने व्यापारियों के हाथ उसको सहायतार्थ धन भेजकर उसे अपने पास बुलवाया। उसने उस धन को अपने विद्रोह का साधन बना लिया और जाने के लिए बहाना कर दिया और ग्रामों तथा कस्बों के आक्रमण, लूट-मार एवं धन के अपहरण में तल्लीन रहने लगा। अल्प समय में गुंडे तथा बदमाश बहुत बड़ी संख्या में उसके पास एकत्र हो गये।

शेर शाह के प्रारम्भिक युद्ध

इसी बीच मे बिहार के हाकिम[1] की, जो लोहानी अमीरो में से था, मृत्यु हो गई और उसके स्थान पर कोई शासन प्रबन्ध करने वाला न रहा। शेर खा अपने गुंडो सहित शीघ्रातिशीघ्र वहां पहुँच गया, और अपार धन-सम्पत्ति अपने अधिकार में कर ली। वहां से लौट कर वह पुन अपने स्थान पर पहुँचा और उलुग मीर्जा पर जो सरयू के समीप था अचानक टूट पड़ा और धूर्ततापूर्वक उसपर अधिकार जमा लिया। वहां से लौटकर उसने बनारस पर आक्रमण किया। जब उसकी धन-सम्पत्ति एवं उसके सहायकों की संख्या बहुत बढ़ गई तो पटना जाकर उसने उस क्षेत्र पर अधिकार जमा लिया। सूरजगढ[2] में, जो बगाले के हाकिम के राज्य की सरहद पर है, सेना लेकर पहुँचा। युद्ध करके (उसपर भी) विजय प्राप्त कर ली और उस क्षेत्र पर भी अधिकार जमा लिया। एक वर्ष तक बगाले के सुल्तान नुसरत शाह[3] से युद्ध करता रहा और दीर्घकाल तक गौड़[4] का अवरोध किये रहा।

शेर शाह तथा ज्योतिषी

एक विचित्र घटना इस प्रकार घटी। शेर खा ने सुना कि उडीसा के राजा की सेवा मे एक प्रतिष्ठित ज्योतिषी है। उसने उसे बुलाकर उससे अपने षड्यंत्र एवं अपनी कुत्सित योजनाओं के विषय में पूछना चाहा। राजा ने ज्योतिषी को जाने की अनुमति न दी किन्तु ज्योतिषी ने लिखकर भेज दिया कि, "तुझे एक वर्ष तक बगाले पर अधिकार नही प्राप्त हो सकता। अमुक तिथि को अधिकार प्राप्त हो जायगा। उस दिन एक घडी को गंगा नदी को पार करने का अवसर मिल जायगा[5]।" संयोग से जो कुछ उसने लिखा था, वह पूरा हो गया।

१ सुल्तान मुहम्मद, दरिया लोहानी का पुत्र।

२ मुंगेर में, उस जिले के पूर्वी छोर पर, किन्तु सम्भवत पढ़ने का 'तेलिया गढ़ी' होना चाहिये।

३ मूल पुस्तक में 'नसीब शाह' है किन्तु इसे 'नुसरत शाह' होना चाहिये।

४ मूल पुस्तक में 'गोरखपुर', किन्तु बहुत सी हस्तलिपियों में 'गौड' है, यही ठीक है।

५ अर्सकिन ने नसब नामा से यह कहानी उद्धृत की है —इन दिनों वह कुछ मित्रों के साथ पटना के बाजार में जा रहा था। मार्ग में उसे कोने में बैठा हुआ एक फकीर मिला। वह चुपचाप ध्यान-मग्न था। वह अचानक मानो दैवी प्रेरणा से चिल्ला उठा, "देखो देहली का बादशाह पैदल जा रहा है।" शेर खा ने शकुन को स्वीकार करते हुये रूमाल में गाँठ बाँध ली। [William Erskine *A History of India* (London 1854), Vol II, p 136 note]।

(१४९) शेर

'मैं ने एक बुद्धिमान् से सुना है कि बुद्धिमत्ता तो बहुत है,
किन्तु वह मानव जगत में फैली हुई है।'

जिन दिनो विजयी पताकायें मालवा तथा गुजरात की विजय हेतु रवाना हुईं उसने अवसर पाकर अपनी उद्दडता को सीमा से अधिक बढा दिया।

शेर खा के प्रारम्भिक जीवन का यह सक्षिप्त विवरण था। उसका शेष हाल, अन्त एव उसकी शोचनीय दुर्दशा का उल्लेख हजरत जहाँबानी के इतिहास के बीच-बीच में किया जायगा ताकि विद्रोहियो एव षड्यन्त्रकारियो को शिक्षा प्राप्त हो सके।

हुमायू द्वारा राज्य का प्रबन्ध

सक्षेप मे, जब हजरत जहाबानी ने पूर्व के प्रदेशो के आक्रमण का सकल्प कर लिया तो मीर फक्र अली को, जो हजरत फिरदौस मकानी गेती सितानी का प्रतिष्ठित अमीर था, दारुलमुल्क देहली[1] के शासन प्रबन्ध हेतु नियुक्त किया और दारुलखिलाफा आगरा का शासन-प्रबन्ध मीर मुहम्मद बख्शी को, जो राज्य के विश्वास-पात्रों में से था, सौपा। यादगार नासिर मीर्जा को, जो हजरत जहाँबानी के चाचा का पुत्र था, उसकी जागीर कालपी[2] में भेज दिया गया ताकि वह उस क्षेत्र में रहकर वहाँ का शासन प्रबन्ध ठीक रक्खे। नूरुद्दीन मुहम्मद मीर्जा को (जो हजरत जहाँबानी की बहिन गुलरग बेगम[3] का पति था और इफ्फत किबाब[4] इस्मत निकाब[5] सलीमा सुल्तान बेगम जिसके गर्भ से थी), कन्नौज एव आस पास के क्षेत्रो की देख-रेख सौपी गई।

हुमायू का पूर्व की ओर प्रस्थान

हजरत जहाँबानी इस प्रकार राज्य के प्रदेशो का शासन प्रबन्ध करके बेगमो सहित[6] नौका द्वारा पूर्व की ओर रवाना हुए। मीर्जा अस्करी तथा मीर्जा हिन्दाल साथ थे। अमीरो मे से इबराहीम बेग चाबुक, जहाँगीर कुली बेग, खुसरो बेग कूकुल्ताश, तरदी बेग खा कूच बेग, इटावा का तरदी

१ अबुलफज़ल ने आगरा के लिये दारुलखिलाफा तथा देहली के लिए दारुलमुल्क शब्द का प्रयोग किया है। दारुलखिलाफा से सम्भवत तात्पर्य वह राजधानी है जहाँ बादशाह स्वय रहता हो।

२ कालपी उत्तर प्रदेश के जालौन जिले की एक तहसील।

३ बाबर तथा दिलदार बेगम की पुत्री, दिलदार बेगम की प्रथम सतान जिसका जन्म सम्भवत १५११ से १५१५ ई० के मध्य में हुआ। अबुलफज़ल ने **अकबर नामा** भाग २ में बैराम खा एव सलीमा सुल्तान बेगम के विवाह का उल्लेख करते हुए लिखा है कि बाबर ने मीर्जा नूरुद्दीन मुहम्मद का विवाह अपनी पुत्री गुलबग बेगम से किया। सलीमा सुल्तान बेगम उनकी पुत्री थी, (**अकबर नामा** भाग २, पृ० ६५)। उसका नाम कहीं गुलरंग, कहीं गुलबर्ग, और कहीं गुलरुख लिखा गया है।

नूरुद्दीन मीर्जा अलाउद्दौला का पुत्र था जो ख्वाजा हसन अत्तार का, जो नक्शबन्दी सिलसिले का खलीफा था, सम्बंधी था।

४ सतीत्व का कुब्बा (गुम्बद)।

५ पवित्रता की नकाब (मुख-पट)।

६ मूल में "मुखद्देराते तुतुके असमत (सतीत्व के पर्दे की बेगमें)"।

बेग, बैराम खा, कासिम हुसेन खा उजबेक, बूचका बेग, जाहिद बेग, दोस्त बेग, बेग मीरक, हाजी मुहम्मद (पुत्र) बाबा कश्का, याकूब बेग, निहाल बेग, रोशन बेग, मुगुल बेग एव सम्मानित अमीरो का एक बहुत बडा समूह विजयी सवारी के साथ था। जल तथा स्थल मार्ग से विजयी सेना प्रस्थान कर रही थी और हजरत जहाँबानी कभी नौका द्वारा और कभी घोडे पर सवार होकर राज्य व्यवस्था एव शासन-प्रबन्ध करते हुए चुनार के किले की ओर जहाँ शेर खा था रवाना हुए।

मुहम्मद जमान मीर्जा का हुमायूं की सेवा में उपस्थित होना

जब सम्मानित सेना चुनार के समीप पहुँची तो मीर्जा मुहम्मद जमान सौभाग्य का कुछ अश प्राप्त करने के कारण अपने ललाट पर पश्चाताप की धूल मले हुए तथा लज्जा के पसीने से अपने मुह को भिगोए हुए गुजरात से आकर चौखट चूमने का सौभाग्य प्राप्त करके सम्मानित हुआ। इस घटना का सक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है : मीर्जा के पहुँचने के पूर्व हज़रत जहाँबानी की प्रिय (१५०) बहिन मासूमा सुल्तान बेगम[1] ने, जो मीर्जा की पत्नी थी, आगरा मे मीर्जा के अपराधो को क्षमा करने की प्रार्थना करके माफी का फरमान प्राप्त कर लिया था। हज़रत जहाँबानी ने अपनी स्वाभाविक दया के कारण उसके अपराध पर क्षमा के अक्षर लिखकर उसे अपनी कृपा द्वारा सम्मानित करके बुलवाया था। जब मीर्जा उत्कृष्ट सेना के समीप पहुंचा, तो कुछ प्रतिष्ठित अमीर उसके स्वागतार्थ भेजे गए। जब वह एक दिन की यात्रा की दूरी पर पहुँच गया तो मीर्जा अस्करी तथा मीर्जा हिन्दाल सम्मानित आदेशानुसार पहुँचे। मीर्जा अस्करी ने आदेशानुसार हाथ सीने तक लेजाकर और मीर्जा हिन्दाल ने तस्लीम[2] की प्रथानुसार हाथ पर सिर रख कर तस्लीम की। मीर्जा को बडे आदर-सम्मान से शाही शिविर में पहुँचाया गया। उस दिन मीर्जा शाही आदेशानुसार अपने खेमे मे उतरा। दूसरे दिन वह उत्कृष्ट दौलतखाने[3] में पहुँचा और अभिवादन करके शाही कृपाओ द्वारा सम्मानित हुआ। एक ही दरबार मे वह दो बार विशेष खिलअत, पेटी, तलवार एव घोडे द्वारा सम्मानित हुआ।

क्षमा के विषय में अबुलफज़ल के विचार

नि सन्देह ईश्वर के विशेष चुने हुए व्यक्ति पापो को उपकार द्वारा क्रय कर लेते है[4] और अवगुण को गुण समझने लगते है। दैवी कृपा के भडार मे कोई कमी नही। ऐसा होता आया है कि उसकी विशेष अनुकम्पा उस अनुपात मे प्राप्त होती है जितना कि पाप होता है। जितना

१ मासूमा सुल्तान बेगम मीरान शाही की पुत्री। बाबर तथा मासूमा सुल्तान बेगम का विवाह ९१३ हि० (१५०७ ई०) में हुआ। (बाबर नामा, पृ० ८४)।

२ तस्लीम : अभिवादन की एक विधि। (आईने अकबरी) के अनुसार तस्लीम करने वाला अपने दायें हाथ का नीचे का भाग भूमि पर रख देता था और फिर उसे धीरे-धीरे उठाते हुये सीधा खडा हो जाता था और अपने हाथ की हथेली अपने सिर के तारक (माँग मस्तकः सिर) पर रखता था। इस उत्तम रीति से वह आत्म-समर्पण की प्रथा का पालन करता है। (आईने अकबरी : आईने कोरनिश व तस्लीम)।

३ राज-भवन।

४ पापों की चिन्ता न करते हुए उपकार करते है।

ही अपराध एवं पाप में वृद्धि होती है, क्षमा तथा अनुकम्पा (की मात्रा) बढ़ती जाती है। यह गुण सुल्तानों के लिए, जो ईश्वर की छाया हैं, बड़ा ही उपयुक्त है। इस प्रकार अपराधों को क्षमा कर देने से उनकी अनुकम्पा के विस्तार तथा उनकी शक्ति के क्षेत्र को कोई हानि नहीं पहुँचती। उस अभागे को जो अपनी कुकृतियों पर लज्जित होता है, दंड की विपदा से, मुक्ति का परवाना प्राप्त हो जाता है। संक्षेप में, हजरत जहाँबानी जन्नत आशियानी ने इतने बड़े विद्रोह के बावजूद जिसके कारण वह किसी मुक्ति का पात्र नहीं हो सकता था, इख्लाके रब्बानी[1] के अधिकारी होने के कारण दुराचार का बदला उपकार से दिया।

ईश्वर को धन्य है कि इस युग के शाहंशाह में यह उत्तम गुण तथा उच्च कोटि का सदाचार, उनकी पवित्र प्रकृति एवं स्वभाव का अंग है। दंड देते समय वे इतना अधिक सोच विचार करते हैं जितना आदम से लेकर इस समय तक किसी भी प्रतापी बादशाह ने न किया होगा और इन उत्कृष्ट गुणों से कोई भी इतना सुशोभित न रहा होगा। इस प्रकार इस ग्रंथ में अत्यधिक उदाहरणों में से थोड़ी सी बातें कही जायेंगी। ईश्वर इन गुणों में नित्य-प्रति वृद्धि करता रहे और इस उदारता के आशीर्वाद में उन्हें दीर्घायु एवं उनके राज्य को उन्नति प्रदान करे।

हुमायूँ द्वारा चुनार-विजय

शेर शाह का चुनार से बंगाल की ओर प्रस्थान

संक्षेप में, जब शेर खाँ को विजयी प्रकाश-युक्त पताकाओं के उदय के समाचार प्राप्त हुए तो वह अपने पुत्र कुतुब खाँ को कुछ सैनिकों सहित चुनार[2] के किले में नियुक्त करके तथा किले

१ ऐसी नैतिकता जिसमें दैवी गुण पाये जाते हैं।

२ **तारीखे शेरशाही** में चुनार विजय के पूर्व की घटनाओं का उल्लेख इस प्रकार है —"जब हजरत हुमायूँ पादशाह गुजरात से वापस आये तो खानेखाना यूसुफ खैल ने निवेदन किया कि 'शेर खाँ की ओर से असावधान न रहना चाहिये कारण कि वह बहुत बड़ा षड्यन्त्रकारी है और राज्य व्यवस्था से भली भाँति परिचित है। समस्त अफगान उसके पास एकत्र हो गये हैं,' किन्तु हजरत पादशाह अपनी (सेना की संख्या) की अधिकता एवं बादशाही अभिमान के कारण, शेर खाँ को कुछ न समझते थे। वर्षा ऋतु हजरत पादशाह ने आगरा में व्यतीत की। हिन्दू बेग को इस आशय से जौनपुर भेज दिया कि वह शेर खाँ का हाल साफ-साफ लिख कर भेज दे। जब शेर खाँ को पता चला कि हजरत पादशाह बिहार की ओर आना चाहते हैं, तो उसने जौनपुर के हाकिम हिन्दू बेग को पेशकश भेजकर यह निवेदन कराया कि, 'मैंने हजरत पादशाह को जो आश्वासन दिया था, उससे मैं विचलित नहीं हुआ हूँ। मैंने उनके राज्य में हस्तक्षेप नहीं किया है। कृपापूर्वक मेरी राजभक्ति की हजरत पादशाह को सूचना दे दें और मना करा दें कि वे इस क्षेत्र की ओर न आयें। मैं सेवकों एवं राजभक्तों में से एक हूँ।' जब हिन्दू बेग ने शेर खाँ की पेशकश देखी तो उसे बड़ा पसन्द किया और प्रसन्न हुआ। शेर खाँ के वकील से कहा कि, 'शेर खाँ से कह दो कि जब तक मैं जीवित हूँ, वह निश्चिन्त रहे। उसे कोई भी हानि न पहुँचा सकेगा।' शेर खाँ के वकील के समक्ष उसने सम्मानित दरबार में प्रार्थना पत्र लिखे कि 'शेर खाँ आपके निष्ठावानों में है। वह हजरत पादशाह के नाम का खुत्बा पढ़वा तथा सिक्का चलवा रहा है। वह अपने राज्य के क्षेत्र के आगे नहीं बढ़ा है। विजयी पताकाओं की वापसी के उपरान्त उसने कोई अनुचित कार्य नहीं

को दृढ़ बना कर बगाले की ओर रवाना हो गया। उसने युद्ध करके उस प्रदेश को विजय कर लिया और अत्यधिक धन-सम्पत्ति अपने अधिकार में कर ली।

हुमायूं द्वारा चुनार विजय

जब हज़रत जहांबानी जन्नत आशियानी की विश्व विजय करने वाली सेनाओं का चुनार (१५१) के क्षेत्र में पड़ाव हुआ, तो संसार को शोभा देने वाली बुद्धि उस क़िले की विजय का प्रयत्न करने लगी। रूमी खां ने, जो दृढ़ कोटो एवं गगन-चुम्बी क़िलों की विजय में अद्वितीय था, नौकाओं पर साबात की व्यवस्था कराई[1]। वह मन्दसौर की विजय उपरान्त सुल्तान बहादुर से पृथक् होकर दरबार के सेवकों में सम्मिलित हो गया था और मीर आतश[2] के पद द्वारा सुशोभित किया गया था। उसने तख्ते के टुकड़ों से ऐसी छत का निर्माण किया कि बाल की खाल निकालने वाले बुद्धि-

किया जिससे उनके प्रति शिकायत हो सके।' जब हज़रत पादशाह को हिन्दू बेग के प्रार्थना पत्र का पता चला तो वे उस वर्ष ठहर गये।

शेर खां ने अपने पुत्र जलाल खां, ख्वास खां ज्येष्ठ (प्रथम) एवं अन्य अमीरों को बगाला एवं गौड़ नगर को सुल्तान महमूद से छीन लेने के उद्देश्य से नियुक्त किया। जब जलाल खां एवं ख्वास खां बगाला प्रदेश में प्रविष्ट हुए तो सुल्तान महमूद उनसे युद्ध न कर सका और क़िले में बन्द हो गया। अफ़गानों ने आस पास के स्थानों पर अधिकार जमा लिया और गौड़ को घेर लिया। नित्य प्रति युद्ध होता था।

दूसरे वर्ष हज़रत हुमायूं पादशाह की पताकाओं ने बिहार एवं बगाले की ओर प्रस्थान किया। जब वे चुनार के क़िले के समीप पहुँचीं तो हज़रत पादशाह ने अपने अमीरों से पूछा कि 'सर्वप्रथम हम चुनार विजय करें अथवा गौड़ की ओर प्रस्थान करें जिसे शेर खां के पुत्र ने घेर लिया है और जो अभी तक उसके अधिकार में नहीं आया है।' मुग़ल अमीरों ने निवेदन किया कि 'सर्वप्रथम चुनार के क़िले पर अधिकार जमाना चाहिये। तदुपरान्त बगाल की ओर प्रस्थान करना चाहिये।' यह बात निश्चय हो गई। जब खाने खानां यूसुफ़ खैल आया तो हज़रत पादशाह ने उससे इस विषय में पूछा। उसे ज्ञात हो गया था कि मुग़ल अमीरों ने यह निश्चय किया है कि सर्वप्रथम चुनार पर अधिकार जमाना चाहिये। खाने खानां यूसुफ़ खैल ने निवेदन किया कि, युवकों का मत है कि सर्वप्रथम चुनार का क़िला विजय करना चाहिये। वृद्ध का मत है कि गौड़ पर अधिकार जमाना चाहिये कारण कि गौड़ में बड़ा अधिक खज़ाना है। तदुपरान्त चुनार के क़िले की विजय सरल है।' हज़रत पादशाह ने कहा, 'मैं युवक हूँ। युवकों की राय पसन्द करता हूं। मैं चुनार का क़िला अपने पीछे न छोड़ूंगा' (संक्षिप्त से)। मैंने (लेखक ने) खाने खानां यूसुफ़ खैल के कुछ साथियों से जो प्रतिष्ठित अफ़गान एवं खाने खानां के विश्वास पात्र थे, सुना है कि, "जब खाने खानां अपने स्थान पर पहुँचा तो उसने कहा कि, 'शेर खां का भाग्य उन्नति पर है कारण कि मुग़ल गौड़ की ओर न गये। जब तक वे लोग इस क़िले को विजय करेंगे, अफ़गान लोग गौड़ को विजय कर लेंगे और खज़ाने पर अधिकार जमा लेंगे।' शेर खां ने ग़ाज़ी सूर एवं मल्लान मरवानी को, जो चुनार के क़िले का क़िलेदार था, चुनार के क़िले में छोड़ दिया और अपने तथा अफ़गानों के जो उसके साथ थे, परिवार लेकर महरकुन्दा (भरकुन्डा) के क़िले में चला गया।" (**तारीखे शेरशाही** डा० परमात्मा शरण की हस्तलिपि, पृ० ११७-१२१, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की हस्तलिपि, पृ० १०६-१११, अलीगढ़ विश्वविद्यालय की हस्तलिपि, पृ० ११६-१२३, इलियट, डाउसीण्न न० ३७१)।

१ इस घटना को अबुलफ़ज़ल ने बड़े संक्षिप्त रूप से लिखा है। जौहर ने इसका सविस्तार उल्लेख किया है। (देखिये आगे के पृष्ठों में **तज़किरतुल वाक़ेआत** का अनुवाद)।

२ मीर आतश —तोपखाने का मुख्य अधिकारी।

मानो, एव योग्य कलाकारो ने उस कला पर आश्चर्य से दाँतो तले अगुली दबाली। वह ऐसी सुरगें दीवार तक बना ले गया कि जब उनमें आग लगाई गई तो धरती और सारा युग काँप उठा। शेर खा का पुत्र कुतुब खा वहाँ से भाग खडा हुआ और समस्त किले वाले क्षमायाचना करके बाहर निकल आये। किला राज्य के अधिकारिया के अधीन हो गया। यद्यपि लगभग २,००० लोगो को हजरत जहाँबानी ने रूमी खा के वचनानुसार क्षमा कर दिया था किन्तु मुईद बेग दूलदाई ने, जो शाही दरबार का बहुत बडा विश्वास-पात्र था, कहा कि इन लोगा के हाथ काट दिये जायें और इस प्रकार आदेश दिया कि मानो पादशाह का हुक्म हो। उसने इस प्रकार की धृष्टता प्रदर्शित की। हजरत जहाँबानी ने उसे इसके लिए बहुत फटकारा। रूमी खा को शाही कृपाओं द्वारा सम्मानित किया गया। उसके सम्मान एव श्रेणी में वृद्धि हो गई। किले को उसकी सेवा के बदले में उसे प्रदान कर दिया गया। दुर्भाग्यवश कुछ ही दिनो में, युग की ईर्ष्या के कारण, विष द्वारा वह ससार से विदा हो गया।

हुमायूँ का बगाल की ओर प्रस्थान

जब सम्मानित हृदय इस अभियान की चिन्ता से मुक्त हो चुका तो बगाल का आक्रमण उत्कृष्ट साहस के सामने आया। बगाले के हाकिम नसीब शाह[1] ने ससार को शरण प्रदान करने

१ सम्भवत नसीरुद्दीन नुसरत शाह से तात्पर्य है। (होडीवाला, पृ० ४५१)।

तारीखे शेरशाही में चुनार की विजय के पश्चात् की घटना का उल्लेख इस प्रकार है "जब हजरत हुमायूँ पादशाह ने चुनार के किले पर अधिकार जमा लिया तो वे बनारस पहुँचे और वहाँ आनन्द मगल में समय व्यतीत करने लगे। बहुत समय तक वे बनारस में ठहरे रहे और बिहार विजय की योजना बनाते रहे। उन्होंने अपना वकील शेर खाँ के पास भेजा कि वह सेवा में उपस्थित हो जाय। शेर खा ने कहलाया कि, 'मैं भय के कारण सेवा में उपस्थित नहीं होता किन्तु मेरे पास राज भक्ति के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं। मुझे आप जो सेवा चाहें प्रदान कर दें मैं उपेक्षा नहीं कर सकता। मेरे पास अफ़ग़ानों की एक बहुत बडी सख्या एकत्र हो गई है। आपके दास के पुत्र ने गौड के किले को विजय कर लिया है। उन्हें एक ऐसा स्थान प्रदान हो जाय जहाँ वे कुछ दिन व्यतीत कर सकें। जिस सेवा का भी उन्हें आदेश होगा वे सम्पन्न करेंगे। यदि गौड व बगाला मुझे प्रदान हो जाय तो मैं समस्त बिहार प्रदेश छोड दूँगा। जिसे आप चाहें, दे दें। सुल्तान सिकन्दर (लोदी) के राज्यकाल में बगाले की जहाँ तक हद थी, वह मुझे प्रदान कर दिया जाय। पादशाही चिह्न, छत्र, तख्त, कौकबा इत्यादि मैं पादशाह की सेवा में भेज दूँगा। हर साल बगाला प्रदेश से १० लाख रुपया हम भेजते रहेंगे। हजरत पादशाह आगरा की ओर वापस चले जायें।' (शेर खा का) वकील हजरत पादशाह की सेवा में पहुँचा। जो कुछ शेर खा ने निवेदन कराया था वह सबको सब बताया। हजरत पादशाह ने स्वीकार कर लिया। शेर खा के पास वकील भेजकर खास खिलअत प्रदान की ताकि वह शेर खा को दे दे और उसे सान्त्वना देकर उससे कहे, 'जो तूने प्रार्थना की वह स्वीकार कर ली गई। तू पहुँचने में विलम्ब एव सकोच न कर।' पादशाह का वकील शेर खाँ के पास पहुँचा और घोडा तथा खिलअत देकर जो कुछ हजरत पादशाह ने उससे कहा था, कहा। शेर खाँ प्रसन्न हो गया कि, 'जो कुछ मैंने कहा है (हजरत पादशाह के) सेवकों को पहुँचाता हूँ (अर्थात् पूरा करता हूँ)। रात दिन ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि जब तक मैं जीवित हूँ, मुझमें एव हजरत हुमायूँ पादशाह में शत्रुता उत्पन्न न हो। दास को उनके सेवकों ने (हुमायूँ से तात्पर्य है) धरती [illegible] ऊपर उठाया है।'

हजरत पादशाह के वकील के प्रस्थान के तीन दिन उपरान्त, बगाले के हाकिम सुल्तान महमूद का वकील हुमायूँ पादशाह [illegible] पास पहुँचा। उसने निवेदन किया कि, 'अफ़ग़ानों ने गौड के किले पर अधिकार

वाले दरबार मे पहुँचकर शेर खा के विरुद्ध फरियाद की। यह बात बगाल-विजय का सबब बन गई[1] और सम्मानित ध्यान के आकृष्ट होने का एक और कारण बन गई। हज़रत जहाँबानी ने उसे शाही कृपाओं द्वारा सम्मानित किया और नाना प्रकार से उदारता प्रदर्शित करके उसके आदर-सम्मान को और भी उन्नति दे दी। जब यह अभियान निश्चय हो गया तो जौनपुर एव उस क्षेत्र के स्थान मीर हिन्दू बेग को, जो सम्मानित अमीरो मे से था, प्रदान किये गये। चुनार, बेग मीरक को प्रदान हुआ। इस ओर की व्यवस्था उपरान्त विजयी सेनायें, जल तथा स्थल मार्ग से रवाना हुईं। जब पटना में शाही शिविर लगे तो दरबार के निष्ठावानो ने निवेदन किया कि, "वर्षा ऋतु आ गई है। यदि हजरत (जहाँबानी) बगाले का आक्रमण इस ऋतु के समाप्त होने

जमा लिया है किन्तु राज्य का अधिकाश भाग अभी तक हमारे अधीन है। हज़रत पादशाह शेर खा की बातों का विश्वास न करें और इस क्षेत्र में आ जायें कारण कि अभी तक उन्होंने शक्ति एव अधिकार नहीं प्राप्त किया है। उन्हें इस राज्य से निकाल दें और इस उपद्रव को शात कर दें। मैं भी आपकी सम्मानित सेवा में आता हूँ। उन लोगों में इतना शक्ति नहीं कि वे हज़रत पादशाह का मुकाबला कर सकें।' बंगाले के हाकिम सुल्तान महमूद की प्रार्थना सुनते ही हज़रत पादशाह ने आदेश दिया कि विजयी पताकायें बगाले की ओर प्रस्थान करें। तदुपरान्त खाने खाना यूसुफ खैल, बरलास सरदारों एव अन्य अमीरों को आदेश दिया कि व आगे रवाना हों। मीर्जा हिन्दाल को आदेश दिया कि वह लश्कर को अपने साथ लेकर गगा नदी पार करके हाजीपुर की ओर पहुँचे। उत्तम सैनिकों को चुनकर जरीदा (थोड़े-से सैनिकों के साथ) रोहतास एव सहरकुन्दा (सरकुंडा) की पहाड़ियों की ओर जहाँ शेर खा था पहुँच जाय। वे स्वय बगाला की ओर रवाना हुए। जब शेर खा को यह समाचार प्राप्त हुए तो उसे हज़रत हुमायूँ से जो आशा थी वह टूट गई। उसने हज़रत पादशाह के वकील से कहा कि 'मैंने हज़रत पादशाह के सम्मान का ध्यान रखते हुए, पादशाह की आज्ञाकारिता में कोई कमी नहीं की। उनके राज्य में कभी हस्तक्षेप नहीं किया। जब मैंने लोहानियों से बिहार ले लिया और बगाले के पादशाह ने उसपर अधिकार जमाने का सकल्प किया तो मैंने उनसे अत्यधिक विनयपूर्वक आग्रह किया कि व मुझे मेरे हाल पर छोड़ दे और बिहार पर अधिकार जमाने का विचार न करें। उन्होंने अपनी सेना एवं अपने परिजनों की अधिकता के कारण यह बात स्वीकार न की। क्योंकि उनकी ओर से अत्याचार हुआ था, अत ईश्वर ने मुझे विजय प्रदान की। हज़रत पादशाह ने बंगाले के हाकिम की बात का विश्वास कर लिया। उन्होंने न तो मेरी ओर न अफ़गान सैनिकों की ओर, जिन्हें उनकी सेवा हेतु मैंने एकत्र किया था, कोई ध्यान दिया। बगाल की ओर प्रस्थान किया। जब हज़रत पादशाह चुनार के किले को घेरे हुये थे तो अफ़ग़ान मुझसे आग्रह करते थे कि मै युद्ध करूँ। मैंने अफ़ग़ानों से कहा, 'वे बहुत बड़े पादशाह है। उनसे किले के लिये युद्ध करना उचित नहीं कारण कि वे हमारे आश्रयदाता है, जब उन्हें ज्ञात होगा कि सेना की अधिकता के बावजूद मैंने उनके सम्मान का ध्यान रक्खा तो वे मुझे भी अपने सेवकों में से एक समझेंगे और इतनी बडी सेना के लिए कोई प्रदेश प्रदान कर देंगे। यह उपाय राज्य-व्यवस्था के हित में नहीं कि इतनी बडी सेना को अपनी सेवा से पृथक करके उसके शत्रुओं के कहने पर अफ़ग़ानों की हत्या एव उनका स्वदेश निर्वासन करा दें। अब मुझे कोई भी आशा नहीं रही जिसके भरोसे पर अफ़ग़ानों को सान्त्वना देकर हज़रत पादशाह के विरोध मे रोक सकूँ। आप सुन लेंगे कि अफ़ग़ान क्या करते है। पादशाह बंगाले की ओर प्रस्थान करने पर लज्जा एवं पश्चात्ताप करेंगे। इन दिनों अफ़ग़ान लोग संगठित है। उनके पारस्परिक विरोध एव झगड़ों का अन्त हो गया है। मुग़ल लोग अफ़ग़ानों को केवल पारस्परिक विरोध के कारण राज्य से वंचित कर सके।" तारीख़े शेरशाही : डा० परमात्मा शरण की हस्तलिपि, पृ० १२७-१३१, इलाहाबाद विश्वविद्यालय हस्तलिपि, पृ० ११९-१२२; अलीगढ़ विश्वविद्यालय हस्तलिपि, पृ० १३१-१३८; इलियट, बाडलीयन न० ३७१)।

१ मूल में, "यह बात बंगाल विजय के कारणों का ज़मीमा (परिशिष्ट) बन गई"।

तक स्थगित कर दे तो विजय की प्रथानुसार जीत लेना बडा आसान होगा कारण कि इस ऋतु मे अश्वारोही बडी कठिनाई से यात्रा कर पाते है और यह (ऋतु) सैनिको के विनाश एव तबाही का साधन होती है।" बगाले के वाली[1] ने अपने स्वार्थ पर दृष्टि रखते हुए निवदन किया कि, (१५२) "शेर खा को बगाले में अभी तक दृढता नही प्राप्त हो सकी है। शीघ्रातिशीघ्र उसके विरुद्ध पहुँच जाने मे वह सुगमतापूर्वक नष्ट कर दिया जायगा।" हजरत जहाँबानी ने उस पीडित के प्रोत्साहन एव उसकी प्रार्थना के देखने में बुद्धि-सगत होने के कारण विश्व-विजय करने वाली पताकाओ को प्रस्थान का आदेश दे दिया। भागलपुर[2] मे उन्होने सेना को दो भागो में विभाजित कर दिया। मीर्जा हिन्दाल को ५-६ हजार व्यक्तियो सहित नदी के पार कराया ताकि वे नदी के दूसरी ओर प्रस्थान करें।

अफगानो का गढी पहुँचना

जब मुगेर[3] मे भाग्यशाली शिविर लगे तो समाचार प्राप्त हुए कि शेर खा के पुत्र जलाल खा ने जिसने अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त सलीम खा[4] की उपाधि धारण की थी, ख्वास खा, बरमजीद[5], सरमस्त खा, हैबत खा नियाजी तथा बहार[6] खा एव १५,००० आदमियो सहित गढी[7] नामक कस्बे में जो बगाले के द्वार-सदृश है पहुँचकर उसे दृढ बना लिया है और षड्यत्र एव विद्रोह कर रहा है।

शेर शाह की योजना

घटना का उल्लेख इस प्रकार है विजयी पताकाओ के प्रस्थान का समाचार पाकर शेर खा किसी प्रकार युद्ध न करने का निश्चय करके झारखड[8] के मार्ग से इस उद्देश्य से रवाना हुआ कि

१ शासक, हाकिम।

२ २५°१५ उत्तर तथा ८७°० पूर्व गगा नदी के दायें तट पर, बिहार का एक डिवीजन तथा जिला।

३ २५°२३' उत्तर तथा ८६°२८ पूर्व, गगा नदी के दक्षिणी तट पर बिहार में।

४ अन्य स्थानों पर अबुलफजल ने उसे 'इस्लाम खा'' लिखा है।

५ अन्य ग्रथों में "बर मजीद गोर"।

६ अन्य ग्रथों में "पहाड खा" भी लिखा है।

७ सन्थल परगने का दर्रा जिसके दक्षिण में राजमहल की पहाडियाँ एव उत्तर में गगा नदी है।

८ इसे छोटिया (छोटा) नागपुर बताया गया है और कहीं-कहीं इसे मिदनापुर के जगली महालों से सम्बन्धित बताया गया है। बेवरिज का विचार है कि सम्भवत मूलमे मारकुन्ड अथवा बीरभूमि के लिये इसका प्रयोग होता है। [Beames Notes on Akbar's Sarkars, *Journal Royal Asiatic Society* (London 1896) p 97] मारकुन्ड सरकार शरीफाबाद में थी। होडीवाला ने लिखा है कि झारखड (जगली प्रदेश) का तात्पर्य बडे विस्तृत भौगोलिक भू-भाग से है जिसको निश्चित रूप से बताना कठिन है। ब्लाकमैन ने लिखा है कि अकबर नामा बीरभूमि तथा पचेत से रतनपुर (मध्य भारत) तथा रोहतास गढ दक्षिणी बिहार से उडीसा तक की सरहद का भूभाग झारखड अथवा जगली प्रदेश कहलाता है। यह कोई निश्चित भू-भाग नहीं और छोटिया (छोटा) नागपुर के भू भाग के लिए जो रोहतास से बीरभूमि तक फैला है प्रयोग में आता है।

ब्लाकमैन ने छोटा नागपुर के विषय में लिखा है

जब उत्कृष्ट सेना बगाले मे पहुँच जाय तो वह इस मार्ग से बिहार एव उस ओर (के स्थानो मे) पहुँचकर उपद्रव मचाये और बगाले की धन-सम्पत्ति भी सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दे। जलाल खा तथा एक सेना को गढी के समीप नियुक्त करके आदेश दे दिया कि जब विश्व-विजय करने वाली सेना निकट पहुँचे और वह स्वय शेरपुर[1] पहुँच जाय तो वे शीघ्रातिशीघ्र उसके पास पहुँच जायें और युद्ध को टाले।

जलाल खा द्वारा हुमायू की सेना की पराजय

भागलपुर से इबराहीम बेग चाबुक, जहागीर कुली बेग, बैराम बेग, निहाल बेग, रोशन बेग, गुर्ग अली बेग तथा बूबका बहादुर[2] को और एक बहुत बड़ी सेना को जिसमे ५-६ हजार व्यक्ति थे, हज़रत जहाँबानी ने नियुक्त किया। जब शाही सेनाये गढी के समीप पहुँची, जलाल खा ने अपने पिता के आदेश का उल्लघन करते हुए सेना तैयार की और शाही शिविर पर आक्रमण किया। ये लोग[3] अपने आप को सभाल भी न पाये और न युद्ध हेतु सेना की व्यवस्था ही कर पाये। शत्रुओ की सेना बहुत अधिक थी। ये लोग युद्ध के लिए तैयार भी न थे। बैराम खा ने कई बार पलटकर शत्रु की सेना पर आक्रमण किया और उनकी सेना के छक्के छुडा दिये। उसने बडी वीरता से युद्ध किया किन्तु विजयी सेना, अव्यवस्थित होने के कारण उचित रूप से साथ न दे सकी और इच्छानुसार सफलता न प्राप्त हुई[4]। अली खा

"In the *Akbarnama* the whole tract from Birbhum and Pachet to Ratanpur in Central India, and from Rohtasgarh in South Bihar to the frontier of Orissa, is called 'Jharkband,' or jungle land There are several geographical names that have the same signification, we find them especially in such districts as are now inhabited by aboriginal races Thus the Gond word *dangur* means 'a jungle,' 'wilderness,' and hence the numerous Dongars, Dongris, Dongarpurs, Dongarganws, Dongartals, in Western and Central India Even the word 'bir' in Birbhum, notwithstanding the various etymologies which have been proposed, is, I believe, nothing else but the Mundari *bir*, *a forest*. (H Blochmann Notes from Muhammadan Historians on Chutia Nagpur, Pachet, and Palamau, J A S B Calcutta 1871, p. 111)

१ सम्भवत शेरपुर मरचाई।

२ प्रकाशित पुस्तक में 'बचका बहादुर'।

३ शाही सेना।

४ जब (शेर खा) गौड पहुँचा तो उसने अपने पुत्र जलाल खा एवं अन्य अमीरों को नियुक्त किया कि वे गढी का मार्ग रोक लें और हज़रत बादशाह पर सर्वदा दृष्टि रक्खें ताकि मैं तैयारी करके जो खज़ाना प्राप्त हुआ है उसे रोहतास में पहुँचा दूँ। जब जलाल खा गढ़ी पहुँचा तो हज़रत बादशाह की सेना; जो आगे थी, गढी के समीप पहुँच गई। जलाल खा ने अपने अमीरों से कहा कि, "हमें इस सेना से युद्ध करना चाहिये।" अमीरों ने रोका कि "युद्ध करना उचित नहीं। शेर खा ने तुम्हे युद्ध हेतु नहीं भेजा है। राज्य के हित में यही उचित है कि गढी की प्रतिरक्षा की जाय।" जलाल खा ने अमीरों की बात स्वीकार न की। १००० अश्वारोही गढी में छोडकर ६००० अश्वारोहियों सहित बादशाह की सेना के विरुद्ध पहुँचा। घोर युद्ध हुआ किन्तु बादशाह की सेना की पराजय हो गई। मुबारक फरमुली, अबुल फतह लगाह एव मुग़लों की ओर से अत्यधिक लोग मारे गये। जलाल खा वापस होकर

हावनी[1], हैदर बख्शी तथा राज्य के कुछ अन्य पदाधिकारी शहीद हो गये।

हुमायू का स्वय जलाल खा के विरुद्ध पहुँचना और उसका पलायन

जब यह समाचार पवित्र थाना तक पहुँचे तो हजरत जहाँबानी स्वय शीघ्रातिशीघ्र रवाना हुए। इसी आक्रमण में समुद्र को शोभा देने वाली नौका जो शाही सवारी के लिए (ही प्रयोग में आती) थी कहलगाव[2] म डूब गई। जब शाही सेना अभागे अफगानो के समीप पहुँची तो वे पलायन कर गये।

हुमायू द्वारा बगाल (गौड) विजय

हज़रत जहाँबानी ने मीर्ज़ा हिन्दाल को जिसे तिरहुट एव पुरनिया प्रदान किया गया था, (१५३) उसकी प्रार्थना पर इस आशय से विदा कर दिया कि वह अपनी नई जागीर म जाकर उचित

गढी पहुँचा और गढी के मार्ग को रोक लिया। उस रात्रि के युद्ध के पश्चात् वर्षा ऋतु की इतनी जोर की प्रारम्भिक वर्षा हुई कि जल की अधिकता के कारण मार्ग मिलना कठिन हो गया। उस मंजिल पर हजरत पादशाह एक मास तक ठहरे रहे। इस बीच में शेर खा ने अवसर पाकर समस्त खजाना जो उसने प्राप्त किया था, झारखड के मार्ग से रोहतास पहुँचा दिया। जब शेर खा रोहतास पहुँच गया तो उसने जलाल खा को सूचना भेजी कि वह गढी को छोडकर रोहतास की ओर चला जाय। हजरत पादशाह को पता चला कि, जलाल खाँ गढी को छोडकर चला गया है। वर्षा ऋतु की अधिकता के कारण विजयी सेना का (एक भाग) मीर्ज़ा हिन्दाल के साथ आगरा भेज दिया और स्वय बगाले की राजधानी गौड की ओर रवाना हुए। गौड में वे तीन मास तक ठहरे रहे और किसी को भी उनके दरबार में उपस्थित होने की अनुमति न थी। (९४५ हि० १५३८ ३९ ई० इलियट के अनुवाद में) शेर खा बनारस में पहुँचा। बनारस के हाकिम को घेर लिया। वहा से ख्वास खा को मुगेर की ओर भेजा। वहा खाने खाना यूसुफ खैल हुमायू की ओर से शहर का हाकिम था। शेर खा ने ख्वास खा को आदेश भेजा कि वह खान खाना को बन्दी बना ले और उसे उसकी सेवा में उपस्थित करे (कारण कि खाने खाना ही बाबर को काबुल से हिन्दुस्तान लाया था)। (इलियट के अनुवाद में) ख्वास खा अचानक नगर के भीतर रात में प्रविष्ट हो गया। खाने खाना को बन्दी बनाकर बनारस ले गया। तदुपरान्त बनारस पर विजय प्राप्त कर ली गई। अधिकांश मुगल जो उस नगर में थे मार डाले गए तत्पश्चात् हैबत खा नियाजी जलाल खा जल्लू, सरमस्त खा सरवानी एव अन्य अमीर बहराइच की ओर नियुक्त किये गये। उन लोगों ने उन मुगलों को जो उस क्षेत्र में थे मार मारकर राज्य से निकाल दिया और सम्भल के किले तक पहुँचकर उसपर अधिकार जमा लिया। नगर को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। अन्य सेना जौनपुर की ओर भेजी। जौनपुर का हाकिम युद्ध में मारा गया। वही सेना आगरा पहुँची। जो मुगल सेना आगरा में थी उसने युद्ध किया और पराजित हुई। कन्नौज से सम्भल तक के प्रदेश अफगानों के अधिकार में आ गये। शेर खा ने ख्वास खा को महारता जमींदार के विरुद्ध इस आशय से भेजा कि उसके जगल को काटकर उसे बन्दी बना ले। खरीफ तथा रबी की फसल में शेर खा के आदमियों ने तहसील-वसूल की। (**तारीखे शेरशाही** डा० परमात्मा शरण की हस्तलिपि पृ० १३७ १४०, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की हस्तलिपि पृ० १२८ १३१, अलीगढ विश्व विद्यालय हस्तलिपि पृ० १४३ १४७, इलियट, बाडलीएन न० ३७२)।

१ सम्भवत महावनी।

२ कहलगाव अथवा काल्गोंग भागलपुर में २५°१६ उत्तर तथा ८७°१४ पूर्व, गगा के दक्षिणी तट पर।

सामान सहित उस ओर से बंगाला पहुँच जाय। हजरत जहाँबानी वहाँ से निरन्तर यात्रा करते हुए बंगाले की ओर रवाना हुए और दैवी कृपा से उन्होंने ९४५ हि० (१५३८-३९ ई०) में[1] बंगाला[2] विजय कर लिया। शेर खाँ समस्त अफगानों सहित बंगाले का चुना हुआ खजाना लेकर झारखंड के मार्ग से रोहतास के क्षेत्र में पहुँचा और धूर्ततापूर्वक रोहतास[3] के किले पर अधिकार जमा लिया।

शेर खाँ का रोहतास के किले पर अधिकार जमाना

इस घटना का संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है जब (शेर खाँ) रोहतास के समीप, जो एक बड़ा ही दृढ़ किला है, पहुँचा तो किले के हाकिम राजा चिंतामन ब्राह्मण[4] के पास आदमी भेजकर उसे अपने प्राचीन उपकारों का स्मरण दिलाया और मित्रता की नींव स्थापित कर निवेदन कराया कि "आज हमारे ऊपर विपत्ति आ पड़ी है। मेरी प्रार्थना है कि मेरे प्रति उदारता से काम लो और मेरे परिवार एवं साथियों को किले में स्थान दे दो, तथा मुझे कृतज्ञ बना लो।" सरल स्वभाव के राजा ने उस धूर्त की चाटुकारी एवं छल के धोखे में पड़ कर उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। मित्रता के राज्य से अपरिचित उस व्यक्ति ने ६०० डोलियाँ तैयार कराई और प्रत्येक डोली में[5] दो-

१ जून १५३८ ई०।

२ इस स्थान पर केवल गौड़ से तात्पर्य है। गौड़, पूर्वी बंगाल तथा आसाम के माल्दा जिले में २४°५४' उत्तर ८८°८' पूर्व में बंगाल की मध्यकालीन राजधानी।

३ रोहतास अथवा रोहतासगढ़ बिहार के शाहाबाद जिले के सहसराम सब डिवीजन में २४°३७' उत्तर तथा ८३°५५' पूर्व, सहसराम कस्बे से ३० मील दक्षिण में।

४ **तबक़ाते अकबरी** में 'हर किशन (हरि कृष्ण)'। अन्य इतिहासों में यह नाम विभिन्न रूप से लिखा है।

५ **तारीखे शेरशाही** में इस कहानी का खंडन किया गया है और इसका उल्लेख इस प्रकार है: शेर खाँ ने गाज़ी सूर एवं सुल्तान सरवानी को, जो चुनार के किले का किलेदार था, चुनार के किले में छोड़ दिया और अपने तथा अफगानों के, जो उसके साथ थे, परिवार लेकर महरकुन्दा (भरकुन्डा) के किले में चला गया। उस किले में इतना स्थान न था कि इतने लोग रक्खे जा सकें। शेर खाँ की रोहतास के किले के राजा (**तारीखे शेरशाही** में राजा का नाम नहीं दिया गया है। अबुलफ़ज़्ल ने राजा का नाम चिंतामन ब्राह्मण लिखा है। फ़िरिश्ता के अनुसार राजा हरि कृष्ण, कुछ अनुवाद करने वालों ने हर किशन अथवा हरि कृष्ण को बरकीस पढ़ा है, हाडीवाला पृ० ४५२) से बड़ी मित्रता थी विशेष रूप से चूरामन (चूड़ामणि) ब्राह्मण से जो राजा का बहुत बड़ा विश्वास पात्र था (इलियट में नायब)। इससे पूर्व उसने शेर खाँ के सगे भाई मियाँ निज़ाम तथा उसके परिवार के प्रति सौजन्य प्रदर्शित करते हुए उन्हें रोहतास के किले में स्थान दे दिया था। जब कोई खतरा न रहा तो निज़ाम का परिवार किले के बाहर निकल गया था और किला राजा को सौंप दिया था। उस अवसर पर शेर खाँ ने उससे कहा, "मुझे अत्यधिक आवश्यकता पड़ गई है। यदि कुछ दिन के लिये रोहतास का किला मुझे दे दिया जाय तो जब तक मैं जीवित हूँ इसके लिये कृतज्ञ रहूँगा। जब खतरा समाप्त हो जायगा तो किला खाली कर दूँगा।" चूड़ामणि ने कहा, "तू संतुष्ट रह, रोहतास का किला मैं तुझे राजा से दिलवा दूँगा।" चूड़ामणि ने राजा के पास पहुँचकर कहा, "शेर खाँ एक कठिनाई में पड़ गया है। वह आपसे अपने परिवार के लिये कुछ समय के लिये (किला) माँगता है। वह आपका पड़ोसी है। इस अवसर पर उसके प्रति उदारता प्रदर्शित करते हुए उसके परिवार को शरण प्रदान करनी चाहिये।" राजा ने स्वीकार कर लिया। जब शेर खाँ

(पिछले पृष्ठ का फुट नोट)

अपने परिवार को महरकुन्डा (भरकुन्डा) से लेकर नीचे उतरा तो राजा अपने वचन से फिर गया और कहा "जिस समय मैंने मियाँ निज़ाम को किले में स्थान दिया था तो उसकी सेना की संख्या बड़ी कम थी। मैं शक्तिशाली था। इस समय उसकी सेना की संख्या अधिक हो गई है। मेरे आदमियों की संख्या कम है। वे शक्तिशाली हैं। मैं उनसे (किला) जबरदस्ती वापस नहीं ले सकता।" चूड़ामणि ने शेर ख़ाँ के पास सन्देश भेजा कि "कुछ लोगों ने जो मेरे शत्रु हैं, राजा को अत्यधिक मार्ग भ्रष्ट कर दिया है और उससे किला देने से इन्कार करा दिया है।" जब शेर ख़ाँ ने यह सुना तो उसे बड़ा दुःख हुआ। उसने राजा के पास सन्देश भेजा कि, "मैं तेरे भरोसे एवं वचन पर अपने परिवार को महरकुन्डा (भरकुन्डा) से लाया। यदि यह समाचार हुमायूँ पादशाह को प्राप्त हो गये तो वह सेना भेजकर अफ़ग़ानों के परिवारों की हत्या करवा देगा। इसका पाप तेरी गरदन पर होगा।" उसने चूड़ामणि को छः मन सोना घूस के रूप में दिया और कहलाया, "जिस प्रकार सम्भव हो कुछ दिन के लिये मेरे परिवार को राजा से रोहतास के क़िले में स्थान दिला दो। (यदि ऐसा न हुआ तो) मैं हज़रत पादशाह से सन्धि कर लूँगा और राजा को नष्ट भ्रष्ट कर दूँगा।" चूड़ामणि ने कहा, "तू सन्तुष्ट रह। मैं राजा को समझाऊँगा कि, 'तेरे राज्य के लिये यह उचित नहीं कि तू विश्वासघात करे। यदि हुमायूँ पादशाह को पता चल गया कि शेर ख़ाँ के परिवार वाले सुरक्षित नहीं हैं तो वह उन पर आक्रमण कर देगा और उन्हें नष्ट भ्रष्ट कर देगा तथा बन्दी बना लेगा। इसका पाप मेरी तथा तेरी गरदन पर होगा कारण कि वह तेरे वचन के भरोसे पर अपने परिवार को महरकुन्डा (भरकुन्डा) के किले से ले आया है। शेर ख़ाँ यदि कठिनाई में पड़ गया तो विवश होकर पादशाह हुमायूँ से सन्धि कर लेगा और तुझसे युद्ध करेगा। तुझमें शेर ख़ाँ से युद्ध करने की शक्ति नहीं। अकारण क्यों शत्रुता मोल लेता है और अपने राज्य में विघ्न डालता है?' मैं ब्राह्मण हूँ। वह मेरी बात पर अवश्य विश्वास करेगा। मैं उसे इसपर तैयार करूँगा। यदि उसने स्वीकार न किया तो मैं कहूँगा कि मैं विष खा लूँगा।" तब राजा ने चूड़ामणि को इस प्रकार दृढ़ पाया तो उसने इसे स्वीकार कर लिया कि शेर ख़ाँ के परिवार को क़िले के ऊपर स्थान प्रदान कर दिया जाय।

शेर ख़ाँ को अभी किला प्राप्त होने के समाचार मिले भी न थे कि उसे ज्ञात हुआ कि ख़्वास ख़ाँ कलाँ गौड़ की खाई में डूब गया और हज़रत पादशाह ने सन्धि द्वारा चुनार के किले पर अधिकार जमा लिया है। वह बड़ी चिन्ता में पड़ गया। ख़्वास ख़ाँ के छोटे भाई को, जिसका नाम मुसाहिब ख़ाँ (इलियट में साहब ख़ाँ) था, ख़्वास ख़ाँ की उपाधि देकर बिदा कर दिया। उसे अत्यधिक चेतावनी दे दी कि "हज़रत हुमायूँ पादशाह ने चुनार पर अधिकार जमा लिया है और वह कुछ दिन में ही बंगाले की ओर प्रस्थान कर देगा। तू किले पर अधिकार जमाने में विलम्ब न करना।" जिस दिन ख़्वास ख़ाँ गौड़ पहुँचा उसने जलाल ख़ाँ से निवेदन किया कि, "आदेश इस प्रकार हुआ है कि गौड़ के किले पर अधिकार जमाने में विलम्ब एवं शिथिलता न की जाय कारण कि हुमायूँ पादशाह पीछे से आ रहे हैं।" जलाल ख़ाँ ने कहा, "आज प्रतीक्षा करो।" ख़्वास ख़ाँ ने कहा कि "मैं आदेश का उल्लंघन न करूँगा। सवार हो जाना चाहिये।" जलाल ख़ाँ ने कहा, "तुम अपने (भाई के) स्थान पर चले जाओ।" ख़्वास ख़ाँ बिदा हो गया। अपने भाई के स्थान पर पहुँचा। भाई की सेना को सान्त्वना दी और कहा, "हज़रत आला का सम्मानित आदेश हुआ है कि पहुँचते ही ऐसा घोर प्रयत्न करो कि किले पर अधिकार प्राप्त हो जाय। विलम्ब एवं शिथिलता मत करो।" नक़ीबों को आदेश दिया कि लश्कर को सूचना कर दो कि वे पूर्ण रूप से तैयार हो जायें कारण कि समय नहीं है। वह स्वयं अस्त्र-शस्त्र धारण करके सवार हुआ और जलाल ख़ाँ को सूचना भेजी (इलियट में वकील भेजा) कि, "यह दास हज़रत आला के आदेशानुसार अपनी समस्त सेना सहित सवार हो गया है। आप भी सवार हो जायें। ईश्वर ने चाहा तो विजय प्राप्त हो जायगी।" जलाल ख़ाँ को ख़्वास ख़ाँ की यह वीरता अच्छी न लगी किन्तु विवश होकर वे सवार हुए। ख़्वास ख़ाँ ने स्वयं पौरुष एवं वीरता प्रदर्शित की। अभी जलाल ख़ाँ न आया था कि उसने किला विजय कर लिया। दान पुण्य एवं वीरता में उस सेना में कोई उसके बराबर न था। जब गौड़ विजय हो गया, जलाल ख़ाँ ने विजय पत्र

/

सशस्त्र जवान बिठा दिये। डोलिया के दोनो ओर कनीजें नियुक्त कर दी। इस छल से सैनिको को किले में प्रविष्ट करके किले पर अधिकार जमा लिया और अपने परिवार एव सैनिको को उस किले में छोड कर षड्यन्त्र के हाथ बढा दिए[1] और बगाले के मार्ग रोक दिये।

हुमायूं बंगाले में

हज़रत जहाँबानी को बगाले की जल वायु बडी अच्छी लगी और वे भोग-विलास में ग्रस्त हो गये। भाग्यशाली सेना ने समृद्ध एव विस्तृत प्रदेश पाकर उपेक्षा की सामग्री की व्यवस्था कर ली। इसी बीच में मीर्ज़ा हिन्दाल षड्यन्त्रकारियो एव दुष्टो की सगत में पड गया और सर्वनाश-कारी कल्पनाओ को अपने मस्तिष्क में स्थान देकर बिना शाही आदेश के वर्षा ऋतु के मध्य राजधानी

खवास खा के नाम पर लिखकर अपने पिता शेर खा को भेज दिया। जब शेर खा को यह समाचार प्राप्त हुये तो वह बडा प्रसन्न हुआ। चूडामणि भी शेर खा की सेवा में पहुँचा और निवेदन किया, कि "राजा ने उसे रोहतास के किले में अपने परिवार को रखने की अनुमति दे दी है।" शेर खा अपने परिवार को किले के समीप ले गया और राजा के प्रति अत्यधिक निष्ठा एव कृतज्ञता प्रकट की। सासारिक धन सम्पत्ति एव वस्तुओं में अत्यधिक नकद धन एव वस्त्र राजा को प्रदान किये और वचन दिया कि, "यदि भाग्य ने मेरा साथ दिया तो मैं तेरा उपकार न भूलूँगा।" राजा अत्यधिक सतुष्ट हो गया और उसने निवेदन किया कि, "रोहतास का किला आपका है। आपके परिवार वाले आ जायें।" शेर खा ने अपने आदमियों को समझा दिया था कि जो कोई किले में पहुँच जाय वह पुन नीचे न आये। शेर खा ने स्वय किले में पहुँचकर उसका निरीक्षण किया और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करके कहा, "चुनार के किले की इससे कोई तुलना नहीं की जा सकती। वह किला मेरे हाथ से निकल गया तो यह अधिकार में आ गया।" गौड विजय पर वह बहुत प्रसन्न हुआ था किन्तु रोहतास के किले की विजय पर और भी प्रसन्न हो गया। किले के रक्षकों को संदेश भेजा कि, "तुम लोग राजा के पास जाकर कह दो कि तुम्हारा अफगानों के साथ रहना उचित नहीं। इससे युद्ध स्पष्ट होगा।" उसने अपने आदमियों से कह दिया, "यदि किले के रक्षक तुम्हारे कहने से नीचे न उतरें तो उन्हें मार मार कर निकाल दो।" क्योंकि शेर खा के आदमी पूर्ण रूप से तैयार थे, वे किले के रक्षकों के पास गये। जो कुछ शेर खा ने कहा था, उन्हें बतलाया। उन लोगों ने स्वीकार न किया। शेर खा के आदमियो ने तलवार की ओर हाथ बढाया और मार-मारकर उन्हें किले के बाहर निकाल दिया। किले में प्रत्येक स्थान पर अपने रक्षक नियुक्त कर दिये और दृढ रूप से उसकी प्रतिरक्षा प्रारम्भ कर दी। रोहतास का किला जिस प्रकार लिखा गया, विजय हुआ। लोगों ने जो यह प्रसिद्ध कर दिया है कि शेर खा ने अफगानों को डोलियों में स्त्रियों के बहाने से बैठा कर किले में भेज दिया और किले पर अधिकार जमा लिया तो यह नितात असत्य एव झूठ है। इस पुस्तक (**तुहफये अकबर शाही**) के सकलनकर्ता शेख अली के पुत्र अब्बास खा ने उन उच्च पदाधिकारियों से जो इस घटना के समय शेर खा के साथ थे, इसकी छान-बीन की है। इस प्रकार मैंने प्रतिष्ठित अमीरों के सरदार मुजफ्फर खा, मसनद आली ईसा खा बिन उमर खा सरवानी के भतीजे, (इलियट में—मसनदे आली ईसा खा बिन मसनदे आली ईसा खा बिन मसनदे आली हैबत खा बिन मसनदे आली उमर खा सरवानी के भतीजे मुजफ्फर खा) शेख मुहम्मद बिन शेख (इलियट में मिया) बायज़ीद सरवानी एव कुछ अन्य लोगो से जो इस घटना से परिचित थे, इस विषय में पूँछ ताँछ की है। (**तारीखे शेरशाही** डा० परमात्मा शरण की हस्तलिपि, पृ० १२१-१२६, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की हस्तलिपि, पृ० १११ ११७, अलीगढ विश्वविद्यालय हस्तलिपि पृ० १२४ १३१, इलियट, बाडलीएन न० ३७१)।

१ षड्यन्त्र करने लगा।

प्राप्त हुआ तो उन्होंने शेख बहलूल[1] को, जो हिन्द के उत्कृष्ट सूफियों और पादशाह के कृपा-पात्रों (१५५) में से थे, बंगाले में इस आशय से विदा कर दिया कि वे शीघ्रातिशीघ्र राजधानी पहुंच जायें और गम्भीर उपदेशों द्वारा मीर्जा को कुत्सित कल्पनाओं से मुक्ति दिला कर शीघ्रातिशीघ्र अफगानों के विनाश हेतु भली-भाँति[2] तैयार करें। ऐसे अवसर पर जब कि अमीर लोग षड्यंत्र की भावनाओं एवं कुविचारों पर आधारित योजनायें बना रहे थे और मीर्जा हिन्दाल को सन्मार्ग से विचलित करने वाले ही थे, शेख शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए पहुंच गये। मीर्जा हिन्दाल ने शेख का स्वागत करके बड़े आदर-सम्मान से अपने महल में ठहराया। शेख ने निष्ठा-युक्त गम्भीर विचार प्रदर्शित करके, मीर्जा को उस सेवा हेतु जिसके लिए वे नियुक्त हुए थे, दृढ़ बना लिया। दूसरे दिन मुहम्मद बख्शी को इस आशय से लाया गया कि वह सेना के लिए धन, ऊंट, घोड़े, अस्त्र शस्त्र इत्यादि जो भी आवश्यक हो उनकी व्यवस्था करे। मुहम्मद बख्शी ने निवेदन किया कि इतना खजाना नहीं है जो सैनिकों को दिया जा सके किन्तु सामान एवं अन्य सामग्री अत्यधिक संख्या में है और वह (मीर्जा की) इच्छानुसार व्यवस्था करेगा।

मीर्ज़ा हिन्दाल के आदेशानुसार शेख बहलूल की हत्या

इस बात को चार-पाँच दिन भी व्यतीत न हुए थे कि मीर्जा नूरुद्दीन मुहम्मद कन्नौज से शीघ्रातिशीघ्र पहुंचा। अमीरों ने मिलकर जो निश्चय किया था एवं जो षड्यंत्र रचा था उसमें मीर्जा के आगमन के कारण और भी दृढ़ता उत्पन्न हो गई। मुहम्मद गाजी तुगबाई को (मीर्जा हिन्दाल) ने पुनः अमीरों के पास भेजा। अमीरों ने अपनी पिछली योजना पर जोर देते हुए अपने संकल्प के विषय में निवेदन कराया कि, "हमारी बात के स्वीकार कर लिये जाने का प्रमाण यह है कि आप पादशाह के दूत शेख बहलूल की जो हमारी योजनाओं का छिन्न-भिन्न कर रहा है, खुल्लम खुल्ला हत्या करा दें ताकि लोगों को विश्वास हो जाय कि आप पादशाह से पृथक् हो गये हैं और हम लोग निश्चिन्त होकर सेवा करें।" शेख यात्रा की तैयारी कर रहे थे और सेना हेतु अस्त्र-शस्त्र की व्यवस्था करा रहे थे कि (मीर्जा हिन्दाल का) दूत वापस आ गया और मीर्जा नूरुद्दीन मुहम्मद की सहमति से आनिंद्य योजना की पुष्टि हो गई। मीर्जा नूरुद्दीन मुहम्मद, मीर्जा हिन्दाल के आदेशानुसार शेख को उनके घर से पकड़ कर नदी के उस पार ले गया और पादशाही बाग के समीप बलुही जगह पर उनकी गरदन उड़ा देने का आदेश दे दिया। अभागे अमीरों ने मीर्जा की सेवा में पहुँच कर अभिवादन किया।

१ यह नाम विभिन्न हस्तलिपियों एवं ग्रन्थों में विभिन्न प्रकार से लिखा है —बहलूल, पूल एवं फूल। वह शेख मुहम्मद गौस शत्तारी ग्वालियरी का बड़ा भाई था। शेख मुहम्मद गौस के विषय में देखिये, मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूनी **मुन्तखबुत्तवारीख** भाग ३, पृ० ४६)। वे शेख बायजीद बुस्तामी से अपना सिलसिला मिलाते थे। डा० ईश्वरी प्रसाद ने 'शेख फरीदुद्दीन अत्तार' लिखा है जो ठीक नहीं। (Ishwari Prasad · *The Life and Times of Humayun*, p 124, n I)

२ मूल में "यक़ दिल व यक ज़बान"।

मीर्जा हिन्दाल के नाम का खुत्बा

एक अशुभ मुहूर्त एवं ऐसे हलचल के समय मीर्जा हिन्दाल के नाम का खुत्बा पढ़वा दिया गया। उन लोगों ने प्रस्थान कर दिया[1]। यद्यपि इस्मत किबाब दिलदार आगाचा बेगम ने, जो मीर्जा हिन्दाल की माता थी, एवं अन्य बेगमों ने बहुत समझाया किन्तु उससे कोई लाभ न हुआ। उसके कर्म की जबान यह शेर पढ़ रही थी

शेर

'लोगों का समझाना-बुझाना मेरे कान के लिए हवा (के समान) है,
किन्तु यह ऐसी हवा है जो मेरी अग्नि को तेज करती है।'

मीर्जा हिन्दाल का देहली की ओर प्रस्थान

जब मीर्जा अपने नाम का खुत्बा पढ़वाकर अपनी माता के पास पहुँचा तो इस्मत किबाब नीले वस्त्र धारण किए हुए थी। मीर्जा ने कहा कि, "ऐसे खुशी के अवसर पर आप किस प्रकार के वस्त्र धारण किए हुए हैं?" उस इस्मत किबाब ने दूरदर्शिता की दृष्टि से उत्तर (१५६) दिया, "तू मेरी चिन्ता क्यों कर रहा है? मैं तेरा शोक मना रही हूँ। तू अभी बालक है।[2] अल्पदर्शी षड्यन्त्रकारियों की बातों में आकर तू सन्मार्ग से विचलित तथा अपने विनाश हेतु कटि-बद्ध हो गया है।" मुहम्मद बख्शी[3] ने आकर निवेदन किया कि, "आपने शेख की तो हत्या करा दी। मेरे विषय में किस कारण विलम्ब कर रहे हैं?" मीर्जा ने उसे तसल्ली देकर अपने साथ ले लिया। यादगार नासिर मीर्जा एवं मीर फ़क़ अली इस शोचनीय घटना के विषय में सुनकर कालपी के क्षेत्र से ग्वालियार होते हुए देहली पहुँचे और नगर को दृढ़ बनाने तथा किले की प्रतिरक्षा की व्यवस्था करने लगे। मीर्जा हमीदपुर[4] में, जो फ़ीरोज़ाबाद[5] के समीप है, पहुँचा ही था कि यादगार नासिर मीर्जा एवं मीर फ़क़ अली के शीघ्रातिशीघ्र देहली पहुँचने के समाचार प्राप्त हुए। मीर्जा तथा अमीर लोग परामर्श करके देहली पर अधिकार जमाने के उद्देश्य से रवाना हुए। आसपास के अधिकांश छोटे छोटे जागीरदारों ने उपस्थित होकर मीर्जा के प्रति अभिवादन किया। मीर्जा ने निरन्तर यात्रा करते हुए देहली पहुँचकर उसका अवरोध कर लिया।

१ सम्भवतः देहली की ओर।

२ उसका जन्म १५१९ ई० में हुआ था और ४ मार्च १५१९ ई० को बाबर को उसके जन्म के समाचार प्राप्त हुए। (बाबर नामा, पृ० १०३)।

३ वह बाबर का बड़ा विश्वासपात्र था। (बाबर नामा, पृ० ११८, १५५, १५६)।

४ चामर्स की हस्त लिपि के अनुसार उत्तरी फ़ीरोज़ाबाद के पश्चिम में ८ मील पर उम्मीदपुर अथवा फ़ीरोज़ाबाद से ८ मील दक्षिण पूर्व में मुहम्मदीपुर। यादगार नासिर मीर्ज़ा तथा फ़क़ अली देहली के पश्चिम से रवाना हुये और हिन्दाल पूर्व से। (बेवरिज, पृ० ३३६)।

५ उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में २७°९' उत्तर तथा ७८°२३' पूर्व में आगरा नगर से मैनपुरी के मार्ग पर, आगरा से लगभग २७ मील पूर्व में।

मीर्ज़ा कामरान का सर्व प्रथम देहली और फिर आगरा पहुँचना

यादगार नासिर मीर्ज़ा तथा मीर फ़ख़ अली किले की प्रतिरक्षा हेतु कटिबद्ध हो गए। उन्होंने मीर्ज़ा कामरान को इस घटना की सूचना देकर उससे विद्रोह एवं षडयन्त्र के दमन हेतु पधारने की प्रार्थना की। मीर्ज़ा लाहौर से रवाना हुआ। जब वह सोनपत[1] कस्बे के समीप पहुँचा तो मीर्ज़ा हिन्दाल अपने कार्य को पूर्ण किये बिना राजधानी आगरा की ओर चल खड़ा हुआ। मीर्ज़ा कामरान जब देहली के समीप पहुँचा तो मीर फ़ख़ अली ने उपस्थित होकर मीर्ज़ा के प्रति अभिवादन किया। यादगार नासिर मीर्ज़ा उसी प्रकार किले को दृढ़ रखने का प्रयास करता रहा। मीर फ़ख़ अली ने मीर्ज़ा कामरान को गम्भीर परामर्श दे कर आगरा की ओर भेज दिया। मीर्ज़ा हिन्दाल आगरा में भी न ठहर सका और अलवर[2] चला गया। मीर्ज़ा कामरान ने आगरा पहुँचकर इस्मत किबाब दिलदार आग़ाचा बेगम से प्रार्थना की कि 'आप मीर्ज़ा हिन्दाल को तसल्ली देकर सेवा में बुला लें।' बुद्धिमत्ता के परदा की वह बेगम 'मीर्ज़ा हिन्दाल को अलवर से लाई और उसकी ग्रीवा में कपड़ा लपेटकर मीर्ज़ा कामरान की सेवा में उपस्थित किया। मीर्ज़ा ने उसके प्रति सौजन्यपूर्ण व्यवहार किया। दूसरे दिन उसने षड्यन्त्रकारियों के अपराध को क्षमा करके उन्हें अभिवादन की अनुमति प्रदान की। मीर्ज़ाओं तथा अमीरों ने आपस में मिलकर यमुना नदी इस आशय से पार की कि शेर खां के विद्रोह को शान्त करें किन्तु इन सम्मानित वंश वालों का पथ प्रदर्शन सौभाग्य द्वारा न हो रहा था, अतः उन्हें इस उत्कृष्ट सेवा का सम्मान न प्राप्त हो सका।

हुमायूं तथा उसके अधिकारियों का भोग-विलास

संक्षेप में जब दैवी कृपा से बंगाला प्रदेश स्थायी राज्य के सेवकों को प्राप्त हो गया और उस प्रदेश की राजधानी उत्कृष्ट सेना का केन्द्र बन गई तथा प्रतिष्ठित अमीरों ने बड़ी-बड़ी जागीरें प्राप्त कर ली तो वे भोग विलास में ग्रस्त रहने तथा असावधानी में समय व्यतीत करने लगे। राज्य के उच्च पदाधिकारी शासन प्रबन्ध की ओर बहुत कम ध्यान देते थे। राज्य के षडयन्त्रकारी जिनसे कि यह संसार शून्य नहीं है, षड्यन्त्र रचने एवं अशान्ति फैलाने लगे और वह समय निकट आगया जबकि ऊंघता हुआ षड्यन्त्र अपनी गिरी हुई बरौनी को ऊपर उठाये[3]। सावधानी (१५७) की नीव में विघ्न पड़ गया। इस प्रकार ऐसे समाचार, जिनपर विश्वास किया जा सकता था, भाग्यशाली शिविर तक न पहुँचते थे। यदि किसी विश्वास पात्र को कुछ थोडा-बहुत ज्ञात भी हो जाता तो उसे इतना साहस न होता कि यह उन बातों को शुभ कानों तक पहुँचा सके कारण कि उस समय ऐसी व्यवस्था थी कि पवित्र सभा में कोई कठोर बात न कही जा सकती थी।[4]

१ २९° उत्तर तथा ७७°१ पूर्व, अम्बाला कालका रेल के मार्ग पर देहली के उत्तर में २८ मील पर।

२ २७°४ तथा २८°१४ अक्षांश, तथा ७६°१० और ७७°१४ देशान्तर के मध्य में। (*Rajputana Gazetteers*, Vol III, p 161)

३ षड्यन्त्र प्रारम्भ हो।

४ तारीखे शेरशाही में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है —जब हुमायूं पादशाह शेर खां के, जो रोहतास की पहाड़ियों में था, आगे गये तो शेर खां ने भी अपने उत्तम अमीरों को एकत्र करके कहा कि "हज़रत पादशाह

(पिछले पृष्ठ का फुटनोट)

बनी अव्यवस्थित दशा में है और आगरा की विलायत में षड्यन्त्र हो रहा है अतः वे मुझे पीछे छोड़कर चले जा रहे हैं। यदि मित्रगण उचित समझें तो मैं अपने भाग्य की परीक्षा लूँगा कारण कि हमारी पूरी तैयारी है" ।
जब शेर खाँ को ज्ञात हो गया कि सभी अफगान सहमत हैं और उनमें मुगलों से युद्ध करने का साहस है तो वह रोहतास की पहाड़ियों से बाहर निकला और हजरत पादशाह से युद्ध हेतु रवाना हुआ। प्रत्येक पड़ाव पर कच्ची मिट्टी से गढ़बन्दी कर लेता था और धीरे धीरे थोड़ी थोड़ी यात्रा करता था। जब हजरत हुमायूँ पादशाह ने सुना कि शेर खाँ आ रहा है तो वे भी वापस हो गये और शेर खाँ की तरफ अग्रसर हुए। जब उसने सुना कि हजरत पादशाह पलट पड़े हैं तो शेर खाँ ने प्रार्थना पत्र लिखा कि यदि हजरत पादशाह बंगाला प्रदेश अपने दास को प्रदान कर दें तो मैं पादशाह के नाम का सिक्का चलवा दूँगा तथा खुतबा पढ़वा दूँगा, मैं भी हजरत पादशाह का एक दास हो जाऊँगा। वह स्वयं निरन्तर यात्रा करता हुआ अग्रसर हुआ चौसा एवं सुहया अथवा शनिया या शवहा ग्राम पर नदी के बीच में करख ठहर गया। हस्तलिपियों में यह वाक्य स्पष्ट नहीं। हिन्दुस्तानी नामों से अपरिचित होने के कारण फारसी लिपि में सब नाम अशुद्ध हैं। पहनाये नरिया (अथवा नदी के पार) को अधिकांश हस्तलिपियों में पहनाकर नहीं लिखा गया है। चौसा एवं सुहया अथवा शनिया का कुछ हस्तलिपियों में खुश एवं खरीद तथा कुछ में जुमी लिखा गया है। **तुहफये अकबर शाही** के परवद्धित रूप में जिसे इबराहीम बतनी ने १०८१ हि० (१६१२ ई०) में तैयार किया था यह वाक्य इस प्रकार है —

در معامله دائرهٔ پادشاهی مابین موضع جوسه و بکسر برکنار آب ... دائرهٔ خود را کرده
که هر دو لشکر نزدیک که در کنگ بوده ... وقتی کنگ حوی درمیان هر دو لشکر ... که
کرانهٔ آن جوی ... چنانکه ... معین نمی توان گذشت و خلاب و گل ولای ... آن جوی
چنان بود که اسپ و آدم و شتر ... در آنجا ... حوکی هر دو لشکر برکنار آن جوی
نشستند

[पादशाही शिविर के समक्ष चौसा एवं बक्सर के मध्य में स्थित सुन्या नामक ग्राम में उसने (शेर खाँ ने) अपने शिविर इस प्रकार लगाये कि दोनों सेनायें गंगा नदी के एक तट पर उतर पड़ीं। गंगा को छोड़कर दोनों लश्करों के मध्य में एक नहर (नदी) था जिसके किनारे इतने बुलन्द थे कि बिना निश्चित घाट के वह पार न किया जा सकता था। उस नदी में इतना अधिक कीचड़ एवं दलदल था कि घोड़े, आदमी एवं ऊँट उसमें फँस जाते थे। दोनों लश्करों की चौकियाँ (पहरे) उस नहर (नदी) के किनारे बैठ गयीं। (बाडलीयन लाइब्रेरी इलियट की हस्तलिपि नं० ३७२ एवं कम्ले की हस्तलिपि पेज ७८]। नदी का पाट २५ गज था। उसने ख्वास खाँ को भी जिसे उसने (लईन—पिशाच) महावतों के विरुद्ध नियुक्त कर दिया था बुलवा लिया। शेर खाँ ने जो अपनी सीमा के आगे बढ़कर धृष्टता प्रदर्शित करते हुए पादशाह के मुकाबले में नदी के बीच में किये ठहरा था (हजरत पादशाह ने) आदेश भेजा कि यदि उसे पादशाही सम्मान का ध्यान है तो वह पीछे हट जाये और नदी का घाट छोड़ दे ताकि हम नदी पार करके शेर खाँ का दो तीन मंजिल तक पीछा करें तदुपरान्त वापस चले जायें। शेर खाँ ने शर्त स्वीकार कर ली। नदी का घाट छोड़कर पीछे हट गया। हजरत पादशाह ने नदी पर पुल बंधवाया और शिविर को छोड़कर एवं अपने परिवार तथा अपना लश्कर लेकर नदी पार की। पादशाही सरापर्दा लगवाया। कुतुबे आलम शेख फरीद शकरगंज की सन्तान शेख खलील को हजरत हुमायूँ पादशाह ने दूत बनाकर शेर खाँ के पास इस आशय से भेजा कि शेर खाँ से कह दो कि वह निरन्तर यात्रा करता हुआ रोहतास की ओर चला जाय और कहीं भी न ठहरे। हजरत पादशाह कुछ मंजिलों तक उसका पीछा करके लौट जायेंगे तदुपरान्त बंगाले की जागीर का फरमान जिसका वचन दिया है शेर खाँ के प्रतिनिधियों को प्रदान कर देंगे। जब शेख खलील शेर खाँ के पास पहुँचा तो हजरत पादशाह ने जो कुछ शेर खाँ से कहा था वह उसने उसे बता दिया। शेर खाँ ने सिक्खाने की हजरत पादशाह का आदेश स्वीकार कर लिया और (शेख के) आदर सम्मान

हुमायूं की वापसी

शनै: शनै: जब हिन्दुस्तान के विद्रोह के समाचार राज्य के वास्तविक शुभचिन्तकों द्वारा, जो अपने हित पर दृष्टि न रख कर सत्य बात की चर्चा कर देते हैं, ज्ञात हुए तो हजरत जहाँबानी ने राज्य के उच्च पदाधिकारियों को बुलवाकर वापसी का संकल्प कर लिया। यद्यपि वर्षा की अधिकता के कारण समस्त भूमि जल मग्न हो गई थी और नदियों के पानी में तूफान उठ रहा था और वह समय युद्ध हेतु प्रस्थान के लिए यद्यपि उपयुक्त न था तथापि आवश्यकतावश वापसी को राज्य

सेवा एवं आतिथ्य में कोई कसर न उठा रखती। दूसरे दिन शेख खलील ने बादशाही आदमियों के सामने संधि के विषय में अत्यधिक उपदेश दिये बात चीत के समय शेख खलील के मुँह से यह बात निकली कि, "यदि तू संधि नहीं करता तो उठ युद्ध कर और लड़।" शेर खां ने कहा 'हजरत का यही वाक्य मेरे लिए बड़ा शुभ फाल है। ईश्वर ने चाहा तो मैं युद्ध करूँगा।' बंगाल का अत्यधिक धन एवं वस्त्र शेख खलील को प्रदान किये और उसके हृदय के पक्षी को अपने उपकार के जाल में फँसा लिया। तदुपरान्त उसने शेख खलील को एकान्त में बुलवाया और कुतुबे आलम शेख फरीद शकरगंज के वंश के प्रति अफ़ग़ानों की निष्ठा का उल्लेख किया और उसे अफ़ग़ानों तथा उसके एक ही विलायत का होने के कारण लज्जा दिलाते हुए उसकी इच्छानुसार आश्वासन दिला कर उससे कहा कि "मैं आप से बादशाह से संधि तथा युद्ध के विषय में परामर्श करता हूँ।" शेख ने अत्यधिक सोच विचार के उपरान्त कहा "मुझसे परामर्श करने के कारण तूने मेरे लिये दो कठिनाइयाँ खड़ी कर दी हैं। एक यह कि हजरत हुमायूँ बादशाह ने मुझे दूत बनाकर तेरे पास भेजा है। यह उचित नहीं कि उनके राज्य के हित के विरुद्ध मैं कोई बात कहूँ। दूसरे यह कि तू मुझसे परामर्श के रूप में पूछ रहा है। बुज़ुर्गों ने कहा है कि 'यदि शत्रु परामर्श करे तो जो बात सत्य हो वही कहनी चाहिये।' अफ़ग़ान अपने पूर्वजों के समय से इस वंश (शेख फरीद गंजशकर) के भक्त हैं। यदि मैं जो उचित है उसके विरुद्ध कुछ कहूँ तो बेईमानी करूंगा। हजरत मुहम्मद ने यही बात कही है अतः आवश्यकतावश जो बात सच है वह मैं तुमसे कहता हूँ कि 'तेरे लिये हजरत बादशाह से संधि की अपेक्षा युद्ध करना अच्छा है कारण कि उनकी सेना में अत्यधिक अव्यवस्था फैली है। घोड़े तथा अस्त्र शस्त्र नहीं रह गये हैं। उनके भाइयों ने भी विद्रोह प्रारम्भ कर दिया है। वे आवश्यकतावश संधि कर रहे हैं। अन्त में वे इस संधि पर दृढ़ न रहेंगे। अवसर को हाथ से जाने न देना चाहिये। ऐसा अवसर फिर न प्राप्त होगा।'" शेर खां संधि के विषय में असमंजस में था। जब शेख खलील ने युद्ध हेतु प्रेरित किया तो शेर खां ने संधि के विषय में मना कर दिया और वह युद्ध की योजना बनाने लगा। उसने ख्वास खां को, जिसे महारता के विरुद्ध थोड़ी सी सेना सहित नियुक्त किया था, बुलवाया। जब ख्वास खां उसके शिविर में पहुँचा तो उसने आदेश दिया कि समस्त सेना अस्त्र शस्त्र धारण करके सवार हो जाय मानो महारता (डाउसन के अनुसार भरत, डाउसन पृ० ४८४) युद्ध हेतु आ रहा हो। जब (शेर खां का) लश्कर पड़ाव से ३-४ कुरोह आगे निकल गया तो उसने आदेश दिया कि वापस आ जाओ। वह (महारता) अभी दूर है। दूसरे दिन भी वह पूरी तैयारी करके सवार हुआ और कुछ कुरोह जाकर लौट आया और कहा कि वह आज भी न आया। जब आधी रात रह गई तो उसने अपने समस्त अमीरों को बुला कर उनसे कहा, "मैं संधि का खंडन तथा ईश्वर की कृपा पर भरोसा करके बादशाह से युद्ध करता हूँ।" (**तारीखे शेरशाही** डा० परमात्मा शरण की हस्तलिपि, पृ० १४० १५०, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की हस्तलिपि पृ० १३१ १४०, अलीगढ़ विश्वविद्यालय हस्तलिपि, पृ० १४८ १५६, इलियट, डाउसन न० ३७१)।

की रक्षा के हित में परमावश्यक समझा गया। वे बंगाला प्रदेश जाहिद बेग[1] को सौंप रहे थे किन्तु उस अभागे ने प्राचीन सेवकों[2] के समान मिथ्यापूर्ण विचार प्रस्तुत करके विनाशकारी गर्व का प्रदर्शन किया और दुर्भाग्यवश भागकर मीर्ज़ा हिन्दाल के पास पहुँचा। हजरत जहाँबानी ने बंगाले का शासन प्रबन्ध जहाँगीर कुली बेग को प्रदान करके एक बहुत बड़ी सेना उसकी सहायतार्थ नियुक्त की और बीच वर्षा[3] में वापसी की लगाम मोड़कर राजधानी (आगरा) की ओर रवाना हुए।

शेर शाह की योजनाएँ

शेर खाँ ने जब शाही सेना के लौटने एवं मीर्ज़ा लोगों के राजधानी आगरा से प्रस्थान के समाचार सुने तो वह जौनपुर छोड़कर रोहतास की ओर रवाना हुआ। उसने यह निश्चय किया कि यदि उत्कृष्ट पताकायें उसके विरुद्ध आयें तो वह युद्ध न करके झारखंड के मार्ग से, जिधर से वह आया था, पुनः वापस होकर बंगाले[4] की ओर प्रस्थान करे। यदि ऐसा न हो[5] और शाही सेना राजधानी की ओर प्रस्थान करे तो अवसर मिलते ही वह उसका पीछा करे और रात्रि में छापा मारे। जब हजरत जहाँबानी की सम्मानित सेना तिरहुट[6] पहुँची तो शेर खाँ, शाही लश्कर की संख्या की कमी एवं उत्कृष्ट शिविर की अव्यवस्था से अवगत होकर शेरक[7] हो गया और अत्यधिक सशस्त्र सेना सहित रवाना हुआ। वह सेना के आस पास के स्थान अपने अधिकार में करने लगा। किसी को भी शत्रु की धूर्तता का कोई भी पता न चल पाता था।

हुमायूँ का शेर शाह से युद्ध हेतु प्रस्थान

इब्ने अली करावल बेगी[8] आकर निश्चित समाचार लाया और मीर्ज़ा मुहम्मद ज़मान द्वारा वास्तविक स्थिति का हजरत जहाँबानी को ज्ञान कराया। यद्यपि उत्कृष्ट सेना गंगा नदी पार करके राजधानी की ओर प्रस्थान कर रही थी किन्तु जब शेर खाँ के भाग्यशाली शिविर के समीप पहुँच

१ यह हुमायूँ की प्रिय पत्नी बेगा बेगम अथवा हाजी बेगम की बहिन का पति था।
२ पाठकगण देखेंगे कि अबुलफ़ज़्ल बार बार प्राचीन सेवकों पर चोट करता है। इस बात का उसकी राजनीति के सिद्धान्तों के विकास में बड़ा हाथ था।
३ "यह वाक्य स्पष्ट नहीं। यहाँ ९४६ हि० की वर्षा से तात्पर्य नहीं कारण कि चौसा का युद्ध २७ जून १५३९ ई० के पूर्व न हुआ। वहाँ हुमायूँ दो तीन मास तक निवास कर चुका था। मेरा विचार है कि हुमायूँ गौड़ से १५३८ ई० की वर्षा के उपरान्त अर्थात् सितम्बर या अक्तूबर में रवाना हुआ था और अभी पूर्ण रूप से देश सुख न सका था। यदि यह ठीक है तो उसने बड़े धीरे धीरे यात्रा की होगी।" (बेवरिज भाग १, पृ० ३४१, नोट न० १)।
४ गौड़।
५ यदि हुमायूँ की सेना उसका पीछा न करे।
६ कुछ हस्तलिपियों में 'नरहन' किन्तु दोनों में से कोई ठीक नहीं। दोनों बहुत दूर पूर्व में थे। प्राइस के अनुसार 'पुरतु', जिसके विषय में उसका विचार है कि 'पटना' होगा। चामर्स की हस्तलिपि के एक पेंसिल के नोट के अनुसार 'पूरनिया'। सम्भवतः यही ठीक हो। (बेवरिज, पृ० ३४१ नोट न० २)।
७ छोटा शेर। इस शब्द का प्रयोग शेर शाह के नाम की अनुरूपता से किया गया है।
८ मुख्य करावल, वह अधिकारी जो शत्रुओं का पता लगाने के लिये छोटे-छोटे दल भेजता था।

जाने के समाचार प्राप्त हुए तो पादशाही क्रोध की अग्नि भड़क उठी और पूर्ण ऐश्वर्य एवं वैभव से उन्होंने अपने ध्यान की लगाम उस ओर मोड़ी। यद्यपि उनसे बड़ा आग्रह किया गया कि ऐसे अवसर पर जब भाग्यशाली सेना की कीचड़ इत्यादि में बड़ी लम्बी यात्रा करने के कारण शोचनीय (१५८) दशा हो गई है, निश्चित संकल्प को छोड़ कर शत्रु की ओर मुड़ना और शीघ्रता के कदमों से रणक्षेत्र की ओर अग्रसर होना उचित नहीं है अतः राज्य के हित में यही उचित होगा कि किसी स्थान पर पड़ाव कर दिया जाय और सेना की व्यवस्था करके षड्यन्त्र का दमन किया जाय तथापि हजरत जहाँबानी ने इन बातों की ओर ध्यान न दिया और गंगा नदी पार करके शत्रुओं की ओर प्रस्थान किया।

हुमायूं की पराजय की समीक्षा

यह बात जान लेनी चाहिये कि यह प्राचीन प्रथा एवं दृढ़ नियम है कि जब भाग्य के राज्य के अनुभवी अधिकारी किसी को कोई बहुमूल्य वस्तु प्रदान करते हैं तो पूर्व से ही असफलता के द्वार खोलकर उसे कष्ट के कोलाहल में डाल देते हैं जिससे समृद्धि उस अद्वितीय मोती को अभिमानी न बना दे और वह उस कष्ट का उपचार करते हुए संयम से कार्य करे। इस प्रकार जब दुनिया वालों के प्रकाशदायक नक्षत्र ने, जो काबूली बहादुर[1] के वक्षस्थल से नश्वर संसार के बुद्धिमानों को प्रकट हो चुका था और जिसकी प्रतीक्षा की जा रही थी, उदय होने का समय निकट आया तो उसके पूर्व यदि कुछ निराशा प्रकट हो तो दूरदर्शी एवं बुद्धिमान् लोगों के विचारशील मुख में किसी प्रकार की कोई खरोंच नहीं लगती। अतः ऐसी सेना को जो विश्व विजय कर सकती थी, कुछ काले हृदय के अफगानों द्वारा, जिनके मुँह भी न धुले थे, ऐसी दुर्घटना का सामना करना पड़ा[2]।

हुमायूं की सेना का शेर शाह की सेना से प्रारम्भिक युद्ध

इस प्रकार उत्कृष्ट सेना ने राज्य के उच्च पदाधिकारियों के परामर्श के विरुद्ध अफगानों की ओर प्रस्थान किया। भोजपुर[3] के समीप विहिया नामक ग्राम में शेर खाँ से आमना सामना हुआ। वहाँ कर्मनाश[4] नामक एक अभागी नदी है। यह दोनों सेनाओं के मध्य में थी। शाही सेना ने नदी पर

१　तीमूर के पूर्वजों में दादा की ओर से नवें। अबुलफ़जल ने **अकबर नामा** में उनके वक्षस्थल से एक सितारे के उदय होने की कहानी लिखकर उस सितारे के प्रकाश को अकबर से सम्बन्धित किया है। (**अकबर नामा** भाग १, पृ० ६८ ७०)।

२　इसका तात्पर्य यह है कि क्योंकि हुमायूं को अकबर सरीखा पुत्र प्रदान होने वाला था अतः इतनी महान् देन के प्राप्त करने के पूर्व उसे असफलता का सामना करना पड़ा।

३　बक्सर सब डिवीजन, (शाहाबाद, बिहार) में डुमराँव नामक स्थान से दो मील उत्तर में।

४　मूल ग्रन्थ में 'कम्नास'। बाबर ने लिखा है कि "हिन्दू लोग इस नदी के जल के विषय में बड़ी विचित्र बातें करते हैं। वे इसे पार नहीं करते। वे इसके दहाने के पास नौका द्वारा गंगा पार करते हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि यदि किसी से इस नदी का जल छू जाय तो उसका कर्म नष्ट हो जाता है। इसी विश्वास के कारण इस नदी का यह नाम पड़ गया।" (बाबर नामा, पृ० ३१५-३१६)। यह नदी कैमूर की पहाड़ियों से सरोदय से, जो रोहतासगढ़ से १८ मील पश्चिम में है, निकलती है। यह सर्वप्रथम उत्तर पश्चिम की ओर बहती है और दरौली के समीप शाहाबाद (बिहार) तथा मिर्ज़ापुर को अलग करती हुई उत्तर में बहती चली जाती है।

पुल बाँधकर उसे पार किया। यद्यपि पादशाही सेना थोडी तथा बडी अव्यवस्थित दशा मे थी किन्तु दोनो ओर के करावलो मे युद्ध होता रहता था और विजयी सैनिकों को सफलता प्राप्त होती रहती थी[1]। हर ओर से अफगानो की हत्या हुआ करती थी यहा तक कि साधारण युद्धो एव झडपो में बहुत समय व्यतीत हो गया।

हुमायूं की पराजय

सम्मानित भाई, जिनमे से प्रत्येक एक इकलीम[2] की विजय हेतु पर्याप्त था, अल्पदर्शिता एव असम्भव विचारो मे अपने सौभाग्य के मार्ग का पत्थर बनाये रहे। वे सगठन के सौभाग्य द्वारा सम्मानित न हुए और ऐसे कठिन अवसर पर उनका सौभाग्य उन्ह सेवा का महत्व न समझा सका। यद्यपि चेतावनी युक्त आदेश पहुँचते रहते थे किन्तु इन फौलादी हृदय वालो पर उन

मिर्जापुर से १८ मील पर यह उत्तर पूर्व की ओर मुड जाती है और शाहाबाद को बनारस तथा गाजीपुर से पृथक करती है। यह चौसा के समीप गगा नदी में मिलती है।

१ तारीखे शेरशाही में शेर शाह एव हुमायूं के युद्ध का हाल बडे सक्षिप्त रूप में दिया गया है (शेर खा) ने अफगानों को विदा करते समय कहा, "तैयारी करके सवार हो, मानो हम महारता के कारण चिन्तित हों। जब एक पहर रात रह जाय तो प्रस्थान करो।" शेर खां के आदेशानुसार समस्त सेना सवार हुई। महारता के राज्य की ओर लगभग ढाई कुरोह तक बढती चली गई। तदुपरान्त ठहर गई। शेर खा ने अफगानों से कहा, "मैं दो दिन जो सवार होकर गया तो मेरा उद्देश्य यह था कि हजरत पादशाह को असावधान कर दूं ताकि वे इस बात को न समझ सकें कि हमारा लश्कर उनकी ओर आ रहा है। अब वापस हो जाओ और हजरत हुमायू की सेना की ओर मुख करो। अफगानो की मर्यादा को नष्ट न होने दो और शत्रु के प्राण लेने में कोई कसर न उठा रक्खो, कारण कि देश पर विजय प्राप्त करने का यही अवसर है।" अफगानो ने निवेदन किया कि, "हजरत आला किसी प्रकार की शका न करें कारण कि आजकल आपके नित्य प्रति उन्नत भाग्य एव शुभ प्रताप से अफगानो की पारस्परिक फूट का पूर्णत अन्त हो गया है। उन्हें अब मुगुलों की तलवार का कोई भय नहीं।" वह फातेहा पढकर तथा सेनायें सुव्यवस्थित करके शीघ्रातिशीघ्र पादशाह के लश्कर की ओर रवाना हुआ। जब अफगान लोग हजरत पादशाह के शिविर के समीप पहुँचे तो हजरत पादशाह को ज्ञात हुआ कि शेर खा पूर्ण तैयारी करके युद्ध हेतु आ रहा है। पादशाह ने अपने लश्कर को आदेश दिया कि वे भी निकलकर अफगानो से युद्ध करें, "मैं भी वजू करके आता हूँ।" शेर खा को युद्ध में जिस छल धूर्तता, धोखेबाजी एव चालाकी की आवश्यकता होती है, ज्ञात थी। वह युद्ध में प्रविष्ट होने (प्रारम्भ करने) एव युद्ध को त्याग देने के विषय में अवगत था। जमाने का सर्द व गर्म आजमाये हुए था। अभी तक मुगुल लोग अपने शिविर से निकले भी न थे, कि अफगान लोग वहाँ पहुँच गये। जब अफगानों ने मुगुलों की सेना देखी तो वे नि सकोच मुगुल सेना में प्रविष्ट हो गये और पलक झपकाते मुगुलो की सेना को पराजित कर दिया। अभी हुमायू पादशाह वजू कर भी न चुके थे कि समाचार प्राप्त हुए कि मुगुलों की सेना पराजित हो गई। सैनिक छिन्न भिन्न हो गये हैं और सगठन नहीं हो सकता। शत्रु इस प्रकार उनके लश्कर में प्रविष्ट हो गये थे कि उन्हें अपने परिवारों को अपने साथ ले जाने का अवसर न मिल सका। वे आगरा की ओर लौट गये ताकि आगरा जाकर सेना की व्यवस्था करके शत्रु को छिन्न भिन्न कर सकें। (**तारीखे शेरशाही** : डा० परमात्मा शरण की हस्त लिपि, पृ० १५०-१५२, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की हस्तलिपि, पृ० १४१-१५२; इलियट, बाडली-एन न० ३७१)।

२ जल-वायु के प्रदेश। मध्यकालीन भूगोल वेत्ताओं के अनुसार ससार सात इकलीमों में विभाजित माना जाता था।

अलवाहे इलाही[1] का कोई प्रभाव दृष्टिगत न होता था। शेर खा धूर्ततापूर्वक कभी प्रभावशाली व्यक्तियो को उत्कृष्ट दरबार में भेजकर सधि के द्वार खुलवाता और कभी युद्ध के कुविचारो को अपनी कल्पनाओं के मैदान मे दौडाया करता था, यहाँ तक कि उसने छल एव धूर्ततापूर्वक पदातियो की एक सेना एव ऐसे लोगो को जो किसी योग्य न थे, तोपखाने की सामग्री सहित सामने छोडकर स्वय दो मजिल पीछे जाकर पडाव किया। पादशाही सेनाएँ जो सर्वदा विजयी रहा करती थी, उस धूर्त के छल को समझ न सकी। उन्होने उनका पीछा करते हुए पडाव किया। जब कोई कार्य नियति के अनुसार पूरा होने वाला होता है तो कार्यकुशल लोगो द्वारा (१५९) असावधानी प्रकट हो जाती है। इस प्रकार पहरे की ओर से उन लोगो ने अत्यधिक उपेक्षा की। एक रात्रि मे जब मुहम्मद जमान मीर्जा का पहरा था, उसने बडी असावधानी प्रदर्शित की। वह धूर्त[2], जो अवसर की घात में था, रात्रि मे धावा मारकर प्रात काल शाही शिविर के पीछे उपस्थित हो गया। उसकी सेना तीन दलों मे विभाजित थी। एक दल उसके अधीन, एक जलाल खा तथा एक ख्वास खा के अधीन था। शाही सेना को अपने घोडो पर जीन कसने तथा अस्त्र शस्त्र धारण करने का अवसर भी न मिला। हजरत जहाँबानी सेना की असावधानी की सूचना पाकर भाग्य के कारखाने का लिखा देखकर चकित रह गये। उपाय का अब कोई अवसर शेष न था। जब वे सवार होने लगे तो बाबा जलायर, तथा कूच बेग[3] सेवा मे उपस्थित हुए। शाही आदेश हुआ कि वे शीघ्र जाकर सम्मानित हाजी बेगम[4] को ले आयें। उन दोनो निष्ठावानो ने बेगम के खेमे के द्वार पर शहादत का स्वादिष्ट प्याला पी लिया। मीर पहलवान बदख्शी तथा एक अन्य समूह ने भी सरापरदये इस्मत[5] के समीप प्राण न्योछावर कर दिये। समय जरा भी न था। बेगम बाहर न आ सकती थी। किन्तु दैवी रक्षा एव हिफाजत उनकी जमानत किये हुए तथा उनकी पहरेदार थी अत दुर्भावना वाला के कुविचारो की आँधी न तो उनके सतीत्व एव उनकी पवित्रता के मैदान तक पहुँच सकती थी और न दुष्टा के हृदय का कुहरा सतीत्व के परदे के हाशिये[6] पर बैठ सकता था[7]। दैवी आत्माओ ने पवित्रता के प्रतिष्ठित स्थान से सम्मान के हाजिबो[8] के

१ लौह अथवा लौहुल महफूज "सुरक्षित तख्ती"। हदीसों एव इस्लाम के धार्मिक ग्रन्थो में इसका आशय उस तख्ती से है जिसमें मनुष्य के भाग्य सम्बन्धी दैवी आदेश लिखे जाते है कुरान शरीफ में इसकी चर्चा केवल एक स्थान पर हुई है जहाँ इसका प्रयोग कुरान शरीफ के लिये ही हुआ है। यहाँ हुमायूँ के फरमानों के लिये 'अलवाहे इलाही' कहा गया है।

२ शेर शाह।

३ मूल ग्रन्थ में इस स्थान पर 'बाबा जलायर, तरदी बेग एव कूच बेग' है किन्तु शुद्धि पत्र में केवल 'बाबा जलायर एव कूच बेग' है परन्तु कुछ हस्तलिपियों में तरदी बेग व कूच बेग को एक ही व्यक्ति बताया गया है।

४ यादगार तगाई की पुत्री। उसकी युवावस्था में हुमायूँ उससे अत्यधिक प्रेम करता था और वह उसकी मुख्य मलका थी। अकबर भी उसका बडा आदर सम्मान करता था

५ "सतीत्व [illegible] खेमे" अर्थात् हाजी बेगम के खेमे के समीप।

६ "हवाशिये सरादेकाते इस्मत पर्दंगियाने जाह व जलाल।"

७ इसका तात्पर्य यह है कि किसी में इतना साहस न था कि उन्हें कोई हानि पहुँचा सके।

८ वे दरबार में बादशाह तथा दरबारियों के मध्य में खडे होते थे और उनकी आज्ञा बिना कोई सुल्तान तक या बादशाह तक न पहुँच सकता था। समस्त प्रार्थना पत्र उन्हीं के द्वारा बादशाह की सेवा में प्रस्तुत किये जाते थे।

दरवाश[1] द्वारा, बेगमा[2] की रक्षा कराई और उन दुष्टों के हृदय में कोई कुविचार न आया। शेर खाँ ने उस इस्मत क़िबार[3] का बड़ी सावधानी से एवं परदे पर ध्यान देते हुए बड़े सम्मान से रवाना कर दिया[4]।

हुमायूँ का पलायन तथा निज़ाम सक्का द्वारा सहायता

संक्षेप में, जब हज़रत जहाँबानी पुल की ओर रवाना हुए तो पुल को टूटा हुआ पाया। विवश होकर घोड़े पर सवार तैरने वाले घड़ियालों के समान नदी में कूद पड़े। भाग्यवश वे घोड़े से पृथक् हो गए। किन्तु इसी बीच में इस कारण कि परमेश्वर उनका रक्षक था, एक सक्का उनके मार्ग का ख़िज़्र[5] बन गया और उसने अपनी मशक के सहारे से उन्हें विनाश के भँवर से मुक्ति के तट तक पहुँचा दिया। हज़रत (जहाँबानी) ने इस बीच में उससे पूछा, "तेरा नाम क्या है?" उसने निवेदन किया कि, 'निज़ाम'। हज़रत (जहाँबानी) ने कहा, 'निज़ाम औलिया[6]?' उन्होंने उसके प्रति दया एवं कृपा प्रदर्शित करते हुए वचन दिया कि 'जब मैं राज सिंहासन पर कुशलता-पूर्वक आरूढ़ हो जाऊँगा तो आधे दिन तक तुझे पादशाह बनाऊँगा।' यह शोचनीय दुर्घटना ९ सफ़र ९४६ हि० (२६ जून १५३९ ई०)[7] को गंगा तट पर चौसा के घाट पर दुर्भाग्यवश घटी।

१ वह ख़्वाजा जिसमें हाजिब भीड़ को बादशाहों के समीप से हटाते थे।
२ मूल में "पर्दा नशीनाने खिलवत ख़ानये इस्मत (स्मीत के खिलवत ख़ाने की पर्दा नशीन स्त्रियाँ)"।
३ बेगम से तात्पर्य है
४ मैंने, जो तुहफ़ये अकबर शाही का संकलनकर्ता अब्बास अहमद सरवानी हूँ, मसनद आली ईसन खाँ बिन मसनद आली उमर ख़ाँ सरवानी के पुत्र ख़ाने आज़म मुज़फ़्फ़र खाँ सरवानी से सुना है, 'मैं शेर खाँ के पास खड़ा था कि हज़रत बेगम राबिआ (यह नाम नहीं अपितु उपाधि है) हुमायूँ पादशाह की मलका को स्त्रियों के समूह के साथ लाया गया। जब शेर खाँ की दृष्टि उन पर पड़ी तो उसने घोड़े से उतरकर उनके प्रति आदर सम्मान प्रदर्शित किया और वज़ू करके ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये शुकराने की दो रकात नमाज़ पढ़ी तदुपरान्त नक़ीबों को आदेश दिया कि लश्कर में घोषणा कर दी जाय कि कोई भी मुग़लों की स्त्रियों एवं बालकों को बन्दी न बनाये और न रात्रि में अपने शिविर में रक्खे। सबको बेगम साहबा के सरापर्दे में पहुँचा दें। उसके आदेश का आतंक अफ़ग़ानों पर इतना अधिक छा गया था कि किसी को भी विरोध करने अथवा आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस न था। नक़ीब लोग रात भर मुग़लों के समस्त परिवारों को बेगम के सरापर्दे के समीप पहुँचाते रहे और प्रत्येक की आवश्यकतानुसार उसके लिये ख़ुराक निश्चित कर दी गई। कुछ दिन उपरान्त बेगम को हुसेन खाँ के साथ रोहतास की ओर तथा मुग़लों के परिवार को व्यय देकर आगरा की ओर भेज दिया।' (तारीख़े शेरशाही डा० परमात्मा शरण की हस्तलिपि, पृ० १५२-१५३, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की हस्तलिपि, पृ० १४३-१४३, अलीगढ़ विश्व विद्यालय हस्तलिपि, पृ० १६२-१६४, इलियट, बाडलीयन न० ३७१)।
५ मुसलमानों के विश्वासानुसार एक पैग़म्बर जो उन लोगों को, जो मार्ग भूल जाते हैं, मार्ग दर्शाते हैं
६ सुल्तानुल मशायख़ शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया का जन्म बदायूँ में १२३६ ई० में हुआ किन्तु वे कुछ समय उपरान्त देहली पहुँच गये और वहीं १३२५ ई० में उनकी मृत्यु हो गई। उनके समय के अनेक विद्वान् उनके शिष्य थे। अमीर ख़ुसरो उनका बहुत बड़ा भक्त था। हिन्दुस्तान में वे बहुत ही आदर की दृष्टि से देखे जाते रहे बाबर ने भी देहली में प्रविष्ट होने के पूर्व सर्वप्रथम उनके मज़ार के दर्शन किये। (बाबर नामा, पृ० १५८ १९९)।
७ बेवरिज के अनुवाद में ७ जून १५३९ ई०, जो ठीक नहीं।

हुमायूं का आगरा पहुँचना

मीर्जा मुहम्मद जमान, मौलाना मुहम्मद परगली[१], मौलाना कासिम अली सद्र, मौलाना जलाल तत्तवी[२], तथा बहुत से अमीर एवं विद्वान् विनाश के समुद्र में डूब गए। हजरत जहाँबानी, (१६०) मीर्जा अस्करी तथा कुछ थोड़े से लोग बड़ी तीव्र गति से यात्रा करते हुए राजधानी आगरा पहुँचे। मीर्जा कामरान उत्कृष्ट चौखट चूमकर सम्मानित हुआ। कुछ दिन उपरान्त मीर्जा हिन्दाल, अपनी माता एवं कामरान के मध्यस्थ होने के कारण सिर झुकाये लज्जित, अलवर से (आकर) सेवा में उपस्थित हुआ। हजरत जहाँबानी ने अपनी स्वाभाविक कृपा के कारण उसे सम्मानित करके उसके अपराधों को क्षमा कर दिया और मनुष्य के अनुमान से परे अपार उदारता का प्रदर्शन करते हुए व्यवहार किया।

हुमायूं का निजाम सक्का को आधे दिन के लिये बादशाह बनाना

क्योंकि दुर्भाग्यवश अचानक एक ऐसी दुर्घटना घट गई जिसका उपचार सम्भव न था अतः वे उस हानि की पूर्ति में व्यस्त हो गए और अस्त्र-शस्त्र एवं सामग्री की व्यवस्था करने लगे। राज्य की विभिन्न दिशाओं से अमीर तथा सैनिक उत्कृष्ट चौखट के चुम्बन द्वारा सम्मानित हुए। इसी बीच में पवित्र हृदय वाला सक्का सम्मानित वचनानुसार ऐश्वर्य के राजसिंहासन के पायों में उपस्थित हुआ। हजरत जहाँबानी ने, जो उदारता एवं सौजन्य के राज्य के मुकुट एवं सिंहासन का वितरण करने वाले थे, दरिद्र सक्के को दूर से देखा। तत्काल वचन के उस बादशाह ने उसे सच्चाई के राजसिंहासन पर स्थान दिया। उन्होंने सल्तनत के तख्त को उस 'मार्ग के खिज्र" के लिए खाली करके सक्के को प्रतिज्ञानुसार आधे दिन तक सिंहासनारूढ़ किया और उसे नीमरोज[३] के मुल्क के सिंहासन के अधिकारी के बराबर बना दिया। कुछ पादशाही आदेशों के अतिरिक्त जिसकी उसमें योग्यता न थी उसे सभी शासन सम्बन्धी आदेशों का अधिकार दे दिया। दान-पुण्य की लहरें मारते हुए समुद्र की सहायता द्वारा उसकी स्थिति एवं दशा के मुख से दरिद्रता की धूल को दूर कर दिया। सक्के ने जो आदेश अपनी बादशाही के समय शाही तख्त से दिए उन्हें चालू रहने दिया। मीर्जा कामरान ने इतनी अधिक उदारता के प्रदर्शन की अत्यधिक निन्दा की और उसके कष्ट पहुँचाने वाले हृदय ने इस बात को भी (कष्ट का) एक बहाना बना लिया।

अफगानों द्वारा बंगाल पर अधिकार

इस धूर्तता से परिपूर्ण घटना के उपरान्त शेर खाँ ने बंगाले पर आक्रमण करने का

१ कुछ पोथियों में 'शेर अली' और कुछ में 'पीर अली'।
२ थट्टा के।
३ नीमरोज का अर्थ मध्याह्न अथवा दिन का आधा भाग होता है। यह सीस्तान का एक प्रान्त है और सूर्य को भी नीमरोज कहते हैं। क्योंकि वह आधे दिन के लिये बादशाह बनाया गया था, अतः अबुलफ़जल ने ऐसे शब्द का प्रयोग किया है जिससे कई अर्थ निकल सकते हैं।

संकल्प किया और बिहार की सीमा तक पहुँचकर ठहर गया[१]। जलाल खाँ को षड्यन्त्रकारियों की

१ तारीखे शेरशाही में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है शेर खाँ ने स्वयं हजरत हुमायूं का पीछा किया और कन्नौज तथा कालपी तक के प्रदेश अपने अधिकार में कर लिये। ख्वास खाँ को महारता हारदा (इलियट में चरूह, होडावाला के अनुसार भारत) के विरुद्ध नियुक्त किया ताकि वह उसे नष्ट भ्रष्ट कर दे। जहाँगीर कुली बेग को, जो छ हजार अश्वारोहियों सहित बंगाला में था, हत्या करा दी। हिन्द के जो प्रतिष्ठित आदमी हुमायूं पादशाह की सेना के साथ थे, उन्हें चला जाने दिया। शेख खलील को उसने अपने पास रोक लिया और उसे अपना विश्वास पात्र तथा परामर्शदाता बना लिया। मसनद आली ईसा खाँ ख्वासपुर सरवानी को गुजरात एवं मन्दू की ओर भेज दिया और उस प्रदेश के हाकिमों को लिखा कि, "मैं अपने एक पुत्र को उस क्षेत्र में भेजूँगा। जब हजरत हुमायूं पादशाह कन्नौज की ओर प्रस्थान करें तो तुम लोग मेरे पुत्र के साथ पहुँचकर आगरा तथा देहली पर आक्रमण करना और उसे नष्ट भ्रष्ट कर देना।" उन दिनों मन्दू, उज्जैन एवं सारंगपुर में मल्लू खाँ नामक एक व्यक्ति, जिसने अपना नाम कादिर शाह रख लिया था, सल्तनत का दावा कर रहा था। रायसेन एवं चन्देरी में राजा प्रताप बिन भूपत शाह (बिन सलाहुद्दीन की ओर से भैया पूरनमल राज्य कर रहा था। राजा प्रताप) उसका भतीजा था। राना की अवस्था बड़ी कम थी। सेवास में सिकन्दर खाँ मियाना राज्य कर रहा था और भूपाल महेसर (महेशुर अथवा महेशुरी) का राजा था। (देखिये होडीवाला, पृ० ४५५-४५६)। मन्दू प्रदेश (मालवा) के हाकिमों ने उत्तर भेजा कि, "जब हजरत आला का पुत्र इस क्षेत्र में पहुँचेगा तो हम उसकी सहायता एवं सेवा करने में कोई कसर न उठा रखेंगे।" किन्तु मल्लू खाँ ने अपने पत्र के ऊपर की ओर मुहर लगा दी। जब उसका पत्र प्राप्त हुआ तो शेर खाँ ने उसकी मुहर को फाड़कर अपनी पगड़ी में रख लिया। जब मसनदे आली (ईसा खाँ) गुजरात पहुँचा तो उस समय सुल्तान महमूद की अवस्था बड़ी कम थी। उसके वज़ीर दरिया खाँ ने अपने प्रार्थना-पत्र में लिखा कि, "हमारे बादशाह की अवस्था बड़ी कम है। अमीर लोग आपस में लड़ाई-झगड़ा किया करते हैं। खाने खाना यूसुफ खेल (इलियट में मसनदे आली अली खाँ) गुजरात तथा मन्दू की सेना अपने साथ लेकर चल दिया है।" मसनद आली ईसा खाँ ने शेर शाह को पत्र लिखा कि, (इलियट में जब मसनद आली ईसा खाँ गुजरात से वापस आया तो शेर खाँ ने पूछा कि खाने खाना यूसुफ खेल बिन दौलत खाँ के विषय में क्या करना चाहिये? उसे काम पर लगा रहने दिया जाय या निकाल दिया जाय? मसनदे आली ईसा खाँ ने निवेदन किया कि अफ़गानों पर मुगुलों द्वारा जो-जो आफ़तें आईं उनका कारण यह था। ("जहाँ-जहाँ मुगुलों द्वारा अफ़गानों पर कोई विपत्ति पड़ी उसकी वजह से पड़ी। (इलियट के अनुवाद में "वही बाबर को काबुल से हिन्द में लाया)। हजरत (हुमायूं) पादशाह जब गुजरात से आये तो वही उन्हें इस क्षेत्र में लाया। यदि हुमायूं पादशाह उसके कहने पर आचरण करते तो राज्य से मेरा समूल उच्छेदन कर देते। किन्तु मेरा प्रताप उन्नति पर था। हजरत पादशाह ने उसकी राय से कोई काम न किया। उसकी हत्या करा देनी चाहिये। उसे बन्दी बनाये रखना उचित नहीं।" शेर खाँ ने कहा, "मैं जिस अफ़गान से पूछता था, वह यही कहता था कि वह बड़ा प्रतिष्ठित अफ़गान है। उसकी हत्या न करानी चाहिये। मेरा भी मत वही था जो ईसा खाँ मसनदे आली ने कहा।" खाने खाना यूसुफ खेल को, जो (मुगल विजय के समय से) बन्दी बनाया गया था और जिसे आधा सेर कच्चा जौ दिया जाता था, हत्या का आदेश दे दिया।

जब शेर खाँ ने सुना कि हुमायूं पादशाह कन्नौज की ओर चल खड़े हुये हैं तो उसने अपने पुत्र कुतुब खाँ को मन्दू की ओर इस आशय से भेज दिया कि मन्दू के हाकिमों को अपने साथ लेकर देहली तथा आगरा के आस पास विघ्न डाले। हजरत पादशाह ने सुना कि शेर खाँ ने अपने पुत्र को चन्देरी की ओर इस आशय से भेज दिया है कि वह देहली एवं आगरा के आस पास हलचल पैदा करे तो उन्होंने अपने दोनों भाइयों मीर्ज़ा अस्करी एवं हिन्दाल मीर्ज़ा को चन्देरी की ओर भेज दिया। जब मालवा के हाकिमों ने यह सुना कि मीर्ज़ा लोग इस क्षेत्र में आ रहे हैं तो उन्होंने कुतुब खाँ की कोई सहायता न की। कुतुब खाँ चन्देरी से चौंध नगर (चुन्धार) पहुँचा और मुगुल सेनाओं से युद्ध किया। कुतुब खाँ मारा गया। मीर्ज़ा लोग विजय प्राप्त करके हजरत पादशाह की सेवा में

हुमायूं का आगरा पहुँचना

मीर्जा मुहम्मद जमान, मौलाना मुहम्मद परगली[1], मौलाना कासिम अली सद्र, मौलाना जलाल तत्तवी[2], तथा बहुत से अमीर एवं विद्वान् विनाश के समुद्र में डूब गए। हज़रत जहाँबानी, (१६०) मीर्जा अस्करी तथा कुछ थोडे से लोग बडी तीव्र गति से यात्रा करते हुए राजधानी आगरा पहुँचे। मीर्जा कामरान उत्कृष्ट चौखट चूमकर सम्मानित हुआ। कुछ दिन उपरान्त मीर्जा हिन्दाल, अपनी माता एवं कामरान के मध्यस्थ होने के कारण सिर झुकाये लज्जित, अलवर से (आकर) सेवा में उपस्थित हुआ। हज़रत जहाँबानी ने अपनी स्वाभाविक कृपा के कारण उसे सम्मानित करके उसके अपराधों को क्षमा कर दिया और मनुष्य के अनुमान से परे अपार उदारता का प्रदर्शन करते हुए व्यवहार किया।

हुमायूं का निज़ाम सक्का को आधे दिन के लिये बादशाह बनाना

क्योंकि दुर्भाग्यवश अचानक एक ऐसी दुर्घटना घट गई जिसका उपचार सम्भव न था अतः वे उस हानि की पूर्ति में व्यस्त हो गए और अस्त्र-शस्त्र एवं सामग्री की व्यवस्था करने लगे। राज्य की विभिन्न दिशाओं से अमीर तथा सैनिक उत्कृष्ट चौखट के चुम्बन द्वारा सम्मानित हुए। इसी बीच में पवित्र हृदय वाला सक्का सम्मानित वचनानुसार ऐश्वर्य के राजसिंहासन के पायों में उपस्थित हुआ। हज़रत जहाँबानी ने, जो उदारता एवं सौजन्य के राज्य के मुकुट एवं सिंहासन का वितरण करने वाले थे, दरिद्र सक्के को दूर से देखा। तत्काल वचन के उस बादशाह ने उसे सच्चाई के राजसिंहासन पर स्थान दिया। उन्होंने सल्तनत के तख्त का उस 'मार्ग के ख़िज़्र' के लिए खाली करके सक्के का प्रतिज्ञानुसार आधे दिन तक सिंहासनारूढ किया और उसे नीमरोज़[3] के मुल्क के सिंहासन के अधिकारी के बराबर बना दिया। कुछ पादशाही आदेशों के अतिरिक्त जिसकी उसमें योग्यता न थी उसे सभी शासन सम्बन्धी आदेशों का अधिकार दे दिया। दान-पुण्य की लहरें मारते हुए समुद्र की सहायता द्वारा उसकी स्थिति एवं दशा के मुख से दरिद्रता की धूल को दूर कर दिया। सक्के ने जो आदेश अपनी बादशाही के समय शाही तख्त से दिए उन्हें चालू रहने दिया। मीर्जा कामरान ने इतनी अधिक उदारता के प्रदर्शन की अत्यधिक निन्दा की और उसके कष्ट पहुँचाने वाले हृदय ने इस बात को भी (कष्ट का) एक बहाना बना लिया।

अफ़ग़ानों द्वारा बंगाल पर अधिकार

इस धूर्तता से परिपूर्ण घटना के उपरान्त शेर खाँ ने बंगाले पर आक्रमण करने का

१ कुछ पोथियों में 'शेर अली' और कुछ में 'पीर अली'।
२ ठट्टा के।
३ नीमरोज का अर्थ मध्याह्न अथवा दिन का आधा भाग होना है। यह सीस्तान का एक प्रान्त है और सूर्य को भी नीमरोज़ कहते हैं। क्योंकि वह आधे दिन के लिये बादशाह बनाया गया था, अतः अबुलफ़ज़ल ने ऐसे शब्द का प्रयोग किया है जिसके कई अर्थ निकल सकते हैं।

एक सेना देकर बंगाले के विरुद्ध नियुक्त किया और अल्प समय में जहाँगीर कुली बेग से युद्ध छेड़ दिया। उसने पौरुष प्रदर्शित करते हुए बड़ी वीरता से युद्ध किया। क्योंकि ईश्वर की इच्छा कुछ अन्य ही थी, बंगाल के समस्त अमीरों ने उस विद्रोह को शान्त करने में संगठन की ओर उचित रूप से ध्यान न दिया और वे अपने आराम की ही चिन्ता में पड़े रहे। उन्होंने इस युद्ध में उसकी सहायता न की। जहाँगीर कुली बेग प्रयत्न एवं संघर्ष के बावजूद रण-भूमि में कदम न जमा सका और भागकर शरण-हेतु जमीदारों के पास चला गया। वह झूठी प्रतिज्ञा एवं संधि के भरोसे पर अफ़गानों के पास चला गया और उसे तथा बहुत बड़ी संख्या में अन्य लोगों को विनाश के जंगल में भेज दिया गया। शेर खां बंगाले की ओर से निश्चिन्त होकर जौनपुर के क्षेत्र में (१६१) पहुँचा और उसपर अपना अधिकार जमाकर विद्रोह के हाथ और भी फैला दिए।

कुतुब खां की पराजय

अपने छोटे बेटे कुतुब खां को दुष्टा की एक बहुत बड़ी सेना सहित काल्पी तथा इटावा के विरुद्ध आक्रमण करने के लिये भेजा। जब यह समाचार सम्मानित कानों तक पहुँचे तो उन्होंने यादगार नासिर मीर्ज़ा एवं कासिम हुसेन खां ऊज़बेक, जो उस क्षेत्र की जागीर का स्वामी था तथा इस्कन्दर सुल्तान, जो मीर्ज़ा कामरान की ओर से काल्पी के कुछ महालों के (शासन प्रबन्ध हेतु) नियुक्त था, को उसके विरुद्ध भेजा। पौरुष के रण-क्षेत्र के इन सिंहों ने उन लोमड़ी रूपी धूर्तों के विरुद्ध पहुँचकर घोर युद्ध किया और परोक्ष के आशीर्वाद से विजय प्राप्त कर ली। कुतुब खां रण-क्षेत्र में मारा गया।

मीर्ज़ा कामरान द्वारा विरोध

हज़रत जहाँबानी कुछ समय तक राजधानी आगरा में विजयी सेना की व्यवस्था एवं अपने भाइयों तथा सम्बन्धियों के चिन्तित हृदय को सांत्वना देने एवं उनकी गुप्त इच्छाओं की पूर्ति में व्यस्त रहे। यद्यपि उन्होंने मीर्ज़ा कामरान के अन्तःकरण के गाल की धूल को परामर्श के जल से धोना चाहा, किन्तु उसका स्वच्छ मुख कभी प्रकट न हो सका। जितना भी उसके विरोध के मुरचे को शिक्षा की कलई से साफ़ किया जाता संगठन की चमक उसके भाग्य के दर्पण में किसी प्रकार उत्पन्न न होती[1]। ऐसी कठिनाई के समय हृदय में विरोध होते हुए भी बाह्य रूप से राज्य के हित के लिए कार्य करना परमावश्यक था। ऐसी अवस्था में जब कि अन्य साधनों के अतिरिक्त जिसके अधिकार में लगभग २०,००० चुने हुए व्यक्ति तथा हज़रत जहाँबानी की दया एवं

पहुँच गये। (इलियट में : कुतुब खां चन्देरी से मथुरा नगर की ओर पहुँचा। मथुरा नगर में मुग़ल सेनाओं से युद्ध किया। कुतुब खां मारा गया, शेर खां बड़ा दुखी एवं क्रोधित हुआ। उसने अपनी परेशानी किसी पर प्रकट न होने दी। (तारीखे शेरशाही : डा० परमात्मा शरण की हस्तलिपि, पृ० १५८-१६०; इलाहाबाद विश्वविद्यालय की हस्तलिपि, पृ० १५० १५२; अलीगढ़ विश्वविद्यालय हस्तलिपि, पृ० १६०-१६३, इलियट, बाडलीयन नं० ३७१)।

१ वह मिलकर काम करने के लिये राज़ी न होता।

कारण कि इस अभियान से पृथक् रहने के उपरान्त यदि कोई दुर्घटना घटी तो हिन्दुस्तान में कोई ऐसा कोना न मिल सकेगा जहां शान्ति प्राप्त हो सकेगी। अब दो बातो के अतिरिक्त कोई अन्य बात सम्भव नही। यदि हमे विजय प्राप्त हो गई तो फिर तुम किस मुह से और किस पराक्रम के भरोसे पर लज्जावश भूमि से सिर उठा सकोगे और तुम उस जीवन पर मृत्यु को ही प्राथमिकता प्रदान करोगे। ईश्वर न करे, यदि इसके विरुद्ध कुछ हुआ तो तुम्हारा लाहौर मे ठहरना असम्भव हो जायगा। जिस किसी ने मीर्ज़ा कामरान को यह परामर्श दिया है वह या तो पागल हो गया है नही तो वह षड्यन्त्र रच रहा है तथा सत्य को उससे छिपाकर चाटुकारी के मार्ग पर अग्रसर हुआ है[1]।" सक्षेप में मीर्ज़ा हैदर जागरूक सौभाग्य के कारण सन्मार्ग पर आगया और उत्कृष्ट सेना के साथ जाने के सौभाग्य द्वारा सम्मानित हुआ।

मीर्ज़ा कामरान ने अपनी असभ्य सेना मे से ३००० आदमी मीर्ज़ा अब्दुल्लाह मुग़ल के नेतृत्व मे साथ कर दिए और उसने स्वय सेवा का सौभाग्य न प्राप्त किया।

हज़रत जहांबानी जन्नत आशियानी की सम्मानित सेना का राजधानी आगरा से पूर्व के देशों की ओर शेर खा के विद्रोह के दमन हेतु प्रस्थान, युद्ध के पश्चात् वापसी तदुपरान्त घटी अन्य शिक्षाप्रद घटनायें

क्योकि भाग्य की चित्रशाला के कार्यकुशल कलाकार अपने चित्रो एव अपनी कृतियो में विभिन्न साधनो का प्रयोग करते है अत यदि एक समय इच्छानुसार कोई कार्य न हो पाये तो उसके लिए आभार प्रदर्शित करना चाहिये न कि शिकायत, ससार को शोभा प्रदान करने वाले ईश्वर ने ऐसे सम्मानित भाइयो का पारस्परिक सगठन इसी कारण करा दिया और उनकी शक्ति छिन्न-(१६३) भिन्न करा दी। हज़रत जहांबानी थोडी सी सेना सहित शत्रुओ की बहुत बडी सख्या के विरुद्ध रवाना हुए और उन्होने अपने हृदय की शक्ति एव अपने साहस की स्वाभाविक दृढता के कारण अपने सहायको की सख्या की कमी तथा शत्रुओ की सख्या की अधिकता पर ध्यान न देकर प्रस्थान किया।

हुमायूं के १५० सैनिको की वीरता

जब उत्कृष्ट सेना भोजपुर पहुँची तो शेर खा ने एक बहुत बडी सेना सहित गगा नदी के उस ओर आकर पडाव कर दिया। हज़रत जहांबानी ने अपनी सेना की सख्या की कमी के बावजूद स्वय नदी पार करना निश्चय किया। अल्प समय मे भोजपुर घाट पर पुल तैयार कर लिया गया। लगभग १५० यक्का जवान[2] युद्ध के लिए तैयार हो गए। वे बिना ज़ीन के घोडे पर सवार होकर जल में कूद पडे और समुद्री सिंहो के समान लहरो तथा भवरो का भय न करके नदी में प्रविष्ट हो गये। नदी मे चक्कर लगाने वाले घडियालो की भाँति षड्यन्त्र के समुद्र की उपेक्षा करके नदी

१ यह विवरण तारीखे रशीदी से लिया गया है। २ वीर योद्धा; इन्हें अहदी के समान समझना चाहिये।

पार की ओर एक बहुत बड़ी सेना को पराजित कर दिया। अपने पौरुष तथा अपनी वीरता का परिचय देकर अपने उद्देश्य की पूर्ति उपरान्त उन्होंने उत्कृष्ट शिविर की ओर वापसी का सकल्प किया। जब वे पुल के समीप पहुँचे तो अफगान गर्दबाज[1] नामक हाथी को लेकर, जो चौसा[2] के युद्ध में शत्रु की सेना की ओर छूट गया था, पुल तोड़ने के उद्देश्य से पहुँचे। वह भारी भरकम हाथी पुल के पास पहुँच गया और जिन स्तम्भो पर वह रुका हुआ था, उन्हे तोड डाला। उसी समय उत्कृष्ट शिविर मे एक तोप चलाई गई जिससे गर्दबाज हाथी के पाँव कट गए और शत्रु की सेना, जो जोर लगा रही थी, पराजित हो गई। निष्ठावान् जवान, पौरुष प्रदर्शित करके सुरक्षित लौट आये।

दोनो ओर की सेनाओ का कन्नौज के समीप पहुँचना

यह उचित समझा गया कि नदी के किनारे-किनारे कन्नौज की ओर प्रस्थान किया जाय। बडी सावधानी से धीरे-धीरे एक मंज़िल से दूसरी मंजिल की ओर प्रस्थान किया गया। मार्ग में शत्रुओ की नौकायें दृष्टिगत हुई। शाही तोपखाने से एक तोप चलाई गई जिससे शत्रुओ की एक बहुत बडी नौका टूट गई और आनन्द की लहरो के थपेडो से उलट-पुलट हो गई। एक मास से अधिक कन्नौज के समीप सेनाए एक दूसरे के आमने-सामने रही।

मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा एव उसके पुत्रों का हुमायूँ की सेवा में पहुँचकर पुनः पलायन

अन्ततोगत्वा मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा एव उसके पुत्रो[3], उलुग मीर्ज़ा एव शाह मीर्ज़ा, ने हज़रत जहाँबानी की उत्कृष्ट चौखट पर पहुँचकर दासता का निश्चय किया। उन लोगो का वश हज़रत साहब किरानी से सम्बन्धित है। वे सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा के नाती[4] के पौत्र थे और उन्हे हज़रत गेती सितानी फ़िरदौस मकानी की सेवा में सम्मान प्राप्त था। उन लोगो ने उनकी मृत्यु के उपरान्त जैसा कि उल्लेख हो चुका है हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। उनके (इस समय) उपस्थित होने का कारण यह था कि व्यर्थ के युद्ध को कोई स्थायित्व नहीं प्राप्त होता और अपने आश्रयदाता के विरुद्ध विद्रोह करके किसी को सफलता नहीं मिलती। हज़रत (जहाँबानी) ने अपनी अत्यधिक दया एव उदारता के कारण उनके किए हुए अपराधो को अकृत्य समझकर शाही अनुकम्पा द्वारा सम्मानित किया। चूँकि इन कृतघ्नो की मूल प्रकृति में दुष्टता प्रविष्ट हो चुकी थी अत अपने दुर्भाग्य एव अपनी अयोग्यता के कारण ऐसे कठिन समय पर वे पुन भाग खड़े हुए और दृढ़ता एव धैर्य से विचलित हो गए तथा अन्य भागने वालो

१ चार्ल्स की हस्तलिपि में 'गर्दबाद'।

२ बक्सर सब-डिवीज़न (शाहाबाद, बिहार) में कर्मनासा नदी के पूर्वी तट के समीप, बक्सर कस्बे के पश्चिम में ४ मील पर २५°३१' उत्तर तथा ८३°५४' पूर्व में।

३ मूल ग्रन्थ में 'दिम्माने उलुग मीर्ज़ा' किन्तु गुल्बदन में 'उसके पुत्र उलुग मीर्ज़ा'।

४ सुल्ताना बेगम के पुत्र; वह सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा की सबसे बड़ी पुत्री थी। मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा को बाबर ने कन्नौज प्रदान कर दिया था। (बाबर नामा, पृ० ५०६)।

(१६४) एव अभागो का पथ-प्रदर्शन किया। बहुत से लोग नमकहरामी के मार्ग के पथिक हो कर भाग खडे हुए।

हुमायूं की शेर शाह के विरुद्ध तैयारी

हजरत जहाँबानी को दूरदर्शिता से यही आवश्यक ज्ञात हुआ कि जिस प्रकार भी सम्भव हो नदी पार करके युद्ध करना चाहिये ताकि जो कुछ भी होना है वह परोक्ष में प्रकट हो जाय। यदि इस उद्देश्य में विलम्ब हुआ तो कार्य अन्य रूप ही धारण कर लेगा और अधिक संख्या में लोग पृथक् होकर भाग जायेंगे। लोगों के पलायन को रोकने के विचार से उन्होंने पुल बनवाकर नदी पार की और सेना के समक्ष खाई खुदवाकर तोपखाने की गाडियो की यथास्थान व्यवस्था कराई। मोरचल[1] बाँट दिए गए। शेर खा ने विद्रोहियो की भीड एकत्र करके खाइ खोदकर पडाव डाल दिया। नित्य प्रति प्रत्येक दिशा से जवान निकल निकल कर युद्ध करते थे। इसी बीच मे सूर्य कर्क राशि मे प्रविष्ट हो गया और वर्षा ऋतु आगई[2]। बादल मस्त हाथियो के समान चिघाडते हुए चक्कर लगाने लगे और वर्षा प्रारम्भ हो गई। जहा उत्कृष्ट खेमे लगे थे, वह भूमि जलमग्न हो गई। विवश होकर ऐसे ऊँचे स्थान की खोज करनी पडी जो जल एव कीचड के खतरो से सुरक्षित हो ताकि खेमे, तोपखाने इत्यादि वहाँ पहुँचाये जा सके। निश्चय हुआ कि प्रातःकाल आशूर के दिन (१० मुहर्रम ९४७ हि० १७ मई १५४० ई०) सेना को सुव्यवस्थित करके खडा किया जाय। यदि शत्रु खाई से निकल कर अग्रसर हो तो युद्ध किया जाय। यदि वह अपने स्थान पर रहे तो जो स्थान पडाव के लिए निश्चित हुआ है वहा पहुँचकर पडाव किया जाय। १० मुहर्रम ९४७ हि० को वे इस उद्देश्य से सवार हुए और सेना की पक्तियाँ सुव्यवस्थित की। मुहम्मद खा रूमी[3] तथा उस्ताद अली कुली के पुत्र, उस्ताद अहमद रूमी और हसन खलफात ने, जो तोपखाने के सरकारदार[4] थे गरदूनो[5] एव देगो[6] को रखवा कर निश्चित नियमानुसार जजीरे खिचवाईं। मध्य भाग को हजरत जहाबानी द्वारा शोभा प्राप्त हुई। मीर्जा हिन्दाल को मध्य भाग के समक्ष स्थान प्रदान किया गया। मीर्जा अस्करी को दायें बाजू तथा यादगार नासिर मीर्जा को बायें बाजू का सरदार नियुक्त किया गया।

१ मोरचा, वह स्थान जहाँ शरण लेकर शत्रु पर गोली चलाई जाती है
२ वर्षा ऋतु अभी प्रारम्भ न हुई थी। सम्भवतः अकस्मात् वर्षा हो गई होगी
३ सम्भवत मुहम्मद खा रूमी उस्ताद अली कुली का पुत्र।
४ उस्ताद अली कुली बाबर के तोपखाने का सचालक था। उसने नई तोपो के बनाने एव बाबर के तोपखाने की व्यवस्था में बडी कुशलता का प्रदर्शन किया। (**बाबर नामा**, पृ० ६०, १५१, १५३ १५७, २१३, २२३, २२६, २३६, २४७, २६२, २६५, २६६, २७०, २८४, ३२२, ३२३, ३२४)।
५ निदेशक से तात्पर्य है।
६ तोप की गाडियाँ
७ तोप।

हुमायूं तथा शेर शाह का युद्ध

मीर्ज़ा हैदर ने अपनी 'तारीखे रशीदी' में लिखा है कि "उस दिन हज़रत जहाँबानी ने मुझे अपने बायीं ओर इस प्रकार रक्खा कि मेरा दायाँ (बाजू) उनके बायें (बाजू) से मिला हुआ था और मेरे स्थान से मध्य भाग के बायीं ओर के अन्त तक, २७ तूमनदार[1] अमीर थे। शेर खाँ ने अपनी सेना को पाँच दलों में विभाजित किया। दो जो सब में बड़े थे, खाई के बाहर खड़े हुए और तीन दल शाही सेना की ओर अग्रसर हुए। जलाल खाँ, मसनद खाँ और समस्त नियाज़ी (अफ़ग़ान) मीर्ज़ा हिन्दाल के, मुबारिज़ खाँ, बहादुर खाँ, राय हुसेन जल्वानी तथा समस्त फ़र्मूली यादगार नासिर मीर्ज़ा एवं क़ासिम हुसेन खाँ के, समक्ष पहुँचे। ख्वास खाँ, बरमज़ीद एवं एक अन्य समूह मीर्ज़ा (१६५) अस्करी के मुकाबले पर आये। सर्वप्रथम मीर्ज़ा हिन्दाल एवं जलाल खाँ में युद्ध प्रारम्भ हुआ। आश्चर्यजनक रूप से हाथों हाथ युद्ध हुआ। जलाल खाँ घोड़े से गिर पड़ा। पादशाही सेना के बायें बाज़ू ने अपने शत्रु को ढकेल कर उनके मध्य भाग में पहुँचा दिया। जब शेर खाँ ने यह देखा तो स्वयं एक भारी सेना लेकर बढ़ा। ख्वास खाँ तथा उसके साथियों ने भी मीर्ज़ा अस्करी पर आक्रमण किया। जैसे ही अफ़गानों ने आक्रमण किया, अधिकांश अमीर युद्ध से हाथ खींचकर भाग खड़े हुए[2]।

हज़रत जहाँबानी ने स्वयं दो बार शत्रु की सेना पर आक्रमण करके प्रयत्न किया। यद्यपि यह प्रथा नहीं है कि पादशाह स्वयं युद्ध करें किन्तु पौरुष एवं वीरता की परीक्षा के ऐसे अवसर पर किस प्रकार नियम का पालन किया जा सकता है? इस प्रकार इस युद्ध में हज़रत (जहाँबानी) के हाथ में दो भाले टूट गए और उन्होंने वीरता एवं पौरुष का हक़ अदा कर दिया किन्तु भाइयों ने भ्रातृभाव का प्रदर्शन न किया और अमीर लोगों ने दृढ़ता के क्षेत्र में धैर्य के पाँव न जमाये अपितु दुष्टता के कारण टाल मटोल करते रहे और ऐसे आश्रयदाता की तबाही की चिन्ता न की। वाह्य एवं आन्तरिक रूप से प्रतिष्ठा का वह स्वामी अपनी सत्य एवं दैवी रहस्य का ज्ञान प्राप्त करने वाली दृष्टि सहित इस अभियान पर इतनी थोड़ी सी सेना लेकर, जो षड्यंत्र के विचारों से परिपूर्ण तथा निष्ठा की भावनाओं से शून्य थी, रवाना हुआ था। उसके मर्यादा की रक्षा की भावनाओं से परिपूर्ण मस्तिष्क में यह बात आई कि पौरुष के घोड़े पर सवार होकर शून्य के नगर की ओर अग्रसर होना और जीवन के घोड़े को विनाश की मंज़िल की ओर ले जाना, शत्रु रूपी मित्रों एवं षड्यंत्रकारियों की सहायता प्राप्त करने तथा दुष्ट शत्रुओं से दो-दो हाथ युद्ध का जुआ खेलने से कहीं अच्छा है[3]। उस अन्न से, जो इन मर्यादा की चिन्ता न करने वालों के साथ किया जाय, मृग-तृष्णा कहीं अच्छी है।' इस प्रकार हज़रत जहाँबानी के व्यक्तिगत आक्रमण से ससार वालों पर यह तथ्य, पूर्ण रूप से स्पष्ट हो गया। कुछ निष्ठावान एवं स्वामी-भक्त राज्य के रिकाब पर विनय एवं आग्रह

१ पताका वाले।

२ अबुल फ़ज़्ल ने तारीखे रशीदी के विवरण को संक्षिप्त रूप में अपने शब्दों में लिखा है।

३ इसका तात्पर्य यह है कि हुमायूं ने युद्ध करके प्राण त्याग देने को अपने षड्यंत्रकारी सहायकों का आभारी होने पर प्राथमिकता प्रदान की।

का हाथ ले जाकर उन्हें जबरदस्ती बाहर निकाल ले गए[1]। यह बात, मैं संसार की वाह्य बातों को

१ तारीखे शेरशाही में इस युद्ध का उल्लेख इस प्रकार है : जब शेर खाँ ने सुना कि मन्दू के हाकिमों ने उसके पुत्र का साथ न दिया और कुतुब खाँ मार डाला गया तो वह दुःख एवं क्रोध के कारण बड़ा व्याकुल हुआ किन्तु उसने अपने व्यवहार में किसी प्रकार का परिवर्तन न आने दिया और मन्दू के हाकिमों के प्रति अपने हृदय में द्वेष रखने लगा। मुग़ल लोग इस विजय के कारण बड़ा अभिमान प्रदर्शित करने लगे। जब हज़रत पादशाह क़न्नौज पहुँचे तो शेर खाँ ने गंगा नदी के उस ओर गढ़बन्दी कर ली (इलियट के अनुवाद में ज़ीक़ाद ९४६ हि०, अप्रैल १५४० ई०)। इसी बीच में समाचार प्राप्त हुए कि ख़वास ख़ाँ ने महारता की हत्या कर दी। अफ़ग़ानों की सेना में आनन्द मंगल मनाया जाने लगा। शेर खाँ ने ख़वास ख़ाँ को लिखा कि "शीघ्र मेरे पास पहुँच जा क्योंकि हम तथा हमारे शुभचिन्तक तेरी प्रतीक्षा में युद्ध को स्थगित किये हुए हैं और तेरी राह देख रहे हैं।" जब शेर खाँ को ज्ञात हो गया कि ख़वास ख़ाँ निकट पहुँच गया तो उसने अपने वकील को हुमायूँ पादशाह की सेवा में भेजा और कहलाया कि "मैं कुछ समय से गढ़बन्दी किये हूँ। यदि हज़रत पादशाह चाहें तो गंगा नदी का घाट मेरे लिये छोड़ दें, मैं नदी पार करके युद्ध करूँ और या मैं गंगा नदी के घाट को छोड़ दूँ। हज़रत पादशाह इस ओर आकर युद्ध करें।" हज़रत पादशाह शेर खाँ को कुछ न समझते थे। उन्होंने शेर खाँ के वकील से कहा कि, "शेर खाँ गंगा नदी के घाट को छोड़ दे ताकि मैं गंगा नदी पार करके युद्ध करूँ।" वकील ने जो कुछ सुना था, शेर खाँ को जाकर बता दिया। शेर खाँ गंगा नदी के घाट को छोड़कर कुछ कोस पीछे हट गया। हज़रत पादशाह ने गंगा नदी पर पुल बाँधकर उसे पार किया। हमीद खाँ काकर (काकड़) ने, जो शेर खाँ का एक परामर्शदाता था, निवेदन किया कि, "समस्त मुग़ल सैनिकों के नदी पार करने के पूर्व आप उनपर आक्रमण कर दें।" शेर खाँ ने कहा, "इससे पूर्व मुझमें सामर्थ्य न होने के कारण मैं युद्ध में नाना प्रकार के छल एवं धूर्तता प्रदर्शित किया करता था। इस समय परमेश्वर की कृपा से मेरा लश्कर हज़रत पादशाह के लश्कर से कम नहीं। सामर्थ्य के होते हुये मैं विश्वासघात न करूँगा। जब सूर्य काफ़ी चढ़ जायगा तो हम अपनी पंक्तियों को सुव्यवस्थित करके बिना छल एवं धूर्तता के युद्ध करेंगे। जो ईश्वर की इच्छा होगी वह होगा।" जब शेर खाँ को ज्ञात हो गया कि हुमायूँ पादशाह की समस्त सेना ने गंगा नदी पार कर ली तो वह अपनी समस्त सेना तैयार करके बढ़ा और हज़रत पादशाह के मुकाबले में अपनी प्रथानुसार मिट्टी का किला तैयार करके पड़ाव कर दिया और जो सामग्री हज़रत पादशाह के लश्कर में पहुँचती थी उसे रोक दिया। ६०० ऊँटों (इलियट के अनुवाद में ३००) अत्यधिक चौपायों एवं बैलों पर अधिकार जमा लिया। १० मुहर्रम ९४७ हि० (१७ मई १५४० ई०) को दोनों सेनाओं ने अपनी पंक्तियाँ सुव्यवस्थित कीं। शेर खाँ ने अपनी सेना की इस प्रकार व्यवस्था की। मध्य में शेर खाँ, हैबत खाँ नियाज़ी जिसने ९५० हि० में ख़ाने आज़म हुमायूँ की उपाधि प्राप्त की, मसनदे आली आज़म हुमायूँ सरवानी, मसनदे आली ईसा खाँ सरवानी फ़तहपुर, कुतुब खाँ लोदी, हाजी खाँ (इलियट के अनुवाद में हाजी खाँ जलाई) बुलन्द खाँ, सरमस्त खाँ, मीर खाँ सरवानी, तजल्ली खाँ (इलियट के अनुवाद में बिजली खाँ) सरवानी इत्यादि थे। सेना के अग्र भाग में ख़वास खाँ एवं ईसा खाँ नियाज़ी इत्यादि थे। दायें भाग में जलाल खाँ, जो शेर खाँ के बाद उसका उत्तराधिकारी बना और जिसकी उपाधि इस्लाम शाह हुई, ताज खाँ, सुलेमान खाँ करानी, जलाल खाँ जलोई इत्यादि थे। सेना के बायें भाग में आदिल खाँ बिन शेर खाँ, कुतुब खाँ मुनीब (हाडीवाला के अनुसार बनना अथवा बैननी पृ० ४५७) बरमजाद गोर, राय हुसैन जलवानी इत्यादि थे। शेर खाँ ने सेनाओं को इस प्रकार सुव्यवस्थित कर लेने के उपरान्त अफ़ग़ानों से कहा, "मैंने अत्यधिक प्रयत्न करके तुम्हें एकत्र किया है। मैंने तुम्हें आश्रय प्रदान करने में यथासम्भव कोई कसर न उठा रक्खी। तुम्हें मैंने ऐसे ही दिन के लिये रख छोड़ा है। आज परीक्षा का दिन है। तुम लोगों में से जो कोई भी युद्ध तथा वीरता के मैदान में अत्यधिक कौशल दिखलायेगा उसका सम्मान उसके साथियों की अपेक्षा अधिक बढ़ा दिया जायगा। सभी अफ़ग़ानों को इस बात का प्रयत्न करना चाहिये कि युद्ध के समय समस्त अफ़ग़ान एक दिल एवं एक ज़बान रहें क्योंकि स्वामी के लिये

में रखकर कह रहा हूँ अन्यथा वास्तव मे तो निकालने वाला ससार को शोभा प्रदान करने वाला ईश्वर ही है।

सैनिकों का संगठन विजय तथा सफलता का कारण होता है। विश्वास है कि यदि अफ़गान कौम में विरोध एव शत्रुता न होती तो कोई भी मनुष्य उनके मुक़ाबले में तलवार न चला सकता था किन्तु मित्रों से प्रार्थना है कि वे ईर्ष्या, शत्रुता एव विरोध त्याग दें कारण कि सुल्तान बहलोल अफ़गान के राज्यकाल में निष्ठा एव संगठन के कारण उन्हें सब पर विजय प्राप्त होती रहती थी। सुल्तान इब्राहीम के राज्यकाल में ईर्ष्या, एवं द्वेष के कारण वे पराजित हो गये युद्ध में दृढ रहने के लिये मैं इस कारण प्रेरित कर रहा हूँ कि यह हिन्दुस्तान पर विजय प्राप्त करने एव अफ़गानों के परिवारों की मुग़लों से रक्षा का समय है। मैं वृद्ध हो चला हूँ और सहस्रा परिश्रम के उपरान्त अफ़गानों की सेना को दीर्घ काल में एकत्र कर सका हूँ। ईश्वर न करे, अफ़गानों की सेना की पराजय हो गई तो उसका पुन एकत्र होना बड़ा कठिन है।" अफ़गानों ने निवेदन किया, "हजरते आला ने हमें आश्रय प्रदान करने तथा हमारे प्रति कृपा प्रदर्शित करने में कोई कसर न उठा रक्खी। इस समय प्राण न्योछावर करने तथा हमारे लिये सेवा करने का अवसर है"। शेर खा ने अपने अमीरों को आदेश दिया कि वे अपनी सेना (की पंक्तियों) में जाकर खड़े हों। जब अमीर लोग अपनी सेना की पंक्तियों में जाकर खड़े हुए तो शेर खा ने स्वय जाकर सेनाओं को सुव्यवस्थित किया। हजरत हुमायूँ पादशाह की सेना के अग्र भाग ने ख्वास खा ने पराजित कर दिया। किन्तु शेर खा की सेना का दायाँ भाग जिसमें उसका पुत्र जलाल खा था, पराजित हो गया। चार व्यक्तियों ने मैदान न छोड़ा, जलाल खा स्वय, मियाँ अय्यूब कलकपुर सरवानी, गाजी मुहल्ली। जब शेर खा ने देखा कि उसकी सेना का दायाँ भाग पराजित हो गया तो उसने उसकी सहायता हेतु स्वय जाना चाहा। क़ुत्ब खा साहू खेल लोदी ने निवेदन किया कि, "हजरते आला, अपने स्थान को न छोड़ें अन्यथा लोग यह समझेंगे कि मध्य भाग छिन्न भिन्न हो गया। आप मध्य भाग में होकर अग्रसर हों।" जब शेर खा, सेना के मध्य भाग में पहुँचकर अग्रसर हुआ तो मुग़ल सेना ने, जिसने (शेर खा की) सेना के दायें भाग को पराजित किया था, शेर खा की सेना के मध्य भाग पर आक्रमण किया। यह सेना शेर खा के मध्य भाग से पराजित हो गई और उसने हजरत पादशाह की सेना के मध्य भाग का सहारा लिया। शेर खा की सेना के बायें भाग ने, जिसमें उसका पुत्र आदिल खा एवं क़ुत्ब खा सुनींब (इलियट के अनुवाद में बनेत) थे, मुग़ल सेना को, जो उसके सामने थी, पराजित कर दिया और उसे उसके मध्य भाग पर पहुँचा दिया। शेर खा की सेना के दायें भाग ने, जो भाग खड़ा हुआ था, पलटकर मुग़ल सेना को घेर लिया। शेर खा के पुत्रों एव अफ़गान अमीरों ने बड़ी वीरता प्रदर्शित की, विशेष रूप से हैबत खा नियाजी एवं ख्वास खा ने धारदार तलवार एव प्राण विदारक भालों से मुग़लों को पराजित कर दिया। हजरत पादशाह स्वयं रण क्षेत्र में पर्वत के समान दृढता पूर्वक जमे रहे। उन्होंने इतनी अधिक वीरता एव इतना अधिक पौरुष प्रदर्शित किया जो मनुष्य के सामर्थ्य के बाहर था....यहाँ तक कि उन्होंने अपनी दूरदर्शी दृष्टि से देख लिया कि परोक्ष वाले उनके सैनिकों को, जो युद्ध में अपने युग के रुस्तम एवं इस्फ़न्दयार थे, मार रहे हैं और उनके घोड़ों के मुँह मोड़ रहे हैं, तो उन्होंने ईश्वर की इच्छा का पालन करते हुए परोक्ष के आदमियों से युद्ध करना त्याग दिया और अपने संकल्प की लगाम राजधानी आगरा की ओर मोड़ी। उनके भाग्यशाली शरीर को कोई हानि न पहुँची और वे कुशलता पूर्वक उस भयकर भंवर से निकलकर राजधानी आगरा की ओर रवाना हुए। इस दुर्घटना का सामना भाइयों की फूट के कारण करना पड़ा अन्यथा शेर खा में इतना सामर्थ्य न था कि वह उन दूरदर्शी का मुक़ाबला कर सकता (तारीखे शेरशाही डा० इम्पीरियल ग्रन्थ की हस्तलिपि, पृ० १६१ १६६, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की हस्तलिपि, पृ० १५३ १६२ अलीगढ़ विश्वविद्यालय हस्त-लिपि, पृ० १७३ १८३, इलियट, वाइनीएल न० ३७१)।

पराजय पर टीका

क्योंकि हजरत शाहशाह के जन्म के नक्षत्र का उदय एव उनके ऐश्वर्य के विशेष समय एव खास स्थान पर प्रकट होने का अवसर समीप आ गया था अत विधाता ने यह विचित्र लीला दिखाई। बुद्धिमानो के एक समूह का यह विचार है कि यह घटना अधिक सावधानी एव चेतावनी का द्योतक है न कि किसी कुकर्म का फल। प्राचीन काल के दार्शनिको का यह मत है कि ससार की दुर्घटनायें विशेष व्यक्तियों के लिए पालिश के समान होती है और सर्वसाधारण के लिए मूर्च्छा स्वरूप। पवित्र-चरित्र वाले प्रतिभाशाली व्यक्तियो के लिए इस प्रकार की घटनायें शिक्षा के साधन है। जब भाग्य के कारखाने के अधिकारी किसी योग्य व्यक्ति को उच्च श्रेणी पर पहुँचाते है तो सर्वप्रथम उसे समस्त सासारिक दशाओ—दु ख-सुख कष्ट-आराम असफलता एव सफलता का (१६६) अनुभव कराते है ताकि वह शाही के उच्च सम्मान का पात्र बन सके। शुहूद[1] के मैदान के कुछ द्रुतगामी पथिको का मत है कि इस परीक्षा तथा दैवी इच्छा का उद्देश्य यह होता है और इस प्रकार जब कभी किसी भाग्यशाली को कोई उत्कृष्ट देन प्रदान करना चाहता है और इस महत्वपूर्ण सौभाग्य की प्राप्ति का समय निकट आ जाता है तो उसे वह ऐसे अवसर पर दु ख, चिन्ता एव कष्ट मे डाल देता है और हानि की धूल उसके ऐश्वर्य एव गौरव के दामन पर बैठा देता है ताकि जब वह प्रवीणता की श्रेणी को प्राप्त हो और सर्वोच्च स्थान तक पहुँच जाय तो इस बिन्दु का तिल उसके ऐनुल कमाल[2] के लिए सिपन्द"[3] बन जाय।

इसे और स्पष्ट रूप मे इस प्रकार कहा जा सकता है कि पवित्र नूर जिसे हजरत आलकुवा अपने आप मे लिये थी और जो मानवता का चोला धारण करके नाना प्रकार से रहस्यमय रूप मे प्रकट हुआ करता था और बाह्य ससार मे स्थान ग्रहण किए हुए था, विशेष दैवी कृपा दृष्टि से महानता की श्रेणी मे पल रहा था। इस समय जब कि उस नूर के मूल उद्देश्य के, जो हजरत शाह शाह का पवित्र व्यक्तित्व है, प्रकट होने का समय निकट आ गया तो कष्टदायक घटनाओ को इस उत्कृष्ट सौभाग्य का सिपन्द बना दिया गया। सृजन के कारखाने को शोभा प्रदान करने वाले ने ऐसी घटना को जन्म दिया। इस समय रहस्यो के अनावरण का कार्य त्यागकर मै अपना विवरण प्रारम्भ करता हूँ।

हुमायूँ का गगा नदी पार करना

सक्षेप मे जब वह पराजय जो ससार के सुधार की नीव रखने वाली थी प्रकट हुई तो गगा नदी तट तक जो एक फरसख की दूरी पर रहा होगा अमीर लोग बिना युद्ध किए भागते चले गए और अपनी कृतघ्नता एव स्वामीभक्ति से उपेक्षा के कारण असफलता के भवर मे डूब गए

१ जो प्रत्यक्ष है। ईश्वर की सत्ता वजूद कहलाती है, उसके अतिरिक्त जो दिखाई पड़े वह शुहूद है।

२ पूर्णत्व की आख अथवा वह आँख जिसके देख लेने से लोग मर जायें।

३ काला दाना जो नजर उतारने के लिये जलाया जाता है।

तथा अपने जीवनकाल की नौकाओं का विनाश की लहरों के थपेडा द्वारा नष्ट करा दिया। हजरत जहाँबानी दृढतापूर्वक हाथी पर सवार हुए और उन्होंने नदी पार की। नदी तट पर हाथी से उत पडे तथा बाहर निकलने का मार्ग ढूढ रहे थे। किनारो के ऊँचे होने के कारण निकलन का स्था न मिलता था। एक सैनिक जो भवर स बच गया था उस स्थान पर पहुँच गया। उसने हजर जहाँबानी के पवित्र हाथो को पकडकर उन्हे ऊपर पहुँचा दिया। वास्तव मे उसने अनन्त का तक स्थायी रहने वाले प्रताप की सहायता करके अपने सौभाग्य को ऊपर खीच लिया। हजरत जह बानी ने उसका नाम एव जन्म-स्थान पूछा। उसने निवेदन किया कि, "मेरा नाम शम्सुद्दीन मुहम्मद तथा मेरा जन्म-स्थान गजनी है। मैं मीर्जा कामरान के सेवकों मे से हूँ।'[1] हजरत जहाँबानी ने उ शाही कृपाओं का आश्वासन दिलाया। इसी बीच में मुकद्दम बेग नामक मीर्जा कामरान के एक उच पदाधिकारी ने हजरत जहाँबानी को पहिचानकर अपने आप को सौभाग्य द्वारा आमन्त्रित उन लोग की श्रेणी में सम्मिलित कर लिया[2]। इस उद्देश्य मे उसने अपना घोडा प्रस्तुत किया और शाह कृपाओं के आश्वासन द्वारा सम्मानित हुआ।

भगापुर (भोगाव) के ग्रामीणो की उद्दडता

हजरत जहाँबानी वहाँ स राजधानी आगरा की ओर रवाना हुए। मार्ग म मीर्जा लोग आकर साथ हो गए। जब वे भगापुर[3] नामक स्थान पर पहुँचे तो कस्बे वाला न (१६७) पादशाही लोगो मे क्रय-विक्रय का मार्ग बन्द करके[4] उद्दडता प्रदर्शित की। इस प्रकार जो व्यक्ति उनके हाथ लग जाता व उसकी हत्या का प्रयत्न करते थे। जब हजरत जहाँबानी को इस बात का पता चला तो उत्कृष्ट आदेश हुआ कि मीर्जा अस्करी, यादगार नासिर मीर्जा तथ मीर्जा हिन्दाल इस निष्ठुर समूह पर छापा मारें। इस अत्याचारी समूह मे लगभग ३००० अश्वा रोही तथा पदाती एकत्र हो गये थे। जब बादशाही आदेश उन्हे प्राप्त हुआ तो मीर्जा अस्करी ने जाने मे विलम्ब किया। यादगार नासिर मीर्जा ने उसे कुछ छडियाँ मारकर कहा कि, "तुम लोगों के पारस्परिक विरोध के कारण कार्य इस सीमा तक पहुच गया। अब भी सावधान नही होते।" याद गार नासिर मीर्जा तथा मीर्जा हिन्दाल आज्ञा का पालन करते हुए उस समूह की ओर रवाना हुए। घोर युद्ध हुआ। अभागे गवार बहुत बडी सख्या मे मारे गए। मीर्जा लोग उन्हे दड देकर लौट आये। मीर्जा अस्करी शिकायत करने पहुँचा। उसके प्रति क्रोध प्रदर्शित किया गया।

१ **बाबर नामा** से पता चलता है कि वह ख्वाजा कला का सेवक था। फरवरी १५२६ ई० में वह ख्वाजा कला की ओर से दूत बनकर बाबर की सेना में पहुँचा था और फिर बाबर का पत्र लेकर काबुल वापस गया था। (**बाबर नामा**, पृ० ३०३, ३०४, ३०७)। सम्भवत ख्वाजा कला न उसे मीर्जा कामरान की सेवा में सम्मिलित कर दिया होगा।

२ हुमायू के सेवकों में सम्मिलित हो गया

३ सम्भवत भोगाव, परगना तथा तहसील भोगाव जिला मैनपुरी (उत्तर प्रदेश) २७°१७ उत्तर तथा ७९°१४ पूर्व। (*District Gazetteers*, Mainpuri, Vol. X, p 196)।

४ क्रय विक्रय से हाथ खींचकर।

पराजय पर टीका

क्योंकि हजरत शाहशाह के जन्म के नक्षत्र का उदय एवं उनके ऐश्वर्य के विशेष समय एवं खास स्थान पर प्रकट होने का अवसर समीप आ गया था अतः विधाता ने यह विचित्र लीला दिखाई। बुद्धिमानों के एक समूह का यह विचार है कि यह घटना अधिक सावधानी एवं चेतावनी का द्योतक है न कि किसी कुकर्म का फल। प्राचीन काल के दार्शनिकों का यह मत है कि संसार की दुर्घटनायें विशेष व्यक्तियों के लिए पालिश के समान होती हैं और सर्वसाधारण के लिए मुरचा स्वरूप। पवित्र-चरित्र वाले प्रतिभाशाली व्यक्तियों के लिए इस प्रकार की घटनायें शिक्षा के साधन हैं। जब भाग्य के कारखाने के अधिकारी किसी योग्य व्यक्ति को उच्च श्रेणी पर पहुँचाते हैं तो सर्वप्रथम उसे समस्त सांसारिक दशाओं—दुःख-सुख, कष्ट-आराम, असफलता एवं सफलता का (१६६) अनुभव कराते हैं ताकि वह शाही के उच्च सम्मान का पात्र बन सके। शुहूद[1] के मैदान के कुछ द्रुतगामी पथिकों का मत है कि इस परीक्षा तथा दैवी इच्छा का उद्देश्य यह होता है और इस प्रकार जब कभी किसी भाग्यशाली को कोई उत्कृष्ट देन प्रदान करना चाहता है और इस महत्वपूर्ण सौभाग्य की प्राप्ति का समय निकट आ जाता है तो उसे वह ऐसे अवसर पर दुःख, चिन्ता एवं कष्ट में डाल देता है और हानि की धूल उसके ऐश्वर्य एवं गौरव के दामन पर बैठा देता है ताकि जब वह प्रवीणता की श्रेणी को प्राप्त हो और सर्वोच्च स्थान तक पहुँच जाय तो इस बिन्दु का तिल उसके ऐनुल कमाल[2] के लिए सिपन्द[3] बन जाय।

इस और स्पष्ट रूप से इस प्रकार कहा जा सकता है कि पवित्र नूर जिसे हजरत आलकुवा अपने आप में लिये थीं और जो मानवता का चोला धारण करके नाना प्रकार से रहस्यमय रूप में प्रकट हुआ करता था और बाह्य संसार में स्थान ग्रहण किए हुए था, विशेष दैवी कृपा दृष्टि से महानता की श्रेणी में पल रहा था। इस समय जब कि उस नूर के मूल उद्देश्य के, जो हजरत शाह-शाह का पवित्र व्यक्तित्व है प्रकट होने का समय निकट आ गया तो कष्टदायक घटनाओं का इस उत्कृष्ट सौभाग्य का सिपन्द बना दिया गया। सृजन के कारखाने को शोभा प्रदान करने वाले ने ऐसी घटना को जन्म दिया। इस समय रहस्यों के अनावरण का कार्य त्यागकर मैं अपना विवरण प्रारम्भ करता हूँ।

हुमायूं का गंगा नदी पार करना

संक्षेप में जब वह पराजय जो संसार के सुधार की नींव रखने वाली थी प्रकट हुई तो गंगा नदी तट तक जो एक फरसख की दूरी पर रहा होगा अमीर लोग बिना युद्ध किए भागते चले गए और अपनी कृतघ्नता एवं स्वामीभक्ति से उपेक्षा के कारण असफलता के भंवर में डूब गए

१ जो प्रत्यक्ष है। ईश्वर की सत्ता वजूद कहलाती है, उसके अतिरिक्त जो दिखाई पड़े वह शुहूद है।
२ पूर्णता की आँख अथवा वह आँख जिसके देख लेने से लोग मर जायें
३ काला दाना जो नजर उतारने के लिये जलाया जाता है

तथा अपने जीवनकाल की नौकाओं को विनाश की लहरों के थपेड़ों द्वारा नष्ट करा दिया। हजरत जहांबानी दृढ़तापूर्वक हाथी पर सवार हुए और उन्होंने नदी पार की। नदी तट पर हाथी से उतर पड़े तथा बाहर निकलने का मार्ग ढूढ रहे थे। किनारों के ऊँचे होने के कारण निकलने का स्थान न मिलता था। एक सैनिक जो भँवर से बच गया था उस स्थान पर पहुँच गया। उसने हजरत जहांबानी के पवित्र हाथों को पकड़कर उन्हें ऊपर पहुँचा दिया। वास्तव में उसने अनन्त काल तक स्थायी रहने वाले प्रताप की सहायता करके अपने सौभाग्य को ऊपर खींच लिया। हजरत जहांबानी ने उसका नाम एवं जन्म-स्थान पूछा। उसने निवेदन किया कि, 'मेरा नाम शम्सुद्दीन मुहम्मद[१] तथा मेरा जन्म-स्थान गजनी है। मैं मीर्जा कामरान के सेवकों में से हूँ।' हजरत जहांबानी ने उसे शाही कृपाओं का आश्वासन दिलाया। इसी बीच में मुकद्दम बेग नामक मीर्जा कामरान के एक उच्च पदाधिकारी ने हजरत जहांबानी को पहिचानकर अपने आप को सौभाग्य द्वारा आमन्त्रित उन लोगों की श्रेणी में सम्मिलित कर लिया[२]। इस उद्देश्य से उसने अपना घोड़ा प्रस्तुत किया और शाही कृपाओं के आश्वासन द्वारा सम्मानित हुआ।

भगापुर (भोगाव) के ग्रामीणों की उद्दंडता

हजरत जहांबानी वहां से राजधानी आगरा की ओर रवाना हुए। मार्ग में मीर्जा लोग आकर साथ हो गए। जब वे भगापुर[३] नामक स्थान पर पहुँचे तो कस्बे वालों ने (१६७) पादशाही लोगों से क्रय-विक्रय का मार्ग बन्द करके[४] उद्दंडता प्रदर्शित की। इस प्रकार जो व्यक्ति उनके हाथ लग जाता व उसकी हत्या का प्रयत्न करते थे। जब हजरत जहांबानी को इस बात का पता चला तो उत्कृष्ट आदेश हुआ कि मीर्जा अस्करी, यादगार नासिर मीर्जा तथा मीर्जा हिन्दाल इस निष्ठुर समूह पर छापा मारें। इस अत्याचारी समूह में लगभग ३००० अश्वारोही तथा पदाती एकत्र हो गये थे। जब बादशाही आदेश उन्हें प्राप्त हुआ तो मीर्जा अस्करी ने जाने में विलम्ब किया। यादगार नासिर मीर्जा ने उसे कुछ छड़िया मारकर कहा कि, "तुम लोगों के पारस्परिक विरोध के कारण काय इस सीमा तक पहुँच गया। अब भी सावधान नहीं होते।" यादगार नासिर मीर्जा तथा मीर्जा हिन्दाल आज्ञा का पालन करते हुए उस समूह की ओर रवाना हुए। घोर युद्ध हुआ। अभागे गवार बहुत बड़ी संख्या में मारे गए। मीर्जा लोग उन्हें दंड देकर लौट आये। मीर्जा अस्करी शिकायत करने पहुँचा। उसके प्रति क्रोध प्रदर्शित किया गया।

१ बाबर नामा से पता चलता है कि वह ख्वाजा कला का सेवक था। उसको १५२६ ई० में वह ख्वाजा कला की ओर से दूत बनकर बाबर की सेना में पहुँचा था और फिर बाबर का पत्र लेकर काबुल वापस गया था। (बाबर नामा, पृ० ३०३, ३०४, ३०७)। सम्भवतः ख्वाजा कला ने उसे मीर्जा कामरान की सेवा में सम्मिलित करा दिया होगा।

२ हुमायूँ के सेवकों में सम्मिलित हो गया

३ सम्भवतः भोगाव, परगना तथा तहसील भोगाव जिला मैनपुरी (उत्तर प्रदेश) २७°.४७ उत्तर तथा ७९°१४ पूर्व। (*District Gazetteers, Mainpuri, Vol X, p. 196*)।

४ क्रय-विक्रय से हाथ खींचकर।

हुमायू का आगरा पहुँचना

वहाँ से हजरत जहाँबानी ने तीव्र गति से यात्रा करते हुए आगरा में पडाव किया। आस-पास के प्रदेश अस्त-व्यस्त हो चुके थे और प्रत्येक दिशा मे उपद्रव मचा हुआ था। दूसरे दिन प्रात काल उन्होने कुदवतुल अकाबिर[१] मीर रफी[२] के घर में पहुँचकर परामर्श किया। वे सफवी सैयिदो मे से थे और ज्ञान एव बुद्धि में अद्वितीय तथा सुल्ताना के चुने हुए कृपापात्रा मे से थे।

हुमायू का पजाब की ओर प्रस्थान

अन्ततोगत्वा हजरत जहाँबानी ने निश्चय किया कि वे पजाब की ओर प्रस्थान करे[३]। यदि बुद्धि मीर्जा कामरान की सहायता करे तथा भाग्य उसका साथ दे और जो कुछ हानि उसने पहुँचाई है उसका उपचार करे एव उचित रूप मे सेवा हेतु कटिबद्ध हो तो षड्यत्र की दरार बन्द हो जायगी। वे इस सुसकल्प से वहाँ स लाहौर की ओर रवाना हुए। मीर्जा अस्करी सम्बल[४] तथा मीर्जा हिन्दाल अलवर की ओर चल दिए। इस वर्ष की १८ मुहर्रम (२५ मई १५४० ई०)[५] को कासिम हुसेन सुल्तान ने बेग मीरक के साथ, देहली के समीप (शाही) रिकाब चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। बहुत बडी सख्या में लोग उनकी सेवा में प्रविष्ट हो गए। २० मुहरम (२७ मई) को वे

१ प्रतिष्ठित लोगों में नमूना।

२ मीर रफी उद्दीन सफवी को सुल्तान सिकन्दर लोदी ने मुहद्दिस की उपाधि प्रदान कर दी थी व अफगान सुल्तानों एव मुग़ल पादशाहो दोनों के बडे विश्वास-पात्र थे। व हदीस के बहुत बडे विद्वान् थे। (*बदायूनी* **मुन्तखबुत्तवारीख** भाग १, पृ० ३६६, ३६१, ३९९, ४००, **बाबर नामा** पृ० २१९) उनकी मृत्यु ९५४ हि० (१५४७-८ ई०) अथवा ९५७ हि० (१५५०-५१ ई०) में हुई।

३ **तारीखे शेरशाही** में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है —शेर खा ने कन्नौज मे बरमजीद गौर को अत्यधिक सेना सहित इस आशय से आगे भेज दिया कि वह प्रस्थान करे किन्तु हजरत हुमायूँ पादशाह से युद्ध न करे। नसीर खा को सम्भल सरकार की ओर नियुक्त किया। कुछ ही दिनों में उस प्रदेश (कन्नौज) को सुव्यवस्थित करके वह (शेर खा) आगरा रवाना हुआ। जब हजरत हुमायूँ पादशाह आगरा पहुँचे तो उन्होंने अमीर रफी उद्दीन से कहा कि "मेरी सेना को अफगानों ने पराजित नहीं किया है अपितु मैं देखता था कि पाँच पाँच आदमी उन्हें मार मारकर उनके घोड़ों के मुँह मोड़ देते थे।" जब हजरत पादशाह लाहौर पहुँचे तो उन्होंने मखदूमान सदर ही से भी यही बात कही। जब शेर खा आगरा के समीप पहुँचा तो हजरत पादशाह आगरा में न ठहर सके, लाहौर की ओर चल खडे हुए। जब बरमजीद गौर आगरा पहुँचा तो उसने अधिकाश मुग़लों की जो आगरा में रह गए थे, हत्या कर दी। शेर खा को यह बात अच्छी न लगी। उसने बरमजीद को अत्यधिक फटकारा। जब शेर खा राजधानी आगरा पहुँचा तो कुछ दिन तक वहाँ ठहरा रहा। ख्वास खा, बरमजीद गौर एव अफगानों की एक बहुत बड़ी सेना हजरत पादशाह का पीछा करने के लिये लाहौर की ओर नियुक्त कर दी। (**तारीखे शेरशाही** डा० परमात्मा शरण हस्तलिपि, पृ० १६९ १७०, इलाहाबाद विश्व विद्यालय हस्तलिपि, पृ० १६३, अलीगढ विश्व विद्यालय हस्तलिपि, पृ० १८५ १८६, इलियट, बाडलीयन न० ३७१)।

४ सम्भल, तहसील सम्भल जिला मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)। यह २८°३५ उत्तर तथा ७८°३४' पूर्व में मुरादाबाद के दक्षिण पश्चिम में २२ मील पर स्थित है। (*District Gazetteers*, **Moradabad**, *p* 253)

५ बेवरिज के अनुवाद में २६ मई (पृ० ३५५)।

वहाँ से आगे रवाना हुए। २२ मुहर्रम (२९ मई) को रोहतक[1] कस्बे मे हिन्दाल मीर्ज़ा तथा मीर्ज़ा हैदर ने पवित्र सेवा में पहुँचने का सम्मान प्राप्त किया। २३ मुहर्रम (३० मई) को हजरत जहाँबानी उसी मंज़िल पर पड़ाव डाले रहे। किले वालो ने उनके पहुँचने पर नगर के द्वार बन्द कर लिए और इस प्रकार उन्होंने अपने लिए अपमान के द्वार खोल लिए। हजरत (जहाँबानी) ने स्वयं आक्रमण करके अल्प समय में किले वालो को दंड दे दिया। १७ सफर (२३ जून १५४० ई०) को उत्कृष्ट सेना सहरिन्द[2] पहुँच गई। इसी मास की २० सफर (२६ जून-१५४० ई०) को मीर फक्र अली ने मार्ग में अपने जीवन की महमिल[3] बन्द कर ली।

हुमायू का लाहौर पहुँचना

जब उत्कृष्ट सेना लाहौर के उपान्त मे दौलत खा की सराय के समीप पहुँची तो मीर्ज़ा कामरान उनके स्वागत हेतु सेवा मे उपस्थित हुआ। हजरत जहाँबानी ने ख्वाजा दोस्त मुशी के उद्यान मे, जो लाहौर में बड़ा आकर्षक स्थान था, पड़ाव किया। मीर्ज़ा हिन्दाल ने ख्वाजा गाजी के, (१६८) जो उन दिनो मीर्ज़ा कामरान का दीवान[4] था, उद्यान में स्थान ग्रहण किया। तदुपरान्त मीर्ज़ा अस्करी सम्बल से पहुँचा और अमीर वली बेग के घर में ठहरा। इसी बीच मे भाग्यशाली शम्सुद्दीन मुहम्मद, जिसने नदी तट पर (जहाँबानी की) सहायता की थी, पहुँचा और शाही कृपाओं द्वारा सम्मानित हुआ।

अमीरो एव भाइयो का कुछ निश्चय न करना

१ रबी-उल-अव्वल[5] ९४७ हि० (६ जुलाई १५४० ई०) को समस्त सम्मानित भाई, अमीर एव सेवक एकत्र हुए किन्तु इतनी शिक्षाओं एव दैवी चेतावनियों के बावजूद ये लोग सचेत न हुए और निष्ठा की पेटी साहस की कमर पर बाधी। वे कई बार हजरत जहाँबानी की सेवा में एकत्र हुए और उन्होंने संगठन तथा एकता के लिए प्रतिज्ञायें की तथा वचन-बद्ध हुए और सम्मानित एव प्रतिष्ठित लोगो को गवाह भी बनाया। अधिकाश समय ख्वाजा अब्दुल हक का भाई ख्वाजा खावन्द महमूद[6] तथा मीर अबुल बका परामर्श मे सम्मिलित रहते थे। यहाँ तक कि एक

१ जिला तथा तहसील रोहतक, देहली के उत्तर-पश्चिम में ४४ मील पर २८° ५४' उत्तर तथा ७६° ३४' पूर्व में है।

२ सरहिन्द, ३०° ३८' उत्तर तथा ७६° २७ पूर्व पटियाला के अधीन।

३ ऊँट पर बाँधने का कजावा जिसमें स्त्रियाँ बैठती हैं। वाक्य का अर्थ :—मर गया।

४ वह अधिकारी जो मालगुजारी के आय-व्यय की व्यवस्था करता है।

५ **अकबर नामा** के पृ० १३ पर ४ रबी-उल-अव्वल ९४७ हि० (९ जुलाई १५४० ई०) में हुमायू के एक स्वप्न का उल्लेख है : "व कुछ देर ईश्वर के ध्यान में मग्न रहने के उपरान्त सो गये। स्वप्न में उन्होंने देखा कि ईश्वर ने उन्हें एक सम्मानित पुत्र प्रदान किया है जिसके ललाट से ऐश्वर्य का प्रकाश चमक रहा है। उसके नेतृत्व के नूर से बुद्धि एव कल्पना को प्रकाश प्राप्त हो रहा है। परोक्ष के सुखद समाचार पहुँचाने वालों ने उनको वही नाम बताया जो आज मिम्बर, फरमानों, दिरहम एव दीनार को शोभा दे रहा है। जब हजरत जागे तो उन्होंने इस सुखद समाचार के कारण ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और अपने विश्वासपात्रों मे इस कहानी का उल्लेख किया"। (**अकबर नामा** भाग १, पृ० १३-१४)।

६ **तारीखे रशीदी** के अनुसार हजरत मख्दूमी नूरा।

दिन समस्त मीर्जाओ राज्य के उच्च पदाधिकारियो एव प्रतिष्ठित लोगो ने एकत्र होकर एकता एव सगठन के सम्बन्ध म एक तजकिरा[१] लिखा और समस्त लोगो एव पदाधिकारियो न इस शुभ पत्र पर अपनी गवाही लिखी।

मेल के सम्बन्ध में हुमायू का वक्तव्य

जब यह प्रामाणिक महजर[२] पूरा हो गया तो उन लोगो म विचार विनिमय प्रारम्भ किया। हजरत जहाबानी न प्रत्येक विषय म उत्कृष्ट उपदेश एव चुने हुए वाक्य कहे और अपनी मोती बखेरने वाली जबान म कहा उन लोगो का शोचनीय अन्त, जो एकता के मार्ग से विचलित हो जाते हैं सब को ज्ञात है विशेष रूप म अभी कुछ समय पूर्व जब सुल्तान हुसैन मीर्जा[३] की खुरासान म मृत्यु हुई तो उसने १८ योग्य भाग्यशाली पुत्र छोडे किन्तु उसकी अपार धन सम्पत्ति के बावजूद भाइयो की फूट के कारण खुरासान का राज्य जो कई वर्षों म सुख शान्ति का केन्द्र था अल्प समय म इतनी दुर्घटनाओ का शिकार हुआ कि शाही वश न उसपर अधिकार जमा लिया। उसके समस्त पुत्रो म से बदी उज्जमान[४] मीर्जा के अतिरिक्त जो रूम[५] चला गया किसी का कोई चिह्न शेष न रहा[६]। सर्व-साधारण एव विशेष व्यक्ति मीर्जा के पुत्रो की निन्दा करते तथा उन्हे नीच बताते हैं। हजरत गती सितानी फिरदौस मकानी न हिन्दुस्तान सरीखा विशाल देश न जाने कितने कष्ट से विजय किया है। यदि तुम लोगो की फूट के कारण यह तुम्हारे अधिकार स निकल कर ऐसे अयोग्य[७] लोगो के हाथ म चला जाय तो बुद्धिमान् लोग तुम्हे क्या कहेगे? इस समय तुम लोगो को इस विषय पर भली भाँति सोच विचार करना चाहिये और ईर्ष्या के गिरोबान[८]

१ प्रतिज्ञा पत्र।
२ ऐसा दस्तावेज जिस पर साक्षियों के हस्ताक्षर हों।
३ बाबर ने लिखा है "वह खुरासान के राज्य का स्वामी था। उसके राज्य के पूर्व में बल्ख, पश्चिम में बिस्ताम तथा दमगान, उत्तर में ख्वारज्म तथा दक्षिण में सीस्तान एव कधार थे ... उसमें उसके पुत्रों कबीलों एव समूहों में दुराचार एव व्यभिचार अत्यधिक प्रचलित थे। इसी कारण उसके महान वश के इतने पुत्रों में से ७-८ वर्ष के भीतर मुहम्मद जमान मीर्जा के अतिरिक्त किसी का चिह्न शेष न रह गया।" (बाबर नामा, पृ० ५७५, ५७७)। मीर्जा हैदर ने बाबर के खुरासान सुल्तान हुसेन मीर्जा के दरबार में पहुँचने का उल्लेख करते हुए लिखा है, "जब यह दोनों भाई खुरासान पहुँचे तो वहा वालों ने उनका उत्साहपूर्ण स्वागत किया। दोनों मीर्जा इन लोगों के पहुँचने पर अत्यधिक प्रसन्न हुये किन्तु दोनों मीर्जाओं में किसी प्रकार का मेल न था। सर्वप्रथम बाबर पादशाह को ज्ञात हो गया कि इनमें एकता नहीं है। उन्होंने यह भी समझ लिया कि मेल के बिना वे कुछ नहीं कर सकते।" (तारीखे रशीदी, रिजवी मुग़ुल कालीन भारत—बाबर, पृ० ६१२)।
४ सम्भवत मुहम्मद जमान, क्योंकि बदी उज्जमान को तुर्की का सुल्तान बन्दी बनाकर ले गया था और ६२६ हि० (१५१६-२० ई०) में प्लेग के कारण उसकी मृत्यु हो गई थी।
५ टर्की।
६ तारीखे रशीदी के अनुसार यह मीर्जा हैदर का वक्तव्य था।
७ अफगानों।
८ कुर्ते अथवा कमीज का गला ईर्ष्या त्यागने से तात्पर्य है।

के सिर को बाहर निकालना चाहिये ताकि सभी लोगों में तुम्हें सम्मान प्राप्त हो सके और तुम लोग ईश्वर की आज्ञाओं का पालन कर सको।"

मीर्ज़ाओं में मतभेद

जिन लोगों ने प्रतिज्ञा की थी और वचनबद्ध हुए थे उन्होंने अपनी उस प्रतिज्ञा को भुलाकर अपने स्वार्थ एवं लोभ की दृष्टि से कोई न कोई बात कही। मीर्ज़ा कामरान ने कहा, "मेरी समझ में जो कुछ आता है वह इस प्रकार है कि पादशाह तथा समस्त मीर्ज़ा लोग थोड़े-से सहायकों के साथ कुछ दिनों पर्वत में समय व्यतीत करें और मैं सब लोगों के (१६९) परिवार को लेकर काबुल चला जाऊँ और उन्हें किसी सुरक्षित स्थान पर छोड़कर पुन लौट आऊँ।" मीर्ज़ा हिन्दाल तथा यादगार नासिर मीर्ज़ा ने कहा, "इस समय हमारा अफगानों से युद्ध करना सम्भव नहीं। यही उचित है कि हम भक्कर[1] चले जायें और उस प्रदेश को अपने अधिकार में कर लें। उसके सहारे से गुजरात विजय करें। जब इन दोनों राज्यों पर अधिकार हो जायगा और हमारे कार्य सुव्यवस्थित हो जायेंगे तो इस देश[2] का उत्तम ढंग से मुक्त कराया जा सकेगा।" मीर्ज़ा हैदर ने कहा, 'उचित यह होगा कि समस्त मीर्ज़ा लोग सहरिन्द के पर्वतों से लेकर सारग[3] के पर्वतों के दामन (तक के स्थान) को दृढ बना लें और मैं वचन देता हूँ कि थोड़ी सी सेना लेकर दो मास में कश्मीर विजय कर लूँगा। जब कश्मीर विजय के समाचार प्राप्त हो जायें तो प्रत्येक व्यक्ति परिवार को कश्मीर पहुँचा दे कारण कि उससे अधिक सुरक्षित स्थान कोई अन्य नहीं। शेर खाँ को वहाँ पहुँचने में चार मास लगेंगे और वह गरदूना[4] एवं जर्बज़नों[5] को, जो उसके युद्ध का आधार है, पर्वतों में न ले जा सकेगा। अल्प समय में अफगानों की सेना छिन्न-भिन्न हो जायगी।"

मीर्ज़ा कामरान का विरोध

क्योंकि इन लोगों की वाणी तथा हृदय एक न थे अत बात पूरी हुए बिना ही गोष्ठी समाप्त हो गई। हज़रत जहाँबानी ने लाभदायक परामर्श एवं सार्थक उपदेश देने का बड़ा प्रयत्न किया। (उन्हें आशा थी) कि सम्भवत मीर्ज़ा की बुद्धि का दीप प्रज्वलित हो जाय और वह अपने अन्धकारमय विचारों को त्यागकर सत्यनिष्ठा के मार्ग पर आजाय किन्तु मीर्ज़ा अपनी बात से विचलित न होता था और उसका पूरा प्रयत्न यही था कि सभी छिन्न-भिन्न हो जायें और वह स्वयं काबुल पहुँच कर वहाँ एक कोने में विलासमय जीवन व्यतीत कर सके। वह सर्वदा नीच विचारों में मग्न

१ यहाँ सिन्ध विजय से तात्पर्य है।
२ हिन्दुस्तान।
३ सारग किसी स्थान का नाम नहीं अपितु नमक की पहाड़ियों के अफगानों के एक कबीले का नाम है। सुल्तान सारग सुल्तान आदम का भाई था। उसकी मृत्यु शेर शाह के समय में हो गई होगा क्योंकि कामरान ने हुमायूँ के पास आदम न भेजा था। मीर्ज़ा हैदर का विचार था कि मुगल सिन्ध से कश्मीर तक का नीचे का भाग अर्थात् सरहिन्द (दक्षिण-पूर्व) से रावलपिंडी (उत्तर-पश्चिम) अपने अधिकार में रक्खें।
४ तोप की गाड़ियाँ।
५ एक प्रकार की तोप।

रहता था। सौभाग्य प्रदान करने वाले सावधानी-युक्त उपदेश उसे जगा न पाते थे। दिखाने को तो वह एकता का ढोंग रचता था और कहा करता था कि, "अमुक शुभ मुहूर्त में आ जाऊँगा और एकता एवं संगठन में शत्रुओं के विरुद्ध कटिबद्ध हूँगा।" किन्तु हृदय से वह विरोध की नींव को दृढ़ करता जाता था यहाँ तक कि अपनी दुष्टता एवं अधेपन में अपने सद्र[1], काजी अब्दुल्लाह को गुप्त रूप से शेर खाँ के पास मित्रता तथा संधि के प्रस्ताव के साथ भेजा और शत्रु की सहायता से अपनी अभिलाषाओं की पूर्ति का प्रयत्न किया। उसने पत्र में लिखा कि 'यदि पूर्व की भाँति पंजाब मेरे पास रहने दिया जाय तो अल्प समय में मैं योग्य सेवायें सम्पन्न कर सकूँगा।"

मीर्ज़ा कामरान के सद्र का शेर शाह के पास पहुँचना

शेर खाँ इस घटना के उपरान्त देहली में ठहरा हुआ था और आगे कदम नहीं बढ़ा रहा था। वह समझता था कि जो घटना घटी वह उसके सौभाग्य के फलस्वरूप घटी। उसे चिन्ता थी कि यदि मैं आगे बढ़ता हूँ तो संभवतः मेरी योजनायें असफल हो जायें। लाहौर में जो कुछ हो रहा था उसके विषय में सुन-सुनकर वह बड़ा चिन्तित था और उसे बड़ा भय था। इसी बीच में षड्यन्त्रकारी सद्र[2], जिसकी प्रकृति में नीचता एवं चरित्र में दुष्टता थी, पहुँच गया। शेर खाँ ने, (१७०) जिसकी सफलता का आधार धूर्तता थी, सद्र का सहर्ष स्वागत किया और पारस्परिक विरोध के सुखद समाचार से उसका हृदय हजार गुना बढ़ गया। उसने मीर्ज़ा की प्रार्थनानुसार उचित उत्तर दिया। उस दुष्ट[3] ने उसे अग्रसर होने के लिये प्रेरित किया और अपकार सम्बन्धी प्रस्ताव रक्खे। शेर खाँ ने एक धूर्त को इस आशय से उसके साथ कर दिया ताकि वह वास्तविक स्थिति का पता चलाकर वापस लौट आये। मीर्ज़ा कामरान ने शेर खाँ के दूत से लाहौर के उद्यान में भेंट की और उस दिन जश्न का आयोजन किया तथा हज़रत जहाँबानी को भी आग्रह करके वहाँ लाया।

शेर शाह का व्यास नदी पार करना

दूसरी बार अल्पदर्शी तथा स्वार्थी मीर्ज़ा ने उसी अभागे[3] को शेर खाँ के पास भेजा। इस बार वह नमकहराम सुल्तानपुर[4] नदी तक पहुँचा और निष्ठा के प्रतिकूल प्रस्ताव रक्खे तथा शेर खाँ को नदी पार करने का साहस दिलाया। इसी बीच में मुज़फ्फर तुर्कमान ने, जो करावली[5] हेतु सुल्तानपुर नदी[6] के आसपास नियुक्त था, आकर निवेदन किया कि 'शत्रुओं की सेना ने सुल्तानपुर

१ सद्र—वह अधिकारी जिसे धार्मिक विषयों में पूर्ण अधिकार होता था। वज़ीफ़ों, मिल्क मददे मआश का वितरण उसी के अधीन था। काज़ी तथा मीर अद्ल भी उसी के मातहत होते थे। (आईने अकबरी आईने सुयूरग़ाल)।

२ 'सद्रे पुर ग़द्र' इस शब्द से अबुलफ़ज़ल का सद्रों के विषय में व्यंग्य दृष्टिगत होता है।

३ सद्र।

४ कपूरथला (पंजाब में) ३१°१३ उत्तर तथा ७५°१२ पूर्व, कपूरथला कस्बे से १६ मील दक्षिण में।

५ शत्रु के विषय में पता लगाने, पहरे के लिये।

६ व्यास नदी।

नदी पार कर ली है और मेरे भतीजे जुनैद बेग को, जो अपने रूप, रंग एवं चरित्र दोनों के कारण दरबार का विश्वास-पात्र था, हत्या कर दी है।

मीर्ज़ा हैदर का कश्मीर की ओर प्रस्थान

जमादि-उल-आखिर के अन्त (अक्तूबर १५४० ई० के अन्त) में हज़रत जहाँबानी तथा मीर्ज़ाओं ने लाहौर नदी[2], जो उस समय पार की जा सकती थी, पार की और वे निरन्तर कूच करते हुए चनाब नदी तट पर पहुँचे। हज़रत जहाँबानी ने कश्मीर जाने का संकल्प कर लिया था अतः एक सेना को मीर्ज़ा हैदर के साथ अपने प्रस्थान के पूर्व कश्मीर की ओर भेज दिया। इसका

१ तारीखे शेरशाही में शेर शाह द्वारा हुमायूँ के पीछा करने का उल्लेख इस प्रकार है : शेर खाँ, हाजी खाँ को भवान प्रदान करके लाहौर (इलियट में लहाउर) की ओर रवाना हुआ। जब वह सरहिन्द पहुँचा तो उसने सरहिन्द ख्वास खाँ को दे दिया। ख्वास खाँ ने उसे अपने दास मलिक भगवन्त को दे दिया। जब हज़रत हुमायूँ पादशाह लाहौर पहुँचे तो कुछ मुग़ल अपने देश से नये-नये आये हुए थे। उन्होंने अभी तक अफ़ग़ानों का युद्ध न देखा था। उन्होंने हज़रत पादशाह से निवेदन किया कि, "आप हमें अफ़ग़ानों से युद्ध करने के लिये भेज दें।" वे लोग मानने लगे कि "अफ़ग़ान कौन होते हैं और उनका क्या महत्व है ? वे युद्ध के दिन हमारा मुक़ाबला नहीं कर सकते।" हज़रत पादशाह ने मुग़लों को नियुक्त कर दिया। शेर खाँ ने ख्वास खाँ एवं बरमज़ीद गौर को देहली से पहले ही रवाना कर दिया था अतः सुल्तानपुर में उनका मुग़लों से मुक़ाबला एवं एक दूसरे का युद्ध हुआ। मुग़ल पराजित हो गये और वे लाहौर भाग गये। ख्वास खाँ सुल्तानपुर में ठहर गया। हज़रत हुमायूँ पादशाह एवं मीर्ज़ा कामरान लाहौर से रवाना हो गये। पीछे से शेर खाँ भी लाहौर पहुँच गया। जब शेर खाँ को समाचार प्राप्त हुआ कि हज़रत हुमायूँ पादशाह एवं मीर्ज़ा कामरान के लाहौर से प्रस्थान कर देने के कारण लाहौर खाली है तो वह लाहौर पहुँचा किन्तु वहाँ न ठहरा। जब वह लाहौर से प्रस्थान करके तीन पड़ाव पार कर चुका तो उसे समाचार प्राप्त हुए कि मीर्ज़ा कामरान भेध की (इलियट में जीबारा अथवा चीपारा) पहाड़ियों से काबुल की ओर चला गया। हज़रत पादशाह (सिंध) नदी के किनारे किनारे होते हुए थट्टा के मार्ग से मुल्तान एवं भक्कर की ओर चले गये हैं। शेर खाँ खुशाब में पहुँचा। वहाँ से उसने कुतुब खाँ नुनीब (इलियट में बनेत) ख्वास खाँ, हाजी खाँ, हबीब खाँ, सरमस्त खाँ, जलाल खाँ जलवी (इलियट में जलाल खाँ बिन जलवी) ईसा खाँ नियाज़ी, बरमज़ीद गौर एवं अपनी सेना के अधिकांश भाग को हज़रत पादशाह के पीछे मुल्तान की ओर नियुक्त कर दिया और आदेश दिया कि वे हज़रत पादशाह से युद्ध न करें और उन्हें अपनी (हिन्दुस्तान की) सरहद से निकालकर वापस चले आयें। जब वे हज़रत पादशाह की सेना का पीछा करते हुये दो पड़ाव पार कर चुके तो उन्हें ज्ञात हुआ कि मुग़ल दो भागों में विभाजित हो गये। अफ़ग़ानों की सेना का बड़ी चिन्ता हुई कारण कि शेर खाँ के पास बड़ी थोड़ी सेना थी। कहीं ऐसा न हो कि मुग़ल सेना शीघ्रातिशीघ्र बढ़ती हुई शेर खाँ पर आक्रमण कर दे। अफ़ग़ानों की सेना भी दो भागों में विभाजित हो गई। ख्वास खाँ एवं ईसा खाँ नियाज़ी खुशाब नदी पार करके सिंध के किनारे किनारे थट्टा के मार्ग से रवाना हुए। कुतुब खाँ इत्यादि थट्टा के इस ओर रवाना हुए। मुग़ल सेना को, जो हज़रत पादशाह के लश्कर से पृथक् होकर काबुल की ओर जा रही थी, ख्वास खाँ से मुक़ाबला हो गया। वे (मुग़ल) युद्ध न कर सके। पताका तथा नक्कारा छोड़कर भाग खड़े हुए। ख्वास खाँ ने पताका एवं नक्कारे पर अधिकार जमा लिया। उस मंज़िल से अफ़ग़ानों की सेना वापस होकर शेर खाँ की सेवा में आ गई। शेर खाँ कुछ समय तक खुशाब में ठहरा रहा। (तारीखे शेरशाही डा० परमात्मा शरण की हस्तलिपि, पृ० १७८ १७८, इलाहाबाद विश्वविद्यालय हस्तलिपि, पृ० १७० १७२, अलीगढ़ विश्वविद्यालय हस्तलिपि, पृ० १६३ १६६, इलियट, बाडलीएन न० ३७१)।

२ रावी नदी।

कारण यह था कि जिस समय मीर्ज़ा कामरान साम मीर्ज़ा से युद्ध हेतु कन्धार गया हुआ था तो वह मीर्ज़ा हैदर को अपनी ओर से लाहौर के शासन प्रबन्ध हेतु नियुक्त कर गया था। ख्वाजा हाजी, अब्दाल माकरी तथा रमकी चक[1] एवं कश्मीर के अमीरों का एक समूह वहाँ के शासक के विरुद्ध इस आशय से लाहौर पहुँचा था कि मीर्ज़ा हैदर से परिचय के कारण मीर्ज़ा कामरान से एक सेना लेकर कश्मीर के राज्य को अपने अधिकार में कर ले। यद्यपि मीर्ज़ा हैदर ने अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु यह सम्भव न हो सका। जिस समय मीर्ज़ा हिन्दाल ने अपने नाम का ख़ुत्बा पढ़वाकर विद्रोह कर दिया और मीर्ज़ा कामरान लाहौर से राजधानी आगरा की ओर रवाना हुआ तो मीर्ज़ा हैदर ने अत्यधिक प्रयत्न करके राजधानी से एक सेना, इस आशय से मीर्ज़ा कामरान के एक प्रतिष्ठित (अधिकारी) बाबा जूजक के अधीन भेजी कि वे उन कश्मीरी अमीरों के अधीन जिनका उल्लेख हो चुका है जाकर कश्मीर पर अधिकार जमा ले। बाबा जूजक ने प्रस्थान करने में विलम्ब किया यहाँ तक कि चौसा के घाट की दुर्घटना, जो अनन्तकाल तक स्थायी रहने वाले राज्य के लिए बहुत बड़ी चोट थी, घट गई और वह अभियान त्याग दिया गया। कश्मीर के अमीर नवशहर[2], राजौरी एवं पर्वत की कन्दराओं में निवास करने लगे और किसी मौके की प्रतीक्षा करते रहे। मीर्ज़ा हैदर के पास उनके पत्र बराबर आया करते थे जिनमें उसे कश्मीर विजय हेतु प्रेरित किया जाता था। (१७१) मीर्ज़ा उन पत्रों के विषय में हज़रत जहाँबानी से निवेदन किया करता और उन्हें नित्य-प्रति कश्मीर के हृदयग्राही स्थानों की सैर की इच्छा होने लगी। तदनुसार उन्होंने उस समय मीर्ज़ा हैदर को आदेश दिया कि 'वह एक सेना लेकर नवशहर जाय। यदि कश्मीर के अमीर, जो उसे सर्वदा कश्मीर पर आक्रमण हेतु प्रेरित किया करते थे, साथ दें तो सिकन्दर तोपची, जो उस क्षेत्र के समीप का जागीरदार है अपने आदमियों सहित उनसे जाकर मिल जाय। जब वह दर्रों में पहुँच जाय, तो अमीर ख्वाजा कला बेग[3], जो हज़रत गेती सितानी फ़िरदौस मकानी के प्रतिष्ठित अमीरों में से था और जिसका संक्षिप्त परिचय दिया जा चुका है, कुमक हेतु पहुँच जाय। जब ख्वाजा कला बेग के पहुँचने के समाचार हज़रत जहाँबानी के सम्मानित कानों को प्राप्त होंगे तो वे स्वयं उस ओर प्रस्थान कर देंगे।"

हुमायूं का काबुल की तरफ प्रस्थान

हज़रत जहाँबानी चनाब[4] नदी के तट पर थे कि मीर्ज़ा कामरान तथा अस्करी मीर्ज़ा, ख्वाजा

१ एक पोथी में 'अब्दाल माकड़ी' तथा 'रेकी चक'।
२ पेशावर में।
३ देखिये **बाबर नामा**। हिन्दुस्तान छोड़कर काबुल चले जाने के विषय में उसने अत्यधिक आग्रह किया था और काबुल जाते समय अपने देहली के भवन पर यह शेर लिखवा दिये थे :—

शेर

'यदि मैं कुशलता पूर्वक सिंध पार कर लूं,
तो मेरा मुह काला हो जाय, यदि मैं हिन्द की इच्छा करूं।'

(बाबर नामा, पृष्ठ २०५)।
४ दायें अथवा पश्चिमी तट पर; (बेवरिज, पृ० ३६०)।

अब्दुल हक तथा ख्वाजा खावन्द महमूद के साथ काबुल की ओर चल दिये। मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, उलुग बेग मीर्ज़ा तथा शाह मीर्ज़ा, मुल्तान के क्षेत्र मे उन लोगों के पृथक् होने के समाचार पाकर, मीर्ज़ा कामरान की सेवा मे सिन्ध नदी तट पर उपस्थित हुए। १ रजब ९४७ हि० (१ नवम्बर १५४० ई०) को हज़रत जहाँबानी को, जिन्होंने कश्मीर जाने का सकल्प कर लिया था, मीर्ज़ा हिन्दाल यादगार नासिर मीर्ज़ा तथा कासिम हुसैन सुल्तान आग्रह करके सिन्ध की ओर ले गये। ख्वाजा कलाँ बेग, जिसने हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी का साथ देने की प्रतिज्ञा की थी, सियालकोट[1] से जाकर मीर्ज़ा कामरान के साथ हो गया। सिकन्दर तोपची सारग पर्वत[2] की ओर चल दिया।

हुमायूँ का सिंध की ओर प्रस्थान तथा मीर्ज़ाओं का उससे पृथक् होना

रजब ९४७ हि० (नवम्बर १५४० ई०) में हज़रत जहाँबानी जब मीर्ज़ाओं के प्रयत्न से सिन्ध की ओर रवाना हो गये तो कुछ मंजिलों की यात्रा के उपरान्त, हिन्दाल मीर्ज़ा एवं यादगार नासिर मीर्ज़ा बिना सोचे-समझे बेग मीरक के बहकाने से, जो शाही सेवा से पृथक् होकर उन लोगों से मिल गया था, शत्रुता के मार्ग पर अग्रसर होकर उनसे अलग हो गये। इसी बीच में काज़ी अब्दुल्लाह कुछ अफगानों सहित पहुँच गया। मीर्ज़ा हिन्दाल के करावल[3] लोग उन लोगों को पकड़कर मीर्ज़ा के पास लाये। अभागे अफगानों की हत्या कर दी गई। दुष्ट अब्दुल्लाह, जिसके जीवन की कुछ साँसे अभी शेष थी मीर बाबा दोस्त[4] की सिफारिश से मृत्यु-दंड से मुक्त हो गया। २० दिन तक मीर्ज़ा लोग चिन्ता के रेगिस्तान में भटकते रहे। उनकी समझ में न आता था कि क्या करें और कहाँ जायें। वे सौभाग्य एवं आशीर्वाद से पृथक् होकर तथा प्रताप का साथ छोड़कर एवं अपने उद्देश्य को खोकर, बिना किसी लक्ष्य के मारे-मारे फिरते रहे। हज़रत जहाँबानी रेगिस्तान के मार्ग से बक्कर[5] की ओर रवाना हुए। वे अनुमान एवं अन्दाजे से यात्रा करते थे। जल का अभाव था और अनाज कहीं प्राप्त न होता था। सहनशीलता के पथ-प्रदर्शन एवं तवक्कुल[6] की पूंजी के सहारे यात्रा करते थे यहाँ तक कि एक दिन नक्कारे की आवाज सुनाई दी। पूछ ताँछ के उपरान्त पता चला कि (१७२) दो तीन कुरोह[7] पर मीर्ज़ा हिन्दाल तथा यादगार नासिर मीर्ज़ा खोज की घाटी में भटक रहे हैं।

१ लाहौर से ७२ मील पर, ३२° ३०, उत्तर तथा ७४° ३२' पूर्व में।
२ सारग की पहाडियाँ अथवा धक्करों के प्रदेश में।
३ वे लोग जो शत्रुओं के विषय में पता लगाने के लिये नियुक्त होते थे।
४ अकबर की माता हमीदा बानो बेगम का पिता। (देखिये गुलबदन बेगम के हुमायूँ नामा का अनुवाद, आगे के पृष्ठों में)।
५ बक्कर सिन्ध नदी पर भली भाँति सुरक्षित एक जज़ीरा २७° ४३ उत्तर तथा ६८° ५६ पूर्व में बक्कर तथा रोहरी नगर के मध्य में। एक बक्कर पंजाब के मियांवाली जिले में है (३१° ३७' उत्तर तथा ७१° ४ पूर्व में)। यहाँ बक्कर तथा रोहरी नगर के मध्य के बक्कर से तात्पर्य है।
६ ईश्वर पर आश्रित होना।
७ कोस।

कारण यह था कि जिस समय मीर्ज़ा कामरान साम मीर्ज़ा से युद्ध हेतु कन्धार गया हुआ था तो वह मीर्ज़ा हैदर को अपनी ओर से लाहौर के शासन प्रबन्ध हेतु नियुक्त कर गया था। ख्वाजा हाजी, अब्दाल बाकरी तथा रमकी चक[1] एवं कश्मीर के अमीरों का एक समूह वहाँ के शासक के विरुद्ध इस आशय से लाहौर पहुँचा था कि मीर्ज़ा हैदर से परिचय के कारण मीर्ज़ा कामरान से एक सेना लेकर कश्मीर के राज्य को अपने अधिकार में कर लें। यद्यपि मीर्ज़ा हैदर ने अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु यह सम्भव न हो सका। जिस समय मीर्ज़ा हिन्दाल ने अपने नाम का खुत्वा पढ़वाकर विद्रोह कर दिया और मीर्ज़ा कामरान लाहौर से राजधानी आगरा की ओर रवाना हुआ तो मीर्ज़ा हैदर ने अत्यधिक प्रयत्न करके राजधानी से एक सेना, इस आशय से मीर्ज़ा कामरान के एक प्रतिष्ठित (अधिकारी) बाबा जूजक के अधीन भेजी कि वे उन कश्मीरी अमीरों के अधीन जिनका उल्लेख हो चुका है जाकर कश्मीर पर अधिकार जमा लें। बाबा जूजक ने प्रस्थान करने में विलम्ब किया यहाँ तक कि चौसा के घाट की दुर्घटना, जो अनन्तकाल तक स्थायी रहने वाले राज्य के लिए बहुत बड़ी चोट थी, घट गई और वह अभियान त्याग दिया गया। कश्मीर के अमीर नवशहर[2], राजौरी एवं पर्वत की कन्दराओं में निवास करने लगे और किसी मौके की प्रतीक्षा करते रहे। मीर्ज़ा हैदर के पास उनके पत्र बराबर आया करते थे जिनमें उसे कश्मीर विजय हेतु प्रेरित किया जाता था। (१७१) मीर्ज़ा उन पत्रों के विषय में हज़रत जहाँबानी से निवेदन किया करता और उन्हें नित्य प्रति कश्मीर के हृदयग्राही स्थानों की सैर की इच्छा होने लगी। तदनुसार उन्होंने उस समय मीर्ज़ा हैदर को आदेश दिया कि "वह एक सेना लेकर नवशहर जाय। यदि कश्मीर के अमीर, जो उसे सर्वदा कश्मीर पर आक्रमण हेतु प्रेरित किया करते थे, साथ दें तो सिकन्दर तोपची, जो उस क्षेत्र के समीप का जागीरदार है, अपने आदमियों सहित उनसे जाकर मिल जाय। जब वह दर्रों में पहुँच जाय, तो अमीर ख्वाजा कला बेग[3], जो हज़रत गेती सितानी फिरदौस मकानी के प्रतिष्ठित अमीरों में से था और जिसका संक्षिप्त परिचय दिया जा चुका है, कुमक हेतु पहुँच जाय। जब ख्वाजा कला बेग के पहुँचने के समाचार हज़रत जहाँबानी के सम्मानित कानों को प्राप्त होंगे तो वे स्वयं उस ओर प्रस्थान कर देंगे।"

हुमायूं का काबुल की तरफ प्रस्थान

हज़रत जहाँबानी चनाब[4] नदी के तट पर थे कि मीर्ज़ा कामरान तथा अस्करी मीर्ज़ा, ख्वाजा

१ एक पोथी में 'अब्दाल माकड़ी' तथा 'रिकी चक'।

२ पेशावर में।

३ देखिये **बाबर नामा**। हिन्दुस्तान छोड़कर काबुल चले जाने के विषय में उसने अत्यधिक आग्रह किया था और काबुल जाते समय अपने देहली के भवन पर यह शेर लिखवा दिये थे —

शेर

'यदि मैं कुशलता पूर्वक सिन्ध पार कर लूं,
तो मेरा मुंह काला हो जाय, यदि मैं हिन्द की इच्छा करूं।'

(**बाबर नामा**, पृष्ठ २०५)।

४ दायें अथवा पश्चिमी तट पर, (बेवरिज, पृ० ३६०)।

अब्दुल हक तथा ख्वाजा खावन्द महमूद के साथ काबुल की ओर चल दिये। मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, उलुग बेग मीर्ज़ा तथा शाह मीर्ज़ा, मुल्तान के क्षेत्र मे उन लोगो के पृथक् होने के समाचार पाकर, मीर्ज़ा कामरान की सेवा मे सिन्ध नदी तट पर उपस्थित हुए। १ रजब ९४७ हि० (१ नवम्बर १५४० ई०) को हज़रत जहाँबानी को, जिन्होने कश्मीर जाने का सकल्प कर लिया था, मीर्ज़ा हिन्दाल, यादगार नासिर मीर्ज़ा तथा कासिम हुसेन सुल्तान आग्रह करके सिन्ध की ओर ले गये। ख्वाजा कलाँ बेग, जिसने हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी का साथ देने की प्रतिज्ञा की थी, सियालकोट[1] से जाकर मीर्ज़ा कामरान के साथ हो गया। सिकन्दर तोपची सारग पर्वत[2] की ओर चल दिया।

हुमायूँ का सिंध की ओर प्रस्थान तथा मीर्ज़ाओ का उससे पृथक् होना

रजब ९४७ हि० (नवम्बर १५४० ई०) मे हज़रत जहाँबानी जब मीर्ज़ाओ के प्रयत्न से सिन्ध की ओर रवाना हो गये तो कुछ मजिलो की यात्रा के उपरान्त, हिन्दाल मीर्ज़ा एव यादगार नासिर मीर्ज़ा बिना सोचे-समझे बेग मीरक के बहकाने से, जो शाही सेवा मे पृथक् होकर उन लोगो से मिल गया था, शत्रुता के मार्ग पर अग्रसर होकर उनसे अलग हो गये। इसी बीच मे काजी अब्दुल्लाह कुछ अफगानो सहित पहुँच गया। मीर्ज़ा हिन्दाल के करावल[3] लोग उन लोगो को पकडकर मीर्ज़ा के पास लाये। अभागे अफगानो की हत्या कर दी गई। दुष्ट अब्दुल्लाह जिसके जीवन की कुछ साँसे अभी शेष थी, मीर बाबा दोस्त[4] की सिफारिश से मृत्यु-दड से मुक्त हो गया। २० दिन तक मीर्ज़ा लोग चिन्ता के रेगिस्तान में भटकते रहे। उनकी समझ मे न आता था कि क्या करे और कहाँ जायें। वे सौभाग्य एव आशीर्वाद से पृथक् होकर तथा प्रताप का साथ छोडकर एव अपने उद्देश्य को खोकर, बिना किसी लक्ष्य के मारे-मारे फिरते रहे। हज़रत जहाँबानी रेगिस्तान के मार्ग से बक्कर[5] की ओर रवाना हुए। वे अनुमान एव अन्दाजे से यात्रा करते थे। जल का अभाव था और अनाज कही प्राप्त न होता था। सहनशीलता के पथ प्रदर्शन एव तवक्कुल[6] की पूजी के सहारे यात्रा करते थे यहाँ तक कि एक दिन नक्कारे की आवाज सुनाई दी। पूछ ताँछ के उपरान्त पता चला कि (१७२) दो तीन कुरोह[7] पर मीर्ज़ा हिन्दाल तथा यादगार नासिर मीर्ज़ा खोज की घाटी मे भटक रहे हैं।

१ लाहौर से ७२ मील पर, ३२° ३०, उत्तर तथा ७४° ३२' पूर्व में।

२ सारग की पहाडियाँ अथवा घक्करों के प्रदेश में।

३ वे लोग जो शत्रुओं के विषय में पता लगाने के लिये नियुक्त होते थे।

४ अकबर की माता हमीदा बानो बेगम का पिता। (देखिये गुलबदन बेगम के हुमायूँ नामा का अनुवाद, आगे के पृष्ठों में)।

५ भक्कर सिंध नदी पर भली भाँति सुरक्षित एक जज़ीरा २७° ४३' उत्तर तथा ६८° ५८' पूर्व में सक्कर तथा रोहरी नगर के मध्य में। एक भक्कर पजाब के मियाँवली जिले में है (३१° ३७' उत्तर तथा ७१° ४' पूर्व में)। यहाँ सक्कर तथा रोहरी नगर के मध्य के भक्कर से तात्पर्य है।

६ ईश्वर पर आश्रित होना।

७ कोस।

मायू का मीर्ज़ाओं को अपने पास बुलाना

हज़रत जहाबानी न मीर अबुल बका को जो मीर्ज़ा कामरान का साथ छाडकर हज़रत जहाँबानी का सेवक एव विश्वास पात्र बन गया था, मीर्ज़ाओ के पास इस आशय स भेजा कि वह शाही शिविर की उन्हे सूचना दे और सौभाग्यपूर्ण गम्भीर उपदेश देकर, सम्मानित चौखट का चुम्बन करने के लिये प्रेरित कर। मीर ने शाही आदेशानुसार मीर्ज़ाओ का समझा-बुझाकर शाही सेवा में उपस्थित हाने तथा सौभाग्य प्राप्त करने के लिये प्रवृत्त किया। वे मिलकर बक्कर की आर रवाना हुए। ख्वास खा तथा अफगाना की एक बहुत बडी सेना पीछे पीछे आ रही थी। यद्यपि विजयी सेना की सख्या बडी कम थी किन्तु उन्हे युद्ध का साहस न हुआ।

हुमायू का उच्च पहुँचना

शाबान (दिसम्बर १५४० ई०) के अन्त म जब सम्मानित शिविर उच्च[१] पहुँचा तो अमीर सैयिद मुहम्मद बाकिर हुसनी जो समकालीन सैयिदा एव आलिमा म सर्वोत्कृष्ट था मृत्यु का प्राप्त हो गया और वही दफन हुआ। हज़रत जहाबानी न उसकी मृत्यु पर बडा शोक मनाया किन्तु इस कारण कि यह दुष्ट ससार नश्वर है, और ईश्वर की इच्छा पर आत्म समपण ही बुद्धिमाना की प्रथा है, वे भी ईश्वर क आदेश से सतुष्ट हा गये।

बख्शू लगाह का हुमायू की सेना को सहायता करना

जब बख्शू लगाह के, जो उस भूभाग का ज़मीदार एव एव प्रतिष्ठित व्यक्ति था, निवास स्थान के समीप तेजस्वी शिविर लगे, तो बग मुहम्मद बकावल[३] एव कचक बग के हाथ सम्मानित खिलअत एव कृपा-युक्त फरमान भेज गए और उस खाने जहा की उपाधि, पताका एव नक्कारा प्रदान करने का आश्वासन दिया गया। उसे निष्ठापूर्वक सेवा करने एव शाही शिविर म अनाज भेजने का आदेश हुआ। बख्शू लगाह ने दूना का स्वागत करके तस्लीम की और व्यवहार में बडा शिष्टा चार प्रदर्शित किया। यद्यपि भाग्य ने उसका साथ न दिया कि वह उपस्थित हाकर धरती चुम्बन करता किन्तु जिन बाता का उस आदेश दिया गया था उनका पालन करके उसने उचित उपहार भजे और व्यापारियो की व्यवस्था कर दी ताकि वे शाही शिविर म खाद्य सामग्री ले जाकर बचें। उसने बहुत सी नौकाओ का भी प्रबन्ध कर दिया ताकि वे नदी पार करके बक्कर को ओर रवाना हा। पादशाह नासिर मीर्ज़ा हिरावल[४] के रूप म आगे आग यात्रा करता था। २८ रमज़ान ९४७ हि० (२६ जनवरी १५४१ ई०) का सम्मानित पताकाय बक्कर के क्षत्र म पहुँच गइ। इसके दा

१ बावलपुर (पजाब) की अहमदपुर तहसील में २९°१४ उत्तर तथा ७१°४ पूर्व में, बावलपुर क दक्षिण पूर्व में ३८ मील पर, सतलज क दक्षिणी तट पर चनाब के सगम के सामने।

२ अर्थात् उच्च के सामने पहुँचे कारण कि वे चनाब क दक्षिण की ओर चनाब तथा सिध क सगम में नीचे की तरफ यात्रा कर रहे थे। (बेवरिज, पृ० ३६१)।

३ वह अधिकारी जो बादशाह के भोजन का प्रबन्ध करता था। (देखिये आईने अकबरी आईने मतबख)

४ सेना का अग्र भाग सेना का वह भाग जो मुख्य सेना के आगे आगे चलता है

रि पूर्व जाम[1] के काजी गयासुद्दीन था, जो कि इस सम्मानित वंश से सम्बन्धित था[2] और योग्यता एव सच्चरित्रता से सुशोभित था, सदारत के पद पर सुशोभित किया गया।

हुमायूं लुहरी में

जब ईश्वर की अनुकम्पा से यात्रा के इतने खतरो का मुकाबला करते हुए बक्कर के क्षेत्र में पडाव हुआ और लुहरी[3] नामक कस्बे मे, जो सिन्ध नदी तट पर बक्कर के समक्ष स्थित है, शाही शिविर लगा तो हजरत जहाँबानी ने स्वय एव उद्यान में, जो उस कस्बे के उपान्त में रमणीयता (१७३) एव आकर्षण मे अद्वितीय था पडाव किया। जो सुन्दर भवन वहाँ बने हुए थे उन्हे हजरत जहाँबानी के शुभ व्यक्तित्व द्वारा शोभा प्राप्त हुई। समस्त उद्यान एव घर राज्य के सेवको को बाँट दिये गए। मीर्जा हिन्दाल ने ४-५ कुरोह आगे जाकर पडाव किया और कुछ दिन उपरान्त नदी पार करके उस पार ठहर गया। तदुपरान्त यादगार नासिर मीर्जा ने भी नदी के उस पार पडाव किया। सुल्तान महमूद बक्करी ने जो मीर्जा शाह हुसन बेग अरगून का सहायक था, बक्कर की विलायत को नष्ट भ्रष्ट करके किले की रक्षा का प्रबन्ध किया और नौकाओ को नदी के इस[4] ओर से ले जाकर किले के नीचे लगर डाल दिये। शाह हुसन बेग, मीर्जा शाह बेग अरगून का पुत्र था। जब हजरत गेती सितानी फिरदौस मकानी ने उससे कन्धार छीन लिया[5] तो वह टट्टा एव भक्कर के क्षेत्र में पहुँच गया और इस पूरे प्रदेश को उसने अपने अधिकार में कर लिया।

सुल्तान महमूद का रोहरी समर्पित करना

जब शुभ सेना के पडाव का प्रकाश लुहरी कस्बे मे फैला तो सुल्तान महमूद का उत्कृष्ट आदेश भेजा गया कि वह उपस्थित होकर चौखट चूमने का सम्मान प्राप्त करे और किला शाही सेवको को समर्पित कर दे। उसने निवेदन कराया कि 'मैं मीर्जा शाह हुसेन का सेवक हूँ। जब तक वह सेवा मे उपस्थित न हो मेरा आगमन नमक खाने वालो की प्रथानुसार उचित नही और बिना उसकी आज्ञा के किला समर्पित करना मुनासिब नही।' उसने इसी प्रकार के बहाने बनाये।

१ जाम हिरात का एक प्रान्त जो कोहिस्तान के उत्तरी पूर्वी कोने पर हिरात नदी के समीप स्थित है। हम्दुल्लाह मुस्तौफी कजवीनी ने इसे बडा ही हरा-भरा एव फलो तथा रेशम के लिये प्रसिद्ध बताया है।

२ हुमायूं की माता एव पत्नी (हमीदा बानो बेगम) दोनों शिहाबुद्दीन अहमद जाम के वश से सम्बन्धित थीं। गयासुद्दीन ने अकबर के जन्म के विषय में एक **मौलूदनामे** की भी रचना की। इब्ने बतूता ने शिहाबुद्दीन अहमद जाम का विशेष रूप से उल्लेख किया है। १४वीं शती ई० के अन्त में तीमूर भी शेख के दर्शन हेतु गया था।

३ यहाँ रोहरी से तात्पर्य है। रोहरी सक्कर जिले का तालुका है और २७° ४' तथा २७° ५०' उत्तर एव ६८° ३५' तथा ६९° ४८' पूर्व में स्थित है। रोहरी कस्बा २७° ४१' उत्तर तथा ६८° ५६' पूर्व में सिन्ध नदी के बायें अथवा पूर्वी तट पर स्थित है। (*The Imperial Gazetteer of India* Vol XXI, pp 309-10)

४ पूर्व की ओर से।

५ देखिये **बाबर नामा**, पृ० ७८-८२, मुहम्मद मासूम **तारीख सिन्ध** (मुगल कालीन भारत—बाबर, पृ० ६५०-६५५)।

(१७५) विचार विनिमय किया और मीर को बड़े सम्मान से यादगार नासिर मीर्ज़ा के पास दूत बना कर भेजा ताकि वह मीर्ज़ा को भूल के ख़तरनाक स्थान से निकाल कर सन्मार्ग पर लाये। मीर ने मीर्ज़ा के पास पहुँचकर उसे शिक्षा प्रद एवं सौभाग्य में वृद्धि करने वाले परामर्श दिए और उसे विरोध के मार्ग से एकता के सन्मार्ग पर लाया तथा निष्ठा के धर्म एवं सत्य के अधिनियमों की ओर उसका पथ प्रदर्शन करके मिथ्यापूर्ण कल्पनायें करने से रोक दिया और निश्चय किया कि मीर्ज़ा नदी पार करके सेवा में उपस्थित हो और तदुपरान्त सेवा एवं प्राण त्यागने के दालान में दृढ़ रहे। इसकी शर्त यह रक्खी गई कि जब हिन्दुस्तान विजय हो जाय तो एक तिहाई भाग उसे प्रदान किया जाय। यदि वे काबुल प्राप्त करें तो ग़ज़नी[1], चरख[2], एवं लाहूगर[3], जिन्हें हज़रत गेती सितानी फ़िरदौस मकानी ने मीर्ज़ा की माता[4] को प्रदान किया था, उसे दे दिये जायें।

मीर अबुल बक़ा की हत्या

बुधवार को मीर दूत की सेवायें सम्पन्न करके लौटा। बक्कर के किले वालों को मीर के प्रस्थान का ज्ञान हो गया और उन्होंने एक सेना (उसकी) नौका के विरुद्ध भेजी तथा मीर पर बाणों की वर्षा की। मीर के कई घातक घाव लगे। दूसरे दिन वह इस नश्वर संसार से स्थायी लोक को प्रस्थान कर गया। हज़रत जहाँबानी को इस शोकपूर्ण घटना का बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने अत्यधिक खेद प्रकट किया। तथ्य का निरूपण करने वाली वाणी से निकला कि, "भाइयों का विद्रोह, आश्रितों की कृतघ्नता, मित्रों तथा सहायकों का भली भाँति सहायता न करना, जिसके कारण हिन्दुस्तान का राज्य हाथ से निकल गया और इतने कष्ट भोगने पड़े, सब एक ओर तथा मीर की मृत्यु एक ओर है अपितु इस दुर्घटना की उनसे कोई तुलना नहीं की जा सकती। वास्तव में मीर इतना ही अधिक पूज्य व्यक्ति था जिसके महत्व को समझते हुए हज़रत जहाँबानी ने ये शब्द कहे किन्तु हज़रत जहाँबानी को कुशाग्र बुद्धि एवं विवेक प्राप्त था अतः ऐसे अवसर पर जब धर्म एवं राज्य के सम्मानित व्यक्ति डगमगा जाते हैं उन्होंने अक़्ले कामिल[5] के समीप होने के कारण ईश्वर की इच्छा पर संतोष प्रकट किया। निःसन्देह बुद्धि-हरण करने वाली ऐसी दुर्घटनाओं के समय प्रायः लोगों के धैर्य का पाँव अपने स्थान से विचलित हो जाता है किन्तु ईश्वर पर आश्रित

हुमायूँ तथा हमीदा बानो बेगम के विवाह के सम्बन्ध में भी मीर ने प्रशंसनीय सेवायें सम्पन्न कीं। (आगे के पृष्ठों में गुलबदन बेगम के **हुमायूँ नामा** का अनुवाद देखिये)।

१ ग़ज़नी को सुल्तान महमूद की राजधानी होने के कारण ११वीं शती ई० में प्रसिद्धि प्राप्त हुई। उसने ४१५ हि० (१०२४ ई०) के लगभग इसे एक अद्वितीय नगर बनाने का प्रयत्न किया बाबर ने लिखा है, "ग़ज़नी को ज़ाबुलिस्तान भी कहते हैं यह तीसरी इक़लीम में है। कुछ लोगों का मत है कि कन्धार इसी का एक भाग है . यहाँ से काबुल के लिये यदि कोई पौ फटते ही प्रस्थान करे तो मध्याह्नोत्तर की दोनों नमाज़ों के मध्य में वहाँ पहुँच जायगा . ।" (देखिये **बाबर नामा**, पृ० २५-२७)।

२ चरख अथवा चीख़ काबुल के लुहूगुर (लोहगर) तूमान का एक ग्राम। (**बाबर नामा**, पृ० २४)

३ काबुल का एक तूमान। मआवन्द भी इसी तूमान में है। (**बाबर नामा**, पृ० २४)।

४ बाबर के छोटे भाई नासिर मीर्ज़ा की पत्नी।

५ पूर्णत्व को प्राप्त बुद्धि।

प्रतिभाशाली व्यक्ति, ईश्वर की दी हुई बुद्धि के सहारे से संतोष से काम लेता है। यदि साधारण घटनाओं के बाहुल्य एवं अपने स्वभाव से विवश होकर वह इस आशीष प्राप्त स्थान तक नहीं पहुंच सकता तो विलाप, जो ममार की ओर आकृष्ट रहने वाला की प्रथा है त्याग कर धैर्य के कठिन मार्ग पर अग्रसर होता है। ईश्वर को धन्य है कि हजरत जहाँबानी यद्यपि मनुष्य होने के कारण प्रारम्भ में दुख एवं शोक ग्रस्त हो गए किन्तु "अक्ले कामिल" के पथ प्रदर्शन से, जिस प्रकार ईश्वर के ज्ञानी एवं प्रतिभाशाली रिज़ा[2] एवं तस्लीम[3] की पुष्प वाटिका मे गुलदस्ते तैयार करते तथा मेवा चुनते रहते हैं उसी प्रकार उन्होंने भी जो लौकिक दुर्घटना घटी थी, उससे सतुष्ट होकर दुर्घटना को भाग्य का लिखा समझा और सत्य का निरीक्षण करने वाले नेत्रों से इन उद्यानों के कष्टों का अवलोकन किया।

हुमायूं का बक्कर से प्रस्थान

(१७६) इस शिक्षाप्रद दुर्घटना के ५-६ दिन उपरान्त यादगार नासिर मीर्ज़ा ने नदी पार करके हजरत जहाँबानी की सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। हजरत जहाँबानी ने कृपा के सम्बन्धों द्वारा उसे आध्यात्मिक बन्धनों में बाँधा। इसी बीच में टट्टा के हाकिम के दूत शेख मीरक को विदा करके उसके द्वारा सम्मानित आदेश भेजा कि उसने जो कुछ लिखा था, वह इस शर्त पर स्वीकार हुआ कि वह निष्ठा-पूर्वक उपस्थित हो कर अभिवादन करे। टट्टा वाला कुछ समय तक आने के विषय में कहता रहा। क्योंकि उसकी बात में सत्य के दीपक का प्रकाश न था, अतः वह पूरी न हो सकी, यहाँ तक कि हजरत जहाँबानी बक्कर तथा उस क्षेत्र को यादगार नासिर मीर्ज़ा को प्रदान करके, १ जमादि-उल आखिर ९४८ हि० (२२ सितम्बर १५४१ ई०) को टट्टा की ओर रवाना हुए। ऐसे खराब प्रदेश को, जो पादशाही न्याय के कारण आबाद होने लगा था और जहाँ अब अनाज तथा तरकारियों की पैदावार बढ़ गई थी, मीर्ज़ा को देकर वे आगे रवाना हुए।

सेहवान के समीप हुमायूं के आदमियों पर आक्रमण

सेहवान[4] के किले के समीप, मुनइम खाँ का भाई फज़ील बेग, तरश बेग शाहम खाँ का बड़ा भाई तथा अन्य सैनिक लगभग २० आदमी नौका पर सवार होकर जा रहे थे कि किले से कुछ सैनिकों ने निकल कर इस समूह पर छापा मारा। ये लोग सगठित होकर नौका से निकले और शत्रुओं की ओर बढ़े। शत्रु भाग कर किले में प्रविष्ट हो गए। पौरुष के जंगल के कुछ सिंह भी किले मे दाखिल हो गए। क्योंकि वे कुमक की ओर से निराश थे, अतः लौट कर शाही शिविर में पहुँच गये।

१ 'तगनाये शर्काई'।

२ रिज़ा : स्वीकृति, जो कुछ भी घटे उसे ईश्वर की ओर से समझ कर स्वीकार करना तथा कोई आपत्ति प्रकट न करना।

३ सौंपना, सिपुर्द करना। ईश्वर के आदेशों के समक्ष आत्म समर्पण।

४ इसे इतिहासकार सीवी अथवा सिविस्तान भी लिखते थे। इसके पूर्व में सिन्ध नदी, पश्चिम में पर्वत है। यहाँ सिंध नदी की अरल नामक शाखा से जो लरकाना से आती है सिंचाई होती है। सेहवान कस्बा लक्की की पहाड़ियों के समीप है। (Erskine *History of India*, Vol II, p. 223)

हुमायूं द्वारा सेहवान का अवरोध

१७ रजब (६ नवम्बर १५४१ ई०) को हज़रत जहाँबानी ने स्वयं पहुँच कर सेहवान के किले को घेर लिया। शुभ सेना के किले के चारों ओर पड़ाव करने के पूर्व, किले के रक्षकों ने किले के पास बागों एवं भवनों को नष्ट कर दिया था। अवरोध के दिनों में ठट्टा के हाकिम ने आगे बढ़ कर मार्ग रोक लिया और विजयी शिविर में अनाज न पहुँचने दिया। अवरोध में अधिक समय लग जाने और भाग्यशाली लश्कर में अनाज कम पहुँचने के कारण नीच एवं अधम भागने लगे यहाँ तक कि बड़े लोगों के धैर्य के पाँव भी सत्य से पृथक् तथा अपने स्थान से हटने लगे। इस प्रकार मीर ताहिर सद्र, ख्वाजा गयासुद्दीन जामी तथा मौलाना अब्दुल बाक़ी ठट्टा के हाकिम के लश्कर में चले गए। मीर बरका, मीर्ज़ा हसन जफ़र अली पुत्र फ़कीर अली बेग तथा ख्वाजा मुहिब अली बख्शी[1], यादगार नासिर मीर्ज़ा के पास चले गये। इसी बीच में हज़रत जहाँबानी को ज्ञात हुआ कि मुनइम खाँ, फ़ज़ील बेग एवं अन्य लोग मिल गए हैं और भाग जाना चाहते हैं। हज़रत जहाँबानी ने सावधानी की दृष्टि से मुनइम खाँ को, जो इस समूह का नेता था, बन्दी (१७७) बना लिया। अब इस विवरण को यहीं रोक कर यादगार नासिर मीर्ज़ा का कुछ हाल लिखा जाता है।

यादगार नासिर मीर्ज़ा का शाह हुसेन द्वारा मार्ग-भ्रष्ट होना

जब हज़रत जहाँबानी ने उसे बक्कर में छोड़ दिया तो उसने लुहरी (रोहरी) में निवास करना प्रारम्भ कर दिया। किले के आदमियों ने दो बार निकल कर मीर्ज़ा पर अचानक आक्रमण किया। मीर्ज़ा ने इच्छा अथवा अनिच्छा से इस युद्ध में पौरुष प्रदर्शित किया। मुहम्मद अली काबूची[2] तथा शेर दिल ने जो दाना मुनइम खाँ के सम्बन्धी थे, वीरता-पूर्वक शहादत का उत्तम प्याला पी लिया। तीसरी बार शत्रु खुल्लम खुल्ला नौका से निकले और उन्होंने बालू में युद्ध की पंक्तियाँ सुव्यवस्थित कीं। इस बार मीर्ज़ा के आदमियों ने इस योग्यता से युद्ध किया कि लगभग ३००-४०० शत्रु मार डाले गए। वह गरम बालू इन मृत्यु का शिकार होने वाले लोगों के गन्दे रक्त से तृप्त हो गई और वे इतने भयभीत हो गए कि उन्होंने पुनः अग्रसर होने का साहस न किया। मीर्ज़ा शाह हुसेन ने अधिक से अधिक धूर्तता प्रदर्शित करके मीर्ज़ा को सन्मार्ग से विचलित कर दिया। उसने

१ सुल्तानों के राज्य काल के समय के आरिज़ के समान, सेना की भरती, निरीक्षण, वेतन इत्यादि की व्यवस्था मीर बख्शी करता था। उसके लिये सेनापति होना आवश्यक न था। मनसबदारी प्रथा में मनसबदारों की सूची मुख्य बख्शी अथवा मीर बख्शी के पास रहती थी। हर मनसबदार के लश्कर वाले, घोड़े, चेहरे एवं दाग इत्यादि के निरीक्षण का सविस्तार विवरण, मीर बख्शी की सेवा में उपस्थित किये जाते थे। जब कोई सेना रणक्षेत्र में जाती तो प्रायः मीर बख्शी रण-क्षेत्र का नक्शा बादशाह की सेवा में प्रस्तुत करता था। शाही शिविर के साथ बख्शी होते थे और दरबार के पदाधिकारी मनसबदार इत्यादि उन्हीं की अनुमति से बादशाह की सेवा में प्रस्तुत किये जाते। मीर बख्शी के अधीन बख्शी, दारोग़ा, अमीन, मुशरिफ़ तथा अन्य सहायक होते थे। सेना के प्रस्थान के समय मार्ग की कठिनाइयाँ, पुल बनवाना इत्यादि भी प्रायः उसी के सिपुर्द होता था।

२ द्वार-पाल।

अपने मुहरदार[1] बाबर कुली को उसके पास भेजकर कहलवाया, "मैं वृद्ध हो गया हूँ। मेरे दुख दर्द का बटाने वाला कोई नहीं। मैं अपनी पुत्री का तुमसे विवाह कर दूंगा और तुझे खजाना प्रदान कर दूंगा। मैं अपने आगे के जीवनकाल के थोडे से दिन जो शेष हैं, व्यर्थ नष्ट नहीं करना चाहता। हम लोग मिलकर गुजरात प्रदेश विजय कर ले।" संक्षेप में, उसने उस सरल स्वभाव के व्यक्ति को झूठे वचन देकर लुभा लिया और उसने बुद्धि के अभाव एवं कुत्सित विचारों के कारण अपने ललाट पर कृतघ्नता का धब्बा लगा लिया। यदि उसके स्वभाव में ज़रा भी सौजन्यता तथा लेश मात्र को बुद्धि होती तो वह सच्चे वचनों पर जो कृतघ्नता के क्षेत्र के बाहर कदम न निकालता और धूर्तों की स्वार्थपूर्ण बातों पर कान न धरता अपितु ईमानदारी से अपना सिर ऊँचा रखता।

हुमायूं का सेहवान से प्रस्थान

जब हजरत जहाबानी ने अपनी सेना की दीन अवस्था को देखा तो कुछ लोग यादगार नासिर मीर्जा के पास इस आशय से भेजे कि वह ठट्टा के हाकिम पर जो मार्ग रोके हुए है, शीघ्रातिशीघ्र टूट पडे ताकि भाग्यशाली सेना कठिनाई के सकरे मार्ग से समृद्धि मे पहुँच जाय। मीर्जा यद्यपि हृदय से शत्रु हो चुका था किन्तु दिखलाने के लिए उसने अपने पेशखाने[2] को भेज दिया और अपनी झूठी कल्पनाओं के कारण प्रस्थान करने में टाल मटोल करने लगा। इसी बीच में हजरत जहाँबानी ने शेख अब्दुल गफूर[3] को, जो तुर्किस्तान के मशायख की सन्तान मे था और जिसे हजरत जहाँबानी ने अपना विश्वास-पात्र[4] बना लिया था, इस आशय से भेजा कि प्रयत्न करके मीर्जा को शीघ्रातिशीघ्र ले आये। इस अभागे ने जैसा कि कहा गया है —

मिसरा

'यह मार्ग जिसपर तू अग्रसर है वह भी तुर्किस्तान को जाता है'

(१७८) के अनुसार मार्ग-भ्रष्ट होकर अपने उद्देश्य के विरुद्ध इतनी अनुचित बाते अल्पदर्शी मीर्जा के दिल में बैठा दी कि मीर्जा के जाहिरी व्यवहार में भी विकार आ गया। उसने जो पेशखाना आगे भेजा था, उसे भी वापिस मगवा लिया और अनुचित बातें कहला भेजी। जब हजरत जहाबानी को ज्ञात हो गया कि समय उनके कितना प्रतिकूल है और प्रतापी सेना की दरिद्रता का अनुमान लगाना कठिन है तो उन्होंने किले के समीप ठहरना उचित न देखकर १७ जीकाद (३ मार्च १५४२ ई०) को बक्कर एवं लुहरी की ओर प्रस्थान किया। इसी बीच में यादगार नासिर मीर्जा

१ वह अधिकारी जिसके पास शाही मुहर रहती थी।

२ खेमे, डेरे जो सेना के मुख्य शिविर के आगे-आगे भेजे जाते हैं।

३ सम्भवत सम्भल सरकार के आज़मपुर परगने के शेख अबुल गफूर जो शेख अब्दुल कुद्दूस गंगोही के शिष्य थे। उनकी मृत्यु ९८५ हि० (१५७७-७८ ई०) में हुई। (मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी . मुन्तखबुत्तवारीख़ भाग ३, पृ० ४३)।

४ प्रकाशित ग्रन्थ में "यके अज मुकर्रेबान" अर्थात् अपना एक विश्वासपात्र किन्तु अन्य पोथियों में यके अज मुलाजेमान" अर्थात् अपने सेवकों में से एक, "यके अज मीर मालान" अपने मीर मालों में से एक तथा "यके अज मीर पालान" (?) है। निजामुद्दीन अहमद ने भी उसे 'मीर माल' लिखा है।

ने यह अनुचित कार्य किया कि टट्टा के हाकिम के बहकाने पर गन्दम तथा हाला[1] का बन्दी बनाकर टट्टा के हाकिम के पास भिजवा दिया। वे निष्ठावान् जमीदारो में से थे। उन्होंने नौकायें एकत्र कराई और अन्य निष्ठा सम्बन्धी कार्य किये थे। उस कृतघ्न ने उन लोगों की इस सेवा के अपराध में हत्या करा दी। हजरत जहाँबानी इस अनुचित कार्य एवं ऐसे ही सैकड़ो कुकर्मो की ओर से उपेक्षा करके सर्वदा उसको इस आशय से सतुष्ट रखने का प्रयत्न करते थे कि सम्भवत वह अपने कुकर्म के पृष्ठ पर पश्चाताप के वाक्य लिखकर अपना सुधार कर ले।

यादगार नासिर मीर्ज़ा द्वारा हुमायूं पर आक्रमण करने का प्रयत्न

जब उत्कृष्ट पताकाएँ लुहरी के क्षेत्र में पहुँची तो यादगार नासिर मीर्ज़ा अपने सैनिकों सहित शाही शिविर पर छापा मारने के लिए बढ़ा। हजरत जहाँबानी यह समाचार सुनकर तत्काल घोड़े पर सवार हो गए। हाशिम बेग, जो मीर्ज़ा का बड़ा हितैषी विश्वास-पात्र था, इस दुष्टता से अवगत होकर शीघ्रातिशीघ्र मीर्ज़ा के पास पहुँचा। उसने मीर्ज़ा के घोड़े की लगाम कठोरतापूर्वक पकड़ कर फेर दी और उसे नाना प्रकार से डाँटा फटकारा तथा बुरा भला कहा। उसने कठोर शब्दो में उसे डाँटते हुए कहा, "सम्भवत सौजन्य, लज्जा, शिष्टाचार एव मर्यादा की भावनाओं का ससार मे अन्त हो गया है। किस धर्म एव अधिनियम तथा श्रद्धा का बुद्धि के अनुसार अपने आश्रयदाता के प्रति धृष्टता प्रदर्शित करना एव उसका मुकाबला करना उचित बताया गया है?

शेर

'उस सेनापति ने कितनी अच्छी बात कही
अपने कार्य की सीमा पर ध्यान रख।
अपनी योग्यतानुसार अपने पाँव रख
ताकि आकाश पर तू स्थान बना सके।
जो कोई भी अपने कर्तव्या का पालन नहीं करता,
खाता है वही जो इस ससार मे बोता है।"

इस प्रकार की गम्भीर बातें करके वह मीर्ज़ा को लुहरी बन्दर[2] पर लाया। इसी बीच म

१ हाला, सिन्ध के हैदराबाद जिले का एक तालुका २५° २२ तथा २६° ६ उत्तर एव ६८ १९ तथा ६८° ४३' पू में। हाला कस्बा २५°४९' उत्तर तथा ६८°२८ पूर्व में स्थित है प्राचीन हाला के नष्ट हो जाने पर लगभग १५ वर्ष पूर्व यहा मुर्तजाबाद नामक नगर बसा। यह नगर सिन्ध नदी के बढने के कारण खतरे में पड़ गया था किन्तु यहाँ दोनों ही जमीदारों के नाम ज्ञात होते है

२ बन्दर लहरी, लुहरी अथवा रोहरी से भिन्न है। यह सिन्ध नदी पर नहीं अपितु टटटा सरकार में, जहाँ नदी गिरत है, एक बन्दरगाह है। इब्ने बतूता लिखता है, "यह एक बड़ा ही सुन्दर नगर है और समुद्र-तट पर स्थित है। सिन्ध नदी यहीं गिरती है। इस प्रकार लहरी में दो समुद्र मिलते हैं। यह एक बहुत बड़ा बन्दरगाह है। यहाँ यमन फारस एवं अन्य देशों के लोग आते हैं।"(इब्ने बतूता—यात्रा विवरण, रिजवी तुगलुक कालीन भारत भाग १ अलीगढ १९५६ ई०, पृ० १९३)। सम्भवत किसी भ्रम में लुहरी को यहा लहरी बन्दर लिख दिया गया है।

एक बहुत बडी संख्या में कासिम हुसैन सुल्तान सरीखे लोग, झूठ के मार्ग पर अग्रसर होकर हजरत जहाँबानी से पृथक् हो गये और यादगार नासिर मीर्जा से मिल गये।

हुमायूँ का संसार त्यागने का प्रयत्न

दैवी रहस्यो एव आदि काल की ममज्ञता की गम्भीर आवश्यकताओ के कारण प्रत्येक निराशा के सम्बन्ध मे आशा के साधन एकत्र होते है अत जब सिन्ध प्रदेश में आशा के चिह्न दृष्टि-(१७९) गत न हुए और लोगो की कायरता की परीक्षा हो गई, तथा लश्कर की कृतघ्नता, भाइयो का सहायता न करना, सम्बन्धियो का मूर्खता, युग का विरोध (हजरत जहाँबानी ने) देख लिया तो इच्छा हुई कि एकान्तवास एव सती के वस्त्र धारण करके अपने अभिलाषा के पाँव ईश्वर के मार्ग के पथिको के रेगिस्तान मे रक्खें अथवा उद्देश्य के कावे के जजीर एव संकल्प के दामन के तागे को पकडें, या एकान्तवास ग्रहण कर लें तथा शान्ति के कोने को अपने समकालीनो मे मिलने जुलने पर प्राथमिकता दे और इस चिन्ताजनक ससार एव धूर्त दुनिया वालो से पृथक् रहे। उनके कुछ हितैषियो ने, जो प्रत्येक कठिनाई मे राज्य के रिकाब के सेवक तथा मित्रता की लगाम से निकटतम थे, नम्रतापूर्वक आग्रह किया कि वे इस विचार का त्याग दे।

मालदेव के पास जाने का निश्चय

इस समय यह उचित होगा कि सौभाग्य का हुमा[1] की छाया मालदेव के राज्य पर डाल कर सीमा सीधी की जाय[2] कारण कि उसने कई बार निष्ठा सम्बन्धी प्रार्थना पत्र भेज कर दासता की डीग मारी है। उसके पास सेना एव सामान भी है, अत वह इस सौभाग्य से लाभ उठायगा और भाग्यशाली रिकाब मे रहकर उचित सेवायें सम्पन्न करेगा। शनै शनै निष्ठावानो की हार्दिक इच्छा की पूर्ति का कोई न कोई उपाय हो जायगा। हजरत जहाँबानी ने अपने निष्ठावानो की प्रसन्नता के लिए उस ओर प्रस्थान किया।

यादगार नासिर मीर्जा को मिलाने का असफल प्रयत्न

कृपा-युक्त एक फरमान, सौभाग्य को बढाने वाले परामर्श सहित इबराहीम बेग ईशक आका के हाथ इस आशय से यादगार नासिर मीर्जा को भेजा कि सम्भवत यदि वह अपने नीच विचारो से अवगत होकर, पश्चाताप के मार्ग पर अग्रसर हो रहा हो तो दुष्टता के नियमो को त्यागकर सदाचार प्रदर्शित करे। इस कृपा-युक्त फ़रमान में निम्नलिखित शेर लिखा था

शेर

'हे चन्द्रमा सरीखे कपोलो वाले, अन्य लोगो का नेत्र एव दीप,
मै जल रहा हूँ। तू दूसरो के घाव का कब तक मलहम बना रहेगा।'

१ एक कल्पित पक्षी जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि यदि उसकी छाया किसी पर पड जाय तो वह बादशाह हो जाता है।

२ इन कठिनाइयों से मुक्ति प्राप्त की जाय।

सोई हुई बुद्धि वाले मीर्ज़ा के पास जागरूक भाग्य न था अतः उसपर उपदेश का कोई प्रभाव न हुआ। वह उन्हीं कल्पित आभा में मग्न, कृतघ्नता के मार्ग पर अग्रसर तथा लुहरी के क्षेत्र में ठहरा रहा।

मालदेव के राज्य की ओर प्रस्थान

हज़रत जहाँबानी २१ मुहर्रम ९४९ हि० (७ मई १५४२ ई०) को उच्च की ओर रवाना हो गये। वहाँ से १३ रबी उल अव्वल (२७ जून १५४२ ई०) को मालदेव की ओर प्रस्थान किया। इस मास की १४ (२८ जून १५४२ ई०) को दिलावर[1] के किले में पड़ाव किया गया। २० रबी उल-अव्वल (४ जुलाई १५४२ ई०) को हासिलपुर[2] में शाही शिविर लगे। १७ रबी-उल-आखिर (३१ जुलाई १५४२ ई०) को बीकानेर[3] से १२ कोस पर पड़ाव हुआ। मार्ग में पवित्र दरबार के दूरदर्शी लोगों ने मालदेव के छल एवं उसकी धूर्तता का आभास पाकर ऐसी बातें कहीं जो सावधानी की दृष्टि से बड़ी उचित थीं। वे सर्वदा इस विषय में सतर्क रहने का परामर्श दिया करते थे, यहाँ तक कि मीर समन्दर जो अपने समय में बहुत बड़ा प्रतिभाशाली समझा जाता था (१८०) शाही आदेशानुसार मालदेव के पास रवाना हुआ और उसके हृदय की बात जानकर लौट आया। उसने निवेदन किया कि यद्यपि वह निष्ठा सम्बन्धी बात करता है किन्तु उनमें कोई तथ्य नहीं।

मालदेव द्वारा षड्यन्त्र

जब भाग्यशाली पताकायें उसके राज्य के समीप पहुँची तो नागौर[4] का सकाई जो मालदेव के विश्वास-पात्रों में से था, व्यापारी के रूप में सम्मानित शिविर में पहुँचा और बहुमूल्य हीरे[5] का क्रय करने का प्रयास करने लगा। उसके व्यवहार से सदाचार का पता न चलता था। हज़रत जहाँबानी ने कहा कि, इस व्यापारी को समझा दो कि ऐसे बहुमूल्य जवाहर क्रय करने से नहीं मिलते। जिनके भाग्य में वे लिखे गए हों उन्हें या तो ये चमकदार तलवार द्वारा प्राप्त होते हैं या सम्मानित बादशाहों की कृपा द्वारा मिलते हैं।" वे उस धूर्त के आगमन के कारण अधिक सावधान हो गए और समन्दर की सूझबूझ की अत्यधिक प्रशंसा की। उन्होंने रायमल सूनी को इस आशय से मालदेव के पास भेजा कि वह शीघ्रातिशीघ्र उसके पास पहुँच जाय और जो कुछ वहाँ पता लगा सके उसकी सूचना दे। हज़रत जहाँबानी ने यह कार्य सावधानी एवं सतर्कता की दृष्टि से किया कारण कि बादशाहों की यही प्रथा[6] है, विशेषकर कठिनाई और चिन्ता के अवसर पर वे ऐसा

१ भावलपुर पंजाब में।
२ कुछ हस्तलिपियों में 'बासिलपुर'।
३ २८° उत्तर तथा ७३° १८ पूर्व, राजपूताना में।
४ जोधपुर (राजपूताना में) २७° १२ उत्तर तथा ७३° ४४ पूर्व, जोधपुर बीकानेर रेलवे पर।
५ सम्भवतः वह हीरा जिसे हुमायूँ ने आगरा में प्राप्त करके बाबर को भेंट किया था और जिसे बाबर ने उसी को प्रदान कर दिया था। (बाबर नामा, पृ० १६० १६१)।
६ प्रकाशित ग्रन्थ में 'चाल (ढाल)' किन्तु कुछ हस्तलिखित पोथियों में 'तरीका' अथवा 'प्रथा'।

हा करते है। (उसे यह आदेश दिया गया कि) यदि लिखना सम्भव न हो तो निश्चित संकेता द्वारा सूचना दे दे। मालदेव की स्वामी भक्ति एवं निष्ठा का सूचक संकेत यह निश्चित हुआ कि दूत अपनी पाँचो अगुलियो को एक साथ पकड ले और विरोध एवं षडयंत्र को इगित करने के लिए वह केवल अपनी कनिष्ठिका को पकडे। उत्कृष्ट सेना फलौदी[1] नामक कस्बे से जो मालदेव के निवास-स्थान जोधपुर से ३० कुरोह पर है दो-तीन मंजिल आगे बढ़ कर कूके जोगी पर पड़ाव डाले थी कि रायमल सूनी के दूत ने वहाँ पहुंचकर अपनी कनिष्टिका पकडी। इस संकेत से वास्तविक बात का पता चल गया और स्पष्ट रूप से ज्ञात हो गया कि उस अभागे का यह विचार है कि वह छल तथा धूर्तता प्रदर्शित करे। वह बहुत बडी सेना स्वागत के बहाने नियुक्त करके नीच कल्पनाएँ अपने मस्तिष्क में रखे हुए है। हजरत जहाँबानी ने अपने संकल्प की लगाम फलौदी की ओर मोडी।

मालदेव की योजना की आलोचना

कुछ लोगों का मत है कि मालदेव प्रारम्भ में निष्ठावान था और सेवा हेतु उद्यत था किन्तु अन्त में शाही सेना की शोचनीय दशा एवं कमी के कारण अपने पिछले निश्चय से विमुख हो गया अथवा शेर खाँ के धूर्ततापूर्ण आश्वासन या उसके प्रभुत्व को देखकर या उसकी धमकियों के कारण सहायता एवं सेवा की ओर से उपेक्षा करने लगा तथा सौभाग्य एवं कल्याण के मार्ग को त्यागकर निष्ठा की पृष्ठ पलट दिया। बहुत से लोगो का मत है कि उसका दासता प्रदर्शित करना एवं सेवा-सम्बन्धी पत्र भेजना पूर्णत षडयंत्र एवं शत्रुता पर आधारित था[2]।

हुमायूं का मालदेव की सेना को रोकने का प्रयत्न

(१८१) संक्षेप में क्योंकि उस समय सौभाग्य की चित्रशाला के सजाने वाले अन्य कार्य की व्यवस्था में व्यस्त थे अत जो कार्य भी प्रारम्भ किया जाता उसका कोई परिणाम न निकलता। जहा से भी कृतज्ञता एवं सदाचार की आशा होती वहीं से शरारत एवं दुष्टता प्राप्त होती। जब इस जाली सेना ने मलम्म को कसौटी पर कस लिया गया और इन धूर्त लोगो के षडयंत्र का पवित्र हृदय को पता चल गया तो तरदी बेग खाँ मुनइम खाँ एवं शाही सेना के कुछ अन्य सेवको को आदेश हुआ कि वे आगे बढकर उन दुष्टो को रोक दे और उन्हें उत्कृष्ट शिविर में धृष्टता का पाँव रख कर हानि का हाथ पहुचाने न दे। इस प्रकार उन्हें रोककर वे वापस चले आये किन्तु यदि अवसर मिले तो उनपर आक्रमण भी कर दे।

हुमायूं का फलौदी से प्रस्थान

हजरत जहाँबानी अपने कुछ सच्चे प्राण उत्सर्ग करने वालो एवं अन्त पुर की बेगमो सहित चल पडे। विजयी सैनिको में शाह अली बेग जलायर तरसून बेग बन्द बाबा जलायर फजील

१ फलौदी नामक दो स्थान है एक जैसलमीर की सरहद के समीप उत्तरी पश्चिमी कोने पर और दूसरा मारवाड के उत्तर पश्चिम में बीकानेर एवं जैसलमीर की सरहद के समीप।

२ मालदेव के विषय में अबुल्फज़्ल को बहुत कुछ अपने पिता शेख मुबारक नागौरी से ज्ञात हुआ होगा।

३ अकबर के अपनी माता के गर्भ में होने की ओर संकेत है।

बेग, एवं अन्य लोग थे जिनकी संख्या २० तक पहुँचती थी। इनके अतिरिक्त कुछ विशेष दास, शागिर्द-पेशा[१] एवं हितैषी थे। अहले सआदत[२] के समूह में से मुल्ला ताजुद्दीन तथा मौलाना चाँद ज्योतिषी[३] विजयी रिकाब के साथ थे।

हुमायूं की सेना का मालदेव की सेना से युद्ध

जब उत्कृष्ट सेना फलौदी से प्रस्थान करके सातलमीर[४] पहुँची तो मालदेव की सेना दृष्टिगत हुई। जो अमीर इन लोगों को रोकने के लिए नियुक्त हुए थे, वे मार्ग भूलकर अन्य दिशा में चले गए और विद्रोहियों के समूह को सम्मानित पताकाओं तक पहुँचने का अवसर मिल गया। हज़रत जहाँबानी ने जो शक्ति के पर्वत एवं वीरता के समान थे दृढ़ता का पाँव निश्चय एवं सम्मान के दामन में रखकर, ईश्वर प्रदत्त बुद्धि एवं जन्म-गत विवेक से काम लिया। बहुत सी स्त्रियों के घोड़े लेकर युद्ध करने वालों को दे दिए गए और सेना के तीन दल[५] तैयार करके शत्रु पर आक्रमण हेतु भेजे गये। शेख अली बेग तीन-चार अन्य निष्ठावान भाइयों सहित अग्रसर हुआ और उन्होंने शत्रुओं पर, जो एक मकर मार्ग में पहुँच चुके थे, आक्रमण किया। आक्रमण होते ही वे भाग खड़े हुए। शत्रुओं की बहुत बड़ी संख्या मारी गई और दैवी अनुकम्पा से राज्य के सहायकों को विजय प्राप्त हो गई।

हुमायूं का जैसलमीर की ओर प्रस्थान

हज़रत जहाँबानी ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के उपरान्त जैसलमीर की ओर रवाना हुए। १ जमादि-उल-अव्वल (१३ अगस्त १५४२ ई०) को जैसलमीर में विजयी सेना पहुँच गई। इस मंज़िल पर उन अमीरों ने, जो मार्ग भूल गए थे, और अत्यधिक चिन्तित थे, सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया और अपने भाग्यशाली नेत्रों में सम्मानित सेना की धूल का अंजन लगाया। जैसलमीर के राय ने, जिसका नाम राय लोनकरण[७] था, अपने दुर्भाग्य के कारण सहायता न की तथा जलाशय पर इस आशय से पहरे बैठा दिए कि शाही सेना जब रेगिस्तान की यात्रा के (१८२) कष्ट भोगकर मृगतृष्णा के जंगल में इस शोचनीय पड़ाव पर पहुँचे तो उसे जल के अभाव के कारण कष्ट भोगना पड़े। इक़बाल[८] के जंगल के सिंहों ने अग्रसर होकर आक्रमण किया और उस नीच सेना को पराजित कर दिया।

१ नौकर-चाकर, सेवक, ख़िदमतगार।
२ क़ानूने हुमायूनी का अनुवाद देखिये। विद्वान् लोग अहले सआदत के समूह में सम्मिलित थे।
३ उसने अकबर की जन्मकुण्डली तैयार की थी। (अकबर नामा भाग १, पृ० २३)।
४ जोधपुर (राजपूताना के मारवाड़ ज़िले के पुकरन नामक स्थान से २ मील पर। इसे राव जोधा के ज्येष्ठ पुत्र सातल ने १५वीं शती ई० में बसाया था किन्तु राव मालदेव (१५३२-६२ ई०) ने इसे पुकरन क़िले के निर्माण हेतु नष्ट करा दिया।
५ तीन शब्द अस्पष्ट हैं। ब्रिटिश म्यूज़ियम की एक हस्तलिपि में यह शब्द सर के समान है अर्थात् सरे फ़ौज अथवा सेना के सरदार।
६ २६°५५' उत्तर तथा ७०°५५' पूर्व, राजपूताना का एक प्रसिद्ध राज्य था।
७ टाड के अनुसार 'Noon karn (नून करण)'।
८ ईश्वर के वास्तविक प्रताप।

हुमायूं का अमरकोट पहुंचना

वहा से प्रस्थान करके वे अमरकोट के भाग्यशाली किले की ओर रवाना हुए। १० जमादि उल-अव्वल (२२ अगस्त १५४२ ई०) को भोजन एव जल के अभाव का कष्ट भोगते हुए उन्होने उस दृढ किले मे, जो ऐश्वय के सूर्य का उदय स्थान[1] एव प्रताप के मोती का भडार है, पडाव किया। किले के हाकिम राणा प्रसाद ने उत्कृष्ट चरणो के आगमन को अपने राज्य के सम्मान का आभूषण मान उचित सेवाये सम्पन्न की।

हमीदा बानो बेगम की अनार खाने की इच्छा

हजरत शाहशाह के पवित्र अस्तित्व के आशीर्वादो मे से, जिसने युग के प्रतिभाशाली लोगो को आश्चर्य-चकित कर दिया, एक यह है कि हजरत मरियम मकानी को, जो सृष्टि के कारखाने के उस अद्वितीय (व्यक्ति) के कारण गभवती थी, एक दिन एक रेगिस्तान म यात्रा करते समय अनार खाने की इच्छा हुई। उस निजन रेगिस्तान म जहा अन्न जल कुछ भी प्राप्त न था और अनाज का चिह्न बडी कठिनाई से दृष्टिगत होता था, पवित्र दरबार के भोजन इत्यादि का प्रबन्ध करने वाले बडी चिन्ता में पड गए। अचानक एक व्यक्ति ज्वार का भरा हुआ एक थैला बचने के लिए लाया। जब उस पवित्र दरबार म उपस्थित करके थैला खाली करना प्रारम्भ किया गया तो उसम से एक रस से भरा हुआ बहुत बडा अनार निकला। सभी लोग प्रसन्न हो गये और आश्चर्य चकित होकर इसे चमत्कार समझने लगे।

तरदी बेग को धन-सम्पत्ति पर अधिकार

कुछ दिन[2] तक उस आकर्षक स्थान पर पडाव किया गया। इस स्थान पर तरदी बेग खा एव एक अन्य समूह की धन-सम्पत्ति तथा माल व असबाब पर अमरकोट के राय की सहायता से अधिकार कर लिया गया। (वह धन उन्हे) अनन्त काल तक स्थायी रहने वाले राज्य के कारण प्राप्त हुआ था, किन्तु उसे वे इतनी दरिद्रता, कठिनाई एव हजरत जहाबानी के माँगने के बावजूद भी न देते थे। हजरत जहाबानी ने अपने अत्यधिक सौजन्य, व्यक्तिगत उदारता, अपार कृपा एव न्याय के कारण उनकी कुछ धन-सम्पत्ति विजयी रिकाब के सेवको को बाँट दी तथा उसम से अधिकाश उन्ही तुच्छ कृपणो को प्रदान कर दी।

हुमायूं तथा अकबर के अमीरो की तुलना

ईश्वर को धन्य है कि ईश्वर की छाया, हजरत शाहनाह, के पवित्र अस्तित्व के कारण, समकालीनों तथा इस युग के व्यक्तियो की ग्रीवाएँ निष्ठा एव स्वामी भक्ति के फन्दे में फँस गई हैं, अन्यथा उस समय के प्रतिष्ठित अमीर एव बडे-बडे अमानतदार साधारण स्वामी-भक्ति द्वारा भी सुशोभित न थे। उस धन के प्रति, जो उनके स्वामी की कृपा के आशीर्वाद से प्राप्त हुआ था, कृपणता प्रदर्शित करते थे। आजकल उन लोगो की भी, जिन्हे दरबार द्वारा अपमानित कर

१ अकबर का जन्म स्थान।
२ लगभग ६ सप्ताह।

दिया गया है और जो दूर पड़े हुए हैं, जब प्राण-उत्सर्ग करने की इच्छा एवं निष्ठा की भावनाएँ (१८३) उच्चतम श्रेणी पर है तो दरबार के विश्वास-पात्रों एवं उत्कृष्ट राज-सिंहासन के पाये के निकटवर्तियों को इस बात की इतनी उत्कट इच्छा क्यों न होगी। परमेश्वर आदिकाल के इस चुने हुए (व्यक्ति) को संसार एवं संसार वालों के शासन-प्रबन्ध हेतु उदारता की गद्दी एवं ख़िलाफ़त के राज-सिंहासन पर करनों[1] तथा युगों तक आरूढ़ रक्खे।

हुमायूं का अमरकोट से प्रस्थान

क्योंकि जहाँबानी ने आगे जाने का संकल्प कर लिया था, और साहिबे जमीन व जमान[2] के प्रकट होने का समय समीप आ गया था अतः १ रजब ९४९ हि० (११ अक्तूबर, १५४२ ई०) को एक शुभ मुहूर्त में.....[3] हज़रत मरियम मकानी को कुछ प्राण न्योछावर करने वालों सहित ईश्वर को सौंपकर स्वयं आगे रवाना हो गये।

हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी को हज़रत शाहंशाह के शुभ-जन्म का समाचार प्राप्त होना तथा अन्य घटनाएँ

उस समय प्रतीक्षा की रात्रि के जागरण करने वालों की आशा के नेत्र खुले तथा निराशा के द्वार संसार वालों के लिए बन्द हुए और हज़रत शाहंशाही ज़िल्लल्लाही का जन्म हुआ। जैसा कि उल्लेख हो चुका है रविवार ५ रजब ९४९ हि० (१५ अक्तूबर १५४२ ई०) को दैवी नूर द्वारा पोषित (व्यक्ति) पैदा हुआ[4] ताकि संसार वालों के समस्त दुःख स्थायी सुख में परिवर्तित हो जायें और हज़रत जहाँबानी के उस हृदय को, जिसमें कष्ट के फफोले पड़ चुके थे, आराम का मलहम प्राप्त हो जाय। संसार का अव्यवस्थित घर व्यवस्थित हो जाय। आध्यात्मिक विरोध को संगठन प्राप्त हो जाय। शक्ति के दर्शक कर्म की लीला से लाभान्वित हों। बुद्धि को स्वामी प्राप्त हो, न्याय को दयालु-पिता, विवेक को प्रतिभाशाली मित्र, न्यायकारिता को सच्चा पादशाह, प्रेम को गम्भीर पारखी, कदरदानी को प्रसिद्धि, सुलह-कुल[5] के लिए बुद्धि का आश्रय-दाता मध्यस्थ प्राप्त हो जाय। ईश्वर को धन्य है कि आशानुसार विरोध की काली रात्रि में संगठन की उषा उदय हुई। आवारा वालों की अभिलाषायें पूरी हुई, भूमि वालों को आदर-सम्मान प्राप्त

१ करन :—१०-२० ३० अथवा इसी प्रकार १२० वर्ष तक की कोई अवधि।

२ भूमि एवं युग के अधिकारी अर्थात् अकबर।

३ "हौदजे इफ्फ़त व महमिले इज्जत हज़रत मरियम मकानी (सतीत्व का हौदज एवं सम्मान की मंज़िल हज़रत मरियम मकानी अथवा हमीदा बानो बेगम)"।

४ अबुलफ़ज़्ल ने अकबर नामे के प्रारम्भिक पृष्ठों में अकबर के जन्म का उल्लेख किया है, तदुपरान्त (आदम से हुमायूं तक) उसके पूर्वजों की चर्चा की है। अकबर के जन्म से सम्बंधित कुछ आवश्यक अंशों का अनुवाद परिशिष्ट में किया गया है।

५ प्रत्येक से मेल जोल। सुलह कुल सूफ़ियों के एक समूह का मूल सिद्धान्त है। अकबर को प्रारम्भिक शिक्षा इसी सिद्धान्त के मानने वाले विद्वानों ने दी और कुछ समय उपरान्त इसी सिद्धान्त को उसने अपने राज्य का आधार बनाया।

हुआ। जब अंधकार को नष्ट करने वाला यह प्रकाश एवं पृथ्वी को प्रकाशित करने वाली रोशनी, पवित्रता के आकाश में उस वाटिका में फैली तो सुखद समाचार ले जाने वाले द्रुतगामी दूत रवाना हुए। मार्ग में, जब कि हजरत जहाँबानी के दूरदर्शी नेत्र परोक्ष की इस ज्योति की प्रतीक्षा कर रहे थे, यह सुखद समाचार प्राप्त हुए और उनका हृदय सहस्त्र गुना बढ़ गया। उन्होंने ईश्वर के प्रति, जिसने निराशा के कंटकाकीर्ण स्थान में आशा के पुष्प खिलाये और असफलता के रिक्त हाथों में सहस्त्रों सफलताएं दीं कृतज्ञता का सिज्दा किया। भीतर-बाहर खुशी के जश्न का आयोजन एवं उल्लास का प्रबन्ध हुआ। साधारण तथा सम्मानित, धनी तथा दरिद्र, छोटे और बड़े ने सौभाग्य के उस जश्न में खुशी के हाथ फैलाये और प्रसन्नता के पाँव पटके[1] तथा असीम सम्मान प्राप्त किया। इस भव्य जश्न का, जो आकाश की ईद एवं संसार का नवरोज था, हजरत जहाँबानी के उत्कृष्ट
(१८४) शिविर में हजरत शाहंशाह के सम्मानित झूले के पहुँचने एवं कुछ अन्य घटनाओं का उल्लेख, जो सौभाग्य के इस लेख का शीर्षक बनने के योग्य है, इस सम्मानित ग्रंथ के प्रारम्भ में किया जा चुका है। कारण कि यह आध्यात्मिक चित्रशाला हजरत शाहंशाह के जन्म के समय से लेकर उनसे सम्बन्धित आश्चर्यजनक एवं उत्कृष्ट और महान् विजयों का संग्रह है और इन बातों के अतिरिक्त इसमें जो कुछ लिखा गया है वह प्रसंगवश तथा बात पूरी करने के लिए है। ईश्वर को धन्य है कि अनन्त तक रहने वाले इस स्थायी वंश का इतिहास आदम से इस समय तक संक्षिप्त रूप में लिखा जा चुका है ताकि उल्लेख के मुँह से नकाब हट जाय[3]।

हुमायूँ का जून में पड़ाव

संक्षेप में, उस स्थान में हजरत जहाँबानी जन्नत आशियानी ने सौजन्य एवं उदारता का संसार होने के कारण अपने निष्ठावान सहायकों के संताप की दृष्टि से एकान्तवास ग्रहण करने के विचार त्याग दिए और मुल्तान से विशेष रूप से सम्बन्धित सांसारिक प्रबन्ध को[4] अपनी दूरदर्शी निगाहों में रखकर मालदेव की विलायत की ओर प्रस्थान किया। पिशाच मालदेव[5] ने इस उन्नत सौभाग्य को, जो स्वप्न में भी न प्राप्त हो सकता था, न पहचाना और अनुचित रूप से व्यवहार किया। विवश होकर राज्य पर प्राण न्योछावर करने वालों के आग्रह के कारण वे सिन्ध की ओर इस आशय से रवाना हो गये कि सम्भवतः वहाँ के शासक असावधानी की निद्रा से जागकर पिछली भूलों का सुधार कर सकें। यद्यपि संसार को शोभा प्रदान करने वाले का मत इस पक्ष में न था किन्तु भाग्यवश वे वापिस लौट आये। जब शाही सेना उस क्षेत्र के समीप पहुँची तो ज्ञात हुआ कि अरगून[6] लोग जून[7] नामक कस्बे में एकत्र होकर युद्ध की योजनायें बना रहे हैं। हजरत

१ प्रसन्नता प्रकट की।
२ मनशूरे सआदत अर्थात् अकबर नामा।
३ संक्षिप्त रूप में सविस्तार विवरण प्रस्तुत हो जाय।
४ हुमायूँ बाबर के जीवन काल में भी एकान्तवास ग्रहण करना चाहता था। इस विषय में बाबर का हुमायूँ के नाम पत्र देखिये। (बाबर नामा, पृ० २८७-२९०)।
५ मूल में "माल देवे देव माल"।
६ अरगूनों के विषय में देखिये, मुहम्मद मासूम तारीखे सिंध।
७ आईने अकबरी के अनुसार ठाठ-सरकार में। इस सरकार के महालों में यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण था।

जहाँबानी ने शेख अली बेग जलायर को वीरा के एक समूह के साथ आगे भेजा। उसके पूवज भी अपनी निष्ठा एव स्वामीभक्ति के लिए प्रसिद्ध थे और हजरत साहब किरानी के विश्व विजयी राज्य मे इस समय तक स्वीकृत सवायें करते चले आये थे, हजरत जहाबानी स्वय उसके पीछे रवाना हुए। क्याकि शेख अली बेग का साहस विजयी सेना के पीछे होने के कारण बढा हुआ था अत वह वीरो के समान रण-क्षेत्र की ओर रवाना हुआ और थोडे से आदमियो सहित पौरुष का प्रदशन करके अल्प समय म उन लोगो को छिन्न भिन्न एव पराजित कर दिया। विजय की उषा का शीतल पवन तलवार की पूर्व दिशा एव धनुष को क्षितिज मे चलने लगा तथा प्रताप के सूय ने शिक्षा प्राप्ति के उस मैदान के अधकार का अन्त कर दिया। जून कस्ब के समीप उत्कृष्ट सना का पडाव हुआ।

उत्कृष्ट चौखट वाला वह कस्बा हजरत मरियम मकानी के सम्मानित हौदे एव हजरत शाहशाह के महान् झूले के अमरकोट के किले स जहा उनका जन्म हुआ था तेज एव प्रताप सहित (१८५) आने के कारण सुशोभित हुआ। सविस्तार उल्लेख इस ग्रथ की प्रस्तावना मे हो चुका है। क्याकि यह स्थान सिन्ध नदी तट पर स्थित था और उद्याना, नहरा, उत्तम फला और मेवा के कारण सिन्ध प्रदेश में अद्वितीय समझा जाता था, तथा कुछ अन्य कारणा से कुछ समय के लिए इस कस्बे मे उद्याना के म य में पडाव किया गया। आस पास के अरमूना मे युद्ध होता रहा और वे सर्वदा पराजित कर दिये जाते थे। शेख ताजुद्दीन लारी[1] जो हजरत जहाँबानी के विश्वासपात्रों मे से था, उन्ही दिना म शहीद कर दिया गया।

शेख अली बेग जलायर की हत्या

एक दिन शेख अली बेग जलायर, तरदी बेग खा तथा एक अन्य समह आस-पास के स्थानो पर आक्रमण हेतु नियुक्त थे। सुल्तान महमूद बक्करी ने एक बहुत बडी सेना सहित उनपर आक्रमण कर दिया। तरदी बेग खा ने यद्ध की ओर से उपेक्षा की। शेख अली बेग ने दढता प्रदर्शित करते

सम्भवत टट्टा तथा सेहवान के मध्य में सिंध नदी के पूर्वी तट पर। यह रन के उत्तर पश्चिम में चाचकान के पश्चिमी सिरे पर सिन्ध नदी की पूर्वी शाखा पर स्थित है जो रेगिस्तान से होती हुई कच्छ की पश्चिमी सीमा बन जाती है। इसे बहुत सी छोटी-छोटी नदियाँ काटती हैं। (Erskine *History of India under Baber and Humayun* II, p 255 । हेग के अनुसार सिन्ध डेल्टा प्रदेश में अमरकोट से ७८ मील दक्षिण पश्चिम तथा थटटा से ५० मील उत्तर पूर्व में, रन के बायें तट पर। उद्याना एव नदियों से भरे हुए इस भू भाग में हुमायूँ ने अपने बहुमूल्य समय का कुछ भाग आनन्द मगन में व्यतीत किया। [इसी स्थान पर शाहजादा दारा शिकोह कुछ समय के लिए उस समय जबकि वह अपने भाई के कारण मारा-मारा फिर रहा था १६५८ ई० में ठहरा और वहीं उसकी पत्नी की मृत्यु हुई। जून के हाकिम ही ने मित्रता का बहाना बनाकर उसे धोखे से बन्दी बनवा दिया और उसे उसके भाई को सौंप दिया। आधुनिक टॉडो गुलाम हैदर के दक्षिण पूर्व में दो मील पर जून के अवशेष अब भी मिलते हैं। Major General M R Haig *The Indus Delta Country* (London 1894, pp 92 93)]

१ लार निवासी। लार अथवा लारिस्तान, ईरान का समुद्रतटीय प्रान्त है। इब्ने बतूता लगभग ७३० हि० (१३३० ई०) में यहाँ पहुँचा। वह उसे एक बड़ा स्थान तथा अत्यधिक स्थानों एव उत्तम बाजारों से परिपूर्ण बताता है।

हुए उस रण-क्षेत्र में जो शेर मर्दों की सभा का कालीन था प्रसन्नतापूर्वक शहादत का प्याला पी लिया। हजरत जहांबानी के पवित्र हृदय को इस दुर्घटना के कारण बडी ठेस लगी। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य बातों के कारण उनका दिल बक्कर की ओर से फीका पड गया और उन्होंने कन्धार की ओर जाना निश्चय कर लिया।

बैराम खां का हुमायूं के पास पहुँचना

इसी बीच में ७ मुहर्रम ९५० हि० (१२ अप्रैल १५४३ ई०) को बैराम खा गुजरात के क्षेत्र से अकेला पवित्र राजसिंहासन के पाये में पहुँच गया और हजरत जहांबानी के घायल हृदय पर मलहम रक्खा। उसका आगमन हजरत जहांबानी की प्रसन्नता एवं हर्ष का कारण बना। यह बडे आश्चर्य की बात है कि (शाही) सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त करने के पूर्व सर्वप्रथम वह रण-क्षेत्र में पहुँचा और लोगों को बताये बिना उसने बडी वीरता से युद्ध किया। विजयी सेना को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने सोचा कि सम्भवत वह परोक्ष की सेना का कोई व्यक्ति होगा। जब उसे ज्ञात हो गया कि वह बैराम खा है तो जो सेना युद्ध हेतु खडी थी उसने खुशी का नारा लगाया। इससे हजरत जहांबानी की प्रसन्नता और भी बढ गई। इस कारण वे उस वाटिका रूपी भूभाग में कुछ और ठहर गये[1]।

बैराम खां का हुमायूं के पास पहुँचने के पूर्व का इतिहास

बैराम खा का संक्षिप्त हाल इस प्रकार है —कन्नौज की शोकमय दुर्घटना में अपने प्राणों को खतरे में डालने के उपरान्त वह सम्भल की ओर रवाना हुआ। वहां उस भूभाग के राजा मित्र सेन के पास लखनोर[2] कस्बे में शरण ली और कुछ समय तक उसके आश्रय में रहा। जब यह समाचार शेर खा को प्राप्त हुए तो उसने आदमी भेजकर उसे बुलवाया। राजा ने विवश होकर उसे खान के पास भेज दिया। मालवा के मार्ग में वह उसके पास पहुँच गया। सर्वप्रथम शेर खा[3] ने

१ तीन मास, कारण कि वे वहां से १० जुलाई १५४३ ई० के पूर्व न रवाना हो सके।

२ **आईने अकबरी** के अनुसार सम्भल सरकार में जहाँ का क्षेत्रफल २४६४४० बीघा, राजस्व २,४६६,२०८ दाम, सुयूरगाल ३७,९८२ दाम थी। यहाँ १००० अस्वारोही तथा ५००० पदाती रहते थे।

३ **तारीखे शेरशाही** में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है : जब शेर खा ने मसनदे आली ईसा खां को सम्भल की सरकार की ओर विदा कर दिया तो उसने कहा कि, 'मैं देहली से लखनऊ (लखनौर से तात्पर्य है) तक के स्थानों) के विषय में संतुष्ट हो गया।' जिस समय मसनदे आली सम्भल पहुँचा तो हजरत पादशाह के मुख्तार बैरम बेग को, जो जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह के राज्यकाल में खाने खाना होगया था, नसीर खा ने बन्दी बना लिया था। बैरम बेग के सम्भल नगर में आने का कारण यह था : जब हजरत हुमायूं पादशाह की सेना छिन्न-भिन्न हो गई तो बैरम बेग सम्भल पहुँचा। उसकी मियाँ अजीजुल्लाह दानिशमन्द (आलिम अथवा विद्वान्) के पुत्र मियाँ अब्दुल वहहाब से जो नगर का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था, बडी घनिष्ठता थी। मियाँ अब्दुल वहहाब नसीर खा के भय के कारण उसे नगर में न रख सका। उसने उसे लखनौर के राजा मित्रसेन को इस आशय से सौंप दिया कि वह उसे कुछ दिन अपने नगर में, जहाँ जंगल ही जंगल है, रक्खे। (राजा ने कुछ समय तक उसे अपने राज्य के उत्तरी भाग में जहाँ घने जंगल हैं, रक्खा)। नसीर खा को पता चल गया कि बैरम बेग मित्रसेन के पास है अत: उसने राजा को लिखा कि वह बैरम बेग को ले आये। शेर खा के भय से उसने बैरम बेग को

उठकर उससे भेंट की और उसे आकृष्ट करने के लिए धूर्ततापूर्वक वार्ता की। बात करते-करते (१८६) उसने कहा, 'जिसमें निष्ठा होती है, वह भूल नहीं करता।' बैराम खाँ ने उत्तर दिया, 'ऐसा ही है। जिसमें निष्ठा होगी वह भूल न करेगा।' बुरहानपुर के समीप से सहस्रों कठिनाइयाँ झेलते हुए ग्वालियर के हाकिम अबुल कासिम के साथ भागकर वह गुजरात की ओर रवाना हुआ। मार्ग में शेर खाँ के दूत ने, जो गुजरात से आ रहा था, इस बात से अवगत होकर आदमी भेजे और अबुल कासिम को जिसका रूप एवं डील डौल बड़ा ही उत्तम था बन्दी बना लिया। बैराम खाँ ने सौजन्य एवं पौरुष प्रदर्शित करते हुए आग्रह किया कि, 'मैं बैराम खाँ हूँ।' अबुल कासिम ने वीरतापूर्वक कहा, 'यह मेरा सेवक है। वह अपने आप को मेरे ऊपर न्योछावर करना चाहता है। उसकी ओर कदापि हाथ मत बढ़ाना'। वे लोग निम्नांकित मिसरे के अनुसार व्यवहार कर रहे थे

मिसरा

'मुझे छोड़ दो और मेरे मित्र का हाथ पकड़ लो।'

इस प्रकार बैराम खाँ मुक्त होकर सुल्तान महमूद[1] के पास गुजरात पहुँचा। अबुल कासिम को शेर खाँ के समक्ष प्रस्तुत किया गया। सौजन्य की उस खान के महत्व को न पहचान कर उसने

नसीर खाँ को सौंप दिया। नसीर खाँ उसकी हत्या करा देना चाहता था। मियाँ अब्दुल वहहाब तथा मसनदे आली ईसा खाँ में सुल्तान सिकन्दर लोदी के समय से प्राचीन मित्रता थी। उसने ईसा खाँ से निवेदन किया कि वह बैरम बेग को अत्याचारी नसीर खाँ के चंगुल से, जो उसकी हत्या करा देना चाहता है, मुक्ति दिला दे। मसनदे आली ईसा खाँ, बैरम बेग को नसीर खाँ से मुक्ति दिलाकर स्वयं अपने घर लाया और कुछ दिन अपने पास रक्खा तथा उसके लिए खूराक (जीवन निर्वाह के लिए कुछ धन से तात्पर्य है) निश्चित कर दी। उसने राजा मित्रसेन की जमानत ले ली कि जब वह (मसनद आली ईसा खाँ) शेर खाँ की सेवा में ■ यगा तो उसे भी अपने साथ लेता जायगा। जब मसनद आली मन्दू एवं उज्जैन के अभियान के समय शेर शाह की सेवा में पहुँचा तो बैरम बेग को अपने साथ लेता गया और उज्जैन नगर में बैरम बेग को शेर खाँ की सेवा में प्रस्तुत किया। शेर खाँ ने उससे क्रोधित होकर पूछा कि वह (बैरम) इस समय तक कहाँ था? मसनद आली ने निवेदन किया कि वह शेख सलही कत्ताल (इलियट के अनुवाद में कहाल) के घर में था। शेर खाँ ने कहा कि, "क्योंकि अफ़गानों की कौम में यह प्रथा है कि जो अपराधी शेख सलही के घर में शरण ले लेता है उसके अपराध क्षमा कर दिए जाते हैं, मैंने बैरम बेग को क्षमा कर दिया।" जब शेर खाँ के (दरबार से) उठने का समय आ गया तो मसनद आली ईसा खाँ ने निवेदन किया कि, "आपने शेख सलही कत्ताल के कारण उसकी हत्या नहीं कराई, मैं उसे अपने साथ लाया हूँ। मेरे कारण उसे आप घोड़ा तथा खिलअत प्रदान कर दें और आदेश दें कि मुहम्मद कासिम के साथ जो ग्वालियार समर्पित करके आया है, स्थान ग्रहण करे।" शेर खाँ ने हमें आदेश दिया कि उसे मसनदे आली ईसा खाँ की खातिर घोड़ा तथा सरापा दे दिया जाय, और उसे मुहम्मद कासिम के पास स्थान दे दिया जाय। तब शेर खाँ ने उज्जैन से प्रस्थान किया तो बैरम बेग एवं मुहम्मद कासिम दोनों गुजरात की ओर भाग गये। मुहम्मद कासिम मार्ग में मार डाला गया। बैरम बेग गुजरात पहुँचा। शेख गदाई गुजरात में था। उसने बैरम खाँ की उत्तम सेवायें कीं। गुजरात से बैरम खाँ हुमायूँ की सेवा में पहुँचा। (तारीखे शेरशाही डा० परमात्मा शरण की हस्तलिपि, पृ० १७१-१७२ इलाहाबाद विश्वविद्यालय की हस्तलिपि पृ० १६५-१७४, १६७, अलीगढ़ विश्वविद्यालय हस्तलिपि, पृ० १८७-१९०, इलियट, बाडलीएन न० ३७१)।

१ सुल्तान महमूद द्वितीय ने ९४३ हि० (१५३७ ई०) से ९६१ हि० (१५५४ ई०) तक राज्य किया।

उसे शहीद करा दिया। शेर खां बार बार कहा करता था कि, "जब बैराम खां ने उस दरबार में जैसे ही कहा कि, 'जिसमें निष्ठा होती है, वह भूल नहीं करता' तो मैं समझ गया कि वह हमारा साथ न देगा।" सुल्तान महमूद गुजराती ने भी बैराम खां से अपने पास रहने का बड़ा आग्रह किया किन्तु उसने स्वीकार न किया और हिजाज जाने की अनुमति लेकर सूरत नामक बन्दरगाह पर पहुँचा। वहाँ से हरिद्वार[1] की विलायत में चला गया और वहाँ से अपने स्वामी तथा आश्रयदाता के चरणों में जून कस्बे में पहुँच कर सम्मानित हुआ।

हज़रत शाहंशाह द्वारा, जो करामात[2] के शीर्षक एवं मकामात[3] की प्रस्तावना थे, अपने सम्मानित जन्म से ८वें मास में चमत्कारो का प्रदर्शन

दैवी ज्ञान के पृष्ठों पर, जो अज़ल[4] एवं अबद[5] की लौह महफ़ूज़[6] है यह लिखा है कि जब संसार की शोभा देने वाले के आश्चर्यजनक शीश पर सम्मान का मुकुट रख दिया जाता है और उसे सृष्टि के अन्य व्यक्तियों से पृथक् करके लौकिक एवं अलौकिक छवि दिखाने वाले स्थान में पहुँचा दिया जाता है, तो उस सौभाग्यशाली द्वारा उसके जन्म से ही विचित्र एवं आश्चर्यजनक घटनायें घटने लगती हैं। उनमें से प्रत्येक करामात परोक्ष का उद्घोषक होती है जो उच्च स्वर से उसके उत्कृष्ट स्थान को संसार वालों के बुद्धि के कानों तक पहुँचाती है और इस तथ्य के निरूपण से संसार वालों के सौभाग्य में वृद्धि होती है। इस तथ्य का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि जब हज़रत शाहंशाह के शुभ जन्म को सात मास व्यतीत हो गए और जब वे ८वें मास में प्रविष्ट हुए तो उन्होंने एक आश्चर्यजनक चमत्कार प्रदर्शित किया। एक दाय का जिसपर सौभाग्य की कृपा की छाया पड़ रही थी, इस्मत किबार[7] जीजी अनगा पवित्रता के उद्यान के उस प्रथम फल को दूध (१८७) दे रही थी और इस्मत नक़ाब[8] माहम अनगा एवं अन्य लोगों के विरोध के कारण दुखी थीं। इन लोगों ने हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी से कह दिया था कि मीर ग़ज़नवी[9] की पत्नी ने जादू कर दिया है और हज़रत शाहज़ादये आज़मिशां[10] उसके दूध के अतिरिक्त किसी

1 कुछ पाण्डुलिपियों एवं शुद्धि पत्र में 'मारवाड़' है। सम्भवतः बैराम खां हुमायूँ के मालदेव के पास पहुँचने के समाचार प्राप्त करके मारवाड़ (जोधपुर) गया होगा किन्तु बेवरिज ने इस विषय पर सविस्तार प्रकाश डालते हुये लिखा है कि सम्भवतः बैराम खां हिन्दू योगियों के साथ हरिद्वार चला गया हो। क्योंकि मआसिरे रहीमी में दो स्थानों पर हरिद्वार ही लिखा है अतः बेवरिज का विचार है कि हरिद्वार ही ठीक होगा। (बेवरिज, पृ० ३५२)।
2 सूफियों के चमत्कार।
3 सूफियों की आध्यात्मिक यात्रा के विभिन्न जीने।
4 अनादि काल।
5 अनन्त।
6 वह सुरक्षित तख्ती जिसपर संसार में घटने वाली समस्त घटनाओं का उल्लेख है तथा जिसपर सभी के भाग्य लिखे हुये हैं। इस तख्ती को कोई पढ़ नहीं सकता।
7 सतीत्व का गुम्बद।
8 सतीत्व का परदा।
9 शम्सुद्दीन मुहम्मद।
10 संसार वालों का शाहज़ादा, अकबर।

अन्य के दूध की ओर आकृष्ट नही होते। उसी समय जब वहा कोई अन्य उपस्थित न था, हजरत जहाँबानी एकान्त देख कर बाते करने लगे और अपनी चमत्कार का निरूपण करने वाली जबान से जीजी अनगा के दुखी हृदय के प्रोत्साहन हेतु मसीह[1] के समान कहा कि, "प्रसन्न हो जा कारण कि खिलाफत के आकाश का प्रकाश तेरी गोद में रहेगा और तेरे दुख की रात्रि को प्रसन्नता का नूर प्रदान करेगा। तू हमारे इस भेद को किसी से कदापि मत बताना और दैवी लीला के इस रहस्य को समय के पूर्व मत खोलना कारण कि परोक्ष की गम्भीर बाते एव बहुत बडे बडे लाभ इनमें छिपे हैं।" जीजी *अनगा कहा करती थी कि, मुझे इस प्राण-दायक घोषणा ने अत्यधिक प्रसन्न कर दिया* और दुख की गाठ अचानक मेरे हृदय मे खुल गई। इस कारण कि ऐसे नूर के बालक की देख रेख तथा ऐसे उदारता का वितरण करने वाले की रक्षा ईश्वर की ओर से केवल मेरे ही भाग्य मे आई है, मेरे हृदय की प्रसन्नता सैकडो एव सहस्रो गुना बढती जाती थी और नित्य प्रति मेरे समक्ष हर्ष एव उल्लास के द्वार अधिक से अधिक खुलते जाते थे। इस महान् देन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करके मैं हृदय से उनकी सेवा मे लग गई। दोनो लोको का सौभाग्य मुझे प्राप्त हो गया। मै इस रहस्य को छिपाये रखती थी यहाँ तक कि राज्य का वह पौधा विश्व-विजय के सिंहासन पर आरूढ हो गया।"

एक दिन हज़रत शाहशाह देहली से पालम[2] कस्बे के समीप शिकार हेतु गए थे। वहाँ मार्ग में एक बहुत बडा भयकर सर्प, जो बडे बडे वीरो को कम्पित कर देता, निकल आया। हज़रत शाहशाह हजरत मूसा[3] के समान मोजजा[4] दिखाते हुए बिना किसी भय के अपने हाथ को "यदे बैजा"[5] बनाये हुए बढे और दैवी प्रेरणा से वीरतापूर्वक सर्प की दुम को अपने हाथ में लेकर उसकी बुरी दशा कर दी। मीर्जा अजीज कूकुल्ताश के भाई यूसुफ मुहम्मद खा ने इस विचित्र दृश्य को देख कर बडे आश्चर्य से इसका उल्लेख जीजी अनगा से किया। उस समय मैंने उस गुप्त रहस्य एव भेद को, जिसे मैंने स्वय देखा तथा सुना था, अपने प्रिय पुत्र को बताते हुए कहा कि, "हजरत शाहशाह ने जब शिशु अवस्था मे ऐसा विचित्र प्रदर्शन किया तो फिर युवावस्था को प्राप्त हो कर यदि इस करामत का प्रदर्शन करे तो कोई आश्चर्य की बात नही कारण कि प्रत्येक कार्य का एक समय होता है और प्रत्येक बात का एक अवसर। मेरे इस रहस्य को किसी को न बताने का यह कारण था कि मैं जिससे भी कहती वह विश्वास न करता अपितु शत्रु लोग मेरी बात को मेरी मूर्खता एव बुद्धि की कमी बताते। इस बात की मिठास उनकी इच्छाओ की स्वादेन्द्रिय को कडुवा बना देती। इसके अतिरिक्त मुझे इसके बताने की अनुमति भी न थी। हे पुत्र ! इस समय जब तुझसे मैंने सर्प की बात सुनी तो उस रहस्य के अनावरण हेतु अपने होठ खोले कारण कि वह अल्पा-

१ ईसा मसीह। मुसलमानों के विश्वासनुसार ईसा मसीह झूले में बात करते थे।
२ पालम : देहली के समीप, जहाँ अब हवाई अड्डा है।
३ एक पैग़म्बर, मोजेज़।
४ पैग़म्बरों का चमत्कार।
५ हजरत मूसा का हाथ जिसे खोल देने से प्रकाश फैल जाता था।

वस्था का प्रदर्शन था और यह युवावस्था का। हे प्रिय पुत्र! उस करामात के प्रदर्शन करने वाले, जो सकेत तथा मकामात प्रदर्शित कर रहा है पर कोई आश्चर्य न होना चाहिए।'

(१८८) इन सम्मानित घटनाओ के सकलनकर्ता अबुलफजल ने ये दोनो घटनाये यद्यपि विश्वस्त व्यक्तियो से सुनी थी किन्तु उस इफ्फत मआब से भी स्वय सुनी। लेखक ने इस दैवी प्रकाश के पौधे के जिन पवित्र कमालो तथा उत्कृष्ट चमत्कारो का स्वय अपने नेत्रो से अवलोकन किया है एव अपनी बुद्धि की दृष्टि से जिनपर विचार किया है वे मनुष्य के अनुमान एव मानव की कल्पनाओ के बाहर है। निःसन्देह मीर्जा अजीज कोका की प्रिय माता ने जो बातें बताई वे ससार का बाह्य दृष्टि से अवलोकन[1] करने वालो के लिए और जो कुछ इस तुच्छ ने देखा वह आध्यात्मिक दृष्टि[2] रखने वालो के लिए आश्चर्यजनक है।

हजरत जहाँबानी जन्नत आशियानी की सेना का कन्धार की ओर प्रस्थान और वहाँ से हिजाज की यात्रा करना एव एराक के प्रस्थान का सकल्प

दैवी इच्छा एव ईश्वर की कृपा से जिस पादशाह के भाग्य का उत्कृष्ट खिलअत, स्थायित्व द्वारा सुशोभित होता है एव जिसके गौरव और सल्तनत के राजसिंहासन के पाये को दृढता तथा मजबूती द्वारा सम्मान प्रदान होता है उसके मार्ग म यदि कुछ परिवर्तन-शील एव अस्थायी दुर्घटनाये बाधक हो जाती हैं तो उनका वास्तव मे कोई अस्तित्व नही होता। उन गुत्थियो का परिणाम सराहनीय होता है। अल्पदर्शी लोग उन्हे भूलो का कारण समझ कर चिन्ता में पड जाते हैं। किन्तु उच्च साहस वाले उन्हे प्रताप के गाल का तिल समझ कर उन्हे नजर न लगने का साधन समझते है। भाग्यशाली को अपने मार्ग मे जिन कष्टो का सामना करना पडता है उन्ह वह अपनी प्रवीणता के लिए सहारा समझता है किन्तु अभागे लोग लोक तथा परलोक मे उसे अपना घाटा समझ कर विलाप के गिरीबान म मुह डाले रहते है[3]। नक्षत्रो की वापसी—जो आकाश की सातो इकलीमो के शासन के अनुरूप है—इस स्थिति का प्रमाण है और इस दशा का उदाहरण है। यद्यपि ससार को प्रकाश देने वाला सूर्य बादल एव धूल के कारण दृष्टि से छिप जाता है किन्तु वास्तव में वह ससार वालो की आँख के सामने आजाने वाले आवरण से अधिक नही होता और उसे कोई हानि नही पहुँचती। जब वह देखने में छिप जाता है तो दैवी आतक की आधी धूल को उडा कर मिट्टी में बैठा देती है। इसके अतिरिक्त सूर्योदय एव सूर्यास्त एक उचित मार्ग-दर्शक मशाल के समान है। प्रकाश के भडार की जो स्थिति एव दशा पूर्व में होती है तदनुरूप दशा, जब कि वह पश्चिम में परदे मे जाने लगता है तब भी होती है। उसकी जो दशा मध्याह्न के समय जब वह उन्नति की चरम सीमा पर होता है रहती है वही निश्चित रूप से अर्ध रात्रि में भी होती है भेद केवल मिट्टी

१ 'अफ्साबे जाहिर'।
२ 'अरबाबे बातिन'।
३ चिन्ता में पडे रहते है।

से उत्पन एव मुट्ठी भर मिट्टी की[1] दृष्टि का है अन्यथा उसके ऐश्वर्य का शिखर उससे कहीं अधिक पवित्र है जितना दोषपूर्ण लोगों की कल्पनायें समझ सकती हैं। इन कारणों से जो कोई (१८९) भाग्यशाली मुकुट-धारियों के प्रति दुर्भावनायें रखता है, वह अन्त में अपने दुराचार के दुष्परिणाम में ग्रस्त हो जाता है और अपने विनाश का कारण बन जाता है। इस तथ्य का दर्पण हजरत जहाँबानी जन्नत आशियानी का शिक्षा प्रद इतिहास है कि अल्प समय में उनके इक्बाल का दामन, जिसपर दुर्घटनाओं की धूल पडी थी, दैवी कृपा के झरने से धुल गया और समस्त कृतघ्नों ने अपने दुराचार का दुष्परिणाम भोग लिया। उनकी दशा एव उनके सौभाग्य का खलिहान दैवी कोप के विद्युत् से जल गया और इन अभागों के अस्तित्व का चिह्न ससार के पृष्ठ से मिट गया। इस प्रकार दरिद्रता की कठिनाइयों एव चिन्ताओं समृद्धि के उच्च स्थानों एव उन्नतियों का उल्लेख अपने स्थान पर होता रहेगा।

हुमायू की एकान्तवास ग्रहण करने की इच्छा

सक्षेप में क्योंकि हजरत जहाँबानी जन्नत आशियानी का पवित्र हृदय इस नश्वर ससार की लीलाओं के कारण फीका पड गया था और सिन्ध की विलायत की ओर से उनका उत्कृष्ट ध्यान हट गया था अत उनके हृदय में आया कि ट्ट्ठा के हाकिम से एक प्रकार की सधि करके वे कन्धार चले जायें, जब उत्कृष्ट सेना वहा पहुँच जाय तो हजरत शाहशाह को दरबार के कुछ विशेष व्यक्तियों सहित ईश्वर की रक्षा में छोड कर एकान्तवास के सन्मार्ग पर अग्रसर हो जायें तथा ध्यान एव मनन के जीनों पर हुमा के समान चढ जाय और दैवी प्रेम के उच्च शिखर को अपने साहस के अधीन कर लें। जिस प्रकार हृदय के किबला[2] के तवाफ[3] से सम्मानित होकर उच्च आध्यात्मिक लाभ प्राप्त हुआ है, उसी प्रकार मिट्टी के काबे[4] की ओर भी महमिल ले जाकर बाह्य रूप को आध्यात्मिक रूप के समान बना ले। जिस प्रकार आध्यात्मिक चित्रशाला सजा ली है उसी प्रकार बाह्य भवन को भी शोभा दे ले ताकि इस बात से लोगों के हृदय सन्तुष्ट हो जाय और जाहिरी रूप देखने वाले एव सरल स्वभाव के लोगों के लिए वास्तविक पथ प्रदर्शन का साधन बन जाये।

ट्ट्ठा के हाकिम से सन्धि

वे इसी सोच विचार में थे कि ट्ट्ठा के हाकिम[5] ने उनके इस उद्देश्य से अवगत होकर अपने सौभाग्य के लिए सधि सम्बन्धी प्रार्थना-पत्र भेजे। क्योंकि हजरत जहाँबानी के साहस की ऊँची उडान उडने वाले शाहबाज ने अनका[6] के शिकार हेतु अपने पर खोल रखे थे और दूरदर्शी

१ मनुष्य।
२ मक्का का वह स्थान जिसकी ओर मुँह करके मुसलमान लोग नमाज पढते हैं, काबा।
३ किसी पवित्र स्थान, मजार इत्यादि के चारो ओर श्रद्धापूर्वक फिरना, एक प्रकार की परिक्रमा।
४ मक्का का वह स्थान जिसकी ओर मुँह करके मुसलमान नमाज पढते हैं, किबला।
५ शाह हुसैन।
६ एक ऐसा पक्षी जो अप्राप्य बताया जाता है, यह काल्पनिक ही है।

निगाहे साधारण शिकारों की उपेक्षा करने लगी थीं और ऊँचे घोसलों पर पड़ने लगी थी अत उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई। अरगून लोग जो व्याकुल हो चुके थे, सधि के सुखद समाचार से हर्ष-उल्लास की टोपी आकाश की ओर उछालने लगे। उन लोगों ने इस बात को अपने उद्देश्य की पूर्ति एव आशा के विरुद्ध ईश्वर की देन समझ कर अत्यधिक उपहार भेजे और नाना प्रकार से क्षमा याचना की।

हुमायूं का कन्धार की ओर प्रस्थान

हज़रत जहाँबानी स्वय ७ रबी-उल-आखिर ९५० हि० (१० जुलाई १५४३ ई०) को जून कस्बे मे सीवी[1] के मार्ग से होते हुए कधार के लिए रवाना हुए। मीर्जा अस्करी पादशाही सेना के समाचार सुनकर, मीर्जा कामरान के आदेशानुसार तथा अपनी दुष्टता के कारण किले को दृढ बना कर एक बहुत बडी सेना सहित कुत्सित विचारों से उत्कृष्ट शिविर की ओर रवाना हुआ ताकि अत्याचार प्रदर्शित करते हुए (हज़रत जहाँबानी) को बन्दी बना ले। इसी बीच मे अमीर अल्लाह दोस्त, जो अपने युग का बहुत बडा विद्वान् था और कुछ समय से मीर्जा काम-(१९०) रान का वकील रह चुका था, तथा शेख अब्दुल वहहाब (शेख पूरान की सन्तान), जो मीर्जा कामरान की ओर से शाह हुसेन बेग अरगून के पास उसकी पुत्री का विवाह मीर्जा कामरान से करने की प्रार्थना लेकर जा रहे थे, शाही सेना के समाचार सुन कर सीवी के किले में प्रतिरक्षा हेतु चले गये। हज़रत जहाँबानी ने मीर[2] अल्लाह दोस्त के पास सम्मानित फरमान भेज कर उन्हे बुलवाया किन्तु उन लोगो ने दुर्भाग्यवश सेवा में उपस्थित होने के सम्मान की उपेक्षा करके बहाना बना दिया और कहलाया कि 'किले वाले हमे नही छोड़ते"।

मीर्जा अस्करी का विरोध

जब उत्कृष्ट सेना ने शाल[3] के क्षेत्र मे जो कन्धार से लगभग ३० फरसख[4] पर है पडाव डाला तो जलालुद्दीन बेग के आदमियों ने जो समाचार लाने के लिए नियुक्त थे पादशाही सेवकों में से दो व्यक्तियों को, जो आगे यात्रा करते हुए सरचश्मा[5] पर पहुँच गये थे, बन्दी बना लिया। जलालुद्दीन बेग मीर्जा कामरान का एक उच्च पदाधिकारी था और इस क्षेत्र में उसकी जागीर थी। उन दो में से एक आदमी अवसर पाकर उन लोगो के चगुल से मुक्त हो गया और उसने पहुँच कर उन दुष्टों का हाल तथा उनकी दशा देख कर जो पता लगाया और उस समूह द्वारा जो कुछ सुना था सम्मानित सेवा मे कह दिया। हज़रत जहाँबानी को इस समूह की कृतघ्नता का ज्ञान हो गया अत कधार की ओर प्रस्थान उचित न समझ कर वह विचार त्याग दिया और मस्तग[6]

१ सीवी सिविस्तान अथवा सेहवान का दूसरा नाम।
२ अमीर।
३ कोएटा, जो कन्धार के दक्षिण-पूर्व में १३० मील पर है।
४ मूल पुस्तक में 'तीन' किन्तु एक पुस्तक में ३०, लगभग १८० मील।
५ सम्भवत कोएटा से पश्चिम दिशा में उत्तर की ओर, ६० मील पर।
६ कोएटा के दक्षिण पश्चिम में दक्षिण की ओर ३० मील पर कोएटा एवं किलात के मध्य में।

की ओर घरल की लगाम मोडी। पायदा मुहम्मद कैसी, आज्ञा लेकर कन्धार की ओर चल दिया। उसके द्वारा एक कृपा-युक्त फरमान अपने पवित्र हाथों से लिख कर (हज़रत जहाँबानी ने) मीर्ज़ा अस्करी के पास भेजा जिसमें लिखा कि, "निष्ठुर एवं निष्ठाहीन भाई को ज्ञात हो।" उस पत्र में उन्होंने अत्यधिक उपदेश दिये, किन्तु उसके पास सत्य को सुनने वाला कान एवं प्रतिभाशाली तथा बुद्धि से परिपूर्ण हृदय कहाँ था? उसने उन परामर्शों को सुना अनसुना कर दिया और अधिक से अधिक अत्याचार पर तुल गया।

मीर्ज़ा अस्करी का हुमायूं के विरुद्ध प्रस्थान

कासिम हुसेन सुल्तान, महदी कासिम खाँ तथा अस्करी मीर्ज़ा के बहुत से सेवकों ने उसे जाने से रोका कि कहीं इस परेशानी में (हज़रत जहाँबानी) विवश होकर इराक की ओर न चले जायें और फिर बहुत बड़ी आपत्ति खड़ी हो जाय। अनुदार तथा दुष्टों के एक समूह ने घर को नष्ट करने वाली चाटुकारी की बातें, जो देखने में अच्छी लगती हैं और वास्तव में जिनके द्वारा खराबी अथवा विनाश के अतिरिक्त कुछ भी नहीं निकलता, बना कर मीर्ज़ा को झूठे विचार पर दृढ़ कर दिया। उस दिन प्रातःकाल जो उसके पतन की सायं[1] थी वह दुर्भावनाओं सहित मस्तंग की ओर रवाना हुआ। एक-दो कोस की यात्रा उपरान्त उसने अपने सेवकों से पूछा कि, 'इस मार्ग को किसी ने देखा है?" जी बहादुर ऊज़बेक ने, जो क़ासिम हुसेन सुल्तान का सेवक था, और इस समय मीर्ज़ा की सेवा में प्रविष्ट हो गया था, कहा कि, 'इस मार्ग को मैं भली भाँति (१९१) जानता हूँ और कई बार आ जा चुका हूँ।" मीर्ज़ा ने उत्तर दिया 'सच कहता है। यह इस क्षेत्र का जागीरदार[2] रह चुका है।" उसे आदेश दिया कि "आगे आगे चल और मार्ग दिखा।" उसने निवेदन किया, कि, "मेरा टट्टू बड़ा खराब है।" मीर्ज़ा ने तरसून बरलास को, जो उसका एक सेवक था, आदेश दिया कि, 'अपना घोड़ा उसे दे दो।" उसने अपनी आवश्यकता का बहाना किया किन्तु उसे विवश होकर घोड़ा देना पड़ा। जी बहादुर जो इससे पूर्व हिन्दुस्तान में हज़रत जहाँबानी के सेवकों में सम्मिलित था, अपने सौभाग्य के पथप्रदर्शन के कारण वहाँ से कुछ आगे बढ़ा और फिर घोड़ा सरपट भगाता हुआ बैराम खाँ के शिविर में पहुँचा और वास्तविक स्थिति का विवरण दिया।

तरदी बेग आदि का घोड़े न देना

बैराम खाँ उसके साथ हज़रत जहाँबानी की सेवा में पहुँचा और उस कृतघ्न[3] के शोचनीय संकल्प की चर्चा की। हज़रत जहाँबानी ने कुछ लोग तरदी बेग खाँ एवं कुछ अन्य सेवकों के पास इस आशय से भेजे कि वे कुछ घोड़े भेज दें। उन नीच कृपण लोगों ने इस सौभाग्य की ओर ध्यान न दिया और नाहीं कर दी। हज़रत (जहाँबानी) की इच्छा थी कि वे स्वयं सवार होकर

१ अबुलफ़ज़ल ने सायं शब्द का प्रयोग मीर्ज़ा अस्करी के प्रातःकाल प्रस्थान करने के कारण किया है।
२ सम्भवतः उसके स्वामी के जागीरदार होने से तात्पर्य है।
३ मीर्ज़ा अस्करी।

उन लोगो को मजा चखा दे और उनके दुराचार का बदला उनकी गोद मे डाल दें। बैराम खा ने निवेदन किया, "समय बडा थोडा है। यह विलम्ब करने का अवसर नही। कृतघ्नों को दैवी कोप के लिए छोडकर आप अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर हो।"

हुमायू का ईरान को ओर प्रस्थान

उसकी प्रार्थना स्वीकार करके हजरत जहाँबानी अपने थोडे से निष्ठावान् सेवको के के साथ रेगिस्तान की ओर चल खडे हुए और काबुल तथा कन्धार के विचार त्यागकर हिजाज[1] की यात्रा के उद्देश्य से एराक[2] की ओर रवाना होकर वियोग के मार्ग पर अग्रसर हुए। ख्वाजा मुअज्जम, नदीम कूकुल्ताश, मीर गजनवी तथा ख्वाजा अम्बर नाजिर को आदेश दिया कि "हजरत शाहशाह ईश्वर की कृपा की रक्षा एव आश्रय के झूले मे है। उनके प्रताप के दामन पर कष्ट की धूल नही पड सकती जिस प्रकार सम्भव हो हजरत मरियम मकानी की सम्मानित सवारी को उत्कृष्ट सेना में पहुँचा दो।" उन भाग्यशालियो ने भागकर उचित सेवायें सम्पन्न की। उन्होने थोडी सी यात्रा की थी कि कृतघ्नो के हृदय से भी अधिक काली रात प्रकट हो गई। बैराम खा ने निवेदन किया कि, "प्रकाशमान विवेक[3] को मीर्जा अस्करी के धन-सम्पत्ति का लोभी होने का ज्ञान है। इस समय मीर्जा निश्चिन्त होकर अपने दो-तीन नवीसिन्दा[4] को लिए हुए खेमे में बैठा सम्मानित शिविर के माल असबाब की सूची देख रहा होगा। राज्य के हित में यही उचित होगा कि दैवी कृपा पर भरोसा करके हम उस खेमे पर टूट पडे और उसके कार्य को ठिकाने लगा दें। यद्यपि मीर्जा शत्रु बन गया है किन्तु उसके समस्त सेवक इस दरबार के नमक के पले हुए है। वे अवश्य सेवा में सम्मिलित हो जायेंगे।" हजरत ने जहाँ तक व्यवहारिक दृष्टि एव औचित्य का सबध था, इस परामर्श की प्रशसा की किन्तु हृदय की पवित्रता एव शान्ति-प्रियता के कारण इस योजना (१९२) पर आचरण करना स्वीकार न किया और कहा, "अब हम परदेश की ओर चल खडे हुए है तथा हमने लम्बी चौडी यात्रा प्रारम्भ कर दी है। अब उस सकल्प का खडन न करें।[5]" हजरत शाहशाह को एक बार पुन हज़रत जुल जलाल[6], जो आफतो एव खतरो को दूर करता है, को सौंपकर अजली[7] आदेशो को अपना पथप्रदर्शक बनाया और अबदी[8] कृपाओ को प्रत्येक स्थान के लिए अपना सहायक बनाकर, साहस के घोडे पर सौभाग्य की जीन बाँधी तथा सावधानी का पाँव तवक्कुल[9] की रिकाब में रखकर अग्रसर हुए।

१ मक्का इत्यादि।
२ ईरान।
३ हुमायू से तात्पर्य है।
४ मुन्शियों।
५ मक्का की ओर प्रस्थान का सकल्प।
६ ईश्वर।
७ अनादि काल के।
८ अनन्त तक रहने वाली।
९ सासारिक साधनों का भरोसा छोडकर समस्त कार्य ईश्वर की इच्छा पर छोड देना।

मीर्ज़ा अस्करी द्वारा हुमायूं के शिविर पर अधिकार

मीर्ज़ा अस्करी ने, जो नीच विचारो सहित मस्तग के समीप पहुँच चुका था, मीर अबुल हसन सद्र को इस आशय से आगे रवाना कर दिया कि वह बढ कर यदि हजरत जहाँबानी का जाने का विचार हो तो वातो मे लगा ले और उन्हे रोके रक्खे। जिस समय हज़रत जहाँबानी सवार हो रहे थे, मीर पहुँच गया और उसने मीर्ज़ा की ओर से कुछ सन्देश पहुँचाने के बहाने से उन्हे रोकना चाहा। हजरत जहाँबानी ने दैवी प्रेरणा से उसकी बकवास की ओर कोई ध्यान न दिया और अपनी यात्रा हेतु अग्रसर हो गए। मीर्ज़ा अस्करी ने बाद मे पहुँच कर शाह वलद, अबुल खैर एव बहुत बडी सख्या मे अपने आदमियो को भेजकर शिविर का अवरोध करा लिया और आदेश दिया कि कोई भी शिविर के बाहर न जाने पाये। उसे जी बहादुर के सूचना देने एव हजरत जहाँबानी के प्रस्थान के सविस्तार समाचार मीर अबुल हसन सद्र द्वारा ज्ञात हुए। तरदी बेग खा एव समस्त कृतघ्न सेवक मीर्ज़ा की सेवा मे उपस्थित हुए। मीर्ज़ा ने सबको अपने विश्वास-पात्रो को सौंप दिया।

मीर्ज़ा अस्करी की सेवा में अकबर का प्रस्तुत किया जाना

जो अल्पदर्शी बुरे दिन एव दुष्परिणाम की ओर ध्यान नही देता तथा निर्लज्जता एव दुष्टता के मार्ग पर अग्रसर होता है वह वास्तव मे अपने पाँव मे स्वय कुल्हाडी मारता है और अपने आप को दैवी दुर्भाग्यो एव आपत्ता का शिकार बनाता है। इस प्रकार विश्व के इतिहास के पृष्ठो का अध्ययन करने वालो से यह बात छिपी नही है। मीर गजनवी जब मीर्ज़ा अस्करी की सेवा मे उपस्थित हुआ तो मीर्ज़ा ने पूछा, 'हम बादशाह से भेट करने के लिए आये थे। वे रेगिस्तान के मार्ग मे किस ओर चले गए?' उसने पुन पूछा कि, 'मीर्ज़ा (अर्थात् हजरत शाहन्शाह) कहाँ है?" मीर गजनवी ने कहा, "अपने स्थान पर है।" मीर्ज़ा ने कहा "खूब! मेवे से लदा एक ऊँट मीर्ज़ा के रिकाबखाने[1] में भेज दो। हम भी आ रहे है।" रात्रि मे वह अपने खेमे मे एक दो नवीसिन्दे लिए हुए, जो सामान पादशाही सरकार से लाया गया था उसका निरीक्षण करता जाता था और उन्हे लिखवाता जाता था। इस समय वही दृश्य था जिसका बैराम खा ने अपनी कुशाग्र बुद्धि से अनुमान लगाकर निवेदन किया था। दूसरे दिन नाश्ते[2] के समय मीर्ज़ा नक्कारा बजवाता हुआ अपने स्थान से सम्मानित शिविर मे पहुँचा। हजरत जहाँबानी के दौलतखाने[3] के द्वार पर पहुँचकर छोटे-बडे सभी लोगो को बन्दी बना लिया। तरदी बेग खा को शाह वलद को सौप दिया। समस्त कृतघ्न सेवको को अपने आदमियो के हवाले कर दिया और कन्धार लेता गया। बहुत से लोगो को (१९३) दारुण वेदना देकर मरवा डाला। तरदी बेग से अत्यधिक धन वसूल किया। इस प्रकार अल्प समय मे उसे अपनी दुष्टता का बदला मिल गया किन्तु ऐसे घोर पाप का यह प्रतिकार

१ भडारगृह, मोदीखाना।
२ लगभग ९ बजे प्रात।
३ शाही खेमा।

कभी नही हो सकता। इस आफत के तूफान को (उन दुष्टताओ के) बदले की धूल कहा जाय तो भी कम है।

शेर

'यदि कोई अभागा तथा दुष्ट,
उपदेशक के उपदेशो से ठीक हो जाय।
अन्त में रहस्य खुल जाता है,
तब उसकी सच्ची प्रवृत्ति स्पष्ट हो जाती है।'

मीर्ज़ा अस्करी का अकबर एव हुमायू के आदमियो को कन्धार ले जाना

जो लोग भाग्य के रहस्यो को समझते है उन्हे ज्ञात है कि जब अजल के चुने हुए व्यक्ति के इकबाल के हाथ को सल्तनत की (अँगूठी के) नगीने द्वारा शोभा प्रदान होती है एव उसके राज्य के शीर्ष को खिलाफत के मुकुट से सम्मानित किया जाता है तो ऐश्वर्य की किरणें, उसके जीवन के कार्यों के ललाट से प्रकट हुआ करती है। हज़रत शाहंशाह के सम्बन्ध में परोक्ष से जो विचित्र घटना घटी और उससे जो फाल[1] निकाली गई वह यह थी जब मीर्ज़ा अस्करी उत्कृष्ट शिविर में पहुँचा और दुष्टता प्रदर्शित करने लगा तो मीर गज़नवी एव माहम आगा[2], हज़रत शाहंशाह को आदर-सम्मान के कधा एव रक्षा की गोद मे लाई। यद्यपि मीर्ज़ा ने उनकी ओर (अनेक बार) दृष्टि डाली एव हँसा तथा मुस्कुराया किन्तु वे इस कारण कि ससार के शिशुओ में प्रवीणता के सग्रह थे, अल्पावस्था के बावजूद प्रसन्न न हुए। उनके हृदय का न खुलना[3] उनके ललाट से प्रकट होता था। मीर्ज़ा ने सिर झुकाकर कहा, "मालूम है कि किसका पुत्र है। मुझसे कैसे प्रसन्न हो सकता है?" कुछ देर बाद मीर्ज़ा की अगूठी की ओर, जो उसके गले में लटकी थी और जिसका लाल डोरा दिखाई दे रहा था, बालको के समान (नही नही, प्रताप की शक्ति से) हाथ लपकाया और उसे ले लेना चाहा। मीर्ज़ा ने उसे तत्काल अपनी ग्रीवा से निकालकर हज़रत शाहंशाह को प्रदान कर दिया। दरबार के कुशाग्र बुद्धि वालो ने इस घटना से सौभाग्य शाली फाल निकाली और समझ गए कि शीघ्र ही राज्य की मुहर एव सल्तनत की (अँगूठी का नगीना) उन्हे प्राप्त हो जायगा, दैवी कृपा के झरने से बहता हुआ जल नहर में पहुँच जायगा।

मीर गज़नवी का अकबर को कोका बहादुर को न देना

वहाँ से हज़रत शाहंशाह दैवी कृपा से मीर्ज़ा अस्करी के साथ कन्धार की ओर रवाना हुए। उठते-बैठते, सोते जागते ऐश्वर्य एव शासन की किरणें हज़रत शाहंशाह के ललाट से फूटती रहती थी। मार्ग में कोका बहादुर ने, जो मीर्ज़ा अस्करी का एक विश्वासपात्र था, हज़रत शाहंशाह के कजावे[4] के समीप आकर मीर गज़नवी से कहा, 'यदि मीर्ज़ा को मुझे दे दो तो मैं उन्हें हज़रत पादशाह

१ किसी घटना अथवा किसी व्यक्ति से पहले पहल मिलकर या किसी बात से कोई शकुन निकालना।
२ माहम अनगा तथा माहम आगा दोनों लिखा जाता था और दोनों ही ठीक हैं।
३ प्रसन्न न होना।
४ ऊँट का हौदा जिसमें दोनों ओर आदमी बैठते हैं।

के पास पहुँचा दूं।" मीर ने उत्तर दिया, "क्योंकि हजरत बादशाह स्वयं उन्हें नहीं ले गए अतः वे छोड़ जाना ही उचित समझते थे। मैं उनके सम्मानित आदेश के बिना यह धृष्टता कैसे कर (१९४) सकता हूँ?" बहादुर ने कहा, 'मैंने हजरत (जहाँबानी) की सेवा का संकल्प कर लिया है और चाहता हूँ कि ऐसे अवसर पर जब वे अकेले हैं सेवा कर सकूं। इस समय तुम नहीं चाहते कि मैं यह सौभाग्य प्राप्त करूँ तो हजरत शाहंशाह की कोई निशानी दे दो जो मैं हजरत जहाँबानी की सेवा में प्रस्तुत कर सकूं।" मीर गजनवी ने शाहंशाह की टोपी जो सौभाग्य के चन्द्रमा का मुकुट थी, बहादुर को देकर सम्मानित किया।

अकबर का पालन पोषण

मीर्जा अस्करी ने हजरत शाहंशाह को १८ रमजान ९५० हि० (१५ दिसम्बर १५४३ ई०) को कन्धार ले जाकर भीतरी किले के ऊपर अपने निकट उनका स्थान निश्चित कर दिया। माहम आगा, जीजी अनगा तथा अतगा खां सर्वदा उनकी सेवा किया करते और इस प्रकार पवित्र नूर से लाभान्वित होते रहते थे। मीर्जा ने प्रताप के उस पौधे को जो दैवी रक्षा की छाया में पल रहा था, अपनी पत्नी सुल्तान बेगम[१] को सौंप दिया। वह इफ्फत मआब अत्यधिक बुद्धिमत्ता के कारण उनके प्रति बड़ा प्रेम एवं सेवा-भाव प्रदर्शित किया करती थी। वह दिखाने को तो उनकी देखभाल करती थी किन्तु वास्तव में अपने आप को नूर मुतलक[२] के बराबर रखकर रोशनी हासिल किया करती थी। नित्य-प्रति प्रतिष्ठा का ऐश्वर्य सौभाग्य के उस संसार के नूर से परिपूर्ण ललाट से अधिक से अधिक दृष्टिगत होता रहता था। जिस किसी का पालन-पोषण ईश्वर का आश्रय करता हो और जिसमें ईश्वर का नूर हो उसके विषय में अशुभ चिन्तकों में शुभ चिन्ता के अतिरिक्त अन्य विचार नहीं आते। इस प्रकार ईश्वर की इच्छा से ऐसी अवस्था में जब माता-पिता के प्रेम की अधिक आवश्यकता होती है उनका पालन पोषण प्राणों के शत्रु से कराया ताकि बुद्धिमत्ता के राज्य के दूरदर्शी लोगों की निष्ठा का पाव दृढ़ हो जाय एवं सरल स्वभाव के अल्पदर्शी लोगों को शिक्षा का दीप प्राप्त हो सके, दैवी रक्षा एवं आकाश की देखरेख का तथ्य मित्र एवं शत्रु को ज्ञात हो सके।

अकबर की स्मरणशक्ति

मैंने हजरत शाहंशाह की पवित्र जबान से उन्हें यह कहते हुए सुना है कि, "मुझे अपनी एक वर्ष की अवस्था का हाल, विशेष रूप से जब हजरत जहाँबानी एराक की ओर रवाना हुए और लोग मुझे कन्धार ले गए, भली भाँति याद है। उस समय मैं एक वर्ष ३ मास का था[३]।"

मीर्जा अस्करी का अकबर को तुर्कों की प्रथानुसार पगड़ी मारकर गिराना

एक दिन अदहम खां की माता माहम अनगा ने जो सौभाग्य के उस पौधे की देख-

१ यह भी गुलबदन बेगम के साथ १५७४ ई० में हज को गई थी।
२ पूर्ण नूर, वह प्रकाश जिसमें कोई अन्य वस्तु मिश्रित न हो।
३ १५ अक्तूबर १५४२ से १८ दिसम्बर १५४३ ई०, लगभग १४½ हि० मास।

स हेतु नियुक्त थी, मीर्जा अस्करी से निवेदन किया कि, "तुर्कों[1] की प्रथा है कि जब पुत्र अपने पाँव चलने लगता है तो पिता अथवा बडा बाप या जो कोई उनके स्थान पर हो अपनी पगडी सर से उतारकर उस प्रिय पुत्र के चलने के समय उसे मारता है और वह आशा का पौधा भूमि पर गिर पडता है। इस समय हजरत जहाँबानी यहाँ नही हैं। आप सम्मानित पिता के स्थान पर हैं। उचित होगा कि इस शकुन को, जो नज़र से बचने वाले दाने के समान है पूरा करें।" मीर्जा ने तत्काल अपनी पगडी लेकर 'मेरी ओर फेंकी और मैं गिर पडा।" वे कहा करते हैं कि, "इधर मारना और उधर गिरना मुझे स्पष्ट रूप से याद है।"

अकबर का मूंडन

"इसके अतिरिक्त आशीर्वाद हेतु मेरे बाल मुडवाने लोग मुझे बाबा हसन अब्दाल[2] (१९५) के मजार पर ले गए। उस मार्ग की यात्रा तथा सिर के बाल का मुडवाया जाना स्पष्ट रूप से उसी प्रकार दृष्टि के समक्ष है।"

जिस किसी के आशीष प्राप्त हृदय में दीप जल रहे हो उसके विषय मे इस प्रकार की सैकडो अपितु इससे भी अधिक बातें कही जाय तो कोई आश्चर्य न होना चाहिए।

जब बात यहाँ तक पहुँच गई तो विवरण को पूरा करने के लिए शेर खा का शेष हाल, मीर्जा हैदर का कश्मीर को प्रस्थान, मीर्जा कामरान का जा काबुल तथा मीर्जा हिन्दाल का जा कन्धार चला गया था एव यादगार नासिर मीर्जा का जो विद्रोह करके बक्कर में रह गया था हाल बता देना परमावश्यक है ताकि ज्ञान की खोज करने वाले चेतावनी प्राप्त करके, अपने जागरूक भाग्य की शक्ति से सावधानी एव सदाचार का जीवन व्यतीत कर सकें।

शेर खा का शोचनीय अन्त

यह बात छिपी न रहनी चाहिये कि शेर खा ने व्याह[3] नदी पार करके धीरे धीरे कदम बढाया। युद्ध की अपार सामग्री के बावजूद वह अत्यधिक सावधान रहता था कि कहीं किसी ओर से पादशाही सेना के वीर, रण क्षेत्र मे पाँव जमाकर बदला न ले लें और उसके षड्यन्त्र का एका एकी अन्त न कर दें। उसने एक बहुत बडी सेना आगे भेज दी थी और युद्ध के विषय में अत्यधिक

१ मूल पुस्तक में 'बुजुर्गों' किन्तु कुछ हस्तलिपियों में 'तुर्कों'। यही अधिक उचित है।

२ ये सब्जवार (ईरान) के सैयिदों में से थे। जब वे ईश्वर के प्रेम में ग्रस्त हो गये तो मक्का-मदीना के दर्शनार्थ पहुँचे। कुछ समय तक उस क्षेत्र में रहे। तीमूर के पुत्र मीर्जा शाहरुख के राज्यकाल में टर्की तथा हिजाज से लौटकर सब्जवार पहुँचे। शाहरुख मीर्जा बाबा हसन अब्दाल का बहुत बडा भक्त था और हिन्दुस्तान की यात्रा में बाबा को वह अपने साथ ले गया। लौटते समय वे लगर कन्धार नामक स्थान पर ठहर गये और अपना शेष जीवन वहीं व्यतीत कर दिया। उनका मजार अरगन्दाब के समीप है। शुक्रवार के दिन कन्धार के अधिकाश स्त्री पुरुष, सर्वसाधारण एव सम्मानित लोग दर्शनार्थ जाते हैं और नगर में बहुत कम लोग रह जाते हैं तथा वहाँ बहुत बडी भीड एकत्र हो जाती है। (मीर मुहम्मद मासूम बक्करी तारीखे सिन्ध, पृ० १३३ १३४)।

३ व्यास।

सावधान था। कुछ दिन उपरान्त जब मीर्ज़ा कामरां की फूट एवं समस्त भाइयों का विरोध निकट तथा दूर वालों सभी को ज्ञात हो गया तो वह लाहौर पहुँचा और वहाँ से खुशाब[1]। कुछ दिन तक भीरा[2] एवं उस क्षेत्र में रहा और सुल्तान सारंग गक्खर[3] तथा सुल्तान आदम को बुलवाने के लिए, जो उस क्षेत्र के प्रभावशाली ज़मींदार थे, आदमी भेजे। इन लोगों ने हज़रत गेती सितानी फ़िरदौस मकानी के आश्रित होने तथा इस उत्कृष्ट वंश से आजीवन लाभान्वित होने के कारण[4] उसकी बात पर स्वीकृति के कान न धरे।[5] शेर खाँ वहाँ से घक्खरों के प्रदेश में हथियापुर[6] की ओर बढ़ा और उनके विरुद्ध एक बहुत बड़ी सेना भेजी। घक्खरों ने बड़ी वीरता से युद्ध करके अफ़ग़ानों की सेना को पराजित कर दिया। बहुत बड़ी संख्या में अफ़ग़ान बन्दी बना लिये गये और बेच डाले गए। शेर खाँ स्वयं उनके विरुद्ध प्रस्थान करना चाहता था। उसने अपने हितैषियों से परामर्श किया। सब लोगों ने यह सलाह दी कि, 'इस कबीले के लोग दृढ़ पर्वत एवं कठिन भूमि में बसे हुए हैं, अतः उनके विरुद्ध धीरे धीरे और युक्ति से कार्य करना चाहिये। यह उचित होगा कि इस क्षेत्र में एक भारी सेना नियुक्त कर दी जाय जो विजयी सेना की भी देख रेख रखे और घक्खरों के प्रदेश में रहकर उनपर छापे मारती रहे। एक दृढ़ किले का इस उद्देश्य से निर्माण कराना चाहिये कि कुछ समय में ये लोग अपनी दुष्टता से बाज़ आ जाय तथा विद्रोह का (१९६) सिर झुका ले[7] और वह स्वयं वापस होकर हिन्दुस्तान के विशाल राज्य की सुव्यवस्था प्रारम्भ कर दे।" इस कारण उसने रोहतास के किले की नींव डाली और एक बहुत बड़ी सेना

१ झेलम नदी के उतार पर, ४० मील पर पंजाब के शाहपुर जिले में (देखिये बाबर नामा पृ० ९९ १००, १०१, १०२, १०५, १०६ ११३)।

२ भीरा झेलम नदी पर ३२° २८–७२° ५९', पंजाब के शाहपुर जिले की एक तहसील। (बाबर नामा, पृ० १०० १०१)।

३ घक्करों अथवा गक्खरों के विषय में निश्चित रूप से कुछ कहना बड़ा कठिन है। जे० जी० डेलमेरिक ने लिखा है "Whether the Gakk'hars have sprung from the Grekoı whom Alexander the Great located in Pothwar, and who it is asserted, continued there to reign for several centuries, or are Hindus converted to Muhammadanism, or are, as they themselves declare, the descendants of Persian kings, it is impossible now to speak with certainty" J G Delmerick *A History of the Gakkhars*" (Journal Asiatic Society Bengal, 1871, p 67)

४ देखिये बाबर नामा, पृ० १०६ १०७।

५ स्वीकार न किया।

६ सम्भवतः हतियार लंग। यह रोहतास एवं रावलपिंडी के मध्य में कांसी नामक एक नदी के समीप है। (बेवरिज, पृ० ३९८)।

७ विद्रोह करना बन्द कर दें।

८ जहाँगीर ने लिखा है 'क्योंकि यह भू भाग गक्खरों के प्रदेश के समीप है और वे सब के सब बड़े विद्रोही एवं उद्दंड हैं अतः (शेर खाँ ने) उस किले का विशेष रूप से इस आशय से निर्माण प्रारम्भ कराया कि उसने उन लोगों के दमन का संकल्प कर लिया था। जब थोड़ा सा कार्य हो गया तो शेर खाँ की मृत्यु हो गई। उसके पुत्र सलीम खाँ ने उसे पूरा कराया। प्रत्येक द्वार पर किले का व्यय एक पत्थर पर खुदवाकर लगवा दिया।

को नियुक्त करके वापस चला गया तथा आगरा पहुँचा। वहा से वह ग्वालियार के किले के विरुद्ध, जिसकी मीर अबुल कासिम प्रतिरक्षा कर रहा था, पहुँचा। मीर ने खाद्य सामग्री के समाप्त हो जाने के कारण (किला) समर्पित कर दिया।

शेर शाह का शासन-प्रबन्ध

शेर खा ने राज्य व्यवस्था एव शासन प्रबन्ध प्रारम्भ कर दिया। उसने बगाले के अतिरिक्त समस्त हिन्दुस्तान का ४७ अक्ताओ[1] में विभाजित कर दिया। उसने सैनिकों के घोडो को दागने की प्रथा चलाई। सुल्तान अलाउद्दीन की बहुत सी योजनाओ में से कुछ पर जिनके विषय में उसने सुना था और जिनका उल्लेख तारीख फीरोजशाही[2] म है, आचरण किया।

पूरणमल पर आक्रमण

वहा से वह राय सेन एव चन्देरी[3] के किले के राजा पूरणमल के विरुद्ध पहुँचा और राजा से झूठी प्रतिज्ञा करके एव वचन देकर उसे किले से निकलवाया और कुछ पथ भ्रष्ट फकीहो एव अभागे दुष्टो के प्रयत्न से हानि न पहुँचाने का वचन देकर उससे फिर गया और वहा से आगरा पहुँचा[4]।

१६ करोड १० लाख दाम तथा कुछ और उस इमारत पर व्यय हुये। हिन्दुस्तान के हिसाब से ४० लाख २८ हजार रुपये एव ईरान के लेन देन के हिसाब से १२०,००० तुमान और तूरान के हिसाब से १ अरब २१ लाख तथा ७७५ हजार रुपये जो खानी कहलाते है, व्यय हुये। (**तुजुके जहांगीरी,** सर सैयिद सस्करण पृ० ४६ ४७)। यह ३२° ५५ उत्तर तथा ७३० ४८ पूर्व में झेलम कस्बे (पजाब) के उत्तर पश्चिम में १० मील पर स्थित है।

१ अक्ता का अनुवाद प्राय जागीर किया जाता है किन्तु अक्ता वह भूमि थी जो सेना व सरदारों को सेना रखने और उसका उचित प्रबन्ध करने के लिये दे दी जाती थी। हिन्दुस्तान के भिन्न भिन्न भागों पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त तुर्क जिस भाग को अपने अधिकार में करते थे उसको विभिन्न अक्ताओं (टुकडों) मे विभाजित करके प्रत्येक भाग एक सरदार को प्रदान कर देते थे। सरदार के वृद्ध हो जाने अथवा कार्य-योग्य न रहने पर भूमि दूसरो को दे दी जाती थी।

२ लेखक जियाउद्दीन बरनी (जन्म १२८५ ८६ ई०), **तारीखे फीरोजशाही** में बलबन के समय से लेकर सुल्तान फीरोज शाह तुगलक के ६ वर्ष तक के इतिहास का उल्लेख हुआ है। इस ग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद के लिये निम्नांकित रचनायें देखिये

रिजवी **आदि तुर्क कालीन भारत** (अलीगढ १९५६ ई०) मूल के पृ० १-१७३ का अनुवाद।

रिजवी **खलजी कालीन भारत** (अलीगढ १९५५ ई०) मूल के पृ० १७४ ४२३ का अनुवाद।

रिजवी **तुगलुक कालीन भारत** भाग १ (अलीगढ १९५६ ई०) मूल के पृ० ४२३ ५२६ का अनुवाद।

रिजवी **तुगलुक कालीन भारत** भाग २ (अलीगढ १९५७ ई०) मूल के पृ० ५२७ ६०२ का अनुवाद।

सुल्तान अलाउद्दीन के विषय में देखिये **खलजी कालीन भारत**।

३ चन्देरी परगना पिछोर, जिला नरवार (ग्वालियार) २४° ४३ उत्तर तथा ७८° ११ पूर्व के मध्य में। बाबर ने चन्देरी के किले एव चन्देरी विजय का बडा रोचक विवरण दिया है। (**बाबर नामा,** पृ० २६२ २६६)।

४ एक अन्य हस्तलिपि में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है "कुछ पथ भ्रष्ट फकीहों एव अभागे मूर्खों के प्रयत्न से उस राजा निकला ही था कि उधर उस सरल स्वभाव वाले की जिसकी मृत्यु निश्चित हो चुकी थी हत्या करा दी गई। इसी कारण कुतुब खा ने सेवा त्यागकर एकान्तवास ग्रहण कर लिया। शेर खा वहाँ से आगरा पहुँचा।"

सरायों का निर्माण

बंगाले के हाकिमों[1] के नमूने पर उसने मार्ग में एक-एक कोस की दूरी पर सरायें बनवाईं।

मालदेव के विरुद्ध प्रस्थान

एक घातक रोग के उपरान्त जिसमें वह आगरा में ग्रस्त[2] हो गया था, उसने अजमेर तथा नागौर एवं बहुत से अन्य महालों एवं नगरों के हाकिम मालदेव पर चढ़ाई की। वहाँ के कार्य को धूर्तता एवं छल द्वारा[3] सम्पन्न करके चितौड़ एवं रणथम्बोर के क्षेत्र में पहुँचा। वहाँ भी उसने धूर्तता प्रदर्शित की यहाँ तक कि उस किले के रक्षकों ने कुंजियाँ भेज दी।

शेर शाह की मृत्यु

वहाँ वह कुछ सैनिकों को नियुक्त करके धन्दोरा[4] की विलायत में प्रविष्ट हो गया और वहाँ से कालिन्जर[5] के किले के विरुद्ध पहुँचा। उसका अवरोध करके साबातों[6] का निर्माण कराया तथा सुरंगें लगवाईं। १० मुहर्रम ९५२ हि० (२४ मार्च १५४५ ई०) *को[7] उस आग की ज्वाला* में, जो पीड़ितों की आह से स्वतः भड़क उठी थी, जल गया। उसके जलने की तारीख "ज़ आतश मुर्द"[8] के अक्षरों से निकली। यद्यपि इस दृढ़ किले को प्राप्त करने में उसके प्राण तत्वों की चहार दीवारी से निकल गए किन्तु किला विजय हो गया। वह ५ वर्ष २ मास तथा १३ दिन तक छल एवं धूर्ततापूर्वक हिन्दुस्तान में राज्य करता रहा[9]।

१ गौड़ के हुसैन शाह की ओर संकेत है। (Stewart's *Bengal*, p 109)।
२ अब्बास खां सरवानी के अनुसार वह बिहार तथा बंगाल जाते हुए मार्ग में रुग्ण हुआ।
३ शेर शाह द्वारा मालदेव के अमीरों की ओर से उनके नाम जाली पत्रों की ओर संकेत है। (तारीख़ शेरशाही. इलियट का अनुवाद, पृ० ४०५)।
४ अम्बेर (आमेर) में, जयपुर का प्राचीन नाम।
५ कालिन्जर, तहसील गिरवन, ज़िला-बाँदा (उत्तर प्रदेश)। यह प्रसिद्ध प्राचीन पहाड़ी किला तथा कस्बा गिरवन तहसील के दक्षिणी पूर्वी कोने पर बाँदा से ३५ मील पर स्थित है।
६ एक प्रकार का ढका हुआ मार्ग जिसमें आक्रमणकारी बिना अधिक हानि के सुगमतापूर्वक किले पर आक्रमण कर सकते थे। कभी कभी किले की ऊँचाई तक मकान तैयार कर लिये जाते थे।
७ फ़िरिश्ता तथा ख़ाफ़ी ख़ां के अनुसार १२ रबी-उल अव्वल ९५२ हि० (२४ मई १५४५ ई०)। अबुलफ़ज़्ल की यह तारीख़ शुद्ध नहीं। आगे पृ० ३३६ पर उसने लिखा है कि ११ रबी उल अव्वल ९५२ हि० (२३ मई १५४५ ई०) को शेर खां, ५ वर्ष, २ मास तथा १३ दिन के राज्य के उपरान्त मृत्यु को प्राप्त हुआ।
८ 'अग्नि में मर गया'।
९ तारीख़े शेरशाही के अनुसार उसकी मृत्यु १० रबी-उल-अव्वल ९५२ हि० (२२ मई १५४५ ई०) को हुई। इस इतिहास में शेर शाह के आहत होने का उल्लेख इस प्रकार है "शुक्रवार ९ रबी-उल अव्वल ९५२ हि० (२१ मई १५४५ ई०) को एक पहर (इलियट में एक पहर दो पहर) दिन व्यतीत हो जाने के उपरान्त (शेर शाह ने) लश्कर के आलिमों को भोजन करने के लिये बुलवाया कारण कि वह आलिमों एवं मशायख़ के बिना कदापि भोजन न करता था। शेख़ ख़लील एवं शेख़ निज़ाम ने भोजन के समय कहा कि 'काफ़िरों से युद्ध करने से बढ़कर कोई अन्य युद्ध नहीं। यदि कोई (इसमें) मारा जाता है तो शहीद हो जाता है और यदि जीवित रहता है तो ग़ाज़ी होता है।' जब शेर ख़ां भोजन कर चुका तो उसने दरिया ख़ां सरवानी को आदेश दिया कि आतशबाज़ी के हुक़्क़े (सम्भवत

इस्लाम शाह्

उसके उपरान्त उसका छोटा पुत्र जलाल खां ८वें दिन[1] सिंहासनारूढ हुआ। उसने अपना नाम इस्लाम खां रख कर शाह की उपाधि धारण कर ली। वह दुष्टता की दृष्टि से अपने पिता से भी बढ गया था। क्योंकि इन दो विद्रोही धूर्तों का उत्कर्ष, संसार का प्रकाश देने वाले चन्द्रमा तथा स्थायी राज्य की पताका के साथ साथ हुआ था अतः उनका प्रकाश जुगनू की रोशनी के समान मिथ्या था जिसे दैवी गम्भीर बुद्धि ने कुछ कारणों से जिनका ज्ञान ईश्वर को ही था कुछ दिनों के लिए चमका कर विनाश की धूल में मिला दिया और संसार को इन दुष्टों के अपमानजनक जीवन से मुक्त करा दिया।[2]

किसी प्रकार का बारूद से भरा हुआ गोला अथवा राकेट) ले आवे। वह स्वयं टागाल पर पहुँचा और अपने हाथ से अत्यधिक बाणों की वर्षा की। वह बार-बार कहता जाता था कि, 'दरिया खां न आया। बड़ी देर लगा दी।' जब दरिया खां हुक्के लाया तो शेर खां साबात पर से उतर पड़ा। जिस स्थान पर हुक्के रक्खे थे, वहाँ खड़ा हो गया और आदेश दिया कि हुक्कों में आग लगाकर किले के भीतर फेंका जाय। जब लोग हुक्के फेंकने लगे तो संयोग से एक हुक्का उछलकर और किले की दीवार से लगकर टूट गया और वापस आकर उसी स्थान पर जहाँ आतश बाजी के समस्त हुक्के थे गिर पड़ा। हुक्कों में आग लग गई। वे प्रत्येक दिशा में फटने लगे। शेख खलील, शेख निजाम बुद्धिमान् (आलिम) तथा अधिकारी लोग भाग गये और न जले। शेर शाह को अध-जला हुआ वहाँ से निकाला गया। एक शाहजादा जिसकी अवस्था बहुत कम थी हुक्कों में खड़ा रह गया। वह जल गया। शेर खां इस अवस्था में मन्नल (इलियट व अलुवार में खेमा) में पहुँचाया गया। समस्त अमीर आकर दरबार में एकत्र हुए। ईसा खां हाजिब (मूल में हुजाब) एवं मसनद खां (मुद्रा में मन्दू खां) कलबुरी को जो ईसा खां का जामाता एवं सरजनकर्ता का चाचा था, महल के भीतर बुलवाया और आदेश दिया कि, जब तक मैं जीवित हूँ किला विजय कर लिया जाय। जब ईसा खां ने शेर खां का यह आदेश अमीरों को पहुँचाया तो वे प्रत्येक दिशा से किले पर आक्रमण करके विजय प्राप्त कर लें तो उन लोगों ने चींटियों एवं टिड्डियों के समान प्रत्येक दिशा से किले को घर लिया और पलक झपकते जुहर के समय किला विजय कर लिया तथा कत्ले आम कर दिया। समस्त काफिरों को नरक भेज दिया। अस्र की नमाज के समय शेर खां को विजय के समाचार प्राप्त हुए। शेर खां के मुख पर प्रसन्नता एवं हर्ष के चिह्न दृष्टिगत हुए। राजा कीरत सिंह ७० आदमियों सहित एक घर में छिप गया। कुतुब खां स्वयं रात भर उस घर की प्रतिरक्षा करता रहा कि कहीं ऐसा न हो कि राजा कीरत भाग जाय और शेर खां अपने पुत्रों से यह कहे कि अमीरों में से किसी ने भी उसके घर की प्रतिरक्षा न की और राजा घर से भाग गया तथा इतने समय का प्रयत्न नष्ट हो गया। दूसरे दिन सूर्योदय के समय राजा कीरत सिंह को जीवित बन्दी बना लिया गया।

१० रबी उल अव्वल ९५२ हिजरी आधी रात उपरान्त शेर शाह का निधन हो गया। (तारीख शेरशाही डा० परमात्मा शरण की हस्तलिपि, पृ० २११ २१३, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की हस्तलिपि, पृ० २०६ २०८, इलियट, बाडलीयन हस्तलिपि न० ३७१)।

अन्य अफगान इतिहासों तथा **तारीखे दाऊदी** में शेर शाह की मृत्यु (की तारीख) नहीं दी गई है। केवल यह लिखा है कि "जलाल खां पाँच दिन में कालिंजर पहुँचकर ईसा हुज्जाब व तथा अन्य अमीरों के प्रयत्न से १५ रबी उल अव्वल ९५२ हि० को कालिंजर के किले के नीचे सिंहासनारूढ हुआ।" (**तारीखे दाऊदी**, अलीगढ़ १९५४ पृ० १९४) **वाकेआते मुश्ताकी** में उसकी मृत्यु की तारीख नहीं दी है।

१ निजामुद्दीन एवं फिरिश्ता के अनुसार शेर शाह की मृत्यु के तीसरे दिन, १५ रबी उल अव्वल को।'

२ उसकी मृत्यु २२ जीकाद ९६० हि०(३० अक्तूबर १५५३ ई०) को हुई। अबुलफजल ने आगे पृ० ३३६ पर लिखा है कि, "तब ११ रबी उल अव्वल ९५२ हि० (२३ मई १५४५ ई०) को शेर खां ५ वर्ष २ मास तथा १३ दिन तक

मीर्जा हैदर का संक्षिप्त विवरण

मीर्जा हैदर का हाल इस प्रकार है —जैसा कि उल्लेख हो चुका है, हज़रत जहाँबानी (१९७) द्वारा सहायता पाकर वह कश्मीर की ओर रवाना हुआ। जब वह नवशहरा[1] पहुँचा तो इन अमीरों ने जिनका उल्लेख हो चुका है निष्ठापूर्वक व्यवहार किया। कश्मीर में प्रवेश एवं उसपर अधिकार जमाने की विधि को पुन समझाया। मीर्जा दैवी सहायता एवं पादशाही सौभाग्य पर भरोसा करके कश्मीर के दर्रों को पार करने के लिए अग्रसर हुआ। इसी बीच में पादशाही सेना में जैसा कि लिखा जा चुका है पारस्परिक विरोध उत्पन्न हो गया। ख्वाजा कला बेग ने अपनी इच्छा अथवा मीर्जा कामरान के प्रयत्न से उस संकल्प को त्याग दिया और मीर्जा कामरान से मिल गया। मुज़फ्फर तोपची[2] सारंग पहाड़ियों की ओर[3] चल दिया। मीर्जा हैदर के पास उसके प्राचीन सेवकों एवं एक अन्य सेना के अतिरिक्त जिसे हज़रत जहाँबानी ने उसकी कुमक हेतु नियुक्त किया था, कोई न रह गया क्योंकि उस समय कश्मीर में अत्यधिक अव्यवस्था, पारस्परिक शत्रुता, तथा अराजकता फैली थी अत कश्मीरियों की निष्ठापूर्ण सहायता से २२ रजब ९४७ हि० (२२ नवम्बर १५४० ई०) को उसने पूंच नामक दर्रे से प्रविष्ट होकर बिना किसी युद्ध के कश्मीर विजय कर लिया।

इसका कारण यह था कि दीर्घकाल से कश्मीर में स्थायी रूप से कोई बादशाह न था और अमीरों ने अपहरण करके राज्य पर अधिकार जमा रक्खा था। वे राज्य के किसी दावेदार को नाममात्र को बादशाह बनाकर स्वयं राज्य करते रहते थे। उस समय नाजुक शाह[4] नामक एक व्यक्ति जिसके गुण नाम के अनुरूप न थे, राज्य कर रहा था। जब पारस्परिक संगठन, युक्ति, बुद्धि एवं परामर्श का अभाव हो तो राज्य की ऐसी ही दुर्दशा हो जाती है। उस समय चिल्ले का जाड़ा पड़ रहा था और वर्षा बड़ी अधिक हो रही थी[5]। काची चक ने जब मीर्जा हैदर के ललाट पर स्वतंत्र रूप से शासन के अक्षर पढ़े[6], तो छल एवं धूर्तता के कारण, जिसके बिना कश्मीरी रह ही नहीं सकते, कश्मीर छोड़कर शेर खाँ के पास चला गया। मीर्जा हैदर को वह अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु लाया था किन्तु जब इसमें सफलता न हुई अपितु अन्य ही लीला दृष्टिगत होने लगी तो वह इस विचार को त्यागकर अन्य योजनायें बनाने लगा। उसने इस्माईल बेग

अपहरण द्वारा स्वतंत्र रूप से राज्य करके मृत्यु को प्राप्त हो गया तो उसका पुत्र ८ दिन उपरान्त अमीरों की सम्मति से अपने पिता के स्थान पर सिंहासनारूढ़ हुआ। ८ वर्ष २ मास तथा ८ दिन तक वह राज्य के सम्बन्ध में दौड़ धूप करता रहा।"

१ नवशहरा : कश्मीर में, जम्मू के उत्तर-पश्चिम में, पश्चिम की ओर।

२ तारीखे रशीदी के अनुसार 'इस्कन्दर'।

३ घक्करों के प्रदेश की ओर, कश्मीर के दक्षिण-पश्चिम में।

४ एक हस्तलिपि में 'बारक शाह' किन्तु अबुल फ़ज़्ल ने उसका जो विवरण दिया है उसके अनुसार नाजुक शाह ही अधिक उचित है। अबुल फ़ज़्ल का तात्पर्य यह है कि जैसा कि उसका नाम नाजुक शाह था, वह नाजुक न था।

५ हिम पात हो रहा था।

६ यह देखा कि मीर्जा हैदर स्वतन्त्र रूप से राज्य करेगा।

मुहम्मद शाह[१] की बहिन का शेर खा से विवाह कर दिया और इस प्रकार अपने आप को विश्वास-पात्र बनाकर, अलाउल खा[२], हुसेन खा सरवानी[३], तथा लगभग २० हजार लोगों के एक अन्य समूह को कश्मीर लाया। इसी बीच मे अब्दाल माकरी[४], जो उसका सहायक था, जलोदर के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गया। मीर्ज़ा हैदर अपने परिवार को इन्द्रकोट[५] में, जो एक अत्यन्त दृढ स्थान है, छोडकर किले मे बन्द हो गया। कश्मीर वाले उसका साथ छोडकर चले गए। मीर्ज़ा के पास बहुत थोडे से आदमी रह गये। तीन मास तक वह पर्वतों की कन्दराओं मे समय व्यतीत करता रहा। यहाँ तक कि सोमवार २० रबी-उस्सानी ९४८ हि० (१३ अगस्त १५४१ ई०) को युद्ध हुआ। ईश्वर की कृपा से उसे विजय प्राप्त हो गई। यद्यपि शत्रुओं की सख्या, जिनमे कुमक (१९८) हेतु आये हुए अफगान तथा तुच्छ कश्मीरी सम्मिलित थे, ५००० अश्वारोहियो से अधिक थी, किन्तु इस कारण कि उनका कार्य कृतघ्नता एव नमकहरामी पर आधारित था वे सफलता न प्राप्त कर सके और पराजित हो गए। शत्रुओं की बहुत बडी सख्या कत्ल कर दी गई और एक बहुत बडा समूह बन्दी बना लिया गया। कश्मीर स्थायी रूप से मीर्ज़ा के अधिकार में आ गया। कश्मीर के खतीब[६] मौलाना जमालुद्दीन मुहम्मद यूसुफ ने "फतहे मुकरर[७]" के अक्षरो से इस विजय की तारीख निकाली। यद्यपि "तकरार"[८] शब्द का प्रयोग मीर्ज़ा के इसी अभियान के लिए किया गया होगा, किन्तु जैसा कि उसने अपने इतिहास में स्वय बताया है, सम्भवत उस घटना की ओर सकेत किया गया हो जब वह एक बार काशगर के हाकिम सईद खा की ओर से नियुक्त होकर लार दर्रे से कश्मीर मे प्रविष्ट हो गया और ४ शाबान ९३९ हि० (१ मार्च १५३३ ई०) को उसे अपने अधिकार मे कर लिया[९]। इसी वर्ष शव्वाल के अन्तिम दिन (२४ मई १५३३ ई०) को उसने कश्मीर के अमीरो तथा मुहम्मद शाह से, जो नाममात्र को बादशाह था, सधि कर ली,

१ इस्माईल बिन मुहम्मद शाह कश्मीर का सुल्तान रह चुका था। सम्भवत वह चार बार तथा नाजुक शाह तीन बार बादशाह हुआ। (Jarret : *Ain-i-Akbari* II, p 384)

२ एक पोथी में 'आदिल खा' तारीखे रशीदी में भी 'आदिल खा' है किन्तु तबकाते अकबरी में 'अलाउल खा'।

३ एक पोथी में 'शरवानी'।

४ अब्दाल माकरी, इब्राहीम माकरी का पुत्र था। इब्राहीम माकरी कश्मीर के सुल्तान मुहम्मद शाह का, जब वह दूसरी बार सुल्तान हुआ, प्रधान मत्री नियुक्त हुआ। अब्दाल माकरी के समकालीन राजनीति मे अत्यधिक भाग लेने के कारण मलिक काजी नामक मत्री ने षडयत्र करके उसे कश्मीर से भगा दिया। वह हिन्दुस्तान पहुँचा और उसने बाबर को हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया।

५ मध्यकालीन रूप 'अन्दरकोट'।

६ वह व्यक्ति जो खुत्बा पढता हो।

७ पुन विजय।

८ पुन।

९ सम्भवत यह विजय की तिथि नहीं अपितु उस अवसर की तारीख है जब कश्मीरी अपनी पराजय के उपरान्त सगठित हुए।

और मुहम्मद शाह की पुत्री का विवाह अपने पुत्र इस्कन्दर सुल्तान[1] से करके जिस मार्ग से आया था उसी से लौट गया।

जब इस बार परोक्ष से विजय प्राप्त हो गई और कश्मीर अधिकार में आ गया तो वह १० वर्ष तक उस विलायत की सुव्यवस्था का घोर प्रयत्न करता रहा। उस रमणीक क्षेत्र को, जो उजड चुका था, नगरो के वस्त्र पहनाये और प्रत्येक स्थान से कलाकारो एव शिल्पकारो को बुलवा कर उस प्रदेश की रौनक एव उसकी समृद्धि में वृद्धि का प्रयत्न किया। विशेप रूप से सगीत की बडी उन्नति हुई और नाना प्रकार के वादन यन्त्रो का आविष्कार हुआ। सक्षेप में, उस प्रदेश की बाह्य दशा अर्थात् उसकी सासारिक उन्नति को वास्तविक रूप प्राप्त हो गया किन्तु मीर्जा के निरुत्साह एव निर्जीव धार्मिक पक्षपात के कारण, जो प्रवीणता के अभाव का परिणाम है, यद्यपि लोग दावा यही करते हैं कि उनमें कोई दोप नही, कश्मीर की आध्यात्मिक पूजी का, जो यकरगी[2] एव दीनदारी[3] का ससार है, मूल्य कम हो गया। आज तक कश्मीरियो मे धार्मिक पक्षपात की गध आती है कारण कि सगत का विशेपकर शासको की (सगत का) उनके शक्तिशाली होने की वजह से बहुत बडा प्रभाव पडता है। आशा है कि हजरत शाहशाह की हकीकत एव हक्कानियत[4] से कश्मीर वालो के बाह्य रूप एव आन्तरिक दशा में समानता उत्पन्न हो जायगी और ईश्वर की इबादत एव ईश्वर के ज्ञान का, बिना किसी दिखावे एव धार्मिक पक्षपात के, सचार हो जायगा।

कश्मीर में हुमायूं के नाम का खुत्बा

मीर्जा की सबसे बडी एव अशुभ भूल यह थी कि इतनी महान् विजय के बावजूद उसने कश्मीर के अमीरो की प्रथानुसार नाजुक शाह के नाम का खुत्बा तथा सिक्का चलने दिया। उसे चाहिए था कि हजरत जहाँबानी के नमक के उत्तरदायित्व के कारण, दिरहम एव दीनार के मुख तथा मिम्बरो[5] को हजरत जहाँबानी के पवित्र नाम से सुशोभित करता। वास्तव में वह (१९९) समय के साथ चल रहा था न कि अनिष्ठा का प्रदर्शन कर रहा था अत जब काबुल विजय हो गया[6] तो उसने हजरत जहाँबानी के पवित्र नाम से खुत्बे को सम्मान प्रदान किया।

१ इस्कन्दर सुल्तान सईद खा का पुत्र था, मीर्जा हैदर का नहीं, यद्यपि सईद खा के आग्रह पर वह उसे अपना ही पुत्र समझता था। आईने अकबरी में अबुलफ़ज़ल ने उसे सईद खा का ही पुत्र लिखा है। सम्भवत यह पुस्तक नक़ल करने वाले की भूल है।

२ निष्ठा।

३ धर्म निष्ठता।

४ सत्यता एव ईश्वर के प्रेम।

५ मस्जिद का मच जिस पर से खतीब खुत्बा पढता है।

६ मि० राजर्स ने कश्मीर के सिक्कों का उल्लेख करते हुए हुमायूँ के नाम के एक कश्मीर के सिक्के का उल्लेख किया है जिस पर ९५० हि० (१५४३ ४४ ई०) तारीख पडी है। इसके अतिरिक्त ९५२ अथवा ९५३ हि० (१५४५ या १५४६ ई०) के भी सिक्के मिले हैं। हुमायूँ ने काबुल को दो बार विजय किया . (१) रमजान ९४२ हि० (नवम्बर १५४५ ई०), (२) रजब ९५५ हि० (अगस्त १५४८ ई०)। अबुलफ़जल सम्भवत इस विजय की ओर सकेत कर रहा है। (बेवरिज, पृ० ४०५)।

मीर्ज़ा हैदर की मृत्यु

९५८ हि० (१५५१-५२ ई०)[१] मे कश्मीर वालो ने रात्रि में एक छापा मारा जिसमें उसकी मृत्यु हो गई। इसका सक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है कि मीर्ज़ा न्यायकारिता के अविनियमो को जो राज्य के सरक्षक हैं, उपेक्षा करके अपने स्वार्थ के हित मे जीवन व्यतीत करने लगा और सावधानी एव धैर्य को, जो सौभाग्य के दो बाजू हैं, अपने हाथ से खो दिया। कश्मीरियो के छल एव धूर्तता ने, जो मीर्ज़ा की योग्यता एव बुद्धिमत्ता के कारण दब गई थी, पुन सिर उठा लिया। यह धोखेबाज़ एव षड्यन्त्रकारी समूह धूर्तता के मार्ग पर अग्रसर होकर मित्रता के भेष मे शत्रुता करने लगा। इस सम्बन्ध मे सबसे बडा कार्य उन्होने यह किया कि मीर्ज़ा की सेना को छल द्वारा उससे पृथक् करा दिया और उसके योग्य आदमियो को छिन्न भिन्न करा दिया। एक समूह को तिब्बत की ओर, कुछ को पकली[२] की ओर और कुछ को राजौरी की ओर भिजवा दिया। ईदी रैना, अब्दाल माकरी के पुत्र हुसेन माकरी ने ख्वाजा हाजी बक्काल कश्मीरी को, जो मीर्ज़ा का मुख्य प्रबन्धक था, मार्ग-भ्रष्ट करके अपनी ओर मिला लिया। उन लोगो ने एक बहुत बडी सख्या को अपना सहायक बना लिया और मीर्ज़ा पर चढाई की। गाज़ी खा तथा मलिक दौलत चक भी उनसे मिल गए। खानपुर के समीप जो हीरापुर एव कश्मीर के मुख्य नगर तथा राजधानी सिरीनगर के मध्य मे है मीर्ज़ा पर रात्रि में छापा मारा। मीर्ज़ा ख्वाजा हाजी के घर के समीप करा बहादुर को, जो बन्दी था, मुक्त कराने गया था, किन्तु कमाल दूबी[३] के हाथो अपने प्राण त्याग दिए। कुछ लोगो का मत है कि उसके किसी सेवक ने उसे बिना पहचाने बाण मार दिया।

मीर्ज़ा कामरान का सक्षिप्त उल्लेख

क्योकि मीर्ज़ा हैदर का सक्षिप्त उल्लेख हो चुका है अत अब मीर्ज़ा कामरान का हाल लिखा जाता है। जिन अशुभ दिनो मे मीर्ज़ा कामरान हज़रत जहाबानी से पृथक् होकर काबुल की ओर रवाना हुआ तो उसने भुखाव के क्षेत्र मे पहुँचने पर नेतृत्व एव सरदारी को कष्ट देते हुए[४] कठपुतली का नाच नचाने वाले युग को अपना सहायक समझकर अपने नाम का खुत्बा पढवा दिया। जिस किसी के पास दूरदर्शी बुद्धि, मसलहत सिखाने वाले मुसाहिब, एव दुख दर्द बटाने वाले साथी नही होते वह नि सन्देह ऐसे ही अनुचित कार्य करता है, न वह प्रेम के उत्तरदायित्व को समझता है और न सौजन्य के नियमो को जानता है। दूसरो की हानि को अपना लाभ समझता है और दुष्टता के बीज सदाचारियो की भूमि में बोता है। यह स्पष्ट है कि ऐसी खेती तथा ऐसे कार्य का क्या परिणाम होगा और उसको आशा के वृक्ष म किस प्रकार के फल लगेंगे। किसी

१ सम्भवत अक्तूबर १५५१ ई०।
२ कुछ पोथियों में 'बकली'।
३ मूल पुस्तक में 'दूली' किन्तु एक पोथी में 'दूबी'। तबकाते अकबरी के अनुसार 'कमाल दूबी'।
४ अर्थात् नेतृत्व एव सरदारी का दावा करते हुए।

अल्प दर्शी के कार्यों को स्थायित्व नही प्राप्त होता और न राज्य का अपहरण करने वाले का राज्य उसका साथ देता है। बिना नीव का भव्य भवन किसी प्रकार दृढ़ नही रहता और बरफ के मीनार के समान शीघ्र टुकड़े-टुकड़े हो जाता है। प्रथम रात्रि के चन्द्र को कोई स्थायित्व नही कारण कि वह विद्युत् की एक चमक के कारण पलक झपकाते ही लुप्त हो जाता है। मीर्जा कामरान की सल्तनत का भी गुलाब की ताजगी के समान शीघ्र ही पतन हो गया और उसका राज्य बहार के शीतल पवन के समान शीघ्र समाप्त हो गया।

मीर्जा कामरान का विद्रोह

(२००) सक्षेप में, धनकोट[१] के मार्ग से वह सिन्ध नदी के तट पर पहुँचा। इस स्थान पर महम्मद सुल्तान एवं उलुग मीर्जा, जो मुल्तान के क्षेत्र में पहुँच गए थे और वहाँ भी न ठहर सके थे, नदी तट पर मीर्जा कामरान की सेवा मे उपस्थित हुए। मीर्जा बहुत समय तक वहाँ ठहरा रहा। जब अनाज का अभाव हो गया तो उसने पुल बँधवाकर नदी पार की और वहा से काबुल पहुँचा। वहाँ उसने अपने भाग्य की सफलता के द्वार खोल दिए और अपने स्वार्थ के अनुसार जीवन व्यतीत करने लगा। जमशेद[२] का प्रसिद्ध कथन कि, 'जब तक सिंह जगल से नही जाता, मृग के लिए चरागाह नही खुल पाती और जब तक बाज घोसले में नही प्रविष्ट हो जाता तीतर का उड़ना सम्भव नही होता" इस घटना से स्पष्ट हो गया। गजनी तथा उस क्षेत्र को उसने अस्करी मीर्जा को प्रदान कर दिया। ख्वाजा खावन्द महमूद को दूत बनाकर सुलेमान मीर्जा[३]

१ बाबर के अनुसार 'दीनकोट' (**बाबर नामा**, पृ० १७, ६६, ११३)। सम्भवत यह मुअज्जम नगर के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह सिन्ध के पूर्वी तट पर काला बाग के समीप रहा होगा।

२ مثلی که از جمشید مروی است (मसले कि अज जमशेद मर्वी अस्त)– इसे बेवरिज ने मर्व का जमशेद पढ़ा है और उसे तथा जमशेद मुअम्माई को, जिसका उल्लेख **अकबर नामा** पृ० २२१ पर है, एक ही व्यक्ति बताया है। उसका अनुवाद है "And Jamshid of Merv's saying"। इस सम्बन्ध में ब्लाखमैन के **आईने अकबरी** के पृ० १०२ का हवाला भी दिया है। (बेवरिज ४०८)। इस स्थान पर उसने मर्वी शब्द का अर्थ समझने में भूल की और इसका अर्थ मर्व निवासी समझ लिया। मर्वी का अर्थ 'उल्लिखित', 'बताया गया' इत्यादि होता है। यद्यपि अबुल फजल ने जमशेद मुअम्माई की विद्वत्ता की अत्यधिक प्रशंसा की है किन्तु वह राजनैतिक सिद्धान्तों का उल्लेख करते हुए जमशेद अथवा ईरान के किसी अन्य पौराणिक बादशाह से कम किसी की चर्चा नहीं कर सकता था। जमशेद, जिसे जाम भी कहा जाता है, ईरान के प्राचीन पौराणिक बादशाहों में से था। फिर्दौसी के अनुसार उसने ७०० वर्ष राज्य किया। कहा जाता है कि वह ईसा के ८०० वर्ष पूर्व राज्य करता था। वह बड़ा प्रतापी एवं बुद्धिमान् बादशाह माना जाता है तथा अपने नाना प्रकार के आविष्कारों के लिये प्रसिद्ध है।

३ वह तीमूर का वंशज (छठा) तथा सुल्तान अबू सईद मीर्जा का पौत्र था। अबू सईद ने बदख्शाँ के सुल्तान मुहम्मद की हत्या करके उसे अपने पुत्र सुल्तान महमूद को दे दिया। उसके तीन पुत्र थे बाईसुगर मीर्जा, अली मीर्जा एवं खान मीर्जा। जब महमूद की मृत्यु हो गई, तो बाईसुगर के एक अमीर, अमीर खुसरो खा ने बाईसुगर को अंधा बना दिया और दूसरे शाहजादे की हत्या करके राज्य का अपहरण कर लिया। ९१० हि० (१५०४-५ ई०) में उसने बाबर की अधीनता स्वीकार कर ली। जब बाबर ने ९१२ हि० (१५०६-७ ई०) में शाह बेग अरगून से कंधार छीन लिया तो उसने खान मीर्जा को बदख्शाँ का हाकिम नियुक्त करके वहाँ भेज दिया। मीर्जा सुलेमान खान मीर्जा का पुत्र था। उसका जन्म ९२० हि० (१५१४-१५ ई०) में हुआ। खान मीर्जा की मृत्यु के

के पास बदख्शाँ भेजा और यह इच्छा प्रकट की कि उसके नाम का खुत्बा एवं सिक्का बदख्शाँ में भी चलने लगे। मीर्ज़ा सुलेमान ने दूत को असफल लौटा दिया। मीर्ज़ा कामरान ने इस बात से रुष्ट होकर बदख्शाँ पर चढ़ाई की। बारी[1] नामक स्थान के समीप दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ। जब मीर्ज़ा सुलेमान ने अपनी कमजोरी के चिह्न देखे तथा मीर्ज़ा की शक्ति का अवलोकन किया तो आदमी भेजकर संधि के द्वार खुलवाये और उसके नाम का खुत्बा तथा सिक्का चलवाना स्वीकार कर लिया। मीर्ज़ा कामरान ने बदख्शाँ के कुछ महाल मीर्ज़ा सुलेमान से लेकर अपने आदमियों को दे दिए और अपने उद्देश्य की पूर्ति करके वापस चला आया।

मीर्ज़ा हिन्दाल की कन्धार में पराजय

इसी बीच में समाचार प्राप्त हुए कि मीर्ज़ा हिन्दाल ने कन्धार पर अधिकार जमा लिया है। मीर्ज़ा कामरान आसपास से सेना एकत्र करके कन्धार की ओर रवाना हुआ और छ मास तक किले को घेरे रहा। खाद्य सामग्री का अभाव हो जाने के कारण मीर्ज़ा हिन्दाल ने व्याकुल होकर क्षमा याचना कर ली और किला समर्पित कर दिया। मीर्ज़ा कामरान मीर्ज़ा अस्करी को कन्धार प्रदान करके काबुल लौट आया और मीर्ज़ा हिन्दाल को अपने साथ लेता गया। कुछ दिन तक वह उसे कष्ट पहुँचाता रहा किन्तु बाद में भ्रातृ भाव तथा एकता का रूप धारण करके, शत्रुता प्रदर्शित करते हुए जूये शाही का हरा-भरा स्थान, जो आजकल हज़रत शाहंशाह के उत्कृष्ट नाम से सम्बन्धित होने के कारण जलालाबाद[2] कहलाता है, मीर्ज़ा को प्रदान कर दिया।

कामरान द्वारा मीर्ज़ा सुलेमान की पराजय

सिन्ध के हाकिम ने भी आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली[3] और युग असावधानी के साधन एकत्र करने लगा। यहाँ तक कि मीर्ज़ा सुलेमान ने बदख्शाँ के राज्य के उन भागों पर, जिन्हें मीर्ज़ा कामरान ने छीन लिया था, अधिकार जमा लिया और प्रतिज्ञा भंग कर दी। मीर्ज़ा कामरान ने दूसरी बार उस पर चढ़ाई की। अन्दराब[4] के क्षेत्र में युद्ध हुआ। मीर्ज़ा सुलेमान पराजित होकर किलये ज़फ़र में बन्द हो गया। मीर्ज़ा कामरान ने उसका पीछा करके किले का अवरोध कर लिया तथा खाद्य सामग्री के पहुँचने के मार्ग रोक दिये। बदख्शाँ के अधिकांश लोगों ने मीर्ज़ा कामरान

उपरान्त बदख्शाँ का प्रान्त क्रमशः हुमायूँ, सुल्तान उवैस (मीर्ज़ा सुलैमान के ससुर) तथा मीर्ज़ा हिन्दाल के अधीन रहा। १५२९ ३० ई० में बाबर ने बदख्शाँ मीर्ज़ा सुलेमान को प्रदान कर दिया और वह वर्ष १७ जमादि उस्सानी ९४८ हि० (८ अक्तूबर १५४१ ई०) तक राज्य करता रहा। (देखिये तारीखे रशीदी का अनुवाद' मुग़ल कालीन भारत—बाबर, पृ० ६३१ ६३२)।

१ यह 'मारी' तथा 'नारी' दोनों प्रकार से लिखा गया है। सम्भवतः यह परयान अथवा बारह है जो परयान एवं चिन्नार के मध्य में है। (बेवरज, पृ० ४०८)।

२ अफ़गानिस्तान का एक नगर जो काबुल नदी के समीप पेशावर से काबुल के मुख्य मार्ग के बीचों-बीच में स्थित है। इसे १५७० ई० में अकबर के नाम पर बसाया गया था।

३ शाह हुसेन ने अपनी पुत्री का विवाह मीर्ज़ा कामरान से कर दिया।

४ बदख्शाँ के दक्षिण पश्चिम में।

की अधीनता स्वीकार कर ली। मीर्ज़ा सुलेमान जब अपने सैनिकों की ओर से, जिनसे उसे स्वामी-भक्ति की आशा थी, निराश हो गया और खाद्य सामग्री के अभाव के कारण किले वालों की दशा शोचनीय हो गई तो उसने विवश होकर (मीर्ज़ा कामरान) की अधीनता स्वीकार कर ली।

मीर्ज़ा कामरान का बदख़्शा पर अधिकार

(२०१) मीर्ज़ा कामरान, कासिम बरलास, मीर्ज़ा अब्दुल्लाह तथा अपने कुछ निष्ठावानों को बरलास[१] के अधीन बदख़्शा में छोड़कर लौट गया। ख़्वाजा हुसेन[२] मर्वी ने इस घटना की तारीख़, "जुमा हफ़दहुम माहे जमादि-उस्सानी[३]" के अक्षरों से निकाली। उसने[४], मीर्ज़ा सुलेमान तथा उसके पुत्र मीर्ज़ा इब्राहीम को बन्दी बनाये रक्खा। जब वह काबुल पहुँचा तो उसने एक मास नगर में जश्न कराया और असावधानी में समय व्यतीत करता रहा। न तो ईश्वर का स्मरण करता और न पीड़ितों के साथ न्याय करता यहाँ तक कि हज़रत जहाँबानी के सौभाग्य का नक्षत्र बलन्द हुआ और उन्होंने स्वयं पधारकर उसके कुकर्मों का दंड उसकी गोद में डाल दिया। इसका उल्लेख बाद में किया जायगा।

मीर्ज़ा हिन्दाल

जो कोई अपने आश्रयदाता के प्रति अनुचित व्यवहार और निष्ठा के विरुद्ध आचरण करता है तो निःसन्देह उसे इसी लोक में इसका बदला मिल जाता है। मीर्ज़ा हिन्दाल का हाल इसी प्रकार है। जब वह ऐसी अशान्ति एवं उपद्रव के समय हज़रत जहाँबानी के प्रति कृतघ्नतापूर्ण व्यवहार करके कन्धार की ओर चल दिया तो कराचा ख़ाँ, जो मीर्ज़ा कामरान की ओर से कन्धार का हाकिम था, मीर्ज़ा के आगमन के समाचार पाकर किले के बाहर निकला और आदरपूर्वक उससे भेंट की, वह प्रदेश मीर्ज़ा को समर्पित कर दिया। अधिक दिन व्यतीत न हुए थे कि मीर्ज़ा कामरान ने वहाँ पहुँचकर उस प्रदेश पर अपना अधिकार जमा लिया[५]। मीर्ज़ा को बन्दी बना लिया और जैसा कि पूर्व में उल्लेख हो चुका है उसके प्रति कठोरतापूर्वक व्यवहार किया।

१ क़ासिम बरलास।

२ वह शेख रुक्नुद्दीन अलाउद्दौला सिम्नानी के पुत्रों में से था। अकबर ने उसे सिंहासन बत्तीसी नामक ग्रन्थ के अनुवाद का आदेश दिया था जिसे वह पूरा न कर सका। ९७९ हि० (१५७१-७२ ई०) में अकबर ने उसे मर्व जाने की अनुमति दे दी। फ़ैज़ी ने इस घटना की तारीख़ की रचना की। वह काबुल में मीर्ज़ा हकीम की सेवा में उपस्थित हुआ किन्तु मीर्ज़ा उससे रुष्ट हो गया और उसकी वहीं मृत्यु हो गई। (मुल्ला अब्दुल क़ादिर, मुन्तख़बुत्तवारीख़ भाग ३, पृ० १७६-१७८)। उसने सुल्तान सलीम एवं शाहज़ादा मुराद के जन्म के विषय में एक क़िते की रचना की जिसके पहले मिसरे से सलीम की और दूसरे मिसरे से शाहज़ादा मुराद के जन्म की तारीख़ें निकलती हैं।

३ शुक्रवार १७ जमादि उस्सानी (९४८ हि०। ८ अक्तूबर १५४१ ई०)। बेवरिज के अनुवाद में १५४६ ई०, जो अशुद्ध है।

४ मीर्ज़ा कामरान ने।

५ मीर्ज़ा कामरान ने कन्धार को ६ मास के अवरोध के उपरान्त विजय किया।

यादगार नासिर मीर्ज़ा

यह निश्चय है कि कृतघ्न लोगो के कार्यों का परिणाम उसी प्रकार घृणित होता है जैसा कि उनके कार्यो का प्रारम्भ। बुद्धिमान् लोग उनपर कोई विश्वास नही करते और इन कृतघ्ना के दुष्परिणाम की प्रतीक्षा किया करते हैं ताकि उस समय तक जब तक कि उन्हे दड मिले, जो दैवी न्याय के लिए अनुपेक्षीय हैं, वे प्रसन्नतापूर्वक ईश्वर के प्रति आभार प्रदर्शित करते हुए समय व्यतीत कर सके और ससार वालो को शिक्षा प्राप्त हो सके तथा अभागे लोगो को पश्चाताप।

यादगार नासिर मीर्ज़ा का काबुल पहुँचना

इस प्रकार यादगार नासिर मीर्जा टट्टा के हाकिम के छल एव धूर्तता के कारण सन्मार्ग से विचलित होकर हज़रत जहाँबानी के प्रस्थान के उपरान्त दो मास तक लुहरी[1] मे ठहरा रहा। अन्त में उसे यह बात स्पष्ट रूप से ज्ञात हो गई कि टट्टा के हाकिम की बातो मे लेशमात्र को भी तथ्य एव निष्ठा नही और उसने जो प्रस्ताव रखे थे वे नितान्त मिथ्या एव नीचता पर आधारित थे। विवश होकर उन कल्पनाओ को त्यागकर वह कन्धार की ओर रवाना हुआ। हाशिम बेग ने, जो उसका बडा सच्चा हितैषी एव शुभचिन्तक तथा आज्ञाकारी था, उसे बहुत समझाया कि हज़रत जहाँबानी की सेवा त्याग कर मीर्जा कामरान के पास जाना उचित नही। ससार में दुराचार का बदला मिल जाता है अत इस बात पर सोच विचार कर लेना चाहिये। यह बात सिद्ध हो चुकी है कि जिसके बुरे दिन आ जाते हैं उसकी मति भ्रष्ट हो जाती है और वह अपने आश्रयदाताओ को कष्ट पहुँचाने की धृष्टता करने लगता है तथा शुभचिन्तको के परामर्श को हवा के समान समझ कर सावधानी के कान नही धरता, बुद्धिमानो के गम्भीर विचारो को मिथ्या समझता है। यादगार नासिर मीर्जा ने सौभाग्य के अभाव के कारण कन्धार की ओर प्रस्थान किया। जिस समय मीर्ज़ा कामरान कन्धार के किले को बुरी तरह घेरे हुए था वह मीर्जा की सेवा में उपस्थित हुआ और मीर्ज़ा के साथ काबुल पहुँचा।

(२०२) मीर्ज़ा कामरान ने टट्टा के हाकिम के पास इस आशय से आदमी भेजे कि वह हज़रत बिल्क़ीस[2] मकानी शहर बानो बेगम एव उनके पुत्र मीर्जा सजर को, जो यादगार नासिर मीर्जा से पृथक् होकर बक्कर के क्षेत्र में रह गए हैं, आदरपूर्वक भेज दे। टट्टा के हाकिम ने उन्हे बहुत से लोगो के साथ जो हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी से पृथक् होकर उस क्षेत्र मे रह गए थे, उचित रूप से रवाना कर दिया। उसने जान बूझ कर अथवा भूल से इन लोगो को ऐसे रेगिस्तान की ओर से भेज दिया जहाँ अन्न-जल कुछ भी प्राप्त न होता था। बहुत बडी सख्या मे लोग नष्ट हो गए। जब शेष लोग शाल[3] नामक स्थान पर पहुँचे तो उन्हे ज्वर आने लगा। हज़रत

१ रोहरी।

२ बिल्क़ीस के घराने की। सेबा की महारानी का नाम बिल्क़ीस था। शहर बानो बाबर की सौतेली छोटी बहन तथा यादगार के पिता नासिर की सगी बहिन थी। उसका जन्म १४९१ ई० के लगभग हुआ था। उसका विवाह निज़ामुद्दीन अली ख़लीफ़ा के भाई जुनैद (बरलास) से हुआ था। उससे उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम सजर मीर्जा था। वह १५३७-३८ ई० के लगभग विधवा हो गई थी।

३ क्वेण्टा का प्राचीन नाम।

विलनीस मकानी की मृत्यु हो गई। २-३ हजार आदमियो में से जो इस काफले में मारे-मारे फिर रहे थे, केवल थोडे से प्राण बचा कर कन्धार पहुँच सके।

हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी की पवित्र सवारी का खुरासान तथा एराक पहुँचना एव यात्रा का विवरण

हाती गक्कर का सौजन्य

क्योंकि घटनाओं का उल्लेख करने वाली लेखनी कुछ लम्बे-लम्बे कदम रख कर बात को अपने लक्ष्य तक ले आई है अत अब अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होकर लम्बी चौडी यात्रा के लिए रवाना होती है और हजरत जहाबानी की खुरासान एव एराक यात्रा का सक्षिप्त उल्लेख किया जाता है। यह उल्लेख इस प्रकार है —

जब हजरत जहाँबानी ने दैवी इच्छा से सतोष की घाटी मे कदम रक्खे और चोल[1] के खतरनाक मार्ग पर अग्रसर हुए तो जो लोग शुभ रिकाब के साथ थे उन्हे चोली[2] की उपाधि द्वारा सम्मानित किया। ईश्वर की महान् अनुकम्पा से इस भयप्रद चाल मे मलिक हाती बिल्लौच ने, जो लुटेरो का सरदार था, धरती-चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया और हजरत (जहाँबानी) का अपने निवास स्थान पर ले जाकर नाना प्रकार से उनकी सेवा करने का प्रयत्न किया और उस भयप्रद घाटी से मार्ग दर्शाकर गरम सीर[3] प्रदेश मे ले गया। उक्त प्रदेश के मुख्य अधिकारी मीर अब्दुल हई ने अनुचित विचारो के कारण यद्यपि सेवा में उपस्थित होने का सम्मान न प्राप्त किया किन्तु नाना प्रकार से आतिथ्य एव सेवा की व्यवस्था की। उस क्षेत्र म ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद[4] मीर्जा अस्करी की ओर से उस प्रदेश की मालगुजारी[5] वसूल करने के लिए आया हुआ था। हजरत (जहाँबानी) ने बाबा दोस्त बख्शी को उसके पास इस आशय से भेजा कि वह सौभाग्य

१ रेगिस्तान, उजाड स्थान।

२ चोल (रेगिस्तान, उजाड स्थानों) की यात्रा करने वाले।

३ गरम भू भाग। बाबर ने लिखा है, "काबुल के अधीनस्थ स्थानों में गरमसीर ही कुछ बातों में हिन्दुस्तान से मिलता जुलता है और कुछ बातों में नहीं।" (**बाबर नामा, पृ० १६८**)।

४ ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को अकबर के राज्यकाल के प्रारम्भ में २५०० का मसब प्रदान करके गजनी भेज दिया गया। उसके विरोधियों ने काबुल के हाकिम मुनइम खा को उसे हानि पहुँचाने के लिए प्रेरित किया। हिन्दुस्तान में बैराम खा उसका बडा विरोधी था। एक बार हुमायू के राज्यकाल में बैराम खा ने उसे हम्माम में बन्दी बनवाकर उसका बडा अपमान किया था। मुनइम खा ने उसे आश्वासन देकर बुलवाया किन्तु उसे बन्दी बना लिया। उसकी आखों में कई बार सलाई फिरवाई गई किन्तु उसकी दृष्टि नष्ट न हो सकी। मुनइम खा ने यह समझ कर कि वह अन्धा हो गया उसे मुक्त कर दिया। वह हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुआ किन्तु मुनइम खा को पता चल गया। उसने कुछ आदमियों को भेजकर उसे बन्दी बनवा लिया और अकबर के राज्यकाल के तीसरे वर्ष में उसकी हत्या के लिए आदमी नियुक्त कर दिए। (शाह नवाज खा. **मआसिरुल उमरा** भाग १, पृ० ६१५ ६१८)।

५ 'तहसीले अमवाल'।

ी ओर उसका पथ-प्रदर्शन करके उसे उनके पास ले आये। ख्वाजा इसे अपना बहुत बड़ा सौभाग्य समझकर उनकी सेवा में उपस्थित हुआ। उसके पास जो कुछ धन-सम्पत्ति थी, उसने भाग्यशाली ेना पर न्योछावर कर दी। हजरत जहाँबानी ने उसे सम्मानित करके सरकारे खास्सा की मीर सामानी[1] उसकी सूझ-बूझ के अधीन कर दी।

एकान्तवास ग्रहण करने में बाधा

वे कुछ दिन तक उस भू-भाग में ठहर कर अपने उन निष्ठावानो को, जो इस भाग्यशाली अभियान में उनके साथ थे, उचित उपदेश एव लाभदायक शिक्षायें देते रहे और ससार (२०३) की कृतघ्नता एव वाह्य बधनो के विश्वास योग्य न होने के विषय में नाना प्रकार की दलीलें प्रस्तुत करके उन लोगो को समझाते रहे और बन्धनो में बधे हुए लोगों के हृदय को इस दिशा में दौड-धूप करने से रोककर वास्तविक उद्देश्य एव मूल लक्ष्य की ओर, जो साहसी लोगो की आकाक्षा के अनुकूल होता है, आकृष्ट करते रहे। क्योंकि एकान्तवास ग्रहण करके ईश्वर की ओर लौ लगाने के साधन नित्य प्रति अधिक से अधिक होते जाते थे, अत हजरत जहाँबानी का उच्च साहस यही चाहता था कि अपने बहिरग एव अतरग को ईश्वर के अतिरिक्त सबसे हटाकर उसी अद्वितीय की ओर लगायें किन्तु उनकी उदारता एव कृपा इस बात की अनुमति न देती थी कि इस सम्बन्ध-विच्छेद द्वारा भाग्यशाली सेना के सेवको के हृदय को कष्ट पहुँचायें। यह निष्ठावान् समूह भी सेवा से पृथक् न होता था और यह न चाहता था कि ऐसा महापुरुष, जो ईश्वर का खलीफा बनने-योग्य है और जिसके समान अतरग एव बहिरग से सम्बन्धित शासन प्रबन्ध करने वाला युगो एव करनो[2] में मिलना कठिन है, एकाएकी ससार से हाथ खीच ले और कयामत तक रहने वाले इस स्थायी राज्य से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर ले। इस समूह की इच्छा यही थी कि वे हृदय से ईश्वर से एव वाह्य रूप से प्राणियो से सम्बन्धित रहकर लोक तथा परलोक के कल्याण का प्रयत्न करें। ईश्वर को धन्य है कि यश के उस समुद्र के अद्वितीय मोती अर्थात् हजरत शाहशाह को इसमें पूर्ण अधिकार प्राप्त है। वाह्य ससार के शासन प्रबन्ध एव विजय में व्यस्त रहने के बावजूद वे आलमे जबरुत एव लाहूत[3] के समुद्र में पूर्ण रूप से डूबे रहते हैं और उनके साहस के पाँव उच्चतम श्रेणी की ओर अग्रसर रहते है।

१ बादशाह की व्यक्तिगत सम्पत्ति का अधीक्षक।

२ १० वर्ष अथवा १०-१० के हिसाब से १२० वर्ष तक की कोई अवधि।

३ दारा शिकोह ने मजमउल बहरैन में चार जगत अथवा आलमे अरबेआ की निम्नाकित व्याख्या की है : जगत जिनमें समस्त प्राणी मात्र को अवश्य ही भ्रमण करना है कुछ सूफियों के अनुसार चार है —

क नासूत (मानव की स्वाभाविक स्थिति। इस स्थिति में मनुष्य को शरीअत का अनिवार्य रूप से पालन करना पडता है और इस्लाम के समस्त आदेशों का पालन करना पड़ता है)।

ख मलकूत (यह फरिश्तों की स्थिति के अनुरूप है और तरीकत के मार्ग से इस जगत की यात्रा होती है। अदृश्य जगत—देव लोक)।

ग जबरूत (यह शक्ति की स्थिति है। ईश्वर के ज्ञान (मारेफत) के मार्ग से इस जगत की यात्रा होती है)।

ईरान के शाह के नाम पत्र

संक्षेप में, दैवी आदेश एवं स्वाभाविक श्रेष्ठता के कारण उन्हें यह प्रेरणा हुई कि वे ईरान के बादशाह को स्नेहयुक्त पत्र लिखें और उस ओर प्रस्थान करें। यदि ईरान का हाकिम पैतृक हकों पर दृष्टि रखकर प्रेम एवं निष्ठा-पूर्वक व्यवहार करे तो निःसन्देह पुनः ज़ाहिरी प्रबन्ध ठीक हो जायेंगे और सत्य के आकांक्षी इस समूह का हृदय हाथ में लिया जा सकेगा। यदि ऐसा न हुआ तो फिर एकान्तवास ग्रहण करने के लिए उदारता के बावजूद कोई बात बाधक न हो सकेगी। इस कारण बृहस्पतिवार १ शव्वाल ९५० हि० (२८ दिसम्बर १५४३ ई०) को उन्होंने चोली बहादुर के हाथ एक पत्र भेजा जिसमें लिखा कि, "भाग्य के विधाताओं के कारण, जिन्होंने प्रत्येक कार्य में इतनी मसलहतें छिपा रक्खी हैं, आपसे शीघ्र भेंट हो जायगी।" अपने विषय में संक्षिप्त उल्लेख करके यह शेर लिखा :—

शेर

'हमारे सिर पर जो कुछ बीतनी थी, वह बीत गई,
क्या समुद्र, क्या पर्वत और क्या बियाबान[1]।'

हुमायूं का सीस्तान की ओर प्रस्थान

हज़रत जहाँबानी कुछ दिन गरमसीर में ठहरना चाहते थे कि गरमसीर के मीर अब्दुल हई ने कुछ लोगों को भेजकर निवेदन कराया कि, 'ऐसा सुना जाता है कि मीर्ज़ा अस्करी ने

द लाहूत (लोप अथवा ईश्वर में लीन होने की स्थिति। सूफ़ियों की आध्यात्मिक यात्रा में यह अन्तिम स्थिति है)।

हिन्दुस्तान के मर्मज्ञों के मतानुसार अवस्थामन् शब्द जो कि इन चारों जगतों के लिए प्रयुक्त होता है, केवल चार हैं :

अ जाग्रत।
ब स्वप्न।
स सुषुप्ति।
द तुर्यं।

अ जाग्रत जगत : नासूत के समान है जो कि प्रत्यक्ष और जाग्रत का जगत है।
ब स्वप्न : जो कि मलकूत के सदृश है, आत्मा और स्वप्नों का समाज है।
स सुषुप्ति : जो कि जबरूत के समान है तथा जिसमें दोनों लोकों के चिह्न अदृश्य हो जाते हैं और "मन (मैं)" व "तू" का भेद लुप्त हो जाता है, इसे चाहे अपने नेत्रों को खोलकर देखा जाय चाहे बन्द करके।
द तुर्यं जगत : लाहूत के अनुरूप है जो पवित्र सत्य कहलाता है और जो कि समस्त समाजों को आवृत किये हुये है।

(दारा शिकोह : मजमउल बहरैन अध्याय ७ 'अवालिमे अरबआ'।

१ के गुज़श्त अज़ सरे मा उनचे गुज़श्त,
चे ब दरिया, चे ब कुहसार व चे दश्त।
که گذشت از سر ما آنچه گذشت
چه بدریا چه بکهسار و چه دشت

एक बहुत बड़ी सेना भेजी है। कहीं ऐसा न हो कि वह इस क्षेत्र में पहुँच जाय और फिर कुछ (२०४) भी न हो सके। यदि आप सीस्तान प्रदेश तथा उस क्षेत्र में जो ईरान के हाकिम के अधीन है चले जाये तो इस अज्ञानी समूह के उत्पात के भय से मुक्त हो जायेंगे।" हजरत जहाँबानी ने निष्ठावानों की कमी एवं शत्रुओं की अधिकता देखकर इस प्रदेश में ठहरना सावधानी के, जो बुद्धिमानों का मार्ग है, विरुद्ध समझकर सीस्तान की ओर प्रस्थान किया और हीरमन्द[1] नदी पार करके एक झील के किनारे, जहाँ इस नदी का जल गिरता है, पडाव किया।

सीस्तान के हाकिम द्वारा आतिथ्य

अहमद सुल्तान शामलू, जो सीस्तान का हाकिम था, सम्मानित आगमन को अकस्मात (प्राप्त) सौभाग्य समझकर, भाग्यशालियों के समान सेवा एवं आतिथ्य प्रदर्शित करने लगा। वे कुछ दिन तक उस रमणीक भू-भाग पर, जो भाग्यशाली शहसवारों की दौड़-धूप का मैदान था, मुर्गाबियों के शिकार में व्यस्त रहे और अपने निष्ठावान् साथियों के हृदय के प्रोत्साहन हेतु सांसारिक बन्धनों में बंधे हुए लोगों के कार्यों में व्यस्त रहकर भाग्य की लीला देखते रहे। वहाँ से प्रस्थान करके उन्होंने सीस्तान[2] में पडाव किया। चूँकि इस अभियान में हजरत मरियम मकानी के इकबाल का हौदज तथा प्रताप की महमिल हजरत जहाँबानी के साथ थी अत अहमद सुल्तान ने अपनी माता एवं स्त्रियों को उनके पास भेजा और अपनी विलायत का समस्त राजस्व[3] उपहार स्वरूप भेंट कर दिया। हजरत जहाँबानी ने उसको प्रसन्न करने के लिए उसमें से थोड़ा-सा ले लिया और शेष लौटा दिया।

अहमद सुल्तान के भाई से शीआ-सुन्नी समस्या पर वार्ता

इस मंजिल पर अहमद सुल्तान के भाई हुसेन कुली मीर्जा ने, जो मशहद से अपनी माता एवं भाई से हिजाज की यात्रा (के पूर्व) विदा होने आया था, धरती-चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया।

१ हिलमन्द : अफ़गानिस्तान की मुख्य नदी। इसे हिरमन्द, हीरमन्द तथा हिलमन्द भी बोला जाता है। यह पगमान की पर्वतीय श्रेणी के दक्षिण की ओर की घाटी से निकलती है। पगमान की पर्वतीय श्रेणिया, काबुल के पश्चिम में हिन्दूकुश तथा कोहे बाबा से मिली है। पूर्वी हजारिस्तान के लम्बे चौड़े मैदान में जिसके विषय में अधिक ज्ञान न प्राप्त हो सका है, बहती हुई यह दक्षिण पश्चिम की दिशा में मुड जाती है और गिरिश्क के समीप दक्षिणी अफ़गानिस्तान के मैदान में पहुँचती है। गिरिश्क के नीचे बुस्त के अवशेषों के समीप, अरगन्दाब तारनाक तथा अरगसान नदियाँ, जो पहले से ही मिल चुकी होती हैं, इसमें मिलती है। सीस्तान पहुँचकर यह उत्तर की ओर मुड़ जाती है और हमून अथवा सीस्तान की झील में गिरती है।

२ सीस्तान नामक कस्बा, कारण कि हुमायूँ इस प्रांत में पहिले ही प्रविष्ट हो चुका था। रैवर्टी ने **तबक़ाते नासिरी** के अनुवाद में सीस्तान नगर का नाम ज़रंज लिखा है। (*Raverty : Tabqat-i Nasiri*, p. 1122) बायजीद ने 'कस्बये सीस्तान' ही लिखा है। सीस्तान अथवा सिजिस्तान को नीमरोज़ भी कहा जाता था। नीमरोज़ का फ़िरदौसी के **शाहनामे** में कई स्थानों पर उल्लेख हुआ है। यह ईरान तथा अफ़ग़ानिस्तान की सरहद पर है। शाह इस्माईल सफ़वी ने ९१४ हि० (१५०८-९ ई०) में इसे विजय कर लिया और यह ११३४ हि० (१७२२ ई०) तक ईरानियों के अधीन रहा।

३ अमवाल; मालगुजारी।

हजरत जहाँबानी ने उससे धर्म के विषयो में प्रश्न किए। उसने निवेदन किया कि 'बहुत समय से मैं शीओ तथा सुन्नियो के विश्वासो के विषय में सोच विचार कर रहा हूँ और दोनो धम वालो के ग्रथो का अध्ययन करता रहता हूँ। शीओ का विश्वास है कि असहाव[1] पर लान-तान[2] प्रशसनीय एव पुण्य का साधन है। सुन्नियो का विश्वास है कि असहाब की निन्दा कुफ्र[3] है। सोच विचार उपरान्त मेरी समझ में यह आ गया है कि पुण्य की कल्पना में काफिर न हो जाना चाहिये।' हजरत (जहाँबानी) इस बात से बडे प्रसन्न हुए और उसके प्रति कृपा दृष्टि प्रदर्शित करते हुए उससे अपनी सेवा में सम्मिलित हो जाने के विषय मे कहा। क्योकि उसने (हज की) यात्रा करना निश्चय कर लिया था और उसकी तैयारी भी कर ली थी अत वह इस सौभाग्य से वचित रह गया।

हुमायूं के सहायकों का जमीनदावर की ओर प्रस्थान के विषय में परामर्श

इस स्थान पर हाजी मुहम्मद (पुत्र) बाबा कश्का तथा हसन कोका मीर्ज़ा अस्करी से पृथक् होकर शाही सेना मे पहुँच गए। उन लोगो ने कहा कि यह उचित होगा कि (हजरत जहाँबानी) जमीनदावर की ओर प्रस्थान करें कारण कि उस स्थान का हाकिम अमीर बेग सेवा में आ रहा है और बुस्त[4] के किले का हाकिम चलमा बेग[5] भी सेवा में उपस्थित होने वाला है और मीर्ज़ा अस्करी के अधिकाश आदमी शीघ्रातिशीघ्र उससे पृथक् होकर शाही सेवा मे उपस्थित हो जायेंगे और कन्धार तथा उस क्षेत्र के स्थान राज्य के सहायको के अधीन हो जायेंगे।

हुमायू का हिरात की ओर प्रस्थान

(२०५) जब अहमद सुल्तान ने सुना कि इस प्रकार के प्रस्ताव रखकर (जहाँबानी को) एराक की यात्रा से रोका जा रहा है तो उसने पवित्र सेवा मे उपस्थित होकर निष्ठापूर्वक निवेदन किया कि, "एराक की ओर प्रस्थान करना आपके गौरव को देखते हुए परमावश्यक

१ मुहम्मद साहब के सहचर अथवा मित्र। यहाँ हजरत अबूबक्र (जून ६३२ ई० अगस्त ६३४ ई०), हजरत उमर (अगस्त ६३४ ई० नवम्बर ६४४ ई०) एव हजरत उस्मान (नवम्बर ६४४ ई०-जून ६५६ ई०) तथा उनके सहायकों से तात्पर्य है जिन्हें शीआ अपहरणकर्ता समझते हैं। उनका विश्वास है कि हजरत अली को हजरत मुहम्मद ने अपना खलीफा तथा इमाम अपने जीवनकाल में ही नियुक्त कर दिया था अत उनकी मृत्यु के उपरान्त हजरत अली को ही उनका खलीफा नियुक्त होना चाहिये था। किसी प्रकार के चुनाव का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

२ निन्दा एव कटु आलोचना।

३ अस्वीकृत, इस्लाम के विरुद्ध।

४ बुस्त हेलमन्द नदी पर, जहाँ नदी तथा कन्धार की सीमायें मिलती हैं। १०वीं शती ई० में यह सिजिस्तान का दूसरे नम्बर पर बडा नगर था। यहाँ के लोग समृद्ध तथा हिन्दुस्तान से व्यापार करते थे। १३वीं शती ई०में याकूत नामक भूगोल वेत्ता के अनुसार नगर उजड चुका था और १४वीं शती के अन्त में तीमूर के आक्रमण के कारण यह काफी नष्ट हो गया।

५ एक हस्तलिपि में 'जलमा बेग'। चलमा बेग मीर्ज़ा कामरान के कोका हमदम का पुत्र था। हुमायूँ के राज्यकाल में उसने प्रशसनीय सेवायें सम्पन्न कीं। अकबर के राज्यकाल में वह खाने आलम की उपाधि द्वारा सुशोभित हुआ।

है। यह समूह जो इस यात्रा से रोक रहा है षड्यन्त्र एवं धूर्तता के अतिरिक्त कोई अन्य बात नहीं प्रदर्शित कर रहा है।" क्योंकि अहमद सुल्तान ने अपनी निष्ठा एवं स्वामी-भक्ति द्वारा हजरत जहाँबानी को अत्यधिक प्रभावित कर लिया था अतः उन्होंने उसकी बात स्वीकार कर ली और इस परामर्शानुसार, एराक की ओर प्रस्थान करने का संकल्प कर लिया। इस कारण हाजी मुहम्मद को कुछ दिन तक सेवा में उपस्थित होने की अनुमति न दी गई। अहमद सुल्तान उत्कृष्ट रिकाब के साथ साथ तबस कीलकी[1] के मार्ग से उन्हें ले जाना चाहता था। क्योंकि हजरत जहाँबानी ने हेरी[2] की यात्रा करना निश्चय कर लिया था, अतः ऊक[3] किले के मार्ग से वे उस ओर रवाना हुए।

शाह तहमास्प द्वारा हुमायूँ के पत्र का उत्तर

जब हजरत जहाँबानी जन्नत आशियानी के स्नेहमय एवं निष्ठा-युक्त पत्र ने ईरान के शाह तहमास्प[4] के राजसिंहासन को शोभा प्रदान की तो वह हजरत जहाँबानी के शुभ चरणों को अपने लिए एक ऐसी देन समझकर जिसकी उसे आशा न थी प्रसन्न हो गया और उसकी इच्छा हुई कि सौभाग्य की हुमा की उत्कृष्ट छाया को अपने प्रताप के सिर पर स्थान दे और इस सौभाग्य की प्राप्ति को अपने वंश के उत्कृष्ट कारनामों का शीर्षक बनाये। इस देन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए उसने आदेश दिया कि तीन दिन तक कजवीन[5] में खुशी के नक्कारे बजाये जायें।

१ मूल में केवल 'कीलकी' किन्तु कुछ हस्तलिपियों में 'नपम कीलकी' अथवा 'तबस कीलकी'। यह खुरासान का एक नगर है और सीस्तान से कजवीन (तत्कालीन ईरान की राजधानी) के मार्ग में हिरात से बड़ी दूर पश्चिम में है।

२ हिरात एक बड़ा ही प्राचीन नगर ३४°२२ उत्तर तथा ६२°१ पूर्व में। तीमूरियों में मीर्जा शाह रुख (८०७ हि०/१४०४ ई०—८५० हि०/१४४७ ई०) ने इसे अपनी राजधानी बना लिया जिसके कारण यह उत्तरोत्तर समृद्ध होता गया। ९१३ हि० (१५०७ ई०) में शैबानी खाँ उजबक ने हिरात पर अधिकार जमा लिया। बाबर ने ९१२ हि० (१५०६-७ ई०) के विवरण में हिरात की यात्रा की बड़े ही रोचक ढंग से चर्चा की है। (**बाबर नामा**, पृ० ५५-६६)। सुल्तान हुसैन मीर्जा के कारण यह नगर उस समय बड़ा ही प्रसिद्ध हो गया था। बाबर ने सुल्तान-हुसैन मीर्जा के दरबारियों का उल्लेख ९११ हि० (१५०५-६ ई०) के इतिहास में किया है। (**बाबर नामा**, पृ० ५७२-५९६)। ९१६ हि० (१५१० ई०) में शाह इस्माईल ने शैबानी की हत्या करके हिरात पर अधिकार जमा लिया किन्तु उजबेक उसे अपने अधिकार में करने का निरन्तर प्रयत्न करते रहे और ९४१ हि० (१५३४ ई०) में उबैदुल्लाह खाँ उजबेक ने इसे बुरी तरह नष्ट भ्रष्ट किया।

३ रैवर्टी ने **तबकाते नासिरी** के अनुवाद में ऊक को फराह एवं जरंज (सीस्तान) के मध्य में बताया है।

४ शाह तहमास्प, शाह इस्माईल सफ़वी का पुत्र था। शाह इस्माईल सफ़वी एवं बाबर के सम्बन्ध के लिये देखिये **हबीबुस्सियर** तथा **तारीखे रशीदी** के उद्धरणों का अनुवाद, रिजवी **मुगल कालीन भारत—बाबर**, पृ० ६०२-६०६, पृ० ६२०-६२४)। शाह तहमास्प सफ़वी का जन्म २२ फरवरी १५१४ ई० को हुआ और वह अपने पिता शाह इस्माईल सफ़वी के स्थान पर २४ मई १५२४ ई० को १० वर्ष की अवस्था में सिंहासनारूढ़ हुआ। वह अपनी मृत्यु (१५ मई १५७६ ई०) तक ईरान में राज्य करता रहा।

५ कजवीन पहले कशवीन कहलाता था और एराक अजम का एक नगर है। यह अलबुर्ज पर्वत के दक्षिण में तेहरान से १०० मील उत्तर-पश्चिम में स्थित है। अब्बासियों के राज्यकाल से इसे उन्नति प्राप्त होनी प्रारम्भ हो गई परन्तु १३वीं शती ई० में मंगोलों के आक्रमणों की वजह से यह नगर नष्ट हो गया किन्तु सफ़वियों के राज्य

अत्यधिक आदर एवं सम्मान प्रदर्शित करते हुए उत्तर में एक पत्र लिखवाया और शीघ्रातिशीघ्र पधारने का आग्रह किया। उसने (हज़रत जहाँबानी को) सहस्रों प्रशंसा एवं गुण-गान करते हुए अपने विश्वासपात्रों के हाथ उपहार एवं तुहफ़े प्रेषित किए। इस शेर को पत्र का शीर्षक बनाया

शेर

'सौभाग्य के गौरव की हुमा हमारे जाल में आ जाय,
यदि तेरा हमारे स्थान की ओर आगमन हो जाय[1]।'

उसने दूत को उचित रूप से सम्मानित करके वापस कर दिया और नाना प्रकार से कृतज्ञता एवं आभार प्रदर्शित करते हुए, प्राचीन निष्ठा का उल्लेख तथा अत्यधिक आदर सम्मान प्रदर्शित किया, नगरों एवं कस्बों के हाकिमों तथा वालियों[2] को लिखा कि जिस मंज़िल अथवा जिस नगर में शुभ सेना का पड़ाव हो उस स्थान के बड़े-बड़े हाकिम, प्रतिष्ठित एवं सम्मानित लोग सर्व-साधारण इस 'उत्कृष्ट वंश के सम्मान का ध्यान रखते हुए उनके स्वागतार्थ पहुँचें और पादशाहाना आतिथ्य का प्रबन्ध करें। प्रत्येक मंज़िल पर उनके उत्तम असबाब, उचित वस्तुयें, खाने पीने की चीज़ें तथा ताजे फल एकत्र करके प्रस्तुत किए जायें। जो फ़रमान हेरी के हाकिम मुहम्मद खां को लिखा गया वह इस आशय से मूलरूप से उद्धृत किया जाता है कि वह बुद्धिमानों के लिए विधान बन सके और मानवता के नियमों से परिचित लोग, सौजन्य की उस प्रस्तावना का अध्ययन करके कष्टों में फंसे हुए उन लोगों के प्रति आदर सम्मान प्रदर्शित करते रहें (२०६) जो ऊँच नीच का सामना करते रहते हैं और उनके प्रति उदारता एवं कृपा प्रदर्शन में लेश मात्र की कमी न करें।

ख़ुरासान के हाकिम के नाम शाह तहमास्प का पत्र

शुभ फ़रमान इस आशय से भेजा जाता है कि अयालत पनाह[3], शौकत दस्तगाह[4], शम्सुल

काल में यह पुनः अत्यधिक उन्नति कर गया। शाह तहमास्प प्रथम ने बहुत समय तक वहां निवास किया और शाह अब्बास स़फ़वी प्रथम ने वहां अनेक सुन्दर भवन बनवाये।

१ हुमाये औजे सआदत बदामे मा उफ़्तद,
अगर तुरा गुज़रे बर मकामे मा उफ़्तद।

هماى اوج سعادت بدام ما افتد
اگر ترا گذرى بر مقام ما افتد

२ गवर्नरों।

३ राज्य की शरण।

४ ऐश्वर्य का कारख़ाना।

अयालत वल इकबाल[1], मुहम्मद खा शरफुद्दीन उगली तक्लू, सम्मानित प्रिय पुत्र[2] का गुरू[3] राजधानी हिरात के हाकिम एव मीर दीवान[4] नाना प्रकार की शाही अनुकम्पा एव कृपा द्वारा सम्मानित होकर समक्ष ल कि उसका प्रार्थना-पत्र जिसे उसने इमारत पनाह करा सुल्तान शामलू के भाई कमालुद्दीन शाह कुली बेग[5] के हाथ ऐश्वय को शरण प्रदान करने वाले दरबार में भेजा था, १२ जिलहिज्जा[6] (७ मार्च १५४४ ई०) को प्राप्त हुआ। उस सम्मानित लेख में जो कुछ लिखा था वह आद्योपान्त ज्ञात हुआ।

जो कुछ सफल नव्वाब[7], आकाश को रिकाब बनाने वाले, सूर्य के कुब्बे, सल्तनत एव सफलता के समुद्र के मोती, शासन प्रबन्ध एव राज्य व्यवस्था की वाटिका को सजाने वाले वृक्ष, सल्तनत एव ऐश्वय के राजप्रासाद को प्रकाश देने वाले नूर, सौभाग्य एव प्रताप की नहर के सरो, वैभव एव ऐश्वर्य के उद्यान के पवित्र वृक्ष, खिलाफत एव न्याय के वृक्ष के फल, जल एव स्थल के

१ गौरव एव प्रताप का सूर्य।

२ सुल्तान मुहम्मद मीर्जा शाह तहमास्प का ज्येष्ठ पुत्र, जो मुहम्मद खुदाबन्दा भी कहलाता था। वह १५७८ ई० में सिंहासनारूढ हुआ किन्तु अपनी अयोग्यता के कारण शीघ्र कहीं गायब हो गया।

३ लला। ब्लाकमैन ने आईने अकबरी के अग्रेजी भाषा के अनुवाद में जाफरखा पुत्र कजाक खा के सम्बन्ध में एक टिप्पणी में लिखा है कि लल्ला शब्द हमारे शब्द-कोशों में नहीं मिलता। मैंने इसे हिन्दुस्तानी इतिहासकारों की रचना में नहीं देखा किन्तु जहाँ भी इसका प्रयोग हुआ है इसका अर्थ अतालीक निकलता है। सम्भवत जिन इतिहासों में इस शब्द का प्रयोग हुआ है, उनकी ओर ब्लाकमैन ने ध्यान नहीं दिया। इसका अर्थ स्टेनगेस के फारसी अग्रेजी कोष में भी दिया है (A mentor, a tutor)। उक्त कोष में इसका उच्चारण 'लला' है।

४ सम्भवत तुर्की शब्द बेगलर बेगी का अनुवाद। अफजलुत्तवारीख में, जिसकी रचना शाह अब्बास प्रथम (१५८७ १६२९ ई०) के शासन काल में हुई, बेगलर बेगी ही है। (Sukumar Ray *Humayun in Persia*, Calcutta 1948, p 69)।

५ अफजलुत्तवारीख के अनुसार "हुसैन बेग तक्लू" के हाथ।

६ अफजलुत्तवारीख के अनुसार "मगलवार ५ शव्वाल ९५० हि० (१ जनवरी १५४४ ई०)"। हुमायू ने शाह तहमास्प को १ शव्वाल ९५० हि० को पत्र लिखा। सम्भवत उसी दिन हिरात के हाकिम मुहम्मद खाँ तक्लू ने भी पत्र लिखा जो ५ शव्वाल ९५० हि० को शाह तहमास्प को प्राप्त हो गया। हुमायू १ जीकाद ९५० हि० को हिरात के जहानआरा उद्यान में पहुँच गया। (अकबर नामा भाग १, पृ० २१४, ब्रिटिश म्युजियम की अकबर नामा की एक हस्तलिपि में भी ५ शव्वाल ९५० हि० ही है। Or 4678)। अत यही तारीख ठीक है। १२ जिलहिज्जा पत्र नकल करने वाले की भूल है। बायजीद के इतिहास में भी १२ जिलहिज्जा है (पृ० १२)। अत ऐसा ज्ञात होता है कि कुछ पत्रों में गलत ही तारीख नक्ल हो गई।

७ 'नव्वाबे कामयाब'। शीओं के इमामत के सिद्धान्त के अनुसार बादशाह केवल हजरत अली की सन्तान के १२वें इमाम हो सकते हैं जो शीओं के विश्वासानुसार जीवित किन्तु अदृश्य हैं अत जो कोई बादशाह होगा वह उनका नायब ही होगा। इस प्रकार ईरान के शाह अपने लिये भी नव्वाब ही की उपाधि का प्रयोग करते थे। अकबर के राज्यकाल के महजर के सम्बन्ध में बरनर तथा डा० माखन लाल राय चौधरी आदि विद्वानों ने इस शब्द से बड़े विचित्र निष्कर्ष निकाले।

पादशाह, सफलता के आकाश के चमकते हुए सूर्य, खिलाफत एव जहाँबानी[1] के गौरव की चौदहवी रात के चाँद, न्यायकारी सुल्तानो के नेता एव पथ-प्रदर्शक, सम्मानित खाक़ानो मे सर्वोत्तम एव सर्वश्रेष्ठ, बादशाही के राजसिंहासन के उच्च वश के शासक, न्यायकारिता के देश के उच्च वश के पादशाह, सिकन्दर सरीखे खाक़ान, उत्कृष्ट जमशेद सरीखे सम्मान वाले, सिंहासनारूढ सुलेमान[2], पथ प्रदर्शन एव विश्वास के स्वामी सुल्तान, मुकुट एव राजसिंहासन के अधिकारी शासक, प्रताप एव सौभाग्य के समार के साहब किरान, समकालीन सुल्ताना के नेत्र के प्रकाश, प्रतिष्ठित खाकानो के शीर्ष के मुकुट, ईश्वर द्वारा सहायता प्राप्त, नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायू पादशाह[3] (ईश्वर उन्हें अतिम दिन तक उनकी इच्छानुसार गौरव प्रदान करे) के विषय में लिखा था, ज्ञात हुआ। यह नही कहा जा सकता कि कितनी प्रसन्नता एव कितना सतोष हुआ।

पद्य

'सुखद समाचार, हे ऊषा के सदेश-वाहक ! तू मित्र के आगमन के समाचार लाता है,
तेरे समाचार सच हो, हे हर स्थान पर मित्र के विषय में जानकारी रखने वाले।
सम्भवत वह दिन आ जाय जब मिलन की सभा में अचानक,
बैठूगा मैं, अपने हृदय की इच्छा को पाकर, मित्र के साथ।'

उस फिरिश्ते सरीखे पादशाह का आगमन तथा बिना किसी कष्ट के अग्रसर होना अपने लिए एक महान् देन समझे। इस सुखद समाचार के प्राप्त होने के पुरस्कार में मजवार[4] की विलायत उस राज्य के आश्रित को तुशकान वर्ष की मेषराशि के प्रारम्भ से प्रदान कर दी। वह अपने दारोगा[5] एव वजीर को उस स्थान पर नियुक्त कर दे ताकि वहाँ से जो राजस्व वसूल हो एव दीवानी[6] के वुजूहात[7] प्रचलित वर्ष के प्रारम्भ से अपने अधिकार मे करके विजयी सेना के वेतन एव अपनी आवश्यकता पर व्यय कर सके।[8] जिन नियमो का इस फरमान मे उल्लेख

१ राज्य व्यवस्था।
२ एक प्रतापी पैगम्बर जिनका राज्य हवा पर भी बताया जाता है, (Solomon)।
३ **अकबरनामा** के पत्र में हुमायू के सम्बन्ध में इतने विशेषणों का प्रयोग नहीं हुआ है।
४ खुरासान का एक नगर, नीशापुर के पश्चिम में, मशहद एव कैस्पियन के मध्य में। हिरात के समीप मजवार इससे भिन्न है। इसे 'बेहक' भी कहा जाता था।
५ अमीर के समान ईरान का पद, मुख्य प्रबन्धक।
६ मालगुजारी (राजस्व) एव अन्य करों की वसूली का विभाग।
७ कर।
८ **अकबरनामा** में जो उद्धृत हुआ है, उसमें मजवार के प्रदान होने का उल्लेख नहीं। उसके स्थान पर अधिक महत्व का यह निम्नाकित वाक्य है। "जिस दिन तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ उसी दिन यह सम्मानित फरमान जारी किया गया। यह आवश्यक है कि जैसे ही इस अनुल्लघनीय पत्र की सूचना प्राप्त हो तो जो कुछ इस फरमान में लिखा है उसका पालन करें :—सर्वप्रथम यह कि जब वे (हुमायू) नीमरोज एव सिजिस्तान से हिरात की ओर रवाना हों, वहा के हाकिमों के पास फरमान पहुँचायें कि जो अत्यधिक सेवा उपर्युक्त नव्वाब के विषय में सम्भव हो उसे पूरी करें और सेवा में किसी प्रकार उपेक्षा न करें अन्यथा वे दड के पात्र होंगे।

(२०७) हुआ है उनपर प्रत्येक फसल एव दिन में आचरण किया जाय और आज्ञाकारिता से सम्बन्धित जो आदेश है, उनका लेशमात्र भी उल्लघन न हो।

वह अपने ५०० अनुभवी बुद्धिमानो को नियुक्त करे, जिनमें से प्रत्येक के पास एक-एक कोतल घोडा, एक सवारी का खच्चर एव आवश्यक साज व सामान हो। वे उस भाग्यशाली के स्वागतार्थ रवाना हों और अपने साथ १०० द्रुतगामी घोडे[1], जो सम्मानित दरबार से सुनहरी जीनों सहित भेजे गए हैं, ले जायें। वह राज्य का रक्षक भी अपने तवेला से ६ द्रुतगामी सधे हुए उत्तम रग के एव मजबूत घोडे, जो राज्य एव सफलता के रणक्षेत्र के शहसवार की सवारी के योग्य हों, चुनकर नकशी आस्मानी ज़ीनो सहित, ज़रब्फ्त एव जरदोज़ी[2] की झूलें, जो कि उस जम सरीखे सम्मान वाले पादशाह की सवारी के घोडे के योग्य हों, डलवाकर, प्रत्येक घोडे को अपने दो सेवकों को देकर भेज दे। विशेष सर्वोत्तम खजर जो सफल नव्वाब स्वर्गीय एव सम्मानित शाह बाबा[3] (ईश्वर उनके प्रमाण को स्पष्ट करे) से प्राप्त हुआ है और जिसपर उत्तम जवाहरात जड़े हुए हैं सोने की तल्वार एव जड़ाऊ पेटी सहित उस सिकन्दर सरीखे पादशाह की विजय एव सफलता के शकुन के लिए भेजा गया है। ४०० मखमल एव फिरग[4] तथा यज़्द[5] के अतलस के थान इस आशय से भेजे जा रहे हैं कि इनमें से हज़रत जहाँबानी के १२० विशेष जामें[6] तैयार हों और शेष विजयी रिकाब के सेवकों को प्रदान कर दिये जायें। सोने के तारा के काम के मखमली कालीनो के दो ढेर, बकरे के बालो के गलाफ अतलस के अस्तर सहित, तीन जोड बडे कालीन १२ हाथ (चौकोर), उत्तम रेशम की चार शोगकानी[7], १२ खेमे लाल, हरे तथा सफेद भेजे गए हैं। ईश्वर करे वे भली भाँति पहुँच जायें।

स्वादिष्ट एव उत्तम पेय नित्य प्रति तैयार कराये जायें और सफेद रोटियो सहित, जो घी तथा दूध मे सानी गई हों और जिनमें राज़ियाना[8] तथा पोस्ता पडा हो, वन्दयाकर हज़रत (जहाँबानी) के लिए भेजी जायें। उत्कृष्ट दरबार के विश्वासपात्रा एव अन्य सेवको के लिए वह वस्तुयें अलग भेजी जायें। जब यह निश्चय हो जाय कि कल अमुक स्थान पर पडाव होगा तो

१ बायज़ीद में केवल 'तीन' (बायज़ीद, पृ० १४), यही उचित है। ३ और ६ मिलाकर ९ हो जाते हैं। ९ रहस्यमय सख्या है और शुभ अवसरों पर इसका बडा ध्यान दिया जाता था। अफज़लुत्तवारीख के पत्र में १०० अथवा तीन किसी का उल्लेख नहीं हुआ है अपितु लिखा गया है कि आतिथ्य के उपरान्त उपर्युक्त विलायतों (नीमरोज़, सिजिस्तान एव हिरात) के हाकिम ९ घोडे जो उनके योग्य हों, प्रस्तुत करें।

२ सोने की बुनाई एव सोने के काम की।

३ शाह इस्माईल सफवी।

४ योरप से तात्पर्य है।

५ यज़्द —ईरान का एक नगर जो रेशम के कपडों के लिये बडा प्रसिद्ध था।

६ एक प्रकार का लम्बा कोट।

७ गोशकान, काशान तथा इस्फहान के मध्य में एक कस्बा है जो कालीनों के लिये प्रसिद्ध है। शोगकानी रेशम के कालीन से तात्पर्य है।

८ सोये के प्रकार के शाक के बीज।

आज ही से वहाँ साफ, उत्तम, सफेद एव कढे हुए, अतलस तथा मखमल के सायबान[१], रिकाबखाना[२], मतबख[३], एव उनके समस्त कारखानो[४] को सुव्यवस्थित कर दिया जाय। प्रत्येक कारखाने की आवश्यक वस्तुयें तैयार रहे। जब वे स्वय पडाव करें तो गुलाब का शरबत एव स्वादिष्ट नीबू का रस तैयार रखे और बरफ मे लगाकर, ठडा करके प्रस्तुत करें। शरबत के उपरान्त मशहद के मुश्की सेब, तरबूज एव अगूर इत्यादि सफेद रोटियो सहित, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, पेश करें। इस बात का प्रयत्न किया जाय कि समस्त पेय की राज्य का वह रक्षक परीक्षा कर ले[५]। गुलाब तथा अम्बर उनमे मिलाया जाय। रोजाना ५०० विभिन्न प्रकार के भोजनो के थाल पेय के साथ प्रस्तुत किए जायें। अयालत पनाह कजाक सुल्तान[६], इमारत मआल जाफर सुल्तान[७] अपने पुत्रो एव (२०८) अपनी कौम वालो में से १००० आदमियो को (उन) ५०० आदमियो को रवाना करने के तीन दिन बाद स्वागतार्थ भेजें। उन तीन दिनो में उपर्युक्त अमीरो एव सेना वालो का निरीक्षण किया जाय। अपने सेवको को तीपूचाक[८] एव अरब घोडे प्रदान करने के विषय मे सावधानी से कार्य करें कारण कि सैनिको के लिए उनके घोडो से बढकर शोभा की कोई अन्य वस्तु नही है। उन हजार आदमियो के सरोपा[९] उत्तम एव रगीन रहे। ऐसी व्यवस्था की जाय कि जब ये अमीर हजरत जहाँबानी की सेवा मे पहुँचे तो अभिवादन एव आदर सम्मान की भूमि का शिष्टाचार के ओष्ठो से चुम्बन करे और एक-एक व्यक्ति अभिवादन करे। इस बात की व्यवस्था की जाय कि सवारी इत्यादि के समय अमीरो के सेवको तथा हजरत (जहाबानी) के सेवका में किसी प्रकार का वाद विवाद न होने पाये और उनके सेवको मे किसी प्रकार कोई रुष्ट न होने पाये। सवारी एव लश्कर के प्रस्थान के समय अमीर लोग दूर से अपनी सेना में सेवा करें किन्तु पहरे के समय पूर्व-उल्लिखित अमीरो मे से प्रत्येक उन स्थानों के समीप जहाँ वे नियुक्त हो, प्रयत्न करते रहे और सेवा का डडा हाथ में लेकर इस प्रकार सेवा करे जिस प्रकार कोई अपने बादशाह की सेवा करता है और जो अधिक से अधिक सावधानी आवश्यक हो उसका प्रदर्शन करें। वे जिस विलायत मे पहुँचें यही फरमान वहाँ के वाली को दिखाकर यह निश्चय कर दिया जाय कि वह अमीर सेवा करे। आतिथ्य का इस प्रकार प्रवन्ध किया जाय कि समस्त भोजना, एव पेय की कुल सख्या

१ एक प्रकार का शामियाना।
२ मोदीखाना।
३ रसोई।
४ शाही आवश्यकताओं की तैयारी से सम्बधित विभिन्न विभाग।
५ इसका कारण यह था कि उसमें कोई विष इत्यादि न मिला दिया जाय। बकावल अथवा चाशनीगीर के पद पर इसी कारण बादशाहों के विश्वास-पात्र ही नियुक्त होते थे।
६ कजाक सुल्तान, मुहम्मद खा का पुत्र था।
७ जाफर सुल्तान अथवा जाफर खा, कज्जाक सुल्तान का पुत्र एव मुहम्मद खा तकलू का पौत्र था। वह अकबर के राज्यकाल में हिन्दुस्तान पहुँचा।
८ द्रुतगामी एव बहुमूल्य घोडों की एक किस्म।
९ सिर से पाव तक के वस्त्र, खिलअत।

१,५०० थाल से कम न हो। उस सल्तनत पनाह की सेवा मशहदे मुकद्दस[1] तक उस अयाल्त पनाह[2] के सिपुर्द रहेगी। जब उपर्युक्त अमीर, सेवा मे पहुँचें तो रोजाना नाना प्रकार के भोजना के १२०० थाल जो शाही-भोजन के योग्य हों उस सम्मानित बादशाह के उत्कृष्ट दरबार में प्रस्तुत किये जायें। प्रत्येक अमीर अपने आतिथ्य सत्कार के दिन ९ घोडे उपहार स्वरूप भेट करे जिसमें ३ विशेष रूप से हजरत बादशाह के लिए हो, एक अमीरे मुअज्जम[3] मुहम्मद बैराम खा बहादुर[4] को और ५ अन्य प्रतिष्ठित अमीरो को, जो उनके योग्य हो, प्रदान किए जायें। सभी ९ घोडे हजरत बादशाह के समक्ष प्रस्तुत किए जायें और बता दिया जाय कि कौन-कौन घोडे सफ्रे नव्वाब के लिए है और जो घोडे पूर्व से अमीरो के लिए पृथक् कर लिये गए हो, उनके विषय मे यह बता दिया जाय कि कौन कौन से घोडे किस किस अमीर के हैं। यद्यपि यह बात कहनी उचित नही किन्तु यह अच्छा ही होगा, बुरा न होगा। जिस प्रकार भी सम्भव हो विजयी रिकाब के साथ जो सेवक हो, उन्हे प्रसन्न रक्खा जाय और उन्हे जितनी भी तसल्ली तथा जितना भी प्रोत्साहन दिया जा सकता हो दिया जाय। दुष्ट काल के कुचक्र के कारण मलिन उस समूह के हृदय को ऐसे अवसरो के लिए उचित एवं उत्तम सान्त्वना एवं प्रोत्साहन द्वारा प्रसन्न करें। इस नियम का हर समय जब तक वे हमारे पास पहुँच न जायँ, ध्यान रहे। तदुपरान्त जो कुछ उचित होगा उसका हमारी ओर से प्रबन्ध किया जायगा। भोजनोपरान्त, मिठाइयाँ, एवं पालूदा[5] जो मिश्री एवं उत्तम प्रकार से साफ की हुई शक्कर से तैयार किया गया हो, नाना प्रकार के स्वादिष्ट मुरब्बे, विशेष रिश्तये (२०९) खिताई[6] जो गुलाब, मुश्क एवं अशहबी[7] अम्बर से सुगंधित की गई हो, दरबार में ले जायें। विलायत[8] का हाकिम आतिथ्य एवं उपर्युक्त सेवाओ के उपरान्त अपनी विलायत से निश्चिन्त होकर राजधानी हिरात तक हजरत बादशाह की सेवा में साथ साथ रहे और सेवा करने में लेश-मात्र भी कसर न उठा रक्खे। जब वे उपर्युक्त विलायत[9] के १२ फरसख पर पहुँच जायें तो वह अयालत-पनाह[10] अपने किसी अनुभवी अधिकारी को, प्रिय सम्मानित पुत्र[11] की सेवा में नियुक्त कर दे

१ पवित्र मशहद। मशहद में शीओं के ८वें इमाम अली मूसी रिजा (निधन ८१८ ई०) का रौजा है। यह स्थान मशहद के नाम से इमाम के रौजे के कारण प्रसिद्ध हुआ। खुरासान का तूस नगर तथा मशहद एक ही स्थान के नाम हैं। यह खुरासान प्रान्त की राजधानी तथा नीशापुर के पूर्व में है। इब्ने बतूता ने, जिसने मशहद एवं इमाम रिजा के रौजे के दर्शन किये, मशहद का बड़ा रोचक विवरण दिया है।

२ मुहम्मद खा तकलू।

३ प्रतिष्ठित अमीर।

४ बायजीद में बहादुर के स्थान पर 'भाग्लू'।

५ फालूदा।

६ एक प्रकार की सिवैयाँ।

७ धूमर रंग का। यह अम्बर सर्वोत्तम समझा जाता है।

८ प्रदेश, राज्य।

९ हिरात।

१० मुहम्मद खा तकलू।

११ सुल्तान मुहम्मद मीर्जा।

जो नगर एवं उस पुत्र की सावधानी से सेवा करता रहे और शेष विजयी सेना नगर, विलायत एवं सीमान्ता के सैनिकों को जिनमें हज़ारा[1], निकोदरी[2] इत्यादि हो और जिनकी संख्या ठीक-ठीक ३०,००० हो लेकर उनके साथ स्वागतार्थ जाय। खेमे, सायबान, एवं आवश्यक असबाब, ऊँटों एवं खच्चरों की कितारें अपने साथ ले जाय ताकि सुसज्जित सेना हज़रत (जहाँबानी) के समक्ष प्रस्तुत हो सके। जब वह हज़रत की सेवा में पहुँचे तो कोई बात करने के पूर्व हमारी ओर से बहुत-बहुत शुभ कामनायें पहुँचाये और जिस दिन सेवा में उपस्थित हो सेना एवं शिविर के नियमानुसार पड़ाव करे। वह अयालत पनाह सेवा के लिए उद्यत रहकर, आतिथ्य की अनुमति लेकर ३ दिन तक वहीं ठहरा रहे।

प्रथम दिन उनकी समस्त सेना वालों को सम्मानित खिलअतें, जो अतलस, यज़्द के किमख्वाब, मशहद एवं काफ[3] के रेशम की बनी हों, प्रदान की जायें। सब लोगों को मख़मल के बाला पोश[4] प्रदान किए जायें। लश्कर वालों एवं सेवकों में से प्रत्येक को दो तबरेज़ी तूमान[5] दैनिक व्यय हेतु प्रदान किए जायें। नाना प्रकार के भोजनों की, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, व्यवस्था की जाय। ऐसी बादशाहाना मजलिसों का आयोजन किया जाय जिससे ज़बानें उनकी प्रशंसा किया करें और गुणगान के वाक्य लोक तथा परलोक वालों के कानों तक पहुँच जायें। उनकी सेनाओं की सविस्तार सूची हमारे उत्कृष्ट दरबार में प्रेषित की जाय। २५०० तबरेज़ी तूमान[6] जो सम्मानित सरकार की तहवील[7] से सम्बन्धित हैं, और जो राजधानी में आते हैं, लेकर आवश्यक बातों पर व्यय किए जायें। दासता एवं सेवा के लिए जो बात अधिक से अधिक आवश्यक हो उसे पूरे उत्साह से सम्पन्न किया जाय। उपर्युक्त मंजिल से नगर की यात्रा में चार दिन लगाये जाये। प्रत्येक दिन आतिथ्य हेतु प्रथम दिन के समान भोजन का प्रबन्ध किया जाय। आतिथ्य हेतु उस अयालत पनाह की उत्कृष्ट संतान सेवकों के समान सेवा हेतु कटिबद्ध रहे और पूर्ण रूप से शिष्टाचार प्रदर्शित करते हुए सेवा की जाय। इस बात के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए कि इतना महान् पादशाह जो दैवी उपहारों में से एक उपहार है, हमारा अतिथि हुआ है, सेवा एवं परिचर्या के विषय में अधिक से अधिक प्रबन्ध करते रहें और इसमें कोई कसर न उठा रखें कारण कि

१ हज़ारा के सम्बन्ध में देखिये **बाबर नामा**, पृ० १३, १८, २३, २५, २८, २९, ५०-५१, ६०, ६६, ६९।
२ सम्भवतः **बाबर नामा** का 'निकदोरी' (पृ० १०, १३, १८, ५८० ५८१)।
३ बाखर्ज़ (जाम के दक्षिण में) के दक्षिण-पश्चिम में जो १०वीं शती ई० में किशमिश तथा अनार के लिए बड़ा प्रसिद्ध था।
४ लबादे।
५ एक सोने का सिक्का जो वोजेंस्टन के अनुसार ८ शिलिंग का होता था किन्तु बेवरिज के अनुसार उसका मूल्य और अधिक होता होगा। शाह अब्बास सफ़वी प्रथम के समय के तूमान का मूल्य ३ पौंड के बराबर होता था। ब्लाकमैन के अनुसार जहाँगीर ने तूमान को ३३ रुपये के बराबर बताया है किन्तु सैनिकों को चाँदी के सिक्के दिये गये होंगे। (बेवरिज, पृ० ४२५)।
६ बायज़ीद में २५०० है; (बायज़ीद, पृ० २१)। ब्रिटिश म्युज़ियम की एक हस्तलिपि (Or 4678) में १०,००० [illegible] **अफ़ज़लुत्तवारीख़** में भी १०,०००।
७ ख़ज़ाना से तात्पर्य है।

जितना अधिक परिश्रम इस विषय में होगा और जितनी दौड़ धूप इस सम्बन्ध में की जायगी उतना ही अधिक मैं प्रसन्न हूँगा।

नगर में पहुँचने के एक दिन पूर्व ईदगाह के उद्यान में स्थान[1] के सामने ऐसे खेमे लगवाये जायें जिनके भीतर लाल अतलस, बीच में बारीक मलमल और ऊपर इस्फहानी मलमल, जिनके विषय में कहा जाता है कि वे आजकल तैयार हो रही हैं, लगी हो। इस बात के प्रति (२१०) पूर्ण रूप से सावधान रहा जाय कि जिस स्थान पर भी हज़रत (जहाँबानी) प्रसन्न हो सकें और फूलों से लदी हुई जिस भूमि पर अथवा जल-वायु, सौन्दर्य एवं कोमलता के कारण जो स्थान भी उन्हें पसन्द आए वहीं उनकी इच्छा का ध्यान रखते हुए, उनकी सेवा हेतु शिष्टाचार के हाथ सेवकों के समान सीने पर बाँधकर अग्रसर हो और निवेदन किया जाय कि, "यह शिविर, लश्कर एवं असबाब भाग्यशाली नव्वाब की भेंट है।" वह स्वयं मार्ग में तथा प्रस्थान के समय क्षण-क्षण पर उनके उत्कृष्ट हृदय को सान्त्वना से परिपूर्ण अपनी बात-चीत से, प्रसन्न करता रहे।

उपर्युक्त मंज़िल से एक दिन पूर्व जब नगर में प्रवेश हो, वह स्वयं अनुमति लेकर, पुत्र की सेवा में रवाना हो जाय और प्रातःकाल उस सम्मानित प्रिय पुत्र को स्वागतार्थ महल के बाहर ले जायें। जो खिलअत हमने उस पुत्र को पारसाल नवरोज़[2] के समय प्रेषित की थी, वह उसे पहनाई जाय और तवलू अबीमाव[3] के किसी सफ़ेद दाढ़ी वाले को, जो उस अयालत-पनाह का विश्वास-पात्र एवं उसकी दृष्टि में योग्य हो, उपर्युक्त राजधानी में छोड़कर पुत्र को सवार करे। नगर की ओर प्रस्थान के समय अयालत-पनाह, कज़ाक सुल्तान को नव्वाब[4] की सेवा में रक्खे। खेमे, ऊँट तथा घोड़े प्रस्तुत किए जायें ताकि जब दूसरे दिन भाग्यशाली नव्वाब सवार हो, तो शिविर भी रवाना हो जाय। अयालत पनाह उनका मार्ग दर्शक बने। जब उपर्युक्त पुत्र नगर के बाहर निकले तो इस बात की चेतावनी दे दी जाय कि समस्त सेना वाले निश्चित नियमानुसार सवार होकर स्वागतार्थ बढ़ें। जब वे उस उत्कृष्ट पादशाह के समीप पहुँच जायें और उनके मध्य में एक बाण के पहुँचने की दूरी रह जाय तो वह अयालत-पनाह अग्रसर होकर निवेदन करे कि पादशाह घोड़े से न उतरें[5]। यदि वे स्वीकार कर लें तो वह तत्काल वापस चला जाय और प्रिय पुत्र को घोड़े

१ वृक्षों से आच्छादित भाग।

२ ईरानियों का प्रसिद्ध त्योहार जो २१ मार्च के लगभग होता है। इस त्योहार के समय बड़ा आनन्द-मंगल मनाया जाता है और कई दिन तक जश्न होते रहते हैं। ईरानियों के पंचांग का नया वर्ष भी इसी दिन से प्रारम्भ होता है।

३ क़बीला।

४ हुमायूँ।

५ अफ़ज़लुत्तवारीख़ में इस विषय में इस प्रकार लिखा गया है —

"जिस दिन वे राजधानी हिरात में प्रविष्ट होने वाले हों तो योग्य भाग्यशाली पुत्र पुले मालान तक स्वागतार्थ जाय। भेंट के समय वह अयालत-पनाह आगे बढ़कर सौभाग्यशाली शाहज़ादे की ओर से निवेदन करे कि जब शाहज़ादा घोड़े से उतरे तो वे इस कारण कि पिता एवं चाचा के समान हैं, घोड़े से न उतरें। गूरगानी राजसिंहासन के उत्तराधिकारी के हाथों का जब शाहज़ादा चुम्बन कर ले तो उनसे अनुमति लेकर शाहज़ादे को सवार करें। हज़रते आला (?) की ओर से उनके आगमन पर बधाई देकर हमारी (नव्वाब हुमायूँ की) कृपाओं के

से उतारकर शीघ्रातिशीघ्र रवाना हो और उस सुलेमान सरीखे दरबार वाले पादशाह के जघो एव रिकाब का चुम्बन कराये तथा सेवा एव सम्मान प्रदर्शित करने के जो नियम हैं उनका प्रदर्शन कराये। यदि भाग्यशाली नव्वाब स्वीकार न करें और पैदल हो जायें तो सर्वप्रथम वह उपर्युक्त पुत्र को पैदल कराये और अभिवादन कराये। सब से पहले हज़रत (पादशाह) को सवार कराये और पादशाह के हाथो का चुम्बन कराने के उपरान्त पुत्र को सवार कराये और नियमानुसार सवार होकर अपने शिविर एव मजिल तथा निश्चित स्थान की ओर रवाना हो। वह अयालत-पनाह एव स्वय पुत्र के निकट रहते हुए पादशाह की सेवा करे। यदि पादशाह किसी बात अथवा किसी घटना के विषय में सम्मानित पुत्र से कोई प्रश्न करे और वह पुत्र सकोचवश उचित उत्तर न दे सके तो वह अयालत पनाह उचित उत्तर दे।

उपर्युक्त मजिल पर वह पुत्र, पादशाह का इस प्रकार आतिथ्य करे—नाश्ते[१] के समय नाना प्रकार के भोजनो के ३०० थाल अल्पाहार के रूप में स्वर्ग रूपी दरबार में प्रस्तुत किए जायें। दोनो नमाज़ो के मध्य में नाना प्रकार के भोजनो के १२०० थाल लब्री थालो में, जो मुहम्मद खानी के नाम से प्रसिद्ध हैं, लगाकर प्रस्तुत किए जायें। इनके अतिरिक्त चीनी, सोने एव चाँदी के (२११) थाल जिनपर सोने एव चाँदी के ढक्कन हो, लाये जायें। तदुपरान्त स्वादिष्ट मुरब्बे (जो सम्भव हो) हलवे एव फालूदे प्रस्तुत किए जायें। इसके पश्चात् उस भाग्यशाली पुत्र की अश्व-शाला से सात उत्तम घोड़े पृथक् किए जाये और उन्हे मखमल एव अतलस की झूलें पहनाई जायें। उनपर बारीक मलमल के रेशम से बुने हुए तग लगाये जायें, सफेद तग लाल मखमल की झूल पर, तथा काला तग हरे मखमल की झूल पर लगाया जाय। यह भी आवश्यक है कि हाफिज साबिर काक, मौलाना कासिम कानूनी[२], उस्ताद शाह मुहम्मद सुरनाई[३], हाफिज दोस्त मुहम्मद खाफी, उस्ताद यूसुफ मौदूद एव अन्य प्रसिद्ध सगीतज्ञ तथा वादक जो नगर में हो सर्वदा उपस्थित रहें और जब पादशाह चाहे तो अविलम्ब सगीत एव वादन द्वारा उन्हें प्रसन्न करें। दूर अथवा निकट का जो भी व्यक्ति उस दरबार के योग्य हो, वह उपस्थित रहे ताकि जिस समय उसे बुलाया जाय वह पहुँच जाय और उनके समय को यथा सम्भव प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत कराये।

इसके अतिरिक्त शुकार, बाज, चरग, बाशह, शाहीन, बहरी[४] तथा जो कुछ उस पुत्र एव उस अयालत पनाह और उसकी सम्मानित सतान के पास हो, उपहार स्वरूप भेंट करें। उनके समस्त सेवको को नाना प्रकार की विभिन्न रगों की रेशमी खिलअतें—नाना प्रकार की मखमल

आश्वासन द्वारा उनके मलीन हृदय का प्रसन्न करें। ईरान के राज्य की मूर्चो को अर्पित करें और खिलाफ़त के मुकुट के उस मोती के चरणों में डाल दें। जब भाग्यशाली पुत्र को सवार होने की अनुमति मिल जाय तो शाहजादे के घोड़े का सिर उस सरीखे सम्मान वाले नव्वाब की रिकाब के बराबर और उस अयालत पनाह के घोड़े का सिर शाहजादे के घोड़े की रिकाब के बराबर रहे।"

१ प्रात लगभग ९ बजे।

२ कानून बजाने वाले। कानून, वीणा के प्रकार का बाजा होता है।

३ शहनाई के समान एक बाजा।

४ पक्षियों का शिकार करने वाले विभिन्न प्रकार के पक्षी।

की, तकमा कला बतून, तिला बाफ[१]—उनकी श्रेणी अनुसार प्रदान की जायें। जब वे अपनी मंज़िल पर पहुँचें तो उनके सेवक उस सम्मानित पुत्र के समक्ष प्रस्तुत किए जायें और वह उस उदारता का, जो उसे अपने पूर्वजों द्वारा प्राप्त हुई है, प्रदर्शन करते हुए उनमें से प्रत्येक को अलग-अलग खिलअत एवं घोड़े उसकी श्रेणी के अनुसार प्रदान करे। तीन तूमान से अधिक इनाम में न दिए जायें। रेशम के थानों के १२ तक़ूज़[२], जिनमें मख़मल, अतलस, फिरंग तथा यज़्द का किमख़्वाब, बाफ्ता शामी[३] जो अत्योत्तम हों सम्मिलित हों। ३०० सोने के तूमान ३० थैलियों में रखकर उपर्युक्त कपड़े सहित तैयार रक्खे जायें। सेना के प्रत्येक व्यक्ति को तीन तबरेज़ी तूमान, जो ६०० शाही[४] के बराबर होते हैं, प्रदान किए जायें। तीन दिन तक ख़्याबान एवं कारीज़ गाह[५] की सैर होती रहे। इन तीन दिनों में नगर के चार बाग़[६] के द्वार से जो शाही मंज़िल है, ख़्याबान तक जो ईदगाह के उद्यान में है नाना प्रकार के कारीगर उचित नियम से चहार ताक़बन्दी[७] करें। प्रत्येक कारीगर को एक-एक अमीर के साथ कर दिया जाय ताकि एक दूसरे से प्रतियोगिता के कारण प्रत्येक कला-कौशल का उत्तम रूप से प्रदर्शन हो।

सबसे उचित तो यह है कि जब पादशाह उस भूभाग को अपने सम्मानित व्यक्तित्व द्वारा सुशोभित करें और सर्वप्रथम उस नगर में आयें जो संसार वालों के नेत्रों का प्रकाश है तो पहले पहल उनकी कीमिया[८] सरीखी दृष्टि के समक्ष उत्तम स्वभाव एवं मीठी वाणी के उन लोगों को जो नगर में हों प्रस्तुत किया जाय ताकि उन्हें प्रसन्नता प्राप्त हो। तीसरे दिन जब हम चहार ताक़, नगर के ख़्याबान एवं चहार बाग़ को सजाने से मुक्ति प्राप्त हो जाय, तो (२१२) उद्घोषक द्वारा नगर, मुहल्ला और आसपास के स्थानों के लोगों को जो नगर के निकट हैं, घोषणा करा दी जाय कि समस्त स्त्री पुरुष चौथे दिन प्रातःकाल ख़्याबान में उपस्थित हों। प्रत्येक दुकान तथा बाज़ार में क़ालीन एवं फ़र्श सजा दिये जायें और वहाँ स्त्रियाँ एवं बेकायें[९] बैठ जायें। नगर की प्रथानुसार स्त्रियाँ आने जाने वालों के प्रति मधुर वाणी से मधुर व्यवहार करें। प्रत्येक मुहल्ले तथा गली से ऐसे संगीतज्ञ निकलते रहें, जो संसार में अद्वितीय हों। समस्त लोगों को आदेश दे दिया जाय कि वे स्वागत् करें। तदुपरान्त पादशाह से आदरपूर्वक कहा जाय कि वे अपने प्रताप का पाँव सौभाग्य की रिकाब में रखकर सवार हों। पुनः, हज़रत (जहाँबानी) के साथ-साथ

१ रेशमी एवं सोने के तार की कढ़ाई तथा बुनाई के विभिन्न प्रकार के कपड़े।
२ तक़ूज़ में ९ की संख्या में चीज़ें होती हैं। ९ की शुभ संख्या के कारण बादशाहों को ९ ९ की संख्या में चीज़ें भेंट की जाती थीं।
३ शाम (सीरिया) के कपड़े।
४ शाही आधी पेनी के लगभग होता है अतः तूमान को यदि पौंड के बराबर समझा जाय तो तीन तूमान ६०० शाही के बराबर होंगे। (बेवरिज, पृ० ४२८)।
५ भीतरी जल धाराओं के स्थान।
६ शाही बाग़।
७ सम्भवतः चार खम्भों द्वारा सजावट का काम।
८ कीमिया रसायन, सोना चाँदी बनाने की कला।
९ सम्मानित महिलायें।

इस प्रकार यात्रा करें कि हजरत जहाँबानी के घोड़े का सिर एवं गरदन आगे आगे रहे। वह अयालत पनाह स्वयं उनके पीछे-पीछे, निकट चलता रहे ताकि (हजरत जहाँबानी) भवनों, महलों एवं उद्यानों इत्यादि के विषय में जो प्रश्न करें उसका वह उचित उत्तर दे सके। जब वे नगर में प्रविष्ट हो जायें तो चहार बाग की सैर करें। वे उस वाटिका में, जो हमारे निवास के समय उस पवित्र कस्बे में इस आशय से बनवाई गई थी कि हम वहाँ निवास करें, तथा पढ़े लिखें और जो अब बागे शाही के नाम से प्रसिद्ध है, उतारे जायें। चहार बाग के हम्माम[1] एवं अन्य हम्मामों को साफ और स्वच्छ कराया जाय। उन्हें गुलाब एवं कस्तूरी द्वारा सुगन्धित किया जाय ताकि जब उनकी इच्छा हो, वे अपने शरीर को आराम दे सकें।

प्रथम दिन पुत्र अत्यधिक भोजन द्वारा आतिथ्य करे। जब वे आराम से सो जायें[2] तो वह अयालत पनाह स्वयं इस प्रकार अतिथि-सत्कार करे जैसा कि उल्लेख किया जायगा। जब वे नगर में प्रविष्ट हो जायें तो वह उसी दिन समाचार प्रेषित करे और उसे सम्मानित दरबार में भेज दे। ऐसी व्यवस्था की जाय कि राजधानी हिरात का कलान्तर[3] किसी अनुभवी लेखक को इस आशय से नियुक्त कर दे कि उस दिन से लेकर जब से कि ५०० आदमी स्वागत् करेंगे उस दिन तक का जब वे नगर में प्रविष्ट हो सविस्तार रोज़नामचा[4] उस अयालत-पनाह की मुहर सहित भेजा जाय और सभी घटनायें एवं अच्छी बुरी बातें जो दरबार में घटे लिखकर, विश्वास-पात्र द्वारा सम्मानित दरबार में भेज दे ताकि उन सब बातों की हमें सूचना रहे।

वह अयालत-पनाह इस प्रकार अतिथि सत्कार करे—भोजन, मिठाइयों, शरबत एवं मेवों के ३,००० थाल तैयार किए जायें। आवश्यक यराक[5] की इस प्रकार व्यवस्था की जाय—सर्वप्रथम ५० खेमे, २० शामियाने, असबाव रखने के बड़े खेमे जो कहा जाता है कि विशेष रूप से उसके[6] लिए तैयार किए गए हैं, १२ जोड़ कालीन १२ हाथ × १० हाथ, सात जोड़ कालीन ५ हाथ के, (२१३) ९ कितार ऊँटनियाँ, २५० चीनी के छोटे-बड़े थाल, अन्य थाल एवं देग, सफेद कलई किए

१ स्नान, विशेष रूप से गरम जल से स्नान का कमरा। बाबर ने हिन्दुस्तान में भी अनेक हम्मामों का निर्माण कराया। बाबर नामा में इनका बड़े विस्तार से उल्लेख हुआ है। (बाबर नामा, पृ० २१०)।

२ उपर्युक्त पत्र में निम्नांकित वाक्य छूट गया है। दोनों वाक्य अयालत-पनाह से प्रारम्भ होते हैं। अतः प्रथम वाक्य का छूट जाना आश्चर्यजनक नहीं। बायज़ीद द्वारा उद्धृत पत्र में छूटा हुआ वाक्य इस प्रकार है—जब वे आराम से सो जायें तो वह अयालत-पनाह प्रतिष्ठित अमीरों को अपने पास बुलाकर यह आदेश दे कि उनमें से प्रत्येक एक दिन उस पादशाह की, जो ईश्वर की अनुकम्पा है, किसी न किसी बाग में मेहमानी का प्रबन्ध करेगा। दो अन्य दिन उपर्युक्त पुत्र आतिथ्य करे। तदुपरान्त वह अयालत-पनाह स्वयं इस प्रकार. . . .।
(बायज़ीद, पृ० २९)।

३ मुख्य प्रबन्धक। बेवरिज ने इस शब्द का अनुवाद 'मजिस्ट्रेट' किया है।

४ दैनन्दिनी, डायरी।

५ फ़रनीचर।

६ शाह तहमास्प के लिये।

ढक्कनो सहित, २ तकूज़ खच्चरो की कितार अथाल्त-पनाह स्वय अपनी ओर से अतिथि सत्कार के रूप में भेंट करे।

अमीरो को आदेश दे दिया जाय कि वे इस प्रकार आतिथ्य करे —भोजन, हलवे, फालूदे १५०० थाल, ३ घोडे, एक कितार ऊँट, एक कितार खच्चर जिन्हे उस अयाल्त पनाह ने स्वय देख कर पसन्द कर लिया हो, भेंट करें। गूरियान, फूशज, तथा करख़ के हाकिम अपनी-अपनी विलायत में आतिथ्य का प्रबन्ध करें। बाखर्ज का हाकिम, जाम में अतिथि-सत्कार करे। ख़ाफ, तरशीज़ जावहरु एव मुहब्वलात के हाकिम, सराय फरहाद के महाल में, जो मशहद से ५ फरसग पर है, आतिथ्य का प्रबन्ध करें।[1]

मार्ग में हुमायू का आतिथ्य

जब हज़रत जहाँबानी जन्नत-आशियानी की सवारी फरह[2] के समीप पहुँची तो शाह का राजदूत, हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी के समाचारवाहक के साथ पहुँचा और यह बात ज्ञात हुई कि ईरान का वाली उनके आगमन को बहुत बडा आशीर्वाद समझता है और इससे बडा प्रसन्न है। हज़रत जहाँबानी के लिए, जो सौजन्य की खान थे, एराक की ओर प्रस्थान करने एव अपने सत्य के प्रेमी मित्र के हृदय को अपने हाथ में लेने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न रह गया अत वे सकल्प के कदम सौभाग्य की रिकाब में जमाकर पक्के इरादे से हिरात की ओर रवाना हुए।

१ इस पत्र का अन्तिम भाग अकबरनामा/तवारीख में अधिक स्पष्ट एव सक्षिप्त है। इसके अतिरिक्त इस पत्र में कुछ ऐसी बातें है जो उपर्युक्त पत्र में नहीं। "अमीर लोग अपने आतिथ्य-सत्कार की बारी के दिन तीन राम तथा पाच राम घोडे अन्य उत्तम वस्तुओं सहित उपहार स्वरूप भेंट करें। जब वे इस ओर प्रस्थान करना चाहें तो उनकी सरकार के ब्यूतात के दराफ मशहदे मुकद्दस तक पहुँचाये जायें। १००० तूमान नक़द, ५०० खिलाये ज़रगार, किमख्वाब, मखमल, २५० नाना प्रकार के रगों के सोब (एक प्रकार की वास्कट) १०० एक रग के मखमल के ताक (एक प्रकार का वस्त्र) २०० लाल रेशमी कपडे एव किमख्वाब के थान का प्रबन्ध करके उनकी सवारी के दिन भेंट किये जायें। भाग्यशाली पुत्र को उनके साथ एक मज़िल तक नगर से बाहर ले जाया जाय और वह तीन फरसख तक उनकी सेवा में उनके साथ जाय। (तदुपरान्त) भाग्यशाली पुत्र विदा होकर लौट आये। वह अयालत पनाह स्वय सुसज्जित सेना सहित चार मज़िल तक साथ जाय, तदुपरान्त विदा हो। यदि उदारता का समुद्र बादशाह उसे खिलअत पहनाये तो उसे पहिनकर अपना सौभाग्य समझे। इस आदेश के प्राप्त होने के उपरान्त दैनिक विवरण राजसिंहासन के पायों में भेजता रहे। करावलों की मार्गों की व्यवस्था एव उनके शिविर की रक्षा हेतु नियुक्त करके वह लौट जाय। आस-पास के अमीरों के पास अन्य फरमान भेजा जायगा कि जो कोई सेवा सम्पन्न करे उसे चाहिये कि प्रारम्भ से अन्त तक १०,००० तूमान आकाश की रिकाब वाले सफल नव्वाब की सरकार हेतु व्यय करे। भाग्यशाली पुत्र के परवाने इस फरमान की नकल के साथ खुरासान प्रदेश के अमीरों के पास भेज दिये जायें ताकि वे भी सम्मानित आदेश से अवगत हो जायें और आतिथ्य-सत्कार की सामग्री एव पेशकश जो भाग्यशाली नव्वाब के लिये उपयुक्त हों, प्रस्तुत करे और जो स्थान मार्ग के निकट हो वहाँ वाले स्वय उपस्थित रहें और गुरगानी राजसिंहासन की उस शोभा के सम्मान के अनुकूल आतिथ्य-सत्कार करें और उत्तम एव बहुमूल्य घोडे तथा ऊँट भेंट करें। राजधानी हिरात के वज़ीरों एव कलान्तरों को चेतावनी दे दी जाय कि वे राज्यों को विजय करने वाले नव्वाब के आतिथ्य-सत्कार एव पेशकश में जो कुछ व्यय करें उसकी व्याख्या 'अलफ़ा' में न करें।"

२ हिरात के दक्षिण में १६४ मील पर सीस्तान में। अब यह अफगानिस्तान में है। यद्यपि यह नगर अब नष्ट हो चुका है किन्तु अनेक व्यापारिक मार्ग यहा मिलते हैं।

इस क्षेत्र मे वे जिस मंजिल पर भी पड़ाव करते वहाँ खुरासान का कोई न कोई प्रतिष्ठित ए सम्मानित व्यक्ति आकर स्वागत् करता और पवित्र दरबार के विश्वासपात्रों के समान व्यवहार करता पादशाही सवारी के आगमन के समाचार ने उस प्रदेश के निवासियों के लिए प्रसन्नता के द्वार खो दिये और अधिकांश कस्बो के निवासी उदाहरणार्थ जाम[1], तुरबत[2], सरख्स[3] एवं अस्फरायन[4] वा हिरात पहुँचकर उत्कृष्ट सवारी की प्रतीक्षा करने लगे।

हुमायूं का जियारतगाह पहुँचना

जब तातार सुलतान[5] ने दूतो तथा खुरासान के गण्यमान्य व्यक्तियो ने, जो उन स्वागतार्थ गए थे, मुहम्मद खा को सूचना दी कि सम्मानित सवारी जियारतगाह[6] पहुँच ग है तो मुहम्मद खा उत्कृष्ट अमीरो उदाहरणार्थ वैस सुल्तान, शाह कुली सुलतान एव बड़े-ब आलिमो उदाहरणार्थ मीर मुरतजा सद्र, मीर हुसेन करबलाई[7] एव समस्त सम्मानित लोगो तथ सर्वसाधारण सहित भाग्यशाली सवारी के स्वागतार्थ पहुँचे और पुले मालान[8] पर, जो हिरात की प्रसि सैरगाह है, उत्कृष्ट रिकाब के चुम्बन द्वारा सम्मानित हुए और शाह की ओर से शुभ कामनायें तथ सलाम पहुँचाया और शाह की इच्छा का उल्लेख करते हुए उसने जो आदर-सम्मान, जो महानत के चिह्न है, प्रदर्शित किए थे, उनका उल्लेख किया एव सेवायें की। यह आदेश दे दिया गय था कि मालान के पुल से जहानआरा[9] नामक उद्यान तक मार्गों की सफाई कराके छिड़काव होता र और नगर के बुजुर्ग एव शरीफ लोग दोनों ओर से आकर रोजाना प्रतीक्षा करते रहे।

बाग जहानआरा में पड़ाव

जब पादशाही पताकाएँ मंजिल[10] पर पहुँची तो सुल्तान मुहम्मद मीर्जा स्वागत हेतु रवान हुआ और उसने निष्ठा एव आदर-सम्मान प्रदर्शित किया। भाग्यशाली शाहजादे सुल्तान मुहम्म मीर्जा एव अन्य सम्मानित अमीरो ने स्वागत् के आशीर्वाद द्वारा सम्मानित होकर ऐश्वर्य ए (२१४) वैभव के नियमो का पालन किया। जियारतगाह से मालान के पुल और वहाँ से जहानआर

१ हिरात एवं मशहद के मार्ग के मध्य में।
२ सम्भवत तुरबते हैदरी, मशहद के दक्षिण में।
३ सम्भवतः सरख्स, हिरात के उत्तर-पश्चिम में उत्तर की ओर, मर्व के मार्ग में।
४ नीशापुर के उत्तर-पश्चिम में, जुवेन के दक्षिण में। यह मेहरजान के नाम से भी प्रसिद्ध है।
५ अकबरतुत्तवारीख में 'तातार बेग'।
६ सूफियों एवं आलिमों के इस प्रसिद्ध नगर के समीप बहुत से रौजे हैं अत किस जियारतगाह का उल्लेख है निश्चय-पूर्वक कहना कठिन है।
७ करबला के।
८ पुले मालान का उल्लेख उस पत्र में भी जो **अफजलुत्तवारीख** में उद्धृत हुआ है, किया गया है। मालान नदी पू से आती हुई हिरात से गुजरती है। यह नगर से लगभग ४ मील दूर है। **बाबर नामा** में भी इसका उल्लेख उ स्थानों के प्रसग में हुआ है जिनकी बाबर ने सैर की। (**बाबर नामा**, पृ० ६४)।
९ हिरात का प्रसिद्ध बाग। बाबर ने बदी उज्जमान मीर्जा से इसी बाग में भेंट की थी। (**बाबर नामा**, पृ० ६१)।
१० सम्भवत. दरकरा मंजिल पर।

नामक उद्यान तक, जो ३-४ फरसख की दूरी पर है, समस्त मैदान एवं टीले नगर तथा कस्बा के लोगों से, जो दर्शनार्थ आये थे, भरे हुए थे। लोगों की भीड़ इस प्रकार थी, जैसी ईद तथा नवरोज़ में भी विरले ही होती होगी। १ ज़ीकाद ९५० हि० (२६ जनवरी १५४४ ई०) को हिरात के जहान आरा नामक उद्यान में उनका सम्मानित पड़ाव हुआ। मुहम्मद खाँ ने पादशाहाना जश्न का आयोजन करके उत्कृष्ट उपहार प्रस्तुत किये। प्रथम सभा में साबिर काक ने, जो खुरासान एवं एराक़ में संगीतज्ञों में अद्वितीय था, सेहगाह मुकाम[1] में अमीर शाही की गज़ल इस प्रकार गाई कि वज्द एवं हाल वालों[2] के अस्तित्व के स्तम्भ काँप उठे। निस्सन्देह उसने बड़े उचित रूप से एवं मार्मिक स्वर में संगीत प्रस्तुत किया। उसका प्रथम शेर इस प्रकार है —

शेर

'वह निवास-स्थान बधाई का पात्र है जहाँ ऐसा चाँद आया हो,
वह संसार शुभ है जहाँ ऐसा बादशाह हो।'[3]

जब वह इस शेर पर पहुँचा कि

शेर

'सांसारिक कष्ट एवं आराम पर न तो दुखी हो और न प्रसन्न,
कारण कि संसार की अवस्था कभी इस प्रकार होती है और कभी उस प्रकार।'[4]

हज़रत जहाँबानी बड़े प्रभावित हुए और रोने लगे तथा उसकी आशा के दामन में इनाम डाल दिया।

हिरात की सैर

क्योंकि हेरी[5] एवं उसके सैर के स्थान उन्हें बड़े पसन्द आए और नवरोज़ उत्सव भी निकट आ गया था अतः वे कुछ दिन तक वहाँ ठहरे रहे। जब कभी हज़रत (जहाँबानी) सैर के लिए प्रस्थान करते थे तो मुहम्मद खाँ सेवा में उपस्थित रहता था और उचित रूप से शिष्टाचार प्रदर्शित किया करता था। उनके दोनों ओर सोना न्योछावर करता था। रोज़ाना किसी न किसी प्रसिद्ध स्थान की

१ सेहगाह स्वर। सेहगाह किसी स्थान का नाम नहीं अपितु स्वर का नाम है।
२ सूफ़ियों से तात्पर्य है जो ईश्वर की प्रशंसा के संगीत सुनकर मूर्छित हो जाते हैं।
३ मुबारक मंज़िले कें आँ खाना रा माहे चुनीं बाशद,
हुमायूँ किश्वरे कें आँ अरसा रा शाहे चुनीं बाशद।
مبارک منزلی کاں خانہ را ماہی چنیں باشد
ہمایوں کشوری کاں عرصہ را شاہی چنیں باشد
४ ज रंजो राहते गेती मरंजाँ दिल मशौ खुर्रम,
कें आईने जहाँ गाहे चुनाँ गाहे चुनीं बाशद।
ز رنج و راحت گیتی مرنجاں دل مشو خرم
کہ آئین جہاں گاہی چناں گاہی چنیں باشد
५ हिरात।

सैर होती थी और हर समय आनन्द-मंगल की नई महफ़िलें आयोजित होती थी। सभाओं का निश्चित नियमानुसार प्रबन्ध किया जाता था। कभी हृदय को प्रसन्न करने के लिए कारीजगाह[1] में भोग-विलास की सभायें आयोजित होती और कभी बागे मुराद में। इसी प्रकार बागे ख्याबान, बागे जागान, तथा बागे सफ़ेद में आनन्द-मंगल मनाया जाता[2] और हर वाटिका में हृदयग्राही गोष्ठियाँ आयोजित होती। उन्ही दिनों में बड़े बड़े वलियों[3] के मकबरो विशेष रूप से हिरात के पीर ख्वाजा अब्दुल्लाह् अनसारी[4] (ईश्वर उनकी कब्र को पवित्र बनाये) की कब्र[5] के दर्शन किए। ईश्वर से लौ लगाये हुए एकान्तवासियो, योग्य बुजुर्गो एवं निष्ठावान् उच्च स्वभाव वालों, समकालीन प्रतिभाशालियों एवं प्रतिष्ठित विद्वानो को उनकी गोष्ठी द्वारा लाभ प्राप्त होता रहता था।

जाम की ओर हुमायूँ का प्रस्थान

जब नवरोज का जश्न समाप्त हो गया तथा आनन्दवर्धक स्थानो की सैर हो चुकी तो वे जाम के मार्ग से पवित्र मशहद की ओर रवाना हुए। उस दिन सीस्तान का हाकिम अहमद सुल्तान, जो सर्वदा निष्ठापूर्वक सेवा हेतु उपस्थित रहता था, पादशाही कृपा एवं दया का पात्र होकर अपनी विलायत के लिए विदा हो गया। इसी वर्ष की ५ जिलहिज्जा[6] (२९ फरवरी १५४४ ई०) (२१५) को जाम पहुँचकर उन्होने हज़रत जिन्दा पील अहमद जाम को कब्र के दर्शन किए।

हुमायूँ का मशहद पहुँचना

जब वैभवशाली पड़ाव मशहद के समीप हुआ तो शाह कुली सुल्तान इस्तजलू, जो उस क्षेत्र का वाली था, प्रतिष्ठित सैयिदो सहित स्वागत करके सम्मानित हुआ और शिष्टतापूर्वक सेवा की। १५ मुहर्रम ९५१ हि० (८ अप्रैल १५४४ ई०) को वे मशहदे मुकद्दस[7] में पहुँचकर इमाम रिज़ा (ईश्वर का आशीर्वाद उनपर हो) के रौज़े के दर्शन द्वारा सम्मानित हुए। कुछ दिन तक वे उस उत्कृष्ट भवन के समीप ठहरे रहे। वहाँ से वे नीशापुर[8] की ओर रवाना हुए।

१ भीतरी जल-धारा के प्रदेश।

२ इनके अतिरिक्त बहुत से उद्यानों एवं आकर्षक स्थानों की सूची बाबर ने दी है जिनकी उसने सैर की। सम्भवत हुमायूँ अपने पिता के ग्रन्थ से भी प्रभावित होकर बहुत से स्थानों पर गया होगा। (**बाबर नामा**, पृ० ६४)।

३ सन्तों।

४ शेख अबू इस्माईल, ख्वाजा अब्दुल्लाह अनसारी का जन्म हिरात में मई १००६ ई० में हुआ। वे नक्शबन्दी सिलसिले के प्रसिद्ध शेख हुये हैं। उनकी मृत्यु जुलाई १०८८ ई० में हुई।

५ उनका मकबरा हिरात से उत्तर में लगभग २ मील पर है।

६ यह तिथि भी ठीक नहीं। अबुलफ़ज़्ल ने लिखा है कि हुमायूँ नवरोज के उत्सव के बाद हिरात से रवाना हुआ। नवरोज उत्सव २१ मार्च के लगभग पड़ता है अत २९ फरवरी को प्रस्थान करने की कोई सम्भावना नहीं। इस प्रकार इस तिथि को ५ मुहर्रम (२९ मार्च १५४४ ई०) होना चाहिये। आगे चलकर अबुलफ़ज़्ल ने लिखा है कि हुमायूँ १५ मुहर्रम ९५१ हि० (८ अप्रैल १५४४ ई०) को मशहद पहुँचा। अत हिरात पहुँचने की तिथि ५ जिलहिज्जा के स्थान पर ५ मुहर्रम होना चाहिये।

७ पवित्र मशहद।

८ नीशापुर खुरासान के चार प्रसिद्ध नगरों (नीशापुर, मर्व, हिरात तथा बल्ख) में से एक है। यह ३६°१२' उत्तर

नीशापुर, सब्जवार तथा दामगान पहुँचना

वहाँ का हाकिम शम्सुद्दीन अली सुल्तान उस स्थान के छोटे-बडे लोगों को लेकर स्वागतार्थ पहुँचा और निष्ठा-पूर्वक सेवा-भाव एव दासता प्रदर्शित करके सम्मानित हुआ। हज़रत जहाँबानी ने फीरोज़े की खान का, जो उस क्षेत्र मे है, निरीक्षण किया। वहाँ से सब्जवार[1] और फिर वहाँ से वे दामगान[2] पहुँचे। वहाँ की आश्चर्यजनक चीजो मे एक झरना है जिसमें प्राचीन काल से एक जादू का प्रदर्शन होता आया है जो इस प्रकार है जब उसमें कोई गन्दी वस्तु डाल दी जाती है तो हवा में तूफान उठने लगता है और आँधी एव धूल के तूफान से अधकार छा जाता है। इसकी भी उन्होने शिक्षा की दृष्टि से परीक्षा ली। ईश्वर के कारखाने मे न जाने कितनी चीजो में ऐसी विशेषताएँ निहित है, जिनका समझना मनुष्य की बुद्धि एव कल्पना के बाहर[3] हैं।

बिस्ताम एव सिमनान की ओर पहुँचना

वे दामगान से बिस्ताम[4] की ओर रवाना हुए। क्योकि बहरे तामी[5] शेख बायजीद बिस्तामी[6] (ईश्वर उनकी कब्र को पवित्र बनाये) का रौज़ा मार्ग मे न था अत. वे उसके दर्शनार्थ रवाना हुए। वहाँ से उन्होने सिमनान[7] की ओर प्रस्थान किया और सूफियाबाद[8] में, जहाँ शेख अलाउद्दौला सिमनानी[9] का मकबरा है, पडाव किया।

मार्ग में सूफियों को जियारत

हज़रत जहाँबानी चाहे कही यात्रा करते होते और चाहे कही ठहरे होते उनकी यह प्रथा

तथा ३८० ४०' पूर्व में स्थित है। चिगीज़ के आक्रमण की वजह से इस नगर को भी बडी हानि पहुँची किन्तु शीघ्र ही यह पुनः आबाद हो गया। इब्ने बतूता (१४वीं शती ई०) ने इसे बडा ही आबाद नगर बताया है।

१ सब्जवार भी खुरासान का एक नगर है और नीशापुर के पश्चिम में ६४ मील पर स्थित है।

२ यह प्राचीन कूमीस प्रान्त की राजधानी था। इब्ने हौकल ने यहाँ जल के अभाव की शिकायत की है। मुस्तौफी कज़वीनी ने दामगान के समीप कोहे जर पर एक सोने की खान का उल्लेख किया है।

३ बाबर ने ग़जनी के एक झरने के विषय में बताया है कि, "पुस्तकों में लिखा है कि ग़जनी में एक ऐसा झरना है जिसमें यदि गदी तथा अशुद्ध वस्तुयें डाल दी जायें तो तत्काल बडे जोर का तूफान उठ खडा होता है।" किन्तु बाबर को, पता लगाने पर, इस झरने की कोई सूचना नहीं मिली। (बाबर नामा, पृ० २७)।

४ बिस्ताम अथवा बुस्ताम ५५° पूर्व तथा ३६° ३०' उत्तर में अपने फलों के बागों के लिये बडा प्रसिद्ध था। यह एक घाटी में पहाड़ियों से घिरा है।

५ बहरे तामी :—उबलता हुआ समुद्र।

६ बस्ताम, बिस्ताम के प्रसिद्ध सन्त, अबू यज़ीद तैफूर बिन ईसा अल बस्तामी के जन्म एव मृत्यु की तिथि के विषय में बड़ा मतभेद है किन्तु कहा जाता है कि उनका जन्म ७७७ ई० तथा मृत्यु ८४५ अथवा ८४८ ई० के मध्य में हुई। किन्तु इब्ने खल्लकान के अनुसार उनका निधन ८७५ अथवा ८७८ ई० में हुआ।

७ दामगान तथा रे (आधुनिक तेहरान के समीप) के लगभग मध्य में, खुरासान के मार्ग पर।

८ सूफियाबाद, सिमनान एव बस्ताम के पूर्व में काफी दूर पर स्थित है अत. वह सिमनान एव बस्ताम के पूर्व वहाँ पहुँच गया होगा।

९ प्रसिद्ध सूफी जुनैद बगदादी के शिष्य जिनकी मृत्यु २३ रजब ७३६ हि० (८ मार्च १३३६ ई०) में हुई।

थी कि वे सर्वदा ईश्वर के पुजारियो के मजार के दर्शन करते और उनसे सहायता की याचना करते तथा अपने अतरग एव बहिरग की सहायता से उन जागरूक लोगो से प्रेरणा माँगते। जिस मंज़िल पर वे पहुँचते वहाँ के हाकिम तथा प्रतिष्ठित लोग पूर्ण रूप से परिचर्या करते थे। शाह की ओर से प्राय स्नेहपूर्ण समाचार एव बडे-बडे उपहार प्राप्त होते रहते थे।

हुमायूँ का कज़वीन पहुँचना

जब उत्कृष्ट सवारी रै[1] के समीप पहुँची तो शाह गरमी व्यतीत करने के लिए कज़वीन से सुल्तानिया[2] एव सूरलीक की ओर रवाना हुआ। हज़रत जहाँबानी ने कज़वीन में, जो निकट-पूर्व में शाह की राजधानी रह चुका था, पडाव किया। वहाँ के प्रतिष्ठित लोग एव सर्वसाधारण लोग उनका स्वागत करके सम्मानित और उनके सत्सग से लाभान्वित हुए। वे कुछ दिन तक वहाँ के भव्य भवनो एव पवित्र मकबरा के दर्शन हेतु ठहरे रहे। उनका निवास ख्वाजा अब्दुल गनी के महलों मे, जो उस प्रदेश का कलान्तर[3] था, रहा। इससे पूर्व शाह भी वहीं निवास कर चुका था।

हुमायूँ का सुल्तानिया की ओर प्रस्थान

(२१६) वहाँ से उन्होंने बैराम ख़ा को शाह के पास भेजा। शाही सवारी अपने लक्ष्य के समीप पहुँच गई थी कि बैराम ख़ा राजदूत के कर्त्तव्या को पूरा करके उसी मजिल[4] मे प्रसन्नता के पाँव द्वारा लौट आया। वहाँ से वे सुल्तानिया की ओर रवाना हुए। शाह का शिविर अबहर[5] तथा सुल्तानिया के मध्य में लगा था। जब उत्कृष्ट सवारी उस स्थान के समीप पहुँची तो सर्व-प्रथम प्रतिष्ठित अमीर एक एक करके उपस्थित हुए और उन्होने अभिवादन किया। तदुपरान्त शाह के सम्मानित भाइयो, बहराम मीर्ज़ा एव साम मीर्ज़ा ने स्वागत किया। जमादि-उल अव्वल ९५१ हि० (जुलाई अगस्त १५४४ ई०) मे शाह ने स्वय स्वागत किया और भेंट के समय आदर सम्मान तथा मान-मर्यादा के नियमा का पूरा-पूरा ध्यान रक्खा[6]। एक भव्य भवन में, जिसके सजाने एव जिसपर बेल-बूटे बनाने में कुशल कलाकारो ने दीर्घकाल तक अपनी कुशलता के अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किए थे, हज़रत जहाँबानी का स्वागत हुआ तथा पादशाहाना महफिल आयोजित हुई जो इस भवन की प्रथम महफिल थी। उन लोगा में प्रतिष्ठा के नियमा एव सम्मान पूर्वक कुशलता

१ आधुनिक तेहरान के समीप ५ मील पर। यहाँ से पश्चिमी तथा पूर्वी ईरान से रेगिस्तानों एव पहाडियों के बावजूद सम्पर्क रहता था।

२ कज़वीन के अधीनस्थ एक फौजी छावनी। मगोल सुल्तान उलजैतु एव उसके वज़ीर रशीदुद्दीन फज़लुल्लाह (मृत्यु १३ जमादि-उल अव्वल ७१८ हि०। १६ जुलाई १३१८ ई०) ने यहाँ अनेक सुन्दर भवनों का निर्माण कराया किन्तु तबरेज़ के व्यापारिक केन्द्र बन जाने के कारण यहाँ का महत्व कम हो गया और धीरे-धीरे यह एक साधारण स्थान बन गया।

३ हाकिम।

४ फ़िरिश्ता के अनुसार 'बीलाके कदर' नामक स्थान से।

५ कज़वीन तथा ज़जान के मध्य में, जो अब लगभग नष्ट हो गया है, यह कज़वीन के पश्चिम में स्थित है।

६ बायज़ीद के अनुसार ज़जान एव बदायूनी के अनुसार ईलाक़ सुरलाक़ में हुमायूँ तथा तहमास्प की भेंट हुई।

सम्बन्धी प्रश्नो से वार्ता प्रारम्भ हुई और निष्ठा एव अनुराग के द्वार खोलने के पश्चात् प्रसन्नता एव सत्सग के द्वार खोले गए और विभिन्न प्रसगो पर बडी-बडी बातें हुई। मीर्जा कासिम गोनाबादी ने अपनी मसनवी[1] के ग्रथ में, जिसमें शाह के इतिहास का उल्लेख है, इन दो भाग्यशाली बादशाहो की भेंट के सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा है —

मसनवी

'दो साहब किरान एक जश्न की सभा में,
एक दूसरे का ससर्ग हुआ, सूर्य तथा चन्द्र के समान।
प्रताप के नेत्रो के लिए दो दृष्टि का प्रकाश हुआ,
दो शुभ ईदें हुई मास एव वर्ष के लिए।
दो नक्षत्र आकाश को शोभा प्रदान कर रहे थे,
एक ही स्थान पर साथ थे, फर्कदैन[2] के समान।
ससार के दो नेत्र, साथ-साथ,
दो शिष्टाचार प्रदर्शित करती हुई भृकुटिया के समान
दो शुभ नक्षत्रो का एक ही राशि में स्थान,
दो प्रतिष्ठित मोतिया की एक ही डिबिया में जगह।'

शाह तहमास्प द्वारा हुमायूं को प्रोत्साहन

शाह ने कहा कि, 'हिन्दुस्तान की विजय हजरत गेती सितानी फिरदौस मकानी को प्राप्त हुई किन्तु परमेश्वर ने आपकी ससार विजय करने वाली तलवार को देशो की विजय के खजाने को खोलने वाली कुजी बनाया है और जो कुछ विघ्न अथवा परेशानी इस समय राज्य-व्यवस्था एव शासन-प्रबन्ध में हुई वह कृतघ्न भाइयो के दुर्भाग्य एव फूट के कारण हुई। आप इस विषय में विवश थे। ससार में भाइयो के सगठन को बडा महत्व प्राप्त है। उसी के कारण बधे हुए कार्य (२१७) खुल जाते है।[3] अब आप मुझे अपना छोटा भाई[4] समझकर अपना सहायक तथा मददगार समझे। अपने प्राणो को कष्ट मे डालकर सहायता एव मदद की जो आवश्यकतायें है, उन्हे हम आपकी इच्छानुसार पूरा करेंगे। अपने पिछले सम्बन्धो पर ध्यान रखते हुए जितनी कुमक की भी आवश्यकता होगी, उसकी व्यवस्था करेंगे। यदि हमें भी सहायता हेतु चलना पडा तो चलेंगे।" इस कारण कि उदारता, उदार लोगो का चिह्न होती है, उसने निष्ठा-युक्त बातें कही।

१ काव्य का ऐसा रूप जिसके प्रत्येक शेर के दोनो मिसरे एक ही रदीफ एव काफिये में होते है। इसमें अधिकाश किसी कहानी अथवा घटना का उल्लेख होता है। [धीरेन्द्र वर्मा - हिन्दी साहित्य कोश (ज्ञानमडल, वाराणसी सवत् २०१५), पृ० ५७६]।
२ ध्रुव के समीप के दो सितारे।
३ ऐसे कार्यो में सफलता प्राप्त हो जाती है जिनके सफल होने की आशा नहीं होती।
४ शाह तहमास्प हुमायू से लगभग ८ वर्ष छोटा था।

थी कि वे सर्वदा ईश्वर के पुजारियों के मजार के दर्शन करते और उनसे सहायता की याचना करते तथा अपने अतरग एव वहिरग की सहायता से उन जागरूक लोगो से प्रेरणा माँगते। जिस मजिल पर वे पहुँचते वहाँ के हाकिम तथा प्रतिष्ठित लोग पूर्ण रूप से परिचर्या करते थे। शाह की ओर से प्राय स्नेहपूर्ण समाचार एव बडे-बडे उपहार प्राप्त होते रहते थे।

हुमायूँ का कज़वीन पहुँचना

जब उत्कृष्ट सवारी रे[1] के समीप पहुँची तो शाह गरमी व्यतीत करने के लिए कज़वीन से सुल्तानिया[2] एव सूरलीक की ओर रवाना हुआ। हजरत जहाँबानी ने कज़वीन मे, जो निकट पूर्व में शाह की राजधानी रह चुका था, पडाव किया। वहाँ के प्रतिष्ठित लोग एव सर्वसाधारण लोग उनका स्वागत करके सम्मानित और उनके सत्सग से लाभान्वित हुए। वे कुछ दिन तक वहाँ के भव्य भवनो एव पवित्र मकबरो के दर्शन हेतु ठहरे रहे। उनका निवास ख्वाजा अब्दुल गनी के महलो में, जो उस प्रदेश का कलान्तर[3] था, रहा। इससे पूर्व शाह भी वही निवास कर चुका था।

हुमायूँ का सुल्तानिया की ओर प्रस्थान

(२१६) वहाँ से उन्होने बैराम खा को शाह के पास भेजा। शाही सवारी अपने लक्ष्य के समीप पहुँच गई थी कि बैराम खा राजदूत के कर्तव्यो को पूरा करके उसी मजिल[4] से प्रसन्नता के पाँव द्वारा लौट आया। वहाँ से वे सुल्तानिया की ओर रवाना हुए। शाह का शिविर अबहर[5] तथा सुल्तानिया के मध्य मे लगा था। जब उत्कृष्ट सवारी उस स्थान के समीप पहुँची तो सर्व-प्रथम प्रतिष्ठित अमीर एक-एक करके उपस्थित हुए और उन्होने अभिवादन किया। तदुपरान्त शाह के सम्मानित भाइयो, बहराम मीर्ज़ा एव साम मीर्ज़ा ने स्वागत् किया। जमादि-उल-अव्वल ९५१ हि० (जुलाई-अगस्त १५४४ ई०) मे शाह ने स्वय स्वागत किया और भेंट के समय आदर सम्मान तथा मान-मर्यादा के नियमो का पूरा-पूरा ध्यान रक्खा[6]। एक भव्य भवन में, जिसके सजाने एव जिसपर बेल-बूटे बनाने में कुशल कलाकारो ने दीर्घकाल तक अपनी कुशलता के अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किए थे, हज़रत जहाँबानी का स्वागत हुआ तथा पादशाहाना महफिल आयोजित हुई जो इस भवन की प्रथम महफिल थी। उन लोगो में प्रतिष्ठा के नियमो एव सम्मान-पूर्वक कुशलता

१ आधुनिक तेहरान के समीप ५ मील पर। यहाँ से पश्चिमी तथा पूर्वी ईरान से रेगिस्तानों एव पहाडियों के बावजूद सम्पर्क रहता था।

२ कज़वीन के अधीनस्थ एक फ़ौजी छावनी। मगोल सुल्तान उलजैतु एव उसके वज़ीर रशीदुद्दीन फ़जलुल्लाह (मृत्यु १३ जमादि-उल-अव्वल ७१८ हि० १६ जुलाई १३१८ ई०) ने यहाँ अनेक सुन्दर भवनों का निर्माण कराया किन्तु तबरेज के व्यापारिक केन्द्र बन जाने के कारण यहाँ का महत्व कम हो गया और धीरे-धीरे यह एक साधारण स्थान बन गया।

३ हाकिम।

४ फ़िरिश्ता के अनुसार 'बीलाके कदर' नामक स्थान से।

५ कज़वीन तथा जन्जान के मध्य में, जो अब लगभग नष्ट हो गया है, यह कज़वीन के पश्चिम में स्थित है।

६ बायज़ीद के अनुसार उगान एवं बदायूनी के अनुसार ईनाक सुरताक में हुमायूँ तथा तहमास्प की भेंट हुई।

सम्बन्धी प्रश्नो से वार्ता प्रारम्भ हुई और निष्ठा एव अनुराग के द्वार खोलने के पश्चात् प्रसन्नता एव सत्सग के द्वार खोले गए और विभिन्न प्रसगो पर बडी-बडी बातें हुई। मीर्जा कासिम गोनाबादी ने अपनी मसनवी[1] के ग्रथ में, जिसमें शाह के इतिहास का उल्लेख है, इन दो भाग्यशाली बादशाहो की भेंट के सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा है —

मसनवी

'दो साहब किरान एव जश्न की सभा में,
एक दूसरे का ससर्ग हुआ, सूर्य तथा चन्द्र के समान।
प्रताप के नेत्रो के लिए दो दृष्टि का प्रकाश हुआ,
दो शुभ ईदें हुई मास एव वर्ष के लिए।
दो नक्षत्र आकाश को शोभा प्रदान कर रहे थे,
एक ही स्थान पर साथ थे, फर्कदैन[2] के समान।
ससार के दो नेत्र, साथ साथ,
दो शिष्टाचार प्रदर्शित करती हुई भृकुटियो के समान।
दो शुभ नक्षत्रो का एक ही राशि में स्थान,
दो प्रतिष्ठित मोतियो की एक ही डिबिया में जगह।'

शाह तहमास्प द्वारा हुमायू को प्रोत्साहन

शाह ने कहा कि, 'हिन्दुस्तान की विजय हजरत गेती सितानी फिरदौस मकानी को प्राप्त हुई किन्तु परमेश्वर ने आपकी ससार विजय करने वाली तलवार को देशो की विजय के खजाने को खोलने वाली कुजी बनाया है और जो कुछ विघ्न अथवा परेशानी इस समय राज्य-व्यवस्था एव शासन प्रबन्ध में हुई वह कृतघ्न भाइयो के दुर्भाग्य एव फूट के कारण हुई। आप इस विषय में विवश थे। ससार में भाइयो के सगठन को बडा महत्व प्राप्त है। उसी के कारण बधे हुए कार्य (२१७) खुल जाते हैं।[3] अब आप मुझे अपना छोटा भाई[4] समझकर अपना सहायक तथा मददगार समझें। अपने प्राणो को कष्ट में डालकर सहायता एव मदद की जो आवश्यकतायें हैं, उन्हे हम आपकी इच्छानुसार पूरा करेंगे। अपने पिछले सम्बन्धो पर ध्यान रखते हुए जितनी कुमक की भी आवश्यकता होगी, उसकी व्यवस्था करेंगे। यदि हमें भी सहायता हेतु चलना पडा तो चलेंगे।" इस कारण कि उदारता, उदार लोगो का चिह्न होती है, उसने निष्ठा-युक्त बातें कही।

१ काव्य का ऐसा रूप जिसके प्रत्येक शेर के दोनों मिसरे एक ही रदीफ एव काफिये में होते हैं। इसमें अधिकाश किसी कहानी अथवा घटना का उल्लेख होता है। [धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य कोश (ज्ञानमडल, वाराणसी सवत् २०१५), पृ० ५७६]।
२ ध्रुव के समीप के दो सितारे।
३ ऐसे कार्यों में सफलता प्राप्त हो जाती है जिनके सफल होने की आशा नहीं होती।
४ शाह तहमास्प हुमायू से लगभग ८ वर्ष छोटा था।

समारोह

कई दिन तक शाहाना जश्न होते रहे। हज़रत शाह रोजाना समस्त प्रबन्ध स्वयं कराने के उपरान्त सभायें करते थे तथा अतरंग एवं बहिरंग को शोभा प्रदान करते थे। नित्य-प्रति निष्ठा एवं प्रेम में वृद्धि होती रहती थी। सभाओं के आयोजन का उल्लेख जब कि ऐसा शाह प्रबन्ध कर रहा हो, किस प्रकार सम्भव है? न जाने कितने जरबफ्त, मखमल एवं ताजा बाफ[1] के शामियाने तथा कढे हुए खरगाह[2] खेमे इत्यादि लगाये जाते। रेशमी कम्बल, तथा बहुमूल्य कालीन जहां तक दृष्टि कार्य करती उस भू भाग में लगाकर आनन्द मंगल का आयोजन हुआ। इस बात का उल्लेख बड़ा कठिन है कि उपहार इत्यादि प्रस्तुत करने में, जोकि एक बड़ा आवश्यक कार्य है, उन्होंने स्वयं किस प्रकार और कितना ध्यान दिया।

हुमायूं को उपहार

चुने हुए एराकी घोड़े, सुनहरी एवं जड़ाऊ जीनें, जीन पर डालने के उत्तम वस्त्र तथा जीन-पोश, सजे हुए बरदा[3] के खच्चर, विचित्र शरीर वाले ऊँट तथा ऊँटनियाँ उत्तम वस्त्रों सहित, अधिक संख्या में रत्न जटित तलवारें और कटार, उत्तम वस्त्र, केश[4] तथा लोमड़ी की पोस्तीने, सजाब[5], तीन[6], जरबफ्त, मखमल, ताजह[7], अतलस, फिरंगी मुशज्जर[8] (फिरंग यज्द एवं काशी[9] की), अनेक तश्त, आफ़तावे, सोने-चाँदी के याकूत एवं मोती जड़े हुए शमादान[10], अनेक सोने-चाँदी के थाल, सुनहरे काम के खेमे, उत्तम कालीन, जो लम्बाई-चौड़ाई तथा सुन्दरता में अद्वितीय थे एवं समस्त शाही असबाब एक-एक करके उनकी सम्मानित दृष्टि के समक्ष प्रस्तुत किए। सम्मानित रिकाब के समस्त सेवकों को नकद एवं सामान अलग-अलग प्रदान किए गए। शाही शिष्टाचार की प्रथायें दोनों ओर से पूरी की गईं।

हुमायूं के उपहार

हज़रत जहाँबानी ने भव्य जश्न के दिन बहुमूल्य हीरा[11], जो (अनेक) देशों एवं इकलीमों

१ एक प्रकार का रेशम।
२ बड़े खेमे।
३ सम्भवतः ईरान के किसी स्थान का नाम।
४ एक प्रकार का मखमल।
५ एक जानवर जो घूँस के बराबर होता है, उसकी खाल का जो पोस्तीन बनता है, वह बड़ा उत्तम होता है।
६ गिलहरी; सम्भवतः गिलहरी की खाल से तात्पर्य है।
७ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
८ वह रेशमी कपड़ा जिसपर बेल-बूटे इत्यादि बने हों।
९ काशान का।
१० मोमबत्ती लगाने का स्टैन्ड।
११ वह हीरा जो हुमायूँ को आगरा से प्राप्त हुआ था और जिसे उसने अपने पिता को भेंट कर दिया [illegible] किन्तु बाबर [illegible] उसे उसी को लौटा दिया। (बाबर नामा, पृ० १६०-१६१)। शाह तहमास्प ने उसे बाद में दक्षिण के निज़ाम शाह को भेज दिया था।

के खराज के बराबर होगा, तथा २५० बदख्शाँ के लाल अरमगान[1] स्वरूप शाह के समक्ष प्रस्तुत किए। हज़रत जहाँबानी के इस देश में प्रवेश के समय से लेकर वापसी तक जो कुछ शाह की सरकार एवं शाह के पदाधिकारियों द्वारा व्यय हुआ था उससे कहीं अधिक (अपितु) दुगना चौगुना अदा हो गया।

शाह तहमास्प एवं हुमायूं का एक दूसरे से खिन्न होना

वहाँ से वे सुल्तानिया की ओर रवाना हुए और वहाँ आनन्द मंगल के वातावरण में (२१८) शाहाना महफ़िलें होती रहीं। इन शुभ घड़ियों में जब दो शुभ नक्षत्रों का समर्ग हुआ तो कुछ षड्यन्त्रकारियों के बहकाने से दोनों ओर से हृदय में कुछ मैल उत्पन्न हो गया किन्तु वह अधिक न बढ़ सका और सफ़ाई के जल द्वारा साफ़ हो गया[2]।

मेल तथा शिकार

हज़रत शाह रोज़ाना प्रसन्नता एवं खुशी के अधिक से अधिक साधना की व्यवस्था करते थे। इसी सम्बन्ध में उनकी प्रसन्नता एवं आनन्द मंगल के लिए कमरगह[3] के शिकार का आयोजन कराया। दस दिन की यात्रा के मार्ग से शाही लश्कर ने जंगली वन पशुओं को इका-हुकार एक झरने पर, जिसे सावूक बूलाक[4] कहते हैं और जो यीलाक बीलाक[5] की प्रथम मंजिल है, शिकार एकत्र किया। हज़रत जहाँबानी तथा सम्मानित शाह ने शिकारगाह में प्रविष्ट होकर घोड़े दौड़ाने एवं शिकार खेलने की प्रथाओं को ताज़ा किया। तदुपरान्त बहराम मीर्ज़ा एवं साम मीर्ज़ा को और उसके बाद बैराम खाँ, हाजी मुहम्मद कोकी, शाह कुली[6], सुल्तान मुहरदार[7], रोशन कोका, हसन कोका एवं हज़रत जहाँबानी के विश्वासपात्रों के अन्य समूह को कमरगह में प्रवेश करने की अनुमति प्राप्त हुई। शाह के अमीरों में से अब्दुल्लाह खाँ इस्तजलू, जो सम्मानित शाह इस्माईल का जामाता था, अबुल कासिम खुलफ़ा, सौन्दुक[8] सुल्तान कूरची बाशी अफ़शार, बद्र खाँ इस्तजलू तथा कुछ अन्य लोग आदेशानुसार प्रविष्ट हुए। कुछ समय उपरान्त सभी को अनुमति दे दी गई और सैनिकों एवं लश्कर वालों में से प्रत्येक शिकार पकड़ने एवं मारने में व्यस्त हो गया। इसी बीच में बहराम मीर्ज़ा

१ यात्रियों का उपहार। ऐसा उपहार जो बिना किसी विशेष तैयारी के प्रस्तुत किया जाय।

२ अबुलफ़ज़्ल ने इस घटना का बहुत ही संक्षिप्त उल्लेख किया है। जौहर ने इस घटना का सविस्तार उल्लेख किया है। अन्य लेखकों ने भी इसके विभिन्न कारण बताये हैं।

३ घेरे का शिकार। इस प्रकार के शिकार के लिए देखिये शम्स सिराज अफ़ीफ़, **तारीख फ़ीरोज़शाही** (कलकत्ता) पृ० ३१५-३२६, रिज़वी **तुगलुक कालीन भारत** भाग २ (अलीगढ़ १९५७ ई०) पृ० १२९ १३०, **बाबर नामा,** पृ० ७७।

४ सम्भवतः सूक बूलाक (ठंडा झरना)। यह तख्ते सुलेमान के, जिसका जौहर ने उल्लेख किया है समीप है।

५ बीलाक़ का अर्थ उद्यान तथा तहखाना दोनों होता है।

६ सम्भवतः हुसैन कुली, सीस्तान के हाकिम का भाई। बायज़ीद के अनुसार उसे हुमायूँ ने कन्धार में मुहरदार नियुक्त कर दिया था।

७ वह व्यक्ति जिसके सिपुर्द शाही मुहर होती थी।

८ बायज़ीद ने 'सुन्दक सुल्तान कूरची बाशी अफ़शार' लिखा है।

समारोह

कई दिन तक शाहाना जश्न होते रहे। हज़रत शाह रोजाना समस्त प्रबन्ध स्वयं कराने के उपरान्त सभायें करते थे तथा अंतरंग एवं बहिरंग को शोभा प्रदान करते थे। नित्य-प्रति निष्ठा एवं प्रेम में वृद्धि होती रहती थी। सभाओं के आयोजन का उल्लेख जब कि ऐसा शाह प्रबन्ध कर रहा हो, किस प्रकार सम्भव है? न जाने कितने ज़रबफ्त, मख़मल एवं ताज़ा बाफ़[1] के शामियाने तथा कढ़े हुए ख़रगाह[2] ख़ेमे इत्यादि लगाये जाते। रेशमी कम्बल, तथा बहुमूल्य कालीन जहाँ तक दृष्टि कार्य करती उस भू भाग में लगाकर आनन्द मंगल का आयोजन हुआ। इस बात का उल्लेख बड़ा कठिन है कि उपहार इत्यादि प्रस्तुत करने में, जोकि एक बड़ा आवश्यक कार्य है, उन्होंने स्वयं किस प्रकार और कितना ध्यान दिया।

हुमायूँ को उपहार

चुने हुए एराकी घोड़े, सुनहरी एवं जड़ाऊ ज़ीनें, ज़ीन पर डालने के उत्तम वस्त्र तथा ज़ीन-पोश, सजे हुए बरदा[3] के ख़च्चर, विचित्र शरीर वाले ऊँट तथा ऊँटनियां उत्तम वस्त्रों सहित अधिक संख्या में रत्न जटित तलवारें और कटार, उत्तम वस्त्र, केश[4] तथा लोमड़ी की पोस्तीनें, सजाब[5], तीन[6], ज़रबफ्त, मख़मल, ताज़ह[7], अतलस, फ़िरंगी मुशज्जर[8] (फ़िरंग यज़्द एवं काशी[9] की), अनेक तश्त, आफ़ताबे, सोने-चाँदी के याकूत एवं मोती जड़े हुए शमादान[10], अनेक सोने-चांदी के थाल, सुनहरे काम के ख़ेमे, उत्तम कालीन, जो लम्बाई-चौड़ाई तथा सुन्दरता में अद्वितीय थे एवं समस्त शाही असबाब एक एक करके उनकी सम्मानित दृष्टि के समक्ष प्रस्तुत किए। सम्मानित रिकाब के समस्त सेवकों को नक़्द एवं सामान अलग-अलग प्रदान किए गए। शाही शिष्टाचार की प्रथायें दोनों ओर से पूरी की गईं।

हुमायूँ के उपहार

हज़रत जहाँबानी ने भव्य जश्न के दिन बहुमूल्य हीरा[11], जो (अनेक) देशों एवं इक्लीमों

१ एक प्रकार का रेशम।
२ बड़े ख़ेमे।
३ सम्भवतः ईरान के किसी स्थान का नाम।
४ एक प्रकार का मलमल।
५ एक जानवर जो घूँस के बराबर होता है उसकी खाल का जो पोस्तीन बनता है, वह बड़ा उत्तम होता है।
६ गिलहरी; सम्भवतः गिलहरी की खाल से तात्पर्य है।
७ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
८ वह रेशमी कपड़ा जिसपर बेल-बूटे इत्यादि बने हों।
९ काशान का।
१० मोमबत्ती लगाने का स्टैन्ड।
११ वह हीरा जो हुमायूँ को आगरा से प्राप्त हुआ था और जिसे उसने अपने पिता को भेंट कर दिया था किन्तु बाबर ने उसे उसी को लौटा दिया। (**बाबर नामा, पृ० १६०-१६१**)। शाह तहमास्प ने उसे बाद में दक्खिन के निज़ाम शाह को भेज दिया था।

के खराज के बराबर होगा, तथा २५० बदख्शाँ के लाल अरमगान[1] स्वरूप शाह के समक्ष प्रस्तुत किए। हज़रत जहाँबानी के इस देश में प्रवेश के समय से लेकर वापसी तक जो कुछ शाह की सरकार एवं शाह के पदाधिकारियों द्वारा व्यय हुआ था उससे कहीं अधिक (अपितु) दुगना तिगुना अदा हो गया।

शाह तहमास्प एवं हुमायूं का एक दूसरे से खिन्न होना

वहाँ से वे सुल्तानिया की ओर रवाना हुए और वहाँ आनन्द-मंगल के वातावरण में (२१८) शाहाना महफ़िलें होती रहीं। इन शुभ घड़ियों में जब दो शुभ नक्षत्रों का संगम हुआ तो कुछ षड्यन्त्रकारियों के बहकाने से दोनों ओर के हृदय में कुछ मैल उत्पन्न हो गया किन्तु वह अधिक न बढ़ सका और सफाई के जल द्वारा साफ हो गया[2]।

मेल तथा शिकार

हज़रत शाह रोज़ाना प्रसन्नता एवं खुशी के अधिक से अधिक साधनों की व्यवस्था करते थे। इसी सम्बन्ध में उनकी प्रसन्नता एवं आनन्द-मंगल के लिए कमरगह[3] के शिकार का आयोजन कराया। दस दिन की यात्रा के मार्ग से शाही लश्कर ने जंगली वन-पशुओं को हका-हकाकर एक झरने पर, जिसे सावूक बूलाक[4] कहते हैं और जो यीलाक बीलाक[5] की प्रथम मंज़िल है, शिकार एकत्र किया। हज़रत जहाँबानी तथा सम्मानित शाह ने शिकारगाह में प्रविष्ट होकर घोड़े दौड़ाने एवं शिकार खेलने की प्रथाओं को ताज़ा किया। तदुपरान्त बहराम मीर्ज़ा एवं साम मीर्ज़ा को और उसके बाद बैराम खाँ, हाजी मुहम्मद कोको, शाह कुली[6], सुल्तान मुहरदार[7], रोशन कोका, हसन कोका एवं हज़रत जहाँबानी के विश्वासपात्रों के अन्य समूह को कमरगह में प्रवेश करने की अनुमति प्राप्त हुई। शाह के अमीरों में से अब्दुल्लाह खाँ इस्तजलू, जो सम्मानित शाह इस्माईल का जामाता था, अबुल कासिम खुलफा, सीवुन्दुक[8] सुल्तान कूरची बाशी अफ़्शार, बद्र खाँ इस्तजलू तथा कुछ अन्य लोग आदेशानुसार प्रविष्ट हुए। कुछ समय उपरान्त सभी को अनुमति दे दी गई और सैनिकों एवं लश्कर वालों में से प्रत्येक शिकार पकड़ने एवं मारने में व्यस्त हो गया। इसी बीच में बहराम मीर्ज़ा

१ यात्रियों का उपहार। ऐसा उपहार जो बिना किसी विशेष तैयारी के प्रस्तुत किया जाय।
२ अबुलफ़ज़्ल ने इस घटना का बड़ा ही संक्षिप्त उल्लेख किया है। जौहर ने इस घटना का सविस्तार उल्लेख किया है। अन्य लेखकों ने भी इसके विभिन्न कारण बताये हैं।
३ घेरे का शिकार। इस प्रकार के शिकार के लिए देखिये शम्स सिराज अफ़ीफ़: तारीख़ फ़ीरोज़शाही (रिज़वी पृ० ३१५-३२६, रिज़वी **तुग़लुक कालीन भारत** भाग २ (अलीगढ़ १९५७ ई०) पृ० १२९ १३०, बाबर **नामा**, पृ० ७७।
४ सम्भवत सूज़ बूलाक़ (ठंडा झरना)। यह तख़्ते सुलेमान के, जिसका जौहर ने उल्लेख किया है समीप है।
५ बीलाक़ का अर्थ उद्यान तथा तहख़ाना दोनों होता है।
६ सम्भवत हुसैन कुली, सीस्तान के हाकिम का भाई। बायज़ीद के अनुसार उसे हुमायूं ने कन्धार में मुहरदार नियुक्त कर दिया था।
७ वह व्यक्ति जिसके सिपुर्द शाही मुहर होती थी।
८ बायज़ीद ने 'सुन्दक सुल्तान कूरची बाशी अफ़्शार' लिखा है।

ने, जिसकी खुलफा से शत्रुता थी, शिकारगाह के मध्य में जान-बूझकर इस प्रकार वाण चलाया कि उसकी मृत्यु हो गई। मीर्जा की प्रसन्नता की दृष्टि से किसी ने शाह से यह बात न कही।

अन्य शिकार एवं आमोद-प्रमोद

तदुपरान्त भाग्यशाली सेना को आदेश हुआ कि हौजे सुलेमान पर पहुँचकर कमरगह का पुनः प्रबन्ध करें। जब (जानवर) एकत्र हो गए तो प्रतिष्ठित लोगों के नियमानुसार शिकार हुआ। इस मंजिल पर चौगान खेलने एवं कबक बेधने में भी कुछ समय व्यतीत किया गया। उस दिन जब कि कबक की प्रतियोगिता हो रही थी[1], बैराम बेग को खान एवं हाजी मुहम्मद कोकी को 'सुल्तान' की उपाधि द्वारा सम्मानित किया गया।

शाह द्वारा हुमायूं को कुमक

उस समारोह के अन्त में १२,००० अश्वारोहियों की सूची, जो शाह के सम्मानित पुत्र मीर्जा मुराद के अधीन कुमक हेतु नियुक्त किए गए थे, उस कारखाना की सामग्री की सूची सहित जो हजरत जहाँबानी के साथ भेजने के लिए निश्चित हुये थे, प्रस्तुत की गई। जो सम्मानित लोग इस उत्कृष्ट कुमक हेतु नियुक्त हुए थे, उनकी सूची इस प्रकार है —

(१) मीर्जा मुराद
(२) बुदाग खां काचार, मीर्जा का लला[2]
(३) शाह कुली सुल्तान अफशार, किरमान का हाकिम
(४) अहमद सुल्तान शामलू वल्द मुहम्मद खलीफा
(५) सजात्र सुल्तान अफशार फरह का हाकिम
(६) यार अली सुल्तान तकलू
(७) सुल्तान अली अफशार
(८) सुल्तान कुली कूरची बाशी, मुहम्मद खां[3] का सम्बन्धी
(९) याकूब मीर्जा, सुल्तान मुहम्मद खुदाबन्दा[4] का तगाई[5]
(१०) सुल्तान हुसेन कुली शामलू, सीस्तान के हाकिम अहमद सुल्तान का भाई
(११) अदहम मीर्जा वल्द देव मीर्जा[6]
(२१९) (१२) तहमतन मीर्जा वल्द देव सुल्तान
(१३) हैदर सुल्तान शैबानी

१ "बाज़ार कबक गरम बूद" : कबक का बाजार गरम था। वाण चलाने की प्रतियोगिता के समय एक कद्दू लटका दिया जाता था और धनुर्धारी उस पर वाण से निशाना लगाते थे।
२ गुरू, अतालीक़।
३ हिरात का हाकिम।
४ शाह तहमास्प का ज्येष्ठ पुत्र।
५ मामा।
६ बायज़ीद के अनुसार ११ तथा १२ भाई थे अतः देव सुल्तान एवं देव मीर्जा एक ही व्यक्ति थे।

(१४) अली कुली
(१५) बहादुर } हैदर सुल्तान के पुत्र

(१६) मकसूद मीर्जा आख्ता बेगी वल्द जैनुद्दीन सुल्तान शामलू

(१७) मुहम्मदी मीर्जा, जहान शाह मीर्जा का नबीरा (पौत्र), शाह यज्दी बेग के नाम से प्रसिद्ध

(१८) कचल इस्तजलू

(१९) अली सुल्तान चुलाक, मुहम्मद खा का भागिनेय

(२०) अबुल फतह सुल्तान अफशार

(२१) हसन सुल्तान शामलू

(२२) यादगार सुल्तान मोसलू[1]

(२३) अहमद सुल्तान अलाश उगली इस्तजलू

(२४) साफी वली सुल्तान, सूफियो की सतान रूमल का खलीफा

(२५) अली बेग जुलफेकार कुश[2]

(२६) मुहम्मद बेग किताबदार काचार।

शाह का हुमायूं को बिदा करना

३०० कूरची खासा[3] भी उचित सामान सहित नियुक्त किए गए। इस उत्कृष्ट सभा के उपरान्त आदेश हुआ कि आक जियारत मे, जो कि मूरलीक[4] के गरमी में समय व्यतीत करने के स्थानो की प्रथम मंजिल है, तीसरी बार कमरगह शिकार का आयोजन किया जाय। नाना प्रकार के हर्षोल्लास की सामग्री की व्यवस्था करके आनन्द-मगल मनाने की प्रथाओ का पालन किया गया। उत्तम जलवायु के लिए प्रसिद्ध मियाना[5] नामक हृदय-ग्राही स्थान में जहाँबानी के ठहरने के स्थान पर उनको पहुँचाने के लिए सम्मानित हज़रत शाह (स्वय) पहुँचे और उत्तम ढग से तथा शुभ घडी में उन दोनो ने एक दूसरे से विदा ली।

हुमायूं का तबरेज़ की ओर प्रस्थान

हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी हज़रत साहब किरान की पवित्र प्रथाओं का पालन

१ मोमल का।

२ जुलफेकार का हत्यारा। जुलफेकार, एक कुर्द था जो मोमल का सुल्तान हो गया था और जिसने बगदाद पर अधिकार जमा लिया था। शाह तहमास्प ने १५२७ ई० में १४ वर्ष की अवस्था में उसपर आक्रमण किया। अली बेग ने उसी समय उसकी हत्या कर दी। (बेवरिज, पृ० ४२ नोट न० ६)।

३ शाह के विशेष अंग-रक्षक।

४ मूल में 'सुरलक' किन्तु 'मूरलीक' अधिक शुद्ध है।

५ कुछ अन्य लेखकों ने यहाँ की जल-वायु की बड़ी निन्दा की है।

करते हुए स्वय अर्दबेल[१] एव तबरेज[२] की ओर रवाना हुए। हजरत मरियम मकानी का सम्मानित हौदज, लाव लश्कर एव सेवको तथा परिजनों सहित कन्धार की ओर रवाना कर दिया गया। हाजी मुहम्मद खा को लश्कर का सरदार बनाकर सतीत्व के कुब्बे के उस हौदज के साथ नियुक्त किया। १२००० अश्वारोही, जो विजयी रिकाब के अधीन नियुक्त हुए थे अपनी व्यवस्था एव अपना प्रबन्ध करने के लिए रवाना हुए। यह निश्चय हुआ कि जब हज़रत जहाँबानी की विजयी पताकायें हेलमन्द[३] नदी पर पहुँच जायें तो सम्मानित शाहजादा निश्चित सेना सहित सेवा में उपस्थित हो।

तबरेज़ की सैर

हज़रत जहाँबानी सर्वप्रथम तबरेज की सैर हेतु रवाना हुए। जब वे उस प्रदेश के समीप पहुँचे तो वहाँ का हाकिम एव प्रतिष्ठित लोग उस बाघ तक, जिसका मीर्जा मीरान शाह[४] ने उस जलधारा पर निर्माण कराया था, जो सहन्द[५] के आँचल से तबरेज में पहुँचती है, स्वागत हेतु उपस्थित हुए और धरती-चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया। शहर के हाकिम ने शाही आदेशानुसार नगर को सजवाकर हजरत जहाँबानी को सैर कराई और नाना प्रकार से आतिथ्य का प्रबन्ध किया। भेडियों की दौड[६] तथा पैदल चौगान[७] के खेल का, जो तबरेज मे बडा प्रसिद्ध था और जिसका उस समय उपद्रव के भय से निषेध करा दिया गया था, (हजरत जहाँबानी के) पवित्र हृदय की प्रसन्नता के लिए शाही आदेशानुसार प्रदर्शन कराया गया। हजरत जहाँबानी ने उस नगर के भव्य भवनो का जो प्राचीन काल के सुल्तानो के अवशेष हैं तथा उस नगर की सैरगाहो का निरीक्षण किया। जो लोग मिट्टी में मिल चुके थे, एव आकाश के कुचक्र से पतनोन्मुख हो गए थे और जो लोग नश्वर ससार की दुर्घटनाओं एव तुच्छ ससार की दुष्टता का शिकार हो गए थे उनके अवशेष देखकर[८] उनका हृदय, जिसपर सत्य की छाप थी, बडा प्रभावित हुआ और उन्होने ईश्वर की

---

१ अर्दबेल ईरान के अजरबाईजान प्रान्त में पूर्व की ओर ४८½° पूर्व तथा ३८° उत्तर में, रूस की सरहद से २५ मील पर। ७वीं शती हि० (१४वीं शती ई०) में शेख इस्हाक सफ़ी उद्दीन के कारण इसे बडी प्रसिद्धि प्राप्त हुई। वे सफ़वी सुल्तानों के पूर्वज थे।

२ तबरेज.—ईरान के अजरबाईजान प्रान्त की राजधानी।

३ अफ़ग़ानिस्तान की मुख्य नदी जो पगमान की पर्वतीय शृखलाओ से (काबुल के पश्चिम में जो हिन्दूकुश तथा कोह बाबा से मिली है) होती हुई पूर्वी हजारिस्तान की घाटियों में पहुँचती है और फिर पश्चिम दिशा में होती हुई दक्षिणी अफ़ग़ानिस्तान के मैदान में गिरिस्क के समीप पहुँचती है। गिरिस्क के नीचे तथा बुस्त के अवशेष के समीप अरग़न्दाब, तारनाक एवं अरग़सान नदियाँ जो पहले से एक में मिल चुकती है, इसमें गिरती हैं।

४ मीरान शाह तीमूर का एक पुत्र था। यह बाघ सम्भवत तबरेज में माहरूद अथवा अजी चाई नदी का जल पहुँचाने के लिये बनवाया गया था।

५ तबरेज के दक्षिण में लगभग ११८०० फ़ीट ऊँचा पर्वत।

६ 'गुर्ग दवानी'।

७ चौगान अथवा पोलो जो घोडे पर खेला जाता है। पैदल चौगान सम्भवत: हाकी उस समय तबरेज की ही विशेषता थी। मूल में 'चौगान बाजिये प्यादा'।

८ तबरेज के भूकम्पों की ओर सकेत है जिनके कारण नगर कई बार नष्ट हो चुका है।

(२२०) इच्छाओं के पालन के विषय में तथ्य से परिपूर्ण शब्द अपनी ज़बान से कहे। पिछले लोगों के शेरों से प्रभावित होकर यह रुबाई[1] उस दशा में ज़ोर से पढ़ी

रुबाई

'खेद है कि पूंजी हथेली के बाहर निकल गई,
मौत के हाथों बहुत से जिगर रक्त बन गये।
कोई उस लोक से वापस न आया, ताकि मैं उससे पूछता,
कि (उस) संसार के यात्रियों की क्या दशा हुई ?'[2]

मुल्ला अब्दुस्समद शीरीं क़लम का हुमायूं की सेवा में उपस्थित होना

मुल्ला कुतुबुद्दीन[3] जलजू बग़दादी इस उत्कृष्ट नगर में सेवा में उपस्थित होकर सम्मानित हुआ और प्रतापी रिकाब के साथ साथ मशहदे मुक़द्दस तक गया। नादिरा कार[4] सहर आफ़री[5] ख्वाजा अब्दुस्समद[6] शीरीं क़लम ने भी इसी सम्मानित नगर में सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया और प्रतिभाशाली दरबार के उस सहृदयी को वह बड़ा पसन्द आया। वह भाग्य के प्रतिबन्धों के कारण साथ न जा सका।

ज्योतिष के यन्त्रों की खोज

एक बड़ी ही विचित्र एवं उत्तम बात तथा भाग्यशाली शकुन यह हुआ कि जब वे तबरेज़ पहुँचे तो वहाँ शैख मुहम्मद आस्ना बेगी से, इस कारण कि पवित्र ध्यान को उस्तुरलाब[7], कुर्रह[8] एवं वेधशाला के समस्त यन्त्रों की अत्यधिक खोज रहती थी, कहा कि, "इस नगर में प्राचीन काल के अत्यधिक अवशेष हैं अतः यदि कोई कुर्रह मिल जाय तो लाओ।" वह सरल स्वभाव का व्यक्ति कुछ कुर्रे[9] तथा घोड़ियाँ ले आया। हज़रत (जहाँबानी) ने हँसकर शुभ शकुन की दृष्टि से उन्हें क्रय कर लिया।

१ रुबाई में चार समवृत्त चरण होते हैं। रुबाई के लिये विशेष छन्दों का विधान है। (धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, पृ० ६६६-६६७)।

२ अफ़सोस क सरमाया ज़ कफ़ बेरूं शुद,
व ज़ दस्ते अजल बसे जिगरहा खून शुद।
कस ने आमद अज़ाँ जहाँ के ता पुर्सम अज़ू,
क अहवाले मुसाफ़िराने आलम चू शुद।

३ क़ाज़ी अली बख्शी का पिता।

४ अपने कार्य से आश्चर्यचकित करने वाला, कुशल, विशिष्ट।

५ जादू पैदा करने वाला।

६ यह शीराज़ निवासी था। उसका पिता ख्वाजा निज़ामुल्मुल्क शीराज़ के शाह शुजा का वज़ीर था। हुमायूं के ईरान से प्रस्थान के पूर्व वह तबरेज़ में उसकी सेवा में उपस्थित हुआ। उस समय भी वह अपनी कला के लिये बड़ा प्रसिद्ध था। अकबर के राज्यकाल में भी उसे बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त रही।

७ एक यन्त्र जिससे ग्रहों आदि की नाप होती है।

८ ग्रहों आदि की जानकारी का कोठा।

९ गधे अथवा घोड़े के बच्चे, बछेड़े।

हुमायूं का सब्जवार पहुँचना

तबरेज की सैर करके वे अर्दबेल की ओर पहुँचे। जब उत्कृष्ट सवारी शम्मासी[1] नामक कस्बे में पहुँची तो समस्त शेखज़ादे, जो सम्मानित शाह के सम्बन्धी थे, एवं सभी प्रतिष्ठित एवं सम्मानित लोग सेवा में उपस्थित हुए और अभिवादन किया। वे एक सप्ताह तक अर्दबेल में ठहरे रहे। फिर वहाँ से खलखाल[2], खलखाल से तारम[3] और तारम से खर्जबेल[4] पहुँचे। क्योंकि वहाँ की जलवायु एवं फल विशेषकर बेदाना अनार उन्हें बड़े पसन्द आये, अतः वे वहाँ तीन दिन तक ठहर गए और (बाद में) सब्जवार[5] में अपने शिविर में पहुँच गए। इस मंजिल पर हज़रत मरियम मकानी के एक पवित्र पुत्री का जन्म हुआ। वापसी के समय जब वे अपने सौभाग्य एवं प्रताप सहित काबुल एवं कन्धार की ओर रवाना हुए तो जिस मंज़िल पर पहुँचते वहाँ के अधिकारी तथा प्रतिष्ठित लोग पहुँचने के समय से ही उपहार भेजने तथा आतिथ्य करने लगते थे। इस मंज़िल पर मीर शम्सुद्दीन अली सुल्तान ने उचित रूप से सेवायें की। दावत के दिन नटों[6] ने उपस्थित होकर अपने करतबों का प्रदर्शन किया।

हुमायूं का मशहद पहुँचना

जब सम्मानित पताकायें मशहदे मुकद्दस में पहुँची तो वहाँ के हाकिमों ने उनके आदर-सम्मान का अधिक से अधिक प्रयत्न किया और उचित रूप से सेवायें सम्पन्न कीं। शाह की सेना के एकत्र हो जाने की प्रतीक्षा में कुछ समय तक इस नगर में पड़ाव हुआ। यहाँ से सावरी[7] की वसूली के लिए, जो हिरात से निश्चित की गई थी उन्होंने अब्दुल फत्ताह कुरकीराक को भेजा। लौटते समय उसकी मृत्यु हो गई। इसी स्थान से मौलाना नूरुद्दीन मुहम्मद तरखान को शेख (२२१) अबुल कासिम जुर्जानी एवं मौलाना इलियास अर्दबेली को, जो अन्तरंग एवं बहिरंग में निपुणता से सुशोभित थे भेजा, वे लोग काबुल पहुँचकर सेवा में उपस्थित हुए। इन दो सम्मानित व्यक्तियों के पहुँच जाने से वे बड़े प्रसन्न हुए और उनसे 'दुर्रतुत्ताज[8]' नामक ग्रंथ पर वाद विवाद किया।

मौलाना जमशेद मुअम्माई से भेंट

जितने समय तक वे मशहद में रहे, सर्वदा उस स्थान के बुद्धिमानों एवं उच्च कोटि के

१ अर्दबेल के समीप एक ग्राम।
२ अर्दबेल से दो दिन की यात्रा पर।
३ याकूत के अनुसार कज़वीन एवं गीलान के मध्य में एक बहुत बड़ा कस्बा।
४ जौहर के अनुसार 'खर्दबेल'।
५ हिरात के समीप दक्षिण में।
६ बाबर ने हिन्दुस्तानी नटों की विशेष रूप से सराहना की है। (बाबर नामा, पृ० २६५)।
७ आर्थिक सहायता।
८ दुर्रतुत्ताज—इस ग्रन्थ में ज्योतिष विषयक सविस्तार चर्चा है।

साहित्यकारो से उनका सम्पर्क रहा। जो उनकी सेवा में पहुँचता वह उनकी इक्सीर[1] सरीखा लाभ पहुँचाने वाली गोष्ठी से लाभान्वित होता रहता था। मौलाना जमशेद मुअम्माई[2], जो कि बडा उच्च कोटि का विद्वान् था, कई बार धरती चूमने के सम्मान द्वारा प्रतिष्ठित हुआ।

मुल्ला हैरती की ग़ज़ल में सशोधन

एक दिन मुल्ला हैरती[3] ने अपनी इस गजल[4] को सशोधन की दृष्टि से प्रस्तुत किया –

मिसरा

'कभी मेरा दिल तो कभी मेरा जिगर माशूको के प्रेम के कारण जलता है,
प्रेम हर क्षण पर एक नए दाग द्वारा जलाता है।
तिंगे के समान मेरा सम्बन्ध मोमवत्ती से है,
यदि मै आगे वढ तो मेरे वाल व पर जल जायें[5]।'

हज़रत जहाँवानी ने, जो साहित्य के सृजनकर्ता एव सूझ-बूझ की कसौटी थे, उसमें वडे उत्तम रूप से इस प्रकार सुधार कर दिया

'आगे वढू अगर तो मेरे बाल व पर जल जायें[6]।'

हुमायू का गरमसीर पहुँचना

मौलाना ने सुधार की इक्सीर के कारण निष्ठापूर्वक सिज्दा किया। उन्होने मशहद से तरक[7] की कारवाँसरा और वहाँ से शाह[8] के किले के मार्ग से सीस्तान में पडाव किया। इस

१ रसायन, कीमिया।
२ आईने अकबरी में उसका उल्लेख अकबर के राज्यकाल के उत्तम सुलेख लिखने वालों में हुआ है। (आईने अकबरी, देखिये आईने तसवीरखाना')।
३ मुल्ला हैरती ' उसकी मृत्यु ९६१ हि० (१५५३ ५४ ई०) में हुई।
४ ग़ज़ल में प्रेम भावनाओं का चित्रण होता है। इसकी असली कसौटी प्रभावोत्पादकता है। (धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य कोश, पृ० २५२ २५३)।
५ गह दिल अज इश्के बुता गह जिगरम मी सोज़द,
इश्क़ हर लहज़ा व दाग़े दिगरम मी सोज़द।
हमचो परवाना न शमये सरोकार अस्त मरा,
के अगर पेश रवम बालो परम मी सोज़द।
گہہ دل ز عشق بتاں گہہ جگرم می سوزد
عشق ہر لحظہ بداغ دگرم می سوزد
همچو پروانہ بشمعی سروکار است مرا
کہ اگر پیش روم بال و پرم می سوزد
६ मी रवम पेश अगर बालो परम मी सोज़द

स्थान पर शाहजादा एवं शाह के अमीर उत्कृष्ट सवारी से मिल गए। वहाँ से गरमसीर में पड़ाव हुआ। गरमसीर का मीर अब्दुल हई लवी[1] नामक किले से गरदन में निपग लटकाकर, अभिवादन के सौभाग्य द्वारा सम्मानित हुआ और उसने पिछले अपराधों एवं इससे पूर्व साथ प्रस्थान करने के सौभाग्य से वंचित रह जाने के लज्जा के कारण क्षमा याचना की। इस कारण कि हजरत जहाँबानी का कृपा-युक्त स्वभाव ही ऐसा था कि वे अपराधों को क्षमा कर देते एवं दान-पुण्य करते थे अतः उसे क्षमा करके कृपाओं द्वारा सम्मानित किया गया।

हुमायूं के सहायकों की सूची

जब बात इस सीमा तक पहुँच गई तो यह परमावश्यक हो गया कि उन अधिकारियों का संक्षिप्त उल्लेख कर दिया जाय जो इस यात्रा में भाग्यशाली रिकाब के साथ थे।

(१) निष्ठावानों एवं स्वामी भक्तों का सरदार, जो सौभाग्य के समान हजरत जहाँबानी जन्नत आशियानी की प्रतापी रिकाब के साथ रहा बैराम खाँ था।

(२) ख्वाजा मुअज्जम, जो हजरत मरियम मकानी का एक ही माता का भिन्न पिता से उत्पन्न भाई[2] था, वह प्रारम्भ से ही मस्तिष्क की उग्रता एवं स्वभाव की उष्णता से शून्य न था किन्तु शनैः शनैः उसके अत्याचार एवं उसकी निष्ठुरता में अत्यधिक वृद्धि हो गई। उसका अन्त अपने स्थान पर लिखा जायगा।

(३) आक़िल सुल्तान ऊज़बेग,[3] आदिल सुल्तान का पुत्र जो माता की ओर से सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा का पौत्र था। यद्यपि प्रारम्भ में वह सेवकों में सम्मिलित था, किन्तु बाद में शोक-ग्रस्त लोगों में सम्मिलित हो गया।

(४) हाजी मुहम्मद कोकी, कोकी का भाई जो हजरत गेती सितानी फ़िरदौस मकानी के (२२२) प्रतिष्ठित अमीरों में से था। वह पौरुष में अद्वितीय था। शाह कहा करता था कि पादशाहों के ऐसे ही सेवक होने चाहियें। कबक[4] चलाने के दिन उसने कबक चलाने पर शाह से पुरस्कार प्राप्त किया।

(५) रोशन कोका, हजरत जहाँबानी जन्नत आशियानी का कूकुल्ताश था। यात्रा के समय उसे जवाहरात सौंप दिए गए थे। उसके अपहरण के कारण उसे कुछ दिन के लिए बन्दी बना दिया गया किन्तु क्षमा-याचना पर मुक्त कर दिया गया।

१ हेलमन्द नदी के दायें तट पर; (ग्रमेंकिन, पृ० ३०४)।
२ 'निस्बते उख़ूवते अख्याफ़ी व हजरत मरियम मकानी दाश्त'।
३ उसकी माता का नाम शाद बेगम था। वह हिरात के सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा की पुत्री थी। आदिल सुल्तान महदी सुल्तान का पुत्र था। (बेवरिज, पृ० ४४७)। आदिल सुल्तान के लिये देखिये **बाबर नामा**, पृ० १४४, १५२, १५५, १५६, १५८, २१०, २४३, २४६, २६६।
४ एक प्रकार की बाण चलाने की प्रतियोगिता जिसमें कद्दू लटका दिया जाता था और धनुर्धारी उस पर बाण से निशाना लगाते थे।

(६) हसन बेग, महरम कोका का भाई, यद्यपि वह मीर्ज़ा कामरान का कूकुल्ताश था किन्तु सर्वदा हज़रत जहाँबानी की सेवा में उपस्थित रहा करता था। वह स्वाभाविक रूप से बडा उदार, सदाचारी एव निष्ठावान् था। चौसा पार करते समय उसकी मृत्यु हो गई।

(७) हिरात का ख्वाजा मक्सूद। वह बडे पवित्र स्वभाव का एव पवित्र जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति था। सच्चाई, नेकी, ईमानदारी, एव निष्ठा सरीखे गुणो से सुशोभित था। वह हज़रत मरियम मकानी के परखे हुए सेवको में से था और बडी तत्परता से उनके हौदज की सेवा करता था। उसके दो भाग्यशाली पुत्र हुए जो हज़रत शाहशाह के कूकुल्ताश थे। एक सैफ खा[1] जिसने गुजरात विजय के वर्ष रिकाब के अधीन शहादत का स्वादिष्ट प्याला चक्खा। दूसरा जैन खा कोका[2] जो स्वामी-भक्ति, निष्ठा, बुद्धिमत्ता, सूझ-बूझ, विवेक, प्रतिभा एव पौरुष से सुशोभित और हज़रत शाहशाह की कृपायुक्त दृष्टि का पात्र है, उनके उत्कृष्ट अमीरो म सम्मिलित है।

(८) ख्वाजा गाज़ी तबरेजी जिसे सियाक[3] की गूढ बातो एव गणित के रहस्यो का पूर्ण ज्ञान था। वह किस्सों एव इतिहास से भी भली-भाँति परिचित था। जब उत्कृष्ट सेना लाहौर से सिन्ध की ओर पहुँची तो वह मीर्ज़ा कामरान से पृथक् हो कर, उनकी सेवा में उपस्थित हुआ। उसे मुशरिफे दीवान[4] नियुक्त किया गया। इसके बाद वह बहुत समय तक ससार को शरण प्रदान करने वाले दरबार से पृथक् रहा। अपनी अतिम अवस्था में जब उसकी शक्ति एव होश हवास पतनशील हो गये तो उसने हज़रत शाहशाह के दरबार की चौखट के चुम्बन का सौभाग्य प्राप्त किया।

(९) ख्वाजा अमीनुद्दीन महमूद हरवी[5] सियाक एव हिसाब किताब के ज्ञान मे अद्वितीय था। वह खत शिकस्त[6] बडे ही अच्छे ढग से लिखता था। राजस्व एव हिसाब किताब को समझने[7] में बाल की खाल निकाला करता था। हज़रत जहाँबानी ने उसे कुछ समय के लिए हज़रत शाहशाह का बख्शी नियुक्त कर दिया था। कयामत तक स्थायी रहने वाले हज़रत शाहशाह के राज्य में उसे बडा उच्च पद प्राप्त हुआ और वह ख्वाजा जहाँ की उपाधि द्वारा सम्मानित हुआ।

(१०) बाबा दोस्त बख्शी भी सियाक के ज्ञान में अद्वितीय एव बडी सूझ बूझ का स्वामी था। वह सर्वदा दीवानी[8] के कार्यों एव हिसाब किताब में सलग्न रहता था।

१ देखिये —H. Blochmann · *Ain-i-Akbari* (१९३९ ई०) पृ० ३७८।
२ देखिये —H Blochmann · *Ain-i Akbari* (१९३९ ई०) पृ० ३६७ ३६९।
३ हिसाब किताब का ज्ञान, एकाउन्टेंसी।
४ मुशरिफ . राज्य की आय की देख-रेख रखने वाला अधिकारी।
५ हिरात का।
६ लिपि की एक शैली।
७ 'फ़िक़ायते अनवान व दरायते मुहासिबात मू शिगाफी मी कर्द'।
८ वित्त विभाग।

(११) दरवेश मकसूद बंगाली हिरात की जियारत गाह से सम्बन्धित था और सरल स्व-(२२३) भाव का ईमानदार व्यक्ति था। उसे बंगाला में जहाँगीर कुली बेग के साथ नियुक्त कर दिया गया था और वह समस्त लोगों में अकेला था जो बच कर वापस आ सका और अभिवादन का सौभाग्य प्राप्त किया। हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी उसके प्रति विशेष रूप से कृपा-दृष्टि रखते थे। बाद में वह हज़रत शाहंशाह का भी बड़ा अधिक कृपा-पात्र बन गया और दीर्घ काल तक शुभ-चिन्तका के साथ जीवित रहा।

(१२) हसन अली ईशक आका वीरता एवं पौरुष में अद्वितीय था और उसने बड़ी योग्यता से सेवायें की थीं। इस कारण कि याकूब नामक हज़रत जहाँबानी के एक विश्वास-पात्र ने कुछ अपशब्द कह दिये, कुछ धृष्ट किज़िलबाशों ने उस जवान की तबरेज के समीप एक उजाड़ स्थान पर छिप कर हत्या कर दी। क्योंकि हसन अली तथा उसमें शत्रुता थी, अतः यह प्रसिद्ध हो गया कि इस दुष्टता का कारण वह था। इस कारण वह उत्कृष्ट सेना के साथ न रह सका और एराक में ठहर गया। जब काबुल राज्य का केन्द्र बन गया तो वह चौखट का चुम्बन करके सम्मानित हुआ।

(१३) अली दोस्त बारबेगी उपर्युक्त हसन का पुत्र था। वह बाद में मशहदे मुकद्दस में हज़रत जहाँबानी की सेवा में सम्मिलित हो गया। प्रारम्भ से अन्त तक वह हर प्रकार से सेवा एवं प्राण न्योछावर करने का प्रयत्न करता रहा।

(१४) इबराहीम ईशक आका दरबार के प्रति प्राण न्योछावर करने वालों में से था।

(१५) शेख यूसुफ चोली जो अपने आप को शेख अहमद यसवी[२] की सतान बताता था, बड़े सरल स्वभाव का तथा चरित्रवान् व्यक्ति था।

(१६) शेख बहलूल जो अपने आप को तुर्क मशायख[३] की सन्तान से बताता था। वह बड़ा ही योग्य सेवक था।

(१७) मौलाना नूरुद्दीन जिसे हिन्दसे[४] ज्योतिष एवं उस्तुरलाब का ज्ञान था। वह काफ के काजी बुरहान के साथ हज़रत गेती सितानी फिरदौस मकानी की सेवा में धरती चुम्बन करके सम्मानित हुआ। वह हज़रत जहाँबानी के दरबारियों में से था। हज़रत शाहंशाह ने उसे तरखान की उपाधि द्वारा सम्मानित किया था।

(१८) मुहम्मद कासिम मौजी, बदख्शाँ में हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी की सेवा में

१ यह शब्द स्पष्ट नहीं। मूल में हिरात है। सम्भवतः "हर प्रान्त" अथवा "हर दशा में" से तात्पर्य होगा।
२ वे नक़्शबन्दी सिलसिले के तथा यसी (तुर्किस्तान का प्रसिद्ध नगर) के निवासी थे। उनका निधन ५६२ हि० (११६६-६७ ई०) में हुआ।
३ सन्तों।
४ गणित।

सम्मिलित हुआ। वह मीर मुहम्मद[1] जालावान[2] का सम्बन्धी था और बदख्शाँ मे जाला वानी की सेवा किया करता था। हिन्दुस्तान मे हजरत शाहशाह् के कयामत तक रहने वाले राज्य में मीर बहर[3] हो गया। यमुना-नदी के तट पर उसका एक हृदयग्राही भवन था। वही उसकी अवस्था का बेडा, मृत्यु के तट पर पहुँचा।

(१९) हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी[4], दरबार के प्राचीन सेवको में था।

(२०) सैयिद मुहम्मद पवना, बडा वीर एव हाथ का बडा कुशल[5] था। हिरात में उसने कबक जीत लिया था।

(२१) सैयिद मुहम्मद काली हरवी, जिसे बक्खर में कुछ दिन के लिए मीर अद्ल बना दिया गया था। उसे सम्मानित दरबार में बैठने का अधिकार प्राप्त था।

(२२) हाफिज सुल्तान मुहम्मद रख़ना, बक्खर में फकीरो के वस्त्र मे पहुँचा और (जहाँ-बानी की सेवा मे) सम्मिलित हुआ। वह मार्मिक शेर पढता था। शनै शनै राजदूत (२२४) नियुक्त हो गया। वह हजरत शाहशाह् के कयामत तक स्थायी रहने वाले राज्य मे बडा विश्वासपात्र हो गया। उसने सहरिन्द मे एक बडे हृदयग्राही उद्यान का निर्माण कराया जो प्रशसा के योग्य है।

(२३-२४) मीर्जा बेग बिलोच जिसका पिता खुरासान में हज़ारा बिलोच था, तथा उसका पुत्र मीर हुसेन दोनो ही बडे भाग्यशाली सेवका म से थे।

(२५) ख्वाजा अम्बर नाजिर हज़रत गेती सितानी फिरदौस मकानी का विश्वासपात्र ख्वाजा-सरा था। हजरत शाहशाह ने उसे एतबार खा की उपाधि प्रदान कर दी थी। वह हजरत मरियम मकानी के सम्मानित हौदज के परदा दारो मे स था।

(२६) आरिफ तूशकची[6] ममलूको[7] में से था और सैयिद होने का दावा किया करता था। हजरत शाहशाह की कृपा द्वारा उसे बहार खा की उपाधि प्राप्त हुई और उत्कृष्ट सेवा द्वारा सम्मानित हुआ।

निष्ठावान् दासो एव हितैषी सेवका में निम्नांकित थे —

(१) मेहतर खा खजीनादार[8]

१ हिन्दुस्तान में १५२८ ई० में गगा नदी पर पुल बनाने के कारण वह बाबर द्वारा पुरस्कृत हुआ था। (**बाबर नामा**, पृ० २६४)। उसे नदी को पार कराने का अच्छा अनुभव था। (**बाबर नामा**, पृ० ३२७)।

२ नाविक, वह अधिकारी जो नौकाओं, पुल इत्यादि तथा नदी पार कराने का प्रबन्ध करता था।

३ नौकाओं तथा जहाजों इत्यादि का प्रबध करने वाला मुख्य अधिकारी।

४ वह अधिकारी जो शाही घोडों इत्यादि को आरास्ता व बधया करवाता था।

५ सम्भवत निशाना लगाने में।

६ वस्त्रों एव बिछौनों के भडार का मुख्य अधिकारी। **आईने अकबरी** में देखिये 'आईने फरकीराक खाना व तूशक खाना'।

७ क्रय किये हुये अथवा युद्ध में बन्दी हो जाने के बाद जो लोग दास बना लिये जाते थे।

८ कोषाध्यक्ष।

(२) मेहतर फाखिर तूशकची
(३) मुल्ला बिलाल कितावदार[१]
(४) मेहतर तीमूर शरवतची[२]
(५) मेहतर जौहर आफ़तावची[३]
(६) मेहतर वकीला खजाची
(७) मेहतर वासिल
(८) मेहतर सुम्बुल मीर आतश
(९) सुल्तान मुहम्मद करावल बेगी[४]
(१०) अब्दुल वह्हाव साहिबे तवाक[५]
(११) जवाई वहादुर
(१२) तूलक यातिश नवीस[६]।

हे भाग्यशाली प्रतापी लोगो ! तुम धन्य हो, कारण कि तुम अपने सत्सकल्प एव दृढता के कारण परीक्षा एव कष्टो के मार्ग में दृढ रहे और तुमने अपने आश्रयदाता की अन्त तक सेवा की।

शेर

'मुझे ज्ञात नही कि मित्र लोग किस कारण पीछे है,
कारण कि मर्द लोग सेवा द्वारा उन्नति करते है।'

हजरत जहांबानी जन्नत आशियानी की पवित्र सेना का एराक से वापस होना और हजरत शाहंशाह का कन्धार से कावुल को प्रस्थान

जव यह प्रसिद्ध हो गया कि हजरत जहांवानी ने ऐश्वर्य एव वैभव के देश पर अपनी छाया डाली है और कावुल, कन्धार तथा उस क्षेत्र में शाही सेना के प्रस्थान के समाचार प्राप्त हुए तो विजय के शीतल पवन के प्रवाह में आशा की कलियो के खिलने का आसरा होने लगा और व्याकुल व्यक्तियो की दृढता की नहर से जो जल निकल चुका था, पुन वापस आने लगा[७]।

१ पुस्तकालयाध्यक्ष।
२ वह अधिकारी जो बादशाह के प्रयोग के शरवत एव पेय का प्रबन्ध करता था।
३ आफ़तावा (वह लोटा जिसमें दस्ता हो) रखने वाला। उसका कर्तव्य बादशाह का मुंह-हाथ धुलाना होता था। जौहर तज़किरतुल वाकेआत का लेखक था।
४ शिकार का प्रबन्ध करने वाले अधिकारी। वे लोग भी जो मुख्य सेना के आगे आगे शत्रुओं का पता लगाने एवं अन्य प्रबन्ध हेतु चलते थे करावल कहलाते थे।
५ भोजन का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी।
६ मुशी जो रात के पहरे की सूची रखते थे।
७ अर्थात् लोग प्रोत्साहित एव दृढ हो गये।

शेर

'आदि काल की उदारता ने अपार भंडार से,
नगर में अपने आगमन की प्रसिद्धि फैलाई।
निराश लोगों की आशा की खेती खिल उठी,
असफल लोगों की सफलता के उद्यान हरे-भरे हो गये।'

मीर्ज़ा कामरान का अकबर को काबुल बुलवाना

मीर्ज़ा कामरान की दशा इस प्रसिद्धि के कारण अस्त व्यस्त हो गई। इस समय जब कि सावधानी एवं पश्चाताप का अवसर निकल चुका था, उसने फिर से दुष्टता प्रारम्भ कर दी और नीच विचारों में ग्रस्त रहने लगा। उसने सर्वप्रथम खिज्र हज़ारा के भाई तथा कुरबान करावल (२२५) बेगी को काबुल से इस आशय से भेजा कि वह उस दैवी नूर द्वारा पोषित अर्थात् हज़रत शाहंशाह को कन्धार से काबुल ले आये। जब उसके दूत कन्धार पहुँचे तो मीर्ज़ा अस्करी ने हज़रत शाहंशाह के भेजने के विषय में अपने विश्वास-पात्रों से परामर्श किया। कुछ लोगों ने, जो बुद्धिमान् थे, कहा कि, "उनका भेजना ठीक नहीं। यह उचित होगा कि जब हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी की उत्कृष्ट सेना निकट पहुँचे तो राज्य के पौधे को आदरपूर्वक उनके पास भेज दिया जाय और सौभाग्य की वाटिका के इस गुलदस्ते द्वारा अपने अपराधों की क्षमा याचना की जाय।" कुछ अन्य लोगों ने कहा कि, "राज्य के हित में यही उचित है कि उन्हें मीर्ज़ा कामरान के पास भेज दिया जाय और मीर्ज़ा को सतुष्ट रक्खा जाय कारण कि हमारी कुकृतियाँ ऐसी हैं कि हम हज़रत जहाँबानी को किसी प्रकार मुंह नहीं दिखा सकते।"

मीर्ज़ा अस्करी का अकबर को काबुल भेजना

अन्त में मीर्ज़ा ने उस परामर्श को, जो उचित था, स्वीकार न किया और शीत ऋतु एवं बरफ तथा वर्षा की अधिकता के बावजूद उन्हें काबुल भेज दिया। उनकी पवित्र बहिन बख्शी बानो बेगम[1], शम्सुद्दीन मुहम्मद गज़नवी जो अतगा खाँ की उपाधि द्वारा सुशोभित था, अदहम खाँ की माता माहम अनगा, मीर्ज़ा अजीज़ कूकुल्ताश की माता जीजी अनगा एवं सेवकों का अन्य समूह उनकी सम्मानित सेवा में रवाना हुआ। इस यात्रा मे ईश्वर द्वारा आश्रय प्राप्त नूर[2] को मीरक के नाम से पुकारा जाता था ताकि कोई कहीं उन्हें पहिचान न ले। उनकी सम्मानित बहिन को बीजा कहा जाता था।

अकबर के चमत्कार

जब वे कलात[3] पहुँचे तो रात्रि मे एक हज़ारा के घर में ठहरे। उनके भाग्यशाली ललाट

१ सौतेली बहिन। उसका विवाह सर्वप्रथम मीर्ज़ा सुलेमान के पुत्र इब्राहीम से हुआ। तदुपरान्त शरफुद्दीन हुसेन से कर दिया गया।
२ अकबर।
३ कलाते ग़िलज़ई।

से श्रेष्ठता का जो प्रकाश प्रकट हो रहा था तथा सौभाग्य की जो छटा दृष्टिगत थी, उसे देख कर लोग उन्हे पहचान गये। उस रात्रि के बाद प्रात काल उस घर के स्वामी ने बताया कि शाहजादे को भी यही ठहराया गया था। जैसे ही खिज्र खा के भाई ने घर के स्वामी से यह बात सुनी, वह तत्काल चल खडा हुआ और शीघ्रातिशीघ्र गजनी की ओर बढा। भाग्यशाली रिकाब के सेवक क्षण क्षण पर बाल्यावस्था मे ही उनके गौरव का निरीक्षण किया करते थे और उनकी आश्चर्यजनक बातो को देख देखकर ईश्वर की लीला पर स्तब्ध रहते थे।

अकबर और दीपक

इनमे से एक बात यह है कि जब उन्होने गजनी से प्रस्थान किया और एक मंजिल पर पडाव हुआ तो उस घर का दीपक बुझ गया और घर मे अधेरा हो गया। हजरत शाहशाह अपनी प्रकृति के नूर से ससर्ग के कारण अधकार से घबडाकर रोने लगे। दाइया एव दूध पिलाने वालियो ने नाना प्रकार से तसल्ली देते हुए उनके हृदय को हाथ में लेना चाहा किन्तु कोई लाभ न हुआ। जैसे ही दीपक लाया गया हजरत का पवित्र हृदय दीपक के चेतनावर्धक प्रकाश (२२६) को देखकर सतुष्ट हो गया और प्रसन्नता का प्रकाश उनके मुख से चमकने लगा। उनके द्वारा अतरग एव बहिरग मे अन्धकार के विनाश एव नूर की वृद्धि का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है।

अकबर का काबुल पहुँचना

जब हजरत शाहशाह के धार से काबुल पहुँचे तो मीर्जा कामरान ने सौभाग्य की वाटिका के उस पौधे को इफ्फत निकाब[1] हजरत गेती सितानी फिरदौस मकानी की बहिन खानजादा बेगम के घर ठहराया और दूसरे दिन शहरआरा नामक उद्यान मे एक भव्य सभा का आयोजन करके हजरत (शाहशाह) से भेंट की।

इबराहीम मीर्जा से हज़रत शाहशाह का मल्ल-युद्ध और सौभाग्य के प्रताप से नक्कारे को बजाना

जब मीर्जा कामरान ने प्रताप की वाटिका के उस सीधे सरो को शहरआरा उद्यान मे देखा तो उनके चमकते हुए ललाट का, जिससे सौभाग्य एव प्रताप का प्रकाश चमकता था, निरीक्षण करके अपने दुर्भाग्य के कारण बडा कुपित हुआ। क्योकि ससार को शोभा प्रदान करने वाले परमेश्वर की इच्छा यह थी कि राज्य के सहायको की प्रसन्नता प्राप्त हो और मीर्जा के अतरग एव बहिरग के पतन एव उसके अस्त-व्यस्त होने के साधन एकत्र हो, अत मीर्जा जिस बात को अपनी प्रसन्नता की पूजी समझता था वही उसके दुख का साधन बन जाती था। इस प्रकार जिस दिन मीर्जा ने जश्न का आयोजन किया था उस दिन हजरत शाहशाह को अपने ऐश्वर्य एव गौरव के प्रदर्शन हेतु बुलवाया। सयोग से एक नक्शी नक्कारा उसके पुत्र इबराहीम मीर्जा के

१ सतीत्व का कुब्बा अथवा सतीत्व में सर्वश्रेष्ठ।

लिए शब बरात[1] के आनन्द मगल के लिए प्रथानुसार तैयार करके लाया गया था। हजरत शाहशाह उस नक्कारे की ओर आकृष्ट हुए। इसका कारण यह था कि उनके यशस्वी नाम पर राज्य-व्यवस्था एव विश्व-विजय का नक्कारा बजने वाला था और देशो के पालन-पोषण एव ससार को शोभा प्रदान करने वाले बाजे उनके महल की छत पर गूजने वाले थे। कृतघ्न मीर्जा नक्कारा उनको न देना चाहता था। यह सोचकर कि मीर्जा इबराहीम हजरत (शाहशाह) से बडा है और देखने में अधिक बलवान है, उसने यह शर्त लगाई कि मल्लयुद्ध एव जोर आजमाई उपरान्त जिसकी विजय होगी उसी को नक्कारा प्रदान किया जायगा। हजरत (शाहशाह) इस कारण कि उन्हे दैवी सहायता और ईश्वर की ओर से शक्ति प्राप्त थी, मीर्जा कामरान के ऐश्वर्य तथा मीर्जा इबराहीम की अधिक अवस्था की चिन्ता किए बिना इस शर्त को सुनकर, जिसे मीर्जा (कामरान) ने अपनी खुशी की पूजी बना रक्खा था, प्रसन्न हो गए और मीर्जा के दुख को बढाने का साधन बन गए। यद्यपि इस प्रकार की बाते उस दशा में बडी आश्चर्यजनक ज्ञात होती है तथापि वे अपने यश की बाहुओ मे, जिन्हे दैवी शक्ति की सहायता प्राप्त थी, अल्पावस्था के बावजूद दैवी प्रेरणा एव ईश्वर-प्रदत्त शिक्षा मे तत्काल दामन लपेटकर तथा आस्तीन चढा कर वीर मर्दो के समान अग्रसर हुए और अनुभवी पहलवानो एव कुश्ती लडने वालो के नियमानुसार गुथ गए तथा इबराहीम मीर्जा की कमर के पीछे हाथ ले जाकर उसे इस प्रकार उठाकर भूमि पर (२२७) पटक दिया कि दरबार वाले वाह वाह करने लगे और निकट तथा दूर के सभी लोग शाबाशी का नारा लगाने लगे। यह हजरत शाहशाही जिल्ले इलाही[2] की विजय एव सफलता का प्रथम नक्कारा था जो भूमि पर तथा आकाश के नीचे बजाया गया। मीर्जा कामरान, जिसने इस कुश्ती को अपने हृदय मे अपने तथा हजरत जहाबानी के युद्ध की परीक्षा समझा था, इस अशकुन का अवलोकन करके बडा दुखी हुआ। हजरत शाहशाह के हितैषी एव सहायक इस शुभ शकुन से बाग बाग हो गए और हजरत (शाहशाह) अपनी भुजाओ के बल से सौभाग्य का नक्कारा लेकर बजाने लगे। राज्य के सहायको को इस समाचार से बडी प्रसन्नता प्राप्त हुई। मीर्जा, इस कारण कि वह खिन्न हो गया था, और उसके शकुन का पासा उसकी इच्छा के विरुद्ध पलट गया था, अपने हृदय मे प्रताप के उस किबला के विरुद्ध अनुचित एव कुत्सित बातें सोचने लगा। इन योजनाओ मे एक यह थी कि यद्यपि उस समय तक हजरत (शाहशाह) की दाइयो का दूध पीने की अवधि समाप्त न हुई थी उसने आदेश दिया कि उनका दूध छुडा दिया जाय। उसने इस बात की ओर ध्यान न दिया कि जिसे दैवी कृपा एव आकाश के आश्रय का दूध पिलाया जा रहा हो, उसे इस बात मे क्या हानि हो सकती है और सच्चे रक्षक के रक्षा-प्राप्त व्यक्ति को इन झूठी कल्पनाओ द्वारा क्या हानि हो सकती है।

१ शबे बरात अथवा १४ शाबान ९५२ हि० (२१ अक्तूबर १५४५ ई०)। सम्भवत मल्ल-युद्ध अकबर के काबुल पहुँचने के अधिक बाद में हुआ होगा अर्थात् जाडे के हिसाब से सम्भवत. १५४४ ई० के अन्त अथवा १५४५ ई० के प्रारम्भ में। यदि शाबान ९५१ हि० से तात्पर्य है तो कुश्ती १ नवम्बर १५४४ ई० को हुई होगी। यदि यह ठीक है तो अकबर हुमायूँ के ईरान से प्रस्थान के बहुत पूर्व काबुल भेज दिया गया होगा।

२ ईश्वर की छाया।

हज़रत जहांबानी जन्नत आशियानी की पवित्र सेना का गरमसीर पहुँचना तथा बुस्त के किले की विजय

हुमायूं द्वारा बुस्त पर अधिकार

समाचारो के जानकारो तथा घटनाओ का ज्ञान रखने वाला से, जिनकी सचेत आँखें खुली हैं और जिनमें शिक्षा का आंजन लगा है, यह बात छिपी न रहनी चाहिए कि जब हज़रत जहाँबानी की उत्कृष्ट पताकाएं एव ईरान से कुमक गरमसीर पहुँची तो अली सुल्तान तकलू को निष्ठावान् वीरो के एक समूह के साथ बुस्त[1] के किले को विजय हेतु, जो गरमसीर की विलायत में तथा कन्धार के अधीन है, नियुक्त किया। शाहम अली जलायर, तीमूर जलायर के पिता एव मीर-खल्ज ने, जो वहाँ मीर्ज़ा कामरान की ओर से जागीरदार थे किले को दृढ बना लिया। पादशाही सेना ने जाकर किले का अवरोध कर लिया। युद्ध के समय किले के ऊपर से अली सुल्तान के बन्दूक (की गोली) लगी और तत्काल उसकी मृत्यु हो गई। उसके सैनिको ने उसके १२ वर्षीय पुत्र को उसके पिता के स्थान पर सेनापति बना लिया और अधिक से अधिक प्रयत्न करने लगे। अली सुल्तान की मृत्यु एव उसके स्थान पर उसके पुत्र की नियुक्ति के समाचार ईरान के वाली को लिख भेजे गए। कुछ समय उपरान्त जो प्रबन्ध किया गया था उसकी स्वीकृति प्राप्त हो गई। शनै शनै जब किले वाले व्याकुल हो गए और किसी भी स्थान से सहायता न प्राप्त हुई तो किले में जो लोग घिरे थे, वे क्षमा याचना तथा विनती करने लगे। उन लोगो को शाही कृपा के कारण हानि न पहुँचाने का वचन दे दिया गया और उन्होने किला समर्पित कर दिया। जब सम्मानित राज्य के सहायको को किला प्राप्त हो गया तो हज़रत जहाँबानी ने स्वय उपर्युक्त किले के समीप (२२८) पडाव किया। शाहम अली एव मीर खल्ज गरदन में निपग लटकाये धरती-चुम्बन करके सम्मानित हुए। हज़रत जहाँबानी ने अपने स्वाभाविक दया-भाव के कारण उनके अपराधो को क्षमा करके उन्हे दरबार के सेवको में सम्मिलित कर लिया।

हुमायूं की सेना के एक दल से कन्धार वालो का युद्ध

उसी मंज़िल पर यह प्रसिद्ध हो गया कि मीर्ज़ा अस्करी अपने ख़ज़ाने को लेकर काबुल भाग जाना चाहता है। किज़िलबाशो एव दरबार के सेवको के एक समूह ने आग्रह किया कि उसका पीछा करने की अनुमति दी जाय। यद्यपि हज़रत जहाँबानी को इस समाचार के झूठे होने एव मीर्ज़ा अस्करी के कन्धार के किले की प्रतिरक्षा के विषय में दृढ सकल्प का सच्चे समाचार वाहको द्वारा विश्वास हो गया था किन्तु वे अपनी स्वाभाविक कृपा के कारण, चाहे वह समाचार सच्चे ही क्यों न हो, यह न चाहते थे कि लोगो को उसका पीछा करने की अनुमति दी जाय, परन्तु उन लोगो ने सयम को त्यागकर एक प्रकार की अनुमति ले ली और इस आशय से चल

१ ज़मीनदावर का मुख्य नगर तथा अरगन्दाब एव हेलमन्द के सगम पर। (एल्फिन्स्टन भाग २, पृ० ३०४)। हेलमन्द के पूर्व में मानचित्र में किलये बुस्त। याकूत के अनुसार बुस्त काबुल के अधीन है। इब्ने हौक़ल ने इसे सिजिस्तान में दिखाया है। अबुलफ़ज़ल ने आईने अकबरी में इसे कन्धार में नहीं दिखाया है। (बेवरिज, पृ० ४५७)।

खडे हुए कि कहीं मीर्जा अस्करी हाथ से न निकल जाय। जब वे शीघ्रातिशीघ्र बढते हुए अव्यवस्थित दशा में कन्धार के समीप पहुँचे तो मीर्जा के प्रस्थान के समाचार झूठ निकले। सेना के एक दल ने बाहर निकलकर उनसे युद्ध किया और जबजन एव तोप इत्यादि किले के ऊपर से चलाई गईं। किजिलबाशा का एक बहुत बडा समूह तथा अन्य लोग मार डाले गए और एक समूह आहत हुआ। ख्वाजा मुअज्जम हैदर सुल्तान हाजी मुहम्मद पुत्र बाबा कश्का, अली कुली वल्द हैदर सुल्तान, शाह कुली नारजी और चगताई बीरा तथा किजिलबाश बहादुरों के एक समूह ने वीरता एव पौरुष प्रदर्शित किया और शत्रु को भगाकर किले में पहुँचा दिया। यद्यपि जमील बेग ने जो मीर्जा अस्करी के विश्वास पात्रों म से था, आदमी भेजे कि मीर्जा अस्करी स्वय उतर आये और कहलाया कि क्योंकि थोडी सी सेना रह गई है अत यदि इन लोगा को पराजित कर दिया जायगा तो काय सरल हो जायगा, मीर्जा ने उसकी बात पर ध्यान न देकर सदेश भेजा कि, इन लोगों को हमारी सेना की सख्या एव योग्यता का ज्ञान है। आने वाली सेना केवल इन्ही पर सीमित न होगी अपितु इन लोगो ने गुप्त स्थानो पर कुमक छिपा रक्खी होगी ताकि हमें नष्ट कर दें। मैं धोखे म न आऊँगा और किले को दृढ करके मीर्जा कामरान के आगमन तक युद्ध को स्थगित रक्खूगा। क्योंकि दैवी कृपा हजरत जहाँबानी की विजयी सेना की सहायता कर रही थी अत मीर्जा कामरान का आगमन सम्भव न हो सका और कुछ ऐसी विजये जो असख्य विजयो की प्रस्तावना थी प्राप्त हो गईं। उस दिन किले वालो में से बाबाये सहरिन्दी[१] जो मीर्जा कामरान के प्रतिष्ठित निष्ठावानो म से था मारा गया।

हजरत जहाँबानी जन्नत आशियानी की पवित्र सेना का कन्धार पहुँचना, उसका अवरोध तथा विजय

जब उत्कृष्ट सेना के निष्ठावान वीरो को ऐसी (महान्) विजय प्राप्त हो गई तो हजरत (२२९) जहाँबानी जन्नत आशियानी, ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करके इस सुखद घटना के ५ दिन उपरान्त शनिवार ७ मुहर्रम ९५२ हि० (२१ मार्च १५४५ ई०) को शुभ नक्षत्र म, जो नक्षत्रों में अद्वितीय था भाग्यशाली सवारी एव विजयी सेना सहित कन्धार के किले के समीप पहुँचे और माशूर[२] नामक द्वार के समीप ठहरे। उन्होंने शम्सुद्दीन अली कन्धार के काजी के उद्यान म पडाव डाला। मोर्चे बाट दिए गये और प्रबन्धक विभिन्न स्थानो पर नियुक्त कर दिये गए। नित्य प्रति दोनो ओर से योद्धा निकलकर युद्ध करते थ। एक दिन हैदर सुल्तान तथा उसके दोनो पुत्र अली कुली खा[३], बहादुर खा तथा ख्वाजा मुअज्जम ख्वाजा खिज्र[४] के सामने से शत्रुओ को भगाते

१ बायजीद के अनुसार बाबूस का भाई जो काबुल के दूसरे अवरोध क समय बन्दूक से मारा गया।

२ जुलाहों का द्वार। बाबर ९१३ हि० (१५०७-१५०८ ई०) में कन्धार विजय के समय इसी द्वार से कन्धार में प्रविष्ट हुआ था। (बाबर नामा, पृ० ८३)।

३ उसे बाद में खाने जमान की उपाधि प्रदान हुई।

४ सम्भवत ख्वाजा खिज्र के मकबरे से तात्पर्य है।

बीच में उन दोनो शाही फरमानो को प्रस्तुत किया और उस सत्संकल्प द्वारा उन दोनो सौभाग्य की तख्तियों का आदर सम्मान कराया तथा शाही तुहफे एवं उपहार उचित रूप से प्रस्तुत किए। (बैराम खां) ने मीर्जा के साथ बैठकर निष्ठा-युक्त सच्ची-सच्ची बातें कहीं। सभा के अन्त में उसने हजरत शाहंशाह की सेवा में उपस्थित होने की अनुमति ले ली और मीर्जा हिन्दाल, मीर्जा सुलेमान, यादगार नासिर मीर्जा तथा उलुग बेग मीर्जा से भी भेंट करने की आज्ञा प्राप्त कर ली। मीर्जा (कामरान) ने (बैराम खां) को विदा करके बाबूस को आदेश दे दिया कि भेंट के समय वह भी साथ रहे[१]।

बैराम खां की अकबर से भेंट

वहाँ से बैराम खां सर्वप्रथम जागरूक सौभाग्य एवं निष्ठा के साथ हजरत शाहंशाह की, जिनका मुख देखकर यदि वह इसके बदले में अपने प्राण भी त्याग देता तो उचित था, चौखट का चुम्बन करने के लिए रवाना हुआ। हजरत शाहंशाह मकतब के उद्यान में इफ्फत किबाब हजरत गेती सितानी फिरदौस मकानी की बड़ी बहिन खानजादा बेगम के पास रहते थे। माहम बेकह, जो उनकी अनगा[२] थी उस दैवी नूर के पौधे को भीतर से बाहर लाई। जो लोग उपस्थित थे उन्होंने दासता के नियमानुसार अभिवादन करके राजदूत के कर्तव्यों को पूरा किया। हजरत शाहंशाह के सौभाग्यशाली दर्शन के आशीर्वाद से बैराम खां एवं समस्त साथ वालों को अत्यधिक प्रसन्नता (२३१) हुई। दैवी नूर द्वारा, जो हजरत शाहंशाह के उत्कृष्ट ललाट में दृष्टिगत था उन लोगों के नेत्रों के प्रकाश में वृद्धि हो गई। उन लोगों ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

बैराम खां की हिन्दाल एवं मीर्जा सुलेमान आदि से भेंट

वहाँ से विदा होकर वह मीर्जा हिन्दाल के पास, जो अपनी सम्मानित माता दिलदार बेगम के घर निगरानी में रहता था, पहुँचा और कृपा-युक्त फरमान एवं खिलअत तथा विशेष घोड़ा, जो उसके लिए प्रेषित किया गया था प्रस्तुत किया। इसी प्रकार वह दूसरे दिन मीर्जा सुलेमान तथा मीर्जा इब्राहीम की सेवा में जो किले के भीतर कासिम मुखलिस[३] के घर में बन्दी थे पहुँचा। उस दिन मीर्जा कामरान के आदेशानुसार उन्हें वहाँ से निकालकर जलालुद्दीन बेग के उद्यान में, जो शहरआरा उद्यान के समीप है, पहुँचा दिया गया था। बैराम खां ने इन दोनों सम्मानित व्यक्तियों से इस उद्यान में भेंट की। हजरत जहाँबानी एवं शाह की कृपा से जो कुछ वह लाया था उसे पहुँचाकर उन्हें प्रसन्न किया। वहाँ से विदा होकर वह सियाह संग के जलके पर, जहाँ यादगार नासिर मीर्जा ठहरा हुआ था पहुँचा और उसे उसके अपराधों एवं दुष्टता की क्षमा तथा नाना प्रकार की शाही कृपाओं का आश्वासन दिलाया। इसी प्रकार उलुग मीर्जा एवं समस्त सम्मानित लोगों के पास जाकर उन नियमों के अनुसार जो बुद्धिमानों के लिए उचित एवं सावधानी की दृष्टि से प्रयुक्त हैं एक एक करके कुशल समाचार पूछे और उन्हें उत्कृष्ट कृपाओं का आश्वासन दिलाया।

१ बैराम खां की काबुल यात्रा का विवरण बायजीद ने, जो साथ था, अधिक विस्तार से दिया है।

२ धाय।

३ मीर्जा कामरान के तोशखाने का अधिकारी।

दूतो के कर्तव्यो के लिए जिन गुणो, सफाई, सच्चाई एव निष्ठा की आवश्यकता होती है, उनका पूर्णरूप से उसने पालन किया।

बैराम खा को काबुल से वापस जाने की अनुमति तथा खानजादा बेगम को कन्धार भेजना

मीर्जा कामरान ने बैराम खा का एक मास से अधिक ठहराये रक्खा, कारण कि वह न तो स्वय मे मुकाबले की शक्ति पाता था और न दुर्भाग्य के कारण सेवा में पहुँचने के लिए तैयार होता था। वह असमजस में पडा हुआ था। अन्ततोगत्वा (बैराम खा के) अत्यधिक आग्रह पर उसने उसे जाने की अनुमति दे दी। हजरत खानजादा बेगम[1] को आग्रह करके कन्धार रवाना कर दिया। दिखाने को तो इसका उद्देश्य यह था कि मीर्जा अस्करी, जो उसके कहने में नही है, को उपदेश देकर कन्धार उससे ले लें और हजरत जहाँबानी को सौप दें किन्तु वास्तव मे इसका उद्देश्य यह था कि यदि मीर्जा अस्करी के बुरे दिन आ जायें और किला राज्य के सहायकों द्वारा विजय हो जाय तो वह इफ्फत विवाव मीर्जा अस्करी की सिफारिश एव मुक्त कराने में काम आ सकें, कारण कि वह मीर्जा कामरान के आदेशानुसार प्रतिरक्षा एव युद्ध कर रहा था और किले को दृढ बनाये हुए था।

मीर्जा अस्करी द्वारा कन्धार की प्रतिरक्षा

क्योकि मीर्जा अस्करी न्याय के मार्ग मे विचलित हो गया था और उसने अपनी निष्ठा की लगाम को मीर्जा कामरान की सहायता हेतु विद्रोह एव शत्रुता के हाथो मे सौंप दिया था अत वह किले को अधिकार में रखने तथा उसकी दृढता के विषय मे पूर्ण प्रयत्न करने लगा और किले के चारो ओर बड़ी अधिक सख्या मे तोप एव तोपची लगवा दिए। वह किला वास्तव मे बडा दृढ था कारण कि वह मिट्टी का बना हुआ था और उसका तोडना बडा कठिन था। उसकी दीवार की चौडाई ६० गज[2] थी। विजयी सेना के वीरो की सख्या यद्यपि कम थी किन्तु प्रयत्न एव प्रयास (२३२) द्वारा उन्होने ऐसा पौरुष प्रदर्शित किया कि तुर्कमान लोग चकित हो गए और आश्चर्य के कारण ईर्ष्या करने लगे।

अकबर के लिये हुमायू का दुखी होना

एक दिन हजरत जहाँबानी ने एक विशेष गोष्ठी आयोजित की। उनके विश्वास-पात्र कहानियो के द्वार खोले हुए थे और सभी रवायतो के धागे हाथ मे लिए थे।[3] गोष्ठी हृदयग्राही कहानियो एव हर्षवर्धक चुटकुलो से गरम थी। वीरो की बातो की इकसीर से, पौरुष वालो

१ उमर शेख मीर्जा तथा कुतलुक निगार खानम की पुत्री एव बाबर की सगी बहिन जो उससे ५ वर्ष बडी थी। सर्वप्रथम उसका विवाह शैबानी खा (९०७ हि० । १५०१ ई०) तदुपरान्त एक साधारण व्यक्ति सैयिद हादा और फिर महदी मुहम्मद ख्वाजा से हुआ। गुलबदन बेगम ने उसका कई स्थानों पर उल्लेख किया है।

२ प्रकाशित अकबर नामा एव हस्तलिपियों में 'शस्त' है किन्तु सम्भवत अबुलफजल ने शश अथवा ६ लिखा होगा

३ किस्से कहानियाँ कह रहे थे।

के धन के खोटे खरे की परख हो रही थी।[1] जिनके पौरुष की पूजी थोड़ी थी उनके साहस की पूजी में वृद्धि हो रही थी। इस बीच में उन्हें प्रेमपूर्वक हज़रत शाहंशाह का स्मरण हो आया कि सिला-पत की नहर के उस ताजा सरो को मित्रो से पृथक् होकर शत्रुओं के मध्य में क्या दशा होगी और मूर्ख ईर्ष्यालुओं एव दुष्ट अशुभचिन्तको के उस सौभाग्य के गुलाब की झाडी के विषय में क्या विचार होगे ? अपने उस दिल से, जो दो टुकडे हो चुका था एव आशा तथा निराशा से भरा हुआ था, ईश्वर के उस दरबार में, जो व्याकुल लोगो की सफलता का साधन है, प्रार्थना का हाथ उठाकर सल्तनत के उस पवित्र वृक्ष की उन्नति एव दीर्घायु होने की प्रार्थना करने लगे। इन शब्दों से अपने हृदय के फफोला का आराम पहुँचाया —

शेर

'हे ईश्वर तू इस शाही मोती का,
दुष्टो के कष्ट से मुक्त रख।
बुद्धि की नदी से उसे सीच
विवेक के सूर्य से उसे गरमी दे।
सूर्य ने आकाश पर बहुत से चक्कर लगाये,
कि यह प्रकाश परदे के बाहर निकले।
नक्षत्रो ने अनेक शुभ दृष्टि डाला,
कि यह चन्द्र अपने बालो की लट हटा ले।
सर्वोत्कृष्ट आकाश ने बहुत से चक्कर लगाये,
कि ससार को इस प्रकाश से लाभ हो।
आदिकाल का गौरव उसे प्राप्त हो,
उसके चमकते हुए हृदय में कभी अँधेरा न हो।'

हुमायूं का अकबर की जन्म-कुंडली देखना

अपने विशाल हृदय की तसल्ली के लिए (हज़रत जहाँबानी) ने उस भाग्यशाली की जन्म-कुडली को, जो दैवी रहस्यो का सुरक्षित लौह[2] है, मँगवाकर ध्यान-पूर्वक अध्ययन किया। उनकी सलामती, दीर्घायु, उन्नति एव प्रताप तथा शत्रुओ के विनाश, अशुभचिन्तको एव कुविचारको का विवरण सौभाग्य की उस प्रस्तावना द्वारा ज्ञात हुआ। खुशी से सिर उठाकर अपनी पवित्र जिह्वा से कहा कि, "अलहम्दो लिल्लाह[3]। हृदय समस्त चिन्ताओ से पूर्णत मुक्त हो गया। आशा है कि हम शीघ्र ही उस ईश्वर के पोषित नूर के दर्शन से प्रसन्न होगे और उस भाग्यशाली के प्रताप के आशीर्वाद से समस्त शत्रुओं पर विजय एव सफलता प्राप्त करेंगे।' उन्होंने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए सिज्दा करके किले के विजय की व्यवस्था की। मीर्जा अस्करी

१ पौरुष का पता चल रहा था।
२ भाग्य की सुरक्षित तख्ती।
३ ईश्वर प्रशसनीय है।

(२३३) किले की प्रतिरक्षा के विषय में अत्यधिक परिश्रम एव योग्यता का प्रदर्शन करता रहता था और हर रोज तथा हर रात्रि में मोर्चे वदलता रहता था कि कही ऐसा न हो कि मोर्चे वाले मिल जायें और उसने जो व्यवस्था कर रक्खी है उसे भग कर दें।

कन्धार के किले का सफल अवरोध

जब अवरोध में अधिक समय लग गया और पादशाही सेवको में से कोई भी (हजरत जहाँबानी से) आकर न मिला तो किजिलबाशी अमीर अपने प्रयास को त्यागकर वापसी के विषय में सोच विचार करने लगे। हजरत जहाँबानी ने उनकी दशा के राजनामचे में यह बात पढ़कर किले को अधिकार में करने के विषय में अधिक से अधिक प्रयत्न एव प्रयास प्रारम्भ कर दिये। जिस मोर्चे पर भाग्यशाली खेमे लगे थे वहाँ से एक रात्रि में प्रस्थान करके प्राचीन कन्धार की ओर से द्वार के निकट होते हुए इतनी दूर पर, जहाँ हाथ से फेंकने पर पत्थर पहुँच सकता था और जिसे चहारदा कहते थे, एक मोर्चा दृढ किया। दूसरे दिन प्रात काल जब तुर्कमानो को इस बात की सूचना मिली तो किले पर अधिकार जमाने के विषय मे उनका दिल बढ गया और सब लोग चारो ओर से सिमिटकर सामने आ गए और घेरे को सकरा बना लिया।

खानजादा बेगम के आगमन तक मीर्जा अस्करी द्वारा मुहलत की प्रार्थना

मीर्जा अस्करी परेशान होकर विनय एव आग्रह करने लगा और उसने अत्यधिक व्याकुलता एव अस्थिरता प्रदर्शित करते हुए निवेदन कराया कि, 'उस समय तक जब तक कि इफ्फत किबाब[1] आ न जायें मुझे मुहलत दी जाय ताकि उनके द्वारा आश्वासन प्राप्त करके सेवा में उपस्थित हो सकू।" उसने अपने प्रार्थना-पत्र ख्वाजा दोस्त खाविन्द के भाई मीर ताहिर द्वारा पवित्र सेवा में भेजे। हजरत जहाँबानी ने, जो उदारता एव कृपा की खान थे, उसकी प्रार्थना स्वीकार करके किले के आक्रमण पर जोर न दिया। मीर्जा अपनी दुष्टता के कारण दिखाने में तो दीनता प्रदर्शित करता रहा किन्तु हृदय से वह किले को दृढ बनाने की कोशिश करता रहा। हजरत इफ्फत किबाब एव बैराम खा के पहुँचने के उपरान्त वह पुन विरोध करने लगा। यद्यपि हजरत मेहदे मुअल्ला[1] ने बडा प्रयत्न किया कि मीर्जा अस्करी को दुष्टता से रोक कर पवित्र चौखट के चुम्बन के सम्मान द्वारा सम्मानित करें किन्तु चूकि उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी थी उसने उनके उत्तम उपदेश किसी प्रकार स्वीकार न किए और अपनी धृष्टता एव उद्दडता पर दृढ रहा और शत्रुता की अधिकता के कारण हजरत मेहदे मुअल्ला को किले के बाहर निकलकर हजरत जहाँबानी के सम्मानित शिविर की ओर न जाने दिया। हजरत जहाबानी को मीर्जा की इस दुष्टता से उसकी शत्रुता एव उसके विरोध का परिचय मिल गया। वे ईश्वर की उस अनुकम्पा पर, जो ईश्वर के पहुँचे हुए लोगो का आश्रय है, भरोसा करके किले की विजय का अधिक प्रयत्न करने लगे।

१ खानजादा बेगम से तात्पर्य है।

उलुग़ बेग मीर्ज़ा एवं कुछ अन्य लोगो का काबुल से भागकर हुमायू के पास पहुँचना

इसी बीच में उलुग बेग मीर्ज़ा पुत्र मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, जो सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के नातियों में से था, शेर अफगन बेग वल्द कूच बेग, फजील बेग मुनइम खा का भाई, मीर बरका (२३४) एव मीर्ज़ा हसन खा मीर अब्दुल्लाह का पुत्र जो सब्जवार के वनी मुख्तार के सैयिदो में से था, एव एक अन्य समूह ने काबुल से आकर अपने सौभाग्य की सहायता से चौखट चूमने का सम्मान प्राप्त किया। उनके भाग आने का कारण यह था कि मीर्ज़ा कामरान ने उलुग मीर्ज़ा को बन्दी बना लिया था और सावधानी की दृष्टि से प्रत्येक सप्ताह एक व्यक्ति की देख-रेख में उसे दे देता था। जब शेर अफ़गन की बारी आई तो वह भी मीर्ज़ा (कामरान) से भयभीत था। उसने उस समूह को मिला लिया और उलुग मीर्ज़ा को लेकर (हज़रत जहाँबानी) की सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त कर लिया। हजरत जहाँबानी ने अपनी अपार कृपा के कारण उन्हे सम्मानित करने के लिए खिलअत प्रदान की और उलुग मीर्ज़ा को ज़मीनदावर दे दिया। कासिम हुसेन सुल्तान भी यद्यपि इन्ही लोगो के साथ चला आया था किन्तु एक रात म मार्ग भूल गया और हजारा लोगों के हाथ पड गया। कुछ दिन उपरान्त वह लुटा हुआ, नगे पाँव, तथा पैर में छाले लिए पहुँचा। हजरत जहाँबानी ने कहा कि, 'तेरी निष्ठा में अब भी कोई कमी रही होगी जो तू मार्ग भूल गया और इतने कष्ट में पडा।"

अस्करी के सहायको का भागकर हुमायू के पास पहुँचना

इसके उपरान्त ददा[1] बेग हजारा अपने सैनिको एव परिजनो सहित स्वय उपस्थित हुआ और काबुल के उच्च अधिकारियो के पास से भी प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुए। किज़िलबाश जो चिन्तित थे, सतुष्ट हो गए और पुन पूर्णरूप से अत्यधिक परिश्रम एव प्रयत्न करने लगे। किले की प्रतिरक्षा में विघ्न पडने लगा और दृढता का पाँव प्रतिरक्षा के कगूरे से हिलने लगा। किले के निवासी रोजाना मीर्ज़ा अस्करी की दशा के विषय में लिख लिखकर किले की दीवार से यह फेंका करते थे कि, "किले वाले दुर्दशा को प्राप्त हो गए हैं। वे युद्ध में पौरुष से काम लें और किले की विजय के सम्बन्ध में साहस की कमर को कसकर बाँधे रहे तथा प्रयत्न की ओर से हाथ न खींचे, कारण कि किले वाले व्याकुल हो चुके हैं।' अन्ततोगत्वा कार्य इस सीमा को पहुँच गया कि मीर्ज़ा अस्करी की सेना के उच्च पदाधिकारी एक-एक करके किले के बाहर कूद-कूदकर भागने लगे और तोपची एव पदाती भी ऊपर से फाँदने लगे। सर्वप्रथम खिज्र ख्वाजा खा[2] उस मोर्चे के समीप, जहाँ भाग्यशाली शिविर था, किले से फाँद कर पहुँचा और दीनता का गिरेबान विनय के हाथो में पकड कर हजरत जहाँबानी के पवित्र चरणो में गिर पडा। तदुपरान्त मुईद बेग[3] रस्सी लटकाकर किले

१ कुछ हस्तलिपियों में 'दौदा बेग'।
२ खिज्र खा सुल्तान। वह गुलबदन बेगम का पति था।
३ निज़ामुद्दीन अहमद के अनुसार वह कन्धार में बन्दी था। काबुल विजय के बाद शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गई। सभी को इसकी मृत्यु से बड़ी प्रसन्नता हुई। बायज़ीद का कथन है कि लोग उसे शैतान तथा हुमायू की भाग्यवर्षी की पराजय का कारण समझते थे।

के नीचे उतर आया और धरती-चुम्बन करके सम्मानित हुआ। तत्पश्चात् इस्माईल बेग, जो हज़रत गेती सितानी फ़िरदौस मकानी के अमीरों में वीरता एवं परामर्शदाता के रूप में अपने काल में माना हुआ था, पहुँचा। कराचा खाँ का भतीजा अबुल हसन बेग एवं नूर बेग का पुत्र मुनव्वर बेग भी उसके साथ पहुँचे। एक रात्रि में ख़िज्र खाँ हज़ारा किले से फाँद पड़ा और दो-तीन हज़ारा लोग उसे अपनी पीठ पर लादकर लका[1] पर्वत की ओर चल दिए। क्योंकि किले की व्यवस्था भंग हो गई और मीर्ज़ा अस्करी को न तो किले में ठहरने का साहस रहा और न हज़रत जहाँबानी के दरबार में पहुँचने का अतः वह चाहने लगा कि कहीं एक कोने में पहुँचकर इन खतरों से दूर रह कर जीवन व्यतीत करे। प्रातःकाल विजयी शिविर में समाचार प्राप्त हुए कि ख़िज्र खाँ हज़ारा (२३५) किले से निकलकर भाग खड़ा हुआ है। कुछ लोग उसकी खोज में रवाना हुए। वह कुछ दूर जाकर एक चट्टान के पीछे छिप गया था। कुछ विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि, ख़िज्र खाँ हज़ारा कहा करता था कि मेरे पकड़ने को जो लोग नियुक्त हुए थे, वे कई बार मेरे पास से होकर गुज़रे और एक बार एक व्यक्ति ने मुझे जानवर समझकर मेरा दामन पकड़ लिया। मैंने भय के कारण दम साध लिया। जब रात हो गई तो मैं चट्टान के नीचे से निकलकर अपने छिपने के एक स्थान पर पहुँच गया।"

मीर्ज़ा अस्करी का क्षमा किया जाना

जब बहिरंग पर दृष्टि रखने वालों को हज़रत जहाँबानी के नित्य-प्रति उन्नत भाग्य का पता चल गया और जो लोग किले में घिरे थे, उन्हें यह विश्वास हो गया कि हज़रत जहाँबानी के प्रताप एवं निष्ठावान् प्राण त्यागने वालों के प्रयत्न के कारण किले की प्रतिरक्षा सम्भव नहीं तो मीर्ज़ा अस्करी असावधानी की निद्रा से जागा। चिन्ता एवं व्याकुलता के कारण न उसमें आगे बढ़ने की शक्ति थी और न उस स्थान पर ठहरे रहने की। सर्वप्रथम उसने निवेदन किया कि, "मैं किले को राज्य के सहायकों को सौंप दूँगा। मुझे मार्ग दे दिया जाय ताकि मैं काबुल चला जाऊँ।" हज़रत जहाँबानी इस बात से सहमत न हुए और उसके कुत्सित विचारों को सफलता न प्राप्त हो सकी। उसने विवश होकर मेहदे उलिया खानज़ादा बेगम को उनकी पवित्र सेवा में इस आशय से भेजा कि वे उसके अपराधों को क्षमा करायें। उनकी[2] सिफ़ारिश से क्षमा के अक्षर उसके अपराधों की पंजिकाओं पर लिख दिए गए।

बृहस्पतिवार २५ जमादि-उल-आख़िर ९५२ हि० (३ सितम्बर १५४५ ई०) को मीर्ज़ा अस्करी उस इफ़्फ़त विवाद के अधीन दीनता एवं लज्जा प्रदर्शित करता हुआ किले के बाहर निकला। हज़रत जहाँबानी ने उत्कृष्ट दीवानखाने में दरबार कराया था। चग़ताई एवं क़िज़िल-बाश अमीर अपनी-अपनी श्रेणी के अनुसार पंक्तियाँ जमाये खड़े थे। बैराम खाँ शाही आदेशानुसार मीर्ज़ा अस्करी को ग्रीवा में तलवार लटकाकर उसे सेवा में लाया। हज़रत जहाँबानी ने इस बात के बावजूद कि वे देख चुके थे कि मीर्ज़ा उनके प्राणों का शत्रु है, राज्य के हित एवं सल्तनत के अधिनियम की ओर से उपेक्षा करते हुए केवल अपनी व्यक्तिगत अनुकम्पा एवं

१ यह नाम स्पष्ट नहीं।
२ मूल में "रुनामये दूदमाने इस्मत (सतीत्व के वंश का मार्ग) अर्थात् खानज़ादा बेगम"।

स्वाभाविक दया के कारण उस इफ़्फ़त के जाव की सिफारिश स्वीकार करना अपनी नैतिकता एव सच्चरित्रता के अनुकूल समझा। उसकी कुप्रकृतिया की पजिका पर क्षमा के अक्षर लिखकर उसे सान्त्वना के परदे में लपेट दिया तथा अपनी अपार कृपाओ द्वारा सम्मानित कर दिया। सौभाग्य की उस भूमिका के कारण दैवी कृपाओ के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए आदेश दिया कि मीर्ज़ा की ग्रीवा से तलवार पृथक् कर दी जाय। जब उसने अभिवादन की प्रथाय सम्पन्न कर ली तो उसे बैठने का आदेश दे दिया।

मीर्ज़ा अस्करी के प्रति व्यवहार

तदुपरान्त मुहम्मद खा जलायर, क़ासिम खा, मुकीम खा, शाह कुली सीस्तानी, तूग़ खा कूरची तथा अन्य लोगो को जिनकी सख्या ३० थी कोरनिश हेतु प्रस्तुत किया गया। उनकी (२३६) गरदनो मे तलवार तथा निषग लटके हुए थे। इन लोगो में से मुकीम खा एव शाह कुली सीस्तानी के विषय मे आदेश दिया गया कि उनके पाँव में बेड़ियाँ डाल दी जायें और उनकी ग्रीवा में तख्ते लटकवा दिए जायें और उनपर निगरानी रक्खी जाय। वे दिन के अन्त मे लेकर प्रात काल तक, जो कि परोक्ष की कृपाओ की प्राप्ति का समय है मनोरजक सभा मे व्यस्त रहे और शिक्षा प्राप्त करने योग्य विषयो का उल्लेख करते रहे। मीर कलन्दर एव समस्त गायक तथा वादक अपने गाने बजाने से ससार को शोभा प्रदान करने वाले हृदय के दुख को दूर करते रहे। इसी दरबार मे समय मीर्ज़ा अस्करी का वह मूल पत्र, जो उसने अपने बिलोच सहायको को उस समय जब हज़रत जहाँबानी रेगिस्तान के मार्ग से परदेश को जा रहे थे, लिखा था प्रस्तुत किया गया। उसे शाही आदेशानुसार मीर्ज़ा को दे दिया गया। मीर्ज़ा अपने जीवन से तग आ गया और उसका आनन्द भग हो गया। अन्त में आवश्यकतावश मीर्ज़ा पर निगरानी रखने तथा उसे समय समय पर कोरनिश हेतु प्रस्तुत किए जाने का आदेश दे दिया गया। इसका कारण यह था कि यद्यपि उसके अपराध उनकी स्वाभाविक अनुकम्पा के कारण क्षमा कर दिए गए है तथापि वह कुछ दिन तक बन्दीगृह में शिक्षा ग्रहण करता रहे।

मुहम्मद मुराद मीर्ज़ा को कन्धार दिया जाना

दूसरे दिन विजय की पताकाओ के चन्द्रमा ने किले के अधकारग्रस्त लोगो को प्रकाश प्रदान किया। मुहम्मद मुराद मीर्ज़ा एव चग़ताई तथा किज़िलबाश अमीर हज़रत जहाँबानी के साथ साथ नगर म पहुँचे। तीन दिन तथा रात तक वह उत्कृष्ट नगर शुभ चरणो के प्रकाश से शान्ति का केन्द्र रहा। चौथे दिन उनके सम्मानित हृदय की रहस्यमयी आकांक्षानुसार नगर मुहम्मद मुराद मीर्ज़ा को प्रदान कर दिया गया। हज़रत जहाँबानी ने स्वय हज़रत फिरदौस मकानी के चहारबाग में, जो अरगन्दाब के तट पर स्थित है पडाव किया और वहाँ के हृदयग्राही वृक्षो से आनन्द विभोर होते रहे। उस मनोरजक स्थान पर मीर्ज़ा अस्करी की धन-सम्पत्ति की सविस्तार सूची, जिसे राज्य के पदाधिकारियो ने एकत्र किया था, सल्तनत के मुतसद्दियो[1] ने तैयार करके

१ हिसाब किताब रखने वाले मुशी।

पवित्र दृष्टि के समक्ष उपस्थित की। हज़रत जहाँबानी ने उसपर कोई ध्यान न देते हुए उन्हें सेना के आवश्यकताग्रस्त वीरों का प्रदान कर दिया।

मीर्ज़ा कामरान का अकबर को अपनी देख-रेख में रखना

जब कन्धार विजय एवं हज़रत जहाँबानी की उत्कृष्ट सेना के काबुल विजय हेतु प्रस्थान के समाचार मीर्ज़ा कामरान को प्राप्त हुए तो वह चिन्ता एवं कठिनाई में पड़ गया। हज़रत शाहंशाह को इस्मत क़िबाब खानज़ादा बेगम के घर से अपने घर ले आया और अपनी मुख्य पत्नी खानम बेगम को सौंप दिया। शम्सुद्दीन मुहम्मद गज़नवी को, जो अतगा खाँ के नाम से प्रसिद्ध था, बन्दी बनाकर एवं अनुचित स्थान पर पहुँचा दिया तथा अपने अमीरों से परामर्श किया कि मीर्ज़ा सुलेमान के विषय में क्या करना चाहिये।

मीर्ज़ा सुलेमान का बदख़्शाँ भेजा जाना

मुल्ला अब्दुल ख़ालिक़ ने, जो मीर्ज़ा कामरान का गुरू था, और क़ानूम बेग ने जिसे राज्य-व्यवस्था सिपुर्द थी, कहा कि, "उचित तो यह होगा कि मीर्ज़ा को सान्त्वना देकर बदख़्शाँ भेज दिया जाय ताकि आवश्यकता पड़ने पर काम आ सके।" मीर्ज़ा सुलेमान के सौभाग्य से इसके कुछ दिन पूर्व मीर नज़र अली मीर हज़ार तेराखानी, मीर अली विलास एवं कुछ अन्य लोगों ने मिलकर क़िलये ज़फ़र पर अधिकार जमा लिया था। उन्होंने कासिम बरलास तथा (२३७) अन्य उच्च पदाधिकारियों को बन्दी बनाकर मीर्ज़ा कामरान को सदेश भेजा कि, "यदि तुम मीर्ज़ा सुलेमान को भेज दो तो बदख़्शाँ की विलायत उसे सौंप दी जायगी अन्यथा जिन लोगों को हमने बन्दी बनाया है उनकी हत्या करके बदख़्शाँ ऊज़बेकों को सौंप देंगे।" इस कारण मीर्ज़ा कामरान ने मीर्ज़ा सुलेमान, मीर्ज़ा इबराहीम तथा हरम बेगम को बदख़्शाँ जाने की अनुमति दे दी[1]। मीर्ज़ा लोग पाये मीनार एवं मामूरा नामक ग्राम तक पहुँचे थे कि मीर्ज़ा कामरान ने मीर्ज़ा सुलेमान को विदा कर देने पर पछताते हुए मीर्ज़ा सुलेमान को बुलाने के लिए आदमी भेजा, और कहलाया कि कुछ मौखिक बातें रह गई हैं, वह सुनकर चला जाय। मीर्ज़ा सुलेमान को इस बुलाने पर शंका हो गई। उसने क्षमा-याचना करते हुए पत्र लिखा कि "क्योंकि, मैं शुभ मुहूर्त में विदा हुआ हूँ अतः मैं वापस होना उचित नहीं समझता। आपकी अनुकम्पा से मुझे आशा है कि आप उन बातों को लिखकर अपने दरबार के किसी विश्वास-पात्र के हाथ भेज देंगे ताकि उसी के अनुसार आचरण कर सकूँ। वह स्वयं शीघ्रातिशीघ्र बदख़्शाँ की ओर रवाना हुआ। इधर वह बदख़्शाँ पहुँचा और उधर उसने वचन भंग कर डाला। इसी बीच में यादगार नासिर मीर्ज़ा भी काबुल से भागकर बदख़्शाँ की ओर चल दिया।

मीर्ज़ा हिन्दाल का हुमायूँ के पास प्रस्थान

क्योंकि भाग्य यह चाहता था कि मीर्ज़ा कामरान को इसी संसार में उसकी दुष्टता का मज़ा चखा दे अतः वह नित्य-प्रति उसके साधन जुटाता जाता था। मीर्ज़ा लोगों में हिन्दाल मीर्ज़ा

१ इस विषय में बायज़ीद की कृति का अनुवाद देखिये। उसके अनुसार मीर्ज़ा सुलेमान कन्धार विजय के पूर्व मुक्त कर दिया गया था और उसकी पत्नी ने उसको मुक्त कराने में घूस देने में भी सकोच नहीं किया।

के अतिरिक्त कोई भी उसके साथ न रह गया अत आवश्यकतावश उसे प्रोत्साहन देकर उसने (मीर्ज़ा हिन्दाल को) यह आदेश दिया कि वह यादगार नासिर मीर्ज़ा का पीछा करे और उसे बन्दी बना कर ले आये। (इसके साथ साथ) यह वचन दिया कि "जो कुछ मेरे[१] अधिकार में है तथा बाद मे भी जो कुछ प्राप्त होगा उसका एक तिहाई तुझे प्रदान कर दिया जायगा किन्तु तुझे निष्ठा एव भ्रातृभाव में कोई कसर न उठा रखनी होगी।" यह प्रतिज्ञा कराने के उपरान्त उसने मीर्ज़ा को, जिसे वह बन्दी बनाये था, मुक्त कर दिया। मीर्ज़ा हिन्दाल, जो उसके दुर्व्यवहार से व्याकुल हो चुका था, दिखलाने को तो सहमत हो गया परन्तु उसके चगुल से मुक्ति को बहुत बडी देन समझकर पाय मीनार से होता हुआ अपने सौभाग्य के पथ प्रदर्शन से हज़रत जहाँबानी की सेवा में रवाना हुआ।

मीर्ज़ा के सहायको का उसे सत्परामर्श न देना

मीर्ज़ा कामरान इन घटनाओ के कारण बडा परेशान हो गया और उसकी समझ में न आता था कि वह क्या करे। उसके सेवको एव सहचरो में से कोई भी ऐसा न था जो उसका शुभचिन्तक होता और सच्ची बात कहता। उसके अधिकाश आदमियो की आँखो पर परदे पड गए थे और उनकी सावधानी के नेत्र असावधानी के रोग से पीडित थे और वे शिक्षा एव सत्परामर्श के मार्ग को न देखते थे। जिन लोगो ने अपने हित को पहचान लिया था, उनमें दम मारने का साहस न था। इसके दो कारण थे (१) कुछ लोगो में निवेदन करने का साहस न था, (२) और कुछ लोग ऐसे थे जो मीर्ज़ा की प्रसन्नता पर दृष्टि रखते थे और सत्य का प्रदर्शन अपने लिए उचित न समझते थे कारण कि उन्हे इस बात का विश्वास था कि स्वेच्छाचार के कारण (२३८) अपने हित पर दृष्टि रखना उसके धर्म में कदापि स्वीकृत न होगा और उसके प्रदर्शन के कारण वह रुष्ट हो जायगा।

परामर्शदाताओं के कर्त्तव्य

निष्ठावान् एव शुभचिन्तक होने की शर्त यह है कि इस प्रकार की बातो में अपनी हानि पर ध्यान न देकर इसमे टाल-मटोल एव इसके प्रदर्शन में विलम्ब न करना चाहिये कारण कि उसकी हानि का कुप्रभाव सभी पर पडता है। उन कार्यो का दुष्परिणाम सभी लोगो को भोगना होता है। परामर्श में किसी प्रकार के छल कपट का, जो सब से बडी धोखे बाज़ी एव धूर्तता है, कुप्रभाव प्रकट होकर रहता है। धूर्तता एव चाटुकारी का तिल, जो कि दुर्भाग्य एव बदकिस्मती की स्याही है, उनके कर्म एव स्थिति के गाल पर प्रकट होता है। उचित तो यह है कि सत्य को न छिपाने एव तथ्य को प्रकट करने में यदि कोई हानि भी हो तो उसे यह समूह अपना सौभाग्य समझे और उससे सतुष्ट होकर प्रसन्नता के ललाट पर खेद की सिलवट न पडने दे कारण यद्यपि देखने में तो महान् व्यक्तियों को यह बातें बुरी लगती है किन्तु हृदय में वे दोनो प्रकार की बातें सुनना पसन्द करते हैं। यद्यपि दिखाने में वे लोग अपने स्वामियो की राय के विरुद्ध कार्य करते हैं किन्तु वास्तव में जो देन उन्हे प्रदान हुई है वे उससे अपने उत्तरदायित्व को पूरा करके उसका

१ मीर्ज़ा कामरान।

हक अदा कर देते हैं। दूरदर्शी लोगो की दृष्टि में भी अपने कर्म एव वचन के कारण वे प्रशसा के पात्र होते हैं।

मीर्ज़ा कामरान की भूलें

सक्षेप में, मीर्ज़ा कामरान अपने हित को समझने वाली बुद्धि तथा ऐसे भाग्य को उन्नति देने वाले साथियो के अभाव मे एक के बाद दूसरी भूल करता गया।

हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी की पवित्र सेना का कन्धार से काबुल विजय हेतु प्रस्थान एव उन प्रदेशों की विजय

ईरानियो द्वारा कन्धार वालो पर अत्याचार

जब (हज़रत जहाँबानी) का पवित्र हृदय कन्धार के आक्रमण से निश्चित हो गया तो उन्होंने काबुल विजय की महत्वाकाक्षा प्रारम्भ कर दी। यह सकल्प करके वे हज़रत फ़िरदौस मकानी के उद्यान से प्रस्थान करके हसन अब्दाल के मकबरे पर, सफ़ेद गुम्बज़ में उतरे। इस विजय की प्रारम्भिक योजनाये उनके दैवी प्रेरणा-प्राप्त मस्तिष्क मे सर्वदा विद्यमान रहती थी और वे हमेशा उस विषय में दूरदर्शी हितैषियो एव निष्ठावान् प्राण न्योछावर करने वालो से परामर्श किया करते थे। अधिकाश किज़िलबाश यात्रा की अवधि के अधिक बढ जाने के कारण थक कर अनुमति बिना जाने लगे और कुछ लोग आग्रह करके आज्ञा द्वारा पृथक् होने लगे। बुदाग खा एव अन्य लोग, जो शाह[1] के पुत्र की सेवा में थे, दूरदर्शिता के अभाव में प्रजा एव परिजनो पर अत्याचार एव निष्ठुरता का हाथ बढाने लगे और इस निद्य कर्म को अपने भाग्य की उन्नति का साधन समझते थे। नगर के सर्व साधारण एव सम्मानित व्यक्ति विलाप करते हुए उत्कृष्ट दरबार में न्याय याचना हेतु पहुँचते रहते थे। हज़रत जहाँबानी इस विषय में बडे असमजस में थे कारण कि यदि वे अत्याचारियो को दड देते तो शाह रुष्ट होता और यदि न्याय के नियमो का पालन नही करते तो अत्याचारी प्रजा पर जुल्म करने से बाज़ न आते और यह बात दैवी कोप का (२३९) कारण बनती क्योकि उस समय कुछ करना उचित न था अत वे असमजस मे पडे रहे और इस कार्य की व्यवस्था अन्य समय के लिए टालते रहे।

शाह तहमास्प के पुत्र की मृत्यु

जब काबुल पर आक्रमण करना निश्चय हो गया तो (हज़रत जहाँबानी ने) आवश्यकता वश कुछ बेगमो[2] एव आवश्यक वस्तुओ तथा असबाब की रक्षा हेतु बुदाग खा से कुछ घर मांगे[3]। सत्य का निरूपण करने वाली अपनी जिह्वा से उन्होंने कहा कि, "हमने अपने वचनानुसार

१ शाह तहमास्प। आगे के पृष्ठों में भी शाह शब्द से शाह तहमास्प समझना चाहिये। हुमायू के लिये इस शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है।

२ मूल में "पर्दगियाने मुखद्दिरे असमत (सतीत्व के पर्दे में रहने वाली बेगमें)"।

३ कन्धार के क़िले के भीतर।

कन्धार तुम्हे प्रदान कर दिया किन्तु अपने परिवार वालो को छोड जाना और उनकी ओर से निश्चिन्त होकर सकल्प के पाँव प्रयत्न के रिकाब में जमाना परमावश्यक है।" बुदाग खा ने बुद्धिमत्ता के अभाव के कारण इसे स्वीकार न किया और बुद्धिमानो के समान शाह के आदेशो का पालन एव पादशाह के निर्देशो पर आचरण की ओर, जो कि उनका वास्तविक लक्ष्य था, कोई ध्यान न दिया। बडे बडे अमीरो ने, जो सेवा में थे, निवेदन किया कि, "हमें एक महान् कार्य करना है। कन्धार को अधिकार में करने की ओर से उपेक्षा नही की जा सकती। इसका कारण यह है कि हम जिस कार्य हेतु प्रस्थान करे तो हमें कोई चिन्ता न रहे।" हजरत जहाँबानी शाह की सहृदयता के कारण, शाह के आदमियो के हृदय को मलिन न करना चाहते थे अत उनकी दुष्टता की ओर से अपने उच्च साहस एव प्रताप के कारण उपेक्षा करते थे और इस सोच में थे कि बदख्शाँ की ओर प्रस्थान कर दे और मीर्जा सुलेमान को अपने साथ लेकर काबुल विजय हेतु रवाना हों।

हुमायूं के अमीरो का कन्धार पर अधिकार करने के विषय में आग्रह

क्योंकि काबुल को शीघ्रातिशीघ्र विजय करने का कारण हज़रत शाहशाह के सौभाग्यशाली दर्शन करना तथा खिलाफत के उद्यान के उस नूर के सौन्दर्य से भेंट थी जिसके शुभ अस्तित्व के आशीर्वाद को वे दैवी रहस्यो के कारण परोक्ष से प्राप्त समस्त विजयो का साधन समझते थे, अत क्षण-क्षण पर इस उद्देश्य की पूर्ति एव इस सौभाग्य की प्राप्ति की व्यवस्था हेतु चिन्तित थे। *इसी बीच में शाह का पुत्र (दैवी) कृपा के उद्यान का दर्शक एव मुक्ति के सागर का पथिक हो गया*[1]। उत्कृष्ट दरबार के विश्वासपात्रो एव मुख्य अधिकारियो ने निवेदन किया कि "शीत ऋतु निकट आ गई है और परिवार वालो एव माल व असबाब को इस पर्वतीय प्रदेश में अपने साथ ले जाना कठिन ज्ञात होता है। शाह के पुत्र की मृत्यु हो गई है। कन्धार को तुर्कमानो को सौंप देना, विशेषकर इस अवस्था में जब कि राज्य को नष्ट-भ्रष्ट करने एव शान्ति के स्तम्भो को गिराने में उद्दड समूह सिद्धहस्त है और अत्याचार प्रदर्शित कर रहा है, राज्य के हित में उचित नही है। यद्यपि उन लोगो को इस बात का आदेश दे दिया गया था कि वे सर्वदा अपने प्राणो की कमर में दासता की पेटी बाँधे रहें और हमेशा उत्कृष्ट सेना के अधीन रहे, फिर भी वे इस मार्ग से विचलित होकर असावधानी की मदिरा के कारण बदमस्त हो गए है और आदेशो के पालन की ओर से उपेक्षा कर रहे है तथा निर्देशो के स्वीकार करने के विषय मे कोई उत्साह प्रदर्शित नही करते है, अपितु आलध्य आदेशो का उल्लघन करके *खुल्लम खुल्ला* एव गुप्त रूप से विरोध करते हुए (२४०) अपने मुख पर निर्लज्जता की नकाब डाले हुए है। शासन के लिये यह उचित है कि उनके अत्याचार के हाथो को छोटा करके इस नगर के दीन दुखियो तक, जो दैवी कृपा का सर्वप्रथम वरदान है, न पहुँचने दें। इसका उद्देश्य यह कदापि नहीं है कि शाह के हृदय को मलिन किया जाय। क्योंकि यहाँ से काबुल बडी दूर है और हजारा सैनिको एव अफगान कबीलो की सख्या चीटियो एव टिड्डियो से भी अधिक है और वे उनके मार्ग का रोडा बने हैं विशेष रूप से

१ मृत्यु को प्राप्त हो गया।

इस कारण कि उनकी[१] मीर्जा से साजबाज है अत एव ऐसे सुरक्षित स्थान का अधिकार में रखना ताकि किसी प्रकार की कोई चिन्ता न रहे सर्वप्रथम कार्य है और कन्धार के अतिरिक्त कोई अन्य स्थान इस कार्य-योग्य नही। अत बुद्धि एव न्याय दोनों की दृष्टि से यह आवश्यक है कि बुदाग खा से कह दिया जाय कि खुशी तथा नाखुशी जैसे सम्भव हो कन्धार को छोड दे और यदि वह न छोडे तो उसे घेर कर जबरदस्ती अधिकार मे कर लिया जाय और एक प्रेम-पत्र स्थिति को स्पष्ट करते हुए एव समय की आवश्यकता के विषय में अपनी निष्ठा एव घनिष्ठता के आश्वासन सहित शाह को लिख दिया जाय। क्यांकि सम्मानित शाह बुद्धिमत्ता एव न्याय की खान है अत इस कार्य को वे प्रशसनीय समझेंगे।'

युक्ति द्वारा किले में प्रवेश

इस विषय में सबसे अधिक आग्रह हाजी मुहम्मद खा पुत्र बाबा कश्का ने किया। हजरत जहाँबानी ने कहा कि, "सब कुछ ठीक है किन्तु अवरोध करना तथा युद्ध हेतु तलवार खीचना और सब लोगो की हत्या करा देना, दुष्टता से शून्य बात नही। यद्यपि वे लोग सयम के मार्ग से विचलित हो गए हैं किन्तु मैं अपने दरबार के सेवको के लिए ऐसी अनुचित बात के पक्ष में नही हूँ कारण कि इस प्रकार बुदाग खा के आदमी नष्ट हो जायेंगे और यह घटना ससार के अच्छे लोगो की दृष्टि में भद्दी लगेगी। यह उचित होगा कि दूरदर्शी बुद्धि द्वारा ऐसा उपाय करना चाहिए कि बिना युद्ध के किले पर अधिकार प्राप्त हो जाय।' तदनुसार उन्होने बुदाग खा के पास इस आशय से आदमी भेजे और कहलाया कि "हम काबुल विजय हेतु जा रहे हैं अत हम मीर्जा अस्करी को कन्धार में बन्दी रखना चाहते हैं, ताकि उसकी ओर से निश्चिन्त रह सकें।" उसने इस बात को अपने लिए लाभदायक समझकर इसे स्वीकार कर लिया। यह निश्चय हुआ कि अनुभवी वीर एव योद्धा कन्धार के क्षेत्र में पहुँचकर घात लगाकर बैठ जायें और अवसर पाकर वीरता एव पौरुष प्रदर्शित करते हुए किले में प्रविष्ट हो जायें। बैराम खा एव सेना के एक अन्य दल को गन्दिगान[२] द्वार की ओर नियुक्त किया गया। उलुग मीर्जा, हाजी मुहम्मद एव सेना का एक अन्य दल माशूर द्वार की ओर नियुक्त हुआ। मुईद बेग एव एक अन्य दल दरवाजये नव के क्षेत्र में नियुक्त हुआ। वीरता के जगल के ये सिंह राता रात पहुँचकर कधार के चारो ओर घात लगा

१ बेवरिज ने इस वाक्य के अनुवाद में उनके मात्र 'ईरानी' कोष्ठ में लिख दिया है और अनुवाद इस प्रकार दिया है जिससे पता चलता है कि मार्ग का रोड़ा ईरानियों को बताया गया है। टिप्पणी में उसने लिखा है कि "मेरा विचार है कि इन दो वाक्यों में ईरानियों से तात्पर्य है हालाकि इस बात का कोई प्रमाण नहीं कि वे कामरान से साज-बाज रखते थे।" (बेवरिज, पृ० ४७३) किन्तु जो वाक्य प्रकाशित ग्रन्थ में है उसमें ईरानियों को बीच में डालना आवश्यक नहीं और हजारा एव अफगान कबीलों से भी अर्थ स्पष्ट हो जाता है। अफगान एव हजारा कबीलों की मीर्जा कामरान से साज-बाज थी भी। वाक्य इस प्रकार है, "व एहशामे हजारा व कबाएले अफगान अज दूर व नजदीक बेशतर व खारसगे ईं राहहा शुदा अन्द खुसूसन बा मीर्जा कामरान सुखन दरमियान दारन्द।" (و احشام هزاره و قبائل افغان از دور و نزدیک بیشتر و خارسک این راهها شده اند خصوصاً با میرزا کامران سخن درمیان دارند)

२ प्रकाशित ग्रन्थ में 'कन्दिकान' किन्तु सम्भवत फाटक का नाम 'गन्दिगान' नामक ग्राम के नाम पर था जो आधुनिक कधार के पश्चिम में है। (बेवरिज, पृ० ४७३)।

कर बैठ गए। प्रात काल के पूर्व हाजी मुहम्मद सबसे पहले माशूर द्वार पर पहुँच गया। संयोग से खाद्य सामग्री से लदे हुए कुछ ऊँट किले[१] के भीतर जा रहे थे। वह उन ऊँटों के पीछे हो लिया और सिंह की भाँति द्वार में प्रविष्ट हो गया। द्वारपाल को जब पता चला तो उसने रोका। उसने उत्तर दिया कि, "बुदाग खा के आदेशानुसार हम मीर्ज़ा अस्करी को लाये हैं ताकि उसे किले के भीतर (२४१) बन्दी बना दें।" इस बहाने से कोई लाभ न हुआ और वह द्वार बन्द करने लगा। हाजी मुहम्मद ने द्वारपाल के हाथ तलवार से काट डाले। कुछ अन्य लोग पीछे से पहुँच गए। किज़िलबाशो का एक दस्ता जो समीप ही था, युद्ध करने लगा और मारा गया। बैराम खा गन्दिगान द्वार से प्रविष्ट हो गया और किला उत्कृष्ट राज्य के सहायको के अधिकार में आ गया।

कन्धार के किले पर अधिकार

किज़िलबाश लोग भाग कर अरक[२] में घुस गए और उसे बन्द कर लिया। मध्याह्न के समय हज़रत जहाँबानी गन्दिगान द्वार से होकर आकचा बुर्ज में पहुँचे और वहाँ ठहर गए। भाग्यशाली नगर उनके उत्कृष्ट आगमन के कारण शान्ति की मंजिल एव न्याय तथा उपकार का केन्द्र बन गया। उपकार के इस पडाव एव सौभाग्य की इस वापसी से छोटे-बड़े सभी के हृदय से प्रसन्नता एव बधाई के नारे निकलने लगे। बुदाग खा, हैदर सुल्तान को मध्यस्थ बनाकर उपस्थित हुआ एव लज्जावश सिज्दा करके अपने अपराधो की क्षमा-याचना की। हज़रत जहाँबानी ने उसे शाही कृपाओ द्वारा सम्मानित करके विदा कर दिया। नगर बैराम खा को प्रदान कर दिया गया और शाह को पत्र लिख दिया गया कि, "क्योंकि बुदाग खा ने शाह के आदेशो के विरुद्ध आचरण किया और आज्ञाकारिता की ओर से उपेक्षा की अत कन्धार को उससे लेकर हमने बैराम खां को, जो शाह से सम्बन्धित है, सौंप दिया।"

मीर्ज़ा अस्करी का पलायन किन्तु पुनः बन्दी बनाया जाना

इसी बीच में मीर्ज़ा अस्करी, जिसके प्राणो को कोई हानि न पहुँचाई गई थी और जिसके प्रति शाही कृपा प्रदर्शित की गई थी, इस बात का महत्व न समझकर भाग गया। कुछ दिन उपरान्त एक अफगान ने आकर सूचना दी कि "मीर्ज़ा मेरे घर मे है। किसी को नियुक्त कर दिया जाय जो उसे बन्दी बनाकर ले आये किन्तु यह पता न चलने पाये कि मैंने कोई सूचना दी है।" हज़रत जहाँबानी ने शाह मीर्ज़ा एव ख्वाजा अम्बर नाज़िर को नियुक्त किया। वे उसे उसी अफगान के घर से ऊनी कालीन के नीचे से पकड लाये और उत्कृष्ट दरबार में उपस्थित किया। हज़रत जहाँबानी ने अपनी स्वाभाविक कृपा एव दया तथा हज़रत गेती सितानी फ़िरदौस मकानी की वसीअत के सम्मान की दृष्टि से, जो उन्होंने सर्व साधारण, विशेष रूप से भाइयो के विषय में की थी, उसके प्रति कृपा-दृष्टि प्रदर्शित की और उसके अपराधो एव कुकर्मो को पुन क्षमा कर दिया। उसे अपने एक विश्वास-पात्र नदीम कूकुल्ताश को इस आशय से सौंप दिया कि वह उसे बन्दी बनाये रक्खे।

१ भीतरी किला (citadel)।
२ भीतरी दुर्ग (citadel)।

कन्धार के भागों को अमीरों को प्रदान करना

कन्धार की विलायत अपने राज्य के उच्च पदाधिकारियो को प्रदान कर दी। उलुग मीर्ज़ा को तीरी[1] की विलायत सौंप दी। रुद्र के परगने हाजी मुहम्मद खा के वजहे अल्फा[2] में दे दिए। ज़मीनदावर इस्माईल बेग को, किलात शेर अफगन को तथा शाल हैदर सुल्तान का प्रदान किए। इसी प्रकार समस्त सेवको को उनकी श्रेणी के अनुसार जागीरें दी। ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को, जिसने नगर में मीर्ज़ा अस्करी के आदमियो एव अन्य लोगो पर अत्याचार किया था, मीर मुहम्मद अली[3] को सौंप दिया।

हुमायू का कन्धार से प्रस्थान

जब पवित्र हृदय कन्धार के शासन प्रवन्ध की चिन्ता से मुक्त हो गया और दैवी सहायता के आशीर्वाद एव पादशाह के प्रयत्न और परिश्रम से सभी कार्य भाग्य के अनुकूल सिद्ध हो गए तो उन्होने शुभ मुहूर्त में हजरत मरियम मकानी के सम्मानित हौदज को कन्धार में छोडकर स्वय काबुल विजय हेतु प्रस्थान करने का सकल्प किया।

हुमायू का घोडे क्रय करना

(२४२) ईश्वर के असीम उपकारो एव आशा के विरुद्ध प्राप्त देनो में से (जो हजरत जहाँबानी को प्राप्त हुई) एक यह है कि एक बहुत बडा काफला हिन्दुस्तान से आया था। व्यापारियो ने इच्छानुसार व्यापार करके तुर्कमानो[4] से एराकी घोडे क्रय किए थे। क्योकि प्रताप का प्रकाश परिस्थितियो से चमक रहा था अत इस काफले के नेता ने आकर निवेदन किया कि, यदि हमारे घोडो को उत्कृष्ट सेना वाले ले लें और उनका मूल्य हिन्दुस्तान की विजय उपरान्त चुका दिया जाय तो वे इससे बडे प्रसन्न होगे और इसे अपना सौभाग्य समझेंगे। यह हमारा बहुत बडा सौभाग्य होगा कि अपनी इतनी सी सहायता के कारण हम उत्कृष्ट दरबार के हितैषियो मे सम्मिलित हो जायें।" हजरत जहाँबानी ने इस बात को दैवी सहायता एव परोक्ष का वरदान समझ कर उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और आदेश दे दिया कि विक्रेताओ की इच्छानुसार मूल्य निश्चित करके घोडो के क्रय के तमस्सुक[5] लिखकर उन्हे सौंप दिये जायें। वे स्वय एक पर्वत के पुश्ते पर, जो बाबा हसन अब्दाल के समीप है, पहुँचे और उलुग मीर्ज़ा, बैराम खा, शेर अफगन एव हैदर महम्मद आख्ता बेगी को आदेश दिया कि सर्वप्रथम खासे के अस्तबल[6] के लिए घोडे पृथक् कर दिये जायें। तदुपरान्त अमीरो एव समस्त सेवको के लिए उनकी श्रेणी-अनुसार चुने

१ प्रकाशित ग्रंथ में 'तिपरी' किन्तु तीरी अधिक उचित है, कन्धार के उत्तर में, हेलमन्द नदी पर। (बेवरिज, पृ ४०८)।
२ व्यय हेतु उसके व्यक्तिगत एव सेना इत्यादि के व्यय हेतु।
३ मीर मुहम्मद अली तगाई।
४ हुमायूँ के ईरानी सहायक।
५ ऋण-पत्र, दस्तावेज़।
६ बादशाह के व्यक्तिगत प्रयोग के घोडों की अश्वशाला।

१००० घोडे, जो उनकी सरकार के लिए विशेष रूप से क्रय किए गये थे, प्रत्येक की श्रेणी अनुसार बाँट दिए गए तथा इनाम में दिए गए। व्यापारियो एव सैनिको के हृदय सन्तुष्ट हो गए।

दवा बेग हजारा द्वारा सहायता

क्योंकि दवा बेग हजारा यह चाहता था कि धन-सम्पत्ति एव अपने प्राणो से सेवा करके सम्मानित हो अत वह तीरी के किले की ओर, जहाँ उसकी सेना थी, रात्रि में यात्रा करके पहुँच गया। जब उत्कृष्ट सेना उस क्षेत्र मे पहुँची तो वहाँ के सरदार अपने सामर्थ्य-अनुसार घाडे तथा भेडें लाये और उन्हे उपहार स्वरूप भेंट करके उचित सेवायें सम्पन्न की। क्योकि उस क्षेत्र में हृदयग्राही चरागाह थी अत कुछ दिन तक वहा दिल वहलाने के लिए पडाव किया।

खानजादा बेगम की मृत्यु

हजरत मेहदे उलिया खानजादा बेगम इस स्थान पर रुग्ण हो गई। रोग बढता ही चला गया और वे मृत्यु को प्राप्त हो गई। हजरत जहाँबानी ने शोक सम्बन्धी प्रथाओ को सम्पन्न करवा कर सताप की दृढ रस्सी जो अनुभवी लोगो के लिए आवश्यक है पकडी और उनकी आत्मा की शान्ति हेतु ऐसे दान पुण्य किए जो सल्तनत के उस वश के अनुकूल थे[१]। वहाँ से अपने उत्कृष्ट प्रताप एव जागरूक सौभाग्य से निरन्तर यात्रा करते हुए राजधानी काबुल की ओर रवाना हुए।

मीर्जा हिन्दाल का हुमायू की सेवा में उपस्थित होना

मीर्जा हिन्दाल ने कन्धार के समीप दासता एव निष्ठा की प्रथानुसार फर्श चूमने का सम्मान प्राप्त किया। हजरत जहाँबानी ने अपनी स्वाभाविक कृपाओ के कारण उसके प्रति अपार अनुकम्पा प्रदर्शित की। वे उसके आगमन से बडे प्रसन्न हुए। उसका आगमन बहुत से लोगो के (२४३) आने की प्रस्तावना बना[२]। उच्च पदाधिकारियो के समूह काबुल से आने लगे।

शिविर में महामारी किन्तु हुमायू का मीर्जा हिन्दाल से सहमत न होना

वायु के अनुकूल न होने के कारण शाही शिविर मे महामारी का प्रकोप हो गया और बहुत से लोग परलोकगामी हो गए। हैदर सुल्तान भी उन्ही लोगो में था। जब वायु की प्रतिकूलता बहुत बढ गई तो साथ के आदमियो की सख्या कम होने के कारण हिन्दाल ने निवेदन किया कि, "राज्य के लिए यह उचित होगा कि इस शीत ऋतु मे वापस होकर कन्धार मे ठहरा जाय और बहार के प्रारम्भ में लश्कर एव सामान तैयार करके काबुल विजय हेतु प्रस्थान किया जाय।" हजरत जहाँबानी ने उसके समक्ष कुछ न कहा। जब सभा का विसर्जन हो गया तो मीर सैयिद बरका द्वारा मौखिक सदेश भेजा कि "यद्यपि हमें तुम्हारे आगमन तथा यादगार नासिर मीर्जा के (मीर्जा कामरान से) पृथक् होने की सूचना न थी, किन्तु हम ईश्वर की कृपा पर आश्रित होकर काबुल की ओर चल दिए तो अब एक दुर्घटना के कारण हम क्यो विलम्ब करें। यदि यह बात

१ गुलबदन बेगम ने इस विषय में विस्तार से लिखा है।
२ बहुत से अन्य लोग भी उसके आगमन के कारण आ गये।

तुम्हारे हृदय में अपने आदमियों के कष्ट एवं दुःख के कारण आई है तो जमीनदावर एवं उस क्षेत्र के स्थान हम तुम्हें प्रदान करते हैं। यह शीत ऋतु वहाँ आराम से व्यतीत करो। जब काबुल की समस्या का समाधान हो जाय तो सेवा मे उपस्थित हो जाना।" मीर्ज़ा इस सदेश स अत्यधिक लज्जित हुआ और अपने अपराधो के लिए क्षमा-याचना की। हज़रत जहाँबानी सत्सकल्प एवं पूर्ण आशा सहित अग्रसर हुए और कार्य को पूरा करने का हृदय से प्रयत्न करने लगे। मार्ग में जमील बेग, बाबूस के भाई ने, जिसे मीर्ज़ा कामरान ने अपने जामाता आक[1] सुल्तान का अतालीक बना कर गज़नी मे नियुक्त कर दिया था, आकर चौखट चूमने का सम्मान प्राप्त किया और बाबूस के अपराधो की क्षमा मागी। उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई।

मीर्ज़ा कामरान द्वारा प्रतिरक्षा

जब उत्कृष्ट सेना का पड़ाव शेख अली नामक मंजिल पर जा पमगान[2] एव अरकन्दी के समीप स्थित है, हुआ तो मीर्ज़ा कामरान ने ससार को विजय करने वाली पताकाओ के प्रस्थान के समाचार से व्याकुल होकर कासिम बरलास को कुछ सैनिको सहित आगे भेज दिया। कासिम मुख़लिस तुरवती को, जो उसका मीर आतश था, आदेश दिया कि तोपखाने को दौरी नामक जलवे में जो बाबूस बेग के घर के समीप था, ले जाकर लगा दे। काबुल के किले के बाहर जिन लोगो के परिवार निवास कर रहे थे, उन सबको किले के भीतर ले आया। किले को दृढ़ कर लेने के उपरान्त अभिमान एव असावधानी की अवस्था में काबुल से निकल कर बाबूस बेग के निवास स्थान के समीप पड़ाव किया और सेना की व्यवस्था एव पक्तियो के विभाजन का प्रयत्न करने लगा। कासिम बरलास सेना के एक दल को ले कर तकिया ख़िमार[3] तक पहुँचा था कि ख्वाजा मुअज्ज़म हाजी मुहम्मद खा एव शेर अफगन ने पादशाह के प्रतापी शिविर से निकल कर बड़े उत्तम रूप से छापा मारा। ईश्वर की कृपा से, जो उत्कृष्ट सौभाग्य की रक्षक थी, कासिम बरलास मुकाबला न कर सका और भाग खड़ा हुआ।

मीर्ज़ा कामरान के सहायकों का हुमायूं के पास पहुँचना

जब दोनों सेनाओं में बड़ी कम दूरी रह गई तो मीर्ज़ा हिन्दाल अपनी प्रार्थनानुसार हिरावल[4] के पद पर नियुक्त हुआ। भाग्यशाली सेना ख्वाजा पुश्ता के दर्रे को पार करके अरकन्दी के समीप पड़ाव किए हुए थी कि बाबूस एव जमील बेग अपनी सेना सहित और शाह बिरदी खा[5]

१ गुलबदन बेगम के पति ख़िज्र ख्वाजा का छोटा भाई। उसका विवाह कामरान की एक पुत्री हबीबा से हुआ था।

२ प्रकाशित ग्रन्थ में 'नोमान' किन्तु इसे 'पमगान' होना चाहिये। पमगान के विषय में देखिये बाबर नामा, पृ० २३। बाबर ने यहाँ की जलवायु की काफी प्रशसा की है।

३ यह नाम कई प्रकार से लिखा गया है। प्रकाशित पुस्तक में 'तकिया चनार', अन्य हस्तलिपियों में 'तकना ख़िमार', 'तकिया हिमार' इत्यादि।

४ सेना का अग्र भाग।

५ वह बाद में फ़कीर हो गया और बहराम सक्का के नाम से कविता करता था। वह तारीखे हुमायूं के लेखक बायज़ीद का बड़ा भाई था। मीर्ज़ा कामरान ने उससे वे स्थान लेकर ख़िज्र ख्वाजा हज़ारा को दे दिये थे।

(२४४) जिसके अधीन गिरदीज[1], बगश[2] एव नगज[3] थे उपस्थित हुए और ज़मीन बोस[4] करके सम्मानित हुए। उनके प्रति अत्यधिक कृपा प्रदर्शित की गई। तत्पश्चात् ख्वाजा कलाँ बेग का पुत्र मुसाहिब बेग बहुत से आदमियो सहित सेवा मे उपस्थित हुआ और शाही कृपाओ द्वारा सम्मानित किया गया। इसी बीच में बाबूस ने निवेदन किया कि ठहरने का समय नही है। हजरत जहाँबानी को सवार हो जाना चाहिये कारण कि सब लोग आ रहे हैं। हजरत जहाँबानी सौभाग्य के द्रुतगामी घोड पर सवार हुए। इसी बीच में अली कुली मुफरची एव बहादुर को, जो हैदर सुल्तान के पुत्र थे और अपने पिता का शोक मना रहे थे, बुलवा कर अपना कृपा पात्र बनाया। कुछ समय उपरान्त कराचा खा ने उपस्थित होकर भूमि चूमने का सम्मान प्राप्त किया।

मीर्ज़ा कामरान का पलायन

मीर्ज़ा कामरान ने पादशाही इकबाल के पृष्ठो में अपने पतन के चिह्नो को पढ कर ख्वाजा खावन्द महमूद एव ख्वाजा अब्दुल खालिक को अपने अपराधो की क्षमा-याचना करने के लिए पवित्र सेवा मे भेजा और कुछ प्रार्थनाये ख्वाजाओ द्वारा कराईं। पादशाह की उत्कृष्ट सेना एव मीर्ज़ा के लश्कर में आधे कोस की दूरी न रही थी कि ख्वाजा लोग उनकी सेवा में उपस्थित हुए। उन्होने उसकी प्रार्थनाओ की स्वीकृति के विषय में उसकी सेवा में उपस्थित हो जाने की शर्त लगाई और इसी शर्त पर अन्य कृपाओ का आश्वासन दिला कर ख्वाजा लोगो को सम्मान-पूर्वक विदा कर दिया और स्वय सौजन्य एव उदारता की दृष्टि से ठहर गए। मीर्ज़ा ने ख्वाजा लोगो को इस उद्देश्य से भेजा था कि पादशाही सेना के प्रस्थान में विलम्ब एव शिथिलता हो जाय और उसे अवसर मिल जाय। वह रात्रि के अधेरे की प्रतीक्षा कर रहा था ताकि दूर निकल जाय। जब रात्रि के अधेरे के आवरण ने ससार में अधकार उत्पन्न कर दिया तो वह अपनी नीच कल्पनाओ एव हृदय की स्याही के कारण सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य न प्राप्त करके शीघ्रातिशीघ्र काबुल के अरक में पहुँच गया और अपने पुत्र मीर्ज़ा इबराहीम एव अन्त पुर की कुछ स्त्रियो को अपने साथ लेकर कीनी हिसार[5] के मार्ग से गजनी की ओर चल दिया। जब उसके पलायन के

१ काबुल से दक्षिण की ओर १२ १३ यीगाच (७२-७८ मील) पर और गजनी के दक्षिण पूर्व में ७ ८ यीगाच (४२-४८ मील) पर स्थित जमुत नामक तूमान के दारोगा का मुख्य स्थान। "गिरदीज़ के किले के मध्य में अधिकाश घर तीन चार म जलों के है। वे बडे दृढ है। जब वहाँ के निवासियों ने नासिर मीर्ज़ा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया तो उसे बडी कठिनाई का सामना करना पडा। यहाँ के निवासी उपद्रवशील हैं। वे अनाज की कृषि करते हैं। किन्तु न तो अगूर के बाग लगाते हैं और न अन्य फलों के"। (बाबर नामा, पृ० २७)।

२ बाबर नामे के अनुसार "काबुल का एक अन्य तूमान बगश है। इसके चारों ओर अफ़गान लुटेरे आबाद हैं, उदाहरणार्थ खगियानी, खिरिलची, तूरी तथा लन्दरा। दूर स्थित होने के कारण यहा के लोग स्वेच्छा से राजस्व नहीं अदा करते"। (बाबर नामा पृ० २७)।

३ काबुल के दक्षिण में, (बाबर नामा, पृ० १३, १७)।

४ धरती चुम्बन।

५ राबर्ट्स के अनुसार उद्यानों मे घिरा हुआ एक उद्यान जो बाला हिसार के प्रसिद्ध किले से २ मील दक्षिण में है। (Roberts *Forty one years in India*, II, p 223)। शब्दार्थ के अनुसार हिसार पर्वत की पहाडी।

समाचार सम्मानित कानों तक पहुँचे तो हजरत जहाँबानी ने बाबूस को अपने कुछ विश्वासपात्रों सहित इस आशय से काबुल भेज दिया कि वे वहाँ पहुँच जायें और सैनिकों एवं प्रजा को हानि न पहुँचने दें और सभी को शाही कृपा का आश्वासन दिलायें।

हुमायूँ का काबुल में प्रवेश

मीर्जा हिन्दाल एवं सेना के एक दस्ते को आदेश दिया गया कि मीर्जा का पीछा किया जाय और वे स्वयं सफलता एवं प्रताप सहित काबुल नगर की ओर रवाना हुए। शुभ मुहूर्त में राज्य के नक्कारा बजाने वालों ने ऐश्वर्य का बड़ा नक्कारा[१] बजवा दिया और विजय की पताका उठाने वालों ने ऐश्वर्य की पताका आकाश तक पहुँचा दी। जलाली मास के १३वीं आज़र की रात्रि अर्थात् १२ रमज़ान ९५२ हि० (१७ नवम्बर १५४५ ई०) बुधवार की रात्रि में दैवी अनुकम्पा से काबुल विजय हो गया[२]। यह विजय असंख्य विजयों की प्रस्तावना है। इससे प्रसन्नता एवं सफलता के द्वार सर्व-साधारण के लिए खुल गए। दो घड़ी रात्रि व्यतीत हो जाने के उपरान्त हजरत जहाँबानी (२४५) ने काबुल के मैदान को अपने भाग्यशाली चरणों की छाया से सम्मानित किया। नवेदी[३] ने इस विजय की तारीख़ "काबुल रा गिरफ्त"[४] के अक्षरों से निकाली। एक अन्य कवि ने इस मिसरे से तारीख़ निकाली

१ कूरक।

२ इस तिथि में बड़ा मतभेद है। इस विषय में अन्य ग्रंथों के तत्सम्बन्धी विवरण देखिये।

३ सम्भवतः ख्वाजा ज़ैनुल आबेदीन काश्मी का एक कवि (Rieu, Supplement No 307) बाद में उसने अपना तखल्लुस अब्दी रख लिया और ९८८ हि० (१५८०-८१) ई० में अर्दबेल में मृत्यु को प्राप्त हो गया। (बेवरिज, पृ० ४८१)।

४ काबुल पर अधिकार जमा लिया

काफ़	ک	=	२०
अलिफ़	ا	=	१
बे	ب	=	२
लाम	ل	=	३०
रे	ر	=	२००
अलिफ़	ا	=	१
गाफ़	گ	=	२०
रे	ر	=	२००
फ़े	ف	=	८०
ते	ت	=	४००
			९५४

मिसरा

'बिना युद्ध के विजय किया काबुल देश उसने[1]।'

हुमायूं की अकबर से भेंट

जब हज़रत शाहंशाह के पवित्र आशीर्वाद से प्रसन्नता एवं हर्ष के द्वार खुल गए और राज्य की नींव पुनः रख दी गई तो हज़रत जहाँबानी मीर्ज़ा कामरान की पराजय एवं काबुल की विजय पर दृष्टि न डाल कर हज़रत शाहंशाह के शुभ चरणों की प्रतीक्षा करने लगे, यहाँ तक कि शुभ घड़ी में शान के उस भण्डार को, जिसकी अवस्था चन्द्र-मास के हिसाब से ३ वर्ष, २ मास एवं ८ दिन[2] की थी, हज़रत जहाँबानी से भेंट कराने के लिए उपस्थित किया गया। हज़रत जहाँबानी को उस ईश्वर द्वारा पोषित नूर के परोपकारी मुखड़े दर्शन द्वारा अन्तरंग एवं बहिरंग दोनों की प्रसन्नता प्राप्त हुई। सौभाग्य के उद्यान के उस वृक्ष की कुशलता एवं खिलाफत के वंश के उस दीप के प्रकाश की प्राप्ति के कारण उन्होंने (ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये) सिज्दे किए।

१ 'बे जंग गिरिफ्त मुल्के काबुल रा बे'

बे	ب	=	२
ये	ی	=	१०
जीम	ج	=	३
नून	ن	=	५०
गाफ़	گ	=	२०
गाफ़	گ	=	२०
रे	ر	=	२००
फ़े	ف	=	८०
ते	ت	=	४००
मीम	م	=	४०
लाम	ل	=	३०
काफ़	ک	=	२०
काफ़	ک	=	२०
अलिफ़	ا	=	१
बे	ب	=	२
लाम	ل	=	३०
अलिफ़	ا	=	१
रे	ر	=	७
वाव	و	=	६
ये	ی	=	१०
			९५२

२ अकबर का जन्म ५ रजब ९४९ हि० को हुआ था। हुमायूं १२ रमज़ान ९५२ हि० को काबुल में प्रविष्ट हुआ। इस प्रकार उसकी अवस्था ३ वर्ष २ मास ८ दिन होना चाहिये। प्रकाशित ग्रन्थ में ४ वर्ष है जो छापे की भूल ज्ञात होती है।

इस उत्कृष्ट प्रताप एव असीम आशीर्वाद के समक्ष उन्होंने दान-पुण्य एव परोपकार के द्वार ससार के सर्व साधारण एव विशेष व्यक्तियो के लिए खोल दिए।

हुमायू का शीत ऋतु में काबुल में निवास

दूसरे दिन ससार को प्रकाश देने वाली प्रात को हजरत जहाँवानी प्रताप एव सफलता के सिंहासन पर आरूढ हुए और अपने राज्य के समस्त उच्च पदाधिकारियो एव समस्त सैनिको, परिजनो, दासो तथा सैनिको की कोरनिश ली और समस्त लोगो ने जमीन बोस[1] करने का सम्मान प्राप्त किया और खिलाफत के स्थायित्व एव सल्तनत की पताका के बुलन्द रहने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। हजरत जहाँवानी न्याय एव परोपकार के द्वार ससार वालो पर खोल कर पूरे जाडे भर अरक मे विश्राम, ईश्वर की इच्छाओ की पूर्ति एव सर्व साधारण की सान्त्वना का प्रयत्न, करते रहे।

काबुल की कुछ अन्य घटनायें

उस समय जो घटनायें घटी उनमें यूनुस अली एव मुईद बेग की मृत्यु है जो सल्तनत के स्तम्भ एव सम्मानित दरबार के मुख्य पदाधिकारी थे। उन्ही दिनो सम्मानित कानो तक यह बात पहुँची कि ख्वाजा मुअज्जम, मुकद्दम बेग से मिलकर भाग जाना एव मीर्जा कामरान के पास चला जाना चाहता है। इस बात से उनके सम्मानित हृदय को बडा कष्ट हुआ। उन्होने मुकद्दम बेग को कश्मीर की ओर निर्वासित कर दिया और ख्वाजा मुअज्जम को कृपा एव विश्वास की दृष्टि से गिरा दिया। हजरत जहाँवानी के आगमन एव उनके उपकार की छाया से काबुल सुख-शान्ति एव दैवी कृपाओ का केन्द्र बन गया।

हजरत शाहंशाह के खतने के समारोह का जश्न एव सजावटें तथा राज्य के उद्यान के उस पौधे के चमत्कार

(२४६) लोगो की इच्छाओ की पूर्ति करने वाले बुजुर्गों एव सौभाग्यशाली स्वामियों की सम्मानित इच्छा सर्वदा यह रहती है कि वे कोई न कोई बहाना निकाल कर दान-पुण्य किया करें। सांसारिक लोगों की कुदृष्टि से सुरक्षित रहने के लिए ऐसी उत्कृष्ट एबादत को[2], जिसका मूल-मत्र लोगो के हृदय को हाथ में लेना तथा लोगो के हृदय पर हाथ रखना है, प्रथाओ एव परम्पराओं के रूप में सम्पन्न करते हैं। इस प्रकार इस समय जब सौभाग्य का शीतल पवन पुन प्रवाहित हुआ और आकांक्षाओ की वाटिका फिर से फूली तो प्रताप के उद्यान के उस नए वृक्ष एव ऐश्वर्य तथा गौरव के बाग के नए पौधे के खतने को बहाना बना कर ससार वालो पर गुज एव दान पुण्य के द्वार खोल दिये गये। बहार के प्रारम्भ में जब कि वनस्पति की आत्मा उन्नति पर थी और इच्छा का बुल्बुल उडने वाला था, तो (उस समय यह स्थिति थी) :

१ भूमी-चुम्बन।
२ 'ज्वाने गुदीदा'।

शेर

'बनफशा सिर उठाये हुए नहर के किनारे से,
भूमि हुई फलो की सुगधि से अम्बर रुपी।
प्रात काल का शीतल पवन कस्तूरी की सुगधि से,
मानो सहस्रो कस्तूरी की थैलियाँ अपने शरीर मे रक्खे हो।'

उन्होने आदेश दिया कि उरता बाग[1] में जो बड़ा ही आकर्षक एव हृदयग्राही है पडाव किया जाय और लोगो के हृदय को अधिक सतुष्ट करने के लिए, जो वास्तव में ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने (का साधन है), आनन्द मगल क द्वार खोल दें। कैकाऊस[2] एव कैकुबाद[3] की प्रथाओ को ताजा करते हुए आदेश दिया कि बेगमे अपनी-अपनी श्रेणी के अनुसार इस आनन्द वर्धक उद्यान की शोभा मे वृद्धि करें और अमीर तथा शहर के प्रतिष्ठित लोग चारबाग़ के सौन्दर्य को बढायें। समस्त अमीर अभिलाषा की कमर मे प्रयास की पेटी बाँध कर इस कार्य हेतु प्रयत्न करने लगे और नगर के प्रतिष्ठित लोग एव काल के सम्मानित व्यक्ति अपनी-अपनी श्रेणी एव शक्ति के अनुसार उचित रूप से प्रयत्न मे व्यस्त हो गए। कलाकार एव शिल्पकार दूकानो को सजाने एव बाज़ार की चहल पहल बढाने के विषय में अत्यधिक परिश्रम करने लगे। अल्प समय मे इस प्रकार की सजावट कर दी गई जिसकी प्रशसा सम्भव नही। हज़रत जहाँबानी रोज़ाना पधार कर आनन्द मगल की सभाओ को शोभा प्रदान करते थे और प्रत्येक को उसकी स्थिति एव श्रेणी-अनुसार सम्मानित करते थे। इन शाहाना जश्नों के प्रारम्भ होने के पूर्व कराचा खा, मुसाहिब बेग एव दरबार के कुछ अन्य विश्वास-पात्र जो हज़रत मरियम मकानी के भाग्यशाली हौदज को कन्धार से लाने के लिए भेजे गए थे, समय पर पहुँच गए। हज़रत मेहदे उलिया के शुभ चरणो के आगमन से आनन्द मगल मे और भी वृद्धि हो गई।

अकबर की बुद्धि की परीक्षा

(२४७) हज़रत जहाँबानी के सम्मानित हृदय में आया कि हज़रत शाहशाह, जिनके ललाट से बाल्यावस्था से ही दैवी प्रकाश की सहस्रो किरणें फटा करती थी, की बुद्धि का कसौटी पर ससार के छोटे बडे सभी लोगो को निरीक्षण कराया जाय अत अन्त पुर[4] मे एक शाहाना जश्न का आयोजन हुआ। अन्त पुर की समस्त पवित्र एव सतीत्व की स्वामी महिलायें, भाग्यशाली दरबार में अभिवादन द्वारा सम्मानित हुईं और उपस्थितगण की बुद्धि की शिक्षा के लिए हज़रत शाहशाह को आदर सम्मान के कधो पर बैठा कर भाग्यशाली मसनद के समक्ष प्रस्तुत

१ बीच के उद्यान।
२ ईरान के कयानी वश का दूसरा बादशाह। वह बडा महत्वाकाक्षी बताया जाता है। उसकी तथा उसके सेनापति रुस्तम की कहानियाँ फिरदौसी के **शाहनामा** के कारण अमर हो गई हैं।
३ ईरान के कयानी वश का सस्थापक। फिरदौसी के **शाहनामा** से पता चलता है कि वह भी बडा प्रतापी बादशाह था। कहा जाता है कि वह १२० वर्ष तक जीवित रहा और उसने ४ पुत्र छोडे —कैकाऊस, अरिश, रूम तथा अरमेन।
४ मूल में "सरादेकाते इस्मत—सतीत्व के पर्दे"।

किया गया। उत्कृष्ट शाही आदेशानुसार हजरत मरियम मकानी अन्य स्त्रियो के साथ समस्त बेगमो के समान बिना किसी भेद-भाव के हजरत शाहशाह के समक्ष आई। दैवी सकेत करने वाला शाही आदेश इस प्रकार हुआ कि सल्तनत के नेत्र की पुतलियो का वह प्रकाश अपनी सम्मानित माता को महिलाओ के उस समूह मे से पहचान ले। हजरत शाहशाह ने दैवी प्रकाश द्वारा बिना किसी कठिनाई और भूल-चूक एव शका अथवा भ्रम के अपनी जन्मजात बुद्धि एव प्रतिभा के कारण अपनी माता को पहचान लिया और उनकी गोद में जाकर बैठ गए। इस विचित्र घटना को देखकर, जो लोग वाह्य बातो के निरीक्षण के आदी थे, उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा और जो विश्वास पात्र दरबार मे उपस्थित थे, वे प्रशसा का नारा लगाने लगे। आदि काल से सम्मान प्राप्त एव भाग्य के कारखाने के इस विचित्र व्यक्ति के महत्व को सब लोग समझ गए। सब लोगो को ज्ञात हो गया कि यह ज्ञान शारीरिक ज्ञानेन्द्रियो का परिणाम नही, जो कम अवस्था में कुछ और तथा अधिक अवस्था मे कुछ और होता है, अपितु केवल आध्यात्मिक ज्ञान एव दैवी शिक्षा का फल है। सौभाग्य की वाटिका के इस पौधे द्वारा पवित्र नूर सृष्टि की पूर्व दिशा से प्रकट हो रहा था।

नि सन्देह जिसका मिलन अनादि काल से हो चुका है उसमे दूरी का आवरण कोई रुकावट नही डाल सकता, आध्यात्मिक निकटता मे वाह्य दूरी किसी प्रकार बाधक नही हो सकती। यदि सोच-विचार किया जाय तो दूरी का क्या स्थान है, कारण कि जीवन की गुलाब की झाडी के प्रथम फूल में उच्च कोटि का सम्बन्ध अनादि काल से प्राप्त है और अस्तित्व का फैलाने वाला प्रकाश, शारीरिक ढाचे का पूर्ण होना, एव इन्द्रिय ज्ञान की पालिश (ऐसी बातें है जो) शनै शनै प्राप्त होती है। एकान्तवास एव पवित्र जीवन के ससार मे, जिसके निकट अज्ञानता के अधकार एव असावधानी के बाहुल्य का पहुँचना सम्भव नही, बडा सम्बन्ध है। रहस्यों के ससार के दूरदर्शी लोगो मे यह बात छिपी नही कि यह उत्कृष्ट गुणो का स्वामी, यद्यपि शरीर एव मानवता का चोला धारण किए है किन्तु वास्तव में जहां तक उसकी प्रकृति का सम्बन्ध है उसके पिता एव माता के पूर्वजो का जन्म उसी के कारण हुआ है और आध्यात्मिक दृष्टि से वह पिताओ का पिता है। हजरत जहांबानी को, जो दैवी रहस्यो के रक्षक थे, यह बात ज्ञात थी कि जीवन के ससार की वाटिका को सजाने वाले ने अस्तित्व की बहार के इस पौधे को सर्वप्रथम ससार वाला की स्थिति के ज्ञान और दूसरे, ससार की अव्यवस्था को सुव्यवस्थित करने के लिये प्रकट किया है। (२४८) सक्षेप में, खतने के जश्न मे (हजरत जहांबानी ने) ईश्वर की सासारिक एव आध्यात्मिक महान् देन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना प्रारम्भ कर दिया। वे नित्य प्रति नए-नए ढग एव उचित नियम से पादशाहाना जश्न सजा कर ससार को शोभा प्रदान करने वाले परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट किया करते थे और आम-पास से धार्मिक एव उच्च श्रेणी के लोग आ-आकर शाही देनो से लाभान्वित होते रहते थे।

मीर्ज़ा यादगार नासिर का पहुँचना

उन्ही खुशियो के समय यादगार नासिर मीर्ज़ा द्वारा कालीन चूमने का सम्मान प्राप्त करना है[1]।

१ इस विषय में बायजीद की कृति का अनुवाद आगे के पृष्ठों में देखिये। वह अधिक प्रामाणिक ज्ञात होता है।

उसका सक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है :—कन्धार के क्षेत्र में भाग्यशाली पताकाओं के बुलन्द होने के समय, जैसा कि लिखा जा चुका है, वह मीर्जा कामरान से पृथक् होकर बदख्शाँ पहुँचा और वहाँ सफलता न प्राप्त करके हजरत जहाँबानी की सेवा मे रवाना हुआ। जिस समय उत्कृष्ट सेना कन्धार से काबुल विजय हेतु रवाना हुई, मीर्जा ससार के कष्टो को भोगता हुआ कन्धार पहुँचा। बैराम खाँ ने आतिथ्य में कोई कसर उठा न रक्खी। वहाँ से सम्मानित आदेशानुसार उन आनन्दवर्धक दिनो में हज़रत जहाँबानी की पवित्र चौखट का चुम्बन करके सौभाग्यशाली बना तथा शाहाना जश्न मे सम्मिलित हुआ। हजरत जहाँबानी के प्रति भी अभिवादन करके उनकी कृपा-दृष्टि द्वारा सम्मानित हुआ तथा अपने सौभाग्य में वृद्धि की।

अकबर का ख़तना

इस आनन्द मगल के अवसर पर, भोग-विलास की बहार सजी तथा सौभाग्य एव प्रताप की वाटिका को शोभा प्राप्त हुई। जब कि शुभ नक्षत्र ससार वालो पर आशीर्वाद के प्रकाश की वर्षा कर रहे थे, (उस समय) दैवी वाटिका को शोभा प्रदान करने वाले पौधे अर्थात् हज़रत शाहंशाह का सहस्रो खुशियो एव आनन्द-मगल सहित खतना हुआ। ससार वालो की सफलता के साधन एकत्र हो गए और लोगो के लिए सौभाग्य एव प्रताप के द्वार खुल गए। राज्य के छोटे-बडे शाही दान-पुण्य से लाभान्वित हुए और चारो ओर सर्व साधारण एव विशेष व्यक्तियो को पादशाही कृपाओं द्वारा प्रसन्नता प्राप्त हुई। ससार वालो के कष्ट, आराम मे परिवर्तित हो गए एव ससार वालो की अशान्ति, शान्ति में बदल गई। अमीरो ने सम्मानित दृष्टि के समक्ष उपहार प्रस्तुत किए और वे उचित प्रोत्साहन द्वारा प्रतिष्ठित हुए।

आनन्द-मंगल एव समारोह

इसी समारोह के अवसर पर हज़रत जहाँबानी लोगो के हृदय को सतुष्ट करने एव दिलो को हाथ में लेने के लिए, जो राज्य-व्यवस्था का सर्वोत्कृष्ट आधार है, ख्वाजा रेगे रवां[1] की ओर रवाना हुए और आनन्द-मगल के आयोजन का आदेश दिया। एक अनुल्लघनीय आदेश हुआ कि अमीर लोग एक दूसरे से मल्ल युद्ध करें। हजरत जहाँबानी ने इमाम कुली कूरची से और मीर्जा हिन्दाल ने यादगार नासिर मीर्जा से मल्ल-युद्ध किया। वहाँ से वे ख्वाजा सेह यारान[2], अरगवान[3]

-

१ ख्वाजा सेह यारान के समीप। बाबर ने २४ दिसम्बर १५१९ ई० को इस स्थान की सैर की। (**बाबर नामा**, पृ० १२९)। यह कोह दामन के ऊपरी सिरे पर इसकी उत्तर दिशा में है।

२ तीन मित्र। बाबर ने इस स्थान के विषय में लिखा है :—"ग्राम तथा घाटी की तलहटी के मध्य में ढाल की ओर ४ द मील पर एक झरना है जो सेह यारान के नाम से प्रसिद्ध है। इसके चारों ओर तीन प्रकार के वृक्ष पाये जाते है। झरने के ऊपर चुनार के वृक्ष बडी अधिक सख्या में हैं। इनकी छाया बडी उत्तम होती है। झरने के दोनों ओर उन पुश्तों पर, जो पर्वत के नीचे हैं, बिलूत के वृक्ष बहुत बडी सख्या में पाये जाते हैं। इन दो बिलूतिस्तानों के अतिरिक्त पश्चिमी काबुल के पर्वतों में कहीं भी बिलूत नहीं होता। झरने के समक्ष दश्त की दिशा में अत्यधिक अरगवान होते हैं। इन अरगवानों के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान पर अरगवान नहीं होते।" (**बाबर नामा**, पृ० २४)।

३ लाल फूल लाने वाला एक वृक्ष।

उद्यान की सैर हेतु रवाना हुए और वहाँ आनन्द-मगल की व्यवस्था की। वहाँ से लौटकर एव भव्य जश्न के आयोजन का आदेश दिया। सम्मानित चौखट के सेवकों को उनकी श्रेणी एव (२४९) स्वामी-भक्ति के अनुसार पुरस्कार स्वरूप उचित जागीरें, एव खिलअतें प्रदान की। गज़नी तथा उसे क्षेत्र के स्थान मीर्ज़ा हिन्दाल को तथा ज़मीनदावर, तीरी एव उस क्षेत्र के स्थान उलुग मीर्ज़ा को प्रदान किए। वे दास्ता की चौखट से सम्बन्धित सभी लोगों को उनकी श्रेणी एव पद के अनुसार वेतन एव दान-पुण्य द्वारा लाभान्वित करके सिंहासनारूढ हुए। सर्व साधारण ने अनुकम्पा एव दान-पुण्य की छाया में समृद्ध होकर अपने उद्देश्य एव लक्ष्य की प्राप्ति की।

अन्य लोगो का हुमायूँ के दरबार में आगमन

जो घटनाये इस जश्न के समय घटी उनमें सम्मानित शाह तहमास्प के दूतों का आगमन था। वे विजय की बधाई एव उपहार इत्यादि लाये। उनका सरदार वलद बेग था। हज़रत जहाँबानी ने उसे शाही कृपाओं द्वारा सम्मानित किया। शाह कासिम तगाई का उत्कृष्ट दरबार में आगमन दूसरी घटना थी। वह मीर्ज़ा सुलेमान की ओर से दूत बनकर प्रार्थना-पत्र एव पेशकश लाया था। मीर्ज़ा ने अपने न आने के विषय मे जो कुछ लिखा था, वह स्वीकार न किया गया और उसके आगमन के विषय में अनुल्लघनीय आदेश दिया गया। उसे सूचना दी गई कि उसे उसी समय निष्ठावान् एव स्वामी-भक्त समझा जायगा जब कि वह स्वय उपस्थित हो जाय।

जो घटनाये इस जश्न के समय घटी उनमें से एक मीर सैयिद अली का आगमन था। वह अफगानो एव बिलोचा के प्रदेश में अपनी ज़मीनदारी एव सच्चाई के लिए प्रसिद्ध था और सिन्ध[1] के अधीनस्थ दूकी[2] नामक स्थान के समीप निवास करता था। उसने सच्चाई के चरणों एव निष्ठा के सिर से चौखट चूमने का सम्मान प्राप्त किया तथा शाही कृपाओं द्वारा सम्मानित हुआ। उसे दूकी प्रदान कर दिया गया। लगभग उसी समय लवग बिलोच ने, जो अपने समूह का सरदार था, अपने भाइयो सहित उपस्थित होकर धरती-चुम्बन किया। हज़रत जहाँबानी ने उसके प्रति भी कृपादृष्टि प्रदर्शित करके शाल एव मस्तग की विलायत उसे प्रदान कर दी। इन आगन्तुको की इच्छाओं की पूर्ति करके उन्हे इस आशय से शीघ्रातिशीघ्र लौटा दिया गया कि कहीं उनके स्वभाव की वहशत इन वहशी लोगो को अपने वश मे न कर ले और कही अधिक समय तक प्रतीक्षा का वातावरण उनके अनुकूल सिद्ध न हो।

१ प्रकाशित ग्रन्थ में 'हिन्द' किन्तु कुछ हस्तलिखित पोथियों में 'सिन्ध'। यही उचित है।

२ काबुल के दक्षिण पूर्व में। बाबर ने लिखा है "कि ख्वाजा इस्माईल के पर्वत, दश्त, दूकी तथा अफगानिस्तान के पर्वत जो काबुल के दक्षिण पूर्व में हैं, सब एक ही प्रकार के हैं। वे छोटे-छोटे हैं। यहाँ हरियाली भी कम और जल का भी अभाव रहता है। ये वृक्षों से शून्य तथा भद्दे हैं और किसी काम के नहीं हैं"। (**बाबर नामा, पृ० २९**)। ९१०हि० (१५०४ ई०) में जब कि बाबर पहले पहल काबुल पहुँचा तो उसी वर्ष हिन्दुस्तान में प्रवेश करने की इच्छा से उसने खैबर पार किया तथा पेशावर पहुँच गया। वह लिखता है कि, "उस समय बाकी चग़ानियानी ने बगश के नीचे के भाग अर्थात् कोहाट पर आक्रमण करने का आग्रह किया। अफ़ग़ानों की बहुत बडी सख्या पर आक्रमण किया गया और उनका सफाया कर दिया गया। बन्नू के मैदान पर आक्रमण करके उसे लूट लिया गया और दूकी होते हुए हम लोग वापिस हुए"। (**बाबर नामा, पृ०१०१**)। **आईने अक्बरी** में दूकी को कन्धार का पूर्वी भू-भाग बताया गया है। अर्स्किन ने सिन्ध को हिन्द मान कर दूकी के विषय में लिखा है कि सम्भवत यह मुल्तान के अधीनस्थ है। [W. Erskine . *A History of India*, Vol. II (London 1854), p 327]

यादगार नासिर मीर्ज़ा का बन्दी बनाया जाना

जो घटनाएँ उन दिनों मे घटी उनमें एक यह थी कि यादगार नासिर मीर्ज़ा ने अपने दुर्भाग्य एव दुष्टता के कारण, पिछली कृपाओ एव उदारता को लपेटकर भूल के आले पर रख दिया और धृष्टता प्रदर्शित करते हुए दुष्टता एव शत्रुता के मार्ग पर अग्रसर होना प्रारम्भ कर दिया। वह अभागो के कहने पर जिनका नेता मीर्ज़ा अस्करी का कोका मुज़फ्फ़र था, सर्वदा नीच बातें सोचा करता था। जब ये बाते उत्कृष्ट काना तक निरन्तर पहुँची तो प्रमाण मिल (२५०) जाने पर हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी बडे क्रोधित हुए। सच्चे समाचार वाहको, विशेषकर अब्दुल जब्बार शेख ने, जो विश्वस्त व्यक्तियो में था और जो षड्यत्रकारियो में से एक का मित्र एव विश्वासपात्र था इसका समर्थन किया। मुज़फ्फ़र कोका को बन्दी बना लिया गया और उसकी हत्या करा दी गई। यादगार नासिर मीर्ज़ा को बुलवाकर ख्वाजा खा द्वारा कठोर बातें कहलवाईं। जो कुछ कहलाया गया उसका साराश इस प्रकार है —'हमारा यह विचार था कि इस बार जब कि पुन तेरे घोर पापो को हमने अपार कृपाओ द्वारा क्षमा करके तुझे *सम्मानित किया* है तो तू शिक्षा ग्रहण करके भूतकाल एव वर्तमान काल के पापो का निराकरण कर देगा किन्तु तेरी कृतघ्नता अपार एव असीम है।" मीर्ज़ा लज्जावश सिर झुकाकर कभी चुप हो जाता और कभी कोई बात अस्वीकार करता तथा जानते हुए भी अपनी अज्ञानता प्रदर्शित करता। हज़रत जहाँबानी ने मुख़ातिबाते हिसाबी[1] एव शाही डाँट-फटकार के उपरान्त इबराहीम ईशक आका एव कुछ अन्य लोगो को आदेश दिया कि काबुल के किले में उस स्थान के निकट जहाँ मीर्ज़ा अस्करी बन्दी है उसे भी बन्दी कर दिया जाय।

चग़ताई सुल्तान की मृत्यु

उन दिनो जो घटनाएँ घटी उनमे एक चगताई सुल्तान की मृत्यु है। वह नवयुवक मुगल शाहज़ादा था और सुन्दरता एव चरित्र मे अद्वितीय था। हज़रत जहाँबानी उसका बडा विश्वास एव उसके प्रति बडी अनुकम्पा *प्रदर्शित करते थे। उसके इस ससार से विदा हो जाने से* पवित्र हृदय को बडा धक्का पहुँचा किन्तु अनुल्लघनीय दैवी आदेश पर, जिसके अनुसार केवल ईश्वर *ही शाश्वत् है और सभी जीव नश्वर है,* तथा दूरदर्शी बुद्धि के परामर्श से उन्होने आत्म-समर्पण एव रिज़ा[2] के क्षेत्र में शरण ली। मीर अमानी ने उसकी तारीख की रचना इस प्रकार की —

शेर

'सुल्तान चगती था सौन्दर्य की वाटिका का गुलाब,
अचानक मृत्यु उसे स्वर्ग की ओर ले गई।
गुलाब की ऋतु में उसने इस उद्यान से यात्रा का सकल्प किया।
हृदय उसके दु ख की कली के समान रक्त में डूब गया।

१ इस शब्द का साधारणत प्रयोग नहीं होता। इसका तात्पर्य अभियोगों की उस निश्चित सख्या से है जो उसके विरुद्ध लगाये गये। इस विषय में बायज़ीद की कृति का अनुवाद देखिये।

२ ईश्वर की इच्छा पर आत्म समर्पण।

मैंने दुखी बुलबुल से उसकी तारीख पूछी,
रोकर उसने कहा गुलाब वाटिका से निकल गया[1]।'

हजरत जहाँबानी जन्नत आशियानी की पवित्र सेना का बदख्शाँ की विजय हेतु प्रस्थान, उस प्रदेश की विजय और जो घटनायें उस समय घटी

जब मीर्ज़ा सुलेमान के विरोध के समाचारों की सत्यता की पुष्टि हो गई और इस बात का प्रमाण मिल गया कि आज्ञाकारिता से विमुख होकर उसके सिर में बादशाह बनने की कल्पनाएँ पीडा उत्पन्न कर रही हैं और यह मिथ्यापूर्ण विचार उसे व्याकुल किए हैं तो हजरत (२५१) जहाँबानी ने ९५३ हि० के प्रारम्भ (मार्च १५४६ ई०) में अपने संकल्प की लगाम बदख्शाँ की ओर मोडी। उसके विद्रोहों में से एक यह था कि काबुल विजय के उपरान्त[2] खूस्त[3] एवं अन्दराब पर, जो मीर्ज़ा (कामरान) के अधीन थे और जिन्हें दरबार के एक सेवक को प्रदान कर दिया गया था, उसने अपना अधिकार कर लिया। चूंकि सिद्धान्त एवं व्यावहारिक दृष्टि से पूरा बदख्शाँ मीर्ज़ा के हिस्से में नहीं आता था अतः हजरत जहाँबानी चाहते थे कि 'कुन्दुज[4] एवं उस क्षेत्र के स्थानों को लेकर सम्मानित दरबार के किसी अमीर को जागीर में दे दें और उसके पास केवल उतना ही भाग रहने दें जो हजरत गेती सितानी फिरदौस मकानी ने मीर्ज़ा सुलेमान के पिता को प्रदान कर दिया था। जब उनके अधीनस्थ राज्य में वृद्धि हो जायगी तो उसकी जागीर भी बढा दी जायगी।' किन्तु उसको अनुग्रहित करते हुए कुन्दुज को उसी दशा में छोड दिया गया था। मीर्ज़ा ने अज्ञानतावश अपने आश्रयदाता की ओर से मुख मोडकर खुल्लमखुल्ला विरोध प्रारम्भ कर दिया और अपने नाम का खुत्बा पढवा दिया।

मीर्ज़ा सुलेमान के विरुद्ध प्रस्थान

हजरत जहाँबानी ने मीर्ज़ा के विरोध की अग्नि को बुझाने का संकल्प कर लिया। हजरत

१ तारीखे वै अज बुलबुले मातम जदा जुस्तम,
दर नाला शुद व गुफ्त गुल अज बाग बेरूँ शुद।
تاریخ وی از بلبل ماتم زده جستم
در ناله شد و گفت گل از باغ بیروں شد (९५३)

२ हुमायूँ द्वारा।

३ आलम्स की द्रोणी (basin) में अन्दराब के समीप जिसे आजकल अफगान तुर्किस्तान कहते हैं। बाबर की प्रतिष्ठित पत्नी एवं हुमायूँ की माता माहम बेगम की एक पुत्री तथा दिलदार बेगम की एक पुत्री का जन्म खूस्त में ही हुआ। माहम बेगम का खूस्त से बडा गहरा सम्बंध था। उसका भाई मुहम्मद अली तगाई खूस्त का एक मीर्ज़ा जादा था और बायज़ीद के अनुसार हुमायूँ ने खूस्त के विशेषकर दर्शन किये। बाबर ने हिन्दुस्तान से उपहार भेजते समय खूस्त का खास ध्यान रखखा था।

४ उत्तरी अफगानिस्तान में इस नाम की नदी तथा नगर दोनों ही हैं। इसके पूर्व में बदख्शाँ, पश्चिम में तालुकान, उत्तर में आलम्स तथा दक्षिण में हिन्दूकुश है। हिन्दूकुश के दर्रों का उल्लेख करते हुए बाबर लिखता है कि "हिन्दूकुश पर्वत से होकर, जो काबुल को बल्ख, कुन्दुज तथा बदख्शाँ से पृथक करता है, सात दर्रे हैं"। (बाबर नामा, पृ० १६)।

शाहंशाह की राजधानी काबुल में ईश्वर की रक्षा में छोड़ कर वे शुभ मुहूर्त में बाहर निकले और युरत चालाक[१] में पड़ाव किया। मीर्ज़ा अस्करी को भी अपने साथ ले लिया।

यादगार नासिर मीर्ज़ा की हत्या

उन्हें यादगार नासिर मीर्ज़ा के विषय में चिन्ता थी। जब शुभ सेना कराबाग[२] के उलंग में पहुँची तो संसार को शोभा प्रदान करने वाले ने यह निश्चय किया कि यादगार नासिर मीर्ज़ा के अस्तित्व को जीवन के शिकंजे से मुक्त करके राज्य को स्थायी रूप से शान्ति प्रदान कर दें कारण कि उसके षड्यंत्र की बत्ती एवं उसके दुष्टता की चिंगारी निकट भविष्य में वंश को जला डालेगी। मुहम्मद अली तगाई को, जिसके सिपुर्द काबुल की प्रतिरक्षा थी, इस आदेश का पालन सौंपा गया। उसने पूर्ण सरलता से साफ-साफ उत्तर दे दिया कि, मैंने कभी किसी गौरैय्या की भी हत्या नहीं की है, मीर्ज़ा की किस प्रकार हत्या करूँ? हज़रत जहाँबानी ने उसकी सरलता को क्षमा करके यह सेवा, जो पूर्ण रूप से उचित थी, मुहम्मद क़ासिम मौजी के सिपुर्द की। उसने रात्रि में उसपर धनुष के चिल्ले से मृत्यु का बाण चला दिया[३]।

मीर्ज़ा सुलेमान एवं हुमायूँ के सैनिकों में युद्ध

जब उनका पवित्र हृदय मीर्ज़ा की दुष्टता की ओर से सन्तुष्ट हो गया तो वे दैवी कृपा से निरन्तर यात्रा करते हुए बदख़्शानात[४] की ओर रवाना हुए। जब विजयी पताकाएँ अन्दराब के क्षेत्र में पहुँची एवं अली कुली अन्दराबी के उद्यान में पड़ाव हुआ तो मीर्ज़ा सुलेमान दुर्भाग्यवश बहुत बड़ी सेना लेकर युद्ध के उद्देश्य से रवाना हुआ और तीर गरान[५] नामक स्थान पर जा अन्दराब के अधीनस्थ है पहुँच कर अपनी सेना की पंक्तियाँ सुव्यवस्थित करने लगा। जब यह समाचार उत्कृष्ट कानों तक पहुँचे तो उन्होंने स्वयं प्रस्थान करने के पूर्व, हिन्दाल मीर्ज़ा, क़राचा ख़ाँ, हाजी मुहम्मद ख़ाँ एवं वीरों के एक अन्य समूह को आगे भेजा। बादशाही सेना एवं मीर्ज़ा में घोर युद्ध (२५२) हुआ। मीर्ज़ा सुलेमान एक खाईं में शरण लेकर दृढ़तापूर्वक युद्ध करता रहा। मीर्ज़ा बेग बरलास धनुर्धारियों की सेना लिए हुए उस ओर से पौरुष एवं धनुष चलाने की कुशलता का प्रदर्शन कर रहा था। मीर्ज़ा हिन्दाल, क़राचा ख़ाँ, एवं हाजी मुहम्मद ख़ाँ ने वीरतापूर्वक युद्ध किया। ख़्वाजा मुअज़्ज़म एवं बहादुर ख़ाँ बाण द्वारा आहत हुए और वे घोड़े से उतर पड़े। बलद क़ासिम बेग, जाफ़र बेग क़राचीन[६], अहमद बेग एवं तूग़ान[७] बेग जो शाह के विशेष क़ूरची[८]

१ क़ाबुल के उत्तर पश्चिम में लगभग २ मील पर घास का मैदान। बाबर ने इसकी चर्चा करते हुए लिखा है कि 'यह बहुत बड़ा मैदान है किन्तु यहाँ मच्छर घोड़ों को बड़ा कष्ट पहुँचाते रहते हैं। (बाबर नामा, पृ० १६)।
२ क़ाबुल के उत्तर में लगभग ५ मील पर इस्तालीफ़ के समीप।
३ हत्या कर दी। इस विषय में बायज़ीद की कृति का अनुवाद देखिये।
४ बदख़्शाँ प्रदेश।
५ कुछ पोथियों में 'तबर गरान'।
६ अंगरक्षक।
७ बायज़ीद के अनुसार 'तूग़ान बेग'।
८ अंगरक्षक।

थे और (शाह) के दूत के साथ इस युद्ध में भाग ले रहे थे, घोड़े के गिरने के कारण भूमि पर आ रहे। दोनो ओर से तराजू के (पलडों के) समान युद्ध हो रहा था कि भाग्यशाली रिकाब के सैनिक एवं अनुभवी योद्धाओं, यथा शेख बहलूल, सुल्तान मुहम्मद कवाब, रुतुफी सहरिन्दी, सुल्तान हुसैन खा, मुहम्मद खा जलायर, मुहम्मद खा तुर्कमान, मीर्जा कुली जलायर, हैदर मुहम्मद खा के भाई मीर्जा कुली, एव शाह कुली नारजी ने परोक्ष मे विजय प्रदान करने वाले विधाता पर आश्रित होकर मीर्जा बेग पर आक्रमण किया। दैवी कृपा से वीरतापूर्वक खाई पार करके तलवारें चलानी प्रारम्भ कर दी और बडी फुर्ती एव कुशलता से शत्रुओं की पक्तियों पर पहुँच गए। शत्रु भाग्यशाली दस्ते के आक्रमण को सहन न कर सके और पलायन कर गये। वे पराजय को ही बहुत बडी देन समझकर घबडाहट में छिन्न भिन्न हो गये।

मीर्जा सुलेमान का पलायन

प्रत्येक दिशा में अनुभवी वीर एव रण-क्षेत्र के सिंहों ने विजय एव सफलता के मैदान में कदम बढाये। हज़रत जहाँबानी अभी वीरता के घोडे पर सवार भी न होने पाये थे कि विजय एव सफलता का शोर उनके सावधानी के कानो तक पहुँच गया और युग ने बधाई के लिए मुह खोल दिया। मीर्जा सुलेमान ठहर न सका और नारीन[1] एव इश्कीमिश[2] के मार्ग से खूस्त के दर्रों की ओर रवाना हो गया। तालीकान का तूलक, मीर्जा बेग बरलास[3], एव उवैस सुल्तान जो मुगुलिस्तान के सुल्तानों के वश से था, मीर्जा सुलेमान से पृथक होकर चौखट के चुम्बन द्वारा सम्मानित हुए। मीर्जा हिन्दाल एव वीरों के एक समूह को भागने वालों को बन्दी बनाने के उद्देश्य से नियुक्त करके हजरत जहाँबानी स्वय चल खडे हुए। युद्ध के वीरो को अत्यधिक बदख्शी घोडे प्राप्त हो गए। हजरत जहाँबानी शाशान दर्रे[4] से खूस्त घाटी में पहुँचे। मीर्जा सुलेमान थोडे से लोगो को साथ लेकर कोलाब[5] की ओर पलायन कर गया। बदख्शाँ के अधिकाश उच्च पदाधिकारियों एव उस भूभाग के सैनिकों के समूहों ने उपस्थित होकर धरती-चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया। हज़रत जहाँबानी ने उनमें से प्रत्येक को उसकी श्रेणी के अनुसार प्रोत्साहन देकर शाही कृपा द्वारा सम्मानित किया। दलो के बाहुल्य के कारण ५-६ दिन तक वे खूस्त मे (२५३) आनन्द मगल मनाते एव लोगो को लाभ पहुँचाते रहे। मुर्गाबी, चकोर एव मछली का शिकार करके वे वरस्क[6] की ओर रवाना हुए। वहाँ एक विशेष विधि से कोरैये का जाल से शिकार

१ प्रकाशित ग्रन्थ में 'नारी'। नारीन इश्कीमिश के उत्तर में, सर्खाब की एक सहायक नदी पर।

२ इश्कीमिश कुन्दुज से दक्षिण पूर्व की ओर लगभग १५ मील पर है। यह तालीकान से ३० मील दक्षिण में है।

३ बायजीद के अनुसार गूर का हाकिम।

४ प्रकाशित ग्रन्थ में 'सामान' किन्तु अन्य हस्तलिपियों में 'शाशान'। यह तीर गरान एव अन्दराब के उत्तर में था।

५ ख्वाकमस के उस पार।

६ प्रकाशित ग्रन्थ में 'दररक' किन्तु 'वरस्क' अधिक उचित है। बाबर ने हिंदुस्तान की विजय के पश्चात् वरस्क (बदख्शा में) की घाटी की ओर के प्रत्येक नर नारी, दास, स्वतन्त्र तथा बालिग एव नाबालिग को एक एक शाहरुखी भेजी थी। (**बाबर नामा**, पृ० २०२, अबुलफ़ज़्ल **अकबर नामा भाग १**, पृ० ९९, **मुगुल कालीन भारत—बाबर**, पृ० ३९२)।

होता है। शिकार करके वहाँ से कलावगान[1] में पडाव हुआ। वहाँ से भाग्यशाली सेना का पडाव क्रिश्म[2] में हुआ। मीर्जा सुलेमान ने उस क्षेत्र मे रहना उचित न समझकर आमू नदी पार की और कुछ लोगो सहित उस क्षेत्र में मारा मारा फिरता रहा।

ईरानियो को दड

किश्म में एक घटना यह घटी कि ईरान के शाह तहमास्प का खुसरो नामक एक सेवक भागकर हज़रत जहाँबानी की सेवा में आ गया था। उसने शाह के सम्बन्ध मे खुल्लम-खुल्ला कुछ अपशब्द कह दिये। दूरान बेग, हुसेन बेग एव जाफर बेग नामक शाह के कूरची, जो उत्कृष्ट सेना के साथ थे, यह बात सुनकर किश्म के बाजार में खुसरो के पास पहुँचे और उसकी हत्या कर दी। हज़रत जहाँबानी को यह उद्दडता अच्छी न लगी और उन्होंने उनको बन्दी बनवा दिया। कुछ दिन उपरान्त हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार की सिफारिश पर उनके अपराध पर क्षमा के अक्षर लिख दिए गए[3]।

हुमायूं का रुग्ण होना

जब बदख्शाँ की व्यवस्था राज्य के सहायको की इच्छानुसार (भली भाँति) सम्पन्न हो गई तो कुन्दुज एव उस क्षेत्र को मीर्जा हिन्दाल को प्रदान कर दिया गया और बदख्शाँ का अधिकाश भाग राज्य के सेवको में जागीर के रूप में बाँट दिया गया। मुनइम खा को खूस्त का एव बाबूस बेग को तालीकान का राजस्व वसूल करने के लिये भेजा गया। ससार को शोभा प्रदान करने वाले (पादशाह) ने यह निश्चय किया कि बदख्शाँ की अधिक सुव्यवस्था एव सेना तथा प्रजा की सुख शान्ति हेतु शीत ऋतु में वे किलये ज़फर में पडाव करे। इस उत्तम उद्देश्य से वे उस ओर रवाना हुए। जब वे शाखदान नामक स्थान पर जो किश्म एव किलये ज़फर के मध्य मे है, पहुँचे तो रुग्ण हो गए और इस प्रकार लगभग दो मास तक उसी पडाव पर ठहरे रहे। इस रोग के प्रारम्भ में वे चार दिन तक मूर्च्छित पडे रहे। इस कारण नाना प्रकार की अफवाहे फैल गईं और लोग अपनी अपनी जागीरो के महाल छोडकर आने लगे। मीर्जा हिन्दाल अपने महाल से कुत्सित विचारो सहित अन्य अमीरों को लेकर कोकचा नदी के तट तक पहुँच गया। मीर्जा सुलेमान के हितैषी विभिन्न स्थानो पर सिर उठाने लगे किन्तु कराचा खा निष्ठावानो के एक समूह को लेकर पहुँच गया और उत्कृष्ट दरबार के (प्रागण) मे खेमे लगा दिए। मीर्जा अस्करी को, जिससे उसे शका थी कि वह षड्यन्त्र रचेगा बन्दी बनाकर अपने शिविर में ले आया और स्वय चौखट का फर्श बनकर सेवा एव तीमारदारी करने लगा। उनकी पवित्र सेवा मे ख्वाजा खावन्द महमद एव ख्वाजा मुईन[4] के अतिरिक्त कोई न जा सकता था। पाचवें दिन जो स्वस्थ होने का पहला दिन था, वे स्वस्थ होने लगे। मीर बरका कोरनिश हेतु उपस्थित हुआ। जब हज़रत जहाँबानी की

१ कलागान, किश्म के पश्चिम में। इसे कलाऊकान भी कहते थे।
२ सवीं शती हि० (१४वीं शती ई०) में जब तीमूर ने बदख्शा पर आक्रमण किया तो किश्म ही बदख्शा की राजधानी थी। यह आक्सस नदी के ऊपरी द्रोणी (basin) में है।
३ क्षमा कर दिया गया।
४ ख्वाजा मुईन, ख्वाजा खावन्द का पुत्र था।

दृष्टि उसपर पड़ी तो वह उनके स्वस्थ होने के कारण ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये अपने आपको उनपर न्योछावर करने के निमित्त व्याकुल होने लगा। हजरत जहाँबानी ने कहा कि, (२५४) "मीर[1] ईश्वर ने मुझे बख्श दिया[1]।" मीर ने कार्यों के अस्त-व्यस्त होने एवं क़राचा खा की दृढ़ता के सम्बन्ध में कुछ निवेदन किया। हजरत जहाँबानी ने क़राचा खा को बुलवाकर उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट की और उसकी सेवाओं की प्रशंसा करते हुए प्रसन्नता प्रकट की। तत्काल इस आशय का कृपा युक्त फरमान सल्तनत की धारा को सुशोभित करने वाले उस पौधे एवं प्रताप के बहार के सरो अर्थात् हजरत शाहंशाह को लिखकर फजील बेग के हाथ काबुल भेजा गया ताकि ये चिन्ताजनक समाचार वहाँ न पहुँच जाये और उस दैवी नूर के हृदय के दुःख तथा उस प्रदेश के अस्त-व्यस्त होने का कारण न बन जायें। एक सुखद संयोग यह हुआ कि जिस रात्रि में उनके रुग्ण होने के दुःखपूर्ण समाचार काबुल पहुँचे, दूसरे दिन प्रातःकाल फजील बेग कृपा-युक्त फरमान लेकर पहुँच गया। उनके स्वस्थ हो जाने एवं कुशलता के सुखद समाचार से कष्टों का अन्त हो गया और यह बात सुव्यवस्था एवं दृढ़ता का साधन बन गई तथा उपद्रव की अग्नि शान्त हो गई। मीर्जा हिन्दाल लौटकर अपने स्थान को चला गया और प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी जागीर को वापस हो गया।

ख्वाजा सुल्तान मुहम्मद रशीदी की हत्या

जो घटनाएँ इस वर्ष घटी उनमें ख्वाजा सुल्तान मुहम्मद रशीदी[2] की, जिसे विजारत का पद प्राप्त था, हत्या है। इस घटना का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है — ख्वाजा मुअज्जम ने कुछ गुडों के साथ, जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी और जो मूर्ख अधर्मियों एवं विवेक-शून्य कमीनों के समान मूल लक्ष्य पर तो ध्यान देते नहीं अपितु शब्दों के जाल में फँसे रहते हैं और जिनके नथुनों तक न तो हकीकत की सुगन्धि पहुँची होती है और न जिन्हें न्याय का ज्ञान होता है और न जिनकी सूझ-बूझ एवं प्रतिभा के वृक्ष में दैवी ज्ञान के फूल से कोई फल निकला होता है, धर्मान्धता की बातें प्रस्तुत की। धर्मान्धता के कारण अधर्म को धर्म समझकर इस वर्ष की २१ रमजान[3] की रात्रि में ख्वाजा (सुल्तान मुहम्मद रशीदी) के घर पहुँच गए और रोजा खोलने के समय उसे मूर्खता की तलवार के जल से मृत्यु का शरबत पिलाकर उसका रोजा खुलवा दिया[4]। तदुपरान्त बादशाही आतंक के भय से, जो दैवी दड के अनुरूप है, भाग खड़े हुए। जब ये समाचार उनके पवित्र काना तक पहुँचे तो उन असयमी लोगों को बन्दी बनाने के लिए कुछ लोग नियुक्त हुए और अनुल्लंघनीय फरमान काबुल के अधिकारियों के नाम, जहाँ वे अभागे पहुँच गए थे, प्रेषित किया गया। मुहम्मद अली तगाई एवं फजील बेग तथा अन्य लोग, जिन्हें हजरत शाहंशाह की सेवा में सम्मान प्राप्त

१ स्वस्थ कर दिया।
२ बायजीद के अनुसार 'रशीद दीवान'।
३ २१ रमजान ९५३ हि० (१५ नवम्बर १५४६ ई०)।
४ हत्या कर दी।

था, काबुल की शासन-व्यवस्था में तल्लीन हो गए। उत्कृष्ट फरमान की सूचना पाकर उन्होंने ख्वाजा मुअज्जम एवं उसके साथियों को बन्दी बना लिया[1]।

हुमायूं का स्वस्थ होना

(२५५) जब शासदान में हजरत जहाँबानी के उष्ण स्वभाव में स्वस्थ होने के चिह्न दृष्टिगत होने लगे तो वे दैवी कृपा की पालकी में किलये जफर की ओर रवाना हुए। मौलाना बायजीद ने इस बीमारी में उनकी उचित सेवा एवं परिचर्या की। उसे चिकित्सा-शास्त्र का उत्तम ज्ञान था। वह हजरत शाहंशाह को शिक्षा प्रदान करने के लिए नियुक्त था। उसके पूर्वज सिकन्दर एवं अरिस्तू सरीखे मीर्जा उलुग बेग[2] के विश्वासपात्र एवं वेधशाला के गणित शास्त्रियों में से थे, जब वे किलये जफर में ठहर गए तो अल्प समय में स्वस्थ हो गए।

हजरत जहाँबानी के स्वस्थ हो जाने के कारण संसार वालों की अभिलाषा को आनन्द-मंगल की पूंजी प्राप्त हो गई और शाही आदेशानुसार एक खानये कान[3] का निर्माण हुआ। वे अधिकांश उस स्वास्थ्यप्रद गृह में निवास करते हुए लोगों में न्याय एवं प्रसन्नता का वितरण करते रहते थे। उन्होंने वहाँ से शेर अफ्गन बल्द कूच बेग को कमहर्द[4], जुहाक[5] एवं बमियान[6] प्रदान करके विदा कर दिया और अत्यधिक उदारता प्रदर्शित करते हुए कहा कि, "जब उत्कृष्ट सेना काबुल में पड़ाव करेगी, तो तुझे जागीर में गूरबन्द[7] भी प्रदान कर दिया जायगा।" हजरत

१ बायजीद ने इस घटना का कारण धर्मान्धता नहीं बताया है किन्तु सम्भवत अबुलफ़ज़्ल ने जो कुछ लिखा है वह ठीक है। ख्वाजा सुल्तान मुहम्मद रशीदी के शीआ होने के कारण, ख्वाजा मुअज्जम एवं उसके दृष्टिकोण से सहमत लोग रशीदी के शत्रु हो गये होंगे। अकबर के राज्यकाल में धर्मान्धता की समस्या अधिक उग्र रूप धारण कर गई थी। अबुलफ़ज़्ल ने अकबर की धर्म निर्पेक्ष नीति का अपनी रचनाओं द्वारा बड़ा अधिक प्रचार किया। उसके उपर्युक्त वाक्य उसके धार्मिक विचारों के पूर्ण रूप से द्योतक हैं।

२ उलुग बेग मीर्जा ज्योतिष के ज्ञान के लिए प्रसिद्ध था। वह तीमूर के पुत्र मीर्जा शाहरुख का पुत्र था। वह अपने पिता के जीवन काल में ४० वर्ष तक समरकन्द में राज्य करता रहा। वह मार्च १४४७ ई० में अपने पिता के स्थान पर सिंहासनारूढ़ हुआ। उसने अपने राज्यकाल में ज्योतिष के ज्ञान को बड़ा प्रोत्साहन प्रदान किया। जीचे उलुग बेग उसी के प्रोत्साहन से तैयार हुआ। उसके पुत्र मीर्जा अब्दुल्लतीफ ने अक्तूबर १४४९ ई० में उसकी हत्या कर दी। कुछ अन्य वेधशालाओं के विषय में देखिये *बाबर नामा*, पृ० ८११।

३ सम्भवत काठ अथवा घास फूस का घर।

४ बामियान के उत्तर में तथा काबुल के उत्तर-पश्चिम में एक घाटी में स्थित है जो दन्दान शिकन दर्रे के समीप है। कुन्दुज नदी में यहाँ का अधिक जल जाता है। कहमर्द के किले के नीचे नदी की चौड़ाई २४ फीट हो जाती है। यहाँ ख्वाजी अब्दुल्लाह की जियारत गाह है जहाँ ग्रीष्म ऋतु में लोग बहुत बड़ी संख्या में जियारत हेतु जाते हैं। [Wood *A Journey to the Source of the River Oxus* (लन्दन १८७२ ई०), पृ० १३२]। बाबर ने उसका कई स्थानों पर उल्लेख किया है। (**बाबर नामा**, पृ० ४, ७, ११, ४९, ५३, १२६, १२१, २२५, २९५, ३७९, ४९६)।

५ काबुल तथा खुरासान के मार्ग में।

६ बामियान : गूर का पूर्वी भाग जो कि इस्लाम के पूर्व बौद्धों का बहुत बड़ा केन्द्र था।

७ गूरबन्द अथवा गूर दर्रा, हिन्दूकुश की ऊँची पहाड़ियों के दक्षिण में स्थित है और बल्ख से काबुल के मार्ग का मुख्य दर्रा है। यहाँ से तीन मार्ग निकलते हैं। (**बाबर नामा**, पृ० १९)। बाबर ९१२ हि० (१५०६-७ ई०) में खुरासान जाते हुए इन स्थानों से गुजरा था। (**बाबर नामा**, पृ० ५५)।

जहाँबानी शिकारे तुरकावल[1] से, जिसे बदख्शाँ वालो की भाषा में शिकारे नहलम कहा जाता है, जी बहलाते रहे।

हज़रत जहाँबानी के बदख्शाँ में निवास के कारण तूरान के पूरे भूभाग मे हलचल मच गई। समस्त ऊज़बेक एकत्र होकर चिन्तित रहने लगे और कोई उपाय उनकी समझ मे न आता था।

मीर्ज़ा कामरान के उपद्रव की धूल उड़ाने मे दैवी रहस्यों का अनावरण एवं काबुल पर उसका अधिकार

यह एक प्राचीन नियम एव प्रथा है कि ससार का स्रष्टा ईश्वर जब यह चाहता है कि किसी चुने हुए व्यक्ति को शासन की मसनद पर स्थान प्रदान करे और राज्य व्यवस्था के सिंहासन पर आरूढ करे, ससार वालो के हृदय की लगाम उसके अधिकार में दे, तो अपार देनो के मूल्य को पहचानने के लिए, जो उसे परोक्ष से प्राप्त होती रहती है, प्रारम्भ मे उस भाग्यशाली को नाना प्रकार के कष्टो एव दु खो का अनुभव कराता है, ताकि वह विभिन्न स्थितियो से परिचित होकर, अपने व्यवहार मे कृपा एव क्रोध, उदारता एव सकोच, हर्ष एव पीडा पर ध्यान रक्खे। यह बात उन लोगो को, जो प्राचीन अभिलेखो एव पुरानी कहानियो से परिचित है, भली-भाति ज्ञात है। क्योंकि दैवी जमाल[2] एव जलाल[3] के समुद्रो के सम्मिलन अर्थात् हज़रत शाहशाह का यह पवित्र व्यक्तित्व आदि काल से, जो भाग्य में लिख दिया गया है, उसके अनुसार स्वाभाविक रूप से बुद्धिमत्ता की उच्च श्रेणी को प्राप्त है अत. ससार को शोभा प्रदान करने वाले विधाता ने किसी (२५६) शिक्षा द्वारा अनुगृहित हुए बिना उन्हे एक अद्वितीय व्यक्तित्व एव बुद्धिमान् हृदय और प्रकाशित अन्त करण का स्वामी एव दूरदर्शी व्यक्ति बनाया है। इस प्रकार इन दुर्घटनाओ का उद्देश्य न तो केवल कृपा एव क्रोध के नियमो को सिखाना और न स्वार्थ एव मानवी भूलो का खडन ही था। ये दुर्घटनाये विरोधाभासी गुणो की ज्योति के अभ्युदय एव एक दूसरे के विरुद्ध पाये जाने वाली महत्वपूर्ण बातो की द्योतक थी। अत यह घटनाएँ उनकी बाल्यावस्था में घटी जब कि पवित्र हृदय अनुचित बातो के आभास से मुक्त था। सत्य पर आधारित इन बातो के उल्लेख से शिक्षा ग्रहण करने वाले सावधान व्यक्तियो को स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाता है कि बाह्य बातो का निरीक्षण करने वालो की दृष्टि में यह घटनाए शिक्षा के बाहुल्य एव सूझ-बूझ का परिणाम है और सत्य को समझने वाली दृष्टि में ये उस व्यक्तित्व की, जो आदि-काल से बुद्धि से सुशोभित

१ 'तुरकावल' तथा 'नहलम' दोनों ही शब्द किसी शब्द कोश में नहीं मिलते। बेवरिज का मत है कि नहलम किसी जानवर का नाम नहीं अपितु शिकार की विधि को कहते हैं। तुरकावल के अन्तिम भाग आवल का अर्थ घेरा होता है। (बेवरिज, पृ० ४६६-४६७)। सम्भवत· कमरगह विधि के प्रकार का यह शिकार होता होगा। (देखिये बायज़ीद : **तज़किरये हुमायूं व अकबर**, पृ० ७७; हिन्दी अनुवाद आगे के पृष्ठों में दिया गया है।)

२ दैवी सौन्दर्य। ईश्वर की विशेषता उसका जमाल भी बताई गई है।

३ दैवी ऐश्वर्य। ईश्वर की विशेषता उसका जलाल भी बताई गई है।

है, ज्योति है। जब कभी कष्ट का कडवा जल उस व्यक्ति की हलक में टपकाया जाता है, जो परमेश्वर के दरबार से दूर पड़ा हो और जो असमजस के रेगिस्तान मे मारा-मारा फिर रहा है, तो सर्वप्रथम शिकायत की सिलवट समर्पण के ललाट पर डाल दी जाती है,[१] और उसे नाना प्रकार की कृतघ्नता का स्रोत तथा विभिन्न प्रकार की निष्ठुरता एव अत्याचार का नमूना बना दिया जाता है ताकि उसे अनन्त तक रहने वाले कष्टो एव चिरस्थाई दड का पात्र बना दिया जाय। मीर्जा कामरान की दशा इसका उदाहरण है जिसने अपने आश्रयदाता, बडे भाई, आदिकाल से श्रेष्ठ ईश्वर द्वारा चुने हुए समकालीन बादशाह एव न्यायकारी शासक का विरोध किया और ईश्वर के इतने प्राणियो के जान व माल एव इज्जत का नष्ट कर दिया।

मीर्जा कामरान के विद्रोह के कारण हुमायू की चिन्ता

सक्षेप मे, ऐसे मगलमय अवसर पर जब कि वे निश्चिन्त होकर नाना प्रकार से प्रसन्नता एव हर्ष (बेफिक्री) एव निश्चिन्तता के वातावरण में भोग-विलास के उद्यान मे ठहरे हुए थे तो उन्हे एक विचित्र कष्ट पहुँचा। एक चिन्ताजनक समाचार यह प्राप्त हुआ कि मीर्जा कामरान ने सयम को त्याग कर विद्रोह की धूल उडाई है और राजधानी काबुल पर अचानक आक्रमण करके उसे अपने अधिकार में कर लिया है। शेर अफगन परिणाम की चिन्ता किए बिना मीर्जा से मिल गया। हजरत जहाँबानी के पवित्र हृदय को सर्वप्रथम हजरत शाहशाह और दूसरे वहा के निवासियो एव प्रजा की, जो विधाता की धरोहर है, और न्याय की दृष्टि से जिनका पोषण सतान के पोषण मे कम महत्व न रखना चाहिए और तीसरे मीर्जा के विद्रोह के फलस्वरूप घटने वाली घटनाओ के कारण, चिन्ता हो गई। इस विद्रोह को शान्त करने के लिये उन्होंने अपने दैवी साहस को उस ओर आकृष्ट किया और इस अभियान की सुव्यवस्था हेतु उचित प्रबन्ध करने लगे। इस सम्मानित इतिहास का लेखक अबुलफजल अपनी लेखनी को बातो के जाल से निकाल कर घटनाओ का विवरण देने एवं तत्सम्बन्धी सविस्तार उल्लेख करने के लिये आगे बढता है और प्रासगिक रूप से परिस्थिति का इस आशय से सक्षिप्त विवरण देता है कि जिन लोगो के आठ शब्दो के जल के प्यासे हो, वे तृप्त हो जाये।

मीर्जा कामरान का जमीनदावर पहुँचना

(२५७) घटनाओ का वर्णन इस प्रकार है जब भाग्यशाली सेना कन्धार विजय करके काबुल के क्षेत्र में पहुँची और काबुल का समस्त लश्कर एव उस भूभाग के लोग हजरत जहाँबानी के आशीर्वाद प्रदान करने वाले चरणो के आगमन से प्रसन्न हो गए और मीर्जा से पृथक् होकर उनके दल के दल एव विभिन्न समूह उत्कृष्ट दरबार मे पहुँचकर आत्म समर्पण एव आज्ञाकारिता का सिर झुकाने लगे तो मीर्जा सन्मार्ग, आज्ञाकारिता एव स्वामी भक्ति के मार्ग से विचलित होकर चिन्ता एव व्याकुलता के रेगिस्तान मे भटकता हुआ गजनी की ओर चल दिया और अधीनता

१ अर्थात् वह शिकायतें करना प्रारम्भ करता है और नाना प्रकार से कृतघ्नता, निष्ठुरता एव अत्याचार प्रदर्शित करता है।

के सौभाग्य की उपेक्षा करके भाग खड़ा हुआ। मीर्ज़ा हिन्दाल, मुसाहिब बेग एवं लोगों ने उसका पीछा किया। इसका उल्लेख काबुल विजय के प्रारम्भिक विवरण में हो चुका है। जब मीर्ज़ा का कोई पता न चला और उसके मार्ग से धूल न उड़ी[1] तो पीछा करने वाले सम्मानित आदेशानुसार काबुल वापस चले आये। मीर्ज़ा कामरान शीघ्रातिशीघ्र गजनी पहुँच गया। उस देश के निवासियों के भाग्य ने उनका साथ दिया। उन्होंने गजनी के किले को दृढ़तापूर्वक बन्द करके मीर्ज़ा कामरान के कहने पर उसके द्वार न खोले। मीर्ज़ा ने यद्यपि अत्यधिक धूर्तता प्रदर्शित की किन्तु उससे कोई लाभ न हुआ। वहा से वह खिज्र खा हजारा के घर पहुँचा। खिज्र खा आतिथ्य की प्रथाओं का पालन करके, मीर्ज़ा को तीरी ले गया और वहा से जमीनदावर। हुसामुद्दीन अली वल्द मीर खलीफा जमीनदावर में था। उसने किले को दृढ करके वीरतापूर्वक युद्ध किया और बड़ी बहादुरी से किले की रक्षा की।

मीर्ज़ा कामरान के विरुद्ध सेनाओं का भेजा जाना

जब यह समाचार सम्मानित कानों तक पहुँचे तो उन्होंने गजनी मीर्ज़ा हिन्दाल को प्रदान कर दिया और जमीनदावर एवं उस क्षेत्र के स्थान मीर्ज़ा उलुग को दे दिए। अलम, नक्कारा, तुमन, तूग[2] को अपनी कृपा का परिशिष्ट बना कर उसे उस ओर नियुक्त कर दिया। बैराम खा को कृपा-युक्त फरमान भेजा गया कि यादगार नासिर मीर्ज़ा को, जो वहाँ[3] राज्य का शुभचिन्तक बन कर पहुँचा है, मीर्ज़ा उलुग के साथ करके मीर्ज़ा कामरान के विरुद्ध भेज दे। उन्होंने एक आदेश यादगार नासिर मीर्ज़ा को भेजा कि मीर्ज़ा उलुग के साथ मिलकर मीर्ज़ा कामरान के विद्रोह को शान्त करे और इस सेवा द्वारा अपने पिछले अपराधों के निराकरण का प्रबन्ध करे। मीर्ज़ा लोग मिलकर कन्धार से जमीनदावर की ओर रवाना हुए।

मीर्ज़ा कामरान की पराजय

जब विजयी सेनाओं के आगमन के समाचार मीर्ज़ा[4] के शिविर में पहुँचे तो हज़ारा लोग छिन्न-भिन्न होकर जगलो में भाग गए। मीर्ज़ा कामरान भी भाग खड़ा हुआ और बक्कर[5] की ओर प्रस्थान करके शाह हुसेन अरगून की सेवा में (सहायता की) प्रार्थना की। मीर्ज़ा उलुग बेग अपनी जागीर में ठहर गया। यादगार नासिर मीर्ज़ा पवित्र सेवा में इस प्रकार पहुँचा जैसे लोग हज के लिए जाते हो और जैसा कि उल्लेख हो चुका है राजधानी काबुल में सेवा में उपस्थित हुआ।

हुमायूँ के रुग्ण होने के कारण मीर्ज़ा कामरान का काबुल की ओर प्रस्थान

मीर्ज़ा कामरान सिन्ध में निवास करने लगा और ट्ट्टा के हाकिम की पुत्री से, जिसकी उससे मगनी इससे पूर्व हो चुकी थी, विवाह कर लिया। कुछ दिन तक वह षड्यन्त्र एवं विद्रोह करने

१ मीर्ज़ा कामरान का पता न चला।
२ पताका, नक्कारा एवं बादशाही के अन्य चिह्न। इनकी व्याख्या आईने अकबरी में देखिये।
३ कन्धार।
४ मीर्ज़ा कामरान।
५ भक्कर।

की योजनाएँ बनाता रहा। इसी बीच में हज़रत जहाँबानी के वदख्शाँ में रुग्ण हो जाने के समाचार (२५८) प्राप्त हुए। तदुपरान्त अन्य शोचनीय समाचार फैलने लगे। मीर्ज़ा (कामरान) ने टट्टा के हाकिम से कुमक लेकर काबुल पहुँचने का संकल्प किया। टट्टा के हाकिम ने इसे बड़ा ही उत्तम अवसर समझकर, मीर्ज़ा के साथ एक सेना कर दी। कुछ लोगों का मत था कि वह सर्वप्रथम कन्धार पर अधिकार जमा ले और फिर काबुल की ओर प्रस्थान करे। क्योंकि कन्धार बैराम खाँ की देख रेख में अत्यधिक दृढ़ था, अतः वह काबुल पर अधिकार जमाना निश्चय करके धृष्टता के चरणों से अग्रसर हुआ।

अफग़ानों के घोड़ों को छीन लेना

विलात के समीप उसे कुछ अफगान व्यापारी मिले जो घोड़े लिए हुए जा रहे थे। उसने निरंकुशता प्रदर्शित करते हुए घोड़े लेकर अपने आदमियों में बाँट दिए।

ग़ज़नी पर अधिकार

वहाँ से वह ग़ज़नी की ओर बढ़ा और अचानक वहाँ पहुँच गया। मीर्ज़ा हिन्दाल की ओर से ज़ाहिद बेग किले में असावधानी एवं मस्ती का जीवन व्यतीत कर रहा था। जिस रात्रि में मीर्ज़ा (कामरान) ग़ज़नी पहुँचा ज़ाहिद बुरी तरह नशे में मस्त था। अब्दुर्रहमान कस्साब की सहायता से मीर्ज़ा के आदमी कमन्द से ऊपर चढ़ गए और किले को अपने अधिकार में कर लिया। ज़ाहिद बेग को नशे की अवस्था में मीर्ज़ा की सेवा में प्रस्तुत किया गया। इन बदमस्तों ने उसे उसी नशे की अवस्था में जीवन की बुलन्दी से विनाश के गर्त में फेंक दिया[1]। अपने जामाता मीर्ज़ा दौलत सुल्तान को ग़ज़नी में नियुक्त कर दिया। मलिक मुहम्मद को, जो टट्टा के हाकिम का एक विश्वास-पात्र था, कुमक हेतु छोड़कर स्वयं शीघ्रातिशीघ्र काबुल की ओर रवाना हो गया।

मीर्ज़ा कामरान का काबुल पर अधिकार

एक दिन प्रातःकाल अचानक काबुल पहुँच गया। सर्वप्रथम वह ताकिया दोज़ो[2] के द्वार पर पहुँचा। उसने मुहम्मद तग़ाई के विषय में, जो काबुल का हाकिम था पता लगवाया तो ज्ञात हुआ कि वह हम्माम में है और मदिरा के नशे के कारण असावधानी के ख़ुमार में ग्रस्त है। अली कुली उग़ली[3] मीर्ज़ा का एक कूरची हम्माम के भीतर प्रविष्ट हो गया और मुहम्मद अली को नग्न ही हम्माम से ले आया। मीर्ज़ा उसे तलवार के जल से स्नान कराके स्वयं किले के भीतर रवाना हुआ। पहलवान उस्तर ने दरवाज़ये आहिनी[4], जो उसकी देख-रेख में था, निश्चित योजनानुसार खोल दिया। मीर्ज़ा नगर के भीतर प्रविष्ट हो गया। काबुल नगर मीर्ज़ा कामरान के अधिकार में आ गया। उसी दिन प्रातःकाल जब यह घटना घटी तो हाजी मुहम्मद असस[5] मीर्ज़ा की सेवा में पहुँचा।

१ भूमि पर फेंककर उसकी हत्या कर दी।
२ टोपी सीने वाले।
३ अधिकांश हस्तलिपियों में 'अली कुली लाली'। बायज़ीद में भी 'अली कुली लाली' है।
४ लोहे का द्वार।
५ देखिये बाबर नामा, पृ० २३१, २६४।

मीर्ज़ा ने पूछा, "मैं किस प्रकार गया और किस प्रकार आया ?" उसने उत्तर दिया कि, 'आप सायंकाल गए और प्रातःकाल आये।" मीर्ज़ा ने जाकर अरक में स्थान ग्रहण किया। शम्सुद्दीन मुहम्मद खाँ अतगा, हज़रत शाहंशाह को बड़े आदर-सम्मान से मीर्ज़ा के पास ले गया। मीर्ज़ा, उस चमत्कार के रूप को देखकर अनायास नरम पड़ गया और नाना प्रकार से कृपा प्रदर्शित करके उन्हें, जो ईश्वर की रक्षा की छाया में थे, अल्पदर्शिता एवं ईर्ष्या के कारण अपने आदमियों को सौंप दिया।

काबुल में मीर्ज़ा कामरान के अत्याचार

जब मीर्ज़ा कामरान ने काबुल को अपने अधिकार में कर लिया तो उसने नाना प्रकार से अत्याचार एवं निष्ठुरता प्रदर्शित करनी प्रारम्भ कर दी। उसने लोगों की धन-सम्पत्ति का अपहरण तथा रक्तपात प्रारम्भ कर दिया। मेहतर वासिल एवं मेहतर वकील[1] की, जो पादशाह (२५९) के विशेष दास थे आँखों में सलाई फिरवा दी। हुसामुद्दीन अली वल्द मीर खलीफा के, जिसे हज़रत जहाँबानी ने अपनी सेवा में बुलवा लिया था और जिसकी जागीर उलुग मीर्ज़ा को प्रदान कर दी थी, ज़मीनदावर की दृढ़तापूर्वक प्रतिरक्षा के प्रतिकार में, गुप्त अंग कटवा दिए और बड़ी बुरी तरह से उसकी हत्या करा दी। चोली बहादुर की, जो हज़रत जहाँबानी का हितैषी था और जिसने उत्तम सेवायें सम्पन्न की थीं, हत्या करा दी। ख्वाजा मुअज़्ज़म, बहादुर खाँ, अतगा खाँ, नदीम कोका एवं अन्य विश्वस्त सेवकों को बन्दी करा दिया और अपने अंतरंग एवं बहिरंग की हानि तथा इस लोक एवं परलोक के अपयश की सामग्री अपने लिए एकत्र कर ली। वह सर्वदा धोखेबाज़ी के पत्र लिखकर लोगों को मार्ग-भ्रष्ट किया करता था[2]। इस प्रकार उसने शेर अफगन को तथा हसन बेग कोका एवं सुल्तान मुहम्मद बख्शी को धर्तृतापूर्वक (हज़रत जहाँबानी से) पृथक् करा दिया। कमीने स्वभाव वाले एवं दुस्साहस तथा गम्भीरता से शून्य लोगों ने साधारण लाभ की कल्पना में अपने लाभ के प्याले में धूल डालकर कृतघ्नता के मार्ग पर अग्रसर होना प्रारम्भ कर दिया।

काबुल की पराजय के कारण

काबुल की पराजय का सबसे बड़ा कारण पारस्परिक फूट, असावधानी तथा प्रतिरक्षा की ओर से उपेक्षा थी कारण कि उन दिनों में मुहम्मद अली तगाई हज़रत जहाँबानी की ओर से नगर का दारोगा था किन्तु वह सर्वदा असावधान रहा करता था और चौकसी की शर्तों का पालन न करता था। फज़ील बेग ने भी नगर में अपनी दूकान अलग सजा रक्खी थी[3] और (मुहम्मद अली तगाई) से पृथक् होकर (स्वतंत्र शासन स्थापित करने) की आकांक्षा किया करता था। वे अपने दुस्साहस एवं अयोग्यता के कारण एक दूसरे का विरोध करके अपने पाँव में कुल्हाड़ी मारा करते थे।

१ अन्य स्थानों पर 'वसीला'।

२ गुलबदन बेगम ने लिखा है कि मीर्ज़ा कामरान ने उससे उसके पति के नाम पत्र लिखने के लिए अत्यधिक आग्रह किया।

३ पृथक् योजनाएँ बना रहा था।

ईरानियो द्वारा मीर्जा कामरान की हत्या का असफल प्रयत्न

जब काबुल मीर्जा (कामरान) के अधिकार में आ गया तो वह सैनिकों को एकत्र करने एव अपने विद्रोह की सफलता का प्रयत्न करने लगा। बहुत बडी सख्या मे लोग उसके चारो ओर एकत्र हो गए। एक दिन वह अरक के ऊपर बैठा हुआ था। वलद बग, अबुल कासिम एव शाह के कूरचियो का एक समूह, जो अनुमति लेकर एराक जा रहे थे, मीर्जा मे भेंट करने के लिए पहुँचे। हजरत शाहशाह भी मीर्जा की सभा को अपनी उपस्थिति के प्रकाश स सुशोभित कर रहे थे। मीर्जा के विश्वास-पात्र एव हितैषी अत्याचार एव लूट-मार के लिए गए थे और आस-पास जितने लोग थे वे हलवाई की दूकान की मक्खी के समान एक दूसरे पर गिर रहे थे[1]। अबुल कासिम को एक उत्तम सेवा समझ मे आई। उसने वलद बेग से धीरे से कहा कि 'नमक खाने का उत्तरदायित्व तो यह है कि हम ३० जवान मिलकर वीरतापूर्वक सकल्प करके मीर्जा की हत्या कर दे और सौभाग्य एव प्रताप की बहार के इस पौधे अर्थात् हजरत शाहशाह को सिंहासनारूढ कर द।' वलद बेग ने जो युद्ध का आदमी न था, इस मत का समर्थन न किया और कहा, हम लोग यात्री है। हमें इस व्यर्थ के कार्य से क्या मतलब?" क्योकि प्रत्येक कार्य विशेष अवसर पर सम्पन्न होता है अत इससे पूर्व उसका सम्पन्न होना सम्भव न था।

हजरत जहाँबानी जन्नत आशियानी की पवित्र सेना का बदख्शा से काबुल की ओर प्रस्थान तथा उसका अवरोध

बदख्शा एव उस क्षेत्र का प्रबन्ध

(२६०) जब मीर्जा कामरान के विद्रोह एव षड्यत्र के समाचार हजरत जहाँबानी के पवित्र कानो तक पहुँचे तो शीत ऋतु की अधिकता एव हिमपात के बावजूद उन्होने सकल्प कर लिया कि आबदरा[2] के माग स शीघ्रातिशीघ्र बढते हुए विद्रोह एव षड्यत्र की अग्नि शान्त करें। सर्वप्रथम मीर्जा सुलेमान को कृपा-युक्त फरमान भेजकर उसके अपराध क्षमा कर दिए और उस आवारगी के रेगिस्तान में भटकने वाले को नए सिरे से घर-बार प्रदान किया। जो महाल हजरत गेती सितानी फिरदौस मकानी ने मीर्जा सुलेमान के पिता को प्रदान किए थे, उन्ह मीर्जा को प्रदान करके सम्मानित किया। कुन्दुज अन्दराब खुस्त, कमहर्द तथा गूरी एव उसके आस पास के स्थान मीर्जा हिन्दाल की जागीर मे प्रदान किए गए। ईश्वर की कृपा के पथ प्रदर्शन से अत्यन्त शुभ मुहूर्त मे काबुल की ओर प्रस्थान हुआ। निरन्तर हिमपात एव वर्षा के कारण तालीकान[3] में पडाव किया गया। ऊज़बेक लोग हजरत जहाँबानी की वापसी को ईश्वर की बहुत

१ अव्यवस्थित थे।

२ हिन्दूकुश का एक दर्रा जो बदख्शा से काबुल जाता है। **बाबर नामा** के अनुसार केवल यही दर्रा जाडे में खुला रहता है (**बाबर नामा**, पृ० ७७)। इसके अतिरिक्त इसके विषय में देखिये **बाबर नामा**, पृ० ७८, तारीखे रशीदी (**मुगुल कालीन भारत—बाबर**, पृ० १२०, ६२२)।

३ प्रकाशित ग्रथ में 'तायकान'। तालीकान कुन्दुज से नदी के चढाव पर ६० मील पर स्थित है।

बड़ी देन समझ कर अपने अपने स्थान पर शान्ति का अनुभव करने लगे और पूरा तूरान उत्कृष्ट सेना के आतंक के कारण निश्चिन्त हो गया।

हुमायूं का काबुल की ओर प्रस्थान

हिमपात के कम हो जाने के कारण वे तालीकान से कुन्दुज की ओर रवाना हुए। मीर्ज़ा हिन्दाल ने उनके आतिथ्य का प्रबन्ध किया और मीर्ज़ा के प्रोत्साहन हेतु उन्होंने कुन्दुज के उपान्त में खुसरो शाह के उद्यान में पड़ाव किया। ईदे कुरबान[1] के उपरान्त, उन्होंने शिब्र तू[2] दर्रे से होते हुए रेगक दर्रे[3] को पार करके ख्वाजा सेह यारान में पड़ाव किया। शेर अली ने, जो अपने आप को मीर्ज़ा (कामरान) के विश्वास-पात्रों एवं निष्ठावान् सेवकों में कहता था, आबदरा नामक दर्रे को अत्यधिक दृढ़ बना रक्खा था किन्तु ज़ाहिरी ज़ोर, दैवी सहायता के सामने क्या कर सकता है एवं मानव शक्ति, दैवी शक्ति का क्या मुकाबला कर सकती है। अन्त में वह मीर्ज़ा हिन्दाल एवं कराचा खां के सामने से भाग गया। जब विजयी लश्कर पार हो गया तो वह उन खेमों एवं भारी सामानों पर जो पीछे हट गए थे, टूट पड़ा।

हुमायूं के कुछ सहायकों का मीर्ज़ा कामरान के पास भागना

जब भाग्यशाली शिविर चारीकारान नामक स्थान पर लगे तो इस स्थान से अत्यधिक लोग जैसे इस्कन्दर सुल्तान, मीर्ज़ा सजर बरलास वल्द सुल्तान जुनैद बरलास हज़रत गेती सितानी फ़िरदौस मकानी का भागिनेय पिछली कृपाओं, इनाम इकराम, प्रोत्साहन एवं प्रतिज्ञा पर ध्यान न देते हुए दुर्भाग्यवश पृथक् हो गए और मीर्ज़ा कामरान के पास जाकर उन्नति, जो वास्तव में अवनति के अनुरूप थी, प्राप्त की।

हुमायूं द्वारा परामर्श-गोष्ठी

हज़रत जहाँबानी ने जमज़मा के क्षेत्र में पड़ाव करके उन लोगों को, जो चिन्तित (२६१) एवं अनुभव शून्य थे, प्रोत्साहन प्रदान किया और वचन एवं प्रतिज्ञा द्वारा उनकी चिन्ताओं का समाधान करके परामर्शगोष्ठी आयोजित की। जिन लोगों को बात करने की अनुमति थी, उन्होंने निवेदन किया कि, "क्योंकि मीर्ज़ा कामरान ने नगर की गढ़बन्दी कर ली है अतः यह उचित होगा कि काबुल को छोड़ कर, बूरी तथा ख्वाजा पुश्ता के क्षेत्र में पड़ाव किया जाय ताकि विजयी सेना को खाद्य सामग्री प्राप्त होती रहे।" सभी ने इस बात का समर्थन किया। वे जमज़मा से रवाना हुए। थोड़ी सी यात्रा के उपरान्त, हज़रत जहाँबानी के दैवी प्रेरणा प्राप्त हृदय में यह बात आई कि, "ख्वाजा पुश्ता की ओर जाना उचित नहीं कारण कि अधिकांश लोग जो साथ

१ ईदे कुरबान प्रायः बकरईद १० ज़िलहिज्जा को होती है। इस प्रकार १० ज़िलहिज्जा ९५३ हि० / १ फ़रवरी १५४७ ई० को हुई।
२ हिन्दूकुश का एक दर्रा। (देखिये बाबर नामा, पृ० १७, ५५, ६७, ७५)।
३ वारनोद के अनुसार 'कोतल रेगक' चारीकार के ऊपर। सम्भवतः रावाक दर्रा जो पचशीर घाटी के ऊपर है। (John Wood . *A Journey to the Source of the River Oxus*, p 272)

हैं, उनके परिवार वाले नगर में हैं। बहुत से लोग अपने ऊपर नियंत्रण न रख कर पृथक् हो जायेंगे और बहुत से लोग यह सोचेंगे कि उत्कृष्ट सेना कन्धार की ओर प्रस्थान कर रही है। राज्य के हित में यही उचित है कि हिम्मत करके नगर पर, जिसकी गढ़बन्दी हो चुकी है, अधिकार जमा लिया जाय, यदि मीर्ज़ा युद्ध करे तो अच्छा है अन्यथा हमसे लोग पृथक् न होंगे और वर्षा के भय से कुछ शरण प्राप्त रहेगी।" हाजी मुहम्मद खां को बुलवा कर उन्होंने यह दैवी प्रेरणा, जो उनके हृदय में आई थी, उसके समक्ष रक्खी। उसने इस सराहनीय विचार की प्रशंसा की और यह निश्चय हुआ कि हाजी मुहम्मद खां एवं सेना का एक दस्ता मीनार दर्रे के मार्ग से रवाना हो और वे स्वयं पायान दर्रे से नगर, जिसकी गढ़बन्दी[1] हो चुकी है, की विजय हेतु रवाना हों।

मीर्ज़ा कामरान की सेना की पराजय

विजयी सेना मीर्ज़ा हिन्दाल के नेतृत्व में देहे अफ़गान के उपान्त में बाबा शशपर के रौज़े के समीप पहुँची ही थी कि शेर अफ़गन, मीर्ज़ा कामरान की एक बहुत बड़ी सेना लेकर युद्ध हेतु निकला। दोनों ओर से भीषण युद्ध हुआ। पादशाह के अधिकांश सैनिक अपने स्थान पर दृढ़ न रह सके। मीर्ज़ा हिन्दाल दृढ़ता-पूर्वक रण-क्षेत्र में डटा और वीरता एवं पौरुष प्रदर्शित करता रहा। जब हज़रत जहाँबानी को यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने कराचा खां, मीर बरका और शाह कुली नारंजी सरीखे आदमियों को आदेश दिया कि वे साहस से काम लेते हुए विद्रोहियों के समूह के दंड हेतु कटिबद्ध हो जायें। यह सेना पवित्र आदेशानुसार युद्ध हेतु अग्रसर हुई। मीर बरका ने सबसे आगे बढ़कर आक्रमण किया। इसी बीच में हाजी मुहम्मद खां एवं एक अन्य सेना, जो उस मार्ग से भेजी गई थी, समय पर पहुँच गई। शत्रु पराजित हो गए। वे शेर अफ़गन को बन्दी बना कर (हज़रत जहाँबानी की) सेवा में लाये। हज़रत जहाँबानी जो उदारता एवं सौजन्य की खान थे, यह चाहते थे कि उसे कुछ दिन तक शिक्षा की जंजीरों एवं बन्दीगृह में रख कर, दासों की माला में सम्मिलित कर लें किन्तु कराचा खां के निवेदन करने तथा हितैषियों के एक समूह के, जो उसकी कृतघ्नता एवं विश्वास-घात के कारण अत्यन्त दुखी था, आग्रह पर उसकी हत्या कर दी गई। हज़रत जहाँबानी ख़्वाबान के मार्ग से काबुल की ओर रवाना हुए। पादशाही सेना के वीर, भागने वालों (२६२) का पीछा करते हुए दरवाज़ये आहिनी[2] पर पहुँच गए। मीर्ज़ा ख़िज्र खां एवं अरगूनों का एक दल, हज़ारजात के मार्ग की ओर चल दिया। शहर बन्द[3] सम्मानित राज्य के सहायकों को प्राप्त हो गया। हज़रत जहाँबानी ने उस दिन कराचा खां के उद्यान में पड़ाव किया। बहुत से दुष्ट विद्रोहियों की, जो रण क्षेत्र में बन्दी बनाये गए थे, हत्या करा दी गई। शेर अली घबड़ाकर किले के भीतर प्रविष्ट हो गया और किले के चिन्तित लोगों को सन्तोष प्राप्त हो गया[4]।

१ नगर की गढ़बन्दी का प्रयोग "शहरबन्द" शब्द के लिए किया गया है।
२ लोहे के द्वार।
३ प्रतिरक्षा अथवा गढ़बन्दी की दीवार।
४ सम्भवतः हुमायूँ के वंश की स्त्रियों तथा अन्य सहायकों को जो किले में बन्द थे।

मीर्ज़ा कामरान से मुक़ाबला

हज़रत जहाँबानी ने वहाँ दीवानख़ाना उद्यान एवं उरता बाग़ की सैर करके उरातैन पर्वत पर जो काबुल के किले के सामने है, पड़ाव किया। तोपें एवं ज़र्बज़न लगवा दी गई तथा चलाई जाने लगीं। रोज़ाना मीर्ज़ा कामरान के आदमी पहुँचकर वीरतापूर्वक आमने सामने युद्ध करते थे। महदी खाँ, उसका जामाता[1] चिलमा बेग, बाबा मर्दद क़िबचाक, इस्माईल कूज़[2], मुल्ला मुल्लाई औजी एवं कुछ अन्य अभागे विजयी सेना से भागकर मीर्ज़ा कामरान के पास चले गए। हज़रत जहाँबानी ने क़राचा ख़ाँ, हाजी मुहम्मद ख़ाँ एवं अन्य सैनिकों को आदेश दिया कि यारक[3] द्वार के समस्त सम्मानित शिविर के लिए स्थान ढूँढा जाय कारण कि वहाँ पड़ाव करना राज्य के हित में है। किले के अवरोध की ओर अधिक ध्यान देकर, एवं मोर्चे बाँटकर मीर्ज़ा को विवश कर दिया जाय। जो लोग इस कार्य हेतु भेजे गए थे, वे पड़ाव की खोज में थे कि ३०-४० व्यक्ति एक साथ यारक द्वार के बाहर जाकर खड़े हो गए। हाजी मुहम्मद ख़ाँ ने बादशाही सैनिकों के एक दल को लेकर इस समूह पर आक्रमण किया। वे मुक़ाबला न कर सके और किले की ओर भाग खड़े हुए। इसी बीच में शेर अली ने किले के भीतर से निकलकर, हाजी मुहम्मद ख़ाँ से बड़ा भीषण युद्ध किया। उसके दायें हाथ में, शेर अली द्वारा एक घातक घाव लगा। इस युद्ध में बादशाही आदमियों ने प्रयत्न करके शेर अली को किले के भीतर भगा दिया। लोग हाजी मुहम्मद ख़ाँ को, जो बहुत ही कमज़ोर एवं निढाल हो गया था उठाकर उसके स्थान पर ले गए। वह बहुत समय तक रुग्ण रहा और ऐसा प्रसिद्ध हो गया कि उसकी मृत्यु हो गई है। हज़रत जहाँबानी ने उसके पास इस आशय से आदमी भेजे कि वह सवार होकर मोर्चों में इस प्रकार जाय कि लोग उसे देख लें।

पवित्र आदेशानुसार वह सवार हुआ और शत्रुओं की प्रसन्नता का बाज़ार ठंडा पड़ गया।

मीर्ज़ा सजर का आक्रमण तथा बन्दी बनाया जाना

एक दिन सुल्तान जुनैद के पुत्र मीर्ज़ा सजर ने, जो अपने ललाट पर कृतघ्नता की कालिमा लगाकर चला गया था, किले से निकलकर आक्रमण किया। उसका घोड़ा उसके काबू में न रहा और उसे उठाकर वनफ़शे के उद्यान तक ले गया। निष्ठावान् योद्धा उसे बन्दी बनाकर हज़रत जहाँबानी की सेवा में लाये। उन्होंने उसकी हत्या न कराई और उस बन्दीगृह में डलवा दिया।

मुहम्मद क़ासिम एवं मुहम्मद हुसैन का आगमन

(२६३) मुहम्मद क़ासिम[4] एवं मुहम्मद हुसैन ने, जो पहलवान दोस्त मीर बर[5] के भागिनेय

१ ख़ेश इसका अर्थ सम्बन्धी एवं जामाता दोनों ही होता है।
२ प्रकाशित ग्रन्थ में 'कूर' किन्तु कुछ पोथियों में 'कूज़'। यही उचित ज्ञात होता है। कूज़ का अर्थ मदिरा का गिलास तथा कुबड़ा दोनों ही है।
३ कुछ पोथियों में 'बारक'।
४ आगरा के किले का निर्माण उसी की देख रेख में हुआ।
५ ब्लाख़मैन के अनुसार शाही वनों के अधीक्षक।

थे और जिनमे से प्रत्येक (इस समय) अपनी योग्यतानुसार आश्रय प्राप्त करके प्रतिष्ठित अमीरो एव निष्ठावान् हितैषियो में सम्मिलित तथा उच्च पद द्वारा सुशोभित हैं, अपने जागरूक सौभाग्य की सहायता से उस बुर्ज से, जो कि आहिनी द्वार एव कासिम बरलास के बुर्ज के मध्य में था, कदकर उकाबैन में सम्मानित चरणों के चुम्बन का आशीष प्राप्त किया और उकाब[1] के समान चिरस्थाई सौभाग्य के शिकार द्वारा सफल हुए तथा अपार कृपाओ के पात्र बने।

मीर्ज़ा कामरान द्वारा कारवान वालो का असबाब अधिकार में करने के लिये आदमी भेजना

युद्ध के दिनो मे एक बहुत बडा काफिला विलायत[2] से चारीकारान पहुँचा। उस काफिले मे अत्यधिक घोडे एव असबाब थे। मीर्ज़ा कामरान ने शेर अली को अपने विश्वासपात्रो के एक दस्ते सहित नियुक्त करके आदेश दिया कि वे जाकर समस्त असबाब पर अधिकार प्राप्त कर ले। तरदी मुहम्मद जग-जग ने, जो मीर्ज़ा का विश्वास पात्र था, उसे बहुत रोका और स्पष्ट शब्दो में कह दिया कि, "यदि हजरत जहाँबानी को सूचना मिल जायगी और वे अपने आदमियो को भेज कर हमारा मार्ग रोक लेगे तो वे लोग भी आप के पास न पहुँच पायेंगे और आपका कोई काम भी न बन पायेगा और हम भी दुर्दशा को प्राप्त हो जायेंगे।" मीर्ज़ा ने, जो लोगो की धन-सम्पत्ति पर दृष्टि लगाये था, यह बात सावधानी से कानो से न सुनी और शेर अली के नेतृत्व में सेना भेजी।

हुमायूं द्वारा मीर्ज़ा कामरान के आदमियों का मार्ग रुकवा देना

जैसे ही यह समाचार सम्मानित कानो तक पहुँचे उन्होने हाजी मुहम्मद खा को इस आशय से नियुक्त किया कि वह उन अत्याचारियो को यह लूट मार न करने दे। हाजी मुहम्मद ने निवेदन किया कि, "वह समूह रातो रात रवाना हो गया है और अपना काम कर चुका होगा। यदि हम पीछा करते है और वे हमें नही मिलते तो हमारे हाथ से निकल जायेंगे। यदि आप इसे राज्य के हित मे उचित समझे तो मोर्चे एव मार्ग तथा घाट की दृढतापूर्वक प्रतिरक्षा की जाय और उन्हे किले के भीतर प्रविष्ट न होने दिया जाय।" हजरत जहाँबानी को यह राय पसन्द आ गई। वे स्वय पहाडी से उतर आये और जिन स्थानो से प्रवेश हो सकता था उनकी प्रतिरक्षा करने लगे। शेर अली, तरदी मुहम्मद जग-जग एव समस्त लोगो ने व्यापारियो के पास पहुँचकर उन्हे लूट लिया। व्यापारियो की अत्यधिक सम्पत्ति नष्ट हो गई। लौटते समय जब उन्होने किले में प्रविष्ट होना चाहा तो उन्हे मार्गों एव घाटो पर पहरे लगे हुए मिले। तरदी मुहम्मद एव शेर अली वाद विवाद करने लगे। तरदी मुहम्मद जग जग ने कहा, "मैंने जो कुछ कहा था, वही हुआ।" उन्होने दाये बाये बहुत निगाह दौडाई किन्तु उन्हे किले मे प्रवेश का कोई मार्ग न मिला। परेशान होकर एक किनारे हो गए और अवसर की प्रतीक्षा करने लगे ताकि किसी न किसी युक्ति से किले के भीतर प्रविष्ट हो जायें।

१ गरुण। उकाब शब्द का प्रयोग हुमायू के उस समय उक़ाबैन में होने के कारण किया गया है।
२ अन्य देश से। बायजीद के अनुसार 'बल्ख' से।

बाकी सालेह द्वारा मीर्ज़ा कामरान के सैनिकों को किले के भीतर लाने का प्रयत्न

एक दिन बाकी सालेह जो किले में घिरे हुए लोगों में बड़ा ही वीर जवान था, आग्रह करके मीर्ज़ा का आहिनी द्वार के समीप लाया और डींग मारते हुए कहा कि, "मैं एक ही आक्रमण द्वारा शेर अली को इसी द्वार से भीतर ले आऊँगा।" द्वार खोलकर मीर्ज़ा के वीरों का एक दस्ता आगे बढ़ा। मोर्चे के आदमियों में से मुहम्मद कासिम खा मौजी, कासिम मुखलिस एवं जमील बेग ने बढ़ कर वीरता एवं पौरुष प्रदर्शित किया। सुम्बुल खा ने ६०-७० दासों सहित बन्दूक चलाने (२६४) में कुशलता का प्रदर्शन किया। जमील बेग शहीद कर दिया गया। बाकी सालेह के जीवन के खलिहान में बन्दूक की गोली से आग लग गई[1]। वही इस उपद्रव का कारण था। अधिकांश लोग घायल हो गए और उन्होंने अपने उद्देश्य को त्यागकर किले का द्वार बन्द कर लिया। शेर अली किले में प्रविष्ट होने की ओर से निराश होकर गजनी की ओर चल दिया।

कामरान के सैनिकों की पराजय

हज़रत जहाँबानी ने खिज़्र ख्वाजा खा, मुसाहिब बेग, इस्माईल बेग दूल्दाई[2] एवं एक बहुत बड़ी संख्या को उनके विरुद्ध नियुक्त किया ताकि वीरतापूर्वक जाकर इस अभागे को बन्दी बना ले। जो लोग भेजे गए थे, उनकी शेर अली से सजावन्द[3] दर्रे में मुठभेड़ हो गई। युद्ध होने लगा। पादशाही सेना को विजय प्राप्त हो गई। अधिकांश धन-सम्पत्ति एवं घोड़ों को अधिकार में कर लिया गया। बहुत बड़ी संख्या में लोग बन्दी बना लिये गए। शेर अली कुछ लोगों के साथ हज़ार-जात की ओर चल दिया और खिज़्र खा[4] के घर में पनाह ली। जो लोग भेजे गए थे वे विजय एवं सफलता प्राप्त करके लूट की अत्यधिक धन-सम्पत्ति लिए हुए वापस आ गए। उनके प्रति अत्यधिक कृपा प्रदर्शित की गई। जो व्यापारी लूट लिए गए थे, वे प्रार्थना करते हुये पवित्र दरबार में पहुँचे। आदेश हुआ कि वे लोग अपना-अपना असबाब एवं घोड़े पहचान कर ले जायें। अधिकांश घोड़े एवं असबाब उनके स्वामियों को प्राप्त हो गये। यह बात उनके प्रताप में वृद्धि का कारण बनी। जो विद्रोही बन्दी बना लिए गए थे उन्हें मोर्चों के सामने ले जाकर खुल्लम खुल्ला नाना प्रकार के कष्ट देकर इस आशय से मरवा डाला गया कि यह बात दुष्टता के बिछौने पर सोये हुए भाग्य वालों के जागने का कारण बन जाय।

मीर्ज़ा कामरान द्वारा हुमायूँ के सहायकों के परिवार पर अत्याचार

मीर्ज़ा कामरान जब समस्त द्वारों से आने-जाने के उपाय कर चुका और किसी स्थान पर उसे इच्छानुसार सफलता न प्राप्त हुई और असफलता के अतिरिक्त कोई मार्ग न मिल सका तो उसने अपनी शोचनीय कल्पनाओं को निरपराध बालकों एवं छोटे-छोटे बच्चों की हत्या तथा पवित्र स्त्रियों के सतीत्व को नष्ट करने में लगा दिया। बाबूस की पत्नी को बाज़ार वालों को सौंप

१ हत्या कर दी गई।
२ प्रकाशित ग्रन्थ में 'दूल्दी'।
३ काबुल के लुहूगर तूमान का एक ग्राम, काबुल के दक्षिण पूर्व में। (बाबर नामा, पृ० २४)।
४ सम्भवतः खिज़्र, खा हज़ारा।

दिया। उसके तीन पुत्रों जिनमें से एक की अवस्था ७ वर्ष, दूसरे की ५ वर्ष, और तीसरे की ३ वर्ष थी, का खून नाना प्रकार की दारुण पीड़ा देकर भूमि पर बहा दिया और उनकी लाश कराचा बेग एवं मुसाहिब बेग के मोर्चे के समीप, किले के ऊपर से लटका दी। कराचा बेग के पुत्र सरदार बेग एवं मुसाहिब बेग के पुत्र खुदा दोस्त को किले के कंगूरा से बांधकर लटका दिया और सन्देश भेजा कि 'या तो वे उससे मिल जायें या उसे मार्ग दे दें ताकि वह चला जाय और या पादशाह को अवरोध से हटा ले जायें अन्यथा बाबूस के पुत्रों के समान उनके पुत्रों की भी हत्या कर दी जायगी।" कराचा खां ने, जो उस समय पूर्ण अधिकार सम्पन्न वकील[1] था, चिल्ला कर कहा "हजरत पादशाह सलामत रहें। हमारा घर बार एवं हमारे पुत्र कभी न कभी नष्ट होंगे ही और उनका विनाश अवश्यम्भावी है अतः इससे अच्छा और क्या है कि अपने स्वामी एवं आश्रयदाता के लिए काम आयें। पुत्रों का क्या मूल्य है कारण कि हमारे प्राण भी उन्हीं पर न्योछावर हैं। इस नीच विचार को त्याग दे और निष्ठापूर्वक दीनता प्रदर्शित करते हुए सेवा में उपस्थित हो कारण कि तेरी मुक्ति की पूंजी एवं जीवन की शोभा इसी पर निर्भर है। उसी समय तेरे हितैषी बन कर हमसे जो कुछ हो सकेगा हृदय से तेरे लिए प्रयत्न करेंगे अन्यथा हमें पुत्रों की हत्या से क्या (२६५) डराता है। यदि हमारे पुत्रों को कुछ हो जाय तो उसके बदले में हमें सुगमतापूर्वक (पुत्र) प्राप्त हो जायंगे।' हजरत जहांबानी ने कराचा खां एवं मुसाहिब बेग को बुलवा कर कृपा प्रदर्शित करके सतुष्ट किया और नए सिरे से प्रोत्साहनों द्वारा प्रसन्न किया। मीर्जा ने लोगों की मान-मर्यादा पर हाथ डालकर उनके पुत्रों, एवं उनकी स्त्रियों से अनुचित व्यवहार किए। मुहम्मद कासिम खां मौजी की पत्नी के स्तन बंधवाकर लटकवा दिये। मीर्जा क्रोध एवं ईर्ष्या के रोग में ग्रस्त होने के कारण बाह्य रूप से हजरत जहांबानी का जो भी विरोध करता वास्तव में वह विरोध एवं शत्रुता विधाता के प्रति होती। इस प्रकार का निष्ठुर जो भी कार्य करता है उससे किसी प्रकार उसका उपकार नहीं हो पाता और वह उसी के सिर पड़ता है। अन्त में वह कार्य इस लोक तथा परलोक में उसकी हानि का कारण बनता है।

हजरत शाहंशाह के उत्कृष्ट चमत्कार एवं काबुल पर विजय

मीर्जा कामरान ने अपनी असावधानी एवं मूर्खता के कारण अपनी रक्षा हेतु सल्तनत की वाटिका के उस पौधे, एवं खिलाफत की बहार के उस नए फल अर्थात् हजरत शाहंशाह को तोपों के सामने ले जाकर ऐसे स्थान पर जहां विजयी सेना के निशानेबाजों के कारण चींटी तथा टिड्डी भी न पहुंच सकती थी, बैठा दिया। यह कौन सी मानवता एवं वीरता थी? किस हिंसक पशु अथवा राक्षस की यह प्रथा है? इस बात का आदेश देने वाले की जिह्वा क्यों न गंगी हो गई? इस कार्य के करने वाले का, जो सौभाग्य के उस पौधे को उस उद्देश्य से ले गया और उस विचार से बैठा दिया हाथ क्यों न बेकार हो गया? जो नेत्र हजरत जहांबानी के जाहिरी उपकार को जो बड़े भाई एवं सम्मानित पिता के स्थान पर थे और आश्रयदाता थे न देख सके वे हजरत शाहंशाह के संसार को शोभा प्रदान करने वाले सौन्दर्य को, जो ऐश्वर्य के आवरण में छिपा था, उनकी बाल्यावस्था एवं अल्पावस्था के कारण किस प्रकार देख सकते थे? जो हृदय ईर्ष्या के कष्टों के कारण दुःख से

१ प्रधान मन्त्री।

पद दलित हो और परमेश्वर का शत्रु बना हो, वह दैवी प्रकाश की किरणो को, जो मानव शरीर मे निहित थी, कैसे पा सकता था? जब दैवी-बुद्धि परोक्ष के उस प्रकाश को अपनी सहायता के आश्रय, प्रतिरक्षा एव कृपा की छाया में कष्टो एव दुखो से बचा कर सुरक्षित स्थान पर रक्खे हो और उस अद्वितीय की दशा के सुधार एव उसकी परिस्थितिया की सुव्यवस्था का उत्तर-दायित्व ईश्वर पर हो तो वह इन निष्ठुर अत्याचारिया को तुरन्त उनकी दुष्टता एव कुकृतिया का दड नही दे देता अपितु परमेश्वर की इच्छा इन कृतघ्नो के विषय मे इस प्रकार होती आई है कि उन्हे कालचक्र के कष्टो में डालकर अपमान एव तिरस्कार की राख मे मिला दे और जैसे-जैसे समय व्यतीत हो, शनै शनै तथा एक-एक करके उन्हे घुला डाले और उस अत्याचारी की कुकृतियो को धीरे-धीरे दड का पात्र बनाये ताकि उस दड को देखकर अन्त मे समस्त कृतघ्न लोग शिक्षा ग्रहण कर सके। (२६६) नि सन्देह यदि दूरदर्शिता की दृष्टि से देखा जाय तो इस प्रकार के दड एव प्रतिकार, जो शनै शनै एव धीरे धीरे प्रकट होते है, कष्टो एव दुखो की दृष्टि से अधिक कठोर एव प्राण-विदारक होते है।

जब यह नीच कार्य उस धृष्ट समूह द्वारा सम्पन्न हुआ तो निशानेबाजो के हाथ काप उठे और बाण टेढे-टेढे उडने लगे, बदूक के फतीले[1] ठडे पड गए। सुम्बुल खा मीर आतश ने भी अपने उष्ण स्वभाव में अत्यधिक ठडक का अनुभव किया और चिन्ता मे पड गया कि, "आखिर यह माजरा क्या है?" ईश्वर को धन्य है कि नीच विचार वाले दुष्ट जिस बात को हानि समझ कर कष्ट के द्वार खोलते है वह बात निपुणता का साधन एव बचाव का दस्तावेज बन जाती है। इसका उदाहरण यह घटना है। सर्वप्रथम ऐसे खतरनाक स्थान पर अचूक बन्दूक चलाने वालो एव जादूगर की भाति आग फेंकने वालो से (बचकर) ईश्वर की प्रतिरक्षा मे रहना, कलुषित हृदय वाले अशुभचिन्तको के अपमान एव शिक्षा ग्रहण करने के लिए उत्सुक सतक हृदय वाले व्यक्तियो के पथ प्रदर्शन का साधन है। इसके अतिरिक्त उक्त घटना इस चमत्कार के प्रदर्शन का भी साधन बनी कि (उनके कारण) आग ठडी हो जाती है और फतीले काम नही करते। जब सुम्बुल खा की दृष्टि लक्ष्य की ओर पडी तो वह तीव्र हो गई और उसने हज़रत शाहशाह को पहचान लिया। इस दुर्घटना के आतक से दर्शको के प्राण शरीर से निकलने ही वाले थे और समस्त बन्दूक चलाने वालो के शरीर रिक्त होने वाले थे कि सुम्बुल खा को इस रहस्य का पता चल गया और उसे अग्नि के बुझ जाने का कारण ज्ञात हो गया। उसने तत्काल तोपखाने से हाथ खीच लिया। विद्रोहियो के समूह को कुछ समय के लिए भव्य तोपखाने के कष्टो से थोडी सी मुक्ति प्राप्त हो गई। जिस स्थान पर दैवी प्रतिरक्षा उसके चुने हुए व्यक्ति की हिफाजत कर रही हो वहाँ मानव युक्तिया उसे कष्ट पहुँचाने का किस प्रकार साहस कर सकती है? यद्यपि मूर्खो ने यह अनुचित कार्य सम्पन्न किया किन्तु दैवी बुद्धि इस रहस्य का अनावरण तथा इस तथ्य का स्पष्टीकरण चाहती थी और इस चमत्कार को प्रकट करने की इच्छा थी ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी बुद्धि एव अपने साहस के अनुसार उस पर ध्यान दे सके और अपनी योग्यतानुसार गुण एव दोष को समझ

१ बत्ती जिसमें आग लगाकर बन्दूक तथा तोप चलाई जाती थी। साधारणत फलीता भी बोला जाता है, किन्तु शुद्ध रूप फतीला ही है।

सके। संक्षेप में, दुष्ट लोग तो इस नीच कार्य द्वारा उसे अपने प्रति की जाने वाली कठोरता एवं सख्ती को कम हलका कराने का साधन बनाना चाहते थे, किन्तु तथ्य को समझने वाले दूरदर्शी लोग इसे उन अत्याचारियों के पतन का कारण समझते थे।

हुमायूं के पास कुछ अन्य लोगों का सहायता हेतु पहुँचना

इसी बीच में मीर्ज़ा उलुग बेग जमीनदावर से, कासिम हुसेन खां शैबानी किलात से, ख्वाजा गाजी, जो शाह के लश्कर में रह गया था, बैराम खां का सम्बन्धी शाह कुली सुल्तान कन्धार से और कुछ लोग बदख्शां से सेवा में उपस्थित हुए। हज़रत जहाँबानी ने इन लोगों को यारक द्वार के समीप मोर्चा प्रदान किया और यह भाग्यशाली समूह सेवा हेतु कटिबद्ध हो गया। सत्य को (२६७) समझने वाले वीरों ने अधिक से अधिक प्रयत्न करके मीर्ज़ा को परेशान कर दिया।

मीर्ज़ा कामरान द्वारा क्षमा-याचना

जब उसकी समस्त नीच योजनायें असफल हो गई तो वह धूर्ततापूर्वक चाटुकारी एवं मक्कारी करने लगा और लज्जा एवं पश्चाताप प्रदर्शित करके चापलूसी करने लगा। उसने कराचा खां द्वारा निवेदन कराया कि, "मैं अपने पिछले अपराधों पर लज्जित हूँ। अब मैं यह चाहता हूँ कि सेवा में उपस्थित होकर अपने पिछले अपराधों का निराकरण कर सकूं और उचित सेवाओं द्वारा हज़रत जहाँबानी के ईश्वर के प्रति कृतज्ञ हृदय को अपने प्रति उदार बना सकूं। इस समय इस पश्चाताप एवं लज्जा के प्रदर्शन के कारण मेरे प्राण एवं मेरी धन-सम्पत्ति आपकी उदारता की छाया में रहे।" हजरत जहाँबानी ने अपने बड़प्पन एवं अपने उच्च साहस के कारण उसकी बातों को स्वीकार करते हुए आदेश दिया कि अवरोध की कठोरता में कमी कर दी जाय।

हुमायूं के अधिकारियों द्वारा षड्यन्त्र

क्योंकि मीर्ज़ा हिन्दाल, कराचा खां मुसाहिब बेग एवं भाग्यशाली सेना के अधिकांश उच्च पदाधिकारी निष्ठा के मीठे जल के स्वाद से भली भांति परिचित न थे अतः अपने स्वार्थ की सिद्धि हेतु, जो अशान्ति प्रिय लोगों की प्राचीन प्रथा है न चाहते थे कि मीर्ज़ा (कामरान) सेवा में उपस्थित हो। स्वामी-भक्ति एवं निष्ठा के विषय में क्या कहूँ? यह एक ऐसा अनमोल मोती एवं अप्राप्य रत्न है जो यदि तूरानियों में, जहां वह सर्वदा से नायाब था, कम हो तो क्या आश्चर्य। किन्तु उनमें अनुभव, युक्ति तथा बुद्धि भी न थी जिससे वे अपने जाहिरी लाभ-हानि को समझ सकते और उपकार का बदला उपकार से दे सकते। ये अंध हृदय वाले, नेकी के स्थान पर बुराई की व्यवस्था करते थे। इससे भी बुरी बात यह थी कि वे सर्वदा लोगों को कष्ट पहुँचाने एवं अकारण रक्तपात के लिए तैयार रहते थे और उनका नीच विचार यह था कि इससे उनके गौरव एवं धन-सम्पत्ति में वृद्धि होगी अतः वे षड्यन्त्र एवं अशान्ति की पूंजी बने रहते थे। न जाने उन्हें कैसी बुद्धि प्राप्त थी और उनके कैसे विचार थे। यदि उन्हें निष्ठा की न्यूनतम श्रेणी का भी ज्ञान होता और वे इस बात को समझते कि वह कितना बड़ा सौभाग्य है तो वे निःसन्देह इस प्रकार अपनी हानि को न पसन्द करते। यदि निष्ठा के पवित्र स्थान का उन्हें पता न था तो व्यावहारिक ज्ञान को क्या हो गया था जिसकी इस समूह को सूचना न

ऐसा समझकर छोड दिया कि मानो उसे न देखा हो। यद्यपि मीर्ज़ा निकल गया[१] किन्तु आक सुल्तान[२] एव उसके अधिकाश आदमी राज्य के सहायको द्वारा बन्दी बना लिए गए। उनमें से एक-एक के विषय मे न्यायपूर्वक पूछ-ताँछ की गई और एक-एक को उसके अपराधो के अनुसार दड दिया गया। इनमे से सुल्तान कुली अतगा, अब्दुल्लाह मीर्ज़ा का एक सम्बन्धी, तरसून मीर्ज़ा, हाफिज़ मक्सूद, मौलाना बाकी यरमू[३], मौलाना कदम अरबाब एव एक अन्य समह की, जो उपद्रव एव विद्रोह की जड था, हत्या करा दी।

मीर्ज़ा कामरान का ग़ूरी के हाकिम से युद्ध

मीर्ज़ा कामरान भाग खडा हुआ और अपने आदमियो से (परामर्श करके) यह निश्चय किया कि वह इस्तालीफ[४] पर्वत पर पहुँचकर शरण लेगा और सेना को इकट्ठा करके युद्ध की सामग्री एकत्र करेगा किन्तु वह अली कुली क़ुरची के साथ रात्रि के अन्तिम पहर सजिद दर्रे से छिपकर बदख़्शाँ की ओर भाग गया और हजारजात द्वारा सहस्रो प्रकार के कष्ट झेलकर एव हजारो अपमान एव निर्लज्जता सहन करता हुआ अग्रसर हुआ। मीर्ज़ा बेग, जो मीर्ज़ा (कामरान) का विश्वास-पात्र था, एव शेर अली कुछ लोगो के साथ जुहाक के समीप मीर्ज़ा से मिल गए। मीर्ज़ा ने ग़ूरी पहुँचकर वहाँ के हाकिम मीर्ज़ा बेग बरलास को सन्देश भेजा और उसे अपने पास बुलवाया। उसने कहला भेजा कि, "मैं नमकहरामी, जो अभागा की प्रथा है, नही कर सकता।" (२६९) मीर्ज़ा ग़ूरी से चला जाना चाहता था कि एक कुलचकी[५] ने मीर्ज़ा को गाली देकर कहा कि, "इस मर्द का साथ देने से क्या लाभ है?" और मीर्ज़ा की ओर सकेत किया और कहा कि, "यदि हज़रत गेती सितानी के समान इसमें लेश मात्र को भी मर्यादा एव आत्म सम्मान होता तो यह ग़ूरी के हाकिम को इस अपमान के उपरान्त कभी न छोडता।' मीर्ज़ा ने उसके ताने से रुष्ट होकर कहा कि, "व्यर्थ की बाते क्या कर रहे हो? तुम स्थिति को नही समझते। मै तुम लोगो की अव्यवस्था की चिन्ता के कारण इस प्रकार व्यवहार कर रहा हूँ। यदि तुम्हारे पास युद्ध के साधन होते तो मैं उसे इस प्रकार कैसे छोड देता?' उस पागल ने मीर्ज़ा स पुन कठोर शब्द कहे। मीर्ज़ा ने पलटकर ग़ूरी के हाकिम से युद्ध किया। ग़ूरी का हाकिम पराजित हो गया और मीर्ज़ा द्वारा बन्दी बना लिया गया। मीर्ज़ा को थोडा बहुत सामान भी प्राप्त हुआ।

मीर्ज़ा कामरान का बदख़्शा की ओर प्रस्थान

वह शेर अली को वही छोडकर बदख़्शाँ चला गया और मीर्ज़ा सुलेमान एव मीर्ज़ा इबराहीम के पास आदमी भेजकर सहायता हेतु उन्हें आमन्त्रित किया। उन्होने अपनी सूझ बूझ के

१ इस विषय में जौहर, निजामुद्दीन अहमद एव अब्दुल कादिर बदायूनी की कृतियों का अनुवाद देखिये।
२ मीर्ज़ा कामरान का जामाता, गुलबदन बेगम के अनुसार वह मीर्ज़ा कामरान का साथ छोडकर मक्का चला गया।
३ बेवरिज ने इसे 'यरग़ू' लिखा है।
४ काबुल के उत्तर-पश्चिम में।
५ सेवक।

कारण पादशाह की निष्ठा को हाथ से जाने न दिया और मीर्ज़ा कामरान की सहायता से अपने आप को बचाये रक्खा।

मीर्ज़ा कामरान का बल्ख पहुँचना

मीर्ज़ा कामरान अपने नीच विचारों के कारण इस आशय से बल्ख की ओर रवाना हुआ कि पीर मुहम्मद खाँ से आग्रह करके सहायता प्राप्त करे और बदख्शाँ पर अधिकार जमा ले। हज़रत जहाँबानी ने क़राचा खाँ को इस उद्देश्य से बदख्शानात की ओर नियुक्त किया कि वह मीर्ज़ा सुलेमान, मीर्ज़ा हिन्दाल एवं राज्य के समस्त अधिकारियों को साथ लेकर या तो मीर्ज़ा कामरान को बन्दी बना ले और या उसे भगा दे।

हुमायूँ के आदमियों का ग़ूरी पर अधिकार

क़राचा खाँ बदख्शाँ पहुँचा और मीर्ज़ाओं को साथ लेकर ग़ूरी के क़िले की ओर रवाना हुआ। वहाँ शेर अली एवं मीर्ज़ा कामरान के आदमियों के एक समूह ने क़िला बन्द कर लिया और वीरतापूर्वक युद्ध करने लगे। दोनों ओर से उत्तम वीर मारे जाने लगे। उन्हीं में से ख्वाजा नूर खाँ, जो मीर्ज़ा हिन्दाल के प्रतिष्ठित सहायकों में से था। मुल्ला मीर किताबदार भी, जो मीर्ज़ा हिन्दाल का विश्वास-पात्र था, मार डाला गया। अन्त में पादशाह के प्रताप से जो लोग क़िले में घिरे हुए थे, वे मुक़ाबला न कर सके और भाग खड़े हुए। क़िला राज्य के अधिकारियों को प्राप्त हो गया।

हुमायूँ का बदख्शाँ की ओर प्रस्थान

इसी बीच में मीर्ज़ा कामरान एवं पीर मुहम्मद खाँ के बल्ख से आगमन के समाचार प्राप्त हो गए। मीर्ज़ाओं ने युद्ध न किया और पर्वत की कन्दराओं में भाग गए। क़राचा खाँ काबुल की ओर चल खड़ा हुआ। हज़रत जहाँबानी ने बदख्शाँ की अव्यवस्थित दशा के विषय में सुनकर बदख्शाँ की ओर प्रस्थान किया। जब विजयी शिविर ग़ूरबन्द में पहुँचा तो क़राचा खाँ ने सेवा में उपस्थित होकर धर्माचुम्बन का सौभाग्य प्राप्त किया। क्योंकि क़राचा खाँ का असबाब लौटते समय ईमाक़ान[1] द्वारा लूट लिया गया था, अतः उसने तैयारी करके शीघ्र उत्कृष्ट सेना में पहुँच जाने के उद्देश्य से काबुल जाने की अनुमति ले ली। हज़रत जहाँबानी ने उसके प्रोत्साहन हेतु ग़ूरबन्द से प्रस्थान करके गुलबहार नामक स्थान पर इस आशय से पड़ाव किया कि क़राचा खाँ के पहुँचने तक वे सैर व शिकार से दिल बहलाते रहें।

हुमायूँ की काबुल को वापसी

(२३०) क़राचा खाँ की वापसी के उपरान्त यद्यपि समय निकल चुका था, तथापि हज़रत जहाँबानी ने पूर्ण रूप से सकल्प करके बदख्शाँ की ओर प्रस्थान किया। क्योंकि

ईश्वर की इच्छा न थी कि यह अभियान सम्पन्न हो अत हिन्दू कोह के दर्रे बरफ के कारण यात्रा योग्य न रहे और वहाँ विचित्र प्रकार की अव्यवस्था फैल गई। दर्रे को पार करना कठिन हो गया। आवश्यकतावश वे काबुल की ओर रवाना हो गए और इस बात का सकल्प कर लिया गया कि बहार के मौसम मे बदख्शाँ पर चढाई की जायगी।

हजरत शाहंशाह का मकतब में बैठना और अन्य घटनाएँ जो इन दिनों में घटी

क्योंकि दैवी ज्ञान के मकतबखाने[1] मे, जो अनादि एव अनन्त के लेखो की लौहे महफूज[2] है और समस्त ज्ञान विज्ञान उस हरीमे हुजूर[3] में मकतब के बालको के समान है, यह लिखा जा चुका है कि बाह्य बुद्धि के अधिकारियों को, जब वे दान करना प्रारम्भ कर दें, तो अक्षरो के मिलाने के ज्ञान एव सामान्य बातो की जानकारी, जो सोच विचार एव सूझ बूझ के अनुभव द्वारा प्राप्त होती है, कराई जाय और इस प्रकार उन्हे बुद्धि के मार्ग पर शनै शनै एव विशेष क्रम से चलने योग्य बनाया जाय, अत इस वर्ष की ७ शव्वाल[4] (२० नवम्बर १५४७ ई०) को, जब हजरत शाहंशाह की अवस्था ४ वर्ष, ४ मास तथा ४ दिन हो गई[5], प्रथा एव परम्परा के अनुसार उस दैवी पाठशाला के पढे हुए एव ईश्वर के मदरसे के रहस्यो के ज्ञाता को इन्सानी मकतब में पहुँचाया जाना निश्चय हुआ। मुल्लाजादा मुल्ला इसामुद्दीन इबराहीम को उस उच्च सेवा द्वारा सम्मानित किया गया। यद्यपि बाह्य दृष्टि से देखने वालो के अनुसार उन्हे शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा गया किन्तु दूरदर्शी लोगो की दृष्टि से उन्हे शिक्षक की उच्च श्रेणी को पहुँचाया गया। सब से बडी विचित्र बात तो यह है कि हजरत जहाँबानी ने, जो आकाश के ज्ञान से परिचित थे और जो ज्योतिष के गम्भीर रहस्यों को समझते थे, बाल की खाल निकालने वाले नक्षत्रों के ज्ञाताओ एव समय से परिचित उस्तुरलाब वेत्ताओ के परामर्श से उनकी शिक्षा को प्रारम्भ करने के लिये एक ऐसा विशेष मुहूर्त चुना था जो अनेक युगो के बाद प्राप्त होता है। किन्तु जब वह विशेष घडी आई तो वह दैवी ज्ञानो से परिचित (बालक) क्रीडा के वस्त्र धारण कर रहस्यो के आवरण में छिप गया। समस्त पादशाही प्रबन्धो, प्रयत्नो एव खोज के बावजूद उनका कही पता न चला। दूरदर्शी तथा पहुँचे हुए लोगो ने इस विचित्र रहस्य मे यह समझ लिया कि इसका उद्देश्य यह है कि उत्कृष्ट बुद्धि का वह स्वामी जो दैवी शिक्षा द्वारा सम्मानित था, ससार के साधारण ज्ञानो से सम्बन्धित एव मिश्रित न हो ताकि जब उस कुशाग्र बुद्धि वाले का अनावरण हो तो ससार

१ पाठशाला।
२ अर्श पर एक स्थान जहाँ ससार में होने वाली सारी घटनाओं का उल्लेख है और जिसे कोई पढ नहीं सकता।
३ दैवी प्रकाशन का पुण्य स्थान।
४ ७ शव्वाल ९५४ हि०।
५ पूर्व में अबुलफजल लिख चुका है कि जब हुमायूं ने ९५३ हि० में कुन्दुज मे प्रस्थान किया तो अकबर की अवस्था ५ वर्ष, ३ मास एव २ दिन की थी कारण कि उसका जन्म ५ रजब ९४९ हि० को हुआ था।

वालों को ज्ञात हो जाय कि बुद्धिमानों के इस पादशाह की बुद्धि दैवी वरदान है न कि शिक्षा की देन। इस तथ्य के बावजूद उनके पवित्र विवेक को अक्षरों के चिह्नों एवं सांसारिक विद्याओं का, जिन्हें विद्वान् लोग चाहे लिपिबद्ध कर चुके हों और चाहे वे विधाता के उन रहस्यों से सम्बन्धित हों, जो बिना शिक्षा एवं दीक्षा के लोगों को प्राप्त होते हैं, ज्ञान था और दार्शनिक मल्ल, सांसारिक विद्याओं के ज्ञाता एवं साधारण तथा विशेष कलाओं की जानकारी रखने वाले जब पवित्र दरबार में पहुँचते हैं तो अपने ज्ञान (की कमी) के कारण लज्जा का सिर, चिन्ता के गरीबान में डालकर आश्चर्य-चकित हो जाते हैं। दैवी ज्ञान से प्रेरित उनके मस्तिष्क (२७१) को हिन्दी एवं फारसी कविता करने से बड़ी रुचि है और वे काव्यमय कल्पनाओं की गूढ़ बातों की खाल की खाल निकालते रहते हैं। कविताओं के ग्रंथों में से मसनवीये मौलवी[1], एवं लिसानुल ग़ैब[2] का दीवान बड़ी रवानी से स्वयं पढ़ते हैं[3] और उनके रहस्यों एवं उनकी गूढ़ बातों से आनन्द प्राप्त करते हैं। यह उत्कृष्ट शेर उन्हीं की रचना है —

शेर

'व्याकुल मजनू की गरदन में पागलपन के कारण जंजीर नहीं है,
इश्क ने उसकी ग्रीवा में मित्रता का हाथ डाल दिया है।'[4]

हिन्दी भाषा में भी उन्होंने बड़ी सुन्दर कवितायें की हैं

मिसरा

'हे गुणों के संग्रह! मैं तेरा उल्लेख किस प्रकार करूँ?'

---

१ मौलाना जलालुद्दीन रूमी, जो साधारणतः मौलाना अथवा मौलवी रूम या रूमी कहलाते हैं, बहाउद्दीन वलद बल्ख़ी के पुत्र थे। उनका जन्म बल्ख में ३० सितम्बर १२०७ ई० और मृत्यु १७ दिसम्बर १२७३ ई० को हुई। वे बहुत बड़े सूफी माने जाते हैं। उनकी मसनवी में सूफी सिद्धान्तों की बड़ी योग्यता से व्याख्या की गई है और मसनवी के शेर विभिन्न सिद्धान्तों के प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किये जाते हैं।

२ शम्सुद्दीन मुहम्मद ख़्वाजा हाफ़िज़ का जन्म शीराज़ में हुआ। वे लिसानुल ग़ैब अथवा परोक्ष की वाणी माने जाते हैं। उनके दीवान के शेरों का, फ़ाल निकालने के लिये बड़ा प्रयोग होता है। ख़ुदा बख्श लाइब्रेरी बाँकीपुर पटना में ख़्वाजा हाफ़िज़ के दीवान की एक ऐसी प्रति है जिसके हाशिये पर हुमायूँ तथा जहाँगीर के हाथ के लेख हैं। उनकी मृत्यु १३८९ ई० में शीराज़ में हुई और पास ही अपने प्रिय स्थान मुसल्ला में दफ़न हुए जहाँ उनकी क़ब्र के लोग श्रद्धापूर्वक दर्शन करते हैं।

३ अज़ कुतुबे नज़्म मसनवीये मौलवी व दीवाने लिसानुल ग़ैब, ख़ुद ब सआदत ख़्वां मी ख़्वानन्द।

از کتب نظم مثنوی مولوی و دیوان لسان الغیب خود بسعادت روان می خوانند

४ नीस्त ज़ंजीरे जुनूं दर गर्दने मजनूने ज़ार,
इश्क़ दस्त दोस्ती दर गर्दनश अफ़गन्दा अस्त।

نیست زنجیر جنون در گردن مجنون زار
عشق دست دوستی در گردنش افگنده است

इसामुद्दीन के स्थान पर मौलाना बायज़ीद की नियुक्ति

संक्षेप में, जब वे कुछ समय तक उस विद्वान् के पास इस प्रकार पढ़ने में व्यस्त रहे जो न पढ़ने से भी बुरा था, तो वाह्य दृष्टि से देखने वालों ने उसे शिक्षक के प्रयत्न की कमी समझ कर उसके परिवर्तन का प्रयत्न किया[1] और उस बेचारे को पदच्युत करके, उसके स्थान पर मौलाना बायज़ीद[2] को नियुक्त कर दिया। वे इस बात को न समझते थे कि विधाता के कार्यकर्ता इस बात का प्रयत्न कर रहे हैं कि उस ईश के प्रकाश के पोषित का हृदय सांसारिक चिह्नों का प्रतिबिम्ब न बने और सांसारिक ज्ञानों की कालिमा द्वारा कलंकित न हो।

मीर्ज़ा कामरान तथा पीर मुहम्मद ख़ां का बदख़्शां पर आक्रमण

संक्षेप में, हज़रत जहाँबानी उन शुभ दिनों में राजधानी काबुल में राज्य व्यवस्था में संलग्न रहते तथा बदख़्शां विजय हेतु आक्रमण करने एवं मीर्ज़ा कामरान की समस्याओं के समाधान में संलग्न रहते थे। मीर्ज़ा कामरान मीर्ज़ा सुलेमान एवं मीर्ज़ा इब्राहीम की सहायता से निराश होकर नीच कल्पनाओं सहित इस आशय से बल्ख़ की ओर रवाना हुआ कि पीर मुहम्मद ख़ां[3] की सहायता से बदख़्शां पर अधिकार जमा ले। जब वह ऐबक[4] नामक स्थान पर पहुँचा तो वहाँ के हाकिम ने उसके प्रति भली भाँति व्यवहार करके अपनी निगरानी में रख लिया और पीर मुहम्मद ख़ां को इसकी सूचना कर दी। पीर मुहम्मद ख़ां ने मीर्ज़ा के आगमन को बहुत बड़ी देन समझकर अपने कुछ विश्वास-पात्र उसके स्वागतार्थ भेजे और उसे बड़े आदर सम्मान से अपने घर लाया तथा आतिथ्य का प्रबन्ध किया। वह स्वयं मीर्ज़ा के साथ बदख़्शां पहुँचा।

मीर्ज़ा कामरान का बदख़्शां को अधिकार में करना

मीर्ज़ा लोग जैसा कि उन्होंने निश्चय किया था बदख़्शां के दर्रों की ओर चले गए और बदख़्शां का अधिकांश भाग मीर्ज़ा कामरान के अधिकार में आ गया। पीर मुहम्मद ख़ां एक सेना को मीर्ज़ा की कुमक हेतु छोड़कर स्वयं लौट गया। मीर्ज़ा किश्म एवं तालीक़ान के क्षेत्र में पहुँचा और रफ़ीक़ कोका ख़ालिक़ बीरदी एवं चग़ताई तथा ऊज़बेक सेनाओं के एक दस्ते को रुस्ताक़ की ओर भेजा। मीर्ज़ा सुलेमान एवं मीर्ज़ा इब्राहीम ने कोलाब वालों की एक सेना एकत्र करके रुस्ताक़ पर आक्रमण किया और क़िल्ये ज़फ़र एवं ख़मलिन्जान से पहुँचकर वीरतापूर्वक युद्ध किया किन्तु दुर्भाग्यवश पराजित हो गए और पुनः पर्वतीय क्षेत्रों में चले गए। हज़रत जहाँबानी काबुल में हँसी ख़ुशी दिन बिता रहे थे और उन्होंने यह निश्चय कर लिया था कि

१ इसामुद्दीन को क़बूतर बाज़ी अथवा कबूतर उड़ाने से जिसे अबुलफ़ज़्ल ने **आईने अकबरी** में इश्क़बाज़ी लिखा है बड़ी रुचि थी। सम्भवतः अकबर की इसमें उसी के कारण अधिक रुचि हुई।
२ मौलाना बायज़ीद, मीर्ज़ा उलुग बेग के एक ज्योतिषी का वंशज था।
३ वह जानी बेग का पुत्र एवं अब्दुल्लाह का चाचा था, उसकी मृत्यु ९७४ हि० (१५६६ ई०) में हुई।
४ सम्भवतः हौबक़।

वे बदख्शाँ की ओर प्रस्थान करेंगे। क्योंकि वे सेवकों के हृदय में निष्ठा की शुद्धता एव स्वामी-भक्ति का सौन्दर्य न पाते थे अत यह अभियान स्थगित होता जाता था।

कराचा खा का हुमायू की सेवा त्याग कर बदख्शा की ओर प्रस्थान

(२७२) इसी बीच में कराचा खा ने, जिसने योग्य सेवायें सम्पन्न की थी और अपार कृपाओं द्वारा सम्मानित हो चुका था, इस कारण कि उसके (साहस का) प्याला छोटा एव मदिरा अधिक थी, अत वह प्याला लबालब भर गया, अपने महत्व एव अपनी श्रेणी तथा अपने स्वामी के महत्व को न समझकर सयम के क्षेत्र से अपने पाँव बाहर निकाल दिए और मूर्खता के कारण, जो असयमी लम्बे डील वालों की विशेषता है अभिमान की बदमस्ती में ऐसी बातें करने लगा जो मस्त एव पागल भी नही करते। इन्ही में यह प्रार्थना थी कि ख्वाजा गाजी को, जो उत्तम सेवाओं एव सूझ-बूझ के कारण दीवान के पद पर सुशोभित था और आश्रय हेतु शाही कृपा का हाथ जिसके सिर पर रहता था, बन्दी बनाकर उसके पास भेज दिया जाय ताकि वह उसकी हत्या करा दे और उसका पद कासिम तूला को प्रदान कर दिया जाय। क्योंकि हजरत जहाँबानी द्वारा, जो न्याय एव उपकार का स्रोत थे, ऐसे कार्य सम्पन्न न होते थे, अत वह अपने निंद्य विचारो के कारण अपने आप को राज्य का स्तम्भ समझकर, दुर्भाग्यवश एक बहुत बडे समूह को मार्ग-भ्रष्ट करके, बदख्शाँ की ओर चल दिया।[1] बाबूस, मुसाहिब बेग, इस्माईल बेग दूल्दाई[2], अली कुली अन्दराबी, हैदर दोस्त मुगुल, शेखीम ख्वाजा खिज्री, कुरबान करावल एव लगभग ३,००० मुख्य अश्वारोही जिन्हे उसने मार्ग भ्रष्ट किया था, कोतल मीनार के मार्ग से बदख्शाँ की ओर प्रस्थान करने के उद्देश्य से अपमान के जगल में भटकने लगे।

हुमायू द्वारा कराचा खा का पीछा करने के लिये सैनिको की नियुक्ति

जब सम्मानित कानो तक यह समाचार पहुँचे तो वे स्वय उन अभागो को, जिन्होने सौभाग्य के किबले की उपेक्षा की थी, दड देने के लिये प्रस्थान करना चाहते थे किन्तु शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा में स्वय ठहर गए और भाग्यशाली दरबार के कुछ सेवको को उन अभागो का पीछा करने का आदेश दिया। जैसे-जैसे उनके निष्ठावान् सेवक आते-जाते थे, उन्हे एक-एक करके रवाना करते जाते थे। इस प्रकार तरदी बेग खा, मुनइम खा, मुहम्मद कुली बरलास, अब्दुल्लाह सुल्तान एव अन्य निष्ठावान् एक दूसरे के पीछे पीछे भेजे जाने लगे। मध्याह्न के समय जब शुभ मुहूर्त आगया तो हजरत जहाँबानी स्वय विजय के घोडे पर सवार हुए। कुछ वीर जवानो ने आगे बढकर उन विद्रोहियो की सेना के पीछे के भाग पर वीरतापूर्वक आक्रमण किया। दिन के अन्तिम पहर वे मोरी नदी पर कराचा खा से युद्ध करने लगे। इसी बीच में इन काले हृदय वालो के मध्य में रात्रि आ गई और रात के अँधेरे की शरण में वे छिन्न भिन्न हो गए और गूरबन्द[3]

१ कराचा खा के ख्वाजा गाजी से रुष्ट होने का कारण बायजीद एव जौहर ने अधिक विस्तार से दिया है। इस सम्बन्ध में उनकी कृतियों के अनुवाद आगे के पृष्ठों में देखिये।

२ प्रकाशित ग्रन्थ में 'दूल्दी'।

३ गूरबन्द नदी।

वे पुल से पार होकर उसे नष्ट कर डाला। जो सेना इन अभागों का पीछा करने के लिये नियुक्त हुई थी, वह लौटकर करावाग में चौखट के चुम्बन द्वारा सम्मानित हुई।

हुमायूँ की वापसी

हज़रत जहाँबानी ने यह निश्चय किया कि उत्कृष्ट सेना काबुल लौट जाय और वहाँ (२७३) से इच्छानुसार इस अभियान की तैयारी करके बदख्शाँ की ओर प्रस्थान करें। अल्पदर्शी लोगों ने भागकर तिमुर अली शिगाली को, जो कराचा खाँ का वकील था, इस आशय से पंजशीर में छोड़ दिया कि उस क्षेत्र में सावधान रहकर काबुल के समाचार भेजता रहे। वे स्वयं हिन्दू कोह के दर्रे से होते हुए किश्म में मीर्ज़ा कामरान के पास पहुँच गए। हज़रत जहाँबानी ने दूसरे दिन लौटकर उरता बाग को अपने सम्मानित चरणों के प्रकाश द्वारा आलोकित किया।

विद्रोहियों के नाम

उन्होंने उन दुष्टों के, जिन्होंने पादशाही आश्रय पर ध्यान न देकर नमकहरामी करते हुए विद्रोह कर दिया था, उचित उपनाम रखे। इस प्रकार कराचा को करावख्त[1], इस्माईल को खिर्स[2], मुसाहिब को मुनाफ़िक[3], बाबूस को दय्यूस[4] की उपाधि प्रदान की। मीर्ज़ा हिन्दाल, मीर्ज़ा सुलेमान एवं मीर्ज़ा इबराहीम के पास आदेश भेजे कि वे तैयारी करके, उत्कृष्ट सवारी के आगमन की प्रतीक्षा करते रहें। हाजी मुहम्मद खाँ को गज़नी से स्वयं चौखट चूमने के लिए पहुँचने का आदेश हुआ।

हुमायूँ का बदख्शाँ पर आक्रमण करने का संकल्प

इन दिनों जब वे बदख्शाँ पर चढ़ाई करने का संकल्प कर रहे थे वे सर्वदा बुद्धिमान् वृद्धों एवं प्रतिभाशाली युवकों से, जिनके ललाट से निष्ठा के गुण चमकते रहते थे, परामर्श किया करते थे। जिन लोगों के पास न तो वीरतापूर्ण साहस था और न दूरदर्शी बुद्धि वे कन्धार की ओर प्रस्थान हेतु परामर्श दिया करते थे ताकि वहाँ सेना की व्यवस्था एवं तैयारी करके मीर्ज़ा कामरान के विद्रोह के दमन हेतु प्रस्थान किया जाय। जिस समूह में बुद्धिमत्ता के साथ-साथ वीरता भी थी, वह पादशाह द्वारा बदख्शाँ पर चढ़ाई से सहमत था। एक दिन उन्होंने मुहम्मद सुल्तान से पूछा, "तू क्या कहता है?" उसने निवेदन किया कि, "मीर्ज़ा कामरान इन नमकहरामों के पहुँच जाने से अभिमानी हो गया है। सम्भव है कि वह हमारे पूर्व इन क्षेत्रों में पहुँच जाय। मेरी समझ में यह आता है कि यदि पादशाही सेनायें पहिले से ही हिन्दू कोह के दर्रे को पार कर लें तो राज्य के सहायकों को विजय प्राप्त हो जायगी। अन्यथा कहीं पासा पलट न जाय।" हज़रत जहाँबानी ने कहा कि 'अभिमानी लोगों का पतन बार बार देखा जा चुका है। यदि वे अभिमानी

१ अभागे।
२ रीछ।
३ षड्यन्त्रकारी।
४ वह पुरुष जो अपनी स्त्री की दुश्चरित्रता को देखकर उपेक्षा करता है।

है तो हम परमेश्वर के प्रति दीनतापूर्वक उसपर आश्रित हैं।' उन्होंने यह शेर पढा —

शेर

'किसी को अपनी शक्ति पर अभिमान न करना चाहिये,
कारण कि अभिमान सिर से टोपी गिरा देता है।'

उन्होंने कहा, "विलम्ब का कोई कारण नहीं। यदि ईश्वर ने चाहा तो हम शीघ्र दर्रे को पार कर लेंगे[1]।"

हजरत जहाँबानी जन्नत आशियानी की विश्व-विजय करने वाली सेना का बदख्शा की ओर प्रस्थान और विजय एव सफलता के साथ काबुल को वापसी

हुमायूं का बदख्शां की ओर प्रस्थान

क्योंकि हजरत जहाँबानी ने उत्कृष्ट सेना को बदख्शाँ भेजने का सकल्प कर लिया था (२७४) और इस अभियान की व्यवस्था परमावश्यक थी अत वे सोमवार ५ जमादि-उल अव्वल ९५५ हि० (१२ जून १५४८ ई०) को शुभ मुहूर्त में उस ओर उच्च साहस एव जागरूक सौभाग्य के साथ रवाना हुए और अलग चालाक[2] में शिविर लगाये गए। दो-तीन दिन उपरान्त वहाँ से करावाग में पडाव हुआ। १०-१२ दिन तक राज्य की कुछ समस्याओ के समाधान हेतु उस मजिल पर पडाव रहा। हाजी मुहम्मद खाँ यद्यपि अपनी कृतघ्नता के लिए कुप्रसिद्ध था, तथापि निष्ठा पूर्वक सेवा में उपस्थित हुआ। कासिम हुसेन सुल्तान ने भी, जो बगश के क्षेत्र मे था, चौखट के चूमने का सम्मान प्राप्त किया और उसके प्रति कृपा-दृष्टि प्रदर्शित की गई। उसी मजिल पर मीर्जा इबराहीम अपने सौभाग्य के कारण बदख्शाँ से शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करता हुआ आया और (उत्कृष्ट) फर्श का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। उसके सौभाग्य के ललाट पर विशेष कृपा का प्रकाश डाला गया।

हुमायूं का विजय से सम्बन्धित फाल निकालना

एक विचित्र घटना, जो अपार विजया का सुखद समाचार लाने वाली थी, यह थी —उन दिनो में जब कि उत्कृष्ट सेना बदख्शाँ की ओर प्रस्थान करने वाली थी, हजरत जहाँबानी आफतावखाने[3] मे खडे थे। अचानक उनके हृदय मे यह बात आई कि, 'यदि यह सफेद मुर्ग मेरे कधा पर आकर बाँग देने लगे तो यह सौभाग्य एव विजय का चिह्न होगा।" वह मुर्ग सर्वदा उस कारखाने[4] में रहता था। जैसे ही उन्होंने यह सोचा, सौभाग्य का वह पक्षी उडा और हुमा के समान

१ इस विषय में जौहर ने कुछ अधिक विस्तार से लिखा है। आगे के पृष्ठो में उसकी कृति का अनुवाद देखिये।
२ काबुल के उत्तर पश्चिम में लगभग २ मील पर। बाबर ने लिखा है कि, "यह मैदान बहुत बडा है किन्तु यहाँ मच्छर घोडों को बडा कष्ट पहुँचाते हैं"। (बाबर नामा, पृ० १६)।
३ आफताबे का गृह अथवा आफताबे (एक प्रकार के लोटे जिनमें दस्ते होते हैं) रखने का घर।
४ विभाग।

अपने पख फड़फड़ाता हुआ सम्मानित कंधों पर बैठ गया और सौभाग्य की छाया, प्रताप के सिर पर डाली। हज़रत पादशाह ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करके चाँदी का छल्ला उसके पाँव में डाल दिया।

मीर्ज़ा इबराहीम की तिमुर शिगाली पर विजय

उन घटनाओं में, जो विजय की प्रस्तावना हो सकती थीं और जो उनके नित्य प्रति उन्नत प्रताप के कारण घटती रहती थी, एक घटना यह थी कि जब मीर्ज़ा इबराहीम पंजशीर के समीप पहुँच गया तो तिमुर शिगाली ने मीर्ज़ा का मार्ग रोक लिया। मलिक अली पंजशीरी ने अपनी कौम एवं अपने कबीले द्वारा मीर्ज़ा की सहायता की। मीर्ज़ा इबराहीम ने तिमुर शिगाली से धीरतापूर्वक युद्ध किया और रक्त पीने वाली तलवार द्वारा उसकी हत्या कर दी।

पंजशीर के मलिक अली के प्रति हुमायूं की उदारता

उसने सावधानी की दृष्टि से मलिक अली पंजशीरी को हज़रत जहाँबानी की सेवा में प्रस्तुत करने के उद्देश्य से अपने साथ ले लिया। इस सरल स्वभाव के निष्ठावान् ने ज़मींदारों के कुत्सित विचारों के कारण मीर्ज़ा इबराहीम का विरोध किया और अत्यधिक वाद विवाद के उपरान्त युद्ध करने लगा। यद्यपि मीर्ज़ा के साथ बहुत थोड़े से आदमी थे, किन्तु उसने बड़े पौरुष का प्रदर्शन किया और जरीदा[1], उत्कृष्ट चौखट का चुम्बन करने के लिये पहुँच गया। दूसरे दिन मलिक अली ने अपने भाई को अपने अपराधों के प्रति लज्जा प्रदर्शित करते हुए तिमुर शिगाली के सिर के साथ भेजा। हज़रत जहाँबानी ने उसे खिलअत एवं इनाम द्वारा सम्मानित करके विदा कर दिया और उसके भाई को प्रेमोत्पादन युक्त फ़र्मान द्वारा सम्मानित किया। उसे लिखा कि, "मीर्ज़ा ने (२७५) तुझे न पहचाना। तू तथा तेरे पूर्वज जो निष्ठा प्रदर्शित करते आये हैं, उसका हमें भली भाँति ज्ञान है[2]। जब विजयी पताकाओं की किरणें उधर पड़ेंगी तो तू पादशाही कृपा द्वारा सम्मानित किया जायगा।' मीर्ज़ा इबराहीम के प्रति विशेष कृपा प्रदर्शित करते हुए उसे पुत्र की उपाधि द्वारा सम्मानित किया और महान् पादशाही कृपाएँ प्रदर्शित करके उसे विदा कर दिया ताकि वह जाकर मीर्ज़ा सुलेमान की सेना एकत्र कराये एवं युद्ध की सामग्री की व्यवस्था कराये और बदख़्शाँ में उत्कृष्ट शिविर के पहुँचने की प्रतीक्षा करता रहे।

हमीदा बानो बेगम तथा अकबर को काबुल भेजना

जब भाग्यशाली सेना तालीक़ान के क्षेत्र में पहुँच जाय तो वे उत्कृष्ट चौखट के चुम्बन हेतु अग्रसर हों। हज़रत महदे उलिया मरियम मकानी[3] एवं सल्तनत के नेत्रों के प्रकाश, खिलाफत की .

१ मुख्य सेना को छोड़कर थोड़े से आदमियों को लेकर तीव्र गति से पहुँच गया।

२ सम्भवतः वह यूसुफ़ज़ई मलिक शाह मन्सूर बिन मलिक सुलेमान शाह का सम्बन्धी था जिसकी पुत्री से बाबर ने विवाह किया था। बाबर ने ३० जनवरी १५१९ ई० के विवरण के सम्बन्ध में लिखा है, "यूसुफ़ ज़ाई कबीले को सन्तुष्ट करने के लिए मैंने अपने हितैषी मलिक सुलेमान शाह के पुत्र मलिक शाह मन्सूर की पुत्री से उस समय जब कि वह यूसुफ़ ज़ाई अफ़ग़ानों के पास से दूत बनकर आया था, विवाह का प्रस्ताव रक्खा था"। (बाबर नामा, पृ० ६४ ६५)

३ हमीदा बानो बेगम।

बहार के गुलाब की झाड़ी हज़रत शाहंशाह को गुलबहार[1] नामक स्थान से राजधानी काबुल भेज दिया। मुहम्मद कासिम खां मौजी को काबुल का दारोगा नियुक्त करके, हज़रत कुदसिया[2] के साथ रवाना कर दिया ताकि वह सर्वदा हज़रत शाहंशाह की सेवा में रहकर राज्य को पूर्ण रूप से सुव्यवस्थित रक्खे।

हुमायूं की सेना के अग्र भाग का खुस्त पर अधिकार

जब पंजशीर तूमान के बाज़ारक नामक स्थान के समीप सम्मानित शिविर लगे तो हाजी मुहम्मद (बिन) बाबा कश्का, कासिम हुसन सुल्तान, तरदी बेग, मुहम्मद कुली बरलास, अली कुली सुल्तान, मीर लतीफ तथा हैदर मुहम्मद चोली अग्रदल के सैनिकों के रूप में भेजे गए। जैसे ही उन लोगों ने हिन्दू कोह पार कर लिया, महदी सुल्तान[3], तरदी मुहम्मद जंग जंग और जो लोग अन्दराब के किले में थे, भाग गए। हज़रत जहाँबानी के आदेशानुसार तरदी बेग एवं मुहम्मद कुली बरलास खुस्त की ओर रवाना हुए ताकि भागे हुए अभागों के परिवार को, जो उस स्थान पर हैं, बन्दी बना लें। मीर्ज़ा कामरान, अभिमान के नशे में चूर, किलये जफ़र में था। भागे हुए जो अमीर तालीक़ान में थे, उन्होंने यद्यपि मीर्ज़ा से मार्गों की रक्षा एवं काबुल के रास्तों को रोकने का बड़ा आग्रह किया किन्तु उन्हें कोई सफलता न प्राप्त हुई। मुल्ला खिरद ज़रगरने, जो उन दिनों मीर्ज़ा कामरान का बहुत बड़ा विश्वासपात्र था और सर्वदा विद्रोह एवं षड्यन्त्र रचा करता था, इस विषय में अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु इससे कोई लाभ न हुआ। अन्त में कराचा खां एवं उसके साथ वालों ने दूरदर्शिता के कारण मुसाहिब बेग को इस आशय से भेजा कि वह (उनके) परिवार वालों को खुस्त से तालीक़ान ले आए ताकि कहीं ऐसा न हो कि काबुल में कोई सेना पहुँच जाय और वे बन्दी बना लिए जायें। इसी बीच में तरदी बेग एवं मुहम्मद कुली खुस्त पहुँच गए। मुसाहिब बेग ने अपने परिवार वालों को तालीक़ान पहुँचा दिया। सम्भवतः यह उस उपेक्षा के कारण किया गया जो प्राचीन सेवा[4] की वजह से उत्पन्न होती है।

हिन्दाल के प्रति उदारता

जब शाही पताकाएँ अन्दराब के समीप पहुँचीं तो मीर्ज़ा हिन्दाल कुन्दुज़ से (हज़रत जहाँबानी की) सेवा में उपस्थित हुआ और शेर अली को बन्दी बना कर लाया। हज़रत जहाँबानी

१ काबुल के उत्तर में। बाबर ने इस रमणीक स्थान के विषय में लिखा है, "समार के किसी भी भाग की अपेक्षा यहाँ तक कि काबुल की भी अपेक्षा, बहार में बाग़ात तथा बाराकूपा के मैदान एवं गुलबहार का दामन अत्यन्त रमणीक हो जाता है। नाना प्रकार के कुमुदनी के रंग बिरंगे फूल यहाँ खिले रहते हैं। एक बार जब हमने उनकी गणना कराई तो उनमें ३४ प्रकार के फूल निकले।" उन्हीं स्थानों की प्रशंसा में इस शेर की रचना की गई है

शेर

'हरियाली एवं खिले हुए फूलों के कारण बहार में काबुल स्वर्ग बन जाता है,
इसमें बावजूद बारान तथा गुल बहार की बहार अद्वितीय है।'

(बाबर नामा, पृ० ६४)।

२ हमीदा बानो बेगम।

३ सम्भवतः गुलबदन बेगम के पति खिज्र ख्वाजा का भाई।

४ इस स्थान पर अबुल फ़ज़्ल ने पुनः प्राचीन सेवकों पर चोट की है।

ने मीर्जा को नाना प्रकार की कृपाओ द्वारा सम्मानित किया। उन कृपाओ में से एक यह थी कि वह घोडे पर बैठे बैठे ही अभिवादन[1] करे।

हिन्दाल द्वारा शेर अली का बन्दी बनाया जाना

(२७६) इस घटना[2] का सक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है विजयी सेनाओ के बदख्शानात में प्रविष्ट होने के पूर्व, जब वहाँ मीर्जा कामरान के कारवार चल निकले तो शेर अली अत्यधिक विश्वास-पात्र हो गया। अभिमान के नशे मे वह मीर्जा से धृष्टतापूर्वक व्यवहार किया करता था और कुन्दुज पर अधिकार जमाने एव मीर्जा हिन्दाल के निकलवाने का प्रयत्न किया करता था। यहाँ तक कि मीर्जा ने उसे कुन्दुज में नियुक्त कर दिया। मीर्जा हिन्दाल ने पादशाही इकबाल से उसे बन्दी बना लिया। इसकी विस्तृत चर्चा इस प्रकार है कि एक रात्रि में कुन्दुज की सेना मे से प्यादो की बहुत बडी सख्या ने उसके घर[3] को घेर लिया। वह भागकर नहर में कूद पडा। उसका एक हाथ टूट गया और वह अपनी धूर्तता के जाल मे स्वय फँस गया।

हुमायूं का शेर अली को क्षमा कर देना

जब मीर्जा हिन्दाल उसे हज़रत जहाँबानी की सेवा में लाया तो उन्होने उसके दुराचार की उपेक्षा करके उसके अपराधो पर क्षमा के शब्द लिख दिए। उसे विशेष खिलअत देकर गूरी प्रदान कर दिया कारण कि उनका दूरदर्शी हृदय, आदमी की योग्यता एव उसकी उपयोगिता को समझता था। चूकि उसके व्यक्तित्व में पौरुष एव शासन-प्रबन्ध सम्बन्धी योग्यतायें विद्यमान थी, अत उन्होंने इतने बडे-बडे अपराध जिनमें से प्रत्येक पर मृत्यु दड दिया जा सकता था क्षमा करके कृपा दृष्टि प्रदर्शित की। गुणो को परखने वाली उनकी तराजू में, क्षमा सम्बन्धी सामग्री दड की आवश्यकताओ से अधिक निकली।

मीर्जा हिन्दाल को सेना के अग्र भाग के साथ भेजना

मीर्जा हिन्दाल के पादशाही कृपाओ द्वारा सम्मानित हो जाने के उपरान्त अनुल्लघनीय शाही आदेश हुआ कि हाजी मुहम्मद खा, एव एक अन्य दस्ता अग्र भाग के रूप में प्रस्थान करे। मीर्जा उनका सरदार बने। कोई भी मीर्जा की आज्ञाकारिता से, जो राज्य के हित मे है, उपेक्षा न करे और उसके आदेशो के पालन मे किसी प्रकार की कसर न उठा रक्खे ताकि प्रत्येक अपने साहस एव अपनी सेवा के अनुसार अपनी इच्छाओ की पूर्ति कर सके। जमादि-उल-आखिर ९५५ हि० के मध्य में (लगभग २२ जुलाई १५४८ ई०) शिविर काजी के अरग में जो अन्दराब का एक ग्राम है, पहुँचे। अन्दराब के काजी, तूकबाई[4] वाले सालकाची एव विलोच (कबीले के) सैनिकों, बदख्शाँ के ईमाको[5] एव मुसाहिब बेग के सेवको ने चौखट के चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया और वे

१ आगे के पृष्ठों में जौहर की कृति का अनुवाद देखिये।
२ शेर अली के बन्दी बनाये जाने की घटना।
३ खेमे।
४ एक अफ़ग़ान कबीला, (आईने अकबरी)।
५ जिर्गे अथवा समूह।

पादशाही कृपाओ द्वारा सम्मानित हुए। वहाँ से उत्कृष्ट सेना निरन्तर यात्रा करती हुई तालीकान पहुँची। अधिकाश भागे हुए अमीर तथा मीर्जा अब्दुल्लाह एव मीर्जा कामरान से सम्बन्धित अत्यधिक लोग किला बन्द किये थे। मीर्जा हिन्दाल एव जो अमीर लोग उसके साथ नियुक्त हुए थे उन्हे पादशाही आदेश हुआ कि वे वर्गी[1] नदी पार करके भली भाँति युद्ध करें।

हुमायूं की सेना के अग्र भाग की पराजय

इस बीच मे मीर्जा कामरान किलये जफर एव किश्म से शीघ्रातिशीघ्र बढता हुआ इस अभागे समूह के पास पहुँच गया[2]। शनिवार १५ जमादि उल-आखिर[3] को एक ऊँचाई पर जिसे (२७७) खलसान[4] कहते हैं, इन लोगो[5] में युद्ध होने लगा। पादशाही सेना ने अभी नदी न पार की थी और सेना के अग्र-भाग एव मुख्य सेना मे कुछ दूरी रह गई थी। ईश्वर की इच्छानुसार पादशाही सेना का अग्र दल भाग खडा हुआ और नदी पार करके चला आया। शत्रुओं का समूह लूट-मार करने लगा। मीर्जा कामरान थोडे से लोगो के साथ उसी ऊँचाई पर खडा रहा।

हुमायूं का कामरान के युद्ध हेतु प्रस्थान

इसी बीच मे हजरत जहाँबानी स्वय नदी तट पर पहुँच गए और शत्रु के समक्ष नदी पार करना चाहते थे कि कुछ सच्चे समाचार-वाहको ने समाचार पहुँचाये कि नदी के आगे दलदल हैं। यहाँ से आधे कोस पर चढाव की ओर एक चक्की है। वहाँ की भूमि पथरीली है। वहाँ से सुगमतापूर्वक नदी पार की जा सकती है। विवश होकर वे उस ओर रवाना हुए। जब वे उस चक्की के समीप पहुँचे तो शेखीम ख्वाजा खिज्र[6], जो ख्वाजा खिज्रियों[7] का सरदार[8] था, बन्दी बनाकर लाया गया। तुनक्तारो[9] के समूह को, जो घोडे की लगाम के साथ-साथ चलते थे, आदेश हुआ कि उस नमकहराम भगेडू[10] को पीटें। उन्होंने उसके इतने मुक्के तथा लातें मारी कि दर्शकगण को विश्वास हो गया कि उसका पापी प्राण उसके शरीर से मुक्त हो गया। उसी समय इस्माईल बेग दूल्दाई को बन्दी बनाकर उनकी पवित्र सेवा में उपस्थित किया गया। हजरत जहाँबानी ने उसकी

१ प्रकाशित ग्रन्थ में 'तर्गी' किन्तु एक पोथी में 'वर्गी'। यह खैराबाद नदी की एक शाखा है। खैराबाद नदी आक्सस की शाखा है। यह तालीकान के दक्षिण में बहती है।
२ इस विषय में तज्किरतुल वाकेआत का अनुवाद देखिये।
३ २२ जुलाई १५४८ ई०। ऊपर लिखा है कि शिविर जमादि-उल आखिर ९५५ हि० के मध्य में कामी के अलग में पहुँचे। अत इस स्थान पर शनिवार १५ जमादि-उल आखिर अशुद्ध ज्ञात होता है। यदि यह तिथि ठीक है तो ऊपर अवायले जमादि-उल-आखिर अथवा जमादि-उल आखिर का प्रारम्भ होना चाहिये।
४ इस स्थान के विषय में कोई ज्ञान प्राप्त नहीं हो सका। सम्भवत यह नाम ही अशुद्ध हो।
५ अग्र भाग में।
६ उसके विषय में बायजीद की कृति का अनुवाद देखिये।
७ एक कबीला।
८ कलान्तर।
९ निम्न वर्ग के सेवक।
१० वह कराचा खा के साथ हुमायू की सेना से भाग गया था।

हत्या न कराई और मुनइम खां की सिफारिश से उसके अपराधों को क्षमा कर दिया। तदुपरान्त वे उस ऊँचाई की ओर जहाँ मीर्ज़ा कामरान था रवाना हुए। रोशन कोका के भाई फ़तहुल्लाह बेग को सेना के अग्र दल में नियुक्त करके वीर फ़िदाइयों[1] के एक दल के साथ आगे भेजा। घोर युद्ध हुआ। फ़तहुल्लाह घोड़े से गिर पड़ा।

मीर्ज़ा कामरान की पराजय

इसी बीच में पादशाही पताकाएँ, जो सगार की विजय की प्रस्तावना एवं देश पर अधिकार जमाने का अग्र दल हैं, प्रकट हो गईं। मीर्ज़ा हताश हो गया और मुकाबला न कर सका। भागकर वह तालीकान के किले में पहुँच गया और उसे दृढ़ बनाने का प्रयत्न करने लगा। पादशाही सेना लूट-मार में व्यस्त हो गई। सेवकों में धन सम्पत्ति के विषय में आपस में झगड़ा होने लगा। हज़रत जहाँबानी ने हुरुक़[2] का आदेश दे दिया। इसका तात्पर्य यह है कि जिसे जो कुछ प्राप्त हुआ हो वह उसे ले ले और दूसरे की सम्पत्ति का लोभ न करे। इस विजय में किसी का बाल बराबर भी घाव न लगा। केवल अली कुली खां घायल हुआ। इस्हाक़ सुल्तान[3] तरदी बेग वल्द बेग मीरक, बाबा जूजक, एवं बहुत बड़ी संख्या में अन्य लोग जिन्होंने विजयी सेना का पीछा करने की धृष्टता की थी, बन्दी बना लिए गए। मीर्ज़ा हिन्दाल एवं हाजी मुहम्मद इन बन्दियों को उत्कृष्ट दरबार में लाये। हज़रत जहाँबानी ने न्याय एवं औचित्य की दृष्टि से उन लोगों के व्यवहार के अनुसार कृपा एवं कोप प्रदर्शित किया और विधाता के प्रति, जिसकी उदारता एवं अनुकम्पा असीम है, दासता के सिज्दे किए।

हुमायूं का मीर्ज़ा कामरान को पत्र लिखना

दूसरे दिन उन्होंने (किले का) अवरोध प्रारम्भ किया और मोर्चे बाँट दिए। एक दिन (२७८) उस मोर्चे से जो मुनइम खां, मुहम्मद कुली बरलास एवं हुसैन कुली सुल्तान मुहरदार के अधीन था, बन्दूक चलाते समय बन्दूक की एक गोली मुबारिज बेग के लगी और उसने प्राण त्याग दिए। हज़रत जहाँबानी ने, जो दया की खान थे, घोर पश्चाताप किया और अपनी पवित्र जिह्वा से कहा, काश उसका भाई मुसाहिब बेग उसके स्थान पर मार डाला जाता। हज़रत जहाँबानी ने भ्रातृ भाव अपितु अपनी उदारता के कारण मीर्ज़ा कामरान के इतने अपराधों के बावजूद उसके प्रति दया एवं कृपा प्रदर्शित करते हुए शिक्षा युक्त फ़रमान, जो कि सौभाग्य एवं प्रताप के बाज़ू के

१ प्राण न्यौछावर करने वाले। हसन बिन सब्बाह के समूह वाले भी फ़िदाई कहलाते थे और हसन बिन सब्बाह (मृत्यु ११२४ ई०) के प्रति अन्ध विश्वास रखने के कारण अपने प्राणों को बड़े बड़े खतरों में डाल देना उनके लिये साधारण बात थी।

२ इस विषय में बायज़ीद की कृति का अनुवाद देखिये।

३ वह शाह मुहम्मद सुल्तान का पुत्र था जो बाबर के मामा मुहम्मद खां का पौत्र था। उसकी माता खदीजा सुल्तान बाबर के एक छोटे मामा अहमद खां की पुत्री थी। इस्हाक़ की बहिन मुहतरिम का विवाह सर्वप्रथम मीर्ज़ा कामरान और बाद में मीर्ज़ा सुलेमान के पुत्र इब्राहीम से हुआ। वह मीर्ज़ा हैदर की पत्नी की बहिन थी और मीर्ज़ा के प्रभाव से उसका विवाह मीर्ज़ा कामरान से हुआ। (बेवरिज, पृ० ५२०)।

लिये तावीज एवं दान-पुण्य तथा दया की ग्रीवा के लिए जंतर हो सकता था, मीर्जा को लिखा। नाना प्रकार के उपदेश, जो बुजुर्गों के लिए उपयुक्त हैं, देने के उपरान्त यह लिखा कि, 'हे दुष्ट भाई एवं युद्ध प्रिय बंधु! इस कार्य को, जो युद्ध का कारण एवं असंख्य आदमियों की हत्या एवं कष्ट का साधन है, त्याग दे। शहर एवं लश्कर वालों पर दया कर। आज जो लोग मारे जा रहे हैं कल क़यामत में (सामने होंगे)।

शेर

उस क़ौम का ख़ून तेरी गरदन पर होगा,
उस समूह का हाथ तेरे दामन में होगा।
यह अच्छा होता, यदि तू संधि के विषय में सोचता,
और सौजन्यपूर्ण व्यवहार करता।'

मीर्जा कामरान का उत्तर

उन्होंने नसीब रम्माल[1] के हाथ यह भाग्यशाली फ़रमान भेजा। क्योंकि मीर्जा असावधानी के नशे में सौभाग्य एवं इक़बाल की ओर से मुख मोड़ चुका था अतः भाग्यशाली उपदेशों का उसके हृदय पर कोई प्रभाव न हुआ और उसने उस कृपा-युक्त पत्र एवं ज्ञान की प्रस्तावना के उत्तर में यह शेर पढ़ा[2] —

शेर

'राज्य की नव-वधू का वही दृढ़तापूर्वक आलिंगन करता है,
जो चमकती हुई तलवार के अधरों का चुम्बन करता है।'[3]

नसीब रम्माल ने मीर्जा कामरान के दुर्भाग्य का हाल सम्मानित कानों तक पहुँचा दिया। मोर्चों को दृढ़ बनाने का आदेश दे दिया गया। इसी बीच में मीर्जा सुलेमान एवं मीर्जा इब्राहीम बहुत बड़ी सेना सहित उत्कृष्ट चौखट का चुम्बन करके सम्मानित हुए और उन्हें शाही कृपा द्वारा प्रतिष्ठित किया गया। चाकर खाँ वल्द कैम किवचाक कोलाब वालों सहित पहुँचकर भाग्यशाली सेना का परिशिष्ट बना।

१ रमलवेत्ता। रमल उस विद्या को कहते हैं जिसमें भविष्य में घटने वाली घटनायें बता दी जाती हैं। इस विद्या का मूल आधार नुक़्ते अथवा बिंदियाँ हैं।

२ इस सम्बन्ध में देखिये **तज़्किरतुल वाक़ेआत** का अनुवाद।

३
अरूसे मुल्क कसे दर कनार गीरद चुस्त,
कि बोसा बर लबे शमशीरे आबदार दिहद।
عروس ملک کسی در کنار گیرد چست
که بوسه بر لب شمشیر آبدار دهد

मीर्जा हैदर के अनुसार शाही बेग खाँ अथवा शैबानी खाँ ने शाह इस्माईल सफ़वी के पत्र के उत्तर में इस शेर को १४९९-१५०० ई० में लिख भेजा था। (**मुग़ल कालीन भारत—बाबर**, पृ० ६१७)। इस शेर का १६वीं शती ई० के राजनीतज्ञों ने बड़ा अधिक प्रयोग किया है। वे केवल तलवार को राज्य पर अधिकार का मूल आधार मानते थे।

मीर्ज़ा कामरान द्वारा क्षमा-याचना एवं हज की अनुमति मांगना

इस एक मास के अवरोध में नित्य-प्रति विजय के द्वार राज्य के सहायकों के लिए खुलते जाते थे और मीर्ज़ा कामरान की समस्याओं की गाँठ दृढ़ एवं उसके लिए कार्य कठिन से कठिन होते जाते थे यहाँ तक कि वह अपने नाना प्रकार के चक्मों एवं धूर्तताओं की (उपयोगिता की) ओर से निराश हो गया। पीर मुहम्मद खां ऊज़बेक द्वारा सहायता प्राप्त करने के विषय में, जिसकी उसे अल्पदर्शिता के कारण आशा थी, निराश होकर उसने आज्ञाकारिता एवं अधीनता के फितराक[1] की ओर हाथ बढ़ाये[2]। इस युक्ति द्वारा वह इस बार खतरे के भँवर से अपने आपको निकाल ले गया और उसने अपनी सुरक्षा की नौका को लहरों के थपेड़ों से मुक्ति के तट पर पहुँचा दिया। इस उद्देश्य से उसने नाना प्रकार से प्रार्थनाएँ एवं विनतियाँ कीं। एक दिन उसने एक बाण पर एक पत्र बाँधकर सम्मानित शिविर में फेंका। उसमें लिखा था कि, 'मैंने आपकी कृपाओं एवं उदारताओं के प्रति अपने उत्तरदायित्व को न पहचाना। मुझे जो कुछ देखना था, वह मैंने देख लिया। अब जो कुछ हुआ उसपर मैं लज्जित हूँ। मेरी इच्छा है कि आप मुझे हज करने के लिये काबा जाने की अनुमति दे दें ताकि विद्रोह के पाप एवं कृतघ्नता के कलंक से मुक्त होकर अपने आप (२७९) को सेवा के योग्य बना सकूं। आपकी कृपाओं से मुझे आशा है कि यह सौभाग्य मीर अरब मक्की द्वारा प्रदान किया जायगा।"

हुमायूं का मीर को मीर्ज़ा कामरान के पास भेजना

मीर समस्त समकालीन सय्याहों[3] में अपनी निष्ठा एवं सच्चाई के लिए बड़ा प्रसिद्ध था। कहा जाता है कि उसे कीमिया का भी ज्ञान था। हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी उसके प्रति कृपा प्रदर्शित करते थे। इस अभियान में विजयी रिकाब के समीप रहकर वह शुभ कामनाओं से सेना को सुशोभित किया करता था।[4] जब उसकी विनती सम्मानित कानों तक पहुँची तो उन्होंने मीर को बुलाकर इस बात की चर्चा की। मीर ने कहा, "मैं इसका उत्तर लिखकर किले के भीतर भेजता हूँ[5]।" उसने इस प्रकार लिखा, 'हे किले वालो! मुक्ति निष्ठा पर एवं सुरक्षा आज्ञाकारिता तथा अधीनता पर निर्भर है। वह व्यक्ति शान्ति का पात्र है जो सन्मार्ग पर अग्रसर हो।" मीर्ज़ा कामरान ने इस पत्र का अभिप्राय समझकर पूर्व की भांति पुनः लिखा कि, 'मीर जो कुछ कहे तथा निश्चय करें मैं उपेक्षा न करूँगा।" हज़रत जहाँबानी ने, इस कारण कि कृपा एवं उदारता उनके पवित्र व्यक्तित्व का अंग बन चुकी थी, मीर को विदा कर दिया। मीर किले में पहुँचा और सत्य के सिद्धान्त, जो बुद्धि के जलाशय में विमल धाराओं से अधिक स्वादिष्ट हैं किन्तु शारीरिक सुख की दृष्टि से बकाइन के रस से भी अधिक कड़वे हैं, प्रस्तुत किए। उसने समझाने-बुझाने में कोई कसर न उठा

१ वह डोरा जो घोड़े की जीन में दोनों ओर शिकार अथवा कोई अन्य वस्तु बाँधने के लिए लगाया जाता है।
२ आज्ञाकारिता प्रदर्शित करने का प्रयत्न करने लगा।
३ सय्याह का अर्थ 'पर्यटन करने वाला' होता है किन्तु यहाँ 'सन्त' से तात्पर्य है।
४ सेना के लिये शुभ कामनाएँ किया करता था।
५ यह उत्तर अरबी भाषा में लिखा गया था। अनुवादक ने मूल पत्र एवं उत्तर दोनों ही उद्धृत किये हैं।

रक्खी। वह जिस जिस तरह फटकारता मीर्जा इस कारण कि उसे अपनी बदमस्ती के खुमार से चेतावनी मिल गई थी, आत्म-समर्पण का सिर झुका कर, "अपराध-अपराध" और 'जो कुछ आप कहे, मुझे स्वीकार है", कहता जाता था। मीर ने कहा, "अब इसका उपाय यह है कि उठो और निष्ठापूर्वक भक्ति-भाव से मेरे साथ अभिवादन करने का सम्मान प्राप्त करो।"

हुमायू का मीर्जा कामरान को क्षमा करना

मीर्जा चल खड़ा हुआ, (पता नहीं) निष्ठा के कारण अथवा धूर्तता के। जब वह किले के द्वार के समीप पहुँचा तो इस कारण कि मीर अपने युग का बड़ा अनुभवी व्यक्ति था और समझता था कि उसके (कार्यों) में कोई तथ्य नहीं और दिखाने के लिए इतनी ही आज्ञाकारिता पर्याप्त है वह ठहर गया और उसने मीर्जा से कहा, "क्योंकि तुम चौखट के चुम्बन के उद्देश्य से अग्रसर हो गए अत शत्रुता के क्षेत्र से बाहर निकल आये और विद्रोह से मुक्त हो गए। अब तुम्हारे सौभाग्य एव पश्चाताप की दृष्टि से उचित यह है कि जो अमीर लोग भाग चुके हैं उनकी गरदनें बधवा कर दरबार में भेज दो और स्वय हजरत जहाँबानी के नाम का खुत्बा पढवा कर, बिना उनके समक्ष उपस्थित हुए अनुमति लेकर हिजाज़ की यात्रा को चले जाओ।" जब मीर्जा ने उसके परामर्श को स्वीकार कर लिया किन्तु उसने कहा, "हजरत जहाँबानी से निवेदन करो कि वे बाबूस को मेरे पास रहने दें। वह मेरा प्राचीन सेवक है। मैं चाहता हूँ कि मैंने जो कुछ कष्ट उसको दिए हैं उसका बदला इस यात्रा में चुका दू।" मीर वापस होकर हजरत जहाँबानी की सेवा में पहुँचा तो उसने इस घटना का सच-सच उल्लेख करके मीर्जा के अपराधों की क्षमा चाही। हजरत जहाँबानी ने अपनी स्वाभाविक कृपा के कारण उसके अपराध क्षमा कर दिए और मीर ने जो कुछ निश्चय किया था, उसे स्वीकार कर लिया[१]।

१ हुमायू ने इस विजय का फतहनामा (विजय-पत्र) बैराम खा के पास कन्धार भेजा उसमें इन शेरों को, जो उसी की रचना है, अपने कलम से लिख दिया

पद्य

"पुन परोक्ष से विजय प्रकट हुई,
जिससे मित्रों का हृदय खिल उठे।
ईश्वर को धन्य है कि हम पुन प्रसन्न है,
अपने मित्रों एवं दोस्तों का मुख देखकर हँस रहे हैं।
शत्रुओं को हमने असफल देखा,
विजय के उद्यान के मेवे चुने।
आज का दिन नवरोज का दिन है,
मित्रों के हृदय में आज कोई चिन्ता नहीं।
मित्रों के हृदय सर्वदा प्रसन्न रहें,
मित्रों को एवं प्रदेशों में कोई दुःख न हो।
आनन्द सभा के समस्त साधन प्राप्त है,
हृदय में मिलने की आकांक्षा है।
मित्र के सौन्दर्य के कब दर्शन करूँगा मैं,
मिलन के उद्यान में फूल कब चुनूँगा मैं।

मीर्ज़ा कामरान को हज के लिये प्रस्थान करने की अनुमति

शुक्रवार १२ रजब ९५५ हि० (१७ अगस्त १५४८ ई०) को उपर्युक्त किले में मौलाना अब्दुल बाक़ी सद्र ने हज़रत जहाँबानी के सम्मानित नाम का ख़ुत्बा पढ़ा। वे वहाँ से उस उद्यान (२८०) में, जो समीप था, पहुँचे। मोर्चे हटा दिए गए। सम्मानित आदेश हुआ कि, "हाजी मुहम्मद सेना के एक दस्ते के साथ उपस्थित रहे। मीर्ज़ा थोड़े से लोगों के साथ जैसा कि निश्चय हो चुका है, चला जाय और उसके राज्य से निकलने तक सीमान्तों की प्रतिरक्षा होती रहे। अली दोस्त ख़ाँ बारबेगी, अब्दुल वहहाब, सैयिद मुहम्मद पक्ना, मुहम्मद क़ुली शेख कमाल, लुत्फ़ी सहरिन्दी एवं अन्य लोग इस आशय से नियुक्त हुए कि वे किले के द्वार की रक्षा करें, भागे हुए अमीरों को लायें एवं मीर्ज़ा को निश्चित साथियों सहित चले जाने दें। जैसा कि निश्चय हो चुका था, मीर्ज़ा बाहर निकला।

कान प्रसन्न हों तेरी वार्ता से,
नेत्रों को प्रकाश मिले तेरे दर्शन से।
आमने-सामने खुश-खुश,
बैठें हम प्रसन्न एवं बिना किसी चिन्ता के।
तदुपरान्त हिन्दुस्तान के कार्यों की चिन्ता करें।
सिंध के राज्य को विजय का सबब करें।
प्रत्येक बन्द द्वार खुल जाय,
जो हमारी इच्छा हो उससे अधिक हो जाय।
जब अपने कार्यों की व्यवस्था कर चुकें,
कश्मीर एवं पर्वतों की सैर करें।
हम युग एवं संसार में जो भी चाहें,
उसके विषय में जिब्रील (फ़रिश्ता) आमीन (एवमस्तु, तथास्तु) कहें।
हे ईश्वर ? मुझे प्रदान कर,
दोनों लोकों की विजय।"

इस रुबाई की भी तत्काल रचना करके उसके हाशिये पर लिखा —

"हे वह जो दुखी हृदय का साथी है,
जिस प्रकार कविता करने वाले की साथी उसकी कविता की प्रवृत्ति होती है।
मैं तेरी याद के बिना एक क्षण भी कदापि नहीं रहता,
क्या तू भी मेरी याद में इसी प्रकार दुखी है ?"

बैराम खाँ तुर्कमान ने भी उत्तर में यह रुबाई लिखी —

"हे वह जो ईश्वर की छाया है,
तेरी जितनी भी प्रशंसा की जाय तू उससे श्रेष्ठ है।
जब तू जानता है कि बिना तेरे कैसी बीतती है,
तो तू क्यों पूछता है कि वियोग में मेरी क्या दशा है ?"

फ़िरिश्ता —तारीख़ फ़िरिश्ता (मक़ाल-ये दोयम) (नवल किशोर संस्करण, पृ० २३९)। जो शेर कोष्ठ में है वह केवल तक़ी औहदी के फ़ारसी कवियों की जीवनियों के संकलन अरफ़ातुल आरेफ़ीन में ही है। बाक़ीपुर पटना के पुस्तकालय की फ़ारसी हस्तलिपियों की सूची भाग ७ न० ६८५-६८६, डा० हादी हसन *The Unique Diwan of Humayun Badshah*, p. 15।

मार्ग मे मीर्ज़ा इबराहीम के एक सेवक ने अपने घोड़े को जिस पर मीर्ज़ा का एक सेवक सवार होकर जा रहा था, पहचान लिया। उसने जाकर मीर्ज़ा इबराहीम से इस विषय में कहा। मीर्ज़ा ने कुछ लोगो को भेजा कि वे घोड़ा छीन लाये। जब हज़रत जहाँबानी के पवित्र कानो तक यह बात पहुँची तो उन्होने अपने सौजन्य के कारण इस बात को अनुचित समझ कर क्रोध प्रदर्शित किया। मीर्ज़ा इबराहीम लज्जा एव सकीर्ण स्वभाव के कारण बिना अनुमति लिए हुए बिद्म की ओर चला गया। हाजी मुहम्मद के प्रति भी क्रोध प्रदर्शित किया गया कारण कि मीर्ज़ा का यह अपमान उसकी जानकारी के बावजूद हुआ। कृपा-युक्त फरमान जो क्षमा याचना के अनुरूप था खिलअत एव घोड़े सहित, ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद मीर व्यूतात के हाथ (मीर्ज़ा कामरान का) भेजा गया।

कराचा खा के प्रति हुमायू का व्यवहार

जब थोड़ी सी रात्रि व्यतीत हो गई तो कराचा खा उपस्थित किया गया। उसकी गरदन मे तलवार लटकी थी। जब वह मशाल के समीप पहुँचा, तो शाही आदेश हुआ कि उसकी ग्रीवा से तलवार निकाल ली जाय। उसके अपराध क्षमा करके उससे अभिवादन कराया जाय। उन्होने तुर्की भाषा में कहा कि 'सैनिक अपने जीवन-काल में इस प्रकार की भूले करते ही रहते है।' उसे तरदी बेग खा के बायें हाथ की ओर खड़े होने का आदेश हुआ।

हुमायू का विद्रोही अमीरो को क्षमा करना

तदुपरान्त मुसाहिब बेग की गरदन में निषग एव तलवार बाँध कर प्रस्तुत किया गया। जब वह मशाल के समीप पहुँचा तो निषग एव तलवार उतार देने का आदेश हुआ। इसी प्रकार कराचा खा के पुत्र सरदार बेग को लाया गया। आदेश हुआ "अपराध तो बड़ा का है। छोटो ने क्या किया है?" इस तरह समस्त अमीर बारी बारी आते रहे और उन्हे क्षमा किया जाता रहा। सबके अन्त में कुरबान करावल, जो प्राचीन सेवक था, लज्जावश सिर झुकाये हुए उपस्थित हुआ और उसने अभिवादन किया। हज़रत जहाँबानी ने तुर्की भाषा मे पूछा, 'तेरे ऊपर कौन सी विपत्ति पड़ गई थी और तू किस कारण चला गया?" उसने भी तुर्की में उत्तर दिया, "जिन लोगो के मुख को ईश्वर के हाथो ने काला कर दिया हो, उनके विषय मे कोई क्या कह सकता है[1]?" हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार ने जिसे हर समय बोलने की अनुमति थी, उस दरबार में यह शेर पढ़ा —

शेर

'जिस दीपक को ईश्वर जलाता है,
जो (उसकी ओर) फूकता है, वह अपनी दाढ़ी जलाता है[2]।'

१ मूल में 'पूछ सकता है'।

२ 'चिरागे रा कि ईज़द बर फ़रोज़द,
हर आँ कू पुफ़ कुनद रीशश बे सोज़द।'

समस्त अमीर लोग विशेष रूप से ख्वाजा खा, जिसकी दाढ़ी बड़ी लम्बी थी, लज्जित हो गए। दूसरे दिन उन्होंने वहाँ से प्रस्थान किया और तालोकान[1] नदी के तट पर एक हृदयग्राही घास के मैदान में पड़ाव हुआ।

मीर्ज़ा कामरान का हुमायूँ की सेवा में उपस्थित होना

(२८१) बुधवार १७ रजब (२२ अगस्त १५४८ ई०) को मीर्ज़ा कामरान दैवी प्रेरणा से फर्श चूमने के सौभाग्य द्वारा सम्मानित हुआ। इस विचित्र घटना का सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है बादाम दर्रे के समीप, मीर्ज़ा कामरान, मीर्ज़ा अब्दुल्लाह के साथ पादशाह की कृपाओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए वार्ता कर रहा था, उसने जितनी धृष्टतायें की थी, उनके क्षमा कर दिए जाने पर वह आश्चर्य प्रकट कर रहा था। मीर्ज़ा अब्दुल्लाह ने पूछा, "यदि उनके स्थान पर तुम होते तो क्या करते?" उसने उत्तर दिया, मुझे क्षमा करना और छोड़ देना नहीं आता।" मीर्ज़ा अब्दुल्लाह ने कहा, "इस समय ऐसे कार्य का अवसर है जिससे पिछले अपराधों का निराकरण हो सकता है। यदि तुम ऐसा करो तो फिर क्या बात है?' मीर्ज़ा ने कहा, "क्या बात है?" उसने उत्तर दिया, 'आज हम ऐसे स्थान पर हैं जहाँ पादशाह के हाथ हम तक नहीं पहुँच सकते। यह उचित होगा कि हम थोड़े से लोगों को लेकर शीघ्रातिशीघ्र पादशाह की सेवा में पहुँच जायें और कृतज्ञता के सिज्दे करके अपने अपराधों की क्षमा-याचना करें।' मीर्ज़ा कामरान ने यह बात स्वीकार कर ली। वह थोड़े से लोगों को लेकर चल पड़ा। जब वह सम्मानित शिविर के समीप पहुँचा तो काबूस को सेवा में भेजकर अपने आगमन की सूचना कराई। हज़रत जहाँबानी ने मीर्ज़ा के आगमन पर प्रसन्न होकर आदेश दिया कि, "सर्व प्रथम मुनइम खा, तर्दी बेग खा, मीर मुहम्मद मुन्शी, हसन कुली सुल्तान मुहरदार, वाल्दू बेग तवाची बेगी, ताश्ची बेगी जाकर (स्वागत करें) फिर कासिम हुसेन सुल्तान शैबानी खिज्र ख्वाजा सुल्तान, इस्कन्दर सुल्तान, अली कुली खा, बहादुर खा एवं अन्य लोग और तीसरी बार मीर्ज़ा हिन्दाल, मीर्ज़ा अस्करी, एवं मीर्ज़ा सुलेमान (जाकर) स्वागत करें।' उसी दिन मीर्ज़ा अस्करी के पाँव की बेड़ियाँ काटी गई थी।

हुमायूँ द्वारा मीर्ज़ा कामरान के आगमन पर समारोह का आयोजन

दूसरे दिन प्रातःकाल हज़रत जहाँबानी के आदेशानुसार मीर्ज़ा एवं अमीर लोगों ने जाकर उसके प्रति आदर-सम्मान प्रदर्शित किया। हज़रत जहाँबानी ने सिंहासन पर आसीन होकर दरबारे आम किया। मीर्ज़ा कामरान अभिवादन हेतु अग्रसर हुआ और उसने फर्श चूमने का सम्मान

جراغی را که ایزد بر فروزد
هر آنکو پف کند ریشش بسوزد

वैम्बरे ने लिखा है कि शैबानी ने १५०१ ई० में ख्वाजा अबुल मकारिम से पूछा कि उसने अपनी दाढ़ी क्यों मुड़ा दी तो उसने यह शेर पढ़ा। (Vambery *History of Bokhara*, p .256, बेवरिज, पृ० ५३५)।

१ सम्भवतः बगी नदी। इस प्रसग में निजामुद्दीन अहमद की **तबकाते अकबरी** का अनुवाद आगे के पृष्ठों में देखिये।

प्राप्त किया। उसने निष्ठापूर्वक तस्लीमें एवं सिज्दे किए। हजरत जहाँबानी ने कृपापूर्वक कहा, "तोरे[1] के अनुसार भेंट हो चुकी। अब तू आ ताकि भ्रातृ-भाव से भेंट हो।" तदुपरान्त उन्होंने मीर्जा को कृपा एवं दयापूर्वक आलिंगन किया और फूट-फूट कर रोये। दरबार के सभी उपस्थित लोगों का हृदय भावातिरेक से भर गया। मीर्जा पूर्ण रूप से सम्मानित होकर उत्कृष्ट आदेशानुसार बायीं ओर बैठा। हजरत जहाँबानी ने तुर्की में कहा, "और निकट बैठो।" मीर्जा सुलेमान को आदेश हुआ कि वह दायीं ओर बैठे। इसी प्रकार मीर्जा एवं अमीर लोग अपने पद एवं श्रेणी के अनुसार दायीं और बायीं ओर बैठे। राज्य के कुछ विश्वासपात्र यथा हसन कुली मुहरदार, मीर मुहम्मद मुंशी, हैदर मुहम्मद एवं मक्सूद बेग आख्ता को एक दूसरे के समीप बैठने का आदेश हुआ। भव्य समारोह आयोजित हुआ। कासिम चगी[2], कोचक गिचकी[3] मुखलिस कुबजी[4], हाफिज सुल्तान मुहम्मद रखना, ख्वाजा कमालुद्दीन हुसेन, हाफिज मुहरी एवं जादू सा प्रभाव रखने वाले उक्त समूह ने कूर[5] के (२८२) समीप बैठ कर गायन-वादन किया। यक्का लोगों[6] में काकर अली, शाहम बेग जलायर तूलक कूचीन एवं एक अन्य समूह को कूर के पीछे स्थान प्राप्त हुआ। मेवे एवं नाना प्रकार के भोजन बादशाही प्रथानुसार प्रस्तुत किए गए।

इस दरबार में हसन कुली मुहरदार ने मीर्जा कामरान से पूछा, "मैंने सुना है कि आपके दरबार में पीर मुहम्मद खाँ के समक्ष जब किसी ने कहा कि जिसमें मुरतुजा अली के प्रति एक नारंगी के बराबर शत्रुता न हो, उसे मुसलमान न कहना चाहिए तो आपने उत्तर दिया कि ईश्वर के दासों को चाहिए कि वह कद्दू के बराबर शत्रुता रक्खे।" मीर्जा बड़ा रुष्ट हुआ और उसने कहा, "क्या लोगों ने मुझे खारजी[7] समझ लिया था?" इसी प्रकार इधर उधर की बातें होती रहीं। हजरत जहाँबानी नाना प्रकार की बातों द्वारा मोती बखेर रहे थे। दिन के अन्त तक यह आनन्द मंगल का दरबार चलता रहा। इस मंगलमय सभा में, मीर्जा अस्करी को मीर्जा कामरान के सिपुर्द करके उसे अपने ठहरने के स्थान पर जाने की अनुमति दे दी गई। चूँकि मीर्जा शीघ्रातिशीघ्र बढ़ता चला

१ मुगुलों के विधान।
२ चग बजाने वाला।
३ गिचक बजाने वाला।
४ कुबूज़ बजाने वाला।
५ कूर का अर्थ पताका होता है किन्तु इस स्थान पर घेरा अथवा बीच का गोल स्थान।
६ वे सैनिक जो अहदियों के अनुरूप थे।
७ खारजी मुसलमानों का प्राचीनतम धर्म-युक्त राजनैतिक फ़िर्क़ा था। ये लोग पहले हजरत अली के बहुत बड़े सहायक थे किन्तु २६ जुलाई ६५७ ई० को सिफ्फीन (रक्क़ा के दक्षिण में) के युद्ध के समय हजरत अली द्वारा युद्ध समाप्त करने के लिये पंचों की नियुक्ति स्वीकार कर लेने के कारण वे हजरत अली के घोर शत्रु हो गये। खारजियों के कारण मुसलमानों में उस समय ही से अत्यधिक रक्तपात प्रारम्भ हो गया। हजरत अली को भी नहरवान नामक नहर [illegible] किनारे ६५९ ई० में इन लोगों से युद्ध करना पड़ा और २४ जनवरी ६६१ ई० को जब हजरत अली कूफ़े की मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे थे तो अब्दुर्रहमान इब्ने मुलजिम नामक खारजी ने ज़हर में बुझी हुई तलवार द्वारा उनकी हत्या कर दी।

आया था, अतः उसके लिए दौलतख़ाने[1] के समीप ख़ेमा, सरगाह[2] एवं बारगाह[3] लगवा दिए गए थे।

बल्ख पर आक्रमण के विषय में परामर्श

दूसरे दिन बल्ख जाने के विषय में मीर्ज़ाओं एवं अमीरों से परामर्श किया गया। प्रत्येक ने अपनी बुद्धि एवं मतानुसार कोई न कोई बात कही। हज़रत जहाँबानी ने कहा, "जब विजयी सेना नारी पहुँच जाय तो जो उचित होगा, वह किया जायगा।" नारी बदख्शा में एक स्थान है जहाँ से एक मार्ग बल्ख को और एक मार्ग काबुल को जाता है।

चौथे दिन इस आकर्षक मंज़िल से प्रस्थान करके रात्रि में इश्किमीश के समीप पड़ाव करने पर सम्मानित शिविर लगे। वहाँ आमोद प्रमोद की सभा आयोजित हुई। इस शिक्षाप्रद[4] मंज़िल पर हज़रत गेती सितानी, फ़िरदौस मकानी पहले भी पहुँचे थे और ख़ान मीर्ज़ा एवं जहाँगीर मीर्ज़ा ने यहाँ उपस्थित होकर आदेशों के प्रति आज्ञाकारिता का सिर झुकाया था। हज़रत फ़िरदौस मकानी ने इस हृदयग्राही स्थान पर पड़ाव करने भाइयों के आगमन एवं आज्ञाकारिता स्वीकार करने की स्मृति तारीख़ एक पत्थर पर खुदवा दी थी[5]। हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी जब इस रमणीक स्थान पर पहुँचे तो उन्होंने भी हज़रत गेती सितानी की परम्परा का पालन करते हुए अपने आगमन की तिथि एवं मीर्ज़ा कामरान की सेवा में उपस्थित होने तथा भाइयों के एकत्र होने का हाल उस स्थान पर लिखवा दिया। इन दो उत्कृष्ट पादशाहों की ये दोनों 'तारीख़ें' एक शिला के ऊपर काल चक्र के महल के शिला लेख के समान दिन रात के पृष्ठ पर साथ साथ वर्तमान हैं[6]।

हुमायूं द्वारा राज्य का वितरण

वहाँ से नारी[7] नामक स्थान पर पड़ाव किया गया और वे बदख्शाँ की विलायत के

१ बादशाह का ख़ेमा।
२ आईने अकबरी के अनुसार ऐसा ख़ेमा जो तह करके रख लिया जाय। (आइने फर्राश ख़ाना)।
३ एक प्रकार का बहुत बड़ा ख़ेमा जिसमें अधिक संख्या में लोग बैठ सकते हों। अनुलफ़ज़ल के अनुसार बड़ी बारगाह में १०,००० आदमी आ सकते थे। मशीनों द्वारा १००० फ़र्राश इसे एक सप्ताह में खड़ा करते थे। (आईने अकबरी आईने फर्राश ख़ाना)।
४ 'इबरत' अरबी किंतु यहाँ 'रमरणीय'।
५ सम्भवतः बाबर के औरतबीपा के शिला लेख की ओर सकेत हो। इसे बाबर ने ९०७ हि० (१५०१-२ ई०) में खुदवाया था। (बाबर नामा, पृ० ५५०)। किन्तु हुमायूं के मार्ग पर यह स्थान न था। इश्किमीश आकमश के दक्षिण तथा कुंदुज के दक्षिण पूर्व में है। यदि बाबर ने वहाँ कोई शिलालेख खुदवाया तो उसका उल्लेख बाबर नामा में नहीं है। गुलबदन बेगम के अनुसार वे किश्म में एकत्र हुये किंतु किश्म तालीकान के पूर्व में है और उस समय हुमायूं के मार्ग से दूर था। (बेवरिज, पृ० ५३८)।
६ इस सम्बन्ध में बायज़ीद की कृति का अनुवाद आगे के पृष्ठों में देखिये। बायज़ीद ने इस घटना का उल्लेख अधिक स्पष्ट शब्दों में किया है।
७ यद्यपि मीर्ज़ा कामरान को तालीक़ान में क्षमा कर दिया गया था किन्तु सम्भवतः उस समय तक मीर्ज़ा कामरान के मक्का जाने अथवा न जाने के विषय में कोई निर्णय न हुआ था। अतः उसने बल्ख के आक्रमण के विषय में

प्रवन्ध में व्यस्त हो गए। कोलाब[1] के नाम से प्रसिद्ध खुतलान से मूक[2] एवं करातिगीन की सीमान्त तक के स्थान मीर्ज़ा कामरान को प्रदान कर दिए गए। चाकर खा को मीर्ज़ा कामरान का अमीरुल उमरा[3] नियुक्त करके उसके साथ भेज दिया गया। अस्करी मीर्ज़ा को भी मीर्ज़ा के साथ करके (२८३) करातिगीन नामक स्थान उसको जागीर में दे दिया गया। यद्यपि मीर्ज़ा कामरान इस जागीर से सतुष्ट न था[4] किन्तु क्षमा कर दिए जाने के कारण उसने अधिक आपत्ति प्रकट न की। किलये जफर, तालीकान एवं कुछ अन्य परगने मीर्ज़ा सुलेमान एवं मीर्ज़ा इब्राहीम को प्रदान कर दिए गए। कुन्दुज, गूरी[5], काहमर्द[6], वकलान[7], इश्किमीश[8] एवं नारी मीर्ज़ा हिन्दाल को दिए गए। शेर अली को मीर्ज़ा के साथ नियुक्त कर दिया गया। बल्ख पर आक्रमण दूसरे वर्ष के लिए स्थगित कर दिया गया। उन्होंने मीर्ज़ाओं को पादशाही कृपाओं द्वारा सम्मानित करके काबुल की ओर प्रस्थान करने का सकल्प किया।

एकता हेतु प्रतिज्ञा कराना

अन्तिम दरबार में सांसारिक सुव्यवस्थापकों की प्रथानुसार प्रत्येक को वचन एवं प्रतिज्ञा के उपरान्त छोटे बड़े लोकों[9] के प्रबन्धक ईश्वर को सौंप कर, विदा कर दिया। भ्रातृ-भाव सम्बन्धी

आयोजित परामर्श गोष्ठी में कोई भाग न लिया। इसके अतिरिक्त उसने बल्ख के पीर मुहम्मद से सहायता प्राप्त की थी और उसकी एक पत्नी भी उजबेक थी अतः उसमें इस विषय में परामर्श करना उचित भी न था। जौहर का यह विचार सम्भवतः ठीक नहीं कि हुमायू उसे कोलाब के बदले में अथवा कोलाब के अतिरिक्त बल्ख देना चाहता था कारण कि जब तक शाही सेना नारी न पहुँच गई उस समय तक मीर्ज़ा कामरान द्वारा हज के विचार त्याग कर खुतलान अथवा कोलाब स्वीकार करने का निर्णय न हुआ। नारी से मीर्ज़ा कामरान मक्का की ओर रवाना हुआ। वह आधा कोस ही गया था कि हुमायू के आदेशानुसार हसन कुली, मीर्ज़ा कामरान के पास पहुँचा और उसे कोलाब स्वीकार करने पर तैयार किया। इस प्रकार कामरान दो बार वापस हुआ, एक बार तालीकान से और दुबारा नारीन से। (बेवरिज, पृ० ५३६)।

१ कोलाब अथवा खुतलान एवं करातिगीन तक पहुँचना बड़ा ही कठिन है, इस कारण ये बड़े कम प्रसिद्ध हैं। ये मानमम नदी के उत्तर में स्थित हैं। King *Memoirs of Baber*, Introduction Lxix)। सम्भवतः इसी कारण वे मीर्ज़ा कामरान तथा मीर्ज़ा अस्करी को प्रदान हुये।

२ मूक अथवा मूकसू नदी उत्तर की ओर बहती है और सुर्खाब नदी में करातेगीन के पूर्व में गिरती है। सुर्खाब नदी आक्सस की एक शाखा है। John Wood: *A Journey to the Source of the River Oxus* (London) 1872 H. yule की प्रस्तावना पृ० lxx.

३ बेवरिज ने इस शब्द का अनुवाद प्राइम मिनिस्टर अथवा प्रधान मंत्री किया है किन्तु अमीरुल उमरा का अर्थ मुख्य अमीर होता है। यह आवश्यक नहीं कि उसे प्रधान मंत्री का पद प्राप्त हो।

४ इस विषय में तज़किरतुल वाकेआत का अनुवाद देखिये। जौहर के अनुसार जब इस घटना के बाद मीर्ज़ा कामरान को काबुल बुलवाया गया तो उसने जाने से इन्कार करते हुये दरवेशी के महत्व पर ज़ोर दिया।

५ काहमर्द के उत्तर पूर्व में।

६ प्रकाशित ग्रन्थ में 'कमर्द'; काहमर्द बामियान के उत्तर में है।

७ अन्दराब के मार्ग में। वकलान की घाटियाँ पंजशीर की पर्वत श्रेणी के उत्तरी ढाल पर हैं और चाँदी की खानों के लिये प्रसिद्ध थीं।

८ इश्किमीश कुन्दुज से दक्षिण पूर्व की ओर लगभग १५ मील पर है। यह तालीकान से ३० मील दक्षिण में है।

९ लोक तथा परलोक से अभिप्राय है।

तृषा के कारण मरजान का प्याला मंगवा कर उसमें से थोड़ा सा स्वयं पिया और (शेष) मीर्जा कामरान को प्रदान किया। यह आदेश दिया गया कि मीर्जाओं में से प्रत्येक अपनी श्रेणी के अनुसार पादशाह के प्रति निष्ठा का घूंट पिये और एकता एवं संगठन की प्रतिज्ञा करे। शाही आदेशानुसार भ्रातृ-भाव के बावजूद उन लोगों ने निष्ठा एवं मित्रता की गांठों को भी दृढ़तापूर्वक बांधा। मीर्जाओं में से प्रत्येक को पताका एवं नक्कारा प्रदान किया गया और उनके विश्वास एवं सम्मान में वृद्धि की गई। मीर्जा कामरान, मीर्जा सुलैमान एवं मीर्जा हिन्दाल को तुमन-तोग[1] प्रदान करके सम्मानित किया गया।

हुमायूं द्वारा परियान के किले की मरम्मत

मीर्जा लोग इस मंजिल से अपनी-अपनी जागीर को चले गए। उत्कृष्ट सेना सूर्य की ओर रवाना हो गई और उस आनन्दप्रद स्थान पर पड़ाव किया गया। वहां से वे परियान होते हुए काबुल की ओर रवाना हुए। परियान किले का निर्माण हज़रत साहब किरान ने कतूर[2] के हिन्दुओं को दण्ड देने के उपरान्त कराया था। हज़रत जहांबानी ने उसकी मरम्मत करवाकर उसका नाम इस्लामाबाद रखा। जब भाग्यशाली पताकायें उस भू भाग में पहुंचीं तो पहलवान दोस्त मीर बर को आदेश हुआ कि वह किले की टूट-फूट की मरम्मत कराये और वहां का प्रबन्ध अमीरों को बांट दिया गया। दस दिन तक वहां पड़ाव रहा यहां तक कि पहलवान की देख रेख में एक सप्ताह में

१ तमग़े कि तरह के रूप में एक प्रकार की पताका जो बड़े सिपहसालारों को प्रदान की जाती थी। यह चार तोग के समान होता है, किन्तु उससे बड़ा होता है। चार तोग नामक पताका में सुरा गाय की दुम के बाल लगे होते हैं। दोनों ही पताकायें केवल राज्य के महान् लोगों को ही प्रदान होती हैं। किन्तु तुमन तोग जिसे ही प्रदान होता है। (मआसिरे महमूदी—[illegible])।

२ कतूर—कतूर अथवा कतोर जो हिन्दुकुश के [illegible] पूर्व के भाग में स्थित है। यह उस पर्वतीय प्रदेश का बड़ा भाग है जो आजकल काफिरिस्तान अथवा चित्राल एवं अन्य काफिरों का प्रदेश कहलाता है। [illegible] यूल ने [illegible] से प्रमाण प्रस्तुत किये हैं जिनसे पता चलता है कि १३वीं शती ई० में [illegible] काफिर [illegible] उसमें [illegible] कतूर अथवा [illegible] बाबर ने अपनी तुज़ुक में काफिरिस्तान [illegible] (कतूर) का उल्लेख किया है जो काबुल के उत्तर पूर्व में है और जो कतूर कहलाता है। [illegible] मिर्ज़ा हैदर का कथन है कि चित्राल के बादशाहों का [illegible] नाम भी कतूर है। उसने यह भी लिखा है कि प्राचीन काल में कतूर वंश की स्थापना के पूर्व यह प्रदेश भी कतूर कहलाता था। [illegible] कतूर नाम का प्रयोग [illegible] हुआ है [illegible] कतूर का [illegible] काफिरिस्तान तथा चित्राल दोनों से है [illegible] १६वीं शती ई० में [illegible] १६वीं शती ई० के प्रारम्भ में [illegible] काफिरों [illegible] किया [illegible] कतूर [illegible] हो गये होंगे।
[Yule Cathay, p 554; Biddulph: Tribes of the Hindukush p. 148, Retter Erdkunde VII, pp. 206-207, E. D. Ross. The Tarikh Rashidi of Mirza Muhammad Haidar (London 1895, p. 103 note)]

किले के द्वार, कगूरे एव सग अन्दाज[1] ठीक हो गये। हज़रत जहाँबानी ने बेग मीरक को वहा का हाकिम नियुक्त कर दिया।

चादी की खान की ओर प्रस्थान

जब उनका ससार को शोभा प्रदान करने वाला हृदय किले की समस्याओ की ओर से निश्चिन्त हो गया तो वे चाँदी की खान की ओर पधारे। वहाँ उन्हे ज्ञात हुआ कि इस खान से व्यय के बराबर प्राप्ति नही हो सकती।

हुमायू का काबुल पहुँचना

वहाँ से प्रस्थान करके उन्होने पजशीर नदी के तट पर उश्तुर कराम[2] दर्रे के समीप पडाव किया। शीत ऋतु के प्रारम्भ मे जब कि भूमि बरफ मे ढक गई थी तो राजधानी काबुल के समीप के स्थानो को हज़रत जहाँबानी के सम्मानित चरणो द्वारा शोभा प्राप्त हुई। उचित (२८४) घडी एव मुहूर्त की प्रतीक्षा मे कुछ दिन नगर के समीप पडाव किया गया। हज़रत शाहशाह ने, जिनका आगमन सहस्रो आशीर्वाद एव सौभाग्य का द्योतक है प्रताप के समान (हज़रत जहाँबानी का) स्वागत् किया। अतगा खा एव उनके विश्वास पात्रो का एक समूह सेवा में उपस्थित हुआ। हज़रत जहाँबानी ने खिलाफत के नेत्रो की पुतली एव ऐश्वर्य के शिशु-चन्द्र के, जिसके ललाट से लोक तथा परलोक का सौभाग्य टपकता था सौभाग्य के मस्तके को ईश्वर की कृतज्ञता के प्रति सिज्दा करके प्रसन्न एव प्रफुल्लित होकर अनन्त तक स्थायी रहने वाला प्रकाश प्रदान किया।

मीर्ज़ा हैदर का पत्र प्राप्त होना

शुक्रवार २ रमजान[3] को उन्होने उचित समय पर विजय एव सफलता के साथ अपने आगमन की छाया नगर पर डाली और (ईश्वर की) दासता की भूमि पर मस्तक रक्खा। राज्य के सहायको के पास से बधाई पत्र प्राप्त हुए। इसी समय समन्दर[4], कश्मीर से मीर्ज़ा हैदर के प्रार्थना पत्र एव उस विलायत के उपहार सम्मानित दरबार में लाया। प्रार्थना पत्र में कश्मीर की जल वायु बहार एव शरद् ऋतु फल एव मेवो की प्रशसा बडे रोचक ढग से लिखी थी। उस हृदयग्राही स्थान के सदा बहार उद्यानो की सैर के लिए आग्रह किया गया था और हिन्दुस्तान विजय के

१ यह स्थान जहाँ से पत्थर इत्यादि फेंके जाते होंगे।

२ गराम तथा कराम दोनों ही रूप में ग्रन्थों में मिलता है।

३ २ रमज़ान ९५५ हि० (५ अक्तूबर १५४८ ई०)।

४ सम्भवत वह हुमायू का सेवक था और उसी ने उसको कश्मीर भेजा था। अकबर नामा में उसका उल्लेख पृ० १७३ तथा १७६ (अनुवाद पृ० ९६ तथा १०४) पर हुआ है। वहाँ उसकी चर्चा राजदूत के रूप में की गई है। तारीखे रशीदी में उसका कोई उल्लेख नहीं। सम्भवत वह ९५२ हि० (१५४५-४६ ई०) में, जब मख़्दूम (मख़्दूम बेग) कश्मीर की ओर भेज दिया गया था, भेजा गया। अबुलफ़ज़्ल पूर्व में उल्लेख कर चुका है कि जब हुमायू ने काबुल विजय कर लिया तो मीर्ज़ा हैदर ने हुमायू के नाम का ख़ुत्बा पढ़वा दिया। (बेवरिज, पृ० ५४१)।

सम्बन्ध में उचित वाक्य लिख कर ससार को विजय करने वाले उनके हृदय को उस ओर प्रेरित किया गया था। हजरत जहांबानी ने विजय एव सफलता सम्बन्धी पत्र अत्यधिक दया एव कृपा प्रदर्शित करते हुए मीर्ज़ा को भेजा और निष्ठा की उस प्रस्तावना में हिन्दुस्तान की विजय के विषय में अपनी हार्दिक इच्छा व्यक्त की।

कराचा खा एव मुसाहिब बेग को मक्का जाने की अनुमति

वे राजधानी मे सर्वदा राज्य-व्यवस्था को शक्ति पहुँचाने एव शासन सम्बन्धी समस्याओ के समाधान मे व्यस्त रहते और अपनी कुशाग्र बुद्धि को समय की आवश्यकतानुसार (कार्य मे) लगाये रहते थे। विश्वास घात करने वाला के समूह के नेता एव नाना प्रकार के कठोर दडो के पात्र कराचा खा एव मुसाहिब बेग को हिजाज यात्रा की अनुमति दे दी ताकि वे परदेश में, जो आत्मा के लिए बडा कष्ट-दायक होता है समृद्धि के दिनो को कदाचित् कभी याद कर सकें और सुख के इन दिना का मूल्य समझ कर दुष्टता को त्याग दें। ये लोग प्रस्थान करके हजारा लोगो के पास ठहर गए। अन्त में हजरत जहाबानी की कृपाओ ने इस कृतघ्न समूह के उन अपराधो को, जो सुनने योग्य भी न थे, क्षमा कर दिया।

ईरान को दूत

इन्ही दिनो मे प्रेम एव निष्ठा के बन्धनो को जो उदारता एव सौजन्य के लिए परमावश्यक है, पुन दृढ करने के लिये ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को दूत बना कर उपहार सहित ईरान की ओर जाने की अनुमति दे दी।

मीर्ज़ा उलुग बेग की हत्या

— जो घटनाये इस वर्ष घटी उनमे मीर्ज़ा उलुग बेग बरद मीर्ज़ा मुहम्मद सुल्तान का शहीद होना भी है। इस घटना का सक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है मीर्ज़ा अपनी जागीर जमीनदावर से हजरत जहाबानी की सेवा में उपस्थित होने के उद्देश्य से बदख्शा जा रहा था। ख्वाजा मुअज्जम भी चौखट चूमने एव अपने अपराधो की क्षमा याचना हेतु मीर्ज़ा के साथ था। जब वे गजनी के समीप पहुँचे तो भाग्यशाली सेना के विजय के समाचार प्राप्त हुए। ख्वाजा मुअज्जम ने मीर्ज़ा को इस बात के लिए विवश किया कि वे हजारा लोगो पर आक्रमण करके उस समूह को जो सर्वदा (२८५) लूट मार किया करता था, नष्ट-भ्रष्ट कर डालें। असावधानी के कारण जो युवावस्था के अभिमान एव घमड के पागलपन का फल है, सग्राम के नियमो पर ध्यान न देकर उन्हाने युद्ध किया। मीर्ज़ा ने तलवार द्वारा मृत्यु का प्याला पी लिया।

तरदी मुहम्मद खा को जमीनदावर प्रदान होना

हजरत जहांबानी ने तरदी मुहम्मद खा को सम्मानित करके जमीन-दावर एव उस क्षेत्र के स्थान जागीर में प्रदान कर दिए और उस क्षेत्र की सुव्यवस्था एव शासन प्रवन्ध के लिए विदा कर दिया।

अब्दुर्रशीद खा के दूत का आगमन

इसी वर्ष अब्दुर्रशीद खा बिन सुल्तान सईद खा, काशगर के हाकिम के राजदूत ने

उपस्थित होकर बहुमूल्य उपहार प्रस्तुत किए और शीघ्र ही कृपा द्वारा सम्मानित होकर विदा हो गया। उन्ही भाग्यशाली दिनो में अब्बास सुल्तान, जो ऊजबेक सुल्ताना[1] म था, चौखट का चुम्बन करके सम्मानित हुआ और कृपा एव आश्रय की दृष्टि का पात्र बना। इफ्फत किवाब गुलचेहरा[2] बेगम से जो हजरत पादशाह की छोटी बहिन थी, विवाह द्वारा उसके सम्मान मे वृद्धि की गई।

मीर्जा शाह की हत्या

जो घटनाये इस वर्ष घटी उनमें मीर्जा उलुग वेग के भाई मीर्जा शाह का शहीद होना है। वह उस्तुर कराम से जो उसकी जागीर में था चौखट के चुम्बन की महत्वाकांक्षा पूरी करने आ रहा था। जब वह मीनार दर्रे के पास पहुँचा तो हाजी मुहम्मद का भाई शाह मुहम्मद घात लगा कर बैठ गया। क्योकि मीर्जा मुहम्मद सुल्तान ने हाजी मुहम्मद के चाचा कोकी की हिन्दुस्तान म हत्या कर दी थी, अत उसने उस दर्रे के सिरे पर एक वाण मारा और मीर्जा को उस ऊँचाई पर शहीद कर दिया।

हजरत जहाबानी जन्नत आशियानी की पवित्र सेना का काबुल से बल्ख की ओर प्रस्थान । मीर्जा कामरान की फूट एव अमीरो के विश्वासघात के कारण काबुल को वापसी

बल्ख आक्रमण का निश्चय होना

यद्यपि हिन्दुस्तान की विजय एव उस वाटिका के खर पतवार का हटाना समस्त कार्यों की अपेक्षा राज्यो को विजय करने वाले साहस के लिए सर्वोपरि था, एव कश्मीर की विलायत की सैर की भी उन्हे महान् अभिलाषा थी तथापि उसे अन्य समूह के लिए स्थगित करके उन्होने पूर्व निश्चयानुसार बल्ख के आक्रमण हेतु भाग्यशाली चरण सकल्प की रिकाब में रक्खे[3]।

१ शाहजादों।

२ वह गुलबदन बेगम की बडी बहिन थी और बाबर तथा दिलदार बेगम की पुत्री थी। उसका जन्म १५१५ १७ ई० के मध्य में हुआ गुलरग, हिन्दाल एव गुलबदन बेगम की वह सगी बहिन थी। सर्व प्रथम उसका विवाह ९३७ हि० (१५३१ ई०) में बाबर के जीवन काल में। उसकी माता के भाई अहमद के पुत्र तूख्ता बूगा से हुआ किंतु ९४० हि० (१५३३ ई०) में वह विधवा हो गई। यदि इस बीच में उसका कोई अन्य विवाह नहीं हुआ तो यह उसका दूसरा विवाह था।

३ फ़िरिश्ता ने इस आक्रमण का उल्लेख इस प्रकार किया है — क्योंकि बैराम खा तुर्कमान को ऊजबेकों द्वारा नाना प्रकार के कष्ट पहुँचे थे अत (हुमायू ने) प्रतिकार हेतु ९५६ हि० (१५४९-५० ई०) में हिन्दाल मीर्जा एव सुलैमान मीर्जा सहित बल्ख की ओर प्रस्थान किया। कामरान मीर्जा एव असकरी मीर्जा ने पुन विरोध किया और सेवा में उपस्थित न हुये। इस भय के बावजूद कि कहीं मीर्जा कामरान काबुल पहुँच कर अशाति न उत्पन्न कर दे, बादशाह ने अपने सकल्प को न त्यागा और बल्ख के समीप पहुँचा। (फ़िरिश्ता तारीखे फ़िरिश्ता, मकाला दोयम, पृ० २३९)।

हुमायूं द्वारा भाइयो को सन्देश

९५६ *हि० के प्रारम्भ*[1] (फरवरी १५४९ ई०) में जब मौसम अच्छा हो गया तो दरबार के एक विश्वास पात्र बाल्तू बेग को, मीर्जा कामरान के पास भेज कर सदेश प्रेषित किया गया कि 'जैसा कि निश्चय हो चुका था, हम बल्ख की ओर प्रस्थान कर रहे हैं। तुम्हे चाहिए कि सगठन एव मेल-जोल पर दृष्टि रखकर इस बात को अनन्त तक स्थायी रहने वाले अपने सौभाग्य की पूजी समझते हुए बदख्शा के क्षेत्र मे सम्मानित पताकाओ के पहुँचने पर पूर्ण तैयारी करके उत्कृष्ट सेना के पास पहुँच जाओ।" *मीर्जा हिन्दाल, मीर्जा अस्करी, मीर्जा सुलमान एव मीर्जा इब्राहीम* को आदेश भेजा गया कि वे मार्ग की सुव्यवस्था एव सेना की तैयारी करके शीघ्र पहुँच जायें।

कामरान को बुलाने के लिये आदमी का भेजा जाना

(२८६) उत्कृष्ट पताकाओ ने प्रस्थान किया। राज्य-व्यवस्था, शासन प्रबन्ध एव *हाजी मुहम्मद खा के गजनी से आगमन की प्रतीक्षा म लगभग एक मास तक युरत चालाक*[2] *मे पडाव* करना पडा। इस पडाव से ख्वाजा दोस्त खावन्द को मीर्जा कामरान का सम्मानित शिविर मे लाने के लिए कोलाब भेजा गया।

ख्वाजा गाजी एव रूहुल्लाह के हिसाब-किताब की जाच

ख्वाजा कासिम ब्यूतात पूर्व मे वजीर था और ख्वाजा मीर्जा बेग वर्तमान दीवान[3] था। क्योकि ख्वाजा मीर्जा बेग बडा ही अयोग्य था अत ख्वाजा गाजी ने अपनी योग्यता के कारण कार्यो को सुव्यवस्थित करना प्रारम्भ कर दिया था। मीर्जा कामरान के समस्त कार्यों के प्रबन्धक ख्वाजा मक्सूद अली एव कुछ अन्य लोगो ने मीर बरका द्वारा ख्वाजा गाजी एव ख्वाजा रूहुल्लाह के विषय में सूचना कराई। मुनइम खा, मुहम्मद कुली खा बरलास, फरीदू खा एव मौलाना अब्दुल बाकी सद्र मामले की जाँच हेतु नियुक्त हुए। हुसेन कुली सुल्तान[4], जो दरबार का विश्वासपात्र था, इस पूछ-ताँछ का मुहस्सिल[5] नियुक्त हुआ। पूछ ताँछ के उपरान्त ख्वाजा गाजी, ख्वाजा रूहुल्ला एव अपहरणकर्ता नवीसिन्दा[6] का एक समूह पकडा गया। मुहम्मद कुली सुल्तान को ख्वाजा गाजी की धन-सम्पत्ति की जाँच हेतु नियुक्त किया गया। हजरत जहाँबानी की कृपा के कारण अफजल खा की उपाधि द्वारा सुशोभित ख्वाजा सुल्तान अली ब्यूतात की मुशरिफी से, ब्यूतात की दीवानी

१ बायजीद के अनुसार बहार के प्रारम्भ, सम्भवत यही ठीक है।
२ काबुल के उत्तर पश्चिम में लगभग * मील पर। बाबर लिखता है, "(काबुल के) उत्तर पश्चिम में कोई एक शर्ई पर चालाक नामक मैदान है। यह बहुत बडा है किंतु यहा मच्छर घोडों को बडा कष्ट पहुँचाते हैं।" (बाबर नामा, पृ० १६)।
३ दीवाने हाल, पूरा शब्द कोई पद नहीं ज्ञात होता। दोनों शब्दों को अलग अलग ही पढना चाहिये अत इसका अर्थ वर्तमान दीवान होगा। यदि 'हाल' को 'माल' पढा जाय तो भी अर्थ में कोई अन्तर नहीं पडता कारण कि दीवान का कार्य ही माल अथवा राजस्व विभाग की देखरेख था।
४ बैराम खा की बहिन का पुत्र जो अकबर के राज्य काल में खाने जहा की उपाधि द्वारा सुशोभित हुआ।
५ हिसाब किताब की जाच का अधीक्षक।
६ मुंशियों।

के पद द्वारा सम्मानित हुआ। इसी बीच मे मीर्जा इब्राहीम ने शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करके चरणो का चुम्बन किया और कृपाओ द्वारा सम्मानित हुआ।

हुमायू का नीलबर के मैदान में पहुँचना

जब उनका हृदय इस अभियान के आवश्यक प्रबन्धों की चिन्ता से मुक्त हो गया तो सम्मानित सेना ने दस्तालीफ में पडाव किया। इस स्थान से अब्बास सुल्तान ऊज़बेक[1] पलायन कर गया। हज़रत जहाँबानी मीर्जाओं के आगमन की प्रतीक्षा में धीरे धीरे यात्रा करते थे। जब मीर्जाओ के प्रस्थान एव मीर्जा कामरान की तैयारी के समाचार प्राप्त हुए तो पजशीर के मार्ग से प्रस्थान करके उन्होने अन्दराव मे उत्कृष्ट शिविर लगवाये। जिस मजिल[2] पर हज़रत साहब किरान ने बुनियादें रक्खी थी,[3] तीन दिन तक उनके अनुकरण में वे वहाँ ठहरे रहे। वहाँ से वे नारी की ओर, जहाँ (अन्य दिशाओ) के मार्ग मिलते है रवाना हुए। नारी दर्रे का पार करके, उन्होंने नीलबर के मैदान की, जहाँ की बहार बदख्शाँ में बडी प्रसिद्ध है, सैर के लिए प्रस्थान किया। इस फूलो की भूमि के समीप मीर्जा हिन्दाल एव मीर्जा सुलेमान ने फर्श चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया और नाना प्रकार की कृपाओ द्वारा सम्मानित हुए। मीर्जा सुलेमान की प्रार्थना पर मीर्ज़ा इब्राहीम को बदख्शाँ[4] की व्यवस्था हेतु उस प्रदेश की ओर विदा कर दिया गया। उस क्षेत्र के सैनिकों की देख भाल भी उसी को सौप दी गई।

हुमायू का ऐबक पर अधिकार जमाने का प्रयत्न

यकलान[5] के समीप से मीर्जा हिन्दाल, मीर्जा सुलेमान, हाजी मुहम्मद खाँ एव अनुभवी वीरो का एक समूह आगे भेज दिया गया, ताकि वे ऐबक को, जो बल्ख के अधीनस्थ है और मेवे की अधिकता एव समृद्धि तथा जल वायु की रमणीयता हेतु मशहूर है ऊज़बेकों से मुक्त करा लें।

शेर मुहम्मद पवना द्वारा चीते की हत्या

(२८७) इसी बीच मे शेर मुहम्मद पवना जो एक यसावल[6] था एक चीते को बाण द्वारा मार कर हज़रत जहाँबानी की सेवा में लाया। हुसेन कुली मुहरदार ने निवेदन किया कि "तुर्क लोग अभियान के समय चीते की हत्या करना शुभ नही समझते।" पुन: निवेदन किया कि "जिस समय मुझे बैरम ऊालान बन्दी बना कर बल्ख के हाकिम कीस्तन करा[7] के समक्ष ले गया

१ उसका हाल हीं में गुलचहरा बेगम से विवाह हुआ था।

२ सम्भवत परियान में।

३ यह वाक्य स्पष्ट नहीं, सम्भवत किले के निर्माण की ओर सकेत है।

४ सम्भवत किश्म की ओर।

५ नारीन के पश्चिम एव कुन्दुज के दक्षिण में।

६ एक प्रकार के सेवक जो हर समय बादशाहों के साथ रहते थे। निम्न श्रेणी के सेवकों में उन्हें मुख्य स्थान प्राप्त था। मदिरा ले जाना तथा दरबार की साधारण प्रकार की व्यवस्था उन्हीं के सिपुर्द होती थी।

७ पीर मुहम्मद का बड़ा भाई जो पीर मुहम्मद के पहले राज्य करता था।

तो उस समय जजक्तू[1] मैमना[2] से हेरी पर आक्रमण की तैयारियाँ हो रही थी। उसी समय कोई व्यक्ति एक चीता मार कर लाया। इसी कारण अभियान स्थगित कर दिया गया।" हजरत जहाँबानी इन बातो पर कान न धर कर, उसी प्रकार बल्ख पर आक्रमण करने का सकल्प किए रहे[3]।

हुमायूं का ऐबक पर अधिकार

दूसरे दिन सेना का अग्र भाग ऐबक पहुँच गया।, बल्ख के हाकिम पीर मुहम्मद खा ने अपने अतालीक ख्वाजा बाक को कुछ अनुभवी व्यक्तियो उदाहरणार्थ ईश मीर्जा, हुसेन सईद बई[4] मुहम्मद कुली मीर्जा एव जूजक मीर्जा को ऐबक की प्रतिरक्षा हेतु भेजा ताकि वे उस क्षेत्र मे रह कर सावधान रहे। वे जिस समय ऐबक पहुँचे, उसी समय विजयी पताकाये भी पहुँच गई। अमीरो के पास किले मे प्रविष्ट होने तथा उसकी प्रतिरक्षा के अतिरिक्त कोई उपाय न रह गया। हजरत जहाँबानी भी वहाँ पहुँच गए और किले की विजय का प्रयत्न करने लगे। मोर्चे बाँट दिए गए। दो-तीन दिन में जो लोग किले म बन्द थे उन्होने क्षमा-याचना की और वे सम्मानित चौखट का चुम्बन करने के लिए अग्रसर हुए। ऐबक उत्कृष्ट राज्य के सहायको ने प्राप्त कर लिया।

मावराउन्नहर विजय के सम्बन्ध में अतालीक से परामर्श

हजरत जहाँबानी ने शाहाना जश्न करके अतालीक से मावराउन्नहर विजय के सम्बन्ध में परामर्श किया। अतालीक ने निवेदन किया कि, 'इस प्रकार की बातो को मुझसे पूछने से क्या लाभ ?" हजरत जहाँबानी ने कहा, "तुझमें सत्यता के चिह्न दृष्टिगत है। तेरे हृदय मे जो आये तू उसे नि सकोच कह दे।" उसने निवेदन किया कि, "पीर मुहम्मद खा के सभी उत्कृष्ट व्यक्तियो को आपने बन्दी बना लिया है। इन लोगो की हत्या करा द और विजय की रिकाब मे कदम रक्खे। मावराउन्नहर बिना युद्ध के आपके अधिकार मे आ जायगा।' हजरत जहाँबानी ने अपनी उदारता के कारण उत्तर दिया कि सौजन्य की दृष्टि से विश्वासघात सम्मानित लोगो के लिए अनुचित है विशेष रूप से प्रतिष्ठित बादशाहो के लिए ऐसा करना और भी उचित नही। मैंने इस समूह के प्राणो को कष्ट न पहुँचाने का वचन दिया है। इसके विरुद्ध अन्त करण के न्यायालय मे मैं किस प्रकार कोई कार्य कर सकता हूँ ?" अतालीक ने निवेदन किया कि, 'यदि आप इस उचित परामर्श एव ठीक राय पर आचरण नही कर सकते तो मुझे बन्दी बना लें और इस शर्त पर सधि कर लें कि खुल्म[5] से इस ओर के स्थान दरबार के सेवको को प्राप्त हो जायें। जब कभी हिन्दुस्तान पर

१ सम्भवत चिचक्तू जो मैमना के दक्षिण पश्चिम में है।

२ बल्ख एव हिरात के मध्य में।

३ इस सम्बन्ध मे बायजीद की कृति का अनुवाद देखिये।

४ वुड के अनुसार बाई अफगानों के खान के समान होता था। (John Wood *A Journey to the Source of the River Oxus*, p 224)

५ बल्ख से खुल्म तथा ताकियान होता हुआ मार्ग बदख्शा की सरहद पर जाता था। एक अन्य सडक जो उसी की शाखा थी दक्षिण पूर्व में काबुल के उत्तर में स्थित अन्दराब एव पन्जहीर की खानों को जाती थी। खुल्म नदी भी उत्तर में जाकर लुप्त हो जाती है। तीमूर खुल्म से ही हिन्दुस्तान की सरहद पर पहुँचा था।

आक्रमण हो तो एक सेना उनके साथ की जाय[1] जो उचित सेवाये सम्पन्न करें।' क्योंकि दैवी इच्छा एवं विधाता की मरजी इन दोनों प्रस्तावों के विरुद्ध थी अतः भाग्य का लिखा ही संकल्प-कर्त्ताओं की दृष्टि में उचित ज्ञात हुआ।

हुमायूं का मीर्ज़ा कामरान की प्रतीक्षा में आक्रमण न करना

(२८८) वे कुछ दिन वहाँ ठहरे रहे। यद्यपि ऐबक की जल-वायु एवं मेवे की अधिकता भी ठहरने का कारण थी किन्तु वहां ठहरने का सबसे बड़ा कारण मीर्ज़ा कामरान का न आना था। दूरदर्शी बुद्धिमान् लोग विश्वासपूर्वक कहते थे कि 'यदि विलम्ब न कर दिया जाता तो पीर मुहम्मद खां में युद्ध तथा मुकाबले की शक्ति न थी और निःसन्देह उसका समूलोच्छेदन हो जाता और या (हजरत जहाँबानी की) इच्छानुसार वह संधि कर लेता कारण कि अब्दुल अजीज खां[2] एवं अन्य ऊजबेक खान सहायतार्थ नहीं पहुँच सकते थे।' उनके वहां अधिक समय तक ठहर जाने के कारण वे अवसर पाकर शत्रु के विरुद्ध सहायतार्थ पहुँच गए।

ऊजबेकों की सेना एवं हुमायूं की सेना में युद्ध

जो ऊजबेक अमीर बन्दी बना लिए गए थे उन्हें दरबार के एक विश्वासपात्र ख्वाजा कासिम मुखलिस के साथ काबुल भेज दिया गया। अतालीक को साथ लेकर वे खुल्म के मार्ग से बल्ख की ओर रवाना हुए। दो-तीन दिन उपरान्त खुल्म पार करके उन्होंने बाबा शाहू नामक स्थान पर पडाव किया। दूसरे दिन मजार[3] के समीप जो मार्ग की बड़ी प्रसिद्ध मंजिल है पडाव हुआ। करावल लोग समाचार लाये कि ऊजबेकों का बहुत बड़ा समूह वक्कास सुल्तान एवं शाह मुहम्मद सुल्तान हिसारी[4] के अधीन पहुँच चुका है। हजरत जहाँबानी ने सेना सुसज्जित करके, विजय का चुम्बन करने वाली रिकाब में पाँव रक्खे। (दोनों ओर के) करावलों के मध्य में साधारण सी झड़प हुई। उत्कृष्ट सेना के पडाव करने के समय शाह मुहम्मद सुल्तान हिसारी ने एक बहुत बड़ी सेना सहित सम्मानित शिविर पर आक्रमण किया। अनुभवी वीरों यथा काबुली खां, मुहम्मद कासिम मौजी का भाई, शेर मुहम्मद पकना एवं मुहम्मद खां तुर्कमान ने अत्यधिक पौरुष प्रदर्शित करते हुए बड़ी वीरता से युद्ध किया। काबुली मारा गया और शत्रु मुकाबला न कर सके तथा भाग खड़े हुए।

ऊईवन ऊगलान का बन्दी बनाया जाना

ऊईवन ऊगलान[5] को, जो एक बड़ा प्रतिष्ठित ऊजबेक था, बन्दी बना कर सेवा में उपस्थित किया गया। मुहम्मद खां तुर्कमान एवं सैयिद मुहम्मद पकना में झगड़ा होने लगा।

१ पीर मुहम्मद द्वारा हुमायूं के साथ।

२ उबैदुल्लाह खां ऊजबेक का पुत्र। उसने १५४० ई० में बुखारा में राज्य करना प्रारम्भ किया।

३ मजार अथवा जिसे मानचित्रों में मजार शरीफ दिखाया गया है। यह शाह औलिया अली मुहम्मद के जामाता का मजार है। कहा जाता है कि उसके मजार का सुल्तान हुसेन बाईकरा के राज्य-काल में पता लगाया गया। (John Wood *A Journey to the Source of the River Oxus*, p 185)

४ सम्भवतः जानी बेग का पुत्र एवं बायजीद का भाई।

५ बायज़ीद में "ऊकुन बहादुर"।

प्रत्येक अपने आप को इसका श्रेय देता था। हजरत जहाँबानी ने ऊईक्न ऊगलान से प्रश्न किया कि "तुझे किसने घोडे से गिराया?" उसने मुहम्मद खा की ओर सकेत करके कहा कि, 'सर्वप्रथम इसने मेरे ऊपर तलवार चलाई। मैं इसकी तलवार के भय से घोडे से गिर पडा। जैसे ही मैं उठकर खडा होने लगा दूसरे व्यक्ति ने (सैयिद मुहम्मद पक्ना की ओर सकेत करके) मेरे ऊपर तलवार चलाई।" हजरत जहाँबानी ने सैयिद मुहम्मद (पक्ना) को फटकारते हुए कहा कि "उसे मुहम्मद खा ने गिराया है। तूने सौजन्यपूर्ण व्यवहार न किया और दूसरे के शिकार पर तलवार चलाई।' उसका श्रेय मुहम्मद खा को प्रदान किया। ऊईक्न को पीर मुहम्मद आख्ता को सौप दिया कि वह उसकी ओर से सावधान रहे और उसका उपचार करता रहे।

मीर्जा कामरान के विषय में अफवाहे

विजय एव सफलता के चिह्न के बावजूद, निष्ठा से शून्य एव दूसरे के शत्रु अमीर दु साहस का प्रदर्शन करते और सर्वदा मीर्जा कामरान की ओर से झूठे समाचार गढते रहते थे। मीर्जा के विषय में जिस दुष्टता का भी उल्लेख किया जाता, वह उसका पात्र था कारण कि उसके स्वभाव मे ही यह बातें थी। किन्तु इस समय उसके विरुद्ध झूठ इल्जाम ही लगाये जाते थे।

हुमायू तथा पीर मुहम्मद खा का युद्ध

(२८९) सक्षेप में, दूसरे दिन ऊजबेक लोग अत्यधिक सेना एकत्र करके पूर्ण रूप से युद्ध के लिए तैयार हुये एव आगे बढने पर उद्यत हो गए। उबैद खा का पुत्र अब्दुल अज़ीज मध्य भाग मे था, पीर मुहम्मद खा दायी ओर तथा सुल्तान हिसार बायी ओर थे। हजरत जहाँबानी ने भी अपनी सेना की सुव्यवस्था की। मध्य भाग को अपने पवित्र व्यक्तित्व से सुशोभित किया। मीर्जा सुलेमान को सेना के दाये भाग तथा मीर्जा हिन्दाल को बायें भाग में नियुक्त किया। कराचा खा, हाजी मुहम्मद खा, तरदी बेग खा मुनइम खा, सुल्तान हुसेन बेग जलायर तथा उसके भाइयो की सेना के अग्र भाग मे नियुक्त किया। मध्याह्नोपरान्त सेना की पक्तिया सुव्यवस्थित हो गई और साय काल तक घोर युद्ध होता रहा। योद्धाओ ने साहस से काम लेकर पौरुष प्रदर्शित करते हुए, वीरता दिखलाई और शत्रुओ के अग्र दल को भगा दिया। वे उन्हें नहरो से खदेडते हुए बल्ख के कूचा बन्द[1] तक पहुँच गए। हजरत जहाँबानी अपनी बुद्धि एव विवेक के अनुसार यह चाहते थे कि (शत्रु का) पीछा करते हुए (शाही) पताकाओ को नहरो के पार पहुँचा दें। किन्तु मित्रता के वेश में शत्रुता करने वाले अल्पदर्शी षड्यन्त्रकारी सहायको ने अनुचित परामर्श दिए। मूर्ख मित्रो ने भी अज्ञानता के कारण उन अभागे अल्पदर्शी लोगो का समर्थन करके षड्यन्त्रकारियो के मत को स्वीकार कर लिया और नहरो को पार न करने दिया। कायरता-पूर्ण झूठी बातें करके वे कभी अपनी सेना की कमी कभी शत्रुओं की सेना की अधिकता, कभी मीर्जा कामरान के काबुल चले जाने, कभी अपने परिवारो के बन्दी बना लिए जाने और कभी मीर्जा कामरान के आगमन की प्रतीक्षा एव इसी प्रकार की बातो का बहाना बना कर लौटने के लिए प्रेरित करते रहते थे।

१ प्रतिरक्षा का बाहरी घेरा।

हुमायूं का आगे न बढना

अन्त में अत्यधिक वाद विवाद के उपरान्त वे[1] स्वयं इस बात के लिये तैयार हो गए कि दर्रये गज की ओर, जो एक दृढ स्थान है, पहुँचकर कुछ दिन तक ठहरे रहे। उनसे कहा गया कि "उस क्षेत्र के ऐमाकों एवं सैनिकों के अन्य समूह को एकत्र करके विजय के साधनों की व्यवस्था करें। इसी बीच में मीर्ज़ा कामरान के प्रामाणिक रूप से समाचार ज्ञात हो जायेंगे। यदि यह पता चल जाय कि मीर्ज़ा (कामरान) काबुल चला गया है तो फिर उनका इस क्षेत्र में कष्ट भोगना उचित न होगा। तदुपरान्त निश्चिन्त होकर बल्ख-विजय अपितु मावराउन्नहर-विजय सुगमतापूर्वक प्राप्त की जा सकेगी। दैवी कृपा से इस समय तक उत्कृष्ट सेना को निरन्तर विजय एवं सफलता प्राप्त होती रही है और प्रताप में भी वृद्धि होती रही है। अब जो भी हो, युद्ध से हाथ खींचकर दर्रये गज की ओर प्रस्थान करना चाहिये।" हज़रत जहाँबानी सभी लोगों की इच्छा को देखकर विवश हो गए और उन्होंने उस ओर प्रस्थान किया। विश्वासघातियों के षड्यन्त्र के कारण हाथ में आया हुआ बल्ख निकल गया। शेख बहलूल को सेना के अग्र दल को जिसने नदी पार करके ऊजबेकों को खदेड़ते हुए शहर बन्द[2] तक पहुँचा दिया था, वापस लाने के लिए भेजा गया। मीर्ज़ा सुलेमान एवं वीरों के एक अन्य समूह को सेना के पीछे के भाग की प्रतिरक्षा हेतु नियुक्त किया गया।

हुमायूं की सेना का छिन्न-भिन्न होना

क्योंकि दुष्ट कृतघ्नों का उद्देश्य (शाही) सेना को अस्त व्यस्त करना था अतः दर्रये गज (२९०) की ओर वापसी का अर्थ 'जो संयोग से काबुल के मार्ग में था', 'काबुल की ओर वापसी' प्रसिद्ध हो गया। मीर्ज़ा कामरान का प्रस्थान सभी की जबान पर था। लोग हताश होकर छिन्न भिन्न होने लगे। हज़रत जहाँबानी ने यद्यपि हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार को जो दरबार का विश्वासपात्र था एवं अन्य विश्वासपात्रों को जो छिन्न-भिन्न हो गए थे, वापस लाने के लिये भेजा किन्तु उससे कोई लाभ न हुआ। क्योंकि भाग्य उपाय के साथ न था अतः उपाय से कोई लाभ न हुआ। निःसन्देह ईश्वर ने भाग्य में लिख दिया था कि हिन्दुस्तान का विशाल देश अत्याचारियों के विघ्न एवं जालिमों से सुरक्षित रहे और एक पवित्र व्यक्तित्व का आशीर्वाद प्राप्त करके हज़रत शाहंशाह जिल्लुल्लाह[3] के क्यामत तक चिरस्थायी रहने वाले राज्य की राजधानी बनें और निष्ठावानों की आशाओं के उद्यान एवं शत्रुता के बाद मित्रता ग्रहण करने वालों की विशाल भूमि में उपकार के सहस्रों बीज बोये जायें। संक्षेप में, संसार को शोभा प्रदान करने वाले विधाता ने (इतनी बड़ी) सफलता को ऐसी स्थिति का वस्त्र पहना दिया ताकि सावधान लोगों को अधिक से अधिक शिक्षा प्राप्त हो सके। इस प्रकार औचित्य एवं ज्ञान के साधनों की व्यवस्था कराई गई कारण कि यदि यह अनुचित घटना न घटी होती तो मावराउन्नहर विजय में व्यस्त रहने के कारण हिन्दुस्तान के दीन दुखियों के कार्य स्थगित रहते और इस देश की सुव्यवस्थाओं में, जो सातों इक्लीमों से पहुँचने वालों के लिए शान्ति का केन्द्र है, विलम्ब हो जाता।

१ हुमायूं।
२ प्रतिरक्षा अथवा गढ़ बन्दी के स्थान।
३ ईश्वर की छाया।

हुमायू के घोडे का घायल होना

सक्षेप मे, जब शत्रुओं को इस शोचनीय घटना की सूचना मिली तो वह अपने अस्त-व्यस्त कार्यों को सुव्यवस्थित करके उन लोगो का पीछा करने के लिये रवाना हुए। हजरत जहाँबानी ने स्वय आश्चर्यजनक रूप से रणकौशल एव अपार वीरता का, जिसकी प्रशसा युग के युद्ध के कारनामो की प्रस्तावना बन सकता है, प्रदर्शन किया। उस युद्ध के चीता के जगल में वे तसर्र-शाजेरीन[1] नामक घोडे पर, जिसे हिरात के हाकिम मुहम्मद खा[2] ने भेंट किया था, सवार थे। वह बाण द्वारा मारा गया। हैदर मुहम्मद आख्ता ने अपना घोडा राज्य एव धर्म के उस नेता को प्रदान करने का सम्मान प्राप्त किया। इस कारण कि उस राज्य के स्वामी के सिंहासन को ईश्वर सहायता प्रदान कर रहा था वे सुरक्षित स्थान पर पहुच गए और अधिकाश साथी अपनी दुष्टता का परिणाम अपने नेत्रों से देखकर अपने दु साहस एव नीचता के कारण छिन्न भिन्न हो गए।

हुमायू की सेना के मुख्य अधिकारी

• उत्कृष्ट सेना के मुख्य अधिकारियो की सूची इस प्रकार है —मीर्जा हिन्दाल, मीर्जा सुलेमान, कराचा खा, हाजी मुहम्मद खा, तरदी बेग खा, मुनइम खा खिज्र ख्वाजा सुल्तान, मुहम्मद कुली खा जलायर, इस्कन्दर खा, कासिम हुसेन खा, हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी, अब्दुल्लाह खा उज़बेक, हुसेन कुली खा मुहरदार, मुहिब अली खा (बिन) मीर खलीफा, सुल्तान हुसेन खा, वाल्दू (२९१) सुल्तान, मुसाहिब बेग, शाह बुदाग खा, शाहम बेग जलायर, शाह कुली नारजी, मुहम्मद कासिम मौजी, लुत्फुल्लाह महरिन्दी, अब्दुल वहहाब ओजी[3], बाकी मुहम्मद परवानची, खाल्दीन[4]।

हुमायू का चहार चश्मे पर पडाव

तीन दिन उपरान्त चहार चश्मे के दर्रे[5] की चोटी पर पडाव किया गया। इस मजिल पर मुहम्मद कुली शेख कमाल, जो सीधे रास्ते से भटक गया था, उत्कृष्ट सेना के समाचार पाकर, सेना मे उपस्थित हुआ।

अकबर एव काशगर के हाकिम को पत्र

इस पडाव से हजरत जहाँबानी ने हजरत शाहशाह एव अन्त पुर की बेगमो को, जो काबुल के सुरक्षित नगर मे थी, पत्र लिखकर बेग मुहम्मद आख्ता बेगी के हाथ भेजा। काशगर के हाकिम रशीद खा को, जो सर्वदा शुभ चिन्ता एव निष्ठा का प्रदर्शन किया करता था, कृपा-युक्त फरमान प्रेषित करके सम्मानित चरणो के पहुँचने की सूचना देते हुए लिखा कि, "दुष्ट भाई मुहम्मद कामरान ने अपने कुस्वभाव के कारण मित्रता पर शत्रुता के पाप को प्राथमिकता देकर, प्रेम एव

१ 'यह दर्शकों को प्रसन्न करता है।' कुरान शरीफ में इसका प्रयोग उन गौओं के लिये हुआ है जिनके बलिदान का मूसा पैगम्बर ने बनी इसराईल को आदेश दिया।

२ कुछ हस्त-लिपियों में 'मुहम्मद खा शरफुद्दीन उग्ली'। बायजीद ने भी यही लिखा है।

३ आज़रबाईजान अजरबैजान में ओजान नामक स्थान का निवासी।

४ सम्भवत 'खाल्दीन दोस्त मदारी'।

५ प्रकाशित ग्रन्थ में 'बर सरे यक्ने चहार चश्मा' (चहार चश्मा की बर्फ पर) किन्तु बेवरिज के अनुसार सम्भवत यह शब्द 'पंज' है जिसका अर्थ दर्रा होता है।

निष्ठा के सम्बन्ध को पूर्णत त्याग दिया है।" उनके[1] अविवाश साथियों के साहस ने भी उनका साथ न दिया अत यह अभियान राज्य के मित्रो की इच्छानुसार सम्पन्न न हो सका अपितु शोक एव दुख का कारण बना। अपनी कुशलता पर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए उन्होने एक निष्ठावान् हृदय की सात्वना-योग्य चुने हुए उपदेश लिखे।

हुमायू का काबुल पहुँचना

वहाँ से प्रस्थान करके एक रात के उपरान्त वे गुरबन्द पहुँचे और दूसरी रात का ख्वाजा सेहयारान में पडाव हुआ। वहाँ से करावाग तदुपरान्त मामूरा[2] पहुँचे। हजरत शाहशाह सम्मानित सभा में स्वागत हेतु उपस्थित हुए और उनके प्रति नाना प्रकार से कृपायें प्रदर्शित की गईं। वहाँ से शुभ मुहूर्त मे उन्होने भाग्यशाली छत्र के साथ राजधानी में छाया डाली।

मीर्जा सुलेमान एव मीर्जा हिन्दाल का अपने राज्य को प्रस्थान

मीर्जा सुलेमान मार्ग से बदख्शाँ चला गया और मीर्जा हिन्दाल कुन्दुज। मुनइम खा भी मीर्जा के साथ कुन्दुज पहुँचा। समस्त अमीर (हजरत जहाँबानी) के पीछे पीछे काबुल पहुँचे। शाह बुदाग खा, जिसने वीरता एव पौरुष का प्रमाण दिया था, शत्रुओ द्वारा बन्दी बना लिया गया था। मीर शरीफ बख्शी, ख्वाजा नासिरुद्दीन अली मुस्तौफी, मीर मुहम्मद मुशी, मीर जान बेग दारोगये इमारत एव ख्वाजा मुहम्मद अमीन कम को भी इसी स्थिति का सामना करना पडा। दरबार के शेष सेवक सुरक्षित रहे।

हुमायू के बन्दी अमीरो का मुक्त होना

जब अनालीक एव ऊजबेको का एक अन्य समूह, जो ऐवक में बन्दी बना लिए गए थे, मुक्त होकर स्वदेश पहुँचे और उन्होने नाना प्रकार की पादशाही कृपाओ एव उदारता का उल्लेख किया तो पीर मुहम्मद खा को बडा आश्चर्य हुआ। उसने उन शाही सेवको को, जो उसके साथ थे, सौजन्यपूर्ण व्यवहार करके राजधानी काबुल भेज दिया।

ख्वाजा जलालुद्दीन का वापस बुलाया जाना

राजधानी में पहुँचकर इस वापसी को राज्य के हित मे समझते हुए हजरत जहाँबानी (२९२) धर्म एव राज्य की सुव्यवस्था मे व्यस्त हो गए। ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को दूत बनाकर ईरान के हाकिम के पास भेजा गया था किन्तु वह कुछ घटनाओ के कारण कन्धार मे ठहर गया था, अत उसके भेजने की व्यवस्था समाप्त करके वापस बुलवा लिया गया।

ख्वाजा अब्दुस्समद एव मीर सैयिद अली का आगमन

ख्वाजा अब्दुस्समद एव मीर सैयिद अली ने, जो चित्रकला एव नक्काशी मे अद्वितीय एव ससार भर में अद्भुत थे, फर्श चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया और उन्हे अपार कृपाओ द्वारा सम्मानित किया गया।

१ हुमायू।
२ काबुल के समीप।

नियुक्तियाँ

ख्वाजा सुल्तान[1] अली को, जिसे अफ़ज़ल ख़ाँ की उपाधि प्राप्त थी, ख़ज़ाने की मुशरिफी[2] के पद से विज़ारत के पद पर सुशोभित करके दीवाने ख़र्ज[3] कर दिया गया और दीवानिये जमा[4] ख्वाजा मीर्ज़ा बेग को प्रदान हुई।

मीर्ज़ा कामरान द्वारा षड्यंत्र

मीर्ज़ा कामरान का विवरण इस प्रकार है —

जब हज़रत जहाँबानी ने कृपा एवं दया पूर्वक मीर्ज़ा कामरान के घोर अपराध क्षमा कर दिए तो उन्हें कोलाब प्रदान कर दिया। वे चाकर बेग कोकनावी वल्द सुल्तान वैस बेग को मीर्ज़ा के साथ करके, काबुल चले गए। कुछ समय व्यतीत न हुआ था कि मीर्ज़ा ने चाकर बेग से दुर्व्यवहार करके उसे वहाँ से निकाल दिया। इतनी महान् अनुकम्पा को भूल के आल पर रखकर वह नीच कल्पनाओं में मग्न रहने और अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। जिन दिनों हज़रत जहाँबानी काबुल में न्याय की शोभा प्रदान कर रहे थे वह सर्वदा झूठे वचन देकर अपने आगमन को स्थगित करता रहता था। हज़रत जहाँबानी अपने स्वभाव की शुद्धता एवं सद्विचारों के कारण जो महान् प्रवृत्ति वालों में नैसर्गिक रूप से पाये जाते हैं उसके झूठे वचनों को सच्चा समझकर बल्ख़ की ओर रवाना हो गए। मीर्ज़ा (कामरान) ने इस अवसर से लाभ उठाकर विश्वासघात करने वाले अपने हृदय में काबुल जाने का संकल्प कर लिया और षड्यंत्र एवं विद्रोह की भावनाएँ जो उसके स्वभाव में प्रविष्ट थीं, प्रकट हो गईं। जैसा कि उल्लेख हो चुका है, उसके चक्मे में आकर साधारण निष्ठा के अमीरों एवं साहसहीन लोगों ने उस अभियान में नाना प्रकार से विश्वासघात का प्रदर्शन किया। जब हज़रत जहाँबानी ने वापस होकर न्याय की छाया राजधानी काबुल पर डाली तो मीर्ज़ा कामरान, मीर्ज़ा अस्करी को कोलाब में छोड़कर मीर्ज़ा सुलेमान से युद्ध हेतु रवाना हो गया।

१ बेवरिज ने इस वाक्य का अनुवाद भ्रमात्मक है। उसका अनुवाद इस प्रकार है, 'Khwaja Sultan Ali, known as Afzalkhan, was raised from the position of *Mushrif i Khazana* to that of *vazir* while the whole charge of the *Diwani* was made over to Khwaja Mirza Beg" (पृ० ५५२)। मूल में मीर्ज़ा बेग के दीवानी का पूर्ण अधिकार प्राप्त करने का उल्लेख नहीं अपितु उसे दीवानिये जमा अर्थात् राजस्व या आय की दीवानी का अधिकार प्रदान किया गया। विज़ारत का पद एवं व्यय पर नियंत्रण सुल्तान अली अथवा अफ़ज़ल ख़ाँ के अधीन रहा। सम्भवतः बेवरिज को "जमा" शब्द से भ्रम हुआ और उसने जमा का अनुवाद, योग, टोटल अथवा सम्पूर्ण (whole) कर दिया। मूल वाक्य इस प्रकार है ख्वाजा सुल्तान अली रा कि ब ख़िताबे अफ़ज़ल ख़ानी इश्तहार दाश्त अज़ उहदये मुशरिफ़ीये ख़ज़ाना ब मंसबे विज़ारत सर अफ़राज़ साख़्ता दीवाने ख़र्ज गर्दानीद व दीवानिये जमा ब ख्वाजा मीर्ज़ा बेग क़रार याफ़्त।'
خواجه سلطان علی را که بخطاب افضل خانی اشتهار داشت از عهدهٔ مشرفی خزانه
با منصب وزارت سرافراز ساخته دیوان خرج گردانید و دیوانی جمع بخواجه میرزا بیگ قرار یافت

२ प्रान्तों द्वारा प्राप्त हिसाब किताब मुशरिफ रखता था। ख़ज़ाने के हिसाब किताब की देखभाल करना 'मुशरिफ़े ख़ज़ाना' का उत्तरदायित्व होता था।

३ वित्त विभाग (Finance Deptt) की व्यय की शाखा।

४ वित्त विभाग (Finance Deptt) में राजस्व (आय) की शाखा।

मीर्जा सुलेमान का कामरान से मुकाबला न करना

मीर्जा सुलेमान बिना युद्ध किए हुए तालीकान से किलये जफर की ओर चल दिया। मीर्जा कामरान बाबूस वेग को तालीकान सौंपकर स्वय किलये जफर की ओर रवाना हुआ। मीर्जा सुलेमान एव मीर्जा इब्राहीम युद्ध करना उचित न समझकर इस्हाक सुल्तान को किलये जफर म छोडकर बदख्शाँ के दर्रों की ओर चले गए और जिर्म नामक स्थान पर पहुँचकर ईश्वर के कृपा की प्रतीक्षा करने लगे। मीर्जा कामरान, मीर्जा सुलेमान की ओर से थोडा बहुत निश्चिन्त होकर कुन्दुज की ओर रवाना हुआ।

मीर्जा हिन्दाल तथा मीर्जा कामरान का युद्ध

उसने सर्वप्रथम मीर्जा हिन्दाल को मित्रता का चकमा देकर अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। मीर्जा हिन्दाल ने उसकी बात न सुनी और अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ रहा। मीर्जा कामरान ने पूरे दल बल से कुन्दुज का अवरोध कर लिया। मीर्जा हिन्दाल ने युद्ध करने एव किले की प्रतिरक्षा मे कोई कमी न की। मीर्जा कामरान अपने आपको सफल होते हुए न देखकर (२९३) ऊजबेकों से मिल गया और उनसे कुमक की प्रार्थना की। ऊजबेकों की एक बहुत बडी सेना उसकी कुमक हेतु पहुँच गई और अवरोध मे उसका साथ देने लगी।

मीर्जा हिन्दाल का ऊजबेकों को धोखा देने के लिये पत्र लिखना

मीर्जा हिन्दाल ने शत्रुओ को चकमा देने एव उन्हे अस्त-व्यस्त करने के लिये एक उचित चाल चली जो वास्तव म उद्देश्य की पूर्ति के सन्मार्ग में मार्गदर्शक स्वरूप है। मीर्जा कामरान की ओर से उसने एक पत्र मेल एव सगठन की पुष्टि तथा ऊजबेकों को धोखा देने के सम्बन्ध म अपने नाम लिखवाकर अनुभवी लोगो के समान एक दूत को इस आशय से दे दिया कि वह अपने आप को ऊजबेकों के हाथ में फसा दे। दूत की तलाशी लेने पर जब पत्र प्राप्त हुआ और उसमें जो कुछ लिखा था उससे ज्ञात हुआ कि वे लोग मिलकर ऊजबेकों को कष्ट के बाण का लक्ष्य बना देंगे और मुसीबत की कमन्द (के फदे) म फँसा देंगे तो वे बडे रुष्ट हुए और अवरोध त्याग कर अपनी विलायत को चले गए। किले (की विजय) का काम अधूरा रह गया।

मीर्जा कामरान तथा मीर्जा सुलेमान से युद्ध

इसी बीच में समाचार प्राप्त हुए कि चाकर वेग ने कोलाब का अवरोध कर लिया है। मीर्जा अस्करी पराजित होकर किले के भीतर प्रविष्ट हो गया है और मीर्जा सुलेमान इस्हाक सुल्तान से मिल गया है। उसने किलये जफर को अपने अधिकार में कर लिया है और इस्हाक सुल्तान को, जो उससे मिल गया था, बन्दी बना लिया है। मीर्जा कामरान इस समाचार से बडी चिन्ता में पड गया और कुन्दुज की ओर से निराश होकर यामीन दौलत तथा बाबूस को एक सेना सहित मीर्जा सुलेमान के विरुद्ध भेजा और स्वय कोलाब की ओर प्रस्थान किया। चाकर वेग ने अपने आप को पृथक कर लिया। मीर्जा अस्करी बाहर निकलकर मीर्जा कामरान की सेवा में उपस्थित हुआ। मीर्जा (कामरान) उसे साथ लेकर मीर्जा सुलेमान से युद्ध के लिए रवाना हुआ।

ऊजबेकों द्वारा मीर्जा कामरान के शिविर पर छापा

वह रुस्ताक के समीप पडाव किए था कि ऊजबेकों की एक बहुत बडी सेना, जो सईद

वेग के नेतृत्व मे लूट मार के लिए निकली थी, मीर्जा कामरान के शिविर की ओर पहुँच गई और उसे बुरी तरह लूट लिया। मीर्जा कामरान, मीर्जा अस्करी एव मीर्जा अब्दुल्लाह मुगुल थोडे से लोगो के साथ तालीकान भाग गए। जब सईद को जिसका उल्लेख हो चुका है, इस तथ्य का पता चला तो उसने समस्त असबाव[1] आदरपूर्वक अपने विश्वास-पात्रा सहित मीर्जा के पास भिजवा दिए और लूट-मार के लिए क्षमा याचना की[2]।

मीर्जा कामरान का हजारा की ओर प्रस्थान

मीर्जा हिन्दाल एव मीर्जा सुलेमान इस स्थिति से लाभ उठाकर मीर्जा कामरान से युद्ध करने के लिये रवाना हुए। मीर्जा बदख्शाँ में ठहरना अपने लिए उचित न देखकर खूस्त की ओर रवाना हुआ ताकि जुहाक एव बामियान के मार्ग से हजारा प्रदेश में पहुँच जाय और वहाँ से काबुल के विषय में प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त करके, काबुल अथवा किसी अन्य ओर प्रस्थान करे।

मीर्जा कामरान का हुमायूं को पत्र

क्योंकि हजरत जहाँबानी के विश्वासघाती अमीर सर्वदा मीर्जा को काबुल पहुँचने के लिए प्रेरित किया करते थे अत उसने धूर्तता एव छल की दृष्टि से हजरत जहाबानी के दरबार में दूतों को भेज कर निवेदन कराया कि, "मेरे आगमन का उद्देश्य यह है कि मैं अपने पिछले अपराधो के प्रति क्षमा याचना करूँ और हजरत जहाँबानी की सेवा करूँ। मुझे आशा है कि मेरी भूलें एव अपराध पादशाह की कृपा से क्षमा कर दिये जायेंगे।"

शेर

'मैं वापस आया हूँ ताकि उस चरणो की धूल का सिज्दा करूँ,
यदि कोई एबादत[3] कज़ा हो गई हो[4] तो उसे अदा करूँ।'

"मुझे आशा है कि इस बार उत्तम सेवाओं द्वारा लज्जा के भारी बोझ से मुक्ति प्राप्त करूँ।" हजरत जहाँबानी ने अपने स्वभाव की शुद्धता के कारण ताँबे को, जिसपर सोने का मुलम्मा था, खरे सोने के समान सच्चा समझकर स्वीकार कर लिया।

हजरत जहाँबानी जन्नत आशियानी की पवित्र सेनाओं का काबुल से प्रस्थान एवं मीर्जा कामरान से युद्ध तथा अन्य शिक्षाप्रद घटनाये

मीर्जा कामरान के विरुद्ध सेना भेजने का प्रस्ताव

(२९४) जब मीर्जा कामरान काबुल के सीमान्त के समीप पहुँच गया तो दूरदर्शी निष्ठावानों के एक समूह ने निवेदन किया कि "चरित्र की पवित्रता एव सहृदयता की कोई सीमा

१ सम्भवत असबाब के साथ उनके परिवार भी रहे होंगे।
२ इस विषय में गुलबदन बेगम एव बायजीद की कृतियों के अनुवाद देखिये।
३ मुसलमानों के धर्म विधानानुसार यदि कोई अनिवार्य एबादत समय पर न हो सके तो उसे बाद में भी किया जा सकता है। ऐसी छूट जाने वाली एबादतें 'कजा एबादतें' कहलाती हैं।
४ छूट गई हों, न की जा सकी हों।

यथवा उनका कोई अन्त होना चाहिये। क्योंकि इस कृतघ्न की धूर्तता एवं छल, विश्वासघात एवं अक्षमा की कई बार परीक्षा हो चुकी है अतः राज्य एवं सावधानी के हित में यह उचित होगा कि अब फिर सतर्कता के नियमों को हाथ से न जाने दिया जाय और आदेश दे दिया जाय कि भाग्य-शाली शिविर बाहर लगाये जायें एवं विजयी पताकाएं विद्रोहियों के विरुद्ध बुलन्द हों तथा विजयी सेना अपने मूल उद्देश्य की तैयारी करे। यदि इस कार्य का आयोजन हो जायगा तो विश्वासघात एवं छल से मुक्ति प्राप्त हो जायगी। यदि वास्तव में मीर्जा (कामरान) अपनी दुष्टता पर लज्जित होकर निष्ठा के मार्ग पर अग्रसर होना है और फर्श चूमने का सौभाग्य प्राप्त करता है तो वह नाना प्रकार की पादशाही कृपाओं का पात्र बनेगा और यदि इस बार भी वही कुत्सित नशा उसके अभिमानी मस्तिष्क में व्याप्त है तो इस ओर से सावधानी की शर्तों का पालन रहेगा।"

हुमायूं का काबुल से प्रस्थान

हज़रत जहाँबानी ने राज्य की नींव दृढ़ करने वाले इन गम्भीर विचारों को सुनकर, मीर्ज़ा के आगमन के मार्ग गूरबन्द की ओर, प्रस्थान का सकल्प कर लिया। ९५७ हिजरी[1] के मध्य[2] (जून-जुलाई १५५० ई०) में काबुल से सकल्प की पताका बुलन्द करके उस ओर प्रस्थान किया। हज़रत शाहंशाह को कृपापूर्वक काबुल में शान्ति के सिंहासन पर छोड़ दिया और काबुल की शासन व्यवस्था मुहम्मद कासिम खां बरलास को सौंप दी। कराचा खां एवं मुसाहिब बेग तथा एक अन्य समूह ने जिनके हृदय कलुषित थे और जो ऊपर से चमकते हुए दिखाई पड़ते थे और जिनका षडयन्त्रकारी हृदय विद्रोह एवं उपद्रव की भावनाओं से परिपूर्ण था, प्रसन्न होकर, कृतघ्नता पूर्ण बातें लिखकर मीर्ज़ा कामरान को काबुल पधारने का आग्रह किया और (सूचना दी) कि 'हम लोग आपकी सेवा में उपस्थित हो रहे हैं और पादशाह के निष्ठावान् लोगों को अनुचित सुझावों द्वारा पृथक् कर देंगे। काबुल सुगमतापूर्वक अधिकार में आ जायगा।"

स्वामी भक्ति के सम्बन्ध में अबुलफज़ल के विचार

यह बड़ी आश्चर्यजनक बात है कि जो बातें अपने तथा बराबर वालों के लिए उचित नहीं समझी जाती उदाहरणार्थ वचन भंग करना, दूसरा का बुरा चाहना एवं झूठ, उन सब का अन्यायपूर्वक प्रयोग अपने स्वामी एवं अपने समकालीन अधिकारी के लिए किया जाता है। वे अपनी अंधी आँखें इन दोषों की ओर नहीं खोलते अपितु उन दोषों को गुण समझते हैं और उन्हें अपनी युक्ति एवं अपना युद्धकौशल समझते हैं। यद्यपि निष्ठा एवं सद्व्यवहार का उन्हें ज्ञान (२९५) है और अपने सेवकों से वे इस बात की आशा रखते हैं किन्तु अपनी दुष्ट प्रवृत्ति के कारण इस प्रकार की दगाबाज़ी एवं कृतघ्नता का जुआ ऐसे पवित्र स्वभाव वाले स्वामी के साथ खेलते हैं। आश्चर्य और अत्यधिक[3] आश्चर्य है। यह हृदय का कैसा अंधापन एवं कैसी दुष्ट भावना है। मैंने माना कि वे इस पवित्र व्यक्तित्व के उत्कृष्ट गुणों एवं महान् श्रेष्ठता को न समझ सके किन्तु साधारण व्यावहारिक ज्ञान को क्या हो गया? जिस कृतज्ञता की वे अपने सेवकों से आशा रखते

१ चाँद का महीना अथवा हिजरी।
२ एक हस्तलिपि में इस प्रकार है "यहाँ तक कि ४७० जलाली वर्ष जो ९५७ हि० के अनुरूप है हज़रत जहाँबानी।"
३ मूल में 'लाखों'।

हैं, उसका प्रदर्शन उसके प्रति, जिससे इतनी कृपा एवं दया प्राप्त की है कि उनमें से केवल एक आजीवन आभार प्रदर्शन के लिए पर्याप्त है, नहीं करते और अनुचित एवं असावधानी का परामर्श देते हैं। निःसन्देह जिसकी प्रवृत्ति में ही शत्रुता एवं दुष्टता हो, उसके द्वारा इस प्रकार के कार्यों का प्रदर्शन क्या दूर है? जन्मजात अंधे को सूर्य के प्रकाश से कौन सी प्रसन्नता हो सकती है? इस समूह के निष्ठा के नेत्र विश्वासघात के रोग से अंधे हो जाते हैं और इनके प्रेम का सीना अभिमान से फूलकर सकरा हो जाता है। वे अपने स्वामी की देना के उत्तरदायित्व को किस प्रकार स्वीकार कर सकते हैं और अपने स्वामी के उपकारों का मूल्य कैसे समझ सकते हैं? उन अपार देनों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का क्या अवसर है? इन स्वेच्छाचारियों की वासनाओं के घोड़े में इतनी समझ कहाँ है कि फटकार के वाहुओं की शक्ति से उसकी लगाम खिंच जाय अथवा शिक्षा के पंजे की शक्ति से उसे मोड़ा जा सके।

स्वामी-भक्ति के सम्बन्ध में हुमायूं के विचार

अन्ततोगत्वा भाग्य के लिखे के अनुसार हज़रत जहाँबानी ने काबुल से प्रस्थान करके कराबाग में पड़ाव किया, वहाँ से चारीकारान और फिर बारान नदी पहुँचे। संयोग से उस मंजिल में एक जल-धारा थी। हज़रत जहाँबानी घोड़े पर बैठे ही बैठे उसके पार हो गए। उनके आस पास जो सेवक थे, भली-बुरी भूमि का निरीक्षण करते हुए इधर-उधर चल दिए ताकि पार करने के लिए उचित स्थान ढूंढ लें। हज़रत जहाँबानी का उन लोगों का यह अनुचित व्यवहार अच्छा न लगा। इस कृतघ्न समूह की चेतावनी हेतु शाह इस्माईल सफवी के फिदाई वीरों की निष्ठा का उल्लेख करते हुए कहा कि 'किस प्रकार वे शाह के रूमाल को उठाने के लिये गगन-चुम्बी पर्वत से भूमि पर कूद पड़े और मिट्टी में मिल गए और यश एवं स्वामी भक्ति की नींव को बुलन्द करके निष्ठा की उत्कृष्ट बुनियाद के निर्माता बने।" हज़रत जहाँबानी अपने दासों के प्रति ऐसी सद्भावना रखते थे और उन अभागे स्वेच्छाचारियों की अल्पदर्शिता इस सीमा को पहुँची हुई थी।

षड्यन्त्रकारियों के परामर्श से हुमायूं का अपनी सेना को छिन्न-भिन्न करना

संक्षेप में कराचा करावम्न[१], मुसाहिब मुनाफ़िक[२] एवं एक दूसरे समूह ने, जो दुष्टता की अग्नि को भड़का रहे थे, अन्य लोगों द्वारा एवं स्वयं निवेदन किया कि उन्हें पर्वत का सामना करना पड़ा है जिसमें अनेक दर्रे हैं। मीर्ज़ा के आदमियों की संख्या बड़ी कम होगी। निष्ठावान् राजभक्तों को विभिन्न मार्गों पर नियुक्त कर दिया जाय ताकि मीर्ज़ा (कामरान) किसी भी मार्ग से बाहर न आ सके।" इन षड्यन्त्रकारियों का पूरा प्रयत्न यह था कि संगठित सेना छिन्न भिन्न हो जाय ताकि मीर्ज़ा को सफलता प्राप्त हो सके। हज़रत जहाँबानी ने, जो अपने सौजन्य के कारण लोगों (२९६) के प्रति सद्भावनाओं के अतिरिक्त कुछ न रखते थे, इन दुष्ट नमकहरामों की योजनाओं को ठीक समझकर हाजी मुहम्मद खां कोकी, मीर बरका, मीर्ज़ा हसन खां, बहादुर खां, ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद, चकरी बेग, मुहम्मद खां बेग तुर्कमान, शेख बहलूल, हैदर कासिम कोहबर, एवं शाह कुली

१ अभागा।
२ षड्यंत्रकारी।

नारजी को जुहाक एवं बामियान की ओर भेज दिया। मुनइम खां एवं निष्ठावान् सेवकों ने एक अन्य समूह को साल अलग के मार्ग से नियुक्त किया। कराचा, मुसाहिब, कासिम हुसेन सुल्तान एवं एक अन्य समूह, जो पवित्र सेवा में रह गया था, पादशाह की भाग्यशाली सेना का दैनिक विवरण लिख लिख कर मीर्ज़ा कामरान को भेजते रहते थे और सर्वदा हज़रत जहाँबानी से चिकनी-चुपडी बातें बना कर निवेदन किया करते थे कि इस बार मीर्ज़ा (कामरान) ने सेवा के अतिरिक्त किसी अन्य बात का संकल्प नहीं किया है।

मीर्ज़ा कामरान का युद्ध हेतु आगमन

जब निष्ठावानों की संख्या बडी कम रह गई और षड्यन्त्रकारियों को, जो निष्ठा के वेश में धूर्तता कर रहे थे, प्रभुत्व प्राप्त हो गया तो मीर्ज़ा कामरान ने, जो पादशाही वैभव एवं सेना की अधिकता के कारण चिन्ता के रेगिस्तान में भटक रहा था और जो न सेवा त्याग पाता था और न सेवा में उपस्थित होने का मुंह रखता था, सम्मान से शून्य इस समूह के विश्वासघात से अवगत होकर, उनके परामर्श से जुहाक एवं बामियान के मार्ग से किपचाक दर्रे की ओर, जो गूरबन्द के अधीन है, प्रस्थान किया। यासीन दौल्त, मुकद्दम कोका एवं बाबा सईद को सेना के अग्र भाग में नियुक्त किया और स्वयं मध्य भाग में स्थान ग्रहण किया। अपने आदमियों को दो दलों में विभाजित कर दिया। मध्याह्न के समय उस क्षेत्र की एक प्रजा[1] ने मीर्ज़ा कामरान के आगमन एवं उसके नीच विचारों की सूचना सम्मानित कानों तक पहुँचाई। कराचा ने, जो दुष्टों का नेता था, निवेदन किया कि "ऐसे लोगों की बातें सुनने एवं अफवाह पर विश्वास करने से उस समूह[2] की चिन्ता एवं हृदय की परेशानी बढ जायगी। यदि इस समाचार के अनुसार युद्ध का संकल्प एवं लडाई की तैयारी कर ली जाय तो जैसे ही मीर्ज़ा कामरान को यह सूचना प्राप्त होगी वह सेवा में प्रविष्ट होने की इच्छा त्याग देगा।" इन्हीं बातों के मध्य में मीर्ज़ा (कामरान) के आगमन एवं उसके नीच संकल्प के समाचार निरन्तर प्राप्त होते रहते थे। ईश्वर प्रशंसनीय है कि इन कलुषित हृदय के षड्यन्त्र-कारियों का विश्वासघात उनके[3] अन्तःकरण के दर्पण में प्रतिबिम्बित न हुआ था और पवित्र हृदय में सद्-भावनाओं के अतिरिक्त कोई अन्य बात न आई थी यहाँ तक कि शत्रुओं का शत्रुता के उद्देश्य से आगमन प्रामाणिक रूप से ज्ञात हो गया। सम्मानित आदेश हुआ कि जो सेना साथ है वह सवार हो जाय।

हुमायूँ एवं मीर्ज़ा कामरान का युद्ध

उन्होंने स्वयं साहस का पाँव वीरता की रिकाब में रक्खा और अल्प समय में घोर युद्ध प्रारम्भ हो गया। पीर मुहम्मद आख्ता, जो दरबार के लिए प्राणों की बलि देने वालों में से था, मुहम्मद खां जलायर एवं अन्य त्यागी वीर युवक अग्रसर हुए। पीर मुहम्मद आख्ता को प्राण की बलि देने के जल की इतनी प्रबल तृष्णा थी कि उसने रण क्षेत्र में पाँव जमा कर शत्रुओं की हत्या करते हुए युद्ध की तलवार को इतना अधिक जल पिला दिया कि उसका[4] भी इसी प्रयास में अन्त

१ साधारण श्रेणी का व्यक्ति।
२ मीर्ज़ा कामरान के सहायकों की।
३ हुमायूँ [illegible]।
४ पीर मुहम्मद आख्ता।

आश्वासन भिजवाया और उसे आदेश दिया कि वह शीघ्रातिशीघ्र गजनी पहुँच जाय और "हमारी वापसी तक, जो कि यदि ईश्वर ने चाहा तो शीघ्र ही होगी, गजनी की रक्षा का यथारूप प्रयत्न करे।" यद्यपि सच्चे निष्ठावानों ने अत्यधिक आग्रह किया कि विश्वासघातियों को ऐसे अवसर पर पृथक् करना शत्रुता पूर्ण व्यवहार की लगाम इन तुच्छ लोगों के हाथ में सौंपना और, इन दुष्ट शत्रुओं को अपने कार्य समर्पित करना है तथा सभी ने सकेत द्वारा एव खुल्लम खुल्ला निवेदन किया कि वह अपने भाई को मीर्ज़ा कामरान के पास भेज रहा है और स्वय चाहता है कि घर का भेदी बना रहे तथा सरल स्वभाव के निष्ठावानों के प्रति विश्वासघात करता रहे तथापि हज़रत जहाँबानी ने इन विषयों पर ध्यान न दिया और शाह मुहम्मद को विदा कर दिया।

हुमायूं का काहमर्द की ओर प्रस्थान

दूसरे दिन वे कमहर्द की ओर रवाना हुए। बहुत से विश्वासघाती तुच्छ लोग, सम्मानित सेवा से पृथक् हो गए और जो लोग निष्ठा के क्षेत्रों एव सत्यता की मर्यादा के रक्षक थे, वे उत्कृष्ट सेवा में दृढ़तापूर्वक सेवा की पेटी राजभक्ति की कमर पर बाँधे रहे।

व्यापारियों से घोड़े क्रय करना

(२९९) इस[1] मार्ग पर तीन दिन की यात्रा के उपरान्त ईमाक के सरदारों, तूलकची एव साकाजी[2] ने, जो उस क्षेत्र में निवास करते थे, घोड़े, भेड़ें एव उनसे जो कुछ हो सका, भेंट किए और उचित सेवायें सम्पन्न की। हज़रत जहाँबानी ने रात्रि में उन लोगों की बस्तियों के समीप पड़ाव किया। जब वे प्रातःकाल सवार हुए तो समाचार प्राप्त हुए कि "एक बहुत बड़ा कारवान मीर सैयिद अली सब्ज़वारी के अधीन आया है। एराक एव खुरासान के व्यापारी अत्यधिक घोड़े एव सम्पत्ति सहित हिन्दुस्तान की यात्रा के लिए जा रहे हैं।" दिन के अन्तिम पहर कारवान के सरदार राज्य की रिकाब के चुम्बन के सौभाग्य द्वारा सम्मानित हुए। इन लोगों का परोक्ष से आगमन दैवी विजय की प्रस्तावना बना। बुद्धिमान् एव दूरदर्शी व्यापारियों ने इस सम्मानित पादशाह की सहायता को अपना सौभाग्य समझ कर समस्त घोड़े एव असबाब उपहार स्वरूप भेंट कर दिए। हज़रत जहाँबानी ने इसे दैवी वरदान समझ कर कुछ असबाब एव चीज़ों का मूल्य १० के स्थान पर ४० तथा ५०[3] निश्चित करके ले लिया और अपने भाग्यशाली रिकाब के सेवकों एव विश्वास-पात्रों को बाँट दिया। बदख़्शाँ के मीर्ज़ाओं में से प्रत्येक का हिस्सा अलग कर दिया। शेष सामान उन्होंने उन्हीं लोगों के लिए छोड़ दिया कि वे अपनी इच्छा से जहाँ चाहें, वहाँ बेच डालें।

हुमायूं का काहमर्द पहुँचना

दूसरे दिन उत्कृष्ट सेना का कमहर्द में पड़ाव हुआ। मीर खुर्द का पुत्र ताहिर मुहम्मद

१ इस स्थान से सम्भवतः अबुलफ़ज़ल ने अपने वृत्तान्त को जौहर के तज़किरतुल वाक़ेआत पर आधारित किया है। बायज़ीद हुमायूं की वापसी के समय उसके साथ न था और काबुल चला गया था।
२ कुछ हस्तलिपियों में 'सक्काची'। सम्भवतः तूलकची एव सांकाची दोनों ही कबीलों के नाम हैं। सम्भवतः साकाजी एव मालकाची एक ही हैं।
३ चौगुना पचगुना मूल्य देकर ले लिया "असबाब व अशियारा दहचेहल व देह पजाह मुकर्रर फ़र्मूदा गिरिफ़्तन्द"।

उस स्थान पर था। वह सम्मानित चरणों को एक बहुत बडी देन समझकर सेवा मे उपस्थित हुआ किन्तु अपनी कृपणता अथवा किसी सामान के न होने के कारण, आतिथ्य के सम्बन्ध में अपनी दासता के मुख से लज्जा का पसीना साफ न कर सका[1]।

हुमायूं का साल ऊलग के नजरी को अपने समाचार भेजना

वहाँ से रवाना होकर (उन्होने) दो दिन एव एक रात की यात्रा के उपरान्त बेंगी नदी के तट पर पडाव किया। उस मंजिल पर नदी के उस ओर से एक व्यक्ति ने चिल्लाकर पूछा, "हे कारवान वालो! तुम लोगो को पादशाह के भी कोई समाचार ज्ञात है?" जब यह आवाज़ पवित्र कानो तक पहुँची तो उन्होने कहा, "हममें से कोई किसी प्रकार की सूचना न दे और उससे पूछो कि, 'तू कौन है? और तुझे किसने भेजा है तथा तुम लोगो के मध्य में पादशाह के लिए क्या प्रसिद्ध है?" उसने उत्तर दिया, "मुझे साल ऊलग[2] के नजरी ने पादशाह के समाचार लाने के लिए भेजा है। हम लोगो में यह प्रसिद्ध है कि पादशाह आहत होकर रण-क्षेत्र से निकल आये किन्तु फिर उन्हे किसी ने नही देखा। मीर्जा कामरान के आदमियो को पादशाह के पहनने का विशेष जीवा, जो वे उस दिन धारण किए हुए थे, मिल गया वे उसे मीर्जा के पास ले गए। मीर्जा ने इस घटना पर बडी खुशियाँ मनाई और जश्नो का आयोजन कराया।" हज़रत जहाँबानी ने उसे अपनी सम्मानित सेवा मे बुलाकर पूछा, "मुझे पहचानता है?" उसने उत्तर दिया कि, "दैवी प्रकाश छिपा नही रहता।" उन्होने कहा, 'जाकर नजरी को सुखद समाचार पहुचा दे और कह दे कि वह तैयार हो जाय ताकि हमारी वापसी के समय उपस्थित होकर उचित सेवाय सम्पन्न करे।"

(३००) दूसरे दिन उन्होने एक घाट से नदी पार की और औलिया खिज़ान[3] नामक स्थान पर पडाव किया। इस पडाव पर मीर्जा हिन्दाल ने सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया और उपहार प्रस्तुत करके सम्मानित हुआ। वहा से उन्होने अन्दराब मे पडाव किया। मीर्जा सुलेमान एव मीर्जा इबराहीम ने कोरनिश का सौभाग्य प्राप्त करके स्वामी-भक्ति एव निष्ठा की शर्तों को पूरा किया।

मीर्ज़ा कामरान का विवरण

जब बात इस स्थान तक पहुँच गई तो इससे पूर्व कि हज़रत जहाँबानी के सेना को सुव्यवस्थित कर देने के उपरान्त काबुल विजय का उल्लेख किया जाय, मीर्जा कामरान का पूरा हाल उस समय से लेकर, जबसे कि उसने अपना छल प्रारम्भ किया, उस समय तक जब कि वह काबुल से, जो उसके दुराचार के परिणाम की प्रस्तावना है, निकला लिख देना परमावश्यक है ताकि बातचीत के रेगिस्तान के प्यासो की इस परिशिष्ट द्वारा प्यास बुझ जाय।

मीर्ज़ा कामरान द्वारा हुमायूं के सेवको के प्रति अत्याचार

जब भाग्य के प्रबन्धको ने एक गुप्त कोने से अनन्त तक चिरस्थायी राज्य की दृढता एव विश्वासघातियो के विनाश हेतु ऐसी विजय को पराजय का वस्त्र और ऐसी प्रसन्नता

१ अतिथि सत्कार न कर सका।
२ सम्भवत सोल्द ऊलग, पजह एव सुरबन्द के मध्य में।
३ अन्दराब के दक्षिण पश्चिम में पश्चिम की ओर।

को शोक का रूप देकर प्रस्तुत किया तो हजरत जहाँबानी प्राणो की बलि देने वाले निष्ठावानो के प्रयत्न से जुहाक एव बामियान की ओर रवाना हुए। मीर्ज़ा कामरान इस विचित्र घटना पर, जिसकी उसने कल्पना भी न की थी, आश्चर्यचकित हो गया। विश्वासघातियो के दल के दल उसकी सेवा मे उपस्थित होते थे। उस मूर्ख ने इन कृतघ्न तुच्छ लोगो के पहुँचने पर उत्तेजित एव प्रसन्न होकर, अत्याचार का हाथ हितैषियो पर, जो पादशाह के प्रति निष्ठा की चोटी को दृढ़तापूर्वक पकड़े हुए थे, खोल दिया। उसी युद्ध में बाबा सईद, कराचा करावल्ल को मीर्ज़ा के समक्ष आहत अवस्था में ले गया। मीर्ज़ा ने उसके प्रति सौजन्य प्रदर्शित करते हुए उसके शोचनीय अन्त के विषय में प्रश्न किया। उसने उत्तर दिया, 'बाबा सईद ने अचानक मुझे आहत किया।" अन्त में मीर्ज़ा ने उस धूर्त विश्वासघाती को क्षणिक कृपाओ द्वारा सान्त्वना दी। तदुपरान्त हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार को, जो प्राणो की बलि देने वाले निष्ठावानो में था, बाबा दोस्त यसावल एव एक अन्य समूह बन्दी बनाकर लाया। उस कृतघ्न ने दरबार के ऐसे निष्ठावान् पर स्वय तलवार का वार किया और आदेश दिया कि उसे उसके समक्ष टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाय। उस निष्ठा के खजाने के पूँजीपति ने अपने स्वामी के मार्ग में नश्वर प्राण को स्वामी भक्ति के नकद धन द्वारा क्रय कर लिया और हमेशा के लिए चिरस्थायी सौभाग्य द्वारा निष्ठावान् हितैषियो मे सम्मिलित हो गया। ताश्जी बेग को, जो चगताई अमीरो में राज-भक्ति के लिए प्रसिद्ध था, लाया गया, नि सकोच उसकी भी हत्या करा दी गई।

मीर्ज़ा कामरान का अपने अमीरो को प्रोत्साहन देना

तदुपरान्त बेग बाबा कोलाबी ने उपस्थित होकर हजरत जहाँबानी के आहत होने का उल्लेख किया। मीर्ज़ा अपने सकुचित स्वभाव के कारण प्रसन्न हो गया। यासीन दौलत, मुकद्दम कोका, एव एक सेना को उनका पीछा करने के लिए नियुक्त किया। कासिम हुसेन सुल्तान, जिसने उस दिन नमकहरामी एव हृदय के अधेपन का प्रदर्शन किया था, उस भय एव सकोच के कारण, जो झूठे शत्रुओ में पाया जाता है, पर्वत के आँचल में शरण हेतु पहुँच गया और घबराहट के कारण उसकी समझ में न आता था कि वह अग्रसर हो अथवा भाग जाए। हसन सद्र एव एक अन्य समूह को उसके पास भेजा गया जो उसे सान्त्वना एव प्रोत्साहन देकर ले आया।

कामरान द्वारा काबुल पर अधिकार

मीर्ज़ा कामरान ने रणक्षेत्र से प्रस्थान करके चारीकारान मे पड़ाव किया। इस स्थान पर (३०१) एक व्यक्ति हजरत (जहाँबानी) के पहनने का जीवा मीर्ज़ा के पास लाया। मीर्ज़ा जीवा के पहुँचने के कारण अत्यधिक नीच विचारो को सोच सोच कर खुशी से फूला न समाता था। उसने वहाँ से प्रस्थान करके काबुल को घेर लिया। कासिम खा बरलास हजरत शाहशाह की सेवा में था और किले को दृढ़ रखने एव उसकी प्रतिरक्षा का प्रबन्ध कर रहा था। जितना भी मीर्ज़ा उसे सत्य रूपी झूठे वचन देकर, धोखा देता था वह हजरत जहाँबानी की निष्ठा एव स्वामी भक्ति की दृढ़ रस्सी को न छोड़ता, यहाँ तक कि प्राण विदारक अफवाह फैलाई गई और हजरत (जहाँबानी) का जीवा भेजा गया तथा सैकड़ो झूठी बातें कह कर एव चिकनी चुपड़ी बातें बना कर छल तथा धूर्तता द्वारा किले पर अधिकार जमा लिया।

अकबर का बन्दी बनाया जाना

सृष्टि की वाटिका के उस पौधे एवं संसार की बहार के उस गुलदस्ते अर्थात् हज़रत शाहशाह को, जो अपने नित्य प्रति उन्नत भाग की सुगंधि से युगों की आशा के मस्तिष्क को सुगन्धित कर रहे थे, तथा जिनके भाग्यशाली ललाट के दर्पण से दैवी खिलाफत टपकती थी, मूर्खता एवं अल्पदर्शिता के कारण बन्दी बना लिया किन्तु दैवी प्रतिरक्षा जो सर्वदा उनके निकट रहती थी, पहले की भाँति उनकी, जो देखने में तो बालक किन्तु वास्तव में महान् थे, रक्षा करती रहती थी।

मीर्ज़ा कामरान द्वारा काबुल का शासन प्रबन्ध

मीर्ज़ा कामरान काबुल को अधिकार में करके शासन प्रबन्ध एवं सेना की व्यवस्था करने लगा। मीर्ज़ा अस्करी को जूये शाही, जो हज़रत शाहशाह की सम्मानित उपाधि से सम्बन्धित होने के कारण जलालाबाद के नाम से प्रसिद्ध है, जागीर में प्रदान कर दिया। यह बड़ा हृदयग्राही स्थान है और हिन्दुस्तान एवं विलायत को पृथक् करता है। यह हिन्द के गुणों से परिपूर्ण एवं विलायत के दोषों से शून्य है। मुनइम खाँ ने इसे हज़रत शाहशाह के पवित्र नाम पर बसाया। (मीर्ज़ा कामरान ने) गज़नी एवं उस क्षेत्र के स्थान कराचा खाँ को एवं गूरबन्द तथा आस पास के स्थान यासीन दौलत को प्रदान कर दिए। इस प्रकार उसने अपने आदमियों को जागीरें एवं वृत्तियाँ प्रदान कीं। पादशाह के राज्य के अधिकारियों को बन्दी बनवाने लगा। ख्वाजा सुल्तान अली दीवान को बन्दी बना लिया और अत्याचार का हाथ बढ़ा कर दंड एवं निष्ठुरता द्वारा नकद (धन) एवं माल-असबाब[1] वसूल करके अपनी अव्यवस्था का प्रबन्ध करने लगा। पादशाही सेना के कारण वह सर्वदा चिन्ता में ग्रस्त रहता और किसी दिन आराम तथा चैन से न रहता था। उसके शासन प्रबन्ध की समस्त देख रेख कराचा एवं कासिम मीर ब्यूतात के अधीन थी। अत्याचार एवं निष्ठुरता द्वारा उसने व्यवस्था, जिसे अव्यवस्था ही कहना चाहिए, कराई। वह इस बात की ओर ध्यान न दे रहा था कि

शेर

'जो जबरदस्ती दिरम वसूल करता है और सोने को शोभा प्रदान करता है,
मस्जिद की नींव उखाड़ता है और महल की छत तैयार करता है।'

हुमायूँ की सेना का काबुल के समीप पहुँचना

लगभग ३ मास इसी प्रकार व्यतीत हो गए यहाँ तक कि हज़रत जहाँबानी की उत्कृष्ट सेना के बदख्शाँ से काबुल पहुँचने के समाचार प्रसिद्ध हो गए। मीर्ज़ा हज़ारा सैनिकों एवं ज़मींदारों इत्यादि को एकत्र करके पूरी तैयारी के साथ रवाना हुआ। बाबा जूजक एवं मुल्ला शफ़ाई को काबुल में छोड़ गया। हज़रत शाहशाह को, जिनके भाग्यशाली ललाट से सौभाग्य एवं प्रताप के चिह्न इस प्रकार प्रकट थे कि इस विषय में किसी छोटे बड़े, मित्र एवं शत्रु में कोई मतभेद न था, आशीर्वाद (३०२) हेतु अथवा सावधानी की दृष्टि से सेना के साथ ले लिया। उसे यह ज्ञात न था कि विधाता एवं स्रष्टा ने लोक तथा परलोक का जो आशीर्वाद उनके पवित्र व्यक्तित्व को सौंपा था वह मित्रों के लिए या न कि शत्रुओं के लिए। अंधों को सुरमे से कोई लाभ नहीं हो सकता।

१ मूल में 'नक्द व जिन्स'।

क्योंकि प्रासंगिक विवरण अब समाप्त हो गया अतः हम अपने उद्देश्य अर्थात् हज़रत जहाँबानी के शेष पवित्र इतिहास का संक्षिप्त उल्लेख करते हैं।

हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी की पवित्र सेना की बदख्शा से वापसी, मीर्ज़ा कामरान से युद्ध और विजयोपरान्त काबुल पहुँचना

हुमायूं का अपने सहायकों से शपथ लेना

जब नित्य-प्रति उन्नत सौभाग्य एवं संसार-विजय करने वाले साहस के कारण अन्दराब के क्षेत्र में हज़रत जहाँबानी के भाग्यशाली शिविर लग गए और मीर्ज़ा लोग लोक एवं परलोक के सौभाग्य के कारण हज़रत जहाँबानी के सम्मानित चरणों को अपने लिए भाग्यशाली समझ कर जैसा कि उल्लेख हो चुका है उनकी सेवा में उपस्थित हुए तो हज़रत जहाँबानी ने अल्प समय में, सेना की व्यवस्था एवं युद्ध की तैयारी करके सत्य को परखने वाले हृदय एवं सुव्यवस्था में वृद्धि के उद्देश्य से हिन्दू कोह के दर्रों से प्रस्थान का संकल्प किया। क्योंकि दुष्ट प्रवृत्ति के विश्वासघातियों का समूह उनके साथ था, अतः उन्होंने लोगों की सांत्वना एवं सांसारिक लोगों के सतोष के लिए अपने स्वभाव के आकाश से उतर कर संसार वालों की प्रकृति की भूमि पर बैठ कर[1] शपथ लेने का, जो सांसारिक लोगों के निकट विश्वस्त है, प्रस्ताव रक्खा और यह निश्चय किया कि प्रत्येक समूह को एक विशेष ढंग से शपथ दी जाय ताकि वे संगठित एवं एक दिल होकर साथ दें। उन्होंने कहा कि, "यद्यपि समस्त वस्तुओं के तथ्य को ईश्वर की कारीगरी की लेखनी लिखती है और स्वामी भक्तों का निष्ठा एवं सत्यता के मार्ग पर दृढ़ रहना दैवी वरदान है और यद्यपि हमारा राज्यों का निरीक्षण करने वाला हृदय सभी की ओर से संतुष्ट है तथापि मैं चाहता हूँ कि संसार वालों का हृदय, जो साधन के अतिरिक्त किसी बात पर दृष्टि नहीं रखता, थोड़ा बहुत तथ्य को समझ ले और सच्चाई का मुख उनके व्यवहार के दर्पण में अपने सौन्दर्य को प्रतिबिम्बित कर दे।' इसी बीच में हाजी मुहम्मद खां कोकी ने, जिसमें न तो शिष्टाचार सम्बन्धी बुद्धि थी और न निष्ठावान् हृदय, निवेदन किया कि, 'जिस प्रकार आदेश हो सब लोग शपथ ले लें किन्तु आप भी इस बात की शपथ लें कि हम हितैषी लोग राज्य के हित में अपनी निष्ठा के कारण जो उचित समझेंगे और जिस बात के लिए निवेदन करेंगे आप उसे ध्यान-पूर्वक सुन कर उसका पालन करेंगे। मीर्ज़ा हिन्दाल ने, जिसे निष्ठा का ज्ञान एवं राज्य व्यवस्था सम्बन्धी जानकारी थी, कहा, 'हाजी मुहम्मद! इस बात के निवेदन का यह कौन सा नियम तथा कौन सा ढंग है? सेवक अपने अधिकारियों से एवं दास अपने स्वामियों से कभी ऐसी बात नहीं कहते।" हज़रत जहाँबानी ने, जो सौजन्य की खान एवं कृपा के समुद्र थे, कहा, "ऐसा ही हो। जिस प्रकार हाजी मुहम्मद चाहेगा और निष्ठापूर्वक जो निवेदन करेगा, हम वही करेंगे।" शपथ लेकर एवं प्रतिज्ञा कराके वहाँ से उन्होंने प्रस्थान किया।

हुमायूं द्वारा संधि की वार्ता

(३०३) जब उत्कृष्ट सेना उश्तुर कराम के समीप पहुँची, तो मीर्ज़ा कामरान अपनी

१ इसका अर्थ यह है कि यद्यपि हुमायूं उनकी स्वामी भक्ति की ओर से संतुष्ट था किन्तु संसार वालों के सन्तोष के लिये उसने शपथ का आयोजन कराया।

प्रथानुसार मूर्खता के कारण युद्ध के लिए तैयार हो गया और सेना सुव्यवस्थित करके, शाही सेना से युद्ध के लिए रवाना हुआ। जब थोड़ी सी दूरी रह गई तो हजरत जहाँबानी ने अपने विशेष स्वभाव के कारण मीर बरका के एक सम्बन्धी मीर शाह को, जो तिरमिज[1] के प्रतिष्ठित सैयिदों में से था, मीर्ज़ा के पास भेजा और गम्भीर उपदेश, जो भाग्यशाली लोगों के कान की बाली हो सकते थे, दिलवाये। संक्षेप में वह इस प्रकार थे "सर्वदा विरोध के मार्ग पर अग्रसर होना तथा एकता का सन्मार्ग त्यागना, बुद्धिमत्ता के अनुकूल नहीं। खेद है कि काबुल के लिए यह सब संघर्ष हो। प्राचीन एवं नवीन उत्तरदायित्व पर दृष्टि डालते हुए संधि एवं मेल के मार्ग पर अग्रसर हो और हिन्दुस्तान विजय हेतु संगठित होकर रवाना हो।' सैयिद ने राजदूत के कर्तव्यों को भली-भाँति सम्पन्न करते हुए संधि एवं मेल को निश्चय कराया। (मीर्ज़ा) कामरान ने यह शर्त रक्खी कि, जिस प्रकार कन्धार हजरत जहाँबानी के अधीन रहे उसी प्रकार काबुल मेरे अधिकार में रहे। इस शर्त पर मैं सेवा में उपस्थित होकर हिन्दुस्तान विजय हेतु प्रस्थान करूँगा।" यद्यपि हजरत जहाँबानी उसके प्रति दया एवं कृपा प्रदर्शित करने के लिए तैयार थे अतः उन्होंने दूत को दूसरी बार मौलाना अब्दुल बाकी सद्र के साथ भेजकर संदेश प्रेषित किया कि, 'यदि तूने मित्रता एवं निष्ठा प्रदर्शित करने का संकल्प कर लिया है और संगठित होकर कार्य करना चाहता है तो अपनी प्रिय पुत्री को खिलाफत के अद्वितीय मोती अर्थात् हजरत शाहंशाह से विवाह कर दे ताकि हम काबुल उन्हें प्रदान कर दें और हम तथा तुम मिलकर हिन्दुस्तान के विशाल देश के अधकार को दूर कर सकें। वह प्रदेश जो दुष्टता एवं कष्टों का केन्द्र बन चुका है, सुख-शान्ति का घर बन जाय।' मीर्ज़ा चाहता था कि बुद्धि-वर्धक उपदेशों को स्वीकार कर ले और पादशाह की भाग्यशाली शिक्षाओं को हृदय के कानों से सुने किन्तु कराचा करावल ने, जिसपर मीर्ज़ा के कारोबार आधारित थे, यह बात स्वीकार न की और कहा, "हमारा सिर और काबुल।"[2]

हुमायूँ तथा मीर्ज़ा कामरान का युद्ध

वास्तव में उस दिन ८ नक्षत्र[3] मीर्ज़ा के समक्ष थे जिनकी उपस्थिति में अनुभवी ज्योतिषियों के अनुसार युद्ध करना अपने आप को अपने हाथों से पराजित करना है, अतः मीर्ज़ा नाना प्रकार के बहाने बनाकर दूसरे दिन के लिए युद्ध को स्थगित करना चाहता था किन्तु विजयी सेना युद्ध के लिए उद्यत थी। हाजी मुहम्मद खाँ युद्ध न करना चाहता था। हजरत जहाँबानी ने उसकी इच्छा की पूर्ति की दृष्टि से युद्ध स्थगित कर दिया। निष्ठावान् गणित वेत्ता[4] विजय हेतु कटिबद्ध होकर, युद्ध के लिए प्रयत्न करते रहे। इसी बीच में ख्वाजा अब्दुस्समद एवं एक अन्य समूह, जो किबचाक[5] के

१ आवसम नदी के मार्ग पर जहाँ वह बल्ख से आकर जामिल नदी से मिलती है, बगानियान जिले का एक क़स्बा।

२ 'सरे मा व काबुल' अर्थात् 'जब तक हमारा सिर बाकी है हम काबुल को न जाने देंगे।

३ मूल में, "शुक़ीलदुत्त अथवा शुत्र यख़ुन"।

४ ज्योतिषी।

५ किबचाक़ अथवा किपचाक़ दर्रे को ज़ारदार अथवा चिहारन्गर भी कहते हैं। यह हिन्दुकुश दरे के दक्षिण-पूर्व में है। John Wood : *A Journey to the Source of the River Oxus* के मानचित्र में भी इसे दर्शाया गया है।

युद्ध में सेवा से पृथक् हो गया था, अवसर से लाभ उठाकर सेवा में पहुँच गए और शत्रुओं की सेना के असमंजस एवं अव्यवस्थित होने के विषय में निवेदन किया। मध्याह्नोपरान्त सकल्प की रिकाब में दृढ़तापूर्वक पाँव जमाकर वे सेना की सुव्यवस्था एवं दायें, बायें, मध्य तथा अग्र भाग की ओर (३०४) ध्यान देकर युद्ध का उचित प्रबन्ध करने लगे। शाही सेना के मध्य भाग को पादशाह के पवित्र व्यक्तित्व द्वारा शोभा प्राप्त हुई। दायाँ भाग मीर्ज़ा सुलेमान की देख-रेख में, बायाँ भाग मीर्ज़ा हिन्दाल के कारण, एवं अग्र भाग मीर्ज़ा इबराहीम की वीरता एवं पौरुष से सुव्यवस्थित हुआ। हाजी मुहम्मद खाँ एवं अनुभवी वीरों के एक अन्य समूह द्वारा सेना के पीछे का भाग दृढ़ हुआ। उस ओर से मध्य भाग में मीर्ज़ा कामरान, दायें भाग में मीर्ज़ा अस्करी, बायें भाग में आक सुल्तान एवं अग्र भाग में कराचा खाँ नियुक्त थे। दोनों ओर की सेनायें दो लोहे के पर्वतों के समान अपने-अपने स्थान से प्रस्थान करके एक दूसरे के समीप पहुँच गईं। मेहतर सहयाका और निष्ठावान् सेवकों का एक अन्य समूह, जो विवचाक की घटना के उपरान्त विवश होकर मीर्ज़ा से मिल गया था, भागकर विजयी सेना में पहुँच गया। मूरी नदी के समीप, सर्वप्रथम मीर्ज़ा इबराहीम अत्यधिक वीरता प्रदर्शित करता हुआ अग्रसर हुआ। तदुपरान्त समस्त विजयी सेना उसके पीछे पहुँची। प्राणों की बलि देने वाले सैनिकों ने दोनों ओर से गुथकर वीरतापूर्वक युद्ध प्रारम्भ कर दिया।

कराचा कराबग की हत्या

इसी बीच में कराचा करागस्त का सिर काटकर ससार का चक्कर लगाने वाले घोड़े के समक्ष लाया गया। इस प्रकार उस षड्यन्त्रकारी शत्रु की दुष्टता से मुक्ति प्राप्त हो गई। सम्मानित आदेश हुआ कि इस नमकहराम पापी का सिर काबुल के लोहे के फाटक में लटका दिया जाय ताकि षड्यन्त्रकारी विद्रोहियों की शिक्षा का कारण बने और उसने अपनी ज़बान से जो भविष्य वाणी की थी कि, 'हमारा सिर और काबुल', वह पूरी हो जाय। विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ कि मीर्ज़ा (कामरान) के एक तुच्छ सहायक ने इस षड्यन्त्रकारी को बन्दी बना लिया और अपने अपराधों को क्षमा कराने के उद्देश्य से हज़रत जहाँबानी के समक्ष ले जाना चाहता था कि कम्बर अली सहारी[1], जो मीर्ज़ा हिन्दाल के सेवकों में से था, और जिसके भाई को कन्धार में कराचा ने हत्या करा दी थी, पीछे से पहुँच गया और उसकी टोपी को उठाकर उसके सिर पर तलवार मारी जिससे उसका सिर फट गया। तदुपरान्त वह उसका सिर काटकर सेवा में लाया।

मीर्ज़ा कामरान का पलायन

इस युद्ध एवं संग्राम में, जिसे राज्य के सहायक अन्तिम युद्ध समझकर प्राणों की बलि देने के लिए कटिबद्ध थे, मीर्ज़ा कामरान मुकाबले की शक्ति न देखकर भाग खड़ा हुआ और बादपज दर्रे से अफ़ग़ानिस्तान[2] की ओर भाग खड़ा हुआ। विजयी सेना ने लूट मार प्रारम्भ करके अत्यधिक

१ कुछ हस्तलिपियोंमें 'बहारी' किन्तु 'महारी' उचित है। **आईने अकबरी** के अनुसार यह आगरा की एक सरकार थी।

२ बाबर ने भी इस शब्द का प्रयोग किया है। काबुल की भौगोलिक स्थिति का उल्लेख करते हुए वह लिखता है कि "काबुल के दक्षिण में फ़रमुल, नग्र (नग़्ज़) बन्नू तथा अफ़ग़ानिस्तान है।" बाबर का तात्पर्य उन प्रदेशों से है जहाँ अफ़ग़ान कबीले निवास करते थे। वे काबुल से पेशावर को जाने वाले मार्ग के दक्षिण में थे। (**बाबर नामा, पृ० १३**)।

धन सम्पत्ति पर अधिकार जमा लिया। राज्य के शत्रु वैभव की कमद द्वारा वन्दी बना लिए गए और कोप की तलवार द्वारा मार डाले गए। एक बहुत बडा समूह पश्चाताप के पसीने की नकाब अपने मुख पर डाले हुए एव लज्जा के आँसुओ को अपना सिफारिशी बनाकर सहस्रो धिक्कार सहन करके राज्य के सहायको में सम्मिलित हो गया। मीर्ज़ा अस्करी भाग्यशाली सेना[1] के वीरों द्वारा बन्दी बना लिया गया। इतनी महान विजय, जो अपार विजयो की प्रस्तावना हो सकती (३०५) थी, विधाता की दया से परोक्ष से प्रकट हो गई एव सहस्रो प्रकार की प्रसन्नताओ की पूँजी बनी किन्तु हजरत जहाँबानी का पवित्र हृदय बादशाही के मुकुट के मोती अर्थात् हजरत शाहंशाह हेतु बडा चिन्तित था कारण कि उन्होने सुना था कि इस बार मीर्ज़ा कामरान उस उत्कृष्ट एव सम्मानित व्यक्ति को अपने साथ लाया है।

अकबर का हुमायूं की सेवा में उपस्थित किया जाना

उनके पवित्र हृदय को चिन्ता एव व्याकुलता से किसी प्रकार मुक्ति न होती थी यहाँ तक कि हसन आल्ता प्रताप की वाटिका की उस गुलाब की झाडी एव सल्तनत के उद्यान के सरो को (हज़रत जहाँबानी की) पवित्र दृष्टि के समक्ष लाया। उस नेत्रो की पुतली के आगमन को सौभाग्य एव प्रताप की प्रस्तावना समझकर उनकी कुशलता एव सुरक्षा के कारण उन्होंने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए सिज्दे किए एव प्रेमवश अपने ऊपर नियत्रण न रखते हुए उस दैवी प्रकाश द्वारा पोषित व्यक्ति को आलिंगन किया। ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के उपरान्त उन्होने दान-पुण्य, जो आभार प्रकट करने का व्यावहारिक रूप है, प्रारम्भ किया। दरिद्रा, फकीरो, विधवाओ एव अनाथो के हृदय को दान-पुण्य द्वारा अपने हाथ में ले लिया। प्राण न्यौछावर करने वाले प्रत्येक दास को, चाहे खिलाफत के नेत्रो की उस ठडक के दर्शन के कारण और चाहे उत्तम सेवाओ के पुरस्कार स्वरूप, पादशाही कृपाओ द्वारा सुशोभित किया। हज़रत जहाबानी ने अपनी शुभ जिह्वा से कहा कि "अब मैं किसी भी अभियान में खिलाफत के उद्यान के इस नए फल से पृथक् न हूँगा। कारण कि उसके शुभ चरणो में सहस्रो सौभाग्य निहित हैं। इस अभियान की यह महान् विजय इस उत्कृष्ट मोती के चरणो के आशीर्वाद का परिणाम समझता हूँ।"

हुमायूं के ग्रंथों के बक्सो का मिल जाना

इस सुखद अवसर पर सन्दूको से लदे हुए दो ऊँट दिखाई पडे जिनके साथ उनके हकाने वाले न थे। हज़रत जहाँबानी ने कहा, "प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ लूट रहा है। मेरा हिस्सा यही दो ऊँट है।" अत उन्होने स्वय नकेल पकडकर आदेश दिया कि "ऊँटो को बैठा दो और बोझ खुलवाओ। देखू इन सन्दूको मे क्या है?" सयोग से विशेष पादशाही पुस्तकें, जो कि विवचाक के युद्ध में हाथ से निकल गई थी, पूरी की पूरी इसी सन्दूक में मिल गई। यह बात सहस्रो प्रसन्नताओ की प्रस्तावना बनी।

ख्वाजा कासिम मीर ब्यूतात, जिसने षड्यत्र की ज्वाला भडकाई थी, इस युद्ध की अग्नि

१ अस्करी का नाम आ जाने के कारण अबुल्फ़ज़्ल ने 'अस्कर' शब्द का प्रयोग किया है। इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग अबुल्फ़ज़्ल की रचना शैली की बडी विशेषता है।

मे, अपनी कुकृतियो की आग द्वारा जल गया। इस प्रकार षड्यन्त्र एव दुष्टता का अन्त हो गया। वे उस दिन विजय एव सफलता के कारण चारीकारान उद्यान मे जश्न एव आनन्द मगल मनाते रहे।

हुमायूं का काबुल पहुँचना

जब ईश्वर की कृपा से विजय के द्वार खुल गए और षड्यन्त्रकारी विद्रोहियो को दड मिल गया तो दूसरे दिन शुभ मुहूर्त मे काबुल सम्मानित चरणो के आशीर्वाद से सुशोभित हुआ तथा उसने स्थायी सौभाग्य प्राप्त किया। सर्वप्रथम काबुल के किले मे पडाव किया गया। अन्तःपुर की महिलाओ ने उनकी सेवा मे उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त करके खुशियाँ मनाईं। तदुपरान्त वे अपनी प्रथानुसार उरता बाग मे पहुचे और अपनी भाग्यशाली उपस्थिति से उसे ताजगी प्रदान की। वहाँ वे राज्य की सुव्यवस्था, प्रजा के प्रोत्साहन एव निष्ठावान् उत्तम सेवको को पुरस्कृत करने तथा (३०६) षड्यन्त्रकारियो को दड देने मे व्यस्त हो गए। दीदार बेग, हैदर दोस्त, मुग़ल काँजी एव मस्त अली कूरची[1] की, जो कई बार नमकहरामी प्रदर्शित कर चुके थे, उनकी कुकृतियो एव अन्य लोगो के सुधार हेतु हत्या करा दी। उन्होंने अपने उत्कृष्ट साहस को न्याय की ओर लगा दिया। मीर्ज़ा सुलेमान को नाना प्रकार की कृपाओं द्वारा सम्मानित करके बदख्शाँ की ओर विदा कर दिया। मीर्ज़ा इबराहीम को विशेष कृपा प्रदर्शित करते हुए कुछ दिन तक अपने पास रख लिया। आनन्द मगल के फर्श बिछवाने एव सम्बन्ध-स्थापना की प्रस्तावनाओ से सुशोभित करने के उपरान्त बदख्शाँ भेज दिया। यह निश्चय हुआ कि शुभ मुहूर्त में उचित नियमो से इफ्फ्त किबाब बख्शी बानो बेगम[2] का, जो कि खिलाफत के वश की पुत्री है, उससे विवाह कर दिया जाय। हजरत जहाँबानी का समार को शोभा प्रदान करने वाला हृदय शासन-प्रबन्ध एव खिलाफत की चौखट के सेवको के प्रति कृपा प्रदर्शित करने मे तल्लीन हो गया।

हजरत शाहंशाह को चर्ख प्रदान होना एवं दूरदर्शी लोगों का उस (घटना से) फाल निकालना

हाजी मुहम्मद खा का अभिमान

इस अवसर पर जब कि दैवी सहायता से काबुल सल्तनत के सिंहासन का केन्द्र बन गया एव खिलाफत के प्रकाश से आलोकित हो गया, तो चर्ख नामक स्थान, जो लुहूगुर तूमान[3] मे है, हजरत शाहशाह को प्रदान कर दिया गया। अनुभवी सकेत लोगो ने परोक्ष के इस वरदान से

१ उसके विषय में बायजीद की कृति का अनुवाद देखिये।

२ इबराहीम की मृत्यु के उपरान्त अकबर ने अपने राज्यकाल में उसका विवाह मीर्ज़ा शरफ़ुद्दीन हुसेन से, जो ख्वाजा मुईन का पुत्र था, कर दिया।

३ बाबर ने लिखा है कि, "काबुल का एक अन्य तूमान लुहूगुर है। इसमें चौर्ख नामक एक बहुत बडा ग्राम है। हजरत मौलाना याकूब तथा मुल्ला जादा उस्मान भी चौख (चर्ख) के निवासी थे। चौर्ख में बहुत से उद्यान हैं किन्तु लुहूगुर के किसी अन्य ग्राम में बाग नहीं पाये जाते"। (बाबर नामा, पृ० २४)।

आकाश[1] की आज्ञाकारिता के विषय में फाल[2] निकाल कर प्रसन्नता के ढोल की आवाज नवें आकाश पर पहुँचा दी। वकालते दरे खाना[3], जो कि बहुत बडा पद था, हाजी मुहम्मद खा को प्रदान हुआ और उसके स्वभाव का सुधार किया गया किन्तु वह अपनी संकीर्ण प्रवृत्ति, वीरता की बदमस्ती एव अपनी प्रसिद्धि के कारण अभिमानी हो गया था अत सर्वदा नीच कल्पनायें उसे क्रोध के बन्दीगृह में रखती थी और वह सर्वदा कृतघ्नता प्रदर्शित करता हुआ ऐसी आकाक्षायें किया करता था जो मस्ती का पैमाना है। हजरत जहाँबानी अपने असीम ससार रूपी उच्च साहस एव उदारता के कारण उसकी बातो को टालते जाते थे। उस सफर बादशाह का उद्देश्य यह था कि मानव जीवन के पौधे को, जो दैवी कारीगरी द्वारा पोषित भाग्य की वाटिका का फलदार वृक्ष है, साधारण भूलो पर न कुचल दिया जाय। विशेष रूप से वह व्यक्ति जो अपने समकालीनो में अपनी बुद्धि अथवा वीरता की अधिकता या किसी अन्य दृष्टि से उत्कृष्ट गुणो से सुशोभित हो किन्तु वह अभागा दुष्ट, अपने दुर्भाग्य एव मूर्खता के कारण इसे अच्छी दृष्टि से न देखकर अपने पागलपन के साधनो में और भी वृद्धि करता रहता था। हजरत जहाँबानी उसकी दुष्टता की ओर ध्यान न देकर सर्वदा उसे कृपा एव उदारता द्वारा सम्मानित करते रहते थे।

हुमायूं द्वारा काबुल की शासन व्यवस्था

सक्षेप में, उन शुभ दिनो में सर्वदा न्याय एव दान के द्वार तथा कृपा एव कोप के द्वार, जिन पर ससार एव ससार वालो का शासन प्रबन्ध आधारित है, खुले रहते थे और ससार की अव्यवस्था को सुव्यवस्था प्रदान करने तथा शासन प्रबन्ध के सिंहासन को शोभायमान करने में व्यस्त रहते थे।

मीर्जा कामरान का पलायन

(३०७) मीर्जा कामरान पराजयोपरान्त उस्तुर कराम से बडी बुरी दशा में, जिसे कृतघ्नता का परिणाम एव उदारता के प्रति उपेक्षा का फल समझना चाहिए, आठ व्यक्तियो, खिज्र ख्वाजा खा के भाई आक सुल्तान[4], बाबा सईद किपचाक, तिमुर ताश अतगा, कुतलुक कदम, अली मुहम्मद, जोगी खा, अब्दाल खा एव मक्सूद कूरची, को लेकर देहे सब्ज से होता हुआ बडी परेशानी की अवस्था में अफगानो के पास पहुँचा। मीर्जा हिन्दाल, हाजी मुहम्मद खा, खिज्र ख्वाजा खा एव एक अन्य समूह ने, जो उनका पीछा करने के लिए भेजा गया था, मीर्जा के बन्दी बनाने का उचित प्रयत्न न किया और वापस लौट आये। अफगान लोगों ने मीर्जा के मार्ग को रोक कर सबको लूट लिया। मीर्जा इस भय से कि कही कोई उसे पहचान न ले सिर तथा मुख के समस्त बाल मुडवा कर कलन्दरों[5] के

१ चर्ख का अर्थ आकाश होता है अत अबुल्फजल ने इस नाम से लाभ उठा लिया।
२ किसी बात से किसी घटना की सफलता अथवा असफलता सम्बन्धी निष्कर्ष।
३ दरे खाना की वकालत अथवा महल के सम्बन्ध में मुख्य अधिकार।
४ इसके सम्बन्ध में देखिये गुलबदन बेगम के **हुमायूँ नामा** का अनुवाद। आक सुल्तान गुलबदन बेगम के पति खिज्र ख्वाजा खा का अनुज एव मीर्जा कामरान का जामाता था।
५ स्वतन्त्र विचार के सूफी जो अधिकाश सिर, दाढ़ी एव भृकुटियो के बाल मुड़वा देते तथा लोहे के कडे, हँसली इत्यादि पहनते हैं। धर्म के कट्टर अनुयायी सूफियों से इनका बडा सघर्ष रहा करता था और ये लोग इन सूफियों की हत्या करने से भी न चूकते थे। भारतवर्ष में चिश्ती सूफियों के मलफूजात (गोष्ठियों के वृत्तात) से उनके आतक

वेश में मदरावर के मलिक मुहम्मद के पास, जो लमगानात के प्रतिष्ठित लोगो में था, पहुँचा। उस मीर्जा के पिछले उपकारो पर ध्यान देकर उसके प्रति उदारता प्रदर्शित की।

मीर्ज़ा कामरान के पास सैनिकों का एकत्र होना

मीर्ज़ा इन दुर्घटनाओ से जिनमे से प्रत्येक बुद्धिमानो की दृष्टि म शिक्षा प्राप्त करने एव असावधानी की निद्रा से जगाने के लिए कडे कोडे के समान है, सचेत न हुआ और अपनी असावधानी की ओर अग्रसर होता रहा। सैनिको का एक समूह, जो दिखाने को तो आदमी थे किन्तु जिनमें न तो तथ्य को समझने की शक्ति थी और न मर्यादा और जो सर्वदा छल एव धूर्तता पूर्वक व्यवहार किया करते थे, अपने दुर्भाग्य के कारण मीर्ज़ा के चारो ओर एकत्र हो गया। जब ये समाचार सम्मानित शिविर में प्राप्त हुए तो विश्वासघात का बाजार गरम तथा निष्ठावानो का जिगर खून हो गया। ऐसे अवसर पर जब कि षड्यन्त्र एव विद्रोह की अग्नि धधक रही थी, हाजी मुहम्मद खा आज्ञा बिना गजनी चला गया। हजरत जहाबानी ने समयानुकूल व्यवहार एव मनुष्य के मूल्य को समझते हुए इस प्रकार के दुराचार को उसकी दुष्टता समझकर ध्यान न दिया।

हुमायू के अमीरो द्वारा मीर्ज़ा कामरान का पीछा

मीर्ज़ा कामरान के दमन हेतु उन्होने सम्मानित चौखट के कुछ सेवको उदाहरणार्थ बहादुर खा, मुहम्मद कुली बरलास, कीदूक सुल्तान एव प्राणो की बलि देने वाले एक समूह को नियुक्त किया। जब भाग्यशाली सेना मीर्ज़ा (कामरान) के समीप पहुँची तो वह अलीगार एव अली शग दर्रों की ओर चल दिया। अमीरो ने उसका पीछा किया। मीर्ज़ा उस क्षेत्र से निकलकर, खलील एव महमन्द[१] अफगानो की ओर चल दिया। थोड़े से दुष्ट, जो उसके चारो ओर एकत्र हो गए थे, उससे पुन पृथक् हो गए। विजयी सेना गज्वे शहीदाँ नामक स्थान स विजय एव सफलता प्राप्त करके लौट आई।

हुमायू द्वारा मीर्ज़ा सुलेमान की पुत्री से विवाह का प्रस्ताव

जब (हज़रत जहाँबानी) के पवित्र हृदय को मीर्ज़ा की दुष्टता की ओर से कुछ शान्ति मिल गई तो वे मीर्ज़ा सुलेमान क अधिक प्रोत्साहन एव बादशाही कृपाओ म वृद्धि के विषय मे सोचने लगे। उन्होने ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद एव इफ्फ्त मआब बीबी फातेमा को मीर्ज़ा

का बहुत हद तक अनुमान लगाया जा सकता है। कुछ कलन्दर अपने अपने क्षेत्र में धर्म निष्ठ सूफियों से भी अधिक प्रसिद्ध थे। ज़ियाउद्दीन बरनी ने बलबन के समय के लखनौती के एक कलन्दर के विषय में, जिसका वहाँ का विद्रोही हाकिम तुगरिल बहुत बडा भक्त था, लिखा है कि, "(बलबन ने) सभी को फाँसी दे दी, यहाँ तक कि एक कलन्दर को भी उसके मित्रों सहित फाँसी दे दी गई क्योंकि वह तुगरिल का मुँह लगा हुआ था। तुगरिल उसका बड़ा आदर सम्मान करता था और वह तथा उसके मित्र सोने के बने हुये कलन्दरी के वस्त्र (आलात) धारण करते थे, जब कि अन्य लोग लोहे के पहनते थे"। [ज़ियाउद्दीन बरनी : तारीखे फीरोज़शाही, पृ० ६१ रिज़वी आदि तुर्क कालीन भारत (अलीगढ़ १९५६ ई०) पृ० १८६]

१ महमन्द अफ़गानों का बहुत बड़ा क़बीला था। बाबर के अनुसार हजारा लोगों में जिस प्रकार सबसे बड़े सुल्तान मसऊदी हजारा थे उसी प्रकार अफ़गानों में महमन्द। (बाबर नामा, पृ० २८)।

सुलेमान की पुत्री खानम से विवाह करने के प्रस्ताव के साथ बदख्शाँ भेजा ताकि जब हजरत जहाँबानी से यह सम्बन्ध स्थापित हो जाय तो बदख्शाँ की ओर से उनका हृदय शान्त हो जाय और मीर्जा सुलेमान से सगठन एव उसकी सांत्वना की पुन व्यवस्था हो जाय।

मीर्ज़ा अस्करी की मृत्यु

(३०८) मीर्ज़ा अस्करी को भी उसी के सिपुर्द कर दिया गया ताकि वह उसे मीर्ज़ा सुलेमान के पास पहुँचा दे। मीर्ज़ा सुलेमान को सम्मानित आदेश हुआ कि मीर्ज़ा अस्करी को बलख के मार्ग से हिजाज़ भेज दे। मीर्ज़ा सुलेमान ने जो लोग भेजे गए थे उनके आगमन को बहुत बड़ा सौभाग्य समझ कर आदर सम्मान प्रदर्शित करने में कोई कसर न उठा रक्खी[1] और सम्मानित आदेश के पालन की दृष्टि से मीर्ज़ा अस्करी को बलख की ओर भेज दिया। मीर्ज़ा पश्चाताप के कारण तथा लज्जा-वश इस प्रदेश में निवास न कर सका और असतोष की सामग्री एव असबाब लेकर उस लम्बी-चौड़ी यात्रा[2] के लिए चल खड़ा हुआ। ९६५ हि० (१५५७-५८ ई०) में शाम एव मक्का के मध्य में उसकी अवस्था का प्याला भर गया और उसने अपनी जीवन-यात्रा वहीं समाप्त कर[3] दी।

मीर्ज़ा सुलेमान द्वारा विवाह का प्रस्ताव स्थगित करना

मीर्ज़ा सुलेमान ने हज़रत जहाँबानी से इस सम्बन्ध को पवित्र बेगमो[4] एव राज्य के उच्च अधिकारियों के आगमन तथा उस इफ्फ़त क़िबार[5] के बड़े हो जाने तक[6] दीनता एव विनय-पूर्वक प्रार्थनायें करके स्थगित कर दिया और अतिथियों को आदर-पूर्वक लौटा दिया।

हज़रत जहाँबानी का मीर्ज़ा कामरान के षड्यंत्र की अग्नि को शांत करने के लिये पुन प्रस्थान

मीर्ज़ा कामरान का अफ़ग़ानों से मिल जाना

इस कारण कि स्वभाव को शरीर की पचम प्रकृति स्वीकार किया गया है अत जो दुष्टता का आदी हो जाता है वह बिच्छू के समान डक मारने पर विवश होता है। इस सिद्धान्त के अनुसार मीर्ज़ा कामरान ने अपने स्वभाव एव प्रवृत्ति की ओर पुन आकृष्ट होकर अपनी

१ इस प्रसग में बायज़ीद की कृति का अनुवाद देखिये।

२ हज के लिये।

३ फ़िरिश्ता ने इस घटना का उल्लेख इस प्रकार किया है "मीर्ज़ा अस्करी को, जो मीर्ज़ा कामरान का (एक ही माता से) भाई था, मीर्ज़ा सुलेमान के पास इस आशय से भेज दिया कि वह उसे बलख के मार्ग से मक्का भेज दे। मीर्ज़ा अस्करी की दावनी में, जो शाम एव मदीना के मध्य में है, ९६१ हि० (१५५३-५४ ई०) में मृत्यु हो गई। उसके एक पुत्री थी, जिसका विवाह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह ने यूसुफ़ खाँ मशहदी से कर दिया। [फ़िरिश्ता तारीखे फ़िरिश्ता मक़ाला दोअम, पृ० २४०]।

४ हुमायूँ के दरबार की बेगमों।

५ सतीत्व का कुब्बा अथवा अत्यधिक साध्वी अथवा सती।

६ अर्थात् पुत्री के बड़े हो जाने तक।

दुर्भावनाओं को अपने दंड का साधन बना लिया। खलील तथा महमन्द कबीले के अफगानों एवं दुष्टों के एक समूह को, जो गुण एवं दोष में भेद-भाव न कर सकता था, अपने साथ लेकर लूट-मार के लिए निकल खड़ा हुआ। हजरत जहाँबानी ने, जो ससार एवं युग के सुखदायक थे, इस षड्यंत्र को शान्त करना एबादत समझकर तदनुसार कार्य करने का सकल्प कर लिया।

चारबाग से मीर्ज़ा कामरान का पलायन

ख्वाजा इख्तियार एव मीर अब्दुल हई को, जो सम्मानित दरबार के विश्वास पात्र थे, गजनी भेज दिया ताकि वे कृपा-युक्त फरमान पहुँचाकर हाजी मुहम्मद को कृतघ्नता के अधकार से निकालें और उसे कृतज्ञता के प्रकाश की ओर अग्रसर करें। हजरत जहाँबानी के तैयारी करने एवं सकल्प की रिकाब में पाँव जमाने तक यह समाचार प्राप्त हुए कि मीर्ज़ा कामरान ने कुछ बिना सिर-पाँव के दुष्टों को लेकर एक किले को, जो जलालाबाद के उपान्त में चहारबाग के समीप है घेर लिया है। हजरत जहाँबानी ने हाजी मुहम्मद खा के आगमन की प्रतीक्षा न करके शीघ्रातिशीघ्र जलालाबाद की ओर प्रस्थान किया। मीर्ज़ा कामरान इस समाचार को सुनते ही घबड़ाकर भाग खड़ा हुआ और पुन पर्वत के दर्रों में पहुँच गया। वहाँ से बगश एवं गिरदीज होता हुआ इस आशय से भाग खड़ा हुआ कि इस प्रकार सम्भव है वह हाजी मुहम्मद के पास पहुँच जाय कारण कि वह अभागा उससे मिला हुआ था।

हाजी मुहम्मद

हाजी मुहम्मद का विवरण इस प्रकार है :—जब उसके विनाश के दिन समीप आ गए तो उसके दुष्ट हृदय से अधिक से अधिक नीच विचार प्रकट होने लगे। उसने पादशाही दूतों को चिकनी-चुपड़ी बातें करके आने के झूठे वचन देकर लौटा दिया। उसने एक दूत मीर्ज़ा (३०९) कामरान के पास भेजकर (यह सूचना कराई कि) वह कब तक पर्वत एवं जगल में मारा मारा फिरता रहेगा? वह शीघ्रातिशीघ्र इस क्षेत्र में पहुँच जाय ताकि मिलकर काम किया जा सके। सयोग से बैराम खा, जो हजरत पादशाह की सेवा में कन्धार से रवाना हो चुका था, गजनी पहुँच गया। हाजी मुहम्मद, जो बैराम खा की प्रतीक्षा कर रहा था, उसके स्वागतार्थ पहुँचा और दिखाने के लिए उससे प्रेमपूर्वक व्यवहार करने लगा ताकि दावत के बहाने से उसे किले के भीतर ले जाकर बन्दी बना ले। खान किले की ओर रवाना हुआ। मीर हब्श ने, जो हाजी मुहम्मद खा के साथ था, खान को सकेत कर दिया। खान को उस सकेत से उसके विश्वासघात एवं छल का पता चल गया। उसने बहाना करके किले के भीतर आने का विचार त्याग दिया और नगर के बाहर एक झरने पर पड़ाव किया। हाजी मुहम्मद को नाना प्रकार की युक्तियों से सतुष्ट करके अपने साथ काबुल ले गया और अपने आगमन एवं हाजी मुहम्मद के लाने के विषय में पत्र भेजा। हजरत जहाँबानी ने जब यह सुना कि मीर्ज़ा कामरान काबुल की ओर पहुँच रहा है तो वे शीघ्रातिशीघ्र काबुल की ओर रवाना हुए। मीर्ज़ा कामरान ने काबुल से एक पड़ाव पर पहुँचकर जब खाने खाना के पहुँचने एवं हाजी मुहम्मद खा के विषय में सुना तो घबड़ाकर लमगान की ओर भाग गया। एक दिन हाजी मुहम्मद ने दरवाजये आहिनी[1] से काबुल में प्रविष्ट होने का प्रयत्न किया। ख्वाजा

१ लोहे के फाटक।

अलुद्दीन महमूद ने जिसके सिपुर्द काबुल का राज्य था, किले के भीतर प्रविष्ट न होने दिया और उसे कठोर वचन कहला भेजे। वह मूर्ख सियाह मुख वाला शवाओं के वशीभूत होकर शिकार के बहाने से करावाग चला गया। तदुपरान्त कोतले मीनार होता हुआ बाबा कूचकार पहुँचा और बहजादी एवं बलन्दरी पर्वत से होता हुआ शीघ्रातिशीघ्र गजनी की ओर बढ़ा। इसी बीच में हज़रत जहाँबानी की विजयी पताकाएँ, जो मीर्ज़ा कामरान के विद्रोह को शांत करने के लिए काबुल की ओर रवाना हो चुकी थी, मियाह सग पहुँची। बैराम खाँ ने फर्श चूमने का सम्मान प्राप्त किया। हज़रत जहाँबानी ने आदेश दिया कि नगर में कोई प्रविष्ट न हो कारण कि हम मीर्ज़ा का पीछा कर रहे हैं ताकि ईश्वर के प्राणी रोज रोज के कष्ट से मुक्त हो जायँ। हाजी मुहम्मद की ओर से इतमीनान न था अतः राज्य के हितैषियों ने यह निश्चय किया कि हाजी मुहम्मद की ओर से संतुष्ट होकर मीर्ज़ा का पीछा किया जाय। हज़रत जहाँबानी ने नगर में पड़ाव करके बैराम खाँ को हाजी मुहम्मद के विरुद्ध नियुक्त किया और ऐसा प्रकट किया कि जब तक युक्ति से काम चल जाय उस समय तक उसे अनावृत्त न करे[1] और जिस प्रकार सम्भव हो, हाजी मुहम्मद को ले आये।

बैराम खाँ ने उसे युक्ति द्वारा अपने वश में कर लिया। शपथ एवं वचन के उपरान्त हाजी मुहम्मद ने गुल्कार[2] नामक स्थान पर पहुँचकर खाने खाना से भेंट की। खाने खाना ने उसे अपराधों को क्षमा करने वाले शासक के पास ले जाकर क्षमा याचना कराई। तदुपरान्त (३१०) चार-पाँच दिन पश्चात् उन्होंने लमगानात की ओर जहाँ मीर्ज़ा भागकर पहुँच चुका था, प्रस्थान किया। बावजूद इसके कि हाजी मुहम्मद के इतने अधिक अपराध अभी-अभी क्षमा किए गए थे उसने अपने उन पापों को कोई महत्व न देकर धृष्टतापूर्वक दुष्टता प्रदर्शित की तथा हजरत जहाँबानी के पवित्र हृदय को कष्ट पहुँचाया। हजरत जहाँबानी ने अपनी महान् अनुकम्पा एवं दया के कारण उपेक्षा की। जब भाग्यशाली पताकायें जलालाबाद पहुँची तो मीर्ज़ा कुनूर नूरगल[3] दर्रों की ओर भाग गया। षड्यन्त्रकारियों में से प्रत्येक किसी न किसी कोने में छिप गया। उन्होंने खाने खाना को एक बहुत बड़ी सेना सहित मीर्ज़ा के विरुद्ध नियुक्त किया। मीर्ज़ा कामरान कुनूर एवं

१ अर्थात् उसकी कलई न खोले।

२ 'कुलरीना' अथवा 'गुलरीना', काबुल के समीप बड़े ही एकान्त में है। बाबर लिखता है, "वहाँ अत्यधिक बलात्कार होता रहता है। ख्वाजा हाफ़िज़ के एक शेर का यह हास्यजनक अनुकरण मैंने तैयार किया —

शेर

क्या ही अच्छा समय था वह जब कि थोड़े दिन तक बिना किसी चिन्ता के,
हम कुलरीना निवासी रहे अपनी थोड़ी सी कुख्याति के साथ।

(बाबर नामा, पृ० १३ १४)।

३ लमगान का एक तूमान। बाबर लिखता है, "लमगान का एक अन्य तूमान नूरगल सहित कूनार है। यह तूमान लमगानात से कुछ पृथक स्थित है। इसकी सीमायें काफिरिस्तान से मिली हैं। यद्यपि यह अन्य तूमानों के बराबर है और यहाँ का राजस्व भी कम है किन्तु लोग वह भी नहीं अदा करते। चगान सराय के उत्तर पूर्व के मध्य से काफ़िरिस्तान होती हुई कामा नामक बूलूक में पहुँचती है और वहाँ बारान नदी में मिल कर पूर्व की ओर बहती है। नूरगल इस नदी के पश्चिम में है और कनार पूर्व की ओर।" (बाबर नामा, पृ० २०-२१)।

विद्रोह हेतु सिर उठाये एवं षड्यंत्र तथा उपद्रव हेतु उद्यत रहते थे, कुछ सेवा में उपस्थित हुए और उन्होंने चौखट चूमने का सम्मान प्राप्त किया। कुछ समूह प्रार्थना-पत्रों एवं उचित उपहारों द्वारा आज्ञाकारिता के क्षेत्र में आ गये तथा मीर्जा के षड्यंत्र की धूल बैठ गई। हजरत जहाँबानी ने बादज[1] मार्ग से यात्रा करके बारान नदी पर पड़ाव किया। उस रात्रि में जब कि उत्कृष्ट सेना बादज के समीप थी, घोर वर्षा एवं हिमपात होने लगा। बहुत से लोगों को हानि पहुँची। सैर व शिकार के उपरान्त काबुल में पड़ाव किया गया।

नियुक्तियाँ

बैराम खाँ को कन्धार के शासन प्रबन्ध हेतु भेज दिया गया। ख्वाजा गाजी एराक के वाली के पास दूत बनाकर उपहारों सहित बैराम खाँ के साथ भेजा गया। गजनी, गिरदीज[2], एवं बंगश[3] की विलायत तथा लुहूगुर[4] का तूमान मीर्जा हिन्दाल को प्रदान किए गए। कुन्दुज, जो मीर्जा के अधीन था, मीर बरका एवं मीर्जा हसन को प्रदान कर दिया गया। मीर्जा हिन्दाल गजनी की ओर विदा कर दिया गया। मीर बरका कुन्दुज चला गया। जूये शाही एवं उस क्षेत्र के स्थान खिज्र ख्वाजा खाँ को प्रदान कर दिए गए। मीर बरका के वहाँ पहुँचने के पूर्व मीर्जा इबराहीम ने कुन्दुज को मुहम्मद ताहिर खाँ से चकमा देकर छीन लिया। मीर बरका काबुल चला गया। हजरत जहाँबानी ने मीर्जा की उत्तम सेवाओं को ही उसकी सिफ़ारिश का साधन समझकर वह महाल उसे प्रदान कर दिया।

शाह अबुल मआली का आगमन

उन्हीं दिनों में ख्वाजा अब्दुस्समी द्वारा, शाह अबुल मआली पादशाह के उत्कृष्ट दरबार में पहुँचा और अभिवादन द्वारा सम्मानित हुआ। शाह अबुल मआली अपने आप को तिरमिज के सैयिदों से सम्बन्धित बताता था। उसके सुन्दर रूप से उत्तम स्वभाव के शुभचिन्तक इस भ्रम में पड़ जाते थे कि वह बड़ा सदाचारी है। उसकी धृष्टता को उसकी वीरता का कारण समझा जाता था अतः वह हजरत जहाँबानी का कृपा पात्र हो गया। उसकी बदमस्ती एवं उसके सन्मार्ग से विचलित होने का थोड़ा बहुत हाल अपने स्थान पर लिखा जायगा।

१ पूर्व में 'बादज' भी लिखा गया है।

२ काबुल के एक तूमान के अधीन। बाबर ने इसके विषय में लिखा है, "जुरमुत एक अन्य तूमान है। यह काबुल से दक्षिण की ओर १२-१३ यीगाच (७२-७८ मील) पर और गजनी के दक्षिण पूर्व में ७-८ यीगाच (४२-४८ मील) पर है। यहाँ के दारोगा का मुख्य स्थान गीरदीज (गिरदीज) में है। गीरदीज के किले के मध्य में अधिकांश घर तीन चार मंजिलों के हैं।" (बाबर नामा, पृ० ८७)।

३ काबुल का एक तूमान। बाबर ने लिखा है, "एक अन्य तूमान बंगश है। इसके चारों ओर अफगान लुटेरे आबाद हैं, उदाहरणार्थ खूगियानी, खिरिलची, तूरी तथा लन्दर। दूर स्थित होने के कारण यहाँ के लोग स्वेच्छा से राजकर नहीं अदा करते।" (बाबर नामा, पृ० २७)।

४ "काबुल का एक अन्य तूमान लुहूगुर है। इसमें चीर्ख नामक एक बहुत बड़ा ग्राम है। हजरत मौलाना याकूब तथा मुल्लाजादा उस्मान भी चीर्ख के निवासी थे। चीर्ख में बहुत से उद्यान पाये जाते हैं किन्तु लुहूगुर के किसी अन्य ग्राम में बाग नहीं पाये जाते।" (बाबर नामा, पृ० २६)।

हजरत जहांबानी जन्नत आशियानी की पवित्र सेना का मीर्जा कामरान के विद्रोह को शान्त करने के लिये पुनः प्रस्थान एवं मीर्जा हिन्दाल का शहीद होना

-मीर्जा कामरान कुछ दिन तक अपमान एवं अपयश की कोठरी में समय व्यतीत करता रहा (३१२) यहाँ तक कि सतुष्ट हृदय (हजरत जहाँबानी) पुन उसके विद्रोह के समाचार से चिन्तित रहने लगे। आने जाने वालो से उत्कृष्ट कानो तक यह समाचार पहुँचे कि वह पुन नीलाब के क्षेत्र से वापस होकर दुष्टों के एक समूह के साथ जूये शाहो के क्षेत्र में उत्पात मचा रहा है। हजरत जहाँबानी ने मीर्जा हिन्दाल को गजनी से बुलवाया। निकट के जागीरदारों को आक्रमण का आदेश हुआ। अल्प समय में मीर्जा हिन्दाल फर्श चूमने के सम्मान द्वारा सम्मानित हुआ। निष्ठावान् फिदाई एव कृतज्ञ लोग एकत्र हुए। हजरत जहाँबानी ने विद्रोह की अग्नि को शान्त करने के लिए उत्कृष्ट पताकाओं के प्रस्थान का आदेश दिया। सम्मानित सेना के प्रस्थान के समाचार पाकर मीर्जा कामरान असफलता के कारण एक कोने में पहुँच गया। जिस समय भाग्यशाली पताकायें सुर्खाब के समीप पहुँची, हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी अधिक श निष्ठावान् जवानो सहित, सेना के अग्र भाग में नियुक्त हुआ। वह सम्मानित लश्कर के पूर्व सियाह आब के तट पर, जो सुर्खाब एव गडमक के मध्य में है, पहुँच गया। मीर्जा कामरान ने अपने आप में युद्ध की शक्ति न देखकर उस पर रात्रि में छापा मारा। हैदर मुहम्मद ने सिंह की भाँति वीरता एव पौरुष प्रदर्शित करते हुए बडी बहादुरी से युद्ध किया और गहरे घाव, जो बहिरंग एव अन्तरंग की सुर्खरूई के प्रमाण-पत्र है, प्राप्त किए। वह अपने स्थान पर दृढ रहा और उसने उसे न छोडा। यद्यपि उसकी अत्यधिक धन-सम्पत्ति नष्ट हो गई किन्तु मीर्जा कोई सफलता न प्राप्त कर सका और घबडाकर भाग खडा हुआ।

कामरान द्वारा रात्रि में छापा

कुछ दिन उपरान्त जब जपरियार नामक स्थान पर जो नेकनहार[1] तूमान के अधीन है,-सम्मानित शिविर लगे तो परमावश्यक सावधानी एव सतर्कता की दृष्टि से मोर्चे बाँट दिए गए और खाई एव दीवार-बस्ती[2] की व्यवस्था कर ली गई। दिन के अन्तिम पहर में दो अफगान समाचार लाये कि आज रात्रि में मीर्जा कामरान अफगानो के समूह के साथ छापा मारने वाला है। हजरत जहाँबानी ने सावधानी की दृष्टि से प्रत्येक स्थान पर आदमी नियुक्त कर दिए। रविवार २१ जीकाद ९५८ हि० (२० नवम्बर १५५१ ई०) की रात्रि में चौथाई रात्रि व्यतीत हो जाने के उपरान्त मीर्जा कामरान ने अत्यधिक अफगानो सहित विजयी शिविर पर छापा मारा। हजरत जहाँबानी एक टीले पर, जो दौलतखाने के पीछे था, सवार थे। उन्होंने

१ बाबर नामा में 'नीनगनहार'। बाबर लिखता है कि, "सबसे बडा तूमान नीनगनहार है। कुछ इतिहासों में इसे नगरहार भी लिखा गया है। इसके दारोगा का निवास स्थान अदीनापुर में है जो काबुल से पूर्व की ओर लग भग १३ यीगाच (८८ मील) पर है"। (बाबर नामा, पृ० १८)।

२ रोक, आड, बचाव।

ललाट के गौरव एव खिलाफत[1] के मुकुट के मोती अर्थात् हजरत शाहशाह को अपने समक्ष बुलवा लिया। उत्कृष्ट चौखट के सेवकों में से प्रत्येक ने अपने अपने मोर्चे में प्रतिरक्षा एव वीरता की प्रथाओं का पालन किया। युद्ध एव रक्तपात की अग्नि भडक रही थी। इस चीत्कार एव कोलाहल मे अब्दुल वहहाब यसावल, जो मोर्चे में घूम घूमकर प्रवन्ध कर रहा था, एक वाण द्वारा शहीद हो गया। इसी प्रकार युद्ध का बाजार गरम था, यहाँ तक कि चमकता हुआ चाँद, जो ससार को दर्पण दिखाता है, प्रताप के आकाश से उदय हुआ और ससार को आलोकित करने वाली किरणो से धरती को (३१३) देदीप्यमान कर दिया। विजय एव सफलता का प्रकाश, राज्य की भृकुटिया से चमकने लगा। शत्रु की सेना पराजय को बहुत बडा सौभाग्य समझकर भाग खडी हुई और प्रत्येक चिन्ता एव लज्जा में ग्रस्त किसी न किसी कोने में पहुँच गया। राज्य के सहायको ने विजय प्राप्त करके सतोष की पताका बुलन्द की।

मीर्जा हिन्दाल की हत्या

सभी के हृदय शान्त हो गए थे कि अचानक मीर्जा हिन्दाल के इस नश्वर ससार से विदा हो जाने के समाचार शाही काना तक पहुँचे। हृदय की प्रसन्नता भग हो गई। दिलो की खुशी अपार दुख मे परिवर्तित हो गई। नि सन्देह इस नश्वर ससार की यही प्रथा है कि यदि एक क्षण प्रसन्नता मे व्यतीत होता है तो दूसरे क्षण दुख का धुआँ दग्ध हृदय से निकलता है।

शेर

'कभी नही आकाश की आँख उषा द्वारा चमकी,
जब तक सायकाल ने अपने दामन को रक्त की गोधूलि से न रगा।'

न तो वहाँ प्रसन्नता को विलम्ब करने का कोई अवसर प्राप्त होता है और न दुख को ठहरने की अनुमति होती है। मीर्जा यद्यपि इस अस्थायी ससार एव नश्वर सराय से विदा हो गया किन्तु उसे शहीद होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस लोक में भी उसे यश प्राप्त हो गया और परलोक मे भी वह सम्मानित हुआ। वह थोडा लेने एव अधिक दान करने वाला[2] स्तुति का पात्र है जिसने इस माँगे के प्राण के निकल जाने के उपरान्त इतना स्थायी सौभाग्य प्रदान किया। निष्ठा के परखने की खान हजरत जहाँबानी ने ऐसे भाई की मृत्यु पर इतना अधिक दुख एव शोक प्रकट किया कि उसका उल्लेख सम्भव नही, किन्तु बुद्धिमान् एव दूरदर्शी होने के कारण शोक एव विलाप त्यागकर सतोष एव धैर्य से कार्य किया और आत्म-समर्पण एव ईश्वर की इच्छा के सुखद स्थान मे सतोष प्राप्त किया।

मीर्जा हिन्दाल की हत्या का सविस्तार विवरण

इस शोकपूर्ण घटना का सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है मीर्जा हिन्दाल रात्रि के छापे का समाचार सुनकर मोर्चे का प्रवन्ध करके विश्राम हेतु लेटा ही था कि अफगाना का कोलाहल प्रारम्भ हो गया। प्रत्येक मोर्चे मे इतने अधिक अफगान प्यादे एकत्र हो गए थे कि उसका उल्लेख

१ खलीफा होने।
२ ईश्वर।

सम्भव नही। मीर्जा के मोर्चे में भी अफगानो की बहुत बडी सख्या प्रविष्ट होती जाती थी। रात अँधेरी थी। मीर्जा इस अभागे समूह को हटाने का प्रयत्न करने लगा। लोग घबडाकर अपने घोड़े की देख भाल के लिए बढे। इस बीच मे मीर्जा का अफगानो से आमना सामना हो गया। नूरम कोका एव कुछ अन्य लोग अपनी कायरता एव उचित सेवा न करने के कारण अपमानित हुए। धनुष-बाण का समय न रह गया। वह एक (शत्रु) से स्वय लिपट गया और अपने साहस की भुजाओ के बल से उस दुष्ट को पटक दिया। उस अभागे के भाई, जरिन्दा नामक अफगान ने, जो महमन्द कबीले से सम्बन्धित था, विष भरे भाले द्वारा मीर्जा को परलोक पहुँचा दिया। मीर्जा कामरान के कुछ सेवको का कथन है कि वह दुष्ट अफगान एक शस्त्र आवेज[1], जिसमें मीर्जा (हिन्दाल) की विशेष शस्त्र[2] थी, लिए हुए मीर्जा (कामरान) के पास पहुँचा और यह न समझा कि उसने किस व्यक्ति के साथ दुर्भाग्य का जुआ खेला है। उसने इस घटना का उल्लेख किया। मीर्जा की (३१४) दृष्टि जब उस शस्त्र आवेज पर पडी तो वह मामले को समझ गया। उसने भूमि पर पगडी फेंक दी और कहा 'मीर्जा हिन्दाल शहीद हो गया'।

सक्षेप मे, मीर्जा की आत्मा उस अँधेरे मे परलोक को चल दी और किसी को इसका पता न चल सका। उसका शव उसी प्रकार पडा रह गया। इसी बीच में स्वर्गीय मीर्जा के कुछ सेवक लौटे आ रहे थे कि ख्वाजा इबराहीम बदख्शी ने देखा कि कोई पडा हुआ व्यक्ति काले रग का कलमाक धारण किए हुए है। क्योकि रात अधेरी थी और कोलाहल हो रहा था अत उसने उचित रूप से ध्यान न दिया। फिर उसने सोचा कि 'मीर्जा हिन्दाल काले रग का जीवा धारण किए था, लौटकर देख ले।' उसने मीर्जा को पहिचान लिया। वह धैर्य एव सतोष से, जो बुद्धिमानो की प्रवृत्ति है, मीर्जा का (शव) उठाकर उसके खेमे के भीतर ले गया और उसे द्वारपालो को सौप दिया[3]। उसने उचित उपाय द्वारा इस घटना के छिपाने का प्रयत्न किया ताकि कही ऐसा न हो कि ऐसे कोलाहल एव अशान्ति के समय, शत्रु लोग प्रसन्न होकर प्रभुत्व प्राप्त कर ले और राज्य के सहायक हताश एव हतोत्साहित हो जाये। उसने कहा, 'मीर्जा अत्यधिक थक गए तथा कमजोर हो गए है। कुछ घाव भी लगे है। कोई पास में शोर गुल न करे।' उसने स्वय टीले पर पहुँच कर मीर्जा की ओर से (हजरत जहाबानी) की विजय की बधाई पहुँचाई। हजरत जहाबानी के प्रकाश-युक्त हृदय को इस बात का आभास हो गया। सक्षेप मे, मीर्जा के ताबूत[4] को कुछ समय के लिए जूये शाही में रखकर बाद मे काबुल पहुँचाया गया और गुजरगाह मे हज़रत गेती सितानी फिरदौस मकानी के पवित्र मकबरे के समीप उनके पाईती दफन कर दिया गया। मुल्ला खुर्द जरगर[5]

१ वह डिब्बा जिसमें शस्त्र रक्खे जाते थे।
२ एक प्रकार का अगुलित्राण जो धनुर्धारी निशाना लगाने समय पहिन लेते है।
३ गुलबदन बेगम के अनुसार मीर बाबा दोस्त उसकी लाश ले गया।
४ वह सदूक जिसमें शव को बन्द करके गाडते है।
५ **अकबर नामा** के पृ० २७५ पर लिखा है कि वह उस समय मीर्जा कामरान का विश्वासपात्र था। सम्भवत मीर्जा का अभिप्राय मीर्जा कामरान से है।

र, जो मीर्ज़ा के मेवकों मे था मरसिया[1] लिखा। उसका प्रथम शेर इस प्रकार है —

शेर

'एक रात्रि में खूने जिगर ने मेरे नेत्र की पुतलियो पर छापा मारा,
नेत्रों को सेना ने रक्त के आने-जाने के कारण, बाहर खेमा लगाया।'

इस तारीख की भी रचना उसी ने की

शेर

"हिन्दाल मुहम्मद यशस्वी उपाधि का बादशाह,
अचानक मृत्यु के कारण शहीद हुआ रात्रि के सन्नाटे म।
उसकी शहादत का कारण जो शबखून[2] हुआ,
उसके शहादत की तारीख 'शबखून'[3] से निकाल।

मीर अमानी ने इस गूढार्थक तारीख की रचना की

मिसरा

'एक सरो राज्य के उद्यान मे निकल गया।'

मीर्जा हिन्दाल का जन्म ९२४ हि०[4] (१५१८ ई०) में हुआ था। इस सम्बन्ध में लिखा गया

मिसरा

'कौकबे बुर्जे शहशाही[5] उसके (जन्म की) तारीख हुई।'

हजरत जहाँबानी ने दूसरे दिन वहाँ से बेहसूद में पड़ाव किया ताकि अपने ससार को शोभा देने वाले हृदय को सर्वदा के लिए षड्यन्त्रकारियों से मुक्त करके, राजधानी काबुल को अपनी उत्कृष्ट सेना के प्रकाश से सुख शान्ति का केन्द्र बना दे।

गजनी की विलायत का हजरत शाहशाह को प्रदान किया जाना और उनकी सम्मानित सेवा में राज्य के कुछ अधिकारियों की नियुक्ति

(३१५) क्योंकि सल्तनत एव ऐश्वर्य के वृक्ष के उस नए फल एव खिलाफत के उद्यान के उस गुलदस्ते अर्थात् हजरत शाहशाह के प्रकाश-युक्त ललाट से श्रेष्ठता एव सुव्यवस्था के चिह्न

१ शोक सम्बन्धी वह कविता जो किसी मृत व्यक्ति की याद में लिखी जाती है। अन्य शोक-पूर्ण घटनाओं के अवसर पर भी मरसिये की रचना की जाती है। (डा० धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य कोश, पृ० ५६६)।
२ रात्रि के समय का अचानक आक्रमण।
३ ९५८ हि० (१५५१ ई०)
४ ९२५ हि० (मार्च १५१९ ई०)। (बाबर नामा, पृ० १०३)।
५ शाहशाह की राशि का नक्षत्र।

बाल्यावस्था से ही प्रकट थे अत इस समय जब उनकी अनन्त तक रहने वाली अवस्था १० वर्ष की हुई तो मीर्जा हिन्दाल के समस्त सेवक एव उसकी जागीर के महाल—गजनी इत्यादि—उन्हे प्रदान कर दिए गए ताकि वे शासन प्रबन्ध का अभ्यास करके लोगो की देख भाल में कृपा एव कोप का प्रदर्शन करते हुए, एक अश की व्यवस्था द्वारा पूरे (राज्य) के प्रबन्ध के आदी हो जायें।

एक विचित्र घटना यह घटी इससे कुछ दिन पूर्व जब कि वे हज़रत जहाँबानी के साथ सवार होकर जा रहे थे, राज्य के नेत्रो के उस प्रकाश की पगडी, जो लोक तथा परलोक के सिर का मुकुट हो सकती थी, वही गिर गई। मीर्जा हिन्दाल ने, जो वहाँ उपस्थित था, आदरपूर्वक सर्व-साधारण की भीड में अपने सौभाग्य का मुकुट अपने सिर से उतारकर उनके नक्षत्रो को छूने वाले सिर पर रख दिया। तेजस्वी दरबार के दूरदर्शी लोगो ने इस घटना से फाल निकाल कर शाहशाह के मुकुट धारण करने एव राज्य ग्रहण करने के दिन को निकट समझकर हृदय से प्रसन्नता प्रकट की। परमेश्वर ने इस प्रशसनीय व्यवहार के फलस्वरूप सम्मानित मीर्जा को शहादत के सम्मान, जो अनन्त के जीवन एव हर्ष-उल्लास के समान है, द्वारा प्रतिष्ठित किया। हज़रत शाहशाह ने, जो दैवी प्रकाश द्वारा पोषित है, लोगो के हृदय को हाथ मे लने मे ऐसी श्रेष्ठता, कृपा, सहृदयता एव योग्यता प्रदर्शित की कि लोग मीर्जा हिन्दाल के शोक को भूल गए और अनन्त तक स्थायी रहने वाली प्रसन्नता द्वारा लाभान्वित हुए।

शेर

'हे ईश्वर ! जब तक ससार मे चमक एव रग है
आकाश घूम रहा है और भूमि अपने स्थान पर है।
उसे जीवन एव जवानी द्वारा यश प्रदान कर
सभी वस्तुओ की अपेक्षा उसे दीर्घायु प्रदान कर।'

स्वर्गीय मीर्जा के मुख्य सेवक, जो हजरत शाहशाह की सेवा में निष्ठापूर्वक सम्मिलित हुए, इस प्रकार है —

(१) मुहिब अली खा
(२) नासिर कुली
(३) ख्वाजा इबराहीम
(४) मौलाना अब्दुल्लाह
(५) आदीना तुर्कबाई
(६) सामान्जी
(७) करगूजी
(८) जान मुहम्मद तुर्कबाई
(९) ताजुद्दीन महमूद बारबेगी
(१०) तिमुर ताश
(११) मौलाना सानी, जो बाद मे सानी खा की उपाधि द्वारा सुशोभित हुआ

(१२) मौलाना बाबा दोस्त सद्र[1] जिसका मीर्जा बडा आदर सम्मान करता था
(३१६) (१३) मीर जमाल[2] जो मीर्जा का विश्वास पात्र था
(१४) खुर्रदीन दोस्त सहारी।

बाबा दोस्त भी मीर्जा का सेवक था किन्तु इस कारण कि शिक्षा के सिद्धान्तो के अनुसार कोई भी वस्तु, कुसगत से बुरी नही होती, उसे उसकी दुष्टता के कारण साथ न लिया गया। मुहम्मद ताहिर खा यद्यपि मीर्जा का प्राचीन सेवक था किन्तु इस कारण कि वह कुन्दुज की रक्षा न कर सका था अत तथ्य का अवलोकन करने वाली दृष्टि द्वारा पृथक कर दिया गया और इस शुभ अभियान म साथ न रक्खा गया। क्योकि यश प्रदान करने वाले दरबार मे मनुष्य के गुण परख लिए जाते है अत जो सदाचारी एव पवित्र स्वभाव वाले थे उन लोगो के कार्य नित्य प्रति सुधरते गए और वे अपने उच्च उद्देश्य को प्राप्त करते गए। उनमें जो दुष्ट थे उनके कार्यो पर स आवरण हटता गया, और उनके कार्य इस सीमा को पहुँच गए कि वे समस्त असावधान बदमस्तो के लिए शिक्षा के विषय बने।

जब वेहसूद नामक स्थान पर भाग्यशाली शिविर लग गए तो एक दृढ किले के निर्माण का आदेश हुआ। हजरत शाहशाह को उन्होने कावुल को दृढ रखने के लिए भेज दिया[3] ताकि वे उस आनन्दवर्धक स्थान में रह कर आध्यात्मिक एव सासारिक राज्य का अभ्यास करे। हजरत जहाबानी उस क्षेत्र मे दैवी सहायता प्राप्त करते एव मीर्जा कामरान के विषय में पता लगाते रहते थे। लगभग ५ ६ मास तक उस भू भाग मे उत्कृष्ट सेना का पडाव रहा। मीर्जा (कामरान) सूझ बूझ के अभाव के कारण नित्य प्रति किसी न किसी कबीले का अतिथि होता तथा प्रत्येक रात्रि म किसी न किसी जमीदार के पास शरण लेता था। अपनी नीच प्रकृति के कारण वह अभिमान के आवरण मे छिपा रहा और (उसे) आश्रयदाता की सेवा एव सहायता करने के सौभाग्य से वञ्चित रहा तथा सर्वदा कुत्सित विचार एव असम्भव कल्पनाय किया करता था।

अकबर की शिकायत

उस समय बाह्य बातो पर दृष्टि रखने वाले एक समूह ने हजरत जहाबानी से हजरत शाहशाह की शिकायत लिखी। हजरत जहाँबानी ने हजरत शाहशाह के अन्त करण के प्रकाश से अवगत एव परिचित होने के बावजूद बाह्य बातो पर दृष्टि रखते हुए कृपा युक्त पत्र प्रेषित किया और उपदेश एव शिक्षायें लिखी, जिनका एकमात्र उद्देश्य पैतृक स्नेह तथा कृपा का प्रदर्शन था न कि चेतावनी देना एव उनको सावधान करना कारण कि दैवी पाठशाला के शिक्षितो को ससार वालो की शिक्षा की क्या आवश्यकता और ईश्वर द्वारा पालित को इन शिक्षा पत्रो की क्या जरूरत? उस कृपा-युक्त पत्र मे शेख निजामी[4] का यह शेर लिखा गया —

१ हमीदा बानो बेगम का पिता। वह सम्भवत अली अकबर भी कहलाता था।
२ सम्भवत बाबर की अफगान पत्नी बीबी मुबारका का भाई।
३ इससे पूर्व हुमायू ने प्रतिज्ञा की थी कि वह अकबर को अपने पास से पृथक न करेगा।
४ निजामी अथवा निजामी गजवी सम्भवत अथवा ६ काव्यों के प्रसिद्ध रचयिता थे। उनकी मृत्यु ११९४ ई० अथवा १२०९ ई० में हुई।

शेर

'असावधान होकर मत बैठ जा, यह खेल का समय नहीं,
यह कला (सीखने) एवं कार्य करने का समय है।'

अकबर के गुरु

वे सर्वप्रथम मुल्लाजादा मुल्ला इसामुद्दीन से शिक्षा ग्रहण करते थे। क्योंकि गुरु क कबूतरों से अत्यधिक रुचि थी अतः हजरत शाहंशाह की सम्मानित चौखट के सेवकों ने इ गुरु की शिकायत कर दी। हजरत जहाँबानी ने उसे पदच्युत कर दिया और वाह्य शिक्षा देने (३१७) की सेवा मौलाना बायजीद को प्रदान की। उसने इस सेवा के सम्बन्ध में प्रयत्न किया किन्तु संसार को शोभा प्रदान करने वाला विधाता, जिसने उसे विशेष रूप से शिक्षा दी थी, यह न चाहता था कि वे सांसारिक वाह्य ज्ञानों द्वारा कलंकित हों अतः उसने उनके हृदय को इस उद्देश्य से हटा कर उस ओर आकृष्ट न होने दिया। वाह्य बातों पर दृष्टि रखने वाले, शिक्षकों को अपराधी समझ कर उनकी शिकायत करते रहते थे। क्योंकि वे लोग हितैषी एवं सदाचारी थे अत उनके विरुद्ध शिकायतें स्वीकार न हुईं। यहां तक कि दैवी प्रेरणा के प्रकाश से हजरत जहाँबानी के हृदय में यह बात आई कि दैवी पाठशाला के उस विद्यार्थी की शिक्षा हेतु मुल्ला अब्दुल कादिर मुल्लाजादा मुल्ला इसामुद्दीन, एवं मौलाना बायजीद के नाम पर चिट्ठी निकाली जाय। यह सौभाग्य जिसके नाम निकल आये उसे गुरु-पद के लिए चुन कर इस सेवा का सौभाग्य प्रदान किया जाय संयोग से मौलाना अब्दुल कादिर के नाम की चिट्ठी निकली। मौलाना बायजीद के पदच्युत एवं मौलाना अब्दुल कादिर के इस सेवा पर नियुक्त होने के विषय में अनुल्लंघनीय फरमान निकाल गया।

अकबर द्वारा शिक्षा की ओर से उपेक्षा एवं अबुलफ़ज़ल की व्याख्यायें

तीव्र बुद्धि वालों से यह बात छिपी नहीं कि शिक्षक की नियुक्ति प्रथा एवं परम्परानुसार होती है न कि किसी को निपुण बनाने की दृष्टि से अन्यथा जिसकी बुद्धि को ईश्वर ने सवारा हो उसे किसी से शिक्षा प्राप्त करने एवं पाठ पढ़ने की क्या आवश्यकता? अत उनका पवित्र हृदय एवं पूज्य अन्तःकरण सांसारिक शिक्षा की ओर आकृष्ट न था। परम्परागत शिक्षा की ओर, हजरत शाहंशाह के प्रेरित न होने का कारण यह था कि परोक्ष के वरदान के प्रकाश के प्रकट होने के समय संसार वालों को ज्ञान हो जाय कि इस बादशाह का उत्कृष्ट ज्ञान शिक्षा-दीक्षा का आभारी नहीं। हजरत शाहंशाह उस समय जाहिरी सौभाग्य एवं वाह्य प्रताप के बाहुल्य से सुशोभित होकर अपनी आध्यात्मिक निपुणता की ओर से जान बूझ कर उपेक्षा करते और प्रायः खेल में व्यस्त रहते थे और रहस्यों के आवरण में सावधानी के ऐसे कार्य करते थे जो दूरदर्शी लोगों की समझ में आ जाते थे। इस कारण कि उनका साहस बड़ा ही उत्कृष्ट था अतः वे ज़ाहिरी महान् कार्यों को अपनी निपुणता का आवरण बनाये हुए थे। वे अपने हृदय को ऐसे कार्यों में लगाये रहते थे कि यद्यपि वाह्य लोगों की दृष्टि में उनके गुण प्रकट न होते थे किन्तु ज्ञानी लोग उन रहस्यों को समझ लेते थे।

ऊँटो, घोडो, कबूतरो एवं कुत्तो से रुचि

इस कारण वे सर्वदा ऊँट के विचित्र सृजन पर दृष्टि रख कर, दैवी शक्ति की विलक्षणता का निरीक्षण तथा ऊँट के आश्चर्यजनक रूप एव प्रवृत्ति का, जो इस भूभाग का सबसे बडा पशु होता है, अवलोकन किया करते थे। उसकी दरवेश रूपी प्रवृत्ति, भार उठाने, सहनशीलता, आत्म समर्पण एव आज्ञाकारिता पर चाहे उसकी नकेल किसी बालक के हाथ में ही क्यो न दे दी जाय, उसके काँटो का भोजन करने एव बिना जल के रहने पर खेल ही खेल में तथा बाह्य आवरण मे आध्यात्मिक दृष्टि डाला करते थे। इस प्रकार वे अपने ध्यान को अरबी घोडे की ओर, जो (३१८) राज्य के ऐश्वर्य के सर्वोच्च साधना मे है, आकृष्ट रखते थे और अपनी निपुणता एव बहिरग तथा अन्तरग के ज्ञान की गेंद को ईश्वर एव दैवी पोषण की सहायता के बल्ले से खेलते रहते थे। कभी दैवी ज्ञान के वायुमडल मे अपने साहस को उडाने के लिए उनके मग्न हृदय मे कबूतर बाजी की इच्छा हुआ करती थी और उनके अशान्त हृदय के आकर्षण हेतु वे कभी दाना छिडकते रहते थे। इन मुट्ठी भर पक्षो की बाल्य प्रसन्नता एव मूर्च्छा से वे आध्यात्मिक लाव की प्रसन्नताओ मे भाग लेने के लिए ईश्वर के पहुँचे हुए लोगो के दैवी साक्षात पर दृष्टि रखते थे। ऊँचाई पर उडने वाले इन पक्षियो की उडान से वे अपने हृदय को पवित्र आकाश की ओर लगा कर खेल ही खेल में ईश्वर की उपासना करते रहते थे। कभी वे कुत्तो को दौडा कर आनन्द प्राप्त करते थे। देखने में तो वह कुत्ता का खेल था किन्तु वास्तव मे वे अपनी आत्मा को शोभा प्रदान करते थे। इस प्रकार आध्यात्मिक रूप से वे अपने दरबार के उपस्थित लोगो का राज्य की सुव्यवस्था की ओर मार्ग-दर्शन करते थे। यद्यपि वे अज्ञानता के आवरण में दौड-धूप करते रहते थे और अपने आप को सांसारिक लोगो के वस्त्र मे प्रकट करते थे किन्तु सुगन्धि एव प्रकाश छिपा नही रह सकता। सर्वदा दैवी प्रकाश उनके भाग्यशाली ललाट से देदीप्यमान रहता था एव सांसारिक तथा आध्यात्मिक नेतृत्व के गुण ईश्वर के इस चुने हुए (महान् पुरुष) के प्रकाश-युक्त मुख से प्रकट होते रहते थे।

असावधान सेवको को अकबर द्वारा दड

एक दिन सफेद सग[1] नामक पहाडी के दामन मे वे शिकार खेल रहे थे और अपने प्रत्येक विश्वास-पात्र सेवक को दस आमय स शिकारी कुत्ते सौप दिए थे कि वे मार्ग रोक कर घात लगाए बैठे रहे[2]। कुछ लोगो को पर्वत के ऊपर नियुक्त कर दिया कि मृगो को हका कर मैदान में ले आयें। जब मृग आड के समीप पहुँचे तो जो लोग अपनी वासनाओ के कुत्ते के पजो में फसे थे, वे हजरत शाहंशाह की बाल्यावस्था पर दृष्टि रखते हुए भोजन मे व्यस्त रहे और उन्होने कुत्ता को समय पर न छोडा। जब उन्हे[3] घटना की वास्तविकता का पता चला तो आध्यात्मिक राज्य-व्यवस्था की

१ सम्भवत सफेद कोह। बाबर ने इसका उल्लेख इस प्रकार किया है नीनगनहार के दक्षिण में सफेद कोह है। यह पर्वत नीनगनहार और बगश को एक दूसरे से पृथक करता है। इस पर्वत पर सवार होकर यात्रा नहीं की जा सकती। इस पर्वत से ९ जल धारायें निकलती हैं। इस पर्वत को सफेद कोह कहने का कारण यह है कि इसकी बरफ कभी भी कम नहीं होती। इस पर्वत की तलहटियों में जरा भी बरफ नहीं गिरती। (बाबर नामा, पृ० १६)। यह उत्तरी अफगानिस्तान की प्रमुख पर्वत श्रृखला है जो ३४° उत्तर से ६९° ३०' पूर्व में फैली है।

२ 'तस्कावल बाशन्द'। सम्भवत तरकावल एव निदिलम का एक ही अर्थ है।

३ अकबर को।

शक्ति उत्तेजित हो गई और उन्होंने आदेश दिया कि उनकी गरदनों को कुत्तों की गरदनों के समान रस्सी से बाँध कर पूरे लश्कर में घुमाया जाय। वे आतंक की राजगद्दी पर इस प्रकार आरूढ़ हुए कि अनुभवी वृद्धों ने सचेत होकर आश्चर्य से अंगुली मुंह में दबा ली। जब हज़रत जहाँबानी को इस घटना का पता चला तो उनका पवित्र हृदय बड़ा प्रसन्न हुआ और उन्होंने कहा कि, "वे[1] शीघ्र ही भव्य राज्य को प्राप्त करके अनन्त तक स्थायी रहने वाले सौभाग्य द्वारा सम्मानित होंगे।"

अकबर का एक चमत्कार

शाहम ख़ाँ जलायर कहा करता था कि 'एक दिन हज़रत जहाँबानी ने दास को आदेश दिया कि जाकर समाचार लाओ कि प्रताप की बहार का वह पौधा क्या कर रहा है। जब मैं पहुँचा तो मैंने देखा कि वे आराम से सो रहे हैं। उनका देदीप्यमान मुख खिला हुआ है। बाह्य रूप से ऐसा ज्ञात होता है कि वे सो रहे हैं किन्तु वास्तव में वे आकाश के दरबार के उत्कृष्ट दरबारियों[2] से वार्तालाप कर रहे थे और कभी कभी उनका पवित्र हाथ उसी प्रकार हिलता जाता था, जैसा कि आध्यात्मिक लोगों की मूर्च्छा की अवस्था में होता है। कभी कभी वे उसी अवस्था में अपनी मोती बखेरने वाली वाणी से कहते कि, 'यदि ईश्वर ने चाहा तो मैं संसार के चुने हुए भाग (३१९) विजय कर लूँगा और सातों इक्लीमों के दरिद्रों की आवश्यकतायें पूरी करूँगा।" ख़ान कहा करता था कि "जब मैंने इस दशा का अवलोकन किया और यह बात मेरे सावधानी के कानों में पहुँची तो मैं आश्चर्यचकित और बुरी तरह भयभीत हो गया। मैं वहाँ खड़ा न रह सका। एक कोने में पहुँच कर भौचक्का हो गया। उन्होंने उसी प्रकार कई बार वह बात कही।"

अकबर का चापलूसों को उत्तर

उन दिनों में हज़रत शाहंशाह अपनी पूर्ण दूरदर्शिता एवं उच्च साहस के कारण यह व्यवहार करते थे कि जब कभी मूर्ख चापलूस जो अपने लाभ-हानि के अतिरिक्त किसी विषय पर दृष्टि न रखते थे अपितु अपना लाभ अपनी हानि में समझते थे, निवेदन करते कि, 'आप शीघ्र ही सातों इक्लीमों के बादशाह अथवा संसार के शासक हो जायेंगे तो वे बड़े अप्रसन्न होते थे और कहते थे कि, "ये लोग अपनी मूर्खता के कारण अपने आप को हितैषी बताते हैं। इन्हें निष्ठा के राज-प्रासाद की कोई सूचना भी नहीं। ये हज़रत जहाँबानी की मृत्यु की कुत्सित कल्पना करते हैं और मेरा साँसारिक लाभ मेरे धर्म की हानि में सोचते हैं और शान्ति के राज्य में विघ्न डाल कर षड्यन्त्र रच रहे हैं। यह पुत्र आध्यात्मिक एवं सांसारिक दृष्टि से कितना भाग्यशाली है, जो सर्वदा अपने सम्मानित पिता की खुशी के विषय में सोचता और तदनुसार आचरण करता रहे एवं उसके दीर्घायु होने की कामना किया करे। जो कोई खुदाये मजाज़ी[3] से सद्व्यवहार न करेगा, वह वास्तव में खुदाये हक़ीक़ी[4] से किस प्रकार सच्चाई से पेश आयेगा ?" बहिरंग एवं अन्तरंग की दृष्टि

१ अकबर।
२ फ़रिश्तों।
३ खुदा के समान किन्तु वास्तविक नहीं, पिता एवं गुरु को 'खुदाये मजाज़ी' मानते थे।
४ वास्तविक खुदा, ईश्वर।

से यह सम्मानित व्यक्ति[1] कितनी प्रशसनीय उत्तम बुद्धि, पवित्र प्रकृति एव सत्सकल्प का स्वामी है। सक्षेप मे, श्रेष्ठता एव सौभाग्य उनके आचार-व्यवहार से पूर्ण रूप से लक्षित थे। जो कुछ अनुभवी बुजुर्ग लोग सोच विचार एव प्रयत्न के फलस्वरूप प्राप्त करते एव सीखते हैं वह दैवी दृष्टि का यह पोषित साधारण से ध्यान से सीख गया था। प्रत्येक ज्ञान-विज्ञान जिसे विद्यार्थी एव अभ्यास करने वाले कठिनाई से समझ पाते थे, उन्हे यह दैवी शक्ति की मूर्ति बिना सोचे विचारे समझ लेता था। सल्तनत एव खिलाफत की दृष्टि के इस प्रकाश से, गूढ रहस्य युग की आशाओं के नेत्रो को प्रकाश-युक्त करते थे। वे इस दैवी प्रकाश के पोषित की बुद्धिमत्ता एव प्रतिभा का गुण-गान करते थे। अपनी खिलाफत के प्रकट होने[2] के समय तक नाना प्रकार के ये दृष्टात आवरण में रहे और वे इस आध्यात्मिक दुर्ग एव दैवी प्रतिरक्षा के अधीन अशुभचिन्तको के छल एव धूर्तता से सुरक्षित रह कर जीवन व्यतीत करते रहे।

हजरत जहाबानी जन्नत आशियानी का बेहसूद से अफगान कबीलो के विरुद्ध, जहाँ मीर्जा कामरान शरण लिये हुये था, प्रस्थान और उसका[3] हिन्दुस्तान की ओर पलायन

जब बेहसूद नामक स्थान पर शीत ऋतु समाप्त हो गई एव जाडे के आतक का अन्त हो गया और यह ज्ञात हो गया कि मीर्जा कामरान कुछ अफगान कबीलो के पास ठहरा हुआ है तो अधिकाश अमीरो ने यह मत व्यक्त किया कि अब मीर्जा में युद्ध एव मुकाबला करने की शक्ति नही (३२०) रही अत राज्य के हित में यह उचित होगा कि वे दरबार के कुछ हितैषियो एव निष्ठावान् अनुभवी व्यक्तियों को छोड कर काबुल चले जाये। दूरदर्शी लोगो के एक समूह ने निवेदन किया कि "क्योकि वायु सतुलित हो गई है अत यदि विजयी पताकायें प्रस्थान करे और अफगानो के कबीलो को नष्ट भ्रष्ट करें तो यह अवसर को देखते हुए नि सन्देह बडा उचित होगा। जिस समय तक अशुभ चिन्तको का यह समूह जो षड्यत्र एव फसाद की पूजी है, पूर्ण रूप से कुचल न दिया जाय, काबुल की ओर प्रस्थान करना उचित नही। मीर्जा कामरान भी, जो इन कबीलो में छिप जाता है और विरोध की सामग्री एकत्र करता रहता है, बन्दी बना लिया जायगा और अन्य षड्-यन्त्रकारियो के विद्रोह का भी समूलोच्छेदन हो जायगा।" हजरत जहाँबानी को यह परामर्श बडा ही महत्वपूर्ण ज्ञात हुआ। इस प्रस्ताव को वापसी पर प्राथमिकता देकर विजय एव सफलता की सामग्री के साथ वे सौभाग्य एव प्रताप के घोडे पर सवार हुए और दुष्ट कबीलो पर अचानक आक्रमण करके, पराजय की धूल शत्रुओ के सिरो पर उडा दी। पराक्रमी वीरो एव बहादुरो का एक समूह उदाहरणार्थ मुहम्मद खा जलायर, सुलतान मुहम्मद क़रावल, शेख बहलूल एव शाह कुली नारजी को

१ अकबर।
२ खलीफा होने।
३ मीर्जा कामरान का।

सुल्तान हुसेन रा के नेतृत्व में इस आशय से नियुक्त किया कि वे आगे प्रस्थान करें। उस रात्रि में बडी ठडी हवा चल रही थी। क्योंकि अधिक यात्रा करनी थी अत सैनिको एव परिजनो के आराम हेतु वे यात्रा के मध्य मे रुक गए और प्रात काल सवार होकर रवाना हुए।

मीर्ज़ा के ख़ेमे पर पादशाही सैनिकों का छापा

क्योंकि कबीले इधर उधर पडाव किए हुए थे, अत यह पता न चलता था कि मीर्ज़ा किस कबीले में है। इस अव्यवस्था में माहम अली कुली खा तथा बाबा खिजारी, जो मीर्ज़ा कामरान की ओर से मलिक मुहम्मद मदरावी के पास जा रहे थे, पादशाही अधिकारियों के हाथ में पड गए। मीर्ज़ा के विषय में पूछा गया कि वह किस कबीले में है। माहम अली ने पूछने वालो को बहका दिया और जिस कबीले मे मीर्ज़ा था, उसके अतिरिक्त अन्य कबीले का पता बता दिया। बाबा[1] ने कहा, "वह भयभीत हो गया है। इसे कुछ पता नहीं कि वह क्या कह रहा है। मीर्ज़ा अमुक कबीले में है। मैं आगे आगे चल कर मार्ग दिखा दूगा।" प्रात काल के पूर्व ही भाग्यशाली सेना, उस कबीले के समीप पहुँच कर लूट-मार में व्यस्त हो गई। एक बहुत बडी सख्या की हत्या कर डाली। षड्यन्त्रकारियों की स्त्रियो एव बालकों को बन्दी बना लिया। मीर्ज़ा जिस खेमे मे सो रहा था उसमें कुछ वीर प्रविष्ट हो गए। शाह कुली नारजी का यह दावा है कि उस खेमे मे प्रविष्ट होने वालो मे एक वह भी था। उस खेमे में दो व्यक्ति थे। उनमे से एक बन्दी बना लिया गया और दूसरा किसी न किसी प्रकार बाहर निकल गया। जब प्रात काल का प्रकाश फैला तो ज्ञात हुआ कि (३२१) जो व्यक्ति बन्दी बनाया गया वह बेग मुलूक था, जिसे मीर्ज़ा सर्वदा अपनी दृष्टि के समक्ष रखता था। मीर्ज़ा भाग चुका था।

मीर्ज़ा कामरान का हिन्दुस्तान की ओर पलायन

कुछ दुष्ट अफगान उदाहरणार्थ शेर यूसुफ करीनी, मलिक मसी इत्यादि युद्ध हेतु डट गए किन्तु अपमान की धूल अपने मुख पर मल कर भाग खडे हुए। उनकी धन सम्पत्ति राज्य के अधिकारियों को प्राप्त हो गई। भाग्यशाली पताकाओ के पहुँचने के पूर्व इतनी महान् विजय प्राप्त हो गई। मीर्ज़ा स्वय उस क्षेत्र मे न ठहर सका और हिन्दुस्तान की ओर चल दिया।

हुमायूं का बागे सफा में पडाव

जब (हजरत जहाँबानी का) सम्मानित हृदय विद्रोहियों एव पापियों को दड देने की ओर से मुक्त हो गया और ईश्वर की कृपा से एक आश्चर्यजनक विजय, जो (अन्य) विजयो की प्रस्तावना हो सकती थी, प्राप्त हो गई तो वे इस विजय के भू भाग से सफलतापूर्वक प्रस्थान करके बेहसूद नामक मजिल पर पहुँच गए। जब उन्हे विश्वास हो गया कि मीर्ज़ा उस दशा में, जो कृतघ्न लोगो के अनुकूल है, भाग कर हिन्दुस्तान की ओर चल दिया है, तो हजरत जहाँबानी ने उस

१ बाबा खिज़ारी।

मंजिल से प्रस्थान करके बागे सफा[1] में, जो दिलों की प्रसन्नता की शोभा की बहार एवं अन्तःकरण की चित्रशाला की चमक प्रदान करने वाला है, पड़ाव किया और ऐश्वर्य एवं वैभव की सभा को शोभा प्रदान की।

क्योंकि दिन बड़े हो रहे थे और बहार के ऐश्वर्य, उद्यानों की तरावट एवं हृदय को खोलने वाली नहरों की रमणीयता प्रारम्भ हो रही थी अतः उन्होंने (हज़रत जहाँबानी) ने विश्वास-पात्रों के एक समूह को अली कुली अन्दराबी के नेतृत्व में इस आशय से काबुल भेजा कि हज़रत शाहंशाह एवं बेगमों[2] को उनकी पवित्र सेवा में ले आयें ताकि नव-बहार के आश्चर्यजनक दृश्य का निरीक्षण एवं गुलाब के उद्यान के पृष्ठों का अध्ययन करके, अनादि काल के कलाकार की पहचान करें तथा कृतज्ञता की प्रस्तावना की नींव रक्खें[3]।

हुमायूं का काबुल पहुँचना

हज़रत जहाँबानी ने ईश्वर के असीम वरदान के प्रति, जो सच्चे विधाता की कृपाओं के आकर्षण का साधन है, कृतज्ञता प्रकट की। कुछ समय तक आनन्द मंगल में व्यस्त रहने के उपरान्त वे शुभ मुहूर्त में काबुल पहुँच गए।

हज़रत शाहंशाह का गज़नी की ओर प्रस्थान और उस भूभाग को अपने सम्मानित आगमन से दैवी उत्कर्ष प्रदान करना

क्योंकि हज़रत जहाँबानी हज़रत शाहंशाह के भाग्यशाली ललाट से नित्य प्रति नेतृत्व एवं सफलता का प्रकाश देखते रहते थे, अतः इस अवसर पर, जब युग को शान्ति प्राप्त हो चुकी थी, उन्होंने दैवी प्रेरणा से यह निश्चय किया कि खिलाफ़त की वाटिका के उस नए पौधे को (३२२) कुछ दिन के लिए बाह्य रूप में पृथक् कर दें ताकि उस उत्कृष्ट मोती के गौरव की परख भी हो जाय, और उनके हृदय की विशालता का पता भी चल जाय, और वे शासन प्रबन्ध का अभ्यास भी कर लें कारण कि बाल्यावस्था में उस वियोग के समय जो सावधानी को अपना पथ-प्रदर्शक बना कर समस्त बातों में बुज़ुर्गों के समान व्यवहार करे और अपनी श्रेष्ठता पर दृष्टि न डाल कर छोटों एवं दरिद्रों से न्यायपूर्वक व्यवहार करे और आध्यात्मिक मिलन को पर्याप्त समझ कर बाह्य रूप में दूर रहने के कारण दुखी न हो तो निःसन्देह वह व्यक्ति खिलाफ़त के उस अद्वितीय

१ इस उद्यान को बाबर ने सुल्तानपुर तथा ख्वाजा रुस्तम के मध्य में बनाया है। ख्वाजा रुस्तम का मकबरा जलाला-बाद के लगभग ३ मील पश्चिम में स्थित है। उसके दक्षिण पश्चिम में १½ मील पर "बागे सफा" स्थित है। बाबर ने इस उद्यान का उल्लेख हिन्दुस्तान के ५वें आक्रमण के प्रसंग में किया है। शुक्रवार १ सफर ९३२ हि० (१७ नवम्बर १५२५ ई०) को हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करके उसने ३ दिसम्बर १५२५ ई० में इस नवनिर्मित उद्यान में पड़ाव किया। (बाबर नामा, पृ० १३३ १३५)। यह उस उद्यान से भिन्न है जिसे बाबर ने भीरा के समीप साल्ट रेंज (नमक की पहाड़ियों) में लगवाया। (बाबर नामा, पृ० ६६)।

२ मूल में "मुख़द्देराते तुतुके इस्मत व मुख़द्देराते ख़्वाबगाहे इफ्फ़त"।

३ इसका तात्पर्य यह है कि 'हुमायूँ अकबर तथा बेगमों से भेंट करके और बहार का आनन्द उठा कर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करें'।

मोती का पात्र होगा। क्योकि उन गुणो का गौरव उनके ललाट से दृष्टिगत बताया जाता था अत ९५९ हिलाली[1] के प्रारम्भ (जनवरी १५५२ ई०) में हजरत शाहशाह को गजनी की ओर भेज दिया गया। अतगा या ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद एव मीर्जा हिन्दाल के समस्त सेवक इस शुभ अभियान मे भाग्यशाली रिकाब के अधीन थे। समस्त वाह्य प्रबन्ध ख्वाजा के सिपुर्द थ। वहाँ वे छ मास तक सावधानी एव प्रसन्नतापूर्वक समय व्यतीत करते रहे। क्योकि अन्तरग एव वहिरग सम्बन्धी पेशवाई उनके भाग्यशाली ललाट से प्रकट थी अत वे सदा ऐसे प्रशसनीय आचरण एव व्यवहार का प्रदर्शन करते रहते थे जो महान् अनुभवी वृद्धा द्वारा वृद्धावस्था में भी नही प्रदर्शित होते। (ऐसे व्यवहार का प्रदर्शन) उस उन्नत भाग्य एव प्रज्वलित हिम्मत के स्वामी द्वारा होता रहता था। वे सर्वदा सत्सकल्प द्वारा ईश्वर की उपासना करके दिलो को आकर्षित करते रहते थे।

सूफ़ी-सन्तो के प्रति अकबर की श्रद्धा

वे अपने सम्मानित ध्यान को सर्वदा टूटे हुए दिलो को जोडने में लगाये रहते थे और उस समूह को सतुष्ट करने का प्रयत्न किया करते थे जिन्हे एकान्तवास के नगर म अत्यधिक अधिकार प्राप्त रहता था और जो नैतिकता एव ईश्वर के ज्ञान की प्राप्ति हेतु कटि-बद्ध रह कर फक्र एव फना[2] के मार्ग पर अग्रसर रहते थे और ससार वालो के सुख दु ख, प्रशसा एव निन्दा से पृथक् होकर अपना सम्बन्ध उस अद्वितीय[3] से रखते थे। गजनी मे उन दिनो हक शिनास[4] मजजूबो[5] में बाबा बिलास[6], शुहूद[7] के समुद्र में डूबा हुआ सर्वदा ध्यान मग्न, एकान्त मे जीवन व्यतीत किया करता था। वे बार-बार उसके दर्शनार्थ जाते थे। पवित्रता के कारखाने में वह सत्य की खोज करने वाला हजरत शाहशाह के देदीप्यमान ललाट से अतरग एव वहिरग सम्बन्धी नेतृत्व का अध्ययन किया करता था और सासारिक एव आध्यात्मिक पादशाही की बधाई दिया करता था और उनके दीर्घायु होने एव उच्च सम्मान प्राप्त करने के सुखद समाचार पहुँचाया करता था।

हुमायू का घोडे से गिरना तथा अकबर को काबुल बुलाना

जब हजरत शाहशाह का पवित्र हृदय गजनी की सैर व शिकार स निश्चिन्त हो चुका तो वे ऐश्वर्य एव वैभव के केन्द्र हजरत जहाँबानी जन्नत आशियानी की ओर वापस हुए। उनके बुलवाये जाने का कारण यह था कि हजरत जहाँबानी सर्वदा काबुल में राज्य-व्यवस्था म सलग्न रहते थे और अपने सम्मानित समय का विभाजन करके, दिन रात का कोई क्षण व्यर्थ नष्ट न करते थे और न्याय एव टूटे हुए दिलो को जोडने तथा शासन प्रबन्ध के अतिरिक्त आनन्द-मगल एव दिल

१ चाद का (हिजरी)। अबुलफज़ल ने अपने ग्रथ में हिजरी के स्थान पर हिलाली भी लिखा है।
२ त्याग एव ईश्वर में लीन।
३ ईश्वर।
४ ज्ञानी।
५ वह सूफी सन्त जो देखने वालों की दृष्टि में पागल किन्तु वास्तव में ईश्वर में लीन रहता है।
६ उसके विषय में देखिये बायजीद की कृति का अनुवाद।
७ ईश्वर से साक्षात्।

बहलाने के लिए सैर व शिकार को भी जाया करते थे। एक दिन वे जमा[1] नामक काबुल के एक हृदय-ग्राही स्थान पर शिकार हेतु गए थे। दुर्भाग्यवश वे घोड़े से गिर पड़े और उनके पवित्र शरीर को अत्य-
(३२३) धिक चोट आई। इस कारण कि सावधानी सौभाग्य एवं सफलता की द्योतक है, उन्होंने सतर्कता एवं भविष्य पर दृष्टि रखते हुए हज़रत शाहंशाह के बुलवाने के सम्बन्ध में फरमान भेजा। उस पवित्र जन्म वाले के भाग्यशाली चरणों के आशीर्वाद से, जिसके चरणों में अत्यधिक सौभाग्य निहित है, हज़रत जहाँबानी पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गए।

हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी की पवित्र सेना का बगश की ओर प्रस्थान, विद्रोहियों को दंड, हिन्दुस्तान की ओर संकल्प की पताका बुलन्द करना, मीर्ज़ा कामरान का बन्दी बनाया जाना, काबुल की ओर वापसी एवं अन्य घटनायें

९५९ हि० के अन्त (नवम्बर १५५२ ई०) में हज़रत जहाँबानी ने बगश[2] की ओर जो काबुल वालों के लिए शीत ऋतु व्यतीत करने का स्थान है प्रस्थान करने का संकल्प किया। इस अभियान का उद्देश्य उस प्रदेश के विद्रोहियों का दमन एवं विजयी सेना में सैनिकों की भरती भी था। परोक्ष की विजयों का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उन्होंने अनादि काल की निपुणता के प्रतीक हज़रत शाहंशाह को इस अभियान में सौभाग्य की भाँति अपने साथ ले लिया और गिरदीज़[3] एवं बगश की ओर प्रस्थान किया। विद्रोही अफगानों के समूहों को उचित रूप से दंड दिया गया और धन-सम्पत्ति विजयी सेना के अधिकार में आ गई। सर्व प्रथम अब्दुर्रहमानी कबीले को और अन्त में बरमज़ीदी कबीले का दमन किया गया। फतह शाह अफग़ान, जो मूर्खता के कारण अपने आप को बुद्धिमान् समझ कर अन्य लोगों को पथ-भ्रष्ट किया करता था, सम्मानित बादशाही सेना के भय से अपने आदमियों सहित भाग खड़ा हुआ। मुनइम खाँ एक बहुत बड़ी सेना सहित जलालाबाद से उत्कृष्ट सेना की ओर आ रहा था। फतह शाह की उससे मुठभेड़ हो गई। उसकी समस्त धन-सम्पत्ति इन भाग्यशालियों को प्राप्त हो गई। वह घायल हो कर भाग गया।

आदम गक्खर का मीर्ज़ा कामरान के विषय में पत्र

हत्याकांड एवं लूट मार के समय गक्खरों के समूह के सरदार सुल्तान आदम गक्खर के वकील[4] उसका प्रार्थना-पत्र लाये। उन्हें दरबार में उपस्थित होने का सम्मान प्रदान किया गया। पत्र में लिखा था कि "मीर्ज़ा कामरान बड़ी व्याकुलता एवं चिन्ता की अवस्था में इस दिशा में आया

१ सम्भवतः जमरूद, काबुल के पूर्व में।
२ काबुल का एक तूमान। (बाबर नामा, पृ० २७)। बगश के सम्बन्ध में बाबर नामा के पृ० १७, १६, ५१, १०१ भी देखिये।
३ काबुल के कुर्रम तूमान के दामनों का मुख्य स्थान। (बाबर नामा, पृ० ७७)।
४ प्रतिनिधि।

है। चूँकि मैं निष्ठावान् होने का दावा करता हूँ अत यह नही चाहता कि मीर्जा इधर-उधर मारा मारा फिरता रहे। यदि इस क्षेत्र मे भाग्यशाली शिविर लग जायें तो मैं उसे फर्श चूमने के सम्मान द्वारा सम्मानित करके भाग्यशाली चौखट का सेवक बना दूगा ताकि वह अपने पिछले पापो का प्रायश्चित कर सके। मैं स्वय भी दासता की प्रथाओ का पालन करूँगा।'

गक्खर

यह बात छिपी न रहनी चाहिए कि गक्खर लोग अनेक समूहो मे विभाजित हैं और बेहत[1] एव सिन्ध नदी के मध्य में निवास करते हैं। सुल्तान जैनुल आबेदीन[2] कश्मीरी के राज्यकाल में, काबुल के हाकिम के अधीनस्थ गजनी के मलिक किद नामक एक अधिकारी ने उस स्थान को (३२४) कश्मीरियो से जबरदस्ती छीन लिया। उसके उपरान्त उसका पुत्र मलिक कला अपने पिता का उत्तराधिकारी बना। उसके बाद उसका पुत्र बीर अपने समूह का नेता हुआ। तत्पश्चात् तातार अपने कबीले का प्रबन्धक बना। शेर खा अफगान एव उसके पुत्र सलीम खा से उसका घोर सघर्ष रहा। वह अपने आप को इस वश से सम्बन्धित समझता था कारण कि जिस समय हजरत गेती सितानी फिरदौस मकानी ने हिन्दुस्तान विजय किया उसने उनकी सेवा मे उपस्थित होकर उचित सेवायें सम्पन्न की विशेष रूप से राणा साँगा के युद्ध में बडा पराक्रम दिखाया था। उसके दो पुत्र थे, सुल्तान सारग एव सुल्तान आदम। सारग के उपरान्त उस समूह का नेता सुल्तान आदम हुआ। सारग के पुत्र कमाल खा एव सईद खा गक्खर षड्यत्र रचा करते थे।

मीर्जा कामरान का पत्र

सक्षेप मे सुल्तान आदम गक्खर के राजदूत के साथ जोगी खा ने जो मीर्जा कामरान का बहुत बडा विश्वासपात्र था धरती चुम्बन करके, मीर्जा का प्रार्थना पत्र जिसमे अत्यधिक चिकनी चुपडी बाते लिखी थी, प्रस्तुत किया।

बुद्धिमत्ता के इस सग्रह के लेखक अबुल्फजल का, जो इस उत्कृष्ट वश का इतिहास लिख रहा है, उद्देश्य हजरत शाहशाह के भाग्यशाली इतिहास का वर्णन है किन्तु इस सम्मानित कथा के प्यासो की तृप्ति करने के लिए वह आदम से लेकर इस समय तक का जो विश्व के उत्तराधिकारी का युग है विवरण लिख रहा है। इस सम्बन्ध मे मीर्जा कामरान की असफलताओ एव उस दुर्दशा का हाल लिख देना परमावश्यक है जो उसे अपने दुराचार के कारण भोगना पडा। यद्यपि इस प्रकार की घटनायें इस इतिहास मे लिखने योग्य नही किन्तु वृत्तात को पूरा करने के उद्देश्य से ऊँच नीच सभी का उल्लेख करना परमावश्यक है।

१ झेलम।

२ कश्मीर के सुल्तान सिकन्दर का पुत्र जो १४२३ ई० में सिहासनारूढ हुआ। यह बडा ही उदार शासक था और कश्मीर के राजनैतिक, सामाजिक एव आर्थिक जीवन में उसने बडे सुधार कराये। उसके विषय में देखिये कश्मीर के सुल्तानो से सम्बन्धित आधार भूत सामग्री का अनुवाद—रिजवी उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग २ (अलीगढ १९५९ ई०), पृ० ५१६ ५२२ (तबकाते अकबरी भाग ३, पृ० ४३५ ४४६)।

मीर्ज़ा कामरान का सलीम शाह सूर के पास पहुँचना

परोक्ष की इन घटनाओ के, जिनमे से प्रत्येक पवित्र मिम्बर[1] का प्रवचन है, श्रोताओ से यह बात छिपी न रहनी चाहिए कि जब मीर्ज़ा कामरान उस दिन प्रातःकाल जैसा कि उल्लेख हो चुका है, पराजित होकर अत्यधिक प्रयत्न के उपरान्त पक्तियो का सहार करने वाली तलवारो से मुक्त होकर भागा तो फिर वह किसी एक स्थान पर न ठहर सका। बुद्धि के भ्रष्ट हो जाने के कारण, जो कृतघ्नता का परिणाम है एव इतने अधिक दुर्भाग्यो के बावजूद जिनमें से हर एक सौभाग्य के सन्मार्ग का मार्ग-दर्शक हो सकती थी, वह अपने आप को इस प्रकार के दानी एव दयालु बादशाह की सेवा मे न पहुँचा सका। उस अवसर पर जब कि लज्जा एव अपमान की धूल उसके मुख पर बैठी हुई थी उसे चाहिये था कि पश्चाताप प्रकट करते हुए विनय-पूर्वक अपने आपको चौखट के चुम्बन द्वारा सम्मानित करता और अपने अपराधो के प्रति क्षमा याचना करता किन्तु उसने दुर्भाग्य-वश हिन्दुस्तान की ओर शेर खा के पुत्र सलीम खा से, जो अपनी स्वाभाविक कृतघ्नता के कारण असावधानी की मदिरा एव अभिमान के नशे में पागल हो रहा था, अपने पतन हेतु कुमक मागना निश्चय किया। ईश्वर को धन्य है! यह कौन सी बुद्धि है कि अपने जानी दुश्मन के पास इस आशय से पहुँचा जाय कि ऐसे मित्र को नष्ट कराये। इतना बडा अपमान स्वीकार करके उसके (३२५) पास यह इच्छा लेकर जाय कि उसकी सहायता से अपने आश्रयदाता से युद्ध किया जा सके।

सक्षेप में, मीर्ज़ा (कामरान) अपनी अल्पदर्शिता के कारण यह सकल्प करके थोडे से लोगो सहित हिन्दुस्तान की ओर चल दिया। सँवर के समीप से शाह बुदाग खा को सलीम खा के पास भेज दिया। वह उस समय पजाब के अधीनस्थ बन[2] नामक कस्बे के समीप था। मीर्ज़ा का दूत वहाँ पहुँचा और सदेश पहुँचाया। सलीम खा ने मीर्ज़ा के उद्देश्य की पूर्ति अपनी शक्ति से बाहर समझ कर, उससे सौजन्यपूर्ण व्यवहार किया, और थोडा सा व्यय उसके हाथ प्रेषित किया और यह कहलाया कि "वह उसी क्षेत्र मे प्रतीक्षा करता रहे, मैं पीछे से कुमक भेजता हूँ, और खजाना निश्चित किया जा रहा है।" अभी दूत मीर्ज़ा के पास पहुँचा भी न था कि अली मुहम्मद अस्प को भी उसने सलीम खा के पास भेजा। उसका सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि जब मीर्ज़ा बन के पास चार कोस पर पहुँच गया तो सलीम खा ने अपने पुत्र आवाज खा, मौलाना अब्दुल्लाह सुल्तानपुरी[3] एव अमीरो के एक समूह को स्वागतार्थ भेजा और परिणाम पर दृष्टि

१ मस्जिद का मंच।

२ अर्सकिन के अनुसार 'बाव'। सम्भवत यह बन्नू प्रदेश का बन है और थोर्नन के मान चित्र पर दर्शाया गया है। यह एडवर्ड्साबाद के दक्षिण में है। रैवर्टी ने सियालकोट के उत्तर पूर्व में १६ मील पर और जम्मू के दक्षिण-पश्चिम में ८ मील पर बन नामक एक स्थान की चर्चा की है। उसे चनाब नदी के पूर्वी तट पर स्थित बताया है। (बेवरिज, पृ० ६००)।

३ हुमायूँ ने उसे मख्दूमुल मुल्क की उपाधि देकर शैखुल इस्लाम नियुक्त कर दिया था। सुल्तान सलीम के राज्य काल में भी उसे बडा महत्व प्राप्त था और अपनी धर्मान्धता के कारण वह किसी अन्य के दृष्टि-कोण को समझने का प्रयत्न न करता था और महदवियों एवं शीओं पर उसने बडे-बडे अत्याचार किये। अकबर के राज्य काल के प्रारम्भ में भी उसे अत्यधिक अधिकार प्राप्त थे। किन्तु बाद में उसे अकबर ने जबरदस्ती हज के

है। चूंकि मैं निष्ठावान् होने का दावा करता हूँ अत यह नही चाहता कि मीर्जा इधर उधर मारा मारा फिरता रहे। यदि इस क्षेत्र मे भाग्यशाली शिविर लग जायें तो मैं उसे फर्श चूमने के सम्मान द्वारा सम्मानित करके भाग्यशाली चौखट का सेवक बना दगा ताकि वह अपने पिछले पापो का प्रायश्चित कर सके। मैं स्वय भी दासता की प्रथाओ का पालन करूँगा।

गक्खर

यह बात छिपी न रहनी चाहिए कि गक्खर लोग अनेक समूहो मे विभाजित है और बेहत[1] एव सिन्ध नदी के मध्य में निवास करते हैं। सुल्तान जैनुल आबेदीन[2] कश्मीरी के राज्यकाल में, काबुल के हाकिम के अधीनस्थ गजनी के मलिक किद नामक एक अधिकारी ने उस स्थान को (३२४) कश्मीरियो से जबरदस्ती छीन लिया। उसके उपरान्त उसका पुत्र मलिक कला अपने पिता का उत्तराधिकारी बना। उसके बाद उसका पुत्र बीर अपने समूह का नेता हुआ। तत्पश्चात तातार अपने भतीजे का प्रबन्धक बना। शेर खा अफगान एव उसके पुत्र सलीम खा से उसका घोर सघर्ष रहा। वह अपने आप को इस वश से सम्बन्धित समझता था कारण कि जिस समय हज़रत गेती सितानी फिरदौस मकानी ने हिन्दुस्तान विजय किया उसने उनकी सेवा मे उपस्थित होकर उचित सेवायें सम्पन्न की विशेष रूप से राणा सागा के युद्ध में बडा पराक्रम दिखाया था। उसके दो पुत्र थे सुल्तान सारग एव सुल्तान आदम। सारग के उपरान्त उस समूह का नेता सुल्तान आदम हुआ। सारग के पुत्र कमाल खा एव सईद खा गक्खर षड्यत्र रचा करते थे।

मीर्जा कामरान का पत्र

सक्षेप में सुल्तान आदम गक्खर के राजदूत के साथ जोगी खा ने जो मीर्जा कामरान का बहुत बडा विश्वासपात्र था धरती चुम्बन करके मीर्जा का प्रार्थना पत्र जिसमें अत्यधिक चिकनी चुपडी बातें लिखी थी प्रस्तुत किया।

बुद्धिमत्ता के इस सग्रह के लेखक अबुल्फज्ल का जो उस उत्कृष्ट वश का इतिहास लिख रहा है उद्देश्य हज़रत शाहशाह के भाग्यशाली इतिहास का वर्णन है किन्तु इस सम्मानित वश के प्यासो को तृप्त करने के लिए वह आदम से लेकर इस समय तक का जो विश्व के उत्तराधिकारी का युग है विवरण लिख रहा है। इस सम्बन्ध मे मीर्जा कामरान की असफलताओ एव उस दंड का हाल लिख देना परमावश्यक है जो उसे अपने दुराचार के कारण भोगना पडा। यद्यपि इस प्रकार की घटनायें इस इतिहास मे लिखने योग्य नही किन्तु वृत्तान्त को पूरा करने के उद्देश्य से ऊँच नीच सभी का उल्लेख करना परमावश्यक है।

१ झेलम।

२ कश्मीर के सुल्तान सिकन्दर का पुत्र जो १४२३ ई० में सिहासनारूढ हुआ। वह बडा ही उदार शासक था और कश्मीर के राजनैतिक, सामाजिक एव आर्थिक जीवन में उसने बडे सुधार कराये। उसके विषय में देखिये कश्मीर के सुल्तानो से सम्बन्धित आधार भूत सामग्री का अनुवाद—रिज़वी उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग २ (अलीगढ १९५९ ई०), पृ० ५१६-५२२ (तबकाते अकबरी भाग ३, पृ० ४३५-४४६)।

मीर्जा कामरान का सलीम शाह सूर के पास पहुँचना

पराक्ष की इन घटनाओं के, जिनमें से प्रत्येक पवित्र मिम्बर[1] का प्रवचन है, श्रोताओं से यह बात छिपी न रहनी चाहिए कि जब मीर्जा कामरान उस दिन प्रातःकाल जैसा कि उल्लेख हो चुका है, पराजित होकर अत्यधिक प्रयत्न के उपरान्त पंक्तियों का संहार करने वाली तलवारों से मुक्त होकर भागा तो फिर वह किसी एक स्थान पर न ठहर सका। बुद्धि के भ्रष्ट हो जाने के कारण, जो कृतघ्नता का परिणाम है एवं इतने अधिक दुर्भाग्यों के बावजूद जिनमें से हर एक सौभाग्य के सन्मार्ग का मार्ग दर्शक हो सकती थी, वह अपने आप को इस प्रकार के दानी एवं दयालु बादशाह की सेवा में न पहुँचा सका। उस अवसर पर जब कि लज्जा एवं अपमान की धूल उसके मुख पर बैठी हुई थी उसे चाहिये था कि पश्चाताप प्रकट करते हुए विनय-पूर्वक अपने आपको चौखट के चुम्बन द्वारा सम्मानित करता और अपने अपराधों के प्रति क्षमा-याचना करता किन्तु उसने दुर्भाग्य-वश हिन्दुस्तान की ओर शेर खा के पुत्र सलीम खा से, जो अपनी स्वाभाविक कृतघ्नता के कारण असावधानी की मदिरा एवं अभिमान के नशे में पागल हो रहा था, अपने पतन हेतु कुमक मांगना निश्चय किया। ईश्वर को धन्य है! यह कौन सी बुद्धि है कि अपने जानी दुश्मन के पास इस आशय से पहुँचा जाय कि ऐसे मित्र को नष्ट कराये। इतना बड़ा अपमान स्वीकार करके उसके (३२५) पास यह इच्छा लेकर जाय कि उसकी सहायता से अपने आश्रयदाता से युद्ध किया जा सके।

संक्षेप में, मीर्जा (कामरान) अपनी अल्पदर्शिता के कारण यह संकल्प करके थोड़े से लोगों सहित हिन्दुस्तान की ओर चल दिया। खैबर के समीप से शाह बुदाग खा को सलीम खा के पास भेज दिया। वह उस समय पंजाब के अधीनस्थ वन[2] नामक कस्बे के समीप था। मीर्जा का दूत वहाँ पहुँचा और संदेश पहुँचाया। सलीम खा ने मीर्जा के उद्देश्य की पूर्ति अपनी शक्ति से बाहर समझ कर, उससे सौजन्यपूर्ण व्यवहार किया, और थोड़ा सा व्यय उसके हाथ प्रेषित किया और यह कहलाया कि "वह उसी क्षेत्र में प्रतीक्षा करता रहे, मैं पीछे से कुमक भेजता हूँ, और खजाना निश्चित किया जा रहा है।" अभी दूत मीर्जा के पास पहुँचा भी न था कि अली मुहम्मद अस्प को भी उसने सलीम खा के पास भेजा। उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि जब मीर्जा वन के पास चार कोस पर पहुँच गया तो सलीम खा ने अपने पुत्र आवाज खा, मौलाना अब्दुल्लाह सुल्तानपुरी[3] एवं अमीरों के एक समूह को स्वागतार्थ भेजा और परिणाम पर दृष्टि

१ मस्जिद का मंच।

२ अर्सकिन के अनुसार 'बाव'। सम्भवतः यह बन्नू प्रदेश का बैन है और थोवन के मान चित्र पर दर्शाया गया है। यह एडवर्डसाबाद के दक्षिण में है। रैवर्टी ने मियानकाट के उत्तर-पूर्व में १९ मील पर और जम्मू के दक्षिण पश्चिम में ८ मील पर बन नामक एक स्थान की चर्चा की है। उसे चनाव नदी के पूर्वी तट पर स्थित बताया है। (बेवरिज, पृ० ६००)।

३ हुमायूँ ने उसे मख्दूमुल मुल्क की उपाधि देकर शेखुल इस्लाम नियुक्त कर दिया था। सुल्तान सलीम के राज्य काल में भी उसे बड़ा महत्व प्राप्त था और अपनी धर्मान्धता के कारण वह किसी अन्य के दृष्टि-कोण को समझने का प्रयत्न न करता था और महदवियों एवं शीओं पर उसने बड़े-बड़े अत्याचार किये। अकबर के राज्य काल के प्रारम्भ में भी उसे अत्यधिक अधिकार प्राप्त थे। किन्तु बाद में उसे अकबर ने जबरदस्ती हज को

न रखने वाले मीर्जा ने अफ़गानों के उस नेता से इस प्रकार भेंट की जो शत्रुओं तथा कुत्तों के लिए भी उपयुक्त नहीं। मीर्जा के साथ बाबा चोचक, मुल्ला शफाई, बाबा सईद किचाक, शाह बुदाग, आलम शाह, रहमान कुली खा, सालेह दीवाना, हाजी यूसुफ, अली मुहम्मद अस्प, तिमुर ताश, गालिब खा, अब्दाल कोका एवं युग के मारे हुए अन्य बहुत से आदमी थे जिनका नाम न लेना ही अच्छा है। चूंकि उपकार न मानने वालों के कार्यों एवं कृतघ्नों की योजनाओं में तथ्य नहीं होता और उनका परिणाम अच्छा नहीं होता अतः इस समूह को जिस बात का भी सामना करना पड़ा वह उनकी कुकृतियों का फल था। मीर्जा इस मूर्ख समूह[१] के दुर्व्यवहार के कारण बड़ा खिन्न था और सर्वदा शाह बुदाग को जिसने उसे (सलीम खा के पास) जाने के लिए प्रेरित किया था, एकान्त में फटकारता रहता था।

सलीम खां द्वारा मीर्जा कामरान को बन्दी बनाने का प्रयत्न

जब सलीम खा पंजाब के शासन के विषय में सन्तुष्ट हो गया तो उसने देहली की ओर प्रस्थान कर दिया। मीर्जा (कामरान) को, जिसे वह निगरानी में रखता था और सर्वदा विदा करने के विषय में कहा करता था किन्तु उसकी कोई व्यवस्था न करता था, झूठे वचन देकर अपने साथ ले लिया। उसका विचार था कि उसे हिन्दुस्तान के किसी दृढ़ किले में बन्दी बना दे। मीर्जा ने कुमक की प्राप्ति से निराश होकर एवं वहाँ से निकलने की आशा त्याग कर जब यह समझ लिया कि क्या मामला है, तो भाग जाना निश्चय कर लिया। जोगी खा को, जो उसका विश्वास पात्र था, राजा बक्खू के पास, जो माछीवारा से १२ कुरोह पर था, भेज कर सहायता के द्वार खटखटाये[२]। राजा ने दूत से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करके, मीर्जा को शरण देने का आश्वासन दिलाया।

मीर्जा कामरान का पलायन

एक दिन जब सलीम खा ने माछीवारा नदी पार कर ली तो मीर्जा (कामरान) ने अपने सोने के समय के वस्त्र यूसुफ आफ़्ताबची को पहना कर बाबा सईद से निश्चय किया कि (३२६) वह देर तक कुछ पढ़ता[३] रहे ताकि लोग समझें कि मीर्जा सो रहा है। वह स्वयं वस्त्र बदल कर और अपने मुख पर बुर्का डाल कर सरापर्दे की ओर से बाहर निकला और उसने अपने छिपने के लिए जो स्थान निश्चय किया था वहाँ भाग खड़ा हुआ। राजा ने उसका भली भाँति स्वागत किया। जब उसने यह सुना कि मीर्जा की खोज में एक सेना आ रही है तो उसने उसे कहलूर के राजा के पास, जिसका महाल उस दिशा में सबसे अधिक दृढ़ था भेज दिया। उसने भी अपने शत्रुओं के भय से मीर्जा को मार्ग दर्शक देकर जम्मू भेज दिया। जम्मू के राजा ने जमींदाराना सूझ बूझ के कारण उसे अपने राज्य में प्रविष्ट न होने दिया। मीर्जा परेशान एवं चिन्तित मानकोट की विलायत की ओर रवाना हुआ।

लिये मक्का भिजवा दिया। वहाँ से लौटने के उपरान्त ९६० हि० (१५५२ ई०) में गुजरात में उसकी मृत्यु हो गई। (मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी मुंतख़बुत्तवारीख भाग ३, पृ० ७०-७२)।

१ अफ़गानों।

२ सहायता की याचना की।

३ सम्भवतः दुआओं का पाठ करता रहे।

सान्त्वना देकर उसे सेवा में ले आए। मीर्ज़ा को भी कुछ सदेश, जो उसका पथ-प्रदर्शन कर सकते थे, प्रेषित किए। मुनइम खा को आदेश दिया गया कि वह उनके दिल की बात का उनके व्यवहार से पता लगा कर, वास्तविक स्थिति के विषय में निवेदन करे। मुनइम खा ने पहुँच कर अपनी योग्यता का कारनामा प्रकट किया और उसके बहलाने फुसलाने से सुल्तान आरम ने मीर्ज़ा (काम-रान) सहित परहाला में अभिवादन किया। हजरत जहाँबानी ने जश्न का आयोजन कराया जो रात भर चलता रहा। मीर्ज़ा कामरान इतने अपराधों के बावजूद, जिनमें से प्रत्येक पर कठोर दड दिया जा सकता था, नाना प्रकार की कृपाओं द्वारा सम्मानित हुआ।

अमीरों द्वारा मीर्ज़ा कामरान की हत्या का आग्रह

समस्त हितैषी अमीरों एव शुभ-चिन्तक बुद्धिमानों ने निवेदन किया कि यद्यपि हजरत जहाँबानी के उत्कृष्ट स्वभाव एव दया की दृष्टि के यह अनुकूल है कि बडे बडे अपराध सम्मानित दरबार में क्षमा के वस्त्र धारण कर ले किन्तु दूरदर्शिता एव सावधानी की दृष्टि से यह परमावश्यक है कि मनुष्यों को कष्ट देने वाले निष्ठुर को उसकी कुकृतियों के अनुसार दड दिया जाय ताकि उसकी दुष्टता की धूल से ससार वालों का मुख मुक्त रह सके। बुद्धिमत्ता एव दूर-दर्शिता की दृष्टि से यह परमावश्यक है कि एक व्यक्ति के जाहिरी आराम को, जो कि शत्रु है, असख्य लोगों के आराम पर जो निष्ठा के सौभाग्य द्वारा सुशोभित हैं, प्राथमिकता न दी जाय। यदि टूटे हुए दिलों को जोडने एव घायलों के घावों को भरने के लिए विशेष रूप से ऐसी अवस्था में जब कि उसमें सहस्रो कार्यों के हित निहित हैं एक अत्याचारी का खोटा अस्तित्व ससार की चित्र-शाला से मिटा दिया जाय तो न्यायकारिता की दीवार को कोई हानि न होगी, इस झूठे चित्र को मिटा देना दैवी इच्छा एव पूर्ण सुव्यवस्था के अनुकूल होगा। उसने ऐसे षड्-यत्र नही रचे हैं और ऐसी कृतघ्नतायें नही की हैं कि यह आशा की जाय कि वह ठीक हो जायगा और उसके कृत्य को अकृत्य मान लिया जाय। उसकी दुष्टता अनुमान के परे हो चुकी है। अब उन्हे सहन नही किया जा सकता। अब उसके तथा सर्व साधारण के हित की दृष्टि से यही उचित है कि उसे परलोकगामी कर दिया जाय ताकि प्राणी सहसा कष्टों से मुक्त हो जायें और उसकी कृतियों की पजिका और अधिक काली न हो, कारण कि दीर्घकाल से इस दुष्ट के षड्यत्र के कारण लोगों की धन-सम्पत्ति नष्ट हो रही है और वे नाना प्रकार के कष्टों का शिकार हो रहे हैं। ससार वालों की सम्पत्ति एव इज्जत हवा में उड चुकी है और इतने आद-मियों के प्राण मिट्टी में मिल चुके हैं। निष्ठा का रत्न, जो सम्मानित लोगों के गुणों की ग्रीवा (३२८) का आभूषण है, बरबाद हो चुका है। इस समय यह उचित है कि ऐसे व्यक्ति की उद्दडताओं के चगुल से लोगों को मुक्ति दिला दी जाय और सर्व साधारण को न्याय की छाया में शान्ति प्रदान की जाय।

मीर्ज़ा कामरान को अंधा कर दिये जाने का आदेश

हजरत जहाँबानी साधनों के स्रष्टा की बुद्धिमत्ता एव रहस्यों पर दृष्टि डालते हुए इस विषय में कोई कार्य न करना चाहते थे कारण कि उस ससार को शोभा देने वाले स्रष्टा[1]

१ ईश्वर।

ने, इतनी महान् शक्ति के बावजूद ऐसे व्यक्ति को जीवित रक्खा। इसका कोई न कोई कारण एवं रहस्य होगा। इन गम्भीर विचारों के अतिरिक्त हज़रत गेती सितानी फ़िरदौस मकानी के उपदेश उनकी तथ्य का अवलोकन करने वाली दृष्टि के समक्ष थे, और वे यह पाप न करना चाहते थे। अमीर लोगों ने जो उस धृष्ट निष्ठुर द्वारा नाना प्रकार के रक्तपात एवं षड्यन्त्र देख चुके थे, पुनः निवेदन एवं आग्रह किया और इस विषय में मुफ़्तियों[1] की मुहर के फ़तवे[2] एवं धर्म तथा राज्य के प्रतिष्ठित लोगों तथा मुल्ला एवं मिल्लत[3] के महान् व्यक्तियों के महज़र[4] पवित्र दृष्टि के समक्ष प्रस्तुत किए। हज़रत जहाँबानी ने उन्हें मीर्ज़ा कामरान के पास भिजवा दिया। मीर्ज़ा ने जब अपने नामये आमाल[5] एवं बुराइयों के महज़र का अध्ययन करके यह कहला भेजा कि "जिन लोगों ने आज मेरी हत्या (के पत्र) पर मुहर लगाई है, उन्होंने मुझे इस दिन को पहुँचाया है" तो हज़रत जहाँबानी को दया आ गई। उन्होंने सभी के आग्रह एवं इतने अधिक कारणों के बावजूद उसकी हत्या का आदेश न दिया और बहुत देर तक सोचते रहे। अन्ततोगत्वा सर्व साधारण के हित तथा उसकी भलाई के उद्देश्य से उन्होंने यह आदेश दिया कि उसे दृष्टि से वंचित कर दिया जाय[6]।

मीर्ज़ा कामरान को अंधा बनाया जाना

इस आज्ञा के पालन हेतु अली दोस्त बारबेगी[7], सैयिद मुहम्मद पकना एवं गुलाम अली शश अंगुश्त[8] नियुक्त हुए। ये लोग मीर्ज़ा के खेमे में पहुँचे। मीर्ज़ा ने सोचा कि वे उसकी हत्या हेतु आ रहे हैं। तत्काल मुक्का तान कर दौड़ा। अली दोस्त ने कहा, 'मीर्ज़ा धैर्य धारण करो। हत्या का आदेश नहीं है। घबराहट किस कारण है? इस कारण कि तुमने इसके पूर्व सैयिद अली[9] एवं एक अन्य समूह को निरपराध अंधा कर दिया अतः न्यायानुसार अब अपने नेत्रों द्वारा उसका प्रतिकार देखो[10]।" मीर्ज़ा ने यह बात सुन कर हज़रत जहाँबानी के आदेश को नेत्रों से स्वीकार किया और लेट गया। सलाई फेर दी गई। मीर्ज़ा के दोनों नेत्र जो षड्यन्त्रकारी हृदय के द्वारपाल थे, ज्योति से वंचित कर दिए गए। इन निष्ठावानों ने शाही आदेश के प्रति सावधानी की दृष्टि से अधिक नश्तर लगा दिये। मीर्ज़ा ने प्राण बच जाने की कृतज्ञता के कारण दम न मारा। हज़रत जहाँबानी अपनी स्वाभाविक कृपा के कारण रो कर आगे बढ़ गये। उन्होंने कृपा-युक्त बहुत सी बातें तथ्य का निरूपण करने वाली अपनी जिह्वा से कहीं। यह घटना ९६० हि० में

१ वह अधिकारी जो शरीअत (इस्लामी धर्म-विधान) के अनुसार विभिन्न समस्याओं के विषय में फ़तवे दे।
२ मुफ़्ती का मत अथवा निर्णय, व्यवस्था।
३ धर्म।
४ कोई इक़रार-नामा अथवा दस्तावेज़ जिस पर साक्षियों की मुहर हो।
५ कृति पाजरा।
६ अंधा कर दिया जाय।
७ वह अधिकारी जो दरबार की प्रथाओं एवं शिष्टाचार की देख रेख हेतु नियुक्त होता है।
८ ६ अंगुलियों वाला।
९ मीर्ज़ा कामरान ने मिस्र से लौटने के उपरान्त ग़ज़नी पर अधिकार जमाने के पूर्व तीरी में उसे अंधा बनाया।
१० अर्थात् अब तुम्हें अंधा बना दिया जायगा।

सान्त्वना देकर उसे सेवा में ले आए। मीर्ज़ा को भी कुछ सदेश, जो उसका पथ प्रदर्शन कर सकते थे, प्रेषित किए। मुनइम खा को आदेश दिया गया कि वह उनके दिल की बात का उनके व्यवहार से पता लगा कर, वास्तविक स्थिति के विषय में निवेदन करे। मुनइम खा ने पहुँच कर अपनी योग्यता का कारनामा प्रकट किया और उसके बहलाने फुसलाने से सुल्तान आदम ने मीर्ज़ा (कामरान) सहित परहाला में अभिवादन किया। हज़रत जहाँबानी ने जश्न का आयोजन कराया जो रात भर चलता रहा। मीर्ज़ा कामरान इतने अपराधो के बावजूद, जिनमें से प्रत्येक पर कठोर दड दिया जा सकता था, नाना प्रकार की कृपाओ द्वारा सम्मानित हुआ।

अमीरो द्वारा मीर्ज़ा कामरान की हत्या का आग्रह

समस्त हितैषी अमीरो एव शुभ-चिन्तक बुद्धिमानो ने निवेदन किया कि यद्यपि हज़रत जहाँबानी के उत्कृष्ट स्वभाव एव दया की दृष्टि के यह अनुकूल है कि बडे बडे अपराध सम्मानित दरबार मे क्षमा के वस्त्र धारण कर लें किन्तु दूरदर्शिता एव सावधानी की दृष्टि से यह परमावश्यक है कि मनुष्यो को कष्ट देने वाले निष्ठुर को उसकी कुकृतियो के अनुसार दड दिया जाय ताकि उसकी दुष्टता की धूल से ससार वालो का मुख मुक्त रह सके। बुद्धिमत्ता एव दूरदर्शिता की दृष्टि से यह परमावश्यक है कि एक व्यक्ति के जाहिरी आराम को, जो कि शत्रु है, असख्य लोगो के आराम पर जो निष्ठा के सौभाग्य द्वारा सुशोभित है, प्राथमिकता न दी जाय। यदि टूटे हुए दिलो को जोडने एव घायलो के घावो को भरने के लिए विशेष रूप से ऐसी अवस्था मे जब कि उसमें सहस्रो कार्यो के हित निहित है एक अत्याचारी का खोटा अस्तित्व ससार की चित्र शाला से मिटा दिया जाय तो न्यायकारिता की दीवार को कोई हानि न होगी, इस झूठे चित्र को मिटा देना दैवी इच्छा एव पूर्ण सुव्यवस्था के अनुकूल होगा। उसने ऐसे षड्यन्त्र नही रचे है और ऐसी कृतघ्नताये नही की है कि यह आशा की जाय कि वह ठीक हो जायगा और उसके कृत्य को अकृत्य मान लिया जाय। उसकी दुष्टता अनुमान के परे हो चुकी है। अब उन्हे सहन नहीं किया जा सकता। अब उसके तथा सर्व साधारण के हित की दृष्टि से यही उचित है कि उसे परलोकगामी कर दिया जाय ताकि प्राणी सहस्रो कष्टो से मुक्त हो जायें और उसकी कृतियो की पजिका और अधिक काली न हो, कारण कि दीर्घकाल से इस दुष्ट के षड्यन्त्र के कारण लोगो की धन-सम्पत्ति नष्ट हो रही है और वे नाना प्रकार के कष्टो का शिकार हो रहे है। ससार वालो की सम्पत्ति एव इज्जत हवा मे उड चुकी है और इतने आदमियो के प्राण मिट्टी में मिल चुके है। निष्ठा का रत्न, जो सम्मानित लोगो के गुणो की ग्रीवा (३२८) का आभूषण है, बरबाद हो चुका है। इस समय यह उचित है कि ऐसे व्यक्ति की उद्दडताओ के चगुल से लोगो को मुक्ति दिला दी जाय और सर्व साधारण को न्याय की छाया में शान्ति प्रदान की जाय।

मीर्ज़ा कामरान को अधा कर दिये जाने का आदेश

हज़रत जहाँबानी साधनो के स्रष्टा की बुद्धिमत्ता एव रहस्यो पर दृष्टि डालते हुए इस विषय में कोई कार्य न करना चाहते थे कारण कि उस ससार को शोभा देने वाले स्रष्टा[1]

१ ईश्वर।

ने इतनी महान शक्ति के बावजूद ऐसे व्यक्ति को जीवित रक्खा। इसका कोई न कोई कारण एवं रहस्य होगा। इन गम्भीर विचारों के अतिरिक्त हज़रत गेती सितानी फ़िरदौस मकानी के उपदेश उनकी तथ्य का अवलोकन करने वाली दृष्टि के समक्ष थे, और वे यह पाप न करना चाहते थे। अमीर लोगों ने जो उस धृष्ट निष्ठुर द्वारा नाना प्रकार के रक्तपात एवं षड्यन्त्र देख चुके थे पुनः निवेदन एवं आग्रह किया और इस विषय में मुफ्तियों[१] की मुहर के फतवे[२] एवं धर्म तथा राज्य के प्रतिष्ठित लोगों तथा मुल्क एवं मिल्लत[३] के महान व्यक्तियों के महज़र[४] पवित्र दृष्टि के समक्ष प्रस्तुत किए। हज़रत जहाँबानी ने उन्हें मीर्ज़ा कामरान के पास भिजवा दिया। मीर्ज़ा ने जब अपने नामये आमाल[५] एवं कुकृत्यों के महज़र का अध्ययन करके यह कहला भेजा कि जिन लोगों ने आज मेरी हत्या (के पत्र) पर मुहर लगाई है, उन्होंने मुझे इस दिन को पहुँचाया है तो हज़रत जहाँबानी को दया आ गई। उन्होंने सभी के आग्रह एवं इतने अधिक कारणों के बावजूद उसकी हत्या का आदेश न दिया और बहुत देर तक सोचते रहे। अन्ततोगत्वा सब साधारण के हित तथा उसकी भलाई के उद्देश्य से उन्होंने यह आदेश दिया कि उसे दृष्टि से वंचित कर दिया जाय[६]।

मीर्ज़ा कामरान को अंधा बनाया जाना

इस आज्ञा के पालन हेतु अली दोस्त बारबेगी[७], सैयिद मुहम्मद पकना एवं गुलाम अली शश अंगुश्त[८] नियुक्त हुए। ये लोग मीर्ज़ा के खेमे में पहुँचे। मीर्ज़ा ने सोचा कि वे उसकी हत्या हेतु आ रहे हैं। तत्काल मुक्का तान कर दौड़ा। अली दोस्त ने कहा, मीर्ज़ा धैर्य धारण करो। हत्या का आदेश नहीं है। घबराहट किस कारण है? इस कारण कि तुमने इसके पूर्व सैयिद अली[९] एवं एक अन्य समूह को निरपराध अंधा कर दिया अतः न्यायानुसार अब अपने नेत्रों द्वारा उसका प्रतिकार देखो[१०]। मीर्ज़ा ने यह बात सुन कर हज़रत जहाँबानी के आदेश को नेत्रों से स्वीकार किया और लेट गया। सलाई फेर दी गई। मीर्ज़ा के दोनों नेत्र जो षड्यन्त्रकारी हृदय के द्वारपाल थे ज्योति से वंचित कर दिए गए। इन निष्ठावानों ने शाही आदेश के प्रति सावधानी की दृष्टि से अधिक नश्तर लगा दिये। मीर्ज़ा ने प्राण बच जाने की कृतज्ञता के कारण दम न मारा। हज़रत जहाँबानी अपनी स्वाभाविक कृपा के कारण रो कर आगे बढ़ गये। उन्होंने कृपा-युक्त बहुत सी बात तथ्य का निरूपण करने वाली अपनी जिह्वा से कहीं। यह घटना ९६० हि० के

१ वह अधिकारी जो शरीअत (इस्लामी धर्म विधान) के अनुसार विभिन्न समस्याओं के विषय में फतवे दे।
२ मुफ्ती का मत अथवा निर्णय, व्यवस्था।
३ धर्म।
४ कोई इक़रार-नामा अथवा दस्तावेज़ जिस पर साक्षियों की मुहर हो।
५ कृति पत्रिका।
६ अंधा कर दिया जाय।
७ वह अधिकारी जो दरबार की प्रथाओं एवं शिष्टाचार की देख रेख हेतु नियुक्त होता है।
८ ६ अंगुलियों वाला।
९ मीर्ज़ा कामरान ने सिंध से लौटने के उपरान्त गज़नी पर अधिकार जमाने के पूर्व तीरी में उसे अंधा बनाया।
१० अर्थात् अब तुम्हें अंधा बना दिया जायगा।

अन्त (नवम्बर-दिसम्बर १५५३ ई०) में घटी। ख्वाजा मुहम्मद मोमिन फरन्खुदी[1] ने इस घटना की तिथि नीश्तर[2] के अक्षरों से निकाली।

मीर्ज़ा कामरान को बेग मुलूक का प्रदान किया जाना

मीर्ज़ा ने उसी दिन मुनइम खाँ के पास आदमी भेजे और प्रार्थना कराई कि मेरी इच्छा है कि "जिस जवान को तू जानता हो और जिस प्रकार सम्भव हो बेग मुलूक को मेरी सेवा हेतु माँग ले।" हज़रत जहाँबानी ने उसकी प्रार्थना को तत्काल स्वीकार करके उसे उसकी सेवा (३२९) हेतु भेज दिया। मीर्ज़ा ने उसके प्रति अत्यधिक स्नेह के कारण उसके हाथों को पकड़ कर अपनी अंधी आँखों पर रक्खा और यह शेर पढ़ा —

शेर

'यद्यपि मेरे नैनों पर परदा डाल दिया गया है,
देख रहा हूँ मैं उस नेत्र से तुझे जिससे प्राय तेरा मुख देखता रहा हूँ।'

जनजूहा कबीले के विरुद्ध हुमायूं का प्रस्थान

हज़रत जहाँबानी ने इस घटना के उपरान्त अपना पवित्र ध्यान मार्ग के राड़े जानूहा[3] के मार्ग-भ्रष्ट समूह की ओर आकृष्ट किया। *उन अभागे विद्रोहियों ने, आज्ञाकारिता के पट्टे से अपनी* गरदन निकाल कर विद्रोह कर दिया और विजयी वीरों से युद्ध करते हुए नष्ट हो गए। भाग्यशाली सेना से, ख्वाजा कासिम महदी एवं कुछ अन्य लोग शहीद हुए।

हुमायूं द्वारा कश्मीर के अभियान के विचार त्यागना

जब वे इस ओर से सन्तुष्ट हो गए तो उन्होंने कश्मीर विजय का जिसकी उन्हें वर्षों से आकांक्षा थी, संकल्प किया। अमीरों ने इसे उचित न समझा और कश्मीर का कूप एवं बन्दीगृह बता कर उसकी निन्दा करने लगे। उनका[4] विचार था कि कदाचित् इस प्रकार पवित्र हृदय इस अभियान से बाज़ आ जाय। उन्होंने निवेदन किया कि, इस समय भाग्यशाली सेना के प्रस्थान के समाचार से हिन्दुस्तान में अशान्ति फैल गई है। सलीम खाँ अत्यधिक तैयारी करके पंजाब की ओर चल दिया है। इस ओर से यथारूप युद्ध की तैयारी नहीं हुई है। यदि हम लोग आगे प्रस्थान करते हैं, और अफ़गानों की सेना निकट आ जाती है तो उसे पीछे छोड़ कर आगे बढ़ जाना और कश्मीर में प्रविष्ट हो जाना उचित न होगा। सम्भवत कश्मीर के कार्य में देर लग जाय। इस दशा में यदि दुष्ट अफ़गान दर्रों को दृढ़ बना ले तो फिर क्या होगा? राज्य के लिए यह उचित होगा कि इस अभियान के विचार त्याग दिए जायें और जब शत्रु हमसे दूर हो जाये तो काबुल पहुँच कर उचित रूप से युद्ध की तैयारी करके विजय की रिकाब में पाँव जमाये जायें तथा नित्य-प्रति उन्नत प्रताप की सहायता से सुगमतापूर्वक दुष्ट अफ़गानों को नष्ट भ्रष्ट कर दिया जाय।"

१ फरन्खुद निवासी। फरन्खुद के समीप एक ग्राम है।
२ नश्तर।
३ जनजूहा. साल्ट रेंज (नमक की पहाड़ी) के निवासी।
४ अमीरों का।

हज़रत जहाँबानी ने इन बातों को सुन कर परामर्श और यह निवेदन करने वालों की मसलहत पर कोई ध्यान न दिया और हज़रत शाहंशाह को राज्य के उच्च पदाधिकारियों के एक समूह सहित काबुल भेज दिया। वे स्वयं कश्मीर की ओर प्रस्थान करना चाहते थे किन्तु व्यापारियों जैसे स्वभाव वाले अमीरों की, जो अपने लाभ के अतिरिक्त किसी बात पर दृष्टि न रखते थे, दुष्टता के कारण अमीरों के अधिकांश सेवक एवं सैनिक अपने स्वामियों को छोड़ कर काबुल भाग गए और हज़रत जहाँबानी की सेवा में अमीरों के अतिरिक्त कोई भी न रह गया। इस दुष्टता के कारण, जो निष्ठा एवं आज्ञाकारिता से शून्य थी, उनका सम्मानित हृदय चिन्तित हो गया। उन्होंने अपने विश्वास पात्रों के एक समूह को आदेश दिया कि वे प्रयत्न करके उन आदमियों को लौटा लायें और यदि उनकी हत्या की भी आवश्यकता हो तो आदेश की प्रतीक्षा न करें। इस बीच में उन्होंने कुरान से फाल[1] निकाली। निष्ठावान् यूसुफ का किस्सा निकला। सेवा में जिन लोगों को

१ कुरान शरीफ़ से फ़ाल (शकुन) निकालने की प्रथा है। इसका नियम यह है कि फातेहा का सूरा पढ़ कर आँख बन्द करके कुरान खोला जाता है। जो पृष्ठ खुलता है उस पर आँख बन्द करके कहीं अंगुली रख दी जाती है। जिस वाक्य अथवा शब्द पर अंगुली पड़ती है उसी के अनुसार शकुन निकाला जाता है। इसी प्रकार ख्वाजा हाफ़िज़ के दीवान से भी फ़ाल निकाली जाती है। सबसे अधिक प्रचलित विधि यह है कि हाफ़िज़ का दीवान खोलने ही जिस शेर पर दृष्टि पड़े उसी शेर से फ़ाल निकाली जाती है। कभी-कभी पूरी ग़ज़ल से अनुमान लगाया जाता है। कुछ लोग ग़ज़ल के प्रथम शेर मतले से निष्कर्ष निकालते हैं। कुछ लोग मतले के बाद सातवें शेर से फ़ाल निकालते हैं। खुदा बख्श लाइब्रेरी बाकीपुर पटना में हाफ़िज़ के दीवान की हस्तलिपि है जिसके हाशिये पर हुमायूँ तथा जहाँगीर के हाथ की टिप्पणियाँ हैं जिससे पता चलता है कि वे लोग इससे फ़ाल निकालते रहे हैं। जहाँगीर ने तुज़ुके जहाँगीरी में १२वें वर्ष के विवरण के सम्बन्ध में लिखा है, "क्योंकि लिसानुल ग़ैब हाफ़िज़ (के दीवान) से यह सदेश मिला मुझे इस बात की पूरी आशा हो गई। इस प्रकार २४वें दिन विजय एवं सफलता के समाचार प्राप्त हुये। मैंने अपने बहुत से कार्यों के सम्बन्ध में ख्वाजा हाफ़िज़ के दीवान से सहायता ली। संयोग से उसमें जो कुछ निकला, परिणाम उसी के अनुसार हुआ। बहुत कम ऐसा हुआ कि कभी उसके विरुद्ध कुछ हुआ हो।" (तुज़ुके जहाँगीरी, सैयिद अहमद संस्करण, पृ० १८८)। बाकीपुर के दीवान की हस्तलिपि से पता चलता है कि हुमायूँ ने निम्नांकित शेर से कई बार फ़ाल निकाली

अज़ीज़े मिस्र बर रग़मे बिरादराने ग़यूर,
ज़ क़अरे चाह बर आमद ब औजे माह रसीद।

عزیز مصر برغم برادران غیور
زقعر چاه برآمد باوج ماه رسید

मिस्र के बादशाह (यूसुफ़ पैग़म्बर) ईर्ष्यालु भाइयों के कारण चिन्तित मन हो,
कुयें के गड्ढे से निकला चन्द्रमा की बुलन्दी तक पहुँचा।

यह शेर निम्नांकित ग़ज़ल का है—

बिया कि रायते मन्सूर बादशाह रसीद,
नवेद फ़तह व बशारत ब मेहर व माह रसीद।

بیا که رایت منصور پادشاه رسید
نوید فتح و بشارت بمهر و ماه رسید

आ कि विजयी बादशाह की पताका पहुँची,
विजय के सुखद समाचार सूर्य तथा चन्द्रमा तक पहुँचे।

(३३०) बात करने की अनुमति थी, उनसे उन्होंने उसकी व्याख्या के सम्बन्ध में वार्ता की और सोचते रहे। ख्वाजा हुसन मर्वी ने निवेदन किया कि 'कश्मीर के विषय में जो यह कहा गया है कि

यह शेर सम्भवतः बार बार उस समय निकलता होगा जब कि हुमायूँ को कन्नौज की पराजय के बाद लाहौर, सिन्ध, एवं ईरान से लौट कर काबुल में अपने भाइयों के विरोध का सामना करना पड़ता होगा। (बाँकीपुर पुस्तकालय, दीवाने हाफ़िज़ म० १५१, पृ० ३८ अ)।

ज़िलहिज्जा ९६२ हि० (नवम्बर १५५५ ई०) में एक अवसर पर फाल के सम्बन्ध में उपर्युक्त हस्तलिपि के पृ० ६७ ब पर निम्नांकित टिप्पणी है "अज़ फाले मुसहफ़ कि रब्बोका बर आमद, अज़ दीवाने हाफ़िज़ ईं शाह बैत आमद व चन्दीं बार अब्यात मुनासिब आमदा कि अगर शरहे आहा शवद किताबे शवद। इनशा अल्लाह तआला चू फ़तहे विलायत शर्क़ी व मुबा'रज़ाने आ दियार व अम्रे किर्देगार शवद, नज़रे ख़ूबी के ख्वाजा लिसानुल ग़ैब फ़रस्तादा शवद व जमअ आ तफ़ालात नीज़ रक़म कर्दा शवद। ब मिन्नहु व तौफ़ीक़हु शबे दो शंबा हिज़दहुम ज़ी हिज्जा सन् ९६२ दर शहरे दीन पनाह तहरीर याफ़्ता वस्सलाम

از فال مصحف که ربک بر آمد از دیوان حافظ این شاه بیت آمد و چندین بار ابیات
مناسب آمده که اگر شرح آنها شود کتابی شود انشاء الله تعالی چون فتح ولایات شرقی و
مبارزان آن دیار بامر کردگار شود نظر خوبی بخواجه لسان الغیب فرستاده شود و جمع آن تفالات
نیز رقم کرده شود بمنه و توفیقه شب دوشنبه هژدهم ذی حجه سنه ۹۶۲ در شهر دینپناه
تحریر یافته والسلام

कुरान शरीफ़ से फाल निकाली। रब्बोका (तेरा रब) निकला। दीवाने हाफ़िज़ से यह शाह बैत (शेर) निकली। कई बार उचित शेर निकल चुके हैं। यदि उनका सविस्तार वर्णन किया जाय तो एक ग्रंथ तैयार हो जाय। ईश्वर ने चाहा जब पूर्व के राज्य विजय हो जायेंगे और उस प्रदेश में युद्ध करने वाले ईश्वर के आदेश से (विजय प्राप्त कर लेंगे) तो ख्वाजा लिसानुल ग़ैब की भली भाँति नियाज़ कराई जायगी तथा इन फालों को भी संकलित किया जायगा। (यदि ईश्वर ने ऐसा चाहा) सोमवार १८ ज़िलहिज्जा ९६२ हि० (३ नवम्बर १५५५ ई०) की रात्रि में दीनपनाह नामक नगर में लिखा गया। इस अवसर पर निम्नांकित शेर निकला था

नज़र बर क़ुर्'ये तौफ़ीक़ व यमने दौलते शाहस्त,
बे देह कामे दिले हाफ़िज़ कि फ़ाले बख्तियारा ज़द।

نظر بر قرعهٔ توفیق و یمن دولت شاهست
بده کام دل حافظ که فال بختیاران زد

बादशाह के सौभाग्य एवं सफलता पर दृष्टि है,
हाफ़िज़ के हृदय की बात पूरी कर, कारण कि उसने
सफल लोगों की फाल निकाली।

यह निम्नांकित ग़ज़ल का दवाँ शेर है—

सहर चू ख़ुसरवे ख़ावर अलम बर कोहसारा ज़द,
ब दस्ते मरहमते यारम दरे उम्मीदवारा ज़द।

سحر چون خسرو خاور علم بر کوهساران زد
بدست مرحمت یارم در امیدواران زد

प्रातःकाल जब सूर्य के बादशाह ने अपनी पताका पर्वतों पर गाड़ी,
मेरे मित्र को प्रदान करने के लिये उसके आशा के द्वार खोले।

Maulvi Abdul Muqtadir *Catalogue of the Arabic and Persian Manuscripts in the Oriental Public Library at Bankipur*, Persian Poets Firdausi to Hafiz (Calcutta 1908, pp 239 241)

वह कुआँ एव बन्दीगृह है ठीक है कारण कि यूसुफ[१] के किस्से से इन दोनो वाता का स्पष्ट प्रमाण मिलता है।"

हुमायूं का काबुल की ओर प्रस्थान

जब साथ वालो के मतभेद का पता चल गया तो वे अपने सकल्प को त्याग कर कावुल की ओर रवाना हुए। जब भाग्यशाली शिविर सिन्ध नदी के तट पर लगे तो मीर्जा कामरान ने हिजाज यात्रा की अनुमति चाही। क्योकि उस समय वे मीर्जा के हृदय को सतुष्ट करना चाहते थे, अत उन्होने विदा कर दिया। एक रात में जब वे विदा हो रहे थे तो इस कारण कि बुजुर्गों को बुजुर्गी ही शोभा देती है वे अपने विश्वास-पात्रो के समूह के साथ मीर्जा के स्थान पर पहुँचे। मीर्जा ने आदर-सम्मान की प्रथाओं का प्रदर्शन करके सर्वप्रथम यह शेर पढा —

शेर

'दरवेश के कुलाह की चोटी ने आकाश को छू लिया,
कारण कि तेरे सरीखे पादशाह ने उसके सिर पर छाया डाली है[२]।'

तदुपरान्त मीर्जा ने यह शेर पढा —

शेर

'मेरे प्राणा पर तेरे द्वारा जो कुछ गुजरती है, उसके प्रति आभार प्रदर्शन करना चाहिये,
चाहे यह अत्याचार का वाण हो, और चाहे जुल्म का खजर[३]।'

हुमायूं का मीर्जा कामरान से विदा होना

यद्यपि दूसरा शेर कृतज्ञता प्रकट करता है, किन्तु बात के परखने वाले समझ गए कि यह शिकायत से परिपूर्ण है। सौजन्य एव अनुकम्पा के ससार हजरत जहाँबानी ने, इसकी ओर ध्यान न दिया और रोने लगे। दैवी प्रेरणा वाली जिह्वा से कहा, कि "रहस्यो एव गुप्त बाता का ज्ञाता जानता है कि इस कार्य पर, जो मैने अपनी इच्छा से नही किया, मै बडा लज्जित हूँ। काश जो कुछ तुम्हारे साथ हुआ, वह तुम्हारे द्वारा इससे पूर्व मेरे साथ हो जाता।" मीर्जा असावधानी की निद्रा से जाग उठा और उसने अपने अपराधो की तुलना में पादशाही अनुकम्पाओं का अनुमान लगा लिया और दासता (के भाव) एव लज्जा प्रदर्शित करने लगा। उसने हाजी यूसुफ से पूछा

१ हजरत यूसुफ को उनके भाइयों ने कुयें में डाल दिया था। तदुपरान्त वे बहुत समय तक मिस्र में बन्दी रहे।

२ कुलाहे गोशये दरवेश बर फलक सायद
के सायह हमचोतू शाहे फिगन्द बर सरेऊ

کله گوشهٔ درویش بر فلک ساید
که سایهٔ همچو تو شاهی فگند بر سرواو

३ बर जानम अज तू हर चे रसद जाये मिन्नत अस्त,
गर नावके जफा अस्त व गर खन्जरे सितम।

برجانم از تو هرچه رسد جای منت است
گر ناوک جفاست و گر خنجر ستم

कि "यहाँ कौन कौन लोग हैं ?" उसने उत्कृष्ट गोष्ठी के उपस्थित-गण के नाम बताये अर्थात् तरदी बेग खा, मुनइम खा, बाबूस बेग, ख्वाजा हुसेन मर्वी, मीर अब्दुल हई, मीर अब्दुल्लाह, खजर बेग एव आरिफ बेग। मीर्जा ने कहा "समस्त मित्रो ! साक्षी रहना कि यदि मैं अपने आप को निरपराध समझता तो इस शुभ अवसर पर जब कि हज़रत जहाँबानी तशरीफ रखते हैं, मैं (उन्हे) क्षमा कर देता किन्तु मुझे विश्वास है कि मैं मृत्यु-दड का पात्र था। उन्होंने मेरी हत्या न कराई और हिजाज की यात्रा की अनुमति दे दी। मैं हजरत जहाँबानी की दया एव अनुकम्पा के प्रति सहस्रो आभार प्रदर्शित करता हूँ कि अभी तक उन्होंने मेरी दुष्टता के अनुकूल मुझे दड नही दिया है[1]।" तदुपरान्त वह अपनी सतान की सिफारिश करने लगा। हज़रत जहाँबानी ने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार (३३१) किया और मीर्जा को नाना प्रकार की कृपाओं द्वारा सम्मानित करके विदा कर दिया। क्योंकि यह निश्चय हो चुका था कि मीर्जा उनके सामने न रोयेगा वह अपने आपको रोके रहा और जैसे ही हज़रत जहाँबानी दौलत खाने की ओर रवाना हुए, मीर्जा हाय हाय करके रोने लगा।

मीर्जा कामरान का हज के लिये प्रस्थान

दूसरे दिन उन्होंने आदेश दिया कि मीर्जा के सेवको में से जो कोई उसके साथ जाना चाहे किसी के लिए कोई रोक-टोक नही। कोई तैयार न हुआ कि उसकी इस तनहाई में उसका साथ दे। जो लोग मित्रता की डींग मारा करते थे उन्होंने मित्रता त्याग दी। चिलमा कोका[2], जिसने पूर्ण निष्ठा एव स्वामी-भक्ति के कारण, हजरत शाहशाह द्वारा खाने आलम की उपाधि प्राप्त कर ली थी, खडा था। उसने अपने आश्रयदाता एव स्वामी के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था, इसका उचित स्थान पर उल्लेख किया जायगा। उस समय वह हजरत जहाँबानी का सुफरची[3] एव उनका विश्वासपात्र था। हजरत जहाँबानी ने पूछा, "चिलमा कोका ! मीर्जा के साथ जाओगे अथवा मेरे साथ रहोगे ?" उसने दरबार की उत्तम सेवाओं की इच्छा एव पादशाह की कृपाओं के बावजूद स्वामी भक्ति की प्रथाओ को प्राथमिकता देते हुए निवेदन किया कि, 'मैं अपने लिए यही उचित समझता हूँ कि मैं मीर्जा की सेवा में रहूँ जिनके दिन विवशता के कारण और रातें एकान्त की वजह से अधेरी हो चुकी है।" हजरत जहाँबानी ने, जो सहृदयता की कसौटी एव निष्ठा को तौलने की तराजू थे, उसकी स्वामी-भक्ति की अत्यधिक सराहना की। यद्यपि वे उसकी सेवाओ के इच्छुक थे, किन्तु उन्होंने उसे विदा कर दिया। मीर्जा की यात्रा हेतु जो धन एव जो सामग्री निश्चित हुई थी, उसे सौंप कर मीर्जा के पास भेज दिया। बेग मुलूक यद्यपि मीर्जा का अत्यधिक स्नेह-पात्र था किन्तु कुछ मजिलो की यात्रा के उपरान्त लौट आया और हजरत जहाँबानी की सेवा में उपस्थित हो गया। यह बात उन्होंने बडी नापसन्द की और उसकी सुन्दरता के बावजूद उसकी ओर फिर कोई ध्यान न दिया गया।

१ इस विषय में बायजीद की कृति का अनुवाद देखिये।

२ चिलमा बेग, मीर्जा कामरान के कोका हमदम का पुत्र था। कामरान की मृत्यु के उपरान्त चिलमा बेग हिन्दुस्तान लौट आया और अकबर का बहुत बडा विश्वास पात्र हो गया। वह जीकाद ९८२ हि० (३ मार्च १५७५ ई०) को अफगानों के विरुद्ध युद्ध करता हुआ मारा गया।

३ दस्तरख्वान का प्रबन्ध करने वाला।

मीर्ज़ा सिन्ध नदी के मार्ग से ठट्टा पहुँचा और वहाँ से अपने उद्देश्य की ओर रवाना हुआ। उसने तीन हज किए[1]। ११ जिलहिज्जा ९६४ हि० (५ अक्तूबर १५५७ ई०) को (वह) इस नश्वर संसार से विदा हो गया।

पेशावर के किले का निर्माण

क्योंकि मीर्ज़ा कामरान का उल्लेख समाप्त हो गया अतः मूल उद्देश्य की ओर अग्रसर होकर लिखा जाता है कि बिकराम नामक स्थान पर, जो अब पेशावर कहलाता है, शाही शिविर लगे। वहाँ के किले को दुष्ट अफ़गानों ने पूर्णतः नष्ट कर दिया था अतः यह निश्चय हुआ कि किले का निर्माण करके निष्ठावानों के एक समूह को वहाँ नियुक्त करने के उपरान्त वे काबुल की ओर प्रस्थान करें ताकि इस किले की व्यवस्था हिन्दुस्तान विजय की प्रस्तावना बन जाय। जो अमीर लोग काबुल जाना चाहते थे वे यह न चाहते थे कि वहाँ किसी कारण प्रतीक्षा की जाय। हज़रत जहाँबानी ने उस ओर पादशाहाना ध्यान आकृष्ट करके अल्प समय में उस भाग्यशाली किले का निर्माण करा दिया। पहलवान दोस्त मीर बर ने सम्मानित आदेशानुसार समस्त अमीरों को (३३२) मोर्चे बाँट दिए। वे शीघ्र पूरे हो गए। सिकन्दर खाँ ऊज़बेक को वे उसकी प्रतिरक्षा हेतु नियुक्त करके स्वयं काबुल की ओर रवाना हो गए।

अफ़गानों का पेशावर के किले पर अधिकार जमाने का असफल प्रयत्न

तदुपरान्त अफ़गानों ने उस किले पर भारी आक्रमण किया। सिकन्दर खाँ ने अत्यधिक पौरुष एवं योग्यता प्रदर्शित करते हुए किले की प्रतिरक्षा की। अभागे अफ़गान परेशान हो गए।

९६१ हि० के प्रारम्भ (दिसम्बर १५५३ ई०) में काबुल को पादशाही चरणों के प्रकाश द्वारा शोभा प्राप्त हुई। बेगमें[2] सेवा में उपस्थित हुईं और उन्होंने बधाई दी। हज़रत जहाँबानी ने अपनी शुभ जिह्वा से कहा कि "आगमन एवं एक दूसरे की भेंट की बधाई ठीक ही है[3] किन्तु मीर्ज़ा कामरान की दुर्घटना बधाई की पात्र नहीं कारण मानो हमने अपने हाथ से अपनी आँख स्वयं फोड़ी हो।" राज्य के उच्च अधिकारियों को कृपा-युक्त फरमान भेजे गए। काशगर के हाकिम सर्वदा मेल, सगठन एवं निष्ठा प्रदर्शित करने वाले अब्दुर्रशीद खाँ को समस्त घटनाओं का विवरण देते हुए एक फरमान अनुभवी लोगों के हाथ भेज दिया।

मीर्ज़ा हकीम का जन्म

जिन दिनों हज़रत जहाँबानी शासन प्रबन्ध एवं राजस्व सम्बन्धी व्यवस्थाओं में संलग्न थे और कृपा एवं कोप द्वारा पीड़ितों एवं अत्याचारियों के प्रति न्याय कर रहे थे और ईश्वर की इच्छाओं का पालन करने में व्यस्त थे, बुधवार १५ जमादि-उल-अव्वल (१८ अप्रैल १५५४ ई०) को धनुराशि में दो दाँग[4] व्यतीत हो जाने के उपरान्त माह जूजुक[5] बेगम से एक सम्मानित पुत्र

१ ९६१ हि० से ९६४ हि० के मध्य में।
२ मूल में "मुखद्देरात तुतुके इस्मत"।
३ मूल में "अपने स्थान पर है"।
४ ३ डिग्री।
५ कुछ पोथियों में 'चूचुक'।

का जन्म हुआ। हजरत जहाँबानी ने उसका नाम मुहम्मद हकीम रक्खा। कुछ लोगो ने उसके जन्म की तिथि "अबुल फजायल[1]" और कुछ ने "अबुल मफाखिर[2]" निकाली अत यह दोना उसकी कुन्नियत[3] निश्चित हुई। हर्ष एव प्रसन्नता के द्वार खोल कर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की गई।

लगभग उसी समय खानश बेगम से, जो जूजक मीर्जा की पुत्री थी, एक पुत्र का जन्म हुआ। उसका नाम सुल्तान इबराहीम रक्खा गया। उसकी शीघ्र मृत्यु हो गई।

शेर

'वह दया के आकाश की एक विद्युत था,
जन्म एव मृत्यु साथ साथ मिले हुए।'

हजरत जहाँबानी जन्नत आशियानी की पवित्र सेना का कन्धार की ओर प्रस्थान और वहाँ से वापसी

बैराम खा द्वारा हुमायूं का स्वागत

क्योकि कुछ षड्यन्त्रकारियो ने बैराम खा के विरुद्ध झूठी सच्ची बाते हजरत जहाँबानी से कह दी थी अत उन्होने इस वर्ष शीत ऋतु के प्रारम्भ में कन्धार की ओर प्रस्थान को हिन्दुस्तान के प्रस्थान पर प्राथमिकता दी और उस ओर रवाना हुए। काबुल का राज्य अली कुली खा अन्द-(३३३) राबी को प्रदान कर दिया। दैवी प्रकाश से पोषित, खिलाफत के नेत्रो की पुतली, ऐश्वर्य के स्तम्भ हजरत शाहशाह गजनी तक उन्हे पहुँचाने गए। गजनी का प्रवन्ध करने वाले उनके वकीलो ने आतिथ्य का प्रबन्ध किया। जब उत्कृष्ट पताकाएँ गजनी से आगे बढ गई तो सौभाग्य की वाटिका के उस पौधे ने लौटकर काबुल को अपने शुभ आश्रय प्रदान करने वाले चरणो द्वारा आनन्द विभोर किया। बैराम खा ने, जो कि निष्ठा के वस्त्र धारण किए हुए था, पादशाही सेना के आगमन को अपना बहुत बडा सौभाग्य समझकर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। निष्ठा से परिपूर्ण हृदय के साथ सिर को पाँव बनाकर वह कन्धार से १० फरसख[4] पर शार अन्दाम नामक स्थान पर भूमि का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। हजरत जहाँबानी को इस बात का विश्वास हो गया कि उसके विषय में जो कुछ कहा गया है उसमें कोई तथ्य नही। शुभ मुहूर्त में कन्धार उत्कृष्ट सेना के प्रकाश द्वारा आलोकित हुआ। आकर्षक समारोह एव हृदयग्राही महफिलें आयोजित हुई।

हुमायूं के अधिकारियो की सूची

भाग्यशाली रिकाब के प्रतिष्ठित सेवको की सूची इस प्रकार है —शाह अबुल मआली, मुनइम खा, खिज्र ख्वाजा खा, मुहिब अली खा, मीर खलीफा का पुत्र, इस्माईल दूल्दाई, हैदर मुहम्मद

१ गुणो के पिता।
२ श्रेष्ठता के पिता।
३ वह नाम जिसमें अरबी परम्परानुसार अपने, पिता अथवा पुत्र का सम्बन्ध प्रकट किया जाय।
४ कुछ हस्तलिपियो में 'दो फरसख'। एक फरसख लगभग १८००० फीट लम्बा होता है।

आम्ता बेंगी इत्यादि। अहले सआदत[1] में ख्वाजा हुसेन मर्वी, मौलाना अब्दुल बाकी सद्र एवं अन्य लोगों को उपस्थिति का सौभाग्य प्राप्त था।

बैराम खां द्वारा आतिथ्य

बैराम खां ने सेवा एवं निष्ठा प्रदर्शित करने में कोई कसर न उठा रक्खी। पूरा शीत ऋतु आनन्द मंगल के वातावरण में व्यतीत हुआ। इस बीच में पादशाही सरकार के लिए जो कुछ भी आवश्यकता होती उसकी व्यवस्था बैराम खां करता और उसके लिए समस्त प्रबन्ध उसकी देख रेख में होते। दरबार के समस्त सेवकों को अपने सेवकों के घरों में ठहरा कर उनका आतिथ्य उन घरों के स्वामियों को सौंप दिया।

दरवेशों की सेवा में उपस्थित होना

हजरत जहाँबानी उन दिनों शारीरिक एवं बौद्धिक आनन्द मंगल तथा अन्तरंग एवं बहिरंग की प्रसन्नताओं का रसास्वादन करते रहते थे। हृदयग्राही स्थानों पर भोग विलास की सभायें आयोजित होतीं। दरवेशों एवं पवित्र जीवन व्यतीत करने वालों की कुटियों में पहुँच कर उनकी श्रेणी के अनुसार दान-पुण्य करते थे। उन्हीं में मौलाना जैनुद्दीन महमूद कमानगर[2] थे, जिन्होंने वासनाओं के विरुद्ध घोर संघर्ष किया था। वे उनके पास कई बार गए दोनों ओर से पवित्र वार्ता होती थी। उस समय की तथा अनन्त तक की समस्याओं के समाधान एवं इच्छाओं की पूर्ति के विषय में विचार विनिमय होता रहता था।

कन्धार की अन्य घटनायें

ख्वाजा गाजी जो दूत बनाकर ईरान भेजा गया था और उत्कृष्ट सेना के आगमन के पूर्व उपहार सहित वहाँ से कन्धार वापस आ गया था, अभिवादन करके सम्मानित हुआ। अपनी उत्तम सेवाओं के कारण वह इशराफे दीवान[3] की सेवा द्वारा सुशोभित हुआ। उसी समय मुअज्जम (३३४) मुल्तान जमीनदावर से उपस्थित होकर सम्मानित सेवा द्वारा सुशोभित हुआ। मेहतर करा जो हिरात के हाकिम मुहम्मद खां का विश्वासपात्र था बहुमूल्य उपहारों सहित सेवा में उपस्थित हुआ। वह निष्ठायुक्त प्रार्थनायें सेवा में उपस्थित करके नाना प्रकार की कृपाओं द्वारा सम्मानित हुआ। राज्य के हित एवं दिल बहलाने के लिए शोर अन्दाम के समीप कमरगह शिकार की व्यवस्था की गई। वह शिकार राज्य के अधिकारियों की इच्छानुसार सम्पन्न हुआ और (हजरत जहाँबानी ने) उससे अपनी इच्छाओं की पूर्ति के शिकार के फाल निकाले।

शाह अबुल मआली की धर्मान्धता

कन्धार में जो अनुचित घटनायें घटीं उनमें शाह अबुल मआली द्वारा शेर अली बेग की

१ विद्वानों, आलिमों को अहले सआदत कहा जाता था। देखिये आगे के पृष्ठों में **क़ानूने हुमायूनी** का अनुवाद।

२ धनुष बनाने वाला। मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी ने उसका सविस्तार उल्लेख किया है। (**मुंतखबुत्तवारीख भाग १**—आगे के पृष्ठों में अनुवाद देखिये)।

३ इशराफ़े दीवान अथवा दीवाने इशराफ़, मुशरिफ़ (वित्त विभाग में आय की देख रेख करने वाला अधिकारी) का विभाग।

था जन्म हुआ। हज़रत जहाँबानी ने उसका नाम मुहम्मद हकीम रक्खा। कुछ लोगों ने उसके जन्म की तिथि "अबुल फज़ायल[१]" और कुछ ने "अबुल मफ़ाखिर[२]" निकाली अतः यह दोनों उसकी कुन्नियत[३] निश्चित हुईं। हर्ष एवं प्रसन्नता के द्वार खोल कर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की गई।

लगभग उसी समय खानश बेगम से, जो जूजक मीर्ज़ा की पुत्री थी, एक पुत्र का जन्म हुआ। उसका नाम सुल्तान इबराहीम रक्खा गया। उसकी शीघ्र मृत्यु हो गई।

शेर

'वह दया के आकाश की एक विद्युत था,
जन्म एवं मृत्यु साथ साथ मिले हुए।'

हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी की पवित्र सेना का कन्धार की ओर प्रस्थान और वहाँ से वापसी

बैराम ख़ाँ द्वारा हुमायूं का स्वागत

क्योंकि कुछ षड्यन्त्रकारियों ने बैराम खाँ के विरुद्ध झूठी सच्ची बातें हज़रत जहाँबानी से कह दी थीं अतः उन्होंने इस वर्ष शीत ऋतु के प्रारम्भ में कन्धार की ओर प्रस्थान को हिन्दुस्तान के प्रस्थान पर प्राथमिकता दी और उस ओर रवाना हुए। काबुल का राज्य अली कुली खाँ अन्द-(३३३) राबी को प्रदान कर दिया। दैवी प्रकाश से पोषित, खिलाफ़त के नेत्र की पुतली, ऐश्वर्य के स्तम्भ हज़रत शाहनशाह गज़नी तक उन्हें पहुँचाने गए। गज़नी का प्रबन्ध करने वाले उनके वकीलों ने आतिथ्य का प्रबन्ध किया। जब उत्कृष्ट पताकाएँ गज़नी से आगे बढ़ गई तो सौभाग्य की वाटिका के उस पौधे ने लौटकर काबुल को अपने शुभ आश्रय प्रदान करने वाले चरणों द्वारा आनन्द विभोर किया। बैराम खाँ ने, जो कि निष्ठा के वस्त्र धारण किए हुए था, पादशाही सेना के आगमन को अपना बहुत बड़ा सौभाग्य समझकर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। निष्ठा से परिपूर्ण हृदय के साथ सिर को पाँव बनाकर वह कन्धार से १० फरसख[४] पर शोर अन्दाम नामक स्थान पर भूमि का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। हज़रत जहाँबानी को इस बात का विश्वास हो गया कि उसके विषय में जो कुछ कहा गया है उसमें कोई तथ्य नहीं। शुभ मुहूर्त में कन्धार उत्कृष्ट सेना के प्रकाश द्वारा आलोकित हुआ। आकर्षक समारोह एवं हृदयग्राही महफ़िलें आयोजित हुई।

हुमायूं के अधिकारियों की सूची

भाग्यशाली रिकाब के प्रतिष्ठित सेवकों की सूची इस प्रकार है :—शाह अबुल मआली, मुनइम खाँ, खिज्र ख्वाजा खाँ, मुहिब अली खाँ, मीर खलीफ़ा का पुत्र, इस्माईल दूल्दाई, हैदर मुहम्मद

१ गुणों के पिता।
२ श्रेष्ठता के पिता।
३ वह नाम जिसमें अरबी परम्परानुसार अपने, पिता अथवा पुत्र का सम्बन्ध प्रकट किया जाय।
४ कुछ हस्तलिपियों में 'दो फरसख'। एक फरसख लगभग १८००० फीट लम्बा होता है।

आख्ता बेगी इत्यादि। अहले सआदत[1] मे ख्वाजा हुसेन मर्वी, मौलाना अब्दुल बाकी सद्र एव अन्य लोगो को उपस्थिति का सौभाग्य प्राप्त था।

बैराम खां द्वारा आतिथ्य

बैराम खा ने सेवा एव निष्ठा प्रदर्शित करने मे कोई कसर न उठा रक्खी। पूरा शीत ऋतु आनन्द मगल के वातावरण में व्यतीत हुआ। इस बीच मे पादशाही सरकार के लिए जो कुछ भी आवश्यकता होती उसकी व्यवस्था बैराम खा करता और उसके लिए समस्त प्रबन्ध उसकी देख रेख मे होते। दरबार के समस्त सेवका को अपने सेवको के घरो में ठहरा कर उनका आतिथ्य उन घरा के स्वामियो को सौप दिया।

दरवेशो की सेवा में उपस्थित होना

हजरत जहांबानी उन दिनो शारीरिक एव बौद्धिक आनन्द मगल तथा अतरग एव बहिरग की प्रसनताओ का रसास्वादन करते रहते थे। हृदयग्राही स्थानो पर भोग विलास की सभायें आयोजित होती। दरवेशा एव पवित्र जीवन व्यतीत करने वालो की कुटियो में पहुँच कर उनकी श्रेणी के अनुसार दान-पुण्य करते थे। उन्ही में मौलाना जैनुद्दीन महमूद कमानगर[2] थे, जिन्होने वासनाओ के विरुद्ध घोर सघर्ष किया था। वे उनके पास कई बार गए दोनो ओर से पवित्र वार्ता होती थी। उस समय की तथा अनन्त तक की समस्याओ के समाधान एव इच्छाओ की पूर्ति के विषय मे विचार विनिमय होता रहता था।

कन्धार की अन्य घटनायें

ख्वाजा गाजी जो दूत बनाकर ईरान भेजा गया था और उत्कृष्ट सेना के आगमन के पूर्व उपहार सहित वहाँ से कन्धार वापस आ गया था, अभिवादन करके सम्मानित हुआ। अपनी उत्तम सेवाओ के कारण वह इशराफे दीवान[3] की सेवा द्वारा सुशोभित हुआ। उसी समय मुअज्जम (३३४) सुल्तान जमीनदावर से उपस्थित हाेकर सम्मानित सेवा द्वारा सुशोभित हुआ। मेहतर करा जो हिरात के हाकिम मुहम्मद खा का विश्वासपात्र था बहुमूल्य उपहारों सहित सेवा में उपस्थित हुआ। वह निष्ठायुक्त प्रार्थनायें सेवा में उपस्थित करके नाना प्रकार की कृपाओ द्वारा सम्मानित हुआ। राज्य के हित एव दिल बहलाने के लिए शोर अन्दाम के समीप कमरगह शिकार की व्यवस्था की गई। वह शिकार राज्य के अधिकारियो की इच्छानुसार सम्पन्न हुआ और (हजरत जहांबानी ने) उससे अपनी इच्छाओ की पूर्ति के शिकार के फाल निकाले।

शाह अबुल मआली की धर्मान्धता

कन्धार में जो अनुचित घटनायें घटी उनमें शाह अबुल मआली द्वारा शेर अली बेग की

१ विद्वानों, आलिमों को अहले सआदत कहा जाता था। देखिये आगे के पृष्ठों में कानूने हुमायूनी का अनुवाद।
२ धनुष बनाने वाला। मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूनी ने उसका सविस्तार उल्लेख किया है। (मुंतखबुत्तवारीख भाग १—आगे के पृष्ठों में अनुवाद देखिये)।
३ इशराफे दीवान अथवा दीवाने इशराफ, मुशरिफ (वित्त विभाग में आय की देख रेख करने वाला अधिकारी) का विभाग।

हत्या थी। इस घटना का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —लगभग इसी समय करा बेग मीर शिकार का पिता शेर अली बेग ईरान के वाली शाह तहमास्प की सेवा से उसकी अनुमति बिना आकर (पादशाह की) सेवा में उपस्थित हो गया था। शाह अबुल मआली ने निकटता[१] की मदिरा से बदमस्त होने तथा अपने सम्मान एवं वीरता के नशे के कारण संयम के क्षेत्र से पाँव बाहर निकाल कर बड़ा अनुचित व्यवहार किया[२], कारण कि ख़ारजियों[३] के प्रति धर्मान्धिता ने उसके (धार्मिक) विश्वास के मस्तिष्क को विकृत कर दिया था। वह हज़रत जहाँबानी के दरबार में खुल्लम खुल्ला कहा करता था कि 'मैं इस दुष्ट राफ़ज़ी[४] की हत्या कर दूंगा।" हज़रत जहाँबानी उसके प्रति कृपादृष्टि रखने के कारण उसे उसका परिहास समझ कर उसकी ओर कोई ध्यान न देते थे, यहाँ तक कि एक रात में धर्मान्धता के नशे में उस बदमस्त ने उस निरपराध व्यक्ति पर प्रहार किया और उस दीन की हत्या कर दी। हज़रत जहाँबानी अत्यधिक रुष्ट हुए किन्तु एक विशेष सम्बन्ध[५] के कारण, जिसमें कोई तथ्य नही किन्तु जो अपराधों का आवरण है, हज़रत जहाँबानी ने उस दुष्ट के अपराधों के लिए उसे दंड न दिया।

हुमायूं का काबुल की ओर प्रस्थान

जब बैराम ख़ाँ की निष्ठा का प्रमाण मिल गया और संसार वालों को यह बात ज्ञात हो गई कि वह आज्ञाकारिता एवं उत्तम सेवा के मार्ग पर दृढ़ है तो कन्धार का, जिसके विषय में उन्होंने यह सोचा था कि मुनइम ख़ाँ को प्रदान कर देंगे, बैराम ख़ाँ के पास ही रहने दिया और उस विचार को त्याग दिया। ज़मीनदावर को ख़्वाजा मुअज़्ज़म से लेकर अली कुली ख़ाँ के भाई बहादुर ख़ाँ को प्रदान कर दिया। जब उनका संसार को विजय करने वाला हृदय राज्य-व्यवस्था की ओर से निश्चिन्त हो गया तो वे हिन्दुस्तान की विजय के उद्देश्य से काबुल की ओर रवाना हुए। बैराम ख़ाँ को इस आशय से विदा कर दिया कि वह इस अभियान की व्यवस्था करके शीघ्रातिशीघ्र सम्मानित सेवा में पहुँच जाय। वली बेग एवं हाजी मुहम्मद सीस्तानी को, जिनमे बहुत सी बातें सम्बन्धित करके लोग अशान्ति की सामग्री एकत्र करते रहते थे, भाग्यशाली रिकाब के साथ रख लिया। गज़नी के समीप सावधानी के आकाश के पार्थिव प्रकाश अर्थात् हज़रत शाह-शाह ने उनका स्वागत किया। दो शुभ नक्षत्रों के मिलने का दृश्य था। मुहम्मद कुली ख़ाँ बरलास, अलगा ख़ाँ एवं बहुत से लोग कोरनिश द्वारा सम्मानित हुए। ९६१ हि० के अन्त[६] में उस युग

१ विश्वास-पात्र होने।
२ 'बद मस्तीहा कर्द'।
३ ये लोग हज़रत अली के सहायक थे। किन्तु सिफ़्फ़ीन (रक्का के दक्षिण में) के युद्ध के समय पंच की नियुक्ति के कारण हज़रत अली के घोर शत्रु हो गये (२६ जुलाई ६५७ ई०) और बाद में उनकी धर्मान्धता के कारण बहुत समय तक मुसल्मानों का रक्तपात होता रहा।
४ शीआ।
५ हुमायूं उसे पुत्र कहता था।
६ नवम्बर १५५४ ई०।

के शासक के भाग्यशाली चरणो द्वारा काबुल के भूभाग को सौभाग्य प्राप्त हुआ और उसने दैवी प्रकाश की प्राप्ति का सम्मान हासिल किया।

मुनइम खां का अकबर का अतालीक नियुक्त होना

(३३५) उन्ही दिनो में मुनइम खा को हज़रत शाहंशाह का अतालीक[1] बनाया गया। यद्यपि प्रथा एव परम्परानुसार उस वृद्ध को वह नाम प्रदान किया गया किन्तु वास्तव में वह वृद्ध बालको के समान "अक्ले कुल[2]" के उस प्रतीक के पास सौभाग्य का पाठ पढने के लिए भेजा गया। मुनइम खा ने इस उत्कृष्ट वरदान के लिए ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने की दृष्टि से एक हृदयग्राही जश्न का आयोजन किया एव उचित उपहार प्रस्तुत करके अपने विश्वास एव गर्व की सामग्री की व्यवस्था की।

हिन्दुस्तान की विजय सम्बन्धी फाल

उन्ही दिनो में हलहल सुल्तान का पुत्र उलुग बेग ईरान के शासक की ओर से पहुँचा और उपहार प्रस्तुत किए। इस घटना से उनकी प्रसन्नता में वृद्धि हो गई। हज़रत जहाँबानी सर्वदा न्याय एव उपकार के साथ साथ हिन्दुस्तान के अभियान की व्यवस्था किया करते थे। ससार के विजेता के उसी सोच विचार के समय एक दरवेश ने जो वली[3] प्रसिद्ध था, उपहार स्वरूप एक जोडा जूता भेजा। हज़रत जहाँबानी ने कहा कि 'हमने इस जूते से हिन्दुस्तान की विजय की फाल निकाली कारण कि आम लोगो में यह प्रसिद्ध है कि 'तुर्किस्तान (विश्व का सिर) सिर, खुरासान सीना एव हिन्दुस्तान पाँव है।" उन्होने कहा कि यह फाल उस फाल के समान है जो हज़रत साहब किरान ने निकाली थी। वह इस प्रकार है कि जिस वर्ष वे मावराउन्नहर से खुरासान विजय हेतु रवाना हुए और जब विजयी सेना अन्दखूद[4] पहुँची, तो उस कस्बे में अपने चमत्कारो एव आत्मा की शुद्धता के लिए प्रसिद्ध सगी अता नामक दरवेश के दर्शन हेतु उन्होने प्रस्थान किया। दरवेश ने उस समय मौजूद एक भेड के सीने को हज़रत साहब किरान के समक्ष भोजन हेतु प्रस्तुत किया। हज़रत ने अपने दरबार के सम्मानित विश्वासपात्रो से कहा, 'हम सीने से खुरासान विजय की फाल निकालते है कारण कि खुरासान को ससार का सीना बताया गया है।"

२ ईदे रमज़ान[5] को बैराम खा सेवा में उपस्थित होकर सम्मानित हुआ। हज़रत जहाँबानी ने आनन्द मगल में वृद्धि करने एव उन अत्यधिक कृपाओ के कारण जो कि उसके प्रति प्रदर्शित करते रहते थे, ईद के समारोह की प्रथाओ को पुन आयोजित कराया और ईद के जश्न से भी उत्तम एक हृदयग्राही जश्न का प्रबन्ध कराया।

१ सरक्षक, गुरु।
२ जिसकी बुद्धि में किसी प्रकार का लेश मात्र को भी कोई दोष न हो।
३ सम्भ, मूल पुस्तक मे इस प्रकार है 'दरों असनाये ई अन्देशाये जहा कुशाये यके अज़ दरवेशान कि ब विलायत इश्तिहार दाश्त'। बेवरिज ने "ब विलायत इश्तिहार दाश्त" का अनुवाद "who was famous in fore.gn lands (wilayat) जो विदेश (विलायत) में प्रसिद्ध था" किया है किन्तु यहा "विलायत" का अर्थ 'वली होना है। (बेवरिज, पृ० ६१२)।
४ बल्ख के पश्चिम में।
५ २ शव्वाल ९६१ हि० (३१ अगस्त १५५४ ई०)।

अकबर द्वारा निशाने की कुशलता का प्रदर्शन

इस हर्ष-उल्लास के दिन जब हवा के घोड़ो के चाबुक सवारो[1] एव बाल को बेधने वाले धनुर्धारियो की परीक्षा हो रही थी, प्रताप के रण-क्षेत्र के शाह सवार, ऐश्वर्य एव गौरव का बहार के पौधे अर्थात् हजरत शाहशाह् को इस बात की इच्छा हुई कि वे अपने मनोरजन हेतु कुछ समय कबक पर निशाना लगाने मे व्यतीत करें। अपने हाथ की कुशलता एव धनुर्विद्या का ज्ञान बाह्य बातो पर दृष्टि रखने वालो को दिखलायें और बाह्य ससार के रूप के पुजारियो को निष्ठा के सन्मार्ग पर लायें।

प्रथम बार उन्होंने कबक को, जिसके बेधने में बडे बडे अनुभवी असमर्थ थे, अपने ध्यान के बाण का लक्ष्य बनाया और सुनहरी गेंद की गाँठ[2] को अपने बाल को बेधने वाले बाण से बेध (३३६) डाला। सम्मानित दरबार के उपस्थित गण यह देख कर प्रशसा का नारा लगाने लगे। बाह्य बातो पर दृष्टि रखने वाला के लिए ऐसी घटनायें आश्चर्यजनक प्रतीत होती है किन्तु जो लोग जागरूक सौभाग्य के साथ, आध्यात्मिक दृष्टि से ससार के इस बादशाह के रहस्यमय कारनामो का अवलोकन करते है उन्हे अधिक आश्चर्य नही होता। जो आध्यात्मिक आश्चर्यजनक बातो की खान हो, उसके द्वारा बाह्य विचित्र बातो का प्रदर्शन कोई महत्व नही रखता।

बैराम खा ने हजरत शाहशाह के कबक बेधने की प्रशसा मे एक उत्तम कसीदे की रचना करके भव्य जश्न में प्रस्तुत किया। यह प्रथम शेर उसी में से है —

शेर

'तेरे बाण ने कबक की गाँठ को कजक[3] से छीन लिया।
उसने सुरैया नक्षत्र का, हिलाल[4] से टूटने वाले तारा के समान काट डाला[5]।'

आनन्द मगल के इन्ही दिनो मे, जब कि राज्य के सहायक हिन्दुस्तान विजय की महत्वाकाँक्षा कर रहे थे, हिन्दुस्तान के हितैषियो के प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए, जिनमे सलीम खा की मृत्यु एव उस प्रदेश की अव्यवस्था का उल्लेख था।

हिन्दुस्तान की उथल पुथल के समय जो घटनायें घटी उनका सक्षिप्त उल्लेख

जब बात यहाँ तक पहुँच गई तो इतिहासकार के लिए यह अनिवार्य है कि वह सक्षिप्त रूप से हिन्दुस्तान का विवरण दे दे ताकि भूत बश को गोष्ठी की बातो को परख रखने वालो को प्रतीक्षा न करनी पडे।

१ वह आदमी जो घोडों को साधता और सिखाता एव चुग्गसवारी की शिक्षा देता है।
२ सम्भवत वह गाठ जिससे गेंद बधा था।
३ अकुश जैसी कोई वस्तु जो कबक बेधने के खेल में उस खम्भे पर लगाई जाती थी जिस पर सोने अथवा चादी का गेंद या कद्दू लटकाया जाता था।
४ कजक का झुकाव जो शिशु चन्द्र के समान होता है।
५ इस मिसरे का अर्थ स्पष्ट नहीं।

सुल्तान सलीम

हिन्दुस्तान का सक्षिप्त इतिहास इस प्रकार है —जब ११ रबी-उल-अव्वल ९५२ हि० (२३ मई १५४५ ई०) को शेर खा पाँच वर्ष, दो मास तथा १३ दिन तक अपहरण द्वारा स्वतत्र रूप स राज्य करके मृत्यु को प्राप्त हो गया तो उसका पुत्र सलीम खा ८ दिन उपरान्त अमीरो की सहमति से अपने पिता के स्थान पर सिंहासनारूढ हुआ। ८ वर्ष, २ मास तथा ८ दिन तक वह राज्य के सम्बन्ध में दौड धूप करता रहा। कुछ समय तक उसने अपने बडे भाई आदिल खा तथा ख्वास खा से युद्ध किया। ख्वास खा शेर खा के सेवको में था। वह अपने समूह के सर्व साधारण व्यक्तियो मे मूर्खो को प्रोत्साहन देने, धूर्तता एव लोगो की धन-सम्पत्ति का अपहरण करने तथा ससार की सचित धन-सम्पत्ति का साधारण एव तुच्छ लोगो मे बाँटने के कारण प्रसिद्ध हो गया। क्योकि स्वामी का विरोध, चाहे वह झूठा ही क्यो न हो, किसी का शुभ नही होता अत शत्रुओं को कोई सफलता न प्राप्त हुई।

वह[1] कुछ समय तक नियाजी कबीले वालो से, जो पजाब के हाकिम थे और जिनका नेता हैबत खा था, युद्ध करता रहा। वे लोग पराजित हो गए और कश्मीर के पहाडो की कन्दराओं में चले गए। वह कुछ समय तक गक्खरो से युद्ध करता रहा। क्योंकि इस कबीले ने उन षड्यन्त्रकारियो की अधीनता स्वीकार न की थी और वे इस पवित्र वश के प्रति निष्ठावान् थे अत उसे कोई सफलता न प्राप्त हुई और वह उन लोगो पर प्रभुत्व न पा सका। उसने रोहतास के किले का निर्माण, जिसे शेर खा ने प्रारम्भ कराया था, पूरा कराया। सिवालीक पर्वतो के मध्य में उसने अपने लिए स्वय एक बुरी फाल निकाली और मानकोट के किले को अपनी शरण का स्थान समझ कर उसका निर्माण प्रारम्भ कराया। दीर्घकाल तक वह अपमान गुडो एव अपनी दुष्टता से भयभीत (३३७) होने के कारण ग्वालियार के किले में जीवन व्यतीत करता रहा। यद्यपि वह प्रजा[2] के प्रति सद्व्यवहार करता था किन्तु सैनिको का अत्यधिक ध्यान रखता था। २२ ज़ीकाद ९६० हि० (३० अक्तूबर १५५३ ई०) को उसकी मृत्यु उसके तुच्छ अगो में जहरवाद के कारण हो गई।

उसकी वसीयत के अनुसार उसका पुत्र फीरोज़ खा, जो कि बालक था, सिंहासनारूढ हुआ। कुछ दिन उपरान्त फीरोज खा के मामा मुबारिज खा ने उस निरपराध की हत्या करा दी और अपना नाम मुहम्मद आदिल रखा। वह शेर खा के अनुज निजाम खा का पुत्र था। यह बडी विचित्र बात है कि इस निजाम के एक पुत्र तथा तीन पुत्रियाँ थी जिनमें से पुत्र को राज्य प्राप्त हुआ और उन तीन पुत्रियो के पति उच्च पदो द्वारा सुशोभित हुए। उनमें एक सलीम खा, दूसरा सिकन्दर सूर और तीसरा इबराहीम सूर था। अन्तिम दोनो का सक्षिप्त उल्लेख किया जायेगा।

हेमू

हेमू, बदगोई[3], बद अन्देशी[4] तथा चुगुलखोरी के कारण साधारण श्रेणी से उच्चतम श्रेणी

१ सुल्तान सलीम।
२ किसानों से।
३ दूसरों की निन्दा करना, चुगुल खोरी।
४ बुरा सोचना, बद-ख्वाही।

को प्राप्त हो गया था। इसका कारण यह है कि यह बात ससार के रईसा को, जो ससार वालो के विषय मे जाँच पडताल किया करते हैं इस सीमा तक पसन्द होती हैं, कि उनकी वजह से लोगो की स्वाभाविक एव नैसर्गिक दुष्टता तथा लोगो का खोटापन उनकी दूरदर्शी दृष्टि से छिप जाता है। (हेमू ने) इस अत्याचारी की वकालत[1] को, जो ससार वालो की दशा की ओर से असावधान होकर सर्वदा भोग विलास एव इन्द्रिय लोलुपता मे ग्रस्त रहता था, अपने अधिकार में कर लिया। ससार में अव्यवस्था फैल गई। बात को इस स्थान पर छोड कर हेमू के सक्षिप्त विवरण द्वारा लेख को ताजगी प्रदान करना उचित प्रतीत होता है।

हे ईश्वर की आश्चर्यजनक शक्ति की खोज करने वालो! दूर तक दृष्टि डालो तथा हेमू के विवरण से शिक्षा ग्रहण करो। उसमे बाह्य रूप से न तो हसब[2] था और न नसब[3], न तो रूप रग और न चरित्र। सम्भवत विधाता ने किसी आध्यात्मिक रहस्य के कारण जो युग के तीक्ष्ण बुद्धि वालो को ज्ञात न था, उसे उच्च श्रेणी को पहुँचा दिया और या युग के दुष्टो को दड देने के लिये एक दुष्टतर उनके ऊपर नियुक्त कर दिया। सक्षेप में, वह कुरूप ठिगना, लम्बी-लम्बी आकाँक्षायें रखने वाला रेबारी[4] के, जो मेवात के कस्बो में से एक है, अधम बक्कालो के समूह से सम्बन्धित था। वश के अनुसार उसका सम्बन्ध हिन्दुस्तान के बक्कालो के क्षुद्रतम समूह दूसर से था। वह गलियो के पीछे बडी ही हीन दशा मे खारा बेचा करता था यहाँ तक कि धूर्तता द्वारा जिसका सक्षिप्त उल्लेख हो चुका है उसने अपने आप को सलीम खा की सरकार के बक्काला की माला मे सम्मिलित कर लिया। अपनी धूर्तता के कारनामा से उसने शनैं शनैं बदगोई एव कारदानी[5] की सहायता से सलीम खा से परिचय प्राप्त कर लिया और उसके सेवको में सम्मिलित हो गया। वह सर्वदा लोगो को कष्ट मे डाला करता था और दिखाता था कि मैं अपने स्वामी का हितैषी हूँ किन्तु वास्तव में अपने स्वार्थ की सिद्धि हेतु अपहरण का बाजार गरम रखता था और अत्याचार द्वारा धन (३३८) छीन छीन कर अपने घर का शोभा प्रदान करता रहता था। त्राहि-त्राहि! यह अपने स्वामी के विनाश की सामग्री की व्यवस्था करता था और अपने हाथ से अपने पाँव में कुल्हाडी मारता था। इस विषय मे ससार के महान् लोग बडी भूल करते हैं कारण कि यह बहुधधी समूह लोगो के विषय में जानकारी प्राप्त करने की इच्छा के कारण कटु आलोचक दुष्टो को या तो लोगो की गुप्त बातो की जानकारी हेतु और या अन्य दुष्टो को दड देने के उद्देश्य से अपने पास स्थान दे देता है। यद्यपि वे अपने हृदय में यह सकल्प कर लते है कि इन लोगो के कहने पर वे हितैषियो एव निष्ठावानो की धन-सम्पत्ति तथा मर्यादा को नष्ट न करेंगे तथापि यह बुरे हृदय वाला समूह जो अपने बाह्य रूप को सजाये रहता है, अवसर पाकर अपने लाभ हेतु चिकनी चुपडी बातो द्वारा निष्ठावानो को हानि पहुँचाने का प्रयत्न करता है। यह उत्कृष्ट समूह विभिन्न कार्यों मे अत्यधिक व्यस्त होने के कारण उस प्रतिज्ञा को भूल कर इन दुष्टो की चिकनी-चुपडी

१ प्रधान मंत्री का पद।
२ श्रेष्ठता, विशेष रूप से व्यक्तिगत श्रेष्ठता।
३ कुलीनता।
४ गुड़गाव जिले में।
५ कार्य-कुशलता किन्तु यहा राजस्व सबन्धी योग्यता से तात्पर्य है।

बातो में आ जाता है तथा निष्ठावानों के प्रति शकित हो जाता है और अपने राज्य की नीव को अपने हाथ से गिराने का प्रयत्न करने लगता है।

सक्षेप मे, इस दुष्ट ने अल्प समय में सलीम खा के हृदय मे अपना स्थान बना लिया और शासन एव राजस्व सम्बन्धी अनेकों समस्याओ मे अधिकार प्राप्त कर लिया। जब सलीम खा की अवस्था का प्याला भर गया[1] और हिन्दुस्तान का राज्य सलीम खा के चाचा के पुत्र मुबारिज खा को प्राप्त हो गया तो हेमू ने उसे ससार के कार्यों से अपरिचित पाकर राज्य के समस्त कारखानों[2] पर अधिकार जमा लिया और बडा प्रतिष्ठित अमीर हो गया। मुबारिज खा, जिसे लोग अदली कहते थे, नाम मात्र को बादशाह था। लोगो की नियुक्ति, पदच्युत करना, न्याय इत्यादि की व्यवस्था वह[3] स्वय करता था। अपनी दूरदर्शिता के कारण उसने शेर खा तथा सलीम खा के खजानो एव फीलखानों[4] को अधिकार में कर लिया। वहाँ जो कुछ भी एकत्र था उसको धृष्टतापूर्वक नष्ट भ्रष्ट करने लगा। नीच, धन के दास एव सूझ बूझ न रखने वाले उसकी पूजा किया करते और उसकी सफलता का प्रयत्न करते रहते थे। कुछ दिन तक वह राय की उपाधि धारण करके अभिमानवश सिर उठाये रहा। कुछ समय तक राजा की उपाधि धारण करके उसने अपना नाम राजा विक्रमाजीत रख लिया और टेढी-टोपी पहिनने लगा[5]। मूर्खता एव दु साहस के कारण अपने लिए बुजुर्गों का नाम चुन लिया। अपनी दूरदर्शिता के कारण नाम मात्र की सल्तनत अदली के अधीन रहने दी और उसके शत्रुओ से घोर युद्ध किए। अपने साहस एव अपनी वीरता के कारण वह युद्ध मे सफलता प्राप्त करके वापस होता था। रणक्षेत्र में उसने आश्चर्यजनक कौशल प्रदर्शित किए। पौरुष एव सफलता के कारण वह अत्यधिक प्रसिद्ध हो गया, यहाँ तक कि शनै शनै उसके कार्य इस सीमा को पहुँच गए कि उसने धृष्टता-पूर्वक हजरत शाहशाह की उत्कृष्ट सेना का मुकाबला किया। क्योकि उनका पवित्र व्यक्तित्व समस्त सदाचारियो एव दुराचारियो की कसौटी है अत उसके खोटे सिक्के की परीक्षा हो गई और ससार को आलोकित करने वाले न्याय के प्रकाश से उसके अस्तित्व के अंधकार का अन्त हो गया। इसका उल्लेख उचित स्थान पर किया जायगा।

क्योकि हेमू की सहस्रों दुष्टताओ मे से कुछ का उल्लेख हो चुका अत अब हिन्दुस्तान का शेष हाल लिखा जा रहा है।

शेर शाह एवं सलीम शाह की प्रशंसा

जब शासन प्रबन्ध मुबारिज खा के सिपुर्द हुआ तो हिन्दुस्तान की दशा और भी शोचनीय हो गई। वास्तव में उक्त पिता, पुत्र शासन प्रबन्ध की अच्छी योग्यता रखते थे। यह बडे खेद का (३३९) विषय है कि उन्होने नमकहरामी एव कृतघ्नता पूर्ण जीवन व्यतीत किया। यदि ये दोनों व्यक्ति हजरत शाहशाह की भाग्यशाली चौखट के सेवक होते और पिता को उत्कृष्ट दरबार की

१ मृत्यु हो गई।
२ विभागों।
३ हेमू।
४ गज-गृह।
५ शाहाना ठाट-बाट से रहने लगा।

सेवा एव पुत्र को सीमान्तों का प्रबन्ध प्राप्त होता तो वे नि सन्देह शाही कृपा द्वारा सम्मानित होते और उचित सेवाओं द्वारा वह जीवन, जिसे बुद्धिमान् बुजुर्ग लोग वास्तविक जीवन कहते हैं, प्राप्त करते। उनके जैसे कार्यकर्ताओं को ऐसे शासक की आवश्यकता थी। वह राज्य जो इस प्रकार की नमकहरामी से प्राप्त हो, उसके लिए जीवित रहना अनुभवी बुद्धिमान् मृत्यु से भी बुरा समझते हैं और उसके प्रति अत्यधिक घृणा प्रकट करते हैं।

अफगानों में राज्य हेतु संघर्ष

सक्षेप में, जब सलीम खा की मृत्यु हो गई तो मुबारिज खा ने जो कुछ किया वह किसी ने भी न किया होगा। अहमद खा सूर, जो सलीम खा की बहिन का पति एव पजाब का हाकिम था, राज्य का दावा करने लगा और उसने सिकन्दर की उपाधि धारण कर ली। मुहम्मद खा, जो शेर खा का निकटतम सम्बन्धी एव बगाले का हाकिम था, रियासते आम्मा[1] की प्राप्ति का प्रयत्न करने लगा। इबराहीम खा सूर भी सम्बन्धी होने के कारण हिन्दुस्तान पर राज्य करने की आकांक्षा करने लगा था। शुजाअत खा ने, जिसे सर्वसाधारण सजावल खा कहते थे, मालवा मे विद्रोह कर दिया। दुष्ट अफगानो ने आपस में एक दूसरे से युद्ध करके विद्रोह एव हलचल मचा दी। सिकन्दर ने पजाब की सेना एव समस्त दुष्टो को एकत्र करके राजधानी आगरा के विरुद्ध प्रस्थान किया। मुबारिज खा एव इबराहीम खा भी इसी उद्देश्य से निकले। हेमू की धूर्तता के कारण मुबारिज खा पूर्व की ओर रवाना हुआ। आगरा के समीप सिकन्दर तथा इबराहीम मे घोर युद्ध हुआ। इबराहीम पराजित होकर अलग बैठ रहा। उसके पिता गाजी खा सूर ने, जो ब्याना पर अधिकार जमाये हुए था, किले में पहुँच कर किला बन्द कर लिया। सिकन्दर को सफलता प्राप्त हो गई। सिंध से गगा नदी तक के प्रदेश उसने अपने अधिकार में कर लिये। वह अत्यधिक सेना एकत्र करके चाहता था कि पूर्व की ओर जाकर राज्य का दावा करने वालो को पराजित कर के स्वय पूर्ण अधिकार सम्पन्न बादशाह बन बैठे। इसी हलचल के समय हजरत जहाँबानी की ससार विजय करने वाली पताकाओ के हिन्दुस्तान विजय हेतु प्रस्थान करने के समाचार प्रसिद्ध होने लगे। उसने तातार खा, हबीब खा तथा एक बहुत बडी सेना को पजाब की रक्षा हेतु नियुक्त किया। बगाले के हाकिम मुहम्मद खा ने मुबारिज खा एव अपने समस्त विरोधियो से मुक्त होना निश्चय कर लिया। उससे तथा मुबारिज खा एव हेमू से कुछ दुर्घटनाओ के उपरान्त चपरगत्ता के क्षेत्र मे घोर युद्ध हुआ। सयोग से मुहम्मद खा मारा गया। शेर खा एव सलीम खा के खजाने हेमू के अधिकार मे आ गए। वह भोग विलास एव इन्द्रिय-लोलुपता में ग्रस्त हो गया। बाह्य रूप से उसे सफलता प्राप्त होने लगी। इसी बीच मे (३४०) उसका इबराहीम एव अन्य शत्रुओं से युद्ध हुआ। सभी स्थानो पर उसकी विजय हुई। बावजूद इसके कि वह घोडे पर सवार होना न जानता था और सर्वदा उसे हाथी के हौदज पर लादकर ले जाया जाता था, अपनी धृष्टता के कारण उसने मुफ्त हाथ आये धन को बेतहाशा व्यय करना प्रारम्भ कर दिया, और आश्चर्यजनक कार्य, जो ससार वालो की समझ में नही आ सकते, करने लगा।

जब आगरा के आस-पास सिकन्दर को प्रभुत्व प्राप्त हो गया तो वह बिहार तथा बगाले की ओर रवाना हुआ। खिज्र खा वरद मुहम्मद खा ने अपने पिता के स्थान पर सिंहासनारूढ होकर

१ सभी क्षेत्रों पर पूर्ण प्रभुत्व अथवा राज्य।

एक बहुत बडी उपाधि धारण कर ली। वह अपने आप को सुल्तान जलालुद्दीन कहलवाने एव बगाले का शासन प्रबन्ध करने लगा। मुबारिज खा तथा हेमू बगाले पर आक्रमण करना चाहते थे किन्तु वे कुछ समय तक अपने शत्रुओ मे युद्ध करने में सलग्न रहे[1]।

इन घटनाओ का सविस्तार उल्लेख, जिनकी चर्चा करने की मेरी कोई इच्छा नही, उपेक्षा के गुप्तगृह में छोड कर, अपने मूल उद्देश्य की ओर अग्रसर होता हूँ।

हजरत जहाबानी जन्नत आशियानी का हिन्दुस्तान की विजय हेतु प्रस्थान और शाहंशाह के नित्य-प्रति उन्नत प्रताप से विजय

जो लोग आश्चर्यजनक घटनाओ की प्रतीक्षा किया करते है तथा जो उत्कृष्ट इतिहास के श्रोता है उनसे यह बात छिपी न रहनी चाहिये कि जब हिन्दुस्तान की उथल पुथल का हाल एव सुख शान्ति के इस केन्द्र की अव्यवस्था के समाचार जिनकी ओर सकेत किया जा चुका है, हजरत जहाँबानी के सम्मानित काना तक पहुँचे तो उन्हाने हिन्दुस्तान के आक्रमण का, जिसे उनके दूरदर्शी मस्तिष्क ने निश्चय कर लिया था, सकल्प कर लिया। अन्त पुर की महिलाओ[2] को राजधानी काबुल में ईश्वर की रक्षा में सौंप दिया और शाह वली बकावल बेगी को मीर्जा मुहम्मद हकीम का अतका नियुक्त करके उसकी सेवा में छोड दिया।

जिलहिज्जा ९६१ हि० के मध्य (लगभग १२ नवम्बर १५५४ ई०) में शुभ मुहूर्त और ऐसी घडी मे जिसपर नक्षत्रा की गति को गर्व हो सकता था उन्हाने उत्कृष्ट सकल्प की लगाम हिन्दुस्तान के प्रदेशो की ओर मोडी। उस दैवी नूर के पोषित अर्थात् हजरत शाहशाह को, जिनकी उस शुभ अवसर पर अवस्था १२ वर्ष ८ मास की थी, और लोक तथा परलोक के उस महान् व्यक्ति की जिसकी 'अक्ले कामिल' का समझना बुद्धि के बाहर है, सांसारिक एव आध्यात्मिक विजयो की सेना का अग्र भाग बना कर प्रताप के हवा के घोडो को दौडाया। जिस दिन उनका उत्कृष्ट प्रस्थान हुआ उस दिन

१ तुर्की नौसेनानायक (एडमिरल) सिदी अली रईस ने उस समय की स्थिति का विवरण इस प्रकार दिया है "The political state of the country was as follows After the death of Selim Shah a son of Shir Khan, the former Sovereign of Hindustan, Iskender Khan, had come to the throne When the Padishah Humayun heard th s, he immediately left Kabul and marched his army to India, took Lahore, and fought Iskender Khan near Sahrand He won the battle and took 400 elephants besides several cannon and 400 chariots Iskender Khan escaped to the fortress of Mankut, and Humayun sent Shah Abul Maali with a detachment of soldiers after him Humayun himself proceeded to his residence at Delhi and despatched his officers to different places The Ozbeg, Iskender Khan, he sent to Agra, and others to Firuzshah, Senbel, Bayana and Karwitch" A Vambery *The Travels and Adventures of the Turkish Admiral Sidi Ali Reis* (London 1899), p 46

२ 'मुखद्देराने तुतुक्रे इस्मत'—सतीत्व के परदे की महिलायें।

दीवाने लिसानुल ग़ैब[1] से आशीर्वाद सम्बन्धी फाल निकाली। जब कोई महान् घटना परोक्ष के आवरण एव रहस्यो के परदे से प्रकट होती है तो दैवी आदेश का ढिंढोरा पीटने वाले अपनी आत्मा एव अपने स्थान से खुल्लम खुल्ला[2] चिल्लाने लगते हैं। उन्ही में से यह शाह बैत[3] है जो उत्कृष्ट पृष्ठ के शीर्षक के रूप मे सौभाग्य ने लेख के समान दृष्टिगत हुई और विजय का शीर्षक बनी।

शेर[4]

'राज्य के शुभ पक्षी एव उसकी छाया से आकांक्षा कर,
कारण कि चील कौओ[5] से साहस का शहपर नही माँगा जा सकता।'

(३४१) यद्यपि अनुभवी बुद्धिमान् तथ्य का निरूपण करने वाले वाक्यो को हज़रत जहाँबानी के प्रताप एव विजय सम्बन्धी दैवी आदेश समझ कर सौभाग्य की सभा की शोभा समझने लगे किन्तु विवेक के दरबार के दूरदर्शी लोग इस पद्य के आशय को महान् खिलाफ़त का निमन्त्रण-पत्र एव हज़रत शाहशाह के सम्मानित राज्य की सुखद घोषणा समझ कर इस दैवी पक्षी की उत्कृष्ट उडान की प्रतीक्षा करने लगे[6]। हज़रत जहाँबानी ने दैवी अनुकम्पा के दृढ हाथा एव दैवी सुखद भविष्यवाणी की दृढ रस्सी को मजबूती से पकड कर थोडे से आदमियो के साथ, जिनकी सख्या ३,००० से अधिक न थी, बुद्धिमान् हिसाब करने वाला की समझ से परे परोक्ष की अपार सेनाओ की सहायता से प्रस्थान किया।

हुमायूं का हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान

बैराम खा कुछ पादशाही कार्यो को दृढ करने एव अपने अस्त्र शस्त्र की व्यवस्था हेतु आज्ञा पाकर काबुल में रह गया। हज़रत जहाँबानी ने जलालाबाद से आनन्द मगल की प्रथाओ का पालन करते हुए जाला[7] पर सवार होकर नदी पार की। मुहर्रम ९६२ हि० के अन्तिम दिन (२५ दिसम्बर १५५४ ई०) बिकराम[8] मे शिविर लगे। सिकन्दर खा उज़बेक जिसने उचित सेवायें सम्पन्न की थी, नाना प्रकार की कृपाओ द्वारा सम्मानित हुआ। उस दिन उसे खान

१ ख्वाजा हाफ़िज़ शीराज़ी।
२ मूल में "हज़ारों ज़बान् से"।
३ ग़ज़ल का शेर जो सबसे अच्छा हो।
४ दौलत अज़ मुर्ग़ हुमायू तलब व सायये ऊ,
ज़ा कि बा ज़ाग व ज़ग़न शहपरे हिम्मत न बुवद।
دولت از مرغ همایون طلب و سایهٔ او
زانکه با زاغ و زغن شهپر همت نبود
५ चील कौओं से हिन्दुस्तान की ओर सकेत समझा गया। हिन्दुस्तानियों के काले रग का होने के कारण इस प्रकार का निष्कर्ष फाल से निकाला जा सकता था। हाफ़िज़ ने स्वय हिन्दुस्तान वालों को दृष्टि में रख कर इस शेर की रचना न की थी।
६ अकबर की उन्नति की प्रतीक्षा से तात्पर्य है।
७ लटठों की नौका, कोई छोटी नौका।
८ पेशावर।

की उपाधि प्रदान की गई। इस वर्ष की ५ सफर[1] (३० दिसम्बर १५५४ ई०) को नीलाब के नाम से प्रसिद्ध सिन्ध नदी पर विजयी पताकायें पहुँची। तीन दिन तक उस मंजिल पर पडाव किया गया।

अफ़गानो का रोहतास से पलायन

इस आनन्दवर्द्धक पडाव पर बैराम खा ने काबुल से पहुँचकर फर्श चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। उसी दिन भाग्यशाली राजदूत यह सुखद समाचार लाये कि तातार ख़ा काशी[2], जो कि एक बहुत भारी सेना सहित रोहतास के किले की रक्षा हेतु नियुक्त था, किले की प्रतिरक्षा की सामग्री के उपलब्ध एव किले के दृढ होने के बावजूद विजयी पताकाओं के बलन्द होने के समाचार सुनते ही दृढता के पाँव हटाकर भाग गया।

सुल्तान आदम गक्खर का हुमायू की सेवा में उपस्थित न होना

हज़रत जहाँबानी ने सुल्तान आदम गक्खर की प्राचीन एव नवीन उत्तम सेवाओ के कारण उसे कृपायुक्त फरमान भेजकर धरती चुम्बन करने का आदेश दिया। इस कारण कि उसका सौभाग्य उन्नति पर न था, उसने जमींदारो के समान बहाना करके निवेदन कराया कि, "मैं सिकन्दर को वचन दे चुका हूँ और मेरे पुत्र लश्करी को वह अपने साथ ले गया है। यदि मैं धरती-चुम्बन करने का सौभाग्य प्राप्त करूँगा तो इससे वचन भी भग होगा और मेरा पुत्र भी खतरे मे पडेगा।" राज्य के पदाधिकारियों ने निवेदन किया कि, "यह उचित होगा कि विजयी सेना को आदेश दे दिया जाय कि सर्वप्रथम उसका फैसला करके आगे प्रस्थान हो कारण कि ऐसे विद्रोही को बीच में छोडकर आगे बढ जाना दूरदर्शिता नही।" हज़रत जहाँबानी ने, जो सौजन्य एव कृपा की खान थे, कहा कि, "वह बहुत समय पूर्व से निष्ठा एव आज्ञाकारिता प्रदर्शित करता चला आया है और कई बार उचित सेवाए जैसा कि उल्लेख हो चुका है, सम्पन्न कर चुका है। इस समय मैं उसे दड देना उत्तरोत्तर उन्नत राज्य के लिए उचित नही समझता, विशेष रूप से जब कि वह नम्रतापूर्वक क्षमा माग (३४२) रहा है।" जब उत्कृष्ट सेना ने सिन्ध नदी पार कर ली तो जो अफगान रोहतास के क्षेत्र में एकत्र हो गए थे, वे छिन्न भिन्न हो गए, और प्रत्येक किसी न किसी कोने में चला गया। शाही सेना प्रताप के अधीन आगे रवाना हुई। हर रोज वह किसी न किसी हृदयग्राही स्थान एव आनन्द मगल के भू-भाग में पहुँच जाती। कस्बे एव ग्राम, न्याय की छाया के अधीन होते रहते और आराम एव सुख शान्ति प्राप्त करते रहते।

जब बात यहाँ तक पहुँच गई तो घटनाओ की चर्चा करने के पूर्व विजयी रिकाब के कुछ सहायको का, जो विश्वास-पात्र एव उच्च पदो पर सुशोभित थे, उल्लेख किया जाता है:

(१) बैराम खा
(२) शाह अबुल मआली
(३) खिज्र ख्वाजा खा

१ ५ सफ़र ९६२ हि०।
२ बायज़ीद के अनुसार 'इस्कन्दर सुल्तान उज़बुक' किन्तु कुछ हस्तलिपियों एवं बदायूनी (मुंतखबुत्तवारीख भाग १) के अनुसार 'काशी'।

(४) तरदी बेग खाँ
(५) सिकन्दर खाँ
(६) मिज़ खाँ हज़ारा
(७) अब्दुल्लाह खाँ ऊज़बेग
(८) मीर्ज़ा अब्दुल्लाह
(९) मुसाहिब बेग
(१०) अली कुली खाँ शैबानी
(११) मुहम्मद कुली खाँ बरलास
(१२) ख्वाजा मुअज्ज़म
(१३) अली कुली खाँ अन्दराबी
(१४) हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी
(१५) बाबूस बेग
(१६) इस्माईल बेग दूल्दाई
(१७) मीर्ज़ा हसन खाँ
(१८) मीर्ज़ा नजात
(१९) मुहम्मद खाँ जलायर
(२०) सुल्तान हुसेन खाँ
(२१) कूचूक सुल्तान
(२२) मुहम्मद अमीन दीवाना
(२३) शाह कुली नारजी
(२४) तूरुक खाँ
(२५) बाकर अली खाँ
(२६) बाकी बेग यानीन बेगी[1]
(२७) लाल खाँ बदख्शी
(२८) बेग मुहम्मद आख्ता बेगी
(२९) ख्वाजा पादशाह मरीज़
(३०) कीचक ख्वाजा
(३१) ख्वाजा अब्दुल बारी
(३२) ख्वाजा अब्दुल्लाह
(३३) मीर मुईन
(३४) मीर गनी
(३५) शाह फख्रुद्दीन
(३६) मीर मुहमिन दार्ई

१ सम्भवत 'मातरा बेगी'।

(३७) ख्वाजा हुसेन मर्वी
(३८) मीर अब्दुल हई
(३९) मीर अब्दुल्लाह् कानूनी
(४०) खजर बेग
(४१) आरिफ बेग
(४२) ख्वाजा अब्दुस्समद
(४३) मीर सैयिद अली
(४४) मुल्ला अब्दुल कादिर
(४५) मुल्ला इलियास अर्दबेली
(४६) शेख अबुल कासिम जुर्जानी
(४७) मौलाना अब्दुल बाकी
(४८) अफजल खा मीर बख्शी
(४९) ख्वाजा अब्दुल मजीद दीवान
(५०) अशरफ खा मीर मुशी
(५१) कासिम मुखलिस
(५२) ख्वाजा अताउल्लाह् दीवान ब्यूतात
(५३) ख्वाजा अबुल कासिम
(५४) शिहाबुद्दीन अहमद खा
(५५) मुईन खा फरखुदी
(५६) ख्वाजा अमीनुद्दीन महमूद
(५७) मलिक मुख्तार।

हुमायूँ का लाहौर पहुँचना

जब ससार को शोभा प्रदान करने वाली सेना कलानूर के भाग्यशाली कस्बे के क्षेत्र में पहुँची तो शिहाबुद्दीन अहमद खा, अशरफ खा तथा फरहत खा को इस आशय से लाहौर भेजा गया कि वे मिम्बरो तथा दीनारो को सम्मानित नाम से शोभा प्रदान करे[1] तथा इस भव्य नगर के निवासियों को षड्यन्त्रकारियों एव विद्रोहियो से स्थायी मुक्ति का फरमान प्रदान करें। एक बहुत बड़ी सेना नसीब खा पजभय्या[2] के विरुद्ध, जो कि हरियाना कस्बे में था, भेजी गई और वे स्वय लाहौर की ओर रवाना हुए। उस प्रदेश के उच्च पदाधिकारियों ने स्वागत का सम्मान प्राप्त किया तथा इस महान् देन एव कृपा के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। सर्व साधारण एव सम्मानित लोग अपनी दशा एव श्रेणी के अनुसार पादशाही कृपा द्वारा सम्मानित हुए। २ रबी-उस्सानी (९६२) (२४ फरवरी १५५५ ई०) को लाहौर के सम्मानित नगर ने, जो हिन्दुस्तान के भव्य नगरो मे से है, पादशाह के पवित्र चरणों द्वारा आकाश के समान उत्कर्ष प्राप्त कर लिया। सर्व साधारण एव

१ हुमायू के नाम का खुत्बा तथा सिक्का चलायें।
२ यह नाम स्पष्ट नहीं।

हर श्रेणी के लोगा ने काल-चक्र की दुर्घटनाओ से, जिसकी वे आजीवन प्रतीक्षा करते थे, स्थायी रूप से मुक्त होकर अपने उद्देश्य को प्राप्त कर लिया।

इस मास के अन्त में समाचार प्राप्त हुए कि शाहवाज खा नामक एक अफगान, अफगानो की एक बहुत बडी सेना एकत्र करके दीवालपुर में अपने षड्यन्त्र की सफलता का प्रयत्न कर रहा है। हजरत जहाँबानी ने शाह अबुल मआली, अली कुली खा शैबानी, अली कुली खा अन्दराबी, मुहम्मद खा जलायर एव वीर जवाना का एक समूह उस ओर भेजा। भाग्यशाली सेना शत्रुओ के समीप पहुँची। युद्ध प्रारम्भ हो गया। दोना ओर से प्राणो की बलि देने वाले वीरा ने युद्ध किया। सैयिदजादा अबुल मआली, जो ससार की बदमस्ती एव अपने सौन्दर्य के अभिमान में डूबा था, खतरे में फस गया था कि अली कुली खा एव (सेना की) पक्तियो का सहार करने वाले जवाना ने नित्य प्रति उन्नत सौभाग्य पर आश्रित होकर पौरुष एव बलिदान सम्बन्धी महान् कार्य सम्पन्न किए और अपहरणकर्ताओ के समूह को पराजित कर दिया। इस समूह के बहुत से लोगा की हत्या करके राज्य के अधिकारियो ने विजय एव सफलता प्राप्त कर ली।

क्योकि मै अब इस स्थान पर पहुँच गया, अत यह आवश्यक है कि मै उस विजयी सेना का भी, जो बैराम खा के अधीन की गई थी, थोडा सा उल्लेख कर दू।

हरियाना में बैराम खा की विजय

जब बैराम खा हरियाना परगने के समीप पहुँचा तो नसीब खा अफगान ने अपने साहस के अनुसार थोडा सा युद्ध किया और भाग खडा हुआ। अत्यधिक लूट की धन सम्पत्ति, नक्द (धन) एव सामान युद्ध के वीरो को प्राप्त हुआ। उन लोगा के समस्त परिवार वाले बन्दी बना लिए गए। बैराम खा ने यह सुना था कि हजरत जहाँबानी ने यह प्रतिज्ञा की है कि जब ईश्वर की कृपा से हिन्दुस्तान विजय कर लिया जायेगा तो वे किसी को बन्दी न बनायेंगे, और ईश्वर के दास लोगो के पास कैद न रक्खे जायेंगे। अत उसने स्वय सवार होकर अफगाना के समस्त परिवारा को एकत्र किया और उन्हे अपने विश्वास-पात्रा के साथ नसीब खा के पास भेज दिया। असख्य विजया की प्रस्तावना स्वरूप ऐसी विजय की प्राप्ति के बाद उसने प्रतिष्ठित हाथियो एव (३४४) लूट की उत्तम धन सम्पत्ति को उपहार स्वरूप प्रार्थना पत्र के साथ ससार को शरण देने वाले हजरत जहाँबानी के दरबार में भेज दिया और इस देन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करके आगे रवाना हो गया।

बैराम खाँ के सहायकों में पारस्परिक विरोध

जब वह जालधर के समीप पहुँचा तो अफगाना ने भाग जाना ही अपने लिए उचित समझा। विजयी सेना में पारस्परिक विरोध के कारण वे अपनी बहुमूल्य धन सम्पत्ति एव अपने प्राण बचा कर भाग गए। इस घटना का सक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है —तरदी बेग खा चाहता था कि वह भागे हुए अफगानो का पीछा करे। बैराम खा ने इसे उचित न समझकर इस बात की अनुमति न दी। तरदी बेग खा ने वाल्नू खा को बैराम खा के पास इस आशय से भेजा कि उससे जिस प्रकार सम्भव हो सके वह आज्ञा प्राप्त करे। वाल्नू खा ने उपस्थित होकर सदेश पहुँचाया। ख्वाजा मुअज्जम सुल्तान ने कठोर वचन एव अपशब्द कहे। वाल्नू खा ने भी कठोर उत्तर दिए।

ख्वाजा ने वाल्तू खा पर तलवार का वार किया, वह उसके हाथ में लगी। जब यह समाचार सम्मानित कानो तक पहुँचे तो उन्होंने शिक्षायुक्त फरमान अफजल खा के हाथ मौखिक सदेश सहित भेजा। उसने पादशाह के समस्त उपदेश एव बुद्धिवर्धक शिक्षाए अमीरो तक पहुँचाईं। शान्ति एव मेल हेतु गोष्ठी आयोजित की। बैराम खा जालन्धर मे ठहर गया। प्रत्येक व्यक्ति को अलग अलग परगने देकर इधर-उधर नियुक्त कर दिया।

सिकन्दर खा का सरहिन्द से पलायन

सिकन्दर खा माछीवारा मे नियुक्त हुआ। वहाँ पहुँच कर उसने यह सोचा कि वह शक्तिशाली है। वह आगे रवाना हो गया और उसने सहरिन्द[1] को अपने अधिकार मे कर लिया। अत्यधिक धन सम्पत्ति उसको प्राप्त हो गई। इसी बीच में तातार खा, हबीब खा, नसीब खा, मुबारक खा तथा अफगाना की एक बहुत बडी सेना देहली से आ गई। सिकन्दर खा सहरिन्द में ठहरना उचित न समझ कर जालन्धर पहुँचा। बैराम खा ने यह बात राज्य के हित मे न समझकर क्रोध प्रदर्शित किया और कहा कि,"तुझे चाहिए था कि तू दृढता एव पौरुष के पाँव जमाकर सहरिन्द की प्रतिरक्षा का प्रयत्न करता और हमें सूचना दे देता।'

हुमायूं की सेना का सतलज नदी पार करना

अत्यधिक वाद-विवाद के उपरान्त प्रतिष्ठित अमीर पादशाही के स्थायी सौभाग्य से जालन्धर के आगे रवाना हुए। जब वे माछीवारा के क्षेत्र में पहुँचे तो तरदी मुहम्मद खा एव अधिकाँश लोगो ने सतलज नदी पार करना उचित न समझा और कहा कि, "क्योंकि वर्षा ऋतु निकट आ गई है अत राज्य के हित मे यह उचित होगा कि घाटो को दृढ बनाकर हम लोग ठहर जायें। जब वर्षा की अधिकता समाप्त हो जाय और वायु अनुकूल हो जाय तो नदी पार करें।" बैराम खा एव दूरदर्शी लोगो के एक समूह ने नदी पार करना राज्य के हित मे समझकर उचित बातें प्रस्तुत की। अन्त में मुल्ला पीर मुहम्मद, मुहम्मद कासिम खा नीशापुरी, कनी बेग, हैदर कुली बेग शामलू के प्रयत्न से बैराम खा ने नदी पार की। तरदी बेग खा तथा समस्त अमीरो ने भी विवश होकर नदी पार की।

(३४५) भाग्यशाली सेना चार दस्तो मे विभाजित हो गई। मध्य भाग को बैराम खा की वीरता एव निष्ठा द्वारा शोभा प्राप्त हुई। खिज्र खा हजारा को दाये भाग का सरदार नियुक्त किया गया। बायें भाग का नेतृत्व तरदी बेग खा को प्रदान हुआ। सिकन्दर खा प्राणो की बलि देने वाले एक समूह के साथ अग्र भाग में नियुक्त हुआ। इस कारण कि ससार के पादशाह का उद्देश्य न्याय के नियमों एव दैवी इच्छाओ की पूर्ति पर आधारित था अत दरबार के उच्च अधिकारियो के कार्य नित्य प्रति अधिक से अधिक विजय एव सफलता प्राप्त करते गए।

अफगान लोग विजयी सेना की कमी एव उन लोगो के नदी पार करने के समाचार प्राप्त करके अत्यधिक सेना सहित शीघ्रातिशीघ्र पहुँच गए। सायकाल के समीप दोनो ओर की

१ सरहिन्द।

सेनाओं की मुठभेड़ हो गई। घोर युद्ध होने लगा, विजयी सेना के दूरदर्शी सैनिकों ने "रजरा"[1] नामक स्थान युद्ध के लिए चुनकर दृढ़ता से पाँव जमाये। सभी लोगों ने अपने साहस के अनुसार इस युद्ध में पौरुष एवं योग्यता प्रदर्शित की। यहाँ तक कि रात हो गई। रुस्तम सरीखे वीर चारों ओर से आक्रमण करके बाणों की वर्षा करते रहे। संयोग से एक घटना, जो विजय की प्रस्तावना बन सकती थी, इस प्रकार घटी वहाँ समीप ही एक बहुत बड़े ग्राम में जहाँ के घर छप्पर के बने हुए थे दैवी सहायता की मशाल से आग लग गई और वास्तव में भाग्यशाली मार्ग में सहस्रों दीपक प्रज्वलित हो गए। यह बात निश्चित रूप से ज्ञात हो गई है कि यह दैवी सहायता शत्रुओं के प्रयत्न के फलस्वरूप प्राप्त हुई। जब भाग्यशाली प्रकाश चमकता है तो शत्रु अपने भले के लिए जो कार्य करते हैं वे उनकी हानि का साधन बन जाते हैं। संक्षेप में उस प्रकाश से, जो विजयी वीरों की सहायता का प्रकाश था, शत्रुओं के विषय में प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त करके वे चारों ओर से हृदय विदारक बाणों द्वारा संहार करने लगे। क्योंकि विजयी सेना अँधेरे में थी अतः शत्रुओं को उनके विषय में कोई भी ज्ञान न प्राप्त हो पाता था। यहाँ तक कि लगभग तीन पहर रात्रि व्यतीत हो जाने के उपरान्त विद्रोही सेना मुकाबला न कर सकी और घबड़ा कर भाग गई। बहुत बड़ी विजय प्राप्त हुई। हाथी एवं अपार धन सम्पत्ति राज्य के सहायकों के अधिकार में आ गई। लूट की उत्तम सामग्री एवं निष्ठायुक्त प्रार्थनापत्र सम्मानित दरबार में दूसरे दिन प्रस्तुत किए गए। वहाँ से विजय तथा सफलता प्राप्त करके वे सहरिन्द पहुँचे और वहाँ पड़ाव किया। अली कुली शैबानी को, जो पीछे से आकर मिल गया था, एक सेना सहित आगे भेजा।

शाही सेना की विजय के लिये हुमायूं की प्रार्थना

यह एक विचित्र बात है कि जब (हजरत जहाँबानी को) तातार खाँ के एक भारी सेना सहित माछीवारा के क्षेत्र में पहुँचने के समाचार प्राप्त हुए तो उन्होंने अपने उस समूह से जो सर्वदा उनके पास उपस्थित रहता था कहा कि, "दूरी बड़ी अधिक है। हमारे पहुँचने तक जो कुछ दैवी इच्छा होगी वह पूरी हो जायगी अतः यही उचित होगा कि उत्कृष्ट चौखट[2] से भिक्षा माँगी जाय, और दैवी वरदान के ग्रह से विजय तथा सफलता की कामना की जाय।' उस समय उन्होंने दुआ के लिए हाथ उठाकर जो उत्कृष्ट सेना आगे गई थी उसकी सफलता की (३४६) (ईश्वर से) प्रार्थना की। इस घटना को कुछ ही दिन व्यतीत हुए थे कि विजय पत्र प्राप्त हो गए और अत्यधिक लूट की धन सम्पत्ति दरबार में आई। बाद में पता चला कि जिस दिन ईश्वर से प्रार्थना की गई थी, उसी दिन विजय प्राप्त हो गई। परोक्ष से विजय प्रदान करने वाले (ईश्वर) के प्रति कृतज्ञता के सिज्दे करने व संसार वालों के प्रति दान-पुण्य में व्यस्त हो गए।

अकबर का सरहिन्द की ओर भेजा जाना

जब सिकन्दर को इन घटनाओं की सूचना मिली तो वह ८०,००० सशस्त्र अश्वारोहियों को लेकर उत्कृष्ट सेना से युद्ध करने के लिए रवाना हुआ। बैराम खाँ ने अपनी बुद्धिमत्ता एवं

१ यह नाम विभिन्न ग्रन्थों में भिन्न भिन्न रूप से लिखा है। फिरिश्ता के अनुसार वे लोग नदी पार करके पचवारा नामक छोटी सी नदी के तट पर उतरे। माछीवारा सतलज नदी के दक्षिणी तट पर है।

२ ईश्वर।

वीरता से सहरिन्द में दृढता के पाव जमाकर किले की प्रतिरक्षा एव सावधानी के प्रयत्न किए और सम्मानित दरबार मे निरन्तर प्रार्थना-पत्र भेजकर उस ओर पधारने का आग्रह किया। क्योंकि उस समय वे पिताश्रय के रोग में ग्रस्त हो गए थे अत उन्होने अपने स्थान पर खिलाफत की उस वाटिका को शोभा देने वाले अर्थात् हज़रत शाहशाह को, जो सर्वदा विजय तथा सौभाग्य को अपने अधीन रखते थे, नियुक्त किया। अभी इस ससार के बादशाह की भाग्यशाली सेना लाहौर के क्षेत्र के बाहर भी न निकली थी कि हजरत जहाबानी पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गए और उन्होने स्वय वियोग का कष्ट न सहन कर सकने के कारण एव सावधानी की दृष्टि से प्रस्थान किया।

पजाब में नियुक्तिया

उन्होने अपने शुद्ध विचार से, जो युग तथा ससार को शोभा प्रदान करता रहता था निश्चय किया कि फरहत खा लाहौर का शिकदार[1] बाबूस बेग मीर्जा पजाब का फौजदार, एव मीर्जा शाह मुल्तान अमीन तथा मेहतर जौहर इस सूबे के खजीनादार हो।

हुमायू का सरहिन्द पहुँचना

७ रजब (२८ मई १५५५ ई०) की रात्रि में पादशाही सेना ने सहरिन्द के क्षेत्र को अपने प्रकाश से प्रज्वलित किया। निष्ठावान् अमीरो ने अभिवादन का सौभाग्य प्राप्त करके प्रसन्नता के नक्कारे बजाये। वीर अमीरो ने १५ दिन तक उस भारी सेना के मुकाबले मे किले की प्रतिरक्षा की। उसी समय ससार को देदीप्यमान करने वाली पताकाओ के अभ्युदय के समाचार प्राप्त हुए। नगर के निकट एव उद्यान में भाग्यशाली शिविर लगे। युद्ध की यथारूप व्यवस्था करके विजयी सेना को चार भागो म विभाजित किया गया। एक हजरत जहाबानी के सम्मानित नाम मे सुशोभित हुई। दूसरी को हजरत शाहशाह के उत्कृष्ट नाम से सम्बन्धित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तीसरी शाह अबुल मआली और चौथी बैराम खा के सिपुर्द की गई। भाग्यशाली सेना में से प्रत्येक दस्ते के हर व्यक्ति ने कटिबद्ध होकर उत्तम रूप से प्रयास एव परिश्रम किए। प्राणो की बलि देने वाले बहादुर सघर्ष करते और सर्वदा दोनो ओर से योद्धा तलवार द्वारा मृत्यु का प्याला पीते रहते थे। दोनो ओर से वीरता एव पौरुष की दृष्टि से यह प्रथा हो गई थी कि प्राणो की बलि देने वाले फिदाई आदर एव सम्मानपूर्वक अपने आदमियो सहित अपने प्राण न्योछावर करते थे। अल्पदर्शी एव वाह्य कारणो पर दृष्टि रखने वाले लोग शत्रुओ की सेना की अधिकता एव पादशाही लश्कर की कमी के कारण चिन्तित रहते थे। दूरदर्शी लोग विजय तथा सफलता के चिह्न राज्य के सहायको के ललाट पर देखकर नित्यप्रति साहस से कार्य लेते थे विशेष रूप से धैर्य एव शान्ति के ससार हज़रत जहाँबानी प्रत्येक को उचित रूप से प्रोत्साहित करते और उसका दिल बढाते रहते थे।

हज़रत शाहशाह के उत्कृष्ट चमत्कार एव सर्वोच्च सुखद समाचारो का अभ्युदय और अन्य भाग्यशाली घटनायें

(३४७) यद्यपि हजरत शाहशाह बाल्यावस्था को आवरण बनाए हुए थे किन्तु परदे के पीछे

१ मालगुजारी वसूल करने वाला अधिकारी।

सेनाओं की मुठभेड़ हो गई। घोर युद्ध होने लगा, विजयी सेना के दूरदर्शी सैनिकों ने बजरा[1] नामक स्थान युद्ध के लिए चुनकर दृढ़ता के पाँव जमाये। सभी लोगों ने अपने साहस के अनुसार इस युद्ध में पौरुष एवं योग्यता प्रदर्शित की। यहा तक कि रात हो गई। रुस्तम सरीखे वीर चारों ओर से आक्रमण करके वाणों की वर्षा करते रहे। संयोग से एक घटना, जो विजय की प्रस्तावना बन सकती थी, इस प्रकार घटी वहाँ समीप ही एक बहुत बड़े ग्राम में जहाँ के घर छप्पर के बने हुए थे दैवी सहायता को मशाल से आग लग गई और वास्तव में भाग्यशाली भाग्य में सहस्रों दीपक प्रज्वलित हो गए। यह बात निश्चित रूप से ज्ञात हो गई है कि यह दैवी सहायता शत्रुओं के प्रयत्न के फलस्वरूप प्राप्त हुई। जब भाग्यशाली प्रकाश चमकता है तो शत्रु अपने भले के लिए जो कार्य करते हैं वे उनकी हानि का साधन बन जाते हैं। संक्षेप में उस प्रकाश से, जो विजयी वीरों की सहायता का प्रकाश था, शत्रुओं के विषय में प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त करके वे चारों ओर से हृदय विदारक वाणों द्वारा संहार करने लगे। क्योंकि विजयी सेना अंधेरे में थी अतः शत्रुओं को उनके विषय में कोई भी ज्ञान न प्राप्त हो पाता था। यहा तक कि लगभग तीन पहर रात्रि व्यतीत हो जाने के उपरान्त विद्रोही सेना मुकाबला न कर सकी और घबड़ा कर भाग गई। बहुत बड़ी विजय प्राप्त हुई। हाथी एवं अपार धन सम्पत्ति राज्य के सहायकों के अधिकार में आ गई। लूट की उत्तम सामग्री एवं निष्ठायुक्त प्रार्थनापत्र सम्मानित दरबार में दूसरे दिन प्रस्तुत किए गए। वहाँ से विजय तथा सफलता प्राप्त करके वे सहरिन्द पहुँचे और वहा पड़ाव किया। अली कुली शैबानी को, जो पीछे से आकर मिल गया था, एक सेना सहित आगे भेजा।

शाही सेना की विजय के लिये हुमायूं की प्रार्थना

यह एक विचित्र बात है कि जब (हजरत जहाबानी को) तातार खां के एक भारी सेना सहित माछीवारा के क्षेत्र में पहुँचने के समाचार प्राप्त हुए तो उन्होंने अपने उस समूह से जो सर्वदा उनके पास उपस्थित रहता था कहा कि, 'दूरी बड़ी अधिक है। हमारे पहुँचने तक तो कुछ दैवी इच्छा होगी वह पूरी हो जायगी अतः यही उचित होगा कि उत्कृष्ट चौखट[2] से भिक्षा माँगी जाय, और दैवी वरदान के ग्रह से विजय तथा सफलता की कामना की जाय।' उस समय उन्होंने दुआ के लिए हाथ उठाकर जो उत्कृष्ट सेना आगे गई थी उसकी सफलता की (३४६) (ईश्वर से) प्रार्थना की। इस घटना को कुछ ही दिन व्यतीत हुए थे कि विजय पत्र प्राप्त हो गए और अत्यधिक लूट की धन-सम्पत्ति दरबार में आई। बाद में पता चला कि जिस दिन ईश्वर से प्रार्थना की गई थी, उसी दिन विजय प्राप्त हो गई। परोक्ष से विजय प्रदान करने वाले (ईश्वर) के प्रति कृतज्ञता के सिज्दे करके वे संसार वालों के प्रति दान-पुण्य में व्यस्त हो गए।

अकबर का सरहिन्द की ओर भेजा जाना

जब सिकन्दर को इन घटनाओं की सूचना मिली तो वह ८० ००० सशस्त्र अश्वारोहियों को लेकर उत्कृष्ट सेना से युद्ध करने के लिए रवाना हुआ। बैरामखां ने अपनी बुद्धिमत्ता एवं

[1] यह नाम विभिन्न ग्रन्थों में भिन्न भिन्न रूप में लिखा है। फ़िरिश्ता के अनुसार वे लोग नदी पार करके पचवारा नामक छोटी सी नदी के तट पर उतरे। माछीवारा सतलज नदी के दक्षिणी तट पर है।

[2] ईश्वर।

वीरता से सहरिन्द में दृढता के पांव जमाकर किले की प्रतिरक्षा एव सावधानी के प्रयत्न किए और सम्मानित दरबार में निरन्तर प्रार्थना-पत्र भेजकर उस ओर पधारने का आग्रह किया। क्योंकि उस समय वे पित्ताशय के रोग में ग्रस्त हो गए थे अत उन्होंने अपने स्थान पर खिलाफत की उस वाटिका को शोभा देने वाले अर्थात् हजरत शाहशाह को, जो सर्वदा विजय तथा सौभाग्य को अपने अधीन रखते थे, नियुक्त किया। अभी इस ससार के बादशाह की भाग्यशाली सेना लाहौर के क्षेत्र के बाहर भी न निकली थी कि हजरत जहाबानी पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गए और उन्होंने स्वय वियोग का कष्ट न सहन कर सकने के कारण एव सावधानी की दृष्टि से प्रस्थान किया।

पजाब में नियुक्तिया

उन्होंने अपने शुद्ध विचार से जो युग तथा ससार को शोभा प्रदान करता रहता था, निश्चय किया कि फरहत खा लाहौर का शिकदार[१], बाबूस बेग मीर्जा पजाब का फौजदार, एव मीर्जा शाह सुल्तान अमीन तथा मेहतर जौहर इस सूबे के खजीनादार हो।

हुमायू का सरहिन्द पहुँचना

७ रजब (२८ मई १५५५ ई०) की रात्रि में पादशाही सेना ने सहरिन्द के क्षेत्र को अपने प्रकाश से प्रज्वलित किया। निष्ठावान् अमीरो ने अभिवादन का सौभाग्य प्राप्त करके प्रसन्नता के नक्कारे बजाये। वीर अमीरो ने १५ दिन तक उस भारी सेना के मुकाबले में किले की प्रतिरक्षा की। उसी समय ससार को देदीप्यमान करने वाली पताकाओ के अभ्युदय के समाचार प्राप्त हुए। नगर के निकट एक उद्यान में भाग्यशाली शिविर लगे। युद्ध की यथारूप व्यवस्था करके विजयी सेना को चार भागो में विभाजित किया गया। एक हजरत जहाँबानी के सम्मानित नाम से सुशोभित हुई। दूसरी को हजरत शाहशाह के उत्कृष्ट नाम से सम्बन्धित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तीसरी शाह अबुल मआली और चौथी बैराम खा के सिपुर्द की गई। भाग्यशाली सेना में से प्रत्येक दस्ते के हर व्यक्ति ने कटिबद्ध होकर उत्तम रूप से प्रयास एव परिश्रम किए। प्राणो की बलि देने वाले बहादुर सघर्ष करते और सर्वदा दोनो ओर से योद्धा तलवार द्वारा मृत्यु का प्याला पीते रहते थे। दोनो ओर से वीरता एव पौरुष की दृष्टि से यह प्रथा हो गई थी कि प्राणो की बलि देने वाले विदाई आदर एव सम्मानपूर्वक अपने आदमियो सहित अपने प्राण न्योछावर करते थे। अल्पदर्शी एव वाह्य कारणो पर दृष्टि रखने वाले लोग शत्रुओ की सेना की अधिकता एव पादशाही लश्कर की कमी के कारण चिन्तित रहते थे। दूरदर्शी लोग विजय तथा सफलता के चिह्न राज्य के सहायको के ललाट पर देखकर नित्यप्रति साहस से कार्य लेते थे विशेष रूप से धैर्य एव शान्ति के ससार हजरत जहाँबानी प्रत्येक को उचित रूप से प्रोत्साहित करते और उसका दिल बढ़ाते रहते थे।

हज़रत शाहशाह के उत्कृष्ट चमत्कार एव सर्वोच्च सुखद समाचारो का अभ्युदय और अन्य भाग्यशाली घटनायें

(३४७) यद्यपि हजरत शाहशाह बाल्यावस्था को आवरण बनाए हुए थे किन्तु परदे के पीछे

१ मालगुजारी वसूल करने वाला अधिकारी।

से अपनी शोभा प्रकट करते रहते थे। ससार को शोभा देने वाले परमेश्वर की यह इच्छा थी कि युग के इस प्रतिष्ठित व्यक्ति के आध्यात्मिक रूप को प्रकट करे अत ऐसी घटनायें घटने लगी जिनसे प्रत्येक व्यक्ति उनकी उत्कृष्ट योग्यता एव बुद्धिमत्ता को समझने लगा। उन चमत्कारो में से जो हजरत शाहशाह द्वारा, जिनका हृदय दैवी रहस्यो का केन्द्र एव असीमित दैवी नूर का प्रतीक था, प्रकट हुए एक यह है वे नगर से एक कोठे पर पहुँच कर अपनी इकलीम विजय करने वाली दृष्टि से शत्रुओ की सेना का निरीक्षण कर रहे थे। उस भारी सेना के विषय में, जिसकी पराजय की कोई भी कल्पना न करता था, कहा कि "इतने समय में यह लोग हमारे आदमियो द्वारा नष्ट हो जायेंगे।" उनके सम्मानित दरबार के सेवक, जो दूरदर्शिता के गुण से सुशोभित थे, और जो उस दैवी नूर के पोषित के आश्चर्यजनक करामात एव विचित्र चमत्कार देख चुके थे, इस सुखद घोषणा से प्रसन्न हो गए और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने लगे। किन्तु वाह्य बातो पर दृष्टि रखने वालो की समझ में यह बातें नही आती परन्तु आध्यात्मिक दृष्टि रखने वाले एव सत्य की खोज करने वाले, जो युग के ल्लाट के लेख को देदीप्यमान रखते हैं, यह बात और ऐसे ही सैकडो अन्य उदाहरण भौतिक एव अभौतिक जगत् के उस सम्मानित व्यक्ति के लिए अस्वाभाविक नही समझते।

अम्बर नाज़िर द्वारा अकबर को हिन्दुस्तान का ज्ञान कराना

उन दिनो में ख्वाजा अम्बर नाजिर ने, जो कि प्राचीन सेवक था, काबुल से पहुँचकर सेवा करने के विषय में प्रार्थना की। हजरत जहाँबानी ने उस भाग्यशाली को उस दैवी पोषित नूर के सिपुर्द कर दिया। वह सर्वदा उनकी सेवा में हिन्दुस्तान की प्रथाओ एव यहा के रीति रिवाज के विषय में निवेदन किया करता था और युग के उस अद्वितीय व्यक्ति के सामने हिन्दुस्तान वालो की प्रशसा करता रहता था। क्योकि हिन्दुस्तान वालो का सौभाग्य उन्नति पर था अत इन लोगो का व्यवहार उनके पवित्र स्वभाव को अच्छा लगा।

अकबर की चीते द्वारा शिकार से रुचि

इसी समय उन्हे पहिले पहल चीते द्वारा शिकार खेलने की इच्छा हुई। इस स्थान पर खाने जहाँ[1] के पिता वली बेग ने उस चीते का, जिसे उसने माछीवारा[2] के युद्ध में अफगानो से प्राप्त किया था और जिसका नाम फतहबाज था, सौभाग्य की शिकारगाह के सिंहो का शिकार करने वाले को भेंट कर दिया। सम्मानित दरबार के दूरदर्शी एव अनुभवी निकटवर्तियो ने विचित्र आकृति के इस पशु के शरीर को देखकर अपार विजयो का अनुमान लगाया। उस चीते के रक्षक का नाम दूदू था जिसे उसकी अत्यधिक निष्ठा के कारण फतह खा की उपाधि प्रदान कर दी गई थी। इस समय (३४८) जब इस उत्कृष्ट ग्रथ की तुच्छ अबुलफजल की निष्ठायुक्त कलम से रचना हो रही है, फतह खा को हजरत शाहशाह की सेवा मे विशेष करावल होने का सौभाग्य प्राप्त है। हजरत शाहशाह, जो सर्वदा अपने आपको बाहरी वस्त्रो में प्रकट किया करते थे तथा अन्य लोगो से छिपे

१ खाने जहा हुसेन कुली बिन वली बेग जुलक़दर।
२ लुधियाना जिला (पजाब) की समराला तहसील में ३०°५५ उत्तर तथा ७६°१२' पूर्व में, समराला से ६ तथा लुधियाना से २७ मील पर।

रहते और अपने ऐश्वर्य के सौन्दर्य को नाना प्रकार के आवरणा में निहित रखते, इस विचित्र पशु के प्रति ध्यान आकृष्ट करके अपने सौन्दर्य पर एक नकाब डाले रहते थे किन्तु सूर्य का प्रकाश तथा कस्तूरी की सुगन्धि परदे में नही रह सकती।

अकबर नामा की रचना

जिस दिन मेरा भाग्य मुझे बुद्धि की शिक्षा एव इस परमानन्द की ओर ले गया और उसने मुझे उनकी सेवा में पहुँचाया तथा ईश्वर के इस चुने हुए व्यक्ति के कमालो का परिचय प्रदान किया तो उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए मैंने कैसे कैसे सिज्दे किए और इस सेवा द्वारा मैंने कैसी कैसी सफलतायें प्राप्त की यहाँ तक कि सांसारिक एव आध्यात्मिक उच्च श्रेणी को भी प्राप्त हुआ। अपने पवित्र हृदय की कोठरी को अनुचित इच्छाओ से मुक्त किया। इस समय जब कि कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर आ गया है मैं यह चाहता हूँ कि मैं जो कुछ समझ सका हूँ उसका उल्लेख करूँ ताकि इस प्रकार आभार प्रदर्शन भी हो सके और अधेरे के पथिको के मार्ग में विवेक का दीपक रक्खा जा सके। मुझे इस सकोच के कारण कि मैं उनकी सेवा में हूँ और लेन-देन का व्यवहार बीच में है बडा दुखी हूँ। काश मुझे उनका बाह्य परिचय न प्राप्त होता और मैं जाहिरी सेवको की माला में सम्मिलित न होता ताकि मैं जो कुछ देखता अथवा लिखता उसे दिल के अधे तथा ऊपरी बातो पर दृष्टि रखने वाले इस व्यक्ति को[1] चाटुकारो के समूह से सम्बन्धित न समझते और मेरे बाह्य सम्बन्ध से वचित होने के कारण ससार वाले अपने उद्देश्य की पूर्ति करके सफलता प्राप्त कर सकते।

ईश्वर को धन्य है कि पूर्व मे ऐसे ऐसे सत्ता[2] की प्रशसा मे ग्रथो की रचना की जा चुकी है जिनमें युग के इस पादशाह के कमालो के १०वें भाग का $\frac{1}{10}$[3] भी न था अपितु उनमे से बहुत स लोग ऐसे थे जिनका केवल बाह्य रूप ही सजा था और इसके अतिरिक्त कुछ भी न था। सत्य को न समझने वाले सांसारिक लोग इस कारण कि उनमें परस्पर कोई लेन देन का सम्बन्ध न था, उपर्युक्त ग्रथो में जो प्रशसा की गई है, उसे चापलूसी न समझते हुए उन्हे तथ्य का निरूपण मानते हैं। आज जब सांसारिक एव आध्यात्मिक लोगो के नेता (के इतिहास) की रचना की जा रही है, मुझे युग के स्वभाव को समझने के कारण लोगो की नासमझी का भार अपने कधो पर उठाना चाहिये। क्योकि मेरी दृष्टि सर्व प्रथम इस बात पर थी कि जो कृतज्ञता प्रकट करनी परमावश्यक है उसमें से थोडी सी प्रदर्शित कर दू अत मैं इस कष्टदायक भार पर रुष्ट नही हूँ। मैं क्या दुखी हूँ? मेरी यह दशा है कि मैं अपने सत्सकल्प द्वारा रात्रि के पथिको को दीपक दिखा रहा हूँ। बहुत बडी सख्या में लोग तथ्य के मार्ग को स्वीकार करके सत्य के सन्मार्ग पर अग्रसर हुए हैं। अब मैं इस घटना के उल्लेख को, जिसका कोई अन्त नही, त्याग कर जो विवरण दे रहा था उसे पुन प्रारम्भ करता हूँ।

२

१ अबुलफ़ज्ल को।
२ 'अरबावे तजर्रुद' (एकान्तवासी लोग)।
३ सौवाँ भाग।

अकबर के दस्ते से अफ़ग़ानों का युद्ध

संक्षेप में, लगभग ४० दिन[1] तक हजरत जहाँबानी युद्ध के कार्य को भाग्यशाली नियमों के अनुसार सम्पन्न करते रहे और पूर्ण व्यवस्था करते हुए रणक्षेत्र को शोभा प्रदान करने का प्रयत्न करके निष्ठावानों के हृदय को शक्ति प्रदान करते रहे। यहाँ तक कि २ शाबान[2] को जब कि हजरत शाहंशाह के सेवकों के पहरे[3] की बारी थी, ख्वाजा मुअज्जम आगा सा एवं एक बहुत बड़ी (३८९) सेना ने पहुँचकर वीरता-पूर्वक युद्ध किया। उस ओर से इस्कन्दर के भाई काला पहाड़ ने निकल कर युद्ध प्रारम्भ किया। यद्यपि यह निश्चय न था कि उस दिन कोई महान् युद्ध हो किन्तु भाग्य में इस घटना का सम्पन्न होना लिखा ही था अतः शनैः शनैः युद्ध की अग्नि भड़कने और संग्राम की आग बुलन्द होने लगी। विजयी सेनाओं ने चारों ओर से एकत्र होकर सावधानी पर दृष्टि रखते हुए वीरतापूर्वक युद्ध किया और युद्ध इच्छानुसार सम्पन्न हुआ।

शेर

'दो लोहे के पर्वत अपने स्थान से हिले,
तुझे कहना चाहिए कि ऊपर से नीचे तक भूमि हिल गई।
दो सेनाओं ने आमने सामने कटार खींची,
मध्य भाग एवं दायें-बायें भागों ने पंक्तियाँ जमा ली।
बाणों के उड़ने तथा तलवारों के टकराने से,
हाथी का भेजा फट गया और तलवार का पित्ता।'

सिकन्दर का पलायन

हजरत शाहंशाह के प्रताप के आशीर्वाद से महान् विजय प्राप्त हो गई। राज्य के अधिकारियों को अत्यधिक लूट की धन सम्पत्ति मिली। शत्रुओं की सेना की बहुत बड़ी संख्या नश्वर संसार से विदा हो गई। सिकन्दर अपनी सेना सहित पंजाब के पर्वत के दामन में भाग गया। ख्वाजा मुसाफ़िरी[4] नामक एक वीर मार्ग में सिकन्दर के पास पहुँच गया। सिकन्दर ने जब यह देखा कि कोई व्यक्ति उसका पीछा कर रहा है तो वह पलटा। उसने तलवार की ओर हाथ बढ़ाना चाहा किन्तु उसे न निकाल सका। अत्यधिक प्रयत्न के उपरान्त उसने अपने आपको उससे पृथक् करके उस खतरनाक भवर से पीछा छुड़ाया।

हुमायूँ की विजय

निःसंदेह संसार के बदमस्तों एवं ऐश्वर्य के प्रति अभिमान करने वालों का इसके अतिरिक्त कोई अन्य परिणाम नहीं होता। हजरत जहाँबानी सांसारिक सफलता के समय, जो ऐसा नशा है जो मर्दों को गिरा देता है, सावधान रहकर ईश्वर के प्रति आभार प्रदर्शित करते थे। संसार वालों

१ हुमायूँ ७ रजब को सरहिन्द पहुँचा। इस प्रकार २ शाबान तक २५ दिन से अधिक नहीं हुए।
२ २ शाबान ९६२ हि० (२२ जून १५५५ ई०)।
३ 'नौबत नरहुद मुना जमाने हजरत शाहशाही बूद'।
४ सम्भवतः बाबा दोस्त ख्वाजा खिज्र मुसाफ़िरी। उसके विषय में बायजीद की कृति का अनुवाद देखिये।

निकालने वालों ने इसको युग की घटनाओं का किला[1] समझकर इससे उनके नित्य-प्रति उन्नत भाग के विषय में फ़ाल निकाली[2]। बैराम खाँ को सहरिन्द की सरकार एवं अन्य परगने प्रदान हुए। तरदी बेग खाँ को मेवात प्रदान किया गया। सिकन्दर खाँ को आगरा, अली क़ुली खाँ को सम्भल तथा हैदर मुहम्मद खाँ आख़्ता बेगी को ब्याना में, जो राजधानी आगरा के समीप है, नियुक्त किया गया। पादशाही चरणों एवं सांसारिक तथा आध्यात्मिक पादशाह के चरणों के आशीर्वाद से हिन्दुस्तान सौभाग्य एवं समृद्धि का उद्यान बन गया। संसार के विभिन्न समूह एवं सर्वसाधारण भाग्यवान् हो गए। हज़रत जहाँबानी देहली के क़िले में निवास करते हुए सर्वदा ईश्वर की इच्छा की प्राप्ति में जीवन व्यतीत करने लगे और सल्तनत के उद्यान को न्याय तथा दान पुण्य की नहरों (३५२) द्वारा सींचने लगे। वे सर्वदा ईश्वर की आज्ञाकारिता एवं प्राणियों की प्रसन्नता का ध्यान रखते हुए ख़िलाफ़त के राजसिंहासन को शोभा प्रदान करने लगे।

हुमायूँ के माह जूजक बेगम द्वारा पुत्र का जन्म

उन घटनाओं में जो उन दिनों घटीं और उनके हृदय की प्रसन्नता का कारण बनीं शाह वली अतगा का काबुल से आगमन था जो अन्तःपुर की महिलाओं की कुशलता के समाचार लाया था। उसने विशेष विवरण एवं हर्षवर्धक सुखद समाचार पहुँचाये। उनमें एक यह था कि माह जूजक बेगम को ईश्वर ने एक सम्मानित पुत्र प्रदान किया है। हज़रत जहाँबानी ने इस सुखद समाचार एवं आत्मा को संतुष्ट करने वाली घोषणा के कारण ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और प्रसन्नता के जश्न आयोजित करके आशा का नक़द धन समार वाला के दामन में डाल दिया और प्रताप के फूलों की उस झाड़ी का नाम फ़र्रुख़ फ़ाल रक्खा। शाह वली को इस वरदान की प्राप्ति की प्रसन्नता में सुल्तान की उपाधि प्रदान की और उपहारों सहित काबुल भेज दिया। बधाई एवं कृपा-पत्र भी उसके हाथ भेजे गए।

रुस्तम खाँ अफ़ग़ान की पराजय

उन दिनों में जो घटनाएँ घटीं उन्हीं में रुस्तम खाँ का आगमन था जो कि अफ़ग़ानों के सर्वश्रेष्ठ अमीरों में सम्मिलित था। इस घटना का संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है :—जब अतगा खाँ एवं दरबार के सेवकों का एक समूह हिसार की ओर रवाना हुआ तो वे खुरदाद शहरयूर (बुधवार २५ रमज़ान[4]) को हिसार से दो कुरोह पर ठहरे। रुस्तम खाँ, ततार खाँ, अहमद खाँ, पीर मुहम्मद रोहतकी, बिजली खाँ, शिहाब खाँ ताज खाँ, आदम खाँ नियाम खानी, अफ़ग़ानों की सेना के एक दस्ते को लेकर हिसार से निकले और युद्ध प्रारम्भ कर दिया। बावजूद इसके कि अफ़ग़ान

१ हिसार का अर्थ किला है अतः इस स्थान पर हिसार के कारण किला शब्द का प्रयोग किया है।

२ बाबर ने हुमायूँ को भी पानीपत के युद्ध के पूर्व हमीद खाँ तथा अफ़ग़ानों के अन्य समूहों को पराजित करने के कारण (फ़रवरी १५२६ ई० के अन्त) हिसार फ़ीरोज़ा एवं उसके अधीनस्थ तथा सम्बन्धित स्थान और एक करोड़ नक़द धन प्रदान कर दिया था। (बाबर नामा, पृ० १५० १५१)।

३ सम्भवतः वली बेग, पायन्दा खाँ का पुत्र, पायन्दा खाँ मुग़ल-हाजी मुहम्मद खाँ कोकी का भाई था।

४ १३ अगस्त १५५५ ई०।

लोगों की सख्या दो हजार थी और राज्य के सहायकों की सख्या ४०० थी, घोर युद्ध हुआ। ईश्वर की कृपा से विजय प्राप्त हो गई। शत्रुओं की ओर से लगभग ७० व्यक्ति रणक्षेत्र में मारे गए। रुस्तम खा ने भागकर हिसार के किले को दृढ बना लिया। भाग्यशाली वीर उसे २३ दिन घेरे रहे। जब वे निराश हो गए तो उन्होंने वचन देकर अधीनता स्वीकार कर ली। रुस्तम खा को उपर्युक्त लोगों तथा लगभग ७०० प्रतिष्ठित व्यक्तियों सहित मीर लुत्फ एव ख्वाजा कासिम मुखलिस के साथ सम्मानित दरबार में भेज दिया गया। वह चौखट चूमने के सम्मान द्वारा प्रतिष्ठित हुआ। कुछ समय उपरान्त उत्कृष्ट आदेश हुआ कि उसे उचित जागीर प्रदान की जाय किन्तु उसकी शर्त यह रक्खी गई कि वह अपने पुत्र को विकराम मे रक्खे ताकि उदारता की प्रथाओं का भी पालन होता रहे और सावधानी एव सतर्कता भी हाथ से न जाने पाये। उस सरल स्वभाव के अल्पदर्शी व्यक्ति ने इस भाग्यशाली शर्त को, जो दासता की दृढता की पूजी थी, स्वीकार न किया और भागने का प्रयत्न करने लगा। जब पादशाह के पवित्र हृदय में यह बात प्रतिबिम्बित हुई तो उसे बन्दी बनाकर बेग मुहम्मद ईशक आका के सिपुर्द कर दिया।

कम्बर दीवाना की हत्या

(३५३) इन्ही दिनों में कम्बर दीवाना की घटना भी घटी। इसका सक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है वह एक साधारण व्यक्ति अपितु लश्कर के अपरिचित लोगों मे था। जिस समय विजयी पताकाओं ने सहरिन्द की विजय के उपरान्त देहली की ओर प्रस्थान किया यह कम्बर दुष्टों की एक सेना को एकत्र करके लूट मार करने लगा। वह निरन्तर धन सम्पत्ति प्राप्त किया करता था तथा लोगों को बाँट दिया करता था। धूर्ततावश वह दरबार में विनयपूर्वक प्रार्थना पत्र प्रेषित किया करता था। सहरिन्द के समीप से आक्रमण करता हुआ वह सम्भल तक पहुँच गया और उसे भी अपने अधिकार मे कर लिया। उसने सम्भल में स्थान ग्रहण करके एक व्यक्ति को, जिसे उसने अपना पुत्र बना लिया था और जिसका नाम आरिफुल्लाह रक्खा था, बदायू भेज दिया। उस क्षेत्र मे राय हुसेन जलवानी, जो कि प्रतिष्ठित अफगान अमीर था, बिना युद्ध के नष्ट हो गया। कम्बर उस स्थान से स्वय कांतगोला[1] पहुँचा और उस स्थान को भी नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। उस स्थान पर अफगानों के सरदार रुक्न खा से बडे अव्यवस्थित ढग से युद्ध किया और पराजित होकर वहाँ से बदायू पहुँचा। यद्यपि यह धूर्त दीवाना सर्वदा प्रार्थना-पत्र भेजा करता था और दासता एव उत्तम सेवाओं का उल्लेख किया करता था किन्तु उसके कर्म एव वचन मे कोई समन्वय न था। वह अपने कम्बल के बाहर पाव निकालने लगा था और लोगों को खान तथा सुल्तान की उपाधि और पताका एव नक्कारा प्रदान करता रहता था। उसमें केवल सासारिक मस्ती ही न थी अपितु पागलपन का नशा भी था। वह अनेक बार पागलपन से अपने घर को नष्ट भ्रष्ट कर चुका था। वह सर्वदा ऐसे कार्य करता रहता था जिनसे उसका पागलपन प्रदर्शित होता था। जब इस विषय में कई बार हजरत जहाँबानी से निवेदन किया गया तो उन्होंने अली कुली खा शैबानी के पास एक फरमान भेजा कि उसे सम्मानित दरबार में भेज दिया जाय, और यदि वह विद्रोह करे तो उसे दड दिया जाय। जिन दिनों में दीवाना रुक्न खा द्वारा पराजित होकर बदायू

१ रुहेलखड में, लगभग जिला शाहजहापुर (उत्तर प्रदेश)।

पहुँचा था, अली कुली खां मेरठ के युद्ध से निश्चिन्त होकर सम्भल पहुँचा गया। वहाँ के कार्यों की व्यवस्था करके बदायूं पहुँचा। यद्यपि अली कुली खां ने उसके बुलाने को आदमी भेजे किन्तु वह न आया और कहला भेजा कि 'जिस प्रकार तू पादशाह का दास है, मैं भी हूँ। मैंने यह प्रदेश अपनी तलवार के बल से विजय किया है। अन्ततोगत्वा अली कुली खां ने युद्ध किया। क्योंकि उसे हाल ही में पराजय हो चुकी थी अत वह बदायूं के किले में बन्द हो गया और उसने सम्मानित दरबार में प्रार्थना पत्र भेजा। जब उसके विषय में निवेदन किया गया तो हजरत जहाँबानी ने कासिम मुख-लिस को उसके पास इस आशय से भेजा कि वह उसे पादशाही कृपाओं का आश्वासन दिलाकर चौखट का चुम्बन कराने के लिये लाये। कासिम के बदायूं पहुँचने और मुक्ति के यह समाचार पहुँचाने के पूर्व अली कुली खां ने उसकी हत्या करा दी।

इसका संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है कि जब कम्बर ने किले को दृढ़ बना लिया और अव रोध में अधिक समय लग गया और कोई सफलता न प्राप्त हुई तो अली कुली खां ने मुहम्मद बेग तुर्कमान एवं मुल्ला गयासुद्दीन को उसके पास भेजा। उसने इन दूतों को बन्दी बना लिया। (३५४) इन्होंने अत्यधिक संख्या में गुप्त रूप से लोगों को मिला लिया और बहला फुसला कर किले वालों को अपनी मुट्ठी में करके दीवाना को बन्दी बना लिया। अली कुली खां ने उसके सिर को उत्कृष्ट दरबार में भेज दिया। इस घटना द्वारा पादशाह के न्यायकारी हृदय को ठेस लगी। उन्होंने क्रोध प्रदर्शित करते हुए अली कुली खां के पास फरमान भेजा और लिखा कि 'जब वह आज्ञा-कारिता प्रदर्शित करता था और सेवा में उपस्थित होना चाहता था तो तूने युद्ध क्यों होने दिया और जब वह बन्दी बना लिया गया था तो उस (मेरी) आज्ञा बिना क्या मरवा डाला?' हजरत जहाँ-बानी अपने दरबार के विश्वासपात्रों से कहा करते थे कि मेरा दिल चाहता था कि मैं इस व्यक्ति को देखूं। यदि उसके ललाट से सत्य एवं निष्ठा के चिह्न दृष्टिगत होते तो उसे सम्मा-नित किया जाता।'

मीर्ज़ा सुलेमान द्वारा अन्दराब पर अधिकार

जो घटनाएँ इन दिनों में घटीं उन्हीं में एक मीर्ज़ा सुलेमान की कृतघ्नता है। इसका संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है कि जब विजयी पताकाएं हिन्दुस्तान की विजय हेतु रवाना हो गई तो तरदी बेग खां जो अन्दराब एवं इश्किमीश की जागीर का स्वामी था शाही आदेशानुसार उनके साथ रवाना हुआ। मुकीम खां उसकी ओर से उसकी जागीर का प्रबन्ध करने के लिए रह गया। मीर्ज़ा सुलेमान अवसर से लाभ उठाकर इस महाल का जो तरदी बेग खां की जागीर में था, लोभ करने लगा। सर्व प्रथम उसने इस बात का प्रयत्न किया कि मुकीम खां को बहला फुसला कर अपनी ओर मिला ले। जब मीर्ज़ा को इसमें सफलता न हुई तो उसने धूर्तता की नकाब उतार कर अन्द राब का अवरोध कर लिया। मुकीम खां विवश होकर अपने परिवार सहित बाहर निकला और युद्ध करता हुआ वहाँ से निकलकर काबुल पहुँचा।

ग़ाज़ी खां की हत्या

जो घटनाएँ उस समय घटीं उन्हीं में हैदर मुहम्मद खां आख़्ताबेगी द्वारा ग़ाज़ी खां की

हत्या थी। वह इबराहीम[१] का पुत्र था जिसका सिर बादशाह बनने के लिए खुजलाया करता था[२]। इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है जब हैदर मुहम्मद खा को व्याना भेज दिया गया, तो गाजी खा, जो कि उस क्षेत्र का हाकिम था मुकाबला न कर सका और उसने किले में शरण ले ली। हैदर मुहम्मद खा के वचनो एव प्रतिज्ञाओ का विश्वास करके वह किले के बाहर निकला। हैदर मुहम्मद ने उसकी सम्पत्ति के लोभ में विश्वासघात और अत्याचार की तलवार द्वारा उसकी हत्या कर दी। जब हजरत जहाँबानी को यह समाचार प्राप्त हुए तो उनके न्यायकारी हृदय को यह बात अच्छी न लगी। क्योकि व दूर थे और हिन्दुस्तान मे हाल ही में आये थे, अत उसको बाह्य रूप से दड दिया जाना स्थगित करके कहा "वह पुन कमर न बाँध सकेगा[३]।' वास्तव मे जब तक वह जीवित रहा जैसा कि उनकी जिह्वा स निकला था वही हुआ। शिहाबुद्दीन अहमद खा को जो मीर ब्यूतात था इस घटना की छानबीन एव उसकी धन सम्पत्ति का पता लगाने के लिए भेजा गया। वे स्वय सवदा प्रजा के प्रोत्साहन एव ससार की उन्नति तथा लोगो की समृद्धि के प्रयत्न में समय व्यतीत करके ईश्वर की इच्छाओ का पालन किया करते थे[४]।

१ इबराहीम खा सूर (देखिये अकबर नामा, पृ० ३३३)।

२ अर्थात् बादशाह बनने की, जो उसके लिये सम्भव न था, अभिलाषा किया करता था।

३ युद्ध न कर सकेगा।

४ हुमायूँ देहली पहुँच कर ज्योतिष के विषय में शोध में रुचि लेने लगा। उसने इस विषय में सिदी अली रईस से भी सहायता ली। वह अपने पहुँचने एव दरबार के विषय में लिखता है —

"War raged on all sides, and when I arrived at Lahore the Governor, Mirza Shah would not let me continue my journey until I had seen the Padishah (Humayun) After sending the latter word of my arrival, he received orders to send me forthwith to Delhi Meanwhile a whole month had been wasted, but finally we were sent off with an escort The river Sultanpoor was crossed in boats and after a journey of 20 days we arrived towards the end of Dulkaada, by the route of Firuzshah (Firuzpore) in the capital of India, called Delhi As soon as Humayun heard of our arrival, he sent the Khanikhanan and other superior officers with 400 elephants and some thousand men to meet us, and, out of respect and regard for our glorious Padishah, we were accorded a brilliant reception. That same day the Khanikhanan prepared a great banquet in our honour, and as it is the custom in India to give audience in the evening, I was that night introduced with much pomp and ceremony into the Imperial hall After my presentation I offered the Emperor a small gift, and a chronogramm upon the conquest of India, also two *Ghazels*, all of which pleased the Padishah greatly Forthwith I begged for permission to continue my journey, but this was not granted Instead of that I was offered a Kulur (10,000,000 Rupees or one million pounds sterling) and the governorship over the district of Kharcha I refused, and again begged to be

संसार को प्रकाश प्रदान करने वाली हजरत शाहंशाह की पताकाओ का हजरत जहाबानी जन्नत आशियानी के सम्मानित आदेशानुसार पंजाब की ओर प्रस्थान

(३५५) जिस समय हजरत जहाँबानी का ससार विजय करने वाला हृदय हिन्दुस्तान की सुव्यवस्था एव दान पुण्य मे व्यस्त था, शाह अबुल मआली के विषय मे चिन्ताजनक समाचार इस प्रकार आने लगे कि 'ससार की कठोर मदिरा के नशे में वह बदमस्ती कर रहा है और सवसाधारण को कष्ट पहुँचा रहा है तथा शाही आदेशो के विरुद्ध आचरण कर रहा है।' क्योकि हजरत जहाँबानी उसके प्रति विशेष रूप से स्नेह प्रदर्शित करते थे अत वे इस प्रकार के समाचारो को सत्य न वे विरुद्ध एव ईर्ष्यालुओ एव कपटियो की मन गढन (बात) समझते रहते थे यहा तक कि सिकन्दर के पर्वत से निकलने के समाचार शाही शिविर म फैल गए और यह विश्वास हो गया कि उस बदमस्त सैयिद जादे[१] ने लाहौर के हाकिम फरहत खा को बिना किसी आदेश के स्थानान्तरित और अपने किसी आदमी को उसके स्थान पर नियुक्त कर दिया है तथा पादशाही खजाने में हस्तक्षेप कर रहा है। हजरत जहाँबानी के पवित्र हृदय मे, जो एक ऐसा दर्पण था जिसम राज्य के हित की बातें स्वत दृष्टिगत होने लगती थी, दैवी प्रेरणा से यह बात दृढ हो गई कि पजाब जो हिन्दुस्तान के बहुत बडे प्रान्तो मे है, हजरत शाहशाह के शासन एव प्रतिरक्षा के आशीर्वाद एव सौभाग्य के पोषित प्रकाश से सुशोभित हो और शाह अबुल मआली को हिसार[२] एव उस क्षेत्र के स्थान प्रदान कर दिए जाय। इसके

allowed to go, but for only answer I was told that I must at least remain for one year, to which I replied "By special command of my glorious Padishah I went by sea to fight the miserable unbelievers Caught in a terrible hurricane, I was wrecked off the coast of India , but it is now my plain duty to return to render an account to my Padishah, and it is to be hoped that Gujarat will soon be delivered out of the hands of the unbelievers" Upon this Humayun suggested the sending of an envoy to Constantinople to save my going, but this I could not agree to, for it would give the impression that I had purposely arranged it so. I persisted in my entreaties and he finally consented, adding however "We are now close upon the three months of continuous (Birshegal) i e the rainy season The roads are flooded and impassable, remain therefore till the weather improves Meanwhile calculate Solar and Lunar Eclipses, their degree of latitude and their exact date in the Calendar Assist our astrologers in studying the course of the sun and instruct us concerning the points of the Equator When all this is done, and the weather should improve before the three months are over, then thou shalt go hence" (A Vambery *The Travels and Adventures of the Turkish Admiral Sidi Ali Reis*, pp 46-49)

१ सैयिद के पुत्र।

२ हिसार अकबर को प्रदान किया गया था।

अतिरिक्त शीघ्र ही अन्तःपुर की बेगमें[1] काबुल से बुलवायी जा रही थीं अतः पंजाब का हज़रत शाहंशाह के सेवकों के अधीन रहना राज्य के हित में आवश्यक था।

यद्यपि भाग्यशाली सेना इतनी अधिक संख्या में थी कि वह सिकन्दर को पराजित कर सकती थी किन्तु राज्य के हित की दृष्टि से कुमक[2] बढ़ा कर ९६३ हि० के प्रारम्भ (नवम्बर १५५५ ई०) में ऐसे शुभ मुहूर्त में, जो साता इक्लीमों के सिंहासनारोहण एवं अनन्त तक स्थायी रहने वाले राज्य के गर्व का विषय हो सकता था, हज़रत शाहंशाह को जो ईश्वर द्वारा पोषित थे ऐसे ऐश्वर्य से नियुक्त किया जो राज्य के अधिनियमों एवं सौभाग्य के गौरव के लिए उपयुक्त था। दिखाने को तो बैराम खाँ को उनका अतालीक नियुक्त किया किन्तु वास्तव में राज्य के उस स्तम्भ की शिक्षा दीक्षा उनके[3] सिपुर्द हुई। निष्ठावान् एवं हितैषी लोगों का एक बहुत बड़ा समूह उनकी विजयी रिकाब के अधीन नियुक्त होकर विदा हुआ।

अकबर का बन्दूक चलाने की शिक्षा ग्रहण करना

जब उस ईश्वर के पोषित प्रकाश की सेना सहरिन्द पहुँची तो भाग्यशाली चौखट[4] के सेवकों ने जो हिसार फीरोज़ा में थे सेवा में उपस्थित होकर अपने हृदय की प्रसन्नता की सामग्री एकत्र की। इस भाग्यशाली पड़ाव पर उस्ताद अज़ीज़ सीस्तानी, जो अपनी उत्तम सेवाओं एवं निष्ठा के कारण रूमी खाँ[5] की उपाधि द्वारा सुशोभित था और जो आतशबाज़ी[6] की कला एवं बन्दूक चलाने में अद्वितीय था, ने हज़रत शाहंशाह की सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया। हज़रत शाहंशाह ने बन्दूक चलाना यहीं से प्रारम्भ किया, और अल्प समय में वे प्रत्येक कला एवं कारीगरी में आश्चर्यजनक कुशलता के स्वामी होने के कारण इस विचित्र कला में भी (३५६) निपुण हो गए। उन्होंने अन्य कलाओं के समान इस कला में भी आश्चर्यजनक कारनामे, जिनके उल्लेख के लिए अनेक ग्रंथ भी अपर्याप्त हैं, प्रदर्शित किए। मैं इन पवित्र व्यक्तित्व के सर्वगुण सम्पन्न होने का क्या उल्लेख करूँ और इस विषय में क्या लिखूँ कारण कि प्रत्येक व्यक्ति, जो किसी कला अथवा ज्ञान विज्ञान का इन विषयों के पंडितों से अध्ययन करने के उपरान्त (चाहे अध्ययन उसने पूरी कला अथवा ज्ञान विज्ञान का किया हो और चाहे आधे का, और चाहे उसने बुद्धिमान् उस्तादों के पास वर्षों के अध्ययन के उपरान्त वह योग्यता प्राप्त की हो), जब इस बात की तह तक पहुँच जाने वाले ज्ञानी एवं अपूर्व बुद्धि के स्वामी के पास पहुँचता है तो वह उनके अद्भुत विवेक के कारण सब कुछ भूल कर आश्चर्य में पड़ जाता है। उसके हृदय में यह बात आती है कि उनका कोई क्षण भी यह विद्या सीखने के अतिरिक्त किसी अन्य बात में व्यतीत ही नहीं हुआ है, और बाद में उसे सतुष्ट हो जाना पड़ता है कि इतनी अधिक निपुणता किसी को प्राप्त नहीं हो सकती। यह केवल ईश्वर की देन है। सब से बड़ी आश्चर्यजनक बात तो यह है कि वे एक ही

१ 'मुखद्देरान तुर्के इस्मन'।
२ सहायक सेना।
३ अकबर।
४ हुमायूँ के सेवक।
५ सम्भवतः रूमी खाँ हलबी अलेप्पो का, (ब्लाख़मैन, पृ० ४८९)।
६ आग फेंकने (तोप चलाने)।

गोष्ठी में विभिन्न सिद्धान्तो एव नाना प्रकार के विषयो पर वाद-विवाद करते हैं और ससार का शोभा देने वाले हृदय को उसमें कोई कष्ट नही होना। दार्शनिका, विद्वानो एव अन्य कलाकारा मे यह योग्यता कहा कि वे थाडी देर से अधिक अपने विषय के अतिरिक्त किसी अन्य समस्या पर बात कर सकें। यह सर्वोच्च ज्ञान एव अद्भुत प्रतिभा प्राप्त करना मानव-शक्ति के लिए सम्भव नही अपितु फिरिस्तो के भी वस की बात नही। परमेश्वर इस उत्कृष्ट माली को ससार वालो के प्रबन्ध हेतु दीर्घ काल तक जीवित रक्खे।

हजरत जहांबानी जन्नत आशियानी के भाग्यशाली वृत्तात का शेष भाग, एवं उनके कुछ उत्कृष्ट आविष्कारो तथा अधिनियमो का वर्णन

शासन के विभिन्न केन्द्र बनाने की इच्छा

जब पजाब का शासन प्रबन्ध हज़रत शाहशाह की ससार विजय करने वाली सेनाओ द्वारा शोभा पा गया तो हज़रत जहांबानी सर्वदा राजधानी देहली म राज्य व्यवस्था की समस्याओ का समाधान कर अपने पवित्र हृदय को शान्ति प्रदान करने लगे। वे प्रदेशो को सुव्यवस्थित रखने, शत्रुओ का विनाश एव अन्य इकलीमो की विजय के विषय में सोचा करते थे। वे कहा करते थे कि '*हम कई स्थाना पर अपने शासन के केन्द्र स्थापित करके हिन्दुस्तान के शासन प्रबन्ध का प्रयत्न करेंगे*[1]। देहली, आगरा, जौनपुर, मन्दू[2], लाहौर, कन्नौज एव अन्य कुछ महाला मे जहा उचित हागा एक एक सेना एक सावधान दूरदर्शी तथा प्रजा के हितैषी एव न्यायकारी के नेतृत्व में नियुक्त कर देंगे ताकि वह सेना अन्य लश्कर की कुमक पर अवलम्बित न रहे और अपने साथ १२,००० अश्वारोहिया से अधिक न रक्खेंगे।"

सोने चांदी की कुर्सियो की प्रथा

वे कहा करते थे कि 'साने एव चादी की जडाऊ सदलिया[3] बनवाऊँगा ताकि दरबारे *आम में भाग्यशाली शाहजादे एव जो लोग अधिक विश्वास पात्र हू, वे आदेशानुसार आसीन* होकर सम्मानित हो कारण कि ससार के उच्च स्वभाव वालो के हृदय, जो निष्ठा के राजभवन में (३५७) नही पहुँच सके हैं और व्यापार के बाजार मे लाभ हानि के चक्कर मे भटकते रहते है, केवल धन प्रदान करने *से सतुष्ट नही होते अपितु जब तक उनके प्रति विश्वास एव उनके सम्मान* मे वृद्धि न हो, उनके हृदय वश मे नहीं आते।"

आदमियो के नाम से फाल

हज़रत जहांबानी का परोपकारी हृदय प्रारम्भ से इस समय तक आश्चर्यजनक बातो के आविष्कार एव गूढ सत्य को प्रकट करने की ओर आकृष्ट रहा। जिस समय हज़रत गेती सितानी फिरदौस मकानी काबुल से कन्धार रवाना हो गए, तो हजरत जहांबानी को राज्य-व्यवस्था

१ चन्द जायगा पाए तख्त साख्ता दर निजामे हिन्दुस्तान कोशिश मी फरमाएम
چند جای را پای تخت ساخته در نظام هندوستان کوشش می فرمائیم

२ माडू।

३ कुर्सी।

हेतु काबुल मे छोड़ गए। एक दिन वे सवार होकर नगर के आस पास एव घास के मैदान की सैर कर रहे थे। मार्ग में मौलाना रहुल्लाह[१] को, जो उनके गुरु थे, सम्बोधित करके कहा, "मेरे हृदय में आता है कि तीन व्यक्तियों के नाम से जो इस मार्ग में मुझे मिलें फाल निकालू और उन्हें अपने राज्य का आधार बनाऊँ।" मौलाना ने निवेदन किया कि एक नाम से भी काम चल सकता है। उन्होंने कहा "मेरे हृदय को इसी प्रकार दैवी प्रेरणा हुई है।" थोडी दूर चल कर एक वृद्ध दृष्टिगत हुआ। जब उससे पूछा गया, "तेरा क्या नाम है?" तो उसने उत्तर दिया, "मुराद ख्वाजा"। उसके पीछे एक अन्य व्यक्ति गधे पर लकडी लादे हुए लिए किसी ओर जाता दिखाई पडा। जब उसस उसका नाम पूछा गया तो उसने उत्तर दिया, "दौलत ख्वाजा"। उस समय उनकी दैवी प्रेरणा वाली जिह्वा से यह निकला, "यदि अन्य व्यक्ति, जो मिले, का नाम 'सआदत ख्वाजा' निकले तो यह एक बडी ही उत्तम एव आश्चर्यजनक बात होगी और आशा के नक्षत्र सौभाग्य के क्षितिज से उदय होगे।"[२] उसी समय एक व्यक्ति कुछ जानवरो को चराता हुआ दृष्टिगत हुआ। जब उससे उसका नाम पूछा गया तो उसने उत्तर दिया कि "सआदत ख्वाजा"। भाग्यशाली रिकाब के सेवक उस महान् चमत्कार के कारण आश्चर्यचकित हो गए और सब को विश्वास हो गया कि ये बडे सौभाग्यशाली होगे और दैवी अनुकम्पा से, उत्कृष्ट श्रेणी प्राप्त करके सफलतापूर्वक राज्य करेंगे।[३]

मुराद, दौलत एवं सआदत के अनुसार पदाधिकारियों का विभाजन

जब परोक्ष की यह सुखद घोषणा कार्य रूप में परिणित हो गई एव आशा की वाटिका न्याय की नहर से हरी भरी एव ताजा हुई तो उन्होंने धर्म एव ससार के शासन प्रबन्ध को "मुराद", 'दौलत" एव "सआदत" पर आधारित किया और भाग्यशाली चौखट के समस्त सेवकों अपितु अपने अधीनस्थ राज्य के सभी निवासियो को तीन भागो में विभाजित किया। भाइयो, सम्बन्धियो, अमीरों, वज़ीरो एव समस्त सैनिको को "अहले दौलत"[४] कहा जाता था। कारण कि यह बात स्पष्ट है कि इस समूह की सहायता बिना राज्य एव सौभाग्य के उच्च शिखर पर पहुँचना सम्भव नही। फलसफियों[५], आलिमो, सद्रो, सैयिदा शेखो[६], काजियो, कवियो, समस्त विद्वानो एव अन्य प्रतिष्ठित लोगो को "अहले सआदत"[७] कहा जाता था, कारण कि यह बात ज़ाहिर है कि इन भाग्यशाली लोगों को सम्मानित करने तथा उत्कृष्ट समूह के साथ रहने से अनन्त तक स्थायी रहने वाला सौभाग्य प्राप्त होता है। भवन निर्माण करने वालो, चित्र बनाने वाला, सगीतज्ञ

१ **कानूने हुमायूनी** में *'मौलाना मसीहुद्दीन रूहुल्लाह'*, (**कानूने हुमायूनी** मूल ग्रन्थ, पृ० ३३)।
२ अर्थात् सभी आशायें पूरी होंगी।
३ यह घटना ख्वन्द मीर की **कानूने हुमायूनी** से ली गई है। आगे के पृष्ठों में **कानूने हुमायूनी** का अनुवाद देखिये (मूल पृ० ३२ ३४)।
४ दौलत (राज्य) के समूह से सबधित।
५ दार्शनिकों।
६ सूफी सतों।
७ सौभाग्य के समूह से सबधित।

एव यादवो का नाम "अहले मुराद"[१] रक्खा कारण कि उन लोगो से समस्त ससार वालो को प्रसन्नता प्राप्त होती है।

सप्ताह के दिनों का विभाजन

(३५८) इसी प्रकार उन्होंने सप्ताह के दिनो को विभाजित करके "अहले दौलत" 'अहले सआदत" एव "अहले मुराद"[२] से सम्बन्धित कर दिया। इस प्रकार शनिवार एव वृहस्पतिवार को 'अहले सआदत' से सम्बन्धित किया। उन दो दिनो में वे अपने सम्मानित ध्यान को ज्ञान एव उपासना के प्रबन्धको से सम्बन्धित रखते थे। इन दो दिनो के "अहले सआदत' से विशेष रूप से सम्बन्धित होने का कारण यह है कि शनिवार का शनि से सम्बन्ध है और शनि, मशायख एव प्राचीन वशो का आश्रयदाता होता है। वृहस्पतिवार का सम्बन्ध वृहस्पति से होता है और वृहस्पति आलिमो एव समस्त सम्मानित लोगो का नक्षत्र है। रविवार एव मगलवार "अहले दौलत" एव पादशाही कार्यों और राज्य-व्यवस्था से सम्बन्धित किए गए। इन दो दिना के निश्चित होने का रहस्य यह है कि रविवार का सम्बन्ध सूर्य से होता है और सल्तनत एव राज्य-व्यवस्था का सचालन उसके प्रकाश के आश्रय के कारण होना है। मगलवार का सम्बन्ध मगल ग्रह से होता है और मगल ग्रह सैनिको का आश्रय-दाता होता है। सोमवार एव बुधवार को "मुराद" का दिन निश्चित किया गया। उन दो दिना में नदीमा[३], विश्वास-पात्रो एव "अहले मुराद" के समूह के अन्य लोगो को विशेष कृपाओ द्वारा सम्मानित किया जाता था। इन दो दिनो के निश्चित होने का कारण यह था कि सोमवार का सम्बन्ध चन्द्रमा से होता है और बुधवार का सम्बन्ध बुध ग्रह से। दोनो ब्यूतात[४] की समस्याओ के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है। शुक्रवार को उसके नाम से अनुरूपता के कारण सभी श्रेणी वालो से सम्बन्धित किया गया और सर्व-साधारण के समूह पादशाही कृपाओ द्वारा, जो सामान्य रूप से सभी के प्रति प्रदर्शित की जाती थी, लाभान्वित होते थे[५]।

दरबार की प्रथायें

जो दिन दीवान[६] के लिए निश्चित थे उनकी व्यवस्थाओ में से एक यह थी कि जब खिलाफत का सिंहासन, सल्तनत का केन्द्र बनना[७] और हज़रत जहाँबानी शासन प्रबन्ध के सिंहासन पर आरूढ होकर, दीवान की सभा को सुशोभित करते तो नक्कारे की ध्वनि द्वारा लोगा को सूचना दी जाती। जब वे दीवान से उठते तो तोप चलाने वाले तोप की आवाज़ से सर्व साधारण को सूचना

१ वह समूह जिसमे इच्छायें तथा अभिलाषायें पूरी हों।
२ देखिये आगे के पृष्ठों में **कानूने हुमायूनी** का अनुवाद (मूल पृ० ३४ ३५)।
३ सहचरों।
४ भवन निर्माण विभाग।
५ आगे के पृष्ठों में **कानूने हुमायूनी** का अनुवाद देखिये।
६ दरबार।
७ जब वे सिंहासन पर आसीन होते।

देते थे। उस दिन किरकीराक्ची[1] लोग खिलअता के कुछ जोडे, एव खजाची लोग सोने[2] की थैलियाँ लेकर दरबार मे इस आशय से आते थे कि दान-पुण्य एव लोगो की इच्छाओ की पूर्ति में विलम्ब न हो। कुछ वीर सेवक कवच धारण किए हुए एव सशस्त्र दरबार के समीप खडे रहते थे।

स्वर्ण-बाण

उनके अन्य आविष्कारो मे एक यह है कि उन्होने सोने के तीन बाण बनवाये थे जो क्रमश "सआदत", 'दौलत" एव "मुराद"[3] के बाण कहे जाते थे। राज्य के अधिकारियो इत्यादि में से जिस किसी को वह बाण प्रदान कर दिया जाता था, उस सरकार की व्यवस्था उसके अधीन हो जाती थी। यह आदेश था कि उनमें से प्रत्येक बाण का अधिकारी उस विभाग से सम्बन्धित व्यवस्थाओ के विषय में जब तक उचित रूप से प्रयत्नशील रहे, जो दैवी इच्छाओ के पालन एव राजभक्ति के लिए परमावश्यक है, तब तक वह कृपा-पात्र एव अधिकार की मसनद पर आरूढ रहेगा। यदि वह अपने पद के नशे में बदमस्त होकर सयम के मार्ग से विचलित हो जाय अथवा अपने स्वार्थवश राजभक्ति की ओर से उपेक्षा करके धन एकत्र करने को अपना मूल उद्देश्य बना ले और उसके उपाय का बाण (मूल) उद्देश्य के लक्ष्य को न पहुँचे तो उसके कार्यो की पंजिका पर (३५९) पदच्युत करने सम्बन्धी अक्षर लिख कर उसे उचित दड दिया जाय[4]। मीर ख्वन्द[5] ने, जो इतिहासकारो का नेता था, "कानूने हुमायूनी"[6] में लिखा है कि "मेरे सेवाकाल में सआदत (विभाग, स्थायी रूप से उम्दये असहाबे फज़्ल व कमाल[7], मौलाना मुहम्मद फरगली[8] से सम्बन्धित था और सैयिदो, मशाएख, आलिमो, काज़ियो, शिक्षा विज्ञान एव शोध (कार्य) से सम्बन्ध रखने वालो, एव पगड बाजो[9] के हको की जाँच, धर्म-सम्बन्धी व्यवस्था करने वालो की नियुक्ति एव पदच्युत होना, वज़ीफो एव सयूरगाल[10] का वितरण उसी के अधीन था। दौलत का बाण उम्दतुस्सल्तनत,

१ वे अधिकारी जो वस्त्रों का प्रबन्ध करते थे।
२ 'ज़र' का अर्थ सोना होता है किन्तु सोना चादी सभी कुछ ज़र में सम्मिलित समझा जाता था अत 'धन' अधिक उपयुक्त है।
३ 'सहमुस्सआदत, सहमुद्दौलत, सहमुल मुराद'।
४ अर्थात् उसे पदच्युत कर दिया जाय।
५ ख्वन्द मीर।
६ आगे के पृष्ठों में इस ग्रथ का अनुवाद किया गया है।
७ विद्वानों एव निपुण लोगों में अद्वितीय।
८ यह नाम **अकबर नामा** में भिन्न भिन्न रूप से लिखा गया है मौलाना मुहम्मद पीर अली (पृ० १३३), मौलाना मुहम्मद परगली तथा मुहम्मद फरग़ली (पृ० १४०), मौलाना मुहम्मद यरगली (पृ० २५९) तथा इस स्थान पर मौलाना मुहम्मद फ़रग़ली। **कानूने हुमायूनी** में 'मौलाना मुहीउद्दीन मुहम्मद फरग़री'।
९ 'अरबाबे अमामा'। आलिम लोग अमामा अथवा एक विशेष प्रकार की पगडी बाँधने के कारण "अरबाबे अमामा अथवा पगड़ी वाले" कहलाते थे। इस शब्द का प्रयोग व्यग्य के रूप में किया जाता था।
१० वह सहायता जो धार्मिक लोगों, विद्वानों इत्यादि को दी जाती थी। अबुलफ़ज़्ल ने **आईने अकबरी** में चार समूह के लोगों को सहायता का पात्र बताया है :—

अ बुद्धि के ऐसे अन्वेषण करने वाले जो समस्त सासारिक कार्यों को त्यागकर ज्ञान की खोज में रात तथा दिन में कोई अन्तर नहीं समझते।

अमीर हिन्दू बेग के अधीन था। अमीरों एव बड़े बड़े वजीरों, राज्य के कार्यालयों के समस्त मुतसद्दियों[1] एव दीवान के अधिकारियों की समस्याओं का सोचना एव बन्द करना[2] तथा अन्य प्रबन्ध, सैनिकों के वेतन का निश्चित होना एव दरबार के सेवकों की नियुक्त उसके सिपुर्द थी। मुराद एव व्यूतात[3] की व्यवस्थाओं का वाण अमीर वैसी से सम्बन्धित था। जैसा कि आवश्यक है व्यूतात की समस्याओं के समाधान एव ऐश्वर्य तथा वैभव के साधनों की व्यवस्था, गौरव तथा शान व शौकत की आवश्यकताओं की पूर्ति उसी के अधीन थी[4]।

वाणो के १२ वर्ग

उनके अन्य आविष्कारों में एक यह है कि उन्होंने वाणों को १२ वर्गों में विभाजित कर दिया था। प्रत्येक वर्ग वालों के लिए एक वाण निश्चित था। लोगों की श्रेणी के अनुसार इस प्रकार प्रबन्ध किया गया था। १२वाँ वाण जो कसौटी पर खरे हुए सोने का था, पादशाही इक्बाल के नियम के लिए विशेष रूप से पृथक् था। ११वाँ वाण सम्बन्धियों, भाई बन्धों और उन शाहजादों के लिए था, जो भाग्यशाली चौखट के सेवक थे। १०वाँ वाण सैयिदों, मशाएख, एव आलिमों के लिए था। ९वाँ वाण प्रतिष्ठित अमीरों में से, ८वाँ वाण निकटवर्तियों एव मंसब के अधिकारी उपचियों[5] से, सातवाँ वाण उपचियों,[6] छटा वाण कबीले के नेताओं, पाँचवाँ वाण वीर यक्का जवान[7] के लिए, चौथा वाण तहवीलदारों[8], तीसरा वाण जिरसे के जवानों[9], दूसरा वाण शागिर्द पेशा लोगों[10] एव पहिला वाण दरबानों तथा पहरेदारों के लिए था।

- ब ऐसे तपस्वी जो त्याग के साथ साथ वासनाओं से संघर्ष करते रहते हैं और जिन्होंने संसार वालों से मुख मोड़ लिया है।
- स ऐसे कमज़ोर एव दरिद्र जो अन्वेषण नहीं कर सकते।
- द उच्च वश के ऐसे सम्मानित लोग जो ज्ञान की कमी के कारण कोई व्यवसाय नहीं कर सकते।

जो सहायता नक़द दी जाती है, वह वज़ीफा और जो भूमि के रूप में दी जाती है उसे मिल्क अथवा मदद मआश कहा जाता है।

१ क्लर्कों।
२ पूर्ण व्यवस्था।
३ भवन निर्माण विभाग।
४ देखिये क़ानूने हुमायूनी (मूल पृ० ४०-४३)।
५ इस शब्द को विभिन्न रूप से लिखा गया है—अवचियों, अवचर्चियों किन्तु यह शब्द उपचयी है। नगर के दारोगा को उपचयी कहते थे। मंसब के अधिकारी उपचियों का तात्पर्य उन उपचियों से था जिन्हें मंसब प्राप्त था।
६ नगर के ऐसे दारोगा जिन्हें मंसब न प्राप्त
७ ऐसे सैनिक जो बाद के अहदियों के समान
८ खज़ांचियों के लिये।
९ सैनि
० लि

सल्तनत के विभागो का विभाजन

हज़रत जहाँबानी के आविष्कारो मे एक अन्य यह था कि सल्तनत के विभागो को चार तत्वो—अग्नि, वायु, जल एव मिट्टी—के विभाजन के आधार पर चार भागो में विभाजित कर दिया गया था। इन चारो विभागो में से प्रत्येक के लिए एक वजीर नियुक्त कर दिया गया था। तोपखाने का प्रबन्ध, अस्त्र-शस्त्र एव युद्ध के यत्रो और उन समस्त वातो की व्यवस्था, जिनका सम्बन्ध अग्नि से होता है, आतशी विभाग के अधीन थी। उस विभाग की विज़ारत, ख्वाजा अब्दुल मलिक[1] के सिपुर्द थी। किरकीराक खाने[2], बावर्ची खाने, अस्तबल, अस्तर[3] खाने, एव शुतर[4] खाने की व्यवस्था (३६०) हवाई विभाग से सम्बन्धित थी। उस विभाग का प्रबन्ध ख्वाजा लुत्फुल्लाह को सौंप दिया गया था। शरबत खाने[5] एव आबी खाने[6] की व्यवस्था, नहर निकालना एव अन्य प्रबन्ध जो जल से सम्बन्धित हैं, जिस विभाग के सिपुर्द हुआ वह सरकारे आबी कहलाता था। उस विभाग की विज़ारत पर ख्वाजा हसन नियुक्त था। जिराअत एव एमारात का प्रबन्ध खालसो एव कुछ ब्यूतात की व्यवस्था, खाकी विभाग से सम्बन्धित थे। इस सरकार की विज़ारत ख्वाजा जलालुद्दीन मीर्ज़ा बेग के अधीन थी। उपर्युक्त विभागो मे से प्रत्येक में एक अमीर नियुक्त कर दिया गया था उदाहरणार्थ अमीर नासिर कुली, आतशी विभाग का मुख्य अधिकारी[7] नियुक्त कर दिया गया था और वह सर्वदा लाल वस्त्र धारण किया करता था।

विशेष प्रकार की नौकाओं की तैयारी

उन दिनो में जो आविष्कार हुए उनमे एक यह है कि कुशल बढइयो ने यमुना नदी में चार बहुत बडी बडी नौकायें तैयार की थी। इनमें से प्रत्येक नौका में एक दो मंज़िला अत्यन्त उत्तम एव बलन्द चार ताक बनाया गया। उन नौकाओ को इस प्रकार एक दूसरे से मिला दिया गया था कि वे चार ताक[8] एक दूसरे के आमने सामने रहते थे। उन चारो नौकाओ म से प्रत्येक दो नौकाओ से एक अन्य ताक[9] बनवाया गया था जिससे नौकाओ के मध्य में एक अष्टाकार हौज बन गया था।

नौकाओं पर बाज़ार

उनके उत्तम आविष्कारो मे एक आविष्कार नौकाओ में दूकानो की व्यवस्था एव बाज़ारो का सजाना था जिससे बाल की खाल निकालने वाली बुद्धि भी आश्चर्यचकित थी। ९३९

१ कुछ पोथियों में 'अमीदुल मुल्क'। कानूने हुमायूनी में 'ख्वाजा अमीदुल मुल्क', (क़ानूने हुमायूनी, मूल पृ० ४८)।
२ वह शाखा जहाँ से वस्त्रों का प्रबन्ध होता था।
३ खच्चरों की देख रेख की शाखा।
४ ऊँटों की देख रेख की शाखा।
५ शरबत एव अन्य पेय की व्यवस्था करने वालों की शाखा।
६ मदिरा का प्रबन्ध करने वालों की शाखा।
७ 'मीर सरकारे आतशी'।
८ चौकोर कमरा।
९ कमरा।

हि० (१५३२-३३ ई०) में जब हज़रत जहाँबानी फीरोज़ाबाद[1] देहली से अधिकाश अमीरो एव उच्च पदाधिकारियो, समस्त उपचकियों[2] एव राज्य के स्तम्भो के साथ नौकाओ में बैठकर नदी द्वारा राजधानी आगरा की ओर रवाना हुए तो उसी प्रकार सजा-सजाया बाज़ार यमुना नदी पर तैरता आता था। जिस किसी को जिस वस्तु की आवश्यकता होती उसे उस बाजार मे मिल जाती।

नदी पर उद्यान

इसी प्रकार पादशाही बागबानो ने शाही आदेशानुसार नदी पर एक उद्यान तैयार कर दिया था।

चलता फिरता पुल

उनका एक अन्य आविष्कार एव चलता फिरता[3] पुल था।

चलता फिरता महल

हज़रत जहाँबानी के आश्चर्यजनक आविष्कारो मे से एक चलता फिरता महल कस्रे रवा था। उस महल में तीन मंज़िले थी जो तराशे हुए लट्ठो की बनी थी। कुशल बढइयो ने उसके भागो को एक दूसरे से इस प्रकार मिला दिया था कि जिस किसी की दृष्टि उस पर पडती वह यही समझता कि वह पूरा एक टुकडा है किन्तु इच्छानुसार उन्हे अलग अलग कर जिस देश मे चाहते ले जा सकते थे। ऊपर की मंज़िल तक की सीढियाँ इस प्रकार तराशी गई थी कि जब जी चाहे उन्हे बाँध लिया जाता और जब जी चाहे खोल लिया जाता।

ताजे इज़्ज़त का आविष्कार

उस पवित्र स्वभाव वाले के उत्कृष्ट आविष्कारो में एक मुकुट था जिसकी ऊँचाई एव सुन्दरता बडी सतुलित थी। मुकुट के चारो ओर का हाशिया दो भागो में विभाजित था। प्रत्येक भाग ७ (٧) अक के समान था। इस कारण कि दो ७ (٧) अक ७७ (٧٧) होते है और क्योंकि इज़[4] शब्द मे भी ७७ होते है अत उस मुकुट का नाम ताजे इज़्ज़त[5] रक्खा गया। (३६१) उसका आविष्कार बदख्शा मे हुआ था[6]। जब वे राजधानी आगरा में पहुँचे और उस मुकुट को हज़रत गेती सितानी फिरदौस मकानी की सेवा में प्रस्तुत किया तो हज़रत गेती सितानी बडे प्रसन्न हुए।

१ देहली से लगभग १० मील दूर स्थान फीरोज शाह द्वारा बसाया हुआ फीरोज़ाबाद।
२ मुख्य अधिकारियों से तात्पर्य है।
३ 'पुले रवा'।
४ इज़ अथवा प्रतिष्ठा में ७७ इस प्रकार होते हैं ऐन ع = ७० और जे ز =७।
५ आदर सम्मान का मुकुट।
६ ख्वन्द मीर के अनुसार शिहाबुद्दीन अहमद मुअम्माई ने इसके आविष्कार की तिथि 'ताजे सआदत' के अक्षरों से निकाली :

खरगाह का आविष्कार

उनके उत्तम आविष्कारो मे एक खरगाह का आविष्कार था जो आकाश की १२ राशि चक्रो के अनुसार १२ भागो मे विभाजित था। प्रत्येक वक्ष में झझरियाँ बनी थी जिनसे प्रताप के नक्षत्रो का प्रकाश चमकता रहता था। उन्होने एक अन्य खरगाह का आविष्कार किया जो समस्त अन्य खरगाहों को उसी प्रकार घेर लेता था जिस प्रकार फल्कुल अफलाक[1] फलके सवाबित[2] को ढाके है। जिस प्रकार फल्के अतलस[3] बेल-बूटो से शून्य है उसी प्रकार इस खरगाह मे भी झझरियाँ नही थी।

बिसाते निशात का आविष्कार

हजरत जहाँबानी ने आनन्द-मगल के जो आविष्कार किए उनमें एक बिसाते निशात[4] थी। वह बिसात (नक्षत्र) ग्रह पथ एव तत्व सम्बन्धी ग्रहो में विभाजित एव गोल थी। प्रथम वृत्त, जो अतलस रूपी आकाश के अनुरूप था, सफेद रग का था, दूसरा नीला, तीसरा शनि ग्रह से सम्बन्धित होने के कारण काला, चौथा बृहस्पति से सम्बन्धित होने के कारण हलके भूरे रग का पाँचवाँ मगल ग्रह से सम्बन्धित होने के कारण लाल, छटा उत्कृष्ट सूर्य का ग्रह होने के कारण सुनहरा, सातवाँ शुक्र का ग्रह होने की वजह से चमकदार हरा, आठवाँ बुध ग्रह का स्थान होने के कारण बैंगनी था, कारण कि बुध ग्रह की प्रकृति मिली-जुली है। नीले को लाल रग से मिला देने से बैंगनी बन जाता है। अन्य मिले जुले रगो को छोड कर बैंगनी रग चुनने का कारण यह है कि कुछ विद्वानो ने बुध ग्रह को सुरमई रग का बताया है और मिले-जुले रगो में बैंगनी रग, सुरमई रग के निकटतम है। ९वाँ वृत्त चन्द्रमा का ग्रह होने के कारण सफेद था। चन्द्र ग्रह के उपरान्त, अग्नि एव वायु के वृत्त क्रम से रक्खे गए, तदुपरान्त मिट्टी एव जल के। विश्व के चौथाई आबाद भाग को सात इकलीमो में विभाजित किया गया।

ते	(ت)	=४००
अलिफ़	(ا)	= १
जीम	(ج)	= ३
सीन	(س)	= ६०
ऐन	(ع)	= ७०
अलिफ़	(ا)	= १
दाल	(د)	= ४
ते	(ت)	=४००
		९३९

इस प्रकार इसका आविष्कार ९३९ हि० (१५३२-३३ ई०) में हुआ।

१ सब आसमानों से ऊँचा अर्थात् सब आसमानों के ऊपर वाला आसमान (९वा आसमान)।

२ सब से नीचे का आसमान।

३ सब से ऊपर का आकाश जो अतलस की भाँति सादा है। फल्कुल अफलाक को फलके अतलस भी कहते है।

४ आनन्द-मगल का फ़र्श (कालीन)।

वे स्वयं सुनहरे वृत्त को चुन कर वहाँ सिंहासनारूढ होते थे। प्रत्येक समूह साता ग्रहा मे स किसी न किसी ग्रह से सम्बन्धित होने के कारण तत्सम्बन्धी वृत्त में बैठने का आदेश पाता था। इस प्रकार, हिन्दी अमीर शनि के वृत्त मे, सैयिद एव आलिम बृहस्पति के वृत्त में बैठते थे। जो लाग वृत्ता में बैठते थे, वे पाँसा फेंकते थे जिसके हर आर अलग-अलग प्रकार के चित्र बने थे। जिसके पाँसे में जिस प्रकार का चित्र निकलता वह वैसी ही शक्ल बनाकर उस वृत्त म बैठ जाता था। उदाहरणार्थ यदि किसी खडे हुए आदमी का चित्र निकलता तो वह खडा हो जाता, यदि किसी बैठे हुए आदमी का चित्र निकलता तो वह बैठ जाता और यदि टेक लगाये हुए आदमी का चित्र निकलता तो वह टेक लगा लेता। इससे लोगो के आनन्द मगल मे वृद्धि होती थी[१]।

वस्त्रो के रगो का निश्चित होना

उनके उत्कृष्ट आविष्कारो म रोजाना उस रग के वस्त्र धारण करना है जो उस दिन के नक्षत्र के अनुरूप होता था। वह नक्षत्र उस दिन का आश्रयदाता होता था। इस प्रकार वे रविवार को पीले रग के वस्त्र धारण करते थे कारण कि उस दिन का सम्बन्ध उत्कृष्ट सूर्य से है। सोमवार को वे हरे वस्त्र धारण करते थे जो चन्द्रमा स सम्बन्धित है इसी प्रकार अन्य दिना का भी (क्रम) था।

न्याय की तब्ल

हजरत जहाँबानी के आविष्कारो मे एक आविष्कार न्याय का तब्ल[२] था। यदि किसी को किसी से झगडे के कारण न्याय की आवश्यकता होती तो वह तब्ल पर एक चोब[३] मार देता। (३६२) यदि किसी को उलूफा[४] के न प्राप्त होने के कारण न्याय की आवश्यकता होती तो वह दो बार चोब मारता। यदि किसी अत्याचारी द्वारा धन सम्पत्ति के अपहरण के कारण कोई न्याय की याचना करना चाहता तो वह तीन बार चोब बजाता और यदि किसी को हत्या के कारण न्याय की प्रार्थना करनी होती तो वह चार बार तब्ल बजाता।

आविष्कारो की समीक्षा

उस पवित्र बादशाह के आश्चर्यजनक आविष्कारो के अनेक अवशेष वर्तमान है किन्तु सावधान हृदय के बुद्धिमानो के लिए उनके बहुमूल्य गुणो को समझने की दृष्टि से जितना लिखा गया, उतना ही पर्याप्त है। इस समय यही अच्छा है कि इस बात को समाप्त करके मूल उद्देश्य का उल्लेख किया जाय।

१ कानूने हुमायूनी में आविष्कारों के सम्बन्ध में कुछ अन्य बातों का भी उल्लेख किया गया है और जिन अधिनियमों का अकबर नामा में संक्षिप्त उल्लेख हुआ उनका काव्यमय फारसी में सविस्तार विवरण दिया गया है।

२ बडा ढोल, धौंसा।

३ तब्ल बजाने की छडी।

४ वेतन, वृत्ति।

हजरत जहाँबानी के हृदय के दर्पण में पवित्रता के लोक की यात्रा का प्रतिविम्बित होना एव परलोकगामी होना

छान-बीन करने वालो से यह बात छिपी न रहनी चाहिये कि लगभग उसी समय, जब ज्ञान की वाटिका के पौधें (अर्थात) हजरत शाहंशाह पजाब की ओर विदा कर दिए गए हजरत जहाबानी अपनी पवित्र जिह्वा स प्राय पुनीत लोक की यात्रा के विषय में वार्ता किया करते थे। यह बात उनके उत्तम स्वभाव के विरुद्ध थी कारण कि इस बात को वे शासन प्रबन्ध के ससार के प्रतिकूल होने के कारण सराहनीय न समझते थे अत उनके सम्मानित दरबार में इसकी चर्चा न होती थी। उस समय वे उस वार्ता से प्रसन्न होने के कारण कि उनके परोक्ष का ज्ञान रखने वाले हृदय मे यह बात प्रतिविम्बित हो गई थी।

इसी प्रसग में एक दिन उन्होने हजरत गेती सितानी फिरदौस मकानी के तथ्यपूर्ण कथन का समर्थन एव उसकी प्रशसा करते हुए बताया कि 'अमुक सेवक मुझसे कहा करता था कि हजरत गेती सितानी फिरदौस मकानी फरमाया करते थे कि "जब गजनी के कब्रिस्तान मुझे स्वप्न में दिखाई देंगे तो मेरी मृत्यु का समय आ जायेगा।" उसी के साथ साथ (हजरत जहाँबानी) यह कहते थे कि 'जब मैं देहली एव उसके मजारो[1] को देखता हूँ तो हजरत फिरदौस मकानी की बात का स्मरण हो आता है कि उन्होने कितनी अच्छी बात कही।' जिस समय वे परलोक को सुधारने वाले थे तो वे अपने विश्वास-पात्रो से कहा करते थे कि "आज प्रात काल की एबादत के उपरान्त

१ सम्भवत सिदी अली रईस ने देहली के इन्हीं भ्रमणों में से किसी एक का इस प्रकार उल्लेख किया है। लाहौर के स्थान पर देहली होना चाहिये।

One day the Emperor planned a little excursion on horseback to visit the graves of the holy Sheikhs of Lahore, and I accompanied him We visited the graves of Shah Kutbeddin the Pir of Delhi, of Sheikh Nizam Weli, Sheikh Ferid Shekr Ghendj, Mir Khosru Dehlevi and Mir Husein Dehlevi When the conversation turned upon the poetical works of Mir Khosru I quoted some of his best poems, and under their influence I conceived a most telling distich I turned to the Emperor saying "It would be presumption on my part to measure my powers against those of Mir Khosru, but he has inspired me, and I would fain recite my couplet before your Majesty" "Let us hear it," said Humayun, and I recited the following

Truly great is only he, who can be content with his daily bread
"For happier is he than all the kings of the earth"
"By God," cried the Monarch, "this is truly sublime"

It is not so much my object here to make mention of my poetic effusions, but rather to show up Humayun's appreciation of poetry" (A Vambery *The Travels and Adventures of the Turkish Admiral Sidi Ali Reis*, pp 53-54)

परोक्ष से यह बात प्रकट हुई और परोक्ष से प्रेरणा देने वाले ने यह रुबाई मेरी जिह्वा को प्रदान कर दी

रुबाई

'हे ईश्वर ! अपनी अपार कृपा द्वारा मुझे खास अपना बना ले,
अपने विशेष रहस्यो का ज्ञान प्रदान कर,
निष्ठुर बुद्धि ने मेरे हृदय को घायल कर दिया है
मुझे अपना दीवाना कह दे और मुक्त कर दे[1]।'

पढते समय उनके ग्रन्थ का अवलोकन करने वाले नेत्रो से आँसू टपकने लगते थे और उनके प्रकाश-युक्त ललाट से पूर्ण रूप से परिवर्तन दृष्टिगत होने लगता था।

अकबर का स्वप्न

उन दिनो में जब कि देहली में उत्कृष्ट शिविर लगे थे तो खिलाफत के नेत्रो का प्रकाश (३६३) बढाने वाले अर्थात् हजरत शाहंशाह ने एक रात स्वप्न देखा कि कोई उनके[2] कस्तूरिया केश उखाड रहा है। जब वे जागे तो उन्होंने इस स्वप्न को अदहम खा की माता माहम अनगा को बताया। उसने स्वप्न की व्याख्या करने वाले कुछ कुशल लोगो को बुलवा कर उसकी व्याख्या पूछी। जब हज़रत जहाँबानी से पूछा गया तो उन्होने उत्तर दिया, "उनके (हजरत शाहंशाह के) सिर से कष्ट दूर हो जायेंगे।" तदुपरान्त उस दुर्घटना[3] की ओर, जिसकी उपेक्षा असम्भव है, सकेत करके उन्हे सांत्वना दी। वे उन दिनो सवदा इस प्रकार व्यवहार करते रहते थे, जिससे इस नश्वर ससार से प्रस्थान की, जिससे सबको विदा होना है, सुगन्धि सम्मानित दरबार के दूरदर्शी लोगो को, जिसकी व्याख्या से निष्ठावानो का हृदय टुकडे टुकडे होता रहता था, पहुँचती रहती थी। हजरत

१　यारब ब कमाले लुत्फ खासम गरदा,
वाकिफ ब हकायके ख्वासम गरदा।
अज अक्ले जफाकार दिल अफगार शुदम,
दीवानये खुद ख्वा व खलासम गरदा।

یارب بکمال لطف خاصم گردان
واقف بحقائق خواصم گردان
از عقل جفاکار دل افگار شدم
دیوانهٔ خود خوان و خلاصم گردان

२　प्रकाशित ग्रन्थ में 'काकुले मुश्कीने मुरद्दमे आंहजरत है' जिससे यह भ्रम हो सकता है कि आंहजरत शब्द का प्रयोग हुमायूँ के लिये हुआ है, किन्तु हुमायूँ के बाल उस अवस्था में कस्तूरी के समान काले नहीं हो सकते। कुछ पोथियों में आंहजरत के स्थान पर 'ईशा' है। यही शुद्ध ज्ञात होता है। 'ईशा' का तात्पर्य अकबर से हो सकता है जिसके बाल उस समय काले थे।

३　अर्थात् अपनी मृत्यु की ओर।

जहाबानी ने उस दालान की मेहराब पर जहाँ वे रहते थे, अपने हाथ से शेख आज़री[1] का यह मतला[2] लिख दिया था

शेर

'मैंने सुना है कि इस मुलम्मा किए हुए आकाश पर लिखा है,
जिन कार्यों का परिणाम प्रशसनीय होता है, वे सुखद है[3]।'

अफीम की अन्तिम खूराक

अपनी मृत्यु के समीप उन्होने अफीम का सेवन कम कर दिया था यहाँ तक कि अपने दरबार के विश्वास-पात्रो के एक समूह से वे कहा करते थे कि, "हम देखते हैं कि कितने दिन तक और दो-तीन गोलियो से काम चल जाता है।" सात दिन की खूराक पृथक् करके एक कागज मे लपेट कर अपने विशेष दासो को दे दिया और कहा, "हम इतनी ही अफीम का सेवन कर पायेंगे"। जिस दिन पवित्रता एव एकान्त के लोक की प्रथम यात्रा प्रारम्भ होने वाली थी, चार गोलियाँ रह गई थी। उन्हे मगवा कर उनका[4] गुलाब[5] के साथ सेवन कर लिया।

शुक्रवार रबी-उल-अव्वल ९६३ हि० (जनवरी-फरवरी १५५६ ई०) को शाह बुदाग, आलम शाह, बेग मुलूक एव कुछ अन्य लोग हिजाज की यात्रा से वापस आये हुये थे। चगती खा एव कुछ अन्य लोगो ने गुजरात से वापस आकर, वहाँ का वृतान्त दिया। पहलवान दोस्त मीर बर एव मौलाना असद, मुनइम खा के प्रार्थना-पत्र लेकर काबुल से आये।

दिन के अन्तिम पहर वे किताब खाने के कोठे पर, जो उसी समय तैयार हुआ था, पहुँचे। जो लोग जामा मस्जिद मे एकत्र थे, कोरनिश के सौभाग्य द्वारा सम्मानित हुए। वे बडी देर तक मक्का मुअज्जमा, गुजरात एव काबुल के विषय में प्रश्न करते रहे।

हुमायूं का ज़ीने से गिरना

तदुपरान्त गणित वेत्ताओं[6] के एक समूह को बुलवाया। उस रात्रि में शुक्र ग्रह के उदय की आशा की जाती थी। वे उसका निरीक्षण करना चाहते थे। तथ्य को समझने वाले उनके

१ इस्फरायन अथवा मेहरजान नीशापुर का निवासी जलालुद्दीन हमजा जिसकी मृत्यु ८६६ हि० (१४६१-६२ ई०) में हुई।

२ गजल का प्रथम शेर।

३ शुनीदा अम कि बरीं तारमे जर अन्दूद अस्त,
खते कि आक़िबते कारे जुमला महमूद अस्त।

४ इस स्थान पर जो वाक्य है वह स्पष्ट नहीं। जाहिर में तो इसका अर्थ यही है कि उसने चारों गोलियों का सेवन कर लिया किन्तु यह सम्भव प्रतीत नहीं होता। जिस दिन का उल्लेख है वह कदाचित उसके गिरने का दिन है। सम्भवतः एक गोली का सेवन उस दिन किया होगा और शेष तीन गोलियों का सेवन मृत्यु के दिन तक कराया गया होगा।

५ सम्भवत: गुलाब जल के साथ।

६ ज्योतिष शास्त्र के पंडितों से तात्पर्य है।

हृदय में यह आया कि जब शुक्र ग्रह उदय हो और शुभ मुहूर्त आये तो वे एक भव्य दरबार आयोजित करके बहुत बड़े समूह को उच्च पदों पर सुशोभित करें। सायंकाल के प्रारम्भ होते ही वे उतरने लगे। जब वे दूसरे जीने[१] पर पहुँचे तो मिस्कीन नामक मुकरी[२] ने वे समय[३] की अजान प्रारम्भ कर दी। हजरत जहाँबानी अजान के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए वहीं बैठने का इरादा करने लगे। क्योंकि जीने[४] के दर्जे[५] पैने थे और पत्थरों में फिसलन थी अतः बैठते समय

१ अबुलफ़जल ने दो शब्दों का प्रयोग किया है —जीना तथा दर्जा। दर्जे का विवरण नीचे दिया है। इस प्रकार इस स्थान पर यह कहना कठिन है कि जीने का तात्पर्य दर्जा है अथवा जीने का घुमाव।

२ पढ़ाने वाला, अध्यापक, मस्जिद में विभिन्न दुआओं का पाठ करने वाला।

३ क्योंकि इस अजान से हुमायूँ की मृत्यु हो गई अतः इसे वे समय की अजान कहा जाता है। इसका यह अर्थ नहीं कि अजान का समय न हुआ था।

४ रोजर्स ने जीने का वर्णन इस प्रकार दिया है

" *The library alluded to in these passages is, as is well known, the* Sher Mandal in the Purana Qilah at Dihli This building is octagonal, of two stories in height, with lower story solid It is ascended by two flights of stairs These two staircases are in the inside of the walls of the upper story The steps are of granite roughly hewn very narrow and very high Wherever an angle occurs the steps are shaped thus making the staircase still more dangerous Use has polished them somewhat But in Humayun's time, the building was nearly new, as it was built by Sher Shah The roof of the second story is surrounded by a thick parapet of red stone On the *roof is an octagonal cupola with a base much smaller than the roof* The stairs come up on both sides of the cupola in the space intervening between it and the parapet Both *Firishtah* and the *Siyar-ul Mutaakharin* agree that Humayun was on the second step when he fell Hence to fall over the parapet would be impossible But it would not be impossible for him to fall down the first flight of stairs, and then, at the bottom of them fall from the first story down to the ground Both these authorities say that he did get *to the ground There is no defence* whatever round the first story, so it would be almost impossible to stop himself Had he fallen from the roof at once on to the ground, he would have been killed instantaneously The spot is shown where he did fall over the parapet But a survey of that spot makes Humayun a suicide Elphinstone's account is altogether wrong There is no marble in the building It is built of granite and red sand stone and is mortered after the fashion of buildings of that time" (C S Rodgers *Notes on the Death of Humayun*, J A S B 1871, p 135)

५ जीने की ऊपरी सतह निम्पर से एक के बाद दूसरे पर चढ़ा जाता है।

उनके पवित्र चरण पोस्तीन[1] में उलझ गए[2]। सम्मानित डंडा लड़खड़ा गया। चरण (ज़ीने में) छूट गए और वे सिर के बल आ रहे। दायीं कनपटी में अत्यधिक चोट आई और रक्त की कुछ बूंदें (३६४) उनके दायें कान से निकलीं। इस कारण कि उनके अन्तःकरण को परोक्ष का ज्ञान था अतः संसार की सुव्यवस्था एवं सांत्वना हेतु, तत्काल कृपा-युक्त अपने कुशल समाचार सम्बन्धी फरमान नज़र शेख चोली के हाथ प्रताप द्वारा पोषित उस नूर[3] के पास भेज दिए।

अपनी मृत्यु के विषय में भविष्य वाणी

उनके अन्तःकरण के प्रकाश से सम्बन्धित एक आश्चर्यजनक बात यह है कि उसी दिन[4] मध्याह्न में उन्होंने अपने कुछ विश्वास-पात्रों को बताया कि आज इस युग के किसी महान् व्यक्ति पर बहुत बड़ी विपत्ति आयगी और उसी के कारण वह इस संसार से विदा हो जायगा।

दुर्घटना को छिपाना

जो हितैषी (उस समय) उनकी पवित्र सेवा में उपस्थित थे उन्होंने प्रयत्न करके इस प्राण-विदारक दुर्घटना को छिपाया और खिलाफत की मसनद के उत्तराधिकारी के पास समाचार भेजने एवं उत्कृष्ट अमीरों के, जो राज्य के विभिन्न भागों में भेज दिए गए थे, एकत्र करने की कोशिश की। १७ दिन तक बड़ी बुद्धिमानी से उन्होंने इस हृदय विदारक दुर्घटना को सर्वसाधारण से गुप्त रखा।

अकबर का सिंहासनारोहण

दरबार के उपस्थित गण एवं खिलाफत की चौखट के परामर्श दाता खिज्र ख्वाजा खाँ, अली कुली खाँ, लतीफ मीर्ज़ा, खिज्र खाँ हज़ारा, कूकुक खाँ, कम्बर अली बेग, अशरफ खाँ, एवं अफजल खाँ जो अनुभवी वजीरों[5] की माला में सम्मिलित थे, एवं ख्वाजा हुसेन मर्वी, मीर अब्दुल हई, पेशरौ खाँ, मेहतर खाँ एवं कुछ दिन उपरान्त तरदी बेग खाँ, जो अपने हृदय-पट पर अमीरुल उमराई के अक्षर लिखे थे, एवं समस्त अमीर एकत्र हुए और २८ रबी-उल-अव्वल[6] को इस युग के खदेव[7] के सम्मानित नाम एवं उनकी उत्कृष्ट उपाधि का खुत्बा पढ़ कर, जो संसार अस्त-व्यस्त हो गया था उसका उपचार कर दिया और संसार तथा संसार वालों को क़यामत तक स्थायी रहने वाली शान्ति के समाचार पहुँचा दिए। पवित्र लोक के अधिकारी, जो इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे, प्रसन्न

१ लोमड़ी, समूर, सिंजाब आदि रूयेंदार जंतुओं की खाल से बनाया हुआ लबादा जो शीत ऋतु में पहना जाता है। इसके रूयें भीतर और खाल ऊपर रहती है।

२ इस्लाम के धर्म-विधान के अनुसार अज़ान सुनते ही मुसलमानों को उस समय तक जब तक अज़ान होती रहे सब काम बन्द करके मौन धारण कर लेना चाहिये। यदि कोई चल रहा हो तो खड़ा हो जाय और यदि खड़ा हो तो बैठ जाय।

३ अकबर।

४ उस सायं से पूर्व, दिन में जब वे गिरे थे।

५ 'बुजराये किफायत पेशा।'

६ १० फरवरी १५५६ ई०।

७ पादशाह।

हो गए और तत्व लोक के प्रबन्धकों की भी इच्छायें पूरी हो गईं। मीर अब्दुल हई सद्र ने इस शेर का पाठ किया —

शेर

'यदि संसार का नवरोज[1] नष्ट हो गया,
तो प्रत्यक्ष सैकड़ों पंखड़ियों वाला गुलाब[2] जीवित रहे[3]।'

कुछ लोगों ने उक्त शेर गाना प्रारम्भ कर दिया और उसे बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त हो गई। सभाओं में इसकी चर्चा होती रहती थी। एक बड़ी विचित्र बात यह है कि उन्हीं दिनों में एक विद्वान् ने दूसरे मिसरे (के अक्षरों) से इस युग के खदेव के सिंहासनारोहण की तारीख निकाली थी किन्तु यह उसी दशा में सम्भव है जब 'गुले' को 'ये' के साथ लिखा जाय[4], यद्यपि लिपि के नियमानुसार इसकी अनुमति नहीं।

मुल्ला बेकसी का हुमायूं के वस्त्र पहिनकर दर्शन देना

जिन दिनों यह हृदय विदारक दुर्घटना छिपाई जा रही थी एक बार मुल्ला बेकसी[5] को स्वर्गीय बादशाह के वस्त्र पहिना कर एक ऐवान[6] पर जहाँ वे बैठा करते थे बैठा दिया गया और उसने नदी की ओर मुख करके लोगों को दर्शन दे दिए। लोगों को कोर्निश कर लेने से उस घबराहट एवं शोक से जो उनके हृदय में था कुछ संतोष हो गया[7]।

१ हुमायूं।
२ अकबर।
३ अगर नवरोजे आलम रफ्त बरबाद,
गुल सद बर्गे सौरी रा बका बाद।
اگر نوروز عالم رفت برباد
گل صد برگ سوری را بقا باد
४ गुले (گلے) को گلی।
५ बेकसी ग़ज़नवी, मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी के अनुसार अपनी विद्वत्ता एवं अपने नाना प्रकार के गुणों के लिये बड़ा प्रसिद्ध था। उसकी मृत्यु ९७३ हि० (१५६५ ६६ ई०) में हुई। (मुन्तखबुत्तवारीख, पृ० ११२ ११३)।
६ वह स्थान जहाँ से वे दर्शन देते थे। छज्जे से तात्पर्य है।
७ इस विषय में सिदी अली रईस का विवरण बड़ा महत्वपूर्ण है

On another occasion I called upon Shahin Bey, the keeper of the Imperial Seal, and asked him to use his influence to obtain permission for me to depart In order not to come empty handed I brought him two *Ghazels*, and begged him urgently to intercede for me Shahin Bey promised to do his best, and one day he actually brought me the glad news that my petition had been granted, but that I was expected to offer my request formally in verse The rainy season was now at an end, I wrote to the Monarch, enclosing two *Ghazels*, which had the desired effect, for I received not only permission to leave, but also presents and letters of safe conduct

All was ready for the start Humayun had given audience on

(पिछले पृष्ठ का फुट नोट)

Friday evening when, upon leaving his castle of pleasure, the Muezzin announced the Ezan just as he was descending the staircase It was his wont, wherever he heard the summons, to bow the knee in holy reverence He did so now, but unfortunately fell down several steps, and received great injuries to his head and arm Truly the proverb rightly says, '*there is no guarding against fate*"

Everything was confusion in the palace, but for two days they kept the matter secret It was announced to the outer world that the Sovereign was in good health, and alms were distributed amongst the poor On the third day, however, that was on the Monday, he died of his wounds Well may the Koran say "We come from God and Him do we return"

His sons Djelaleddin Ekber was at the time away on a journey to visit Shah Ebul Maali, accompanied by the Khanikhanan He was immediately informed of the sad event Meanwhile the Khans and Sultans were in the greatest consternation, they did not know how to act. I tried to encourage them and told them how at the death of Sultan Selim the situation was saved by the wisdom of Piri Pasha who managed to prevent the news of his death from being noised abroad I suggested that, by taking similar measures, they might keep the Sovereign's death a secret until the prince should return This advise (advice) was followed The divan (council of state) met as usual, the nobles were summoned, and a public announcement was made that the Emperor intended to visit his country seat and would go there on horseback Soon after, however it was announced that on account of the unfavorable weather the trip had to be abandoned On the next day a public audience was announced but as the astrologers did not prophesy favorably for it, this also had to be given up All this, however somewhat alarmed the army and on the Tuesday it was thought advisable to give them a sight of their Monarch A man called Molla Bi, who bore a striking resemblance to the late Emperor only somewhat slighter of stature, was arrayed in the imperial robes and placed on a throne specially erected for the purpose in the large entrance hall His face and eyes were veiled The Chamberlain Khoshhal Bey stood behind, and the first Secretary in front of him, while many officers and dignitaries as well as the people from the riverside on seeing their Sovereign made joyful obeisance to the sound of festive music The physicians were handsomely rewarded and the recovery of the Monarch was universally credited

I took leave of all the grandees and with the news of the Emperor's recovery I reached Lahore about the middle of the month Rebiul

राज्य में हलचल

जब यह शोकपूर्ण दुर्घटना घटी तो बड़ी बड़ी उथल-पुथल एव अशान्ति, जो इस दुर्घटना का आवश्यक परिणाम है, उठ खड़ी हुई। क़यामत तक स्थायी रहने वाले इस राज्य के मुख्य पदाधिकारी राज्य की हित सम्बन्धी बुद्धि की सहायता से लोगो के हृदय की शान्ति एव सांत्वना (३६५) के लिए प्रयत्न करने लगे। ऐसे हल-चल के अवसर पर मित्रो तथा शत्रुओं को जो कुछ करना चाहिये था, वह उन्होंने किया। उन्होंने यथा-सम्भव अव्यवस्था को दबाने एव लोगो को सगठित रखने का प्रयत्न किया। इस वश का क़यामत तक स्थायी रहने वाला राज्य क्योकर सुव्यवस्थित एव सुशासित न रहता कारण कि हज़रत शाहशाह के पवित्र व्यक्तित्व ने, जो ससार को शोभा प्रदान करने वाला प्रकाश है, ससार एव ससार वालो की खिलाफ़त के सिंहासन को अपने अधिकार में कर लिया था। ईश्वर प्रशसनीय है[1] इतनी आश्चर्यजनक कुशलताओ के स्वामी, एव उत्कृष्ट प्रताप वाले के विषय में, जो वाह्य रूप से भी सुव्यवस्थापक था एव आध्यात्मिक दृष्टि से भी निपुण था, कल्पना तथा बुद्धि के क्षेत्र मे यह बात कहाँ आ सकती थी कि वह इतने शीघ्र इस नश्वर ससार से चल बसेगा। किन्तु जब वह समय आ गया जब कि विधाता इस प्राचीन ससार को नए सिरे से ठडक प्रदान करे और उसे इस प्रकार सुव्यवस्थित करे जितना वह इससे पूर्व बहुत से करनो[1] मे भी सुव्यवस्थित न था तो विवश होकर उस उस पूर्ण रूप से परखे हुए उत्कृष्ट व्यक्ति को प्रकट करना पड़ा जो ससार वालो में पूर्णतम था[2]। इस प्रकार यह दुर्घटना जिसकी उपेक्षा नही हो सकती, यद्यपि साधारण दृष्टि से देखने वालो के लिए शोक एव विलाप का विषय थी किन्तु गम्भीर बुद्धिमानो के लिए सतोष तथा हर्ष का कोष थी कारण कि (इस प्रकार) सल्तनत के इस उत्कृष्ट मोती के उदार व्यक्तित्व से दृश्यमान एव अदृश्य दोनो ही जगत को नए सिरे से शोभा और सांसारिक एव आध्यात्मिक सौभाग्य के चौराहे को प्रसिद्धि प्राप्त हो गई। जब ससार के इस पादशाह

Fvvel This was on a Thursday Travelling by the way of Sani Pata, Pani-Pata, Kirnat and Tani Sera I came to Samani where I communicated the news to the governor that the Padishah (Humayun) was giving audience and *that he was in good health From there I went by the road of Sabrand* to Matchuvara and Bachuvara and crossing the Sultanpoor by boat, I returned to Lahore by a forced march Meanwhile prince Djelaleddin Ekber had ascended the throne and in Lahore and many other places his name was inserted in the Friday prayers Mirza Shah, the Governor of Lahore *however would not permit me to leave* for he professed to have received orders from the new Emperor that no one was to be allowed to go to Kabul and Kandahar The only way therefore was to go back to the Emperor (Ekber) and accordingly I went as far as Kelnor where I met Djelaleddin Ekber and the Khanikhanan just opposite the fortress of Mankit (A Vambery *The Travels and Adventures of the Turkish Admiral Sidi Ali Reis*, pp 55 58)

१ अर्थात युगों।

२ 'अकमले अफरादे जहानियां' अर्थात् अकबर।

की वृद्धि उन्नति के शिखर पर पहुँच गई और इस उत्कृष्ट स्वभाव वाले की शासन-व्यवस्था के साधन सुव्यवस्थित हो गए और सर्वोत्कृष्ट राज्य का पांसा संसार के इस स्वामी के नाम निकला तो यद्यपि परम्परागत प्रथानुसार उन्होंने पुत्र के समान अधिकार प्राप्त किया किन्तु युग के शासन को उसकी सच्चाई एवं सदाचार के कारण यदि बाह्य जीवन के बन्धनों में रखा भी जाता तो भी इस कारण कि सर्वोत्कृष्ट लोगों की ही आज्ञाकारिता स्वीकार करनी चाहिये, उस युग के सम्मानित व्यक्ति[1] को भी दैवी नर व उस पार्थिव[2] की आज्ञाकारिता स्वीकार करना परम कर्त्तव्य हो जाता। क्योंकि पितृ-चोला ईश्वर का दिया हुआ बड़ा ही सम्मानित चोला है और उसके लिए पुत्र की आज्ञाकारिता उचित नहीं और पुत्रों का सौभाग्य पिता की आज्ञाकारिता के अतिरिक्त किसी अन्य बात में नहीं अतः प्रताप के इस जश्न हेतु यह अनुपेक्षीय हो गया कि धरती का यह शासक इस लोक से विदा हो जाय।

अमीरों की अपने अपने स्थान को वापसी

शोक सम्बन्धी आवश्यकताओं एवं बधाई सम्बन्धी प्रथाओं के उपरान्त राज्य के उच्च पदाधिकारी, जो राजधानी देहली में एकत्र हो गए थे चिन्तित दिलों की सांत्वना हेतु[3] अपने अपने स्थान की ओर शीघ्रातिशीघ्र रवाना हो गए।

देहली से सल्तनत के विशेष चिह्नों का अकबर के पास भेजा जाना

तरदी बेग खाँ ने, जो इन लोगों की सहमति से इस प्रदेश की सुव्यवस्था हेतु देहली में ठहरा हुआ था, सल्तनत के विशेष चिह्न, गुलाम अली शश अंगुश्त[4] एवं विश्वासपात्रों के अन्य समूह के हाथ संसार को शरण प्रदान करने वाले दरबार में भेज कर आज्ञाकारिता एवं अधीनता प्रदर्शित की। उसने मीर्जा कामरान के पुत्र मीर्जा अबुल कासिम को भी उनकी सेवा में भेज दिया।

हजरत शाहंशाह सम्बन्धी राज्य को उन्नति देने वाली, पंजाब की ओर प्रस्थान के समय से सिंहासनारोहण तक की घटनायें

(३६६) हजरत शाहंशाह के पंजाब की ओर प्रस्थान से लेकर उत्कृष्ट सिंहासनारोहण तक की भाग्यशाली घटनायें इस प्रकार हैं जब प्रतापी पताकायें पंजाब की ओर रवाना हुईं तो मार्ग में अतगा खाँ एवं सम्मानित चौखट के समस्त सेवकों ने हिसार फीरोजा में आकर, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, रिकाब के चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया। जब भाग्यशाली सेना महरिन्द[5] पहुँची तो पादशाही सेवकों का एक समूह जो शाह अबुल मआली की सहायता हेतु नियुक्त हुआ था उदाहरणार्थ मुहम्मद कुली खाँ बरलास, मुसाहिब बेग, ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद, फर्हत खाँ, ख्वाजा

१ हुमायूँ।
२ अकबर।
३ सम्भवतः अपने अपने प्रदेशों में शांति स्थापित करने के लिये।
४ ६ अंगुलियों वाला।
५ सरहिन्द।

ताहिर मुहम्मद वल्द पीर सुर्ख, मेहतर तिमुर शरबतची[१] और जो उस असयमी जवान की बदस्मा गोष्ठी से असतुष्ट थे, हज़रत शाहशाह के सम्मानित चरणो के समाचार सुन कर उसकी आज्ञा बिना पहुँच गए और अभिवादन का सौभाग्य प्राप्त करके कृपा पात्र बने।

विजयी सेना के पहुँचने के पूर्व सिकन्दर, जो पर्वत से निकल चुका था, शाहशाह की सेना के वैभव के कारण पुन पर्वत में प्रविष्ट हो गया। बदमस्त मीर, जो लाहौर से उसे पराजित करने के लिए निकला था, लौट कर लाहौर चला गया। जब यह प्रमाणित रूप से ज्ञात हो गया कि यह विलायत हज़रत शाहशाह को प्रदान कर दी गई है और वे इस ओर आ रहे हैं तो उसने विवश होकर अपनी सेना सहित सुल्तानपुर[२] नदी के तट पर पहुँचकर अभिवादन किया। हज़रत शाहशाह ने कृपा प्रदर्शित करते हुए तथा उस उदारता की दृष्टि से जो हज़रत जहाँबानी उसके प्रति प्रदर्शित करते थे उसे अपने दरबार मे बैठने का स्वय आदेश दिया। मीर को नाना प्रकार की सहृदयता एव अनुकम्पा द्वारा सम्मानित किया गया। इस कारण कि मीर सांसारिक मदिरा के घूँट के नशे मे था, अत जब वह विदा होकर अपने स्थान पर पहुँचा तो उसने सदेश भेजा कि, 'मेरे तथा हज़रत जहाँबानी के सम्बन्ध सभी को भली भाँति ज्ञात हैं[३], विशेष रूप से यह बात (आपके) सम्मानित हृदय मे होगी कि जूये शाही के कमरगह[४] में हमने हज़रत जहाँबानी के साथ एक स्थान पर एक ही बरतन मे भोजन किया। आप उपस्थित थे किन्तु आपको उलूश[५] भिजवा दिया गया, अत इस सम्बन्ध पर दृष्टि रखते हुए जब मै आपके पास पहुँचा तो मेरे लिए अलग कालीन क्यो बिछवाया गया और मेरे वास्ते पृथक् दस्तरख्वान किस कारण लगवाया गया?' हज़रत शाहशाह, जो बुद्धिमत्ता एव उदारता की खान थे उसकी मूर्खता पर मुस्कुराये और हाजी मुहम्मद सीस्तानी से जा सदेश लाया था कहा, "उससे कह दो कि सल्तनत के अधिनियम और होते हैं एव प्रेम के कानून दूसरे (३६७) होते हैं। तुम्हारा हज़रत जहाँबानी से जो सम्बन्ध था, वह मुझसे नहीं। बडे आश्चर्य की बात है कि तुम दोनो सम्बन्धो मे भेद भाव न करके शिकायत करने लगे[६]। मीर बडा लज्जित हुआ।

हज़रत शाहशाह पर्वत की ओर इस आशय से चल खडे हुए कि सिकन्दर को, जो मानकोट एव उस क्षेत्र में है, नष्ट कर सके।

१ शरबत का प्रबन्ध करने वाला। कभी-कभी इसका प्रयोग सभी प्रकार की पीने की वस्तुओं के प्रबन्धक के लिये होता था।

२ ब्यास।

३ हुमायूं उसे पुत्र कहा करता था।

४ घेरे का शिकार।

५ बादशाहों एव अमीरों के खाने का बचा हुआ भोजन जो उन लोगों को भेजा जाता था जिन्हें उस समय बादशाह तथा अमीरों के साथ उसी दस्तरख्वान पर भोजन करने का सम्मान न प्राप्त होता था।

६ बिगो, तोरये सल्तनत दीगर अस्त व कानूने इश्क दीगर आँ निस्बत कि हज़रत जहाँबानी रा ब शुमा बूद, मरा नीस्त। अजब कि दरमियाने ई दो निस्बत तफरका न कर्दा गिला कर्दा एद।

بگو تورهٔ سلطنت دیگر است و قانون عشق دیگر— آن نسبتی که حضرت جهانبانی را بشما
بود مرا نیست - عجب که درمیان این دو نسبت تفرقه نکرده گله کرده اید

हुमायूं की मृत्यु के प्रति अकबर का शोक

जब भाग्यशाली सेना ने हरहाना[1] के समीप पडाव किया तो एक द्रुतगामी दूत पहुँचा और उसने बैराम खा को हज़रत जहाँबानी के गिरने की दुर्घटना की सूचना दी। बैराम खा ने आगे बढना उचित न समझ कर उत्कृष्ट सेना को कलानूर की ओर रवाना किया ताकि कुछ दिन तक उस आकर्षक भूभाग में पडाव किया जाय। कलानूर के समीप नजर शेख चोली पहुँचा और सम्मानित फरमान प्रस्तुत किया। लगभग इसी समय इस दुर्घटना के, जिसकी उपेक्षा नही हो सकती, समाचार उत्कृष्ट काना तक पहुँचे। इस हृदय विदारक दुर्घटना को सुनकर हजरत शाहशाह शोक एव विलाप, जो प्रेम एव स्नेह के सम्बन्ध को देखते हुए स्वाभाविक है, प्रकट करने लगे और उन्होने इतना शोक एव इतनी चिन्ता प्रकट की कि किसी मनुष्य के लिए उसकी कल्पना सम्भव नही। बैराम खा, अतगा खा एव माहम अनगा सान्त्वना देते थे। किन्तु इस कारण कि उनका विलाप प्रेम की अधिकता के कारण था अत उन्हे जितनी अधिक सान्त्वना दी जाती उतना ही उनके शोक में वृद्धि होती थी। परमेश्वर का चुना हुआ यह व्यक्ति प्रत्येक व्यक्ति के लिए कितना दुखी एव चिन्तित हो जाता है। प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जिसमें निष्ठा स्वामी भक्ति एव योग्यता की सुगन्धि होती है वह कितना अधिक शोक प्रकट करता है। यह उचित ही है कि ऐसे अवसर पर जब कि असावधान लोग प्राचीन काल से प्रसन्न होते आये है, इस पवित्र व्यक्तित्व की यह दशा हो जाय ताकि ससार वाले, जिनकी दृष्टि ऊपरी बातो के अतिरिक्त किसी वस्तु पर नही होती, ससार के इस सम्मानित व्यक्ति की प्रतिष्ठा के काएल हो जायें। यह स्वीकृति सर्व साधारण के पथ प्रदर्शन का कारण बने और यह पथ-प्रदर्शन समस्त लोगो मे प्रकाश-वर्धन एव सत्य के फैलाने का साधन हो जाय। यदि यह बात न होती तो बुद्धिमत्ता एव दैवी ज्ञान के विस्तृत क्षेत्र में प्रताप द्वारा पोषित यह नूर इस बात को कब उचित समझता कि वह "दास्ता" के मत्थे पर, विधाता द्वारा लिखे हुए भाग्य के विषय मे सिलवट पैदा करना[2]। अन्ततोगत्वा अपनी दूरदर्शी बुद्धि की सहायता से वह सताप के शान्तिप्रद स्थान की ओर अग्रसर हुआ और दान-पुण्य एव सर्व-साधारण के हित की वह बातें जो परलोक गामियो के लिए सहायक होती है प्रारम्भ की।

ख्वाजा हुसेन मर्वी की कविता

कवियो एव बुद्धिमानो ने मरसिया[3] एव तारीखो की रचना की। इन्ही रचनाओ मे उस

१ हरियाना होशियारपुर (पजाब) जिले का एक कस्बा ३१°३८' उत्तर तथा ७२°५२ पूर्व में, होशियारपुर से ६ मील पर।

२ भाग्य के लिखे के विरुद्ध खेद प्रकट करता।

३ शोक सम्बन्धी वह कविता जो किसी मृत व्यक्ति की याद में लिखी जाय। (डा० धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य कोश, पृ० ५६६)।

स्वर्गीय कुब्बे[1] के विषय में ख्वाजा हुसेन मर्वी[2] का एक तरजीवबन्द[3] था। उसके कुछ शेर इस प्रकार हैं —

शेर

'हे हृदय! मृत्यु की आवाज तुझे सुननी ही है
तेरी अवस्था के आकाश पर मृत्यु की उषा को उदय होना ही है।
क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को मृत्यु का स्वाद चखना है[4] यह आदेश हो चुका है
अतः विश्वास से समझ ले कि तुझे मौत का प्याला पीना ही है।
जीवन का यह नाम जो तुझे प्रदान हुआ
तो तेरा नाम तुझे मृत्यु की ओर ले ही जाएगा।
जीवन की इस वाटिका एवं पुष्प पर घमंड मत कर
शरद ऋतु के पवन को इस पुष्प एवं वाटिका पर चलना ही है।
(३६८) तू अपने कानों से सुनता है कि अमुक न रहा,
अन्य लोगों के कान में भी यह समाचार पहुँचना ही है[5]।

तारीखें

मीर अब्दुल हई ने इस तारीख़ की रचना की
हाय! मेरा पादशाह कोठे से गिर पड़ा[6]।

१ हुमायूँ।
२ शेख कुतुबुद्दीन अलाउद्दौला सिमनानी, एक प्रसिद्ध सन्त का पुत्र। बदायूनी के अनुसार उसने एक दीवान की रचना की थी और यद्यपि वह प्रसिद्ध शायर न था किन्तु बड़ा अच्छा था। राजा विक्रमादित्य सम्बन्धी, सिंहासन बत्तीसी नामक कथा के फ़ारसी में अनुवाद का उसे आदेश हुआ था। (बदायूनी मुन्तखबुत्तवारीख भाग ३, पृ० १७६-१७७)। कहा जाता है कि उसकी मृत्यु काबुल में ९७९ हि० (१५७१-७२ ई०) में हुई। अबुल फ़ज़्ल ने लिखा है कि, उसमें बहुत गुण पाये जाते थे और वह अपने निजी चुने हुए घोड़ों को अधिक मूल्य पर बेचता था। वह हज़रत जहाँबानी का मुसाहिब एवं विश्वासपात्र था। [आईने अकबरी, नवल किशोर प्रेस लखनऊ (१८९२ ई०) पृ० १७८]
३ एक प्रकार का पद्य जिसमें कई बन्द (कड़ियाँ) होते हैं। प्रत्येक बन्द अलग अलग शेरों का बना होता है। हर बन्द की समाप्ति पर एक नया शेर लाते हैं जो प्रायः एक ही पद्य का होता है।
४ कुरान शरीफ़ से उद्धृत।
५ अधिकांश हस्तलिपियों में यह पद्य नहीं दिया गया है।
६ ऐ वाये पादशाहे मन अज़ बाम उफ़्ताद।

ای وای پادشاه من از بام افتاد

रोजर्स ने हुमायूँ के गिरने एवं मृत्यु की तारीख़ के विषय में इस प्रकार लिखा है

There is much discrepancy in the histories regarding the exact days of the fall and the death of Humayun

मौलाना ममऊद हिसारी ने पद्य में यह लिखा —

मिसरा

'ईश्वर से मिल गया हुमयूँ पादशाह[1]।'

क्योंकि इसमें उनके पवित्र नाम को बिना अलिफ[2] के लिखा गया है अत मौलाना कासिम काही[3] ने इस तिथि की रचना की—

Source	Day of the fall	Day of H 's death
Akbarnamah,	Friday of Rabi' I	
Firishtah,	7th Rabi' I	11th Rabi' I
Stewart's *Memoirs of Humayun* (p 120)		11th Do
Badaoni,	7th Do	15th* Do
Mirat ul' Alam,		7th Do
Padishahnamah (I, p 65)		13th (a Sunday)Do
Khafi Khan,	5th Rabi I	11th Do
Maasirul Umra,	7th Do	

'According to Prinsep's Useful Tables the year 963 A H commenced on Saturday, 16th November, 1555 The 7th Rabi I 963, would therefore correspond to the 66th day from the 16th November 1555, i e to the 20th January 1556, which would be a Monday We have to bear in mind that Monday, the 7th Rabi' I, commenced at 6 O' clock Sunday evening, 19th January, 1556 The 13th Rabi' I the date of H 's death according to the *Padishahnamah*, is certainly a Sunday, and this may be looked upon as the correct day, especially as the author of the *Padishahnamah* has taken so much trouble to settle the chronology of the reigns of the Timurides up to Shahjahan A perusal of the beginning chapters of that work is strongly recommended to historians'

C J Rodgers *Notes on the Death of Humayun*, pp 137-38

*This may be a mistake of the editor Mss continually confound یازدہم and پانزدہم *Yazduhum*, 11th, and *Panzduhum*, 15th

१ वासिले हक शुद हुमयू पादशाह
واصل حق شد همیوں پادشاہ

२ ہمایوں हुमायू के स्थान पर ہمیوں हुमयू।

३ कासिम काही मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी के अनुसार काबुल का मियां काही तसव्वुफ, इतिहास इत्यादि के ज्ञान एवं कविता करने में अद्वितीय था। यद्यपि वह शेख अब्दुर्रहमान नामी सूफियों के साथ रह चुका था किन्तु उसने अपना पूरा जीवन कुफ्र में ही व्यतीत किया। इसके बावजूद वह बहुत बड़ा दानी था। बदायूनी ने उसकी कविता के उद्धरण इस टिप्पणी के साथ प्रस्तुत किये हैं कि 'मैं उसके धर्म से कोई सम्बन्ध न रखकर उसकी शेरों को प्रस्तुत करता हूँ', (मुन्तखबुत्तवारीख भाग ३, पृ० १७३ १७६)। उसकी मृत्यु १७ मई १५८० ई० को हुई।

मिसरा

'हुमायूँ पादशाह् काठे से गिर पडा[1]।

इस तारीख में एक वर्ष कम है। एक अथवा दो वर्ष का अन्तर भवना की तारीख में हो सकता है किन्तु मृत्यु तिथि में नही[2]।

कुछ लोगो ने तारीख का यह मिसरा निकाला —

मिसरा

राज्य का वारिस जलालुद्दीन रहे[3]।

हुमायूं की विशेषतायें

ससार के इस अद्वितीय व्यक्ति की बहिरग एव अन्तरग सम्बन्धी निपुणता एव बुद्धिमत्ता के प्रमाण इतने अधिक थे कि उनका उल्लेख सम्भव नही। उन्हे अकली तथा नकली[4] विद्याओ का पूर्ण ज्ञान था विशेष रूप से गणित मे उन्हे बहुत बडी योग्यता प्राप्त थी और वे सवदा दार्शनिको की गोष्ठी में रहा करते थे। प्रतिष्ठित गणितवेत्ता उत्कृष्ट राजसिंहासन द्वारा प्रोत्साहन प्राप्त करते रहते थे। उन्होने वेधशाला के निर्माण का दृढ सकल्प कर लिया था और वेध शाला के बहुत से यन्त्रो की व्यवस्था भी कर ली थी। कई स्थानो को उन्होने वेधशाला के लिए चुना भी था। कविता एव कवियो से भी उन्हे रुचि थी। क्योकि उनमें कविता करने की बडी ही योग्यता थी अत व समय समय पर क्या हकीकत[5] क्या मजाज[6] (सभी) के विषय में कविता किया करते थे।

१ हुमायूं पादशाह अज बाम उफ्ताद

هاروں پادشاه از بام افتاد

२ इस स्थान पर इस बात का भी स्मरण प्रमावश्यक है कि हुमायूं की मृत्यु तारीख बायजीद में और जौहर ने भी ९६२ हि० लिखी है इसके अतिरिक्त सिकन्दरा के ऊपरी मंजिल के छज्जे पर भी यह शेर लिखे हैं

ज तुहमद फुनू बुवद शश दो साल,
कि शाह अकबर आ मायये जुल जलाल।
ब बाचाए जरीं ममनद नशिस्त,
कि बर तख्ते ऊ गश्ता अफलाक पुश्त
ز نہ صد فزوں بو د شش دو سال
کہ شاہ اکبر آں ۔ ذیہ ذوالجلال
بہ بالای زریں مسند نشست
کہ بر تخت او گشتہ افلاک پشت

३ वारिसे मुल्क जलालुद्दीन बाद

وارث ملک جلال الدین باد

४ मुसलमान लोग विद्याओं को दो भागों में विभाजित करते थे एक नकली और दूसरी अकली। अकली का सबध बुद्धि अथवा तर्क वितर्क से होता था। ज्ञान विज्ञान की वे शाखायें जिनका निरूपण तर्क वितर्क द्वारा हो सकता था उन्हें अकली कहा जाता था और जो शाखायें ईश्वर के आदेश तथा मुहम्मद साहब की वाणी एव उनकी सतान और मित्रों की कृतियों पर आधारित थीं वे नकली कहलाती थीं।

५ तथ्य आत्मा एव परमात्मा विषयक।

६ सासारिक विषयों से सबधित।

उनके आशआर का दीवान उत्कृष्ट किताबख़ाने में वर्तमान है। चमत्कार की उस प्रस्तावना से कुछ रुबाइयाँ लिखी जा रही हैं।

हुमायूँ की कवितायें

रुबाई

'हे हृदय ! रकीब[१] के समक्ष घबराहट मत प्रदर्शित कर,
अपने हृदय की दशा मत कह, किसी चिकित्सक से।
तेरा उस निष्ठुर से पाला पड़ गया,
यह बड़ा कठिन किस्सा तथा एक बड़ी विचित्र समस्या है।'

रुबाई

हे हृदय ! मित्र के समक्ष प्रसन्नता प्रदर्शित कर,
उसकी सेवा में सच्चाई से हृदय को जला।
हर रात में मित्र की कल्पना में प्रसन्नतापूर्वक बैठा रह,
हर दिन को मित्र के मिलन से नवरोज़ बना।'

रुबाई

'हे[२] वह ! तेरी निष्ठुरता संसार में खुली[३] हुई है
जिस दिन मैं तेरा अत्याचार न देखूँ यह अत्याचार है।
जो शोक आकाश के अत्याचार से हृदय को प्राप्त होता है,
हमें यदि तेरे इश्क का शोक हो तो फिर क्या दुःख है[४]।

१ एक ही माशूक के दो आशिक 'रकीब' कहलाते हैं। इसी प्रकार एक ही उद्देश्य के प्रतिस्पर्धी।
२ माशूक प्रियतम।
३ प्रकट (पताका) है।
४ सिदी अली रईस ने हुमायूँ की कला एवं अन्य दर्शों के विषय में जानकारी प्राप्त करने की रुचि का इस प्रकार उल्लेख किया है —

All this was said solemnly and decisively I had no alternative, but must submit to my fate I took no rest however, but laboured on night and day At last I had accomplished the astronomical observations, and about the same time Agra fell into the hands of the Padishah I immediately wrote a chronogramm for the occasion which found much favour One day, during an audience the conversation turned upon Sultan Mahmud of Bukkur and I suggested that some official contract (Ahdnameh—agreement) should be made with him, to which Humayun agreed The document was drawn up, and the Emperor dipping his fist in saffron pressed it upon the paper, this being the Tughra or Imperial signature Thereupon the document was sent to Sultan Mahmud

The Sultan was much pleased and both he and his Vizier Molla Yari expressed their thanks for my intervention in a private letter, which I

(पिछले पृष्ठ का फुटनोट)

showed to his Majesty, who had entrusted me with the transaction.

This incident furnished the material for a *Ghazel*, with which the Sovereign was so delighted that he called me a second Mir Ali Shir. I modestly declined the epithet, saying that it would be presumption on my part to accept such praise, that, on the contrary, I should consider myself fully rewarded to be allowed to gather up the gleanings after him Whereupon the Sovereign remarked "If for one more year thou perfectest thyself in this kind of poetry thou wilt altogether supplant Mir Ali Shir in the affections of the people of the Djagatai's" In a word Humayun loaded me with marks of his favour. One day I was talking to Khoshhal, the Imperial archer, and the Sovereign's special confident, a superb youth He used to take part in the poetical discussions, and provided me with material for two *Ghazels* which soon became popular all over India and were in everybody's mouth The same good fortune attended my acquaintance with the Afetabedji, Abdurrahman Bay, a courtier who also rejoiced in the confidence and affection of the Monarch, and was his constant companion in private life He also entered the poetical contest, and I composed two *Ghazels* upon him

In a word, poetical discussions were the order of the day, and I was constantly in the presence of the Emperor One day he asked me whether Turkey was larger than India, and I said "If by Turkey your Majesty means Rum proper, i e the province of Siwas, then India is decidedly the larger, but if by Turkey you mean all the lands subject to the ruler of Rum, India is not by a tenth part as large" "I mean the entire empire," replied Humayun "Then," I said "it appears to me, your Majesty, that the seven regions over which Iskender (i e Alexander the Great) had dominion, were identical with the present Empire of the Padishah of Turkey History records the life and the reign of Iskender, but it is not reasonable to suppose that he actually visited and personally ruled these seven regions, for the inhabited world (the fourth part of the present inhabited world), is 180 degrees longitude and from the equator about 60 degrees latitude Its area, according to astronomical calculations, covers 1,668,670 *fersakhes* It is therefore an utter impossibility for any man to visit and govern all these lands in person Perhaps he only owned a portion of each of these regions (*Iklim*), in the same way as the Padishah of Turkey does" "But has the ruler of Turkey possessions in all these regions?" asked Humayun "Yes certainly," I replied, "the first is Yemen, the second Mecca, the third Egypt the fourth Aleppo, the fifth Constantinople, the sixth Kaffa and the seventh Ofen and Vienna. In each of these regions the Padi-

अबुलफजल के अकबर नामा के सम्बन्ध में विचार

ईश्वर का धन्य है कि इस उत्कृष्ट माला[1] का, जो आकाश की माला के समान दैवी समर्थन एवं ईश्वर की सहायता से दृढ़ है और जिसका एक सिरा आदम सफी[2] के जन्म की उषा एवं दूसरा (३६९) सिरा शाहंशाह के व्यक्तित्व के सूर्य के अभ्युदय से सम्बन्धित है, समालोचना के नियमों के आधार पर संक्षिप्त रूप से नयी शैली में लिख दिया गया और अलंकारमय रचना शैली की आवश्यकता की ओर ध्यान नहीं दिया गया। इस उत्कृष्ट सची एवं सौभाग्य के शीर्षक की रचना द्वारा अबुलफज़ल, जो हवा में उड़ते हुए कण के समान है, सम्मानित हुआ एवं बुद्धि के अनेक रहस्य एवं गूढ़ बातें विषयानुसार विभिन्न स्थानों पर लिख दी गई। यदि उन गूढ़ बातों तथा रहस्यों को मूल इतिहास से पृथक् कर दिया जाय तो बुद्धिमत्ता[3] सम्बन्धी चुनी हुई बातों से परिपूर्ण एक चुना हुआ ग्रंथ तैयार हो जायगा।

shah of Turkey appoints his Beglerbeg and Kadi, who rule and govern in his name Moreover I was told in Gujarat, by the merchants Khodja Bashi and Kara Hasan (God alone knows whether their story is true), that when the Turkish merchants in China desired to insert the name of their Sovereign in the Bairam prayers on Bairam day, they brought the request before the Khakan of China, stating that their Sovereign was Padishah of Mecca, Medina, and the Kibla (Direction of the prayer), and therefore entitled to have his name inserted in the Bairam prayers The Khakan, although an unbeliever, had insight enough to see the justice of their request which he granted forthwith, he even went so far as to clothe the Khatib preacher) in a robe of honour and to make him ride on an elephant through the city Ever since that time the name of the Padishah of Turkey has been included in the Bairam prayers, and to whom, I ask, has such honour ever before been vouchsafed?" The Sovereign (Humayun) turning to his nobles said "Surely the only man worthy to bear the title of Padishah is the ruler of Turkey, he alone and no one else in all the world"

Another time we were talking about the Khan of the Crimea, and I remarked that he also held his office under the Padishah of Turkey "But," said Humayun, "if that be so how then has he the right of the Khutbe?" "It is a well known fact," I replied, "that my Padishah alone has the power to grant the right of Khutbe and of coinage" This statement seemed to satisfy everybody and we prayed together for the welfare of my Sovereign (A Vambrey *The Travels and Adventures of the Turkish Admiral Sidi Ali Reis*, pp. 49 53)

१ अकबर नामा से तात्पर्य है।

२ हज़रत आदम, पहिले पुरुष। अबुलफ़ज़्ल ने अकबर के पूर्वजों का उल्लेख हज़रत आदम से प्रारम्भ किया है। (अकबर नामा भाग १, पृ० ८२)।

३ दर्शन शास्त्र, विशेष रूप से राजनीति के दर्शन से तात्पर्य है।

शेर

'मैंने अपने रक्त से मदिरा का प्याला तैयार किया,
न कि सिरके का मटका जो सीने को घायल कर दे।
प्रत्येक विन्दु में बहुत से गूढ रहस्य छिपे है,
जब तक कोई उन्हे न तौले वह नही समझ सकता।'

यद्यपि साधारण रूप से देखने वालो की दृष्टि से इस समय तक बुजुर्गो का जो इतिहास लिखा गया वह अनावश्यक एव बकवास ज्ञात हो सकता है किन्तु तथ्य का ज्ञान रखने वालो के समूह की दृष्टि से इस दैवी प्रशसा के ग्रन्थ म आद्योपान्त (इसे बुरी नजर न लगे) एक अक्षर भी अनावश्यक नही लिखा है। कुछ परदो का उल्लेख किया गया है जो शाहशाह के पवित्र सौन्दर्य के आवरण है, और प्रत्येक आवरण के पीछे प्रतिभा का मुख है। कदापि नही कदापि नही, कैसा आवरण और कौन सा आवरण? एक ही सौन्दर्य है जो नाना प्रकार से दृष्टिगत होता रहता है और एक ही प्रतिभा है जो ससार को प्रकाश देने वाले सौन्दर्य से देदीप्यमान है।

शेर

'जिस किसी को भी बात समझनी आती है वह जानता है,
यह किस प्रकार की बात है।'

मै, जिसका हृदय एक स्थान पर गिरवी[1] है, किस प्रकार उसे दोनो लोक में लगा सकता हूँ? इतिहास की रचना से मुझे क्या लाभ कारण कि एक मियान मे दो तलवार नही रह सकती और दो उद्देश्य एक हृदय में नही समा सकते। प्रत्येक स्थान पर दिल लगाने वाले छिन्न भिन्न हृदय वाला की कल्पना मत कर कारण कि इन विना हृदय वाले सासारिक लोगो के पास हृदय कहाँ है जो वे सोच विचार कर सके। कारणो का पता लगाने वाले बुद्धिमानो का हज़रत शाहशाह के पवित्र प्रतीक से तथ्य का विशेष रूप से पता चल जाता है। (ईश्वर ने) साधनो के राज्य से भागे हुए इस व्यक्ति को मुरीदी[2] की कमन्द मे बाँध दिया। अत्यधिक सोच विचार एव भाग्य से सौभाग्य के प्रबन्धको ने इस व्यक्ति[3] के सदाचार के कारण शाहशाह के ससार को शोभा प्रदान करने वाले सौन्दर्य का इस उत्कृष्ट वेश में प्रकट किया। इस प्रकार ईश्वर के दरबार के उस अद्वितीय व्यक्ति के इश्के हकीकी[4] ने, इस लम्बी चौडी कथा के लिखने की ओर प्रेरित किया। रचना का बाजार गरम हुआ और गूढ बातो के समझने का उद्यान हरा भरा हुआ। तथ्य के लिए जगल जगल घूमने वाले के हृदय को एक ओर लगाये रहने की आवश्यकता म किसी प्रकार का विघ्न न पडा। माशूके हकीकी[5] के सौन्दर्य की विभिन्न श्रेणियाँ भी प्रकट हो गई और इश्क की कलाओ के विभिन्न वर्गो को पूर्ण उन्नति भी प्राप्त हो गई।

१ अकबर के लिये समर्पित होने की ओर सकेत है।
२ अबुलफ़ज़ल अकबर को अपना धार्मिक गुरू मानता था।
३ अबुलफ़ज़ल।
४ ऐसा प्रेम जिसमें कोई सासारिक लोभ न हो, ईश्वर का प्रेम।
५ ईश्वर।

बाह्य दृष्टि से देखने वाले साधारण व्यक्ति जिस विवरण को अनावश्यक समझते थे,
(३७०) वह समाप्त हो गया और बात उस स्थान पर पहुँच गई है जिसे दोनों ही समूह मूल उद्देश्य समझते हैं, अतः आशा है कि मुझे अपनी महत्वाकांक्षा में सफलता प्राप्त होगी।

पद्य

'मेरी लेखनी, जिसकी नोक परोक्ष की वाणी है,
परोक्ष की खान का खजाना खोलने वाली है।
उन लोगों से जो देखते हैं गम्भीरता-पूर्वक,
न्याय माँगता हूँ मैं, न कि प्रशंसा।'

शेर

'यह ग्रंथ (ईश्वर करे) प्रशंसा का पात्र बने,
यदि ईश्वर चाहे तो ऐसा ही हो।'

भाग ब

समकालीन इतिहासकार

ख़्वन्द मीर

(क) क़ानूने हुमायूनी

मीर्ज़ा हैदर

(ख) तारीख़े रशीदी

अलाउद्दौला बिन यहया क़ज़वीनी

(ग) नफ़ायसुल मआसिर

ससार के समस्त लोगों पर"[१]—द्वारा सुशोभित किया। सल्तनत एव खिलाफत के अधिकारियो को, "हमने तुम्हे उनके उपरान्त जमीन पर अपना उत्तरधिकारी बनाया"[१] नामक आयत के अनुसार (६) सृष्टि एव पैदा की हुई वस्तुओ की सुव्यवस्था का साधन बनाया।

मसनवी

'अत्यधिक कृपा एव उदारता से,
उन्हे प्रदान किए खिलाफत के साधन।
ससार के प्राणियो के हाँ व नही की लगाम[२],
ससार के बादशाहो के हाथ में प्रदान की।'

समस्त उत्कृष्ट शासको एव आकाश रूपी शक्ति रखने वाले बादशाहो में से कुछ को ईश्वर ने अपनी उदारता द्वारा न्याय एव प्रजा पालन के गुणो से सुशोभित किया। उन्हे न्यायकारिता एव दान पुण्य के राजसिंहासन पर आरूढ करके उनकी विश्व विजय करने वाली पताकाओ को धरती की छाती पर उड़ाया। उन्होने अपना उत्कृष्ट ध्यान आवश्यकता ग्रस्त लोगो की इच्छाओ की पूर्ति की ओर आकृष्ट किया और निराशा की घाटी में मारे मारे फिरने वालो को अपनी प्रतिरक्षा की छाया में इस आशय से पहुँचाया कि वे अत्याचार के सूर्य के कारण असफल न रहें। उन्होने अपनी उत्कृष्ट बुद्धि से शरीअत के स्तम्भो की पुष्टि हेतु घोर प्रयत्न करके धर्म की रक्षा की आवाज को दूर दूर तक पहुँचा दिया। अपनी महान् निर्णय-शक्ति से गज्व[३] एव जिहाद[४] की पताकायें उड़ाकर कुफ्र वालो[५] एव शत्रुओ का समूलोच्छेदन कर दिया।

मसनवी

'वह यशस्वी बादशाह धन्य है,
जिससे शक्ति प्राप्त करे इस्लाम धर्म।
न्याय की पताका जब वह बलन्द करता है,
वह समस्त दीन दुखिया की सहायता करता है।'

हुमायू की प्रशसा

इस प्रशसनीय भभू[६] एव उत्कृष्ट गरोह[६] मे वह भाग्यशाली, जो न्याय में सबसे आगे बढ (७) गया है और गज्व एव जिहाद[७] की समर भूमि मे प्रयत्न हेतु कटिबद्ध है तथा रण क्षेत्र में जिसने तेज़ तलवारद्वारा शत्रुओ के शरीर में दरारें डाल दी है, (आजकल) का पादशाह है। उसके

१ कुरान शरीफ से उद्धृत।
२ अधिकार की लगाम।
३ हजरत मुहम्मद के समय के युद्ध जिनमें वे स्वय भाग लेते थे, बाद में मुसलमान बादशाहों के सभी युद्धों को गज्व कहा जाने लगा।
४ जिहाद का अर्थ संघर्ष है। इस्लाम की प्रतिरक्षा एव प्रचार के लिये जो युद्ध होता था वह जिहाद कहा जाता था। बाद में मुसलमान बादशाहों की समस्त लड़ाइयों को जिहाद कहा जाने लगा।
५ काफ़िरों।
६ मानव।
७ इस्लाम की प्रतिरक्षा के लिये युद्ध।

समान पादशाह उस समय से जबसे "मैं जमीन पर अपना खलीफा बनाऊँगा[१]" की आवाज उत्कृष्ट जगत् के संतो के कानो मे पहुँची[२], वृद्ध आकाश[३] के नेत्रो ने जहाँबानी[४] के सिंहासन पर राज्यों का ऐसा विजय करने वाला नहीं देखा। जबसे 'हमने जमीन पर तुम्हे उत्तराधिकारी बनाया'[१] की हृदय-ग्राही आवाज इस ससार के निवासियो को प्राप्त हुई उस समय से लेकर आज तक किसी प्राणी के कानो ने यह न सुना होगा कि उनके समान कोई पादशाह तथा राज्य विजय करने वाला रहा होगा।[५]

शेर

'खिलाफत के राज-सिंहासन पर कभी भी,
न हुआ होगा उसके समान कोई जगत की रक्षा करने वाला।'

माता एव पिता दोनों की ओर से सम्मानित पूर्वजो तथा प्रख्यात वंश को देखते हुए, उनकी श्रेष्ठता समस्त सुल्तानों पर बिना किसी सन्देह के प्रमाणित है। उनके विस्तृत राज्य, लम्बी (८) चौड़ी विलायत, न्याय एव उपकार की प्रसिद्धि, दान-पुण्य की अधिकता तथा आदर-सम्मान सूर्य से भी अधिक श्रेष्ठ है।

कतआ[६]

'तेरे महत्व का स्थान कदापि नही देख सकता,
आकाश के नेत्रो को, यदि जरका[७] का अजन लगा हो।
तेरी श्रेणी के बराबर अन्य लोगो की श्रेणी कैसे हो सकती है,
कारण कि कल्पना उस आकाश को जगल समझती है।'

वे इतने महान् न्यायकारी है कि तुर्किस्तान के सीमान्त से हिन्दुस्तान की अन्तिम सीमा तक के वे लोग जो युग के अन्याय के सूर्य के कारण जल-भुन चुके हैं, उन्हे भी उनके उपकार की अनन्त तक रहने वाली छाया के अधीन शान्ति प्राप्त होती है। काल-चक्र द्वारा पीडित ईरान, आजर-बाईजान, काबुल एव जाबुलिस्तान (तक के निवासी) उनके अनन्त तक स्थायी रहने वाले राज्य में शरण प्राप्त करते हैं। उनके कठोर दंड की लू से उद्दड विद्रोहियों ने अपने पाँव किसी कोने में छिपा लिए है और वे उनके आतक की आँधी से बेत की पत्ती के समान काँपते रहते हैं। उनके कोप की अग्नि के भय से, फिरऔन[८] रूपी अभिमानी मोम के समान नरम और पिघल गए हैं।

१ कुरान शरीफ से उद्धृत।
२ अर्थात् उस समय से जबसे मनुष्य का ईश्वर के खलीफा (उत्तराधिकारी) के रूप में सृजन हुआ।
३ आकाश को धरती से प्राचीन मानते हुए उसे वृद्ध कहा जाता था।
४ राज्य-व्यवस्था।
५ ऊपर के वाक्यों का अर्थ है कि मानव की रचना के समय से लेकर इस समय तक हुमायूँ के समान कोई बादशाह नहीं हो सका है।
६ एक प्रकार की नज्म जिसमें ग़ज़ल के समान काफ़िये की पाबंदी होती है और जिसमें एक ही बात कही जाती है।
७ एक तेज दृष्टि वाली स्त्री जो तीन दिन की यात्रा तक की दूरी की चीज देख सकती थी।
८ ऐसे मिस्र का बादशाह जो मूसा (मोजेज) का समकालीन एवं अत्याचार तथा निष्ठुरता की मूर्ति माना जाता था।

उनके न्याय के सरक्षण में मृग, चीते के समीप शान्तिपूर्वक सोते रहते हैं और मछलिया, अजगरो के पास आराम करती हैं। कबूतर, बाजा के मित्र बने रहते हैं और गौरय्या, गरुड के पास चहचहाती रहती है।

मसनवी

(९) 'उसके न्याय के अधीन, जगल मे मृग,
सिंह के साथ साथ चलता फिरता है।
जल-पक्षी, बहरी[१] से अपने रहस्य बताते हैं,
कबूतर अपना हाल बाज मे कहता है।
यदि कोई अधिकारी अत्याचार की इच्छा करता है,
तो वह प्रजा के हाथ से तमाचा खाता है।'

सिकन्दर सरीखे गौरव प्राप्त उस बादशाह की पताका का चन्द्रमा 'प्रज्वलित नक्षत्र, एव आशीष प्राप्त वृक्ष से चमका[२], ' नामक आयत के अनुसार जिस प्रदेश पर अपनी छाया डालता है तो अज्ञानता एव निष्ठुरता के अधकार को ज्ञान एव पथ प्रदर्शन के प्रकाश में परिवर्तित कर देता है। उनकी विजयी तलवार के पृष्ठ 'उसकी विद्युत् की स्पष्ट चमक आँखो को चका चौध कर देती है'[३] (नामक आयत के अनुसार) जब प्रतिकार के मियान से निकलत हैं तो अत्याचार एव दुष्टता की अधी बुनियादो का समूलोच्छेदन हो जाता है। उनके राज्य का डका, राज्य एव धर्म के शत्रुओं के कानों मे विनाश का सूर[४] फूँक देता है। उनके उपकार का मन्द समीर, धर्म एव राज्य के सहायको के मस्तिष्क को सुगन्धित बना देता है और उनके घोडो के खुर की धूल आकाश को प्रज्वलित करने वालो के नेत्रो में अजन का काम देती है। उनका आकाश स्पर्शी चत्र, सूर्य एव चन्द्रमा के मुख को उद्भासित करता है। उनके बुराक[५] रूपी घोडे की नालें उन छल्लो के समान हैं जिन्हे जमशेद[६] अपने कानो मे पहनता था और उनके उच्च साहस के राजप्रासाद का शम्सा[७], सूर्य के
(१०) प्रकाश को धुधला बनाता है। उनकी कृपा का मन्द समीर, बहार के शीतल पवन के समान, प्रताप एव सफलता की वाटिका मे प्रफुल्लता उत्पन्न करता है। उनकी कृपाओ की

१ बाज के समान एक पक्षी जो अन्य छोटे-छोटे पक्षियों का शिकार करता है।
२ कुरान शरीफ की आयत।
३ कुरान शरीफ का वाक्य।
४ वह तुरही जो कयामत के दिन इस्राफील नामक फिरिश्ता फूंकेगा।
५ घोडे के समान वह पशु जिसके विषय में कहा जाता है कि हजरत मुहम्मद उसपर बैठ कर मेराज में गये थे।
६ जमशेद अथवा जम ईरान का पौराणिक बादशाह जो पेशदादी वश का चौथा बादशाह था। कहा जाता है कि उसने सूर्य गणनानुसार सम्वत् चलाया। उसके आदेशानुसार सूर्य के मेषराशि में प्रविष्ट होने पर भव्य समारोह का आयोजन किया जाता था। तूरान के बादशाह जुहाक ने आक्रमण करके उसे भगा दिया। बाद में वह बन्दी बना लिया गया और उसे आरे से चिरवा दिया गया। कहा जाता है कि उसका राज्य ८०० वर्ष पूर्ण था। उसके आविष्कार प्रसिद्ध हैं। कहा जाता है कि उसने एक ऐसे प्याले का आविष्कार किया था जिसमे ससार की सब बातों का पता चल जाता था।
७ वह आकृति जो महलों एव ऊँचे ऊँचे भवनों की चोटी पर बनी होती है।

सुगन्धि, कस्तूरी के समान आशाओ एव प्रतिरक्षा के मस्तिष्क को सुगंधित करती है। आध्यात्मिक रहस्यों के चित्र, उनके परोपकारी हृदय के दर्पण में प्रतिबिम्बित है। गूढ समस्याओं के अक्षर, सूर्य के समान चमकते हुए हृदय के पृष्ठो पर लिखे हुए है।

मसनवी

'उसका हृदय आदि काल के रहस्यों को प्रकट करता है,
उसका मुख सौभाग्य के चिह्नो को जाहिर करता है।
सौभाग्य का प्रकाश उसके ललाट से प्रकट होता है,
विजय एव सफलता उसकी सेवा में उपस्थित रहती है।
उसके दरबार मे समस्त सम्मानित लोग पहुँचते रहते है,
उसके मार्ग की धूल प्रत्येक नेत्र का अजन है।'

उनका गौरव, सुलेमान[1] के समान है और उनका उच्च साहस सर्वदा धर्म के स्तम्भ को दृढ बनाता रहता है और उत्कृष्ट शरीअत के नियमो को पुष्टि देना एव हजरत मुहम्मद की सुन्नत के नियमो को उन्नत करता और नवीन कुत्सित[2] नियमों का खडन करता रहता है। उनका बहुमूल्य समय एव उनकी शुभ घडियाँ, सम्मानित मशायख[3] की दशा सुधारने, उच्च योगी के सैयिदों की समस्याओ के समाधान करने, प्रतिष्ठित आलिमो को प्रोत्साहन देने तथा इस्लाम के गाजियो के कार्यों को पुष्टि देने में व्यतीत होती है। उनके उत्कृष्ट अन्तःकरण में दैवी प्रेरणा का प्रकाश पहुँचता रहता है और उनके पवित्र स्वभाव को ईश्वर की अपार कृपायें प्राप्त होती रहती है। (११) उनकी आलोचनात्मक प्रकृति गुणो की ज्ञाता और उनकी महान् सूझ बूझ, गूढ समस्याओं से परिचित है।

मसनवी

'वह न्याय का आकाश एव प्रतिभा की ऊँचाई का सूर्य है,
सृष्टि के समुद्र में बडा बहुमूल्य मोती।
उसका अन्तःकरण ईश्वर के पथ प्रदर्शन की किरणो को प्राप्त करता रहता है,
उसकी जिह्वा तथ्य के रहस्यो को प्रकट करती है।'

उनकी निरन्तर कृपाओं एव इनाम इकराम से लोगो की आशाओ के पौधे पूरी तरह लदे है और उनके हाथ के बादलो की वर्षा से, जो मोती बरसाती है, प्रतिभा-सम्पन्न एव कुशल लोगो की आकांक्षाओ के उद्यान हरे भरे हैं।

मसनवी

'उसकी हथेली बादल के समान मोती बरसाती है,
किन्तु बहार के बादल उसकी हथेली के समान उदार नहीं है।

१ सुलेमान बिन दाऊद एक प्रतापी पैगम्बर हुए है। उनके विषय में प्रसिद्ध है कि वे हवा पर भी राज्य करते थे। सालोमन।
२ 'बिदअते सय्यिआ'।
३ 'मशायखे बुजुर्गवार'।

उसके हाथो की उदारता सर्वदा स्थायी रहेगी,
कारण कि बादल वर्षा की इतनी बूँदें नही बरसा सकता।'

वे बडे ही महान् एव न्यायकारी सुल्तान, धर्म तथा सौभाग्य का दृढतम स्तम्भ हैं। उन्होने न्याय के अधिनियमो को दृढ बना दिया है और वे सर्वोत्कृष्ट शासक के कर्त्तव्यो का पूर्ण रूप से पालन करते हैं। वे ऐसे (दानी) जमशेद हैं जो समस्त ससार को दान में लुटा दें। वे ऐसे रुस्तम हैं जिनका घोडा आकाश है। वे राज-मुकुट को शोभा प्रदान करने वाले एव दैवी कृपाओ द्वारा पोषित हैं। वे सिंह सरीखे ऐश्वर्य वाले अर्दशेर[१] और ससार भर में न्याय प्रसारित करने वाले नूशीरवाँ[२], साहब किरान के वश में सबसे अधिक सम्मानित, राज्यो को विजय करने वाले वश के चुने हुए व्यक्ति, अकासेरा[३] की शक्ति को छिन्न भिन्न करने वाले, कयासरा[४] के नेत्रो का प्रकाश, फरीदूं[५] के समान दृढ, सिकन्दर सरीखे सकल्प वाले, कुबाद[६] के समान वीर, परवेज़[७] के समान दरबार आयोजित करने वाले, उत्कृष्ट लोगो के प्रबन्धक, इस्लाम के स्तम्भो को शक्ति प्रदान करने वाले, सल्तनत और ससार एव धर्म को शोभा प्रदान करने वाले हैं।

मुहम्मद हुमायूं बादशाह गाजी[८]

(१२) ईश्वर उनके राज्य के सिंहासन को जो चारो आकाश तक फैला हुआ है, और उनके राज्य को, जिसमें सातो इक्लीमें सम्मिलित हैं, दृढता प्रदान करे।

१ अर्दशेर बाबका, बाबक का पुत्र, सासानी वश का प्रथम बादशाह था। बाबक एक साधारण अधिकारी था किन्तु उसने फारस पर अधिकार जमा लिया। अर्दशेर ने अपने पिता का उत्तराधिकारी होने के उपरान्त पूरे एराक़ पर अधिकार जमा लिया। उसने २१८ ई० तक बडी शान से राज्य किया।

२ नूशीरवा, ईरान के बादशाह कुबाद का पुत्र था। कुबाद की मृत्यु के उपरान्त ५३१ ई० में वह उसके स्थान पर बादशाह हुआ। वह अपनी न्यायकारिता के लिये बडा प्रसिद्ध है। उसकी मृत्यु ५७९ ई० में हुई। हजरत मुहम्मद जिनका जन्म ५७१ ई० में हुआ, इस बात पर गर्व किया करते थे कि उस समय ऐसा न्यायकारी बादशाह राज्य करता था।

३ किसरा का बहुवचन। खुसरो परवेज को किसरा कहते थे। वह ईरान के सासानी वश का बडा प्रतापी बादशाह हुआ है। वह ५९१ ई० में सिंहासनारूढ हुआ और ६२८ ई० तक राज्य करता रहा। बाद में किसरा शब्द का प्रयोग सभी ईरानी बादशाहों के लिये किया जाने लगा।

४ कैसर का बहुवचन। बैज़टाइन शाहशाहों को अरबी, फारसी इतिहासों में कैसर लिखा जाता था।

५ फ़रीदूं अस्तीन का पुत्र, ईरान का प्रसिद्ध बादशाह जो जुहाक़ नामक एक अत्याचारी बादशाह की हत्या करके सिंहासनारूढ हुआ। वह अपने न्याय के लिये बडा प्रसिद्ध था।

६ कुबाद -नूशीरवा का पिता जिसने ४८८ ई० से ५३१ ई० तक राज्य किया।

७ खुसरो परवेज़।

८ जमे जहान बख्श, रुस्तमे आस्मान रख्श, ज़ेबिन्दये अफसरे शाही, पर्वरदये एनायते इलाही, अर्दशेरे शेर सौलत, नूशीरवाने आलम मादेलत, सुलाल्ये दूदमाने साहब किरानी, नकावये खान्दाने क्विश्वर सितानी, कासिरे शौकते अकासेरा, नूरे बासिरये क्यासेरा, फ़रीद्‌ हज़्म, सिकन्दर अज़्म, क़ुबाद रज़्म, परवेज़ बज़्म, नाज़िमे मनाज़िमें सर अफ़राज़ी, मुक़व्विये अरकाने मिल्लते हिजाज़ी, मुइज्जुस्सल्तनत वद्दुनिया वद्दीन।
मुहम्मद हुमायूं बादशाह ग़ाज़ी।

मसनवी

'हे ईश्वर। जब तक सूर्य चमकता रहे,
पूर्व से पश्चिम की ओर चलता रहे।
पादशाह के अन्त करण के प्रकाश से,
चन्द्रमा से मछली[१] तक उद्भासित रहे।
उसकी हथेली नैसा[२] के बादल के समान रहे,
प्रतिभा सम्पन्न लोगो पर मोतियो की वर्षा करती रहे।
उसके राज्य की छाया स्थायी रहे,
आकाश सर्वदा उसका दास रहे।

जब यह फकीर दास एव तुच्छ कण (के समान) गयासुद्दीन बिन हुमामुद्दीन, जो ख्वन्द मीर के नाम से प्रसिद्ध है —

मिसरा

'हे ईश्वर! उसके मार्ग को सरल बना,'

इस खिलाफत की प्रतिरक्षा करने वाले पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ, और शाही कृपा का प्रकाश आकांक्षाओ एव विश्वास के आकाश से, इस टूटे हुए पख वाले (व्यक्ति) की उन्नति की ओर आकृष्ट हुआ तो उसके मस्तिष्क में यह लालसा एव हृदय में यह विचार उत्पन्न हुए कि वह युग के पृष्ठो एव रात और दिन के पन्नो पर हज़रत (जहाँबानी) की कीर्तियो एव (१३) कारनामो, तथा उनकी बुद्धि के आविष्कारो एव आलोचनात्मक विवेक की ईजादो का थोडा सा उल्लेख करे कारण कि उत्कृष्ट सुल्तानो की चर्चा दवात के अधकारमय झरने एव मसी के अमृत जल से स्थायित्व प्राप्त करती है और विद्वान् लेखको के लेख तथा उनके उत्कृष्ट नाम, महान् बादशाहो की प्रशसा के आशीर्वाद से युग के पृष्ठो पर स्थायित्व हासिल करते है, उदाहरणार्थ (१५) उतबी[३] एव उनसुरी[४] के पृष्ठ महमूद[५] की प्रशसा और मुइज्ज़ी[६] एव

१ वह पौराणिक मछली जिसे अरब बहमूत कहते है और जिस पर एक लियूनाम (बैल) और उसके ऊपर पृथ्वी बताई जाती है।

२ फर्वरदीन (वैशाख) की वर्षा जिसके जल के विषय में प्रसिद्ध है कि उसकी प्रत्येक बूद सीप में मोती बन जाती है।

३ अबू नस्र मुहम्मद बिन अब्दुल जब्बार अल-उतबी, सुल्तान महमूद ग़ज़नवी के दरबार का बडा प्रसिद्ध विद्वान् हुआ है। उसने तारीख़े यमीनी नामक सुप्रसिद्ध ग्रथ की रचना की। उसकी मृत्यु ४२७ हि०(१०३५-३६ ई०) में हुई।

४ अबुल क़ासिम उनसुरी, बल्ख निवासी था एव सुल्तान महमूद ग़ज़नवी के दरबार का बहुत बडा विद्वान था। उसने महमूद की विजयों के सम्बन्ध में एक काव्य की रचना की। उसकी मृत्यु ४३१ हि० (१०४० ई०) में हुई।

५ सुल्तान महमूद ग़ज़नवी, सुल्तान नासिरुद्दीन सुबुक्तिगीन का पुत्र था। उसका जन्म ६ मुहर्रम ३५७ हि० (१५ दिसम्बर ९६७ ई०) को हुआ। हि० सम्वत् के हिसाब से ३३ वर्ष के राज्य के उपरान्त २३ रबी उस्सानी ४२१ हि० (३० अप्रैल १०३० ई०) को मृत्यु को प्राप्त हुआ। वह अपने हिदुस्तान के आक्रमणों के लिये बडा प्रसिद्ध है।

६ अमीर अली मुइज्ज़ी समरकन्द का एक प्रसिद्ध कवि जिसने सुल्तान मलिक शाह तथा सुल्तान सजर सलजूकी के अधीन सेवा की। उसकी मृत्यु ५४२ हि० (११४७ ई०) में हुई।

अनवरी[1] के कसीदे सजर[2] के यशस्वी कारनामों के कारण प्रसिद्ध हुए —

मसनवी

'कौन याद करता हकीम अनवरी को,
यदि उसने सजर तथा सजर के कारनामों की प्रशंसा न की होती।
उतबी ने महमूद की प्रशंसा करके,
अपने उद्देश्य की पूर्ति कर ली।
(१७) शरफ[3] को संसार में इस कारण यश प्राप्त हुआ,
कि उसने तीमूर गूरगान की प्रशंसा लिखी।'[4]

किन्तु अपनी योग्यता की कमी एवं क्षमता के अभाव के कारण, मैं इस प्रतिष्ठित पादशाह के समस्त कारनामों का सविस्तार उल्लेख नहीं कर सकता, और अपनी दो जबानों वाले कलम को इस सफल पादशाह के गुण-गान की अनुमति नहीं दे सकता। किन्तु इसके बावजूद यह आकांक्षा सर्वदा मेरे निष्ठावान् हृदय में रही और यह इच्छा कभी भी मेरे चिन्तित मस्तिष्क से क्षण भर को न निकल सकी।

कानूने हुमायूनी की रचना का आदेश

इसी बीच में एक दैवी प्रकाश से परिपूर्ण रात्रि[5] में जब इस तुच्छ को ग्वालियार के किले में स्वर्ग रूपी दरबार में उपस्थित होने की अनुमति प्राप्त हुई और दान-पुण्य के आकाश के उस सूर्य की दानी अंगुलियों ने अनन्त तक रहने वाली कृपाओं के द्वार उनकी आशाओं के लिए खोले तो उस सिकन्दर सरीखे सुल्तानों के स्वामी की दैवी प्रेरणा प्राप्त वाणी से यह सुखद वाक्य निकले
(१८) कि, "यह उचित ज्ञात होता है कि प्रतापी मस्तिष्क के आविष्कारों एवं सूर्य सरीखे प्रकाश वाले हृदय की ईजादों को क्रम से लिपि-बद्ध कर दिया जाय ताकि दिन एवं महीने उन कार्यों के प्रकाश से सर्वदा सुख को बढ़ाते और निकट तथा दूर वाले यश के पृष्ठों को प्रज्वलित करते रहें।" अत यह तुच्छ दास, जो दीर्घ काल से इस अनुल्लंघनीय आदेश की प्रतीक्षा में अपना समय व्यतीत कर रहा था, इस रोचक विषय के लिखने के लिए कटिबद्ध हो गया, और उन अद्वितीय आविष्कारों एवं ईजादों का सविस्तार उल्लेख करने के लिए विद्वत्ता-पूर्ण लेख की रचना प्रारम्भ कर दी। ईश्वर की

१ अनवरी के नाम के विषय में विद्वानों में मतभेद है। कुछ का मत है कि उसका नाम औहदुद्दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल अनवरी और कुछ का मत है कि उसका नाम औहदुद्दीन अली बिन इसहाक था। वह सुल्तान संजर का बहुत बड़ा विश्वास पात्र था। कहा जाता है कि वह बहुत बड़ा ज्योतिषी भी था। उसकी मृत्यु की तिथि में भी बड़ा मतभेद है। कुछ का मत है कि उसकी मृत्यु ५९६ हि० (११९९-१२०० ई०), कुछ का मत है ५८७ हि० (११९१ ई०) और कुछ का मत है कि ५५२ हि० (११५६-५७ ई०) में हुई।

२ मुइज्जुद्दीन अबुल हारिस संजर, सल्जूक वंश का प्रसिद्ध बादशाह हुआ है। वह सुल्तान मलिक शाह सल्जूकी का पुत्र था। उसने ५११-५५२ हि० (१११७-११५७ ई०) तक राज्य किया।

३ शरफुद्दीन अली यज्दी, जफ़र नामा का (जो तीमूर का इतिहास है) लेखक।

४ पृष्ठ १४ एवं १६ पर नोट है।

५ 'शबे कद्रुल मनशूर'।

महान् अनुकम्पा से यह आशा है कि उत्कृष्ट दरबारी इन लाभप्रद पृष्ठों में जो कुछ लिखा है उसे स्वीकार कर लेंगे और इन पांडित्यपूर्ण खडो की पंक्तियों को अपनी स्वीकृति की दृष्टि द्वारा सम्मानित करके इस टूटी लेखनी की भूलों की ओर ध्यान न देंगे।

मसनवी

'हे ईश्वर! जब तेरी महान् अनुकम्पा के कारण,
उन कृपाओं के कारण जिनकी कोई सीमा नहीं।
कृपापूर्वक (तूने) मुझे रचना की योग्यता प्रदान की,
मेरी अधिकाश अवस्था लिखने में व्यतीत हो गई।
चाहे मैं यात्री रहा और चाहे मुजाविर[1],
मेरी लेखनी की नोक से लेख निकलते रहे।
मेरी रचनाओं को स्वीकृति प्रदान कर,
विद्वानों एव लेखों को समझने वालों की दृष्टि में।
तू अपनी अनुकम्पा के द्वार मेरे ऊपर खोल दे,
लेखों की भूल क्षमा कर।'

कस्तूरी रूपी लेखनी का उस दया एवं उपकार के सूर्य की वाटिका में इत्र बखेरना

(१९) दयालु, सच्चे एव भूल न करने वाले ईश्वर ने कहा "पृथ्वी ईश्वर की है, वह उसे अपने सेवकों में से ऐसों को उसका उत्तराधिकारी बनाता है, जिन्हे वह चाहता है, परहेजगार लोगों का अन्त (सर्वोत्कृष्ट होता है)।"[2]

मसनवी

'वह ईश्वर जिसने ससार का राज्य उत्पन्न किया,
आकाश का सिर उसके आदेश के तौक[3] के भीतर है।
जब वह चाहता है कि ससार आबाद हो,
ससार में बिदअत[4] का कोई चिह्न नहीं रहता।
वह शासन-प्रबन्ध का मुकुट ऐसे सिर पर रखता है,
जिसके समान न्याय में कोई अन्य नहीं होता।
जब वह ऐश्वर्य एव वैभव के सिंहासन पर आरूढ होता है
अत्याचार करने वालों को वह दंड देता है।

१ यात्रा न करता हुआ।
२ कुरान शरीफ से उद्धृत।
३ तौक़—लोहे की गोल हँसली जो कैदियों के गले में डाली जाती थी।
४ इस्लाम में शरीअत के विरुद्ध नियमों का आविष्कार।

में उस उच्च वंश वाले के नाम का खुत्बा पढ़ा गया और बधाई एवं शुभ-कामनाओं का शोर सभा वालों के हृदय से निकल कर आकाश के पवित्र कंगूरों के आगे निकल गया।

शेर

'खुत्बे की आवाज चन्द्रमा तक पहुँच गई,
शाहंशाह के नाम पर धन लुटाया गया।'

संसार को शरण प्रदान करने वाले बादशाह नमाज़ पढ़कर तथा उदार परमेश्वर के दरबार की चौखट पर कृतज्ञता प्रकट करके जामा मस्जिद के बाहर निकले और सौभाग्य एवं सफलता के तख़्त, एवं राज्य तथा देशों की विजय के सिंहासन को अपने चरणों के आशीर्वाद से सम्मानित किया। प्रजा को न्याय एवं इंसाफ़ का निमंत्रण दिया और उत्कृष्ट शरीअत, एवं इस्लाम की समस्याओं के समाधान के विषय में गम्भीर शब्द अपनी दैवी प्रेरणा प्राप्त जिह्वा से कहे। प्रतिष्ठा के राजसिंहासन को उनके सुलेमान रूपी व्यक्तित्व से शोभा प्राप्त हुई। सफलता के मुकुट को बादशाह के सिर पर पहुँच कर उत्कर्ष प्राप्त हुआ। उनके शुभ नाम के आशीर्वाद से सिक्कों को अधिक शोभा प्राप्त हुई। उनकी सफल उपाधि के चिह्नों ने सिक्कों के मुख पर प्रसन्नता के द्वार खोल दिए।

रुबाई

'हे बादशाह! मुकुट को तेरे सिर पर पहुँचने के कारण शोभा प्राप्त हुई,
तेरे चरणों से हे बादशाह! राज सिंहासन को उन्नति प्राप्त हुई।
हे बादशाह! तेरे नाम से सोने का जब शृंगार हुआ,
तो वह सभी वस्तुओं से, हे बादशाह! बहुमूल्य हो गया।'

(२३) इस सुखद समाचार के मंद समीर से हृदय की कलियाँ उसी प्रकार खिल उठीं जिस प्रकार प्रातःकाल के मंद पवन से ताज़ी कलियाँ खिल जाती हैं। इस खुशख़बरी की प्राप्ति से लोगों के जीवन को बहार के समान ताज़गी प्राप्त हो गई। चक्कर लगाने वाले आकाश ने छोटे बड़े सभी को कष्ट पहुँचाना समाप्त कर दिया। महान् कवि, मौलाना शिहाबुद्दीन अहमद मुअम्माई[1], कहते हैं :—

शेर

'कौन सा ऐसा हृदय है जो इस सुखद समाचार से प्रसन्न न हुआ,
कि प्राणों के बादशाह को संसार प्रदान हुआ।
एक फ़िरिश्ता जो परी के समान सुन्दर एवं हूर रूपी था,
प्रकट हुआ और मानव जाति का बादशाह हो गया।

१ वह मुअम्मे (कविता में पहेलियों) की रचना में अद्वितीय समझा जाता था। बाबर उसका बड़ा आदर सम्मान करता था। उसकी मृत्यु ९४२ हि० (१५३५-३६ ई०) में हुई। किसी ने "शिहाबुल्मुअम्मा" के अक्षरों से तारीख़ निकाली। (बदायूनी: मुन्तख़बुत्तवारीख़ भाग २, पृ० ३४२-३४३)।

(२४) गुण-ग्राहिता का केन्द्र हुमायूँ नामक बादशाह,
जिसकी आज्ञाकारिता के बोझ से आकाश का शरीर झुक गया।
संसार वालों के लिए क़यामत तक यही सम्मान पर्याप्त है,
कि तुझ जैसा उत्कृष्ट व्यक्ति संसार का बादशाह हुआ।'

जब सबीके गौरव वाले बादशाह ने अपने शुभ सिंहासनारोहण के प्रारम्भ में अपनी दानशीलता के आदेश से सामान्य रूप से लोगों को इनाम प्रदान किये। सर्वसाधारण एवं विशेष व्यक्तियों की आशाओं का पूरा किया। अपने शासन प्रबन्ध एवं राज्य-व्यवस्था के प्रकाश से हिन्दुस्तान के प्रदेशों को एरम[1] के उद्यानों के समान समृद्ध कर दिया। "लोगों को उनकी श्रेणी के अनुसार पद प्राप्त होने चाहिए" के सिद्धान्तानुसार उन्होंने आचरण किया और सर्वसाधारण के समूहों का उनकी श्रेणी के अनुसार पद एवं आश्रय प्रदान किया। बहराम[2] रूपी अमीरों को, जिन-पर राज्य-व्यवस्था अवलम्बित है और जिनकी तलवार एवं जिनके बरछा के बिना राज्य विजय नहीं हो सकते, अत्यधिक दान-पुण्य द्वारा सम्मानित किया। बुध ग्रह के समान बुद्धिमान् वजीरों को, जिनके राज्य को शोभा प्रदान करने वाले परामर्श एवं दूरदर्शिता तथा प्रतिभा के बिना धन-(२५) सम्पत्ति की प्राप्ति एवं ऐश्वर्य तथा गौरव के साधना का हासिल करना सम्भव नहीं, अत्यधिक सम्मानित करके उनकी श्रेणी में वृद्धि कर दी। उत्कृष्ट सैयिदों एवं सम्मानित मशायख़[3] को, जो विलायत[4] के उद्यान के फल एवं पथ-प्रदर्शन के आकाश के नक्षत्र हैं, सम्मानित करके दान-पुण्य एवं आदर-सम्मान के द्वार उनके लिये खुलवा दिए। उन्होंने उत्कृष्ट आलिमों एवं सम्मानित विद्वानों को, जो वास्तव में मारेफ़त[5] के शयनागार के दीपक एवं शिक्षा के उद्यान के द्वारों की कुंजियाँ हैं, कृपा एवं दया द्वारा लाभान्वित करके, शिक्षा-दीक्षा का आदेश दे दिया। इस्लाम के क़ाज़ियों एवं मुफ़्तियों को जिनके परामर्श पर शरीअत एवं इस्लाम की समस्याओं का प्रचार अवलम्बित है, प्रोत्साहन तथा आश्रय प्रदान किया और उस गुणवान् समूह की प्रार्थनाओं को स्वीकार कर, उनकी इच्छा की आस्तीन में स्वीकृति का धन रख दिया[6]। उन्होंने गद्य एवं पद्य की रचना करने वालों को नाना प्रकार से प्रोत्साहन एवं इनाम-इकराम प्रदान किए। उनकी रचनायें याक़ूत[7] एवं (२६) मूँगे के समान हैं जो "उन शुद्ध लोगों के जो मंडप में हैं" के मुकुट के निर्माण के लिए

१ कहा जाता है कि अरब (हज़रमौत) की एक प्राचीन कौम के एक प्रतापी बादशाह ने स्वर्ग की विशेषों के विषय में ज्ञान प्राप्त करके स्वयं एक स्वर्ग का निर्माण कराया जिसे एरम कहते हैं किन्तु उसमें प्रविष्ट होने के पूर्व ही उसकी मृत्यु हो गई।

२ सासानी वंश का १४वां बादशाह जो ईरान के इतिहास में बहराम गोर के नाम से प्रसिद्ध है। वह यज़्दजर्द प्रथम का पुत्र था जो ४२० ई० में अपने पिता के उपरान्त बादशाह हुआ। गोर, जङ्गली गधे को कहते हैं जिसके शिकार से बहराम को बड़ी रुचि थी और उसके शिकार के समय उसकी मृत्यु हुई। उसे कविता करने का भी शौक़ था। कहा जाता है कि उसने हिन्दुस्तान की भी यात्रा की। उसकी मृत्यु ४३८ ई० में हुई।

३ सूफ़ी-सन्त।

४ सत-लोक।

५ दैवी ज्ञान।

६ उन्हें धन सम्पत्ति प्रदान की।

७ एक प्रकार का रत्न, पुखराज।

सजाये गए हैं, और जिनके जवाहरात "मोतियों के समान पूर्ण रूप से सुरक्षित हैं" और जो "सर्वदा ताज़ा रहने वाले युवकों" के कान एवं गले को शोभा प्रदान करते हैं, सरीखे विभिन्न समूहों को दीनार एवं दिरहम प्रदान करके संतुष्ट किया।

उन्होंने ग्रामीणों एवं कृषकों को, जिनके परिश्रम एवं प्रयत्न पर संसार का शासन प्रबन्ध एवं अस्तित्व निर्भर है, अपनी दानशीलता की छाया से संतुष्ट एवं प्रसन्न कर दिया। अपनी कृपा एवं दया के बादल की बूंदों से उस समूह के आशा के वृक्ष को फलदार बना दिया और उनके हृदय के मैदान में कृपा एवं दया के बीज बो दिए। व्यापारियों को, जो समुद्र पार एवं अन्य देशों में इच्छा के समुद्र एवं कष्ट के जंगल तथा अजम[1] एवं अरब में कष्ट भोगते और यात्रा करते रहते हैं, सम्मानित करके उचित रूप से प्रोत्साहन प्रदान किया। तमगा एवं बाज[2] में से कुछ क्षमा करके प्रबन्ध की समस्याओं तथा परदेसियों के प्रति कृपा की शर्तों को पूरा किया। शिल्पकारों एवं बाज़ारियों पर, जो नाना प्रकार के कष्ट भोगते रहते हैं और विभिन्न प्रकार के बोझ तथा व्यय का भार उठाते रहते (२७) हैं, जितना वे अदा कर सकते थे, उतना कर लगा कर, समस्त बातों में प्रजा के प्रति आश्रय की पताका को फहराया।

मसनवी

'उपकार द्वारा उसने लोगों की सहायता की,
राज्य को अशान्ति से मुक्त कर दिया।
क्योंकि वह पीड़ितों को सर्वदा आश्रय प्रदान किया करता है,
अतः लोग नूशीरवाँ को भूल गए।'

आशा है कि परमेश्वर की महान् अनुकम्पा एवं इन यशस्वी गुणों एवं प्रशंसनीय कारनामों के कारण सल्तनत एवं राजसत्ता के आकाश के इस सूर्य का प्रकाश कभी कम न होगा अपितु सर्वदा बढ़ता रहेगा। संसार के विभिन्न भागों की गरदनें इस आकाश रूपी राजसिंहासन के पाये के समीप खड़े होने वालों[3] की ओर अधीनता एवं आज्ञाकारिता की रस्सी में बंधी रहेंगी।

शेर

'उसके दिन और रात सर्वदा प्रसन्न तथा शुभ रहें,
उसके गौरव के स्तम्भ आकाश से भी ऊँचे रहें।

सम्मानित अमीर उवैस मुहम्मद[4] ने इस शुभ सिंहासनारोहण के विषय में इन शेरों की रचना की —

१ अरब वाले, अरब के अतिरिक्त संसार के अन्य भाग वालों को अजम कहते थे, विशेष रूप से ईरान एवं तूरान से तात्पर्य है।
२ व्यापारिक कर। तमगा सीमा शुल्क अथवा चुंगी को कहते थे। इसे तमगा इस कारण कहा जाता था कि जिन वस्तुओं पर शुल्क लगाया जाता था, उनपर लकड़ी के ठप्पे से मुहर लगा दी जाती थी। बाबर तथा जहाँगीर ने भी तमग़ा के माफ़ करने का उल्लेख किया है। (**बाबर नामा**, पृ० २३१)।
३ दरबारियों।
४ जलालुद्दीन मुहम्मद उवैस जिसे **अकबर नामा** एवं **मुन्तखबुत्तवारीख** में वैसी लिखा है, हुमायूं के दरबार का एक प्रतिष्ठित अमीर था।

शेर

(२८) 'हे बादशाह[1] ! संसार को शरण प्रदान करने वाले, हे शाह,
शोभा देता है तुझे बादशाही के सिंहासन पर आरूढ़ होना।
तू अपने युग का कुत्ब[2] है, तुझसे यह संसार आबाद है,
अन्यथा यह प्राचीन भवन सर्वदा वीरान होता रहता है।
तुझे धर्म एवं संसार के राज्य के विजय की बधाई है,
बधाई है, तुझे हे संसार के बादशाह! सुलेमान के राजसिंहासन की।
ऐश्वर्य के यह कैसे साधन हैं, कौन सी यह व्यवस्था है,
आश्चर्यजनक है यह राज्य, ऐश्वर्य एवं सुल्तानी अधिनियम।

(२९) वह धर्म के समुद्र का मोती, सौभाग्य के आकाश का सूर्य है,
गौरव की बलन्दी की हुमा, संसार का कुत्ब, पवित्र संसार का प्रकाश,
चन्द्रमा के समान पवित्र जगत् का नेत्र एवं प्रकाश,
उसके हृदयग्राही शरीर का वृक्ष प्रकृति के उद्यान का सुन्दर वृक्ष है।
किस कारण लोगों के नेत्र सहन नहीं कर सकते उसकी दृष्टि को,
प्रकट यदि न हुआ उसके ललाट से ईश्वर का प्रकाश।
संसार की आंखों को चमक प्राप्त हुई उसके सौन्दर्य के सूर्य से,
जिस प्रकार याकूब[3] की आँखों को (चमक प्राप्त हुई) किनआन के चन्द्रमा[4] से।
मैं जो देखता हूँ संसार का अस्तित्व सम्बन्धित उसकी सत्ता से,
हे ईश्वर! उसके पवित्र व्यक्तित्व को संसार में स्थायी रख।'

विद्वानों में चुने हुए, आश्चर्यजनक अमीर, मौलाना शिहाबुद्दीन अहमद मुअम्माई ने इस शुभ सिंहासनारोहण की तारीख हेतु विद्वत्ता पूर्ण क़तआ की रचना की

क़तआ

'बादशाहों के बादशाह ! शाह बाबर जो रखते थे,
२०० दास जमशेद एवं कै[5] के समान।

१ 'बादशाह' तथा 'पादशाह' दोनों ही प्रयुक्त हुये हैं।

२ कुत्ब—पृथ्वी का धुरा। सूफियों की पारिभाषिक शब्दावली के अनुसार ऐसा महान् सन्त जिसके सिपुर्द संसार के किसी बड़े भाग की देख रेख हो। कुत्ब के ऊपर गौस होता है।

३ एक पैग़म्बर, जो हज़रत यूसुफ़ के पिता थे, जैकब।

४ हज़रत यूसुफ़, जिनके वियोग में हज़रत याकूब अंधे हो गये थे किन्तु जिनसे पहुँचने हो उनके नेत्रों को प्रकाश प्राप्त हो गया।

५ कै अथवा कैकाऊस ईरान के कयानी वंश का दूसरा बादशाह तथा कैकुबाद का पुत्र था। वह बड़ा ही महत्वाकांक्षी था किन्तु अपनी अयोग्यता के कारण अपनी किसी भी योजना को कार्य रूप में परिणत न कर सकता था। सुहराब एवं रुस्तम का युद्ध उसी के समय में तथा उसी की अधीनता में हुआ।

उनके विश्राम का स्थान बना सर्वोच्च स्वर्ग,
जब उनकी अवस्था के तूमार[1] को मौत ने लपेट दिया।
मुहम्मद हुमायूं उनके स्थान पर बैठा,
उसका राज्य फैले चीन से रूम और रै तक।
(३०) यदि तारीख पूंछी जाय तो हे हृदय कह,
हुमायूं हुआ उनके राज्य का उत्तराधिकारी।

बुद्धिमान् मौलाना यूसुफी तबीब[2] ने इस उत्तम रुबाई की रचना की

रुबाई

'बाबर, न्यायकारी बादशाह ईश्वर की उपासना करने वाले,
वह शाह हुमायूं जिसने अत्याचार के द्वार बन्द कर दिये।
९३७ हि० (१५३० ई०) में अचानक मृत्यु से,
वह परलोक को चले गये और यह उनके स्थान पर बैठा।'

इन पंक्तियों के लेखक के भी हृदय में उन्हीं दिनों में यह रुबाई आई

रुबाई

'यह बादशाह जिसके ऐश्वर्य से शत्रु का हृदय टुकड़े टुकड़े हो गया,
जिसके सम्मान के सामने सातवाँ आकाश गिरा है।
जब ईश्वर की कृपा ने उसकी सहायता की,
वह ९३७ (हि०) में सिंहासनारूढ़ हुआ।'

(३१) दयालु एवं यशस्वी ईश्वर को धन्य है। हमारे नबी पर जो गुणों एवं सम्मान के स्वामी हैं दरूद हो तथा उनकी सन्तान वालों एवं असहाब[3] पर जो पथ प्रदर्शन एवं प्रताप के आकाश के नक्षत्र हैं।

विद्वता को जन्म देने वाले कलम का सौभाग्य एवं इच्छाओं के सुव्यवस्थापक के आविष्कारों द्वारा सौभाग्य प्राप्त करना

हज़रत मुहम्मद द्वारा फ़ाल

जिन लोगों को नबी के कारनामों का ज्ञान तथा हज़रत मुस्तफ़ा[4] से सम्बन्धित

१ किसी विषय में कागज का लम्बा चौड़ा पुलिन्दा।

२ यूसुफ़ बिन मुहम्मद हरवी का तख़ल्लुस यूसुफ़ी था। वह बाबर तथा हुमायूं दोनों का बहुत बड़ा विश्वास पात्र था। कवि के साथ-साथ वह बड़े उच्चकोटि का चिकित्सक भी था। **जामे उल फ़वायद** एवं **क़सीदा फ़ी हिफ़िज़स्सेहत** नामक रचनायें उसने बाबर को एवं **रियाज़ुल अदविया** नामक रचना हुमायूं को समर्पित की। उसने अपनी कुछ कविताओं में हिन्दी शब्दों का बड़ा अधिक प्रयोग किया है। उसकी मृत्यु ९५० हि० (१५४३-४४ ई०) में हुई।

३ हज़रत मुहम्मद के मित्र एवं सहायक।

४ हज़रत मुहम्मद।

घटनाओं की सूचना है, उन्हें ज्ञात एवं यह बात उन पर प्रकट होगी कि पैगम्बरों में सर्वश्रेष्ठ तथा चुने हुए लोगों के स्वामी, जो उदार दैवी कृपाओं एवं प्रशंसा द्वारा सुशोभित हैं, विभिन्न लोगों के नाम से फाल निकालते रहे हैं और वे बुरे फाल का निंद्य एवं उत्तम फाल को प्रशंसनीय समझते थे[1]। इस कारण ईश्वर की छाया हज़रत बादशाह, जो अपना समस्त समय इस्लाम के पैगम्बर की उत्कृष्ट सुन्नत के पालन में व्यतीत किया करते थे[2], सर्वदा यात्रा एवं सैर के समय उन लोगों के नाम से जो उन्हें मिल जाते फाल निकाला करते थे और बुरी फाल निकलने पर वे उस कार्य (३२) को त्याग देते हैं।

बाबर द्वारा हुमायूं की काबुल में नियुक्ति

संयोगवश घटने वाली जिन आश्चर्यजनक घटनाओं का सफल नव्वाब[3] के विषय में अवलोकन किया गया, एक घटना यह है कि जिस वर्ष सुलेमान सरीखे गौरव वाले स्वर्गीय बादशाह[4] ने सौभाग्य एवं प्रताप से सम्बन्धित काबुल से कन्धार की ओर प्रस्थान किया तो सल्तनत एवं प्रभुत्व के सूर्य को राज्य तथा राजस्व की व्यवस्था हेतु काबुल में नियुक्त कर गए[5]।

हुमायूं द्वारा फाल निकालना

एक दिन वे अपने शुभ ग्रह रूपी घोड़े पर सवार होकर जंगल पर्वत, उद्यानों एवं घास के मैदानों की सैर कर रहे थे। मार्ग में सौभाग्यशाली हृदय फाल लेने की ओर आकृष्ट हुआ। उन्होंने (३३) मौलाना मसीहुद्दीन रहुल्लाह[6] से, जिन्हें उन कृपाओं एवं उदारता के प्रतीक[7] का गुरु होने तथा उनके गुणों की खिलअत को सजाने का सौभाग्य प्राप्त है, सम्बोधित करके कहा कि 'परोपकारी हृदय में यह आता है कि तीन व्यक्तियों के जो इस मार्ग में मिलें नाम पूँछ कर उनसे फाल निकाला

१ फाल अथवा शकुन की दो किस्में बताई गई है। उत्तम शकुन को फाल एवं बुरे शकुन को तियारह कहते हैं। हज़रत मुहम्मद के विषय में कहा जाता है कि उन्होंने इस बात की घोषणा की थी कि "बुरे शकुन पर विश्वास मत करो। केवल उत्तम शकुन पर विश्वास करो।" लोगों ने पूछा, "उत्तम शकुन क्या है?" उन्होंने उत्तर दिया "कोई उत्तम शब्द जो तुम सुनो"। इब्ने अब्बास का कथन है, "पैगम्बर लोगों के नामों से उत्तम शकुन प्राप्त किया करते थे किन्तु वे बुरे शकुन न लेते थे।" अनस्मान इब्न अबासा का कथन है, "पैगम्बर ने जानवरों के भागने, पक्षियों के उड़ने, कंकड़ फेंकने से, जो मूर्ति पूजक अरबों की प्रथा थी, मना किया"। [Hughes *Dictionary of Islam* (London 1935) पृ० ११४]।

२ हज़रत मुहम्मद की प्रथाओं का पालन करते थे।

३ हुमायूं।

४ बाबर।

५ बाबर नामा में ९२६ हि० (१५१९ २० ई०) से ९३२ हि० (१५२५ २६ ई०) के मध्य की घटनाओं का उल्लेख नहीं अतः इस नियुक्ति के विषय में कोई प्रामाणिक ज्ञान नहीं। सम्भवतः बाबर ने हिन्दुस्तान के पाँचवें आक्रमण (१८ नवम्बर १५२५ ई०) के लिये प्रस्थान करने के पूर्व हुमायूं को काबुल के शासन प्रबन्ध की देख-भाल के लिये नियुक्त किया होगा।

६ अकबर नामा में केवल 'रुहुल्लाह'।

७ हुमायूं।

जाय।" मौलाना ने निवेदन किया कि, "उचित तो यही ज्ञात होता है कि केवल एक ही व्यक्ति से पूंछ लिया जाय।" वे अपने संकल्प पर दृढ़ रहे। कुछ दूर चलकर एक वृद्ध दृष्टिगत हुआ। जब उससे उसका नाम पूंछा गया तो उसने उत्तर दिया कि "मुराद ख्वाजा"। उसके बाद एक अन्य व्यक्ति एक गधे पर लकडी लादे हुये ले जाता दिखाई पडा। जब उसका नाम पूंछा गया तो उसने उत्तर दिया, "दौलत ख्वाजा"। तत्पश्चात् बादशाह की दैवी प्रेरणा प्राप्त जिह्वा से निकला कि, "दूसरा व्यक्ति, जो मिले, उसका नाम यदि सआदत ख्वाजा हो तो यह एक विचित्र सुखद संयोग होगा। उच्च एवं उन्नत काल की आशा का नक्षत्र, सौभाग्य के आकाश से उदय होगा।" उसी समय एक बालक[1] जो कुछ पशु चरा रहा था, दृष्टिगत हुआ। जब उससे पूंछा गया कि "तेरा क्या नाम है?" तो उसने उत्तर दिया, "सआदत ख्वाजा"। उत्कृष्ट सवारी के सेवक उस संयोग (३४) पर आश्चर्यचकित हो गए और सब को विश्वास हो गया कि यह भाग्यशाली बादशाह शीघ्र ही दैवी कृपा से सौभाग्य एवं गौरव के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच जायगा और ईश्वर की स्थायी कृपा के हाथ उसकी धार्मिक एवं सांसारिक आशाओं के लिए सफलता के द्वार खोल देंगे।

अहले दौलत

जब बाद में सौभाग्य एवं नेतृत्व का राजसिंहासन, बादशाहे मुजाहिद गाज़ी के अस्तित्व के प्रकाश से आकाश तुल्य हुआ तो उन्होंने राज्य के समस्त पदाधिकारियों अपितु अपने अधीनस्थ राज्य के समस्त निवासियों को तीन भागों में विभाजित किया। भाइयों, सम्बन्धियों, अमीरों, वज़ीरों, एवं समस्त सैनिकों को "अहले दौलत"[2] कहा जाता था कारण कि समस्त बुद्धिमानों को ज्ञात है कि मनुष्यों के बिना कोई राज्य नहीं चल सकता और इस वीर समूह की सहायता के बिना राज्य एवं सौभाग्य की उन्नति सम्भव नहीं। राजसिंहासन तथा राजसत्ता की प्राप्ति योद्धाओं एवं वीरों की सहायता बिना मुमकिन नहीं।

पद्य

'सुल्तानों ने सेना एवं परिजन की सहायता से,
राज्य के सिंहासन पर पाँव रक्खे।
वही सौभाग्य एवं प्रभुत्व प्राप्त कर सकता है,
जिसे एक लश्कर की सहायता प्राप्त हो।'

अहले सआदत

(३५) प्रतिष्ठित सद्रों, उत्कृष्ट मशायख, सम्मानित सैयिदों, आलिमों, इस्लाम के काज़ियों, विद्वानों, कवियों, प्रतिष्ठित एवं सम्मानित लोगों को "अहले सआदत"[3] कहा जाता था कारण कि इस सम्मान के पात्र समूह का आदर सम्मान और इस पूज्य गरोह से मेल जोल सौभाग्य की उन्नति और अनन्त तक स्थायी रहने वाले प्रताप के गौरव का साधन होता है।

१ अकबर नामा में 'पिसरे' के स्थान पर 'मर्दे' है।
२ दौलत (राज्य) के समूह से सम्बन्धित।
३ सौभाग्य के समूह से सम्बन्धित।

मसनवी

"सौभाग्य विधाता का वरदान है,
यह शक्तिशाली भुजाओं के युद्ध से नहीं प्राप्त होता,
यदि तू सौभाग्य के समीप होना चाह,
सर्वदा 'अहले सआदत' के साथ उठ बैठ।"

अहले मुराद

सुन्दर सलोने तथा रूपवान् संगीतज्ञों, वादकों एवं उत्तम स्वर में पाठ करने वालों का नाम "अहले मुराद"[1] रक्खा गया कारण कि प्रायः लोगों की अभिलाषा यही होती है कि वे रूपवान् तरुणों एवं मीठे स्वर वाले रूपवानों से सम्पर्क रक्खें। संगीत, चंग, कानून, एवं ऊद[2] की ध्वनि सभी को पसन्द एवं मनोरंजक होती है।

मसनवी

'प्रेमियों के हृदय की आकांक्षा
कोई अन्य नहीं होती, गुलाब सरीखे कपोल वालों से भेंट के अतिरिक्त,
(३६) जो कोई संगीत एवं बाजे की ओर आकृष्ट होता है,
उसके लिए सौभाग्य के द्वार खुल जाते हैं।'

शनिवार एवं बृहस्पतिवार

इसी प्रकार इस बुद्धिमान् पादशाह ने सप्ताह के दिनों का विभाजन किया। प्रत्येक दिन को उन्होंने "अहले दौलत", 'अहले सआदत" अथवा "अहले मुराद" से इस प्रकार सम्बन्धित कर दिया कि शनिवार एवं बृहस्पतिवार को "अहले सआदत", अथवा ज्ञान-विज्ञान तथा उपासना के प्रबन्धकों के लिए निश्चित किया। उन दो दिनों में उस आदरणीय समूह की आशाओं के वृक्ष में उस स्वर्ग रूपी दरबार में पहुँचने के कारण सौभाग्य के फल लगते थे। अहले सआदत के लिए इन दो दिनों के पृथक् होने का कारण यह था कि शनिवार का सम्बन्ध शनि ग्रह से है जो आदरणीय मशायख एवं प्राचीन वंश वालों का आश्रयदाता है। बृहस्पतिवार का सम्बन्ध बृहस्पति ग्रह से होता है और बृहस्पति, सैयिदों, आलिमों एवं सम्मानित शरीअत का पालन करने वालों से सम्बन्धित है।

रविवार एवं मंगलवार

रविवार एवं मंगलवार को "अहले दौलत", राज्य की समस्याओं के समाधान, एवं शासन प्रबन्ध के लिए पृथक् कर दिया। इन दो दिनों में शत्रुओं का विनाश करने वाले बादशाह के दीवान[3] में बैठने के कारण, सर्वसाधारण एवं विशेष व्यक्तियों को सेवा में उपस्थित होने का सम्मान

१ वह समूह जिसमें इच्छायें तथा अभिलाषायें पूरी हों।
२ चंग, क़ानून एवं ऊद विभिन्न प्रकार के बाजे होते थे।
३ दरबार।

प्रदान किया जाता था। इन दो दिनो में दीवान मे बैठने, और आदेश तथा फरमान जारी करने का (३७) रहस्य यह था कि रविवार का सम्बन्ध सूर्य से होता है और सूर्य ईश्वर की कृपा से हाकिमो एव सुल्तानो से सम्बन्धित है। मंगलवार का सम्बन्ध मगल ग्रह से है। मगल ग्रह वीर-योद्धाओं का आश्रयदाता है। इस सूर्य के समान स्पष्ट विवरण से ज्ञात होता है कि इन दो दिनो मे दीवानखाने में राजसिंहासन को अपने परोपकारी अस्तित्व से शोभा प्रदान करना और आदेश एव फरमान निकलना सभी दिनो से उचित है।

दरबार की प्रथायें

दीवान के दिन न्याय एव उपकार की इस मूर्ति के आदेशानुसार जिन प्रथाओं का आविष्कार हुआ, उनमें से एक यह थी कि जब उनके उत्कृष्ट व्यक्तित्व द्वारा खिलाफत एव पादशाही के सिंहासन को शोभा प्राप्त होती थी तो नक्कारा बजाने वाले, खुशी के नक्कारो द्वारा मनुष्यो के समूह को सूचना देते थे कि वे अविलम्ब सेवा में उपस्थित हों। जिस समय वे दीवान से उठ कर चले जाते, (३८) तो तोप चलाने वाले, तोप की आवाज से लोगों को विसर्जित कर देते थे। उस दिन किर-कीराकची[१] लोग कुछ उत्तम सरोपा[२] एव खजाची लोग, सिक्के ससार को शरण प्रदान करने वाले दरबार में इस आशय से लाते थे कि प्रत्येक का धन एव वस्त्र प्रदान करके सम्मानित किया जा सके और प्रतीक्षा के बिना उन्हे (जो कुछ प्रदान हो) वह प्राप्त हो जाय। इसके अतिरिक्त उस दिन सेवको में से कुछ लोग अस्त्र-शस्त्र धारण करके बहराम[३] के रूप मे रक्त पीने वाली तलवार हाथ मे लेकर दरबार में खडे रहते थे ताकि जो अपराधी सिद्ध हो, उसे दड दे सकें।

सोमवार एवं बुधवार

सोमवार एव बुधवार को मुराद का दिन कहा जाता था। उन दो दिनों को कुछ नदीमो[४], विश्वास पात्रो तथा "अहले मुराद" और खास लोगो को स्वर्ग रूपी दरबार में बुलवाकर उनकी इच्छायें पूरी की जाती थी। इन दो दिनो के "अहले मुराद" से सम्बन्धित होने का रहस्य यह था कि सोम-वार का सम्बन्ध चन्द्रमा तथा बुधवार का बुध ग्रह से होता है, अत यह उचित ज्ञात होता है कि उन दो दिनो में चन्द्र रूपी तरणो के साथ सगीत, वादन एव उत्तम स्वर वालों द्वारा शोभा एव आनन्द मगल मे वृद्धि की जाय।

शुक्रवार

शुक्रवार, जैसा कि उसके नाम से प्रकट होता है, उपर्युक्त सभी बातो का योग है। उस दिन की सभा जहा तक सीमित समय का सम्बन्ध है, सबसे आगे बढ जाती थी।

स्वर्ण-बाण

(३९) उनके अन्य आविष्कारो मे सोने के तीन बाण थे जो उपर्युक्त तीन वर्गों के प्रसग से

१ वह अधिकारी जो वस्त्रों का प्रबन्ध करते थे।
२ सिर से पांव तक के वस्त्र जो इनाम में प्रदान किये जाते थे; खिलअतें।
३ मंगल राशि।
४ सहचरों।

"सआदत का वाण", "दौलत का वाण" एव "मुराद का वाण" कहलाते थे। इन तीनो वाणो में से प्रत्येक तत्सबधी राज्य के दृढ पदाधिकारी से सम्बन्धित होता था। उन सरकार की समस्यायें उसकी सुव्यवस्था के अधीन होती थी। यह निश्चय था कि जब तक उन वाणो मे से प्रत्येक का स्वामी उन मामलो के प्रबन्ध मे, जो उस वाण से सम्बन्धित है, पूर्ण रूप से प्रयत्न करता रहे और ईश्वर की इच्छा का पालन एव हजरत बादशाह के प्रति निष्ठा की जो शर्तें हैं, उन्हे पूरा करता रहे तो वह कृपा-पात्र एव अपने अधिकार की गद्दी पर दृढ रहे। जब कभी वह अपने पद पर अभिमान के कारण मस्त एव असावधान हो जाय और उसकी सूझ बूझ के नेत्रो पर उपेक्षा का आवरण पड जाय अथवा वह अपने स्वार्थवश राज्य-व्यवस्था की समस्याओ पर ध्यान न दे और अपने सौभाग्य की सहायता के अभाव के कारण धन के एकत्र करने को अपना हार्दिक उद्देश्य बना ले और उसके उपाय का वाण उसकी इच्छा के लक्ष्य पर न पहुँचे तो पदच्युत करने का आदेश, भाग्य की लेखनी ने उसकी दशा की पंजिका पर लिख दिया जाय[1]।

यह भी सम्भव है कि कोई सौभाग्यशाली जिसे इन तीनो में से कोई पद प्राप्त हो, पवित्र (४०) हृदय[2] की इच्छानुसार, एक दिन अथवा एक सप्ताह मे अधिक तत्सम्बन्धी व्यवस्था को इस प्रकार सम्पन्न कर ले कि उसके उद्योग एव प्रयत्न से उस विभाग के कार्य उन्नति करने लगें तो कृपालु बादशाह उसकी सेवानुसार उसके पद में वृद्धि कर देता है। इसी प्रकार यह भी सम्भव है कि प्रभुत्व की सुगन्धि के कारण 'अहल सआदत", "अहले दौलत" अथवा "अहल मुराद" से यदि कोई षड्यन्त्र तथा शत्रुता प्रारम्भ करके बदमस्ती प्रदर्शित करने लगे तो वह पहिले दिन ही उस नशे की पीडा के कारण विश्वास की श्रेणी से गिरा कर दडनीय एव पदच्युत कर दिया जाता है।

मिसरा

'मदिरा की मन्द सुगन्धि भी मस्तो के लिए पर्याप्त होती है।'

सआदत विभाग का मुख्य अधिकारी

जिस समय सकलनकर्ता का कलम इन पृष्ठो की रचना में व्यस्त था तो सआदत विभाग का प्रबन्ध स्वतन्त्र रूप से विद्वानो एव कार्य कुशल लोगों में से सर्वश्रेष्ठ, ऐश्वर्य एव गौरव के स्वामियो में से सबसे अधिक प्रसिद्ध, मस्तिष्क की निपुणता के ज्ञाता, मानव-समूहो की शरण, सौभाग्यशाली, परोपकारिता की खान, बादशाह के विश्वासपात्र, विद्वत्ता के आकाश के बृहस्पति (ग्रह), (४१) राज्य के सम्मान, मौलाना मुहीउद्दीन मुहम्मद फरगरी के अधीन था। सम्मानित सदायख, उत्कृष्ट सैयिदो, उदार आलिमो, ईमानदार काजियो, महान् शिक्षको, फतवा देने वालो, जाहिदो[3] एव पवित्र लोगो की समस्त समस्याओ का समाधान, जनसामान्य मे से छोटे बडे के हको की पूछ-ताछ, शरा के पदो एव धार्मिक मामलो के अधिकारियो की नियुक्ति एव उन्हे पदच्युत करना तथा इस पूरे सम्मानित समूह के वज़ीफो एव सयूरगाल का निश्चित करना उसके अधीन था।

१ पदच्युत कर दिया जाय।
२ हुमायूँ की इच्छानुसार।
३ मुसलमानो में संयम नियम और जप-तप करने वाले व्यक्ति जाहिद कहलाते थे।

दौलत विभाग का अधिकारी

दौलत एव प्रताप के विभाग का प्रबन्ध, ऐश्वर्य एव वैभव के विभाग के सेवकों की समस्याओं का समाधान, सौभाग्य के अभियानों के सेनापति, प्रतिष्ठा के मैदान की पताका के विजेताओं के अधीक्षक, उच्च श्रेणी के स्वामी, हजरत (जहाँबानी) के विश्वास पात्र, सल्तनत के स्तम्भ, पौरुष के मैदान के घुड़सवार, शुजाउद्दीन अमीर हिन्दू बेग बहादुर से सम्बन्धित है। शाही आदेशानुसार उनका उच्च साहस, अमीरो, उच्च पदाधिकारियों, वजीरों, शाही विभाग के समस्त कर्मचारियों एव मुतसद्दियों, दीवानी के मामलों के प्रबन्धको से सम्बन्धित समस्त समस्याओं का समाधान, विजयी सेना के वेतनो की व्यवस्था, आकाश तुल्य चौखट के सेवकों की श्रेणी का निश्चित करना उसी के अधीन है।

मुराद विभाग का अधिकारी

(४२) मुराद विभाग का प्रबन्ध धर्मनिष्ठ एव न्यायकारी बादशाह के व्यूतात की समस्याये, विद्वानों की शरण, योग्यता में सर्वोच्च मुराद के अधीक्षक विश्वास एव (बादशाह की) समीपता के पात्र, आदर-सम्मान के योग्य, मजलिसे खास के सखा, विशेष गोष्ठी में बैठने वाले, राज्य, ससार एव धर्म के सर्वोत्कृष्ट अमीर उवैस मुहम्मद (ईश्वर उसे अनन्त तक रहने वाला सौभाग्य प्रदान करे) के अधीन है। बिना किसी अतिशयोक्ति एव चाटुकारी के कहा जा सकता है कि वह इस पद से सम्बन्धित कर्तव्यों का भली भाँति पालन करता है और विजयी एव सफल बादशाह के व्यूतात एव ऐश्वर्य तथा वैभव के साधनो की व्यवस्था और गौरव तथा श्रेष्ठता की आवश्यकताओ की पूर्ति करता है। ईश्वर की अनन्त तक स्थायी रहने वाली अनुकम्पा से आशा है कि यह तीनो भाग्यशाली सर्वदा गुणवान् बादशाह के प्रताप की छाया में राज्य एव राजत्व सम्बन्धी समस्याओ का इस प्रकार समाधान करते रहेंगे कि सैनिकों एव प्रजा की समृद्धि और नित्य-प्रति इच्छानुसार अधिक से अधिक सौभाग्य एव अभिलाषाओं की पूर्ति की व्यवस्था होती रहेगी। हजरत बादशाह (ईश्वर की छाया) के धार्मिक एव सासारिक उद्देश्य तथा उनकी सांसारिक एव आध्यात्मिक सफलताये उन्हे भली भाँति एव उत्तम रूप से प्राप्त होती रहेगी।

मसनवी

हे ईश्वर! यह सम्मानित बादशाह,
सुलेमान सरीखा एव सिकन्दर रूपी।
बहुत वर्षों तक राज्य को अधिकार में रक्खे,
अपने सौभाग्य को अगणित वर्षों तक रक्खे।
(४३) अनन्त तक रहने वाला प्रताप उसका साथी रहे,
दोनो लोको की अभिलाषाये उसके अधीन रहे।'

बाणो के १२ वर्ग

इस भाग्यशाली तथा प्रतिभा-सम्पन्न बादशाह के आविष्कारो में से बाणो का विभाजन है। उनके द्वारा राजसिंहासन के सेवको की श्रेणी निश्चित है। विद्वत्तापूर्ण लेखो का रचयिता कलम इसका सविस्तार उल्लेख इस प्रकार करता है, "अह्ले दौलत", अह्ले सआदत" और "अह्ले

मुराद" को खरे सोने की विभिन्न श्रेणियों के अनुसार १२ वाणों में विभाजित कर दिया गया है और प्रत्येक का आदर-सम्मान उसकी श्रेणी के अनुसार निश्चित किया गया है। १२वाँ वाण, जो बड़े ही अधिक खरे सोने का है, प्रभुत्व के स्वामी बादशाह के भाग्यशाली निपग के लिए पृथक् है और किसी अन्य का उससे सम्बन्ध नहीं हो सकता।

११वाँ वाण सम्बन्धियों, भाइयों, सुल्तानों[1], जो फिरिश्तों के स्थान वाली चौखट के सेवक है, के लिए है।

१०वें वाण का सम्बन्ध बुद्धि के वृद्ध[2] से उत्कृष्ट मशायख, सैयिदों, सम्मानित आलिमों एवं धार्मिक लोगों से किया है।

९वाँ वाण प्रतिष्ठित अमीरों से सम्बन्धित है।

(४४) ८वाँ वाण दरबारियों, मसवों के स्वामी उपचकियों को सौंप दिया गया है।

७वाँ वाण समस्त उपचकियों को प्रदान किया गया।

६ठा वाण कबीले के सरदारों और उत्तम स्वभाव वाले ऊजबेकों को सौंपा गया है।

५वाँ वाण यक्का जवानों से सम्बन्धित है।

चौथा वाण तहवीलदारों के लिए पृथक् है।

तीसरा वाण जिरगे के जवानों के लिए पृथक् है।

दूसरा वाण भाग्य के मुंशी ने शागिर्द-पेशा लोगों के नाम लिखा है।

पहला वाण दरबानों एवं सारबानों[3] तथा उनके सरीखे लोगों से सम्बन्धित है।

उपर्युक्त वाणों में से प्रत्येक वाण तीन श्रेणियों में विभाजित है—उत्तम, मध्यम एवं निम्न, "वह है स्वामी उन सब का।"

विभाजन का कारण

प्रतिभा शालियों एवं बुद्धिमानों से यह बात छिपी एवं निहित न रहनी चाहिए कि बादशाह ने पदाधिकारियों एवं खिलाफत की चौखट के सेवकों की श्रेणियों के विभाजन में इन संख्याओं का प्रयोग दैवी प्रेरणा एवं परमेश्वर के आदेशानुसार किया है और यह बादशाही दरबार के दासों के लिये लोक तथा परलोक दोनों की समस्याओं के समाधान का साधन है कारण कि १२ ऐसी संख्या है जिस पर संसार के सृजन से लेकर इस समय तक धार्मिक मामले एवं समस्त (४५) समस्यायें अवलम्बित है। सर्वप्रथम यह कि ८वाँ आकाश १२ राशि-चक्र[4] में विभाजित है। सूर्य-चन्द्र, नक्षत्रों, एवं सप्त मंडलों की गति-विधि राशि-चक्र पर अवलम्बित है और महीनों एवं वर्षों का हिसाब इन्हीं के चक्कर पर आधारित है। इस बात की सत्यता का सूर्य उसी प्रकार चमकता है जिस प्रकार जगत् में दिन एवं मास।

१ शाहजादों।

२ अर्थात बुद्धि।

३ अकबर नामा में 'पासबान अथवा पहरेदारों' के लिये; यही शुद्ध है। 'सारबान' अथवा ऊँट हंकाने वाला शुद्ध ज्ञात नहीं होता।

४ मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ तथा मीन। (मन्तख़ुल बुरूज :—हमल सौर, जौज़ा, सरतान, असद, सुम्बुला, मीज़ान, अक़रब, कौस, जदी, दल्व तथा हूत)।

दौलत विभाग का अधिकारी

दौलत एव प्रताप के विभाग का प्रबन्ध, ऐश्वर्य एव वैभव के विभाग के सेवको की समस्याओ का समाधान, सौभाग्य के अभियानो के सेनापति, प्रतिष्ठा के मैदान की पताका के विजेताओ के अधीक्षक, उच्च श्रेणी के स्वामी, हजरत (जहाँबानी) के विश्वास पात्र, सल्तनत के स्तम्भ, पौरुष के मैदान के घुडसवार, शुजाउद्दीन अमीर हिन्दू बेग बहादुर से सम्बन्धित है। शाही आदेशानुसार उनका उच्च साहस, अमीरो, उच्च पदाधिकारियों, वज़ीरो, शाही विभाग के समस्त कर्मचारियो एव मुत-सद्दियो, दीवानी के मामलो के प्रबन्धको से सम्बन्धित समस्त समस्याओ का समाधान विजयी सेना के वेतनो की व्यवस्था, आकाश तुल्य चौखट के सेवको की श्रेणी का निश्चित करना उसी के अधीन है।

मुराद विभाग का अधिकारी

(४२) मुराद विभाग का प्रबन्ध, धर्मनिष्ठ एव न्यायकारी बादशाह के ब्यूतात की समस्याये, विद्वानो की शरण, योग्यता में सर्वोच्च, मुराद के अधीक्षक विश्वास एव (बादशाह की) समीपता के पात्र, आदर-सम्मान के योग्य, मजलिसे खास के सखा विशेष गोष्ठी में बैठने वाले, राज्य, समार एव धर्म के सर्वोत्कृष्ट अमीर उवैस मुहम्मद (ईश्वर उसे अनन्त तक रहने वाला सौभाग्य प्रदान करे) के अधीन है। बिना किसी अतिशयोक्ति एव चाटुकारी के कहा जा सकता है कि वह इस पद से सम्बन्धित कर्तव्यो का भली भांति पालन करता है और विजयी एव सफल बादशाह के ब्यूतात एव ऐश्वर्य तथा वैभव के साधनो की व्यवस्था और गौरव तथा श्रेष्ठता की आवश्यकताओ की पूर्ति करता है। ईश्वर की अनन्त तक स्थायी रहने वाली अनुकम्पा से आशा है कि यह तीनो भाग्यशाली सर्वदा गुणवान् बादशाह के प्रताप की छाया में राज्य एव राजस्व सम्बन्धी समस्याओ का इस प्रकार समाधान करते रहेंगे कि सैनिको एव प्रजा की समृद्धि और नित्य-प्रति इच्छानुसार अधिक से अधिक सौभाग्य एव अभिलाषाओ की पूर्ति की व्यवस्था होती रहेगी। हजरत बादशाह (ईश्वर की छाया) के धार्मिक एव सांसारिक उद्देश्य तथा उनकी सांसारिक एव आध्यात्मिक सफलतायें उन्हे भली भांति एव उत्तम रूप से प्राप्त होती रहेगी।

मसनवी

हे ईश्वर! यह सम्मानित बादशाह,
सुलेमान सरीखा एव सिकन्दर रूपी।
बहुत वर्षो तक राज्य को अधिकार में रक्खे,
अपने सौभाग्य को अगणित वर्षो तक रक्खे।
(४३) अनन्त तक रहने वाला प्रताप उसका साथी रहे,
दोनो लोको की अभिलाषाये उसके अधीन रहे।'

बाणों के १२ वर्ग

इस भाग्यशाली तथा प्रतिभा-सम्पन्न बादशाह के आविष्कारो में से बाणो का विभाजन है। उनके द्वारा राजसिंहासन के सेवको की श्रेणी निश्चित है। विद्वत्तापूर्ण लेखो का रचयिता कलम इसका सविस्तार उल्लेख इस प्रकार करता है, "अहल दौलत", अहले सआदत" और "अहले

मुराद" को खरे सोने की विभिन्न श्रेणियों के अनुसार १२ वाणों में विभाजित कर दिया गया है और प्रत्येक का आदर-सम्मान उसकी श्रेणी के अनुसार निश्चित किया गया है। १२वाँ वाण, जो बड़े ही अधिक खरे सोने का है, प्रभुत्व के स्वामी बादशाह के भाग्यशाली निजम के लिए पृथक् है और किसी अन्य का उसमें सम्बन्ध नहीं हो सकता।

११वाँ वाण सम्बन्धियों, भाइयों, सुल्तानों[1], जो खिलाफ़त के स्थान वाली चौसट के सेवक हैं, के लिए है।

१०वें वाण का सम्बन्ध बुद्धि के वृद्ध[2] ने उत्कृष्ट मशायख, सैयिदों, सम्मानित आलिमों एवं धार्मिक लोगों से किया है।

९वाँ वाण प्रतिष्ठित अमीरों से सम्बन्धित है।

(४४) ८वाँ वाण दरबारियों, मसबों के स्वामी उपचकियों को सौंप दिया गया है।

७वाँ वाण समस्त उपचकियों को प्रदान किया गया।

६ठा वाण कबीले के सरदारों और उत्तम स्वभाव वाले उज़बेकों को सौंपा गया है।

५वाँ वाण युवक जवानों से सम्बन्धित है।

चौथा वाण तहवीलदारों के लिए पृथक् है।

तीसरा वाण जिरगे के जवानों के लिए पृथक् है।

दूसरा वाण भाग्य के मुंशी ने शागिर्द-पेशा लोगों के नाम लिखा है।

पहला वाण दरबानों एवं सारवानों[3] तथा उनके सरीखे लोगों से सम्बन्धित है।

उपर्युक्त वाणों में से प्रत्येक वाण तीन श्रेणियों में विभाजित है —उत्तम, मध्यम एवं निम्न, "वह है स्वामी उन सब का।"

विभाजन का कारण

प्रतिभा शालियों एवं बुद्धिमानों से यह बात छिपी एवं निहित न रहनी चाहिए कि बादशाह ने पदाधिकारियों एवं खिलाफ़त की चौखट के सेवकों की श्रेणियों के विभाजन में इन संख्याओं का प्रयोग दैवी प्रेरणा एवं परमेश्वर के आदेशानुसार किया है और यह बादशाही दरबार के दासों के लिये लोक तथा परलोक दोनों की समस्याओं के समाधान का साधन है कारण कि १२ ऐसी संख्या है जिस पर संसार के सृजन से लेकर इस समय तक धार्मिक मामले एवं समस्त (४५) समस्यायें अवलम्बित हैं। सर्वप्रथम यह कि ८वाँ आकाश १२ राशि-चक्र[4] में विभाजित है। सूर्य चन्द्र, नक्षत्रों, एवं सप्त मंडलों की गति-विधि राशि-चक्र पर अवलम्बित है और महीनों एवं वर्षों का हिसाब इन्हीं के चक्कर पर आधारित है। इस बात की सत्यता का सूर्य उसी प्रकार चमकता है जिस प्रकार जगत् में दिन एवं मास।

१ शाहज़ादों।

२ अर्थात् बुद्धि।

३ अकबर नामा में 'पासबान अथवा पहरेदारों' के लिये, यही शुद्ध है। 'सारवान' करना ऊँट हाँकने वाला कुछ ज्ञात नहीं होता।

४ मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ तथा मीन। [illegible] सौर, जौज़ा, सरतान, असद, सुम्बला, मीज़ान, अक़रब, क़ौस, जदी, दल्व तथा हूत)।

इसके अतिरिक्त ससार के वहुत से प्रवन्ध समय के विभाजन पर अवलम्बित हैं और समय का तात्पर्य रात और दिन की घड़ियों से है। प्रत्येक रात एव दिन सतुलित दशा में अर्थात् वहार एव शरद् ऋतु के प्रारम्भ में १२ घटा मे विभाजित रहते हैं। महीना की सख्या भी कुरान शरीफ के इस आदेशानुसार कि, "ईश्वर की दृष्टि में महीनों की सख्या १२ है" १२ हैं। इसके अतिरिक्त इसराईल के कुबीले अर्थात् याकूब की सतान की सख्या जैसा कि कुरान शरीफ की आयतों से स्पष्ट (४६) है १२ थी। "हजरत मूसा की कौम में एक ऐसा वर्ग है जो सत्य के प्रकाश में पथ प्रदर्शन एव न्याय करता है, हमने उन्हे १२ कबीलो मे विभाजित किया" और 'ईश्वर ने इसराईल की सतान से प्रतिज्ञा कराई और उनमे १२ नकीव[1] नियुक्त किए।" ईश्वर की वाणी की टीका करने वाला एव इस विषय के शोधकों ने हजरत मूसा की कौम के सरदारो की सख्या १२ वताई है। मानव में सर्वोत्कृष्ट (ईश्वर उन्हे शान्ति प्रदान करे) ने अक्वा[2] की रात्रि में अपने अनसार[3] में से १२ व्यक्तियों (४७) को नकीव[4] नियुक्त किया। इसी प्रकार मासूम इमामों[5] की (ईश्वर उनसे सतुष्ट रहे) सख्या १२ है।

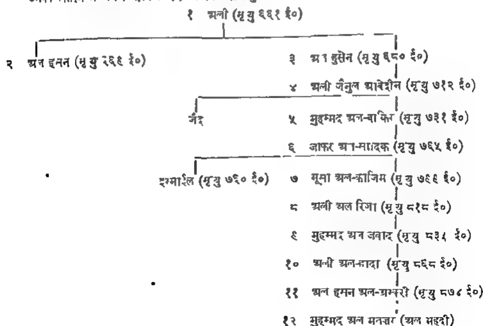
१ वह कर्मचारी जो बादशाहों तथा सुल्तानों की सवारी के आगे आगे आवाज लगाता चलता है। वही दरबार के समय, बादशाह से भेंट हेतु जाने वालों के नाम जोर से पुकारता है।

२ हजरत मुहम्मद ने जब अपने आपको नबी घोषित कर दिया (६१० ई०) तो उसके बाद १२वें वर्ष में १२ मदीना निवासी हज के अवसर पर मक्का पहुँचे और उन्होंने हजरत मुहम्मद को ईश्वर का रसूल स्वीकार कर लिया (बैअत कर ली)। यह बैअत, बैअत अकबा उला (प्रथम) कहलाती है।

३ मदीना के वे निवासी जिन्होंने हजरत मुहम्मद का साथ देना स्वीकार कर लिया था।

४ वे १२ व्यक्ति जो अकबा की बैअत के उपरात हजरत मुहम्मद का सदेश लेकर मक्का से मदीना पहुँचे।

५ शीओं के विश्वासानुसार हजरत मुहम्मद की मृत्यु के उपरान्त इमाम अथवा नेता हजरत अली हुए और उनके बाद उनकी सतान में से निम्नाकित ११ व्यक्ति इमाम हुए —



शीओं का विश्वास है कि उनके इमामों ने कभी कोई पाप नहीं किया अत 'वे इमामे मासूम' कहलाते है।

कलमये शहादत[1] के, जो ईमान की जड है, शब्दो में से आधे शब्दो के अक्षरो की सख्या १२ है। इस बात का प्रमाण कलमे के आधे भाग के शब्दो को गिन कर प्राप्त हो सकता है।

सक्षेप मे, जब यह विभाजन किया गया तो "दौलत" एव "सआदत" सम्बन्धी सप्तम आकाश रूपी चौसट के सेवको की समस्त इच्छाये पूरी हो गई। सम्मानित वर्दियो ने प्रत्येक को, जो उनके लिए उत्कृष्ट एव श्रेणी निश्चित थी, वह प्रदान की यहाँ तक कि सभी को अपनी-अपनी श्रेणी का ज्ञान (४८) हो गया। सन्तुष्ट, तृप्त, राजी एव प्रसन्न होकर वे देशो को विजय करने वाले बादशाह के लिए शुभ-कामनाये करने लगे।

पद्य

'हे बादशाह ! तू अनन्त तक जीवित रह
सूर्य का उपग्रह तेरी पताका रहे।
आकाश का वृद्ध तेरी प्रशसा करता रहे,
फिरिश्ते तेरे लिए शुभ-कामनायें करते रहे।
तेरा मुख खुशी से चमकता रहे
तेरे शत्रु का हृदय दुख के बाण से जलता रहे।
अपनी इच्छानुसार तू सौभाग्यशाली रहे,
प्रताप एव राज्य तुझे प्राप्त रहे।'

तत्वो के अनुसार सल्तनत के विभागों का विभाजन

इस फिरिश्ता रूपी बादशाह के आविष्कारो में से एक यह है कि उन्होंने सल्तनत के विभागो के प्रबन्ध को चार तत्वो के अनुसार चार भागो मे विभाजित कर दिया है अग्नि, वायु, जल, एव मिट्टी सम्बन्धी, इन चारो विभागो में से प्रत्येक के प्रबन्ध के लिए एक वजीर नियुक्त किया है।

अग्नि विभाग

जिस विभाग का सम्बन्ध तोपखाना अस्त्र शस्त्र एव युद्ध के यत्रो की व्यवस्था और उन बातो से है जिनमें अग्नि की अधिकाश आवश्यकता पडती है उसे आतशी विभाग कहते हैं। उस विभाग का वजीर ख्वाजा अमीदुल मुल्क को नियक्त किया गया है। उसके प्रबन्ध की अग्नि ने उन लोगो के हृदय को, जो इन कार्यों से सम्बन्धित है प्रज्वलित कर दिया है।

हवाई विभाग

(४९) खिरकीराक, बावरची-खाना, शाही अस्तबल और खच्चरो एव ऊँटो की आवश्यकताओ की व्यवस्था करने वाले विभाग को हवाई विभाग कहते हैं। उस विभाग के (विजारत) के अधिकार की लगाम ख्वाजा लुत्फुल्लाह को प्रदान कर दी गई है।

१ कलमा —वह वाक्य जिसका पाठ तथा जिस पर हृदय से विश्वास मुसलमान लोग परमावश्यक समझते है। वह वाक्य इस प्रकार है —"ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"—कोई भी परमेश्वर नहीं, अल्लाह के अतिरिक्त और मुहम्मद है ईश्वर के रसूल (दूत)। कलमये शहादत में निम्नलिखित वाक्य प्रमाण स्वरूप पढे जाते हैं :—

"अशहदो अन ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"—मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि कोई भी परमेश्वर नहीं अल्लाह के अतिरिक्त और मुहम्मद है ईश्वर के रसूल (दूत)।

जल विभाग

शरबत खाना, सूची-खाना की व्यवस्था, नहरों का निकलवाना एवं वह सब प्रबन्ध जो जल से सम्बन्धित होते हैं आबी विभाग के अधीन हैं। उस विभाग की विज़ारत ख्वाजा हसन के सिपुर्द की गई।

मिट्टी से संबन्धित विभाग

कृषि, भवन-निर्माण, खालसो एवं कुछ बयूतात का प्रबन्ध खाकी विभाग से सम्बन्धित है। उस विभाग की विज़ारत के कार्यों के लिए ख्वाजा जलालुद्दीन मीर्ज़ा बेग को नियुक्त किया गया है।

अधिकारियो के वस्त्र

सर्वप्रथम उपर्युक्त विभागो में से प्रत्येक मे एक अमीर को नियुक्त किया गया था उदाहरणार्थ अमीर नासिर कुली आतश विभाग का मुख्य अधिकारी नियुक्त किया गया। वह सर्वदा लाल (५०) वस्त्र धारण करता था। उसकी मृत्यु के उपरान्त ऐश्वर्य एवं वैभव की वाटिका का सरो, अमीर निहाल उस पद पर आरूढ हुआ किन्तु इस समय जब इन पृष्ठों की रचना हो रही है चारो सरकारो का अधीक्षक प्रतिष्ठित अमीरो में चुना हुआ, उत्कृष्ट विद्वानों मे नमूना अमीर उवैस महम्मद है। ईश्वर उसे समस्त हानियो एवं खतरो से सुरक्षित रक्खे और उसके सौभाग्य को वर्तमान की अपेक्षा अधिक उन्नति दे।

मसनवी

'हे ईश्वर! जब तक कारीगरो एवं तत्वो से,
सम्भावनाओ के लोक में[1] आश्चर्यजनक वस्तुयें तैयार होती रहे।
ईश्वर करे यह सम्मानित बादशाह लाभान्वित हो,
वायु, अग्नि, जल एवं मिट्टी से।'

जश्न एवं समारोह की सभाओ की प्रशंसा में विवरण के चमकते हुये जवाहरात न्योछावर करना एवं विजयी तथा सफल बादशाह के आविष्कारों से इच्छाओ की पूर्ति का नकद (धन) प्राप्त करना

ससार को शरण प्रदान करने वाले पादशाह ने, जो "बादशाह ईश्वर की छाया है' नामक वाक्य का प्रतीक है, उसी वर्ष जब ऐश्वर्य एवं वैभव के आकाश से राज्य एवं सौभाग्य की उषा का उदय होने लगा और जब खिलाफत एवं प्रभुत्व का सूर्य निकला तथा हिन्दुस्तान के प्रदेश, कन्धार एवं ज़ाबुलिस्तान[2] की सीमान्त तक, चमक उठे तो उन्होंने जश्न एवं समारोहो के आयोजन एवं (५१) खुशी तथा हर्ष के फर्श के बिछाने का आदेश दिया। अमीरो, प्रजा एवं सैनिको में से निष्ठा

१ ससार में।
२ ग़ज़नी के उत्तर पूर्व एवं दक्षिण पूर्व का प्रदेश।

के मार्ग के पथिक जश्न की तैयारी मे व्यस्त हो गए। राजधानी आगरा की समस्त दूकानो एव गलियो को

मिसरा

'चीन की चित्रशाला'

(५२) के समान अतलस[१], फिरगी किम्खाब[२], सकरलात[३], तथा सतरगे कपडो से सजाया। कुशल कलाकारो एव गुणवान् कारीगरो ने नाना प्रकार के आविष्कार करके तथा विचित्र वस्तुयें बना कर प्रसन्नता के द्वार मनुष्यो के समूहो के लिए खोल दिए।

विशेष प्रकार की नौकाओ की तैयारी

उस समय ससार वालो के बादशाह के आदेशानुसार जो आश्चर्यजनक आविष्कार हुए तथा हर देश की जल एव स्थल की दिशाओ में अपनी विचित्रता एव नवीनता के कारण प्रसिद्ध हो गए उनमें एक यह है कि सम्मानित आदेशानुसार कुशल बढइयों ने यमुना नदी में चार बडी बडी नौकाये तैयार कराई। इन नौकाओ में से प्रत्येक मे एक दो-मञ्जिला चहार ताक[४] अत्यन्त उत्तम एव बलन्द तैयार कराया। उन नौकाओ को इस प्रकार एक दूसरे से मिलाया गया कि ये चहार ताक एक दूसरे के आमने सामने थे। उन चारो नौकाओ मे से दो-दो के मध्य मे एक-एक ताक[५] बनाया गया। इस प्रकार उन नौकाओ के मध्य में एक अष्टाकार हौज़ प्रकट हो गया। उन चार ताको (५३) को उत्तम वस्त्रो एव बहुमूल्य वस्तुओ से इस प्रकार सजाया गया कि बुद्धि उसकी विचित्रता एव सौन्दर्य को देख कर आश्चर्यचकित रहती थी। उत्कृष्ट चिकित्सक मौलाना यूसुफी तबीब ने इस पद्य की रचना की

पद्य

'बादशाह ने तैयार किया जिसपर गर्व करें राज्य एव फ़रिश्ते,
एक चार ताक जो ९ आकाशो को लज्जा दिलाता है।
उसका नीचे का भाग मछली[६] तक एव चोटी आकाश तक पहुँचती है।
किसी ने नही देखा है उसके समान आकाश में मछली[६] तक।'

सर्व सम्मानित अमीर जलालुद्दीन उबैस मुहम्मद ने उपर्युक्त चहार ताक एव विजयी तथा सफल बादशाह की प्रशसा में इस कसीदे की रचना की :

शेर

'यह मुलम्मा किया हुआ एव सुन्दर रूप, शनि ग्रह के समान ऊँचा,
महिमा मे आकाश रूपी एव आसमान सरीखा हो गया।

१ एक बहुमूल्य रेशमी वस्त्र।
२ यूरोपियन किम्खाब (एक प्रकार का ज़रदोज़ी के काम का कपड़ा)।
३ एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।
४ चौकोर कमरा।
५ कमरा।
६ वह मछली जिसपर पृथ्वी टिकी हुई है। भूमि के सबसे नीचे वाले भाग से तात्पर्य है।

उसका निर्माता सौन्दर्य का पूरा चन्द्रमा है और भाग्यशाली उसका मुग है,
जिसके चरणो मे यह ऐमारत आकाश के लिए गर्व की वस्तु है।
उसके मुख के ससार को शोभा देने वाले सूर्य के प्रकाश से,
स्वर्ग के उद्यान के समान प्रसन्न हैं, रात एव दिन।
देखने में यह चार ताक है किन्तु विश्वास से,
प्रत्येक रखता है सुनहरे आकाश पर उत्कर्ष।
(५४) सूखी लकडियो से विचित्र प्रकार का उद्यान लग गया है,
उससे भी आश्चर्यजनक बात यह है कि चन्द्र-मुखी मूर्तियो से यह भरी हुई हैं।
उसके चार ताकों से आठो स्वर्ग प्रकट हैं,
कौसर[1] का हौज भी उसमें स्पष्ट रूप से दृष्टिगत है।
उसके निर्माण कर्ता हाथो से, जिसने प्रत्येक पर ९ आकाश बनाये,
प्रज्वलित है वह देदीप्यमान सूर्य के समान।
यदि हरे आकाश का अतलस उसके सामने रख दें,
उसके सेवको के पाव रखने के काम भी नही आ सकता।
अत्यधिक सौन्दर्य, चमक-दमक एव सुखद रूप मे,
स्वर्ग की नव गणना हो सकती है।
जिस किसी को इस महल में प्रवेश प्राप्त हो जाय तो इसमे कोई आश्चर्य नही यदि,
वह इस ससार को उसे ग्रहण करने के लिए पूर्ण रूप से त्याग दे।
पडे हुए हैं मुख सरीखे उसकी जजीर खटखटाने को,
अत्यधिक प्रार्थी अपने हाथो को शुभ-कामना के लिए उठाये हुए।
इसे कहा जा सकता है सौभाग्य का घर कारण कि लोगो की कामनाओ से,
उसके सम्मान की चौखट पर पाया सौभाग्य ने स्थान।
यह भवन उस सम्मानित व्यक्ति के चरणो से सुशोभित है,
वीर बादशाह, प्रतिष्ठित हुमायूँ बादशाह।
(५५) सौन्दय के मिस्र के यूसुफ, सल्तनत की राशि के सूर्य,
दान एव उपकार के बादल, मर्यादा के समुद्र, ऐश्वर्य की खान।
आकाश के नेत्रो की दृष्टि के लिए अजन बन जाय,
यदि प्रात काल का समीर उसकी चौखट की धूल उडाय।
वह राज्य भाग्यशाली है जिसमें ऐसा स्थान हो,
वह स्थान भाग्यशाली है जहाँ तेरा जैसा बादशाह हो।
तेरी सुन्दरता की बहार मे है गुलाब के फूल,
मेरे हृदय के बुलबुल ने बडी रुचि से,
इस गजल की तेरे सौन्दर्य के विषय मे रचना की।

१ स्वर्ग का एक हौज।

तेरा मुह हसती हुई कली, और चेहरा लाला रूपी है,
तेरे सौन्दर्य ने बाग एव बहार की रौनक को लज्जित कर दिया है।
ससार को चमकाने वाला सूर्य तेरे कपोल के चन्द्रमा की तुलना मे,
बुद्धिमानो की दृष्टि मे प्रतीत होता है, कण के समान।
तेरे सुन्दर मुख के सफेद पृष्ठ पर,
वल्लैल[1] नामक आयत लिखी गई खत्ते गुबार[2] मे।[3]
हे साकी! उसके होठो की याद मे जो क्षण-क्षण पर मदिरा का प्रभाव रखते है,
दे मुझे मदिरा का समुद्र और ला मेरे लिए प्याले की नौका।
क्षण क्षण पर बुलबुल मुझसे उच्च स्वर मे कह रही है,
मदिरा बडी अच्छी होती है, यदि प्राप्त हो सर्वदा मित्र के हाथ से।

(५६) हे जीवन की बहार! इस तुच्छ के प्रति कृपा कर,
मै उस लहर से डरता हूँ जो मेरे नेत्रो के आँसू से उठती है।
यदि तेरी अनुकम्पा की वाटिका से कृपा का मद समीर न आय,
शरीर की नौका कैसे पहुँच सकती है मेरे आँसू से किनारे।
क्या तू नही जानता कि हूँ मै तेरे द्वार पर सबसे तुच्छ,
मेरी श्रेणी इतनी निम्न है कि मेरी कोई चिन्ता नही करता।
जीवन का बोझ मै खीच कर ले जा रहा हूँ शून्यता की ओर,
कब तक मै उठाऊँ समय के अत्याचार के कष्ट।
हे उवैस! भाषा द्वारा उसके गुणो का उल्लेख नही हो सकता,
अत यही अच्छा है कि शुभ कामना करके समाप्त कर दे।
जब तक यह ९ घूमने वाले आकाशो का अस्तित्व है,
बादशाह चार तत्वो के चार ताक मे सफल रहे।
जब तक दिनो का अस्तित्व है,
रहे उस समय तक प्राणियो पर यह ईश्वर की छाया।'

(५७) सक्षेप मे, जश्न लगभग एक मास तक चलता रहा। उन दिनो मे अधिकाश मुस्तान सरीरे बादशाह आनन्द मगल की सभायें कराते और खुशी के फर्श बिछवाते थे। वे अमीरो, विश्वासपात्रो, उपचरियो एव दरबार के विशेष व्यक्तियो को स्वर्ग रूपी गोष्ठी मे बैठने की अनुमति देते थे। उस समूह को वे कभी कभी अत्यधिक इनाम इकराम भी दिया करते थे। उन दिनो मे कभी-कभी वे नौरो के चार ताको को अपने शुभ सौभाग्य के प्रकाश से आकाश के कारखाने की लज्जा का विषय बना देते थे और अपने व्यक्तित्व से उनमे से किसी ताक को दरबार द्वारा सुशोभित करके, प्रतिष्ठित कलाकारो के किसी न किसी समूह को उस उत्कृष्ट स्थान पर बुलवाते थे। समस्त चार ताको

१ कुरान शरीफ का सूरा (अध्याय) जिसमे रात की शपथ से सूरा प्रारम्भ हुआ है।
२ छोटे अक्षरो की एक लिपि।
३ मुख की भौह एव दाढी से तात्पर्य है।

में अमीरो एव सम्मानित लोगो के एक समूह को बैठने की अनुमति देते थे। नाना प्रकार की अत्यधिक उदारता द्वारा इनाम-इक्राम के द्वार सभी लोगो की आशाओ के मुख पर खोलते थे। मल्लाह एव नाविक उन चहार ताकों को आदेशानुसार वायु के समान जल पर लिए फिरते थे। मीठे स्वर वाले गायक इस प्रकार गाते बजाते थे कि उनकी आवाज आकाश के विनोद-गृह मे पहुँच जाती थी और शुक्र ग्रह मे नृत्य करने लगती थी।

मसनवी

'परी रूपी गायिकायें,
कभी हृदय-ग्राही बाजों और कभी आवाज से।
प्रत्येक सभा में गाती थीं एक नया सगीत,
सभा वालो की प्रसन्नता में वृद्धि करती थी।'

(५८) उस अवसर पर बकावल[1] एव ख्वान सालार[2], नाना प्रकार के भोजन एव पीने की वस्तुओ की तैयारी मे अत्यधिक प्रयत्न करते थे और 'फलों का, जो चाहें चुनें, पक्षियों का माँस, और जो कुछ वे चाहें"[3], के अनुसार ऐसा भोजन प्रस्तुत करते थे जिसे उस समय से, जब से दैवी ख्वान सालार ने आकाश के दस्तरख्वान पर सूर्य की टिकिया रक्खी नहीं देखा है और कभी किसी ने उस समय से जबसे युग के आतिथेय ने भोजन से रुचि रखने वाले मनुष्यो एव जिन्नातो[4] के लिए आतिथ्य हेतु दस्तरख्वान बिछाया, न देखा होगा।

मसनवी

'क्षण-क्षण पर उस सुखद जश्न मे,
उस बादशाह के आदेशानुसार जिसका घोडा आकाश के समान है।
नाना प्रकार की रिकाबिया प्रस्तुत की जाती थी,
भरी हुई नाना प्रकार के उत्तम भोजनो से।
प्रत्येक दस्तरख्वान पर शाही उत्तम भोजन,
पक्षियों से मछलिया तक लगाया जाता था।

(५९) अन्तिम तीन दिनो में, ससार का विजय करने, तथा उत्तम स्वभाव वाले बादशाह ने अत्यधिक आतिथ्य एव सौजन्य प्रदर्शित करते हुए, "सआदत" "दौलत", एव मुराद" वालो को दावत दी। तीनो विभागो के प्रत्येक अधिकारी ने अपनी श्रेणी के अनुसार निष्ठा एव स्वामी भक्ति के प्रमाण में सोने तथा चाँदी के सिक्कों से भरे हुए थाल उपहार स्वरूप भेंट किए। बादशाह के समक्ष

१ मतबख अथवा शाही रसोई के प्रबन्ध के प्रसग में **आईने अकबरी** में, मीर बकावल को इस विभाग का मुख्य अधिकारी बताया गया है। भोजन के प्रबन्ध के अतिरिक्त उसका कर्तव्य यह भी होता था कि जो भोजन बादशाह के समक्ष प्रस्तुत हो उसके विषय में वह पूर्ण रूप से संतुष्ट हो कि उसमें विष इत्यादि तो कुछ नहीं मिला है। बाबर ने लिखा है कि हिन्दुस्तान में बकावल को चाशनीगीर कहते हैं। (**बाबर नामा, पृ० २२१**)।
२ वह अधिकारी जो दस्तरख्वान पर भोजन लगवाता एवं तत्सम्बन्धी अन्य प्रबन्धो की देख रेख करता था।
३ कुरान शरीफ से उद्धृत।
४ एक प्राणी जिसकी उत्पत्ति अग्नि से मानी जाती है और वह दिखाई नहीं पड़ता।

रूपी उदार हाथ ने हातिम[१] के समान उत्तम खिलअतें प्रदान की और उपहार का अपार धन सहायता के पात्रों को बाँट दिया।

मसनवी

'समुद्र तेरी उदारता देख कर, सर्वदा
दीनता-भाव की हथेली से छिपा लेता है अपना मुख।
हे समुद्र अपने बुलबुलों से कह दे कि उसके हाथ का मुकाबला न करें,
कारण कि उनमें हवा के अतिरिक्त कुछ नहीं होता।'

उपाधियों का वितरण

भव्य जश्न के दिन दासों को सम्मान प्रदान करने वाले बादशाह ने ताजीक एवं तुर्क विद्वानों में से कुछ को अपने ईजाद किए हुए मनसब प्रदान किए और उत्कृष्ट एवं महत्वपूर्ण उपाधियों द्वारा एक समूह की प्रसन्नता बढ़ा दी। ज्ञानियों एवं विद्वानों में सर्व श्रेष्ठ शेख बहीउद्दीन अवल (६०) वज्द को अमीरुश् शुअरा[२] की उपाधि द्वारा सुशोभित किया। आलिमों एवं विद्वानों के गर्व मौलाना शिहाबुद्दीन अहमद मुअम्माई को अमीरुज्जुरफा[३] की उपाधि प्रदान करके आकाश पर पहुँचा दिया। युग के सैयिदों के चुने हुए व्यक्ति अमीर हसन को अमीरस्सलात[४] की उपाधि प्रदान हुई। अमीरों में सर्व प्रतिष्ठित ज़ियाउद्दीन नूर बेग को अमीरुज्जकात[५] की उपाधि प्रदान हुई। प्रतिष्ठित अमीर, अमीर रिज़ा को अमीरस्सौम[६] की उपाधि प्रदान हुई। अमीर अयूब तूशकची[७] को अमीर हज[८] की उपाधि प्रदान हुई। अद्वितीय अमीरों में अद्वितीय अमीर कासिम मुहम्मद खलील को अमीर लुत्फ[९] की उपाधि प्रदान हुई। उनके द्वारा पादशाही अनुकम्पायें, निष्ठा के मार्ग के पथिकों को प्राप्त होती थीं। अमीर बाबा ईसक आका[१०] को अमीर गजब[११] की उपाधि प्रदान हुई और उनके द्वारा संसार को शरण प्रदान करने वाले दरबार से अपराधी निकाले जाते थे। अमीर शाह हुसैन, जो बड़ा मोटा ताज़ा होने के कारण परिश्रम अथवा कठिन कार्य करने में असमर्थ था, अमीर

१ हातिम ताई : प्रसिद्ध अरब सरदार जिसे उसके दान पुण्य के कारण बड़ी ख्याति प्राप्त थी।
२ कवियों में सर्व श्रेष्ठ (राजकवि)।
३ प्रतिभाशालियों का नेता।
४ नमाज़ वालों का सरदार।
५ ज़कात वालों का सरदार। ज़कात इस्लाम के धर्म विधानानुसार ढाई प्रतिशत का वह दान है जो उन लोगों को देना पड़ता है जिनके पास साल भर निश्चित धन रहे। यह दान अपाहिजों, असहाय एवं साधन-हीनों को दिया जाता है।
६ रोज़े वालों का सरदार।
७ फर्श इत्यादि का प्रबन्धक। 'तूशक' तथा 'तोशक' दोनों ही प्रयुक्त हुये हैं।
८ हज वालों का सरदार।
९ जिन लोगों को प्रोत्साहन प्रदान किया जाता था, उनका सरदार।
१० नगर के फाटकों के रक्षकों का अधिकारी।

फ़रागत[१] की उपाधि द्वारा सुशोभित हुआ। इन पृष्ठों के लेखक को अमीरुल अख़्बार[२] की उपाधि प्रदान हुई। इस प्रकार उपर्युक्त लोग सम्मानित एवं प्रतिष्ठित होने के उपरान्त बादशाह के प्रति (६१) और भी अधिक निष्ठावान् हो गए और सल्तनत के दरबार के सेवकों के सौभाग्य एवं राज्य के स्थायित्व के लिए शुभ-कामनायें करने लगे।

मसनवी

'हे प्रतिष्ठित एवं न्यायकारी शाह,
उदार एवं परोपकारी बादशाह।
रहें सूर्य तथा चन्द्र तेरे दास,
आकाश तेरी रिकाब के नीचे दौड़ता रहे।
(ईश्वर करे) तेरे सौभाग्य को स्थायित्व प्राप्त हो,
(ईश्वर करे) संसार के देश तेरे द्वारा विजयी हों।
(ईश्वर करे) सभी लोग तेरे आज्ञाकारी रहें,
(ईश्वर करे) सौभाग्य एवं समृद्धि के नक्षत्र तेरी इच्छा के अधीन रहें।'

नौकाओं पर बाज़ार

इस यशस्वी बादशाह ने चहार ताक़ की नौका के निर्माण के सम्बन्ध में जो आविष्कार किए उनका इस स्थान पर उल्लेख उचित है। अनुल्लंघनीय आदेशानुसार नौका बनाने वालों ने कुछ लम्बी चौड़ी नौकाओं का निर्माण करके, उन नौकाओं के दोनों ओर दूकानें तैयार कराईं। इन नौकाओं में से प्रत्येक के मध्य में एक अन्य बड़े बाज़ार एवं एक बहुत बड़े मध्य-स्थित कमरे का दूकानों के लिए निर्माण हुआ। शाही आदेश हुआ कि प्रत्येक पेशे तथा कला के जानने वाले इन नौकाओं पर अपनी दूकानें खोल लें और क्रय विक्रय एवं व्यापार करें। इस प्रकार ये नौकायें सुन्दरियों के समान थीं जो चन्द्र रूपी संतान से गर्भवती किन्तु फिर भी बाँझ थीं। उनके भीतर (६२) नाना प्रकार के भोजन एवं कपड़े उपलब्ध थे जिनसे सोना-चाँदी उस गर्भवती की संतान के समान निकलते थे जिसकी संतान का जन्म न हुआ हो। उनके गर्भ में बहुत सी संतानें थीं, कुछ मौन, कुछ चलती फिरती[३]। नदी पर बाज़ार लगा रहता था और उसके व्यापारी प्रतिष्ठा के सिंहासन पर टेक लगाये रहते थे।

मसनवी

'किसी स्वतंत्र अथवा दास की आँखों ने नहीं देखा है,
एक बाज़ार यमुना नदी पर चलता फिरता।
प्रतिष्ठित बादशाह के आदेशानुसार,
आकाश एवं तत्वों ने पालन करके तैयार किया।

१ शांति प्रिय लोगों का सरदार।
२ इतिहासकारों का सरदार।
३ कुछ में क्रय विक्रय होता था और कुछ में नहीं।

समस्त सम्मानित लोगो के मतानुसार,
इस प्रकार की बातें कोई आश्चर्यजनक नही।'

नौका द्वारा हुमायूं का प्रस्थान

९३९ हि० मे (१५३२-३३ ई०) बादशाह, जिसने इतने आश्चर्यजनक आविष्कार किए, नदी के मार्ग से नौकाओ पर राजधानी देहली के फीरोजाबाद से अधिकाश अमीरो, राज्य के उच्च पदाधिकारियो एव समस्त उपचवियो के साथ आगरा की ओर रवाना हुआ। इस प्रकार एक सजा हुआ बाजार जल पर हवा के समान चला जा रहा था। प्रत्येक व्यक्ति को भोजन, पेय, (६३) वस्त्र, कपडे, युद्ध के अस्त्र-शस्त्र इत्यादि जिस वस्तु की आवश्यकता होती, वह बाजार में मिल जाती। इस आश्चर्यजनक आविष्कार के कारण यात्रियों को नाना प्रकार की सुविधायें एव सुख प्राप्त थे।

नौकाओ पर वाटिका

इसी प्रकार बादशाही मालियों ने ईश्वर की अनुकम्पा के इस द्योतक के आदेशानुसार कुछ नौकाओ पर तख्ते बिछा कर मिट्टी डाल दी थी और उसे कृषि के योग्य बना दिया था। उन लोगो ने उत्तम वाटिकायें तैयार की जिनके चारो ओर फलदार वृक्ष एव फूलो के पौधे, हर प्रकार की तरकारियाँ, लाल, चमली इत्यादि खिली हुई थी तथा हरियाली दृष्टिगत होती थी।

शेर

'कुशल लोगो की योग्यता ने तैयार की,
ससार के चारो ओर घूमने वाली वाटिका।'

बिना अतिशयोक्ति तथा अनुचित प्रशसा के यह कहा जा सकता है कि दो जिह्वा वाली लेखनी द्वारा उस वाटिका के अत्यधिक सौन्दर्य एव उसकी हरियाली का उल्लेख सम्भव नही एव वृत्तात देने वाला कलम उन वाटिकाओ की ताजगी की चर्चा करने मे असमर्थ है।

मसनवी

'वह घनिष्ठ मित्रो के समान हृदयग्राही है,
और उतना ही उत्तम जितना रसिक मित्रो के मुख।
नि सन्देह किसी नेत्र ने ऐसा उद्यान न देखा होगा,
न विस्तृत आकाश मे और न भूमि पर।'

चलता फिरता पुल

उनके अन्य आश्चर्यजनक आविष्कारो मे, जिससे सर्वसाधारण को लाभ प्राप्त होना है और जिसका वृत्तात इस स्थान पर उचित है, एक चलता फिरता पुल है। इसका उल्लेख इस प्रकार है —

(६४) बहुत सी नौकाओ को एक दूसरे से मिलाकर कुलाबो[1] एव जजीरो से बाँध दिया

१ कोंढ़ा।

फरागत[१] की उपाधि द्वारा सुशोभित हुआ। इन पृष्ठों के लेखक को अमीरुल अख्बार[२] की उपाधि प्रदान हुई। इस प्रकार उपर्युक्त लोग सम्मानित एवं प्रतिष्ठित होने के उपरान्त बादशाह के प्रति (६१) और भी अधिक निष्ठावान् हो गए और सल्तनत के दरबार के सेवकों के सौभाग्य एवं राज्य के स्थायित्व के लिए शुभ-कामनायें करने लगे।

मसनवी

हे प्रतिष्ठित एवं न्यायकारी शाह,
उदार एवं परोपकारी बादशाह।
रहें सूर्य तथा चन्द्र तेरे दास,
आकाश तेरी रिकाब के नीचे दौड़ता रहे।
(ईश्वर करे) तेरे सौभाग्य को स्थायित्व प्राप्त हो,
(ईश्वर करे) संसार के देश तेरे द्वारा विजयी हों।
(ईश्वर करे) सभी लोग तेरे आज्ञाकारी रहें,
(ईश्वर करे) सौभाग्य एवं समृद्धि के नक्षत्र तेरी इच्छा के अधीन रहें।

नौकाओं पर बाजार

इस यशस्वी बादशाह ने चहार ताक की नौका के निर्माण के सम्बन्ध में जो आविष्कार किए उनका इस स्थान पर उल्लेख उचित है। अनुल्लंघनीय आदेशानुसार नौका बनाने वालों ने कुछ लम्बी चौड़ी नौकाओं का निर्माण करके, उन नौकाओं के दोनों ओर दूकानें तैयार कराईं। इन नौकाओं में से प्रत्येक के मध्य में एक अन्य बड़े बाजार एवं एक बहुत बड़े मध्य स्थित कमरे का दूकानों के लिए निर्माण हुआ। शाही आदेश हुआ कि प्रत्येक पेशे तथा कला के जानने वाले इन नौकाओं पर अपनी दूकानें खोल लें और क्रय विक्रय एवं व्यापार करें। इस प्रकार ये नौकायें सुन्दरियों के समान थीं जो चन्द्र रूपी संतान से गर्भवती किन्तु फिर भी बांझ थीं। उनके भीतर (६२) नाना प्रकार के भोजन एवं कपड़े उपलब्ध थे जिनसे सोना-चांदी उस गर्भवती की संतान के समान निकलते थे जिसकी संतान का जन्म न हुआ हो। उनके गर्भ में बहुत सी संतानें थीं कुछ मौन, कुछ चलती फिरती[३]। नदी पर बाजार लगा रहता था और उसके व्यापारी प्रतिष्ठा के सिंहासन पर टेक लगाये रहते थे।

मसनवी

'किसी स्वतंत्र अथवा दास की आँखों ने नहीं देखा है,
एक बाजार यमुना नदी पर चलता फिरता।
प्रतिष्ठित बादशाह के आदेशानुसार,
आकाशों एवं तत्वों ने पालन करके तैयार किया।

१ शांति प्रिय लोगों का सरदार।
२ इतिहासकारों का सरदार।
३ कुछ में क्रय विक्रय होता था और कुछ में नहीं।

समस्त सम्मानित लोगो के मतानुसार,
इस प्रकार की बाते कोई आश्चर्यजनक नही।'

नौका द्वारा हुमायूं का प्रस्थान

९३९ हि० मे (१५३२-३३ ई०) बादशाह, जिसने इतने आश्चर्यजनक आविष्कार किए, नदी के मार्ग से नौकाओ पर राजधानी देहली के फीरोजाबाद से अधिकाश अमीरो, राज्य के उच्च पदाधिकारियो एव समस्त उपचकियो के साथ आगरा की ओर रवाना हुआ। इस प्रकार एक सजा हुआ बाजार जल पर हवा के समान चला जा रहा था। प्रत्येक व्यक्ति को भोजन, पेय, (६३) वस्त्र, कपडे, युद्ध के अस्त्र-शस्त्र इत्यादि जिस वस्तु की आवश्यकता होती, वह बाजार में मिल जाती। इस आश्चर्यजनक आविष्कार के कारण यात्रियों को नाना प्रकार की सुविधायें एव सुख प्राप्त थे।

नौकाओ पर वाटिका

इसी प्रकार बादशाही मालियो ने ईश्वर की अनुकम्पा के इस द्योतक के आदेशानुसार कुछ नौकाओ पर तख्ते बिछा कर मिट्टी डाल दी थी और उसे कृषि के योग्य बना दिया था। उन लोगो ने उत्तम वाटिकायें तैयार की जिनके चारो ओर फलदार वृक्ष एव फूलो के पौधे, हर प्रकार की तरकारिया, लाल, चमेली इत्यादि खिली हुई थी तथा हरियाली दृष्टिगत होती थी।

शेर

'कुशल लोगो की योग्यता ने तैयार की,
ससार के चारो ओर घूमने वाली वाटिका।'

बिना अतिशयोक्ति तथा अनुचित प्रशसा के यह कहा जा सकता है कि दो जिह्वा वाली लेखनी द्वारा उस वाटिका के अत्यधिक सौन्दर्य एव उसकी हरियाली का उल्लेख सम्भव नही एव वृत्तात देने वाला कलम उन वाटिकाओ की ताजगी की चर्चा करने में असमर्थ है।

मसनवी

'वह घनिष्ठ मित्रो के समान हृदयग्राही है,
और उतना ही उत्तम जितना रसिक मित्रो के मुख।
नि सन्देह किसी नेत्र ने ऐसा उद्यान न देखा होगा,
न विस्तृत आकाश में और न भूमि पर।'

चलता फिरता पुल

उनके अन्य आश्चर्यजनक आविष्कारों में, जिससे सर्वसाधारण को लाभ प्राप्त होना है और जिसका वृत्तान्त इस स्थान पर उचित है, एक चलता फिरता पुल है। इसका उल्लेख इस प्रकार है —

(६४) बहुत सी नौकाओं को एक दूसरे से मिलाकर कुलाबो[1] एव जजीरो से बाँध दिया

१ कोंढ़ा।

जाता था। उनपर तख्ते बिछा दिए जाते थे और उन्हे कीलो से इस प्रकार जकड दिया जाता था कि अश्वारोही तथा प्यादे जितना भी चलते फिरते वह जरा भी न हिलता था। जब कभी ससार को शरण प्रदान करने वाले बादशाह नदी की यात्रा करना निश्चय करते थे तो उस पुल को विभिन्न भागो में विभाजित कर दिया जाता था और वे हवा के समान जल पर चलने लगते थे। जब कभी सेना को नदी पार करने की आवश्यकता होती उन टुकडो को पुन जोड कर नदी के एक तट से दूसरे तट तक मिला दिया जाता था। सूर्य रूपी अन्त करण के इस उपाय से, आकाश सरीख सिंहासन वाले बादशाह छोटे-बडे, युवक एव वृद्ध अगाध नदी को पार करते समय नौकायें लाने एव ऊँट घोडा को नदी पार कराने के कष्ट से मुक्त हो जाते थे। वे बिना किसी कष्ट के वायु के समान नदी के इस पार से उस पार जा सकते थे। इस प्रकार सभी लोग यात्रा मे अथवा घर पर आकाश सरीखे दासो के प्रति[1] दासता एव निष्ठा का व्यवहार करते रहते हैं और दरबार के सेवको के प्रताप एव सौभाग्य के स्थायी रहने के लिए शुभ-कामनायें किया करते हैं।

मसनवी

'हे बादशाह! ससार तेरे आदेशो का पालन करता रहे,
बडे तथा छोटे तेरे राज्य में सभी समृद्ध रहे।
उद्देश्यो के समुद्र में तेरी इच्छानुसार,
तेरा जहाज सर्वदा चलता रहे।'

चलता फिरता महल

(६५) उनके विचित्र आविष्कारो में एक चलता फिरता महल है। वहाँ तक किसी शिल्पकार की कल्पनाओ की कमन्द को पहुँचने में सफलता नही प्राप्त हो सकी है। इसका निर्माण इस प्रतिभाशाली बादशाह के अद्भुत विवेक द्वारा हुआ है। उस महल में तीन मजिले है जिन्हे उत्तम लकडी से तराशा गया है। कुशल बढइयो एव बुद्धिमान् कारीगरो ने उसके भाग इस प्रकार एक दूसरे से मिला दिए हैं कि जो कोई उसे देखता है, उसे एक ही टुकडे का बना समझता है। उसे जहाँ भी चाहे ले जा सकते हैं। उसके सबसे अन्तिम खड तक पहुँचने के लिये एक ऐसी सीढी तैयार की गई है जो इच्छानुसार लपेटी तथा खोली जा सकती है। इस आश्चर्यजनक महल को कुशल कलाकारो ने कई प्रकार के रगो स सजाया है। माहिर सुनारो ने इसपर एक सुनहरा गुम्बद बनाया है जो ससार को शोभा प्रदान करने वाले सूर्य के समान चमकता रहता है। खिलाफ्त (६६) के भवन की चौखट के फर्राशो ने खता[2], रूम[3] एव फिरग[4] के कपडा के सतरगे परदो से इसे सजाया है। इसकी सजावट एव इसका सौन्दर्य इस सीमा को पहुँच गया है कि अमीरुज्जुरफा मौलाना शिहाबुद्दीन अहमद मुअम्माई ने उसकी प्रशसा में लिखा है —

१ बादशाह के प्रति।
२ उत्तरी चीन।
३ टर्की।
४ यूरोप।

पद्य

'यह भव्य मुलम्मा किया हुआ महल, जो पादशाह का निवास-स्थान है,
एक ऐसा फानूस[1] है जिसकी मोमबत्ती पूर्व का आकाश है।
उसका बुर्ज सुनहरा शिखर नही अपितु सिर उठाये है,
मोमबत्ती की लौ उसके छत के द्वार पर।
गरो सरीखी एक सुन्दरी है जो उत्तम वस्त्र धारण किए है,
ऐसा शरीर है जो सुनहरे मुकुट से उत्कर्ष प्राप्त किए है।
इस भव्य भवन की चमक दमक उसके गालो का प्रकाश है,
जिसके चारो ओर सूर्य एव नक्षत्र पतिगे के समान चक्कर लगाते है।
गौरव का बुर्ज रात्रि को शोभा देने वाले चन्द्रमा के समान सौन्दर्य प्रदर्शित करता है,
उसके उदय के कारण ससार को प्रत्येक साय मे एक दूसरी प्रात का आनन्द आता है।
(६७) यह तूर[2] की चोटी है दैवी नूर से परिपूर्ण,
बादशाह उसपर मूसा के समान प्रार्थना करता हुआ शात होता है।
वे रातें मेराज[3] की रात का स्मरण दिलाती है, जिसमे बादशाह,
इस महल की छत पर चढने का प्रयत्न करता है।
इसके समस्त खम्भो की तुलना हो सकती है, आकाश के स्तम्भो से,
इस योग्य है यह कि ईश्वर की छाया इसपर ठहरे।
सेना की लम्बी-लम्बी पक्तियाँ इसकी छाया के नीचे खडी हुई, फ़िरिश्ता के समान है,
ईश्वर ने ऐसा महल किस राज्य को प्रदान किया है ?
उसे आकाश के महल के समान चक्कर लगाना प्राप्त है, इस कारण,
जल तथा स्थल के बादशाह ने उसका नाम कस्रे रवा[4] रक्खा है।'

इस ग्रथ के रचयिता ने भी इस अद्वितीय महल एव उत्कृष्ट बादशाह की प्रशसा म एक कसीदे की रचना की है। कुछ शेर जो उद्धृत किए जा रहे है, उसी में से है

पद्य

'यह महल जो चक्कर लगाने वाले आकाश के लिए ईर्ष्या की वस्तु है,
भूमि स उठता है और सर्वोच्च आकाश के समान हो जाता है।

१ कांच के प्याले अथवा गिलास-जैसा पात्र जिसमें मोम बत्ती जलती है।
२ शाम (सीरिया) का एक पर्वत जिस पर हज़रत मूसा ने ईश्वर का जल्वा (दर्शन) देखा था।
३ वह रात्रि जिसमें हज़रत मुहम्मद ईश्वर के आदेशानुसार, ईश्वर से भेंट करने आकाश पर पहुँचे।
४ चलता फिरता महल।

उसके स्तम्भ हर ओर सिर उठाये सरो के समान,
इस प्रकार है मानो वे हो सिदरा[1] एवं तूबा[2]।
यह अष्टाकार है और सर्वदा स्थायी रहने वाले ईश्वर की कृपा से,
इस योग्य है कि समस्त छः दिशाओ से सौभाग्य एवं प्रताप प्राप्त करे।
(६८) यह दृढ है पर्वत के समान किन्तु यात्रा के समय,
जिस प्रदेश मे इच्छा हो उसको ले जाना सम्भव है।
उसकी प्रत्येक दिशा एक अलग रंग दर्शाती है,
इस प्रकार का आविष्कार ससार मे बहुत कम देखा गया।
इसकी छत जो सजी हुई है सुनहरी वस्तुओ से,
ससार के बादशाह पर छाया डालती है।
अत्यधिक सफल हुमायूँ जिसके ऐश्वर्य से,
उसके द्वार की धूल अमृत जल के समान प्राण को उन्नति देती है।
आकाश सरीखी चौखट वाला बादशाह, जिसके साहस के सामने,
आकाश के ९ गुम्बद बडी साधारण सी वस्तु है।

खरगाह का आविष्कार

उनके अन्य आविष्कारो में एक खरगाह का आविष्कार है जो आकाश के १२ राशि चक्रो के अनुसार १२ कक्षो मे विभाजित है। इन कक्षो मे झझरिया बनी है जिनमे सौभाग्य के नक्षत्रो का प्रकाश चमकता रहता था। उनकी सुव्यवस्था का सौन्दर्य सृष्टि के पृष्ठो पर स्पष्ट है।

शेर

'उसकी झझरियो से सौभाग्य का नूर चमक रहा है
उसके द्वारो से सौभाग्य के राजदूत दौडते घूमते है।

(६९) उन्होने एक अन्य खरगाह का आविष्कार कराया। जिस प्रकार फलकुल अफलाक[3] फलके सवाबित[4] को ढाक लेता है, उसी प्रकार यह चारो ओर के खेमो को घेर लेता तथा ढाक लेता है। जिस प्रकार फलके अतलस[5] नक्षत्रो एवं सितारो की सजावटो मे शून्य है उसी प्रकार इस खरगाह में भी झझरियाँ तथा कनात नही है। आवश्यकतानुसार कस्र रवाँ के भागो के समान बाहरी तथा भीतरी खरगाह के भाग भी एक दूसरे से पृथक् कर लिये जाते है और उन्हे एक

१ स्वर्ग के सबसे ऊँचे घर पर एक बेर का वृक्ष।
२ स्वर्ग का एक पेड़।
३ सब आसमानों से ऊँचा अर्थात् सब आसमानों के ऊपर वाला आसमान (९वा आसमान)।
४ सबसे नीचे का आसमान जिसमें चक्कर लगाने वाले सितारे नहीं होते।
५ सबसे ऊपर का आकाश जो अतलस की भाँति सादा है।

'मंज़िल से दूसरी मंजिल पर पहुँचा दिया जाता है। इस विचित्र खरगाह में कई प्रकार के रंग हैं। लकड़ी के सुन्दर टुकड़े कटवा लिए गए हैं जिन्हें जोड़ कर खम्भे बना लिए जाते हैं और उन्हीं पर खरगाह को लगा दिया जाता और उसकी चोटी ऐयूक[1] सितारे से भी ऊँची निकल जाती है।

मसनवी

(७०) है ईश्वर जब तक आकाश का खरगाह स्थायी रहे,
जब तक वह भूमि के क्षेत्र पर फैला है।
सौभाग्य, हुमायूँ शाह का साथ देता रहे,
आकाश के खरगाह में सिंहासनारूढ़ रहे।'

अत्यधिक सुगन्धित लेखनी द्वारा मुकुट एवं वस्त्रों का उल्लेख

ताजे इज़्ज़त

ताजे इज़्ज़त जो खिलाफ़त के मिस्र के इस अजीज़ के आविष्कारों में से है, उत्तम वस्तुओं उदाहरणार्थ फ़िरंग की मख़मल, ज़रबफ़्त की अतलस, सतरंगे ताज़ा[2], उरमुक[3], किम्ख़ाब एवं उत्तम प्रकार के ऊनी कपड़ों से तैयार किया जाता है। वह उत्कृष्ट मुकुट कई फीतों एवं असावों[4] से बनाया (७१) जाता है। असावे के दोनों ओर सात (७) के रूप का एक फटा हुआ भाग होता है। जब दोनों फटे हुए भागों को मिला दिया जाता है तो ७७ (७७) बन जाते हैं जिनसे अक्षरों की सख्यानुसार ७७ निकलता है। इस प्रकार यह सम्मानित मुकुट ताजे इज़्ज़त के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। अपनी सख्यानुसार सम्मान की दृष्टि से यह सभी वस्तुओं से श्रेष्ठ हो गया है।

बादशाह का विशेष मुकुट एक रंग से बनाया जाता है। अन्य छोटे बड़े (अधिकारियों) के मुकुट के भीतरी असावे का रंग बाहरी असावे के रंग से भिन्न होता है। यह जल एवं स्थल का बादशाह अपने विश्वास पात्रों में से प्रत्येक को एक विशेष मुकुट प्रदान करता है। इन लोगों को अपमान के वस्त्रों से मुक्ति दिला कर उनका सम्मान आकाश की बलन्दियों के आगे बढ़ा देता है। इस ग्रंथ के रचयिता ने विशेष मुकुट द्वारा सम्मानित होने के पूर्व एक क़सीदे में जिसमें संसार को शरण प्रदान करने वाले बादशाह की प्रशंसा लिखी थी, यह शेर लिखा था —

शेर

'मेरा सिर शाही सम्मान के मुकुट द्वारा सुशोभित नहीं हुआ,
इस कारण मैं अपमान एवं तिरस्कार की गली में पड़ा हूँ।'

१ एक तारा जो बहुत तेज और प्रकाशमान् होता है।
२ सम्भवतः ईरानी कपड़े की कोई क़िस्म।
३ एक प्रकार का बारीक ऊनी कपड़ा।
४ सिर बाँधने का एक प्रकार का फ़ीता।

(७२) अमीरुज्ज़ुरफा[1] ने इस उत्कृष्ट मुकुट के आविष्कार के सम्बन्ध मे इस तारीख की रचना की

कतआ

"बादशाहो का सरदार, धर्म का रक्षक, हुमायूं
ईश्वर करे हर क्षण पर उसके सौभाग्य में वृद्धि होती रहे।
मुकुट धारण करने की प्रथा लोगो मे चलाई,
उसके उत्तम आविष्कार से यह आम हो गई।
यद्यपि उसका नाम ताजे इज्जत निकला,
उसकी तारीख हुई, 'ताजे सआदत[2]।'"

उन्होने जिन उत्तम वस्त्रो का आविष्कार किया उनमें एक उल्बाकचा है। यह एक प्रकार का जामा[3] है जो आगे से खुला तथा कमर तक लम्बा होता है। यह साधारणत कबा[4] के ऊपर पहिना जाता है।

मसनवी

'हे ईश्वर! जब तक सुन्दर आकाश का वस्त्र रहता है,
दर्शको की दृष्टि में फीरोज़े के रग का।
ईश्वर करे हुमायूं शाह ईश्वर की अनुकम्पा से,
बादशाही वस्त्र अपने शरीर पर धारण किए रहे।
उनका सिर सम्मानित रहे, ऐश्वर्य के मुकुट से,
उनके दासो को प्राप्त रहे सम्मान की खिलअत।'

उनके अन्य आविष्कारो मे एक यह है कि हर रोज प्रात काल जब जमशेद रूपी सूर्य क्षितिज के गरीबान से सिर निकाल कर[5] उत्कृष्ट आकाश के अतलस की खिलअत से अपने शरीर को सजाता है तथा सम्मानित आकाश ससार को शोभा प्रदान करने वाले सूर्य का जरदोजी का मुकुट सिर पर रख कर अपना मुख भूमि के निवासियो को दिखाता है, तो विजयी पताकाओ का बादशाह (७३) अपने शरीर को उस रग की खिलअत से सजाता है जो उस दिन के लिए उपयुक्त होती है। नए रग के वस्त्र धारण करके उसी रग का मुकुट सिर पर रखता है।

मसनवी

'जब देदीप्यमान सूर्य मुकुट बनाता है सोने से,
रखता है वह शाह सिर पर अन्य मुकुट।

१ शिहाबुद्दीन अहमद मुअम्माई।
२ ९३९ हि० (१५३२ ३३ ई०)।
३ एक प्रकार का कोट।
४ एक प्रकार का दोहरा लम्बा अगरखा, चुगा।
५ पूर्व से उदय होकर।

उस हृदयग्राही सूर्य का मुख,
नहीं उदय हुआ दो दिन तक एक परीधान से[1]।'

शनिवार के वस्त्र

क्योंकि शनिवार का सम्बन्ध शनि ग्रह से है और ज्योतिषियों के विश्वास के अनुसार शनि ग्रह का रंग काला होता है अतः विजयी एवं सफल बादशाह उस दिन अपने शाही शरीर को काले वस्त्र से शोभा देते हैं। उनका मुख, जो सूर्य के समान है, लोगों को बृहस्पति ग्रह के समान ज्ञात होता है और रात्रि के अंधेरे में चमकता है। समस्त प्रशंसनीय विद्वानों के हृदय में यह बात स्पष्ट होगी कि काला वस्त्र भय प्रदर्शित करता है। इस प्रकार अन्तिम पैगम्बर[2], जो हमारी शुभ कामनाओं एवं प्रशंसाओं के पात्र हैं, मक्का विजय[3] के दिन काली पगड़ी बाँधे थे और इस अवस्था में उन्होंने अपना अद्वितीय सौन्दर्य काफिरों एवं पथ भ्रष्टों को दिखाया था। अबू मुस्लिम मर्वज़ी[4] के विषय में कहा जाता है कि उसने अपने आक्रमण के समय, कुछ दिन पूर्व अपने सेवकों को (७४) आदेश दे दिया था कि वे सब एक ही रंग के वस्त्र धारण करें। जिस दिन उन लोगों ने काले वस्त्र धारण किए तो लोगों के हृदय भयभीत हो गए। उन लोगों ने उस रंग को अपने लिए चुन लिया। अब्बास (ईश्वर उनसे संतुष्ट रहे) की संतान[5] खिलाफत एवं प्रताप के दिनों के प्रारम्भ में अपने राज्य एवं प्रभुत्व के अन्त तक उसी (रंग के) वस्त्र धारण करती थी। उनकी पताकायें एवं उनके शासन प्रबन्ध के अन्य चिह्न उसी रंग के थे।

मिसरा

'काले के ऊपर कोई भी रंग नहीं होता।'

रविवार के वस्त्र

रविवार सूर्य से सम्बन्धित है। सूर्य का रंग पीलापन लिए होता है। ऐश्वर्य के स्वामी बादशाह पीले रंग के वस्त्र, जिसकी प्रशंसा कुरान शरीफ की आयत में इस प्रकार की गई है धारण करते हैं —'हलका पीला, शुद्ध एवं उत्तम रंग का, दर्शकों के लिए प्रशंसनीय[6]। सूर्य के समान, जो संसार को प्रकाश देता है, बादशाह सिंहासन पर आरूढ़ होते हैं, और न्याय के प्रकाश की किरणें फैलाते हैं।

सोमवार के वस्त्र

सोमवार का सम्बन्ध चन्द्रमा से होता है। उन दिनों में जब चाँद पूरा होने वाला होता

१ दो दिन तक एक ही रंग के वस्त्र नहीं धारण करता।
२ हज़रत मुहम्मद।
३ १० रमजान ८ हि० (१ जनवरी ६३० ई०)।
४ मर्व के अबू मुस्लिम ने उमय्या वंश के खलीफ़ाओं, जो ४१ हि० (६६१ ई०) से १३२ हि० (७४९-५० ई०) तक राज्य करते रहे, के राज्य का अन्त कर दिया।
५ अब्बासी खलीफ़ा १३२ हि० से ६५६ हि० (१२५८ ई०) तक राज्य करते रहे। इस वंश में कुल ३४ खलीफ़ा हुये। अन्तिम खलीफ़ा अल-मुस्तासिम था जिसका अन्त हुलाकू ने कर दिया।
६ कुरान शरीफ से उद्धृत।

है वे सफेद वस्त्र धारण करते हैं अन्यथा हरे वस्त्र जिनकी प्रशंसा में अल्लाह ने कुरान शरीफ में कहा है, "उनपर होंगे हरे वस्त्र, उत्तम रेशम के तथा भारी जरदोजी के।" स्वर्ग वालों के वस्त्रों का भी रंग एवं गुण यही होता है।

मंगलवार के वस्त्र

(७५) मंगलवार का सम्बन्ध रक्त पीने वाले मंगल ग्रह से है और क्योंकि उसका रंग लाल होता है अतः बादशाह, जिसके सेवक बहराम सरीखे हैं, लाल वस्त्र धारण करके सिंहासनारूढ़ होते हैं। उस दिन मित्रों की सहायता एवं शत्रुओं का संहार करने वाले बादशाह के न्याय के आशीर्वाद से दुष्ट लोग अपनी कुकृतियों का दुष्परिणाम भोगते एवं सदाचारी आशा एवं शान्ति के वृक्ष से सौभाग्य एवं सफलता के फल चुनते हैं।

बुधवार के वस्त्र

बुधवार का सम्बन्ध बुध ग्रह से है अतः बादशाह कभी राख के रंग के कभी नील रंग के और कभी उलचा[1] के वस्त्र धारण करते हैं।

बृहस्पतिवार के वस्त्र

बृहस्पतिवार का स्वामी बृहस्पति ग्रह है। उस दिन वे सुरमई और कभी आस्मानी रंग के वस्त्र धारण करते हैं। उस दिन वे 'अहले सआदत" के साथ रहते और उनके लिए कृपा के द्वार खोलते हैं।

शुक्रवार के वस्त्र

शुक्रवार का सम्बन्ध शुक्र ग्रह से है। उस दिन वे हरे अथवा सफेद वस्त्र धारण करते हैं और कयामत तक स्थायी रहने वाली अनुकम्पा के साकी के हाथ से सफलता की मदिरा पीते हैं। कुछ प्रसिद्ध आलिमों के लेखों से ज्ञात होता है कि हरा रंग प्रतिष्ठित नबियों एवं हजरत मुहम्मद (७६) की सन्तान (उनपर सलात एवं सलाम हो[2]) से अधिक सम्बन्धित है। खिज्र[3] अलैहिस्सलाम को यह उपाधि इस कारण प्राप्त हो गई कि वे जिस भूमि पर बैठते थे, उसके चारों ओर हरियाली उग आती थी। एक रिवायत[4] में है कि वे एक बार सफेद पोस्तीन पर बैठ गए। उनके चरणों के आशीर्वाद से वह हरी हो गई। इस प्रकार सभी लोग हरे रंग को उनसे सम्बन्धित बताते हैं और उनकी खिलअत समझते हैं।

१ एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
२ आत्मा की शांति सम्बन्धी वाक्य।
३ खिज्र, एक पैगम्बर जिनके विषय में प्रसिद्ध है कि वे सर्वदा जीवित रहेंगे और जो उन लोगों को जो मार्ग भूल जाते हैं, मार्ग दर्शाते हैं।
४ किसी से सुनी हुई बात ज्यों की त्यों किसी से कहना। हजरत मुहम्मद के मुख से सुनी हुई बात दूसरे को उन्हीं के शब्दों में सुनाना।

शेर

'गुलाब की झाडी का फूल हजरत मूसा की अग्नि[1] की ज्वाला है,
सरो पैगम्बर के हरे वस्त्र धारण किए हुए है।'

इतिहासकार इस बात को प्रामाणिक मानते हैं कि जिस समय खलीफा मामून[2] ने इमाम अबुल हसन अली बिन मूसी अरिजा[3] (ईश्वर उन लोगो से सतुष्ट रहे) को अपने राज्य काल मे अपना उत्तराधिकारी बनाया तो अब्बासियो के काले वस्त्र एव काली पताकाये हरे वस्त्रो एव पताकाओ में परिवर्तित कर दी। इस उल्लेख के समय ससार वालो के बादशाह की मोती बखेरने वाली जिह्वा से यह ज्ञात हुआ कि जब भी उन्होने नबियो के सरदार (ईश्वर का आशीर्वाद उनपर हो) को स्वप्न में देखा, वे हरे वस्त्र धारण किए हुए थे। उपदेश एव काव्य के आकाश के कुतुब, सतो एव रचनाओ के स्वामी, शेख मुसलेहुद्दीन सादी शीराज़ी[4] का कथन है —

शेर

(७७) 'जो कोई उस सरो सरीखे डील डौल वाले की छाया मे रहता है,
वह अपना स्थान हजरत मुहम्मद की हरी पताका के नीचे पाता है।'

मुझे ईश्वर की अत्यधिक अनुकम्पा मे इस बात की आशा है कि विजयी पताका वाले इस बादशाह की अवस्था एव सौभाग्य के वस्त्र, कयामत तक हानि से सुरक्षित रहेगे। ईश्वर की कृपा के हाथ उनके शरीर को नित्य-प्रति नए सौभाग्य के वस्त्र पहिनाते रहे और अभिलाषा की नई खिलअत उनकी योग्यता का शरीर पहिने।

पद्य

'हे ईश्वर जब तक ससार मे चमक-दमक है,
इस जागरूक सौभाग्य वाले बादशाह की अवस्था का वस्त्र।
जो मुकुट को शोभा देता और सिहासन का आभूषण है,

१ वह अग्नि जिसे हजरत मूसा ने सिना के रेगिस्तान में देखा था।
२ अब्दुल्लाह अल मामून, हारूनुर्रशीद का दूसरा पुत्र एव अब्बासियों की सतान का ७वा खलीफा था। वह ६ सफर १९८ हि० (६ अक्तूबर ८१३ ई०) को सिंहासनारूढ हुआ। उसकी मृत्यु १७ रजब २१८ हि० (१८ अगस्त ८३३ ई०) को हुई। वह बडा विद्या प्रेमी एव विद्वानों का आश्रयदाता था। उसके तथा उसके पिता के राज्य काल में अब्बासी खलीफाओं का राज्य उन्नति की चरम सीमा तक पहुँच गया।
३ हजरत अली के वश के ८वें इमाम। खलीफा मामून ने अपनी पुत्री उम्मे हबीब का विवाह उनसे कर दिया और २ रमजान २०१ हि० (२४ मार्च ८१७ ई०) को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया किन्तु बाद में मामून के आदेशानुसार उन्हें विष दे दिया गया और ६ सफर २०३ हि० (१२ अगस्त ८१८ ई०) को उनकी मृत्यु हो गई। जिस समय मामून ने उन्हें अपना खलीफा नियुक्त किया उसी समय हरे वस्त्रों के प्रयोग का भी आदेश दे दिया।
४ शेख मुसलेहुद्दीन सादी शीराजी का जन्म लगभग ५७१ हि० (११७५ ई०) में और मृत्यु ६९१ हि० (१२९२ई०) में हुई। उन्होंने बहुत से काव्यों की रचना की। उनकी रचनाओं में 'गुलिस्ता' एव 'बोस्ता' बडी प्रसिद्ध है।

सौभाग्य के दिनो के समान रोज़ाना नया रहे,
जमशेद तथा जौ[1] सरीखे बादशाह उसके दास रहे।'

विद्वता की लेखनी का न्यायकारी बादशाह द्वारा निर्मित भवनों का उल्लेख करना

इमारते तिलिस्म

(७८) ग्रथो के रचयिताओ के अन्त करण एव प्राचीन तथा नवीन घटनाओ का उल्लेख करने वालो को यह बात स्पष्ट रूप से ज्ञात होगी कि खिलाफत एव नेतृत्व की नीव रखने वालो, इस्लाम के सिद्धान्तो का प्रचार करने वालो, सल्तनत, दुनिया एव धर्म की प्रतिष्ठा, महम्मद हुमायूं बादशाह गाजी को भव्य भवनो एव दृढ किला के निर्माण से अत्यधिक रुचि है। उनके बनवाये हुए सौभाग्यशाली भवनो में से, जो उनके मस्तिष्क में इस रूप से प्रतिबिम्बित हुए और चन्द्रमा सरीखे देदीप्यमान तथा कुशल कारीगरो द्वारा जिनका निर्माण हुआ है और जिनकी बुर्जियां

मिसरा

'शनि ग्रह की ऊँचाई तक पहुँचती है,'

वह आश्चर्यजनक[2] भवन है जिसका राजधानी आगरा मे यमुना नदी क तट पर निर्माण हुआ। उसके बलन्द गुम्बद का प्रकाश ससार पर सूर्य के समान चमकता रहता है।

क़तआ

'आकाश का गुम्बद इतना ऊँचा नहीं है जितना उसका दालान,
स्वर्ग का बाग उतना आकर्षक नही है जितना उसका प्रागण।
आकाश के समान आश्चर्यजनक और स्वर्ग के समान विचित्रता से परिपूर्ण,
अपितु वे दोना उसकी तुलना में साधारण है।
भाग्य के विधाता ने स्वय उसकी नीव रक्खी,
अन्यथा इस प्रकार के भवन के विषय में कौन सोच सकता था।'

अतिशयोक्ति एव अनावश्यक प्रशसा किए बिना यह कहा जा सकता है कि कुशल गणित (७९) वेत्ता उसका चित्र खीचने में असमर्थ है। बडे से बडे लखक की वाणी उसकी सुन्दरता का उल्लेख नही कर सकती। पवित्र शब्द, "यह स्वग के उद्यान का भाग था," उसी की प्रशसा मे कहे गए थे और यह कथन कि —

१ ईरान का प्राचीन बादशाह।
२ तिलिस्म के अर्थ निम्नांकित है —
जादू, माया-जाल, इन्द्रजाल, दृष्टिबध, नजरबन्दी, वह माया रचित विचित्र स्थान जहा अत्यन्त अजीब व गरीब व्यक्ति और चीजें दिखायी पडे और जहा जाकर आदमी खो जायें, फिर उसे घर जाने का रास्ता न मिले। यहा आश्चर्यजनक भवन से तात्पर्य है।

मिसरा

'एक उद्यान जिसमे जल की नहरे बही',

उसी की प्रशसा में है।

क़तआ

'बुलद एव शुभ भवन है,
सौन्दर्य में विचित्र एव पवित्रता मे प्रसिद्ध ।
उसकी छत की तुलना मे ऊँचा आकाश नीचा है,
इसके प्रागण की तुलना में स्वर्ग खतरों से सुरक्षित है।'

इस आश्चर्यजनक भवन मे लम्बाई में एक दूसरे से मिले हुए तीन कमरो का निर्माण कराया गया। प्रथम कमरे के मध्य मे जो सबसे बडा एव अष्टाकार है उसी आकृति का एक हौज बनवाया गया। उस हौज के मध्य में एक सुरग बनाई गई है जिससे उस भवन के अन्य घरो मे पहुँचा जा सकता है। उस सुरग के मुह पर एक अष्टाकार कुब्बे का निर्माण हुआ है। इस कुब्बे से हौज के किनारे मिले हुए है। उसके ऊपर तराशा हुआ एक पत्थर रख दिया गया है। उस गुम्बद की दराजो को चूने एव गारे से इस प्रकार दृढता-पूर्वक भरा गया है कि जितना भी हौज को भरा जाय, जल सुरगो की ओर नही जाता।

(८०) बीच का कमरा भी अष्टाकार है। उसमें बहुत से बरामदे एव खिडकियाँ है। इस कमरे में भी एक हौज बनवाया गया है। इस कमरे के चारो ओर दालाने है। दालान के दो द्वार, जिनम से एक बडे कमरे से मिला है और दूसरा तीसरे कमरे से मिला हैं जो इस भवन के दालान के समान है, इस प्रकार काटे एव लगाये गये है कि एक द्वार के खोलने से दूसरा द्वार बन्द हो जाता है, और एक फाटक बन्द करने से दूसरा फाटक खुल जाता है। इन तीनो कमरो के चारो ओर अन्य बडे बडे कमरे एव ऊपरी तथा नीचे की कोठरिया बनी हुई है। इन्हे बडी सुन्दरता एव सफाई से बनाया गया है। तीसरे कमरे के ऊपर एक भव्य दालान का निर्माण कराया गया है जो आकाश के लिए ईर्ष्या का विषय तथा सूर्य एव चन्द्र के निवास स्थान को भी लज्जा दिलाता है। इस प्रकार सिकन्दर सरीखे ऐश्वर्य वाला बादशाह जब उस हृदयग्राही स्थान को अपने दरबार द्वारा सुशोभित करता है तो सूर्य या जमशेद बिना आकाश की कुर्सी के ज़मीन बोस[1] का सौभाग्य नही प्राप्त कर सकता। उत्तम स्वर में गाने वाला शुक्र ग्रह, इस दरबार के गायको की सगति से वचित होकर उन तक अपनी ध्वनि नही पहुँचा सकता। इस आकर्षक महल की निर्माण-तिथि की रचना करके अमीरुज्जुरफा मौलाना शिहाबुद्दीन अहमद मुअम्माई ने इस प्रकार छोटे बड, युवक एव वृद्ध मे सावधानी के कानो तक पहुँचाई —

पद्य

"उस बादशाह के फरमान से जिसकी उपाधि हुमायूँ है,
धर्म की रक्षा एव न्याय म जो सुलेमान है।

१ धरती-चुम्बन ।

(८१) इस हृदय ग्राही गृह का निर्माण हुआ,
प्राणो को उसके चारो ओर चक्कर काटने के अतिरिक्त कोई अन्य आकांक्षा नही।

इसका प्रागण खाक धूल से शून्य है,
इसके चारो ओर कोई घास फूस नही।
(इसके हौजो का) जल खिज्र के जल के समान है,
इसकी वायु रुहुलकुदुस[1] की श्वांस के समान है।
इसका दीपक अनन्त तक स्थायी रहने वाले प्रकाश से प्रज्वलित है,
इसने अनादि काल की मोमबत्ती से प्रकाश प्राप्त किया है।
इसके द्वार की मिट्टी का चुम्बन करने के अतिरिक्त,
फिरिश्तो की कोई अन्य प्रार्थना नही।
जिस किसी ने प्रवेश प्राप्त कर लिया उसने कहा, अपने आप से,
यही है स्वर्ग का उद्यान और कुछ नही।
बुद्धि ने उसके निर्माण के वर्ष के लिए लिखा,
किसी ने भी ऐसा घर नही देखा'[2]।"

कूश्क का निर्माण

हज़रत बादशाह ने जिन अन्य भवनो का निर्माण कराया उनमे एक कूश्क[3] है जिसे राजधानी आगरा के किले मे उस भवन की भूमि पर बनवाया गया है जहाँ भूतकाल मे हिन्द के हाकिमो के ख़ज़ाने का निर्माण हुआ था[4]। इस महल मे बहुत से कमरे एव दालान है और यह इतना बलन्द है कि जो कोई इसके कोठे पर बैठता है वह अपने आप को सिदरा के बैठने वालो के बराबर पाता है (८२) तथा अपनी आकांक्षा के हाथ से कन्या-राशि से सितारो के गुच्छे तथा चन्द्रमा के ख़लिहान से दाने चुनता है।

शेर

'उसकी ऊँचाई से व्याकुल है,
९ आकाशा के कुब्वे एव सदीर[5] का महल।'

यमुना नदी का जल इस भवन से तीन चार कुरोह[6] तक दृष्टिगत रहता है और उसकी स्वच्छता एव उसका सौन्दर्य, लोगो के हृदय मे आनन्द मगल के द्वार खोल देता है।

१ जिबरील फिरिश्ता।
२ न दीदह चुनीं ख़ानये हेच कस।
ندیده چنین خانه هیچ کس =९४० हि० (१५३३ ३४ ई०)।
३ महल, किले के भीतर का महल।
४ सम्भवत बादलगढ़ के प्राचीन किले से तात्पर्य है।
५ सदीर उस महल का नाम है जिसका निर्माण बहराम गोर के लिये नोमान बिन मुजिर ने किया था। कहा जाता है कि यह एक पत्थर से बनाया गया था।
६ कुरोह (संस्कृत 'क्रोश') लगभग २ मील के बराबर।

'उसका जल तस्नीम[1] एव सल्सवील[2] के जल से मिलता जुलता है,
उसका प्रागण या तो आकाश है और या सर्वदा रहने वाला स्वर्ग।
उसका जल एव उसकी वायु है मसीह की श्वास एव खिज्र के जल के समान,
जीवन की वायु जीवन प्रदान करती है, और हृदय का जल उसकी नहर को
बहाता है।'

ग्वालियार का किला

उन्होने जिन भवनो का निर्माण कराया उनमे एक ग्वालियार का किला है जो ईश्वर की एक विचित्र लीला है। उसे तराशे हुए पत्थरो से बनाया गया है। उसके चारो ओर सजावट के कार्यों से उसके सौन्दर्य मे वृद्धि की गई है।

क़तआ

'उसकी चोटी आकाश है और वह अपनी ऊँचाई के कारण,
आकाश के खरे खोटे की कसौटी है।
उसकी सजावट स स्मृति में,
खिले हुए सहस्रो उद्यान हैं।'

दीन पनाह के निर्माण का प्रस्ताव

न्याय एव उदारता के अधिनियमो के इस सस्थापक ने जिन भव्य एव आश्चर्यजनक भवनो का निर्माण कराया उनमे दीन पनाह[3] नामक नगर है जिसके विषय में बिना अतिशयोक्ति के कहा जा सकता है कि ज्ञान हेतु प्रसिद्ध धर्म निष्ठ लोगो की शरण है। कस्तूरी रूपी लेखनी उस हृदयग्राही (८३) नगर की नीव का उल्लेख करते हुए सुगन्धित समीर से प्राणो को सुवासित कर देती है। शाबान ९३९ हि० (फरवरी मार्च १५३३ ई०) में जब ग्वालियार का किला सिकन्दर रूपी बादशाह के चरणो के आशीर्वाद से घूमने वाले आकाश की ईर्ष्या का विषय बना था, तो एक दिन वे सौभाग्य एव विजय के सिंहासन पर आसीन हुए और आकाश रूपी दरबार के विश्वास-पात्रो एव प्रतिभाशाली नदीमो को सम्मानित दरबार में उपस्थित होने की अनुमति देकर नाना प्रकार की वार्ता में व्यस्त हो गए। इसी बीच म उन्होने दैवी प्रेरणा से सम्मानित जिह्वा द्वारा यह वाक्य कहे कि, "बहुत समय से मैं यह सोच रहा हूँ तथा यह निश्चय कर लिया है कि राजधानी देहली के समीप एक ऐसे भव्य एव विस्तृत नगर का निर्माण कराया जाय जिसकी चहार दीवारी के कगूरे ख्वारनक[4] एव सदीर को ताना दे सकें। उसकी बुर्जों का चौकीदार शनि ग्रह से बराबरी का दावा करने लगे।'

शिहाबुद्दीन अहमद मुअम्माई का सुझाव

(८४) "उस नगर के भीतर एक सात मंजिल के राजप्रासाद का निर्माण कराया जाय। उसके चारो ओर आश्चर्यजनक उद्यान एव वाटिकाये लगवाई जाये। उस भवन के सौन्दर्य एव

१ स्वर्ग की एक नहर।
२ स्वर्ग का एक चश्मा।
३ धर्म का रक्षक, (देखिये अकबर नामा भाग १, मूल पृ० १२४)।
४ बहराम गोर के सदीर नामक महल का दूसरा नाम।

रमणीयता की प्रसिद्धि जो कोई भी सुने वह ससार के सभी कोनो से उसके दर्शनार्थ चला आय। वह नगर, बुद्धिमानो के लिए शरण-स्थान तथा जागरूक एव सावधान लोगों के लिए आश्रय-गृह हो। उसका नाम दीन पनाह रक्खा जाय।" स्वर्ग रूपी दरबार के उपस्थित-गणो ने निष्ठा की वाणी द्वारा उसकी प्रशसा की। इसी बीच में अमीरुज्जुरफा, कुदवतुल फुजला मौलाना शिहाबुद्दीन अहमद मुअम्माई के हृदय में आया कि अक्षरो की सख्यानुसार "शहरे बादशाहे दीन पनाह" से ९४०[1] निकलते हैं, अत यदि उस तारीख में उस नगर का निर्माण प्रारम्भ कराया जाय तो यह बडा ही आश्चर्यजनक सयोग होगा। तत्काल इस विषय मे उनकी सेवा में निवेदन किया गया। हजरत (जहाँबानी) एव सम्मानित दरबार के समस्त दासो ने उस उत्तम सयोग पर आश्चर्य प्रकट किया। दरबार के समस्त उपस्थित गण इन शेरों के अनुसार, कविता को परखने वाले बादशाह की प्रशसा करने लगे

शेर

'तेरी कल्पना ने अपने मस्तिष्क में जो चित्र बनाया,
भाग्य के हाथ से नही हुआ उसके विपरीत कुछ।
जो कुछ तेरी सूझ-बूझ ने पृष्ठ पर लिख दिया,
वह भाग्य के ग्रथ के अनुसार ठीक निकलता है।'

दीन पनाह के निर्माण हेतु ग्वालियार प्रस्थान

सक्षेप में, उपर्युक्त कारण से विजयी एव सफल बादशाह के सम्मानित हृदय में वह सकल्प दृढ हो गया। ईश्वर की अनुकम्पा की प्रतिरक्षा में ग्वालियार से आगरा पहुँचने के उपरान्त (८५) जिलहिज्जा ९३९ हि०[2] के प्रारम्भ मे उन्होने ससार का भ्रमण करने वाले घोडे की लगाम राजधानी देहली की ओर मोडी। उस स्वर्ग रूपी नगर में (ईश्वर उसे समस्त आपत्तो से बचाये) पहुँचने के उपरान्त, उन्होने इस्तेखारा[3] एव इस्तेशारा[4] करके यमुना तट से मिले हुए एक पुश्ते को जहाँ से देहली नगर लगभग ३ कुरोह है, शहर दीन पनाह के लिए स्थान निश्चित किया। मुहर्रम ९४० हि० में (जुलाई-अगस्त १५३३ ई० में) कुशल ज्योतिषियो एव नक्षत्रो का ज्ञान रखने वाले बुद्धिमानो द्वारा चुनी हुई मुहूर्त मे प्रतिष्ठित मशायख, सम्मानित सैयिद एव देहली के आलिमो तथा इमामो का समूह, दान-पुण्य के समुद्र—बादशाह—की सेवा में रवाना हुआ। उत्कृष्ट बादशाह ने सौभाग्य की उस नीव की दृढता के लिए फातेहा[5] पढ कर सर्वप्रथम ईश्वर की उपासना करने वाले अपने हाथों से भूमि पर ईंट रखी। उस पूज्य समूह मे से प्रत्येक एक एक पत्थर लेकर अग्रसर हुआ और इतनी भीड हो गई कि नक्षत्र रूपी सैनिको, कुशल भवन निर्माताओ एव

१ ९४० हि० (१५३३-३४ ई०)।
२ जिलहिज्जा ९३९ हि० (२४ जून १५३३ ई०) से प्रारम्भ हुआ था।
३ किसी कार्य में दैवी सहायता चाहना, किसी धार्मिक कृति द्वारा यह जानना कि अमुक काम शुभ है अथवा अशुभ।
४ मश्वरा, परामर्श करना (दैवी इच्छा का ज्ञान प्राप्त करना)।
५ कुरान शरीफ का प्रथम सूरा जो किसी कार्य को प्रारम्भ करने के पूर्व उसकी सफलता के लिए पढा जाता है।

हृष्ट-पुष्ट मज़दूरों को पत्थरों को ठीक करने एवं गारा लाने का भी अवसर न मिल पाता था। उसी दिन बादशाह के विशेष महल (के निर्माण का कार्य) प्रारम्भ हो गया और इस समय उपर्युक्त वर्ष के शव्वाल मास के अन्त[1] तक दीन पनाह नामक नगर की फ़सील[2], रक्षा-बुर्ज, फ़सील का (८६) ऊपरी भाग जिसपर से पहरा दिया जाता है तथा द्वार लगभग पूरे हो चुके हैं। छोटे-बड़े, ताजीक एवं तुर्क इस बात की आशा करते हैं कि इस भव्य नगर के बड़े बड़े भवनों का निर्माण शीघ्र पूरा हो जायगा। आशा है कि दैवी सहायता एवं प्रेरणा हज़रत बादशाह की सहायक रहेगी और वे इस भाग्यशाली नगर के भव्य भवनों में सल्तनत एवं प्रभुत्व के सिंहासन पर आरूढ़ होकर न्याय एवं उपकार तथा ख़ास व आम की प्रार्थनायें स्वीकार किया करेंगे।

शेर

'उसकी संसार को शरण प्रदान करने वाली छाया अनन्त तक स्थायी रहे,
उसके सम्मान एवं ऐश्वर्य के आकाश का सूर्य क़यामत तक चमकता रहे।'

जनाब अमीरुज्ज़ुरफ़ा मौलाना शिहाबुद्दीन अहमद मुअम्माई ने इसके निर्माण की तिथि के विषय में इस क़तआ की रचना की

क़तआ

"संसार का बादशाह, राज्य एवं धर्म की रक्षा करने वाला,
न्यायकारी, ख़ुसरो, हुमायूँ बादशाह ने।
किया इस भव्य नगर का निर्माण,
ताकि धार्मिक लोग इसमें विश्राम करें।
उसके निर्माण का वर्ष, बुद्धि के अनुसार,
है 'शहरे बादशाह दीन पनाह[3]।'"

(८७) दरबार के दास के मस्तिष्क में यह रुबाई जिस दिन उस नगर का निर्माण प्रारम्भ हुआ, आई

रुबाई

"जब बादशाह ने, जिसकी उपाधि गाज़ी है और जिसका स्वभाव पवित्र है,
आश्चर्यजनक नगर की नींव रक्खी जो स्वर्ग के समान है।
सूर्य के पृष्ठ पर, कुशल लेखक की लेखनी ने,
इसकी तारीख़ 'बुनियादे बिनाये ख़ैर'[4] लिखी[5]।"

१ शव्वाल ९४० हि०, १५ अप्रैल १५३४ ई० में प्रारम्भ हुआ। इस प्रकार मई १५३४ ई० के दूसरे सप्ताह के अन्तिम दिनों से तात्पर्य है।
२ किले की चहार दीवारी।
३ धर्म के रक्षक बादशाह का नगर (९४० हि०/१५३३-३४ ई०)।
४ गुणों के गृह की नींव (९४० हि०/१५३३-३४ ई०)।
५ शेर शाह ने इसका खंडन करा दिया।

कुछ अन्य आविष्कारों को वाक-पटु लेखनी द्वारा प्रसिद्धि देना

जब भाग्य एवं दैवी आदेशों के प्रबन्धकों ने विजयी पताका वाले बादशाह की खिलाफ़त का नक्कारा भूमि एवं आकाश के निवासियों के सावधानी के कानों तक पहुँचा दिया और आकाश के फ़रिश्तों ने संसार की सल्तनत का ख़ुत्बा उनके शुभ नाम से पढ़वा दिया और इस सुखद समाचार की प्रसिद्धि संसार के चारों ओर प्रकाशित करा दी तो हज़रत जहाँबानी के शुभ हृदय में आया कि सिंहासनारोहण के दिन को हर्ष एवं उल्लास का दिन निश्चित करके हर साल उस दिन (८८) जश्न एवं समारोहों का प्रबन्ध किया जाय। कबक[1] के मुकाबला एवं बाण चलाने की प्रतियोगिताओं का आयोजन करके मनुष्यों के समूह के लिए इनाम-इकराम एवं उपकार के द्वार खोल दिए जायें। उस वर्ष के बाद इसी प्रकार जश्न होता रहे तथा राज्य के शुभ-चिन्ता के मार्ग के पथिकों को शाही उपहारों एवं उपकारों द्वारा प्रसन्न एवं लाभान्वित किया जाता रहे। इस प्रकार जमादि-उल-अव्वल ९४० हि० (नवम्बर दिसम्बर १५३३ ई०) के प्रारम्भ[2] में निश्चित प्रथानुसार

शेर

'राज्य के अधिकारी उठे,
भोग-विलास एवं आनन्द-मंगल की गोष्ठी आयोजित की।'

क्योंकि उस अवसर पर विजयी पताका के शाहज़ादे, देशों को विजय करने वाले साहब क़िरान के वंश के चुने हुए (व्यक्ति), सल्तनत एवं ख़िलाफ़त के सहायक, अबुन्नस्र मुहम्मद हिन्दाल मीर्ज़ा का विवाह भी हुआ[3], अतः आनन्द मंगल का आयोजन अधिक से अधिक हो गया। प्रसन्नता एवं हर्ष की किरणें लोगों की स्थिति एवं दशा पर पूर्ण रूप से चमकी। अमीरों एवं राज्य के उच्च पदाधिकारियों ने बादशाही बाग़ में चहार ताक़[4] का निर्माण कराया और उसे नाना प्रकार की उत्तम वस्तुओं एवं कपड़ों से सजाया।

पद्य

'उस स्वर्ग रूपी उद्यान के चारों ओर,
अन्य चार ताक़ बनवाये गए।
उन्हें रूम एवं फ़िरंग[5] के कपड़ों से सजाया गया,
तथा सोने के तारों की कढ़ाई एवं सतरंगे कपड़ों से।'

१ बाण चलाने की प्रतियोगिता।
२ जमादि उल अव्वल ९४० हि०, १८ नवम्बर १५३३ ई० से प्रारम्भ हुआ किन्तु यह तिथि शुद्ध नहीं कारण कि समारोह के लिये सिंहासनारोहण के बाद तीन वर्ष तक कोई आदेश न देना सम्भव नहीं।
३ गुलबदन बेगम ने मीर्ज़ा हिन्दाल के विवाह का विवरण बड़े विस्तार से दिया है। आगे के पृष्ठों में हुमायूं नामा का अनुवाद देखिये।
४ चार दालानों अथवा कमरों वाले खंभों से तात्पर्य है।
५ टर्की तथा यूरोप के।

(८९) कलाकारो एव व्यापारियो ने समस्त बाजारो को सजाया और दूकानो को चीन की चित्र शाला की ईर्ष्या का विषय बना दिया। उत्कृष्ट आकाश को भी उनके सामने लज्जा आने लगी। अमीरुज्जुरफा ने रचना की

पद्य

'शाह के, जिसका ललाट सूर्य के समान चमकता है, चरणो के आशीर्वाद से,
आगरा सजाया गया स्वर्ग के समान।
किसी आँख ने भी नही देखा इस ससार में,
उसपर प्राण न्योछावर हो, क्या ही आश्चर्यजनक है यह।'

यमुना नदी पर जो नौकाये तैरती थी, उनके बाजार सौन्दर्य में स्वर्ग की वाटिका से बढ गए।

मसनवी

'नदी पर जब (दूकाने) लगी,
प्रबन्ध किया उन सब चीजो का जिनकी आवश्यकता थी।
ससार में किसी आँख ने भी नही देखा है,
ऐसा बाजार नदी पर तैरता हुआ।'

कुशल फर्राशो ने सौभाग्य को शरण प्रदान करने वाला बारगाह एव आकाक्षा का खरगाह, भव्य दौलतखाने[1] के निकट लगवाया। दौलतखाने के आसपास सात रग के शामियाने सकरलात (९०) एव फिरग के मखमल के बने हुए थे और आकाश की शानदार सजावट को लज्जित कर रहे थे।

शेर

'एक आकाश कला द्वारा सजाया गया,
इसने एक ससार से दूसरे ससार तक छाया डाली।'

पश्चिम की ओर कस्रे रवा[2] की चोटी आकाश की ओर गरदन उठाये थी और जो कोई इस आश्चर्यजनक भवन पर दृष्टि डालता था, उसकी नवीनता पर आश्चर्यचकित हो जाता था। उन शुभ एव सुखद दिनो में सुलेमान सरीखा बादशाह, पूर्व के खुसरो के आकाश के सिंहासन पर आरूढ होने के समय से लेकर[3] बृहस्पति ग्रह एव शुक्र ग्रह के उदय होने तक[4] इस आश्चर्यजनक दौलतखाने में सफलता एव विजय के सिंहासन पर

मिसरा

'प्रसिद्ध सुलतानो की प्रथानुसार'

१ बादशाह के निवास का महल।
२ चलता फिरता महल।
३ सूर्योदय, प्रात काल।
४ रात्रि तक।

आसीन रहता था और उदारता एवं आश्रय के द्वार अपनी प्रजा के लिए खोले रखता था। जब आकाश के चमकदार महल में असंख्य सितारों की मशालें प्रकट होतीं[1] तो सजे हुए बाजार एवं चलते फिरते पुल की, जो यमुना नदी तट पर बना हुआ था, अत्यधिक मोमबत्तियाँ एवं दीपक आकाश से (९१) बाजी ले जाते थे। संसार को शरण प्रदान करने वाले पादशाह कुछ क्षण के लिए अपने विश्वास-पात्रों सहित सुन्दर चहारताकों एवं उत्तम रूप से सजी हुई दूकानों का निरीक्षण करके दौलतखानये तिलिस्म को वापस चले जाते, और अपने समय के विद्वानों एवं योग्य नदीमों के साथ समय व्यतीत करते थे। उस स्वर्ग रूपी दरबार में हृदयग्राही संगीत एवं सुस्वर गायकों के गाने तथा वादकों का वादन शुक्र ग्रह से भी नृत्य करा देते थे। मुरली तथा कानून की तान, चग एवं अरगनून की ध्वनि

मिसरा

'कुबड़ी पीठ के वृद्धों एवं घुघराले केश के युवकों'

सभी को अत्यधिक प्रभावित करती थी।

उन दिनों तथा रातों में आकाश सरीखी ऐश्वर्य वाली चौसट के वकावल हर क्षण पर फ़ीरोज़े के रंग के आकाश के नक्षत्रों के समान बहुत बड़ी संख्या में भोजन की प्लेटें तैयार कराते थे। नाना प्रकार के भोजनों एवं पेय की अधिकता के कारण और 'फलों में जो वह चुनें तथा पक्षियों के मांस में जिसकी वे इच्छा करें'[2] के उपलब्ध होने के कारण लालच तथा भूख, संसार से विदा हो गई थी।

मसनवी

'बादशाह की सभा में हर बार नए सिरे से,
प्राण को सुख देने वाले थाल प्रस्तुत होते थे।
प्रत्येक दस्तरख्वान पर शाही उत्तम भोजन,
इतना अधिक उपलब्ध था, जितना कोई चाहता।'

(९२) बड़े बड़े जश्नों के दिन ताजीक एवं तुर्क सुल्तानों के यह स्वामी चन्द्र-रूपी ऐसे घोड़े पर, जिसके समान घोड़ा संसार के किसी तबेले में न देखा गया होगा और जिसका चित्र कल्पना के मैदान के द्रुतगामी मस्तिष्क में किसी ने न बनाया होगा, सवार हुए।

कतआ

'शुभ घोड़ा, गुलाब सरीखा मुख, दौड़ने वाला घोड़ा,
दुल्दुल[3] सरीखा घोड़ा, दृढ़ हृदय वाला, द्रुत-गामी।
पलक झपकाते ही वह तै कर ले जाता है,
प्रत्येक दूरी को जिसे कल्पना माल भर में तै न कर पाती।'

१ रात होती।
२ कुरान शरीफ़ की एक आयत।
३ एक घोड़ा जिसे इस्कन्दरिया के शासक ने हजरत मुहम्मद को भेंट किया था और जिसे हजरत मुहम्मद ने हजरत अली को दे दिया था।

उन्होने ऐसे ऐश्वर्य से, जिसके समान ऐश्वर्य वृद्ध आकाश ने, यद्यपि वह लाखो वर्ष से भूमि के गोले के चारो ओर चक्कर लगा रहा है, न देखा होगा, ईदगाह की ओर प्रस्थान किया। अमीर, राज्य के उच्च पदाधिकारी, विश्वासपात्र, प्रतिष्ठित लोग, विजयी सैनिक, समस्त छोटे-बडे, अरबी घोडो पर सवार होकर भाग्यशाली रिकाब के साथ थे। बहराम सरीखे बदला लेने वाले सेवक, सुनहरे जौशन[1] पहिने, जम सरीखे वैभव वाले बादशाह के दायें एव बायें चक्कर लगाते रहते थे।

मसनवी

'खोद[2] एव जौशन मे सब के सब छिपे हुए,
सिर से पाव तक लोहे मे डूबे हुए।
शत्रुता के समय उनमें से प्रत्येक ससार का नष्ट कर सकता था,
लोगो को पराजित करने में उनमे से प्रत्येक रुस्तम था।'

उच्च स्वर वाले नक्कारे की ध्वनि, स्थायी सौभाग्य के सुखद समाचार, आकाश की (९३) कोठरी के एकान्तवासियो के सावधानी के कानो मे पहुँच गये। विजय की मुरली की तान ने दोनो लोको के सौभाग्य के सुखद समाचार, भूमि के रहने वालो मे प्रकाशित कर दिये। उस विजयी दिन मे ईदगाह के मैदान मे इतनी अधिक भीड थी कि वह क्यामत का मैदान ज्ञात होता था। अश्वारोहियों के चलने फिरने से इतनी अधिक धूल उठ गई कि तेजी से चक्कर लगाने वाला आकाश, देखने के लिए आँख नही खोल सकता था।

विजयी बादशाह जब इस ऐश्वर्य एव वैभव से कबक के समीप पहुँचे तो नक्षत्र रूपी अश्वारोहियो के साथ के सेवको एव वीर युवको की सेना ने तत्काल सोने चाँदी के कद्दुओ पर, जो सूर्य एव चद्र के समान आकाश के नक्षत्रों के समूह रूपी बने थे, भृकुटिया के धनुष एव बरौनी के बाणो से, इस कारण कि वे हर क्षण पर सहस्रो हृदय आहत कर देते थे, नि सकोच बाण चलाना प्रारम्भ कर दिया। तत्काल बाणो की मार से सुनहरे रुपहले कद्दू टुकडे (९४) टुकडे हो कर शिहाबे साकिब[3] के समान आकाश से भूमि के नीचे गिर पडे। दासो के आश्रय प्रदान करने वाले बादशाह ने उन कुशल बाण चलाने वालो को घोडो एव खिलअत के पुरस्कार द्वारा सम्मानित करके, आकाश का चक्कर लगाने वाले घोडे की लगाम भव्य दीवानखाने की ओर मोडी।

मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज के उपरान्त वे आकाश रूपी सिंहासन पर आरूढ हुए। दृढ नीव वाले राज्य के स्तम्भ, उच्च पदाधिकारी एव प्रतिष्ठित लोग दरबार में उपस्थित हुए। अमीर, उपचकी, सद्र एव विश्वास-पात्र उपहार प्रस्तुत करके अपने-अपने स्थान पर खडे हो गए। हातिम सरीखे उस बादशाह के उदार हाथो ने उपर्युक्त धन को तीन भागो मे विभाजित कर दिया। एक भाग अरबाबे दौलत[4] को बाँटा गया। राज्य के स्तम्भ अमीर हिन्दू बेग को आदेश हुआ कि

१ कवच, जिरह।
२ शिरस्त्राण।
३ टूटने वाला तारा, उल्का।
४ दौलत विभाग के अधिकारी।

उस धन को उन लोगों को बाँट दे। एक भाग असहाबे सआदत[१] का प्रदान हुआ। शरफुल मुल्क मौलाना मुहीउद्दीन मुहम्मद फरगरी को उसके विभाजन का आदेश हुआ। अन्य भाग जो अह्ले मुराद[२] (९५) को प्रदान हुआ, उसे बाँटने का दरबार के विश्वास-पात्र अमीर उवैस मुहम्मद को आदेश हुआ।

उस दिन प्रतिष्ठित हकीम मौलाना यूसुफी ने, जिनका श्वास ईसा मसीह के समान[३] था, एक कसीदा प्रस्तुत किया जिसका प्रथम शेर इस प्रकार है

शेर

'भोग-विलास एवं (मदिरा)-पान का शोर, आकाश तक पहुँचा है,
हुमायूँ शाह के सिंहासनारोहण की ईद[४] आ गई है।'

जामा खाना[५] में उन्हें एवं अत्यधिक अमीरों तथा प्रतिष्ठित लोगों को सम्मानित खिल-अतें प्रदान की गईं। दासता की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए उन्होंने पुनः निष्ठा की लेखनी द्वारा बादशाह के राज्य के सर्वदा स्थायी रहने की शुभ-कामनायें हृदय पट पर लिखीं।

मसनवी

'कि हे बादशाह! संसार तेरी शरण में रहे,
शत्रुओं के सिर तेरे मार्ग की धूल रहे।
तेरे शुभ सिंहासनारोहण के दिन के समान,
तेरे लिए हर दिन नई ईद हो।
सरो के समान संसार के दुःख से तू मुक्त रहे,
बिना सीमा के प्रताप से तू प्रसन्न रह।'

नये नवरोज़ का आयोजन

इसी प्रकार बुद्धि को समझने वाले बादशाह ने बसन्त ऋतु के, उस समय जब दिन रात बराबर होते हैं, जश्न का आयोजन प्रारम्भ कराया। प्राचीन नवरोज़[६] का (जश्न) समाप्त कर दिया गया कारण कि उस दिन मजूस[७] लोग ईद[८] मनाते थे। हनीफ धर्म[९] के मुजतहिद[१०] लोग उनकी प्रथाओं

१ सआदत विभाग के अधिकारियों को।
२ मुराद विभाग के अधिकारियों को।
३ जिस प्रकार ईसा मसीह मुर्दों को जिन्दा कर देते थे, उसी प्रकार वे भी।
४ जश्न का उत्सव।
५ शाही वस्त्रों के प्रबन्ध का विभाग।
६ जो २१ मार्च के लगभग होता है।
७ अग्नि पूजक लोग, आतश परस्त; चन्द्र अथवा सूर्य की उपासना करने वाले।
८ खुशी का समारोह।
९ धर्मपरायण हजरत इब्राहीम के धर्म के अनुयायी। यहाँ मुसलमानों से तात्पर्य है।
१० धार्मिक विषयों (इस्लामी) में विवेकपूर्ण निर्णय देने वाला।

का पालन निंदनीय समझते हैं। रमजान ९४० हि० (मार्च-अप्रैल १५३४ ई०) में[१], जब प्रकाश का (९६) स्रोत चहार बाग[२], हजरत जहाँबानी के वहाँ पहुँचने के कारण इरम के उद्यान की ईर्ष्या का विषय बना था अपितु स्वर्ग के ऐश्वर्य से भी बढ जाने का दावा कर रहा था, १३वें दिन बसन्त ऋतु के उस समय जब दिन-रात बराबर होते हैं, बादशाही दरबार के प्रबन्धक एवं ईश्वर की छाया के कार्यकर्ता, जश्न की सुन्दरता के लिए यथासम्भव प्रयत्न करने लगे[३]। संसार को शरण प्रदान करने वाले बादशाह ने उस समय जब सूर्य ने मेष राशि को अपने प्रकाश से स्थायी सम्मान प्रदान किया राशियों के खरगाह में स्थान ग्रहण किया और खिलाफत की चौखट के समीप खडे होने वालों को सम्मानित खिलअत एवं उचित मसब प्रदान करके सातवें आकाश पर पहुँचा दिया।

उस सभा में जलाल खां वल्द सुल्तान अलाउद्दीन को पताका एवं नक्कारा प्रदान करके प्रतिष्ठित किया गया। तुर्क अमीरों में से विशेष गोष्ठी के सहचर और सम्मानित दरबार के दरबारी अमीर उवैस मुहम्मद को, जिसके व्यवहार का सौन्दर्य, प्रशसनीय गुणों एवं नाना प्रकार की (९७) सचरित्रता से सुशोभित था, उत्कृष्ट अमीर एवं उत्तम स्वभाव वाले नदीम बेग मुहरदार को, जो भाग्यशाली बादशाह का कूकुल्ताश एवं राज्य के चुने हुए अमीरों में से था, अमीर जलाल बाबाये कूचीन, अमीर निजामुद्दीन अब्दुल गफ्फार तवाची, अमीर मुहतरम, अमीर हाजी मुहम्मद कोकी, एवं अमीर आशिक बकावल को चत्रतूक[४] प्रदान करके उनके गर्व के सिर को ऐयूक[५] की बलन्दी तक पहुँचा दिया। अफगान अमीरों में से महमूद खां सरवानी, जलाल खां बिन (९८) नसीर खां, जलाल खां बिन दरिया खां को भी उसी सम्मान द्वारा प्रतिष्ठित किया गया। अमीर तुर्क अली, शेख कूरन, काजी मजदुद्दीन, बहादुर खां एवं कुतुब खां वल्द शेर खां ने जीलूचा[६] द्वारा पुरस्कृत होकर एमारत की मसनद पर पाव रक्खे। पवित्र मशायख के वंश के कुब्बा ख्वाजा तकी उद्दीन वाकी, बायजीद खां वल्द मुहम्मद खां जबरी, एवं गदाई खां को रिकाब[७] प्रदान करके उनके प्रति दया एवं कृपा प्रदर्शित की गई। उस भाग्यशाली दिन को उत्कृष्ट कवियों के समूह में से ईसा मसीह के समान श्वास रखने वाले, अनवरी[८] रूपी मौलाना यूसुफी, प्रतिष्ठित अमीर वली बेग, अमीर

१ यह तिथि भी शुद्ध नहीं कारण कि १३ रमजान जिसका आगे उल्लेख किया गया है २८ मार्च १५३४ ई० को पडी। इस समय हुमायूँ आगरा में न था। सम्भवत रमजान ९३८ हि० (अप्रैल १५३१ ई०) अधिक उचित है कारण कि हुमायूँ उस समय आगरा में था।

२ देखिये बाबर नामा, पृ० २११, २१२, २२४।

३ इतिहासकारों के इस विचार का, कि अकबर ने इस उत्सव का आविष्कार किया, उपर्युक्त वर्णन से खण्डन होता है। जहांगीर के राज्य-काल में इस उत्सव को और भी महत्व प्राप्त हो गया था।

४ आईने अकबरी में आईने शिकोहे सल्तनत के प्रसग में लिखा है कि चत्र तूक एक प्रकार का अलम(पताका)होता है किन्तु उससे छोटा होता है। तुमनतूक (तुमन तोग), चत्र तूक के समान होता है किन्तु वह उससे लम्बा होता है। दोनों केवल अत्यधिक प्रतिष्ठित एवं महान् अमीरों को ही प्रदान किये जाते थे।

५ एक तारा जो बहुत तेज और प्रकाशमान होता है।

६ छोटा ऊनी कोट अथवा कालीन किन्तु यहाँ कोट से तात्पर्य है।

७ रिकाब -घोडे की काठी का पायदान जिसमें पाव रख कर चढते हैं, घोडा, सवारी का ऊट। यहां सम्भवत घोडे से तात्पर्य है।

८ प्रसिद्ध फारसी कवि।

(९९) यम्कूरची[1] एव सौभाग्यशाली मौलाना मुहम्मद शाह ने उत्तम कसीदे प्रस्तुत किए और घोडो एव सम्मानित खिलअतो द्वारा प्रतिष्ठित हुए। मौलाना यूसुफी के कसीदे के दो शेर इस प्रकार है —

शेर

संसार के सौभाग्य को प्रसन्नता का एक मार्ग मिल गया,
जमशेद सरीखे हुमायूँ शाह का नवरोज आया।
जम सरीखे हुमायूँ का नवरोज एव उसका आदेश,
परिवर्तन के भय से शून्य, कजा व कदर[2] के समान है।'

अमीर वली बेग के कसीदे का प्रथम शेर इस प्रकार है —

'मैं जो चिन्ता के समुद्र में बूँद था,
व्याकुलता के कारण, परेशानी के भवर मे सर्वदा डूबा हुआ।'

मौलाना मुहम्मद शाह के कसीदे के प्रथम दो शेर इस प्रकार है

शेर

'हे ! तेरा मुख पसीने की बूँदो के कारण भीगी हुई गुलाब की पखडियो के समान ताजा है,
उसपर घूँघर वाले केश चन्द्रमा के घेरा में विघ्न डालते है।
तेरे लाल होंठ प्राण देते हैं, तेरे डील-डौल का सरो हृदय को छीन लेता है,
तेरे केश बलाओ का जाल और तेरे नर्गिस[3] उपद्रवकारी है।

इस लेखक ने भी उपर्युक्त दिन की बधाई मे एक कसीदे की रचना की और समस्त कवियो की भाँति, घोडे एव वस्त्र के पुरस्कार द्वारा सम्मानित हुआ। उस कसीदे के प्रथम दो शेर इस प्रकार है —

शेर

(१००) 'हे ! तेरी सुन्दरता का नक्षत्र शाही के आकाश का सूर्य है,
तेरे मुख के प्रकाश से प्रज्वलित है, चन्द्र से मछली तक।
ईश्वर की कृपा से प्राप्त हुआ तुझे पुन ,
जिस प्रकार तेरा नाम हुमायूँ है, बादशाही नवरोज।'

अन्त के दो शेर इस प्रकार है —

१ कूर्चियों का मुख्य सरदार।
२ दैवी आदेश जिसका उल्लघन सभव न हो।
३ नेत्र।

शेर

'जब तक प्रत्येक बहार में मेष राशि, सूर्य द्वारा सम्मानित हो,
जहाँ पनाही[1] का सिंहासन तेरे अधीन रहे,
जब तक नवरोज़, वाटिका को हरा वस्त्र प्रदान करता रहे,
तेरी खिलअत द्वारा प्रतिष्ठित लोग सम्मानित होते रहे।'

उसी दिन सर्वसाधारण के रक्षक अमीर उवैस मुहम्मद ने उत्कृष्ट बादशाह की सेवा में यह ग़ज़ल प्रस्तुत की —

शेर

तेरा मुख सुन्दरता के कारण, ऐश्वर्य के आकाश का सूर्य है,
तेरे डील-डौल का पौधा प्राण के उद्यान में सरो के समान है।
मेरी आशिकी की तुलना वामिक[2] तथा मजनू[3] से मत कर,
कारण कि तेरी सुन्दरता के लिए मेरा प्रेम उनसे कहीं बढ़कर है।
अपनी सुन्दरता के कारण लैला समस्त संसार में प्रसिद्ध हो गई है,
इसी कारण कि मजनूँ के पवित्र प्रेम की वह प्रतिबिम्ब थी।
(१०१) जब उस गुलाब ने रक़ीब को गाली देने के लिए अपने मीठे ओठ खोले,
उसी खेद में मेरा हृदय सैंकड़ो टुकड़े एवं कली के समान रक्त से भरा है।
हे उवैस! समस्त संसार आनन्द मंगल हर्ष एवं उल्लास से परिपूर्ण है,
हुमायूँ के इस उत्कृष्ट एवं हृदयग्राही नवरोज़ से।'

संक्षेप में, जब समय ने अब्बास की सन्तान के वस्त्र धारण कर लिए और नक्षत्रों का दस्तरख्वान

मिसरा

'आकाश की सभा में बिछाया गया'

तो शाही दस्तरख्वान को शोभा प्रदान करने वालों ने आतिथ्य का दस्तरख्वान बिछाकर इतना अधिक भोजन, पेय एवं मिष्टान्न प्रस्तुत किये कि दो जिह्वा वाली लेखनी द्वारा उसका उल्लेख असम्भव है तथा क़लम द्वारा उनके सौन्दर्य एवं स्वाद की चर्चा मुमकिन नहीं।

मसनवी

'शुद्ध एवं विभिन्न रंगों के शरबतों ने,
सूर्य के प्रकाश के समान अंधकार को दूर करता है।

१ संसार को रक्षा प्रदान करना।
२ एक प्रेमी जो उज़्रा पर आशिक़ था।
३ लैला का आशिक़। कहा जाता है कि वह लगभग १०३ हि० (७२१ ई०) में जीवित था। उसका नाम क़ैस था।

(९९) यम्कूरची[1] एव सौभाग्यशाली मौलाना मुहम्मद शाह ने उत्तम कसीदे प्रस्तुत किए और घोडो एव सम्मानित खिलअतो द्वारा प्रतिष्ठित हुए। मौलाना यूसुफी के कसीदे के दो शेर इस प्रकार है —

शेर

'ससार के सौभाग्य को प्रसन्नता का एक मार्ग मिल गया,
जमशेद सरीखे हुमायूँ शह का नवरोज आया।
जम सरीखे हुमायूँ का नवरोज एव उसका आदेश,
परिवर्तन के भय से शून्य, कजा व कदर[2] के समान है।'

अमीर वली बेग के कसीदे का प्रथम शेर इस प्रकार है —

'मै जो चिन्ता के समुद्र में बूँद था,
व्याकुलता के कारण, परेशानी के भवर मे सर्वदा डूबा हुआ।'

मौलाना मुहम्मद शाह के कसीदे के प्रथम दो शेर इस प्रकार है

शेर

'हे ! तरा मुख पसीने की बूँदों के कारण भीगी हुई गुलाब की पखडियो के समान ताजा है,
उसपर घूँघर वाले केश चन्द्रमा के घेरा म विघ्न डालते है।
तेरे लाल होठ प्राण देते है, तेरे डील-डौल का सरो हृदय को छीन लेता है,
तेरे केश बलाओ का जाल और तेरे नर्गिस[3] उपद्रवकारी है।

इस लेखक ने भी उपर्युक्त दिन की बधाई मे एक कसीदे की रचना की और समस्त कवियो की भाति, घोडे एव वस्त्र के पुरस्कार द्वारा सम्मानित हुआ। उस कसीदे के प्रथम दो शेर इस प्रकार है —

शेर

(१००) 'हे ! तेरी सुन्दरता का नक्षत्र शाही के आकाश का सूर्य है,
तेरे मुख के प्रकाश से प्रज्वलित है, चन्द्र से मछली तक।
ईश्वर की कृपा से प्राप्त हुआ तुझे पुन ,
जिस प्रकार तेरा नाम हुमायूँ है, बादशाही नवरोज़।'

अन्त के दो शेर इस प्रकार है —

१ कूरचियों का मुख्य सरदार।
२ दैवी आदेश जिनका उल्लघन सभव न हो।
३ नेत्र।

शेर

'जब तक प्रत्येक बहार में मेष राशि, सूर्य द्वारा सम्मानित हो,
जहाँ पनाही[1] का सिंहासन तेरे अधीन रहे,
जब तक नवरोज, वाटिका को हरा वस्त्र प्रदान करता रहे,
तेरी खिलअत द्वारा प्रतिष्ठित लोग सम्मानित होते रहें।'

उसी दिन सर्वसाधारण के रक्षक अमीर उवैस मुहम्मद ने उत्कृष्ट बादशाह की सेवा में यह गज़ल प्रस्तुत की —

शेर

'तेरा मुख सुन्दरता के कारण, ऐश्वर्य के आकाश का सूर्य है,
तेरे डील-डौल का पौधा प्राण के उद्यान में सरो के समान है।
मेरी आशिकी की तुलना वामिक[2] तथा मजनू[3] से मत कर,
कारण कि तेरी सुन्दरता के लिए मेरा प्रेम उनसे कहीं बढ़कर है।
अपनी सुन्दरता के कारण लैला समस्त संसार में प्रसिद्ध हो गई है,
इसी कारण कि मजनूँ के पवित्र प्रेम की वह प्रतिबिम्ब थी।
(१०१) जब उस गुलाब ने रकीब को गाली देने के लिए अपने मीठे ओठ खोले,
उसी खेद में मेरा हृदय सैकड़ा टुकड़े एवं कली के समान रक्त से भरा है।
हे उवैस! समस्त संसार आनन्द मंगल हर्ष एवं उल्लास से परिपूर्ण है,
हुमायूँ के इस उत्कृष्ट एवं हृदयग्राही नवरोज से।'

संक्षेप में, जब समय ने अब्बास की सन्तान के वस्त्र धारण कर लिए और नक्षत्रों का दस्तरख्वान

मिसरा

'आकाश की सभा में बिछाया गया'

तो शाही दस्तरख्वान को शोभा प्रदान करने वालों ने आतिथ्य का दस्तरख्वान बिछाकर इतना अधिक भोजन, पेय एवं मिष्टान्न प्रस्तुत किये कि दो जिह्वा वाली लेखनी द्वारा उसका उल्लेख असम्भव है तथा कलम द्वारा उनके सौन्दर्य एवं स्वाद की चर्चा मुमकिन नहीं।

मसनवी

'शुद्ध एवं विभिन्न रंगों के शरबतों से,
सूर्य के प्रकाश के समान अंधकार को दूर करना है।

१ संसार को रक्षा प्रदान करना।
२ एक प्रेमी जो उज़्रा पर आशिक था।
३ लैला का आशिक। कहा जाता है कि वह लगभग १०३ हि० (७२१ ई०) के जीवित था। उसका नाम कैस था।

समस्त प्रकार के भोजनों एवं फलों को,
खाने से प्रत्येक दुबला पतला मोटा हो गया।
बादशाह के जश्न में प्रस्तुत किए गए इतने अधिक
कि किसी भी कवि के लिए उनकी चर्चा असम्भव है।'

जन्मोत्सव

(१०२) इसी प्रकार विजयी बादशाह प्रत्येक वर्ष में ३ ज़ीकाद[1] को, जो उनका शुभ जन्म-दिवस है, जश्न एवं भोज का आयोजन कराते हैं। अपने शुभ शरीर एवं अपने विशेष अस्त्र शस्त्र के बराबर सोना तौलवाकर न्योछावर करते हैं[2]। मौलाना यूसुफी ने लिखा है —

शेर

'बादशाह, जिसका ऐश्वर्य जम के समान है, सोने से तोला जाता है
सूर्य के नक्षत्रों[3] को बराबर किया जाता है।'

इस प्रथानुसार ज़ीकाद ९४० हि० के प्रारम्भ में जब उस सल्तनत के आशा का सीधा पौधा परमेश्वर की अनुकम्पा द्वारा तूबा[4] के समान २७ वर्ष तक पाला जा चुका[5] और उनकी अवस्था २८वें वर्ष में पहुँची, तो उस समय जब ग्वालियार का किला शुभ सौभाग्य के प्रकाश द्वारा सुशोभित हुआ[6] और संसार को शोभा प्रदान करने वाले सूर्य के स्थान को ताना देने लगा तो जश्न एवं दावत के प्रबन्ध का आदेश दिया गया। आकाश सरीखे इस किले के बाहर एवं कौसर रूपी

१ बाबर ने हुमायूँ के जन्म के विषय में लिखा है कि "मंगलवार ४ ज़ीकाद ९१३ हि० (६ मार्च १५०८ ई०) को जबकि सूर्य मीन राशि में था, हुमायूं का काबुल के भीतरी किले में जन्म हुआ। मौलाना मसनदी नामक कवि ने 'सुल्तान हुमायूं खां' नामक शब्दों के अक्षरों से जन्म तिथि निकाली। काबुल के एक अन्य साधारण कवि ने 'शाहे फीरोज क़द्र' के अक्षरों से जन्म तिथि निकाली। १२ दिन उपरान्त उनका नाम हुमायूं रक्खा गया।" [**बाबर नामा**, पृ० ८८, देखिये पूव पृ० में **अकबर नामा** का अनुवाद (मूल पृ० १२१), प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद पृ० ३)]।

२ तौलने की प्रथा के विषय में जहांगीर ने लिखा है कि "यह अधिनियम मेरे वालिदे बुजुर्गवार ने निकाला था और यह आज तक प्रचलित है।" (**तुज़ुके जहांगीरी**—सर सैयिद अहमद खां संस्करण पृ० १६३)। अबुलफ़ज़्ल ने **आईने अकबरी** में आईने वज़ने मुक़द्दस के सम्बन्ध में तौलने की विधि का सविस्तार विवरण दिया है। ख्वान्द मीर के इस विवरण से यह पता चलता है कि तौलवाने की प्रथा हुमायूं के राज्यकाल के प्रारम्भ से ही शुरू हो गई थी।

३ यहां कवि ने हुमायूं को सूर्य एवं सोने के सिक्कों को नक्षत्र माना है।

४ स्वर्ग का एक वृक्ष।

५ हुमायूं का जन्म ४ ज़ीकाद ९१३ हि० को हुआ। इस प्रकार ज़ीकाद ९४० हि० अथवा ४ ज़ीकाद ९४० हि० (१७ मई १५३४ ई०) को वह २७ वर्ष का पूरा हो गया

६ दीन पनाह का क़िला शव्वाल ९४० हि० के अन्त में पूरा हो रहा था और इस सम्बन्ध में समारोह इत्यादि का प्रबन्ध हो रहा था। शव्वाल के बाद ही ज़ीकाद मास प्रारम्भ होता है अतः ज़ीकाद के प्रारम्भ में हुमायूं का देहली के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान पर होना सम्भव नहीं। सम्भवतः ज़ीकाद ९३९ हि० के प्रारम्भ से तात्पर्य है। ज़ीकाद ९३९ हि०, २५ मई १५३३ ई० से प्रारम्भ हुआ। हुमायूं ज़िलहिज्जा ९३९ हि० में ग्वालियार से दीन पनाह के निर्माण हेतु देहली रवाना हुआ।

तालाव था। उसके तट पर एक हरा-भरा मैदान आशा के मैदान के समान लम्बा-चौड़ा एवं आकांक्षा के दरबार के समान विस्तृत स्थित था। उसकी ताजगी स्वर्ग की ताजगी से अधिक हृदयग्राही थी और उसकी सुगंधित वायु ततार की कस्तूरी से अधिक खुश्बूदार थी। वही स्थान समारोह हेतु चुना गया। कुशल फर्राशों ने इस हरे-भरे मैदान में, जो आकाश के समान था, उत्तम प्रकार के लाल (१०३) ऊनी कपड़े का खरगाह लगवाया। इसकी देहलीज[1] के समीप कर्म रखा के सरापरदे[2] को स्थापित किया गया। उसकी चोटी मिथुन राशि तथा कृत्तिका नक्षत्र को छूने लगी। १२ राशियों का खरगाह सम्मानित निवास हेतु लगवाया गया। सआदत एवं मुराद के खरगाह भी लगवाये गए जो सातवें आकाश के पार निकल गए। लाल मख़मल के कुन्दल[3], जो १२ राशियों के खरगाह के आगे लगाये जाते, वे अपनी छाया नीले आकाश पर डालते थे। कढ़े हुए एवं बेल बूटों के नाना प्रकार के शामियाने लगवाये गए। उनकी छाया ने संसार को सूर्य की गरमी से बचा लिया। अमीरों, राज्य के उच्च पदाधिकारियों, विश्वासपात्रों एवं निकटवर्तियों, सद्रों, वजीरों एवं उत्कृष्ट राजसिंहासन के समस्त सेवकों ने शुभ दौलतखाने के चारों ओर सुन्दर काम के कढ़े हुए खेमे एवं सजे हुए शामियाने लगा लिए तथा पृथ्वी को खेमे, खरगाह कुब्बों एवं बारगाह द्वारा अचल आकाश की ईर्ष्या का विषय बना लिया।

शेर

'भूमि नक्षत्र रूपी खेमों से,
दृष्टिगत हुई आकाश के समान।'

बादशाह फरीदूँ[4] के समान प्रतिष्ठित एवं चमकते हुए सूर्य की तरह, जो आकाश (१०४) के मध्य में पराकाष्ठा पर पहुँच कर भूमि की ओर झुकने लगता है, २ जीक़ाद को ग्वालियार के किले से स्वर्ग रूपी उस हरे भरे मैदान में विराजमान हुए। दूसरे दिन रविवार को वे सूर्य के समान, जो आकाश के राजसिंहासन पर प्रकट होता है, सोने के राजसिंहासन पर, जो १२ राशियों के खरगाह के द्वार पर था, पहुँचे। उस समय अमीर, वज़ीर, "असहाबे दौलत"[5], उलमा, विद्वान् एवं "अरबाबे सआदत"[6] ने दरबार में उपस्थित होकर प्रथानुसार शुभ जन्म-दिवस की बधाई दी और "अहले मुराद"[7] के समान खिलाफत के आकाश के सूर्य की सफलता की शुभ-कामनायें कीं—

मसनवी

'हे न्यायकारी एवं भाग्यशाली बादशाह,
ऐश्वर्य एवं वैभव के आकाश के सूर्य।

१ दो फाटकों के मध्य का स्थान अथवा बाहरी फाटक एवं घर के मध्य का स्थान।
२ खेमों को घेरने वाली कनातों से तात्पर्य है।
३ वह बड़ा खेमा जो शाही खेमे के आगे लगाया जाता है।
४ ईरान का एक प्राचीन प्रतापी बादशाह।
५ दौलत विभाग के अधिकारियों।
६ सआदत विभाग के अधिकारियों।
७ मुराद विभाग वालों।

तेरे जन्म दिन का जश्न शुभ हो,
आदर-सम्मान का मुकुट तेरे सिर पर हो।'

उस शुभ दिन में आकाश सरीखे वकावलो ने सर्व-साधारण एव विशेष व्यक्तियों के भोजन का प्रबन्ध करके इतना अधिक भोजन, पेय, मुरब्बे एव हलवे प्रस्तुत किए कि भूख एव लोभ के काफिले हिन्दुस्तान से अपना बोरिया विस्तर बांधकर चल दिए। जो लोग सिदरा रूपी दरबार की सेवा मे थे वे नाना प्रकार के भोजनो एव हलवो से भली भांति लाभान्वित हुए। उस ससार को शरण प्रदान करने वाले दरबार में ख्वाजा गयासुद्दीन अली मुस्तौफी ने कसीदा प्रस्तुत किया जिसका प्रथम शेर इस प्रकार है —

शेर

(१०५) 'बादशाह जिसका मुख सूर्य को प्रकाश प्रदान करता है,
जो बादल के समान, ससार पर अपनी छाया डालता है।'

उसे ताजे इज्जत एव अत्यधिक उत्तम खिलअतो द्वारा सम्मानित किया गया।

उसी दिन मध्याह्नोपरान्त दूसरी नमाज के समय, ससार को प्रज्वलित करने वाले बादशाह को ईश्वर की सहायता की तराजू में सोने से तोल कर उस धन को जिसमें प्रचलित १५,००० सिक्के थे, सहायता के पात्रो को बाँट दिया गया। एक भव्य समारोह के लिए अनुल्लघनीय आदेश दिया गया। अमीर एव वजीर उसकी व्यवस्था मे तल्लीन हो गए। वे जो कुछ कर सके और उन्होंने जो उचित समझा उसका सोमवार ४ जीकाद को प्रबन्ध किया। मगलवार का प्रात काल श्वेत पताकाओ का बादशाह अर्थात् नक्षत्रो की सेना वाला सूर्य

मिसरा

'उषा की सफेदी के सरापरदे'

के बाहर निकला और अपने चमकते हुए शरीर से नील आकाश को शोभा प्रदान की तथा नक्षत्रो की सेना को चमकीले वस्त्र पहनाकर, दान-पुण्य करने वाला के हाथ से उपकार का दस्तरख्वान बिछाया।

मसनवी

'उस प्रात को जब ससार के चारो ओर चक्कर लगाने वाला सूर्य,
आकाश के नीले सिंहासन पर आरूढ हुआ।
प्रकाश के चारो ओर पतिंगे के समान, नक्षत्रो के समूह,
घेरे रहे उसे चारो ओर से।
(१०६) मुहम्मद हुमायूँ, पवित्र धर्म का बादशाह,
मुकुट, राजसिंहासन एव मुहर को शोभा देने वाला।
सूर्य के समान उत्कृष्ट सिंहासन पर आसीन हुआ,
उसके चरणा से हुआ, सोने का सिंहासन भाग्यशाली।
उत्कृष्ट शाहजादे बैठे,
आकाश रूपी सिंहासन के समीप।

सेना के सरदार दायें एवं बायें,
खड़े हुए अपने स्थान पर दामा के समान।'

'अहले मआदत" में से एक समूह को, जिनके भाग्य ने उनका साथ दिया, बैठने का सम्मान प्रदान किया गया। कुछ लोग आदरपूर्वक खड़े हुए, बादशाही अनुकम्पा से अपने उद्देश्य की पूर्ति के मुखके उपकार के दर्पण में प्रतीक्षा करने लगे। "अहले मुराद" अपनी मुराद हेतु सेवा की पेटी बाँधकर अपने स्थान पर खड़े हो गए और अनल्लंघनीय फरमान के जारी होने की प्रतीक्षा में प्रशंसा एवं शुभ-कामना में व्यस्त हो गए।

मसनवी

'हे जम सरीखे सम्मान वाले बादशाह, साहब किरा,
सिकन्दर के समान उत्कृष्ट, राज्य विजय करने वाले।
तेरा हृदय संसार के शोक से मुक्त रहे,
हर क्षण पर उसे अन्य प्रसन्नता प्राप्त हो।'

धनुर्धारी जवान उन हाथियों की पीठ पर बैठे जो पर्वत के समान भारी भरकम एवं देव रूपी थे और जिनपर अतलस एवं रेशमी कपड़ा की झूलें पड़ी थीं। रेगिस्तान का पार करने वाले ऊँट, जिनके कोहान पर्वत के समान ऊँचे थे, उत्तम प्रकार के ऊनी कपड़ों के हौदजों से सजाये गए और (१०७) घास के मैदान के चारो ओर पंक्तियों में खड़े किए गए। मीर आखुरों[1] ने शाही तवेले के घोड़ों को सुनहरी जीनों एवं जरवफ्त के गलाफ द्वारा सजाकर निश्चित स्थान पर खड़ा किया। वहराम रूपी यसावल[2], सर्वसाधारण को, जो सिदरा रूपी दरबार में भीड़ लगाये थे, अपने-अपने स्थान पर रोके हुए थे और उन्हें इधर-उधर फिरने न देते थे। बकावलों एवं ख्वान सालारों ने भोजन, पेय, एवं मिठाइयों का इतना अधिक प्रबन्ध किया कि कोई स्थान खाली न रह गया। जो जन-साधारण एकत्र हुए थे वे जो कुछ चाहते प्राप्त करके अपने भूख के कष्ट को दूर करते थे।

शेर

'विचित्र प्रकार का दरबार सजा हुआ था,
जो कुछ दिल चाहता वहाँ उपलब्ध था।'

बहराम रूपी वीर बादशाह के नदी सरीखे दानी हाथों ने दरबार में प्रतिष्ठित शाहज़ादों (१०८) में मुहम्मद हिन्दाल मीर्ज़ा एवं यादगार नासिर मीर्ज़ा को मुकुट एवं बहुमूल्य खिलअत पहनाया और अरबी घोड़े, सोने की जीन, निमच, एवं घोड़ों के आभूषित साज द्वारा सम्मानित किया। इसी प्रकार उन्होंने अब्दुल्लाह सुल्तान एवं सुल्तान अली मीर्ज़ा को भी उत्तम वस्त्र पहनाये। वीरता के जंगल के सिंह अमीर मुबारिजुद्दीन फकीर अली एवं राज्य के बहुत से अधिकारियों ने उस दिन बादशाही उपकार के जामाखाने से बहुमूल्य खिलअतें पहनीं। अपार कृपाओं द्वारा सम्मानित होकर वे अधिक से अधिक निष्ठा एवं स्वामी भक्ति का प्रयत्न करने लगे। मीर्ज़ा कासिम अरगून को तूक़ (तोग) प्रदान करके उसके साथियों की अपेक्षा उसे अधिक प्रतिष्ठित किया गया। उत्कृष्ट अमीर यूसुफ

१ शाही अश्वशाला के घोड़ों के प्रबन्धकों ने।
२ चोबदार से तात्पर्य है।

बेग वल्द इब्राहीम तगाई, अमीर मुहम्मद हुसेन कपक बाफी एवं अमीर बाबा गजब बेगी, जीऊचा द्वारा सम्मानित किए गए और उनका आदर-सम्मान बढ़ा दिया गया। अपने युग के अद्वितीय उस्ताद अली कुली तोपची को मुकुट, जरबफ्त की खिलअत, जड़ाऊ खंजर एवं अरबी घोड़े द्वारा अपने समकालीनों की अपेक्षा अधिक सम्मानित किया गया। ख्वाजा गयासुद्दीन यूसुफ को, जिसे कुछ कारणों से इशराफ के दीवान के पद से पदच्युत कर दिया गया था, मुकुट एवं खास खिलअत पहनाई गई और उसकी दशा के कपोलों से अपार शाही कृपा का प्रकाश चमकने लगा। ख्वाजा (१०९) शाह महमूद भी उस दिन विजारत का पद प्रदान करके सम्मानित किया गया। विशेष वस्त्र धारण करके उसके गर्व का सिर आकाश से भी ऊँचा उठ गया। जो राजदूत गुजरात के वाली के पास से आज्ञाकारिता के प्रतिज्ञापत्र लाया था, वह बहुमूल्य खिलअत द्वारा सम्मानित किया गया। उसे एक घोड़ा, जो चन्द्रमा के समान आकाश का चक्कर लगा सकता था, प्रदान करके उसकी इच्छाओं की भली भाँति पूर्ति की गई। उस शुभ दिन को मीठी वाणी के कवियों ने राज्यों को शोभा देने वाले बादशाह की सेवा में उत्तम कसीदे प्रस्तुत किए। बादशाही कृपाओं द्वारा सम्मानित होकर उन्होंने राज्य एवं सौभाग्य के सर्वदा स्थायी रहने के लिए शुभ-कामनायें कीं। उनमें से सर्वोत्कृष्ट कवि मौलाना यूसुफी ने एक कसीदा पढ़ा जिसके प्रथम ५ शेर इस प्रकार हैं —

पद्य

'समस्त संसार प्रसिद्ध हुआ, आशीर्वाद से,
हुमायूँ शाह के जन्म दिन के उत्सव के, जो जमशेद सरीखा है।
जन्म कुंडली में जो कुछ लिखा है, वह होकर रहेगा,
कलम ने सौभाग्य एवं सफलता उसके लिए लिखी।
यदि वह ऐसा ही भाग्यशाली एवं सफल रहता है तो शीघ्र ही,
तलवार से सूर्य के समान समस्त संसार पर अधिकार जमा लेगा।
लोग उसे दीनार एवं दिरहम से तोलते हैं, किन्तु,
बुद्धि हर क्षण अपनी सूझ-बूझ से घोषणा करती है।
मोती जिसका मूल्य दोनों लोक हैं
उसकी लोग दीनार एवं दिरहम से किस प्रकार तुलना कर सकते हैं ?'

आनन्द-मंगल का फर्श बिछाना, एवं बादशाह के आविष्कारों का परिशिष्ट

(११०) संसार को विजय करने वाले बादशाह के विश्व की शोभा प्रदान करने वाले आश्चर्य-जनक आविष्कारों में से, जिसका उन्होंने आदेश दिया एक अन्य बिसाते निशात[1] है जो सभी की प्रसन्नता एवं हर्ष का साधन है। वह बिसात ग्रह-पथ एवं तत्व सम्बन्धी ग्रहों में विभाजित एवं गोल थी और बहु-मूल्य वस्तुओं से बनी थी। प्रथम वृत्त, जो अतलस रूपी आकाश के अनुरूप है, सदाचारियों के कर्म के

१ आनन्द मंगल का फर्श (कालीन)।

पृष्ठ के समान सफेद है[1], दूसरा नीला, तीसरा शनि ग्रह से सम्बन्धित होने के कारण काला, चौथा जो भाग्यशाली बृहस्पति से सम्बन्धित है, हलके भूरे रंग का, पाँचवा जो मंगल ग्रह से सम्बन्धित है, लाल है, छठा जो सूर्य से सम्बन्धित है, सुनहरे जरबफ्त रंग का है, सातवाँ जो शुक्र ग्रह के अनुरूप है, (१११) चमकदार हरा, आठवाँ जो बुध ग्रह से सम्बन्धित है, बैंगनी रंग का है। इसका कारण यह है कि बुध ग्रह की प्रकृति मिली-जुली है। नीले को मिला देने पर बैंगनी बन जाता है। अन्य मिले जुले रंगो को छोड़कर बैंगनी रंग चुनने का कारण यह है कि कुछ विद्वानो ने बुध ग्रह को सुरमई रंग का बताया है और मिले जुले रंगो मे बैंगनी रंग,सुरमई रंग के निकटतम होता है। इसके अतिरिक्त शनि एवं बुध चक्कर लगाते समय एक दूसरे के निकट दृष्टिगत होते हैं। शनि का रंग काला होता है और बैंगनी रंग काले से बहुत मिलता जुलता है। ९वाँ वृत्त जो चन्द्रमा का ग्रह है १४वी रात के चाँद के समान सफेद है। चन्द्र वृत्त के उपरान्त अग्नि एवं वायु के वृत्त नम से रक्खे गए, तदुपरान्त मिट्टी एवं जल के। विश्व के चौथाई आबाद भाग को सात इक्लीमों में विभाजित किया गया।

पादशाह कभी कभी अपने सफल हृदय के आनन्द-मंगल हेतु इस बिसात को लकड़ी के गोल चबूतरे पर, जो बिसात के बराबर है, बिछवाते हैं। वे स्वयं सूर्य रूपी जरबफ्त के ग्रह में आसीन होकर अपने सौन्दर्य, प्रकाश एवं स्वच्छता की छटा फैलाते हैं। प्रत्येक समूह सातो ग्रहों मे से किसी न किसी ग्रह से सम्बन्धित होने के कारण तत्सम्बन्धी वृत्त में बैठने का आदेश पाता है। (११२) इस प्रकार हिन्दी वंश के अमीर एवं शेख शनि के वृत्त मे, जो काले रंग का है, बैठते हैं। सैयिद एवं आलिम बृहस्पति के वृत्त मे बैठते है, जो हलके भूरे रंग का है। कभी कभी जब लोग उपर्युक्त वृत्तो में बैठे होते हैं तो पासा, जिसके हर ओर आविष्कार की लेखनी से अलग-अलग प्रकार के चित्र बना दिये गये हैं फेंका जाता है। जिसके पाँसे मे जो चित्र निकलता है, वह उसी के अनुसार वृत्त में आसन ग्रहण करता है उदाहरणार्थ यदि किसी के पाँसे में खड़े हुए आदमी का चित्र निकलता है तो वह खड़ा हो जाता है, यदि बैठे हुए आदमी का चित्र निकलता है तो वह बैठ जाता है, यदि टेक लगाये हुए आदमी का चित्र निकलता है तो वह तकिये से टेक लगा लेता है अपितु लेट जाता है। इस प्रकार यह सभा बड़ा विचित्र दृश्य प्रस्तुत करती है एवं आनन्द-मंगल की वृद्धि का साधन होती है। आनन्द वर्धक इस बिसात के लाभो मे से एक यह है कि नाना ग्रहों के वृत्तों में से प्रत्येक ग्रह का वृत्त २०० भागो मे विभाजित है। इस प्रकार सातों वृत्तों में १४०० आदमियो के लिए स्थान है। इस प्रकार ऐसे लोग जो सभा में सर्वदा ऊँचा स्थान प्राप्त करने की खोज में रहते हैं और इस उद्देश्य से नाना प्रकार के कष्ट भोगते है, जब कभी उस स्थान पर पहुँचते है तो फिर कोई झगड़ा नही होता कारण कि प्रत्येक अपनी इच्छानुसार स्थान प्राप्त कर लेता है।

शीशे की सुराहियों में शरबत लाने का आदेश

उस मुकुट एवं सिंहासन के स्वामी के आविष्कारो में से एक अन्य आविष्कार यह है कि

[1] जिस प्रकार सदाचारियों की कर्म पंजिका (नामये आमाल) काली नहीं होती और उसमें उनके विरुद्ध कुछ नहीं लिखा होता, उसी प्रकार वह वृत्त भी सादा था।

(११३) क्योंकि हिन्दुस्तान मे मक्खियाँ बडी अधिक सख्या में होती हैं और वायु के तीव्र गति से प्रवाहित रहने के कारण अत्यधिक धूल उडती रहती है, अत रिकाबदारो[1] को आदेश दे दिया गया है कि सम्मानित दरबार मे खासे का शरबत[2] शीशे की सुराहिया म लायें ताकि दरबारियो का आनन्द मक्खी, धूल एव कूडा पड जाने के कारण भग न हो और वे स्वच्छ एव शुद्ध पेय पी सकें।

नक्कारों के सम्बन्ध में आदेश

इसके अतिरिक्त शाही आदेश हुआ कि आकाश रूपी चौखट के नक्कारा बजाने वाले, सूर्योदय के समय नक्कारा बजाया करें। प्रात काल का नक्कारा जो नमाज एव एबादत के समय बजाया जाता है, "नौबते सआदत" कहलाता है। सूर्योदय के बाद का नक्कारा, जो उस समय बजाया जाता है जब सल्तनत के विभागो के काय प्रारम्भ होते हैं 'नौबते दौलत" कहलाता है। सायकाल का नक्कारा, जब लोग विश्राम करते एव आनन्द-मगल मनाते हैं 'नौबते मुराद' कहलाता है। इस प्रकार प्रत्येक मास की प्रथम एव १४ को जो सूर्य एव चन्द्र के (क्रमश) स्वागत् का समय है खुशी के नक्कारे के बजाने का आदेश दिया गया है। निकट तथा दूर वालो के लिए आनन्द-मगल के द्वार खोल दिए गए हैं।

न्याय का तब्ल

(११४) इसके अतिरिक्त गरजने वाले बादल के समान एक तब्ल बादशाह के दीवान खाने के निकट रख दिया जाता है ताकि जो लोग न्याय चाहते हो वे उस बजा दें। भाग्यशाली नव्वाब[3] सूचना पाकर जाँच कराते हैं। यह निश्चय कर दिया गया है कि यदि कोई किसी से साधारण झगडे का न्याय चाहता है तो तब्ल पर एक चोब[4] मार दे। यदि किसी पर उजूफा[5] न मिलने के रूप में अत्याचार हुआ है तो उसे दो बार बजा दें। यदि किसी अत्याचारी ने किसी की धन सम्पत्ति का अपहरण कर लिया हो अथवा चुरा लिया हो तो तीन बार तब्ल बजा दें। यदि किसी की हत्या के कारण न्याय की याचना करनी हो तो वे चार बार तब्ल को बजा दें। यह तब्ल तब्ले अद्ल[6] कहलाता है।

ईश्वर को धन्य है कि न्याय एव उपकार के इस प्रतीक के राज्यकाल में तब्ल के अतिरिक्त किसी को भी अत्याचार का डडा न खाना पडे और मुरली के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति निराशा का स्वर न निकाले।

मसनवी

'ससार को विजय करने वाले के न्याय से,
मुरली के अतिरिक्त कोई भी क्षण भर के लिए विलाप नही करता।

१ भोजन एव पीने की वस्तुओं का प्रबन्ध करने वाले।
२ शाही प्रयोग का शरबत।
३ हुमायू।
४ तब्ल बजाने की छडी।
५ वेतन, वृत्ति।
६ न्याय का तब्ल।

'अत्याचारी आकाश के अत्याचार के हाथ से,
तब्ल के अतिरिक्त कही से आवाज नही निकलती।'

परमेश्वर की असीम अनुकम्पा से आशा है कि कयामत तक इस सुलेमान रूपी बादशाह के न्याय का सूर्य, सृष्टि के गालो पर चमकता रहेगा और यह विद्वत्ता-पूर्ण रचना उनके सम्मानित सेवको द्वारा स्वीकृत और लेखक नाना प्रकार की अनुकम्पाओ द्वारा लाभान्वित हो।

मसनवी

(११५) "खिलाफत को शरण प्रदान करने वाला, ससार में न्याय करने वाला,
न्यायकारी, कला को आश्रय देने वाला।
तू है ऐश्वर्य के आकाश का सूर्य,
विद्वता एव निपुणता के स्वामियो को दान करने वाला।
मै हूँ कविता की वाटिका का बुलबुल,
मैंने तेरी कृपा की वाटिका में स्थान ग्रहण कर लिया है।
इस उद्यान में यदि मुझे सम्मान प्राप्त हो,
तो तेरे सौभाग्य के गीत गाऊँ।
इसके अतिरिक्त मेरी कोई अन्य इच्छा नही,
कि मै तेरा गुण गान करता रहूँ।
हे सफल बादशाह! तेरा इतिहास (लिख कर)
मैं युग के दामन को मोतियो से भर दूँ।
फिरदौसी[1] एव अनवरी की प्रथानुसार,
मै कविता को नए वस्त्र प्रदान करूँ।
मैं हृदय-ग्राही 'जफर नामा'[2] की रचना करूँ,
ताकि उसका प्रेम लोगो के हृदय से शान्ति छीन ले।
(११६) उसके क्रम[3] का सौन्दर्य हृदय से चेतना छीन ले,
शरफ की सुन्दर रचना[4] को लज्जित कर दे।
शर्त यह है कि तेरा आदेश हो जाय,
बिना आदेश के प्रारम्भ नही कर सकता।
और तेरे उपकार के बादल से,
जिसकी अनुकम्पा बहार की ऋतु से अधिक है।

१ फिरदौसी —अबुल कासिम हसन बिन शरफ शाह फिरदौसी तूसी शाहनामा के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ का रचयिता था। शाहनामा में ईरान के प्राचीन बादशाहों की पौराणिक कथायें हैं। ८९ वर्ष की अवस्था में ४११ हि० (१०२० ई०) में उसकी जन्म भूमि तूस (मशहद) में उसकी मृत्यु हो गई।
२ जफर नामा का लेखक शरफुद्दीन अली यज्दी था। यहा हुमायू की विजयों के इतिहास से तात्पर्य है।
३ जफर नामा के क्रम का।
४ जफर नामा।

तू मेरी आशाओ की वाटिका मे मोती वरसा सकता है,
मेरी आशा के पौधे में फल लगा सकता है।
क्योकि तू उपकार का दस्तरख्वान अपने आदमियो के सामने बिछाता है,
मेरी योग्यतानुसार मुझे सम्मानित कर।
हे सदाचारी वादशाह ! तेरे राज्यकाल में,
अत्यधिक योग्य एव निपुण लोग है।
महानता के साधन अपने हाथो में ले लिए है,
पहिन ली है प्रतिष्ठा की टोपी अपने सिर पर।
(११७) मैं उच्च वश से भी हूँ, मुझमें योग्यता भी है और शिष्टाचार भी,
परम्परागत गुण एव अर्जित योग्यताये भी।
अत मै आशा करता हूँ, हे मुकुट के स्वामी,
कि प्राप्त करूँ प्रोत्साहन मै इससे भी अधिक।
क्योकि वृद्धावस्था ने मुझे निर्बल बना दिया है,
इस प्रकार की सेवा वृद्धावस्था का दोप है।
इन बातो का उद्देश्य धन की प्राप्ति नही,
अपनी आकांक्षाओं एव अभिलाषाओं की पूर्ति नही।
किन्तु इस राज्य में किरान से दूर,[1]
मै नही चाहता कि दूसरो से कम रहूँ।
जब तूती को कौवे के बराबर कर दिया जाता है,
वह उड़ता है और आगे अपने शान्ति के घोसले से।
मेरे मस्तिष्क के समान कविता में,
हिन्दुस्तान मे कोई अन्य नहीं।
इस दरबार के सेवको में से किसी को भी,
यदि इस दावे में सन्देह हो।
(११८) आदेश दे ! हे महान् वादशाह,
कि वुद्धिमान् एव विद्वान्।
अपने विद्वत्तापूर्ण मस्तिष्क से,
लायें एक डिबिया ऐसी, मोतियो से भरी हुई।
जब शाह का यह आदेश जारी हो जाय,
मेरी बात की सच्चाई का प्रकाश प्रकट हो जायगा।
हे इतिहासकार ! इससे अधिक बात मत कर,
कि यह वादशाह उत्तम स्वभाव वाला।
अपनी अपार कृपाओ एव निष्ठावानो के प्रति अनुकम्पा के कारण,
करेगा कृपा द्वारा तुझे सम्मानित।

१ अपनी मातृ भूमि किरान (ईरान) से दूर।

क्या तू नही देखता कि बुल्बुल की बातचीत के बिना,
बहार की हवा, आत्मा को शान्ति प्रदान करती है ?
जब चमकता हुआ सूर्य, ऊपर उठता है,
समस्त ससार होता है, उससे लाभान्वित।
क्या ही अच्छी बात कही, जाम के उस ज्ञानी[1] ने,
जिसके द्वारा ज्ञान की माला सुव्यवस्थित हुई ।
(११९) सूर्य से कहने की आवश्यकता ही क्या है ?
कि वह निकट अथवा दूर वालो के सिर पर चमके।
जब चमकता हुआ सूर्य अपना प्रकाश फैलाता है,
तो निकट वाले वचित रहते है और न दूर वाले।
हे ईश्वर ! अरब के रसूल[2] के लिए,
उस बुद्धिमान् के सम्मान की दृष्टि से जिसकी उपाधि 'उम्मी'[3] है।
धर्म की रक्षा करने वाली उसकी सन्तान एव उनके मित्रो के लिए,
कौम के पथ प्रदर्शन के सौभाग्य से।
ऐश्वर्य एव गर्व की वाटिका का यह सरो,
राज्यो को विजय करने वाला फ़िरिश्ता सरीखा।
बादशाही के सिंहासन पर प्रसन्न रहे,
उसके न्याय से राज्य आबाद रहे।
विजय उसकी सेना का साथ देती रहे,
उसके आज्ञाकारी रहे ससार के सुल्तान।
(१२०) उसकी पताका का चन्द्र ससार को प्रकाश देता रहे,
उसकी सेना प्रत्येक रण-क्षेत्र मे विजयी रहे।
समस्त ससार वह विजय करता रहे,
बात इसी पर समाप्त हो गई। वस्सलाम।'

१ नूरुद्दीन अब्दुर्रहमान जामी, हिरात के प्रसिद्ध सूफी एव अनेक सूफी मत के काव्यों के रचयिता (मृत्यु १८ मुहर्रम ८९८ हि०/९ नवम्बर १४९२ ई०)।

२ हज़रत मुहम्मद।

३ हज़रत मुहम्मद की उपाधि 'उम्मी' थी। उम्मी उस व्यक्ति को कहते है जो पढ़ना लिखना न जानता हो।

तारीखे रशीदी

लेखक—मीर्ज़ा हैदर दूगलात

(अलीगढ़ विश्वविद्यालय हस्तलिपि)

हज़रत मख्दूमी नूरा का हिन्द की ओर प्रस्थान और तत्सम्बन्धी कुछ अन्य बातें

(२९६ ब) उस बहार में हज़रत मख्दूम नूरा[1] बदख़्शां के मार्ग से हिन्द की ओर रवाना हुए। ख़ान[2] उनके साथ शहनाज़[3] दर्रे तक जो ७-८ दिन की यात्रा की दूरी पर है उन्हें पहुँचाने के लिये साथ गया। मैं उस समय अक्सू में होने के कारण इस सौभाग्य से वंचित रहा। जब मैं अक्सू से लौटा तो ख़ान ने मुझसे कहा कि, "हज़रत ख़्वाजा नूरा को विदा करते समय मैंने उनसे फ़ातेहा[4] पढ़ने की प्रार्थना की। जब उन्होंने फ़ातेहा पढ़ने के लिए अपने हाथ उठाये तो मैंने निवेदन किया कि, 'आप कृपापूर्वक सर्व प्रथम मीर्ज़ा हैदर के लिए फ़ातेहा पढ़ें। तदुपरान्त मुझको सम्मानित करें।' उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली। सर्व प्रथम तेरे लिए फ़ातेहा पढ़ा। तदुपरान्त मेरे लिए।' "जो लोग उस समय उपस्थित थे उनका कथन है कि ख़ान कई मंज़िल तक (२९७ अ) बराबर हज़रत ख़्वाजा के साथ रहा। जब वे कोई बात कहते तो भाव-अतिरेक

---

१ ख़्वाजा नूरा (नूरुद्दीन) अपने दादा ख़्वाजा नसीरुद्दीन उबैदुल्लाह एहरार के मुरीद थे। उन्होंने मौलाना नूरुद्दीन अब्दुर्रहमान जामी (८९८ हि०/१४९२ ई०) से भी शिक्षा प्राप्त की थी। जामी की मृत्यु के पश्चात् वे इराक़ चले गये और वहाँ मीर हसन यज़्दी तथा मीर सद्रुद्दीन के साथ रहे। तदुपरान्त उन्होंने ६ वर्ष इख़लाक़े जलाली नामक राजनीति एवं नीति शास्त्र के प्रसिद्ध रचयिता मौलाना जलालुद्दीन दवानी (मृत्यु ९०८ हि०/१५०२ ई०) से शिक्षा प्राप्त की। तदुपरान्त वे टर्की एवं मिस्र की यात्रा करते हुये मक्के पहुँचे। वहाँ से वे जद्दा और फिर गुजरात, तदुपरान्त काबुल पहुँचे। वहाँ उन्होंने बाबर से भेंट की। इन यात्राओं में उन्होंने ३ वर्ष व्यतीत कर दिये। जब बाबर पादशाह ने समरक़न्द पर अधिकार जमा लिया, तो ख़्वाजा वहाँ पहुँचे। बाबर के काबुल वापस आ जाने के उपरान्त ख़्वाजा ९३१ हि० (१५२४ २५ ई०) तक समरक़न्द में रहे। वहाँ से वे काशग़र चले गये और दो वर्ष तक वे वहाँ ठहरे रहे। तदुपरान्त वे तुरफ़ान पहुँचे। तीन वर्ष पश्चात् वे तुरफ़ान से काशग़र पहुँचे, और वहाँ कुछ समय ठहर कर यारक़न्द चले गये। ९३७ हि० (१५३० ३१ ई०) में वे यागे हिसार में मीर्ज़ा हैदर के साथ थे।

२ सईद ख़ाँ इब्ने सुल्तान अहमद जिसने तिब्बत तथा कश्मीर पर भी आक्रमण किये। मीर्ज़ा हैदर उसका आश्रित था।

३ रास के अनुसार सम्भवत 'काकास्' अथवा 'करानाश दर्रा'।

४ कुरान का पहला सूरा जो आशीर्वाद हेतु पढ़ा जाता है। मुर्दे की नियाज़ को भी फ़ातेहा कहते हैं।

५ कुछ पद्य जिनका अनुवाद नहीं किया गया।

के कारण खान की आँखो से आँसू गिरने लगते, यहाँ तक कि उपस्थितगण भी प्रभावित हो जाते।[1] क्योंकि यह खान तथा ख्वाजा के अन्तिम दर्शन थे अत वे वियोग के कारण बडे दुखी थे।

सक्षेप मे हज़रत ख्वाजा नूरा हिन्दुस्तान पहुँचे। हिन्दुस्तान के सीमान्त के प्रदेश काबुल तथा लाहौर मीर्ज़ा कामरान के अधीन थे। उसने नम्रतापूर्वक निवेदन किया कि, "आप लाहौर मे निवास करें' किन्तु उन्होने उत्तर दिया कि, "प्रारम्भ ही से मैंने यह सकल्प किया था कि मैं हज़रत पादशाह[2] की सेवा में उपस्थित रहूँगा अत उनकी मृत्यु के प्रति शोक प्रकट करने के लिए हुमायूँ पादशाह की सेवा मे उपस्थित होना मेरे लिए परमावश्यक है। यह कार्य सम्पन्न करने के उपरान्त यदि वापसी हुई तो मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करूँगा।" तदुपरान्त वे हिन्द की राजधानी आगरा की ओर रवाना हुए। पादशाह[3] ने भी उनके आगमन पर बडी प्रसन्नता प्रकट की और उनके प्रति आदर सम्मान प्रदर्शित किया।

शेख पूल (बहलूल) एव मुल्ला परग़री के कारण ख्वाजा की उपेक्षा

उसी बीच में हिन्दुस्तान मे शेख पूल[4] नामक एक व्यक्ति पैदा हो गया था। हुमायूँ पादशाह ने उसका मुरीद[5] होना निश्चय कर लिया था। इसका कारण यह था कि हुमायूँ को विचित्र प्रकार के ज्ञान से तथा दावते (इस्मा) एव तस्खीर[6] से बडी रुचि थी। शेख पूल शयूखियत[7] के वस्त्र धारण करके उनकी सेवा में पहुँचा और उसने इस विषय में उनका विश्वास दृढ करा दिया कि वास्तव मे समस्त उद्देश्य दावत एव तस्खीर द्वारा ही प्राप्त हो सकते हैं। क्योंकि पादशाह को यह बातें पसन्द थी अत वे तत्काल उसके मुरीद हो गए।

इसके अतिरिक्त मौलाना मुहम्मद परग़री नामक एक अन्य व्यक्ति था। यद्यपि वह मुल्ला[8] था किन्तु बडा ही धूर्त था और अपने उद्देश्यो की पूर्ति के लिए चाहे वे नीच से नीच क्यो न हो, घोर प्रयत्न किया करता था। शेख ने मुल्ला मुहम्मद को मिला लिया। दोनो मिलकर पादशाह के (२९७ ब) उद्देश्यो की पूर्ति के विषय में प्रयत्न करने लगे। पादशाह की इस चाटुकारी से वे अपने स्वार्थ की सिद्धि करना चाहते थे।

इस घटना के कुछ समय उपरान्त मैं पादशाह की सेवा में पहुँचा। इसका सविस्तार उल्लेख बाद में किया जायगा। जहाँ तक मुझे विश्वास है उन्होने शेख पूल से तस्खीर तथा दावत के अतिरिक्त कुछ भी न सीखा था। अधिक ज्ञान ईश्वर ही को है। जब प्रामाणिक रूप से यह ज्ञात हो गया कि पादशाह शेख का मुरीद है तो मौलाना मुहम्मद अपितु पादशाह एव उनके समस्त सहायक ख्वाजा

१ कुछ पद्य जिनका अनुवाद नहीं किया गया।
२ बाबर।
३ हुमायूं।
४ शेख फूल अथवा शेख बहलोल।
५ चेला।
६ ईश्वर के नामों का ज्ञान एव सिद्धि प्राप्त करके प्रत्येक कार्य सम्पन्न कर लेने की शक्ति प्राप्त करना।
७ शेख अथवा सूफ़ी मत (मत्त) होने का दावा करके।
८ इस्लाम मे सम्बन्धित विद्याओं का ज्ञानी, आलिम।

नूरा की ओर से, जो पूर्वजों के समय से आदर-सम्मान के पात्र थे, उपेक्षा एव उनका अपमान करने लगे। इस बात का उल्लेख हो चुका है कि जब वे लाहौर से जाने लगे थे तो कामरान मीर्ज़ा ने इस बात की प्रार्थना की थी कि वे लाहौर ही में निवास करें। उन्होने वचन दिया था कि वापसी के समय वे उसकी इच्छा की पूर्ति करेंगे। इस वचनानुसार वे आगरा से लाहौर की ओर रवाना हुए। हुमायूँ पादशाह तथा उनके सहायको ने उनसे ठहरने की प्रार्थना की, किन्तु उन्होंने स्वीकार न किया और लाहौर के लिए चल खडे हुए। ९४३ हि० (१५३६-३७ ई०) मे वे लाहौर पहुँचे। मैं इसके पूर्व ही लाहौर पहुँच गया था। उनके चरणो का चुम्बन करके सम्मानित हुआ।

वे उन दिनो अपनी मारी करमाते वाली जिह्वा से कहा करते थे कि, "मैंने स्वप्न देखा है कि एक बहुत बडा समुद्र है जिसमें वे लोग जो आगरा तथा हिन्दुस्तान में रह गए है घिर गए हैं। केवल हम लोग बडे खतरो का मुकाबला करके निकल सके हैं।" तीन वर्ष उपरान्त जैसा उन्होने कहा था, वही हुआ। इसका सविस्तार उल्लेख (बाद में) किया जायगा।

हिन्दुस्तान की उथल-पुथल के उपरान्त वे कुशलतापूर्वक काशगर के मार्ग से मावराउन्नहर की ओर रवाना हुए। ईश्वर हजरत मुहम्मद तथा उनकी सम्मानित सतान के आशीर्वाद से उनकी छाया वर्षो तक इन शक्तिहीन निष्ठावान् भक्तो के सिरो पर रक्खे।

ख्वाजा नूरा के चमत्कार

(२९८ अ) मैं उस दरबार मे उपस्थित था जिसमे मौलाना मुहम्मद परगरी आगरा से हुमायूँ पादशाह का पत्र लेकर आया था। जिस समय उन्होने उस स्वप्न[1] का उल्लेख किया मैं भी वहाँ मौजूद था। मौलाना मुहम्मद ने विलाप करना तथा अपने अपराधो की क्षमा माँगना प्रारम्भ कर दिया और आग्रह किया कि 'हुमायूँ पादशाह को आप पत्र लिखें'। उसके आग्रह पर उन्होने यह लिखा

शेर

'हे हुमा ! अपनी सम्मानित छाया कदापि मत डाल,
उस प्रदेश में जहाँ कौआ की अपेक्षा तोते[2] कम होते हैं।'

इस चमत्कार में एक विचित्र रहस्य है, कारण कि हुमायूँ पादशाह उस प्रदेश में, जहाँ कौओ से तोता की सख्या कम होती है, अपनी छाया न डाल सके और व्याकुल होकर चले गए[3]।

जिस समय मैं लाहौर मे था, शाह इस्माईल के पुत्र शाह तहमास्प ने एराक से कन्धार पहुँचकर उसे भी मीर्ज़ा कामरान के गुमाश्ता[4] से छीन लिया तथा अपने विश्वासपात्रो को देकर वापस लौट गया। मीर्ज़ा कामरान इस दुर्घटना के कारण बडा दुखी हुआ और उसने मुझसे कहा कि मैं ख्वाजा से इस दुर्घटना के विषय में निवेदन करूँ। दूसरे दिन जब मैं ख्वाजा की सेवा मे उपस्थित

१ डा० रास ने 'ख्वाब' के स्थान पर सम्भवत 'जवाब' पढ लिया था। अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार है, "He also was present when the Khwaja gave answer before-mentioned"

२ हिन्दुस्तान की ओर सकेत है।

३ हिन्दुस्तान से चले जाने की ओर सकेत है।

४ प्रतिनिधियों।

हुआ तो उन्होने मुझसे कहा, कि "मैंने हजरत ईशा[1] को स्वप्न में देखा है। उन्होने मुझसे पूछा कि 'तू क्यों दुखी है ?' मैंने उत्तर दिया कि 'मै मीर्जा कामरान के कारण दुखी हूँ। कन्धार पर तुर्कमानो (२९८ ब) ने अधिकार जमा लिया है। इसका क्या परिणाम होगा ?' हजरत ईशा ने मेरी ओर बढ कर मेरे हाथ पकडे और कहा कि, 'चिन्ता मत कर। यह कार्य सुगमतापूर्वक सम्पन्न हो जायगा।" जैसा उन्होने कहा था, वैसा ही हुआ।

मीर्जा कामरान ने कन्धार पर आक्रमण किया। जो व्यक्ति शाह तहमास्प की ओर से कन्धार में नियुक्त था वह संधि करके मीर्जा कामरान को कन्धार देकर चला गया। तुर्कमानो की ओर से इस प्रकार का व्यवहार बडा आश्चर्यजनक है कारण कि तुर्कमान बादशाहो में अत्यधिक आतक पाया जाता है। उनके सेवक इस प्रकार के कार्य का साहस नही कर सकते। चाहे जो कुछ भी हो, यह कार्य सुगमतापूर्वक सम्पन्न हो गया।

बाबर पादशाह की बहिन खानजादा बेगम, जिसका इस ग्रथ मे कई स्थानो पर उल्लेख हो चुका है, काबुल में थी। वे रुग्ण हो गई। उन्होने एक पत्र ख्वाजा को लिखा और मेरे द्वारा उसे भेज कर मुझसे कहा कि, "ख्वाजा नूरा से इस रोग के उपचार के विषय में पूछना।" उन्होने उस पत्र को शुद्ध रूप में न लिखा था। मैं उस पत्र को शुद्ध रूप मे लिखकर उनकी सेवा मे ले गया। उन्होंने कहा कि, "मैं चाहता हूँ कि तुम्हे एक गुप्त बात बताऊँ।" मैंने उठकर अभिवादन किया। उन्होने कहा, "जो पत्र बेगम ने भेजा हो उसे मुझे दे दे", यद्यपि मैंने उस पत्र को एकान्त मे लिखा था और किसी को उसकी सूचना न थी। मैंने उनके जो चमत्कार देखे उनमे से ३-४ का उल्लेख कर दिया।

जब ख्वाजा नूरा हिन्दुस्तान चले गए तो खान ने अमीन ख्वाजा मुल्तान को, जो अकसू से बदख्शा लाया गया था, हिन्दुस्तान जाने की अनुमति दे दी। यद्यपि यह कार्य राज्य की आवश्यकताओ को देखते हुए किया गया था किन्तु इससे खान का उसके [illegible] स सम्बन्ध टूट न सका। अन्ततोगत्वा अमीन ख्वाजा मुल्तान हिन्दुस्तान चला गया और वहाँ स्वाभाविक मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसका ज्येष्ठ पुत्र मसऊद मुल्तान उसके बाद हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुआ। उनके इस प्रकार हिन्दुस्तान की ओर छिन्न भिन्न हो जाने के उपरान्त खिज्र ख्वाजा मुल्तान, महदी मुल्तान एव ईसान दौलत सुल्तान विभिन्न स्थानो पर निवास करने लगे।

१ ख्वाजा उबैदुल्लाह एहरार, खुरासान के प्रसिद्ध सूफी सन्त जिनके शिष्यों में प्रतिष्ठित सूफी कवि मौलाना नूरुद्दीन अब्दुर्रहमान जामी (मृत्यु ८९८ हि०/१४९२ ई०) भी सम्मिलित थे। बाबर के पिता उमर शेख मीर्जा के वातावरण में दो विद्वानों का विशेष हाथ दिखाई पडता है। एक उनके ससुर यूनुस खा का और दूसरे ख्वाजा उबैदुल्लाह एहरार का जिन्होंने बाबर का नामकरण किया था उबैदुल्लाह एहरार की मृत्यु ८९६ हि० (१४९१ ई०) में हुई। वे नक्शबन्दी सिलसिले के सूफी थे। मीर्जा हैदर ने ख्वाजा नूरा के गुरुओं के सम्बन्ध में ख्वाजा उबैदुल्लाह एहरार के गुरुओं का इस प्रकार उल्लेख किया है। ख्वाजा नसीरुद्दीन उबैदुल्लाह मौलाना याकूब चर्खी के, मौलाना याकूब चर्खी ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द के, ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द मीर कलाल के, मीर कलाल ख्वाजा मुहम्मद बाबाये ममासी के, ख्वाजा मुहम्मद बाबाये ममासी ख्वाजा अली रामतीनी के, ख्वाजा अली रामतीनी ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी के, ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी ख्वाजा आरिफ रिवगरवी तथा ख्वाजा आरिफ रिवगरवी ख्वाजा अब्दुल खालिक गाजदवानी के शिष्य थे।

बाबर पादशाह का शेष हाल एवं उनकी मृत्यु

(३०४ अ) इससे पूर्व बाबर पादशाह के इतिहास का उल्लेख उस स्थान तक हो चुका है जहाँ उनकी विजय की तारीख "फतह व दौलत[1]" के अक्षरों से निकलती है[2]। उन्हे इतना अधिक खजाना प्राप्त हुआ और इतने प्रदेश उनके अधिकार में आ गए कि समस्त ससार वाले उससे लाभान्वित हुए। सक्षेप में मैं हिन्दुस्तान पहुँचा, और जैसा कि उल्लेख होगा उस देश की समस्याओं के समाधान में लग गया।

बाबर पादशाह ने सुल्तान सिकन्दर अफगान के समस्त राज्य पर अधिकार जमा लिया। हिन्द के राजा, राणा साँगा ने कई लाख सैनिक लेकर उनपर चढाई की। पादशाह ने उससे युद्ध करके उसे पराजित कर दिया और फरमानो में "गाजी" की उपाधि धारण की[3]।

तदुपरान्त वे चित्तौड[4] पहुँचे और वहाँ जिहाद करके काफिरो पर विजय प्राप्त कर ली। लौटकर उन्होने समस्त हिन्दुस्तान के सुव्यवस्थित रखने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। ९३७ हि० (१५३० ई०) में वे इतना अधिक रुग्ण हो गए कि चिकित्सक अत्यधिक प्रयत्न के बावजूद उपचार न कर सके। [5]अपनी मृत्यु के समय उन्होंने हुमायूँ मीर्जा को, जिन्हे उन्होने बदख्शाँ से बुलवा लिया था, ससार वालो के कार्यों की सुव्यवस्था सौंप दी। जैसे ही हुमायूँ पादशाह अपने पिता के सिंहासन पर आरूढ हुए मुहम्मद जमान मीर्जा इब्ने बदीउज्जमान मीर्जा इब्ने मीर्जा (३०४ ब) सुल्तान हुसैन, जो बाबर पादशाह की सेवा में तथा उनका जामाता था, एव अन्य लोगो ने विद्रोह कर दिया। हुमायूँ ने अपनी युक्ति एव कृपा द्वारा सबको दबा दिया। हिन्दुस्तान के जो भाग उनके पिता के समय मे विजय न हो सके थे, उन्हें भी विजय किया और गुजरात पहुँचे। गुजरात पर अधिकार जमा लिया। अपने भाइयों तथा अमीरो के विरोध एव सगठन के अभाव के कारण गुजरात को छोडकर उन्हे लौटना पडा। शेष हाल बाद मे लिखा जायेगा [6]

मीर्जा हैदर का लाहौर पहुँचना

(३४४ अ) जब मैं लाहौर पहुँचा तो वहाँ बाबर पादशाह का पुत्र मीर्जा कामरान राज्य कर रहा था। उसने मेरे प्रति अत्यधिक आदर सम्मान प्रदर्शित करते हुए मेरा स्वागत किया। अपार कष्टो एव कठिनाइयो के उपरान्त मैंने इतना अधिक आदर सम्मान प्राप्त किया कि उसकी कृपाओ तथा शाहाना आदर सम्मान ने मेरे दुखो एव कष्टो के प्रति तिरियाक[7] का कार्य किया। [8]इस समय शाह इस्माईल के एक पुत्र ने कन्धार पर आक्रमण करके उसे अपने अधिकार मे कर लिया।

१ ९३० हि० (१५२४ ई०)।

२ **तारीखे रशीदी** का बाबर सम्बन्धी इतिहास **मुगल कालीन भारत—बाबर,** पृ० ६०७-६३२ में देखिये।

३ इस विषय में **बाबर नामा,** पृ० २२६-२८१ देखिये।

४ 'चुनार' से तात्पर्य है।

५ शेरों का अनुवाद नहीं किया गया।

६ इसके आगे मीर्जा हैदर ने अपनी कश्मीर विजय एव वहां से निकलने का हाल लिखा है। (देखिये—Elias and Ross · *The Tarikh i-Rashidi*, pp. 101-45)।

७ विषहर, विष का नाशक।

८ इस स्थान पर कुछ शेर हैं जिनका अनुवाद नहीं किया गया।

इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है शाह इस्माईल का एक पुत्र साम मीर्ज़ा अपने भाई शाह तहमास्प के पास से भागकर सीस्तान पहुँचा। वहाँ से कन्धार पहुँचा। कन्धार में उस समय अमीर ख्वाजा कला (हाकिम) था। यह ख्वाजा कला, मौलाना मुहम्मद सद्र का पुत्र था। मौलाना मुहम्मद सद्र मीर्ज़ा उमर शेख के राज्य एवं धर्म के स्तम्भों में से था। मीर्ज़ा उमर शेख की मृत्यु के बाद मौलाना मुहम्मद सद्र के पुत्र बाबर पादशाह की सेवा में पहुँचे। उन्होंने उनकी सेवा में बहुत बड़े बड़े कार्य किए। इस वंश में उनका अत्यधिक आदर सम्मान किया जाता है कारण कि उसके ६ भाई विभिन्न अवसरों पर भिन्न-भिन्न युद्धों में मारे गए। केवल यही मीर ख्वाजा कला बच गया था।

वह बड़ा ही शूर वीर एवं विद्वान् था। उसने अपनी योग्यता से पादशाह के राज्य की अनेक समस्याओं का समाधान किया था। उसके परिश्रम एवं सूझ बूझ के कारण ईश्वर की कृपा से पादशाह (३४४ ब) ने हिन्दुस्तान विजय किया[1]। सक्षेप में उसने कन्धार की इस प्रकार से प्रतिरक्षा की कि साम मीर्ज़ा आठ मास के घोर प्रयत्न के उपरान्त भी उसे विजय न कर सका। आठ मास उपरान्त कामरान मीर्ज़ा हिन्दुस्तान से पहुँच गया। कन्धार के किले के समक्ष साम मीर्ज़ा से युद्ध किया। अमीर ख्वाजा कला की वीरता एवं सूझ-बूझ के कारण साम मीर्ज़ा पराजित होकर एराक वापस चला गया। कामरान मीर्ज़ा हिन्दुस्तान लौट आया। मैं उसी समय लाहौर पहुँचा।

शीत ऋतु व्यतीत हो जाने के उपरान्त दूसरी बहार में शाह तहमास्प अपने भाई का बदला लेने के लिए कन्धार पहुँचा। यह वही शाह तहमास्प है जिसने जब कभी खुरासान पर आक्रमण किया, तो उबैदुल्लाह खां तथा ऊज़बेक उसका अपनी अत्यधिक सेना सहित इस प्रकार मुकाबला करते थे कि उसे सर्वदा भागना पड़ता था।[2]

मीर ख्वाजा कला, शाह तहमास्प की सेना की अत्यधिक संख्या एवं शक्ति के कारण, किले की प्रतिरक्षा न कर सका। इसके अतिरिक्त इससे पूर्व आठ मास के अवरोध का मुकाबला करने के कारण किले की प्रतिरक्षा की सामग्री समाप्त हो चुकी थी और उसे इस बात की आशा न थी कि मीर्ज़ा कामरान उसकी सहायतार्थ पहुँच सकेगा। इस कारण वह कन्धार को छोड़कर उच्च तथा तत्ता और वहाँ से लाहौर पहुँचा।

जब कामरान मीर्ज़ा को यह समाचार प्राप्त हुए तो उसने (तत्काल) कन्धार की ओर प्रस्थान करने का संकल्प कर लिया। हिन्दुस्तान का अपना पूरा राज्य तथा जो कुछ भी उससे सम्बन्धित था एवं दीवान के अधिकारियों तथा अमीरों इत्यादि को मुझे सौंप कर वह कन्धार की ओर रवाना हुआ और मुझे अपने राज्य के समस्त प्रबन्ध का पूर्ण अधिकार दे गया। वहां पहुंचने पर (३४५ अ) शाह तहमास्प के मुअक्किलों[3] ने संधि करके उसे कन्धार समर्पित कर दिया और वे एराक

१ बाबर ने लिखा है, "काबुल से प्रस्थान करने के समय से लेकर इब्राहीम की पराजय तथा आगरा पर अधिकार के समय तक ख्वाजा कला द्वारा महान् कार्य सम्पन्न हुए थे और उसने पौरुष से परिपूर्ण बातें तथा उत्साहवर्धक परामर्श दिये थे। किन्तु आगरा की विजय के कुछ दिन उपरान्त उसकी समस्त राय बदल गई, और हर मूल्य पर चले जाने के लिये जो व्यक्ति आग्रह कर रहा था वह ख्वाजा कला था।" बाबर नामा, पृ० २०४)।

२ इस स्थान के कुछ शेरों का अनुवाद नहीं किया गया।

३ प्रतिनिधियों।

चले गए। मीर्जा कामरान को इस अभियान में लगभग एक वर्ष लग गया। इस अवधि में मैंने शासन प्रबन्ध एवं राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी समस्त उचित प्रयत्न किए। मालगुजारी (राजस्व) की वसूली, विद्रोहियों के दमन, सीमान्तों की प्रतिरक्षा इस्लाम की दृढ़ता तथा कुफ्र के उच्छेदन का पूर्ण प्रबन्ध किया। इस प्रकार, जब कामरान मीर्जा विजय तथा सफलता प्राप्त करके लाहौर पहुँचा तो उसने मेरा वेतन[1] १५ लाख से ५० लाख निश्चित कर दिया और मुझे अपने समकालीनो की अपेक्षा अत्यधिक प्रतिष्ठा प्रदान कर दी।

हिन्दुस्तान में एक लाख में बीस हजार शाहरुखी होती हैं। प्रचलित एक शाहरुखी[2] एक मिस्काल चाँदी के बराबर होती है।

हुमायूं पादशाह इब्ने बाबर पादशाह एवं उसके राज्य का पतन

हुमायूँ पादशाह बाबर के ज्येष्ठ पुत्र एवं सबसे अधिक योग्य तथा प्रतिष्ठित थे। जितनी योग्यता एवं प्रतिभा उनमें थी उतनी किसी अन्य व्यक्ति में विरले ही होगी किन्तु कुछ दुष्ट तथा विलासप्रिय लोगों के कारण, जिनमें मौलाना मुहम्मद परग़री एवं उसी के समान अन्य लोग विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, उनमें कुछ बुरी आदतें उत्पन्न हो गई थी, जिनमें एक अफीम का सेवन भी था। पादशाह में जितने भी दोष उत्पन्न हुए और जिनके विषय में लोग चर्चा किया करते हैं, उनका एकमात्र कारण यही बुरी आदतें थी। इसके बावजूद उनके फ़िरिश्ता रूपी व्यक्तित्व में (३४५ ब) नाना प्रकार के गुण एवं योग्यताएँ विद्यमान थी और वे दान-पुण्य एवं सभाओं में अद्वितीय थे। संक्षेप में वे बड़े ही प्रतिष्ठित तथा ऐश्वर्य एवं गौरव के स्वामी थे। [3]

जब मैं उनकी सेवा में जैसा कि बाद में उल्लेख होगा, आगरा में उपस्थित हुआ, तो उस समय उनकी पराजय हो चुकी थी। लोगों का कथन है कि पादशाह का जो गौरव तथा ऐश्वर्य इससे पूर्व था उसमें से कुछ भी शेष नही रह गया था। इसके बावजूद जब उनकी सेना की पंक्तियाँ गंग[4] नदी के युद्ध में, जो पूर्ण रूप से मेरे नेतृत्व में हुआ, सुव्यवस्थित हुई तो उस समय भी उनके परिजनों में १७ हजार शागिर्द पेशा[5] सम्मिलित थे। इससे उनके वैभव एवं ऐश्वर्य का अनुमान लगाया जा सकता है।

संक्षेप में, जब कामरान मीर्जा पहले पहल कन्धार पहुँचा तो पादशाह[6] ने गुजरात पर आक्रमण करके उसे विजय कर लिया, किन्तु इस कारण कि उनके अमीरों में आपस में मतभेद उत्पन्न हो गया था, और वे आज्ञाओं का उल्लंघन करने लगे थे, उन्होंने विवश होकर उस प्रदेश को

१ मवाजिब।
२ एक शाहरुखी में ७२·१८ ग्रेन चाँदी होती थी। इस प्रकार एक मिस्काल ६½ पेन्स के बराबर होता था। (Elias and Ross *The Tarikh-i-Rashidi*, p. 69).
३ शेरों का अनुवाद नहीं किया गया।
४ गंगा नदी। कन्नौज के युद्ध की ओर संकेत है।
५ सेवक, ख़िदमतगार।
६ हुमायूँ।

छोड दिया और खाली हाथ लौट आये। इस हानि की पूर्ति के लिए वे बगाले की ओर रवाना हुए, कारण कि उस समय उनका ऐश्वर्य अपनी चरम सीमा पर था। उन्होने बगाला भी विजय कर लिया किन्तु वे वहाँ अधिक समय तक ठहर गए।

उनका सबसे छोटा भाई हिन्दाल मीर्जा आगरा मे था। उसे यह समाचार प्राप्त हुए कि शेर खा बरकन्दा तथा रोहतास से आगरा की ओर आ रहा है। उसने शेख फूल की हत्या करा दी। जैसा उल्लेख हो चुका है, वह पादशाह का पीर था। उसने अपने नाम का खुत्बा पढवा दिया और सल्तनत का डका पिटवाने लगा। यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि, 'जहाँ विरोध उत्पन्न हो जाता है वही से सौभाग्य का अन्त हो जाता है।" जब यह समाचार बगाला पहुँचे तो पादशाह बगाले से आगरा की ओर चल खडे हुए और इबराहीम बेगचीक मुगुल के पुत्र जहाँगीर कुली को पाँच हजार व्यक्तियो सहित बगाले मे छोड गए।

जब हिन्दाल मीर्जा ने अपने नाम का खुत्बा पढवा दिया तो आसपास जितने अमीर थे उनमे से किसी ने भी उसकी अधीनता स्वीकार न की। अपनी बुद्धिहीनता की वजह से जिसे उसके दुर्भाग्य का कारण कहना चाहिये, उसने शेर खा को पीछे छोड दिया और पादशाह के राज्य को विजय करने के लिए निकल खडा हुआ। कहा गया है कि, "अपने मित्रो का कार्य करो ताकि (३४६ अ) तुम्हारे शत्रु अपना काम कर सकें।" सर्व प्रथम वह देहली के विरुद्ध, जो हिन्दुस्तान की राजधानी है, रवाना हुआ, किन्तु देहली के हाकिमो ने, जो पादशाह के अमीर थे, उसे देहली सर्मापित न की। दोनो ओर से घोर युद्ध हुआ। प्रत्येक ने अपने शत्रुओं को आतकित तथा मित्रो को प्रोत्साहित किया।

जब हिन्दाल मीर्जा इस प्रकार युद्ध मे सलग्न था, तो हुमायूँ बगाले से चौसा तथा पयाग पहुँचा। शेर खा ने अवसर से लाभ उठाकर उनके अग्रसर होने का मार्ग रोक दिया। पादशाह के समस्त घोडे बगाले में नष्ट हो चुके थे और उनकी सेना की शक्ति का अन्त हो चुका था। वर्षा ऋतु भी आ गई थी। वे शेर खा के मुकाबले मे तीन मास तक शिविर लगाये रहे। पादशाह के पास से दूतो ने उपस्थित होकर निरन्तर यह समाचार पहुँचाये कि शेर खा हिन्दुस्तान की अव्यवस्था का मूल कारण है और अब उससे युद्ध हो रहा है। क्योकि शेर खा का अन्त करना परमावश्यक है अत उनके समस्त भाई शीघ्रातिशीघ्र पहुँच जायें।' पत्र प्राप्त हुए किन्तु भाई लोग अपनी शत्रुता मे सलग्न रहे और शत्रु को किसी प्रकार की कोई चिन्ता न रही।

जब इन घटनाओं के समाचार कामरान मीर्जा को प्राप्त हुए तो वह तत्काल सेना सहित देहली की ओर रवाना हुआ। उसके पहुँचने पर हिन्दाल मीर्जा भाग खडा हुआ और पादशाह के अमीर उससे भेंट करने पहुँचे। कामरान मीर्जा के आगमन से लोगो के हृदय आशाओ से भर गए और अनुभवी वीर चौसा की ओर प्रस्थान तथा पादशाह को सहायता पहुँचाने का प्रयत्न करने लगे, किन्तु कुछ लोगो ने जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी थी अन्य प्रकार से परामर्श दिया। उन्होने कहा कि, "चौसा की ओर जाने से पादशाह को मुक्ति प्राप्त हो जायगी, शत्रु नष्ट हो जायेंगे और हम फस जायेंगे।" कामरान मीर्जा ने भी अपनी अज्ञानता तथा बालको सरीखी मूर्खता के कारण इस अनुचित परामर्श को बुद्धिमत्ता समझ कर प्रस्थान करने में विलम्ब किया किन्तु अनुभवी लोगो

ने कहा कि, "क्योंकि वह प्रस्थान करने में विलम्ब कर रहा है अतः यह उचित होगा कि हम लोग वापस चले जायँ ताकि सेना की सामग्री नष्ट न होने पाये। प्रत्येक अपने अपने स्थान को वापस चला जाय और युद्ध के लिए उचित प्रबन्ध करे। यदि शेर खाँ पादशाह को पराजित कर देता है, तो हम लोग उसका मुकाबला करने के लिए तैयार रहेंगे। यदि इसके विपरीत पादशाह शेर खाँ को नष्ट (३४६ ब) कर देते हैं तो फिर बड़ा अच्छा है।" किन्तु इससे सभी लोग सन्तुष्ट न हो सके। उन लोगों ने कहा, "यदि पादशाह शेर खाँ को नष्ट कर देंगे तो वे हमसे बड़े रुष्ट होंगे, अतः हमें कोई न कोई ऐसा उपाय करना चाहिये जिससे हम पादशाह की क्षमा के पात्र बन सकें।" संक्षेप में वे आगरा की ओर वापस हो गए। वे वहाँ एक मास से अधिक रहे। पादशाह पराजित होकर वहाँ वापस आये। वर्षा ऋतु के मध्य में समस्त भाई एकत्र हुए। यह घटना सफर ९४६ हि० में घटी[1]।

गंगा[2] का युद्ध

जब सब भाई एकत्र हुए तो उन्होंने जो दुर्घटना घटी थी उसके विषय में परामर्श किया। वाद-विवाद बहुत अधिक बढ़ गया किन्तु कोई ऐसा निर्णय न हो सका जिसका उल्लेख किया जा सके। वास्तव में कोई ऐसी बात प्रस्तुत न की गई जो उस अवसर के अनुकूल होती, कारण कि यह कहा गया है कि जब दुर्भाग्य आता है तो बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। कामरान मीर्ज़ा को वापस जाने की बड़ी चिन्ता थी। हुमायूँ ने उसकी समस्त बातों को स्वीकार कर लिया किन्तु उसकी इस बात से सहमत न थे कि वह वापस चला जाय। सात मास नष्ट हो गए और कोई निर्णय न हो सका। यहाँ तक कि अवसर हाथ से निकल गया। शेर खाँ युद्ध के लिए तैयार होकर गंगा नदी के तट पर पहुँच गया।

(३४७ अ) इसी वाद विवाद के समय कामरान मीर्ज़ा अत्यधिक रुग्ण हो गया। हिन्दुस्तान की जलवायु का उसपर बड़ा कुप्रभाव पड़ा था[3]। जब किसी भी उपचार एवं औषधि से कोई लाभ न हुआ तो उसने लाहौर की ओर प्रस्थान करने का संकल्प कर लिया। कामरान मीर्ज़ा के प्रस्थान के साथ ही साथ शेर खाँ के सौभाग्य की उन्नति तथा चगताई शक्ति का ह्रास प्रारम्भ हो गया। पादशाह ने उससे अत्यधिक आग्रह किया कि वह अपनी अधिकांश सेना तथा आदमियों को कुमक हेतु छोड़ जाय। कामरान मीर्ज़ा इसके विपरीत इस बात का प्रयत्न करने लगा कि आगरा के समस्त आदमियों को अपने साथ ले ले, और अपनी सेना को छोड़ने पर किसी प्रकार सहमत न हुआ। मीर ख्वाजा कलाँ ने भी जिसका उल्लेख पूर्व में हो चुका है, इस विषय में सबसे अधिक बढ़ चढ़ कर सलाह दी। वह भी इसी विषय में घोर प्रयत्न कर रहा था। कामरान मीर्ज़ा ने उसे अपने आगे रवाना कर दिया और स्वयं पीछे-पीछे चल दिया।

इसी बीच में शेर खाँ गंगा नदी के तट पर पहुँच गया और उसकी सेना ने गंगा नदी पार कर ली। उसका पुत्र कुतुब खाँ इटावा तथा काल्पी पहुँचा। यह प्रदेश कासिम हुसेन सुल्तान,

१ १८ जून १५३९ ई०—१७ जुलाई १५३९ ई०।
२ मूल में 'गंग' है।
३ दोनों भाइयों की बड़ी हानि हुई। उसका मीर्ज़ा हैदर ने विस्तार से उल्लेख किया है। हस्तलिपियों में यह स्थल इस बुरी तरह नष्ट किया गया है कि इसका अनुवाद सम्भव नहीं।

जो ऊज़बेक सुल्तानों मे था, एव बाबर पादशाह के भाई सुल्तान नासिर मीर्जा के पुत्र यादगार नासिर मीर्जा के अधीन था। सुल्तान नासिर मीर्जा का हाल पीछे लिखा जा चुका है। कालपी का थोडा सा भाग कामरान मीर्जा को प्रदान कर दिया गया था और उसने अपनी ओर से उस विलायत मे इस्कन्दर मीर्जा को नियुक्त कर दिया था। वे सब मिलकर कुतुब खा से युद्ध करने के लिये रवाना हुए। वह युद्ध मे मारा गया और उन्होंने पूर्ण रूप से विजय प्राप्त कर ली। पादशाह ने आगरा नदी की ओर शेर खा से युद्ध करने के लिए प्रस्थान किया। कामरान मीर्जा ने अपने समस्त कार्य (३४७ ब) मुझको सौप दिए थे। वह मुझसे लाहौर चलने का आग्रह करने लगा। उसने मुझसे कहा कि, "तुम्हे अपने ही लोगो के दुर्व्यवहार के कारण, जिनकी तुम आजीवन निष्ठापूर्वक सेवा करते रहे, काशगर छोडना पडा। जब तुम मेरे पास आ पहुँचे तो मैंने अपने सम्बन्ध के कारण तुम्हारे प्रति भाई की भाँति अपितु उससे भी उत्तम व्यवहार किया। मैंने अपना समस्त शासन-प्रबन्ध तुम्हे सौप दिया और लोगो की नियुक्ति एव पदच्युत करना तथा अन्य प्रबन्ध तुम्हारे अधीन कर दिए। यदि इन कार्यों मे मेरी ओर से कोई भूल हुई हो तो तुम उसे बताओ, मैं उसका समाधान करूँ किन्तु ऐसी स्थिति मे जब कि शत्रुओं ने मेरे राज्य पर एव रोग ने मेरे शरीर पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया है और मैं रुग्ण हो गया हूँ, भ्रातृ-भाव का हाथ मेरी ओर से मत खीचो तथा इन दो महान् सकटों से मेरी रक्षा करो और मझे लाहौर पहुँचा दो।"

उधर मैं तथा पादशाह मुग़लो की प्रथानुसार मित्र हो गए थे और उन्होंने मुझे "दोस्त" की उपाधि प्रदान कर दी थी। वे इस उपाधि के अतिरिक्त किसी अन्य प्रकार से मुझे सम्बोधित न करते थे और फरमानो में भी मेरा नाम इसी प्रकार लिखवाते थे। मेरे भाइयो तथा समकालीन सुल्तानो[1] में किसी को पादशाह की सेवा मे इतना अधिक सम्मान न प्राप्त हुआ था और जैसा कि मैं मुहम्मद हैदर गुरगान उनके द्वारा सम्मानित हुआ था कोई अन्य न हो सका था। पादशाह मुझे केवल भाई ही न समझते थे अपितु मित्र भी समझते थे।

(३४८ अ) यद्यपि मैं कामरान मीर्जा की सेवा मे था किन्तु पादशाह समस्त कार्यों मे मुझसे परामर्श किया करते थे। उन्होंने कहा कि, "कामरान मीर्जा अत्यधिक रुग्ण होने के कारण तुमसे अपने साथ चलने के लिए आग्रह करता है। रुग्णावस्था की वजह से उसकी समझने की शक्ति समाप्त हो गई है और इसमें तुम कोई सहायता नही कर सकते। उसका प्रस्थान तुम्हारे साथ चलने पर अवलम्बित नही और न तुम लाहौर जाने के लिए बाध्य ही हो। यदि वह रुग्णावस्था का बहाना करता है तो तुम न चिकित्सक हो और न औषधि जानते हो। यदि वह रिश्तेदारी के आधार पर आग्रह करता है तो यह रिश्तेदारी पादशाह बाबर के सम्बन्ध के कारण है। इसमें मैं तथा कामरान मीर्जा दोनों बराबर हैं। जो कुछ मैं कह रहा हूँ उसपर न्यायपूर्वक ध्यान दो। मुझमें तथा शेर खा में युद्ध छिडा हुआ है। इसपर समस्त हिन्दुस्तान तथा बाबर पादशाह के पुत्रो का भाग्य निर्भर है। जब कि ऐसा युद्ध हो रहा है और तुम मीर्जा कामरान की रुग्णावस्था के कारण उसके साथ लाहौर चले जाओगे तो दो ही बातें हो सकती हैं (१) तुम मीर्जा कामरान की बीमारी के बहाने से सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाओगे। सब लोग नष्ट हो जायेंगे और तुम बच जाओगे।

१ मुग़ल शाहजादों।

(२) तुम बाबर पादशाह की खाला के पुत्र हो और उनके पुत्रो के एक समान रिश्तेदार हो, अत तुम्हारे लिए यह परमावश्यक है कि पादशाह के समस्त परिवार का साथ दो। इस प्रकार चले जाने के कारण तुम किसी का साथ न दे सकोगे। कुशलतापूर्वक लाहौर पहुँच जाने के उपरान्त जहाँ कही तुम्हे कोई सुरक्षित स्थान मिलेगा, तुम चले जाओगे। भ्रातृ भाव तथा मित्रता के सम्बन्ध का देख लो। यदि यह उचित है तो तुम ऐसा ही करो किन्तु ससार वाले तुमसे सतुष्ट नही रहगे। वे यह न कहगे कि, मीर्जा कामरान की रुग्णावस्था के बावजूद वह उसके साथ लाहौर न गया और अपनी बुद्धिमत्ता के कारण शाही सेना का गगा तट के युद्ध मे साथ दिया' अपितु यह कहगे कि ऐसे युद्ध (३४८ ब) के समय जिसपर उस वश का जिसके प्रति निष्ठा का तुम दावा करते हो, भाग्य निर्भर था तुम साथ छोडकर चले गए, वे यही कहगे कि कामरान मीर्जा की बीमारी के बहाने से तुम ने अपने लिए सुरक्षित स्थान ढूंढ लिया। इसके अतिरिक्त यदि हमारी पराजय हुई तो लाहौर भी तुम्हार अधिकार में न रह पायेगा।"

मैं इन बातो से सतुष्ट हो गया। कामरान मीर्जा से आज्ञा न प्राप्त कर सकने के कारण मैं उसकी आज्ञा बिना ही ठहर गया।

मीर्जा कामरान निर्लज्जता प्रदर्शित करते हुए इस्कन्दर सुल्तान को एक हजार आदमियो सहित कुमक के रूप म छोडकर लाहौर की ओर चल दिया और आगरा से जितने आदमियो को अपने साथ ले जा सकता था, लेता गया। इस प्रकार उसने शत्रुओ की शक्ति तथा मित्रो की पराजय का प्रबन्ध कर दिया।

पादशाही सेना गगा तट पर जिस दशा मे थी, पहुँची[1]। वहाँ वह एक मास तक पडाव किए रही। पादशाह नदी के इस ओर थे और शेर खा उस ओर। दोनो एक दूसरे के समक्ष पडाव किए हुए थे। पादशाह की सेना की सख्या दो लाख से अधिक रही होगी।

मुहम्मद सुल्तान मीर्जा जो उलुग मीर्जा तथा शाह मीर्जा, जो तीमूर के वश से सम्बन्धित थे, का वशज तथा खुरासान के सुल्तान हुसन मीर्जा का नाती था, बाबर पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ था। बाबर पादशाह ने उसके प्रति नाना प्रकार से कृपादृष्टि प्रदर्शित की थी। बाबर की मृत्यु के उपरान्त उसने हुमायूँ के विरुद्ध कई बार विद्रोह किया किन्तु असफल रहा। उसने क्षमा याचना कर ली थी और उसे क्षमा कर दिया गया था। इस समय वह शेर खा से मिल गया और हुमायूँ के पास से भाग गया। इस प्रकार एक नया मार्ग खुल गया। सेना में से प्रत्येक व्यक्ति भागने लगा। बडे आश्चर्य की बात तो यह थी कि बहुत से लोग जो भागते थे वे शेर खा के पास न जाते थे और न उससे किसी प्रोत्साहन की आशा कर सकते थे। पूरी सेना में अशान्ति फैल गई थी और लोग यही चिल्लाते थे कि 'लश्कर की हवा गरम है, हमें घर जाकर आराम करने दिया जाय।' कामरान ने कुमक हेतु जो दस्ते नियुक्त किए थे उनमे से भी अधिकाँश लाहौर भाग गए।

(३४९ अ) हजरत पादशाह के साथ जो युद्ध की सामग्री थी उसमें सात सौ गरदून[2] थी जिनमें से

१ कुछ हस्तलिपियों के अनुसार 'बड़ी ही उत्तम दशा में पहुँची'।
२ तोप की गाडिया।

प्रत्येक को ४-४ जोडी बैल खींचते थे। इन पर एक-एक जर्बजन लदी हुई थी जिससे पाँच सौ मिस्काल[1] का गोला चलाया जाता था। मैंने स्वयं उन दिनों कई बार ऊँचाई से देखा कि यदि कोई सवार दूर पर भी दृष्टिगत हो जाता अथवा चलता-फिरता दिखाई पडता तो उनसे बिना चूके हुए[2] निशाना लग जाता था। २१ गाडियां ऐसी थी जिन्हे ८-८ जोडी बैल खीचते थे। उनमे पत्थर के गोले न चलाये जाते थे अपितु ५ हजार मिस्काल के पिघलाये हुए पीतल[3] के गोले चलाये जाते थे। उनमें प्रत्येक का मूल्य दो सौ मिस्काल चाँदी होता था। एक फरसग की दूरी पर जो वस्तु भी दृष्टिगत होती उसे वे मार देते थे।

जब सेना भागने लगी तो सेना को बिना युद्ध किए हुए नष्ट हो जाने से बचाने के लिए यह बही अच्छा समझा गया कि 'एक बार युद्ध कर लेना चाहिए। जो भाग्य मे लिखा है यदि वह हो भी गया तो लोग इस प्रकार की कटु-आलोचना न कर सकेंगे कि हमने हिन्दुस्तान सरीखा देश हाथ से निकल जाने दिया और युद्ध न किया। इसके अतिरिक्त यदि नदी पार कर ली गई तो अन्य लोग भी भाग न सकेंगे। इस कारण नदी पार की गई।

दोनों सेनाओ ने अपने चारो ओर खाइयाँ खोद ली। दोनो ओर से सेनाओ के दस्ते निकल कर आपस में युद्ध करते रहते थे। इसी बीच में वर्षा होने लगी। जिस स्थान पर शाही शिविर लगे हुए थे वहाँ जल भर गया और वह स्थान शिविर के योग्य न रहा। वहाँ से प्रस्थान करना परमावश्यक हो गया। लोगों का यह मत था कि, यदि एक बार और वर्षा हो गई तो जल की अधिकता के कारण पूरा शिविर जलमग्न हो जायेगा, अत यह उचित है कि जिस स्थान पर शत्रु के मुकाबले के लिए पडाव किया जाय वह ऊँचाई पर हो ताकि सैलाब का कुप्रभाव वहाँ न होने पाये।' मैं स्थान की खोज हेतु गया और मैंने एक उचित स्थान ढूँढ लिया।

मैंने निवेदन किया कि 'कल शत्रुओ को कसौटी पर कसना चाहिये। कही ऐसा न हो कि प्रस्थान करते समय युद्ध प्रारम्भ कर दे। यदि वे आक्रमण करते है तो प्रस्थान के समय युद्ध करना उचित न होगा। कल १० मुहर्रम[4] है, हम अपनी सेना को पूर्ण रूप से सुव्यवस्थित रक्खे और (३४९ ब) आगे प्रस्थान न करें, देखें शत्रु लोग खाई से निकलते है और युद्ध के लिए अग्रसर होते है या नही। यदि वे युद्ध हेतु निकलेंगे तो हम लोग जम कर युद्ध करेंगे। यह उचित होगा कि तोप तथा जर्बज्न सामने रक्खी जाय। बन्दूक चलाने वाले, जिनकी सख्या लगभग पाच हजार है, बन्दूक सहित उनके मध्य मे नियुक्त कर दिए जाय। यदि शत्रु हम पर आक्रमण करते है तो युद्ध के लिए इससे उत्तम अवसर तथा स्थान न मिलेगा। यदि वे अपनी खाई से न निकलें तो हम अपनी सेना की पक्तियाँ मध्याह्न तक सुव्यवस्थित रक्खे और फिर अपने स्थान को वापस चले

१ लगभग ४½ माशे की एक तौल।
२ बे खता।
३ सम्भवत हफ्त जोश, सात धातुओं का होना चाहिये। हस्तलिपियों में यह शब्द स्पष्ट नहीं। अंग्रेजी अनुवाद में 'पीतल' है, (Elias and Ross *The Tarikh-i Rashidi*, p 474)। नफायसुल मआसिर में 'हफ्त जोश' है और लेखक ने इसे तारीखे रशीदी से लिया है। आगे के पृष्ठों में नफायसुल मआसिर का अनुवाद देखिये।
४ १० मुहर्रम ९४७ हि० (१७ मई १५४० ई०)।

जायें। दूसरे दिन भी हम इसी प्रकार व्यवहार करें। तदुपरान्त सामान को नए स्थान पर भेज दिया जाय और हम भी उस स्थान पर पहुँच जाय और उसे अधिकार में कर लें।" मेरी इस योजना को सभी ने स्वीकार कर लिया।

१० मुहर्रम ९४७ हि० को हम उसी उद्देश्य से सवार हुए और सेना की पंक्तियां सुव्यवस्थित कीं। जैसा कि निश्चय हुआ था, गाडियां, तोपें एवं बन्दूकें, मध्य भाग में रक्खी गईं। उस्ताद अली कुली के पुत्र मुहम्मद खां रूमी, उस्ताद अहमद रूमी तथा हुसेन खलीफा को तोपों तथा बन्दूकों का प्रबन्ध सौंपा गया। उन लोगों ने गाडियां तथा तोपें उचित स्थान पर लगवाईं और उन्हें जंजीरों से बंधवा दिया। अन्य दस्तों में साधारण प्रकार के अमीर थे जो नाम मात्र को ही अमीर कहे जा सकते हैं। उन्होंने खजाने तथा विलायत पर अधिकार तो जमा लिया था किन्तु उनमें प्रतिभा, पौरुष, ऐश्वर्य तथा दान पुण्य सरीखे गुणों का, जो अमीरों के लिए परमावश्यक हैं, अभाव था।

(३५० अ) पादशाह ने मुझे अपनी बाईं ओर नियुक्त किया था। इस प्रकार मेरे दस्ते का दायाँ बाजू पादशाह के बायें बाजू की ओर था। इसी तरह उन्होंने अपने चुने हुए सैनिक नियुक्त किए थे। मेरी बाईं ओर मेरे समस्त सैनिक नियुक्त थे। मेरे साथ चार सौ अनुभवी व्यक्ति थे जिन्हें युद्ध तथा रणक्षेत्र का पूर्ण ज्ञान था। वे सब तीपूचाक घोडों पर सवार तथा अस्त्र शस्त्र से लैस थे। मेरे तथा नदी के मध्य में २७ अमीरों की सेना थी जिनमें सभी के पास तूग (नाग)[1] थे। सेना के बायें बाजू के भी लोग इसी प्रकार सुव्यवस्थित थे। उनका भी अनुमान अन्य लोगों की सुव्यवस्था से करना चाहिए। युद्ध के दिन जब शेर खां अपनी सेना को सुव्यवस्थित करके निकला तो इन २७ तूगों में से कोई भी तूग न दिखाई पडा। समस्त प्रतिष्ठित अमीर इस भय से कि कहीं शत्रु उनके ऊपर आक्रमण न कर दे, छिप गए थे। अमीरों की वीरता एवं युद्ध कौशल का अनुमान उनके पौरुष के इस प्रदर्शन से लगाया जा सकता है।

शेर खां की सेना पाँच दस्तों में विभाजित थी, जिनमें से प्रत्येक में एक हजार आदमी थे। उसके आगे तीन हजार आदमी थे। मेरा अनुमान है कि उसकी पूरी सेना की संख्या २५ हजार रही होगी किन्तु मैं समझता हूँ कि चगताई सेना में ४० हजार सैनिक थे जो सब के सब तीपूचाक घोडों पर सवार तथा पूर्ण रूप से सशस्त्र थे, मानो समुद्र लहरें मार रहा हो किन्तु सेना के अमीरों तथा पदाधिकारियों के पौरुष की वही दशा थी जिसका ऊपर उल्लेख कर चुका हूं। जब शेर खां की सेना खाईं से निकली तो दो दस्ते, जो चार दस्तों के बराबर थे, पंक्तियाँ सुव्यवस्थित करके खड़े हो गए। तीन दस्ते अपने शत्रुओं के विरुद्ध बढे। इस ओर से मैंने मध्य भाग को इस आशय से आगे बढाया कि जिस स्थान को मैंने चुना था वहां पहुँच जाय किन्तु वहाँ पहुँचने पर हम दृढ न रह सके। चगताई सेना के प्रत्येक अमीर तथा वजीर के पास, चाहे वह धनी था अथवा निर्धन, दासों की बहुत (३५० ब) बडी संख्या थी। प्रत्येक प्रतिष्ठित अमीर जिसके पास १०० सैनिक थे, उसके साथ पाँच सौ सेवक तथा दास थे, जिन्होंने युद्ध के दिन न तो अपने स्वामियों की कोई सहायता की और न जिन्हें अपने ऊपर ही कोई नियंत्रण था। इस प्रकार जिस स्थान पर भी युद्ध होता दासों पर कोई नियंत्रण

१ पताकायें।

न रह पाता। जब वे अपने स्वामियों से पृथक् हो जाते तो आतंकित होकर भय के कारण इधर उधर भागने लगते। संक्षेप में अपने स्थान पर दृढ़ रहना असम्भव हो गया।

शत्रुओं ने हमारी सेना के पीछे के भाग पर आक्रमण करके हमारी सेना के मध्य भाग को गाड़ियों की जंजीरों पर ढकेल दिया और वे तथा सैनिक उन पर टूट टूट कर गिरने लगे। जो लोग पीछे थे उन्होंने उन लोगों को जो सामने थे इस प्रकार विवश कर दिया कि वे जंजीरों के बाहर भाग गए। जो लोग जंजीर के समीप नियुक्त थे उन्हें वहाँ से भागना पड़ा। थोड़े से लोग जो पीछे रह गए थे वे भी छिन्न भिन्न हो गए तथा समस्त सुव्यवस्था भंग हो गई। मध्य भाग की यह दशा थी।

दायीं ओर शेर खाँ सेना की पंक्तियाँ सुव्यवस्थित करके बढ़ा किन्तु उसने एक बाण भी न चलाया था कि सैनिक इस प्रकार भाग खड़े हुए जिस प्रकार आँधी से घास उड़ जाती है। अपनी (३५१ अ) पंक्तियों को तोड़ते फोड़ते वे मध्य की ओर बढ़े। गुलाम लोग जिन्हें उनके स्वामियों ने आगे कर दिया था, गाड़ियों की ओर बढ़े और कुछ गाड़ियों के पीछे रह गए। समस्त व्यवस्था भंग हो गई। स्वामी अपने सेवकों से और सेवक, स्वामियों से पृथक हो गए। जब मध्य भाग इस प्रकार अव्यवस्थित हो गया तो दाएं बाजू से जितने लोग भागे वे इसी ओर पहुँचे। इस प्रकार शत्रु ने एक बाण भी न चलाया था कि समस्त सेना छिन्न भिन्न तथा पराजित हो गई। मेरा अनुमान है कि चगताई सेना की संख्या दासों तथा शागिर्द पेशा को छोड़कर ४० हजार थी। वे १० हजार आदमियों के मुकाबले से भाग खड़े हुए। शेर खाँ को विजय प्राप्त हो गई। चगताई लोग इस रणक्षेत्र में, जहाँ मित्रों अथवा शत्रुओं में से कोई भी घायल न हुआ भाग खड़े हुए। एक तोप भी न चलाई गई, जर्बज़न में आग न दिखाई गई और गाड़ियों से भी कोई काम न लिया गया।

जब चगताई भाग खड़े हुए तो उनमें तथा गंगा नदी में एक फरसंग[1] की दूरी रही होगी। समस्त अमीर तथा बहादुर अपनी रक्षा के लिए नदी की ओर भागे। इनमें से किसी को एक घाव भी न लगा था। शत्रुओं ने उनका पीछा किया। चगताइयों को अपने जिरह बख्तर तथा अस्त्र-शस्त्र को उतारने का अवसर भी न मिला और वे नदी में कूद पड़े। नदी का पाट पाँच बाणों के मार की दूरी तक फैला था। बहुत से प्रतिष्ठित अमीर डूब गए। जो बच गए उनको जिधर अवसर मिला उधर भाग गए। जब हम लोग नदी के बाहर निकले तो हज़रत पादशाह जिनके अधीन मध्याह्न के समय १७ हजार शागिर्द-पेशा थे, एक घोड़े पर सवार थे जिस तरदी बेग ने उन्हें दिया था। वे नंगे सिर तथा नंगे पाँव थे। "ईश्वर ही को स्थायित्व है और राज्य ईश्वर ही का है।" एक हजार सेवकों में से आठ आदमी नदी के बाहर निकल सके। शेष नदी में डूब गए। सम्पूर्ण हानि का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि जब वे आगरा पहुँचे तो वहाँ न ठहर सके अपितु बड़ी अव्यवस्थित तथा शोकमय दशा में जिसके वर्णन से शोक के कारण कलेजा फटा जाता है, लाहौर पहुँचे।

१ लगभग १८,००० फीट की दूरी।

चगताइयों का हिन्दुस्तान से लाहौर की ओर पलायन

(३५१ ब) १ रबी-उल-अव्वल ९४७ हि० (६ जुलाई १५४० ई०) को समस्त सुल्तान, अमीर एवं सर्वसाधारण एकत्र हुए। इतनी अधिक भीड़ हो गई कि चलना फिरना कठिन तथा ठहरना दुस्साध्य हो गया था। बड़े-छोटे सभी अपनी अपनी चिन्ता में थे और प्रत्येक कोई न कोई उपाय सोच रहा था। प्रत्येक प्रतिष्ठित व्यक्ति अपनी अपनी योजना बनाये हुए था और प्रत्येक साधारण व्यक्ति अपने विचार में मग्न था। उन्हीं में मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा तथा उलुग मीर्ज़ा थे जो कि युद्ध के समय गंगा तट से भाग खड़े हुए थे। किसी स्थान पर भी उनके लिए ठहरना सम्भव न हो सका और वे बड़ी शोचनीय दशा में लाहौर पहुँचे। वे अन्य लोगों से पृथक् रहे और उस समय भी शत्रुता प्रदर्शित कर रहे थे। उन्होंने अपने आपको नीच लोगों तथा मूर्ख काफ़िरों के समूहों का नेता बना लिया था। हिन्दाल मीर्ज़ा तथा यादगार नासिर मीर्ज़ा भी ऊट-पटांग योजनाएँ बना रहे थे। उनका विचार था कि हम लोग भक्खर चले जायँ और उसे शाह हुसैन अरगून से छीन कर उसकी सेना के साथ गुजरात पर अधिकार जमा लें। कामरान मीर्ज़ा इस चक्कर में था कि, 'यहाँ जो लोग एकत्र हुए हैं वे सब छिन्न भिन्न हो जायँ और वह अकेला काबुल की ओर चला जाय।'

हुमायूँ बादशाह कुछ समय तक तो यह प्रयत्न करते रहे कि वे लोग किसी न किसी प्रकार संगठित हो जायें किन्तु इसमें कठिनाइयाँ देखकर उन्होंने अपनी समस्त आशाएँ त्याग दीं और उन्हें यह चिन्ता हुई कि 'अब क्या किया जाय?' उनका उद्देश्य यह था कि लोग पुनः संगठित हो जायँ। उस समय निरन्तर परामर्श गोष्ठियाँ होती थीं। संगठन के विषय में धूर्ततापूर्वक वाद विवाद होता था किन्तु हृदय से लोग इसके विरुद्ध थे। उन्होंने प्रतिष्ठित एवं सम्मानित लोगों को बुलवाकर इस बात के लिए साक्षी बनाया कि जो कुछ भी निश्चय होगा उसका न तो कोई विरोध करेगा और न उससे विचलित होगा। इस प्रकार [1] ख्वाजा खावन्द महमूद, उनके छोटे भाई ख्वाजा (३५२ अ) अब्दुल हक़ एवं [2], मीर अबुल बक़ा जो अपनी विद्वत्ता एवं पवित्रता के लिए प्रसिद्ध थे, अन्य प्रतिष्ठित लोगों के साथ, जिनके अलग अलग नाम लेने से विवरण बहुत बढ़ जायेगा, आमंत्रित किए गए। सुल्तान, अमीर तथा बहुत से अन्य लोग उपस्थित थे। प्रारम्भ में इन लोगों ने संगठित होना निश्चित किया और एक प्रतिज्ञा पत्र तैयार किया जिस पर प्रतिष्ठित लोगों ने अपने हस्ताक्षर कर दिए। तदुपरान्त वे विचार-विमर्श करने लगे।

सर्व प्रथम बादशाह ने मुझे आदेश दिया कि मैं अपने हृदय में जो कुछ उचित समझता हूँ उसका उल्लेख करूँ। मैंने निवेदन किया कि, "जब खुरासान में सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा की मृत्यु हो गई तो उसके १७ पुत्रों ने अपने पारस्परिक मतभेद एवं फूट के कारण खुरासान को शाही बेग के हाथ में चला जाने दिया। इस कारण लोग आज तक उनकी कटु-आलोचनाएँ एवं निन्दा करते हैं और कोई भी उन्हें अच्छी दृष्टि से नहीं देखता। इस अपमान के साथ साथ उनका विनाश भी

१ ख्वाजा खावन्द महमूद की उपाधियों का अनुवाद नहीं किया गया।
२ मीर अबुल बक़ा की उपाधियों का भी अनुवाद नहीं किया गया।

हो गया, यहाँ तक कि एक वर्ष के भीतर यदीउज्जमान के अतिरिक्त, जो रिस्म[1] चला गया, कोई भी जीवित न रहा। स्वर्गीय बाबर पादशाह ने हिन्दुस्तान जैसे विशाल देश को बड़े परिश्रम से विजय करके आप लोगों को सौंप दिया है। क्या आप लोग शेर खाँ सरीखे आदमी को हिन्दुस्तान पर अधिकार जमा लेने देंगे? आप लोग इस बात पर गौर करें कि हिन्दुस्तान के राजस्व तथा खुरासान के राजस्व[2] (३५२ ब) में कितना अन्तर है और शेर खाँ तथा शाही बेग खाँ में कितना फर्क है। आप लोगों को याद रखना चाहिए कि लोग आपकी कितनी निन्दा करेंगे। अब यह समय आ गया है कि आप अपनी दशा पर गौर करें और अपने सिर को ईर्ष्या के गरीबान से निकालकर सोच विचार की जेब में रखें ताकि लोग आपका आदर सम्मान कर सकें। पूर्व में जब कार्य सुगमतापूर्वक सम्पन्न हो सकते थे तो आपने फूट तथा उपेक्षा के कारण कार्य को इतना कठिन बना दिया। इस समय अत्यधिक कठिनाइयों का सामना किए बिना सफलता प्राप्त करनी असम्भव है।

"अब मैं जो कुछ उचित समझता हूँ वह आपके समक्ष प्रस्तुत करूँगा। इसमें बड़ी ही कठिनाइयाँ हैं किन्तु आप लोगों ही ने जब कार्य सरल था तो उसे कठिन बना दिया, अब आप अपने कष्टों पर धैर्य-पूर्वक ध्यान न देंगे तो वे और भी कठिन हो जायेंगे। मैं समझता हूँ कि शेर खाँ को लाहौर पहुँचने में अब भी चार मास लग जायेंगे। इन चार महीनों में हिन्दुस्तान के कोहपाया[3] सुल्तानों को प्रदान कर दिए जायँ और प्रत्येक निष्ठावान् रहने के लिए प्रतिज्ञा करे। प्रत्येक व्यक्ति जिस कार्य हेतु नियुक्त हो उसमें संलग्न हो जाय। मुझे कश्मीर का विजय करने का कार्य सौंप दिया जाय। मैं इस बात की प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं दो मास में उसे पूरा कर लूँगा। जब मेरे कश्मीर पहुँच जाने के समाचार प्राप्त हो जायँ तो प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवार को कश्मीर भेज दे और स्वयं पर्वतों में रहे। इस प्रकार पर्वतों के आँचल को सरहिन्द की पहाड़ी से सारंग[4] की पहाड़ी तक दृढ़तापूर्वक अपने अधिकार में कर ले। तोप तथा जर्बजन शेर खाँ की युद्ध की मुख्य शक्ति है। पर्वतों में तोप की गाड़ियों का पहुँचना असम्भव है और वह बिना उनके युद्ध न कर सकेगा। उसकी सेना अपनी संख्या की अधिकता के बावजूद खाद्य सामग्री के अभाव की वजह से नष्ट और भागने पर विवश हो जायगी।"

(३५३ अ) कामरान मीर्ज़ा ने इन शब्दों पर क्रोध प्रदर्शित करते हुए कहा कि, "जो कुछ तुम कहते हो यद्यपि ठीक है किन्तु इसमें अत्यधिक कठिनाइयाँ हैं।" मैंने कहा कि, 'मैंने पहिले ही क्षमा माँग ली थी कि यह कार्य बड़ा कठिन है। जो भी सरल बात थी अब उसका अवसर नहीं रहा। यदि कोई इससे आसान बात बता सकें तो वह बतायें।" कामरान मीर्ज़ा ने कहा कि, "हम लोगों के साथ परिवार वालों की संख्या लगभग २ लाख है। यदि जो परामर्श इस समय दिया गया है उसका पालन किया गया तो यह सम्भव है कि सब के सब नष्ट हो जायें अतः यह उचित होगा कि पादशाह तथा समस्त मीर्ज़ा अलग अलग हो जायें, चाहे वे पर्वत की ओर जायें, चाहे कश्मीर

१ टर्की।
२ हासिल।
३ पर्वत के दामन।
४ उन पहाड़ियों तक जो सारंग गक्खर के अधीन हैं। सिवालीक अथवा सिवालिक की पहाड़ियों से कश्मीर की सरहद तक के पर्वतीय प्रदेश गक्खरों के अधिकार में रहते थे।

की पहाड़ियों में। वे अपने परिवार मेरे साथ काबुल भेज दें। परिवारों को सुरक्षित रूप में पहुँचा कर मैं सेना में वापस आ जाऊँगा।"

सब लोगों को इस उत्तर पर बड़ा आश्चर्य हुआ और वे सोचने लगे कि 'संगठन की जो शपथ हमने ली थी, उसका क्या हुआ? इस समय कैसी बातें हो रही हैं? कौन अपने परिवार को काबुल भेजने तथा अमग्राव के बिना ठहर जाने के विषय में सोच सकेगा? लाहौर तथा काबुल के मध्य में दुर्गम नदियाँ, लुटेरे तथा पर्वत हैं। मीर्ज़ा की योजना पर आचरण करना असम्भव है। यद्यपि अत्यधिक वाद विवाद हुआ किन्तु कामरान मीर्ज़ा ने कोई बात निश्चय न होने दी अतः संगठन की जो इच्छा प्रकट की गई थी वह मिथ्या निकली और सभा विसर्जित हो गई।

समय निकल गया और इसी बीच में शेर खाँ मुल्तानपुर[1] नदी के तट पर पहुँच गया। प्रत्येक व्यक्ति ने अपने लिए कोई न कोई शरण का स्थान ढूँढ लिया। बादशाह ने इस कठिनाई के अवसर पर मुझसे परामर्श किया। मैंने उस समय भी नम्रतापूर्वक निवेदन किया कि, "मैं अब भी कश्मीर की योजना पर दृढ़ हूँ।' मैंने कहा, 'यदि आप मुझे आगे जाने दें तो अन्य लोग पीछे आ सकते हैं। मैं इस बात की प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं कश्मीर विजय कर लूँगा।' तदुपरान्त बादशाह (३५३ ब) ने मुझे विदा कर दिया और जो कुमक वे मेरे साथ कर सकते थे वह कर दी। इस प्रकार चार हज़ार स्वतंत्र एवं दासों के साथ मैं कश्मीर की ओर चल खड़ा हुआ।

हैदर मीर्ज़ा का कश्मीर पर आक्रमण

इस बात का ऊपर उल्लेख हो चुका है कि कश्मीर के सुल्तान अपने अयोग्य अमीरों के चंगुल में फँस गए थे। जिसके जो मन में आता वही कर डालता। जिस समय कामरान मीर्ज़ा कन्धार की ओर जैसा कि उल्लेख हो चुका है, शाह इस्माईल के पुत्र से युद्ध करने पहुँचा तो कश्मीर के मलिक आपस में एक दूसरे के प्रति शत्रुता प्रदर्शित करने में संलग्न थे। काची चक, अब्दाल माकरी[2] तथा जंगी चक कश्मीर से निकाल दिए गए थे और उन्होंने हिन्द के कोहपाया[3] में शरण ले ली थी। उन्होंने मुझसे सहायता के लिए आग्रह किया। ख्वाजा हाजी[4] ने, जिसका उल्लेख तिब्बत के सम्बन्ध में हो चुका है, मध्यस्थ के रूप में कार्य किया। मैं कामरान मीर्ज़ा को कश्मीर पर आक्रमण करने के लिए सर्वदा राजी करने का प्रयत्न किया करता था। जिस समय कामरान मीर्ज़ा

१ स्थान।

२ कश्मीर में मुसलमान सुल्तानों के राज्य के प्रारम्भ (१४वीं शती ई० के मध्य) से ही, चक एवं माकरी दो बड़े वंश रहते थे। उनके पारस्परिक मतभेद एवं झगड़ों के कारण राज्य को १६वीं शती ई० के मध्य तक बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उन लोगों में राज्य के प्रधान मंत्री के पद के लिये बराबर संघर्ष रहा करता था। कमजोर शासकों की अयोग्यता के कारण इस संघर्ष ने बड़ा उग्र रूप धारण कर लिया था। (Elias and Ross *The Tarikh-i-Rashidi*, p 482, note no 1).

३ पर्वत के आँचल।

४ ख्वाजा हाजी अथवा हाजी का उल्लेख मीर्ज़ा हैदर ने तिब्बत में अपनी कठिनाइयों के सम्बन्ध में किया है। वह मीर्ज़ा हैदर की सेवा में मारयूल की राजधानी शाया (शेर अथवा शेट या शेल) में उपस्थित हुआ। (Elias and Ross *The Tarikh-i-Rashidi*, p 460)

ने देहली की ओर प्रस्थान किया तो एक सेना एकत्र हो गई और बाबा चाचक (अथवा जूजक) नामक एक व्यक्ति उसका सरदार बनाया गया। ख्वाजा हाजी बाबा चोचक के साथ कश्मीर पर आक्रमण करने के उद्देश्य से आगरे से लाहौर पहुँचा किन्तु बाबा चोचक अपनी अयोग्यता एवं शक्तिहीनता के कारण इस अभियान की व्यवस्था न कर सका और विलम्ब करता ही रहा। यहाँ तक कि गंगा की पराजय के समाचार प्राप्त हो गए। सैनिक लोग ठहर गए और बाबा चोचक का कश्मीर पर आक्रमण करने से मुक्ति प्राप्त हो गई।

जिस समय सब लोग लाहौर में एकत्र हुए तो ख्वाजा हाजी मरे तथा अब्दाल माकरी के पास मेरी योजना के सम्बन्ध में कई सन्देश लाया और ले गया। सबका उत्तम रूप से समाधान हो गया और मैंने पादशाह को इस बात पर सन्तुष्ट कर लिया। मैंने उन्हें वह पत्र दिखलाया जो मेरे पास आये थे और उन्हें इस बात का विश्वास हो गया कि मेरे पहुँचते ही कश्मीर विजय हो (३५४ अ) जायगा।

मीर्ज़ा हैदर द्वारा कश्मीर-विजय

मैंने पादशाह से निश्चय किया था कि 'सर्व प्रथम मैं एक छोटी सी सेना लेकर नव शहर[1] की ओर प्रस्थान करूँ और जैसे ही कश्मीर के मलिक मेरा साथ देने के लिए तैयार हो जायें इस्कन्दर तोपची मेरे पास पहुँच जाय। जब मैं दर्रे पर पहुँच जाऊँ तो मीर ख्वाजा कलाँ जिसकी प्रशंसा मैं पहिले कर चुका हूँ नव शहर में प्रविष्ट हो जाय। जब मैं कश्मीर में प्रविष्ट हो जाऊँ तो मीर ख्वाजा कलाँ कश्मीर के दर्रे तक पहुँचे और पादशाह अपना शिविर नव शहर में लगायें। जब इतना हो जाय तो कामरान मीर्ज़ा तथा अन्य लोग जहाँ उनकी इच्छा हो चले जायें।'

जब सब कुछ निश्चय हो गया तो मैं चल खड़ा हुआ और नव शहर में कश्मीर के समस्त मलिक मेरी सेवा में उपस्थित हो गए। इस्कन्दर तोपची नव शहर से एक दिन की यात्रा की दूरी पर था। मीर ख्वाजा कलाँ सियालकोट में था। जिस दिन मैंने इस्कन्दर तोपची को सूचना भेजी उसी दिन यह समाचार प्राप्त हुए कि सभी लोग लाहौर छोड़कर चले गए। मैं शीघ्रातिशीघ्र रवाना हुआ। जब मैं उस दर्रे पर पहुँचा जहाँ से लोग कश्मीर में प्रविष्ट होते हैं तो काची चक एक मार्ग से पहुँच गया और हम दूसरे मार्ग से। बिना किसी वाद विवाद अथवा संघर्ष के हम लोग कश्मीर पहुँच गए।

जब इस्कन्दर तोपची तथा मीर ख्वाजा कलाँ ने लाहौर के खाली होने के विषय में सुना तो इस्कन्दर तोपची शरण हेतु सारंग के पास चला गया। वह हिन्दुस्तान के कोहपाया का सुल्तान था। मीर ख्वाजा कलाँ सियालकोट से चल दिया और जो लोग लाहौर से भागे थे उनके पास पहुँच गया। यद्यपि पादशाह ने कश्मीर पहुँचने का बड़ा प्रयत्न किया किन्तु वे किसी को भी अपने साथ न ले सके। कुछ मूर्ख उदाहरणार्थ हिन्दाल मीर्ज़ा, नासिर मीर्ज़ा इत्यादि उन्हें शाह बेग अरगून के पुत्र मीर्ज़ा शाह हुसेन के विरुद्ध तत्ता तथा बक्खर की ओर ले गए। मीर्ज़ा शाह हुसेन (३५४ ब) वही व्यक्ति है जिसका पूर्व में उल्लेख हो चुका है। जब बाबर पादशाह ने शाह बेग

१ रानौरी की पहाड़ियों के नीचे के भाग में एक गाँव।

से कन्धार छीन लिया तो शाह् बेग उच्च तथा तत्ता की ओर चल दिया और आसपास के प्रदेश अपने अधिकार में कर लिए। उसकी मृत्यु के उपरान्त मीर्जा शाह हुसेन उसका उत्तराधिकारी बना और कुछ समय तक अपने किलो को दृढ बनाने तथा अपने राज्य को सुव्यवस्थित करने में व्यस्त रहा। वास्तव में वह बडा ही योग्य तथा प्रतिभाशाली व्यक्ति था। उसके विरुद्ध वे लोग रवाना हुए किन्तु उन्हे कोई भी सफलता न मिल सकी। हिन्दाल मीर्जा कन्धार की ओर भाग गया। वहा का हाकिम उसके स्वागतार्थ पहुँचा। वह पादशाही का दावा करने लगा। कामरान मीर्जा ने काबुल से उसके ऊपर आक्रमण किया। कुछ शोचनीय घटनाओ के उपरान्त वह दुर्दशा को प्राप्त हो गया और उसने कामरान मीर्जा से इस बात का आग्रह किया कि, "उसे कोई हानि न पहुँचाई जाये" और उसकी सेवा में प्रविष्ट हो जाने का आश्वासन दिलाया। शीघ्र ही यादगार नासिर मीर्जा तथा कासिम हुसन सुल्तान भी पादशाह के पास से भाग गए और कामरान मीर्जा से मिल गए। पादशाह अत्यधिक कठिनाइयो एव दुर्भाग्यो का मुकाबला करते हुए एराक की ओर रवाना हुए। अभी तक इस बात का पता नही कि उनका क्या हुआ। जहाँ तक कि कामरान का सम्बन्ध है वह काबुल में है और सौभाग्य की उसे कोई आशा नही।

मुझे ईश्वर से, जो बडे ऐश्वर्य वाला एव दयालु है हज़रत मुहम्मद एव उनकी सम्मानित सतान के आशीर्वाद से, यह आशा है कि वह हुमायूँ पादशाह को, जिनके मुकाबले में बहुत थोडे ही महान् सुल्तान होगे, राज्य प्रदान करेगा। उन्होने इतनी अधिक कठिनाइयो का सामना किया है जितना बहुत कम पादशाहो ने सामना किया होगा। ईश्वर उनकी उदार छाया में लोगो को सुखी एव समृद्ध रखे। यह होता चला आया है कि जब किसी बडे पादशाह के कार्य अस्त-व्यस्त हो जाते है तो वह स्वय ही उनका कारण होता है। ऐसा पादशाह विरले ही होता है जो उन विपत्तियो से बच सके, और यदि बच जाय तो इसे उसके गुणों का कारण समझना चाहिये।

(३५५ अ) इस ग्रथ में प्रारम्भ में लिखा जा चुका है कि उनके पिता बाबर पादशाह कई बार समरकन्द में सिंहासनारूढ हुए किन्तु उन्हे सर्वदा बुरी तरह पराजित होना पडा। उन पराजयो के समय वे सुरक्षित रहे और अन्त में ईश्वर ने उन्हे ऐसा ऐश्वर्य प्रदान किया कि समस्त ससार उनसे प्रभावित हुआ और वे अमर सुल्तानो की श्रेणी में आ गए। ईश्वर हुमायूँ पादशाह को उन खतरो से मुक्ति देकर उतना ही ऐश्वर्य एव वैसी ही बुद्धि प्रदान करे।

मीर्ज़ा हैदर का हुमायूँ पादशाह से विदा होना, कश्मीर पर आक्रमण तथा विजय, तारीखे रशीदी का अन्त

जब मीर्जा लोगो में आपस में थोडा बहुत समझौता हो गया तो मुझे ईश्वर की कृपा से हुमायूँ पादशाह ने विदा होने की अनुमति दे दी। मै जिन कारणो का उल्लेख हो चुका है, उनके अनुसार लाहौर से कश्मीर की ओर रवाना हुआ। मै इस बात का उल्लेख कर चुका हूँ कि मैंने २२ रजब[१] को कश्मीर का दर्रा पार किया। यह तारीख "जुलूसे दारुल मुल्के कश्मीर"[२]

१ २२ रजब ९४७ हि० (२२ नवम्बर १५४० ई०)।
२ 'कश्मीर की राजधानी में सिंहासनारोहण'।

के अक्षरा से निकलती है। धनु राशि का समय था। मैं सफलता के सिंहासन पर आरूढ हुआ ही था कि हिमपात प्रारम्भ हो गया और भूमि सफेद हो गई। शत्रुओं ने अपनी निगाहें फेर लीं। ईश्वर की कृपा से वह शीत ऋतु शान्तिपूर्वक व्यतीत हो गई।

(३५५ ब) काजी चक इससे पूर्व तीन बार कश्मीर के राज्य को त्यागने पर विवश किया जा चुका था, उसकी पत्नी तथा उसके पुत्र उससे भेंट न कर सके थे कारण कि वह उन्हें मलिक अब्दाल तथा जंगी चक की देख रेख में यह सोचकर छोड गया था कि पूर्व की भाँति उसके राज्य के त्यागने तथा पुन अधिकार सम्पन्न होने का मामला एक वर्ष तक स्थायी रूप से उसी दशा में न रह पायगा। कश्मीर के प्रतिष्ठित लोगों को भी यही विश्वास था और वे उसके साथ चले गए और उन्होंने इस बात की चिन्ता न की कि, 'ईश्वर उसे प्रदान करता है जिसे वह चाहता है और ले लेता है उससे जिससे वह चाहता है।' काजी चक यह समझता था कि शेर खा अपनी शक्ति से, परमेश्वर ने जो कुछ भाग्य में लिख दिया है, उसे भी पलट देगा, अत उसने उससे सहायता की प्रार्थना की।

बहार के मौसम में शेर खा से कुमक प्राप्त करके उसने एक बहुत बडी सेना सहित प्रस्थान किया। इस अवसर पर जब इस समाचार की पुष्टि हो गई तो मलिक अब्दाल माकरी को, जो कि इस पूरी योजना का मुख्य आधार था लकवा मार गया और उसकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार इस अभियान का पूरा बोझ जंगी चक के ऊपर पड गया। सक्षेप में अत्यधिक कठिनाइयों का मुकाबला करके जिनका सविस्तार उल्लेख अनुचित होगा हम लोग अपने परिवार को अन्दरकुल[1] के किले में छोडकर शत्रुओं का मुकाबला करने के लिए एक ऐसी सेना सहित चल खडे हुए जो दृढ न थी। तीन मास तक हम लोग उनके दृढ स्थानों पर आक्रमण तथा मैदानों में उनका मुकाबला करते रहे। अन्ततोगत्वा काजी चक ने शेर खा की सेना के साथ पर्वतीय स्थानों से जिनको उसने दृढ बना लिया था प्रस्थान किया और एक मजिल पर पडाव किया। इस स्थान पर कश्मीर की सेना जिनके विषय में देखने में यह पता चल रहा था कि वह पलायन कर जायगी युद्ध हेतु दृढ हो गई। मुगल सेना अपने स्थान पर दृढ थी। किसी को उस दिन युद्ध की आशा न थी। अधिकाश लोग अपने अपने काय हेतु विभिन्न दिशाओं को चल गए थे। इस प्रकार लगभग ढाई सौ आदमी ही उपस्थित थे। उनके साथ थोडे से कश्मीरी थे जो कि मुगलों के सहायक हो गए थे। इस प्रकार उनकी सख्या लगभग तीन सौ थी। इन लोगों ने बढ कर उस सेना का मुकाबला किया जिसमें पाँच हजार अश्वारोही, दो हाथी और अश्वारोहियों से अधिक पदाती थे। वे लोग शत्रुओं की सेना के पीछे पहुँच गए और उनके माल असबाब को लूटने लगे। इतना घोर युद्ध हुआ कि यदि मैं उसका सविस्तार उल्लेख करूँ तो उसे अतिशयोक्ति समझा जायगा अत उसका सविस्तार विवरण त्याग कर सक्षिप्त रूप में उसकी चर्चा करूँगा।

१ सम्भवत बारा मूला के समीप।

सोमवार ८ रबी-उस्सानी, ९४८ हि० (१ अगस्त १५४१ ई०) को मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय हमने उस सेना को, जिसमें पाँच हजार अश्वारोही तथा कई हजार पदाती थे, केवल तीन सौ आदमियो सहित पराजित कर दिया। कश्मीर के खतीब[1] मौलाना यूसुफ ने "फतहे मुकर्रर"[2] के अक्षरो से इस विजय की तारीख निकाली कारण कि, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, मैं एक बार कश्मीर में प्रविष्ट होकर विजय प्राप्त कर चुका था।

१ खुत्बा पढ़ने वाले।
२ 'पुन विजय'।

नफ़ायसुल मआसिर

लेखक—अलाउद्दौला बिन यहया कज़्वीनी

(अलीगढ़ विश्वविद्यालय सुभानुल्लाह मैनुस्क्रिप्ट व रिज़ा लाइब्रेरी रामपुर मैनुस्क्रिप्ट)

हज़रत जन्नत आशियानी का सिंहासनारोहण

सिंहासनारोहण

९३७ हि० (१५३० ई०) में अपने स्वर्गीय पिता के निधन के उपरान्त वे अपने पिता की संतान में ज्येष्ठतम, सबसे अधिक प्रतिभाशाली एवं सर्व-गुण सम्पन्न होने के कारण अपने पिता की वसीयत के अनुसार सल्तनत व राज सिंहासन एवं पादशाही के स्थायी स्थान पर आरूढ़ हुए। उनका सूर्य रूपी अन्तःकरण संसार की विजय एवं राज्य व्यवस्था की प्रथाओं की ओर आकृष्ट हुआ और राज्य की समस्यायें सौभाग्य की माला में भली भाँति सुव्यवस्थित हो गईं। राज्य के उच्च पदाधिकारियों एवं प्रतिष्ठित लोगों को पादशाही कृपा एवं शाही अनुकम्पा द्वारा सुशोभित किया गया। सबको अत्यधिक कृपा प्रदर्शित करते हुए प्रोत्साहन प्रदान हुआ। शुभ फ़रमान बुद्धिमानों के हाथ दूर-दूर भेज दिए गए और विलायतों के हाकिमों ने उनके अनुल्लंघनीय आदेशों का पालन किया और सिक्का एवं खुत्बा उनके नाम एवं उपाधि द्वारा सुशोभित हुए। जो लोग विरोध कर रहे थे उन्होंने विरोध के विचार अपने मस्तिष्क से निकाल दिए और आज्ञाकारिता का शीष अधीनता की चौखट पर रख दिया।

हुमायूं का गुजरात, तदुपरान्त बंगाले की ओर प्रस्थान

सेना की व्यवस्था की समस्याओं का समाधान कर लेने के उपरान्त हिन्दुस्तान के आस पास जो लोग इधर उधर विद्रोह कर रहे थे उनका दमन कर दिया और गुजरात की ओर प्रस्थान किया तथा उस स्थान को विजय कर लिया। अत्यधिक लूट की धन सम्पत्ति अपने अधिकार में कर ली किन्तु भाइयों के विरोध एवं अवज्ञाकारी अमीरों के कारण उस राज्य एवं धन सम्पत्ति को त्याग दिया, किन्तु इस कारण कि उनका सौभाग्य नित्य प्रति उन्नति पर था, उनके गौरव एवं उनकी सेना तथा उनके ऐश्वर्य में अत्यधिक वृद्धि हो गई। उन्होंने हिन्दुस्तान के अधिकांश प्रदेशों को विजय कर लिया एवं बंगाल की ओर रवाना हुए। उसे भी ९४५ हि०[1] में विजय कर लिया।

शेख फूल की हत्या

जब वे वहाँ अधिक दिनों तक ठहर गए तो हज़रत जहाँबानी के भाई हिन्दाल मीर्ज़ा ने,

१ हस्तलिपियों में ९४० हि० है। सम्भवतः नक़ल करने वालों की भूल है। इसे ९४५ हि० (१५३८-३९ ई०) होना चाहिये। (अकबर नामा मूल पृ० १५३, प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद पृ० ५९६)। कुछ हस्तलिपियों में ९४० हि० सा पढ़ा जाता है।

जो आगरा में था, इस कारण कि शेर ख़ा रोहतास की सीमा से आगरा की ओर बढ़ता आ रहा था, शेख़ फूल[1] की, जो हज़रत जन्नत आशियानी के पीर[2] थे, हत्या करा दी और अपने नाम का ख़ुत्वा एवं सिक्का चलवा दिया। सल्तनत का तब्ल विरोध हेतु खुल्लम खुल्ला बजवाने लगा। यह समाचार बंगाला पहुँचे। हज़रत जन्नत आशियानी ने बंगाला जहाँगीर कुली बिन इबराहीम बेगचीक मुग़ल[3] को ५००० व्यक्तियों सहित सौंप दिया और स्वयं आगरा की ओर रवाना हुए।

मीर्ज़ा हिन्दाल का विद्रोह

हिन्दाल मीर्ज़ा की, जिसने अपने नाम का ख़ुत्वा पढ़वा दिया था, अमीरों ने आज्ञाकारिता स्वीकार न की। वह बादशाहज़ादा ऐसे अवसर पर, जब कि शेर ख़ा सरीखा शत्रु प्राण एवं राज्य नष्ट करने के उद्देश्य से राज्य के सीमान्त पर बैठा था, अज्ञानतावश सल्तनत की नींव अपने मूर्खता के नखों से खोदने लगा और देहली का अवरोध करके हज़रत जन्नत आशियानी के अमीरों से युद्ध करने लगा। हज़रत जन्नत आशियानी जूसी प्याग[4] पहुँचे। शेर ख़ा ने अवसर पाकर हज़रत जन्नत आशियानी का मार्ग रोक लिया। हज़रत जहाँबानी के समस्त घोड़े बंगाल में नष्ट हो गए थे और लश्कर में शक्ति न रही थी। वर्षा ऋतु आ गई थी। युद्ध के साधन नष्ट हो चुके थे और शेर ख़ा मुकाबले के लिए उद्यत था। बड़ी संख्या में इस आशय से आदमी भेजे गए कि "हिन्दुस्तान के लिए शत्रुता का स्रोत शेर ख़ा है और इस स्थान पर मुकाबले के लिए पहुँच गया है, भाई लोग शीघ्र पहुँच जायें ताकि उसका समूलोच्छेदन कर दिया जाय, परन्तु खेद है कि (भाई लोग परस्पर शत्रुता कर रहे हैं, और शत्रु मुकाबला कर रहा है।"

मीर्ज़ा कामरान का देहली पहुँचना

जब मीर्ज़ा कामरान को यह समाचार प्राप्त हुए तो उसने तत्काल देहली पर चढ़ाई की। हिन्दाल मीर्ज़ा ने मीर्ज़ा कामरान से भेंट की। हज़रत जन्नत आशियानी के अमीर लोगों ने निकल कर कामरान मीर्ज़ा के प्रति अभिवादन किया। उसके आगमन से लोगों में शक्ति आ गई। किन्तु राज्य के हितैषियों ने हज़रत जन्नत आशियानी की सहायतार्थ प्रस्थान करने एवं जूसी प्याग पहुँचने के लिए बड़ा आग्रह किया परन्तु कोई लाभ न हुआ। मीर्ज़ा कामरान षड्यन्त्रकारियों एवं दुष्टों की बातों पर कान धरे हुए था। कभी वह हज़रत जन्नत आशियानी की सहायता के विषय में निश्चय करता और कभी विद्रोह के खाते को अपने दुर्भाग्य के हाथ से खोदता। असमंजस को अपना पथ-प्रदर्शक बना कर आगरा पहुँचा। वह एक मास से अधिक आगरा में ठहरा रहा। यहाँ तक कि हज़रत जन्नत आशियानी प्रभुत्व को खो कर आगरा पहुँचे। सब भाई एक

१ रामपुर की हस्तलिपि में 'फूल' एवं अलीगढ़ हस्तलिपि में 'बूल'। अन्य ग्रन्थों में 'शेख़ बहलोल' भी है।

२ धर्मगुरू।

३ देखिये अकबर नामा का अनुवाद, पूर्व पृ० ६८ ७३।

४ 'झूसी प्रयाग' किन्तु इसे 'चौसा' होना चाहिये।

स्थान पर एकत्र हुए। यह घटना सफर ९४६ हि०[१] मे घटी। जो घटनायें घट रही थी उनके विषय में परामर्श एव विचार विमर्श होता था। वात-चीत बहुत बढ गई।

शेर

'दुर्घटना का उपचार उसके घटने के पूर्व करना चाहिये,
जब कार्य हाथ से निकल जाता है तो पश्चाताप से कोई लाभ नही होता।'

शेर खां का गंगा तट पर पहुँचना

सात मास आग्रह एव वार्तालाप में कट गए और अवसर बहुत कम रह गया। शेर खा युद्ध के उद्देश्य से गगा पर पहुँच गया। उसी आग्रह एव वार्तालाप के मध्य में मीर्जा कामरान को बहुत से ऐसे रोग लग गए जिनका उपचार एक दूसरे के विरुद्ध पडता था और वह लाहौर की ओर चल खडा हुआ। हजरत जन्नत आशियानी ने यद्यपि बडा आग्रह किया कि अपनी अधिकाश सेना को वह कुमक के रूप में छोड जाय किन्तु मीर्जा कामरान इस बात का प्रयत्न कर रहा था कि आगरा मे हजरत जन्नत आशियानी के आदमियों में से भी किसी को न रहने दे। उसने अधिकाश आदमियों को लाहौर रवाना कर दिया और स्वय प्रस्थान कर ही रहा था कि शेरखा गगा-तट पर युद्ध के उद्देश्य से[२] पहुँच गया। उसकी सेना ने नदी पार कर ली। उसका पुत्र कुतुब खा इटावा[३] एव कालपी की ओर पहुँचा। कासिम हुसेन सुल्तान, जो ऊजबेक सुल्तानो में से था, एव यादगार नासिर मीर्जा वल्द सुल्तान नासिर मीर्जा जिसका उल्लेख किया जा चुका है, इस्कन्दर सुल्तान, जो मीर्जा कामरान के पूर्व उस स्थान के कुछ महालो का हाकिम था, तीनों कुतुब खा के मुकाबले के लिए पहुँचे और युद्ध करके कुतुब खा की हत्या कर दी।

यद्यपि उन लोगो ने बडा पराक्रम एव पौरुष प्रदर्शित किया किन्तु सब मामला की जड शेरखा का युद्ध था, जिसके लिए हजरत जन्नत आशियानी आगरा से कन्नौज की ओर उसके विरुद्ध रवाना हुए थे। लगभग एक मास तक इस ओर हजरत जन्नत आशियानी के सेवक और उस ओर शेर खा के आदमी नदी तट पर डटे रहे। प्रत्येक ओर सेना की सख्या दो लाख से अधिक[४] थी।

मुहम्मद सुल्तान मीर्जा का पलायन

अन्त में मुहम्मद सुल्तान मीर्जा एव उसके पुत्र उलुग मीर्जा एव शाह मीर्जा, जो तीमूरिया मीर्जाओं में से थे तथा हजरत सुल्तान हुसेन मीर्जा बाईकरा के नाती थे, हिन्दुस्तान में हजरत फिरदौस मकानी की सेवा में आ गये थे। उन्होने उनका आदर सम्मान किया। हजरत फिरदौस मकानी की मृत्यु के उपरान्त बार बार हजरत जन्नत आशियानी के विरुद्ध विद्रोह किया

१ हस्तलिपियों में यह तारीख भी शुद्ध नहीं और ९४० हि० सी पढी जाती है। किन्तु सम्भवत अलाउद्दौला ने इसे सफर ९४६ हि० (जुलाई १५३९ ई०) लिखा होगा। चौसा का युद्ध ९ सफर ९४६ हि० (२६ जून १५३९ ई०) को हुआ। (अकबर नामा, मूल पृ० १५९)।

२ अलीगढ हस्तलिपि में 'युद्ध के उद्देश्य से' नहीं है।

३ अलीगढ हस्तलिपि में "एटावा"।

४ अकबर नामा का अनुवाद पृ० ७९ ८० तथा तारीखे रशीदी का अनुवाद पृ० ४४६ देखिये।

किन्तु वह पुन हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में पहुच गया था और अत्यधिक कृपाओ द्वारा सम्मानित हुआ था। इस अवसर पर वह शेर खा से मिल गया और भाग खड़ा हुआ तथा हर एक को भागने का मार्ग दर्शा गया। तदुपरान्त लोगो ने भागना प्रारम्भ कर दिया। हर रोज़ कोई न कोई सेना भाग जाती। अल्प समय में बहुत से लोग भाग खड़े हुए। कृतघ्न सेना बिना औषधि के पीप के समान धीरे-धीरे समाप्त होने लगी एव शक्तिहीनता बढने लगी। बुद्धिमानो को ज्ञात है कि जब ईश्वर की इच्छा पूरी होने वाली होती है तो सर्व प्रथम उसके साधन दृष्टिगत हो जाते है।

शेर

'जब कोई कार्य पूरा होने वाला होता है,
उसके वैसे ही साधन एकत्र हो जाते है।'

युद्ध की सामग्री

हज़रत जन्नत आशियानी के साथ जो युद्ध की सामग्री थी, उसमे ७०० गरदूने[1] थी जिनमें से प्रत्येक को चार जोडी बैल खीचते थे। उन पर एक-एक रूमी जर्बजन[2] लदी हुई थी, जो ५०० मिस्काल[3] का गोला फेंकती थी। मीर्ज़ा हैदर गूरगान ने लिखा है कि "दास उन दिनो अनेक बार ऊपर से देख चुका था, कि यदि कोई अश्वारोही धीरे धीरे निकल कर बढता हुआ दृष्टिगत होता था, तो उसे बिना चूके हुए मार दिया जाता था। ८[4] अन्य गाडियो से, जिनमें से प्रत्येक को ८ जोडी बैल खीचते थे, पत्थर के गोले न चलाये जा सकते थे कारण कि वे चूर्ण हो जाते थे। उनमें से ५००० मिस्काल के हफ्त जोश[5] के गोले चलाये जाते थे। उनमें प्रत्येक का मूल्य २०० मिस्काल चाँदी होता होगा। एक फ़रसख पर जो कुछ दिखाई पडता उसे मार दिया जाता था।

जब सेना पलायन करने लगी तो यह उचित समझा गया कि क्योकि सेना बिना युद्ध के छिन्न भिन्न हो जायगी अत युद्ध किया जाय। यदि कोई अनुचित घटना घटी भी तो लोगो के पास कटु-आलोचना का कोई विषय न रह जायगा, नदी पार कर ली जाय ताकि फिर कोई अन्य भाग न सके।' इस उद्देश्य से उन्होने नदी पार की और दोनो ओर की सेनाओ ने अपने चारो ओर खाई खोद ली। हर रोज दोनो ओर से निम्न श्रेणी एव दुष्ट प्रवृत्ति के लोग मनमाने तरीके से युद्ध करते थे। इसी बीच में वर्षा का जोर बढ गया। जिस स्थान पर उत्कृष्ट शिविर लगे थे, वहाँ इस प्रकार जल भर गया कि खेमे जल पर बुलबुले के समान तैरने लगे। वहाँ से प्रस्थान करना परमावश्यक हो गया। इस बार ससार को शोभा प्रदान करने वाला मत यह

१ तोप की गाडिया।
२ एक प्रकार की तोप।
३ लगभग साढे चार माशे की एक तौल।
४ तारीखे रशीदी में २१, देखिये तारीखे रशीदी का अनुवाद पूर्व पृ० ४४८।
५ तारीखे रशीदी में 'चौमन' है। देखिये तारीखे रशीदी का अनुवाद पृ० ४४८)।

हुआ कि "प्रस्थान के समय सेना की पंक्तियाँ सुव्यवस्थित रक्खी जायें और गाड़ियाँ अपने स्थान पर तैयार रहे। यदि शत्रु खाईं के भीतर से निकलता है तो युद्ध किया जाय अन्यथा किसी ऊँचे स्थान पर, जो जल से सुरक्षित हो, पड़ाव हो।"

हुमायूँ एवं शेर शाह का युद्ध

१० मुहर्रम ९४७ हि० (१७ मई १५४० ई०) को प्रात काल आदेशानुसार सेना की पंक्तियाँ सुव्यवस्थित की गईं। वास्तव में पंक्तियाँ झूठा के हृदय के समान कम्पित एवं चिन्तित थी। जैसा निश्चय हुआ था कि गाड़ियाँ, तोपें, एव तोप चलाने वाले मध्य में रहे, तुफग एव ताप चलाने वालो में से प्रत्येक अपने स्थान पर खड़ा था और जजीरें बधी थी। अमीरों में से प्रत्येक बिना एक दूसरे को चिन्ता के अपने अपने स्थान पर ठहरा हुआ था और सेना के दस्ते सजाये था।

शेर खा सेना के पाँच दस्तो को लेकर खाईं के बाहर निकला। प्रत्येक दस्ते में कई हजार (अश्वारोही) तीपूचाक[1] पर सवार, अस्त्र-शस्त्र धारण किए हुए, वीर सरदारो एव आकाश सरीखे सम्मान वाले शेर दिलो के अधीन समुद्र की भाँति लहरें मार रहे थे। शेर खा दो दस्तो को लेकर वही खडा था और तीन दस्ते (शाही) सेना की ओर थे। इस ओर से भी मध्य भाग की सेना अग्रसर हुई। जब वह बढती हुई वहा पहुँची तो वह ठहर न सकी। दास, बाजियान[2] एव खासा खेल[3], जो मध्य भाग के पीछे सीमा एव गणना से अधिक थे हाथ से लगाम छोड कर[4] घबडा कर गाड़ियों की ओर पीठ करके भाग खडे हुए। मध्य भाग वालो ने यद्यपि बहुत रोका किन्तु कोई लाभ न हुआ।

सेना की पराजय

शेर खा बढता हुआ जिस पंक्ति के पास पहुँचता वे[5] बाण चलाने अथवा वीरतापूर्वक शत्रु की सेना की पंक्ति पर आक्रमण करने के पूर्व भयभीत होकर पराजय की आँधी से घास की पत्ती के समान फट जाते थे। इसी प्रकार पंक्तियो को छिन्न भिन्न करता वह मध्य भाग की सेना के पास पहुँचा। दास एव बाजियान जो अपने स्वामियो को सामने कर चुके थे एक बारगी भाग खड़े हुए। थोड़े से आदमी गाड़ी के पार हो गए और कुछ गाड़ियो के पीछे रह गए। सक्षेप में, सबके सब पंक्तियाँ छोड छोड कर भाग खडे हुए। चगताई सेना, जो सशस्त्र थी, और जिसका अनुमान लगभग ४०,००० लगाया गया था, दुर्भाग्यवश आँधी के समान भाग गई और किसी ने न तो एक तोप चलाई और न किसी ने जर्बजन में आग लगाई। जब वे गगा तट पर पहुँचे तो पीछे रक्त बहाने वाली तलवार एव आगे अगाध समुद्र तथा मौत गले में हाथ डाले थी।

१ तीपूचाक या तीपचाक —उत्तम प्रकार के घोड़ों की एक नस्ल।
२ बाजियान अथवा बाजवान का अर्थ "रानस्व वसूल करने वाले" होता है किन्तु यहाँ इस शब्द का प्रयोग कुछ उचित ज्ञात नहीं होता। सम्भवत यह कोई अन्य ही शब्द होगा।
३ विशेष दस्ते के सैनिक।
४ हतारा हो कर।
५ हुमायूँ की सेनावाले।

शेर

'इस बात को संक्षिप्त रूप से कहता हूँ कि तुझे,
इससे भी अधिक खेद होगा,
शत्रु आगे तथा शत्रु पीछे,
क्या बताऊँ मैं कि क्या दशा थी।'

हुमायूं का नदी में प्रविष्ट होना तथा सुरक्षित तट पर पहुँचना

विवश होकर मुक्ति की आशा में उन्होंने अपने आपको नदी में डाल दिया। नदी का पाट पाँच बाणों की मार की दूरी तक और गहराई कहीं कहीं बल्ली से अधिक थी। समस्त प्रतिष्ठित अमीर असफलता के समुद्र में डूब गए। हज़रत पादशाह जन्नत आशियानी थोड़े से लोगों के साथ उस गहरे समुद्र[1] से बच निकले और अप्राप्य मोती के समान बाहर आकर मुक्ति के तट पर पहुँच गए।

स्थायित्व एवं बाकी रहना ईश्वर को है और राज्य ईश्वर का है।

ईश्वर के आदेशानुसार लोग राज्य की पताका नित्य-प्रति गाड़ते हैं, एवं राज्य का डंका रोज़ाना बजाते रहते हैं।

शेर

'शाहों के डंके से कानों में यह ध्वनि आती रहती है,
कि इस सराय में प्रत्येक पादशाह बारी बारी पहुंचता रहता है।'

ईश्वर को धन्य है कि हज़रत जन्नत आशियानी के फ़िरिश्ता[2] रूपी व्यक्तित्व से दोनों लोकों का उद्देश्य, *अर्थात् हज़रत शाहंशाह का जीवन, सम्बन्धित था।* यदि कुछ दिन तक ईश्वर के रहस्य के कारण वे कष्ट में रहे तो पुनः शीघ्र सच्चे निष्ठावानों एवं सहायकों के नेत्रों को हज़रत शाहंशाह के राज्य के आकाश के सूर्य से प्रकाश प्राप्त हो जायगा।

शेर

'जब तक तू जीवित है संसार की दुर्घटनाओं से मुक्ति नहीं प्राप्त हो सकती,
मृत्यु के अतिरिक्त सभी दुर्घटनायें सरल होती हैं।'

हिन्दुस्तान कुछ समय तक सुलेमान की अगूठी[3] के समान अफ़ग़ानों के हाथ में रहा और फिर अपने समय पर हज़रत जन्नत आशियानी के हाथ में ईश्वर की कृपा से पुनः आ गया।

हुमायूं का लाहौर पहुँचना

संक्षेप में, जब हज़रत जन्नत आशियानी आगरा पहुँचे, तो वे ठहर न सके। जो लोग

१ गंगा नदी से तात्पर्य है।
२ अबुलफ़ज़्ल ने इस विषय में अधिक विस्तार से लिखा है।
३ सुलेमान पैग़म्बर की अंगूठी की ओर संकेत है जो उनके हाथ से निकल कर एक मछली के पेट में पहुँच गई। जब तक वह अँगूठी मछली के पेट में रही उस समय तक उनका राज्य भी उनके अधीन न रहा। बाद में मछली के पेट से अँगूठी मिल गई और हज़रत सुलेमान को अपना राज्य पुनः प्राप्त हो गया।

वहा रह गए थे वे हज़रत जन्नत आशियानी के साथ अत्यधिक कष्ट भोगते हुए लाहौर पहुँचे। प्रथम रबी-उल-अव्वल ९४७ हि० (६ जुलाई १५४० ई०) को समस्त सुल्तान, अमीर एव सर्व साधारण एकत्र हुए। प्रत्येक अधिक से अधिक चिन्ता मे था। हज़रत जन्नत आशियानी ने परामर्श एव विचार विमर्श के उपरान्त समझ लिया कि भाइया से सहायता की आशा नही। सबसे हाथ खीच कर एव अपने कार्य ईश्वर पर छोड कर सब को विदा कर दिया। १ रजब (९४७ हि०/ १ नवम्बर १५४० ई०) का वे बक्कर की ओर रवाना हुए।

हुमायू का बक्कर पहुँचना

बक्कर तथा उस ओर के प्रदेश मे लगभग ढाई वर्ष तक चक्कर लगाते रहे। उस प्रदेश में कुछ ऐसी घटनाये घटी जिनका उल्लेख अलग किया गया है[1]।

हुमायू का कन्धार की ओर प्रस्थान

वहाँ से वे कन्धार की ओर रवाना हुए। मीर्जा अस्करी ने, जो कन्धार का हाकिम था, हज़रत जन्नत आशियानी के प्रस्थान के समाचार पा कर, विश्वास घात करना निश्चय कर लिया। यह निष्ठापूर्ण पत्र भेजने लगा किन्तु उसके हृदय मे यह था कि हज़रत जन्नत आशियानी को बन्दी बना ले। जब वे कन्धार के समीप पहुँचे तो मीर्जा अस्करी ने शाल एव मस्तान प्रदेश की ओर प्रस्थान करके हज़रत जन्नत आशियानी को बन्दी बनाने का सकल्प किया। चपाई बहादुर मीर्जा अस्करी की सेना से भाग कर हज़रत जन्नत आशियानी के पास पहुँचा और मीर्जा अस्करी के नीच विचारा की सूचना दी। हज़रत जन्नत आशियानी अपने थोडे से विशेष सेवका के साथ, जिनकी सख्या १० १५ से अधिक न थी, और अपनी सम्मानित पत्नी हज़रत बिल्कीस[2] मकानी खदीज-तुज्जमानी[3] हमीदा बानो बेगम (उनका उत्कृष्ट साया सर्वदा वर्तमान रहे) हज़रते आला[4] की माता को लेकर जो उस खतरनाक तथा आशीर्वाद प्राप्त यात्रा मे साथ रहने के कारण चोली बेगम की उपाधि द्वारा सुशोभित हो गई है, गरम सीर के बियाबान के रेगिस्तानी भाग से सीस्तान की ओर रवाना हुए। हज़रते आला का छोड गए। मीर्जा अस्करी पहुँच कर हज़रते आला, समस्त आदमियो एव जो असबाब रह गया था, उन्हे कन्धार ले गया।

हुमायू का शाह तहमास्प के पास पहुँचना

हज़रत जन्नत आशियानी ने इस मार्ग में शाह तहमास्प के नाम पत्र लिख कर चपाई बहादुर के हाथ कज़वीन भेजा जिसमे विस्तार-पूर्वक उन घटनाओ का उल्लेख किया गया जो विश्वासघाती आचरण के कारण घटी और जो भेट का कारण बनी और यह शेर भी लिखा —

शेर

'हमारे ऊपर जो कुछ बीतनी थी वह बीत गई,
क्या समुद्र क्या पर्वत और क्या बियाबान।'

१ यह वाक्य अलीगढ़ की हस्त-लिपि में नहीं है।
२ शिबा अथवा सबा देश की महारानी।
३ हज़रत मुहम्मद की प्रथम पत्नी का नाम हज़रत खदीजा था।
४ अकबर।

किज़िलबाश-प्रदेश में प्रवेश

जब वे किज़िलबाशों के राज्य में प्रविष्ट हो गए तो सीमान्त के अमीरों ने सेवा एवं दासता भाव से व्यवहार किया। प्रत्येक ने अपने साहस एवं श्रेणी के अनुसार उचित सेवायें सम्पन्न की और आदर सम्मान में कोई कसर न उठा रक्खी। जब उनका पत्र शाह के पास पहुँचा तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ। राजधानी कज़वीन में तीन दिन तक खुशी के नक्कारे बजवाये गए। सीमान्त के अमीरों को आदेश लिखे कि वे किस प्रकार स्वागत् करें और अभिवादन में कोई कमी न करें। हज़रत (जन्नत) आशियानी ने पत्र के उत्तर में लिखा

शेर

'सौभाग्य के गौरव की हुमा हमारे जाल में आ जाय,
यदि तेरा हमारे स्थान की ओर आगमन हो जाय।'

हुमायूं का हिरात पहुँचना

जब वे हिरात के समीप पहुँचे तो मुल्तान मुहम्मद मीर्ज़ा ने मुहम्मद खां तकलू के साथ स्वागत् किया और पूर्ण आदर सम्मान एवं वैभव से आतिथ्य का प्रबन्ध किया। उचित उपहार प्रस्तुत किए और आदर सम्मान में कोई कसर न उठा रक्खी।

हुमायूं का मशहद पहुँचना

वहाँ से वे मशहद एवं इमाम हुमाम आली मुकाम सुल्ताने औलिया अल्लाहे उज्ज़ाम[1] के पवित्र रौज़े की ओर रवाना हुये।

शेर

'मारेफ़त[2] के महल के बादशाह, उपकार की डाली के गुलाब
इम्कान[3] की मोती की डिबिया के मोती प्रतिष्ठा की राशि के चन्द्र।
अली इब्न मूसी अर्रिज़ा कि ईश्वर की ओर से,
उनकी उपाधि रिज़ा हुई कारण कि ईश्वर की रिज़ा[4] उनकी प्रथा थी।
ईश्वर के मार्ग में दृढ़ इमाम, स्वतन्त्र शाह, कि हुआ,
उनके हरीम[5] के द्वार में, सुल्तानों का क़िबला[6]।'

१ इमाम रिज़ा।
२ दैवी ज्ञान।
३ सम्भावना का लोक, संसार।
४ स्वीकृति, प्रसन्नता।
५ शरण लेने का स्थान, जहां किसी को कोई भय न हो, मक्का का घेरा।
६ मक्का का वह स्थान जिनकी ओर मुँह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं। कोई ऐसा पूज्य व्यक्ति अथवा स्थान जिसकी ओर लोग आसरा लगाये रहें।

वे जियारत[1] एव नजर[2] इत्यादि अदा करने एव सहायता के पाश तथा मुजाविरो को न्याछावर प्रदान करने तथा फिरिश्ता के स्थान रूपी उस चौखट की जियारत कर वालो से फातेहा की प्रार्थना[4] करके एराक की ओर रवाना हुये।

शेर

'इसमें कोई सन्देह नही कि स्वीकार हो जाती है
जो प्रार्थना उस रौजे पर निष्ठा पूवक की जाती है।'

हज़रत जन्नत आशियानी का कजवीन पहुँचना

इस बार अधिकाश मंजिलो एव पडावो पर शाह की ओर से उचित उपहार एव तुह लाये जाते एव कुशल समाचार पूछे जाते थे। जब हज़रत जन्नत आशियानी ्र के समीप पहुँचे ‹ शाह ग्रीष्म ऋतु व्यतीत करने के उद्देश्य से कजवीन के बाहर चला गया था। जब कजवीन के प्रतिष्ठि एव सम्मानित लोग इन वाक्यो के सकल्नकर्त्ता के पिता के साथ स्वागत कर चुके तो वहाँ कलांतर[5] ख्वाजा अब्दुल गनी के घर में उतरे। कुछ समय तक वे वहाँ रहे। इस बीच में व उ नगर के अधिकाँश स्थानो एव महात्मा के, जिनका आश्चर्यजनक नगरो से सम्बन्धित बातो क ग्रन्थो में उल्लेख है, दर्शन हेतु पहुँचे और वहाँ की विशेषताओ के विषय में पूछ ताँछ करके वहाँ के मु लोगो से विचार विमर्श किया।

अमीर नासिरुद्दीन यहया से भेंट

विभिन्न गोष्ठियो म इन पक्तियो के लेखक के पिता अमीर नासिरुद्दीन यहया इतिहास कार से इतिहास सम्बन्धी विचित्र बातो एव अन्य आश्चयजनक समस्याओ के विषय में प्रश किए। आश्चर्यजनक बातो का विवरण जिनके सविस्तार उल्लेख से ग्रथ बहुत बढ जायगा, मुल के उपरान्त वे उनसे बडे प्रभावित एव उनकी गोष्ठियो की ओर बडे आकृष्ट हुए। वे अपनी मात की वर्षा करने वाली जिह्वा से कहा करते थे कि 'मेरे एराक के आगमन से यह लाभ हुआ कि मैं अमीर यहया से भेंट कर सका।" वे उनके प्रति अत्यधिक कृपा दृष्टि रखते थे और उनकी प्रति की बडी सराहना करते थे। हज़रत जन्नत आशियानी ने उनसे प्रथम प्रश्न यह किया कि हज़रत मुहम्मद के सहाबियो[7] में से अन्तिम सहाबी का निधन कब हुआ और वे कौन थे? उन्हो तत्काल उत्तर दिया कि 'अबुत्तुफैल आमिर इब्न वासिला जो १०० वष की अवस्था में मौ

१ दर्शन।
२ चढावा।
३ रौजे के सेवक, रक्षक।
४ शुभ कामना की प्रार्थना करके।
५ हाकिम।
६ "कि दर कुतुबे आसारुल बिलाद् अजायबे आँ मस्तूर अस्त"। "आसारुल बिलाद" शब्द का प्रयोग इस प्रक हुआ कि यह ग्रथ का नाम ज्ञात होता है, किंतु सम्भवत यह किसी विशेष ग्रथ के नाम अपितु भौगोलि ग्रथों से तात्पर्य है।
७ सहचर, मित्र।

एक रवायत से ११० वर्ष की अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हुए।" इसी प्रकार प्रत्येक नगर में जिस जिस अन्तिम सहाबी का निधन हुआ, उसकी उन्होंने चर्चा की।

संक्षेप में, वे कजवीन से शाह के शिविर की ओर रवाना हुए। शाह का शिविर कजवीन से चल चुका था और अवहर तथा सुल्तानिया के मध्य में यौलाक फिन्दारीनी[1] में शाह तहमास्प ने अपने समस्त अमीरों एवं राज्य के उच्च पदाधिकारियों को अत्यधिक उपहार सहित स्वागतार्थ भेजा और बड़े आदर-सम्मान से ठहराया। भेंट की गोष्ठियों में भाइयों के समान व्यवहार किया। कुछ दिन तक स्वर्ग रूपी इस पड़ाव पर उत्कृष्ट सुल्तानों की प्रथानुसार सूर्य एवं चन्द्र रूपी सरापरदे तथा बारगाहें लगवाई एवं धन-सम्पत्ति का वितरण कराया। कस्तूरी एवं अम्बर सरीखी सुगंधियों से आनन्द मंगल की गोष्ठियों के हर्ष एवं उल्लास में वृद्धि की।

शेर

'कस्तूरी की थाली से समार वालों के नथुने सुगंधि से भर गये,
नाचते हुए प्याले के प्रतिबिम्ब से सभा का वातावरण प्रज्वलित था।'

सेना के सर्वसाधारण एवं सरदारों तथा हजरत जन्नत आशियानी के अमीरों को सोने, मोती एवं बहुमूल्य वस्त्रों द्वारा सम्मानित किया। ऐसी-ऐसी सभायें की गई जिनके समान सभायें आकाश के नेत्रों ने न देखी थी और जिनसे लज्जित होकर उन्होंने पश्चाताप एवं दासता का छल्ला कानों में पहिन लिया।

आनन्द-मंगल का शोर शुक्र ग्रह तक पहुँच गया। उस हृदयग्राही जश्न की सुन्दरता एवं उस अद्वितीय सभा का आनन्द, लेखों एवं वार्ताओं द्वारा नहीं बताया जा सकता।

क़मरगह शिकार

हजरत जन्नत आशियानी के आनन्द मंगल के उद्देश्य से कमरगह शिकार का आयोजन किया गया। घेरा पूरा हो जाने के उपरान्त सर्व प्रथम स्वयं शाह तहमास्प एवं हजरत जन्नत आशियानी ने शिकार खेला। भूतकाल के सुल्तानों की भाँति दोनों बादशाहों ने शिकार के मैदान में पाँव रक्खे और घोड़े दौड़ाने प्रारम्भ कर दिए। बहुत से मृग, गोर खर[2] एवं गोजन[3], बाण द्वारा गिरा दिए। तदुपरान्त जन्नत आशियानी के अमीरों में से बैराम खाँ एवं अपने भाइयों में से बहराम मीर्जा एवं साम मीर्जा को (शिकार खेलने की) अनुमति प्रदान की। (तदुपरान्त) उन्होंने अपने कुछ अन्य अमीरों को (शिकार की) अनुमति प्रदान की। शिकार के समय एक ने जान बूझ कर या भूल से खुलफा नामक शाह के एक प्रतिष्ठित अमीर की बाण मार कर हत्या कर दी। तत्पश्चात् सर्वसाधारण को (शिकार खेलने की) अनुमति दे दी गई। सैनिकों एवं लश्कर वालों में से प्रत्येक शिकार पकड़ने एवं मारने में व्यस्त हो गया।

मनोरंजन की सभायें

जब आनन्द मंगल का यह तमाशा समाप्त हो गया तो नित्य प्रति सभायें होने लगीं तथा चंग और ऊद के संगीत प्रारम्भ हो गए। कुछ दिन इसी प्रकार हँसी खुशी में व्यतीत हो गए।

१ यह नाम हस्तलिपियों में स्पष्ट नहीं। मुद्रित में 'यौलाक कीदार नबी' है।
२ जंगली गधा, वन-गर्दभ।
३ एक प्रकार का पहाड़ी बैल।

शाह तहमास्प का हुमायूं से रुष्ट होना

इसी बीच में कुछ अधर्मी षड्यन्त्रकारियों ने बहकाकर शाह के स्वभाव की इस प्रथा एवं नियम में परिवर्तन करा दिया और मलीनता उत्पन्न करा दी। इस कारण हजरत जन्नत आशियानी के दासों के कार्य कुछ दिनों तक अस्त व्यस्त रहे[१]। वे निराश हो गए थे कि उत्कृष्ट सैयिदों में चुने हुए, काजी जहाँ हसनी सैफी ने, जो शाह का पूर्ण अधिकार-सम्पन्न वकील था और जिसका शाह के स्वभाव में बड़ा हाथ था (उसका थोड़ा सा उल्लेख पूर्व में हो चुका है) मेहदे उलिया मेहीने वालों, जो सुल्तानम बेगम कहलाती तथा शाह की बहिन थी, की सहायता से उचित युक्ति एवं बड़ी बुद्धिमत्ता से जो मैल शाह के हृदय में हजरत पादशाह की ओर से बैठ गया था, उस पर सफाई की पालिश कर दी। शाह अधिक से अधिक निष्ठा एवं शुभ चिन्ता प्रदर्शित करने लगा।

हुमायूं के लिए कुमक का प्रबन्ध

इस बीच में धर्म का पोषण करने वाले पादशाह के लिए कुमक एवं लश्कर नियुक्त करके उत्तम उपहार एवं उचित अस्त्र शस्त्र, युद्ध के घोड़े, ऊँटों की कतारें, खच्चर, सोने-चाँदी के बरतन, उत्तम वस्त्र, अत्यधिक नफीस जवाहरात, सोना-आभूषण, कस्तूरी, अम्बर एवं पुरानी रक्खी हुई मदिरा बहुत बड़ी मात्रा में और अतलस, किम्ख़ाब, नाना प्रकार के रंगों के सकरलात के बारगाह, ख़ेमे एवं खरगाह और ऐश्वर्य तथा वैभव की अन्य सामग्री, हजरत जन्नत आशियानी की सेवा में भेजी तथा क्षमा-याचना की।

शाह का विदा होना और हजरत जन्नत आशियानी का अर्दबेल के मशायख़ की जियारत करना

हजरत जन्नत आशियानी शाह से विदा हुए और वहाँ के[२] प्रदेशों की सैर के उपरान्त कन्धार की ओर रवाना हुए। जब पड़ावों एवं मंजिलों को पार करते हुए कन्धार पहुँचे तो मीर्जा अस्करी को, जो वहाँ का हाकिम था, मुकाबला करने एवं ठहरने का साहस न हो सका।

शेर

'जब सूर्य एवं चन्द्र का उदय होता है,
तो सितारे कहाँ अपनी टोपी उठाये रह सकते हैं?'

हुमायूं का बुदाग़ ख़ाँ को कन्धार समर्पित करना

हजरत जन्नत आशियानी ने कन्धार विजय कर लिया। जो वचन उन्होंने शाह को दिया

१ दर खिलाले ईं हाल व इग़वाये बाज़े मुफ्सेदाने बे दीन मिजाज शाह रा अज़ां शेवा व आईन तग़य्युर दादा दर मुक़ामे कुदूरत आवुर्दन्द व अज़ीं मानी कारोबारे बन्दगाने हजरत जन्नत आशियानी चन्द रोज़े रूये ब इख्तेलाल आवुर्दा।
در خلال این حال باغوای بعضی مفسدان بی دین مزاج شاه را ازان شیوه و آئین تغیر
داده در مقام کدورت آوردند و ازین معانی کاربار بندگان حضرت جنت آشیانی چند روزی ر ی
بہ اختلال آوردہ -

२ ईरान के।

था उसके अनुसार कन्धार को बुदाग खा काचार को, जिसके साथ शाह का पुत्र था, सौंप दिया। अपने दरबार के एक सेवक द्वारा जो बुद्धिमत्ता एव राजदूत स बन्धी शिष्टाचार के ज्ञान मे कुशल था, नाना प्रकार के उपहार, एव तुहफें, असख्य नकद धन, अत्यधिक चमकदार जवाहरात, शाह के पास भेजे और निष्ठा एव श्रद्धा और अनुराग प्रदर्शित करते हुए पत्र प्रेषित किया। वे स्वय राज्य तथा विजयी सेना के उच्च पदाधिकारियो सहित किले के बाहर पडाव किए रहे। किला किज़िलबाशो को प्राप्त हो गया किन्तु रोजाना हज़रत जन्नत आशियानी के सेवक किले मे आते जाते रहते थे।

इसी बीच मे शाह के पुत्र की, जिसे कन्धार प्रदान कर दिया गया था, मृत्यु हो गई। बुदाग खा कई दिन तक इस बात को छिपाये रहा। जब हज़रत जन्नत आशियानी के उत्कृष्ट राज्य के उच्च पदाधिकारियो को यह समाचार प्राप्त हुए तो उन्होंने हज़रत जन्नत आशियानी से निवेदन किया कि "हजरत पादशाह ने कन्धार को, जो पूर्वजो के समय से हमारा ही है, शाहज़ादे को प्रदान कर दिया था। अब उसकी मृत्यु हो गई। वहाँ कोई हाकिम[1] नही रहा अत यह उचित नही कि इस राज्य को अकारण किज़िलबाशो को प्रदान कर दिया जाय और हम इस अव्यवस्थित दशा मे काबुल की ओर, जो ऐसे भाई के अधिकार में हैं, जिसकी शत्रुता के डके की आवाज आकाश को पार कर चुकी है, प्रस्थान करें।" हजरत जन्नत आशियानी को यह परामर्श पसन्द आ गया। उन्होने कन्धार विजय की अनुमति दे दी। तत्काल विजयी सिंहो का एक समूह कन्धार की ओर चल खडा हुआ। कुछ लोग (किले में) प्रविष्ट हो गए। द्वारपाल ने अन्य लोगों को रोकना चाहा। उसकी तलवार द्वारा हत्या कर दी गई। वे तलवार निकाले हुए नगर में प्रविष्ट हो गए। किज़िलबाशों मे कुछ लोग घबडा कर भाग खडे हुए और कुछ अरक में बुदाग खा के पास पहुँचे। हज़रत जन्नत आशियानी एक ओर से प्रविष्ट होकर अकजा नामक बुर्ज में ठहरे। बुदाग खा ने आदमी भेज कर प्रार्थना कराई कि उसे बाहर निकल जाने का मार्ग प्रदान कर दिया जाय और उसके आदमियों से कोई रोक टोक न की जाय। उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई। समस्त असबाब, लश्कर एव परिवार को लेकर वह नगर एव किले के बाहर चला गया। किसी ने उनसे एक हरी पत्ती तक भी न ली। किला उत्कृष्ट राज्य के अधिकारियो को प्राप्त हो गया। बुदाग खा शीघ्रातिशीघ्र एराक की ओर रवाना हो गया।

कन्धार विजय एव काबुल की ओर प्रस्थान

हजरत जन्नत आशियानी ने सेना की सामग्री की व्यवस्था करके तथा कन्धार विजय एव बैराम खा को वहाँ नियुक्त करके काबुल की ओर से हज़ारा के मार्ग से प्रस्थान किया। रमजान ९५२ हि० (नवम्बर-दिसम्बर १५४५ ई०) में काबुल में पडाव किया। उस भाग के सभी लोग सौभाग्य के समान चरणो का चुम्बन करके सम्मानित हुए। मीर्जा कामरान काबुल छोड कर बक्कर की ओर चल दिया। इस मिसरे से तारीख निकली —

'बिना युद्ध के काबुल उससे ले लिया।'

१ "साहब" शब्द अलीगढ की हस्त लिपि में नहीं है।

हिन्दुस्तान से प्रार्थना-पत्र प्राप्त होना

इस तारीख से ९६० हि० (१५५२-५३ ई०) तक हजरत जन्नत आशियानी का इतिहास वही है जिसका उल्लेख मीर्जा कामरान के वृत्तान्त मे कर दिया गया[1] है। जब उनका सम्मानित हृदय मीर्जा कामरान की ओर से सतुष्ट हो गया और हिन्दुस्तान के हितैषियो, खानो, सुलतानो एव वहाँ के बडे-छोटे लोगो की ओर से इस आशय के निष्ठा-युक्त पत्र खिलाफत के राजसिंहासन के पास आने लगे कि जब से उस प्रदेश में स्थायी हाकिम न रहा, मलिको में से प्रत्येक शत्रुता एव उपद्रव की तलवार मियान से निकाल कर दुश्मनी एव विरोध प्रदर्शित कर रहा है, उनके उपद्रव एव उनकी नष्ट-भ्रष्ट करने की प्रवृत्ति से कष्ट एव अव्यवस्था की अग्नि इस प्रदेश में भडक उठी है, उस अग्नि के कारण इस प्रदेश के दीन-दुखियो के हृदय जल रहे है, तो उनका पवित्र हृदय हिन्दुस्तान की ओर आकृष्ट हुआ और निश्चिन्त होकर उन्होने उस राज्य को विजय करने का सकल्प कर लिया।

हुमायू का हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान

९६२ हि० (१५५४-५५ ई०) में एक थोड़ी सी सेना लेकर जिसमें ३००० सैनिक थे, सौभाग्य एव प्रताप के साथ हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुए और सरहिन्द मे इस्कन्दर अफगान से जिसके पास अपार सेना थी, इस उदाहरण के अनुसार कि "थोडे से लोग ईश्वर के आदेश से अधिक लोगों पर विजय प्राप्त कर लेते है" घोर युद्ध हुआ।

इस्कन्दर से युद्ध

कुछ दिन तक वीर लोग बाहर निकल कर युद्ध करते रहे। जब उन्हे अवसर मिलता तो किले से बाहर निकल आते थे। एक दिन जब कि सूर्य की गरमी से सिर के खोद बुलबुले के समान और नदी मृग तृष्णा रूपी हो गई थी, वे लोग धधकती हुई अग्नि की भाँति शत्रु की ओर अग्रसर हुए और घोर युद्ध हुआ।

शेर

'उस रण-क्षेत्र में युद्ध की अग्नि से,
पत्थर पिघले हुए मोम के समान हो गया।'

एक दूसरे की शत्रु सेना के धनुष के बादल से बाणो की वर्षा होने लगी और भाले विद्युत की तलवार के समान चमकने लगे, कठोर ढाल ने अपना मुह सामने कर दिया। तलवार ने फटकार की जिह्वा बढाई। पक्तियाँ आपस में गुथ गई। घोर युद्धोपरान्त अफगान सेना पराजित हो गई। उनके कुकर्म, दुष्टता एव अभिमान के कारण उनकी कर्म-पजिका पर पतन एव दुर्भाग्य के लेख लिख दिए गए। प्रतिष्ठित वीर चमकती हुई तलवारें लिए हुए कौन्दती हुई बिजली एव मृत्यु के समान पहुँच गए और अफगानो को पराजित कर दिया। सिकन्दर भाग कर पर्वत मे प्रविष्ट हो गया। रक्त के प्यासे उस जगल में उनके जीवन के जल को अपमान की मिट्टी में मिला दिया गया। उनके जीवन की ज्योति मृत्यु के जल से बुझा दी गई। इतने अधिक सिर शरीरो से पृथक् हुए कि उनका स्तम्भ बन गया। उन्हें नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया।

१ मीर्जा कामरान की जीवनी पृ० ४८३ ४६४ पर देखिये ।

हुमायूं की विजय

जब परमेश्वर ने इतनी महान् विजय, जो ब्रह्माड की विजयो की सूची एव महान् युद्धो की प्रस्तावना हो सकती थी, उन्हे प्रदान कर दी तो उन्होने इस विजय के कारण ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और ईश्वर की स्तुति के वाक्य उनकी जिह्वा से निकले।

शेर

'अग्नि की पूजा करने वाले एव वायु को नापने वाले शत्रु से कह दो,
अपने सिर पर धूल डाल ले कि गया हुआ जल पुन नहर मे आ गया।'

विजयी सेना को लूट की इतनी अधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई कि असख्य चौपाये उनको उठाने मे असमर्थ थे। उत्कृष्ट सैयिदो, अमीरो एव राज्य के उच्च पदाधिकारियो ने उस विजय की बधाई हेतु अपनी जबान खोली। हजरत जन्नत आशियानी ने पादशाहाना दया एव अनुकम्पा द्वारा सबको सम्मानित करके प्रत्येक को उसके पौरुषानुसार इतनी अधिक जागीर प्रदान की कि वे सर्वदा के लिए सम्मानित एव प्रसन्न हो गए।

शेर

'उसके हाथ को लख बख्श कहा जाता है,
उसका राज्य लाखो का है।'

इस विजय की तारीख़ की इस प्रकार रचना हुई

शेर

'बुद्धि के मुशी ने सौभाग्य से पूँछा,
कविता की रचना के विषय मे मौजूँ तबीअत[1] से पूँछा।
हिन्दुस्तान की विजय जो लिखी,
तारीख़, हुमायूँ की तलवार से निकाली[2]।

हुमायूं का देहली पहुँचना

इस विजयोपरान्त शाह अबुल मआली को कुछ खानो एव सुल्तानो के साथ पजाब के शासन प्रबन्ध एव प्रतिरक्षा हेतु इस आशय से नियुक्त कर दिया गया कि यदि इस्कन्दर उस महाल मे प्रकट हो तो वह उससे युद्ध करके उसे पराजित कर सके और वे स्वय देहली की ओर रवाना हुए। उस वर्ष की १ रमजान[3] को देहली के सिंहासन पर आरूढ हुए और लगभग ६ मास तक वहाँ सभी महत्वपूर्ण कार्यो एव परगनो की व्यवस्था तथा विलायतों के वितरण में व्यस्त रहे।

१ काव्य के लिये उपयुक्त योग्यता।
२ तारीख़ ज शम्शीरे हुमायू तल्बीद
تاریخ زشمشیر همایوں طلبید
३ १ रमजान ९६२ हि० (२० जुलाई १५५५ ई०)।

अकबर का सिकन्दर के विरुद्ध भेजा जाना

इसी बीच में समाचार प्राप्त हुए कि सिकन्दर पर्वत में सेना एकत्र करके लाहौर की ओर अग्रसर हो रहा है। उन्होंने हजरते आला[1] का वैरामखा की अतालीकी मे सिकन्दर स युद्ध हेतु भेजा। सयोग से इसी बीच में विजारत मआब ख्वाजा काजी, जो हजरत शम्स[2] तवरजी की सतान से हैं एक बहुत बडी सेना लेकर जिसमे लगभग १० १५,००० व्यक्ति रहे होगे, हजरत जन्नत आशियानी की सेवा मे पहुँच गया था। वह उनके आदेशानुसार शाह अवुल मआली की कुमक हेतु रवाना हुआ। सिकन्दर भाग गया।

हुमायू की मृत्यु

हजरत जन्नत आशियानी ने कई बार आगरा जाने का सकल्प किया। किन्तु यह सम्भव न हो सका यहाँ तक कि अन्तिम शुक्रवार ११ रवी उल-अव्वल[3] ९६३ हि० (२४ जनवरी १५५६ ई०) को जब वे शाही महल से नीचे उतर रहे थे, अजान देने वाले ने अजान देना प्रारम्भ कर दिया। उन्होने (अजान के प्रति) सम्मान प्रदर्शित करने के लिये कलीम[4] के समान आदर सम्मान के डडे पर टेक लगा दी। दुर्भाग्यवश डडा फिसल गया और उनके पाँव (जीने पर) छूट गए। क्योकि उनकी प्रिय अवस्था समाप्त हो चुकी थी अत टेढी चाल चलने वाले आकाश के समान वे भूमि पर आ गए। क्षण भर अचेत रहे। जब होश आया तो कलमये शहादत[5] पढने लगे यहाँ तक कि रविवार १३ रवी-उल-अव्वल[6] को उनकी शुभ आत्मा का शाहबाज निम्न कोटि के लोक मे उच्च कोटि के लोक को प्रस्थान कर गया।

मृत्यु के सम्बन्ध में तारीखें

ख्वाजा हुसेन[7] ने शोक सम्बन्धी इस कसीदे की रचना की जिसका प्रथम शेर इस प्रकार है —

शेर

'कौन है ऐसा जो आकाश से प्रसन्न हुआ,
ऐसी दशा हो गई कि उसका उल्लेख करने स जिह्वा गूँगी हो गई।'

१ अकबर।

२ शम्सुद्दीन मुहम्मद तबरेजी अथवा शम्स तबरेज, तबरेज निवासी एव **मसनवी** के प्रसिद्ध रचयिता जलालुद्दीन रूमी के गुरु थे। उनके अनेक चमत्कार प्रसिद्ध हैं। कहा जाता है कि ६४५ हि० (१२४७ ई०) में जलालुद्दीन महमूद ने उनकी हत्या कर दी और लाश एक कुए में फेंक दी।

३ रामपुर हस्त लिपि में १६ रवी-उल अव्वल ९६३ हि० (२९ जनवरी १५५६ ई०)।

४ हजरत मूसा (पैगम्बर)। मिस्र के बादशाह फिरऔन ने उनकी परीक्षा हेतु उन्हें कोई मोजजा (चमत्कार) दिखाने को कहा। हजरत मूसा ने अपना डडा भूमि पर फेंक दिया। वह तत्काल अजगर बन गया, अत उनके डडे को भी बडा महत्व प्राप्त हो गया।

५ ईश्वर के एक तथा हजरत मुहम्मद का उसके रसूल होने की गवाही से सबन्धित वाक्य। मृत्यु के समय इस वाक्य का पाठ मुसलमान होने की दलील माना जाता है।

६ १३ रवी-उल अव्वल ९६३ हि० (२६ जनवरी १५५६ ई०)।

७ ख्वाजा हुसेन मर्वी।

कवियों ने तारीख़ों की रचना की। उनमें से एक इस प्रकार है —

शेर

'ईश्वर की कृपा से जब वे रिज़्वां[1] के रौज़े के निवासी हुए,
उनका पवित्र स्थान स्वर्ग हुआ इसी से तारीख निकली[2]।'

मौलाना क़ासिम काही ने लिखा है —

ग़ज़ल

''सांसारिक एवं आध्यात्मिक पादशाह हुमायूँ,
किसी को स्मरण नहीं कि ऐसा कौन शाहंशाह हुआ।
अचानक अपने महल की छत से गिर पड़ा[3],
इस कारण उसका प्रिय जीवन नष्ट हो गया।
उसकी तारीख के लिए 'काही' ने लिखा
'हुमायूँ पादशाह कोठे से गिर पड़ा[3]।''

एक अन्य ने लिखा है —

पद्य

'हुमायूँ जिसके कारण आकाश के कान भरे थे
उसके ऐश्वर्य एवं वैभव के डंके से।
सौभाग्य की इकलीम से सैंकड़ा चिन्तायें छोड़ कर चला गया,
कहाँ चला गया और क्या दशा हुई उसकी।
उसकी मृत्यु के वर्ष की ओर से असावधान मत हो और देख
हुमायूँ कहाँ चला गया और कहाँ उसका प्रताप।

अकबर के नाम का ख़ुत्बा

उनका पवित्र रौज़ा देहली में है। हज़रते आला ने उस पर एक (मक्बरे) का करा दिया है, जो स्वर्ग की ईर्ष्या का विषय है। इस दुर्घटना एवं भीषण हादिसे के र मीर्ज़ा अब्दुल्लाह, खिज्र ख़्वाजा ख़ाँ, अशरफ़ ख़ाँ, ख़्वाजा हुसेन मर्वी कून्दून ख़ाँ, ख़्वाजा अफ़ज़ल ख़ाँ एवं अन्य अमीरों ने इस दुर्घटना को गुप्त रख कर आस पास समाचा दिए और तर्दी बेग ख़ाँ अलवर से, इस्कन्दर ख़ाँ आगरा से और अली कुली ख़ाँ राजधानी में एकत्र हो गये। शोक सम्बन्धी प्रथाओं के सम्पन्न कराने के उपरान्त स

१ रिज़्वां —जन्नत का दारोग़ा।
२ बहिश्त आमद मुक़ामे पाके ऊ तारीख़ अज़ां बाशद।
بہشت آمد مقام پاک او تاریخ ازاں باشد
३ हुमायूँ पादशाह अज़ बाम उफ़्ताद।
ھمایوں پادشاہ از بام افتاد

२८ रबी-उल-अव्वल[1] को हज़रते आला के नाम का खुत्बा पढ़वा दिया और प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने राज्य[2] को चला गया।

हुमायूं की सन्तान

हजरत जन्नत आशियानी के ९ पुत्र हुए —फर्रुख फाल मीर्जा, काफ मीर्जा, अलअमान मीर्जा, अब्दुल्लाह मीर्जा एव तीन अन्य पुत्र। वे बाल्यावस्था में ही मृत्यु को प्राप्त हो गये। हजरते आला (ईश्वर उनके राज्य एव सल्तनत को बढ़ाये) हजरत जन्नत आशियानी (की मृत्यु) के उपरान्त सिंहासनारूढ हुए। उनके सिंहासनारोहण के आशीर्वाद एव उनके फिरिश्ता रूपी व्यक्तित्व से पादशाही को शोभा प्राप्त हुई। उनकी विजयो एव अन्य घटनाओ का संक्षिप्त उल्लेख किया जाता है।

दूसरे (पुत्र) मुहम्मद हकीम मीर्जा हैं जो हज़रत (शाहशाह) के आदेशानुसार काबुल के वाली[3] हैं। उनका जन्म बुधवार १५ जमादि-उल-अव्वल ९६१ हि० (१८ अप्रैल १५५४ ई०) को हुआ[4]।

यह मतला उसका बताया जाता है —

शेर

'सरो, जिसके दामन तक पहुँचने के लिए हमारा हाथ छोटा है,
मिट्टी में मिल गए हैं हम, उसके वियोग के हाथ से।'

हुमायूं की कविताओ के उद्धरण

क्योकि इस किताब का मूल उद्देश्य हजरत जन्नत आशियानी की रचना एव कविता के गुणों का उल्लेख करना है, अत उनकी कविताओ एव शेरो से अत्यधिक रुचि होने के कारण निष्ठा के पृष्ठो पर ये शेर लिखे जाते हैं —

शेर

'मेरा पाला एक चन्द्र रूपी (प्रियतम) से पड गया है
मेरे हृदय में अग्नि धधक रही है।
मेरा घर प्रकाशित हुआ प्रियतम के मुख से,
एक चन्द्र रूपी (प्रियतम) की छाया पड गई है।
हे प्राण! मेरा हृदय हर दिशा मे खीचता है,
जब से वह एक दिल खीचने वाले (प्रियतम) से लग गया है।
इस समय मैं अपनी मनोकामना की सिद्धि कर लूगा,
क्योंकि मेरे हाथ एक मस्त (माशूक) लग गया है।

१ २८ रबी उल अव्वल ९६३ हि० (१० फरवरी १५५६ ई०)।
२ अलका —राज्य, प्रान्त।
३ हाकिम, प्रान्त का राज्यपाल।
४ देखिये अकबर नामा पृ० ३३२, प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद पृ० ३०६।

हे माशूक! मुझसे बुद्धि एवं सावधानी की बातों की आशा मत रख,
क्योंकि अचेत हुमायूं के होश हवास नहीं रहे हैं।'

गजल

'मेरे व्याकुल हृदय से उसके[1] अत्याचार का बाण पार हो गया,
मुझ टूटे हुए हृदय को उसके दुःख का आनन्द प्राप्त हो गया।
यदि आशिकों की हत्या की वह इच्छा करे,
तो मुझे उसकी कृपा एवं उसकी सहृदयता पर आश्चर्य न होना चाहिये।
उसके सम्मान के काबा के समीप किसको पहुँचने का साहस हो सकता है,[2]
कि जिबरील की भी उसके काबा तक पहुँच नहीं।
अनादि काल के प्रारम्भ में कलम ने उसके ऐश्वर्य के विषय में लिखा,
संसार का सौभाग्य उसके आदेशों का सारांश है।
मुझे जो कष्ट वह देता है, उससे बड़ी प्रसन्नता होती है,
दोनों लोकों की प्रसन्नताओं से उसका दुःख-दर्द अच्छा है।
यदि तू आशिकों को पूँछने के लिए कदम बढ़ाये
सहस्रों प्रिय प्राण तेरे प्रत्येक कदम पर न्योछावर हैं।'

गजल

'तेरे लाल[3] की प्रशंसा मेरी जबान पर है,
मेरे प्राण में एक अग्नि है।
गुलाब सरीखे आँसू काही[4] मुख पर,
अग्नि की चिंगारी मेरे हृदय में है।
यद्यपि तेरा बाण (मेरे) शरीर के पार हो गया किन्तु,
उसका आनन्द मेरे प्राण में है।
जो कोई है, मस्तों की गोष्ठी में,
वह मेरे रोने चिल्लाने के कारण अपने आपे में नहीं[5]।

१ प्रियतम के।
२ उसके समीप कौन पहुँच सकता है।
३ होंठ जो लाल के समान लिखे जाते हैं।
४ घास जैसे रंग का।
५ हर कि बाशद ब मजलिसे रिन्दां
बे खुद अज नारा व फुगाने मन अस्त
هر كه باشد مجلس رندان
بیخود از نعرهٔ و فغان من است
इसका अनुवाद डा० हादी हसन ने इस प्रकार किया है।

Whoever belongs to the assembly of libertines is unaware of my shrieks and moans.

जो कुछ भी लोग उसकी सुन्दरता की प्रशसा मे कहे,
वह सब मेरी व्याख्या एव मेरे विवरण मे है।
प्रेम के जो जो रहस्य तू छिपाता है,
वह सब मेरे और तेरे बीच मे है।'

गजल

'प्रसन्नता का था वह समय जब मैं तेरा ध्यान किए हर समय बैठा रहा,
बड़े प्रेम से तेरे सरो सरीखे डील डौल की खोज इधर उधर करता रहा[1]।
मुझमें दोष मत निकाल यदि मैंने तेरे केशो को बिखरा हुआ बताया,
तेरे केश की लट की व्याख्या करते करते मेरा हृदय भी बिखर गया।
कल रात तूने मेरी ओर देख कर पूंछा कि क्या हाल है,
मैं तेरे उदासीन नेत्रो से अत्यधिक टुकडे टुकडे हो गया।
उसकी कली की प्रशसा मे एक अक्षर भी न कहा,
होठो को उस विषय में बात करने से सर्वदा बाधे रहा।
ईश्वर की शपथ है कि हुमायूँ मिलन के समय इतना अचेत था,
मित्र से वार्त्ता करते समय अपने आप को भूल गया था।'

गजल

'तेरा मार्ग-दर्शक रवाना होने ही वाला है,
ताकि छल द्वारा तेर पास पहुँच जाय।
वाटिका में सरो सिर उठाये है,
ताकि वह तेरे शरीर को हमें दिखा सके[2]।

डा० हादी हसन ने 'बेखुद' का अनुवाद "unaware" किया है किन्तु बेखुद का अनुवाद "बेसुध—अचेत अथवा अपने आपे में नहीं" अधिक उचित है। (*The Unique Diwan of Humayun Badshah*,p 41)

१ खुश आकि बा ख्यालत उमरे नशिस्ता बूदम
व ज शौके सरो कदत यज जाये जुस्ता बूदम
خوش آنکه باخیالت عمری نشسته بودم
وز شوق سرو قدت از جای جسته بودم

इसका अनुवाद डा० हादी हसन ने इस प्रकार किया है

Happy the time when I sat thinking of thee all the time and when in admiration of thy cypress stature I jumped from my seat !
(*The Unique Diwan of Humayun Badshah*, पृ० ४५)।

सम्भवत डा० हादी हसन ने दूसरे मिसरे के काफ़िये को 'जस्ता' पढा किन्तु यदि इसे 'जुस्ता' पढा जाय और खोज से अर्थ निकाला जाय तो अधिक उचित है।

२ दूसरा मिसरा दीवाने हुमायूं के आधार पर डा० हादी हसन ने इस प्रकार छापा है —ता कुनद खेश रा बराबरे तू (ताकि अपने आपको तेरे बराबर करे)। नफायसुल मआसिर में जैसा कि अनुवाद किया गया मिसरा इस प्रकार है "ता नुमायद बराये मा बरे तू", "ता कुनद खेश रा बराबर तू" उचित है। (हादी हसन, पृ० ४७)।

जो कुछ भी सृष्टि में वर्तमान है,
नहीं है कुछ भी हे प्रियतम, तेरी अभिव्यक्ति के अतिरिक्त।
तेरा आशिक क्या है ? केवल टूटा फूटा तथा हतोत्साहित,
तेरा मारा हुआ, वन्दी एवं अस्त-व्यस्त।
ईश्वर को धन्य है कि मेरे प्राण ताजा हुए,
जब तक तेरी ताजा कली खिली हुई है।

ग़ज़ल

'बुरी नजर से तुझे कोई हानि न हो,
हमारा टूटा हुआ हृदय, तेरे मुख के लिए सिपन्द[१] हो।
तेरे मार्ग में आशिक लोग, पस्त[२] हो गए,
सर्व के समान तेरा सिर इस प्रकार ऊँचा उठा है।
तेरी अभिलाषा में हम आँसू की वर्षा कर रहे हैं,
हे गुलाब ! तू रोते हुए आशिकों पर मत हँस।
तेरे कुत्ते (मेरे) प्राचीन मित्र हैं,
कहीं ऐसा न हो कि मेरे रकीब[३] तेरे कुत्ते की हत्या कर दें।
मेरा हृदय तेरी जुल्फों में बन्दी हो गया,
यह वहशी शिकार रस्सी में बँध गया।
हुमायूँ उसके केशों से भय मत कर,
तेरे लिए उसके हाव भाव के फितने ही पर्याप्त हैं।'

ग़ज़ल

'तेरा मुख सूर्य के लिए ईर्ष्या का विषय हो गया है,
तेरे मुख से चन्द्रमा नकाब के भीतर छिप गया है।
जब से तेरा मुख सुगंधित केशों में छिप गया है,
ताजा बालछड़ गुलाब के लिए नकाब हो गया है।
जो मदिरा तूने कल रात में पी,
(उससे) आशिकों का हृदय कबाब हो गया है।

१ काला दाना जो नज़र उतारने के लिये जलाया जाता है। पटना के हुमायूँ पादशाह के दीवान में दूसरा मिसरा पहले मिसरे के स्थान पर आया है। (*The Unique Diwan of Humayun Badshah*, p 44)
२ नीचा, छोटा।
३ किसी से प्रेम करने वाले दो अथवा दो से अधिक व्यक्ति परस्पर रकीब होते हैं, प्रतिस्पर्धी।

जब[1] से मधुशाला में तू प्रविष्ट हो गया है,
मस्जिद एवं सूमेआ[2] वीरान हो गए हैं।
अस्तित्व का समुद्र जब प्रकट हुआ,
आकाश उसके मध्य में बुलबुले हो गए हैं।
सृष्टि निरन्तर उसी प्रकार चलती फिरती रहती है,
रहट तथा पानी के बहाव के समान हो गई है।'

ग़ज़ल

'आँख मैं माशूक के मुख पर सिये रहा,[3]
उसकी गरम आह से मैं जल गया।
कल रात में मूर्ख रकीब ने मेरे हृदय को जलाया,
मैं लज्जावश उस समय जल उठा।
मेरे माशूक ने मेरी ओर से सर्द मेहरी[4] प्रदर्शित की।
मैं उसके प्रेम में जल उठा।
अब उचित है कि मैं यह बात कहूँ,
उसके प्रेम को जब मैंने हृदय में एकत्र कर लिया।
लोक-परलोक के लाभ को खो कर,
आशिकी के रहस्य मैंने सीखे।'

शेर

'हमारे समक्ष एक आवरण है, प्रकाश का,
हम स्वयं ही इस कारण अपरिचित हो गये।'

शेर

'जब से देखा है मैंने उसके धधकते हुए गालों की ओर,
मेरे दुखी प्राण में आग लगी है।'

शेर

'जो कोई तुझसे सम्बन्धित रहे,
उसका हृदय अपने आप से पृथक् रहता है।'

१ हुमायूँ के दीवान में यह शेर भी है :
आशिकों का हृदय पूरा खून हो गया है,
उनके आँसू मदिरा के समान लाल है।
२ सूफियों के ध्यानवान की कोठरी।
३ उसे टकटकी बाँधकर देखता रहा।
४ निठुरता; क्योंकि दूसरे मिसरे में जलने का उल्लेख है अतः पहले मिसरे में 'सर्द मेहरी' का प्रयोग किया गया है

गजल

'कहा गया है कि पागल अभिलाषाओं के वश में होता है,
प्रेम के दुख की कौन दवा कर सकता है।
आह उस काले केश के फितने,
हाय वह बिना सिर पाव की गुत्थियाँ।
उसके घुमाव भरे हुए केशों की लट से,
मेरा सीधा शरीर झुक कर दोहरा हो गया है।
नहीं कहूँगा मैं कि पृथक् कैसे हो सकता है,
मित्र का एक अस्तित्व अतिरिक्त है प्रत्येक स्थान पर।
यदि[1] तू व्यापक दृष्टि से देखे,
नहीं है कोई अन्तर हममें तथा ईश्वर में।'

शेर

'तेरे मिलन के आनन्द का आरिफ[2] को ज्ञान प्राप्त हुआ,
इतना बड़ा सौभाग्य दीर्घकाल उपरान्त किसी को अचानक मिल गया।'

शेर

'जो कोई उसके गालों के पसीने से व्याकुल हो गया
प्रियतम ने उस पर दृष्टि डाली और लज्जावश पानी-पानी हो गया।'

रुबाई

'हे हृदय! रकीब के समक्ष घबड़ाहट मत प्रकट कर[3],
अपने हृदय की दशा मत कह किसी चिकित्सक से।
'तेरा उस निष्ठुर से पाला पड़ गया है,
बड़ी कठिन कहानी है, बड़ी विचित्र समस्या है।'

रुबाई

हे हृदय! मित्र की उपस्थिति में प्रसन्नता प्रकट कर,
उसकी सेवा में सच्चाई से हृदय को जला।
हर रात में मित्र के ध्यान में प्रसन्न चित्त बैठा रह,
हर दिन को मित्र के मिलन द्वारा नवरोज बना।'

१ हुमायूं बादशाह के दीवान में यह शेर भी है :
अपने मस्तिष्क में पृथक् होने के विचार मत ला,
सम्मानित ईश्वर अपने बन्दों से पृथक् नहीं।
२ जिसे ईश्वर की मारेफत (ज्ञान) प्राप्त हो।
३ हुमायूं बादशाह के दीवान में यह शेर इस प्रकार है
हे हृदय मित्र की गली में घबराहट मत प्रदर्शित कर
(*The Unique Diwan of Humayun Badshah*, p. 48)

रुबाई

'हे ! तेरे उत्तम मुख से ईश्वर का नूर प्रकट है,
तेरे सद्व्यवहार से व्यवहार की सुन्दरता प्रकट है।
यदि तू मेरे हृदय को न छीनना चाहे,
तो तू दिल छीनने की प्रथाओं से अवगत नहीं है।'

बाई

'हे वह ! तेरी निष्ठुरता ससार में खुली है,
हमें तेरे प्रेम का दुःख है तो फिर क्या चिन्ता है।
यदि तू मेरा खून बहाये और मुझे छोड़ दे,
वह भी मेरे लिए दिल मे तेरी कृपा है।'

शेर

'हे वह ! तेरी याद से मेरा हृदय प्रसन्न रहे,
बिना तेरी याद के मेरा हृदय क्षण भर का भी (किसी बात से) प्रसन्न न रहे।
जिस दिल में तेरी याद के कारण सैकड़ो फरियाद करूँ,
क्या मुझ दुखी को तेरी स्मृति रहती है।'

शेर

'हे भाई जब तू हम्माम में प्रविष्ट होता है,
समस्त प्राणियों मे पृथक् रहता है।
वस्त्र मे सबसे पृथक्, रूप में सब से अलग,
तू सर्व साधारण की प्रथाओं मे पृथक् रहे।
जब तुझे अपनी वहदत[1] का रहस्य ज्ञात हो जाय,
तो तू दैवी रहस्यों मे अवगत हो जाय[2]।'

अकबर

उनका जन्म रविवार की रात्रि ५ रजब ९४९ हि० (१५ अक्तूबर १५४२ ई०) को, जो १९ इस्फन्दारमुज ९११ प्राचीन सवत्[3], १६ निश्रीनुल अव्वल[4] १८५४ यूनानी सवत्, ८ आज़ान ४६४

१ एक होने, ऐक्य।
२ यह अन्तिम शेर रामपुर हस्तलिपि में नहीं है।
३ यज्दजर्द का चलाया हुआ संवत् जो १६ जून ६३२ ई० से प्रारम्भ होता है। इस्फन्दारमुज ईरानी संवत् का १२वां मास था।
४ मारगो मैसीडोनियन संवत् जो १ अक्तूबर ३१२ ई० से प्रारम्भ होता है अतः १६ निश्रीनुल अव्वल १६ अक्तूबर १५४२ ई० को हुई।

जलाली सवन्[1] के अनुरूप है, को रात्रि के प्रारम्भ में ८ घडी ८ दकीका[2] व्यतीत हो जाने के उपरान्त जब कि ४ घडी तथा २२ दकीका रात्रि में शेष रह गए थे, जैसलमीर के अधीनस्थ अमरकोट नामक कस्बे में हुआ। उस समय शेराए शामिया[3] ३२° पर था। कुछ लोगो के मतानुसार उनकी जन्म कुंडली कन्या राशि २० तथा कुछ अंश उस्तुरलाबानुसार थी और कुछ लोगों के मतानुसार सिंह राशि १८° तथा कुछ अंश थी[4]।

यह एक बडी विचित्र बात है कि, ४ रबी-उस्सानी ९४७ हि० (८ अगस्त १५४० ई०) को हज़रत जन्नत आशियानी ने स्वप्न देखा कि परमेश्वर ने उन्हे भाग्यशाली पुत्र प्रदान किया है और उसका नाम उन्होने जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर रक्खा। दो वर्ष बाद उसकी व्याख्या प्रकट हुई एवं आकांक्षा का नक्षत्र दैवी अनुकम्पा के क्षितिज से उदय हुआ और राज्य के विजय का चमकता हुआ सूर्य दैवी सहायता के क्षितिज से प्रकट हुआ।

शेर

'उदय हुआ ईश्वर की कृपा द्वारा ऐश्वर्य की राशि से,
बादशाही के आकाश पर शुभ नक्षत्र।'

यह भी बडे संयोग की बात है कि रुकुनुद्दीन मुहम्मद खा के नाम से, जो एक बडा ही उत्कृष्ट अमीर तथा इस वंश के प्रति निष्ठावान् है, सकलनकर्ता ने तारीख निकाली जिसका पता इन दो शेरो से चलता है —

शेर

'आदि काल में थी, ससार के पादशाह की अनुकम्पा,
दीन के कुतुब मुहम्मद खान पर।
निःसन्देह सम्मानित खान का नाम,
धर्म के पादशाह के जन्म का वर्ष बना।'

इसमें कोई सन्देह नही कि हज़रत जन्नत आशियानी के हिन्दुस्तान में दूसरी बार की विजय का जिसके बाद वे कुछ दिन से अधिक जीवित न रहे उद्देश्य इसके अतिरिक्त कुछ न था कि राज्य हज़रते आला को प्राप्त हो एवं सौभाग्य तथा प्रताप उनका सहायक बने। इन विशेषताओं का एकत्र होना दैवी योजनाओ एवं आकाश की प्रथाओ के अधीन है और यह दैवी रहस्य के तथ्यो एवं ईश्वर की अपार अनुकम्पाओ की गूढ बातो का फल है।

१ आबान ईरानी सवन् का दवा महीना है। जलाली सवत् मलिकी सवत् इस कारण कहलाता है कि इसे सुलतान जलालुद्दीन मलिक शाह सलजूकी ने चलाया था। इसे तैयार करने में प्रसिद्ध फारसी कवि एव गणित-वेत्ता उमर खय्याम का भी बडा हाथ था। यह सवत् कुछ लोगों के मतानुसार ५ शाबान ४६८ हि० (१५ मार्च १०७६ ई०) और कुछ लोगो के मतानुसार १० रमजान ४७१ हि० (१५ मार्च १०७९ ई०) को प्रारम्भ हुआ।
२ मिनट, अकबर नामा के अनुसार २० दकीका। (अकबर नामा, पृ० १८)।
३ एक प्रकार का नक्षत्र।
४ अकबर नामा हिन्दी तारीख ६ कार्तिक १५९९ हिन्दवी दी है।

जिस समय हज़रत जन्नत आशियानी मशहद में कन्धार पहुँचे और वहाँ से एराक की ओर रवाना हुए तो हज़रत आला की पवित्र अवस्था १ वर्ष हो चुकी थी। व उनके साथ थे। मीर्ज़ा अस्करी हज़रत पादशाह को कन्धार ले गया और कुछ समयोपरान्त काबुल भेज दिया। हज़रत जन्नत आशियानी की सल्तनत के मसार को उदभासित करने वाले सूर्य के काबुल के क्षितिज पर उदय होने तक उनका शुभ समय बड़ी कठिनाई में व्यतीत होता था कारण कि यह बात (मानी हुई) है कि कलीम[1] की भांति जिस समय तक व्याकुलता के समुद्र के थपेड़ों का सामना नहीं किया जाता उस समय तक फिरऔन रूपी शक्ति छिन्न भिन्न नहीं हो पाती। जब तक गुणों के मिस्र के यूसुफ के समान कोई भाइयों द्वारा कष्ट नहीं भोगता तो वह अपने पवित्र चरण मिस्र एवं सौन्दर्य की राजगद्दी पर नहीं पहुँचा पाता। एराक की यात्रा से लौट कर उन्होंने हज़रते आला की सरकार के व्यय हेतु विलायतें नियुक्त कर दीं। व स्वयं ९५१ हि० (१५४४-४५ ई०) में हजरत सुलेमान मीर्ज़ा को पराजित करने के लिये बदख्शाँ की ओर रवाना हुए। हज़रत आला को काबुल में छोड़ गए। मीर्ज़ा कामरान ने अचानक काबुल पहुँच कर नगर पर अधिकार जमा लिया और हज़रत आला को एक प्रकार से बन्दी रखने लगा। जब हज़रत जन्नत आशियानी की विजयी पताकायें बदख्शाँ से काबुल पहुँचीं और नगर का अवरोध कर लिया गया तो उसने बाण तथा बन्दूक से अपनी प्रतिरक्षा हेतु हज़रत आला को अपनी ढाल बना लिया किन्तु इस कारण कि दैवी रक्षा सर्वदा उनकी सहायता किया करती थी वे सुरक्षित रहे।

जब काबुल पर विजय प्राप्त हो गई तो जिस प्रकार बन्दी गृह का यूसुफे किनआनी याकूब के पास पहुँचा था[2], वे हज़रत जन्नत आशियानी के आश्रय एवं देख रेख के अधीन हो गए और अपने पिता की कृपाओं के पात्र बने।

गुणवान् शाहज़ादा मीर्ज़ा हिन्दाल की मृत्यु के पश्चात गज़नी एवं उससे सम्बन्धित स्थान हज़रते आला को प्राप्त हो गए। मीर्ज़ा हिन्दाल के सेवक एवं उसकी सेना उनकी सेवा में पहुँच गई। व हिन्दुस्तान के अभियान के समय हज़रत जन्नत आशियानी के साथ थे और उनके चरणों से विजय पताका आकाश तक पहुँच गई।

देहली से बैराम खाँ को हज़रते आला का अतालीक बना कर इस्कन्दर अफगान के विरुद्ध, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, भेजा गया। बैराम खाँ हज़रते आला के साथ-साथ सिकन्दर के समीप पहुँचा। इसी बीच में हज़रत जन्नत आशियानी के निधन के समाचार प्राप्त हुए। शोक सम्बन्धी प्रथायें के सम्पन्न कराने के उपरान्त वे शुक्रवार २ रबी उस्सानी ९६३ हि० (१४ फरवरी १५५६ ई०) को ब्याह[3] नदी तट पर कानवाह के समीप सिंहासनारूढ़ हुए।

मीर्ज़ा कामरान

हज़रत मीर्ज़ा कामरान योग्यता, विद्वता, वीरता एवं दान-पुण्य द्वारा सुशोभित था।

१ हज़रत मूसा के नदी में बहाये जाने की ओर संकेत है।
२ हज़रत याकूब एवं उनके पुत्र हज़रत यूसुफ जो मिस्र में बन्दी बना लिये गये थे के किस्से की ओर संकेत है।
३ व्यास।

अपनी युवावस्था में पवित्र एव सन्तो के समान जीवन व्यतीत करने में उसने बडी उच्च श्रेणी प्राप्त कर ली। वह सर्वदा अपना उच्च साहस सम्मानित शरीअत के प्रचार एव आलिमो तथा विद्वानो की दशा के सुधार में लगाये रहता था। इस कारण हज़रत फिरदौस मकानी उसे फर्जन्द शेख मुहम्मद कामरान[1] कह कर सम्बोधित करते थे। हजरत फिरदौस मकानी ने उसे अल्पावस्था मे कन्धार प्रदेश का राज्य प्रदान कर दिया था। उस अवस्था म भी उसमे इतनी अधिक बुद्धि एव इतना अधिक धैर्य था कि उसे उस समय भी किसी परामर्श की आवश्यकता न होती थी। वह बड़े प्रभुत्व से शासन करता था।

हजरत फिरदौस मकानी के इस नश्वर ससार से विदा होने के समय मीर्जा कामरान काबुल मे था। वहाँ से लाहौर पहुँचा और हजरत जन्नत आशियानी की अनुमति से लाहौर को भी अधिकार मे कर लिया। वह शीत ऋतु में लाहौर में तथा ग्रीष्म ऋतु में काबुल मे निवास करता था। इस बीच में सर्वदा उनमें आपस में पत्र-व्यवहार हुआ करता था और हज़रत जन्नत आशियानी की प्रशसा में कवितायें लिख कर उनके सम्मानित दरबार मे भेजा करता था और आज्ञाकारिता एव अधीनता के फंदे से अपना सिर कभी बाहर न निकालता था और सर्वदा नाना प्रकार की कृपाओ एव उदारताओ द्वारा सम्मानित होता रहता था। इस गजल की रचना करके लाहौर से दरबार में प्रस्तुत कराया। उसके बदले में उसे हिसार फीरोजा प्रदान कर दिया गया।

गज़ल

'ईश्वर करे तेरा सौन्दर्य नित्य प्रति बढता रहे,
ईश्वर करे तेरा भाग्य महान् एव शुभ रहे।
जो धूल तेरे मार्ग में से उठे,
वह मुझ दुखी के नेत्रो का प्रकाश बन जाय।
जो धूल लैला के मार्ग म उठती है,
उसका स्थान मजनूं के नेत्रो में होता है।
जो कोई तेरे चारो ओर परकार की भाति न फिरे,
वह इस क्षेत्र से बाहर चला जाय।
हे कामरान! जब तक कि ससार कायम है,
ससार की बादशाही हुमायूं के अधीन रहे।

मीर्जा कामरान का कन्धार के लिये युद्ध

इस बीच म वह दो बार किजिलबाशो के उत्पात को रोकने के लिए कन्धार पहुँचा। एक बार साम मीर्जा बिन शाह इस्माईल से मगलवार शाबान ९४२ हि० (२५ जनवरी १५३६ ई०) को उसने कूदके नखवद में घोर युद्ध किया और विजय प्राप्त की। अगजीवार खां[2], जो प्रतिष्ठित किजिल-

१ 'पुत्र शेख मुहम्मद कामरान' अर्थात् 'मीर्जा' के स्थान पर सूफ़िया की प्रवृत्ति रखने के कारण 'शेख'।
२ वह साम मीर्जा का अतालीक था।

वाश था, युद्ध में बन्दी बना लिया गया और उसकी हत्या करा दी गई। अत्यधिक किजिलबाशों की हत्या करके कन्धार को विजय कर लिया। किसी ने उसकी तारीख की रचना की —

'कामरान बादशाह ने साम को पराजित कर दिया।

मौलाना बेकसी ने भी लिखा —

शेर

जिस समय मुकुट एवं सोने के प्याले ने दिखलाया,
युद्ध की सभा में सुराही की शक्ल तथा प्याले का नक्श।
मैंने बुद्धि से पूँछा कि क्या सोने के मुकुट को,
फेंक दिया गया लाल रंग के लाले के समान उस स्थान पर ?
आवाज ने इस युद्ध की तारीख के लिए कहा,
सोने के मुकुट को गिरा दिया, साम की सेना को पराजित करके।'

कामरान का कन्धार पर अधिकार

दूसरी बार शाह तहमास्प स्वयं कन्धार पहुँचा। वहाँ का हाकिम ख्वाजा कला बेग किले को छोड़ कर मीर्ज़ा की सेवा में पहुँचा। मीर्ज़ा ने उसे एक मास तक कोरनिश की अनुमति न दी और कहा कि 'इतने समय तक प्रतिरक्षा क्यों न की कि मैं तेरी सहायता एवं कुमक हेतु पहुँच जाता" और पुनः कन्धार की ओर प्रस्थान किया। बुदाग खाँ को जिसे शाह ने वहाँ नियुक्त कर दिया था, यह वचन देकर कि उसे हानि न पहुँचाई जायगी, निर्वासित कर दिया, और कन्धार पर अधिकार जमा लिया।

हज़ारा एवं अफगान कबीलों का दमन

उसने हज़ारा एवं अफगान कबीलों को इस प्रकार पराजित कर दिया कि उसके समय में किसी के पास आज्ञाकारिता एवं अधीनता स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न रह गया था।

मीर्ज़ा कामरान का आगरा पहुँचना

९४६ हि० (१५३९ ई०) में जब हज़रत जन्नत आशियानी बंगाले के अभियान से लौटे तो मीर्ज़ा भी अपनी सेना सहित आगरा पहुँचा और अभिवादन किया। वहाँ मीर्ज़ा को कोई भीषण रोग लग गया। जब हज़रत जन्नत आशियानी शेर खाँ से युद्ध करने के लिये, जो उस समय धृष्टता में पाँव आगे बढ़ा रहा था, कन्नौज की ओर रवाना हुये तो मीर्ज़ा ने रुग्णावस्था के कारण स्वयं सहायतार्थ प्रस्थान न किया और अपने कुछ आदमियों को हज़रत जन्नत आशियानी की विजयी रिकाब के साथ रवाना कर दिया।

मीर्ज़ा कामरान का लाहौर की ओर प्रस्थान

जब यह प्रामाणिक रूप से ज्ञात हो गया कि उसकी बीमारी, विष के कारण है जो काल के कुचक्र के कारण उसकी हलक में टपका दिया गया है, तो यह कल्पना करके कि सम्भवतः हज़रत जन्नत आशियानी को इसकी सूचना न होगी, रुष्ट एवं व्याकुल होकर लाहौर की ओर चल दिया।

क्योंकि भाग्य के लिखे के अनुसार हजरत जन्नत आशियानी की इच्छा के विरुद्ध स्थिति हो गई अत. वे लाहौर पहुँचे।

हुमायूं का बक्कर की ओर प्रस्थान

उन लोगों की भेंट वहाँ हुई। इस सिद्धान्तानुसार कि हर बात मे परामर्श कर लेना चाहिये हजरत जन्नत आशियानी ने परामर्श के उपरान्त बक्कर एव सिन्ध की ओर प्रस्थान किया। समस्त भाई एव दूसरे से यूसुफ के भाइयो के समान पृथक् हो गए। प्रत्येक किसी न किसी दिशा की ओर चल दिया।

मीर्ज़ा कामरान का काबुल में बादशाह बन जाना

मीर्ज़ा जब खुशाब पहुँचा तो सल्तनत पर अधिकार जमाने की इच्छा ने उसके मस्तिष्क पर अधिकार जमा लिया। प्रत्येक अच्छे बुरे की ओर से विवेक की आँख बन्द करके अपने नाम से पादशाही सिक्का चला दिया और काबुल पहुँचा। जब वहाँ उसने यह सुना कि गुणवान् पादशाह जादा मीर्ज़ा हिन्दाल को क़राचा खा ने, जो उसकी ओर से कन्धार का हाकिम था, बुलाया है और विद्रोह करना चाहता है तो उसने कन्धार की ओर प्रस्थान किया। वहा पहुँच कर किले का, जिसे उन लोगों ने दृढ बना लिया था, अवरोध कर लिया। ५-६ मास तक बराबर युद्ध एव सघर्ष होता रहा। अन्ततोगत्वा सधि करके किले पर अधिकार जमा लिया। ख्वाजा हुसेन मर्वी ने इस घटना की तारीख १७ माह जमादि-उस्सानी निकाली[१]।

मीर्ज़ा कामरान द्वारा बदख्शा की विजय

मीर्ज़ा कामरान सतुष्ट हो जाने के उपरान्त किले से मीर्ज़ा हिन्दाल को लेकर काबुल पहुँचा। मीर्ज़ा हिन्दाल को जूये शाही एव जलालाबाद प्रदान कर दिए और स्वय मीर्ज़ा सुलेमान के विद्रोह कर देने के कारण बदख्शाँ की ओर रवाना हुआ। अत्यधिक सघर्ष के उपरान्त सुलेमान एव उसके प्रशसनीय पुत्र मीर्ज़ा इब्राहीम को काबुल ले आया। कुछ समय उपरान्त उन्हे पुन बदख्शाँ भेज दिया।

हुमायूं का कन्धार एव काबुल पर अधिकार

९५२ हि० (१५४५-४६ ई०) मे हजरत जन्नत आशियानी एराक की ओर से ससार का चक्कर लगाने वाले चन्द्रमा के समान प्रकट हुए। कन्धार विजय करके चमकते हुए सूर्य के समान उनका हृदय काबुल की ओर आकृष्ट हुआ[२]। उस भूभाग की समस्त सेना एव वहाँ के निवासी नक्षत्रो के समान एकत्र होकर सेवा में उपस्थित हुए। मीर्ज़ा कामरान असफल होकर बुधवार १२ रमज़ान ९५२ हि० (१७ नवम्बर १५४५ ई०) की रात्रि को इफ्तार[३] के समय बक्कर की ओर चल दिया[४]। हजरत जन्नत आशियानी निश्चिन्त होकर काबुल के राजसिंहासन पर आरूढ हुए।

१ इस युद्ध के लिये पिछले पृष्ठों में अकबर नामा का अनुवाद देखिये।
२ काबुल पहुँचे।
३ रोजा खोलने के उपरान्त।
४ देखिये अकबर नामा पृ० २४४, प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद पृ० १६७।

शेर

'राज सिंहासन को उस समय उत्कर्ष प्राप्त होता है,
जब छाया उसके सिर पर डालता है, गाजी बादशाह।'

इस मिसरे की रचना तारीख के लिए हुई —
'बिना युद्ध के उससे काबुल देश विजय कर लिया।'

मीर्जा कामरान का बक्कर पहुँचना

मीर्जा कामरान ने बक्कर में मीर्जा शाह हुसेन की पुत्री से विवाह किया, और दिखाने को तो आराम से किन्तु हृदय से चिन्ता एवं षड्यन्त्रपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगा।

'बाह्य रूप से वह सबसे वार्तालाप करता था,
किन्तु हृदय अन्य स्थान पर गिरवी था।'

मीर्जा कामरान का काबुल पर पुनः अधिकार

संक्षेप में, कुछ समय पश्चात् वहाँ से गजनी पहुँचा और वहाँ के लोगों को असावधान पाकर किले में प्रविष्ट हो गया। जब उसे ज्ञात हो गया कि काबुल हजरत जन्नत आशियानी के चरणों के प्रकाश[1] से खाली है, तो वह शीघ्रातिशीघ्र उस ओर रवाना हो गया। जब प्रथानुसार प्रातःकाल किले का द्वार खोला गया तो लोगों को सूचना भी न थी कि मीर्जा किले में प्रविष्ट हो गया। उसने हाजी मुहम्मद असस से पूछा, "कैसे गया और कैसे आया?" उसने उत्तर दिया, 'आप रात्रि के प्रारम्भ में गए और प्रातः काल आ गये।"

हुमायूँ का काबुल पहुँचना तथा मीर्जा कामरान का पलायन

जब हजरत जन्नत आशियानी ने इस घटना का हाल सुना, तो वे काबुल की ओर रवाना हुए। मीर्जा कामरान ने शेर अफगन को एक सेना सहित किले के बाहर भेज दिया। देहे अफगानियान[2] में उसका मीर्जा हिन्दाल, कराचा खाँ एवं हाजी मुहम्मद खाँ से जो हजरत जन्नत आशियानी की सेना के अग्र भाग में थे युद्ध हुआ। शेर अफगन को बन्दी बना कर उसकी हत्या करा दी गई। मीर्जा कामरान को किले में घेर लिया गया। मीर्जा बदख्शाँ की ओर भाग गया।

मीर्जा कामरान द्वारा मीर्जा बेग बरलास की पराजय

अश्वारोहियों तथा पदातियों में से कुल ३५ व्यक्ति लेकर उसने गरी के किले को घेर लिया। वहाँ के हाकिम मीर्जा बेग बरलास ने, जो अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध था, ३०० अश्वारोहियों सहित इस आशय से मीर्जा का मुकाबला किया कि उसे बन्दी बना ले किन्तु मीर्जा ने थोड़े से लोगों के साथ प्राण से हाथ धोकर वीरतापूर्वक युद्ध किया और इस कारण कि "ईश्वर के आदेश से थोड़े से लोग अधिक संख्या पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेते हैं," मीर्जा बेग पर विजय प्राप्त कर ली। मीर्जा बेग को किसी ने बन्दी बना लिया। वह शत्रु पर मुट्ठी भर मिट्टी डाल कर, उसी समान निकल गया जिस प्रकार जल हाथ से निकल जाता है।

१ 'नूर'।
२ 'देहे अफगानान' भी प्रयुक्त हुआ है।

मीर्ज़ा कामरान की पराजय और उसका तालीक़ान पहुँचना

इस बार मीर्ज़ा कामरान सेना एकत्र करके बदख्शाँ पहुँचा। एक वर्ष वहाँ ठहरा रहा। तदुपरान्त मीर्ज़ा के कुछ अमीर २००० व्यक्तियों सहित हज़रत जन्नत आशियानी के पास से मीर्ज़ा के पास चले गए। हज़रत जन्नत आशियानी ने उस समूह का पीछा किया। तालीक़ान के समीप मीर्ज़ा के आदमियों के पास पहुँच गए। मीर्ज़ा कामरान ने उन लोगों पर आक्रमण करके प्रथम बार विजय प्राप्त कर ली। अन्त में परिणाम उनकी इच्छा के विरुद्ध हुआ। हज़रत जन्नत आशियानी ने विजय एवं सफलता के दर्पण में अपने उद्देश्य के चित्र का अवलोकन किया। मीर्ज़ा मुक़ाबला न कर सका और पैदल तालीक़ान के किले में पहुँच कर उसे दृढ़ बना लिया।

शेर

'संसार में इसी प्रकार होता आया है,
कभी उससे मधु प्राप्त होता है और कभी विष।

मीर्ज़ा कामरान का हुमायूं की सेवा में उपस्थित होना

हज़रत जन्नत आशियानी ने किले के समीप पहुँच कर उसका अवरोध कर लिया। मीर्ज़ा के आदमी हज़रत जन्नत आशियानी के सेवकों को इस आशय से बन्दी बना कर ला रहे थे कि उन्हें अपनी वीरता के कारण पुरस्कार प्राप्त होगा। किन्तु वे कोप के कोड़े द्वारा बन्दी बना लिये गये। इस प्रकार हज़रत जन्नत आशियानी के पास बहुत बड़ी सेना एकत्र हो गई। मीर्ज़ा क्षमा याचना करके वहाँ से चला गया। दो-तीन मंज़िल की यात्रा के उपरान्त "वापसी प्रशंसनीय होती है" कहता हुआ हज़रत पादशाह की सेवा में पुनः उपस्थित हुआ। हज़रत जहाँबानी ने उसे कोलाब प्रदान कर दिया और मीर्ज़ा अस्करी को भी उसके पास छोड़ कर काबुल की ओर चल दिए। यद्यपि लोग उन्हें सर्वदा सावधान किया करते थे कि मीर्ज़ा को न छोड़ना चाहिए किन्तु हज़रत जहाँबानी ने अपने वचन के कारण उनकी बात स्वीकार न की।

हुमायूं की बल्ख में पराजय

इसी बीच में उन्हें बल्ख की ओर प्रस्थान करना पड़ा। वचनानुसार मीर्ज़ा को बुलवाया। मीर्ज़ा ने बहाना बना कर अपने वचन का पालन न किया।

शेर

'वचन की कमर में पालन का हाथ डाल,
प्रयत्न करके वचन भंग करने वाला न बन।'

संयोग से हज़रत जन्नत आशियानी को उस अभियान में सफलता न मिली और राजधानी काबुल की ओर वापस हुए। इस बार रशीद खां को पत्र लिखा कि दुष्ट भाई मुहम्मद कामरान ने अपने स्वभाव के अनुसार विरोध के अपराध को संगठन पर प्राथमिकता देकर प्रेम एवं निष्ठा के नियमों को पूर्णतः भुला दिया अतः वह अभियान इच्छानुसार सफल न हो सका अपितु दुःख एवं हृदय के कुपित होने का कारण बना।

मीर्ज़ा कामरान का काबुल पर पुनः अधिकार

संक्षेप में, मीर्ज़ा ने पुन विद्रोह कर दिया। बदख्शाँ वालो से युद्ध किया और उनके द्वारा पराजित हुआ तथा काबुल की ओर चल दिया। कराचा खा से परामर्श से अपहरण[1] करके एक बहुत बडी सेना को छिन्न-भिन्न कर दिया। वह सेना के अग्र भाग में नियुक्त हुआ किन्तु नमकहरामी प्रदर्शित करते हुए मीर्ज़ा से मिल गया। कियचाक मे दोना सेनाओं का मुकाबला हुआ। युद्ध में हज़रत जन्नत आशियानी घायल हुए। हज़रत जन्नत आशियानी अन्दराब पहुँच। मीर्ज़ा कामरान ने काबुल का अवरोध करके, बलपूर्वक किला अपने अधिकार मे कर लिया। मीर्ज़ा कामरान अपनी शक्ति बढाने लगा और सतील की बेगमों एव पवित्रता की परदे वालियो को किले से निकाल दिया।

मीर्ज़ा कामरान की पराजय

हज़रत जन्नत आशियानी को परोक्ष से सहायता प्राप्त हो गई। बहुत से लोग उनके पास एकत्र हो गए। सयोग से व्यापारियो का एक कारवान घोडे एव अत्यधिक सामग्री लेकर पहुँच गया। हज़रत जहाँबानी की सेना को अत्यधिक शक्ति प्राप्त हो गई। दोनों ओर से युद्ध हुआ। पजर नदी तट पर सेनाओ की मुठभेड हुई। युद्ध के पश्चात् हज़रत जन्नत आशियानी की विजय हुई। मीर्ज़ा भागकर लमगानात की ओर चला गया। अल्प समय में सेना एकत्र करके अफगानो के साथ अग्रसर हुआ। हज़रत जन्नत आशियानी उसके विद्रोह को शान्त करने के लिए उस ओर रवाना हुए। मीर्ज़ा भाग खडा हुआ। अत्यधिक भय की अवस्था में नीलाब नदी पार की और हिन्दुस्तान के प्रदेशो मे प्रविष्ट हो गया।

मीर्ज़ा कामरान का महमन्द एवं खलील कबीलो के पास पहुँचना

जब उसने हज़रत जन्नत आशियानी के काबुल वापस होने के समाचार सुने तो पुन विद्रोह एव षड्यन्त्र की अग्नि भडकाने, और मूर्खतावश महमन्द एव खलील नामक कबीलो के पास पहुँच कर उनकी कुव्यवस्था का कारण बना। इस प्रकार मीर्ज़ा कामरान ने अपने आपको दीर्घकाल तक उस समूह के साथ आवकन्द मे दृढतापूर्वक बन्द रक्खा। जन्नत आशियानी की विजयी पताकाओ ने उस महाल के आसपास के स्थानो का इस प्रकार अवरोध कर लिया था कि वे लोग किसी प्रकार भाग न सकते थे। अन्ततोगत्वा व्याकुल होकर ऊँच नीच की ओर ध्यान न देकर अपने आप को रात्रि के छापे के विचार से बाहर निकाला। वे विजयी शिविर एव खेमो के समीप पहुँच गए और प्रत्येक दिशा मे छापा मार कर ससार मे कोलाहल उत्पन्न कर दिया। हर ओर अफगानो का भय व्यापक था। विजयी वीर उस समूह के समूलोच्छेदन में लगे थे और बहुत कम सख्या मे होने के बावजूद उन दुष्टो का सहार कर रहे थे। बहुत बडी सख्या मे लोग मार डाले गए। शेष लोग पराजित हो गए। उस समय आसमान ने दो विभिन्न प्रकार के दृश्य प्रस्तुत किए और विजय के फूल खिलाने के बावजूद मित्रो के हृदय को शोक के काँटो से छलनी कर दिया।

१ विश्वासघात करके।

मीर्ज़ा हिन्दाल की हत्या

उस अंधेरी रात में युग की धूर्तता के कारण गुणवान् बादशाहज़ादे मीर्ज़ा हिन्दाल को मौत के निष्ठुर हाथों ने नष्ट कर दिया। क्योंकि इस बात का पता न था कि मीर्ज़ा हिन्दाल शत्रुओं के पास है अथवा नहीं अतः हज़रत जन्नत आशियानी वहां कुछ दिन तक ठहरे रहे और उसके विषय में पूँछ ताछ कराते रहे यहाँ तक कि उस दुष्टता का पता चल गया जिसका दुष्परिणाम उन्हें क़यामत तक भोगना पड़ेगा। जब उन्हें उस बात का ज्ञान प्राप्त हो गया तो जन्नत आशियानी ने उस समूह के विनाश का संकल्प कर लिया।

मीर्ज़ा कामरान का सलीम शाह के पास पहुँचना

मीर्ज़ा अपने आप को उस भंवर से निकाल कर पराजय के उपरान्त हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुआ और अपने शत्रु सलीम शाह के पास पहुँचा।

शेर

'मित्र को चाहिए कि वह जो कुछ चाहे मित्र के लिये करे,
चाहे उसे अपनी मौत ही क्यों न पसन्द करनी पड़े।
कदापि ऐसा न हो कि मित्र से रुष्ट हो कर,
शत्रुओं के पास जाय।'

सलीम शाह ने यद्यपि प्रथम बार सौजन्य-पूर्ण व्यवहार किया परन्तु अन्त में मीर्ज़ा के बन्दी बनाने का इरादा करने लगा। मीर्ज़ा को जब इस बात का पता लगा तो चकमा देकर भाग गया और काफ़िरों के पास से लाहौर एवं कश्मीर होता हुआ, पर्वत के आँचल में पहुँचा, और राजाओं के पास चला गया। सलीम शाह ने राजाओं के विरुद्ध प्रस्थान किया। उन लोगों ने मीर्ज़ा को भगा कर सुल्तान आदम के पास भेज दिया। सुल्तान आदम गक्खर ने पादशाह का हितैषी होने के कारण उससे कहा कि, 'तुम्हें मेल कर लेना चाहिये और अफ़ग़ानों से युद्ध करना चाहिये। आपस में युद्ध करना उचित नहीं।" उसने हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में आदमी भेजे और मीर्ज़ा के आगमन की सूचना दी। वे उस ओर रवाना हुए। सुल्तान आदम ने मीर्ज़ा को दरबार के दासों को सौंप दिया। हज़रत ने इस बार मीर्ज़ा को मुक्त करना उचित न समझ कर, मुसलमान आलिमों के फ़तवों एवं प्रतिष्ठित तथा सम्मानित लोगों और ख़ास व आम के आग्रह पर उसको दृष्टि से वंचित[1] करके काबा की ज़ियारत हेतु बिदा कर दिया। मीर्ज़ा ने भी सांसारिक कार्यों की ओर से उपेक्षा करके उस ओर प्रस्थान किया। इस ग़ज़ल की उसने मदीना में रचना की

ग़ज़ल

'हम तेरी ओर, हे ईश्वर की छाया! प्यासे आये है,
तू अनुकम्पा की छाया है, हम तेरी रक्षा में आये हैं।
युग की दुष्टता एवं आकाश के अत्याचार से,

१ अंधा करके।

न्याय की आकांक्षा में, हम शाह[1] के द्वार पर आये हैं।
फकीरी की इच्छा की, कलन्दरो के मार्ग को अपनाया,
हम मुकुट एवं गौरव तथा ऐश्वर्य को त्याग कर आये हैं।
हे गुलाब के फूल[2] हमारी ओर से उपेक्षा मत कर कारण कि तेरे चरणों में,
घास के तिनकों के समान हम आये हैं।
कामरान मेरे हृदय के टुकड़े बाहर से प्रकट नहीं,
इस कारण मित्र की ओर हम घास के समान आये हैं।'

मीर्जा कामरान की मृत्यु

दीर्घकाल तक वह मक्का में मुजाविर रहा। तीन हज करने के उपरान्त ११ जिलहिज्जा ९६४ हि० (५ अक्तूबर १५५७ ई०) को मिना[3] में नश्वर संसार से विदा हो गया। मौलाना कासिम काही ने उसकी तारीख की रचना की —

शेर

'कामरान एक ऐसा पादशाह था,
जिसके समान कोई अन्य न था।
उसने काबुल से काबा की ओर प्रस्थान किया और वहाँ,
प्राण ईश्वर को सौंप दिए और शरीर मिट्टी को।
उसकी तारीख काही ने इस प्रकार लिखी,
कामरान पादशाह की काबे में मृत्यु हो गई।

वैसी नामक कवि ने लिखा है —

शेर

"बादशाह कामरान प्रतिष्ठित बादशाह,
जिसने सल्तनत में अपना सिर शनि ग्रह तक पहुँचा दिया।
मक्का में वह चार वर्ष तक मुजाविर रहा,
संसार के बन्धनों से उसने अपने हृदय को पूर्णतः मुक्त करा लिया।
चौथे हज का ज्ञान प्राप्त करने के उपरान्त,
हज के एहराम[4] हेतु प्राण प्रियतम[5] को सौंप दिये।
वैसी एक रात जो सोने लगा,
(तो उसने उसे) कृपापूर्वक अपनी ओर बुलाया।
कहा, 'यदि पूँछे मेरी मृत्यु के विषय में,
कह, 'स्वर्गीय शाह मक्का में रह गया'।"

१ हजरत मुहम्मद से तात्पर्य है।
२ हजरत मुहम्मद से तात्पर्य है।
३ मक्का के निकट एक घाटी जहाँ कुर्बानी की जाती है।
४ हाजियों का वस्त्र—दो चादरें जो बिना सिली हुई, एक बाँधी और एक ओढ़ी जाती है।
५ ईश्वर।

मीर्ज़ा कामरान का पुत्र

मीर्ज़ा कामरान का एक पुत्र बच गया था। वह बडे ही उत्तम स्वभाव का एव चरित्रवान् था। उसका नाम अबुल कासिम मीर्ज़ा था। यह मतला उसी का है जिसकी रचना उसने अपनी दशा के अनुकूल की —

शेर

'मासक हर बार जब अपने माधवी रूपी केश मे कघी करता है,
हमारे दुखी हृदय मे, दुख के नश्तर लगाता है।'

शेर

'हे मौत ! मेरी हत्या करने में इतनी जल्दी मत कर,
मैं तेरी निष्ठुरता के कारण मर ही जाऊँगा, घबडा मत।'

वह १७ जिलहिज्जा ९७४ हि० (२५ जून १५६७ ई०) को ग्वालियार के किले मे मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसकी तारीख इस प्रकार हुई —

'कामरान का नाम व निशान न रहा'।

मीर्ज़ा कामरान की कविता

मीर्ज़ा कामरान बडे उत्तम तुर्की एव फारसी शेरो की रचना करता था। उसकी कल्पनाशक्ति बडी उत्तम एव सूझबूझ बडी सुन्दर थी। जिस समय मीर्ज़ा, सलीम शाह के शिविर से भाग कर परहाला की सीमा पर पहुँचा तो उसने एक बडे ही रूपवान तथा सलोने हिन्दू बालक को देखा और उसे अपने प्राण एव हृदय दे दिए[1]। उसके विषय मे उसने लिखा —

ग़ज़ल

'हे हिन्दू बालक ! क्योकि तूने मेरी शान्ति छीन ली,
अपने अनुकम्पा के केशो पर यज्ञोपवीत बाध कारण कि तू राम है।
तेरी आकृति, केश एव मुख की आयतें[2] गिनी,
जब कुरान के प्रारम्भ ही में मैंने अलिफ लाम[3] देखा।
तेरे नेत्र इतनी हलचल मचा रहे है कि,
मुझे भय है कि कही वे इस्लाम की शोभा न छीन ले।
काल चक्र से अनेको फितने उठ खडे होगे,
यदि तू फिर कोठे पर १४वी रात के चद्र के समान निकल आये।
जो कुछ तेरी भृकुटि से पाषाण हृदयी माशूका पर बीत गई
वह पत्थर पर बहराम के बाण द्वारा न बीती।

१ आशिक़ हो गया।
२ कुरान शरीफ का वाक्य। यहा सुन्दरता से तात्पर्य है।
३ ا - ل—कुरान शरीफ का प्रथम सूरा।

गत रात्रि को हे माशूक जब हमने तुझे देखा तो हम गिर पडे,
ज़िद्दी भिकारी के समान जो झूठे लोभ में पड जाता है।
तेरे लाल[१] से हमने गाजी के समान अपनी इच्छा छीन ली,
तुझसे विदा हो गए और निराश चले गए हम।'

शेर

उस सरो ने अपना दामन पुन ऊपर उठाया है,
किसी ने क्या उसके दामन तक इच्छा के हाथ बढाये हैं ?'

शेर

'प्रेम का आकर्षण था, कि उस किनआन के चन्द्र[२] ने,
अन्ततागत्वा जुलैखा[३] के दामन तक हाथ पहुँचाये।
हमारी निन्दा किस कारण करते हो, सिनआँ[४] का किस्सा सुन,
कि एक झलक से तरसा[५] की पुत्री ने उसको मार्ग भ्रष्ट कर दिया।
कामरान किस कारण तूने उस मुगबचे[६] को अपना होश हवास दे दिया,
यदि तूने मधुशाला में मदिरा-पान नही किया।'

शेर

'हे हिन्दू बालक ! तेरे कारण मेरा मुख तिन्के के समान हो गया,
खेद है कि तुझे मेरे दुख का ज्ञान नही।'

शेर

"मैंने कहा अपने होठ से इस घायल के हृदय की इच्छा पूरी कर दे,
हँसा वह और कहा कि, नाही-नाही[७]'।"

उसने यह गजल हजरत जन्नत आशियानी की सेवा में प्रस्तुत की—

१ होंठ।
२ हजरत यूसुफ।
३ मिस्र नरेश अजीज की पत्नी, जो हजरत यूसुफ पर आशिक हो गई थी।
४ एक बड़े धार्मिक सन्त जो एक अग्नि पूजक की लड़की पर आशिक हो गये और उसके प्रेम में उसका सूअर चराते थे।
५ अग्नि पूजक।
६ साकी का वह रूपवान् बालक जो मदिरा पिलाता है।
७ गुफ्तम ज लबत कामे दिले खस्ता बर आर,
दर खन्दा शुद व गुफ्त कि "नाही" "नाही"।
گفتم ز لبت کام دل خسته برآر
در خنده شد و گفت که ناهی ناهی

शेर

'तेरे मार्ग मे हम अपनी आँख बिछाये रहे बहुत समय तक,
अब वह समय आ गया कि तू बढा हमारी ओर थोडे से कदम।
वह जो हमारी ओर कोई सन्देश नही प्रेषित करता,
क्या अच्छा होता यदि कुछ गालियो से मझे प्रसन्न करता।
मेरे हृदय के शिकार के लिए तेरे गाल के तिल (का दाना) पर्याप्त है,
हर बार पेश से उसके लिए जाल मत बिछा।
हम मधुशाला मे बैठने वाले एव मस्त हैं, तू हमारे साथ मत बैठ,
खेद है कि तू बैठा रहा थोडी सी बदनामी से।
यह कैसी रात थी जब हम दरिद्रो की सेवा मे थे,
हम परदेशी तेरी गली मे कुछ शामा तक।
वे दिन कितने अच्छे थे जब हम मधुशालाओं मे चक्कर लगाते रहते थे,
'लाला' रूपी हिन्दू बालक ने कुछ लोगो को राम कर लिया[१]।
हे कामरान ! यह सुन्दर गजल हुमायूँ को भेज दे,
सम्भव है वह तुझे कुछ इनाम भेज दे।"

अस्करी मीर्ज़ा

अस्करी मीर्ज़ा हज़रते आला का चाचा था। वह बडा ही सहृदयी था और विद्वानो एव आलिमों से उसका अत्यधिक सम्पर्क रहता था। दीर्घकाल तक वह कन्धार में हाकिम रहा। हजरत जन्नत आशियानी के एराक की ओर प्रस्थान के समय ईर्ष्यालुओ एव षड्यन्त्रकारियो ने उसे इस बात के लिए तैयार किया कि उन्हे रोके और पाप के हाथ शत्रुता से रगे। जब वह उस ओर रवाना हुआ और उसे हजरत जन्नत आशियानी के दासो की सवारी की धूल का भी पता न चला तो वह हजरते आला को, जिनकी अवस्था बडी कम थी, वहाँ ले जाकर बहुत समय तक उनकी रक्षा करता रहा यहाँ तक कि हजरत जन्नत आशियानी के राज्य ने पुन प्रताप का मुख खोला और उनकी अनुकम्पा की छाया उस प्रदेश में पहुँची। मीर्ज़ा अस्करी ने किले के बाहर निकल कर, दासता के फदे में अपना सिर डाल दिया। कुछ समय तक आवश्यकतावश वह बन्दी भी रहा, यहाँ तक कि मुक्त होकर बल्ख पहुँचा और वहाँ से मक्का मदीना की जियारत हेतु रवाना हुआ। शाम एव मक्का की घाटी के मध्य मे परलोकगामी हो गया।

उसकी मृत्यु की तारीख 'अस्करी पादशाहे दरिया दिल'[२] है। उसे कविता मे बडी रुचि थी। उसके मोती की वर्षा करने वाले शेरो मे से (कुछ इस प्रकार) है —

१ अपने वश में कर लिया।
२ 'मुक्त हस्त अस्करी पादशाह'।

शेर

'जब तक ईश्वर ने प्रदान की मुझे दुःख की घाटी,
इश्क के लिए क्या है, चाहे अरब हो और चाहे अजम[1]।
मजनूँ ने जब लैला की साडनी को देखा,
उसे देखते ही दुःख भूल गया।
मेरे मजार की लोह[2] पर अच्छा बुरा कुछ न लिखे,
यह व्यक्ति जो लिखना जानता हो।
हे चन्द्र! अस्करी के समान तेरे मुख की इच्छा की मैंने,
जब अस्तित्व के संसार में हमने अपने पाँव रक्खे।'

शेर

'बालछड के समान तेरे केश छल्ले-छल्ले हो गए,
उन छल्लों से तेरा मुख गुलाब के समान दृष्टिगत होता है।'

शेर

प्रत्येक क्षण पर मस्ती में हे चन्द्र! मेरे ऊपर यह क्या रोष है,
प्रत्येक मस्त पापी नहीं होता, संसार में जल (का भाग) भी है।
तेरी भृकुटि के काँटे मेरे हृदय में चुभने लगे,
भृकुटि के प्रत्येक बाल से खून के आँसू टपकने लगे।'

मीर्जा कामरान ने उसके उत्तर में कहा —

शेर

'उद्यान में यदि तेरा डील-डौल सरो दिखाने लगे,
लज्जित हो जाय और लज्जावश झुकने लगे।'

मीर्जा मुहम्मद हिन्दाल

मीर्जा मुहम्मद हिन्दाल बड़ा ही गुणवान् पादशाहजादा तथा हजरते आला का सौतेला चाचा था। हजरत जनत आशियानी उसके प्रति अत्यधिक कृपा-दृष्टि प्रदर्शित किया करते थे। वह भी निष्ठा-पूर्वक आज्ञाकारिता प्रदर्शित करता था। अपने दान-पुण्य एवं वीरता के लिए बड़ा प्रसिद्ध था। अपने समकालीनों में वह अपनी बुद्धि तथा विवेक के लिए बड़ा प्रशंसा था। उसकी जन्म तिथि इस प्रकार है —

शेर

"भाग्यशाली शाहजादे की तारीख का तुझे कोई ज्ञान है,
उसके साल की तारीख 'बौरवे बुर्जे शहंशाही' हुई[3]।"

१ अरबों के अनुसार अरब के अतिरिक्त अन्य देश, किन्तु अजम, ईरान को भी कहते हैं।
२ कब्र की तख्ती।
३ शाहंशाह की राशि का नक्षत्र।

मृत्यु

उसकी शहादत चरियार नामक स्थान पर हुई जो तूमान बेग के अधीन है। जिस समय महमन्द एवं खलील नामक अफगान कबीलों ने मीर्जा कामरान के अधीन हजरत जन्नत आशियानी के लश्कर पर रात्रि में छापा मारा तो मीर्जा हिन्दाल ने वीरता प्रदर्शित करते हुए लश्कर की प्रतिरक्षा की और पौरुष प्रदर्शित करते हुए शत्रुओं पर आक्रमण किया। सयोग से तलवार खाकर स्वर्गगामी हो गया। यह घटना २१ जीकाद ९५८ हि० (२० नवम्बर १५५१ ई०) को घटी। "शबखून"[१] शब्द से उसकी तारीख निकली। मुल्ला खिरद जरगर ने कहा —

शेर

"हिन्दाल मुहम्मद शाह भाग्यशाली,
अचानक मृत्यु के कारण शहीद हो गया, रात्रि के मध्य में।
'शबखून' जब उसकी शहादत का कारण बना,
उसके शहीद होने की तारीख 'शबखून' से माग।"

मीर अमानी ने दूसरी तारीख की रचना की —

शेर

'हाव भाव की वाटिका का सरो हिन्दाल,
जब इस वाटिका से स्वर्ग की ओर चल बसा।
उसके सरो सरीखे डील डौल के स्मरण में ससार वालो की,
आह एवं खेद का धुवाँ आकाश तक पहुँचा।
दुखी कुमरी ने तारीख कही,
राज्य की वाटिका से सरो निकल गया।'

उसने बहुत से उत्तम शेरो की रचना की। उन्ही में से है —

शेर

'तेरे लाल सरीखे होठ कितने मीठे है,
अग्नि के समान तेरा मुख कितना (सुन्दर) है।
मेरा चन्द्र उन दो काले नेत्रो के नीचे,
कितना उत्तम अम्बर सरीखा तिल रखता है।
कस्तूरी सरीखे केश उनसे मत दे,
कारण कि अनेको फितने उसमें छिपे रहते है।
तू मेरे ऊपर कोई भी कृपा नही करता,
कितना कठोर लोहे का हृदय है तेरा।
प्रियतम के चरणो के चुम्बन हेतु हिन्दाल,
सर्वदा भूमि ही पर मुख रखता है।'

१ रात्रि में छापा।

मसूद कोकी की सेना में शिकार खेलता था। कहते हैं कि उसके आदमी एवं गुलाम में झगड़ा उत्पन्न हो गया वह अधिक न ठहर सका और काबुल पहुँचा। ६ मास उपरान्त वहाँ से कन्धार की ओर रवाना हुआ। शीराज में हज़रत बादशाह की सेना द्वारा पराजित हुआ और पुनः गुजरात की ओर रवाना हुआ। वहाँ हबशियों गुलामों तथा मीर्ज़ाओं की सेना से युद्ध किया। तदुपरान्त भाग गया। उसका पुत्र ज़ाफ़र अन्त में अकबर बादशाह की सेना में सम्मिलित हो गया। जब हज़रत जिन्नत आशियानी ने कन्धार [illegible] ज़ाफ़र अपने पुत्र और अपने दल के साथ उनकी सेवा में उपस्थित हुआ। वह उस समय तक अपना कार्य करते रहे जब तक गज़नी के [illegible] में [illegible] रहा। बैरम खाँ के शासनकाल में उसके पुत्रों की मृत्यु हो गई। उसने अपना सब कुछ त्याग दिया और फिर इस उद्देश्य दरबार में उपस्थित हुआ। उसकी आयु अत्यधिक हो गई थी हज़रत जन्नत आशियानी की शिक्षानुसार वह [illegible] आरम्भ कर दी और [illegible] उसने आरम्भ में [illegible] दीक्षा प्राप्त किया था। उसकी सेवा के कारण वह हज़रत [illegible] उपस्थित हुआ। [illegible] नाना प्रकार के [illegible] इतना प्रसिद्ध हो गया कि [illegible] के अवसर पर [illegible] की समरभूमि में और [illegible] प्रदर्शित किया। इस कारण हज़रत जन्नत आशियानी का विश्वासपात्र हो गया और उसे [illegible] प्राप्त हो गया।

बैराम खाँ को अन्धकार प्रदान होना

जब दुर्भाग्यवश हज़रत जन्नत आशियानी हिन्द से विवश होकर सिंध (सिन्ध) के मार्ग से ईरान की ओर रवाना हुए तो खाँ (बैराम खाँ) भी पहले हिन्द एवं गुजरात के प्रान्तों में नाना प्रकार के [illegible] और यथा सम्भव प्रयत्न करके उनकी सेवा में पहुँच गया। इसके पश्चात् वह आगे आगे की सेना का प्रधान नियुक्त करने की प्रार्थना को पूर्ण किया और खान की उपाधि द्वारा सम्मानित हुआ। वहाँ [illegible] तक पूर्ण प्रभाव के साथ [illegible] राज्य का शासन करता रहा।

जब हज़रत (जहाँबानी) ईरान से हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुए तो [illegible] समान विजयी शिविर के साथ हो लिया और विजयी सेना के सिपहसालार [illegible] में उसने वीरता एवं शौर्य की विजय में अत्यधिक शौर्य प्रदर्शित किया। इस कारण वह बादशाह की असीम कृपा द्वारा "यार वफ़ादार"[1], 'बिरादर निकू सियर'[2], 'फ़र्ज़न्दे सआदतमन्द'[3] एवं खाने खानाँ की उपाधि द्वारा सुशोभित हुआ। हज़रत (जहाँबानी) के आदेश से हज़रत [illegible] शाही बच्चों की शिक्षा में 'खान बाबा' की उपाधि द्वारा सुशोभित हुआ। जब वह हज़रत [illegible] का अतालीक नियुक्त किया गया तो उसकी विजयी शिविर के साथ सिकन्दर एवं समस्त अफ़गानों [illegible] को पराजित करने के लिए, सरहिन्द पंजाब की ओर रवाना हुआ। इसी बीच में जब हज़रत जन्नत

१ स्वामी भक्त मित्र।
२ चरित्रवान् भाई।
३ भाग्यशाली पुत्र।

आशियानी की मृत्यु हो गई और चारों ओर से शत्रु उठ खड़े हुए तो उसने निष्ठा-पूर्वक खिलाफ़त एवं बादशाही का खुत्बा, हज़रते आला के नाम से पढ़वा दिया।[1]

सुल्तान

उसका नाम अली कुली बिन हैदर सुल्तान उज़बेक शैबानी था। वह खाने ज़मा की उपाधि द्वारा सुशोभित एवं समकालीनों में प्रतिष्ठित था। हैदर सुल्तान जाम के युद्ध[2] में क़िज़िलबाशों के पास चला गया और ईरान में रहने लगा यहाँ तक कि ९५१ हि० (१५४४-४५ ई०) में हज़रत जन्नत आशियानी एराक पधारे। उनके लौटते समय हैदर सुल्तान अपने पुत्र अली कुली एवं मुहम्मद सईद (जो बहादुर खां के नाम से प्रसिद्ध था) के साथ जो बालक थे हज़रत जहाँबानी की विजयी रिकाब के साथ कन्धार पहुँचा। उस समय से अली कुली एवं उसका भाई हज़रत जहाँबानी के कृपा-पात्र रहे। जब कभी अली कुली युद्ध हेतु गया तो उसने वीरता एवं पौरुष प्रदर्शित किया। इस प्रकार वह खास व आम में प्रसिद्ध हो गया।

अली कुली को सम्भल प्राप्त होना

जब हिन्द विजय हो गया तो हज़रत जन्नत आशियानी ने उसे सम्भल प्रदान कर दिया। हेमू मर्दूद व मलऊन[3] एवं काफ़िर के विद्रोह के उपरान्त, जिसने देहली पर अधिकार प्राप्त कर लिया था, इस्लाम के राज्य में उथल-पुथल मच गई। उसकी पराजय एवं हत्या में अली कुली ने बड़ी योग्यता प्रदर्शित की। स्वर्गीय मुहम्मद बैराम खां ने, जो सर्वदा अली कुली एवं उसके भाई को आश्रय प्रदान करने का प्रयत्न किया करता था, सम्भल को उसी प्रकार उसके पास रहने दिया। जब वह सम्भल पहुँचा तो अफ़ग़ानों की सेना ने उस पर आक्रमण किया। दोनों में घोर युद्ध हुआ। अली कुली को विजय प्राप्त हो गई। वह उनका पीछा करता हुआ लखनऊ तक पहुँचा, और उसपर अधिकार जमा लिया। ..[4]

शहीदी

शाह अबुल मआली का तखल्लुस शहीदी था। वह तिरमिज़ के सैयिदों से सम्बन्धित था। युवावस्था में वह हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में उपस्थित हुआ। क्योंकि रूप रंग एवं गुणों से वह शून्य न था, अतः वह उनका कृपा-पात्र हो गया। शनैः शनैः उसका पद एवं उसकी श्रेणी इस सीमा को पहुँच गई कि वह फ़र्ज़न्द[5] की उत्कृष्ट उपाधि द्वारा सुशोभित हुआ। वह अपने समकालीनों में अधिक विश्वासपात्र होने के कारण प्रतिष्ठित रहा। हिन्द-विजय में [illegible]

१ इससे आगे के हाल का अनुवाद अकबर से सम्बन्धित इतिहास में प्रस्तुत किया जायगा।
२ संभवतः १५२८ ई० के युद्ध की ओर संकेत है। (देखिये बाबर नामा, पृ० ==८)।
३ दुष्ट एवं निंद्य।
४ इसके आगे का इतिहास अकबर के इतिहास के सम्बन्ध में दिया जायगा।
५ पुत्र।

पौरुष प्रदर्शित करने एवं योग्य सेवायें सम्पन्न करने के कारण, हज़रत जन्नत आशियानी ने इस्कन्दर[1] पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त उसे समस्त पंजाब इस आशय से सौंप दिया कि वह इस्कन्दर अफ़गान से, जो उस ओर भाग गया था, युद्ध करे। इस्कन्दर मुक़ाबला न कर सका और उसने पर्वतों में शरण ले ली। शाह अबुल मआली उत्कृष्ट श्रेणी प्राप्त करके बड़े वैभव से लाहौर में रहने लगा। इस कारण अभिमान के पक्षी ने उसके मस्तिष्क में घोंसला बना लिया। हज़रत जन्नत आशियानी के निधन के उपरान्त वह विरोध एवं विद्रोह प्रकट करने लगा।[2]

---

१ सिकन्दर।
२ आगे का हाल अकबर से सम्बन्धित है, अतः उसका अनुवाद नहीं किया गया।

भाग स

अकबर नामा की रचना हेतु संकलित संस्मरण

गुलबदन बेगम

(क) हुमायूँ नामा

जौहर

(ख) तजकिरतुल वाकेआत

बायज़ीद ब्यात

(ग) तजकिरये हुमायूँ व अकबर

हजरत फिरदौस मकानी की आत्मा के लिए फातेहा[1] पढ़ते रहा करे। पूरा सीकरी जो आजकल फतहपुर कहलाता है तथा ब्याना के (राजस्व में से) ५ लाख मजार के व्यय हेतु वक्फ[2] कर दिए गए ताकि यह धन आलिमों एवं हाफिजों इत्यादि पर, जो मजार से सम्बन्धित थे, खर्च होता रहे[3]।

माहम बेगम द्वारा दान

मेरी आका[4] ने दो समय के भोजन[5] का प्रबन्ध किया—प्रातःकाल एक बैल, दो भेड़ें तथा पाँच बकरे, मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय पाँच बकरे। ढाई वर्ष तक जब तक मेरी आका जीवित रहीं, दोनों समय का यह भोजन उनकी सरकार से मजार पर बाँटा जाता रहा।

हुमायूं की गुलबदन के प्रति अनुकम्पा

जब तक मेरी आका जीवित रहीं तब तक मैं हजरत पादशाह के प्रति अभिवादन अपनी आका के दौलतखाने में किया करती थी। जब मेरी आका की दशा बिगड़ गई तो मुझसे कहा कि, "यह बड़ा कठिन ज्ञात होता है कि मेरी मृत्यु के उपरान्त पादशाह की पुत्रियाँ अपने भाई के दर्शन गुलबर्ग बीबी[6] के घर में करें।" मेरी आका की बात हजरत पादशाह के हृदय में आरूढ़ हो गई। जब तक वे हिन्दुस्तान में रहे वे सर्वदा हमारे घर आकर हमसे भेंट किया करते थे और अत्यधिक कृपा, दया एवं प्रोत्साहन प्रदर्शित करते थे। मासूमा सुल्तान बेगम[7], गुलरंग बेगम[8], गुलचेहरा बेगम[9] इत्यादि बेगमें, जिनका विवाह हो चुका था, हजरत पादशाह के जो इस तुच्छ के घर आते थे, दर्शन किया करती थीं। संक्षेप में हजरत पादशाह मेरे बाबा पादशाह एवं मेरी आका की मृत्यु के उपरान्त इस दीन को अत्यधिक सांत्वना दिया करते और इस बेचारी के प्रति अपार कृपा एवं दया प्रदर्शित किया करते थे, यहाँ तक कि मुझे अनाथ एवं निःसहाय होने का अनुभव न हो सका।

हुमायूं के राज्य में शान्ति

हजरत फिरदौस मकानी के निधन के उपरान्त १० वर्ष के बीच में जब तक हजरत जन्नत आशियानी हिन्दुस्तान में रहे सब लोग धन धान्य सम्पन्न एवं सुख शान्ति के साथ आज्ञाकारिता एवं अधीनता प्रदर्शित करते रहे।

१ मुर्दे की आत्मा की शान्ति के लिये कुरान शरीफ के प्रथम सूरे का पाठ।
२ ईश्वर के नाम पर दान की हुई कोई वस्तु अथवा सम्पत्ति आदि।
३ बाबर की लाश सर्वप्रथम आराम बाग अथवा राम बाग में रक्खी गई, तदुपरान्त काबुल भेज दी गई।
४ सम्मानित स्त्री (माहम बेगम), हुमायूं नामा मूल पृ० ८ [मुगल कालीन भारत—बाबर, पृ० ३५६]।
५ 'आश'।
६ सम्भवतः सलीमा सुल्तान बेगम की माता।
७ बाबर तथा मासूमा बेगम की पुत्री, मुहम्मद जमान मीर्जा बाईकरा की पत्नी।
८ बाबर तथा दिलदार बेगम की पुत्री, उसका जन्म १५११ तथा १५१५ ई० के मध्य में हुआ। उसका विवाह ईसान तिमुर चग़ताई से बाबर के जीवन काल में ही १५३० ई० में हुआ था।
९ बाबर तथा दिलदार बेगम की पुत्री, उसका जन्म १५१५ तथा १५१७ ई० के मध्य में हुआ। वह, गुलरंग, हिन्दाल एवं गुलबदन सगे भाई बहिन थे। उसका विवाह सुल्तान तूख्ता बूगा खां चग़ताई मुग़ल से १५३० ई० में हुआ, किन्तु १५३३ ई० में वह विधवा हो गई।

बिबन एवं बायजीद की पराजय

फिरदौस मकानी की मृत्यु के छ मास उपरान्त बिबन एव बायजीद[1] गौड की ओर (२७) से आ गए। यह समाचार पाते ही हजरत पादशाह आगरा से उनकी ओर रवाना हुए और बिबन एव बायजीद को पराजित करके चनादह[2] पहुँचे और चनादह पर भी अधिकार जमा कर आगरा लौट आये।

मेवा जान से हुमायूँ का विवाह

मेरी आका माहम बेगम की यह बहुत बडी अभिलाषा थी कि वे हुमायूँ के पुत्र को भी देख लें। जहाँ कहीं भी कोई सुन्दरी अथवा रूपवती मिल जाती थी वे उसे हजरत पादशाह की सेवा में ले आती। खदग[3] यसावल[4] की पुत्री मेवा जान मेरी सेवा में थी। हजरत फिरदौस मकानी के निधन के उपरान्त अपने जीवन काल में उन्होंने कहा, 'हुमायूँ ! मेवा जान बुरी नहीं है । उसे अपनी सेवा में क्या नहीं ले लेते[5] ?" अन्त मे उनके कहने पर हुमायूँ पादशाह ने उसी रात्रि मे मेवा जान से विवाह कर लिया।

हुमायूँ के पुत्री का जन्म

तीन दिन उपरान्त बेगा[6] बेगम काबुल से आ गई और गर्भवती हुई। एक वर्ष उपरान्त पुत्री का जन्म हुआ। उसका नाम अकीका[7] बेगम रक्खा गया।

मेवा जान का पुत्र के जन्म के सम्बन्ध में जाल

मेवा जान, मेरी आका माहम बेगम से कहा करती थी कि 'मै भी गर्भवती हूँ । अन्त मे

१ अफगान सरदार। इनके विषय में **मुगल कालीन भारत—बाबर** देखिये।

२ चुनार।

३ सम्भवत 'खजग'।

४ दरबार अथवा सभा का प्रबन्ध करने वाला।

५ 'विवाह क्यों नहीं कर लेते'।

६ वह यादगारबेग तगाई की पुत्री थी। सर्व प्रथम १५२८ ई० में उससे एक पुत्र का जन्म काबुल में हुआ। हुमायूँ ने उसका नाम अल अमान रक्खा। बाबर ने यह नाम रखने पर हुमायूँ को फटकारा भी था, (**बाबर नामा**, पृ० २७८ २७९)। उसकी शीघ्र ही मृत्यु हो गई। १५३१ ई० में अकीका अथवा अकीका नामक पुत्री का जन्म हुआ। लगभग १५३४ ई० में गुलबदन बेगम ने हुमायूँ की उससे तथा अन्य बेगमों की ओर उपेक्षा का उल्लेख किया है। शेर शाह ने हुमायूँ की चौसा की पराजयोपरान्त बेगा बेगम को बन्दी बना लिया और यहीं से अकीका बेगम भी गायब हो गई। शेरशाह ने उसे हुमायूँ के पास भेज दिया किन्तु उसके हुमायूँ के पास पहुँचने के समय के विषय में कोई प्रामाणिक ज्ञान नहीं। किन्तु वह १५४८ ई० में काबुल में शाही अन्तःपुर में थी। हुमायूँ की मृत्यु के उपरान्त अकबर उसका बडा ध्यान रखता था। वह अपना अधिकांश समय अपने पति के मकबरे की देख-भाल में व्यतीत करती थी। वह ९७२ हि० (१५६४ ६५ ई०) में हज के लिये मक्का गई और ३ वर्ष उपरान्त वापस आई। वह हाजी बेगम के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है अत यह कहना बडा कठिन है कि उसने इस हज के अतिरिक्त कोई अन्य हज भी किया अथवा नहीं। उसकी मृत्यु ९८९ हि० (१५८१ ई०) में हुई।

७ सम्भवत अकीका बेगम।

मेरी आका ने दो प्रकार के यराक[1] तैयार कराये और कहा करती थी कि "तुम लोगों में से जिसके पुत्र पैदा होगा उसे उत्तम यराक दूँगी।" तब उन्होंने यराक अथवा वर, सोने-चाँदी के बादाम एवं चार मग्ज़[2] तैयार कराये। उन्होंने मुग़ल सेनापतियों से भी यराक तैयार करा लिये थे। वे प्रसन्न थीं कि सम्भवतः इनमें से किसी के पुत्र हो जाय। वे प्रतीक्षा कर ही रही थीं कि बेगा बेगम से अक़ीक़ा बेगम का जन्म हुआ। तदुपरान्त वे मेवा जान के विषय में प्रतीक्षा करने लगीं किन्तु १० मास हो गए और ११वाँ मास भी व्यतीत हो गया। मेवा जान कहा करती थी कि 'मेरी ख़ाला मीर्ज़ा उलुग बेग[3] के अन्तःपुर में थी। उनके १२ मास में पुत्र का जन्म हुआ। सम्भवतः मैं भी उन्हीं के समान हो गई हूँ।' खरगाह लगवा लिये गए[4]। तूशक[5] भर ली गईं। अन्त में सबको ज्ञात हो गया कि वह हुसप्च[6] थी।

हुमायूं की चुनार से वापसी पर आईन-बन्दी

(२८) बादशाह, जो चनादह गये थे, कुशलतापूर्वक लौट आये। मेरी आका माहम बेगम ने बहुत बड़ा जश्न किया। बाज़ारों की आईन-बन्दी की गई[7]। इसके पूर्व बाज़ार वाले आईन-बन्दी करते थे। उन्होंने साधारण आदमियों एवं सैनिकों को आदेश दिया कि वे विचित्र स्थानों एवं भवनों को सजायें[8]। इसके उपरान्त हिन्द में आईन-बन्दी की प्रथा चालू हो गई।

माहम बेगम द्वारा जश्न का प्रबन्ध

जड़ाऊ सिंहासन जिस पर पहुँचने के लिए चार ज़ीने थे तैयार कराया गया। उसके ऊपर ज़रदोज़ी का अदसका[9] लगवाया गया। उसपर ज़रदोज़ी के तूशक[10] एवं तकिये बिछवाये गए। गार-

१ अस्त्र शस्त्र सम्भवतः तुर्कों के शाही वंश में बालकों के जन्म के पूर्व अस्त्र शस्त्र तैयार कर लेने की प्रथा रही होगी।

२ बादाम एवं चार मग्ज़ का अर्थ बादाम एवं अखरोट होना है किन्तु चार मग्ज़ का अर्थ बच्चों के खेलने का मिट्टी का गेंद होता है। सम्भवतः सोने चाँदी के गेंद तैयार किये गये होंगे। मिसेज़ बेवरिज ने 'Gold and Silver walnuts' अनुवाद किया है पृ० ११२।

३ उलुग बेग काबुली। [देखिये **मुग़ल कालीन भारत—बाबर**, पृ० ३४७, ३७८, ४७८, ५८४, ५८६, ६०८, ६११]।

४ 'ख़रगाहा दोख़्ता' अर्थात् खरगाह सी लिये गये, किन्तु यहाँ खरगाह लगवाने से तात्पर्य है।

५ बिछावने अथवा छोटे बच्चों के गद्दे से तात्पर्य है।

६ मद्यपायी निम्न श्रेणी की स्त्री अथवा निम्न श्रेणी की पागल स्त्री। सम्भवतः यह शब्द 'हुमक' है।

७ सजाये गये।

८ सम्भवतः गुलबदन बेगम का उद्देश्य यह है कि पहले हिन्दुस्तान में केवल बाज़ार वाले अपनी दूकानें सजाते थे किन्तु माहम बेगम ने साधारण लोगों एवं सैनिकों द्वारा घरों एवं अन्य स्थानों के सजाने की प्रथा चला दी किन्तु यह प्रथा बड़ी प्राचीन है। अजम वाले इस प्रथा का बड़े उत्साह से पालन करते थे। वहाँ उमरा एवं बड़े अश्ख़ास भी विजय के अवसरों पर बाज़ारों एवं घरों इत्यादि की आईन-बन्दी कराते थे। अमीर ख़ुसरो ने अपने कई काव्यों एवं ज़ियाउद्दीन बरनी ने **तारीख़ फ़ीरोज़ शाही** में बाज़ारों के सजाने का कई स्थानों पर उल्लेख किया है। क़ुब्बे सजाने की तो देहली के सुल्तानों में आम प्रथा थी।

९ इस शब्द का अर्थ शब्द कोशों में नहीं मिलता, सम्भवतः यवनिका अथवा परदे के समान कोई वस्तु।

१० गद्दा।

गाह एव बारगाह के भीतरी भाग फिरगी जरबफ्त के तथा बाहरी भाग पुरतोगाली सकरलात[1] के थे। खरगाह तथा बारगाह के डडे सोने से मुलम्मा किए हुए थे और वे बडे ही सुन्दर थे। मरी आका ने एक तूगूरलूक[2], खरगाह गुजराती जरकश[3] का, कनात एव सरे-कनात[4], गुलाब जल के लिए आफताबे[5], शमादान[6], पेय के बरतन, गुलाब पाश[7] इत्यादि सोने के, जिन पर जडाऊ काम था, तैयार कराये। सब प्रकार की सामग्री की व्यवस्था करके उन्होंने एक सुन्दर एव भव्य समारोह आयोजित कराया।

इनाम-इकराम

१२ कतार ऊट, १२ कतार खच्चर ७० रास तीपूचाक घोडे, १०० रास बोझ लादने (२९) वाले घोडे (बाँटे गए)[8]। ७००० व्यक्तियों को विशेष खिलअतें पहनाई गई। कई दिन तक खुशी मनाई जाती रही[9]।

मुहम्मद जमान मीर्जा का बन्दी बनाया जाना

इसी बीच में सुना गया कि मुहम्मद जमान मीर्जा ने हाजी मुहम्मद खा कोकी के पिता की हत्या करा दी है और विद्रोह करने का विचार कर रहा है। हज़रत पादशाह ने उन लोगों को बुलवाने के लिए आदमी भेजे और उन्हे बन्दी बनवा लिया और ब्याना में कैद करके यादगार तगाई को सौंप दिया। यादगार तगाई के आदमियों ने मुहम्मद जमान मीर्जा से मिलकर उसे भगा दिया[10]।

मुहम्मद जमान मीर्जा एवं मुहम्मद सुल्तान मीर्जा इत्यादि का पलायन

इसी बीच मे आदेश हुआ कि सुल्तान मुहम्मद मीर्जा तथा नीखूब सुलतान मीर्जा[11] के नेत्रो मे सलाई फेर दी जाय। सलाई फेरने के कारण नीखूब अन्धा हो गया। जिस व्यक्ति ने मुहम्मद सुल्तान मीर्जा के सलाई फेरी उससे मीर्जा के नेत्रो का कोई हानि न हुई। कुछ दिन उपरान्त

१ गहरे लाल रग का कपडा।
२ इस शब्द का तात्पर्य स्पष्ट नहीं, सम्भवत खरगाह के किसी प्रकार के अस्तर अथवा वस्त्र सम्बन्धी अन्य किसी वस्तु से तात्पर्य है।
३ सोने के तार के काम का।
४ कनात के ऊपर की झालर अथवा कोई अन्य कपडा।
५ एक प्रकार का लोटा जिसमें दस्ता होता है।
६ वह बरतन जिसमें शमा अथवा मोम-बत्ती रख कर जलाई जाती है।
७ गुलाब जल छिडकने का बरतन।
८ इस वाक्य के कुछ शब्द छूट गये है।
९ यह हुमायू के सिंहासनारोहण का प्रथम वार्षिकोत्सव ज्ञात होता है। इस उत्सव में हुमायू को चुनार विजय में चार चाँद लग गये होंगे। इनाम इकराम के विषय में जो अधूरा वाक्य है उससे पता चलता है कि सम्भवत इस विषय में कुछ और भी लिखा गया होगा। आगे के पृष्ठों में **तबक़ाते अकबरी** एव ख्वान्द मीर‘ **कानूने हुमायूनी** का अनुवाद देखिये।
१० यह घटना ९४० हि० (१५३३ ई०) में घटी।
११ ‘बली ख़ूब सुल्तान मीर्जा’ होना चाहिये।

मुहम्मद जमान मीर्जा, मुहम्मद सुल्तान मीर्जा तथा उसके पुत्र, उलुग मीर्जा एव शाह मीर्जा, भाग खड़े हुए। जितने वर्ष हम लोग हिन्द में रहे, सर्वदा उनके कारण उपद्रव होता रहा।

हुमायूं की ग्वालियार यात्रा

हजरत बादशाह जब चिवन एव बायजीद पर आक्रमण के उपरान्त लौटे तो लगभग एक वर्ष आगरा में रहे। उन्होंने मेरी आका से निवेदन किया कि, 'आजकल मेरा दिल नहीं लगता। यदि आपका आदेश हो तो आपके साथ ग्वालियार की सैर के लिए रवाना हो जाऊँ।" मेरी आका, *मेरी माता*[1], *बहिने मासूमा सुल्तान बेगम*[2] *जो माह चीचक*[3] *बेगम कहलाती थी एव गुलरग* बेगम जो गुल चीचक[4] बेगम कहलाती थी, अपने आश्रयदाताओं[5] की सेवा में ग्वालियार में रहीं।

गुलचेहरा बेगम के पति की मृत्यु

गुलचेहरा बेगम अवध में थी। जब उसके पति तूख्ता बूगा सुल्तान की मृत्यु हो गई तो जो लोग बेगम की सेवा में थे उन्होंने अवध से हजरत पादशाह सलामत की सेवा में प्रार्थना-पत्र प्रेषित किया कि 'तूख्ता बूगा सुल्तान की मृत्यु हो गई है। बेगम के विषय में क्या आदेश होता है?" हजरत पादशाह ने मीर जाईचा[6] को आदेश दिया कि 'जाकर बेगम को आगरा ले आओ। हम भी आगरा पहुँच रहे हैं।'

आगरा को प्रस्थान

इसी बीच में मेरी आका ने कहा कि "यदि आदेश हो तो बेगा बेगम एव अकीका को (३०) बुलवा लूं ताकि वे लोग भी ग्वालियार देख लें।" नौकर एव ख्वाजा कबीर को इस आशय से भेजा गया कि बेगा बेगम एव अकीका सुल्तान बेगम को आगरा से ले आयें। दो मास तक ग्वालियार में सब लोग साथ रहे। तदुपरान्त आगरा रवाना हो गए। शाबान[7] मास में आगरा पहुँच गये।

१ आकाम, दिलदार बेगम।

२ मुहम्मद जमान मीर्जा की पत्नी।

३ बड़ी चन्द्र सरीखी बहिन।

४ बड़ा गुलाब सरीखी बहिन।

५ हुमायूं एव उसकी माता माहम बेगम।

६ *जन्म कुंडली बनाने वालों का सरदार, मुख्य अथवा राज्य-ज्योतिषी।*

७ शाबान ९३९ हि० (फरवरी-मार्च १५३३ ई०) एव शाबान ९४० हि० (फरवरी-मार्च १५३४ ई०) किन्तु यह तारीख ठीक नहीं। इस सबध में आगे जिन घटनाओं का उल्लेख है उनके अनुसार तिथियों का क्रम इस प्रकार है —

ग्वालियार पहुँचना शाबान ९३९ हि० (फरवरी-मार्च १५३३ ई०)
आगरा वापसी एव माहम का रुग्ण होना शव्वाल ९३९ हि० (अप्रैल मई १५३३ ई०)
[इस विषय में ख्वान्द मीर **क़ानूने हुमायूनी** देखिये]
माहम बेगम की मृत्यु १३ शव्वाल ९३९ हि० (८ मई १५३३ ई०)
४० दिन शोक सबन्धी प्रथायें लगभग २३ २४ जीकाद ९३९ हि० (१६ १७ जून १५३३ ई०)
देहली की ओर प्रस्थान जिलहिज्जा ९३९ हि० (२४ जून १५३३ ई०) के बाद
दीन पनाह का निर्माण मुहर्रम ९४० हि० (२३ जुलाई १५३३ ई०) के बाद।

माहम बेगम की मृत्यु

शव्वाल मास[1] में मेरी आका को पेट का रोग हो गया। १३ शव्वाल ९४० हि०[2] (२७ अप्रैल १५३४ ई०) को वे इस नश्वर ससार को छोड कर परलोक गामिणी हो गईं। मेरे बाबा हजरत पादशाह की सतान का यतीमी का घाव पुन हरा हो गया, विशेष रूप से मेरा, कारण कि मेरा पालन-पोषण उन्होंने स्वय किया था। मुझे बडा शोक, नैराश्य एव घोर कष्ट हुआ। रात-दिन मैं विलाप किया करती थी। हजरत पादशाह ने कई बार आकर मुझे तसल्ली दी और मेरे प्रति कृपा एव दया प्रदर्शित की। मेरी आका जब मैं दो वर्ष की थी तो मुझे अपने महल मे ले आई थी और पालन-पोषण किया था। जब मैं दस वर्ष की हुई[3] तो उनका निधन हो गया। मैं एक वर्ष और अपनी आका के महल में रही।

हुमायूं का धौलपुर की ओर प्रस्थान

जब मै ११ वर्ष की हुई और हजरत पादशाह धौलपुर पहुँचे तो मैं अपनी माता के पास चली गई। यह घटना हजरत पादशाह के ग्वालियार के प्रस्थान और वहाँ भवनों के निर्माण के पूर्व की है[4]।

माहम बेगम की शोक-सम्बन्धी प्रथायें

मेरी आका के चिल्ले[5] के भोज के उपरान्त हजरत पादशाह तशरीफ ले गए और दीन पनाह नामक किले का निर्माण प्रारम्भ करके आगरा लौट आये[6]।

आका जानम[7] ने हजरत पादशाह से पूँछा, "हिन्दाल मीर्जा के विवाह की दावत आप कब करेंगे?" पादशाह सलामत ने कहा, "बिस्मिल्लाह[8]"। मीर्जा हिन्दाल के निकाह के समय मेरी आका जीवित थीं किन्तु समारोह का प्रबन्ध करा रही ही थीं कि उनका निधन हो गया। आका

१ शव्वाल ९३९ हि० (अप्रैल मई १५३३ ई०)। गुलबदन बेगम के अनुसार शव्वाल ९४० हि०।
२ यह तिथि शुद्ध नहीं। ऊपर की टिप्पणी देखिये।
३ इस प्रकार उसका जन्म १५२३ ई० में हुआ होगा।
४ इस वाक्य में जिस घटना का उल्लेख है उसका क्रम प्रामाणिक रूप से ज्ञात नहीं।
५ मृत्यु के उपरान्त ४० दिन की शोक-सम्बन्धी प्रथायें (चह्लुम)।
६ माहम बेगम की मृत्यु एव अन्य तिथियों का क्रम, जो ऊपर दिया गया है, दीन पनाह के निर्माण की तिथि के आधार पर, जो ख्वान्द मीर की कानूने हुमायूनी से प्रामाणिक रूप से ज्ञात हो गई है, निर्धारित किया गया है। यदि माहम बेगम की मृत्यु दीन पनाह के निर्माण के बाद मानी जाय, जो गुलबदन बेगम के उपर्युक्त विवरण के विरुद्ध है, तभी माहम की मृत्यु शव्वाल ९४० हि० में मानी जा सकती है अन्यथा ९३९ हि० ही शुद्ध है।
७ खानजादा बेगम, उमर शेख मीर्जा मीरान शाही एव कुतलुक निगार खानम की पुत्री तथा बाबर की सगी बहिन जो उससे ५ वर्ष बडी थी। उसका विवाह सर्वप्रथम शैबानी से ९०७ हि० (१५०१ ई०) में हुआ, तदुपरान्त सैयिद हादा नामक एक साधारण व्यक्ति से और तीसरी बार महदी मुहम्मद ख्वाजा, मूसा ख्वाजा के पुत्र से। उसका जन्म लगभग ८८३ हि० (१४७८ ई०) में हुआ। गुलबदन बेगम ने उसका कई स्थानों पर उल्लेख किया है। उसकी मृत्यु ९५२ हि० (१५४५ ई०) में हुई। (मुग़ल कालीन भारत—बाबर, पृ० ५१, २८१, ३०३, ३०४, ३०६, ३४८, ३५३, ३६९, ३७२, ४७४, ४९५-४९७, ५०४, ५४६, ५७३, ६०६, ६२१)।
८ 'ईश्वर का नाम लेकर कीजिये'।

जानम ने कहा कि "तिलिस्म[१] के जश्न का सामान भी तैयार है। सर्व प्रथम वह जश्न हो जाय तब मीर्ज़ा हिन्दाल (के विवाह) का जश्न करें।" हज़रत पादशाह ने आका जानम से कहा कि, "फूफी जो आदेश दें।" उन्होंने कहा, "ईश्वर उसे शुभ करे और सकुशल पूरा कराये।"

जश्न के घर का वर्णन जो नदी तट पर तैयार कराया गया था और जिसका नाम तिलिस्म[२] रक्खा गया था

(३१) सर्व प्रथम एक बहुत बड़ा अष्टाकार कमरा था जिसके मध्य में एक अष्टाकार हौज़ था। हौज़ के मध्य में एक अष्टाकार चबूतरा था जिसपर विलायती कालीन[३] बिछाये गए थे। तरुणा, रूपवतियों, सुन्दरियों, वादकों एवं सुस्वर में गाने वाली गायिकाओं को हौज़ में बैठने का आदेश हुआ। जड़ाऊ सिंहासन, जिसे मेरी आका ने जश्न के लिए प्रदान किया था, घर के प्रांगण में रक्खा गया। ज़रदोज़ी का तूशक सामने बिछाया गया। हज़रत पादशाह तथा आका जानम सिंहासन के समक्ष एक तूशक पर बैठे। आका जानम के दायें हाथ की ओर उनकी फूफियां, सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा[४] की पुत्रियाँ बैठीं

(१) फ़ख़्रजहाँ बेगम[५]
(२) बदी-उल जमाल बेगम[६]
(३) आक बेगम[७]
(४) सुल्तान बख़्त बेगम[८]
(५) गौहर शाद बेगम[९]

१ देखिये ख्वान्द मीर : क़ानूने हुमायूनी पूर्व पृ० ४१२।
२ देखिये ख्वान्द मीर : क़ानूने हुमायूनी पूर्व पृ० ४१३।
३ ईरानी कालीन से तात्पर्य है।
४ सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा बिन सुल्तान मुहम्मद बिन मीरान शाह बिन तीमूर का जन्म १४२७ ई० में हुआ और उसकी मृत्यु २५ रजब ८७३ हि० (८ फ़रवरी १४६९ ई०) को हुई। उसने १८ वर्ष राज्य किया। उसने अपनी मृत्यु के समय ११ पुत्र छोड़े। उनमें एक बाबर का पिता उमर शेख मीर्ज़ा भी था।
५ सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्री, बाबर की फूफी, मीर अलाउल मुल्क तिरमिज़ी की पत्नी तथा शाह बेगम एवं कीचीक बेगम की माता। वह १५२७ ई० में अपनी बहिन ख़दीजा के साथ हिन्दुस्तान पहुँची। वह ५ मुहर्रम ९३५ हि० (२० सितम्बर १५२८ ई०) को काबुल वापस चली गई किन्तु १५३१ ई० तक वह पुनः हिन्दुस्तान आ गई होगी।
६ सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्री। वह भी बाबर के जीवन-काल में हिन्दुस्तान आ गई थी।
७ सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्री। वह भी अनुमानतः १५२८ ई० में हिन्दुस्तान पहुँची और गुलरंग एवं गुलचेहरा बेगम के विवाह के समय (१५३० ई०) भी आगरा में थी।
८ सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्री। उसके विषय में अधिक कोई ज्ञान नहीं।
९ सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्री। उसके विषय में भी इससे अधिक कोई ज्ञान नहीं।

(६) खदीजा सुल्तान बेगम[1]।

दूसरी तुशक पर हमारी फूफियाँ अर्थात् हज़रत फिरदौस मकानी की बहिनें बैठीं

(१) शहर बानो बेगम[2]

(२) यादगार सुल्तान बेगम[3]।

(दायीं ओर की अन्य अतिथि ये थीं)[4]

(१) आएशा सुल्तान बेगम[5] सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा की पुत्री

(२) उलुग बेगम, जैनब[6] सुल्तान बेगम की, जो हज़रत पादशाह की फूफी थीं, पुत्री

(३) आएशा सुल्तान बेगम[7]

(४) सुल्तानी बेगम, सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की पुत्री (अहमद मीर्ज़ा) हज़रत पादशाह के सौतेले दादा थे, वह कलाँ खाँ बेगम की माता थी

१ सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्री। वह ९३४ हि० (१५२७ ई०) में नवम्बर में फख़ जहाँ के साथ हिन्दुस्तान पहुँची। वह भी ८ मुहर्रम ९३५ हि० (२२ सितम्बर १५२८ ई०) को हिन्दुस्तान से काबुल के लिये बाबर से विदा हुई किन्तु कुछ समय के लिये रुक गई और बाबर ने ६ अक्तूबर को उनसे भेंट की। बाबर इन लोगों का बड़ा ध्यान रखता था। वह प्रत्येक शुक्रवार को इन बेगमों से भेंट करने जाता था। एक दिन अत्यधिक गर्मी के कारण माहम बेगम ने बाबर को उनसे भेंट हेतु जाने से रोका किन्तु बाबर ने स्वीकार न किया और कहा, "माहम बड़े आश्चर्य की बात है कि तू यह कह रही है। अबू सईद मीर्ज़ा की पुत्रियाँ अपने पिता एवं भाइयों से पृथक् हो चुकी हैं। यदि उनका आत्मतोष न हुआ तो क्या होगा?" (मुगल कालीन भारत—बाबर, पृ० ३६५)।

२ उमर शैख मीर्ज़ा एवं उमीद अन्देजानी की पुत्री, बाबर की सौतेली बहिन और उससे ८ वर्ष छोटी। उसका जन्म लगभग १४९१ ई० में हुआ। वह नासिर मीर्ज़ा एवं मेहर बानो बेगम की सगी बहिन एवं निजामुद्दीन अली खलीफा के भाई जुनैद बरलास की पत्नी थी। वह ९४४ हि० (१५३७-३८ ई०) में विधवा हो गई।

३ उमर शैख मीर्ज़ा की पुत्री जिसका पालन पोषण ऐसान दौलत बेगम ने किया था।

४ मूल में यह वाक्य नहीं है किन्तु उमर शैख मीर्ज़ा की पुत्रियों से अन्य लोगों को पृथक करने के लिये इसका प्रयोग किया गया है।

५ सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा बाईकरा एवं जुबैदा आगाचा की पुत्री। सर्व प्रथम उसका विवाह कासिम सुल्तान ऊज़बेक से हुआ। इस विवाह से उसके कासिम हुसेन सुल्तान ऊज़बेक नामक एक पुत्र का जन्म हुआ जो बाद में बाबर एवं हुमायूँ का अमीर हुआ। आएशा सुल्तान का दूसरा विवाह कासिम सुल्तान के एक सम्बन्धी बूरान सुल्तान से हुआ। इस विवाह से अब्दुल्लाह सुल्तान ऊज़बेक का जन्म हुआ। वह भी बाबर की सेवा में प्रविष्ट हो गया। चौसा के युद्ध के उपरान्त (१५३९ ई०) उसका कोई पता न चला।

६ बाबर की बहिनों में इस नाम की कोई स्त्री न थी। सम्भवतः वह तथा आगे बेगम दोनों एक हों।

७ सुल्तान अहमद मीर्ज़ा मीरान शाही एवं कतूक बेगम की पुत्री तथा बाबर की प्रथम पत्नी। वह बाबर की पहिली पुत्री फख़्रुन्निसा की जिसका जन्म ९०७ हि० (१५०१ ई०) में हुआ, माता थी। वह ९०९ हि० (१५०३ ई०) में अपनी बड़ी बहिन के बहकाने से बाबर के पास से चली गई।

(५) वेगा सुल्तान बेगम, सुल्तान खलील मीर्जा की पुत्री, सुल्तान खलील मीर्जा हजरत बादशाह के सौतेले दादा थे

(६) माहम बेगम[१]

(७) *बेगी बेगम, उलुग बेग मीर्जा काबुली की पुत्री, (उलुग बेग मीर्जा)* हजरत पादशाह के सौतेले दादा थे

(८) *खानजादा बेगम, सुल्तान मसऊद मीर्जा की पुत्री, अपनी माता की ओर से पायदा* मुहम्मद सुल्तान बेगम की नतनी, हजरत पादशाह की फुफी

(९) शाह खानम, बदी उल जमाल बेगम की पुत्री

(१०) खानम बेगम[२], आक बेगम की पुत्री

(११) जैनब सुल्तान खानम, सुल्तान महमूद खां, हजरत पादशाह के बड़े मामा की पुत्री

(१२) मुहिब्ब सुल्तान खानम सुल्तान अहमद खां, जो इलाचा खां कहलाता था तथा पादशाहे कला[३] का छोटा मामा था की पुत्री

(१३) खानिश, मीर्जा हैदर की बहिन और हजरत पादशाह की खाला की पुत्री

(१४) बेगा कलां बेगम[४]

(३२) (१५) कीचीक बेगम[५]

(१६) शाह बेगम, दिलशाद[६] बेगम की माता फख्र जहां बेगम की जो हजरत पादशाह की फुफी थी, पुत्री

(१७) कीचकना बेगम

(१८) अपाक बेगम[७], सुल्तान बख्त बेगम की पुत्री

(१९) मेहरलीक बेगम[८], हजरत पादशाह की फुफी

(२०) शाद बेगम, सुल्तान हुसेन मीर्जा की नतनी हजरत पादशाह की एक फुफी की पुत्री

१ हुमायूं की माता के अतिरिक्त कोई अन्य बेगम।

२ अबू सईद मीरान शाही की पोती।

३ बाबर।

४ सुल्तान महमूद मीर्जा की पुत्री तथा शाह बेगम की माता।

५ कीचीक बेगम के नाम से उस समय दो बेगमें प्रसिद्ध थीं। एक सुल्तान मुहम्मद बारिकग एवं पायदा सुल्तान बेगम मीरान शाही की पुत्री तथा मौलाना ख्वाजा की पत्नी थी। एक कीचीक बेगम मीर अलाउल मुल्क तिरमिजी तथा फख्र जहां मीरान शाही की पुत्री एवं ख्वाजा मुईन एहरारी की पत्नी तथा मीर्जा शरफुद्दीन हुसेन की माता थी। वह अपने माता के साथ हिन्दुस्तान पहुँची और हिन्दाल मीर्जा के विवाह की दावत में उपस्थित थी।

६ शाह बेगम की पुत्री एवं फख्र जहां बेगम मीरान शाही की पोती।

७ अपाक बेगम अथवा आफ़ाक़ बेगम के पिता के नाम का पता नहीं चल सका है। बाबर ने ९३५ हि० (१७ अक्तूबर १५२८ ई०) के विवरण में सुल्तान बख्त बेगम की पुत्री के आगमन का उल्लेख किया है। (बाबर नामा पृ० ६८१)।

८ सम्भवतः मेहर बानो बेगम मीरान शाही, उमर शेख मीर्जा एवं उमीद अन्दिजानी की पुत्री, नासिर एवं शहर बानो की सगी बहिन। उसका जन्म ८८६ हि० (१४८१-८२ ई०) में हुआ।

(२१) मेहर अंगेज़ बेगम[1] मुज़फ्फर मीर्ज़ा की पुत्री, सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा की नतनी, दोना में बडी मित्रता थी और दोना[2] पुरुषा के वस्त्र धारण किया करती और बडी गुणवान् थी उदाहरणार्थ ज़ेह गीर[3], बाण बनाने, चौगान खेलने, धनुष-बाण चलाने मे बडी दक्ष थी, वे बहुत से बाजे भी कुशलता-पूर्वक बजाती थी

(२२) गुल बेगम
(२३) फौक बेगम
(२४) जान सुल्तान बेगम
(२५) अफराज बानो बेगम
(२६) आगा बेगम
(२७) फीरोज़ा बेगम
(२८) बरलास बेगम ।

इनके अतिरिक्त अन्य बेगमें भी थी और कुल ९६ उलूफादार[4] वाली थी। उनके अतिरिक्त भी कुछ थी।

हिन्दाल मीर्ज़ा के विवाह का जश्न

तिलिस्म के जश्न के उपरान्त मीर्ज़ा हिन्दाल के विवाह[5] का जश्न हुआ। उपर्युक्त बेगमा मे से कुछ विलायत चली गई थी और जो उस दावत में उपस्थित थी उनमे से अधिकांश दाये हाथ पर बैठी थी।

हमारी बेगमा में से —

(१) आगा सुल्तान आगाचा[6], यादगार सुल्तान बेगम की माता
(२) आतून मामा[7]
(३) सलीमा[8]
(४) सकीना[9]

१ मुज़फ्फर हुसैन मीर्ज़ा बाईकरा की पुत्री, सुल्तान हुसैन बाईकरा एव खदीजा की नतनी। उसका विवाह उबैदुल्लाह उज़बेक से (९१३ हि०/जून १५०७ ई०) में हो गया था।
२ शाह बेगम तथा मेहर अंगेज़ बेगम।
३ बाण चलाने के समय अंगुलियों की रक्षा के लिये एक प्रकार की अंगूठी पहिन ली जाती थी।
४ वृत्ति पाने वाली।
५ जौहर के अनुसार ९४४ हि० (१५३७ ३८ ई०)।
६ यह उमर शेख मीर्ज़ा की पत्नी थी, एव बाबर की सौतेली बहिन यादगार सुल्तान बेगम की माता थी।
७ आतून, पढने लिखने एव कढाई के काम के गुरु को कहते है। बाबर ने १५०१ ई० के इतिहास में एक आतून का उल्लेख किया है।
८ सम्भवत सलीमा सुल्तान बेगम।
९ कोई सेविका।

(५) बीबी हबीबा

(६) हनीफा बेगा।

अन्य स्त्रियाँ जो हज़रत बादशाह के बायीं ओर ज़रदोज़ी के तूशक पर बैठी थी, वे इस प्रकार हैं —

(१) मासूमा सुल्तान बेगम

(२) गुलरंग बेगम

(३) गुलचेहरा बेगम

(४) यह तुच्छ दुखिया गुलबदन

(५) अकीका सुल्तान बेगम

(६) आज़म, हमारी माता, दिल्दार बेगम

(७) गुलबर्ग बेगम

(८) बेगा बेगम

(९) माहम की नानचा

(१०) सुल्तानम, अमीर (निज़ामुद्दीन) खलीफा की पत्नी

(११) अलूश बेगम

(१२) नाहीद बेगम[1]

(१३) खुर्शीद कोकी, मेरे पिता के कोका की संतान

(१४) अफ़गानी आगाचा[2]

(१५) गुलनार आगाचा

(१६) नाज़ गुल आगाचा[4]

(१७) मख्दूमा आगा, हिन्दू बेग की पत्नी

(१८) फातेमा सुल्तान अनगा[5], रोशन कोका की माता

(१९) फख्रुन्निसा अनगा, नदीम कोका की माता, मीर्ज़ा कुली की पत्नी

(२०) मुहम्मदी कोका की पत्नी

(२१) मुईद बेग की पत्नी

(२२) हज़रत बादशाह की कारा—खुर्शीद कोका

(३३) (२३) शरफुन्निसा कोका

(२४) फतह कोका

१ शाह चौचक अरगून की पुत्री, (शाह चौचक के विषय में देखिये **मुग़ल कालीन भारत—बाबर**, पृ० ८७, ३५७)

२ बाबर की अफ़गान पत्नी (मुबारिका बीबी)। वह शाह मंसूर यूसुफ़ज़ई की पुत्री थी। बाबर ने उससे भेहरा में २८ मुहर्रम ९२५ हि० (३० जनवरी १५१९ ई०) को विवाह किया।

३ बाबर की रखेली पत्नी।

४ बाबर की रखेली पत्नी। सम्भवतः उसे तथा गुलनार को शाह तहमास्प सफवी ने बाबर को उपहार स्वरूप १५२६ ई० में भेजा था।

५ ख्वाजा मुअज्ज़म की पत्नी एवं रोशन कोका तथा जुहरा की माता।

(२५) राबेआ सुल्तान कोका
(२६) मह् लिका कोका
(२७) हमारी अनगाये[1]
(२८) हमारे कोका
(२९) वेगमा के आदमी[2] एव अमीरा की पत्नियाँ।

जो दायी ओर थी —

(१) सलीमा वेगा
(२) वीवी नेका
(३) खानम आगा, ख्वाजा अब्दुल्लाह मरवारीद की पुत्री
(४) निगार आगा, मुगुल वेग की माता
(५) नार मुल्तान आगा
(६) आगा कोका, मुनइम खा की पत्नी
(७) मीर शाह हुसेन की पुत्री, ईसस[3] वेगा
(८) फीसक माहम
(९) काबुली माहम
(१०) बेगी आगा
(११) खानम आगा
(१२) सआदत सुल्तान आगा
(१३) वीवी दौल्त वख्त
(१४) नसीव आगा
(१५) ईसस काबुली।

अन्य वेगाये एव आगाये, अमीरा की पत्निया इस हाथ की ओर बैठी और सब विवाह की दावत में उपस्थित थी।

तिलिस्म के भवन का वर्णन इस प्रकार है—

एक बडे अष्टाकार कमरे में दावत दी गई। उसके बराबर एक छोटा अष्टाकार कमरा था। दोनो अष्टाकार कमरे नाना प्रकार से सजाये गए थे। उस अष्टाकार कमरे में जहाँ दावत दी गई जडाऊ सिंहासन बिछाया गया। सिंहासन के ऊपर एव नीचे जरदोजी के अदमके लगाये गए और बहुमूल्य मोतिया की लडिया, जो डेढ-डेढ गज लम्बी थी, लगाई गईं। प्रत्येक लडी के सिरे पर दो शीशे के गोले लगे थे। लगभग ३०-४० लडियाँ तैयार कराई गई थी।

१ दाइया।
२ सेविकायें।
३ यह नाम स्पष्ट नहीं।

छोटे अष्टाकार कमरे में जडाऊ छपरखट[१] 'बिछाया' गया था। पानदान, सुराही, जडाऊ पेय के पात्र तथा खालिस सोने-चांदी के बरतन आला पर रक्खे गए।

पश्चिम दिशा के समक्ष दीवानखाना, पूर्व दिशा के सामने उद्यान, तीसरे दक्षिण दिशा के समक्ष बड़ा अष्टाकार कमरा और चौथ छोटा अष्टाकार कमरा उत्तर दिशा के समक्ष था। इन तीनों कमरों के ऊपर तीन ऊपरी कमरे थे। एक को "दौलत" का कमरा कहते थे। उसमें युद्ध सम्बन्धी ९ यन्त्र थे उदाहरणार्थ जडाऊ तलवार, जडाऊ कूर[२], जडाऊ खंजर, जडाऊ जम्धर, खपुवा तथा निपग, सब पर जरदोजी के काम के कूरपोश[३] थे।

दूसरा कमरा "सआदत" का कमरा कहलाता था जिसमें जानमाज[४], पुस्तकें, जडाऊ कलमदान, उत्तम जुज़दान[५], सुन्दर मुरक्के[६] चित्रों सहित, तथा सुलेख के नमूने रखने गए। तीसरे (३४) कमरे को "मुराद" का कमरा कहते थे। वहाँ जडाऊ छपरखट, सन्दल का एक बरतन[७], ख्याल[८] की तूशकें रक्खी गई। नीचे भी विशेष निहालचे बिछाये गए। निहालचा के समक्ष दस्तरख्वान बिछाये गए। वे सब ख्याल के जरवफ्त के थे। नाना प्रकार के मेवे एवं शरबत रक्खे गए। सभी, भोग-विलास एवं आनन्द-मंगल की सामग्रियां तैयार कराई गई थीं[९]।

इनाम-इकराम

जिस दिन तिलिस्म भवन की दावत हुई हज़रत पादशाह ने आदेश दिया कि "समस्त मीर्जा लोग, बेगमें एवं अमीर साचक[१०] तैयार करायें। हज़रत बादशाह के आदेशानुसार सब लोग साचक लाये। आदेश हुआ कि इनके तीन ढेर कर दिए जायें। तीन अशरफी के थाल[११], और छ शाहरुखी के थाल हुए। अशरफी का एक थाल, और शाहरुखी के दो थाल हिन्दू बेग को दे दिए

१ एक प्रकार का पलंग।
२ कूर में पताकायें, अस्त्र-शस्त्र एवं शाही के अन्य चिह्न सम्मिलित होते थे जो बादशाह जहां कहीं भी जाता, उसके साथ जाते थे।
३ कूर के गलाफ।
४ वह चटाई अथवा दरी कालीन या कोई कपड़ा जिसे बिछा कर नमाज पढ़ी जाती है।
५ कुरान शरीफ अथवा अन्य ग्रन्थों के रखने का बस्ता।
६ अलबम।
७ "जरफ़े अज़ सन्दल अन्दाख्ता"। किन्तु यदि यह वाक्य इस प्रकार पढ़ा जाय तो जरफ (बरतन), जो खटकता है, इसका समाधान हो जायगा - दर आं खाना छपर कट अज मुरस्सा व तर्फ़े अज सन्दल अन्दाख्ता" तरफे एवं जर्फ़े में केवल एक बिन्दु का अन्तर है जो सम्भवतः पुस्तक के नक़ल करने अथवा छापने में बढ़ा दिया गया होगा। طرف पर बिन्दु से ظرف हो जाता है। तर्फ़े पढ़ने से अर्थ इस प्रकार होगा वहां जडाऊ छपर खट जो एक ओर से चन्दन का था रखवाया गया और ख्याल की तूशकें बिछवाई गई।
८ उत्तम प्रकार का एक रेशमी कपड़ा।
९ दौलत, सआदत एवं मुराद के कमरों का विभाजन तत्सम्बन्धी राज्य के विभाग के अनुसार किया गया था।
१० उपहार। आजकल साचक विवाह के पूर्व की एक रस्म है जिसमें दुलहा के घर से बरी का सामान मेंहदी, सुहाग पूड़ा, तेल इत्र मेवा मिश्री आदि कुछ आदमियों के साथ दुलहिन के घर जाता है।
११ ख्वान।

गए और आदेश दिया गया कि यह "दौलत" वालों के लिये है, मीर्ज़ाओं, अमीरों, वज़ीरों, एवं सैनिकों को बाँट दिया जाय।

अशरफी का एक थाल और शाहरुखी के दो थाल मुल्ला मुहम्मद फरग़री को प्रदान किए गए और आदेश दिया गया कि यह "सआदत" वालों के लिए हैं। इसे प्रतिष्ठित एवं सम्मानित लोगों, आलिमों, पवित्र लोगों, जाहिदों, मशायख़, दरवेशों, आबिदों, फ़कीरों एवं दरिद्रों को बाँट दिया जाय।

अशरफी के एक थाल तथा शाहरुखी के दो थालों के विषय में आदेश दिया कि "यह 'मुराद' वालों के लिए हैं। हमारा है। हमारे पास ले आओ। प्रस्तुत किए गए। आदेश हुआ कि गिनने की क्या आवश्यकता है। सर्व प्रथम अपने शुभ हाथों से छुआ और आदेश दिया कि अशरफी तथा शाहरुखी के एक-एक छोटे थाल सर्व प्रथम बेगमों के पास भेजे जायें और कहलाया कि प्रत्येक स्वयं मुट्ठी मुट्ठी भर ले लें। शाहरुखी के शेष दो थालों एवं समस्त अशरफियों के विषय में, जो लगभग २००० थी और शाहरुखी लगभग १०,००० थी, आदेश दिया कि सब को बाँट दिया जाय। सर्व प्रथम वली नेमतों[1] को और फिर दरबार के अन्य उपस्थित गणों को वितरण की गईं। १००-१५० से कम किसी को न मिलीं। विशेष रूप से उस समूह को जो हौज़[2] में था, अत्यधिक प्राप्त हुईं।

हौज़ में जल छोड़ा जाना

(३५) हज़रत पादशाह ने कहा, "आका जानम! यदि आदेश हो तो हौज़ में जल पहुँचा दिया जाय।" आका जानम ने कहा, "बहुत खूब!" वे स्वयं जाकर ज़ीने पर बैठ गईं। लोग असावधान थे कि फव्वारे खोल दिए गए। जल निकलने लगा। जवानों में बड़े विचित्र प्रकार का कोलाहल होने लगा। हज़रत पादशाह ने कहा, "कोई बात नहीं, तुम लोग एक एक सौफ की गोली और थोड़ी सी माजून[3] खा लो।" इस बीच में जिसने भी माजून को खा लिया वह शीघ्र निकल आया। जल टखनों तक पहुँच गया था। संक्षेप में सब लोग माजून खा कर निकल आये[4]।

तदुपरान्त विवाह की दावत दी गई। लोगों को सरोपा प्रदान किए गए। माजून खाने वालों तथा अन्य लोगों को इनाम एवं सरोपा प्रदान हुये।

१ सम्भवतः सम्मानित वृद्ध लोग।

२ गाने बजाने वालों को।

३ कूटी हुई औषधियों को शहद अथवा शक्कर के क़िवाम में मिलाकर बनाया हुआ अवलेह। इसके लिये यह आवश्यक नहीं कि वह स्वादिष्ट भी हो। इस स्थान पर सम्भवतः गर्मी पहुँचाने वाली दवाओं के माजून से तात्पर्य होगा। नशा पैदा करने वाली दवाओं से भी अवलेह तैयार होता है। बाबर ने जिस माजून अथवा अवलेह का उल्लेख बार-बार किया है वह नशा लाने वाली ही होनी थी।

४ यह हुमायूं की विनोद प्रियता का एक उदाहरण है। सम्भवतः जवानों ने परिहास में वृद्धि करने के लिये कोलाहल मचाया होगा अन्यथा हौज़ के जल से किसी को अधिक हानि पहुँचने का कोई प्रश्न नहीं उठता।

हुमायूं के आविष्कार

हौज के किनारे एक कमरा था जिसमें अभरक[1] की खिड़कियाँ लगी थीं। तरुण लोग उसमें बैठे थे और बाज़ीगर करतब दिखा रहे थे।

जनाना बाजार भी लगवाया गया था और नौकायें भी सजाई गई थीं[2]। एक नौका शश कसी[3] के समान बनाई गई जिसमें कमरे बनवाये गए थे। एक नौका में ऊपरी मंज़िल बनाई गई थी। उसके नीचे एक उद्यान लगाया गया था जिसमें अम्लान, पुष्प, मुर्ग़ केश, नाफ़रमान[4] एवं लाला बोये गए थे।

एक स्थान पर आठ नौकायें मिला दी गई थीं जो आठों अलग अलग हो जाती थीं। संक्षेप में, ईश्वर ने इस प्रकार के आविष्कार उनके पवित्र हृदय को प्रदान किए थे कि जो कोई देखता वह आश्चर्य करता[5]।

मीर्ज़ा हिन्दाल के विवाह का जश्न

सुल्तानम बेगम[6], महदी ख़्वाजा की बहिन[7] थी। मेरे बाबा के बहनोई[8] के जाफ़र ख़्वाजा के अतिरिक्त कोई अन्य पुत्र न था। आका जानम[9] ने सुल्तानम को पुत्र के समान पाला था। जब वह दो वर्ष की हुई तो उसे ख़ानज़ादा बेगम ने अपने पास रख लिया। उन्हें उससे बड़ा स्नेह था। उस के

१ यह संस्कृत शब्द है किन्तु गुलबदन बेगम ने इसी शब्द का प्रयोग किया है। अरबी शब्द अबरक है।
२ आईन बन्दी की गई थी।
३ सम्भवत: ६ आदमियों के लिये।
४ एक प्रकार का फूल।
५ नौकाओं के विषय में देखिये ख्वान्द मीर **कानूने हुमायूनी** का अनुवाद।
६ दुलहिन।
७ महदी मुहम्मद ख़्वाजा, अथवा महदी ख़्वाजा, मूसा ख़्वाजा का पुत्र था। निज़ामुद्दीन ने **तबक़ाते अकबरी** में उसे बाबर का दामाद बताया है। महदी ख़्वाजा बाबर की सगी बहिन ख़ानज़ादा बेगम का पति था। ख़ानज़ादा बेगम का यह तीसरा विवाह था, प्रथम ९०७ हि० (१५०१ ई०) में हुआ दूसरा विवाह सैयिद हादा नामक एक व्यक्ति से हुआ। १५११ ई० में ३३ वर्ष की अवस्था में शाह इस्माईल सफ़वी ने उसे बड़े आदर-सम्मान से बाबर के पास भेज दिया। सम्भवत: १५११ १५१६ ई० के बीच में उसका विवाह ख़ानज़ादा बेगम से हुआ। क्योंकि १५०९ से १५१९ ई० का इतिहास **बाबर नामे** में नहीं है अत: इस विवाह की तारीख़ के विषय में निश्चित रूप से कुछ कहना सम्भव नहीं। वह बाबर के साथ हिन्दुस्तान पहुँचा और विभिन्न युद्धों में बड़ा महत्वपूर्ण भाग लिया। **बाबर नामे** में उसका कई स्थानों पर उल्लेख हुआ है। उसे इटावा प्रदान कर दिया गया था और जब उसे बाबर के साथ रहना पड़ता था तो उसका पुत्र जाफ़र ख़्वाजा उसकी ओर से प्रबंध करता था। (**बाबर नामा**, पृ० १५०, १५२, १५५, १५६, १५७, २०७, २०९, २१०, २१४, २१६, २१९, २२४, २२७, २२८, २५३, २५६, २५७, ३०३, ३०४, ३३६, ३३८, ३३९)।
८ 'यज़ना'।
९ ख़ानज़ादा बेगम।

अपने ही भाई की पुत्री समझती थी। उन्होंने बड़े सुन्दर एवं उत्तम ढंग से जश्न का प्रबन्ध कराया।

(३६) कूश्का[१], अदसका, ५ तूराक, ५ यीस्तूक[२], एक बड़ा तकिया, दो गोल तकिये, कूश्का[३], नकाब, खरगाह सहित[४], जवल्ग[५] तीन तूक्व सहित जो सभी जरदोजी के थे, मीर्जा के सरोपा, चार वस्त्र[६], जरदोजी ताज, लुंगी, जरदोजी के रूपाक[७] एवं रूमाल तथा जरदोजी के कूरपोश।

सुल्तानम बेगम के लिये जवाहरात के तुकमो[८] से ९ नीमतने[९], एक लाल, एक याकूत, एक जमुर्रद एक फीरोजा, एक जबरजद, एक एनुल हुर्रा[१०]।

इसके अतिरिक्त जवहर[११] गौहर ९, चारवत्र एवं चार करतीजी[१२] तुकमदार एक एक, लाल के हलके[१३] एक जोड़, मोती के हलके एक जोड़, तीन पल्ले, एक शाही छत्र, एक दरख्त[१४], दो खुत्व[१५], अन्य असबाब, आसिया[१६], रख्त व रखूत[१७] एवं कारखाने[१८] (हर प्रकार के) जिन्हें खानजादा बेगम ने एकत्र किया था, दे दिया। उन्होंने दावत का ऐसा प्रबन्ध किया जैसा कि मेरे बाबा के किसी पुत्र के (विवाह) में न हुआ था। उन्होंने सब एकत्र करके प्रदान कर दिया —९ तीपूचाक घोड़े, जड़ाऊ एवं जरदोजी की जीन तथा लगाम सहित, खाने खादी के बरतन तुर्क, चर्कस[१९], अरूस[२०], एवं हब्शी दास—प्रत्येक तुकूज-तुकूज[२१] उपहार स्वरूप दिये।

१ सम्भवतः किसी प्रकार का किले के आकार का छोटा मंडप, जो बड़े दालानों में लगा दिया जाता होगा।
२ सिर के तकिये।
३ पेटियाँ।
४ यह शब्द स्पष्ट नहीं, सम्भवतः कुछ छूट गया है।
५ यह शब्द भी स्पष्ट नहीं।
६ एक प्रकार के वस्त्र जो विशेष रूप से तूरान के पादशाह पहनते थे।
७ एक प्रकार के तौलिये।
८ घुंडी फँसाने का फंदा।
९ एक प्रकार का जैकेट।
१० बिल्ली की आँख, एक प्रकार का जड़ाऊ पत्थर।
११ गरदन में पहिनने का आभूषण।
१२ सम्भवतः एक प्रकार के छोटे जैकेट।
१३ कान में पहिनने का आभूषण।
१४ सम्भवतः झाड़ की कोई किस्म जो वृक्ष के समान हो।
१५ सम्भवतः कुतुब के समान सीधी झाड़।
१६ चक्की, सम्भवतः हजरत मुहम्मद के अनुकरण में, उन्होंने भी अपनी पुत्री हजरत फातिमा को जहेज में आसिया दिया था।
१७ घरेलू सामान।
१८ बादशाह की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के प्रबन्ध हेतु विभाग।
१९ सरकेशियन।
२० सम्भवतः रूमी।
२१ ९ ९ की संख्या में, बादशाहों को उपहार देने में प्रत्येक वस्तु ९ की संख्या में भेंट की जाती थी। इसे बड़ा शुभ माना जाता था।

मेरे दादा के बहनोई ने मीर्जा को जो उपहार भेंट किए —एक तुकूज़ तीपूचाक घोड़े, जड़ाऊ एवं जरदोजी की ज़ीन एवं लगाम, सोने चाँदी के बरतन, २ तुकूज़ सामान लादने वाले घोड़े, जीन, लगाम, मख़मल, ज़रबफ़्त, पुर्तगाली सकरलात, तुर्क, हब्शी एवं हिन्दी दास सभी तीन तुकूज़, तीन हाथी।

सुल्तान बहादुर के वज़ीर का ब्याना पर आक्रमण तथा उसकी पराजय

जब वे जश्न से निश्चिन्त हो गए तो समाचार प्राप्त हुए कि सुल्तान बहादुर के वज़ीर ने, जिसका नाम खुरासान खाँ[१] था, ब्याना पर आक्रमण कर दिया है। हज़रत बादशाह ने मीर्जा अस्करी को कुछ अन्य अमीरों—क़ासिम[२] अली बेग एवं मीर तरदी बेग इत्यादि सहित (उनके विरुद्ध) भेजा। उन लोगों ने ब्याना पहुँच कर युद्ध किया। खुरासान खाँ को पराजित कर दिया।

हुमायूँ का गुजरात की ओर प्रस्थान

समस्त बेगमें एव बहिनें साथ जाती थी। दूसरे दिन वे इस तुच्छ के खेमें में पधारे। तीन पहर[1] तक सभा होती रही। अधिकाश बेगमें, बहिने, बेगायें[2], आगायें[3], आगाचायें[4], वादिकायें एव गायिकायें उपस्थित थी। तीन पहर उपरान्त हजरत (पादशाह) ने विश्राम किया। समस्त बहिनो एव बेगमो ने उन्ही की सेवा में विश्राम किया।

बेगा बेगम की शिकायत

बेगा बेगम ने हमें जगाया कि नमाज का समय है। हजरत ने आदेश दिया कि वुजू[5] के लिए जल उसी खेमे में तैयार किया जाय। बेगम[6] समझ गईं कि पादशाह जाग रहे हैं। वे (३८) शिकायत करने लगी कि, "आप कई दिन से इस बाग में पधार रहे हैं। एक दिन भी हमारे घर न आये। हमारे घर के मार्ग में काटे नही बोये है। आशा है कि आप हमारे घर भी पधारें और आमोद प्रमोद का प्रबन्ध एव सभा आयोजित करायें। इस दुखिया के प्रति यह उपेक्षा आप कब तक करेंगे ? हमारे भी दिल हैं। आप अन्य स्थानो पर तीन बार पधारे और रात दिन वहाँ आनन्द मगल मनाते रहे।"

हुमायूं का उत्तर

सक्षेप में, पादशाह ने कुछ न कहा और नमाज पढने चले गए। एक पहर दिन चढ जाने के उपरान्त बहिनो, बेगमो, दिलदार बेगम, अफगानी आगाचा, गुलनार आगाचा, मेवा जान, आगा जान एव अनगाओ[7] को बुलवाया। जब हम सब पहुँचे तो पादशाह ने कुछ न कहा। सब समझ गईं कि पादशाह बडे क्रोध में हैं। तदुपरान्त उन्होने कहा, "बीबी, प्रात काल तुमने मुझसे क्या शिकायत की ? वह शिकायत करने का स्थान न था। तुम जानती हो कि हम तुम्हारे वली नेमतो[8] के घर रहे। मेरे लिए उन्हे सतुष्ट रखना परमावश्यक है। इसके बावजूद मैं उनसे लज्जित हूँ कि मैं उनके दर्शन करने में विलम्ब करता हूँ। मैं सर्वदा सोचा करता था कि तुम लोगो से क्षमा[9] याचना करूँ। अच्छा हुआ कि तुमने स्वय बात छेड दी। मैं अफीमी हू। यदि मेरे आने जाने में विलम्ब हो तो रुष्ट मत होना अन्यथा लिख कर देदो कि, 'आपकी इच्छा, आप आये या न आये। हम सतुष्ट हैं।'

१ तीन पहर रात तक। घड़ी एव पहर के विभाजन के लिये देखिये **बाबर नामा** पृ० १६५-१६६।
२ उच्च श्रेणी की बेगमें।
३ अन्य सम्मानित बेगमें
४ अन्य बेगमें।
५ नमाज के लिये नियम पूर्वक हाथ, पाव और मुँह आदि धोना।
६ बेगा बेगम।
७ दाइयों।
८ बुजुर्गो।
९ मूल पुस्तक में 'बक्ले' है किन्तु इसे 'बिहले' भी पढा जा सकता है। एक आध नुस्खे पुस्तक के नकल करने वाले बढा घटा देते थे। मिसेज बेवरिज ने इसे 'मिजले' पढा है जिसका अर्थ है 'मुहर सहित दस्तावेज अथवा कोई पत्र'। सिजले भी यहाँ ठीक मानना है कारण कि हुमायूं ने हर एक से पत्र लिखवाया था।

मेरे बाबा के बहनोई ने मीर्ज़ा को जो उपहार भेंट किए —एक तुकूज़ तीपूचाक घोड़े, जड़ाऊ एवं ज़रदोज़ी की जीन एवं लगाम,सोने-चाँदी के बरतन, २ तुकूज़ सामान लादने वाले घोड़े, ज़ीन, लगाम, मख़मल, ज़रबफ़्त, पुर्तगाली सकरलात, तुर्क, हब्शी एवं हिन्दी दास सभी तीन तुकूज़, तीन हाथी।

सुल्तान बहादुर के वज़ीर का ब्याना पर आक्रमण तथा उसकी पराजय

जब वे जश्न से निश्चिन्त हो गए तो समाचार प्राप्त हुए कि सुल्तान बहादुर के वज़ीर ने, जिसका नाम ख़ुरासान ख़ां[1] था, ब्याना पर आक्रमण कर दिया है। हज़रत पादशाह ने मीर्ज़ा अस्करी को कुछ अन्य अमीरों-फ़क्र[2] अली बेग एवं मीर तरदी बेग इत्यादि सहित (उनके विरुद्ध) भेजा। उन लोगों ने ब्याना पहुँच कर युद्ध किया। ख़ुरासान ख़ां को पराजित कर दिया।

हुमायूं का गुजरात की ओर प्रस्थान

कुछ समय उपरान्त हज़रत पादशाह स्वयं गुजरात की ओर रवाना हुए। १५ रजब[3] (३७) ९४१ हि० (२० जनवरी १५३५ ई०) को गुजरात प्रस्थान का सकल्प कर लिया। बाग़े ज़र अफ़शाँ में पेशख़ाना[4] लगवाया गया। वे स्वयं उस उद्यान में सेना के एकत्र होने के एक मास तक ठहरे रहे[4]।

ख़ेमों की व्यवस्था

दरबार के दिन, जो रविवार एवं बुधवार को निश्चित थे, वे नदी के उस पार जाते थे। जब तक वे उद्यान में रहे अधिकांश आज़म[5], बहिनें एवं बेगमें हज़रत की सेवा में रहती थीं। सबसे ऊपर मासूमा सुल्तान बेगम का ख़ेमा था। तदुपरान्त गुलरंग बेगम एवं आज़म के ख़ेमे एक ही स्थान पर थे। इसके बाद मेरी माता, गुलबर्ग बेगम, बेगा बेगम एवं अन्य बेगमों के ख़ेमे थे[6]।

हुमायूं का बेगमों के ख़ेमे में पधारना

कारख़ानों की व्यवस्था की गई और उन्हें तैयार किया गया। सर्व प्रथम जब ख़ेमे, सरगाह एवं बारगाह, बाग़ में लगवाये गए तो वे उनकी शोभा एवं सुव्यवस्था देखने पहुँचे। बेगमें एवं बहिनें पधारीं। क्योंकि वे मासूमा सुल्तान बेगम के निकट ठहरे हुए थे अतः वे उनके ख़ेमे में पधारे। समस्त बेगमें एवं बहिनें साथ थीं। वे जिस बेगम अथवा बहिन के ख़ेमे में पधारते,

१ मीर्ज़ा मुक़ीम ख़ुरासान ख़ां।

२ अन्य स्थानों पर फ़क्र अली बेग।

३ अकबर नामा में सेना एकत्र होने की तारीख़ जमादि-उल अव्वल ९४१ हि० (नवम्बर दिसम्बर १५३४ ई०) लिखी है। (देखिये पूर्व पृ० १६)। गुलबदन बेगम ने सम्भवतः सेना के प्रस्थान की तिथि लिखी है।

४ यात्रा हेतु प्रस्थान करते समय पादशाही शिविर।

५ दिलदार बेगम।

६ ख़ेमों के इस क्रम से पता चलता है कि बाबर की पुत्रियों एवं विधवाओं को हुमायूं ने अपनी पत्नियों से ऊँचा स्थान दे रक्खा था।

समस्त बेगमें एव बहिनें साथ जाती थी। दूसरे दिन वे इस तुच्छ के खेमें मे पधारे। तीन पहर[1] तक सभा होती रही। अधिकाश बेगमें, बहिने, बेगाये[2], आगाये[3], आगाचाये[4], वादिकाये एव गायिकायें उपस्थित थी। तीन पहर उपरान्त हजरत (पादशाह) ने विश्राम किया। समस्त बहिना एव बेगमा ने उन्ही की सेवा में विश्राम किया।

बेगा बेगम की शिकायत

बेगा बेगम ने हमें जगाया कि नमाज का समय है। हजरत ने आदेश दिया कि वुजू[5] के लिए जल उसी खेमे में तैयार किया जाय। बेगम[6] समझ गईं कि पादशाह जाग रहे हैं। वे (३८) शिकायत करने लगी कि, "आप कई दिन से इस बाग में पधार रहे हैं। एक दिन भी हमारे घर न आये। हमारे घर के मार्ग में काँटे नही बोये हैं। आशा है कि आप हमारे घर भी पधार और आमोद प्रमोद का प्रबन्ध एव सभा आयोजित करायें। इस दुखिया के प्रति यह उपेक्षा आप कब तक करेंगे? हमारे भी दिल हैं। आप अन्य स्थाना पर तीन बार पधारे और रात दिन वहा आनन्द मगल मनाते रहे।"

हुमायूं का उत्तर

सक्षेप में, पादशाह ने कुछ न कहा और नमाज पढने चले गए। एक पहर दिन चढ जाने के उपरान्त बहिना, बेगमो, दिलदार बेगम, अफगानी आगाचा, गुलनार आगाचा, मवा जान, आगा जान एव अनगाओ[7] को बुलवाया। जब हम सब पहुँचे तो पादशाह ने कुछ न कहा। सब समझ गईं कि पादशाह बड़े क्रोध में हैं। तदुपरान्त उन्होने कहा, 'बीबी, प्रात काल तुमने मुझसे क्या शिकायत की? वह शिकायत करने का स्थान न था। तुम जानती हो कि हम तुम्हारे बली नेमता[8] के घर गये हैं। मेरे लिए उन्ह सतुष्ट रखना परमावश्यक है। इसके बावजूद मैं उनसे लज्जित हूँ कि मैं उनके दर्शन करने मे विलम्ब करता हूँ। मैं सर्वदा सोचा करता था कि तुम लोगा से क्षमा[9] याचना करूँ। अच्छा हुआ कि तुमने स्वय बात छेड दी। मैं अफीमी हूं। यदि मेरे आने जाने में विलम्ब हो तो रुष्ट मत होना अन्यथा लिख कर देदो कि, 'आपकी इच्छा, आप आयें या न आयें। हम सतुष्ट हैं।'

१ तीन पहर रात तक। घड़ी एव पहर के विभाजन के लिय देखिये **बाबर नामा** पृ० १९५ १९६।
२ उच्च श्रेणी की बेगमें।
३ अन्य सम्मानित बेगमें
४ अन्य बेगमें।
५ नमाज के लिये नियम पूर्वक हाथ, पाव और मुँह आदि धोना।
६ बेगा बेगम।
७ दाइयाँ।
८ बुजुर्गों।
९ मूल पुस्तक में 'बजले' है किन्तु इसे 'बिहले' भी पढा जा सकता है। एक आध नुक्ते पुस्तक के नकल करने वाले बढा घटा देते थे। मिसेज बेवरिज ने इसे 'सिजले' पढा है जिसका अर्थ है 'मुहर सहित दस्तावेज अथवा कोई पत्र'। सिजले भी यहाँ लग सकता है कारण कि हुमायूं ने हर एक से पत्र लिखवाया था।

मेरे बाबा के बहनोई ने मीर्जा को जो उपहार भेंट किए —एक तुकूज तीपूचाक घोडे, जडाऊ एव जरदोजी की जीन एव लगाम,सोने-चाँदी के बरतन, २ तुकूज सामान लादने वाले घोडे, *ज़ीन, लगाम, मखमल, जरबफ्त, पुर्तगाली सकरलात, तुर्क, हब्शी एव हिन्दी दास सभी तीन तुकूज,* तीन हाथी।

सुल्तान बहादुर के वज़ीर का ब्याना पर आक्रमण तथा उसकी पराजय

जब वे जश्न से निश्चिन्त हो गए तो समाचार प्राप्त हुए कि सुल्तान बहादुर के वज़ीर ने, जिसका नाम खुरासान खा[1] था, ब्याना पर आक्रमण कर दिया है। हज़रत पादशाह ने मीर्जा अस्करी को कुछ अन्य अमीरो–फक्र[2] अली बेग एव मीर तरदी बेग इत्यादि सहित (उनके विरुद्ध) भेजा। उन लोगो ने ब्याना पहुँच कर युद्ध किया। खुरासान खा को पराजित कर दिया।

हुमायूं का गुजरात की ओर प्रस्थान

कुछ समय उपरान्त हज़रत पादशाह स्वय गुजरात की ओर रवाना हुए। १५ रजब[3] (३७) ९४१ हि० (२० जनवरी १५३५ ई०) को गुजरात प्रस्थान का सकल्प कर लिया। बाग़े ज़र *अफशॉं में पेशखाना[4] लगवाया गया। वे स्वय उस उद्यान मे सेना के एकत्र होने के एक मास* तक ठहरे रहे[4]।

खेमो की व्यवस्था

दरबार के दिन, जो रविवार एव बुधवार को निश्चित थे, वे नदी के उस पार जाते थे। जब तक वे उद्यान में रहे अधिकाश आजम[5], बहिनें एव बेगमे हज़रत की सेवा मे रहती थी। सबसे ऊपर मासूमा सुल्तान बेगम का खेमा था। तदुपरान्त गुलरग बेगम एव आजम के खेमे एक ही स्थान पर थे। इसके बाद मेरी माता, गुलबर्ग बेगम, बेगा बेगम एव अन्य बेगमो के खेमे थे[6]।

हुमायूं का बेगमो के खेमे में पधारना

कारखानो की व्यवस्था की गई और उन्हे तैयार किया गया। सर्व प्रथम जब खेमे, खरगाह एव बारगाह, बाग में लगवाये गए तो वे उनकी शोभा एव सुव्यवस्था देखने पहुँचे। बेगमें एव बहिने पधारी। क्योंकि वे मासूमा सुलतान बेगम के निकट ठहरे हुए थे अत वे उनके खेमे में पधारे। समस्त बेगमें एव बहिनें साथ थी। वे जिस बेगम अथवा बहिन के खेमे में पधारते,

१ मीर्जा मुकीम खुरासान खा।
२ अन्य स्थानों पर 'फक्र अली बेग'।
३ **अकबर नामा** में सेना एकत्र होने की तारीख जमादि उल अव्वल ९४१ हि० (नवम्बर दिसम्बर १५३४ ई०) लिखी है। (देखिये पूर्व पृ० १६)। गुलबदन बेगम ने सम्भवत सेना के प्रस्थान की तिथि लिखी है।
४ यात्रा हेतु प्रस्थान करते समय पादशाही शिविर।
५ दिलदार बेगम।
६ खेमों के इस क्रम से पता चलता है कि बाबर की पुत्रियों एवं विधवाओं को हुमायू ने अपनी पत्नियों से ऊँचा स्थान दे रक्खा था।

समस्त बेगमें एवं बहिनें साथ जाती थीं। दूसरे दिन वे इस तुच्छ के खेमे में पधारे। तीन पहर[1] तक सभा होती रही। अधिकांश बेगमें, बहिनें, बेगायें[2], आगायें[3], आगाचायें[4], वादिकायें एवं गायिकायें उपस्थित थीं। तीन पहर उपरान्त हजरत (पादशाह) ने विश्राम किया। समस्त बहिनों एवं बेगमों ने उन्हीं की सेवा में विश्राम किया।

बेगा बेगम की शिकायत

बेगा बेगम ने हमें जगाया कि नमाज का समय है। हजरत ने आदेश दिया कि वुजू[5] के लिए जल उसी खेमे में तैयार किया जाय। बेगम[6] समझ गईं कि पादशाह जाग रहे हैं। वे (३८) शिकायत करने लगीं कि, "आप कई दिन से इस बाग में पधार रहे हैं। एक दिन भी हमारे घर न आये। हमारे घर के मार्ग में काँटे नहीं बोये हैं। आशा है कि आप हमारे घर भी पधारें और आमोद प्रमोद का प्रबन्ध एवं सभा आयोजित करायें। इस दुखिया के प्रति यह उपेक्षा आप कब तक करेंगे? हमारे भी दिल है। आप अन्य स्थानों पर तीन बार पधारे और रात दिन वहाँ आनन्द मंगल मनाते रहे।"

हुमायूँ का उत्तर

संक्षेप में, पादशाह ने कुछ न कहा और नमाज पढ़ने चले गए। एक पहर दिन चढ़ जाने के उपरान्त बहिनों, बेगमों, दिलदार बेगम, अफगानी आगाचा, गुलनार आगाचा, मेवा जान, आगा जान एवं अनगाओं[7] को बुलवाया। जब हम सब पहुँचे तो पादशाह ने कुछ न कहा। सब समझ गईं कि पादशाह बड़े क्रोध में हैं। तदुपरान्त उन्होंने कहा, "बीबी, प्रातःकाल तुमने मुझसे क्या शिकायत की? वह शिकायत करने का स्थान न था। तुम जानती हो कि हम तुम्हारे वली नेमतों[8] के घर रहे। मेरे लिए उन्हें सन्तुष्ट रखना परमावश्यक है। इसके बावजूद मैं उनसे लज्जित हूँ कि मैं उनके दर्शन करने में विलम्ब करता हूँ। मैं सर्वदा सोचा करता था कि तुम लोगों से क्षमा[9] याचना करूँ। अच्छा हुआ कि तुमने स्वयं बात छेड़ दी। मैं अफीमी हूँ। यदि मेरे आने जाने में विलम्ब हो तो रुष्ट मत होना अन्यथा लिख कर दे दो कि, 'आपकी इच्छा, आप आयें या न आयें। हम सन्तुष्ट हैं।'

१ तीन पहर रात तक। घड़ी एवं पहर के विभाजन के लिये देखिये **बाबर नामा** पृ० १९९-१९६।
२ उच्च श्रेणी की बेगमें।
३ अन्य सम्मानित बेगमें
४ अन्य बेगमें।
५ नमाज के लिये नियम पूर्वक हाथ, पाँव और मुँह आदि धोना।
६ बेगा बेगम।
७ दाइयाँ।
८ बुजुर्गों।
९ मूल पुस्तक में 'बजने' है किन्तु इसे 'निहले' भी पढ़ा जा सकता है। पर आधे नुस्खे पुस्तक के नकल करने वाले बड़ा धोखा देते थे। मिसेज बेवरिज ने इसे 'सिज्ले' पढ़ा है जिसका अर्थ है 'मुहर सहित दस्तावेज अथवा कोई पत्र'। सिज्ले भी यहाँ ठीक मानता हूँ कारण कि हुमायूँ ने हर एक से पत्र लिखवाया था।

बेगमो का पत्र लिख कर देना

गुलवर्ग बेगम ने तत्काल वही शब्द लिख कर दे दिये। गुलवर्ग बेगम की ओर से सन्तुष्ट हो गए। बेगा बेगम ने थोडा सा आग्रह किया कि, "बहाना, पाप से भी बुरा होता है[1]। 'ऐ न करें। इस शिकायत से हमारा उद्देश्य यह था कि आप हमें अपनी अनुकम्पा द्वारा सम्मानित क आपने बात इस सीमा तक बढा दी। हमारे पास क्या उपाय है। आप पादशाह है।" पत्र लिख दे दिया। वे उनसे भी सन्तुष्ट हो गए।

सुल्तान बहादुर की पराजय

(३९) १४ शाबान[2] को जरअफशाँ बाग से प्रस्थान करके वे गुजरात की ओर रवाना। और सुल्तान बहादुर पर आक्रमण किया। मदसौर[3] म दोनो का आमना सामना और युद्ध हुअ सुल्तान बहादुर पराजित होकर चाम्पानीर की ओर भाग गया। अन्त में हजरत ने स्वय पीछा कर निश्चय किया। वह[4] चाम्पानीर को छोडकर अहमदाबाद की ओर भाग गया।

हुमायू का चाम्पानीर पहुँचना

हजरत ने अहमदाबाद की विलायत पर भी अधिकार जमा लिया और समस्त गुजरात अपने आदमियो में बाँट दिया। अहमदाबाद मीर्जा अस्करी को प्रदान किया गया। भडौच कासि हुसेन सुल्तान को दिया गया। पटन यादगार नासिर मीर्जा को और हजरत स्वय चाम्पानीर कुछ लोगो पर एवर सैर करते हुए खम्बायत[5] की ओर रवाना हुए।

हुमायू की आगरा को वापसी

कुछ दिन उपरान्त एक स्त्री यह समाचार लाई आप क्या बैठे है ? खम्बायत वाले एक होकर आप पर आक्रमण करगे। हे हजरत आप सवार हो जाय। हजरत के अमीरो ने उस समूह पर आक्रमण किया। उनमे स (कुछ को) बन्दी बना लिया गया और कुछ की हत्या करा दी ग तदुपरान्त वे बडौदा पहुँचे और वहाँ से चाम्पानीर चले गए[6]। हम लोग वहा बैठे[8] थे कि कोलाह मच[9] गया। मीर्जा अस्करी के आदमी अहमदाबाद को छोडकर पादशाह के समक्ष पहुँचे अ

१ "उज्रे गुनाहे बदतर अज गुनाह" बड़ी प्रसिद्ध फारसी लोकोक्ति है।
२ १४ शाबान ९४१ हि० (१८ फरवरी १५३५ ई०)।
३ मूल पुस्तक में 'मन्दसौर'।
४ सुल्तान बहादुर।
५ इस अवसर पर हुमायू ने पहिले पहल समुद्र का निरीक्षण किया। **अकबर नामा** में अबुलफजल ने अकबर द्वा समुद्र के निरीक्षण की बड़े उत्साह से चर्चा की।
६ इस विषय में **अकबर नामा** में विस्तार से प्रकाश डाला गया है। **जौहर वाकेआत** के लेखक ने कोल लोगों विषय में बड़ी महत्वपूर्ण व्याख्या की है।
७ चाम्पानीर विजय के विषय में **अकबर नामा** एव **जौहर वाकेआत** के तुलनात्मक विवरण को देखिये।
८ शान्त से रहने लगे थे।
९ 'फ़ितरात शुद', यह शब्द गुलबदन बेगम के उन शब्दों में है जिनका उसने कई स्थानों पर प्रयोग किया है हर स्थान पर उनके अर्थ प्रचलित अर्थ से पृथक होते है।

निवेदन किया कि, 'मीर्जा अस्करी एवं यादगार नासिर मीर्जा आपस में मिल गए हैं और वे आगरा की ओर प्रस्थान करना चाहते हैं।" जब हजरत को यह समाचार प्राप्त हुए तो वे विवश होकर आगरा की ओर रवाना हुए तथा गुजरात के अभियान की ओर ध्यान न दिया। गुजरात छोड़कर यात्रा करते हुए आगरा पहुँचे। एक वर्ष तक वे आगरा में रहे[१]।

हुमायूं का चुनार एवं बनारस पर अधिकार

तदुपरान्त वे चनादह[२] पहुँचे और चनादः तथा बनारस पर अधिकार जमा लिया। शेर खां परकन्दा[३] में था। उसने हजरत की सेवा में एक प्रार्थना पत्र भेजा कि, सेवक आपका प्राचीन दास है। एक स्थान पर सीमा निश्चित करके वह स्थान प्रदान कर दिया जाय ताकि वह वहाँ रहे।'

हुमायूं का बंगाल की ओर प्रस्थान तथा शेर खां का पीछा करना

वे इसी विषय में सोच रहे थे कि गौर[४] बंगाले का बादशाह घायल होकर भागकर हजरत की सेवा में पहुँचा। हजरत ने वहाँ प्रतीक्षा न की[५] और गौर बंगाले की ओर प्रस्थान किया। शेर खां को जब ज्ञात हुआ कि वे गौर बंगाला चले गए तो वह स्वयं जरीदा[६] शीघ्रातिशीघ्र बढ़ता हुआ गौर की ओर रवाना हुआ और अपने पुत्र[७] के पास पहुँच गया। उसका पुत्र तथा उसका दास ख्वास (४०) खां गार में थे। उसने ख्वास खां तथा अपने पुत्र को इस आशय से भेजा कि वे जाकर गढ़ी को दृढ़ बना लें। उन लोगों ने पहुँचकर गढ़ी पर अधिकार जमा लिया। हजरत ने जहाँगीर बेग को पूर्व में लिखा था कि वह एक मंज़िल आगे प्रस्थान करे। वह गढ़ी[८] पहुँच गया। युद्ध हुआ। जहाँगीर बेग घायल हुआ और बहुत से लोग मारे गए।

हुमायूं का गौड़ पर अधिकार

अन्त में हजरत ३-४ दिन तक कहलगांव[९] में रहे और यह निश्चय हुआ कि वे आगे प्रस्थान करें तथा गढ़ी के समीप पड़ाव करें। जब वे प्रस्थान करके आगे बढ़े और गढ़ी के समीप पड़ाव कर दिया तो एक रात्रि में शेर खां तथा ख्वास खां भाग खड़े हुए। दूसरे दिन हजरत (जहाँबानी) गढ़ी पहुँचे और गढ़ी को पार करके गौर बंगाला की ओर रवाना हुए तथा गौर पर अधिकार जमा लिया।

१ इसी बीच में शेर खां ने अपनी शक्ति को अधिक दृढ़ कर लिया।
२ चुनार।
३ भरकुन्दा अथवा झारखंड।
४ गौड़।
५ "मुरस्सद न शुद" अर्थात् शेर शाह ने जो प्रस्ताव रखा था उसके विषय में न रहे और उसके विषय में कोई निर्णय करने की प्रतीक्षा न की।
६ थोड़े से सैनिकों के साथ, एक हलके-फुलके दल के साथ शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करने की दृष्टि से।
७ जलाल खां।
८ मूल में 'गाढ़ी'।
९ कालगोंग (Colgong)।

९ मास तक वे गौर की विलायत[१] मे रहे और गौर का नाम जन्नताबाद[२] रख दिया। वे गौर में ही थे कि समाचार प्राप्त हुए कि अमीर लोग भागकर मीर्ज़ा हिन्दाल से मिल गए हैं[३]।

हिन्दाल का विद्रोह

खुसरो बेग[४], ज़ाहिद बेग[५] तथा सैयिद अमीर[६] ने मीर्ज़ा की सेवा में उपस्थित होकर निवेदन किया कि, "बादशाह दूर चले गए हैं। मीर्ज़ाओं में मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा तथा उसके पुत्र उलुग मीर्ज़ा एव शाह मीर्ज़ा ने पुन विद्रोह कर दिया है[७]। वे हर समय एक ही स्थान पर पाये जाते हैं। मशीख़त पनाही बन्दिगी[८] शेख़ बहलोल इस समय जीवा[९], किजीम[१०] एव अस्त्र शस्त्र छिपाकर गाडियो मे लदवा कर शेर खा तथा मीर्ज़ाओं[११] के पास भेज रहे हैं। मीर्ज़ा हिन्दाल ने विश्वास न किया। अन्त में इस विषय में पूँछ ताँछ के लिए उन्होने मीर्ज़ा नूरुद्दीन मुहम्मद को भेजा। जीवा एव किजीम पाये गए। बन्दिगी शेख़ बहलोल की हत्या करा दी गई। जब बादशाह को यह समाचार प्राप्त हुए तो वे आगरा की ओर रवाना हुए और गगा के उस तट की ओर[१२] किनारे किनारे यात्रा करने लगे।

हुमायूं एव शेर शाह का युद्ध

जब व मुगेर क समक्ष पहुँचे ता अमीरा ने निवदन किया कि, 'आप बहुत बडे बादशाह हैं। आप जिस मार्ग से आये थे उसी मार्ग से प्रस्थान कर ताकि शेर खा यह न कह सके कि आप जिस मार्ग से आये थे उसे छोडकर दूसरे मार्ग से चले गए[१३]।' वे पुन मुगेर की ओर पलटे और (४१) अधिकाश लोग अपने परिवार को नौका पर बैठा कर नदी के चढाव की ओर यात्रा करने लगे। यहाँ तक कि वे हाजीपुर पटना पहुँच गए।

प्रस्थान[१४] के समय वे कासिम सुल्तान[१५] को उस स्थान पर नियुक्त कर गए थे। इसी

१ प्रदेश।
२ स्वर्ग का नगर, हुमायूं ने इस नगर में जिस प्रकार भोग विलास में समय नष्ट कर दिया उसका सविस्तार उल्लेख जौहर ने किया है। शेर खा ने इस स्थिति से लाभ उठा कर अपनी शक्ति दृढ़ बना ली।
३ हिन्दाल की उस समय (९४५ हि०/१५३८ ई०) अवस्था केवल १८ वर्ष की थी।
४ खुसरो बेग कूकुल्ताश।
५ हुमायूं की पत्नी बेगा बेगम की बहिन का पति। मीर्ज़ा कामरान ने १५४७ ई० में गज़नी में उसकी हत्या कर दी।
६ सैयद नूरुद्दीन मीर्ज़ा, सलीमा सुल्तान बेगम का पिता एव बाबर की एक पुत्री का पति।
७ हिन्दाल उन्हे पूर्व में पराजित कर चुका था।
८ शेख़ों (सन्तों) की शरण, आदरणीय।
९ ज़िरह, कवच से तात्पर्य है।
१० घोडे के ऊपर डालने वाली लोहे की झूल।
११ विद्रोही मीर्ज़ाओं।
१२ बाईं ओर।
१३ मुईद बेग दुल्दाई बरलास ने यह मूर्खतापूर्ण प्रस्ताव रक्खा और हुमायूं को चौसा में फँसा दिया। वह बडा ही निष्ठुर एव सैन्य-सचालन के ज्ञान से शून्य था।
१४ बगाल की ओर।
१५ कासिम हुसैन सुल्तान ऊजबेक।

बीच मे समाचार प्राप्त हुए कि शेर खा पहुँच गया। हर बार जब युद्ध होता तो हजरत (जन्नत आशियानी) के आदमी विजयी होते।

इसी बीच में बाबा बेग[1] जौनपुर से आया तथा मीरक बेग चनादह से पहुँचा। मुगुल बेग अवध से आया। इन तीनो अमीरो के पहुँच जाने से अनाज महगा हो गया।

हुमायूं की पराजय

अन्त मे ईश्वर की इच्छा यही थी। वे असावधान थे कि शेर खा ने पहुँच कर आक्रमण कर दिया। सेना पराजित हुई और अधिकाश लोग एव परिवार वाले बन्दी बना लिए गए[2]। हजरत जन्नत आशियानी के पवित्र हाथो मे घाव लगे। वे तीन दिन तक चनादह मे रहे। तदुपरान्त अरैल[3] पहुँचे।

अरैल के राजा का सौजन्य

नदी तट पर पहुँच कर पार करने की चिन्ता मे थे कि बिना नौका के किस प्रकार पार जाया जा सकेगा। इसी बीच में वहाँ का राजा[4] ५-६ अश्वारोहियो सहित पहुँचा और उसने उन्हे नदी के पार उतार दिया। ४-५ दिन तक लोग बिना खाये पिये रहे। अन्त मे राजा ने बाजार लगवाया और सेना वालो ने कुछ दिन आराम से व्यतीत किए। घोडे भी ताजा दम हो गए। जो लोग पैदल हो गए थे उन्होने नए घोडे मोल ले लिए। सक्षेप में, राजा ने उचित सेवाए सम्पन्न की।

हुमायूं का आगरा की ओर प्रस्थान

दूसरे दिन राजा को विदा कर दिया गया और वे स्वय कुशलतापूर्वक मध्याह्नोतर की नमाज के समय यमुना तट पर पहुँचे। एक स्थान पर घाट मिल गया। सेना वालो ने नदी पार की। कुछ दिन उपरान्त व कडा पहुँचे। उस स्थान पर दाना तथा चारा बडी मात्रा में था। इस कारण कि यह स्थान अपने ही राज्य मे था, सेना वाले आराम करके कालपी पहुँचे और कालपी से आगरा की ओर प्रस्थान किया।

शेर खा के अग्रसर होने के समाचार

आगरा पहुँचने के पूर्व समाचार प्राप्त हुए कि शेर खा चौसा की ओर से आ रहा है। लोग अत्यधिक चिन्ता मे पड गए।

कुछ लोगो का इस उथल-पुथल में कोई भी नाम व निशान न मिला। उनमें आएशा

१ बाबा बेग जलायर।

२ गुलबदन बेगम ने इस घटना का उल्लेख बडे ही सक्षिप्त रूप में किया है। सविस्तार विवरण के लिए देखिये **अकबर नामा एव तजकिरतुल वाकेआत।**

३ इलाहाबाद के समीप।

४ राजा बीरभानु।

९ मास तक वे गोर की विलायत[१] मे रहे और गोर का नाम जन्नताबाद[२] रख दिया। गोर में ही थे कि समाचार प्राप्त हुए कि अमीर लोग भागकर मीर्जा हिन्दाल से मिल गए हैं[३]।

हिन्दाल का विद्रोह

खुसरो बेग[४], जाहिद बेग[५] तथा सैयिद अमीर[६] ने मीर्जा की सेवा मे उपस्थित होकर नि दन किया कि, "पादशाह दूर चले गए हैं। मीर्जाओं में मुहम्मद सुल्तान मीर्जा तथा उसके पुत्र उल मीर्जा एव शाह मीर्जा ने पुन विद्रोह कर दिया है[७]। वे हर समय एक ही स्थान पर पायें ज हैं। मशीखत पनाही बन्दिगी[८] शेख बहलोल इस समय जीबा[९], किजीम[१०] एव अस्त्र शस्त्र छिपाक गाड़ियों मे लदवा कर शेर खा तथा मीर्जाओं[११] के पास भेज रहे हैं। मीर्जा हिन्दाल ने विश्वास न किय अन्त में इस विषय में पूँछ तांछ के लिए उन्होंने मीर्जा नूरुद्दीन मुहम्मद को भेजा। जीबा एव किजी पाये गए। बन्दिगी शेख बहलोल को हत्या करा दी गई। जब पादशाह को यह समाचार प्रा हुए तो वे आगरा की ओर रवाना हुए और गगा के उस तट की ओर[१२] किनारे किनारे यात्रा क लगे।

हुमायूं एव शेर शाह का युद्ध

जब वे मुगेर के समक्ष पहुँचे तो अमीरों ने निवेदन किया कि, "आप बहुत बडे बादश हैं। आप जिस मार्ग से आये थे उसी मार्ग से प्रस्थान करें ताकि शेर खा यह न कह सके कि अ जिस मार्ग से आये थे उसे छोड़कर दूसरे मार्ग से चले गए[१३]।" वे पुन मुगेर की ओर पलटे अं (४१) अधिकाँश लोग अपने परिवार को नौका पर बैठा कर नदी के चढाव की ओर यात्रा क लगे। यहाँ तक कि वे हाजीपुर पटना पहुँच गए।

प्रस्थान[१४] के समय वे कासिम सुल्तान[१५] को उस स्थान पर नियुक्त कर गए थे। इ

१ प्रदेश।
२ स्वर्ग का नगर, हुमायू ने इस नगर में जिस प्रकार भोग विलास में समय नष्ट कर दिया उसका सविस्तार उल्ल जौहर ने किया है। शेर खा ने इस स्थिति से लाभ उठा कर अपनी शक्ति दृढ बना ली।
३ हिन्दाल की उस समय (९४५ हि०/१५३८ ई०) अवस्था केवल १९ वर्ष की थी।
४ खुसरो बेग कुकुल्ताश।
५ हुमायू की पत्नी बेगा बेगम की बहिन का पति। मीर्जा कामरान ने १५४७ ई० में गजनी में उसकी हत्या कर द
६ सैयद नूरुद्दीन मीर्जा, रुकैया सुल्तान बेगम का पिता एव बाबर की एक पुत्री का पति।
७ हिन्दाल उन्हे पूर्व में पराजित कर चुका था।
८ शेखों (सन्तों) की शरण, आदरणीय।
९ जिरह, कवच से तात्पर्य है।
१० घोड़े के ऊपर डालने वाली लोहे की झूल।
११ विद्रोही मीर्जाओं।
१२ बाईं ओर।
१३ मुईद बेग दूलदाई बरलास ने यह मूर्खतापूर्ण प्रस्ताव रक्खा और हुमायू को चौसा में फसा दिया। वह बडा निष्ठुर एव सैन्य-सचालन के ज्ञान से शून्य था।
१४ बंगाल की ओर।
१५ कासिम हुसेन सुल्तान ऊजबेक।

बीच में समाचार प्राप्त हुए कि शेर खा पहुँच गया। हर बार जब युद्ध होता तो हजरत (जन्नत आशियानी) के आदमी विजयी होते।

इसी बीच में बाबा बेग[1] जौनपुर से आया तथा मीरक बेग चनादह से पहुँचा। मुगुल बेग अवध से आया। इन तीनों अमीरो के पहुँच जाने से अनाज महगा हो गया।

हुमायूं की पराजय

अन्त में ईश्वर की इच्छा यही थी। वे असावधान थे कि शेर खा ने पहुँच कर आक्रमण कर दिया। सेना पराजित हुई और अधिकाश लोग एव परिवार वाले बन्दी बना लिए गए[2]। हजरत जन्नत आशियानी के पवित्र हाथों में घाव लगे। वे तीन दिन तक चनादह में रहे। तदुपरान्त अरैल[3] पहुँचे।

अरैल के राजा का सौजन्य

नदी तट पर पहुँच कर पार करने की चिन्ता में थे कि बिना नौका के किस प्रकार पार जाया जा सकेगा। इसी बीच में वहाँ का राजा[4] ५-६ अश्वारोहियों सहित पहुँचा और उसने उन्हे नदी के पार उतार दिया। ४-५ दिन तक लोग बिना खाये पिये रहे। अन्त में राजा ने बाजार लगवाया और सेना वालो ने कुछ दिन आराम से व्यतीत किए। घोडे भी ताजा दम हो गए। जो लोग पैदल हो गए थे उन्होंने नए घोड़े मोल ले लिए। सक्षेप में, राजा ने उचित सेवाए सम्पन्न की।

हुमायूं का आगरा की ओर प्रस्थान

दूसरे दिन राजा को विदा कर दिया गया और वे स्वय कुशलतापूर्वक मध्याह्नोतर की नमाज के समय यमुना तट पर पहुँचे। एक स्थान पर घाट मिल गया। सेना वालो ने नदी पार की। कुछ दिन उपरान्त वे कडा पहुँचे। उस स्थान पर खाना तथा चारा बडी मात्रा में था। इस कारण कि यह स्थान अपने ही राज्य में था, सेना वाले आराम करते कालपी पहुँचे और कालपी से आगरा की ओर प्रस्थान किया।

शेर खा के अग्रसर होने के समाचार

आगरा पहुँचने के पूर्व समाचार प्राप्त हुए कि शेर खा चौसा की ओर से आ रहा है। लोग अत्यधिक चिन्ता में पड गए।

कुछ लोगो का इस उथल-पुथल में कोई भी नाम व निशान न मिला। उनमें आएशा

१ बाबा बेग जलायर।
२ गुलबदन बेगम ने इस घटना का उल्लेख बड़े ही सक्षिप्त रूप में किया है। सविस्तार विवरण के लिए देखिये **अकबर नामा एवं तज़किरतुल वाकेआत**।
३ इलाहाबाद के समीप।
४ राजा वीरभानु।

९ मास तक वे गोर की विलायत[1] में रहे और गोर का नाम जन्नताबाद[2] रख दिया। वे गोर में ही थे कि समाचार प्राप्त हुए कि अमीर लोग भाग कर मीर्ज़ा हिन्दाल से मिल गए हैं[3]।

हिन्दाल का विद्रोह

खुसरो बेग[4], जाहिद बेग[5] तथा सैयिद अमीर[6] ने मीर्ज़ा की सेवा में उपस्थित होकर निवेदन किया कि, "पादशाह दूर चले गए हैं। मीर्ज़ाओं में मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा तथा उसके पुत्र उलुग मीर्ज़ा एवं शाह मीर्ज़ा ने पुनः विद्रोह कर दिया है[7]। वे हर समय एक ही स्थान पर पाये जाते हैं। मशीख़त पनाही बन्दिगी[8] शेख बहलोल इस समय जीबा[9], किजीम[10] एवं अस्त्र शस्त्र छिपाकर गाड़ियों में लदवा कर शेर खाँ तथा मीर्ज़ाओं[11] के पास भेज रहे हैं। मीर्ज़ा हिन्दाल ने विश्वास न किया। अन्त में इस विषय में पूँछ ताँछ के लिए उन्होंने मीर्ज़ा नूरुद्दीन मुहम्मद को भेजा। जीबा एवं किजीम पाये गए। बन्दिगी शेख बहलोल की हत्या करा दी गई। जब पादशाह को यह समाचार प्राप्त हुए तो वे आगरा की ओर रवाना हुए और गंगा के उस तट की ओर[12] किनारे किनारे यात्रा करने लगे।

हुमायूँ एवं शेर शाह का युद्ध

जब वे मुंगेर के समक्ष पहुँचे तो अमीरों ने निवेदन किया कि, "आप बहुत बड़े बादशाह हैं। आप जिस मार्ग से आये थे उसी मार्ग से प्रस्थान करें ताकि शेर खाँ यह न कह सके कि आप जिस मार्ग से आये थे उसे छोड़कर दूसरे मार्ग से चले गए[13]।" वे पुनः मुंगेर की ओर पलटे और (४१) अधिकांश लोग अपने परिवार को नौका पर बैठा कर नदी के चढ़ाव की ओर यात्रा करने लगे। यहाँ तक कि वे हाजीपुर पटना पहुँच गए।

प्रस्थान[14] के समय वे कासिम सुल्तान[15] को उस स्थान पर नियुक्त कर गए थे। इसी

१ प्रदेश।
२ स्वर्ग का नगर, हुमायूँ ने इस नगर में जिस प्रकार भोग विलास में समय नष्ट कर दिया उसका सविस्तार उल्लेख जौहर ने किया है। शेर खाँ ने इस स्थिति से लाभ उठा कर अपनी शक्ति दृढ़ बना ली।
३ हिन्दाल की उस समय (९४५ हि०/१५३८ ई०) अवस्था केवल १९ वर्ष की थी।
४ खुसरो बेग कूकुल्ताश।
५ हुमायूँ की पत्नी बेगा बेगम की बहिन का पति। मीर्ज़ा कामरान ने १५४७ ई० में ग़ज़नी में उसकी हत्या करा दी।
६ सैयिद नूरुद्दीन मीर्ज़ा, सलीमा सुल्तान बेगम का पिता एवं बाबर की एक पुत्री का पति।
७ हिन्दाल उन्हें पूर्व में पराजित कर चुका था।
८ शेखों (सन्तों) की शरण, आदरणीय।
९ ज़िरह, कवच से तात्पर्य है।
१० घोड़े के ऊपर डालने वाली लोहे की झूल।
११ विद्रोही मीर्ज़ाओं।
१२ बाईं ओर।
१३ मुईद बेग दूल्दाई बरलास ने यह मूर्खतापूर्ण प्रस्ताव रक्खा और हुमायूँ को चौसा में फँसा दिया। वह बड़ा ही निष्ठुर एवं सैन्य-संचालन के ज्ञान से शून्य था।
१४ बंगाल की ओर।
१५ कासिम हुसेन सुल्तान उज़्बेक।

बीच मे समाचार प्राप्त हुए कि शेरखा पहुँच गया। हर बार जब युद्ध होता तो हज़रत (जन्नत आशियानी) के आदमी विजयी होते।

इसी बीच में बाबा बेग[1] जौनपुर से आया तथा मीरक बेग चनादह से पहुँचा। मुग़ल बेग अवध से आया। इन तीनो अमीरो के पहुँच जाने से अनाज महगा हो गया।

हुमायूं की पराजय

अन्त मे ईश्वर की इच्छा यही थी। वे असावधान थे कि शेर खा ने पहुँच कर आक्रमण कर दिया। सेना पराजित हुई और अधिकाश लोग एव परिवार वाले बन्दी बना लिए गए[2]। हज़रत जन्नत आशियानी के पवित्र हाथों में घाव लगे। वे तीन दिन तक चनादह में रहे। तदुपरान्त अरैल[3] पहुँचे।

अरैल के राजा का सौजन्य

नदी तट पर पहुँच कर पार करने की चिन्ता में थे कि बिना नौका के किस प्रकार पार जाया जा सकेगा। इसी बीच में वहाँ का राजा[4] ५-६ अश्वारोहियो सहित पहुँचा और उसने उन्हे नदी के पार उतार दिया। ४-५ दिन तक लोग बिना खाये पिये रहे। अन्त मे राजा ने बाज़ार लगवाया और सेना वालो ने कुछ दिन आराम मे व्यतीत किए। घोडे भी ताज़ा दम हो गए। जो लोग पैदल हो गए थे उन्होने नए घोडे मोल ले लिए। सक्षेप में, राजा ने उचित सेवाए सम्पन्न की।

हुमायूं का आगरा की ओर प्रस्थान

दूसरे दिन राजा को विदा कर दिया गया और वे स्वय कुशलतापूर्वक मध्याह्नोतर की नमाज़ के समय यमुना तट पर पहुँचे। एक स्थान पर घाट मिल गया। सेना वालो ने नदी पार की। कुछ दिन उपरान्त वे कडा पहुँचे। उस स्थान पर दाना तथा चारा बड़ी मात्रा में था। इस कारण कि यह स्थान अपने ही राज्य मे था, सेना वाले आराम करके कालपी पहुँचे और कालपी से आगरा की ओर प्रस्थान किया।

शेर खा के अग्रसर होने के समाचार

आगरा पहुँचने के पूर्व समाचार प्राप्त हुए कि शेर खा चौसा की ओर से आ रहा है। लोग अत्यधिक चिन्ता मे पड गए।

कुछ लोगो का इस उथल-पुथल में कोई भी नाम व निशान न मिला। उनमें आएशा

१ बाबा बेग जलायर।

२ गुलबदन बेगम ने इस घटना का उल्लेख बड़े ही सक्षिप्त रूप में किया है। सविस्तार विवरण के लिए देखिये **अकबर नामा एव तज़किरतुल वाकेआत**।

३ इलाहाबाद के समीप।

४ राजा बीरभानु।

(४२) सुल्तान बेगम, सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा[1] की पुत्री, मेरे बाबा बादशाह की खलीफा[2] बचका बेगा, जान कोका, अकीका बेगम[3], चाँद बीबी जो कि सात मास से गर्भवती थी तथा शाद बीबी यह तीनों पादशाह के अन्त पुर से सम्बन्धित थी[4]। इन लोगों की वहाँ भी कोई सूचना न मिली कि वे नदी में डूब गईं या उनका क्या हुआ। यद्यपि बडी खोज की गई किन्तु कुछ भी पता न चल सका कि क्या हुआ।

वे ४० दिन तक रुग्ण रहे, तदुपरान्त स्वस्थ हो गये।

मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा इत्यादि का कन्नौज पहुँचना

इसी बीच मे जब खुसरो बेग, दीवाना बेग, जाहिद बेग तथा सैयिद अमीर हज़रत पादशाह के पास पहुँचे तो मीर्ज़ाओं, मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा एव उसके पुत्रो के विषय में समाचार प्राप्त हुए कि वे कन्नौज पहुँच गए हैं।

मीर्ज़ा हिन्दाल, शेख बहलोल की हत्या कराने के उपरान्त देहली पहुँचे। मीर फक्र अली एव निष्ठावानों को अपने साथ इस आशय से ले गए कि मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा तथा उसके पुत्रों को पराजित करे। *मीर्ज़ा लोग उस ओर से भागकर कन्नौज की ओर पहुँचे।*

हिन्दाल द्वारा देहली का अवरोध

मीर फक्र अली, मीर्ज़ा यादगार नासिर को देहली लाया। क्योंकि मीर्ज़ा हिन्दाल तथा मीर्ज़ा यादगार नासिर में मेल तथा निष्ठा न थी अत मीर फक्र अली के इस प्रकार व्यवहार के कारण मीर्ज़ा हिन्दाल ने क्रोध मे देहली को घेर लिया[5]।

मीर्ज़ा कामरान का देहली पहुँचना

मीर्ज़ा कामरान ने जब यह समाचार सुने तो उन्हे भी पादशाह होने की इच्छा पैदा हो गई। वे १२ हजार सशस्त्र अश्वारोहियों को लेकर देहली की ओर रवाना हुए। जब वे देहली पहुँचे तो मीर फक्र अली एव मीर्ज़ा यादगार नासिर ने देहली के द्वारों को बन्द करा लिया। २-३ दिन उपरान्त मीर फक्र अली मीर्ज़ा कामरान से प्रतिज्ञा तथा वचन लेकर उनकी सेवा मे उपस्थित हुआ। उसने निवेदन किया कि, 'हजरत पादशाह तथा शेर खाँ के समाचार इस प्रकार सुने जा रहे हैं[6]। मीर्ज़ा यादगार नासिर अपने हित की चिन्ता के कारण आपकी सेवा में उपस्थित नहीं हो रहा है। राज्य के हित मे यही उचित है कि ऐसे सकट के समय आप मीर्ज़ा हिन्दाल को लेकर आगरा की ओर रवाना हो और देहली मे ठहरने का विचार न करें।'

१ सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा बाईकरा।
२ *अन्त पुर की सेविकायें एव अन्य माल असबाब की देख रेख करने वाली अधिकारिणी।*
३ बेगा बेगम एव हुमायूँ की पुत्री जिसकी अवस्था उस समय ८ वर्ष की रही होगी।
४ अकीका बेगम हुमायूँ की पुत्री थी अत अन्त पुर से सम्बन्धित होने का अर्थ पत्नी नहीं है। यह भी सम्भव है कि कोई नाम छूट गया हो।
५ मीर्ज़ा हिन्दाल की बहिन गुलबदन बेगम ने उसके विद्रोह की बड़ी विचित्र व्याख्या की है।
६ चौसा की पराजय की सूचना दी।

मीर्ज़ा कामरान का आगरा पहुँचना

मीर्ज़ा कामरान को मीर फ़क़ अली की बात पसन्द आ गई और उन्होंने उसे सरोपा[1] देकर (४३) विदा कर दिया और स्वयं मीर्ज़ा हिन्दाल को लेकर आगरा पहुँचे। फिरदौस मकानी[2] के (मजार के) दर्शन करके अपनी माता तथा बहिनों से भेंट की और गुल अफ़शा नामक उद्यान में पड़ाव किया।

इसी बीच में नूर बेग भी पहुँच गया और वह समाचार लाया कि हज़रत पादशाह आ रहे हैं। क्योंकि मीर्ज़ा हिन्दाल, शेख बहलोल की हत्या करा देने के कारण लज्जित थे अतः वे अलवर[3] की ओर चले गए।

मीर्ज़ा कामरान हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुए। कुछ दिन उपरान्त गुल अफ़शाँ नामक उद्यान से आकर वे हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित होते थे। जिस दिन हज़रत पहुँचे, उसी रात में हमने उपस्थित होकर अभिवादन किया। उन्होंने इस तुच्छ की ओर देख कर कहा कि, "मैंने सर्व प्रथम तुझे नहीं पहिचाना कारण कि जब मैं विजयी सेना को लेकर बंगाले के आक्रमण हेतु रवाना हुआ तो तू ताकी[4] पहिने हुए थी। इस समय लचक[5] कसावा[6] ओढ़े है, तुझे नहीं पहिचाना। गुलबदन! मैं तुझे बहुत याद करता रहता था और कभी कभी पछताते हुए कहता था कि काश तुझे अपने साथ लाता। जिस समय हलचल मची तो मैंने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और कहा कि 'ईश्वर को धन्य है कि मैं गुलबदन को न लाया। यद्यपि अकीक़ा छोटी थी किन्तु मुझे बड़ा ही शोक है कि मैं उसे क्यों सेना के साथ ले गया।'

हुमायूं का मीर्ज़ा हिन्दाल को बुलवाना

कुछ दिन उपरान्त हज़रत पादशाह मेरी माता के दर्शन को पहुँचे। उनके साथ कुरान शरीफ था। आदेश दिया कि क्षण भर के लिए लोग अलग हो जायें। लोग हट गए। एकान्त हो गया। अन्त में हज़रत ने आज़म[7], इस तुच्छ, अफ़गानी आगाचा, गुलनार आगाचा, नार गुल आगाचा[8] एवं अनगा[9] से कहा, हिन्दाल मेरी शक्ति एवं मेरा सहारा[10] है। जिस प्रकार मुझे अपने नेत्रों का प्रकाश

१ सिर से पाँव तक के वस्त्र; खिलअत।
२ बाबर की लाश काबुल १५३९ ई० में भेजी गई।
३ हिन्दाल की जागीर अलवर में थी।
४ टोपी।
५ चौकोर बड़ा रूमाल अथवा ओढ़नी जिसके कोने इस प्रकार तह करके ओढ़ लिये जाते हैं कि वे ठुड्डी के नीचे बाँध लिये जाते हैं।
६ कसावा एवं लचक का अर्थ एक ही है। सम्भवतः उसके विवाहित हो जाने की ओर संकेत है।
७ दिलदार बेगम।
८ सम्भवतः उन दो सरकेशियन (Circassian) कनीज़ों में से एक जिसमें दूसरी गुलनार थी। उन्हें बाबर के पास शाह तहमास्प ने १५२६ ई० में भेजा था।
९ मेरी दाई।
१० "कौल व कनारे मन अस्त"।

की आवश्यकता है उसी प्रकार भुजाओ को शक्ति की भी। जो कुछ हुआ वह हुआ, मै शेख वहलोल के मामले के कारण मुहम्मद हिन्दाल से क्या कहूँगा? जो कुछ भाग्य मे लिखा था, वह हुआ। इस समय मेरे हृदय में हिन्दाल की ओर से कोई मलिनता नही और यदि विश्वास न हो' यह कहकर उन्होने कुरान शरीफ उठाया ही था कि मेरी माता, दिल्दार बेगम तथा इस तुच्छ ने उनके हाथ से कुरान ले लिया और सबने कहा कि "जो आप कह ठीक है। आप ऐसी बात क्या कह रहे है?"

(४४) उन्होने फिर कहा कि, 'गुलबदन, क्या ही अच्छी हो कि तू अपने भाई मुहम्मद हिन्दाल मीर्जा को जाकर ले आये।' मेरी माता ने कहा कि, 'इस पुत्री की अवस्था बडी कम है। इसने कभी यात्रा नही की है[1]। यदि आदेश हो तो मैं चली जाऊँ।" हज़रत जन्नत आशियानी ने कहा कि, "मैं आपको इस प्रकार के कष्ट दूँ तो यह बात स्पष्ट है कि पुत्रो की चिन्ता माता-पिता के लिए परमावश्यक है। यदि आप तशरीफ ले जाये तो हमारे ऊपर बडी कृपा होगी।'

अन्त मे अमीर अबुल बका को मेरी माता के साथ मीर्जा हिन्दाल को बुलवाने के लिए भेजा। मुहम्मद हिन्दाल मीर्जा यह समाचार सुनते ही पधारे और अपनी माता से आदरपूर्वक भेंट करके सम्मानित हुये। आदरणीय माता के साथ मीर्जा हिन्दाल अलवर से आये। हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुए। शेख बहलोल के किस्से के विषय मे उन्होने कहा कि, "वह जीवा, किज़ीम, तथा अस्त्र शस्त्र शेर खा को भेजता था। जब इसका प्रमाण मिल गया तो मैंने शेख की हत्या करा दी।"

हुमायूं का सक्के के प्रति व्यवहार

कुछ दिन उपरान्त समाचार प्राप्त हुए कि शेर खा लखनऊ के समीप पहुँच गया।

इसी समय मे पादशाह के साथ एक सक्का दास था। इस कारण कि पादशाह चौसा नदी मे घोडे से पृथक् हो गए थे और सक्का दास ने पहुँच कर उनकी सहायता करके भवर से कुशलता-पूर्वक निकाल दिया था, हज़रत ने अन्त मे उसे सक्के को सिंहासनारूढ किया। उस दास का नाम प्रामाणिक रूप से ज्ञात नही हो सका। कुछ लोग निज़ाम कहते है और कुछ सुम्बुल। सक्षेप मे उस सक्का दास को सिंहासनारूढ किया गया और आदेश दिया गया कि समस्त अमीर सक्का दास के प्रति कोर्निश करें। दास जिसका जो कुछ चाहे प्रदान कर दे और जो मसब चाहे दे।" दो दिन[2] तक उस दास को पादशाह रहने दिया। मीर्जा हिन्दाल उस दरबार में उपस्थित न थे। विदा होकर अस्त्र शस्त्र की व्यवस्था हेतु अलवर चले गए थे। मीर्ज़ा कामरान भी उस दरबार मे उपस्थित न हुए। व रुग्ण थे। हज़रत जन्नत आशियानी मे कहला भेजा, दास के साथ अन्य प्रकार की बख्शिशें एव रियायत करनी चाहिए थी, सिंहासनारूढ करना क्या आवश्यक था। इस समय जब (४५) कि शेर खा निकट आया है, यह कैसा कार्य है जो हज़रत कर रहे है?'

मीर्ज़ा कामरान की हुमायूं के प्रति शकायें

उन्ही दिनो में मीर्ज़ा कामरान का रोग अत्यधिक बढ गया। वे इतने कमज़ोर एव

१ "अकेले यात्रा नहीं की है" से तात्पर्य है।
२ 'दो रोज़ के स्थान पर 'दो साअत (घड़ी)' होना चाहिये।

शक्तिहीन हो गए थे कि उनका चेहरा पहिचाना न जाता था और उनके जीवन की आशा न रही थी। ईश्वर की कृपा से वे स्वस्थ होने लगे। मीर्जा कामरान को यह शंका हो गई कि हजरत पादशाह के परामर्श से[१] माताओं ने उन्हें विष दे दिया है। हजरत पादशाह ने यह बात सुनी। तत्काल[२] वे मीर्जा कामरान को देखने पहुँचे और शपथ ली कि, "यह बात मेरे हृदय में कदापि नहीं आई थी और मैंने किसी से कुछ नहीं कहा है।" शपथ के बावजूद मीर्जा कामरान का दिल साफ न हुआ। मीर्जा का रोग पुनः नित्य प्रति बढ़ने लगा। यहाँ तक कि उनमें बात करने की भी शक्ति न रही।

यहाँ तक कि समाचार प्राप्त हुए कि शेर खाँ लखनऊ के पार हो गया है। हजरत ने वहाँ से प्रस्थान किया और कन्नौज की ओर रवाना हुए। मीर्जा कामरान को अपने स्थान पर आगरा में छोड़ गए। कुछ दिन उपरान्त मीर्जा कामरान ने सुना कि हजरत पादशाह पुल बनवा कर गंगा नदी के पार हुए। मीर्जा कामरान ने यह सुना (और वे स्वयं) आगरा से लाहौर की ओर चल दिए।

मीर्जा कामरान का गुलबदन बेगम को अपने साथ ले जाना

हम लोग (शान्ति से) बैठे थे कि मीर्जा कामरान ने बादशाही फरमान भेजा[३] कि "तुम्हारे[४] लिए आदेश हुआ है कि मेरे साथ लाहौर चलो।' मेरे लिए मीर्जा कामरान ने हजरत पादशाह से कहा होगा कि, "मेरा रोग अत्यधिक बढ़ गया है। मैं बड़ी दीन अवस्था को प्राप्त हो गया हूँ और मेरी देख भाल करने वाला कोई नहीं है। यदि गुलबदन बेगम को आदेश हो और वह मेरे साथ लाहौर चले तो यह बड़ी कृपा होगी।" हजरत पादशाह ने उसके मुँह पर कह दिया होगा कि, 'चली जाये।'

जब पादशाह स्वयं लखनऊ की ओर २-३ मंजिल पर पहुँचे तो मीर्जा ने पादशाही फरमान दिखलाया और आग्रह किया कि, "तुम मेरे साथ चलो[५]।' मेरी माता ने इस बीच में कहा कि, "इस ने कभी भी पृथक् यात्रा नहीं की है। उन्होंने कहा "यदि पृथक् यात्रा नहीं की है तो आप भी साथ चलें।" उन्होंने पाँच सौ सिपाही, विश्वस्त रक्षक एवं अपने अतका तथा कोका को भेजा और (४६) यह कहलाया, यदि साथ नहीं चलती तो एक मंजिल तक आ जाय।' जब हम उस मंजिल पर पहुँच गए तो वे शपथ लेकर कहने लगे कि, 'मैं तुझे न छोड़ूँगा।" अन्त में अत्यधिक विलाप तथा रोने पीटने के उपरान्त मुझे अपनी माताओं, बहिनों तथा पिता के आदमियों एवं भाइयों से, जिनके साथ बाल्यावस्था से मैं इतनी बड़ी हुई थी, पृथक् करके जबरदस्ती अपने साथ ले गये[६]।

१ "मसलेहते हजरत पादशाह" का अर्थ "हजरत पादशाह के परामर्श से" अथवा "हजरत पादशाह की शुभ चिन्ता के कारण," दोनों ही हो सकता है।
२ "यक मर्तबा" का अर्थ 'तत्काल' एवं "एक बार" दोनों ही हो सकता है।
३ सम्भवतः अपनी प्रथम मंजिल से।
४ गुलबदन बेगम के लिये।
५ यह वार्तालाप प्रथम मंजिल से फरमान भेजने के पूर्व का है।
६ गुलबदन बेगम का पति खिज्र ख्वाजा खाँ, आक़ सुल्तान (यासीन दौलत) का भाई था। यासीन दौलत कामरान का नामाना भी था अतः गुलबदन बेगम को कामरान ने इस आशय से अपने साथ लिया होगा कि खिज्र ख्वाजा तथा उसकी सेना, हुमायूँ से पृथक् होकर उससे मिल जाय।

जब मैंने देखा कि पादशाही फरमान भी इसी विषय में है, मैं विवश हो गई। मैंने हजरत को प्रार्थना पत्र भेजा कि, "हजरत से मुझे यह आशा न थी कि इस तुच्छ को, अपनी सेवा से पृथक् करेंगे और मीर्जा कामरान को सौंप देंगे।" अन्त में तुच्छ के प्रार्थना-पत्र के उत्तर में हजरत पादशाह ने पत्र लिखकर भेजा कि, "मेरी इच्छा स्वयं यह न थी कि तू मुझसे पृथक् हो किन्तु जब मीर्जा ने अत्यधिक आग्रह किया एवं विनयपूर्वक प्रार्थना की तो यह परमावश्यक हो गया कि तुझे मीर्जा को सौंप दूँ कारण कि इस समय हम भी युद्ध में संलग्न हैं। यदि ईश्वर ने चाहा तो हम युद्ध के समाप्त होते ही सर्व प्रथम तुझे बुलवा लूँगा।"

अमीरों का अपने परिवार को लाहौर भेजना

जब मीर्जा लाहौर की ओर रवाना हुए तो अधिकांश अमीरों, व्यापारियों इत्यादि ने, जिनमें कुछ सामर्थ्य था, अपने परिवार को मीर्जा कामरान के साथ लाहौर भेज दिया।

हुमायूं की पराजय

लाहौर पहुँचने पर समाचार प्राप्त हुए कि गंगा तट पर युद्ध हुआ और हजरत पादशाह पराजित हुए[1]। ईश्वर की कृपा से ऐसा हुआ कि हजरत पादशाह अपने भाइयों तथा सबंधियों सहित उस भवंर से कुशलतापूर्वक निकल आये[2]।

स्त्रियों के विषय में हुमायूं की चिन्ता

अन्य सम्बन्धी जो आगरा में थे, वे अलवर के मार्ग से लाहौर की ओर रवाना हो गए[3]। इस बीच में हजरत ने मीर्जा हिन्दाल से कहा कि, पहिली हलचल में अकीका बीबी गायब हो गयी। मैं बड़ा पछताया कि क्या मैंने स्वयं उसकी हत्या न कर दी। इस समय भी स्त्रियों को इस प्रकार (४७) अपने साथ लेकर किसी स्थान पर पहुँचना कठिन है।' अन्त में मीर्जा हिन्दाल ने निवेदन किया कि, "माताओं तथा बहिनों की हत्या करने के विषय में हजरत को ज्ञात है[4]। जब तक मेरे प्राण हैं तब तक उनकी सेवा का प्रयत्न करता रहूँगा। ईश्वर से प्रार्थना है कि अपनी माता तथा बहिनों के चरणों में यह तुच्छ प्राण को न्यौछावर कर दे।"

अन्त में हजरत पादशाह, मीर्जा अस्करी, यादगार नासिर मीर्जा एवं उन अमीरों को साथ लेकर, जो रणक्षेत्र से सुरक्षित निकल आये थे, फतहपुर[5] की ओर रवाना हुए।

हिन्दाल का स्त्रियों को लेकर लाहौर पहुँचना

मीर्जा हिन्दाल अपनी माता दिलदार बेगम, बहिन गुल चेहरा बेगम, अफगानी आगाचा, गुलनार आगाचा, नारगुल आगाचा एवं अमीरों के परिवार इत्यादि को अपने साथ ले जा रहे थे कि अत्यधिक गंवारों ने उनपर आक्रमण कर दिया। उनके सैनिकों में से कुछ लोगों ने घोड़े

१ १० मुहर्रम ९४७ हि० (१७ मई १५४० ई०)।
२ इस बार हुमायूं को शम्सुद्दीन गजनवी ने डूबने से बचाया था।
३ वे हिन्दाल के साथ रवाना हुये।
४ 'हत्या करना असम्भव है'।
५ फतहपुर सीकरी।

बढ़ाकर गँवारों को पराजित कर दिया। एक बाण उनके घोड़े को लगा। घोर युद्ध हुआ। शक्तिहीनों[1] को गँवारों के पंजे से मुक्ति दिलाकर[2] अपनी माता, बहिनों तथा बहुत से अमीरों इत्यादि के परिवार को लेकर वे अल्वर पहुँच गए।

खेमे डेरे इत्यादि तथा अन्य सामान जो आवश्यक थे लेकर लाहौर की ओर रवाना हुए। मीर्ज़ा तथा अमीर लोग भी अपने काम की चीज़ें लेकर थोड़े दिनों में लाहौर पहुँच गए।

हुमायूँ का लाहौर पहुँचना

हज़रत बाग़ ख़्वाजा गाज़ी में बीबी हाजताज[3] के निकट उतरे। नित्य प्रति शेर खाँ के समाचार मिलते रहते थे। वे तीन मास तक लाहौर में रहे। नित्य प्रति समाचार प्राप्त होते रहते थे कि शेर खाँ दो तीन कुरोह[4] आगे बढ़ता आ रहा है। यहाँ तक कि समाचार प्राप्त हुए कि वह सरहिन्द के समीप पहुँच गया।

शेर शाह का हुमायूँ को उत्तर

हज़रत का एक अमीर मुज़फ़्फ़र बेग नामक था। वह तुर्कमान था। उसे क़ाज़ी अब्दुल्लाह के साथ उन्होंने शेर खाँ के पास भेजा कि यह क्या न्याय है? समस्त हिन्दुस्तान तेरे लिए छोड़ दिया। एक लाहौर रह गया है। हमारे और तुम्हारे बीच में सरहिन्द सीमा बन जाय। उस (४८) अन्यायकारी एवं ईश्वर का भय न करने वाले ने यह स्वीकार न किया और कहा कि,

१ स्त्रियों को।

२ इस युद्ध के विषय में **अकबर नामा** का अनुवाद देखिये।

३ बीबी हाज, बीबी ताज, बीबी नूर, बीबी हूर, बीबी गौहर, तथा बीबी शाहबाज़ के विषय में कहा जाता है कि वे हज़रत अली (हज़रत मुहम्मद के जामाता) के भाई हज़रत अक़ील की पुत्रियाँ थीं। वे अपनी पवित्रता एवं धर्मनिष्ठता के लिये प्रसिद्ध थीं। वे प्राय रोज़े रक्खा करती थीं और कभी एक मास में और कभी १५ दिन में भोजन किया करती थीं। जब हज़रत इमाम हुसेन कर्बला में थे तो ये लोग शाम (सीरिया) में थीं। वे वहाँ से कर्बला पहुँचीं किन्तु इसी बीच में हज़रत इमाम शहीद हो चुके थे (१० मुहर्रम ६१ हि० / १० अक्तूबर ६८० ई०)। वे बड़ी चिन्तित थीं कि कहाँ जायँ। अन्त में पक्षियों के सगुन से लाहौर पहुँचीं। **तुहफ़तुल वासेलीन** के अनुसार वे पक्षियों के समान उड़ लेती थीं। उड़ कर वे लाहौर पहुँचीं और नगर के बाहर जिस स्थान पर उनकी मज़ार है वहाँ ठहर गईं। वे कुछ समय तक वहाँ निवास करती रहीं और बहुत से लोग उनके कारण मुसलमान हो गये। लाहौर के राना ने यह देख कर अपने पुत्र को उनके पास भेज कर कहलवाया कि मेरे राज्य से निकल जायँ। जब उसका पुत्र उनकी सेवा में पहुँचा तो वह भी मुसलमान हो गया। लाहौर का राना यह सुन कर सेना सहित उनसे युद्ध हेतु रवाना हुआ। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि, "भूमि फट जाय और वे उसमें समा जायँ। भूमि फट गई और वे उसमें समा गईं। लाहौर के राजा के सैनिकों ने उनके अनुयायियों की हत्या कर दी। राना अपने पुत्र को वहाँ से ले आया किन्तु वह पुनः वहीं पहुँच गया और आजीवन उनके मज़ारों की मुजाविरी करता रहा। अब भी वहाँ के मुजाविर अपने आप को लाहौर के राजा की सन्तान एवं राना के पुत्र का नाम शेख़ जमाल बताते हैं। ग़ुलाम सरवर ने कई ग्रंथों से उनके चमत्कार उद्धृत किये हैं किन्तु इस कहानी में कोई ऐतिहासिक तथ्य नहीं। केवल मुसलमानों के आध्यात्मिक पीरों फ़क़ीरों के प्रति अंधविश्वास का प्रमाण है। [ख़्वाजा ग़ुलाम सरवर **ख़ज़ीनतुल असफ़िया** भाग २ (नवल किशोर प्रेस कानपुर १८९४ ई०) पृ० ४०७-४१०]।

४ कोस।

"काबुल तुम्हारे लिए छोड़ दिया। वहाँ चले जाओ।"

हुमायूं का लाहौर से प्रस्थान

मुजफ्फर बेग ने तत्काल प्रस्थान कर दिया और अपने आगे कुछ आदमियों को भेजा कि, "प्रस्थान करना चाहिये।" जैसे ही समाचार प्राप्त हुए हजरत ने प्रस्थान कर दिया। मानो कयामत का दिन था। स्थान को उसी प्रकार सजा सजाया तथा असबाब छोड़ दिया। नक़द धन जितना ले जा सकते थे वह ले लिया। ईश्वर को धन्य है कि लाहौर नदी[1] पार कर ली गई। सब लोग घाट के उस पार हो गए। कुछ दिन तक नदी के किनारे पड़ाव हुआ। इसी बीच में शेर खाँ का दूत पहुँचा। यह निश्चय हुआ कि उससे प्रातःकाल भेंट की जाय। मीर्ज़ा कामरान ने निवेदन किया कि "कल दरबार होगा और शेर खाँ का दूत आयेगा। यदि मुझे हजरत अपने जूलचे[2] के कोने पर बैठने का आदेश दे दें तो मुझमें एवं मेरे अन्य भाइयों में जो अन्तर है, वह स्पष्ट हो जायगा और यह मेरे सम्मान का विषय होगा।" हमीदा बानो बेगम का कथन है कि, "पादशाह ने मीर्ज़ा को यह रुबाई लिखकर भेजी। मैंने सुना था कि शेर खाँ के उत्तर में दूत के हाथ लिखकर भेजी थी। रुबाई इस प्रकार है —

रुबाई

'दर्पण में यदि अपना चेहरा देखा जा सकता है,
सर्वदा वह अपने से पृथक् रहता है।
अपने आपको दूसरे के रूप में देखना यह बड़े आश्चर्य की बात है,
यह चमत्कार ईश्वर का कार्य है'।[3]

शेर खाँ के दूत ने पहुँचकर अभिवादन किया।

अकबर के जन्म के विषय में हुमायूं का स्वप्न

हजरत जन्नत आशियानी बड़ी चिन्ता में थे। शोक की अवस्था में सो गए। स्वप्न में देखा कि कोई बुजुर्ग सिर से पाँव तक हरे वस्त्र धारण किए तथा हाथ में डंडा लिए हुए आये और कहा कि, "साहस से काम लो चिन्ता मत करो।" अपना डंडा हजरत के पवित्र हाथों में दे दिया और कहा कि, "ईश्वर तुझे पुत्र प्रदान करेगा। उसका नाम जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर रखना।" हजरत न

१ रावी नदी।
२ कालीन, फ़र्श।
३ दर आईना गरचे खुद नुमाई बाशद,
पैवस्ता ज़ ख़ेशतन जुदाई बाशद।
ख़ुद रा ब मिस्ले ग़ैर दीदन अजब अस्त,
ईं बुलअजबी कारे ख़ुदाई बाशद।'

در آئینه گرچه خود نمائی باشد
پیوسته ز خویشتن جدائی باشد
خود را بمثال غیر دیدن عجب است
این بوالعجبی کار خدائی باشد

पूछा कि "आपका सम्मानित नाम क्या है ?" उन्होंने कहा, "जिन्दापील अहमदे जाम" और कहा कि, "वह पुत्र मेरी सतान से होगा[1]।"

हुमायूं की पुत्री का जन्म

(४९) उन्हीं दिनों बीबी गूनूर गर्भवती थीं। सब लोग कहते थे कि पुत्र का जन्म होगा। उसी दोस्त मुन्शी के उद्यान मे बीबी गूनूर से जमादि-उल-अव्वल मास मे पुत्री का जन्म हुआ। उसका नाम बख्शी बानो बेगम[2] रक्खा गया।

हुमायूं का कश्मीर की ओर प्रस्थान करने का विचार

उन्ही दिनों मीर्ज़ा हैदर को कश्मीर पर अधिकार जमाने के लिये नियुक्त किया गया।

इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुए कि शेर खा पहुँच गया। बड़ी घबराहट का सामना करना पड़ा। उन्होंने निश्चय किया कि प्रात काल प्रस्थान किया जाय।

इसी बीच में जो भाई लाहौर में थे रोजाना परामर्श एव सलाह मशवेरा किया करते थे। कोई बात भी निश्चय न हो पाती थी। अन्ततोगत्वा समाचार प्राप्त हुए कि शेर खा आ गया। विवश होकर एक पहर दिन[3] चढ़ जाने के उपरान्त उन्होंने प्रस्थान कर दिया। हज़रत कश्मीर जाना चाहते थे। मीर्ज़ा हैदर काशगरी को भेज दिया था किन्तु अभी तक कश्मीर विजय के समाचार प्राप्त न हुए थे। लोगों ने सलाह दी कि, 'यदि हज़रत कश्मीर चले जाते है और कश्मीर पर अधिकार नही प्राप्त होता तथा शेर खा लाहौर मे रहता है तो उस समय बड़ी कठिनाई हो जायगी।

ख्वाजा कलाँ बेग का हुमायू की सेवा में उपस्थित होना

ख्वाजा कलाँ बेग[4] सियालकोट में था। हज़रत पादशाह की सेवा मे उपस्थित हुआ। मुईद बेग ख्वाजा के साथ था। उसने हज़रत के पास प्रार्थना-पत्र भेजा कि, 'ख्वाजा की इच्छा सेवा मे उपस्थित होने की है और वह आ रहा है किन्तु उसे मीर्ज़ा कामरान के कारण सकोच है। यदि हज़रत शीघ्र चले आयेंगे तो ख्वाजा की सेवा उत्तम रूप मे प्राप्त हो जायेगी।" हज़रत ने यह समाचार पाकर तत्काल अस्त्र-शस्त्र धारण किए और ससस्त्र होकर ख्वाजा की ओर रवाना हुए। ख्वाजा को साथ लेकर वापस आये।

१ हुमायू की माता माहम बेगम भी अबू नस्र शेखुल इस्लाम शेख अहमद जाम जिन्दापील (मृत्यु ५३६ हि०/११४२ ई०) की सन्तान मे थीं। इसी प्रकार अकबर की माता हमीदा बानो बेगम, बेगा (हाजी) बेगम, भी शेख अहमद जाम की सतान थी।

२ वह हुमायू एव गूनूर बेगम की पुत्री थी। उसका जन्म जमादि-उल अव्वल ९४७ हि० (अगस्त सितम्बर १५४० ई०) में हुआ। १५४३ ई० में अकबर के साथ वह भी मीर्ज़ा अस्करी के हाथों में पड़ गई। १५४५ ई० में उसे भी अकबर के साथ शीत ऋतु में कन्धार से काबुल भेज दिया गया। ९५७ हि० (१५५० ई०) में १० वर्ष की अवस्था में हुमायूं ने उसकी मगनी, मीर्ज़ा सुलेमान के पुत्र इब्राहीम से कर दी। इब्राहीम की १५६० ई० में हत्या हो गई। उसी वर्ष अकबर ने उसका विवाह मीर्ज़ा शरफुद्दीन हुसैन एहरारी से कर दिया।

३ लगभग ९ बजे प्रात।

४ बाबर का प्रसिद्ध विश्वास-पात्र।

मीर्जा कामरान का हुमायू को काबुल जाने की अनुमति न देना

हजरत ने कहा कि "मै भाइयो की सहमति से बदख्शां की ओर जा रहा हूँ। काबुल मीर्जा कामरान के अधीन रहे" किन्तु मीर्जा कामरान उनके काबुल जाने से सहमत न थे। उन्होने कहा कि "काबुल को हजरत फिरदौस मकानी अपने जीवनकाल में मेरी माता[1] को दे चुके हैं। काबुल जाना उचित नही।' हजरत ने कहा कि, काबुल के विषय में हजरत फिरदौस मकानी प्राय कहा (५०) करते थे कि 'मैं काबुल किसी को न दूँगा अपितु पुत्रो को काबुल के लिए कोई लोभ न करना चाहिए कारण कि ईश्वर ने मुझे सब पुत्र काबुल में दिए हैं और अधिकाश विजयें काबुल ही में बैठ कर हुई हैं। फिरदौस मकानी के 'वाकेआ नामे'[2] मे इस सम्बन्ध मे अधिकाश प्रमाण मिलते हैं। मैंने कृपा दृष्टि एव भाई होने के कारण मीर्जा के साथ यह सौजन्य प्रदर्शित किया। मीर्जा अब इस समय इस प्रकार की बात कर रहा है।"

हुमायूं का बक्खर की ओर प्रस्थान

जितनी ही हजरत सांत्वना एव मेल की बात करते उतना ही मीर्जा अधिक से अधिक विरोध करते गये। जब हजरत ने देखा कि मीर्जा के साथ बहुत बडी सेना है और वह किसी प्रकार नही चाहता कि मैं काबुल जाऊँ तो विवश होकर बक्खर[3] तथा मुल्तान की ओर रवाना हो गए। जब वे मुल्तान पहुँचे तो वहा एक दिन पडाव किया। अनाज बहुत कम प्राप्त हुआ। थोडा सा अनाज जो किले में मिल गया उसे लोगो को बाँटकर उन्होने प्रस्थान कर दिया तथा उस नदी पर जहाँ सात नदियो का सगम[4] है, पहुँचे। बडी चिन्ता मे थे। नौकाय प्राप्त न होती थी। बहुत बडा लश्कर साथ था। इसी बीच में समाचार प्राप्त हुआ कि ख्वास खा[5] कुछ अमीरो के साथ पीछे से आ रहा है।

बख्शू का सौजन्य

बख्शू नामक बिलोची दृढ स्थानो[6] का स्वामी था। उसके पास नौकाएँ[7] बहुत बडी संख्या मे थी। हजरत ने उसके पास आदमी भेजे और पताका, नक्कारा घोडा तथा सरापा भी भेजी और नौकायें तथा अनाज मागा। अन्ततोगत्वा बख्शू बिलोच ने लगभग एक सौ नौकाए अनाज से लदवाकर हजरत की सेवा म भेज दी। हजरत इस उचित सेवा से बडे प्रसन्न हुए और अनाज की नौकाए सेना वालो को बाँट दी और स्वय कुशलतापूर्वक नदी के पार हुए। बख्शू धन्य है कि उसने उचित सेवाए सम्पन्न की।

मीर्जा शाह हुसेन समन्दर से सन्धि की वार्ता

अन्त मे वे यात्रा करते हुए बक्खर पहुँचे। बक्खर का किला नदी के मध्य में स्थित है और

१ गुलरुख बेगम।
२ 'बाबर नामा'।
३ इसे 'भक्कर,' 'बक्खर' एव 'बक्कर' तीनों तरह से लिखा गया है।
४ 'सप्त सिंधु' का अनुवाद। सरस्वती एव दृषद्वती अथवा घग्गर नदी।
५ वह शेर शाह की ओर से नियुक्त हुआ था।
६ किलों।
७ मूल में "कसे" है जिसका अर्थ आदमी होता है किन्तु कोष्ठ में 'कश्ती" (नौका) है।

वडा मजबूत किला है। उस किले का वादशाह[1] सुल्तान महमूद[2] था, जिसने किले की प्रतिरक्षा का प्रवन्ध कर लिया था। हजरत कुशलतापूर्वक किले के वरावर उतर पडे। किले के समीप एक उद्यान[3] था जिसे मीर्जा शाह हुसेन समन्दर ने वनवाया था।

(५१) अन्त में उन्होंने मीर समन्दर को शाह हुसेन मीर्जा के पास इस सन्देश सहित भेजा कि, "हम विवश होकर तेरे राज्य में आये हैं। तेरा राज्य तुझे मुवारक रहेगा। हम उसमें हस्तक्षेप न करेंगे। तू स्वय आकर हमारी सेवा में उपस्थित हो और जो सेवा आवश्यक हो वह कर कारण कि हम गुजरात पर आक्रमण करना चाहते हैं और तेरा राज्य तेरे पास रहने देंगे।" अन्त में शाह हुसेन ने धूर्तता एव छल द्वारा पाँच मास तक हजरत को समन्दर[4] में रोके रक्खा। तदुपरान्त उसने हजरत की सेवा में आदमी भेजकर यह कहलाया कि "अपनी पुत्री के विवाह का सामान तैयार करके हजरत की सेवा में भेजता हूँ और स्वय भी उपस्थित हूँगा।"

हजरत ने उसकी बात का विश्वास कर लिया और तीन मास और प्रतीक्षा करते रहे। अनाज कभी प्राप्त हो जाता और कभी न प्राप्त होता। सेना वाले अपने घोडों तथा ऊँटों को मार मार कर खाते थे। हजरत ने फिर शेख अब्दुल गफूर[5] को मीर्जा शाह हुसेन के पास भेजा कि "कब तक प्रतीक्षा करायेगा? तेरे आगमन में क्या वात वाधक है और तेरे रुके रहने का क्या कारण है? तूने इतनी देर कर दी कि काम विगडा जा रहा है और लोग भागे जा रहे हैं।" उसने उत्तर भेजा कि, "मेरी पुत्री[6] की मगनी मीर्जा कामरान से हो चुकी है। मेरा सेवा में उपस्थित होना असम्भव है। आपकी सेवा में नही आ सकता।"

हुमायू का मीर्जा हिन्दाल के पास पहुँचना

इसी बीच में मुहम्मद हिन्दाल मीर्जा ने नदी पार कर ली थी। कुछ लोग कहते थे कि व कन्धार[7] की ओर प्रस्थान करने वाले हैं। हजरत पादशाह ने जब यह सुना तो मीर्जा के पीछे कुछ आदमी भेजे कि वे जाकर पूंछें कि, "सुना जाता है कि वह कन्धार की ओर प्रस्थान करने वाल

१ हाकिम अथवा गवर्नर से तात्पर्य है।

२ शाह हुसेन अरगून का कोका। मिर्जा अली रैहम ने हुमायू से १५५५ ई० में उसके मामले तै किये थे।

३ रुहरी (लुहरी) का चारवाग, सिन्ध नदी के वायें तट पर।

४ हिन्दुस्तान में एक स्थान जहाँ से रेचक औषधि लायी जाती है। सम्भवत समन्दर का प्रयोग सिन्ध के लिये किय जाता था।

५ हुमायू का मीर मान अथवा व्यक्तिगत सम्पत्ति की देख रेख करने वाला अधिकारी।

६ माह चोचक बेगम जिसने अपने पिता के आग्रह पर भी अपने पति मीर्जा कामरान का उस समय भी साथ छोडा जब वह अधा बना दिया गया था और मक्का-मदीना जाने लगा था। (देखिये आगे के पृष्ठों में मी मुहम्मद मासूम नामी "**तारीखे सिन्ध** का अनुवाद)।

७ मीर्जा हिन्दाल ने पात अथवा पातर में पडाव किया। पात सिन्ध नदी के पश्चिम में लगभग २० मील तथ सिहवान के उत्तर में लगभग ४० मील पर स्थित है। पात सिविस्तान सरकार में, हैदराबाद की सडक पर पूर्व दिश की ओर स्थित है और सिवाली से अधिक दूर नहीं है।

है।" जब मीर्ज़ा से पूछा गया तो उन्होंने उत्तर दिया कि, "यह बात सत्य नही है।' हज़रत पादशाह यह समाचार सुनकर मेरी माता से भेंट करने के लिये पहुँचे[१]।

हमीदा बानो बेगम से विवाह का प्रस्ताव

मीर्ज़ा के अन्तःपुर की बेगमो एवं मीर्ज़ा के समस्त आदमियों ने हज़रत पादशाह के प्रति अभिवादन किया। हज़रत ने हमीदा बानो के विषय में पूछा, "यह कौन है?" उत्तर मिला (५२) कि "मीर बाबा दोस्त की पुत्री है।' ख्वाजा मुअज्ज़म हज़रत के समक्ष खडा था। उन्होंने कहा, "यह बालक मेरा सम्बन्धी होता है।' हमीदा बानो बेगम ने भी कहा कि 'यह भी मेरी सम्बन्धी[२] है'।

उन दिनो मे हमीदा बानो बेगम प्राय मीर्ज़ा के महल में रहती थी। दूसरे दिन पुनः हज़रत जन्नत आशियानी मेरी माता दिल्दार बेगम से भेंट करने पहुँचे, और कहा कि, 'मीर बाबा दोस्त हमारा सम्बन्धी है। यह उचित होगा कि उसकी पुत्री का मुझसे विवाह कर दिया जाय।" मीर्ज़ा हिन्दाल ने बहाना किया और कहा कि, 'इस लडकी को मैं अपनी बहिन तथा पुत्री के समान समझता हूँ। हज़रत पादशाह हैं। सम्भव है गुजर न हो सके[३] और इससे आपको कष्ट हो।" हज़रत पादशाह क्रोधित होकर चले गए।

विवाह के सम्बन्ध में कठिनाइयाँ

तदुपरान्त मेरी माता ने एक पत्र लिखकर भेजा कि 'पुत्री की माता इससे भी अधिक नखरे करती है[४]। यह बडी विचित्र बात है कि जरा सी बात से रुष्ट होकर आप चले गये।' हज़रत पादशाह ने उत्तर लिखकर भेजा कि, आपकी इस बात मैं बडा प्रसन्न हुआ। वह जो भी नाज करती है उसे मैं आँखो पर स्वीकार करता हूँ। आश[५] के विषय में जो कुछ लिखा है यदि ईश्वर ने

१ अपनी सेना को भक्कर के अवरोध के लिये छोड कर, दारबीला से होते हुये जहाँ यादगार नासिर मीर्ज़ा था। इस वाक्य से यह पता चलता है कि हमीदा बानो बेगम अपनी माता के साथ थी किन्तु उसे सम्भवत मीर्ज़ा कामरान काबुल ले गया था।

२ हुमायूं की माता माहम बेगम के सम्बन्ध से जो शेख अहमद जाम जिन्दापील के वंश से थी।

३ "मबादा मआशे नेक न शवद ता बाइसे कुल्फत गरदद ।

४ मादरे दुख्तर अजीं हम पेशतर (बेश्तर) नाज मी कुनद

مادر دخت ز ین هم پیشتر (بیشتر) ناز می کند

मिसेज बेवरिज ने इस वाक्य का अनुवाद इस प्रकार किया है —

"The girl's mother has even before this been using persuasion It is astonishing that you should go away in anger over a few words " He wrote in reply; "your story is very welcome to me Whatever persuasion you may use, by my head and eyes, I will agree to it "

गुल बदन बेगम ने जो वाक्य लिखे हैं उनका एक ही अर्थ निश्चय रूप से बताना कठिन है। मिसेज बेवरिज ने 'नाज मी कुनद" का अनुवाद "Caressed the idea" अथवा "using persuasion" किया है।

५ "मआश" का अर्थ जो वेतन, रोजी, जमीन या जागीर जो किसी काम के इनाम स्वरूप मिलती है। इससे कुछ उपर मीर्ज़ा हिन्दाल ने जो आपत्ति प्रकट की उसके शब्द इस प्रकार हैं, "हज़रत पादशाह अन्द-मबादा मआश

चाहा तो इच्छानुसार पूरा होगा। प्रतीक्षा करनी चाहिये।" मेरी माता आकर हज़रत पादशाह को लाईं। उन्होंने उस दिन सभा की। सभा के उपरान्त वे अपने स्थान पर तशरीफ ले गए। दूसरे दिन हज़रत (पादशाह) मेरी माता के पास पहुँचे और कहा कि "किसी को भेजकर हमीदा बानो बेगम को बुलवाओ।" मेरी माता ने किसी को भेजा। हमीदा बानो बेगम न आईं और कहलाया कि, "यदि उद्देश्य यह है कि मैं अभिवादन करूँ तो मैं स्वयं अभिवादन द्वारा सम्मानित हो चुकी हूँ। अब किस लिए आऊँ?" दुबारा हज़रत ने सुभान कुली को भेजा कि, "मीर्ज़ा हिन्दाल से जाकर कहो कि बेगम को भेज दें।" मीर्ज़ा ने कहा कि, "मैंने बहुत कहा किन्तु वह नहीं जाती। तू स्वयं जाकर कह।" सुभान कुली ने जाकर कहा तो बेगम ने उत्तर दिया कि, 'पादशाह का दर्शन केवल एक बार जायज़[1] है। दूसरी बार नामहरम[2] हूँ। मैं नहीं आऊँगी।" सुभान कुली ने बेगम से जब यह बात (५३) सुनी तो आकर हज़रत से कह दिया। हज़रत ने कहा कि, यदि वे नामहरम हैं तो हम महरम बना लेंगे[3]"।

संक्षेप में ४० दिन तक हमीदा बानो बेगम के लिए आग्रह तथा वाद-विवाद होता रहा। बेगम राज़ी न होती थी। अन्ततोगत्वा मेरी माता दिलदार बेगम ने नसीहत की कि "आखिर किसी से तेरा विवाह होगा। पादशाह से उत्तम कौन हो सकता है?" बेगम ने कहा कि, 'निःसन्देह उस व्यक्ति से विवाह होगा जिसके गरीबान तक मेरा हाथ पहुँच सकेगा न कि उस व्यक्ति से जिसके विषय में मैं समझती हूँ कि मेरा हाथ उसके दामन तक नहीं पहुँच सकता[4]।" अन्त में फिर मेरी माता ने अत्यधिक नसीहत की।

नेक न शवद"। इसका अनुवाद ऊपर इस प्रकार किया गया है, "हज़रत पादशाह हैं। सम्भव है गुज़र न हो सके" अर्थात् दोनों की बन न सके। अत मआश का शब्द कोश के अनुसार अर्थ नहीं लगाया गया है अपितु मुहाविरे के अनुसार अर्थ लगाया गया है। यहाँ पर सम्भवत मआश का अर्थ मेहर या ज़मीन या जागीर है। मिसेज़ बेवरिज ने मआश का अनुवाद alimony किया है।

१ शरा के अनुसार स्वीकृत।

२ वह स्त्री जिससे विवाह जायज़ हो। मुसलमानों में कुछ ऐसी सम्बन्धी स्त्रियाँ होती हैं जिनसे विवाह नहीं हो सकता। ऐसी स्त्रियाँ महरम कहलाती हैं और वे अपने पुरुष सम्बन्धी से पर्दा नहीं करतीं। अन्य स्त्रियाँ पर्दा करती हैं।

३ विवाह द्वारा नामहरम, महरम हो जाती है, अत विवाह की ओर संकेत है।

४ आरे ब कसे ख्वाहम रसीद कि दस्त मन ब गिरेबाने ऊ ब रसद—न आंकि ब कसे बरसम कि दस्त मन मीदानम ब दामने ऊ न रसद।

آری بکسی خواهم رسید که دست من بگریبان او برسد - نه آنکه بکسی برسم که دست
من می دانم بدامن او نرسد

हमीदा बानो बेगम का तात्पर्य यह है कि मैं उससे विवाह करूँगी, जिससे सामाजिक दृष्टि से मैं बराबर हूँ। यहाँ कद अथवा डील डौल की छुटाई बड़ाई का कोई प्रश्न नहीं अत डा० एस० के० बनर्जी का निम्नांकित निष्कर्ष निराधार है।

"Also Hamida Banu was a girl of 14, and of short stature. It would be inappropriate for the tall Humayun to marry a girl so young in age and of such a short build". [S.K. Banerji : *Humayun Padshah*, Vol II (Lucknow 1941) p 34]।

हुमायू एव हमीदा वानो बेगम का विवाह

सक्षेप मे ४० दिन क उपरान्त जमादि उल-अव्वल ९४८ हि० (अगस्त सितम्बर १५४१ ई०) म पातर नामक स्थान पर सामवार व दिन मध्याह्न मे पादशाह ने अपने शुभ हाथा म स्वय उस्तुरलाब लेकर शुभ मुहूर्त को चुना और मीर अबुल बका को बुलवाकर आदश दिया कि वह निकाह पढे। दो लाख रुपए निकाहाना[1] के रूप में मीर अबुल बका को दिए गए। निकाह के उपरान्त वे तीन दिन वहाँ और रहे। तदुपरान्त नौका पर बैठ कर बक्खर की आर प्रस्थान किया।

मीर अबुल बका की मृत्यु

एक मास तक वे बक्खर मे रहे। मीर अबुल बका को मुल्तान बक्खरी के पास भेजा। वहाँ वह रुग्ण होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया।

शाह हुसेन द्वारा हुमायू का विरोध

अन्त म उन्हाने मीर्जा हिन्दाल को कन्धार जाने की अनुमति दे दी। मीर्जा यादगार नासिर को अपने स्थान पर लरी[2] में छोड दिया और वे स्वय सियाहवान[3] की आर रवाना हुए। सियाहवान से थत्ता[4] तक ६ ७ दिन का मार्ग है। सियाहवान मे एक बडा दृढ किला है। मीर अलीका[5] नामक हजरत पादशाह का सेवक उस किले म था। वहाँ कुछ ऐसे तापची थे कि किसी को किले के समीप तक जाने का साहस न होता था। हजरत पादशाह के आदमिया म से कुछ लाग मोर्चा बाँधकर निकट पहुँच गए और उसे उपदेश दिया कि एसे अवसर पर नमकहरामी उचित नही। मीर अलीका ने स्वीकार न किया। अन्त म सुरग लगाई गई और किले का एक बुर्ज का गिरा दिया गया किन्तु किले पर अधिकार प्राप्त न हो सका। अनाज का मूल्य बढ चुका था। अधिकाश लोग (५८) भागने लगे। वे ६–७ मास तक वहा पर रहे। मीर्जा शाह हुसेन नमकहरामी करके लश्कर वालो को हर तरह से पकडकर अपने आदमिया को इस आशय से दे देता था कि ले जाकर समुन्दर म डाल दें। ३ सौ ४ सौ आदमिया को एकत्र करके नौका म डालकर समुन्दर म फेंक दिया जाता था। लगभग १० हजार व्यक्ति समुन्दर म फक दिए गए।

हुमायू का बक्खर पुन पहुँचना

जब हजरत के पास बहुत थोडे से आदमी रह गए तो कुछ नौकाओ के ऊपर तोप एव बन्दूक लदवा कर वह स्वय[6] थत्ता से हजरत के विरुद्ध पहुचा। सियाहवान समुन्दर के समीप स्थित है। वहाँ पहुँच कर वह हजरत पादशाह की नौकाओ को अपने साथ ले गया और कुछ लोगा को

१ निकाह पढ़ने का उपहार।
२ लाट।
३ सिहवान।
४ इसे थट्टा टट्टा एव ठट्ठा भी लिखा जाता था।
५ अलीका अरगून शाह हुसेन का सेवक था। गुलबदन बेगम का विचार है कि वह अन्य अरगूनो के समान बाबर के अधीन अवश्य रहा होगा किन्तु यह बात निराधार है।
६ शाह हुसेन।

भेजकर कहलाया कि, "मुझे नमक का ध्यान है, आप शीघ्र प्रस्थान कर दें।" हजरत विवश हो गए और पुनः लौटकर बक्खर पहुँचे।

मीर्जा यादगार नासिर द्वारा हुमायूं को बक्खर में प्रविष्ट न होने देना

जब वे बक्खर के समीप पहुँचे तो, मीर्जा हुसैन समन्दर ने हजरत के बक्खर पहुँचने के पूर्व मीर्जा यादगार नासिर के पास इस आशय से आदमी भेजे कि "यदि हजरत लौटकर बक्खर की ओर आयें[1] तो तू आने न दे। बक्खर तेरे अधीन रहेगा। मैं तुझे अपना ही समझता हूँ और अपनी पुत्री का विवाह तेरे साथ कर दूँगा।" मीर्जा यादगार नासिर ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया। हजरत पादशाह को बक्खर में प्रविष्ट न होने दिया और उसने धूर्तता अथवा युद्ध जिस प्रकार सम्भव हो व्यवहार करना निश्चय कर लिया।

हुमायूं की मीर्जा यादगार नासिर को चेतावनी

हजरत ने आदमी भेजकर कहलाया 'बाबा! तुम हमारे पुत्र के स्थान पर हो। मैं तुम्हें अपने स्थान पर बैठाकर गया था। यदि हमारे साथ कोई दुर्घटना घटती तो तुम हमारी कुमक बनते। अब तुम अपने सेवकों की बुरी सलाह के कारण हमारे साथ इस प्रकार का व्यवहार कर रहे हो। यह नमकहराम सेवक तुम्हारा भी साथ न देंगे।' यद्यपि हजरत ने बहुत कुछ उपदेश दिये किन्तु उसका कोई लाभ न हुआ। अन्त में हजरत ने कहा कि, "अच्छा हम राजा मालदेव की ओर चले जा रहे हैं और यह विलायत तुम्हें दिए जा रहे हैं किन्तु शाह हुसैन तुम्हें इस स्थान पर न रहने देगा। तुम मेरी बात को याद करोगे।"

मालदेव की ओर प्रस्थान

मीर्जा यादगार नासिर से यह बात कहकर उन्होंने प्रस्थान कर दिया और मालदेव की ओर रवाना हो गए तथा जैसलमीर के मार्ग पर चल खड़े हुए। कुछ दिन उपरान्त दिलावर[2] नामक (५५) किले में जो कि राजा मालदेव की विलायत की सीमा पर है, पहुँचे। दो दिन तक वहां रहे। दाना घास न प्राप्त हो सका। वहाँ से जैसलमीर की ओर रवाना हुए। जब वे जैसलमीर के समीप पहुँचे तो जैसलमीर के राजा ने एक सेना भेजी और मार्ग रोक लिया। युद्ध हुआ। हजरत थोड़े से लोगों के साथ मार्ग से हटकर यात्रा कर रहे थे। उस युद्ध में कई लोग घायल हुए। शाहम खां जलायर का भाई उलूग बेग, पीर मुहम्मद आख्ता, रौशन कूरबेगी तथा कुछ अन्य लोग आहत हुए। अन्त में विजय हो गई। काफिर लोग भागकर किले में पहुँचे। हजरत उस दिन ६० कुरोह तक यात्रा करते रहे। तदुपरान्त एक तालाब पर पड़ाव किया। तत्पश्चात् वे सातलमीर पहुँचे। वहां उन लोगों ने उन्हें दिन भर कष्ट पहुँचाया, यहाँ तक कि वे फलौदी नामक परगने में जो कि मालदेव के अधीन था, पहुँच गए। राजा मालदेव जोधपुर में था। उसने एक जीबा तथा एक ऊँट पर अशर्फियाँ लदवाकर हजरत की सेवा में भेजी और अत्यधिक प्रोत्साहन देते हुए स्वागत किया और कहलाया कि "बीकानेर आपको देता हूँ।" हजरत सतुष्ट होकर वहाँ ठहर गए। अतगा खां[3] को मालदेव के पास भेजा कि, "वह क्या उत्तर देता है?"

१ मीर्जा शहरों में था।
२ देरावल।
३ शम्सुद्दीन मुहम्मद गजनवी।

मालदेव द्वारा विश्वासघात

मुल्ला मुर्ख कितावदार हिन्दुस्तान की हलचल तथा उस पराजय के समय मालदेव की विलायत में जाकर सेवक हो गया था। उसने प्रार्थनापत्र भेजा कि, "आप कदापि कदापि आगे न आयें। जिस स्थान पर ठहरे हैं, वहीं से प्रस्थान कर दें कारण कि मालदेव आपको बन्दी बनाना चाहता है। आप उसकी बात पर विश्वास न करें कारण कि शेर खां का राजदूत आया था और शेर खां ने पत्र भेजा था कि, "जिस प्रकार हो सके हजरत को बन्दी बना लें। यदि तू यह कार्य कर लेगा तो नागौर व अलवर तथा जिस स्थान की तू इच्छा करेगा तुझे दे दिया जायगा।" अतगा खां ने भी उपस्थित होकर कहा कि, 'ठहरने का समय नहीं। मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज़ के समय हजरत चल खड़े हुए। हजरत के प्रस्थान के समय दो गुप्तचरों को बन्दी बनाकर प्रस्तुत किया गया। उनसे पूछताछ की जा रही थी कि उन लोगों ने अपने हाथ छुड़ाकर उनमें से एक ने महमूद गिर्दबाज़[1] की कमर से तलवार खींच ली और सर्व प्रथम महमूद पर आक्रमण किया। तदुपरान्त बाकी ख्वालियारी को घायल किया। दूसरे ने एक की कमर से कटार खींच ली और अन्य लोगों (५६) की ओर बढ़ा। कुछ लोगों को घायल कर दिया और हज़रत के सवारी के घोड़े की हत्या कर दी। बड़ी कठिनाई से उन दोनों की हत्या की जा सकी किन्तु उसी बीच में शोर मच गया कि मालदेव पहुंच गया। हज़रत पादशाह के पास सवारी का अन्य घोड़ा न था जो हमीदा बानो बेगम की सवारी के लिए उपयुक्त होता। हज़रत ने तरदी बेग से बेगम की सवारी के लिए घोड़ा मांगा होगा, सम्भवतः तरदी बेग ने घोड़ा न दिया।[2] हज़रत ने कहा, मेरे लिए जौहर आफ़ताबची का ऊँट तैयार किया जाय। मैं ऊँट पर सवार हूँगा और बेगम घोड़े पर सवार हों।' सम्भवतः नदीम बेग[3] ने यह बात सुन ली कि हज़रत ने अपनी सवारी का घोड़ा बेगम की सवारी के लिए दे दिया है और स्वयं ऊँट पर सवार होना चाहते हैं। उसने अपनी माता को ऊँट पर सवार कर दिया और अपनी माता की सवारी का घोड़ा हजरत पादशाह को भेंट कर दिया।

हुमायूं का अमरकोट की ओर प्रस्थान

हजरत सवार होकर अमरकोट की ओर रवाना हुए। किसी स्थान से एक मार्गदर्शक को ले लिया ताकि वह मार्ग बताये। वायु अत्यधिक उष्ण थी। घोड़े तथा चौपाये[4] घुटनों तक बालू में धँस जाते थे। पीछे से मालदेव की सेना निकट पहुँच गई। उन्होंने पुनः प्रस्थान किया और भूखे प्यासे रवाना हुए। अधिकांश स्त्रियां तथा पुरुष पैदल थे। जब मालदेव की सेना निकट पहुँच गई तो हजरत ने ईशान[5] तीमूर सुल्तान, मुनइम खां[6] तथा कुछ अन्य लोगों को आदेश दिया कि 'तुम लोग धीरे धीरे आओ तथा शत्रु पर दृष्टि रक्खो ताकि हम लोग कुछ कोस आगे निकल जायं। वे ठहर गए और रात हो गई। हज़रत मार्ग भूल गए और रात भर यात्रा करते रहे। जब सुबह हुई तो

१ मज़बूत भुजाओं वाला।
२ गुलबदन बेगम ने उसे साफ़-साफ़ अपराधी नहीं बताया है।
३ माहम अनगा का पति।
४ चारवा, सम्भवतः खच्चर से तात्पर्य है।
५ ईमान तिमुर सुल्तान।
६ गुलचेहरा का पति, अकबर के राज्यकाल का खाने खाना।

तीन दिन हो चुके थे कि घोडो को जल न प्राप्त हुआ था। उस स्थान पर पानी मिला। हज़रत उतर पडे किन्तु इसी बीच में कोई दौड़ता हुआ आया और उसने कहा कि "बहुत बडी सख्या में हिन्दू लोग घोडो तथा ऊँटो पर सवार पहुँच गए हैं।"

मालदेव के सैनिकों से हुमायूं का युद्ध

हज़रत ने शेख अली बेग (जलायर), रोशन कोका, नदीम काका, मीर वली के भाई एव (५७) मीर पायन्दा मुहम्मद एव अन्य लोगो को विदा किया और फातेहा पढा कि जाकर काफिरो से युद्ध करो। हज़रत को विश्वास हो गया कि 'ईशान तीमूर सुल्तान, मुनइम खा, मीर्ज़ा यादगार[1] तथा वे लोग जिन्हें उन्होने छोड दिया था, मार डाले गए अथवा काफिरो द्वारा वन्दी बना लिए गए। ये लोग उनको हत्या करके युद्ध करने के लिये आ रहे हैं।' हज़रत पुन सवार हुए और कुछ लोगो के साथ शिविर छोडकर अग्रसर हुए। जिस समूह को हज़रत ने फातेहा पढकर आगे भेजा था उसमे से शेख अली बेग ने राजपूतो के सरदार को बाण द्वारा घोडे से गिरा दिया और कुछ अन्य लोगो को भी दूसरे लोगो ने बाण से घायल किया। काफिर भाग खडे हुए और विजय हो गई। कुछ लोग जीवित वन्दी बना लिये गए। लश्कर धीरे धीरे बढ रहा था किन्तु हज़रत पादशाह दूर निकल गए थे। यह लोग विजय प्राप्त करके शिविर मे पहुँच गए[2]।

वहबूद नामक एक चोबदार था। उसे हज़रत के पीछे दौडाया कि, "हज़रत धीरे धीरे रवाना हो कारण कि ईश्वर की कृपा से विजय हो गई और काफिर लोग भाग खडे हुए।" वहबूद स्वय हज़रत के पास पहुँच गया, और यह शुभद समाचार ले गया। हज़रत उतर पडे। कुछ जल भी मिल गया किन्तु उन्हें अमीरो की चिन्ता थी कि उनके ऊपर क्या बीती। इतने मे दूर से कुछ अश्वारोही दिखाई पडे। पुन चिन्ता हो गई कि कही मालदेव न हो। किसी को भेजा कि समाचार लाये। वह दौडता हुआ आया और कहा कि ईशान तीमूर सुल्तान, मीर्ज़ा यादगार एव मुनइम खा कुशलतापूर्वक आ रहे हैं। वे मार्ग भूल गए थे। उनके पहुँचने पर हज़रत प्रसन्न हो गए और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

हुमायूं का कुओं पर पहुँचना

प्रात काल उन्होने प्रस्थान किया। तीन दिन तक और जल न मिला। तीन दिन उपरान्त वे कुछ कुओं पर पहुँचे। वे कुयें बडे गहरे थे। वे उन कुओं पर ठहर गए। उस कुयें[3] का पानी बडा लाल था। एक कुए पर हज़रत उतरे। एक कुए पर तरदी बेग खा, एक पर मीर्ज़ा यादगार, मुनइम खा तथा नदीम कोका एव एक कुए पर ईशान तीमूर सुल्तान ख्वाजा गाजी तथा रोशन कोका।

जल का अभाव

(५८) जो डोल कुए से बाहर निकाला जाता था तो उसके निकट पहुँचते ही लोग डोल पर कूद

१ यादगार तग़ाई, बेगा बेगम का पिता। यादगार नासिर इस अवसर पर हुमायूं के साथ न था।
२ 'ई मर्दुम फ़तह कर्दा व उर्दू आमदा रसीदन्द'। मिसेज़ बेवरिज ने इस वाक्य का अनुवाद इस प्रकार किया है : Those who had recited the *fatiha* came up with the camp। (मिसेज़ बेवरिज, पृ० १५६)। यद्यपि ये लोग फ़ातेहा पढ कर भेजे गये थे किन्तु इस स्थान पर फ़ातेहा का कोई उल्लेख नहीं।
३ जिस कुयें पर हुमायू ठहरा था।

पड़ते थे और रस्सी टूट जाती थी। ५-६ व्यक्ति डोल के साथ कुए में गिर पड़े। बहुत से लोग प्यास के कारण मर गए और नष्ट हो गए। हज़रत ने देखा कि लोग प्यास के कारण कुएँ में डूबते जा रहे हैं तो उन्होंने अपनी विशेष करोती[1] से सबको पानी पिलाया। सबको पानी मिलने के उपरान्त मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज़ के समय प्रस्थान किया।

एक रात तथा एक दिन यात्रा करते रहे और एक स्थान पर पहुँचे, जहाँ एक बहुत बड़ा तालाब था। घोड़े तथा ऊँट तालाब में प्रविष्ट हो गए। कुछ ने इतना जल पी लिया कि वे मर गए। बहुत कम संख्या में घोड़े बच सके थे। ऊँट तथा खच्चर ही रह गए थे।

हुमायूं का अमरकोट पहुँचना

उस दिन के बाद फिर रोज़ाना जल मिलता गया। यहाँ तक कि वे अमरकोट पहुँच गए[2] जो कि बड़ा ही उत्तम स्थान है और जहां अधिक संख्या में तालाब हैं। राणा[3] ने हज़रत का स्वागत किया तथा क़िले में ले गया और उत्तम स्थान प्रदान किया। अमीरों के आदमियों को क़िले के बाहर स्थान दिया।

अधिकांश वस्तुएं बड़ी सस्ती थीं। एक रुपए में चार (पहाड़ी) बकरियां मिलती थीं। राणा ने अत्यधिक बकरी के बच्चे इत्यादि उपहार स्वरूप भेंट किए और इतनी उचित सेवा की कि उसका उल्लेख सम्भव नहीं। वे कुछ दिन तक वहाँ कुशलतापूर्वक निवास करते रहे।

जब कुछ समय उपरान्त ख़ज़ाना समाप्त हो गया तो हज़रत ने तरदी बेग ख़ां से जिसके पास अत्यधिक धन था, ऋण के रूप में कुछ धन मांगा। उसने दस पर दो के हिसाब[4] से अस्सी हज़ार अशर्फी ऋण में दी। हज़रत ने लेकर हिस्सा रसद[5] समस्त सेना को बांट दी।

राणा तथा उसके पुत्रों को कटार एवं सरापा प्रदान किए। कुछ लोगों ने घोड़े ख़रीद लिये।

हुमायूं का अमरकोट से प्रस्थान

राणा के पिता की मीर्ज़ा शाह हुसैन ने हत्या कर दी थी इस कारण से उसने २-३ हज़ार वीर अश्वारोही एकत्र करके हज़रत के साथ कर दिए। हज़रत पुनः बक्खर की ओर रवाना हुए[6] (५९) तथा अपने परिवार में से अधिकांश को अमरकोट में छोड़ गए। ख्वाजा मुअज्ज़म को भी छोड़ दिया कि वह अन्तःपुर की देख रेख रक्खे। हमीदा बानो बेगम गर्भवती थीं।

हज़रत के प्रस्थान के तीन दिन उपरान्त ४ रजब ९४९ हि० (१४ अक्तूबर १५४२ ई०) को प्रातःकाल के समीप रविवार के दिन हज़रत पादशाह आलमपनाह[7], आलमगीर[8] जलालुद्दीन

१ पीने के जल के रखने का बर्तन। इसके विषय में कोई ज्ञान नहीं प्राप्त हो सका।
२ १० जमादि-उल अव्वल ९४९ हि० (२२ अगस्त १५४२ ई०)।
३ राणा प्रसाद।
४ २/१० अथवा २० प्रतिशत।
५ श्रेणी के अनुसार हिस्सा बांट दिया।
६ अमरकोट में मात सप्ताह ठहरने के उपरान्त।
७ संसार को शरण देने वाले।
८ संसार विजय करने वाले।

मुहम्मद अकबर पादशाह गाजी का जन्म हुआ। चन्द्रमा सिंह राशि में था। निश्चित राशि[1] का
जन्म बडा उत्तम माना जाता है। ज्योतिषियों का कथन है कि जो पुत्र इस घडी में पैदा होगा, वह
बडा प्रतापी होगा और दीर्घायु प्राप्त करेगा।

हुमायूं को अकबर के जन्म के समाचार प्राप्त होना

हज़रत १५ कुरोह की दूरी पर थे कि तरदी मुहम्मद खां ने समाचार पहुँचाये। हज़रत
अत्यधिक प्रसन्न हुए। इस सुखद समाचार के कारण तरदी मुहम्मद खां के पिछले अपराध क्षम
कर दिए।

हुमायूं का जून पहुँचना

उन्होंने उस स्वप्न के अनुसार जो उन्होंने लाहौर में देखा था पुत्र का नाम जलालुद्दीन
मुहम्मद अकबर पादशाह रखा।

वहाँ से वह बक्खर की ओर रवाना हुए। राणा के आदमी तथा आसपास वाले, सूदम
तथा समीनचा[2] इत्यादि मिलाकर दस हजार व्यक्ति हो गए। वे जून[3] परगने में पहुँचे। शाह हुसेन
मीर्ज़ा का एक दास, कुछ अश्वारोहियों सहित जून में था। वह भाग गया। वहां बागे आईना नामक
बडा ही उत्तम उद्यान था। हज़रत उस बाग में ठहरे और वहाँ के ग्राम अपने आदमियों का जागीर म
दे दिए। जून से थत्ता ६ दिन की यात्रा की दूरी पर स्थित है। हज़रत वहां ६ मास तक रहे
अमरकोट आदमी भेजे और अन्तःपुर वालों तथा अन्य लोगों को बुलवा लिया। जब जलालुद्दीन
अकबर पादशाह जून में लाए गए तो उनकी अवस्था ६ मास की थी।

हुमायूं के सहायकों का पृथक् होना

जो सेना आसपास से तथा अन्तःपुर के साथ आई थी वह छिन्न भिन्न हो गई। राण
तथा तरदी मुहम्मद खां में जो वार्त्ता हुई थी उसके कारण वह तरदी बेग से रुष्ट होकर आधी
रात के समय अपनी विलायत की ओर चल दिया। सूदमा तथा समीनचा समूह भी उसी के साथ
चले गए। हज़रत अपनी उसी सेना के साथ रह गए[4]।

हाजीकान के लिए युद्ध

(६०) शेख अली बेग[5] को जो कि बडा ही शूर वीर था, हज़रत ने मुजफ्फर बेग तुर्कमान के
साथ जाजका[6] नामक एक बहुत बडे परगने की ओर भेजा। मीर्ज़ा शाह हुसेन ने एक सेन
उसके विरुद्ध भेजी। दोनों सेनाओं में घोर युद्ध हुआ। अन्ततोगत्वा मुजफ्फर बेग पराजित हो कर भाग
खडा हुआ। शेख अली बेग तथा बहुत से लोग मारे गए एवं नष्ट हो गए[7]।

१ बुर्जे साबित।
२ समीचा।
३ जून।
४ जो उनके साथ पहिले थी।
५ शेख अली बेग जलायर।
६ हाजीकान।
७ यह घटना नवम्बर १५४३ ई० में घटी।

खालिद बेग तथा लूश बेग में झगडा

खालिद बेग[1] तथा लूश बेग[2] शाहम खा जलायर के भाई मे आपस मे झगडा हो गया। अन्त मे सैनिको ने लूश बेग का साथ दिया। इस कारण खालिद बेग कुछ लोगो के साथ भागकर मीर्जा शाह हुसेन के पास चला गया। हजरत पादशाह ने उसकी माता को जिसका नाम सुल्तानम था, बन्दी बना लिया। इस कारण गुलबर्ग बेगम[3] रुष्ट थी। अन्त मे उसके[4] अपराध क्षमा कर दिए गए और गुलबर्ग बेगम के साथ उसे मक्का जाने की अनुमति दे दी गई। कुछ समय उपरान्त लूश बेग भी भाग गया। हजरत ने उसे शाप देते हुए कहा कि, हमने उसके कारण खालिद बेग के प्रति कठोरता प्रदर्शित की। इसके बावजूद वह नमक हलालो के क्षेत्र से निकलकर नमकहरामी के क्षेत्र में पहुँच गया। वह युवावस्था मे ही मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा। अन्त मे यही हुआ। १५ दिन उपरान्त वह नौका म सो रहा था कि उसके दास ने चाकू मारकर उसकी हत्या कर दी। हजरत को यह सुनकर बडा दुख हुआ और वे चिन्ता मे पड गए।

शाह हुसेन तथा हुमायूं की सेना में युद्ध

शाह हुसेन नौकाओ को चून के समीप नदी में ले आया था। खुश्की पर भी हजरत के आदमियो तथा शाह हुसेन के आदमियो में प्राय युद्ध हुआ करता था और दोनो ओर से लोग मारे जाते थे। अधिकांश पादशाही आदमी प्राय रोजाना भागकर शाह हुसेन के पास चले जाते थे। मुल्ला ताजुद्दीन जो विद्वत्ता का मोती था, और जिसके प्रति हजरत अत्यधिक कृपा दृष्टि रखते थे इस युद्ध मे मारा गया।

बैराम खा का आगमन

तरदी मुहम्मद खा तथा मुनइम खा में आपस में झगडा हो गया। मुनइम खा भी भाग गया। बहुत थोडे से अमीर साथ रह गए। तरदी मुहम्मद खा, मीर्जा यादगार मीर्जा पायन्दा (६१) मुहम्मद, मुहम्मद वली, नदीम कोका, रोशन कोका, खदग ईशक आगाची एव कुछ अन्य लोग हजरत की सेवा मे रह गए। (इसी समय) समाचार प्राप्त हुए कि बैराम खा गुजरात की ओर से आ रहा है और जाजका परगने में पहुँच गया है हजरत प्रसन्न हो गए। खदग ईशक आगाची तथा कुछ लोगो को आदेश दिया कि वे बैराम खा के स्वागतार्थ रवाना हो[5]।

इसी बीच में शाह हुसेन ने सुना कि बैराम खा आ रहा है। उसने कुछ लोगो को बैराम खा को बन्दी बना लेने के उद्देश्य से भेजा। वह एक स्थान पर असावधानी की अवस्था मे पडाव किए हुए था कि उन लोगो ने आक्रमण कर दिया। खदग ईशक आगा[6] मारा गया। बैराम खा तथा कुछ अन्य लोग मुक्त हो गए और उन्होने हजरत की सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया।

१ निजामुद्दीन अली खलीफा बरलास तथा सुल्तानम का पुत्र।
२ मिसेज बेवरिज के अनुसार 'तरश बेग', पृ० १५६।
३ निजामुद्दीन अली खलीफा बरलास की पुत्री, अत खालिद की बहिन।
४ सुल्तानम।
५ बैराम खा ७ मुहर्रम ९५० हि० (१२ अप्रैल १५४३ ई०) को पहुँचा।
६ ऊपर 'खदग ईशक आगाची' है।

मीर्ज़ा हिन्दाल का कन्धार पर अधिकार

इसी बीच में कराचा खाँ के प्रार्थनापत्र हज़रत पादशाह तथा मीर्ज़ा हिन्दाल के पास पहुँचे कि, "आप बहुत समय से वक्खर के समीप पड़ाव किए हुए हैं। इस बीच में शाह हुसेन मीर्ज़ा की ओर से निष्ठा के कोई चिह्न दृष्टिगत नहीं हुए अपितु उसने दुर्व्यवहार ही किया है। यदि पादशाह स्वय पधारें तो ईश्वर की कृपा से कार्य सुगमतापूर्वक सम्पन्न हो जायेगा। यदि पादशाह स्वय आ जायें तो बड़ा अच्छा है और यदि वे न आये तो आप[1] अवश्य आ जायें।" क्योंकि हज़रत ठहरे रहे अत उसने मीर्ज़ा हिन्दाल का स्वागत करके कन्धार मीर्ज़ा हिन्दाल को भेंट कर दिया।

कामरान द्वारा कन्धार पर अधिकार

मीर्ज़ा अस्करी गजनी में थे। मीर्ज़ा कामरान ने उन्हें लिखा कि, 'कराचा खाँ ने मीर्ज़ा हिन्दाल को कन्धार प्रदान कर दिया है। कन्धार की चिन्ता करनी चाहिये। मीर्ज़ा कामरान इस बात का प्रयत्न करने लगे कि कन्धार को मीर्ज़ा हिन्दाल से ले लें।

हुमायू का खानज़ादा बेगम को मीर्ज़ा कामरान के पास भेजना

इसी बीच में हज़रत यह समाचार सुनकर अपनी फूफी खानज़ादा बेगम के पास पहुँचे और अत्यधिक आग्रह किया कि 'मेरे ऊपर एहसान करके कन्धार चली जाइए। मीर्ज़ा हिन्दाल तथा मीर्ज़ा कामरान को समझाइए कि ऊज़बेक एव तुर्कमान तुम लोगों के निकट हैं। ऐसे सकट-(६२) काल में जो हमारे तथा तुम्हारे ऊपर आ गया है पारस्परिक मेल जोल बड़ा अच्छा है। मैंने अपने पत्र में जो मीर्ज़ा कामरान को लिखा है यदि वह उसे स्वीकार कर और उसपर आचरण करे तो जो उसकी इच्छा होगी हम वही करेंगे।"

कन्धार में मीर्ज़ा कामरान के नाम का ख़ुत्बा

बेगम के कन्धार पहुँचने के चार दिन उपरान्त मीर्ज़ा कामरान भी पहुँच गए और वह हर रोज आग्रह करते थे कि, मेरे नाम का ख़ुत्बा पढ़वाया जाय।" मीर्ज़ा हिन्दाल कहते थे कि, ख़ुत्बे में परिवर्तन की क्या आवश्यकता है? हज़रत फिरदौस मकानी ने अपने जीवनकाल में हुमायूँ पादशाह को स्वय पादशाही प्रदान की थी और अपना उत्तराधिकारी बनाया था। हम सबने स्वीकार किया था। उनके नाम का ख़ुत्बा इस समय तक पढ़वाया जाता रहा है। इस समय ख़ुत्बे में परिवर्तन करना उचित नहीं।" मीर्ज़ा कामरान ने हज़रत दिलदार बेगम[2] को पत्र लिखा कि, "हम काबुल से आपको याद करते हुए आए, बड़े आश्चर्य की बात है कि आपने क्षण भर के लिए भी आकर हमसे भेंट न की। जिस प्रकार आप मीर्ज़ा हिन्दाल की माता हैं उसी प्रकार हमारी।' अन्त में दिलदार बेगम उन्हें देखने पहुँची। मीर्ज़ा कामरान ने कहा कि, 'मैं आपको उस समय तक न जाने दूँगा जिस समय तक आप मीर्ज़ा हिन्दाल को न बुलवा लें।" दिलदार बेगम ने कहा कि, "खानज़ादा बेगम तुम्हारी आश्रयदात्री हैं और हम सबकी बुज़ुर्ग एव बड़ी हैं। ख़ुत्बे के तथ्य के विषय में उनसे

१ मीर्ज़ा हिन्दाल।
२ हिन्दाल की माता।

प्रश्न किया जाय।" अन्त में उन्होंने आका[1] से पूछा तो हजरत खानजादा बेगम ने उत्तर दिया कि, "यदि मुझसे पूछते हो तो जिस प्रकार हजरत फिरदौस मकानी ने निश्चय किया था और अपनी पादशाही हुमायूं पादशाह को प्रदान की थी और तुम सब भी उनके नाम का अभी तक खुत्बा पढ़वाते रहे हो उसी प्रकार अब भी उन्हें अपना बुजुर्ग समझकर उनके आज्ञाकारी रहो।" संक्षेप में चार मास तक मीर्जा कामरान कन्धार को घेरे रहे और खुत्बे के विषय में आग्रह करते रहे। अन्त में निश्चय किया कि, 'अच्छा! इस समय पादशाह दूर हैं, मेरे नाम का खुत्बा पढ़वा दो, जिस समय पादशाह आ जायेंगे उनके नाम का खुत्बा पढ़वा दिया जायगा।" क्योंकि अवरोध बहुत समय से चल रहा था और लोग व्याकुल हो गए थे अतः विवश होकर खुत्बा पढ़वा दिया गया।

हिन्दाल के साथ मीर्ज़ा कामरान का विश्वासघात

(६३) उन्होंने कन्धार मीर्जा अस्करी को दे दिया और गजनी को मीर्जा हिन्दाल को प्रदान करने का वचन दिया। जब वे गजनी पहुँचे तो लमगानात एव ननगीहार[2], मीर्जा हिन्दाल को प्रदान कर दिए गए। इस प्रकार उन्होंने वचन भंग किया। मीर्जा हिन्दाल बदख्शां पहुँचकर खुस्त एवं अन्दराब में ठहर गए। मीर्जा कामरान ने दिलदार बेगम से कहा कि 'आप जाकर उसे ले आये।" हजरत दिलदार बेगम जब पहुँची तो मीर्जा ने उत्तर दिया कि, 'मैंने सैनिक जीवन त्याग दिया है। खुस्त एक कोने में है। वहीं पड़ा हूँ।" बेगम ने कहा कि, 'यदि दरवेशी तथा एकान्तवास की ही इच्छा है तो काबुल भी एक कोने में ही है। परिवार तथा पुत्रों के साथ इकट्ठा रहो यह अच्छा है।' अन्त में बेगम मीर्जा को जबरदस्ती लाईं और वे काबुल में दीर्घकाल तक दरवेशों के समान जीवन व्यतीत करते रहे।

शाह हुसेन मीर्ज़ा द्वारा हुमायूं को कन्धार चले जाने के लिये विवश करना

इसी बीच में मीर्जा शाह हुसेन ने हजरत पादशाह के पास आदमी भेजे कि, "आपके हित में यही उचित है कि यहाँ से प्रस्थान करके आप कन्धार चले जायें।" हजरत ने स्वीकार कर लिया और उत्तर भेजा कि, 'हमारे लश्कर में घोड़े तथा ऊँट बहुत कम संख्या में रह गए हैं। तुम हमें घोड़े तथा ऊँट दे दो ताकि हम कन्धार चले जायें।' शाह हुसेन मीर्जा ने स्वीकार कर लिया और कहलाया कि, "जब आप नदी पार कर लेंगे तो एक हजार ऊँट जो नदी के उस पार हैं, सब आपको दे दूँगा।"

[*भक्कर एवं सिन्ध के मार्ग की अधिकांश बातें ख्वाजा कीपसक द्वारा जो ख्वाजा ग़ाज़ी का सम्बन्धी था ज्ञात हुई हैं। ये ख्वाजा कीपसक के लेख से उद्धृत हैं*[3]]

हुमायूं का कन्धार की ओर प्रस्थान

अन्त में हजरत अपने परिवार एवं सेना सहित नौकाओं पर सवार हुए। तीन दिन तक

१ खानजादा बेगम।

२ नीनगनहार, देखिये 'बाबर नामा', पृ० १७-२०, ३२, ७१, ८३, ८८, ८९, २३०।

३ सम्भवतः ख्वाजा कीपसक अथवा ख्वाजा ग़ाज़ी ने कोई दैनिन्दनी लिखी होगी जिसके आधार पर उपर्युक्त विवरण लिखा गया है। यह दैनिन्दनी अब प्राप्त नहीं।

विशाल नदी की यात्रा की। उसके[1] राज्य की सीमा को पार करके नवासी[2] नामक स्थान पर पड़ाव किया और सुल्तान कुली नामक सारबान बाशी[3] को इस आशय से भेजा कि वह ऊँटों को ले आए। सुल्तान कुली जाकर एक हजार ऊँट लाया। हजरत ने समस्त ऊँटों को अमीरों तथा सैनिकों इत्यादि को बाँट दिया।

मीर्जा शाह हुसेन के ऊँटों द्वारा कष्ट

वह ऊँट ऐसे थे कि मानो उनकी सात पीढ़ियों अपितु सत्तर पीढ़ियों ने नगर आदमी तथा बोझ को न देखा था। क्योंकि सेना में घोड़ों का अकाल था अतः अधिकांश लोग ऊँटों पर सवार (६४) हुए। जो ऊँट बच रहे उनपर बोझ लादे गए। जो कोई सवार होता था उसे ऊँट तुरन्त भूमि पर पटक देते थे और जंगल की ओर भाग जाते थे। जो कोई ऊँटों पर अपने बोझ को लादता था तो ऊँट घोड़ों के खुर की आवाज सुनते ही उछल-कूदकर बोझ को भूमि पर पटक देते और जंगल की ओर भाग जाते थे। जिस ऊँट पर बोझ को मजबूती से बाँध दिया जाता था और उसके प्रयत्न करने से बोझ न गिरता तो वह बोझ सहित जंगल की ओर भाग जाता था। इस प्रकार वे कन्धार की ओर रवाना हुए। लगभग दो सौ ऊँट भाग गए होंगे।

शाह हुसेन मीर्जा का सेवक महमूद सारबान बाशी, सीवी में था। जब वे सीवी के समीप पहुँचे तो उसने किले को दृढ़तापूर्वक बन्द कर लिया। हजरत ने सीवी से ६ कोस पर पड़ाव किया। इसी बीच में समाचार प्राप्त हुए कि "मीर अल्लाह दोस्त एवं बाबा जूजक[4], काबुल से दो दिन हुए सीवी पहुँच गए हैं और शाह हुसेन मीर्जा के पास जा रहे हैं। मीर्जा कामरान ने सरोपा तीपूचाक घोड़े एवं अत्यधिक मेवे शाह हुसेन मीर्जा के पास भेजकर उसकी पुत्री से विवाह का प्रस्ताव रक्खा है।"

हजरत ने ख्वाजा गाजी से कहा कि, 'क्योंकि तुझमें तथा अल्लाह दोस्त में पिता एवं पुत्र का सम्बन्ध है[5], अतः पत्र लिख कर भेज कि यदि हम मीर्जा कामरान के पास चले जायें तो वह हमारे प्रति किस प्रकार व्यवहार करेगा।" हजरत पादशाह ने ख्वाजा कीपसक को आदेश दिया कि, 'वह सीवी जाकर अल्लाह दोस्त से कहे कि यदि वह आकर हमसे भेंट करे तो बड़ा अच्छा हो।" ख्वाजा कीपसक सीवी की ओर रवाना हुआ। हजरत ने कहा कि, तेरे आने के समय तक-हम प्रस्थान न करेंगे।'

वह सीवी के समीप पहुँच गया था कि महमूद सारबान बाशी ने उसे पकड़ कर पूछा कि, 'तू किस कार्य से आया है?" उसने कहा कि, "घोड़े तथा ऊँट क्रय करने के लिये।" उसने कहा, "उसकी जेब और टोपी की तलाशी लो। कहीं वह अल्लाह दोस्त तथा बाबा जूजक के पास प्रोत्साहन हेतु पत्र न ले जा रहा हो।" जब तलाशी ली गई तो उसके पास से एक पत्र निकला। उसे इतना

१ मीर्जा शाह हुसेन।
२ रौनाई (अरस्किन भाग २, पृ० २६२)।
३ ऊँटों को हाँकने वालों का मुख्य अधिकारी।
४ अब्दुल वहहाब।
५ गुरु एवं शिष्य होने के कारण।

(६५) अवसर न मिल सका कि वह पत्र को मोड कर छिपा लेता। उसने उसे लेकर पढा और उसे वापस न दिया। तत्काल वह अल्लाह दोस्त एव बाबा जूजक को किले के भीतर ले गया और नाना प्रकार की कठोरता प्रदर्शित की। उन लोगो ने शपथ ली कि, "हमे इनके विषय में कोई सूचना नही है और इमने मुझसे शिक्षा प्राप्त की है। ख्वाजा गाजी हमारा सम्बन्धी है। वह मीर्जा कामरान के पास था। इस कारण उसने पत्र लिखा है।" महमूद ने निश्चय किया कि कीपसक तथा उन लोगों को जो उनके साथ है, शाह हुसेन के पास भेज दें। मीर अल्लाह दोस्त तथा बाबा जूजक रात भर महमूद के पास रहे और उससे विनयपूर्वक निवेदन करके मुक्त हो गये। ३०० अनार तथा १०० बिही मीर अल्लाह दोस्त ने हजरत के लिए भेजे और इस भय[1] से पत्र न लिखा कि किसी के हाथ न लग जाय किन्तु यह मौखिक सदेश भेज दिया कि, "यदि मीर्जा अस्करी अथवा अमीरों के प्रार्थनापत्र प्राप्त हों तो काबुल जाना बुरा नही है, अन्यथा काबुल जाना उचित नही। हजरत बादशाह देख लेगे कि इससे कोई लाभ नही। हजरत के आदमियों की सख्या बडी थोडी है। पता नही क्या हो?" कीपसक ने यह बात पहुँचा दी।

हुमायू का कन्धार की ओर प्रस्थान

हजरत चिन्ता मे थे कि अब क्या करना चाहिये और कहा जाना चाहिये? उन्होने परामर्श किया। तरदी मुहम्मद खा तथा बैराम खा ने सलाह दी कि 'उत्तर एव शाल मस्तान[2] के अतिरिक्त जो कन्धार के सीमान्त पर है किसी अन्य ओर जाना सम्भव नही कारण कि उस ओर अफगान बहुत बडी सख्या में हैं। हम उन्हे अपनी ओर मिला लेगे। मीर्जा अस्करी के अमीर तथा सेवक भी हमारे पास भागकर आ जायेगे।'

अन्त में उन लोगो ने आपस मे निश्चय करके फातेहा पढा और निरन्तर यात्रा करते हुए कन्धार की ओर रवाना हुए। जब वे शाल मस्तान के समीप पहुँच तो रली[3] नामक स्थान पर पडाव किया। हिमपात एव वर्षा के कारण वायु अत्यधिक ठडी हो गई थी। उन्होने यह निश्चय किया कि इस मजिल से हम शाल मस्तान चले जायेगे। अस्र की नमाज के समय एक ऊजबेक जवान एक थके मांदे खच्चर पर सवार पहुँचा और उसने चिल्लाकर कहा कि, 'हजरत सवार हो। मै मार्ग बता दूँगा। समय बडा थोडा रह गया है और अब बात करने का अवसर नही।"

मीर्जा अस्करी का हुमायू के शिविर में पहुँचना

(६६) हजरत तत्काल सवार हो गए। कोलाहल होने लगा। पादशाह चल खडे हुए। दो बाण के मार की दूरी तक यात्रा की थी कि हजरत पादशाह ने ख्वाजा मुअज्जम एव बैराम खा को इस आशय से भेजा कि वे हमीदा बानो बेगम को ले आयें। इन लोगों ने पहुँच कर बेगम को सवार किया। इतना अवसर न मिला कि जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह को भी साथ ले लें। जैसे ही बेगम शिविर से निकल कर पादशाह के साथ चलने के लिए रवाना हुईं उसी बीच मे मीर्जा अस्करी दो हजार अश्वारोहियो सहित पहुँच गए और शोर होने लगा। वहाँ पहुँचते ही वह (मीर्जा अस्करी)

१ प्रकाशित पुस्तक में 'तुम्श अथवा तर्श' '(ترش)' है किन्तु इसे 'तर्स (ترس)' होना चाहिये।
२ लगभग 'कोयटा'।
३ सम्भवत: 'रानी'।

शिविर के द्वार पर पहुँचे और पूँछा कि पादशाह कहाँ है?" लोगों ने कहा कि, "देर हुई वह शिकार खेलने गए हैं।" व समझ गए कि वे[1] चले गए। अन्त मे जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह तथा समस्त पादशाही आदमियों को अपने साथ ले लिया और कन्धार ले गए। मुहम्मद अकबर पादशाह को अपनी पत्नी सुल्तानम बेगम को सौंप दिया। सुल्तानम बेगम मीर्ज़ा अस्करी की पत्नी थी। उन्होंने (अकबर की) बडी देखभाल की।

हुमायूं के सहायक

पादशाह ने सवार होकर पर्वत की ओर प्रस्थान किया। चार कुराह यात्रा के उपरान्त[2] शीघ्रातिशीघ्र रवाना हुए। उस समय यह लोग सेवा मे थे —

बैराम खां, ख्वाजा मुअज्ज़म, ख्वाजा नियाज़ी नदीम कोका[3], रोशन कोका, हाजी मुहम्मद खां, बाबा दोस्त बख्शी, मीर्ज़ा कुली बेग चोली, हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी, शेख यूसुफ चाली, इबराहीम ईशक आगा, हसन अली ईशक आगा, याकूब कूरची, अम्बर नाज़िर, मलिक मुख्तार, सुम्बुल मीर हज़ार, ख्वाजा कीपसक।

ख्वाजा गाज़ी का कथन है कि 'मैं भी साथ था। ये लोग हज़रत के साथ रवाना हुए।" हमीदा बानो बेगम का कथन है कि 'कुल ३० आदमी साथ थे। स्त्रियों में हसन अली ईशक आगा की भी स्त्री थी।"

हुमायूं का बिलोचों के ग्राम में पहुँचना

सोने की नमाज़ का समय हो चुका था कि वे पर्वत के नीचे पहुँचे। पर्वत पर इतनी अधिक (६७) बरफ जमी थी कि ऊपर जाने का मार्ग न था। यह भय था कि कहीं ऐसा न हो कि अन्यायी मीर्ज़ा अस्करी पीछे से पहुँच जाये।" अन्त मे मार्ग का पता चला कर वे जिस प्रकार सम्भव हो सका पर्वत के ऊपर पहुँचे। रात भर बरफ के बीच मे रहे। उस समय ईंधन भी न मिल सका कि आग जलाई जा सकती। भोजन के लिए भी कोई वस्तु न थी। भूख बडा व्याकुल कर रही थी। लोग बडे कमजोर हो गए थे। हज़रत ने आदेश दिया कि एक घोडे की हत्या कर दी जाय। जब घोडे की हत्या कर दी गई तो कोई देग भी साथ न था जिसमे भोजन पकाया जा सकता। कुछ मास ढाल मे पकाया गया और कुछ के कबाब बनाये गए। चार ओर आग करके वे अपने शुभ हाथों से स्वय कबाब बनाकर खाते जाते थे और अपनी शुभ जिह्वा से कहते जाते थे कि, 'ठडक के कारण मेरा सिर गला जा रहा है।"

जब सुबह हुई तो उन्होंने दूसरे पर्वत की ओर सकेत किया और कहा कि, "ज्ञात होता है कि वहा आबादी है। वहाँ बिलोचियों का एक समूह रहता है। वहाँ चलना चाहिए।" वे चल खडे हुए। दो दिन में वहा पहुँचे। वहाँ थोडे से घर मिले। उन घरों मे कुछ बहशी बिलोची

१ हुमायूं।
२ सम्भवतः हमीदा बानो बेगम के पहुँचने के उपरान्त तेज़ी से यात्रा प्रारम्भ कर दी होगी।
३ उसकी पत्नी माहम अनगा अकबर के साथ थी। शम्सुद्दीन मुहम्मद अतका खां एवं उसकी पत्नी जीजी अनगा भी अकबर के साथ थीं।

थे जो जगली वहशियो के समान थे। वे पर्वत के आचल में ठहर गए। हजरत के साथ लगभग तीस आदमी थे। बिलोचियो ने जब देखा तो वे एकत्र होकर आए। हजरत खरगाह में बैठे हुए थे। उन्होंने (बिलोचियो ने) दूर से देख लिया कि हजरत बैठे हैं। वे एक दूसरे से कहने लगे कि, "(यदि हम इन लोगो को पकड कर मीर्जा अस्करी के पास ले जायें तो वह नि सन्देह इन लोगो के अस्त्र-शस्त्र हमें दे देगा अपितु और अधिक इनाम भी देगा।"

हसन अली ईशक आगा की पत्नी बिलोची थी। वह बिलोची भाषा जानती थी। उसने बताया कि "यह जगली समूह दुष्टता के विचार रखते हैं।" वे[1] प्रात काल प्रस्थान करना चाहते थे। बिलोचियो ने कहा कि, "हमारा सरदार बिलोची इस स्थान पर उपस्थित नही। जब वह आ जाय तो प्रस्थान करें।" क्योंकि अब समय नही रहा था अत पूरी रात सावधानी से व्यतीत की गई।

रात्रि का थोडा सा भाग व्यतीत हो चुका था कि वह बिलोची सरदार हजरत की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने कहा कि, "मीर्जा कामरान तथा मीर्जा अस्करी का फरमान हमारे पास आया है और उसमे लिखा है कि, 'सुना जाता है कि पादशाह तुम लोगो के घरो में ठहरे हुए हैं। यदि वे वहाँ हो तो उन्हें कदापि जाने न देना, बन्दी बना कर हमारे पास ले आना। उनकी धन (६८) सम्पत्ति एव घोडे तुम्हे दे दिए गए। पादशाह को कन्धार पहुँचा दो।' सर्वप्रथम जब मैंने आपके दर्शन न किए थे, तो मेरे हृदय में कुत्सित विचार थे। इस समय जब कि मैं हजरत की सेवा में उपस्थित हो गया हूँ तो मेरे तथा मेरे परिवार के प्राण जिनमे ५-६ पुत्र हैं, हजरत के सिर के ऊपर अपितु हजरत के एक बाल के ऊपर न्याछावर हैं। हजरत की जहाँ इच्छा हो, तशरीफ ले जायें। आप ईश्वर की शरण में रहें। मीर्जा अस्करी का जो जी चाहे वह हमारे विरुद्ध करे।" अन्त में उन्होंने (हुमायूँ ने) एक लाल, मोती तथा अन्य चीजें उस बिलोची को दी और प्रात काल वहाँ से प्रस्थान करके बाबा हाजी के किले में पडाव किया।

हुमायूँ का हलमन्द नदी पर पहुँचना

दो दिन उपरान्त वे उस किले में पहुँचे। वह किला गरमसीर[2] विलायत में है और नदी[3] तट पर स्थित है। वहाँ सैयिदो का एक समूह रहता है। वे हजरत की सेवा में उपस्थित हुए और आतिथ्य किया।

दूसरे दिन प्रात काल ख्वाजा अलाउद्दीन[4] महमूद, मीर्जा अस्करी के पास से भागकर आया। ऊँटो तथा घोडो की कतारें, शामियाने इत्यादि जो उसके साथ थे, हजरत को भेंट किए। उन्हें फिर कोई चिन्ता न रही।

दूसरे दिन हाजी मुहम्मद खा कोकी[5] ने ३०-४० अश्वारोहियो तथा ऊँटो की कतार

१ हुमायूँ।
२ गरम जल-वायु का प्रदेश।
३ हलमन्द नदी।
४ अन्य ग्रथो में ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद मीर्जा। वह मीर्जा अस्करी की ओर से राजस्व वसूल करने का अधिकारी था।
५ हाजी मुहम्मद खा कोकी, बाबर के एक विश्वासपात्र बाबा कश्का का पुत्र था।

भेंट की। अन्त में भाइयों के विरोध तथा अमीरों के साथ न देने के कारण विवश होकर उन्होंने यह निश्चय किया कि ईश्वर के ऊपर भरोसा करके खुरासान[1] की ओर प्रस्थान करने का संकल्प कर लेना चाहिए[2]। मंजिलों तथा पड़ावों को पार करते हुए वे खुरासान के समीप पहुँचे। जब वे हलमन्द नदी पर पहुँचे तो शाह तहमास[3] यह समाचार सुनकर बड़ी चिन्ता में पड़ गया कि हुमायूँ सरीखा पादशाह विश्वासघाती आकाश के कुचक्र के कारण इस क्षेत्र में पहुँच गया है और ईश्वर ने उसे ओर पहुँचा दिया है।

शाह तहमास्प द्वारा हुमायूँ का स्वागत

उसने अपने समस्त प्रतिष्ठित एवं सम्मानित लोगों, सर्वसाधारण, छोटे तथा बड़े लोगों को हजरत पादशाह के स्वागतार्थ भेजा। इन लोगों ने हलमन्द नदी पर स्वागत किया। शाह ने अपने भाइयों बहराम मीर्ज़ा, अलकास मीर्ज़ा एवं साम मीर्ज़ा को स्वागतार्थ भेजा। इन लोगों (६०) ने आकर अभिवादन किया और वे आदर सम्मान से हजरत को ले गए। जब वे निकट पहुँचे तथा शाह के भाइयों ने शाह को समाचार भेजे तो शाह स्वयं सवार होकर हजरत के स्वागतार्थ पहुँचा। एक दूसरे से भेंट हुई। दोनों सम्मानित बादशाहों की मित्रता, बादाम के एक छिलके की दो गिरियों के समान हो गई। दोनों में इतनी निष्ठा तथा इतना मेल हो गया था कि थोड़े दिन तक जब तक हजरत वहाँ रहे, शाह अधिकांश हजरत के स्थान पर आना जाना रहा और जिस दिन शाह न आता था हजरत जाते थे।

हुमायूँ द्वारा सैर व शिकार

जब तक वे खुरासान में रहे तो प्रत्येक उद्यान एवं वाटिका, जिनको सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा ने निर्माण कराया था, एवं पहिले के भव्य भवनों इत्यादि का निरीक्षण किया। जब तक वे एराक में रहे तो आठ बार शिकार के लिए गए। जब वह[4] शिकार को जाता था तो हर बार हजरत से कष्ट करने का आग्रह करता था। हमीदा बानो बेगम कजावे अथवा महाफे[5] में दूर से तमाशा देखती थी। शाहजादा सुल्तानम शाह की बहिन घोड़े पर सवार होकर, शाह के पीछे खड़ी रहती थी। हजरत कहते थे कि शिकार में शाह के पीछे एक स्त्री घोड़े पर सवार रहती थी। उसके घोड़े की लगाम एक सफेद दाढ़ी वाला वृद्ध पकड़े खड़ा रहता था। लोगों ने मुझे बताया कि वह शाह की बहिन, शाहजादा सुल्तानम होती थी।

संक्षेप में, शाह ने हजरत के प्रति अत्यधिक कृपा एवं उदारता प्रदर्शित की और अपनी बहिन को आदेश दिया कि वह माताओं तथा बहिनों के समान हमीदा बानो बेगम के प्रति कृपा दृष्टि

१ कामरान ने काबुल, गजनी, कन्धार, सुलतान, तथा बदख्शा पर अधिकार जमा लिया था। अस्करी ने, मीर्ज़ा कामरान की पूर्ण रूप से सहायता करने निश्चय कर ली थी। हिन्दाल को मीर्ज़ा कामरान ने काबुल में बन्दी बना लिया था। शेर शाह ने हिन्दुस्तान पर तथा शाह हुसेन मीर्ज़ा ने सिन्ध पर अधिकार जमा लिया था अतः हुमायूँ के पास अब कोई अन्य स्थान न रहा था।

२ दिसम्बर १५४३ ई०।

३ शाह तहमास्प सफवी।

४ शाह तहमास्प सफवी।

५ बन्द पालकी।

प्रदर्शित किया करे और उनका दुख दर्द बटाया करे।

हमीदा बानो बेगम की दावत

एक दिन शाहज़ादा गुल्तानम ने हमीदा बानो बेगम के आतिथ्य का प्रबन्ध किया। शाह ने अपनी बहिन से कहा कि, "जब दावत करो तो नगर के बाहर सभा करो।" नगर से दो कुरोह पर खेमा, खरगाह, एवं बारगाह एक उत्तम मैदान में लगवाये गए, चत्र[1] एवं ताक[2] भी लगवाये गए। खुरासान एवं उस क्षेत्र में सरापरदे[3] लगाये जाते हैं। किन्तु उन्हें पीछे नहीं लगाया जाता। हजरत पादशाह गोलाई में हिन्दुआना[4] के समान सरापरदे लगवाते थे। शाह के आदमियों ने खरगाह, बारगाह, चत्र एवं ताक लगवा कर चारों ओर रंग बिरंगी चिगे[5] गोलाई में लगवा दी थी। शाह की समस्त रिश्तेदार स्त्रियाँ, फुफियाँ (चचियाँ), बहिनें, अन्त पुर की बेगमें, खानों, सुल्तानों एवं अमीरों की (७०) पत्नियाँ, लगभग १,००० स्त्रियाँ उपस्थित थी। सभी सज बनाव-सिंगार किए थी।

उस दिन शाहज़ादा सुल्तानम ने हमीदा बानो बेगम से पूछा कि, "हिन्दुस्तान में भी ऐसे ही चत्र एवं ताक होते हैं?" बेगम ने उत्तर दिया कि, "खुरासान को दो दाग[6] कहते हैं और हिन्दुस्तान को चार दाग। जो चीजें दो दाग में मिलती हैं वे चार दाग में अवश्य ही प्राप्त होंगी[7]।" शाह सुल्तानम ने जो कि शाह की बहिन थी अपनी फुफी के प्रश्न के उत्तर में हमीदा बानो बेगम की बात का समर्थन करते हुए कहा कि, "फुफी! बड़े आश्चर्य की बात है कि आप यह कह रही हैं? दो दाग कहां और चार दाग कहाँ? जाहिर है कि यहां से अच्छे तथा उत्तम ही मिलते होंगे।" दिन भर भली-भाँति एवं बड़े उत्तम ढंग से सभा होती रही। भोजन के समय अमीरों की समस्त स्त्रियाँ खड़ी हुई भोजन कराती रही। शाह के अन्त पुर की बेगमें शाहज़ादा सुल्तानम के समक्ष भोजन रखती जाती थी। जरदोजी के टुकड़े इत्यादि जो भी वस्तुएँ उपलब्ध[8] थी उनसे हमीदा बानो बेगम का आतिथ्य किया गया। शाह ने स्वयं जाकर सोने के समय की नमाज तक पादशाह के घर में समय व्यतीत किया। जब उसने सुना कि हमीदा बानो बेगम अपने घर आ गई हैं तो वह पादशाह के पास से उठकर अपने घर चला गया। इस प्रकार वह उनका अत्यधिक ध्यान रखता तथा उनकी खातिर मदारात करता रहता था।

१ छत्र के समान खेमे अथवा बड़े बड़े छाते जो भूमि पर दस्ता गाड़ कर लगा दिये जाते हैं।

२ मेहराब दार खेमे।

३ घेरने के लिये कनात।

४ हिन्दुआना का अर्थ, तरबूज, कलींदा, मामफल, चित्रफल, फल रान होता है। सम्भवतः यहा पर इन्हीं फलों की आकृति की गोलाई से तात्पर्य है। मिसेज बेवरिज ने इसका अनुवाद 'ह दू फैशन' किया। निश्चय रूप से गुलबदन बेगम का तात्पर्य बताना कठिन है किन्तु " हिन्द फैशन" अथवा "हिन्दुओं की प्रथानुसार" भी इस शब्द का अनुवाद किया जा सकता है।

५ चिकें।

६ दांग का अर्थ 'दिशा अथवा तरफ' है। दो दाग का अर्थ वह स्थान जहा दोनों दिशायें हों। चार दाग का अर्थ वह स्थान है जिसमें चारों दिशायें सम्मिलित हों। संसार को सामान्य रूप से 'चार दागे आलम' कहते हैं।

७ हमीदा बानो बेगम ने जिस कुशलता से हिन्दुस्तान की विशेषता सिद्ध की है वह उसकी योग्यता एवं विवेक का प्रमाण है।

८ भोजन के बीच में सजावट के इस उल्लेख ने इन वाक्यों को बड़ा ही संदिग्ध बना दिया है।

(७२) पास एक टोपी है। सोने के समय वह कभी उसे अपने सिर के नीचे और कभी बगल के पास रख लेता है।" ख्वाजा मुअज्जम समझ गया और उसने अपने हृदय में विश्वास कर लिया कि, 'लाल ख्वाजा गाजी के पास हैं और उसने उसी टोपी में छिपाये हैं।" उसने हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित होकर निवेदन किया कि, "मुझे पता चला है कि ख्वाजा गाजी की टोपी में लाल हैं। मैं उन्हें उसमें एक प्रकार से ले सकता हूँ, यदि ख्वाजा गाजी हज़रत की सेवा में उपस्थित होकर मेरे विरुद्ध फरियाद करे तो आप मुझसे कुछ न कहे।" हज़रत सुनकर मुस्कुराये।

ख्वाजा मुअज्जम वहाँ से जाकर ख्वाजा गाजी से विनोद एवं परिहास करने लगा। ख्वाजा गाजी ने हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित होकर निवेदन किया कि, "मैं परदेसी हूँ, किन्तु मैं प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्ति हूँ। परदेस में ख्वाजा मुअज्जम जो बालक है, मुझसे विनोद एवं परिहास करके मेरा अपमान करता है।" हज़रत पादशाह ने कहा कि, 'वह किसी से नहीं करता, बच्चा है, कोई बात हृदय में आई होगी और उसने स्नेहवश धृष्टता प्रदर्शित की होगी। तुम कोई चिन्ता मत करो। वह बालक है।"

दूसरे दिन ख्वाजा गाजी पहुचकर दीवानखाने में बैठा था। ख्वाजा मुअज्जम ने उसे असावधान करके अचानक उसके सिर से टोपी उतार ली। अद्वितीय लाल टोपी में मिल गए। हज़रत पादशाह एवं हमीदा बानो बेगम के समक्ष ले जाकर उसने रख दिए। हज़रत मुस्कराये और हमीदा बानो बेगम प्रसन्न हो गईं तथा ख्वाजा मुअज्जम को शाबाशी देते हुए उसके प्रति शुभ-कामनायें की।

शाह तहमास्प एवं हुमायूं में बिगाड़

ख्वाजा गाजी एवं रोशन कोका अपनी दुष्टता पर लज्जित होकर शाह के पास पहुँचे और उससे कुछ गुप्त बातें कहीं। कुछ बातें यहाँ तक कहीं जिससे शाह कुपित हो गया। हज़रत पादशाह को ज्ञात हो गया कि शाह की निष्ठा एवं उसका विश्वास पूर्व की भाँति नहीं रहा। तत्काल जो कुछ लाल एवं जवाहिरात उनके पास थे, शाह के पास भेज दिए। शाह ने पादशाह को कहलाया कि, 'यह ख्वाजा गाजी एवं रोशन कोका का अपराध है कि हमारा आपसे बिगाड़ करा दिया अन्यथा हम आपको अपना सम्बन्धी समझते हैं।" पुनः दोनों पादशाहों में मेल हो गया और दोनों के हृदय (७३) साफ हो गए।

हुमायूं का रोशन कोका तथा ख्वाजा गाजी को शाह को सौंपना

वे दोनों हरामखोर पादशाह की दृष्टि से गिर गए और उन दोनों को पादशाह ने शाह को सौंप दिया। उसने उन लालों को जिस प्रकार तथा जिस समय सम्भव हुआ ले लिया।[1] उन लोगों के विषय में आदेश दिया कि उन्हें बन्दी बना दिया जाय।

हुमायूं का क़न्धार की ओर प्रस्थान

हज़रत पादशाह जब तक एराक में रहे तब तक प्रसन्नतापूर्वक समय व्यतीत करते रहे और शाह नाना प्रकार से उनका जी बहलाता रहा। नित्य-प्रति वह विचित्र प्रकार के उपहार तथा

१ सम्भवतः वह लाल जो इन लोगों ने बेच दिये थे।

तोहफे हजरत पादशाह की सेवा में भेजता था। अन्ततोगत्वा अपने पुत्र का खाना, सुल्ताना एवं अमीरों के साथ हजरत पादशाह की कुमक हेतु नियुक्त कर दिया। ईरान से उनकी इच्छानुसार खरगाह बारगाह, चत्र, ताक[1], उत्तम काम के शामियाने, रशमी गिलीम[2], कलाबतू के जलच (अथवा जुलचे), तूशक खाना, खजीना खाना, एवं हर कारखाने, बावर्चीखाने, एवं रिकाबखाने के पादशाहों के सम्मान के योग्य सामान तैयार कराये। शुभ मुहूर्त में दोनों सम्मानित पादशाह एक दूसरे से विदा हुए। वहाँ से हजरत पादशाह कन्धार की ओर रवाना हुए।

हजरत पादशाह ने उस समय शाह से उन दोनों कृतघ्नों के अपराध क्षमा कर देने की प्रार्थना की और उन्हें भी अपने साथ लेकर कन्धार की ओर चल दिये।

मीर्ज़ा अस्करी द्वारा अकबर को काबुल भेजना

मीर्ज़ा अस्करी ने जब सुना कि हजरत पादशाह खुरासान से लौटकर कन्धार आ रहे हैं[3] तो उन्होंने, जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर को मीर्ज़ा कामरान के पास काबुल भेज दिया।[4] मीर्ज़ा कामरान ने उन्हें आका जानम अर्थात् खानजादा बेगम को, जो हमारी फूफी हैं सौंप दिया। उस समय जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह की अवस्था ढाई वर्ष की थी। आका जानम उनकी अत्यधिक देखभाल करती और उन्हें उनसे बड़ा प्रेम था। वे उनके हाथों और पाँवों का चुम्बन लेकर कहती थीं कि "मानो मेरे भाई बाबर पादशाह के हाथ और पाँव के समान ही हैं और दोनों एक दूसरे से बड़े अधिक मिलते जुलते हैं।'

खानजादा बेगम का कामरान के आग्रह पर कन्धार की ओर प्रस्थान

(७४) हजरत पादशाह के कन्धार में आगमन के समाचार प्रामाणिक रूप से ज्ञात हो जाने के उपरान्त मीर्ज़ा कामरान ने हजरत खानजादा बेगम से अत्यधिक विनयपूर्वक आग्रह किया कि "आप स्वयं पादशाह के पास कन्धार जायं और हममें संधि करा दें।" हजरत खानजादा बेगम ने वहाँ से चलते समय अकबर पादशाह को मीर्ज़ा कामरान को सौंप दिया। मीर्ज़ा कामरान ने उन्हें अपनी पत्नी खानम के सिपुर्द कर दिया। वे शीघ्रातिशीघ्र कन्धार पहुँचीं।

हुमायूं द्वारा कन्धार विजय

हजरत पादशाह जब कन्धार पहुँचे तो ४० दिन तक मीर्ज़ा कामरान एवं मीर्ज़ा अस्करी को कन्धार में घेरे रहे[5]। (हजरत ने) बैराम खां को राजदूत नियुक्त करके मीर्ज़ा कामरान के पास भेजा[6]। मीर्ज़ा अस्करी ने विवश होकर अपने अपराधों की क्षमा याचना की और बाहर निकलकर हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुए। हजरत पादशाह ने कन्धार को विजय कर लिया और उस पर अधिकार जमाकर शाह के पुत्र को सौंप दिया। कुछ दिन उपरान्त शाह का पुत्र रुग्ण होकर मर गया। हजरत पादशाह ने कन्धार को बैराम खां के आगमन के उपरान्त उसे सौंप दिया।

१ सम्भवतः तुग।
२ गिलीम का अर्थ कम्बल एवं कालीन दोनों होता है। यहाँ कालीन से तात्पर्य है।
३ १५४५ ई०।
४ अकबर तथा बख्शी बानो बेगम दोनों ने साथ साथ बर्फ में काबुल की ओर प्रस्थान किया।
५ यह सूचना ठीक नहीं।
६ बैराम खां ने काबुल में कामरान, हिन्दाल, सुलेमान, इब्राहीम एवं यादगार नासिर इत्यादि से भेंट की।

खानजादा बेगम की मृत्यु

हमीदा बानो बेगम को भी कन्धार में छोडकर वे मीर्ज़ा कामरान के पीछे रवाना हुए। आका जानम खानजादा बेगम को, जो साथ थी, कवलचक नामक स्थान पर पहुँचने के उपरान्त तीन दिन ज्वर आता रहा। चिकित्सकों ने अत्यधिक उपचार किया किन्तु कोई लाभ न हुआ। ९५१ हि० (१५४४-४५ ई०) मे चौथे दिन उनका निधन हो गया। कवलचक ही के पडाव पर उनको दफन कर दिया गया। तीन मास उपरान्त लाश को ले जाकर मेरे बाबा हजरत पादशाह के मकबरे में दफन किया गया[1]।

मीर्ज़ा कामरान का हज़ारा लोगो पर आक्रमण

मीर्ज़ा कामरान जितने वर्षों तक काबुल में रहे, कभी आक्रमण हेतु न निकले थे। हजरत पादशाह के अचानक पहुँचने के समाचार सुनकर उस समय उन्हे आक्रमण करने की इच्छा हुई और वे (मीर्ज़ा कामरान) हज़ारा की ओर आक्रमण करने गये थे।

हुमायूं एवं मीर्ज़ा का मुक़ाबला

इसी बीच मे मीर्ज़ा हिन्दाल ने, जो दरवेशो के समान एकान्तवास ग्रहण कर चुके थे, हजरत पादशाह के एराक तथा खुरासान से लौटने एव कन्धार विजय के समाचार पाकर अवसर से लाभ उठाते हुए मीर्ज़ा यादगार नासिर को बुलवाकर कहा कि, "पादशाह ने कन्धार पहुँचकर उसे विजय कर लिया है। मीर्ज़ा कामरान ने खानजादा बेगम को सधि हेतु भेजा था। पादशाह ने उस प्रकार (७५) सधि स्वीकार न की। हजरत पादशाह ने बैराम खा को दूत बनाकर भेजा था। मीर्ज़ा कामरान ने बैराम खा की बात स्वीकार न की। इस समय पादशाह कन्धार को बैराम खा को सौंपकर काबुल की ओर रवाना हुए है। आओ हम लोग आपस मे सगठित होकर तथा आपस में प्रतिज्ञा करके किसी न किसी प्रकार हजरत पादशाह तक पहुँच जाय।" मीर्ज़ा यादगार नासिर ने स्वीकार कर लिया। दोनों ने मिलकर यह योजना बनाई। मीर्ज़ा हिन्दाल ने कहा कि, "तुम भाग खडे हो। मीर्ज़ा कामरान जब सुनेगा तो वह नि सन्देह मुझसे कहेगा कि यादगार नासिर भाग गया है। तुम उसे सांत्वना देकर ले आओ। मेरे आगमन के समय तक तुम धीरे धीरे यात्रा करना। जब मैं आ जाऊँगा तो हम लोग साथ साथ शीघ्रातिशीघ्र हजरत पादशाह की सेवा में पहुँच जायेंगे।" इसी निश्चय के अनुसार मीर्ज़ा यादगार नासिर भाग गया। मीर्ज़ा कामरान को सूचना हुई। मीर्ज़ा कामरान तत्काल लौटकर काबुल पहुँचे। मीर्ज़ा हिन्दाल को बुला कर कहा कि, "तुम जाकर मीर्ज़ा यादगार नासिर को सात्वना देकर ले आओ।" वह तत्काल सवार हुए और शीघ्रातिशीघ्र उसके पास पहुँच कर उसके साथ हो लिये। वे बडी तेजी से यात्रा करते हुए ५-६ दिन में हजरत की सेवा में पहुँच कर सम्मानित हुए। हजरत से निवेदन किया कि "खिमार दर्रे के मार्ग से प्रस्थान करना चाहिये।"

मीर्ज़ा कामरान का पलायन

९ रमजान ९५१ ई० (२४ नवम्बर १५४४ ई०) को उन्होने खिमार दर्रे में पडाव किया। उसी दिन मीर्ज़ा कामरान को समाचार प्राप्त हुए। मीर्ज़ा कामरान बडे व्याकुल हुए। तत्काल उन्होने

१ खानजादा बेगम, मह्दी ख्वाजा तथा अकुल मआली एक ही स्थान पर दफन है।

खेमे निकलवा कर गुजरगाह[1] के समक्ष पडाव किया। हजरत पादशाह ११ रमजान को तीपा नामक जलगा[2] में ठहरे। मीर्ज़ा कामरान भी आकर युद्ध के उद्देश्य से सामने उतर पडे। इसी बीच में मीर्ज़ा (७६) कामरान के समस्त अमीरों तथा सैनिकों ने भागकर हजरत पादशाह के चरणो के चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया। कापूस[3], जो मीर्ज़ा कामरान का प्रतिष्ठित अमीर था, अपनी सेना सहित भागकर हजरत के चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। मीर्ज़ा कामरान अकेले रह गए। जब उन्होंने देखा कि मेरे आसपास कोई नहीं रह गया है तो उन्होंने कापूस, के जो उनका प्रतिष्ठित अमीर था, घर के द्वार एवं दीवार नष्ट करा दिए और धीरे धीरे बागे नवरोज़ी एवं गुलरुख़ बेगम[4] के मकबरे से होते हुए अपने १२,००० अश्वारोहियों को त्यागकर चल दिए। जब अंधेरा हो गया तो उसी मार्ग से बाया दश्ती पहुँचकर काल[5] के समक्ष ठहर गए। दोस्ती कोका एवं जूकी खान को इस आशय से भेजा कि उसकी बडी पुत्री हबीबा बेगम, उसके पुत्र इबराहीम सुल्तान मीर्ज़ा, ख़िज्र[6] खां की भतीजी हज़ारा बेगम[7], हरम बेगम[8] की बहिन माह बेगम[9] एवं हाजी बेगम की माता मेहर अफरोज बेगम, बाकी कोका[10] इत्यादि को ले आयें। ये लोग मीर्ज़ा कामरान के पास पहुंच गये। मीर्ज़ा थत्ता एवं बक्खर की ओर रवाना हुए। ख़िज्र खां (हज़ारा) के राज्य में, जो बक्खर के मार्ग में है, उन्होंने हबीबा बेगम का निकाह आक सुल्तान से कर दिया और स्वयं बक्खर की एवं थत्ता की ओर चल दिये।

हुमायूं का काबुल पहुँचना

हज़रत पादशाह ने उसी मास की १२ तारीख की रात्रि में पांच घडी उपरान्त विजय प्राप्त करके बाला हिसार[11] में कुशलतापूर्वक पडाव किया। मीर्ज़ा कामरान के आदमी, जो सेवा में उपस्थित होकर सम्मानित हो चुके थे, नक्कारे बजाते हुए हज़रत के साथ काबुल में प्रविष्ट हुए। १२ तारीख[12] को मेरी माता दिल्दार बेगम, गुलचेहरा बेगम तथा यह तुच्छ हज़रत की सेवा में उपस्थित हुईं। क्योंकि पांच वर्ष से हम उनकी सेवा से वंचित थे और वियोग के कष्ट भोग रहे थे अतः उससे मुक्त होकर अपने आश्रयदाता की भेंट द्वारा सम्मानित हुए। उनके दर्शन-मात्र से हमारे दुखी हृदय को प्रोत्साहन एवं नेत्रों को ताज़ा प्रकाश प्राप्त हो गया। प्रसन्नतापूर्वक हम हर समय शुक्र के सिज्दे करते रहते थे।

१ सम्भवतः बाबर का मकबरा।
२ चौरस मैदान।
३ इसे 'बकूस' भी लिखा गया है। वह यामीन दौलत (आक सुल्तान) का अतालीक था।
४ सम्भवतः उसकी माता, प्रकाशित पोथी में 'गुल बर्ग बेगम'
५ झील, तालाब।
६ ख़िज्र खां हजारा।
७ सम्भवतः मीर्ज़ा कामरान की पत्नी।
८ ख़ुर्रम बेगम।
९ सम्भवतः मीर्ज़ा कामरान की पत्नी।
१० सम्भवतः अदहम खां का बडा भाई एवं माहम अनगा का पुत्र।
११ इसका अर्थ 'किले के ऊपर" भी हो सकता है।
१२ १२ रमजान ९५१ हि० (२७ नवम्बर १५४४ ई०)।

आनन्द-मगल

(७७) अधिकाश समय महफिलें एव समायें[1] होती रहती थी। लोग रात-रात भर प्रात काल तक बैठे रहते। वादक एव गायक सर्वदा गाया बजाया करते थे। प्राय हँसी मज़ाक के खेल होते रहते। उनमें से एक यह था —१२ आदमियो में से प्रत्येक को २०-२० पत्ते एव २०-२० शाहरुखियाँ दे दी जाती थी। जो कोई हारता, वह बीसो शाहरुखी हार जाता। ये ५ मिस्काल[2] के बराबर होती थी। प्रत्येक खिलाडी जीतने वाले को अपनी बीसो शाहरुखियाँ दे देता था[3]।

इनाम-इकराम

जो लोग चौसा, कन्नौज एव बक्सर के युद्ध तथा हलचल के समय हज़रत जहाँबानी की ओर से मारे गए अथवा घायल हुए उनकी विधवाओ, अनाथो एव उनके परिवार वालो को वजीफा, भोजन, जल, भूमि एव सेवक प्रदान किए गए। हज़रत जहाँबानी के भाग्यशाली समय में सैनिको एव प्रजा को अत्यधिक आराम एव समृद्धि प्राप्त हो गई। वे सर्वदा चैन से जीवन व्यतीत करते तथा उनके दीर्घायु होने के लिये ईश्वर से शुभ-कामनायें किया करते थे।

हमीदा बानो बेगम को बुलवाना

कुछ दिन उपरान्त हमीदा बानो बेगम को बुलाने के लिए कन्धार आदमी भेजे। हमीदा बानो बेगम के आने पर जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह के खत्ने का समारोह किया गया। सुन्नत के समारोह की तैयारी की गई।

आनन्द-मगल

नवरोज़ के उपरान्त १७ दिन तक जश्न होता तथा हरे वस्त्र धारण किए जाते रहे। लगभग ३०-४० युवतियो को आदेश होता कि हरे वस्त्र धारण करके पर्वत पर पहुँचें। नवरोज़ के पहिले दिन वे हफ्तदादरान[4] की पहाडी पर पहुँच गए और अधिकाश समय आनन्द मगल में व्यतीत किया।

अकबर का खत्ना

जब मुहम्मद अकबर पादशाह ५ वर्ष के हुए तो काबुल नगर में खत्ने का जश्न हुआ। उसी भव्य दीवानखाने[5] में सुन्नत[6] का समारोह मनाया गया। समस्त बाजार सजाये गए। मीर्ज़ा हिन्दाल, मीर्ज़ा यादगार नासिर एव सुल्तानो तथा अमीरो ने आकर्षक स्थानो को खूब-खूब सजाया[7] था।

१ 'मारेका व मजालिस'।
२ एक शाहरुखी लगभग १० पैंस के बराबर होती थी। ४ शाहरुखी में एक मिस्काल होता था।
३ **बाबर नामा** द्वारा पता चलता है कि बाबर ने अगस्त १५२७ ई० में मीर अली कूरची के हाथ शाह हसन (हुसैन) अरगून के पास गजीफा भिजवाया था। (**बाबर नामा**, पृ० २५८)।
४ 'हफ्त ब्रादरान (सात भाईयों)'।
५ इसी दीवानखाने में पानीपत विजय का समारोह मनाया गया था। [गुलबदन बेगम **हुमायूं नामा**, पृ० १३, (**मुगल कालीन भारत—बाबर**, पृ० ३६४)]।
६ खत्ने।
७ 'आईन-बन्दी'।

वेगा वेगम के उद्यान में, वेगमो एव स्त्रिया ने अपने अपने स्थानो को बडे ही उत्तम ढग से सजाया था। समस्त मीर्जा एव अमीर लोग उसी दीवानखाने के उद्यान मे उपहार लाये। बडे उत्तम (७८) समारोह एव सुन्दर जश्न हुए। लोगो को बहुमूल्य खिलअतें एव अत्यधिक सरोपा प्रदान हुए। प्रजा, आलिम, एव पवित्र लोग, फकीर, दरिद्र, प्रतिष्ठित, सर्वसाधारण एव छोटे और बडे रात दिन आनन्द-मगल मे समय व्यतीत करते रहे।

हुमायू द्वारा किलये जफर की विजय

तदुपरान्त वे किलये जफर की ओर रवाना हुए। उस किले मे मीर्जा सुलेमान थे। वह युद्ध हेतु निकले। जब युद्ध हुआ तो वह मुकाबला न कर सके और भाग खडे हुये। हजरत पादशाह स्वय किलये जफर में पहुँचे।

किश्म में हुमायू का रुग्ण होना

वहाँ से पादशाह किश्म पहुँचे। वहाँ कुछ समय के लिए वे अस्वस्थ हो गए। वे दिन रात अचेत रहते। जब उन्हे चेत हुआ तो मुनइम खा के भाई फजाएल बेग को इस आशय से काबुल भेजा कि वह जाकर काबुल वालो को सात्वना एव प्रोत्साहन दे। उनको इस प्रकार सतुष्ट कर दे कि वे अस्त व्यस्त न हो, और वह दे

मिसरा

'आई थी मुसीबत किन्तु कुशलतापूर्वक समाप्त हो गई।'

हुमायू का काबुल की ओर प्रस्थान

फजाएल बेग के काबुल चले जाने के उपरान्त वे काबुल की ओर एक दिन की यात्रा की दूरी पर अग्रसर हुए[१]।

मीर्जा कामरान का काबुल पहुँचना

काबुल से बक्खर में मीर्जा कामरान के पास झूठे समाचार पहुँचे। मीर्जा कामरान तत्काल बक्खर से शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए काबुल की ओर रवाना हुए। पहुँच कर[२] जाहिद बेग की हत्या कर दी और काबुल की ओर चल खडे हुए।

मीर्जा कामरान का काबुल पर अधिकार

प्रात काल का समय था। काबुल वाले असावधान थे। द्वार पूर्व की भाँति खोले गए। जल एव घास लाने वाले आते जाते थे। वे इन्ही साधारण लोगो के साथ किले मे प्रविष्ट हो गए। मुहम्मद अली तगाई की, जो हम्माम में था, तत्काल हत्या कर दी तथा मुल्ला अब्दुल खालिक के मदरसे में पडाव किया।

मीर्जा कामरान का बेगमों के प्रति अत्याचार

जिस समय हजरत जहाँबानी किलये जफर की ओर प्रस्थान कर रहे थे, नौकार को

१ यह वाक्य बड़ा ही अस्पष्ट है।
२ 'गजनी पहुँच कर' होना चाहिये।

(७९) अन्त पुर के द्वार पर नियुक्त कर गये थे। मीर्ज़ा कामरान ने पूँछा कि "बालाये हिसार पर कौन है?" किसी ने कहा, "सम्भवत नौकार है।" नौकार यह समाचार पाकर तत्काल स्त्रियों के वस्त्र धारण करके बाहर निकल गया। मीर्ज़ा कामरान के आदमियों ने किले के द्वारपालों को वन्दी बना लिया और मीर्ज़ा कामरान के समक्ष ले गए। उन्होंने आदेश दिया कि, "इन्हे बन्दी बना दो।" तदुपरान्त मीर्ज़ा कामरान के आदमी बालाये हिसार पर पहुँचे। अन्त पुर की स्त्रियों की अत्यधिक धन सम्पत्ति लूट कर नष्ट-भ्रष्ट कर दी और उन्हें मीर्ज़ा कामरान की सरकार में पहुँचा दिया। बडी बेगमा को मीर्ज़ा अस्करी के घर पहुँचा दिया गया। उस घर के द्वार पत्थर गारे एव चूने द्वारा बन्द कर दिए गए। उस घर की चहार दीवारी के ऊपर से बेगमा को अन्न-जल दिया जाता था।

हुमायू के सहायकों के परिवार के प्रति अत्याचार

जिस घर मे मीर्ज़ा यादगार नासिर रहा करता था, वहाँ ख्वाजा मुअज्ज़म को रखा। जिस स्थान पर हज़रत (जहाँबानी) के अन्त पुर की महिलायें एव अन्य बेगमे रहती थी, वहाँ उन्होने अपने परिवार वालो को रख दिया। जो पदाधिकारी भाग कर हज़रत जहाँबानी की सेवा मे चले गए थे, उनके परिवार के प्रति उन्होने बडा दुर्व्यवहार किया। उनमें से प्रत्येक के घर को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। प्रत्येक के परिवार को किसी न किसी को सौंप दिया।

हुमायू का काबुल की ओर प्रस्थान

जब हज़रत जहाँबानी ने सुना कि मीर्ज़ा कामरान ने कक्खर में पहुँचकर ऐसे कार्य किए है, तो हज़रत जहाँबानी पुन किलये जफ़र एव अन्दराब से स्वय कुशलतापूर्वक काबुल की ओर रवाना हुए तथा किलये जफ़र, मीर्ज़ा सुलेमान को प्रदान कर दिया।

मीर्ज़ा कामरान का गुलबदन बेगम से अपने पति को पत्र लिखने का आग्रह

जब हज़रत जहाँबानी काबुल के समीप पहुँचे तो मीर्ज़ा कामरान ने मेरी माता एव मुझे घर बुलवाया। मेरी माता को आदेश दिया कि वे कूकेगी के घर मे रहे। मुझे आदेश दिया कि, "यह तुम्हारा ही घर है।[१] यही रहो।" मैने कहा, "यहाँ किस लिए रहूँ? जहाँ मेरी माता रहेगी वही मैं रहूँगी।" उन्होने मुझे उत्तर दिया कि, 'तुम खिज़्र ख्वाजा[२] खा को पत्र लिख दो कि वह मुझसे मिल जाय और किसी प्रकार की चिन्ता न करे। जिस प्रकार मीर्ज़ा अस्करी एव मीर्ज़ा हिन्दाल (८०) मेरे भाई है वह भी मेरा भाई है और यह सहायता का समय है।" मैंने उन्हे उत्तर दिया, "खिज़्र ख्वाजा खा मेरे पत्र को नही पहिचान सकते। मैंने उन्हे कभी पत्र भी नही लिखा है। जब वे बाहर होते हैं तो वे अपने पुत्र की ओर से लिखते है। आपके हृदय में जो आये लिख दें।"

खिज़्र ख्वाजा खां का हुमायू की सेवा में पहुँचना

अन्ततोगत्वा महदी सुल्तान[३] एव शेर अली को (मीर्ज़ा कामरान ने) खान को बुलवाने के लिए भेजा। मैंने खान से प्रारम्भ ही में कह दिया था, "आपके भाई मीर्ज़ा कामरान के साथ होंगे।

१ मीर्ज़ा कामरान ने गुलबदन बेगम को अपने साथ रखना निश्चय करके अपने घर को उसका घर बताया।

२ गुलबदन बेगम का पति।

३ खिज़्र ख्वाजा खाँ तथा यासीन दौलत (आक़ सुल्तान) का भाई।

आप कदापि यह विचार न करें कि उनसे (हुमायूँ से) पृथक् हो कर अपने भाइयों से मिल जायें। कदापि-कदापि हजरत से पृथक् होने का विचार न कीजियेगा।" ईश्वर को धन्य है मैंने जैसा कहा था, खान ने उसके विरुद्ध कुछ न किया।

हजरत पादशाह ने जब यह सुना कि महदी सुल्तान एवं शेर अली को मीर्जा कामरान ने खिज्र खाँ को बुलाने के लिए भेजा है तो हजरत ने भी मीर्जा हाजी के पिता कम्बर बेग को खिज्र खाँ को बुलाने के लिए भेजा। उस समय खान अपनी जागीर में था। उसे कहला भेजा गया कि, हरगिज-हरगिज मीर्जा कामरान के पास न जाना। हमारी सेवा में आ जाओ।' अन्ततोगत्वा खिज्र ख्वाजा खाँ यह समाचार एवं सुखद सन्देश सुनते ही आकाश रूपी दरबार की ओर रवाना हुआ और उकाबैन में पहुँच कर अभिवादन किया।

मीर्जा कामरान की एक सेना की पराजय

जब हजरत मीनार[1] पार कर चुके तो इसी बीच में मीर्जा कामरान ने शीरोया के पिता शेर अफगान[2] के अधीन अपनी सेना सुव्यवस्थित करके इस आशय से भेजी कि वह आगे जाकर युद्ध करे। हम लोग ऊपर[3] से देख रहे थे कि वह नक्कारा बजाता हुआ बाबा दश्ती के आगे रवाना हुआ। हम कहते जाते थे कि, "ईश्वर न करे कि तू जाकर युद्ध कर सके," और रोते जाते थे।

अन्ततोगत्वा जब वह देहे अफगानान[4] के पास पहुँचा तो दोनों ओर की सेनाओं के करावलों में युद्ध हुआ। हजरत पादशाह के करावलों ने मीर्जा के करावलों[5] को पराजित कर दिया। अधिकांश लोग बन्दी होकर हजरत के समक्ष लाये गए। हजरत ने मुगलों को आदेश दिया कि, 'उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाय।" मीर्जा कामरान के अधिकांश आदमी जो युद्ध हेतु गए थे, पादशाही (८१) आदमियों द्वारा बन्दी बना लिये गए। हजरत ने कुछ की हत्या करा दी और कुछ को बन्दी बनवा दिया। उन्हीं में मियां जूकी नामक मीर्जा कामरान का एक अमीर भी बन्दी बना लिया गया।

हुमायूँ का उकाबैन पहुँचना

हजरत पादशाह विजय एवं सफलता की खुशी में बाजे बजवाते हुए बड़े ऐश्वर्य एवं वैभव से उकाबैन में प्रविष्ट हुए। मीर्जा हिन्दाल उनकी सेवा में थे। हजरत पादशाह ने अपने लिए खेमे, खरगाह एवं बारगाह लगवाये। मीर्जा हिन्दाल को मस्तान पुल[6] के मोर्चों पर नियुक्त किया। अमीरों ने भी जगह जगह पर मोर्चे लगा दिए।

१ मीनार पहाड़ी।
२ कूच बेग का पुत्र, कूच बेग चौसा के युद्ध में बेगा बेगम की रक्षा करते हुआ मारा गया।
३ अरक के ऊपर से जहाँ बेगमें थीं।
४ अफगानों के ग्राम।
५ सेना का अग्र भाग जो मुख्य सेना के आगे आगे शत्रुओं का पता लगाने एवं अन्य प्रबन्धों के उद्देश्य से प्रस्थान करता है, हरावल।
६ इसके नीचे वह नदी बहती है जो देहे याकूब से आती है।

काबुल के किले का अवरोध

सात मास तक अवरोध होता रहा[१]। संयोग से, एक दिन मीर्ज़ा कामरान हवेली से दालान[२] में जा रहे थे कि किसी ने उकाबैन से बन्दूक (तोप) चलाई। वे भाग कर किनारे हो गए। अकबर पादशाह के लिए आदेश दिया कि उन्हें सामने ले जाकर बैठा दिया जाय[३]। अन्त में किसी ने जाकर सम्मानित सेवा में निवेदन किया कि मीर्ज़ा मुहम्मद अकबर को सामने बैठा दिया गया है। हज़रत (पादशाह) ने आदेश दिया कि किले के ऊपर बन्दूक (तोप) न चलाई जाय। तदुपरान्त पादशाह के आदमी बाला हिसार की ओर बन्दूक चलाते थे। काबुल नगर से मीर्ज़ा कामरान के आदमी उकाबैन से हज़रत (पादशाह) के लश्कर की ओर बन्दूक (तोप) चलाते थे। पादशाह के आदमी मीर्ज़ा अस्करी को अपने सामने खड़ा करके उनसे परिहास करते थे[४]। मीर्ज़ा कामरान के आदमी भी (किले से) निकल कर युद्ध करते थे और दोनों ओर से लोग मारे जाते थे। हज़रत (पादशाह) के अधिकांश आदमी विजय प्राप्त करते थे। कोई भी किले से निकलने का साहस न करता था। हज़रत (पादशाह) बालकों, बेगमों, आदमियों एवं अन्तःपुर की महिलाओं के विचार से तोप एवं जर्बजग[५] नहीं चलाते थे और न घर वालों को कष्ट देते थे।

बेगमों का हुमायूं को सन्देश

जब अवरोध में बहुत समय व्यतीत हो गया (तो बेगमों ने) ख़्वाजा दोस्त ख़ावन्द मदारी[६] को हज़रत पादशाह की सेवा में इस आशय से भेजा कि 'ईश्वर के लिए मीर्ज़ा कामरान जो कुछ कहें, उसे आप स्वीकार कर लें और ईश्वर के दासों को कष्ट से मुक्ति दिला दें[७]।"

हुमायूं का बेगमों को सन्देश

हज़रत पादशाह ने बाहर से उनके लिए ९ भेंड़ें, सात गुलाब जल की बोतलें, एक नीबू जल (८२) की बोतल, ७ तुकूज़ कपड़े के थान और कुछ नीमा दास्ता[८] भेजे और लिखा कि "उन लोगों

१ बाला हिसार का।

२ 'अज़ हवेली दर दालान मी रफ़्त'। मिसेज़ बेवरिज ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है—It happened one day that Mirza Kamran went from his own quarters to the roof (? of the citadel) (मिसेज़ बेवरिज, पृ० १८३)। उपर्युक्त वाक्य का अनुवाद "went from his own quarters to the roof" उचित नहीं। दालान का अर्थ स्टेनगेस ने "A hall, vestibule, a cornered way तथा a corridor" लिखा है।

३ गुलबदन बेगम ने इस घटना का अधिक विस्तार से उल्लेख नहीं किया है।

४ यह वाक्य भी अधिक स्पष्ट नहीं।

५ सम्भवतः जर्बज़न, एक प्रकार की तोप।

६ सम्भवतः शाह मदार के अनुयायी। शाह मदार के चमत्कार की बहुत सी कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। कहा जाता है कि उनका जन्म ७१५ हि (१३१५ ई०) में अलेप्पो में हुआ। वहाँ से विभिन्न स्थानों की यात्रा करते हुये वे हिन्दुस्तान में मकनपुर (कानपुर) पहुँचे। वहीं ८४० हि० (१४३६ ई०) में उनकी मृत्यु हो गई। सुल्तान इब्राहीम शाह शर्की उनका बहुत बड़ा भक्त था और उसी ने उनके मकबरे का निर्माण कराया।

७ यह संदेश उन बेगमों ने भेजा था जो बन्दी थीं।

८ जैकेट के समान छोटा कपड़ा।

के कारण मैं किले में जबरदस्ती नहीं प्रविष्ट होना चाहता। मुझे भय है कि कहीं उनके शत्रुओं को[1] कुछ न हो जाय।"

जहान सुल्तान की मृत्यु

जहान सुल्तान बेगम, जो दो वर्ष की हो गई थी, उसी अवरोध के समय मृत्यु को प्राप्त हो गई। हजरत पादशाह ने लिखा कि, "यदि किले में हम जबरदस्ती प्रविष्ट होना चाहें तो कुछ समय के लिए मीर्जा मुहम्मद अक्बर को छिपा दिया जाय।"

हुमायूं का काबुल में प्रवेश

संक्षेप में, लोग बालाये हिसार में सायंकाल की नमाज से प्रातःकाल तक उपस्थित एवं शोर करते रहते थे। जिस रात्रि को मीर्जा कामरान भाग गए सायंकाल की नमाज समाप्त हो गई अपितु सोने का समय निकल गया किन्तु कोई शोर गुल न हुआ। वहाँ एक ढलवां मार्ग था जहाँ से नीचे वाले ऊपर आते थे। जिस समय नगर वाले आराम से सो रहे थे कि अचानक जीवा, जौशन एवं ज़िरह[2] का शोर होने लगा। हमने एक दूसरे को सूचना दी कि आक्रमण हो रहा है। जिलौखाने[3] में समक्ष लगभग १००० आदमी खड़े थे। हम भी भय-भीत थे। वे लोग अचानक चले गए। कराचा खां के भाई बहादुर खां ने आकर सूचना दी कि 'मीर्जा भाग खड़ा हुआ। ख्वाजा मुअज्जम को दीवार से रस्सी डाल कर ऊपर खींच लिया गया'।

बेगमों का मुक्त होना

हमारे आदमियों एवं बेगमों इत्यादि ने, जो बाहर थीं, उस द्वार को जिसमें हम बन्द थे खोल दिया[4]। बेगा बेगम ने आग्रह किया कि "हम अपने अपने घरों को चली जायें।" मैंने कहा, "क्षण भर शान्त रहो। हमें गली के मार्ग से जाना चाहिये। सम्भवतः हजरत पादशाह के पास से भी कोई आ रहा हो।" इसी बीच में अम्बर नाज़िर आया और कहा कि, "हजरत (पादशाह) ने आदेश दिया है कि 'जब तक मैं न आऊँ, घरों से मत निकलना।'" थोड़ी देर उपरान्त हजरत पादशाह पधारे। दिलदार बेगम एवं मुझसे भेंट की। तदुपरान्त बेगा बेगम एवं हमीदा बानो बेगम से भेंट की और आदेश दिया कि, "शीघ्र इस घर से चली आओ। ईश्वर इस प्रकार के घर में मित्रों को सुरक्षित रक्खे और शत्रुओं को प्रदान करे।" नाज़िर से कहा कि, "तू एक ओर तथा तरदी बेग खां दूसरी ओर से (देख भाल) रक्खें और बेगमें चली जायें।" संक्षेप में, सब निकल आईं। हम लोग उस रात्रि में हजरत (पादशाह) की सेवा में रहे। प्रसन्नता के कारण पूरी रात क्षण भर में समाप्त हो

१ उन्हें।
२ विभिन्न अस्त्र-शस्त्र के एक दूसरे से टकराने एवं खड़खड़ाने का शोर।
३ अश्वशाला।
४ 'दरे कि बालाये मायान कर बाकुर्द बूदन्द, वा कर्दन्द', मिसेज बेवरिज ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है : "took away the door which had kept us fastened in", (मिसेज बेवरिज, पृ० १८५)। 'वा कर्दन्द' का अनुवाद "took away" उचित नहीं। इसे 'खोल देना' होना चाहिये।

(८३) गई। हमने माह चोचक बेगम[1], खानीश आगा[2] एव उन बेगमो से जो हज़रत पादशाह की सेना के साथ आई थी, भेंट की।

माह चोचक के पुत्री का जन्म

जिस समय पादशाह बदख्शाँ मे थे, माह चोचक बेगम के पुत्री का जन्म हुआ। उसी रात्रि मे हज़रत (पादशाह) ने स्वप्न देखा कि "मेरी मामा फख्रुन्निसा[3], एव दौलत बख्त[4] दोनो द्वार से प्रविष्ट हुई हैं और कुछ लाकर उनके पास छोड दिया।" उन्होने बहुत सोच विचार किया और उस स्वप्न की व्याख्या के विषय में पूँछा। अन्त मे उनकी समझ में आया कि क्योकि पुत्री का जन्म हुआ है, अत एक के नाम से निसा एव एक के नाम से बख्त लेकर 'बख्त निसा' नाम रक्खा जाय।

माह चोचक की सन्तान

माह चोचक बेगम के चार पुत्रियाँ[5] एव दो पुत्र हुए। बख्त निसा[6] बेगम, सकीना बानो बेगम[7], आमेना बानो बेगम[8], मुहम्मद हकीम मीर्ज़ा एव 'फर्रुख फाल मीर्ज़ा। जिस समय हज़रत पादशाह हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुए, माह चोचक बेगम गर्भवती थी। काबुल मे उनके एक पुत्र का जन्म हुआ। उसका नाम फर्रुख फाल मीर्ज़ा रक्खा गया।

खानीश आगा की सन्तान

कुछ समय उपरान्त खानीश आगा से एक पुत्र का जन्म हुआ। उसका नाम इबराहीम सुल्तान मीर्ज़ा रक्खा गया। वे पूरे डेढ वर्ष तक काबुल में आनन्द मगल से समय व्यतीत करते रहे।

मीर्ज़ा कामरान के अमीरो का पलायन

मीर्ज़ा कामरान काबुल मे भागकर बदख्शा की ओर रवाना हुए। वह तालीकान में ठहर गए। हज़रत (पादशाह) उश्तर बाग मे थे। प्रातःकाल जब वे नमाज के लिए उठे तो समाचार प्राप्त हुए कि मीर्ज़ा कामरान के अधिकाश अमीर जो हज़रत (पादशाह) की सेवा मे थे, भाग

१ बैराम उगलान एव फरीदू खा काबुली की पुत्री। हुमायू से उसका विवाह १५४६ ई० मे हुआ। बाद में उसने शाह अबुल मआली से काबुल में १५६४ ई० में विवाह कर लिया।

२ जूजक मीर्ज़ा ख्वारज़्मी की पुत्री एव हुमायू की पत्नी तथा इबराहीम की माता जिसकी बाल्यावस्था में ही मृत्यु हो गई। बायज़ीद ने उसे फर्रुख फाल की माता लिखा है किन्तु यह ठीक नहीं। इबराहीम तथा मुहम्मद हकीम का एक ही दिन जन्म हुआ। (१५ जमादि उल अव्वल ९६० हि०/१९ अप्रैल १५५३ ई०)।

३ फख्रुन्निसा अनगा नदीम कोका की माता।

४ सम्भवत दौलत बख्त आगाचा।

५ गुलबदन ने केवल तीन ही के नाम लिखे हैं।

६ उसका जन्म ९५७ हि० (१५५० ई०) में हुआ था। सम्भवत वह तथा फख्रुन्निसा बेगम दोनों एक ही थीं।

७ उसका विवाह नकीब खा कज़वीनी के पुत्र शाह गाज़ी से हुआ।

८ उसके विषय में कहीं कोई उल्लेख नहीं।

खडे हुए। उनमें से कराचा खा, मुसाहिब खा, मुबारिज खा, बापूस[1] एव अधिकाश अभागे रात्रि मे भाग कर बदख्शाँ चले गए और मीर्जा कामरान से मिल गए।

मीर्जा कामरान का आज्ञाकारिता स्वीकार करना

हज़रत पादशाह शुभ मुहूर्त मे बदख्शाँ की ओर रवाना हुए और मीर्जा कामरान को तालीकान मे घेर लिया। कुछ समय उपरान्त मीर्जा कामरान आज्ञाकारिता स्वीकार करके हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुये। हज़रत ने कोलाब मीर्जा कामरान को, किलये जफ़र मीर्जा सुलेमान (८४) को, कन्धार[2] मीर्जा हिन्दाल को एव तालीकान मीर्जा अस्करी को प्रदान कर दिये।

भाइयो की दावत

एक दिन विश्म[3] मे खरगाह लगाये गए एव समस्त भाई एकत्र हुए—हज़रत हुमायूं पादशाह, मीर्जा कामरान, मीर्जा अस्करी, मीर्जा हिन्दाल एव मीर्जा सुलेमान।

हज़रत पादशाह ने कुछ तोरो[4] का, जो बादशाहो के दरबार हेतु निश्चित हैं, आदेश दिया। उन्होने कहा कि, "आफ़ताबा एव चिलाची[5] ले आओ ताकि हाथ धोकर सब एक साथ भोजन करें।" हजरत पादशाह ने अपने हाथ धोये और मीर्जा कामरान ने अपने। मीर्जा सुलेमान[6], मीर्जा अस्करी[7] एव मीर्जा हिन्दाल[8] से अवस्था मे बड़े थे। उनके सम्मान हेतु दोना भाइयो ने आफ़ताबा एव चिलाची, मीर्जा सुलेमान के सामने रखो। हाथ धोने के उपरान्त, सुलेमान ने अपनी नाक से कोई अनुचित कार्य किया। मीर्जा अस्करी एव मीर्जा हिन्दाल ने अत्यधिक क्रोध प्रदर्शित करते हुए कहा, "यह क्या गँवारपन है? सर्व प्रथम हमारा क्या साहस कि हज़रत पादशाह के समक्ष हाथ धोयें, किन्तु इस कारण कि उन्होंने कृपा-दृष्टि प्रदर्शित की और आदेश दिया अत हम आदेश का उल्लघन न कर सकते थे। इस प्रकार नाक छिनकने का क्या अर्थ है?" अन्त मे मीर्जा अस्करी एव मीर्जा हिन्दाल बाहर आये और हाथ धोकर बैठ गए। मीर्जा सुलेमान बडे लज्जित हुए। सबने एक दस्तरख्वान पर भोजन किया।

भाइयो के मेल के प्रति हुमायू का सन्तोष

हज़रत (पादशाह) ने इस सभा मे इस तुच्छ का स्मरण किया और अपने भाइयो से कहा कि, 'लाहौर में गुलबदन बेगम ने कहा था कि 'मेरी यह आकाक्षा है कि मै सब भाइयो को एक स्थान पर एकत्र देखूँ।' प्रात काल से, जब से हम बैठे है, यही बात मेरे हृदय मे आ रही है। हे

१ बापूस।
२ 'कुन्दुज' होना चाहिये।
३ अकबरनामा के अनुसार 'इश्किमीश'। यही उचित है।
४ सम्भवत प्रारम्भ मे निश्चित अधिनियमों का पालन किया गया।
५ चिलिमची: हाथ मुह धोने का बरतन।
६ जन्म ९२० हि० (१५१४-१५ ई०)।
७ जन्म ९२२ हि० (१५१६-१७ ई०)।
८ जन्म ९२५ हि० (१५१९ ई०)।

परमेश्वर[1] हमारे सगठन को अपनी रक्षा में रख। ईश्वर को भली भाँति ज्ञात है कि मेरे हृदय मे यह बात कभी न आई कि मै किसी मुसलमान का बुरा चाहूँ। फिर मै अपने भाइयो की हानि की कैसे इच्छा कर सकता हूँ ? ईश्वर हम सबको सगठित एव मेल से रहने का सौभाग्य प्रदान करे।" लोगो मे विचित्र प्रकार की प्रसन्नता एव सतोष का सचार था कारण कि अधिकाश अमीर (८५) एव सेवक भी एक दूसरे के सम्बन्धी एव भाई थे। अपने स्वामियो के एक दूसरे से पृथक् होने के कारण वे सब भी एक दूसरे से अलग अपितु एक दूसरे के खून के प्यासे थे। इस समय सब एक साथ प्रसन्नतापूर्वक समय व्यतीत कर रहे थे।

हुमायूं का बल्ख की ओर प्रस्थान एव बेगमो के साथ सैर

हज़रत पादशाह बदख्शाँ से वापस आकर डेढ वर्ष तक काबुल मे निवास करते रहे। तदुपरान्त उन्होने बल्ख पर आक्रमण करने का सकल्प किया और बाग दिलकुशा में ठहरे। हज़रत पादशाह का दौलतखाना उपर्युक्त बाग के नीचे की ओर लगाया गया। बेगमे कुली बेग की हवेली के निकट होने के कारण उसमें ठहरी। हज़रत पादशाह से बेगमो ने बार बार आग्रह किया कि "रीवाज[1] तक किस प्रकार पहुँचा जा सकेगा ?" हज़रत पादशाह ने कहा, 'जब मैं सेना के साथ

१ खट मिट्ठा मेवा। मिसेज़ बेवरिज ने इसके विषय में अपने हुमायूं नामे के अनुवाद में निम्नाकित नोट लिखा है "The following account of this plant is taken from Conolly's *Travels*, I, 213 n It is translated by him from the *Makhazinu i-adwiya* (Treasury of Medicines) '*Ribas, rivas, riwaj*, or *jigari* (so named from a person of Nishapur who first discovered it) is a shrub two or three feet high, in appearance like beet (*salq*) In the middle are one or two short stems of little thickness, the leaves, which separate lengthwise like those of a lettuce, are downy and green, but towards the roof, of a violet or whitish colour The heart is white delicate, juicy acidulous and slightly astringent Altogether the stalk is the size of a man's arm and when the plant is large every leaf has the size of a man's hand. Ard shir was named *Rawand dast* (rhubarb hand) from the length of his hands The root is called *rawand* (rhubarb) The top is like the claw of a fowl The flower is red and the taste is subacid with a little sweetness The seed is formed at the top of a long slender stalk which springs up annually in the centre of the plant It grows where snow lies and in mountainous countries The best grows in Persia It is medicinally attenuating and astringent, gives tone to the stomach, and improves the appetite A collyrium of the juice strengthens the eye and prevents opacity and a poultice of it with barley meal is a useful application to sores and boils The juice of the *rivas* is harsher than that of unripe grapes For mention of the name *riwaj* see *Tabaqat-i-Akbari*, Lucknow lith ed 215, *Tuzuk i-Jahangiri*, 47 Vullers, s v, etc Mr Erskine writes (Mems, 138 n) It is described as somewhat like beetroot, but much larger red and white in colour with large leaves that rise little from the ground It is a

प्रस्थान करूँगा तो कोह दामन के मार्ग से यात्रा करूँगा। तुम लोग जाकर रीवाज देख लेना।" मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय हजरत सवार होकर दिलकुशा उद्यान में पहुँचे[1]। कूची बेग की हवेली, जिसमें बेगमें थीं, निकट थी। वहाँ सरताब[2] था। हजरत आकर खड़े हो गए। समस्त बेगमा ने दर्शन किए और उठ कर कोरनिश की। बेगमा के कोरनिश करते ही हजरत पादशाह ने अपने पवित्र हाथ से सकेत किया कि, 'आ जाओ'।

फख्र-उन्निसा मामा एव अफगानी आगाचा कुछ आगे रवाना हुई। बागे दिलकुशा के पर्वत के आँचल में एक जल धारा थी। अफगानी आगाचा उस जल धारा को न पार कर सकी। वह घोड़े से गिर पड़ी। इस कारण वहाँ एक घड़ी देर हो गई। अन्ततोगत्वा एक घड़ी उपरान्त हम पवित्र सेवा द्वारा सम्मानित हुए। चोचक बेगम का घोड़ा अज्ञानतावश कुछ ऊपर चला गया। इस कारण हजरत पादशाह बड़े रुष्ट हुए। उपर्युक्त उद्यान ऊँचाई पर था और अभी उसमें दीवारें न बनी थी। इसी बीच में उनके पवित्र मुख पर क्रोध के चिह्न दृष्टिगत हो गए। उन्होंने कहा तुम लोग जाओ। मैं अफीम खाकर इस क्रोध को शान्त करके आऊँगा। हम लोग हजरत पादशाह के आदेशानुसार थोड़ी दूर गए थे कि वे आ गये। वास्तव में अब क्रोध न रहा था। वे प्रसन्न मुद्रा में आये। चाँदनी (८६) रात थी। वे बातें करते अग्रसर हो रहे थे। खानीश आगाचा, शरीफ गोयिन्दा[3], सरोसिही एव शाहम आगा मन्द स्वर मे गाती जाती थीं।

मेहर आमेज खेमा

हमारे लमगान पहुँचने तक बादशाही खेमा खरगाह, बारगाह एव बेगमा के खेमे न पहुँच पाये थे। उस समय मेहर आमेज[4] खेमा आ गया था। हजरत पादशाह, हम सब एव हमीदा बानो बेगम भी उसी खेमे में हजरत पादशाह की सेवा मे रात के दो पहर एव तीन घड़ी तक बैठे रहे। अन्ततोगत्वा उपर्युक्त खेमे में उस किबलये हकीकी[5] की सेवा में सो गए।

देर के कारण रीवाज की सैर का स्थगित होना

प्रातःकाल वे पर्वत पर रीवाज की सैर हेतु जाना चाहते थे। क्योंकि बेगमा के घोड़े गाँव में थे अत घोड़ो के आने तक सैर का समय निकल गया। उन्होंने आदेश दिया कि "बाहर

pleasant mixture of sweet and acid It may be the *rhubarb rau and* (मिसेज बेवरिज, पृ० १८८ नोट २)।

१ काबुल से।

२ किले के सामने कोई ऊँचा स्थान।

३ गायक।

४ सम्भवत हुमायूं का ईजाद किया हुआ कोई खेमा जिसका सूर्य से कोई सम्बन्ध रहा होगा।

५ वास्तविक किब्ला। किब्ला मक्का में वह स्थान है जहाँ हजरे अस्वद (काला पत्थर) स्थापित है और जिसकी ओर मुख करके मुसलमान नमाज पढ़ते हैं। काबा, प्रतिष्ठित एव सम्मानित व्यक्ति के लिये सबोधन का शब्द। सूफी लोग इसे 'काबये दिल' अथवा मिट्टी का काबा तथा अपने गुरु को किबलये हकीकी अथवा वास्तविक किब्ला कहते हैं। अबुलफजल अकबर को ही किबलये हकीकी मानता था।

जिस किसी के भी घोडे हो ले आओ[1]।" जो घोडे लाये गए उन पर सवार हो जाने का आदेश हुआ। बेगा बेगम एव माह चोचक बेगम मरोषा धारण कर रही थी। मैंने हजरत पादशाह से निवेदन किया कि, "यदि आदेश हो तो मैं जाकर उन्हे ले आऊँ।" उन्होने आदेश दिया जाकर शीघ्र ले आओ। मैंने बेगमों, माह चोचक बेगम एव अन्य महिलाओ, से कहा "मै हजरत पादशाह की इच्छाओं की दासी हो गई हूँ। प्रतीक्षा में कितना कष्ट होता है।" मै उन्हे एकत्र करके ला रही थी कि हजरत हमारे समक्ष आये और कहा, "गुलबदन! सैर का समय निकल गया। वहा पहुँचने तक हवा गरम हो जायगी। ईश्वर ने चाहा तो मध्याह्नोत्तर की नमाज़ के उपरान्त प्रस्थान करेंगे।"

रीवाज की सैर हेतु प्रस्थान

(८७) हमीदा बानो बेगम का खरगाह आ गया था। वे (हुमायूं) वहीं जाकर बैठ। मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज़ के उपरान्त, घोडो के लाते लाते दोनों नमाज़ो के मध्य का समय आ गया। वे इस बीच मे रवाना हो गए। पर्वत के आचल में हर स्थान पर रीवाज में पत्तियाँ निकल आई थी। हम लोग वहा घूमते फिरते रहे कि शाम हो गई। उसी स्थान पर खेमे एव खरगाह लगवा दिए गए। वहीं वे जाकर बैठ गए। उस रात्रि में हम सब साथ आनन्द मगल में समय व्यतीत करते रहे। हम सब उस किबलये हकीकी[2] की सेवा मे रहे। प्रात काल नमाज के समय वे बाहर तशरीफ ले गए।

बेगमो से क्षमा-पत्र लिखवाना

बाहर से उन्हाने बेगा बेगम, हमीदा बानो बेगम, माह चोचक बेगम, मुझे एव समस्त बेगमा को अलग अलग पत्र लिखे 'कि अपने अपराध स्वीकार करके क्षमा-पत्र लिखो[3]। यदि ईश्वर ने चाहा तो फरज़ा अथवा इस्तालीफ मे विदा होकर सेना के साथ प्रस्थान करूँगा और तुम्हे खुदा को सौप दूँगा।" सक्षेप मे, सभी ने क्षमा-पत्र लिख कर, पवित्र सेवा मे भेज दिए। अन्ततोगत्वा हजरत एव समस्त बेगमे सवार होकर लमगान से बेहज़ादी पहुँची। रात में प्रत्येक अपने स्थान को चला गया। दूसरे दिन प्रात काल उन्होने भोजन किया। मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज के समय सवार होकर फरज़ा पहुँचे।

हुमायूं का बल्ख की ओर प्रस्थान

हमीदा बानो बेगम ने हमारे घरों में ९ ९ भेंडे भेजी। एक दिन पूर्व बीबी दौलत बख्त

१ 'दर बेरून अस्पे हर कस कि बाशद बे आरेद'। मिसेज बेवरिज ने इस वाक्य का अनुवाद इस प्रकार किया है: "The Emperor ordered the horses of every one who was outside should be brought" (मिसेज़ बेवरिज, पृ० ९०), यह वाक्य स्पष्ट नहीं।

२ हुमायूं।

३ 'बगुनाहे खुद कायल शुदा उज़्र ख्वाही नवीसेद' (प्रकाशित ग्रन्थ में नूसेद')। मिसेज बेवरिज ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है —"Becoming spokeswoman of your own fault, write apologising for the trouble you have given", (मिसेज़ बेवरिज, पृ० १९१)। कायल शुदा का अनुवाद 'becoming spokeswoman' उचित नहीं। कायल शुदा अथवा कायल होकर का अर्थ 'ठीक समझकर' अथवा 'स्वीकार करते हुये' होना चाहिये। 'for the trouble you have given' को कोष्ठ में होना चाहिये।

फरजा मे पहुँच गई थी। अत्यधिक भोजन, दूध, दही शीरा एव शरबत इत्यादि तैयार किया गया था। वह रात आनन्द मगल में व्यतीत हुई। प्रात काल हम फरजा के ऊपर पहुँचे। वहा एक बडा सुन्दर झरना है। तदुपरान्त हजरत पादशाह इस्तालीफ पहुँचे। वहा वे तीन दिन रहे। ९५८ हि० (१५५१ ई०) में[1] बल्ख की ओर रवाना हुए।

हुमायूं का भाइयो को बुलवाना

दर्रे को पार करके उन्होंने मीर्जा कामरान, मीर्जा सुलेमान एव मीर्जा अस्करी को बुलवाने के लिए पत्र भेजे। (उन्होने लिखा) 'हम ऊजबेको मे युद्ध करने के लिए जा रहे है। इस समय सगठित रहने एव भ्रातृ-भाव के प्रदर्शन का समय है। शीघ्रातिशीघ्र आ जाओ।" मीर्जा सुलेमान एव मीर्जा अस्करी हजरत पादशाह की सेवा में पहुँच गए और निरन्तर यात्रा करते हुए बल्ख पहुँचे।

हुमायूं की पराजय

(८८) पीर मुहम्मद खा[2] बल्ख में था। पहिले दिन ही पीर मुहम्मद खा के आदमियो ने निकल कर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। पादशाही सेना को विजय प्राप्त हो गई। पीर मुहम्मद खा के आदमी पराजित होकर नगर में प्रविष्ट हो गए। दूसरे दिन प्रात काल पीर मुहम्मद खा को विश्वास हो गया कि "चगताई शक्तिशाली हैं। मैं युद्ध नही कर सकता। यह उचित होगा कि निकल कर चला जाऊँ।" उसी समय पादशाही अमीरो मे से एक ने निवेदन किया कि, 'शिविर गन्दा हो गया है। यदि इस पडाव मे प्रस्थान करके दश्त में पडाव किया जाय तो उचित है।" हजरत ने आदेश दिया कि, 'ऐसा ही किया जाय।" जैसे ही बोझ एव काठियो पर हाथ लगाया गया[3] अन्य लोगो ने शोर मचाया कि, 'हममे शक्ति नही है।" ईश्वर की इच्छा यही थी। (पादशाह के) आदमी बिना किसी कारण के शत्रु के सामने से अन्य मार्ग की ओर हो गए। ऊजबेको को समाचार प्राप्त हुए कि पादशाही लश्कर ने प्रस्थान कर दिया। ऊजबेको को बडा आश्चर्य हुआ। पादशाही यसावलो ने यद्यपि बहुत प्रयत्न किया, किन्तु उन्होंने[4] क्षण भर भी प्रयत्न न किया। उन्हे रोका न जा सका। लोग चल दिए। हज़रत कुछ समय तक प्रतीक्षा करते रहे। जब उन्होने देखा कि कोई नही रहा, तो विवश होकर उन्हे भी प्रस्थान करना पडा। मीर्ज़ा अस्करी एव मीर्जा हिन्दाल को सूचना न थी कि पादशाही लश्कर छिन्न-भिन्न हो गया है। वे लाम सवार हो होकर पहुँचे। उन्होने देखा कि शिविर में कोई नही रहा और ऊजबेक पीछा कर रहे है। वे भी कुन्दुज की ओर चल दिये। हजरत थोडी दूर चल कर ठहर गए और कहा, "भाई लोग अभी तक नहीं आये। मैं किस प्रकार आगे जाऊँ?" कुछ अमीरो इत्यादि से जो सेवा में थे कहा, "कोई मीर्ज़ाओ के समाचार ला सकता है?" किसी ने भी न उत्तर ही दिया और न गया। तदुपरान्त कुन्दुज मे मीर्जा के आदमियो के

१ ९५९ हि० (१५५१ ई०)।
२ जानी बेग का पुत्र, अब्दुल्लाह खा ऊजबेक का चाचा। वह ९७४ हि० (१५६६ ६७ ई०) तक राज्य करता रहा।
३ चलने की तैयारी की गई।
४ सैनिकों ने।

समाचार प्राप्त हुए। उन्होंने सूचना दी थी कि "सुना जाता है कि पराजय हो गई। हमें ज्ञात नहीं कि वे किस ओर चले गए।" जब यह पत्र हज़रत (पादशाह) को प्राप्त हुआ तो वे बड़े व्याकुल हुए। खिज़्र ख़्वाजा ने कहा, "यदि आदेश हो तो मैं समाचार लाऊँ।" पादशाह ने कहा, "धन्य हो। ईश्वर करे मीर्ज़ा कुन्दुज चले गए हों।" दो दिन उपरान्त खिज़्र ख़्वाजा ख़ाँ मीर्ज़ा हिन्दाल के पास (८९) हज़रत पादशाह के समाचार ले गया कि 'वे कुशलतापूर्वक कुन्दुज पहुँच गए।' हज़रत पादशाह यह समाचार सुनकर बड़े प्रसन्न हुए।

मीर्ज़ा सुलेमान को उन्होंने उनके स्थान किश्म व जफ़र में जाने की अनुमति दे दी और स्वयं काबुल चले गए।

मीर्ज़ा कामरान तथा मीर्ज़ा सुलेमान की शत्रुता

जब मीर्ज़ा कामरान कोलाब में थे तो तरख़ान बेगा[1] नामक एक धूर्त कुटनी[2] ने मीर्ज़ा को बहका दिया कि वह हरम बेगम[3] से आशिकी प्रकट कर दें कारण कि इसमें मसलहतें हैं[4]।" मीर्ज़ा कामरान ने भी उस मूर्ख के कहने पर एक पत्र एवं रूमाल बेगी आग़ा के हाथ हरम बेगम के पास भेजा। वह स्त्री पत्र एवं रूमाल हरम बेगम के पास ले गई और मीर्ज़ा कामरान के अत्यधिक प्रेम का उल्लेख किया। हरम बेगम ने कहा, "इस समय यह पत्र एवं रूमाल अपने पास रख। जब मीर्ज़ा लोग[5] बाहर से आ जायें, यह पत्र एवं रूमाल ले आना।' बेगी आग़ा ने विलाप एवं विनती करते हुए कहा कि, 'मीर्ज़ा कामरान ने यह पत्र एवं रूमाल तुम्हे भेजा है और दीर्घकाल से तुम पर आशिक हैं। तुम इस प्रकार सौजन्य के विरुद्ध कार्य कर रही हो।" हरम बेगम ने क्रोध एवं कठोरता प्रदर्शित करना प्रारम्भ कर दिया। उसी समय मीर्ज़ा सुलेमान एवं मीर्ज़ा इब्राहीम को बुलवा कर कहा कि, 'मीर्ज़ा कामरान ने तुम लोगों की नामर्दी को समझ कर मुझे ऐसा पत्र लिखा है। वास्तव में (क्या) मैं इसी योग्य थी कि मुझे इस प्रकार का पत्र लिखे। मीर्ज़ा कामरान तुम्हारा बड़ा भाई है और मैं उसकी कलीन[6] हूँ। मुझे इस प्रकार का पत्र भेजता है[7]। इस दुप्टा के टुकड़े

१　तरख़ान बेगा उसकी श्रेणी के अनुसार उसकी उपाधि ज्ञात होती है। सुल्तान अहमद मीर्ज़ा की भी एक पत्नी का नाम तरख़ान बेगम था।

२　'अय्यारा मक्कारा'।

३　सुल्तान वैस कोलाबी किबचाक मुग़ल की पुत्री, चक्र अली हैदर बेग तथा माह बेगम (मीर्ज़ा कामरान की पत्नी) की बहिन। उसका विवाह सुलेमान मीर्ज़ा मीरान शाही से, जो ख़ान मीर्ज़ा (वैस) का पुत्र था, हुआ था। सुलेमान मीर्ज़ा एवं हरम बेगम के इब्राहीम नामक एक पुत्र एवं अनेक पुत्रियाँ हुईं। वह अपनी योग्यता एवं कुशलता के लिये बड़ी प्रसिद्ध थी।

४　'कि बा हरम बेगम इज़हारे आशिकी बे कुनेद कि दरीं मसलेहतहा अस्त'।

५　सुलेमान मीर्ज़ा एवं इब्राहीम मीर्ज़ा।

६　छोटे भाई की पत्नी।

७　'मरा अर्ज़ी बाबत ख़त्ते फ़रस्तद'। मिसेज़ बेवरिज ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है "Send off a letter for me about it and rebuke him", (पृ० १६३)। इस वाक्य का तात्पर्य केवल यह है कि 'वह छोटे भाई की पत्नी को इस प्रकार इश्क़ प्रकट करते हुये पत्र लिखता है।' मिसेज़ बेवरिज ने जो अर्थ लिखा है, वह उपर्युक्त वाक्य से नहीं निकलता।

टुकड़े करा दो ताकि अन्य लोग शिक्षा ग्रहण कर सकें और कोई भी किसी के परिवार पर किसी कुत्सित विचार से बुरी दृष्टि न डाल सके। किसी मनुष्य द्वारा जन्मी स्त्री के लिए यह कहाँ उचित है कि इस प्रकार की अनुचित वस्तु लाये और मुझसे तथा मेरे पुत्र से भय न करे[1]?' बेगी आगा बीबी के, जिसके भाग्य में मौत लिखी थी[2], तत्काल टुकड़े टुकड़े करा दिए गए। मीर्ज़ा सुलेमान एवं मीर्ज़ा इबराहीम इस कारण मीर्ज़ा कामरान के विरोधी अपितु शत्रु हो गए और हजरत पादशाह की सेवा में लिखा कि, 'मीर्ज़ा कामरान विद्रोह करना चाहता है। विरोध का इससे अधिक स्पष्ट प्रमाण नहीं कि बल्ख के आक्रमण के समय वह साथ नहीं गया।'

तदुपरान्त मीर्ज़ा कामरान ने कोलाब में चिन्ता एवं भय के कारण इसके अतिरिक्त कोई (९०) अन्य उपाय न देखा कि वह किनारे हो जाये[3]। अपने पुत्र अबुल कासिम मीर्ज़ा[4] को उन्होंने मीर्ज़ा अस्करी के पास भेज दिया। अपनी पुत्री आएशा सुल्तान बेगम को अपने साथ लेकर तालोकान की ओर रवाना हो गए। अपनी पत्नी खानम[5] से कह दिया कि, तुम अपनी पुत्री के साथ पीछे पीछे आओ। मैं जिस स्थान पर ठहरूँगा तुम्हें बुलवा लूँगा किन्तु तुम लोग उस समय तक खूस्त एवं अन्दराब में जा कर रहो।" खानम, ऊज़बेक खाना की सम्बन्धी थी। उन लोगों ने ऊज़बेकों को समझा दिया कि, "यदि तुम्हें लूट की धन सम्पत्ति की आशा है तो हमारे पास धन-सम्पत्ति, आदमी तथा दास हैं। इन्हें ले लो। स्त्रियों को जाने दो कारण कि आएशा सुल्तान खानम का भतीजा यदि कल यह सुन लेगा कि तुमने उसे हानि पहुँचाई है तो वह तुमसे निःसन्देह बड़ा रुष्ट होगा।' वह सैकड़ों छल एवं बहाने बनाकर बड़ी परेशानी से एवं अव्यवस्थित दशा में ऊज़बेकों के पंजे से मुक्त हो सकी और खूस्त एवं अन्दराब पहुँची तथा वहाँ ठहर गई।

मीर्ज़ा कामरान की अव्यवस्थित दशा

जब मीर्ज़ा कामरान को बल्ख की पराजय के समाचार मिल गए और उन्हें ज्ञात हो गया

१ 'व अज़ अने आदमी जादा चे मुनासिब कि हमची चीजहाये नालायक़ बे आरद व अज़ मन व पिसरे मन न तर्सद'

و از زن آدمی زاده چه مناسب که همچو چیزهای نالائق بیارد و از من و پسر من نترسد

मिसेज़ बेवरिज ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है —

"What does such a man deserve who, the son of a mother, yet does such monstrous things, and who fears neither me nor my son", (पृ० १९३)। यहाँ प्रसंग युवती का है अतः मिसेज़ बेवरिज का अनुवाद उचित ज्ञात नहीं होता।

२ 'दौलत खुन गिरिफ्ता' का अभिप्राय वही है जिसमें हिन्दुस्तानी स्त्रियाँ 'मुई' शब्द का प्रयोग करती हैं।

३ 'खुद रा ब गोशाये कशद' का अर्थ मिसेज़ बेवरिज ने 'दरवेश हो जाना' लिखा है। "After this the Mirza in Kulab, could not find, in his terror-stricken thoughts, any better remedy than to become a dervish" 'खुद रा ब गोशाये कशद' का तात्पर्य 'किनारे हो जाना, अलग हो जाना, राज्य से कोई सम्बन्ध न रखना' हो सकता है किन्तु दरवेश हो जाना आवश्यक नहीं।

४ इबराहीम।

५ 'मुहतरेमा खानम'।

कि 'हज़रत पादशाह उसके प्रति जितना पहिले स्नेह प्रदर्शित करते थे, उतना अब नहीं' तो वे कोलाब से निकल कर इधर-उधर मारे-मारे फिरने लगे।

किपचाक में हुमायूं की पराजय

इसी बीच मे हज़रत पादशाह काबुल से निकल कर दश्ते क़िबचाक की ओर पहुँचे। वे असावधानी की अवस्था मे एक[1] नीचे के स्थान पर पडाव किए थे कि मीर्ज़ा कामरान ने एक ऊँचे स्थान से सशस्त्र होकर अचानक हज़रत पादशाह के शत्रुओं[2] पर आक्रमण कर दिया। क्योंकि ईश्वर की इच्छा यही थी, एक दिल के अंधे, जिसकी ईश्वर करे गरदन टूट जाय, अत्याचारी निष्ठुर, अभागे एव दुष्ट ने हज़रत पादशाह को घायल कर दिया[3]। उनके पवित्र सिर मे घाव लगा। उनका पूरा ललाट एव शुभ नेत्र रक्त से भर गए। इसी प्रकार मुग़लो के युद्ध में हज़रत फ़िरदौस मकानी बाबर पादशाह के पवित्र सिर पर एक मुग़ल ने घाव लगाया था और ताक़ी[4] एव पगडी न कट सकी अपितु उनका पवित्र सिर घायल हो गया था। हज़रत हुमायूं पादशाह सर्वदा आश्चर्य किया करते थे और कहा करते थे कि "यह बडी ही विचित्र बात है कि ताक़ी एव पगडी न कटे और सिर घायल हो जाय[5]।" सक्षेप में, उनके पवित्र सिर के साथ भी यही घटना घटी।

हरम बेगम का हुमायूं को सेना भेजना

(९१) हज़रत पादशाह दश्ते क़िबचाक की पराजय के उपरान्त बदख़्शाँ पहुँचे। मीर्ज़ा हिन्दाल, मीर्ज़ा सुलेमान एव मीर्ज़ा इबराहीम नें पहुँच कर अभिवादन किया। हज़रत पादशाह काबुल चले गए। मीर्ज़ा लोग निष्ठापूर्वक, एव सगठन प्रदर्शित करते हुए साथ साथ थे। इसी बीच मे मीर्ज़ा कामरान निकट आ गए। हज़रत पादशाह ने हरम बेगम से कहला भेजा कि, "मेरी कौलीन से कह दो कि "शीघ्रातिशीघ्र बदख़्शाँ की सेना एव सैनिको को सुव्यवस्थित करके मेरे पास भेज दे।" बेगम अल्प समय में कई हज़ार आदमियों को घोडे एव अस्त्र शस्त्र देकर सुव्यवस्थित करके अपने साथ कोतल[6] तक ले गईं और वहाँ से सेना को आगे रवाना कर दिया और स्वय लौट गईं। वह सेना हज़रत पादशाह के पास पहुँच गई।

१ प्रकाशित पुस्तक में "जाये पुश्त" किन्तु इसे "जाये पस्त" होना चाहिये।

२ हज़रत पादशाह पर आक्रमण कर दिया। 'बर सरे दुश्मनाने हज़रत रेख्तन्द'। इस वाक्य के अनुवाद में भी मिसेज़ बेवरिज को भ्रम हुआ है। उसने लिखा है, "He incautiously halted in a low lying place and Mirza Kamran, coming from higher ground and equipped, poured down foes upon him".

३ "यक कोर बातिन, गरदन शिकस्ता जालिम सितमगर, बदबख्त, नाबकार" स्त्रियों क उर्दू के आधुनिक शब्दों में "मुआ मरटी मिला, जवानी पीटा" इत्यादि।

४ वह टोपी अथवा कुलाह जिस पर पगडी बाधी जाती है।

५ यह ९०९ हि० (१५०२ ३ ई०) की घटना का ओर सकेत है। बाबर लिखता है, "मैं अपने सिर पर वह नरम टोपी पहने हुये था जो शिरस्त्र के नीचे पहनी जाती है। तम्बल ने मेरे सिर पर तलवार से इतने जोर का वार किया कि यद्यपि टोपी का कोई भी तागा न कटा किन्तु मेरा सिर बुरी तरह घायल हो गया।" (**बाबर नामा**, पृ० ५६१)।

६ दर्रा।

मीर्जा कामरान की पराजय

चारीकारान अथवा करावाग मे मीर्जा कामरान से युद्ध हुआ। हजरत पादशाह की सेना की विजय प्राप्त हो गई। मीर्जा कामरान पराजित हो गए। व (कामरान) भाग कर दर्रो एव लमगानात में चले गए।

आक सुल्तान का मीर्जा कामरान से पृथक् होना

मीर्जा कामरान के जामाता आक सुल्तान[१] ने मीर्जा कामरान से कहा कि "आप सर्वदा हजरत हुमायूँ पादशाह का विरोध करते रहते हैं। यह क्या बात है? यह उचित नही। या तो हजरत की अधीनता एव आज्ञाकारिता स्वीकार कर लो और या मुझे जाने दो ताकि लोग मुझे समझ सके[२]।" मीर्जा कामरान ने आक सुल्तान से कठोरतापूर्वक कहा, "क्या मेरी इतनी दुर्दशा हो गई कि तू मुझे उपदेश देता है?" आक सुल्तान ने भी कठोरतापूर्वक उत्तर दिया कि, 'यदि मैं आपके पास रहूँ तो मरी हलाल (वस्तुयें) मेरे लिए हराम हो जायें।" आक सुल्तान तत्काल पृथक् होकर वक्खर की ओर चला गया और अपनी पत्नी[३] को भी साथ लेता गया। इसी बीच मे मीर्जा कामरान ने शाह हुसेन मीर्जा को पत्र लिख भेजा कि, 'आक सुल्तान हमे रुष्ट करके चला गया है। यदि वह वहाँ पहुँचे तो उसकी पत्नी को उसके साथ न जाने दिया जाय, उसकी पत्नी को उससे पृथक् करके उससे कह दिया जाय कि उसकी जहाँ इच्छा हो चला जाय।' पत्र पहुँचते ही, शाह हुसेन मीर्जा ने हबीबा वेगम को आक सुल्तान से पृथक् करके उसे मक्का चला जाने दिया।

क़राचा खा की हत्या

उसी चारीकारान के युद्ध मे कराचा खा एव मीर्जा कामरान के अधिकाश प्रतिष्ठित आदमी मारे गए।

मीर्जा कामरान का अफगानो के पास शरण लेना

(९२) आएशा सुलतान वेगम[४] एव दौलत बख्त आगाचा[५] भाग कर कन्धार की ओर जा रही थी, कि खिमार दर्रे पर पादशाही आदमियो द्वारा वन्दी बना कर लाई गईं। मीर्जा कामरान अफगानों के पास चले गए और उन्ही लोगो के साथ रहने लगे।

मीर्जा हिन्दाल का घायल होना

हजरत पादशाह कभी कभी नारगी के उद्यानो की सैर को जाया करते थे। उस वर्ष भी वे अपनी पूर्व प्रथानुसार नारगियो को देखने के लिए पर्वत के दर्रो की ओर गए। मीर्जा हिन्दाल साथ थे। वेगमो में वेगा वेगम, हमीदा बानो वेगम एव माह चोचक वेगम इत्यादि अधिकाश वेगमें साथ थी। मेरा पुत्र सआदत यार उन दिनो रुग्ण था, इस कारण मै न जा सकी। एक

१ यामीन दौलत।
२ 'मर्दुम अज मायान दानन्द'।
३ हबीबा सुल्तान वेगम। वह भी ९८३ हि० (१५७५ ७६ ई०) में गुलबदन वेगम के साथ हज करने गई थी।
४ मीर्जा कामरान की पुत्री।
५ सम्भवत आएशा सुल्तान वेगम की माता।

दिन दर्रों के समीप हज़रत पादशाह शिकार खेल रहे थे। मीर्ज़ा हिन्दाल सेवा में थे। वडा अच्छा शिकार हुआ। जिस ओर मीर्ज़ा शिकार हेतु गये थे, हज़रत (पादशाह) भी उसी ओर पहुँच गए। मीर्ज़ा ने अत्यधिक शिकार किया था। मीर्ज़ा ने चिंगीज खा की प्रथानुसार अपना समस्त शिकार हज़रत (पादशाह) को भेट कर दिया कारण कि चिंगीज खा के तोरे की यही प्रथा है और छोटे, बडो के प्रति इसी प्रकार व्यवहार करते हैं। सक्षेप में, उन्होने अपना समस्त शिकार हज़रत को भेंट कर दिया। तदुपरान्त मीर्ज़ा के हृदय मे आया कि 'बहिनो का हिस्सा रह गया। कही बहिनें शिकायत न करे। थोडा सा और शिकार कर लूं कि बहिनो का हिस्सा ले जा सकूँ'। मीर्ज़ा पुन शिकार खेलने लगे। थोडा सा शिकार करके लौट रहे थे कि मीर्ज़ा कामरान ने जिस व्यक्ति को नियुक्त किया था, उसने मार्ग रोक लिया। मीर्ज़ा को इसका पता न था। उसने बाण चलाया। मीर्ज़ा के शुभ कधे में बाण लगा। इस भय से कि कही बहिनें एव पत्नियां सुनकर परेशान न हो जायें उन्होंने तत्काल लिख भेजा —

मिसरा

"बला आई थी किन्तु कुशलतापूर्वक निकल गई।'

तुम लोग सतुष्ट रहो। मै स्वस्थ एव सकुशल हूँ।" हवा के गरम हो जाने के कारण हज़रत काबुल लौट गए। एक वर्ष के भीतर बाण का घाव अच्छा हो गया।

मीर्ज़ा हिन्दाल की हत्या

एक वर्ष उपरान्त समाचार प्राप्त हुए कि मीर्ज़ा कामरान पुन सेना एकत्र करके युद्ध की तैयारी कर रहे है। हज़रत ने भी युद्ध की सामग्री एकत्र करके दर्रों की ओर प्रस्थान किया। (९३) मीर्ज़ा हज़रत पादशाह की सेवा मे साथ साथ थे। जिस समय दर्रों में पडाव हुआ तो गुप्तचर क्षण क्षण पर समाचार लाते थे कि "मीर्ज़ा कामरान ने यह निश्चय किया है कि आज रात में छापा मारना चाहिये।" मीर्ज़ा हिन्दाल ने उपस्थित होकर परामर्श देते हुए निवेदन किया कि 'हज़रत (पादशाह) इस ऊँचाई पर रहे। मेरा भाई[1] जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह की सेवा में साथ रहे ताकि इस ऊँचाई पर लोग सावधानी से पहरा दे सकें।" तदुपरान्त उन्होने अपने आदमियों को बुलवा कर सबको अलग अलग प्रोत्साहन प्रदान किया और कहा, "समस्त सेवायें एक ओर तथा आज की रात की सेवा एक ओर। यदि ईश्वर ने चाहा तो तुम लोगों को तुम्हारी इच्छानुसार सम्मानित कर दिया जायगा।" सबको विभिन्न स्थानो पर नियुक्त करके अपने लिए जीवा, जामा[2], तावी एव दवलगा[3] मगवाया। तूशकची[4] ने गठरी उठाई थी कि किसी ने छींक दिया। तूशकची गठरी को लेकर घडी भर के लिए ठहर गया। जब देर हो गई तो उन्होने किसी को जल्दी करने

१ भतीजा।
२ समस्त वस्त्रों के उपर पहिनने का लबा कोट।
३ शिरस्त्राण।
४ वह अधिकारी जो वस्त्रों का प्रबन्ध करता है।

के लिए भेजा। जब उसे शीघ्र उपस्थित किया गया तो उन्होने पूँछा कि, "क्यों देर कर दी?" तूशकची ने निवेदन किया कि, "मैंने गठरी उठाई थी कि किसी ने छींक दिया। इस कारण मैंने गठरी रख दी और देर हो गई।" उन्होने कहा, "तूने भूल की! मुझे शहीद होने की बधाई दे।" फिर कहा, "हे मित्रो! सब लोग साक्षी रहना कि मैंने समस्त हराम वस्तुओं एव कुकर्मो से तोबा कर ली।" उपस्थित-गणो ने फातेहा पढा और शुभकामनायें की। उन्होने आदेश दिया, "नीमचा[1], जामा, जीबा ले आओ।" पहिन कर खाई की ओर गए और खाई के समक्ष जाकर सैनिको को प्रोत्साहन एव सांत्वना दी। इसी बीच में मीर्जा हिन्दाल का तबकची[2] उनकी आवाज़ सुनकर चिल्लाया कि, "मेरे ऊपर तलवार का वार हो रहा है।" मीर्जा यह सुनते ही घोडे से उतर पडे और कहा, "हे मित्रो! यह बात पौरुष के अनुकूल नही। हमारे तबकची पर तलवार का वार हो और हम सहायता न करें।" वे स्वय खाई में प्रविष्ट हो गए। उनके सैनिको में से कोई भी घोडे से न उतरा। मीर्जा दो बार खाई से निकले और आक्रमण किया। इसी सघर्ष में शहीद हो गए[3]।

(९४) मुझे नही ज्ञात कि किस अत्याचारी निष्ठुर ने किसी को हानि न पहुँचाने वाले उस युवक को अत्याचार की तलवार द्वारा हत्या कर दी। काश मेरे हृदय तथा नेत्र अथवा मेरे पुत्र सआदत यार या खिज्र ख्वाजा खा मे वह निष्ठुर तलवार लग जाती। हाय दुख सैकडो एव सहस्रो दुख!

शेर

'शोक, शोक, शोक,
मेरा सूर्य बादलो के पीछे छिप गया।'

मीर्जा हिन्दाल का उसके शिविर में पहुँचाया जाना

सक्षेप में, मीर्जा हिन्दाल ने हजरत पादशाह की सेवा मे अपने प्राण त्याग दिए। मीर बाबा दोस्त, मीर्जा को उठा कर मीर्जा के दौलतखाने मे ले गया और किसी को कोई सूचना न दी। यसावलो को लाकर द्वार पर बैठा दिया और कह दिया कि, जो आये और पूँछे तो उससे कह देना कि, "मीर्जा के घातक घाव लगा है। हजरत (पादशाह) का आदेश है कि कोई भी न आये।"

हिन्दाल की मृत्यु पर हुमायूँ का शोक

उसने हजरत पादशाह को सूचना दी कि मीर्जा हिन्दाल घायल हो गए है। हजरत पादशाह ने घोडा मगवाया कि जाकर मीर्जा को देखें। मीर अब्दुल हई ने कहा कि, "उनके घातक घाव लगा है। हज़रत (पादशाह) का प्रस्थान करना उचित नही।" हजरत (पादशाह) समझ गए। उन्होने अपने ऊपर नियत्रण रखने का बडा प्रयत्न किया किन्तु सफल न हो सके और विलाप करने लगे।

१ नीमचा का अर्थ छोटी तलवार होना है किन्तु यहा सम्भवत जैकेट रूपी किसी वस्त्र का उल्लेख है।
२ वह अधिकारी जो भोजन के थाल, अन्य बरतन इत्यादि की देख रेख करता हो।
३ २१ जीक़ाद ९५८ हि० (२० नवम्बर १५५१ ई०)।

हिन्दाल की लाश का जूये शाही भेजा जाना

जूये शाही, खिज्र ख्वाजा खां की जागीर में था। हज़रत (पादशाह) ने खिज्र ख्वाजा खां को बुलवाकर कहा कि, "मीर्ज़ा हिन्दाल की लाश जूये शाही[1] में ले जाकर सुरक्षित रक्खी जाय[2]।" खान ऊँट की नकेल पकड़े हुए रोता एवं विलाप करता हुआ जाने लगा। हज़रत पादशाह ने यह समाचार सुने। खिज्र ख्वाजा को कहला भेजा कि "धैर्य धारण कर। मेरा हृदय तेरी अपेक्षा कहीं अधिक धधक रहा है किन्तु उस निष्ठुर एवं अत्याचारी शत्रु के कारण धैर्य नहीं त्यागता। वह निकट है। ऐसी अवस्था में धैर्य के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं।" अत्यधिक शोक, दुःख एवं दीन अवस्था में जूये शाही[3] में लाश ले जाकर अमानन[4] रख दी गई।

मीर्ज़ा हिन्दाल के प्रति शोक

अत्याचारी, भाई के हत्यारे, अपरिचित लोगों को आश्रय देने वाले मीर्ज़ा कामरान यदि उस रात्रि में न आते तो यह विपत्ति आकाश से न आती। हज़रत पादशाह ने काबुल पत्र लिखे। इन पत्रों के पहुँचते ही बहिनों के लिए समस्त काबुल मानो विलाप-गृह बन गया। उस भाग्यशाली (९५) शहीद मीर्ज़ा के लिए द्वार एवं दीवार भी विलाप करते थे। गुलबदन बेगम करा खां के घर गई थी। जब वे आई तो मानो क़यामत आ गई। विलाप एवं शोक की अधिकता से वे रुग्ण, एवं पागल हो गई[5]।

मीर्ज़ा हिन्दाल का मीर्ज़ा कामरान पर प्रभाव

अत्याचारी एवं निष्ठुर मीर्ज़ा कामरान की धृष्टता[6] से मीर्ज़ा हिन्दाल शहीद हो गए। मैंने नहीं सुना कि उस दिन से मीर्ज़ा कामरान के कार व बार को सफलता प्राप्त हुई अपितु वे नित्य प्रति पतनशील एवं अव्यवस्थित होते गए और दुर्दशा को प्राप्त हो गए। इसके उपरान्त फिर सौभाग्य ने (कामरान) का साथ न दिया और न उन्हें सफलता प्रदान की मानो मीर्ज़ा कामरान के प्राण अपितु नेत्रों के प्रकाश मीर्ज़ा हिन्दाल थे।

मीर्ज़ा कामरान का बन्दी होना

वे (कामरान) उसी पराजय के उपरान्त भाग कर शेर खां के पुत्र सलीम शाह के पास पहुँचे। उसने[7] १००० रुपए दिए। (मीर्ज़ा कामरान ने) अपनी स्थिति का उल्लेख करते हुए उससे

१ काबुल के मार्ग में आधुनिक जलालाबाद।
२ सम्भवतः स्थायी रूप से दफ़न का आदेश नहीं दिया। स्थायी रूप से दफ़न करने के पूर्व लाश अस्थायी रूप से किसी सुरक्षित स्थान पर रख दी जाती है और फिर उसे दफ़न किया जाता है।
३ प्रकाशित पुस्तक में 'जूशाही', शुद्ध 'जूये शाही' है।
४ निश्चित स्थान अथवा कब्रिस्तान में लाश दफ़न करने के पूर्व किसी स्थान पर सुरक्षित रूप से रख देने की प्रथा बड़ी पुरानी है। इस प्रकार लाश को सुरक्षित रखने को अमानन रखना कहते हैं।
गुलबदन को अपने भाई मीर्ज़ा हिन्दाल से बड़ा स्नेह था। उसने अपनी रचना में हर स्थान पर उसका पक्ष लिया है।
६ मूल में 'बहादुरी' है किन्तु धृष्टता अथवा निष्ठुरता से तात्पर्य है।
७ सलीम शाह अथवा इस्लाम शाह।

कुमक माँगी। सलीम शाह ने उत्तर में साफ साफ कोई बात न कही किन्तु एकान्त में कहा कि, "जिसने अपने भाई मीर्ज़ा हिन्दाल की हत्या कर डाली हो, उसे किस प्रकार कुमक दी जा सकती है! अपितु उसको नष्ट कर देना तथा उसकी हत्या करा देना उचित होगा।" मीर्ज़ा कामरान ने सलीम खा की यह राय सुन कर अपने आदमियों से भी परामर्श न किया और रात्रि में भाग खड़े हुए। मीर्ज़ा के आदमियों को भी पता न चला। वे वहीं रह गए। सलीम खा को जब इसकी सूचना मिली तो उसने मीर्ज़ा के अधिकांश आदमियों को बन्दी बना देने का आदेश दे दिया। मीर्ज़ा कामरान भीरा एवं खुशाब तक पहुँचे थे कि उसी क्षेत्र में आदम गक्खर ने सैकड़ो उपाय एवं बहानो से उसे बन्दी बना कर हज़रत पादशाह के समक्ष उपस्थित किया।

मीर्ज़ा कामरान की हत्या के सम्बन्ध में सर्वसाधारण का आग्रह

अन्ततोगत्वा समस्त खानों सुल्तानों, सर्वसाधारण एवं सम्मानित लोगों, छोटे-बड़े सैनिको एवं प्रजा इत्यादि ने, जो मीर्ज़ा कामरान के कारण कष्ट भोग चुके थे, उस दरबार में एकमत होकर हज़रत पादशाह से निवेदन किया कि, 'पादशाही एवं राज्य में भ्रातृ-भाव से काम नहीं चलता। यदि भाई को प्रसन्न करने की इच्छा है तो पादशाही त्याग दीजिये और यदि पादशाही चाहते हैं तो भ्रातृ-भाव त्याग दें। यह वही मीर्ज़ा कामरान है जिसके कारण दस्ते क्विचाक में आपका पवित्र सिर किस प्रकार घायल हुआ। अफगानो से छल एवं धूर्ततापूर्वक मिल कर उसने मीर्ज़ा हिन्दाल की (९६) हत्या की। अधिकांश चगताई मीर्ज़ा के कारण नष्ट हुए। लोगो के परिवार बन्दी बनाये गए और उनका अपमान किया गया। यह असम्भव नहीं है कि लोगो के परिवार बन्दी न बनाये जायेंगे और कष्ट न भोगेंगे। नरक[1] का भय करते हुए भी हम कहते हैं कि हमारे प्राण, परिवार एवं धन-सम्पत्ति सभी हज़रत (पादशाह) के बाल के एक तार पर न्योछावर हैं। यह भाई नहीं है यह हज़रत का शत्रु है।" संक्षेप में, सब लोगो ने एकत्र होकर एकमत से आग्रह किया

मिसरा

'राज्य में विघ्न डालने वाले का सर गिरा देना ही अच्छा है।'

हज़रत पादशाह ने उत्तर दिया, 'तुम्हारी यह बातें मेरी समझ में आती हैं किन्तु मेरा दिल नहीं मानता।" सभी लोगो ने विनयपूर्वक आग्रह किया कि "जो कुछ निवेदन किया गया वही उचित है।" अन्ततोगत्वा हज़रत (पादशाह) ने कहा, "यदि तुम लोग यही उचित समझते हो और यही चाहते हो तो तुम सब लोग एकत्र होकर एक महज़र लिखो।" दायें एवं बायें के अमीरो तथा सभी लोगो ने यही लिखकर दे दिया

मिसरा

'राज्य मे विघ्न डालने वाले का सिर गिरा देना ही अच्छा है।'

हज़रत पादशाह भी विवश हो गए।

१ 'बर जहन्नुम, जान व माल व अह्ल व अयाले मार्या'।

मीर्ज़ा कामरान का अंधा बनाया जाना

जब वे रोहतास के समीप पहुँचे तो सैयिद मुहम्मद को आदेश दिया कि मीर्ज़ा कामरा की दोनों आँखों में सलाई फेर दी जाय। उसने तत्काल जाकर सलाई फेर दी।

सलाई फेर दिए जाने के उपरान्त हज़रत पादशाह[1]



१ हस्तलिपि यहीं पर समाप्त हो जाती है। इससे पता चलता है कि आगे भी कुछ रहा होगा

तज़किरतुल वाक़ेआत[1]

लेखक—जौहर आफतावची

(ब्रिटिश म्युजियम मैनुस्क्रप्ट, रियु भाग १, पृ० २४६)

(२अ) . परमेश्वर के दरबार का यह तुच्छ दास इस प्रकार निवेदन करता है कि क्योंकि इस दास पर ईश्वर की अनुकम्पा थी अत वह बाल्यावस्था मे ही आकाश रूपी दरबार की चौखट का चुम्बन करके अनन्त तक स्थायी रहने वाले सौभाग्य का पात्र बना और हज़रत (बादशाह) के दासो की माला में सम्मिलित हो गया। वह हर दशा मे तथा हर समय में उनकी सेवा मे उद्यत रहता था अत उसके हृदय मे आया कि आशीर्वाद के रूप में उन घटनाओ एव मामलो को अपनी योग्यतानुसार, न कि ससार के बादशाहो की प्रतिभा के योग्य, जो भूलो को क्षमा कर देते है, लिपिबद्ध करे। इस प्रकार एक बुजुर्ग ने कहा है —

शेर

'बातो को लिपिबद्ध कर लो,
कारण कि लोगो की स्मृति से बातें निकल जाती है।'

जब इस दास को यह आकाक्षा हुई तो उसने हज़रत ख्वाजा हाफिज की पुनीत आत्मा से यह देखने की प्रार्थना की कि क्या होता है। यह गज़ल निकली

(२ ब) इस फाल के अनुसार कुछ अध्याय सकलित किए और इस सकलन का नाम

१ यह अनुवाद निम्नाकित हस्त लिपियों के आधार पर किया गया है —
ब्रिटिश म्युजियम मैनुस्कृप्ट (रियु भाग १, पृ०२४६,Add १६७११, इसका नाम आगे के पृष्ठों में (क) रक्खा गया है।
अलीगढ़ विश्वविद्यालय हस्तलिपि (अब्दुस्सलाम २६०/३०)। यह जमादि-उल-अव्वल १११७ हि० (अगस्त सितम्बर १७०५ ई०) में नकल की गई। इसका नाम आगे के पृष्ठों में (ख) रक्खा गया है।
अलीगढ़ विश्वविद्यालय हस्तलिपि (शेफ्ता १२६)। यह १२८३ हि० (१८६६ ६७ ई०) में नकल की गई। इसका नाम आगे के पृष्ठों में (ग) रक्खा गया है।
अलीगढ़ विश्वविद्यालय हस्तलिपि (फारसिया अख्बार १५६)। यह भी लगभग १५०-२०० वर्ष पुरानी है किंतु इस पर कोई तारीख नहीं। इसका नाम (घ) रक्खा गया है।
इलाहदाद फैज़ी सरहिन्दी 'हुमायूं शाही (कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटी मैनुस्कृप्ट, ब्राउन कैटलाग न० २५६, किंग्ज न० ८४)। इसका नाम (च) रक्खा गया है।
हुमायूं शाही (इंडिया आफिस मैनुस्कृप्ट, ऐथे २२२)। इसका नाम (छ) रक्खा गया है।
जवाहर शाही (इंडिया आफिस मैनुस्कृप्ट ऐथे २२१)। इसका नाम (ज) रक्खा गया है।

"तजकिरतुल वाकेआत" रक्खा। इन घटनाओ की रचना ९९५ हि० (१५८६-८७ ई०) से प्रारम्भ हुई। प्रारम्भिक सनो एव पिछली तारीखो में जो घटनाये घटी वे लिख नही ली गई थी। यदि ऐसा होता तो प्रत्येक घटना की तारीख एव उसका सन् दिया जाता किन्तु हजरत[1] के चरणो के (३ अ) आशीर्वाद से "याददाश्त[2]" लिख ली गई ताकि उनकी[3] सम्मानित दृष्टि इसे स्वीकार कर ले[4]।

यह बात असम्भव है कि किसी बादशाह को राज्य से वचित हो जाने के उपरान्त पुन. राज्य प्राप्त हो जाय। यह केवल उसके सद्विचारो पर निर्भर है। अत जब इस दास के हृदय मे यह बात आरूढ हो गई तो उसने उनके खलीफा होने के समय से लेकर अन्त तक का हाल, जब हजरत पादशाह ने राज्य पर पुन अधिकार जमाया, लिपिबद्ध किया ताकि ससार में यह इस तुच्छ की स्मृति के रूप में रह सके। इस दास का उद्देश्य यही था कि सब लोगो को ज्ञात हो जाय कि इतने कष्ट एव अपमान के बावजूद उन्होने धैर्य न त्यागा। लोगो पर उनके कष्ट छिपे न रहे और सबको ज्ञात रहे कि इतने कष्ट एव इतनी कठिनाइयो को सहन करके उन्होने अपने राज्य को विजय किया।

१ अकबर।
२ पिछली घटनाओं के सम्बन्ध में टिप्पणी, संस्मरण।
३ अकबर की।
४ **तारीखे हुमायूं शाही** (च) में इस प्रकार है '—यह दास हुमायूं के तुच्छ तम दासों में सम्मिलित था। उनके सिंहासनारोहण के बाद जो घटनायें घटीं, उनके घटने के समय वह उपस्थित था। जब उनकी मृत्यु हो गई तो इस तुच्छ हृदय में यह आया कि यदि बादशाही उपायों की घटनायें भूत-काल के खलीफाओं के इतिहास के समान हृदय के कमरे से निकल कर पृष्ठों पर लिखी जायें तो बड़ा ही उत्तम होगा कारण कि कहा जाता है कि बात शिकार होती है और लेख बन्दीगृह। यद्यपि इस तुच्छ में इतनी योग्यता न थी कि वह बुद्धिमानों की माला में सम्मिलत हो सके और प्रतिभाशालियों के समक्ष उपस्थित हो सके किन्तु कुछ विद्वानों से सम्पर्क होने के कारण उसने पाडुलिपि तैयार की। इस वृद्ध दास ने, जो बाल्यावस्था से अपने आपको इस सिंहासन के समक्ष उस वृद्धा के समान समझता था, जो हजरत यूसुफ को मोल लेने पहुँची थी, यह निश्चय किया कि उसकी पाडुलिपि भी इस अस्थायी युग में स्मृति के रूप में रहे। क्योंकि इस युग के पादशाह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर को प्राचीन सुल्तानों के इतिहास को सुनने से बड़ी रुचि है अत: इस तुच्छ ने यह निश्चय किया कि जो कुछ उसे याद है उसे सम्मानित दृष्टि के समक्ष प्रस्तुत करे··· ख्वाजा हाफ़िज के दीवान की फाल के अनुसार इस वकाये को मैंने ५ बाब (खंडों) में और प्रत्येक बाब (खड) को कई फस्ल (अध्याय) में विभाजित किया और इसका नाम **हुमायूं शाही** रक्खा (च: पृ० २, ब —४ अ, ज: पृ० ३ अ —४ अ)।

जवाहर शाही में उपर्युक्त वाक्य लगभग इसी प्रकार है किन्तु अन्त में पुस्तक का नाम **जवाहर शाही** रक्खा गया है; पृ० २ ब)।

(१)

हजरत जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर पादशाह गाजी फिरदौस मकानी का निधन तथा हजरत नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायू पादशाह गाजी का सिंहासनारोहण[1]

यह खिलाफत ऐसी है कि जब परमेश्वर ने कहा, "मैं अपना खलीफा (नाएब) जमीन में बनाने वाला हूँ। तो अर्श, कुर्सी, लौह, कलम, सातो आसमान, पर्वत, फिरिश्ते सभी इस बात की इच्छा करने लगे कि परमेश्वर का खलीफा हम में से हो। जब सभी को उत्तर मिल गया तो फिरिश्त (३ ब) में सर्वश्रेष्ठ ने कहा, "क्या तू ऐसे को बनाना चाहता है जो फसाद फैलाये ?" तो अनादि काल की अनुकम्पा (ईश्वर) ने कहा, 'जो मैं जानता हूँ तुम नही जानते[2]।"

जब परमेश्वर ने "हे खुदा समस्त सृष्टि का स्वामी तू है, जिसको चाहे सल्तनत दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले और तू ही जिसको चाहे इज्जत दे[3]" के द्वार अपनी अनुकम्पा से अपने दासो के लिए खोल दिए और ससार वालो एव मनुष्यो में "फिर हमने उनके बाद तुमको जमीन मे उनका उत्तराधिकारी बनाया[4]," की घोषणा हुई, विजय एव सफलता तथा

१ च, छ, एव ज के अनुसार बाब (खड) १।

२ आयत इस प्रकार है, "व इज काला रब्बुका लिल् मलाएकते इन्नी जाएलुन फिल अर्जे खलीफा। काला अ तजअलो फीहा मय्युफसेदु फीहा व यस्फेकुद्दिमाओ व नहनु नुसब्बेहो बे हम्दका व नुकद्देसो लक, काला इन्नी आलमो मा ला तालेमून" (सूरा २ आयत न० ३०)।

(जब तुम्हारे परमेश्वर ने फिरिश्तो से कहा कि, 'मै अपना खलीफा (नायब) जमीन में बनाने वाला हूं तो (फिरिश्ते आश्चर्य में पड कर) कहने लगे, "क्या तू जमीन में ऐसे शख्स को पैदा करेगा जो जमीन में फसाद तथा रक्तपात करता फिरे हालाकि (यदि खलीफा बनाना है तो हमारा अधिक हक है कारण कि) हम तेरी स्तुति एव तेरे (नाम का) भजन करते है और तेरी पवित्रता प्रमाणित करते है।" तब खुदा ने कहा "इसमें तो सन्देह ही नहीं कि जो मैं जानता हूं तुम नहीं जानते।"

३ आयत इस प्रकार है, "कुलिल्लाहुम्मा मालिकल मुल्के तूतियल मुल्का मन तशाओ व तनजेउल मुल्का मिम्मन तशाओ व तो इज्जो मन तशाओ व तोजिल्लो मन तशाओ बे यदकल खैर। इन्नका अला कुल्ले शैइन कदीर" तुम तो यह प्रार्थना करो कि हे खुदा। समस्त सृष्टि का स्वामी तू है, जिसको चाहे सल्तनत दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले और तू ही जिसको चाहे इज्जत दे और तू ही जिसे चाहे जिल्लत दे, हर तरह की भलाई तेरे ही हाथ में है। नि सन्देह तुझको ही हर चीज पर प्रभुत्व प्राप्त है)।" (सूरा ३ आयत २६)। १५वीं तथा १६वीं शती ई० में राज्य को ईश्वर की ओर से प्राप्त करने की दलील में सुल्तान लोग इस आयत को प्रस्तुत किया करते थे।

४ आयत इस प्रकार है, "सुम्मा जअलनाकुम खलाएफा फिल् अर्जे मिम्बादेहिम ले ननजुरा कैफा तालेमून (फिर हमने उनके बाद तुमको जमीन में उनका उत्तराधिकारी बनाया ताकि हम भी देखें कि तुम किस प्रकार कार्य करते हो)।" (सूरा १० आयत १४)।

इक्लीम एवं राज्य की कुंजी अपने दासों को प्रदान कर दी तो हजरत पादशाह अपने स्थायी सौभाग्य एवं अनन्त तक रहने वाले प्रताप के कारण सिंहासनारूढ़ हुए[1]।

बिबन, बायजीद एवं इबराहीम खां की पराजय, चुनार के किले की विजय[2]

बिबन, बायजीद एवं इबराहीम खां लादी[3] ने अवज्ञा प्रदर्शित करते हुए विद्रोह कर दिया[4]। हजरत पादशाह शत्रुओं के उस समूह की ओर पूर्ण ऐश्वर्य एवं वैभव के साथ रवाना हुए।

शेर

अत्यधिक सौभाग्य एवं उत्कृष्ट सितारे के साथ,
भाग्यशाली प्रताप द्वारा सफल होकर
(४ अ) निरन्तर यात्रा करते हुए वहां से प्रस्थान किया,
'ईश्वर की सहायता हो' को अपने लिए पाठ किया।"

१ **हुमायूँ शाही** (च) में इस प्रकार है :—देशों को विजय करने वाले अमीरों, बुद्धिमान् वज़ीरों, संसार की शोभा प्रदान करने वाले समस्त सद्रों ने संगठित होकर एवं सर्व-सम्मति से आज्ञाकारिता की गरदनें [illegible] आत्म-समर्पण [illegible] सिर भूमि पर रखकर बैअत की और "अवश्य (आज्ञाकारिता) हो" के शब्द जबान से निकाले। हजरत ने प्रत्येक को बादशाही कृपा एवं प्रोत्साहन से उचित पदों द्वारा सम्मानित किया। प्रतिष्ठित सैयदों, क़ाज़ियों, आलिमों एवं समस्त प्रजा तथा सर्वसाधारण ने इस आदेश के अनुसार कि "अल्लाह की आज्ञाकारिता करो, रसूल (हजरत मुहम्मद) की आज्ञाकारिता करो एवं उन लोगों की जिन्हें तुम लोगों में अधिकार प्राप्त है", आज्ञाकारिता हेतु कटिबद्ध होकर उस धर्म के रक्षक बादशाह के दीर्घायु होने के लिये ईश्वर से शुभ कामनायें कीं। ख़तीबों (ख़ुत्बा पढ़ने वालों) ने उस धर्मरक्षक बादशाह के नाम का ख़ुत्बा जुमा मस्जिदों एवं ईदों के अवसर पर उच्च स्वर में मिम्बरों पर से पढ़ा। ढिंढोरा पीटने वालों ने जिम्मियों एवं मुसलमानों में शान्ति की घोषणा कराई। प्राणियों को नये सिरे से सौभाग्य एवं समृद्धि प्राप्त हो गई।

उत्तम कवियों एवं विद्वानों ने तारीखें एवं कवितायें प्रस्तुत कीं तथा अत्यधिक इनाम इकराम प्राप्त किये। उनमें से सर्वोत्कृष्ट थे विद्वान् अमीर शिहाब मुअम्माई जो योग्यता एवं बुद्धिमत्ता में अद्वितीय था, यह तारीख प्रस्तुत की जो स्वीकार हुई। (घ पृ० ४ ब, ङ अ, छ पृ० ४अ व ४ब)।

२ च, छ एवं ज के अनुसार शीर्षक है :—संसार को शरण प्रदान करने वाले उस शाह का बिबन, बायजीद एवं इबराहीम खां लादी तथा बद्राहियों के समूह पर आक्रमण, उनकी पराजय, तदुपरान्त चुनार के किले की विजय।

३ (क), (ख), (ग), (घ) में 'लोधी' किन्तु **हुमायूँ शाही**, (च), (छ) में 'लोदी' है। (ज) में भी 'लोदी' है।

४ (च) में इस प्रकार है :—इसी बीच में दरबार के विश्वासपात्रों ने उपस्थित होकर यह समाचार पहुँचाये कि, बिबन, बायजीद, इबराहीम खां लादी एवं अफ़ग़ान सरदारों के एक बहुत बड़े समूह ने विद्रोह कर दिया है और असम्भव कल्पनायें करने लगे हैं। इस कारण कुछ विलायतों में अशान्ति एवं अव्यवस्था फैल गई है तथा प्रजा की सुख शान्ति का अन्त हो गया है। संसार को शरण प्रदान करने वाले उस बादशाह ने इस कष्टदायक समाचार को सुनते ही राजसिंहासन पर अंगड़ाई ली और सिंह के समान दहाड़े। वकीलियों से अमीरों की ओर देखा। प्रत्येक ने तस्लीम एवं जमीन बोसी की एवं आज्ञा चाही। हजरत ने इस कारण कि वे स्वयं जवान थे और उनका भाग्य भी जवान था कहा कि "इस अवसर पर इस विद्रोह को शान्त करने के लिए हम स्वयं प्रस्थान करेंगे तथा इन्हें कठोर दंड देंगे ताकि बाद में किसी को फिर इस प्रकार की कोई इच्छा न हो"। **हुमायूँ शाही**, च पृ० ६)।

वे निरन्तर यात्रा करते हुए सुती[1] नदी तट पर ददरा[2] नामक स्थान पर पहुँचे थे कि उपर्युक्त विद्रोहियों से जो अपार सेना सहित उस ओर से आये थे मुठभेड हो गई। कुछ दिन उपरान्त घोर युद्ध हुआ। शत्रु पराजित हुए।

१ (क) में सती, (ख) में सुती, (ग) में सबसती एव (घ) में सती, हुमायूं शाही (च, [illegible]) में सई है। (ज) में यह नाम स्पष्ट नहीं। इसे सती एव सई दोनों पढा जा सकता है, किन्तु आधुनिक मानचित्रों एव स्थानीय पूछ ताछ पर यहा किसी नदी का पता नहीं चल सका। सम्भवत. गोमती नदी से अभिप्राय है।

२ उत्तर प्रदेश के बाराबकी जिले में ८१° १८ उत्तर तथा २७° ५४ पूर्व बाराबकी नगर से ६ मील दक्षिण पूर्व, गोमती नदी से ११ मील उत्तर पूर्व में। यह नाम हस्तलिपियों में दो प्रकार से मिलता है दौरा (क,ग) तथा ददरा (ख,ज)। आधुनिक स्थानीय नाम ददरा है। डा० ईश्वरी प्रसाद ने इसे जौनपुर से ४८ मील उत्तर में बताया है। (*The Life and Times of Humayun*, पृ० ५० नोट न० १) यह ठीक नहीं। डा०एस० के० बनर्जी ने इसे बाराबकी की नवाबगज तहसील में बताया है (*Humayun Badshah* भाग १ पृ० ४३)। तारीख शेरशाही में इस घटना तथा इससे पूर्व का उल्लेख इस प्रकार है —जब (सुल्तान महमूद एव शेर खा) जौनपुर के समीप पहुँचे तो उन्होंने अपनी सेना आगे भेज दी। जो मुगल जौनपुर में थे वे जौनपुर छोड कर भाग गये। जब जौनपुर सुल्तान महमूद के अधिकार में आ गया तो वह कुछ समय तक जौनपुर में ठहरा रहा और अपनी सेना को आगे भेज दिया। लखनऊ तथा आस पास के स्थान सुल्तान महमूद के अधिकार में आ गये। जब सुल्तान ने सुना कि हुमायूं पादशाह की विजयी पताकाओं ने प्रस्थान कर दिया है तो सुल्तान महमूद भी जौनपुर से रवाना हुआ। दोनों सेनाओं का लखनऊ के समीप मुकाबला हुआ। रोजाना युद्ध होता था। दोनों ओर के योद्धा आगे बढ-बढकर युद्ध करते थे। जब शेर खा ने देखा कि अफगानों की सेना सगठित नहीं है और प्रत्येक अपनी अपनी चिन्ता में है तो उसने हिन्दू बेग को लिखा, 'मुझे मुगलों ने धूल से उठाया है। यह लोग मुझे जबरदस्ती लाये है किन्तु युद्ध के दिन मैं आपसे युद्ध न करूगा, और बिना युद्ध किये रण क्षेत्र से निकल आऊगा। मेरे विषय में हजरत हुमायूं पादशाह को सूचना कर दो। मैं इस लश्कर की पराजय का कारण बन जाऊगा।' जब हिन्दू बेग ने हजरत पादशाह को शेर खा का प्रार्थना पत्र दिखाया तो बादशाह ने शेर खा को कृपा-युक्त फरमान भेजा कि, "उन लोगों के साथ आने के कारण तुझे किसी बात की चिन्ता न करनी चाहिये। जैसा तूने प्रार्थना पत्र में लिखा है, यदि तूने वही किया तो यह तेरे सम्मान में वृद्धि का कारण होगा।" कुछ दिन उपरान्त दोनो सेनाओं ने पक्तिया सुव्यवस्थित करके युद्ध प्रारम्भ कर दिया। युद्ध के समय शेर खा अपनी सेना सहित युद्ध किये बिना चल दिया। इस कारण सुल्तान महमूद पराजित हो गया। इब्राहीम खा यूसुफ खल ने इस युद्ध में घोर प्रयत्न किया। जब तक वह मार न डाला गया उसने अपना स्थान न छोडा। मिया बायजीद ने उस दिन अत्यधिक मदिरा पान कर लिया था। वह नशे में चूर एव असावधान था। असावधानी की अवस्था में वह मार डाला गया। सुल्तान महमूद एव अन्य अमीर पराजित होकर बिहार की ओर भाग गये।

जब हुमायूं पादशाह ने सुल्तान बिन सिकन्दर महमूद को विजय कर लिया और अधिकाश विद्रोही मार डाले गये तो उन्होंने हिन्दू बेग को शेर खा के विरुद्ध इस आशय से नियुक्त किया कि वह शेर खा से चुनार का किला ले ले। शेर खा ने हिन्दू बेग की चलने न दी। हजरत पादशाह ने आदेश दिया कि उत्कृष्ट विजयी पताकायें चुनार के किले की ओर प्रस्थान करें। जब शेर खा ने सुना कि हजरत हुमायूं पादशाह चुनार के किले पर अधिकार जमाने आ रहे है तो उसने अपने पुत्र जलाल खा को जो अपने पिता की मृत्योपरान्त, उसका उत्तराधिकारी बना और अपनी उपाधि इस्लाम शाह रक्खी तथा जमाल खा बिन जल्लू (इलियट में हल्लू) को चुनार के किले में छोड कर अपने परिवार सहित उन पर्वतों में जहा महरकुन्दा (इलियट में नहर कुण्डा पर्वत) अथवा (भरकुन्दा पर्वत) में चला गया। हजरत हुमायूं शाह की सेना ने चुनार के किले को घेर लिया। हर रोज उस

सुल्तान बहादुर के लश्कर में खाद्य सामग्री पहुँचने पर रोक

हज़रत पादशाह ने अपने अमीरों तथा उच्च पदाधिकारियों से परामर्श किया कि 'सुल्तान बहादुर से किस प्रकार युद्ध करना चाहिये?' प्रत्येक व्यक्ति ने अपनी बुद्धि-अनुसार परामर्श दिया। अन्ततोगत्वा हज़रत पादशाह ने अपनी शुभ जिह्वा से कहा कि, "बहादुर की सेना को (५ अ) प्रत्येक दिशा से शाही सेना घेर ले और बहादुर की सेना में अनाज न पहुँचने पाये।" अन्त में यही निश्चय हुआ कि इस प्रकार वह बड़ी दुर्दशा को प्राप्त हो जायगा। तदनुसार कुछ अमीर उदाहरणार्थ मीर बचका तथा उसके पुत्र गुर्ग अली, तत्ता बेग[1], मुग़ुल बेग व मीर्ज़ा जान तथा कुछ अन्य लोग इस आशय से नियुक्त किए गए कि वे छापे[2] मारते रहें और उसके शिविर में अनाज न पहुँचने दें। इस प्रकार ३-४ मास व्यतीत हो गए और अनाज का मूल्य इतना अधिक बढ़ गया कि एक सेर अनाज ४ ५ तन्के को भी सुल्तान बहादुर की सेना को प्राप्त न होता था। बहादुर की सेना विवश एवं दुर्दशा को प्राप्त हो गई। यहाँ तक कि[3] घोड़े के मांस के अतिरिक्त कोई अन्य खाद्य सामग्री उपलब्ध न रही[4]। कोई दिन ऐसा व्यतीत न होता था जब कि दोनों दिशाओं से युद्ध तथा मार काट न हो।

सुल्तान बहादुर की पराजय

अन्त में हज़रत पादशाह के प्रताप के उन्नत होने के कारण[5] आधी रात में विचित्र प्रकार का कोलाहल एवं हा हाकार होने लगा। उस्ताद अली कुली द्वार से प्रविष्ट होकर हज़रत की सेवा में उपस्थित हुआ। हज़रत पादशाह ने पूछा कि, "यह कैसा शोर[6] है?" उसने निवेदन किया कि, (५ ब) "पादशाह सलामत, ऐसा ज्ञात होता है कि बहादुर भाग गया और रूमी खाँ[7] ने लैला-मजनूँ[8] नामक तोपें तोड़ डाली।" वे लोग यही बातें कर रहे थे कि किसी ने आकर निवेदन किया कि, "पादशाह को बधाई हो, सुल्तान बहादुर भाग गया।" हज़रत पादशाह ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए 'दो रकात नमाज़ पढ़ी।

शेर

'संसार के स्रष्टा की सहायता से,
विजय तथा सफलता हुई धर्म के सुल्तान को।'

१ *हुमायूं शाही* के अनुसार "मीर बचका, और उसके पुत्रों, तर्क (गुर्ग) अली एवं तत्ता बेग, व मीर्ज़ा जान अली"; (च पृ० ६अ, छ पृ० ७अ, ज पृ० ८अ)।
२ 'कज़्ज़ाकी कुनन्द'।
३ च, छ, ज में '*गोश्त बहायम*' (चौपाये, मवेशी, पशु का मांस)।
४ च, छ, में, "संक्षेप में ७ मास व्यतीत हो गये"।
५ च, छ, ज में, "क्योंकि बहादुर पौरुष के युद्ध में, रक्त बहाने वाले वीरों एवं अग्नि बरसाने वाले चमकदार भालों का मुक़ाबला न कर सकता था अतः आधी रात के समय कोलाहल होने लगा"; (च पृ० ६ब, छ पृ० ८अ, ज पृ० ८अ)।
६ च, छ, ज में, "यह कैसा असाधारण शोर है?"
७ च, छ में, "*रूमी खाँ उस्ते मीर आतश ने*"।
८ इनके विषय में **ज़फ़रुल वालेह** में विस्तार से उल्लेख है।

सुल्तान बहादुर का पलायन

हजरत पादशाह उसी समय सुल्तान बहादुर का पीछा करने के लिए सवार हो गए। इसी बीच में रूमी खा उपस्थित होकर हजरत के चरण चूमकर सम्मानित हुआ। सुल्तान बहादुर भागकर मन्दू[1] के किले मे प्रविष्ट हो गया। विजयी सेना ने शीघ्रातिशीघ्र पहुँच कर मन्दू के किले का अवरोध कर लिया। कुछ समय तक सुल्तान बहादुर घिरा रहा[2]। तदुरान्त सुल्तान बहादुर हिन्दू बेग को मिलाकर उसके मोर्चे से भाग गया और चम्पानीर[3] के किले में प्रविष्ट हो गया। हजरत पादशाह ने मन्दू के किले को विजय कर लिया और अत्यधिक खजाना तथा अपार धन सम्पत्ति प्राप्त हुई, किन्तु हजरत पादशाह ने खजानो एव धन सम्पत्ति की ओर कोई ध्यान न दिया और बहादुर का तेजी से पीछा करते हुए चम्पानीर के किले को घेर लिया[4]। इसी बीच मे उस दुष्ट (६ अ) से छिपा कर किसी ने आकर हजरत पादशाह से निवेदन किया कि, "दास एक मार्ग से हजरत पादशाह को किले के ऊपर ले जा सकता है जिससे किले के सभी लोग हजरत पादशाह के पैरो के नीचे हो जायेंगे[5]।" अन्त में हजरत पादशाह ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और वे स्वय थोडे से कूरची, एक जोडा नक्कारा तथा सूरना[6] किले के ऊपर ले गए। वहाँ पहुँच कर नक्कारा एव सूरना बजाया।

शेर

'प्रविष्ट हुए, डका बजाते हुए
आकाश ने ढाल के मुह का चुम्बन किया।
तुर्की वशी से ऐसा शोर उठा,
कि तुर्कों के होश हवास उड गये।'

सक्षेप में, अन्य अमीरो ने, जो कि किले को घेरे हुए थे, प्रत्येक दिशा से युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया। शत्रुओ ने क्षमा माँग ली। अधिकाश किले के बाहर कूद पडे। सुल्तान बहादुर भागकर सूरत[7] के बन्दरगाह में पहुँचा और किला पादशाह के प्रताप से उसी दिन विजय हो गया।

१ च के हाशिये पर 'मंदसौर' एव छ में भी 'मदसौर'।
२ च, छ में यह वाक्य भी है.—"हजरत ने सैयिद अमीर को उसके पास दूत बना कर भेजा कि 'मन्दू तू मेरे लिये छोड दे, मैं तुझे गुजरात प्रदान कर दूगा। जो पेशकश तेरे पूर्वज देहली के पादशाहों को देते आये हैं, अदा कर'। उसने उत्तर भेजा कि 'मैंने यह प्रदेश तलवार के जोर से विजय किया है। हमसे कोई यदि इसे ले सकता है तो इसी प्रकार।" (च : पृ० ६ब, छ : पृ० ८अ, ८ब)।
३ च, छ में 'चम्पानियार', ख व ग में हर स्थान पर 'चनानीर', अन्य ग्रन्थों में 'चाम्पानीर'।
४ च, छ में "वह किला ऊँचाई में ऐसा है कि ऐयूक तक सिर उठाये है और कल्पना एव सूक्ष्म बूझ के नेत्रों ने ऐसा दृढ अनवन्द पर्वत न देखा"।
५ च, छ में "नीचे की ओर हो जायेंगे"। ज में, "वहा से हजरत पादशाह मरकोब में होंगे एवं अन्य लोग नीचे"; (ज पृ० ६ अ)।
६ एक प्रकार का बहुत बडा बिगुल।
७ क, ख, ग, घ एवं ज में 'सूरत', च, छ में इस प्रकार है —"बहादुर को जब छिपने का कोई स्थान न मिला तो युग के उस सुलेमान के सामने से देव के समान भाग कर बन्दर देव (डियु) में घुस गया।" (च : पृ० १०ब, छ पृ० ६अ)।

सुल्तान बहादुर के खज़ानों की खोज

सुल्तान बहादुर के एक उत्कृष्ट अमीर आलम खा ने आकर हज़रत पादशाह के प्रति अभिवादन किया। हज़रत पादशाह ने इस आशय से अत्यधिक पूछ-ताछ की ताकि सुल्तान बहादुर के खजानों पर अधिकार जमा लें किन्तु कुछ भी पता न चला। कुछ अमीरों ने निवेदन किया कि, "आलम खा के प्रति कठोरता प्रदर्शित की जाय ताकि वह सुल्तान बहादुर के खज़ानों का (६ ब) पता चला दे।' हज़रत पादशाह ने कहा कि, "क्योंकि वह स्वय आकर सेवा में उपस्थित हुआ है अत उसके प्रति कठोरता उचित नही।"

शेर

'यदि कृपा एव खुशी से काम निकल आये,
तो फिर कठोरता एव हत्या की क्या आवश्यकता।'

हज़रत पादशाह ने कहा कि "एक सभा आयोजित की जाय और मदिरा का प्याला उसे दिया जाय। इस दशा में उससे पूछा जाय, सम्भवत कोई बात बता दे।

ख्वाजा हाफ़िज़ ने कहा है —

शेर

अच्छे तथा बुरे लोगों के प्रति कृतज्ञता एव शिकायत का क्या स्थान है,
जब जीवन-पजिका पर लिखा न रहेगा।
सोने (के अक्षरो) से लिखा है पीत मणि की अट्टालिका पर,
दानियो के दान पुण्य के अतिरिक्त कुछ भी शेष न रहेगा।'

अत हज़रत पादशाह के आदेशानुसार ऐसा ही किया गया। कुछ अमीरो ने सभा आयोजित की और मदिरा का प्याला प्रेमपूर्वक उसे दिया। जब आलम खा पर मदिरा बहुत चढ गई तो उससे कहा कि "सुल्तान बहादुर के खजाने म से कुछ भी प्राप्त नही हुआ।' उसने उत्तर दिया कि, (७ अ) "यदि पादशाह खजाना चाहते है तो आदेश दिया जाय कि जिस हौज पर हम लोग बैठे है उसका जल निकाल दें। इस हौज से इतना अधिक खजाना प्राप्त हो जायगा कि समस्त सेना के लिए पर्याप्त होगा।" जब अमीरो ने यह सुना तो उन्होने हज़रत पादशाह से (इस विषय में) निवेदन किया। आदेश हुआ कि लोग कूजे[1] और प्यालो से हौज़ से जल निकाल दे।' उसी आलम खा ने फिर कहा कि, "इस प्रकार हौज खाली नही हो सकता। एक ओर जल की निकासी का स्थान है। उसे खोदा जाय ताकि जल निकल जाये।' शीघ्र उसी प्रकार किया गया। जिस स्थान को उसने बताया था वह खोदा गया। जल निकल गया और अपार खजाना जो महमूद[2] के समय से एकत्र

१ एक प्रकार की सुराही, प्याले को भी कूजा कहते हैं।

२ च, छ के अनुसार 'सुल्तान महमूद'। क, ख, ग, घ में यह वाक्य अस्पष्ट है किन्तु च, छ में पूर्ण रूप से स्पष्ट है। (सुल्तान महमूद ने जून १४५१ ई० से नवम्बर १५११ ई० तक राज्य किया। उसके विषय में **उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग २ में तबकाते अकबरी, मिरआते सिकन्दरी एवं ज़फरुल वालेह्** के अनुवाद देखिये।

था, प्राप्त हो गया। हज़रत पादशाह ने उसे ढालों में भर भरकर बाँट दिया। उसने एक कुएं का भी पता बताया जिसमें सोना तथा चांदी पिघला कर भर दिया गया था और वह उसी दशा में था[1]।

अमीरों का वापसी के लिये परामर्श

हज़रत पादशाह तरदी बेग को चम्पानीर के किले में छोड़कर स्वयं बहादुर के पीछे खम्बायत की ओर रवाना हुए। जब ईश्वर की कृपा तथा पादशाह के प्रताप से नित्य नई विजयें तथा अपार सफलता प्राप्त हो गई तो हिन्दू बेग एवं राज्य के कुछ उच्च-पदाधिकारियों तथा अमीरों (७ ब) ने निवेदन किया कि, 'परमेश्वर ने अपनी महान् अनुकम्पा तथा दया द्वारा हज़रत पादशाह को विजय प्रदान कर दी है। सुल्तान बहादुर रणक्षेत्र से भाग गया है और युद्ध नहीं कर सकता। वह मन्दू के किले में प्रविष्ट हुआ और वहां से भी भागकर चम्पानीर पहुँचा। वहां से वह सूरत के बन्दरगाह में घुस गया है और अब उसकी दशा बड़ी शोचनीय हो गई है। अतः यह उचित होगा कि जो ख़ज़ाना तथा विलायत प्राप्त हुई है उसे 'एक साला तथा दो साला[2]' के रूप में सैनिकों को प्रदान कर दिया जाय और शेष को अमानत के रूप में सौंप दिया जाय ताकि जब माँगा जाय तब वसूल किया जा सके। गुजरात की विलायत सुल्तान बहादुर को प्रदान कर दें और उसे अपनी ओर से नियुक्त कर दें ताकि इसका यश संसार में स्मृति के रूप में बाकी रहे।

शेर

'सोने के अक्षरों से लिखा है, पीत-मणि की अट्टालिका पर,
दानियों के दान-पुण्य के अतिरिक्त कुछ भी शेष न रहेगा।'

वे स्वयं विजय तथा सफलता प्राप्त करके राजधानी आगरा की ओर रवाना हो कारण (८ अ) कि चिन्ताजनक समाचार प्राप्त हो रहे हैं कि मेहा[3] सुल्तान मीर्ज़ा, उलुग मीर्ज़ा, शाह मीर्ज़ा तथा महमूद कुली मीर्ज़ा ने विद्रोह कर दिया है और गंगा नदी पर स्थित कन्नौज से जौनपुर के भाग अपने अधिकार में कर लिए हैं तथा अपने नाम का खुत्बा पढ़वा दिया है।

हुमायूं का वापसी के विषय में विरोध

हज़रत पादशाह इस बात से बड़े रुष्ट हुए और अमीरों तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियों पर क्रोध प्रदर्शित करते हुए कहा कि 'जिस राज्य को तलवार की शक्ति से विजय किया है उसे नष्ट नहीं करना चाहिये, इस राज्य को सुव्यवस्थित करना और इसकी शासन-व्यवस्था देहली के अधीन करनी चाहिये।"

मीर्ज़ा अस्करी का विद्रोह

जब अमीरों तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियों ने यह देखा कि, "हज़रत पादशाह ने उनके परामर्श तथा उनकी राय को स्वीकार नहीं किया तो उन्होंने विरोध करते हुए मीर्ज़ा अस्करी[4]

१ क, ख, ग, घ, च, छ, ज किसी में भी उसके प्रयोग के विषय में कुछ नहीं लिखा है।
२ एक वर्ष तथा दो वर्ष के पेशगी वेतन के रूप में।
३ च, छ एवं ज में इस प्रकार है —"मेहा सुल्तान मीर्ज़ा ने अपने पुत्रों, उलुग मीर्ज़ा, शाह मीर्ज़ा और मुहम्मद कुली मीर्ज़ा सहित विद्रोह कर दिया है।" (च पृ० ११ ब, छ पृ० १०अ, ज - पृ० ११अ)।
४ च, छ में "मीर्ज़ा अस्करी को जो उनका छोटा भाई था"।

को बहकाया और कहा कि, "तुम देहली की ओर चल दो और विद्रोह कर दो। हज़रत पादशाह को स्वयं उस ओर रवाना होना पड़ेगा।"

यादगार नासिर मीर्ज़ा द्वारा चम्पानीर का खज़ाना प्राप्त करने का प्रयत्न

अमीरों के कहने पर मीर्ज़ा अस्करी राजधानी देहली की ओर रवाना हुआ और यादगार नासिर मीर्ज़ा[1] चम्पानीर के किले में पहुँचा। उसने तरदी बेग से कहा कि 'खज़ाना मुझे दे दो।" तरदी बेग ने उत्तर दिया, 'हज़रत पादशाह के आदेश के बिना तुम्हे खज़ाना नही दे सकता[2]।" तरदी बेग ने पादशाह की सेवा में प्रार्थना पत्र भेजा कि "यादगारी नासिर मीर्ज़ा खज़ाना पर अधि-(८ ब) कार जमाने का विचार कर रहा है, इस विषय में जो आदेश हो, (वह किया जाय)।" हज़रत पादशाह ने उत्तर भेजा कि, 'उसे कुछ भी न दिया जाय कारण कि कुछ ही दिनों में मैं स्वयं उस ओर आ रहा हूँ।"

हुमायूं की वापसी

जब हज़रत पादशाह को यह ज्ञात हुआ कि अमीर लोग मीर्ज़ा लोगों से मिल गए हैं और विरोध करने पर तुले हुए हैं तथा उनकी विजयी सेना गुजरात की विलायत में विभिन्न स्थानों पर नियुक्त है और वे स्वयं एक थोड़ी सी सेना सहित खम्बायत में हैं तो उन्होंने सोचा कि इस स्थान से अहमदाबाद की ओर प्रस्थान करना चाहिए ताकि वहाँ समस्त सेना एकत्र हो जाय। आधी रात में हज़रत पादशाह खम्बायत से रवाना हुए और निरन्तर यात्रा करते हुए अहमदाबाद पहुँचे। जब पादशाह के यह समाचार चारों ओर फैल गए तो कुछ लोग आकर विजयी सेना से मिल गए और अधिकांश लोग राजधानी आगरा की ओर रवाना हो गए। जब हज़रत पादशाह को पता चला कि लोग छिन्न-भिन्न हो गए हैं और सेना एकत्र नही हो रही है तथा मेंहदी सुल्तान मीर्ज़ा एवं उसके पुत्रों के विद्रोह के समाचार निरन्तर प्राप्त हो रहे हैं तो विवश होकर वे स्वयं राजधानी आगरा की ओर रवाना हुए।

सुल्तान बहादुर का खम्बायत पहुँचना

(९ अ) जब सुल्तान बहादुर गुजराती को हज़रत पादशाह के अमीरों के विद्रोह का पता चला और यह ज्ञात हुआ कि हज़रत पादशाह परेशान हैं और उनकी सेना छिन्न भिन्न हो गई है तथा वे आगरा की ओर प्रस्थान कर रहे हैं तो वह ५-६ हज़ार हब्शी दासों को लेकर तथा फ़िरंगियों से सन्धि करके एवं उनकी सहायता से अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ। आधी रात के समय वह खम्बायत पहुँच गया।

१ च, छ में 'जो उसके चाचा का पुत्र था"।
२ च, छ, ज में, "बिना शाही आदेश के कुछ नहीं दे सकता"।

मेहा सुल्तान मीर्ज़ा का अपने सहायकों एवं परिवार सहित विद्रोह एवं मीर्ज़ा हिन्दाल का उन्हें दो बार पराजित करना[1]

हम अब विद्रोहियो का किस्सा प्रारम्भ कर रहे हे —

अभी हज़रत पादशाह गुजरात ही में थे कि तुगलान[2] बेग कोका ने, जिसकी जागीर मे परगना बिलग्राम सम्मिलित था, मीर्ज़ा हिन्दाल, शेख फूल[3], मुहम्मद कूकुल्ताश तथा हज़रत पादशाह के कुछ अमीरो की सेवा में उपस्थित होकर निवेदन किया कि, "मेहा सुल्तान मीर्ज़ा ने बिलग्राम पर अधिकार जमा लिया है और उसे अपनी राजधानी बना लिया है। उसने उलुग मीर्ज़ा को जौनपुर इस आशय से भेज दिया है कि वह उसका अवरोध करे। शाह मीर्ज़ा को कड़ा मानिकपुर की ओर भेज दिया है और स्वय बिलग्राम मे है। इस समय उसकी सेना छिन्न-भिन्न है, इस अवसर पर यदि आप लोग प्रस्थान कर दे तो ईश्वर की कृपा तथा शाही इक्बाल से सफलता प्राप्त हो सकती (९ ब) है।" अत शेख फूल, मुहम्मद कूकुल्ताश, तुगलान बेग, खुसरो कूकुल्ताश के पुत्र जो कन्नौज के हाकिम थे तथा अन्य अमीर मीर्ज़ा हिन्दाल के साथ कन्नौज की ओर मेहा सुल्तान के विरुद्ध रवाना हुए। वे निरन्तर यात्रा एव एक पडाव से दूसरे पडाव को पार करते हुए गगा तट पर पहुँचे। मेहा सुल्तान मीर्ज़ा को समाचार प्राप्त हुए कि मीर्ज़ा हिन्दाल कन्नौज पहुँच गया है। उसने उलुग मीर्ज़ा तथा शाह मीर्ज़ा को परवाने लिखे[4] कि, "शीघ्र आ जाओ कारण कि मीर्ज़ा हिन्दाल ने अवरोध कर लिया है।" यह समाचार पाते ही शाह मीर्ज़ा कड़ा से शीघ्रातिशीघ्र बढता हुआ आया। उलुग मीर्ज़ा ने मेहा सुल्तान को पत्र लिखा कि, "मेरे पहुँचने तक उन्हे किसी न किसी युक्ति से टालते रहो और कदापि युद्ध न करो।" सक्षेप मे, मेहा सुल्तान मीर्ज़ा, शाह मीर्ज़ा सहित बिलग्राम से आया और उसने युद्ध हेतु गगा तट पर पडाव कर दिया।

१ हुमायूं शाही तथा जवाहर शाही के अनुसार फस्ल ३ (च पृ० १२ब, छ : पृ० १०अ, ज . पृ० १२अ)।

२ च, छ, में इस प्रकार है —"अभी हज़रत, गुजरात की विलायत में थे कि मेहा सुल्तान मीर्ज़ा ने विद्रोह कर दिया और बिलग्राम पहुँचा। तुकलान बेग कोका जिसकी जागीर में वह परगना था, उसका मुक़ाबला न कर सका। वह कन्नौज के किले में प्रविष्ट हो गया। मीर्ज़ा (मेहा सुल्तान) ने कन्नौज पर आक्रमण किया। (तुग़लान) कोका खुसरो कूकुल्ताश के पुत्रों ने जो कन्नौज के हाकिम थे, कुछ दिन तक प्रतिरक्षा की। क्योंकि उनके पास खज़ाना न था अत. क्षमा याचना करके उस किले के बाहर निकले और राजधानी आगरा में हिन्दाल मीर्ज़ा की सेवा में पहुँच कर निवेदन किया कि 'मेहा सुल्तान ने बिलग्राम पर अधिकार जमा लिया है और उसे अपनी राजधानी बना कर अपने पुत्रों में से उलुग मीर्ज़ा को इस आशय से जौनपुर भेज दिया है कि वह उसे घेर ले। शाह मीर्ज़ा को कड़ा मानिकपुर भेज दिया है और स्वय बिलग्राम में डटा है। इस समय उसके आदमी छिन्न-भिन्न है।" (च : पृ० १३अ, छ पृ० ११अ]।

३ क, ख, ग में 'भूल', घ में 'भूल', च एव छ में 'फूल', ज में 'बहलोल'। यह शब्द फ़ारसी लिपि में असावधानी से लिखने के कारण विभिन्न रूप धारण कर सकता है।

४ ज, छ में "अपने पुत्रों को परवाने लिखे।"

मीर्ज़ा हिन्दाल का गंगा नदी पार करना तथा युद्ध

मीर्ज़ा हिन्दाल ने अपने अमीरों से परामर्श किया कि, 'अब क्या करना चाहिये ?'' अमीरों ने परामर्श दिया कि "उलुग मीर्ज़ा के इन लोगों के पास पहुँचने के पूर्व ही युद्ध कर देना चाहिये।" मीर्ज़ा हिन्दाल ने कहा कि "हमारे पास इतनी नौकाएँ नहीं हैं कि एकबारगी नदी पार की जा सके। तुगलान बेग कोका ने निवेदन किया कि "इस स्थान पर दास की जागीर थी, यदि आदेश (१० अ) हो तो कुछ ऐसे लोग ढूँढकर लाऊँ जो नदी के पार करने का स्थान बतायें।" मीर्ज़ा हिन्दाल बहुत प्रसन्न हुआ और उसने तुगलान बेग को सरोपा प्रदान करके कहा कि "इस सेवा से बढ़कर और कौन सेवा हो सकती है। जाओ और यह कार्य करो। तुगलान बेग ने मीर्ज़ा से विदा होकर उस क्षेत्र के मल्लाहों को बुलवाया और उन्हें सरोपा देकर एक हजार[1] तन्के इनाम देने का वचन दिया और कहा कि "नदी पार करने की व्यवस्था कराओ। मल्लाह लोग प्रत्येक दिशा से जल में प्रविष्ट हो गए और दो दिन उपरान्त मीर्ज़ा की सेना से ५ कुरोह की दूरी पर पार करने के लिए स्थान निकाल लिया। तुगलान बेग ने आकर निवेदन किया कि "मुबारक हो, बादशाह के प्रताप से पार करने का स्थान मिल गया। मीर्ज़ा हिन्दाल ने शेख पूरन को बुलवाकर फातेहा पढ़ा और आदेश दिया कि "खेमे डेरे उसी स्थान पर रहें। सेना सहित अपने अस्त्र शस्त्र को लेकर हम इस प्रकार नदी पार करें कि शत्रुओं को सूचना न होने पाये और तैयार होकर उनसे युद्ध करें।' मीर्ज़ा के आदेशानुसार एक पहर रात व्यतीत हो जाने के उपरान्त लोग नदी को पार करने के स्थान की ओर रवाना हुए। आधी रात रह गई थी कि समस्त सेना कुशलतापूर्वक नदी के पार हो गई।

मीर्ज़ा हिन्दाल द्वारा कन्नौज विजय

मीर्ज़ा हिन्दाल ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और कहा कि "प्रातःकाल समस्त (१० ब) सैनिक अस्त्र शस्त्र धारण कर लें। सूर्य उदय होने के पूर्व ही युद्ध प्रारम्भ कर दें[2]। मेहा सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हुए कि मीर्ज़ा हिन्दाल अपनी सेना सहित नदी पार कर चुका है। उस ओर से शत्रुओं की सेना ने भी अस्त्र शस्त्र धारण किए और युद्ध के लिए तैयार हो गए। एक पहर दिन व्यतीत हो चुका था कि दोनों सेनाएँ आपस में युद्ध करने लगीं। अचानक पश्चिम दिशा से आँधी उठी

शेर

पश्चिम दिशा से एक बवंडर उठा
जिसने लोगों के नेत्रों के समक्ष संसार को अंधेरा कर दिया।

१ क, ख ग घ में '१ हजार' किन्तु च न में १० हजार स्पष्ट है, (च पृ० १३ब ज पृ० १३अ छ में "देह' स्पष्ट नहीं। रोटोग्राफ धुँधला हो गया है। सम्भवतः हस्तलिपि में देह (१०) ही हो।

२ न छ में इस प्रकार है — "समस्त सेना ने कुशलतापूर्वक नदी पार कर ली। मीर्ज़ा ने आदेश दिया कि सेना उपची (सशस्त्र) होकर रण क्षेत्र में उपस्थित हो और शत्रु पर एक साथ आक्रमण कर दें", (च पृ० १३ब, छ पृ० ११ब न १३अ)।

घोडो की टापो से इतनी अधिक धूल उडी कि अधेरा छा गया, जैसा कि कहा गया है —

शेर

'उस लम्बे चौडे मैदान मे, चौपाया की टापा से,
भूमि छ हो गई और आकाश ८ हो गये[1]।'

मेहा मुल्तान मीर्ज़ा के आदमी आँधी मे घिर गए और उन्हे इस बात का अवसर न मिल सका कि वे यह पहिचान सकें कि शत्रु कौन है और उनके आदमी कौन है। मेहा मुल्तान मीर्ज़ा की सेना पराजित हो गई।

शेर

उस न्यायकारी बादशाह के इकबाल से,
आकाश ने विजय एव सफलता के द्वार खोल दिये।'

वह उलुग मीर्ज़ा के पास जौनपुर की ओर चल दिया। मीर्ज़ा हिन्दाल ने बिलग्राम का परगना तुगलान बेग को प्रदान करके कहा कि, 'ईश्वर को धन्य है, तूने बडी ही उत्तम सेवा की। यदि ईश्वर ने (११ अ) चाहा तो हजरत पादशाह के गुजरात से वापस होने के बाद तेरी सिफारिश की जायेगी[2]।

मीर्ज़ा हिन्दाल की अवध विजय

वह[3] उसी विजयी सेना को लेकर ईश्वर के इस वचन के अनुसार कि 'अल्लाह, जिनकी सहायता करता है उन्हे विजय प्राप्त होती है" मेहा सुल्तान मीर्ज़ा का पीछा करते हुए उलुग मीर्ज़ा के विरुद्ध रवाना हुआ। वह निरन्तर यात्रा करता हुआ अवध के समीप पहुँचा था कि उलुग मीर्ज़ा मेहा मुल्तान मीर्ज़ा के पास आकर मिल गया। दोना हिन्दाल मीर्ज़ा से युद्ध के लिए डट गए। दो मास तक दोनो सेनाए एक दूसरे के सामने पडी रही। हिन्दाल मीर्ज़ा युद्ध के लिए बेचैन था किन्तु शेख फूल नही मानता था और कहता था कि "ठहर जाओ, मै दावते इस्महा[4] में व्यस्त हूँ, यदि ईश्वर ने चाहा तो वे स्वय छिन्न भिन्न हा जायेंगे।" मीर्ज़ा हिन्दाल इस समाचार मे प्रसन्न हो गया। इसी बीच में मेहा सुल्तान मीर्ज़ा को समाचार प्राप्त हुए कि हजरत पादशाह आगरा पहुँच गए है। विद्रोही लोग विवश होकर युद्ध के लिए अग्रसर हुए। मीर्ज़ा हिन्दाल ने शेख फूल से पूछा कि, "क्या करना चाहिये ?" शेख फूल ने कहा कि, 'क्योकि शत्रु युद्ध के लिए आ गया है अत हमें युद्ध करना चाहिये[5]।" सक्षेप मे, दोना ओर से युद्ध का डका बज गया और वे परस्पर युद्ध मे व्यस्त हो

१ भूमि तथा आकाश दोनों की भान-भान तहें मानी गई है। धूल के कारण भूमि को एक तह के जमीन मे उठ कर आकाश की ओर चले जाने से आकाश की ८ तहें हो गई और भूमि की ६ ही तहें रह गई।

२ च और छ में, " सिफारिश की जायगी और तेरी स्वामी भक्ति का उल्लेख उनकी सेवा में किया जायगा।"

३ मीर्ज़ा हिन्दाल।

४ च, छ में "दावते इस्महाये आज़म में व्यस्त हूँ। यदि ईश्वर ने चाहा तो वे स्वयं छिन्न भिन्न हो जायेंगे।" ईश्वर के नामों में से कुछ महान् नाम (इस्महाये आज़म) ऐसे बताये जाते हैं जिनका ज्ञान बडे बडे सन्तों के अतिरिक्त किसी को नहीं। इन नामों द्वारा सहायता मागने से प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त हो जाती है।

५ च, छ एवं ज में —"शेख ने कहा कि क्योंकि शत्रु युद्ध के लिए उद्यत है अत पीछे पाव न हटाना चाहिये। युद्ध करना चाहिये। विजय एव सफलता आप की ओर है। विद्रोहियों को अपमान एव परेशानी के अतिरिक्त कुछ न प्राप्त होगा।" (च - पृ० ९ब, छ पृ० १२ब, ज - पृ० १४अ)।

(११ ब) गए। क्योंकि हज़रत पादशाह का सौभाग्य एवं प्रताप उन्नति पर था अतः हिन्दाल मीर्ज़ा को विजय प्राप्त हो गई।

शेर

जब प्रताप न्याय एवं उपकार के साथ होता है,
विजय एवं सफलता के द्वार उसके लिए खोल देता है।'

मेहदी सुल्तान मीर्ज़ा, अपने तीनों पुत्रों सहित पराजित होकर भाग खड़ा हुआ और खुन्दा बिहार के पर्वतों[1] की ओर जो पूरनिया के समीप बंगाल की सीमा पर है पहुँच गया।

मीर्ज़ा हिन्दाल जौनपुर में ठहर गया और वह जौनपुर को बाँटना चाहता था कि हज़रत पादशाह के समाचार प्राप्त हुए कि वे गुजरात से आगरा पहुँच गए हैं।

(३)

हज़रत पादशाह का गुजरात से राजधानी आगरा में आगमन, मीर्ज़ा हिन्दाल, शेख फूल एवं राज्य के कुछ पदाधिकारियों का जिनका उल्लेख हो चुका है, हज़रत पादशाह के चरणों के चुम्बन द्वारा सम्मानित होना, हज़रत पादशाह का शेर ख़ाँ के समाचार पूछना, समाचार के उपरान्त शेर ख़ाँ के विरुद्ध प्रस्थान एवं चुनार के किले की विजय[2]

हिन्दाल का विवाह

जब हज़रत पादशाह गुजरात से राजधानी आगरा पहुँचे तो मीर्ज़ा हिन्दाल विजय तथा (१२ अ) सफलता प्राप्त करके शेख फूल तथा अन्य अमीरों सहित जो उसके साथ थे आकर हज़रत पादशाह की चौखट का चुम्बन करके सम्मानित हुआ[3]। हज़रत पादशाह ने हिन्दाल मीर्ज़ा का नाना प्रकार की शाही कृपाओं द्वारा सम्मानित किया और बहुत बड़ी दावत की तथा उनका विवाह किया।

१ **हुमायूँ शाही** (च छ) में — कोह खुन्दा (खुन्दा पर्वत) में जो बंगाले की सरहद के पूरनिया कस्बे से मिला है।"

२ **हुमायूँ शाही** (च छ) तथा **जवाहर शाही** (न) में यह चौथी फस्ल है और उसका शीर्षक इस प्रकार है — फस्ल चहारम —बंदेगान हज़रत की गुजरात की विलायत से राजधानी आगरा को वापसी, तदुपरान्त शेर ख़ाँ सूर पर चढ़ाई, और ईश्वर की कृपा से चुनार एवं बंगाले की विजय। (न पृ० १०अ छ पृ० १२ब, न पृ० १४ ब)।

३ न, छ और ज में इसके आगे इस प्रकार है — धरती का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। उस समूह की कृतज्ञता एवं स्वामिभक्ति तथा उनकी पराजय का हाल उचित रूप से सविस्तार बताया। हज़रत ने प्रत्येक को उसकी श्रेणी के अनुसार शाही कृपाओं एवं बादशाही इनामों द्वारा सम्मानित किया। अपनी अपार कृपा एवं अनुकम्पा के कारण निश्चय किया कि मीर्ज़ा (हिन्दाल) का विवाह करें। दूसरे दिन ज्योतिषियों द्वारा निश्चित शुभ मुहूर्त में दावत हुई और फ़िरदौस मकानी की बहिन की पुत्री से उसका निकाह कर दिया। सभा की गई। हर प्रकार के भोजन एवं पेय का प्रबंध किया गया। गायकों एवं वादकों ने अपनी कला तथा हिन्दी पातुरों ने अपने हाव भाव से सभा की शोभा बढ़ा दी।' (च पृ० १५ब, छ पृ० १३अ, न पृ० १५अ)।

मीर्ज़ा अस्करी का सम्भल में नियुक्त होना

मीर्ज़ा अस्करी को सम्भल की सरकार जागीर के रूप में दे दी और आदेश दिया कि "क्योंकि मेहा सुल्तान मीर्ज़ा अपने पुत्रों सहित सम्भल के पर्वत की ओर पहुँचा है अत उन लोगों को नष्ट करने का ऐसा प्रयत्न कर कि उनका चिह्न ससार में शेष न रह जाय, तदुपरान्त सम्भल में निवास प्रारम्भ कर।" अस्करी मीर्ज़ा शाही आदेशानुसार सम्भल की सरकार म पहुँचा। उसने यद्यपि प्रयत्न किया किन्तु उसे यह पता न चला कि वे कहाँ गए और किस पहाड मे प्रविष्ट हो गए।

शेर

'ईश्वर को हज़ार हज़ार धन्य है कि मैंने युग मे देखा,
दुर्भाग्य को पृथक् एव सौभाग्य को साथ।

हुमायूं का चुनार की ओर प्रस्थान

जब हज़रत पादशाह ने शेर खा के विषय में पूछा कि, "उसका क्या हाल है और उसके क्या विचार है?" तो अमीरो एव राज्य के उच्च पदाधिकारियो ने निवेदन किया कि, "शेर खा रोहतास तथा भरकन्दा[1] के किले में है जिनपर उसने अधिकार जमा लिया है और दीर्घकाल से बगाले का अवरोध किए हुए है और शीघ्र ही वह उस पर विजय भी प्राप्त करने वाला है।" ये इस बात को सुनकर बडे रुष्ट हुए और कहा, "अफगान लोग इतने बढ चुके है! चुनार की ओर (१२ ब) प्रस्थान करना चाहिये।" रूमी खा से पूछा कि, "तू चुनार के किले के विषय में क्या कहता है?" उसने निवेदन किया कि "यदि ईश्वर ने चाहा तो उस किले को जबरदस्ती विजय कर लिया जायेगा।"

रूमी खा द्वारा चुनार विजय का प्रयत्न

सक्षेप में, वे निरन्तर प्रस्थान करते हुए चुनार की ओर रवाना हुए। शबबरात को चुनार से पाँच कुरोह पर पहुँच गए। रूमी खा सोचने लगा कि, "चुनार के किले के विषय मे किस प्रकार सूचना प्राप्त की जाय और किस बुर्ज को गिराया जाय तथा सुरग लगाई जाय[2]?" उसने कुलाफात[3] नामक अपने दास को यूनिन की दृष्टि से इतना मारा कि चोट के चिह्न उसके शरीर पर दृष्टिगत होने लगे और कहा कि, "किले के भीतर अफ़गानो के पास जाकर कह कि 'मैं रूमी खा का दास था, मुझे उसने बिना किसी अपराध के इतना मारा है कि भागकर तुम लोगों के पास आया हूँ।' इस बहाने से किले की एक एक बात का प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त कर ले कि किस बुर्ज तक सुरग लगाई जाय। तदुपरान्त भागकर वापस आ जा।" कुलाफात ने ऐसा ही किया। किले में पहुँचा, अफगानो ने उसका उपचार कराया और उसके घाव अच्छे हो गए। तदुपरान्त उसने अफगानों से कहा कि,

१ क, ख, ग, घ तथा ज में 'भरकन्दा', च, छ, में 'बरकन्दा'।
२ च, छ में —"किस बुर्ज को गिराया जाय और किस ओर सुरग लगाऊँ"।
३ च, छ में 'कुलफात' एवं ज में 'कुलफ़ा'।

(१३ अ) "यदि तुम उचित समझो तो बुर्ज तथा किले का मुझे निरीक्षण करा दो ताकि मैं किले की प्रतिरक्षा की व्यवस्था करूँ। जिस स्थान पर तोप से हानि पहुँच सकती हो वह तुम्हें बताऊँ और रूमी खाँ को किले के समीप न पहुँचने दूँ[1]।" अफगानों ने वैसा ही किया और किले के प्रत्येक स्थान के विषय में कुलाफात को बताया ताकि वह जैसा उचित समझे कोई उपाय बताये। कुलाफात ने कई दिन तक किले में ठहर कर उसके विषय में अच्छी तरह समझ लिया। तदुपरान्त भाग कर रूमी खाँ के पास पहुँचा और वहाँ के विषय में उसे बताया। उसने रूमी खाँ से निवेदन किया कि, "जो बुर्ज नदी की ओर है उस ओर से सुरंग लगानी चाहिये ताकि लोग किले के समीप पहुँच जायँ तथा मोर्चे लगाये जायें।" रूमी खाँ ने बड़ी तोप लाकर नदी तट के सामने जो बुर्ज था वहाँ लगा दी और उपयुक्त बुर्ज को गिरा दिया। किले का अवरोध करके मोर्चे अमीरों को बाँट दिए।

मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा एवं मेंहदी सुल्तान का हुमायूँ की सेवा में उपस्थित होना

उसी समय मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा तथा मेहदी सुल्तान मीर्ज़ा पुत्रों सहित शाही सेवा में (१३ ब) उपस्थित हुए और हज़रत पादशाह ने उनके अपराध क्षमा कर दिए।

शेर

'जब बादशाही ने उनमें स्वामी-भक्ति देखी,
तो उसने दया एवं कृपा प्रदर्शित की।'

पादशाह ने उनकी श्रेणी के अनुसार उचित कृपा-दृष्टि प्रदर्शित की।

चुनार के किले की विजय

तदुपरान्त रूमी खाँ ने हज़रत पादशाह से निवेदन किया कि, "यदि आदेश हो तो एक सरकाब[2] नौका पर तैयार किया जाय ताकि नदी से किले पर अधिकार जमाया जा सके और जो लोग किले पर घूमते हुए मिलें उन्हें मारा जा सके।' आदेश हुआ कि, 'जो कुछ भी उचित हो और जो प्रयत्न कर सकते हो वह करो। रूमी खाँ ने तीन नौकाओं में सरकोब तैयार किया यहाँ तक कि वह इतना ऊँचा हो गया कि समस्त किला उस सरकोब के नीचे हो गया। ६ मास में वह सरकोब तैयार हो गया। उसने आकर निवेदन किया कि 'यदि आदेश हो तो सरकोब को बढ़ाया जाय ताकि उसे ले जाकर किले के करीब दृढ़ रूप से मिला दिया जाय। सेना चारों ओर से प्रयत्न करे और किला विजय हो जाय।" अतः पादशाह के आदेशानुसार सरकोब को किले तक पहुँचा दिया गया और प्रत्येक दिशा में युद्ध होने लगा। आधी रात[3] तक युद्ध होता रहा। यहाँ तक कि लगभग ७ सौ मुगुल मार डाले गए। अत्यधिक प्रयत्न करने पर भी किला न टूटा। सरकोब का एक भाग युद्ध (१४ अ) में टूट गया। प्रातःकाल तक सरकोब की पुनः मरम्मत कर दी गई। जब अफगानों ने देखा

१ च, छ में इस प्रकार है—"यदि तुम उचित समझो तो बुर्जों एवं किले का मुझे भली भाँति निरीक्षण करा दो ताकि जिस ओर रूमी खाँ ने तोपें लगाई हैं, उस ओर प्रतिरक्षा की जा सके और इधर वालों का बचाव हो सके।"

२ एक प्रकार का ऊँचा मचान जिससे किले पर आक्रमण करने में सुविधा होती है।

३ क, ख, ग, घ एवं ज में 'आधी रात' किन्तु च और छ में 'दो पहर'।

कि शाही सेना की शक्ति अधिक है और किले को हजरत पादशाह आजकल मे विजय कर लेगे तो उन्होने सधि का प्रस्ताव रखा,

शेर

'प्रार्थना करने के लिए उन्होने जबान खोली,
अत्यधिक प्रशसा करते हुए शाह का स्मरण किया।
कि ससार में वह बडा बुद्धिमान् है,
उसके लिए जहाँदारी[1] उचित है।
यदि वह मेरी ओर आकृष्ट हो,
तो मै दाँतो से पकड कर सेवा करूँ।

और यह कहा कि हम लोग किला समर्पित करते है, आप हमे कोई हानि न पहुँचायें। हजरत पादशाह ने उन लोगो को हानि न पहुँचाने का वचन दे दिया और किले पर अधिकार जमा लिया। रूमी खा ने तोपचियों इत्यादि के एक समूह मे से जो अफगानो की सेना मे किले के भीतर थे, ३०० व्यक्तियो के दोनो हाथ कटवा डाले। हजरत पादशाह इस बात से रूमी खा से बडे रुष्ट हुए और कहा कि "जब इन लोगो को क्षमा कर दिया गया था तो उनके हाथो को कटवाना उचित न था।"

रूमी खा की हत्या

सक्षेप में, जब हजरत पादशाह ने किले को विजय कर लिया तो शाहाना जश्न आयोजित किया। अमीरो को दावत दी और प्रत्येक को सरोपा प्रदान किया गया। प्रत्येक उच्च पद पर प्रतिष्ठित किया गया। रूमी खा से उन्होने पूछा कि, 'तूने चुनार के किले को कैसा पाया" ? उसने (१४ ब) निवेदन किया कि, "यदि इस प्रकार का किला मेरे हाथ में आ जाय तो मै किसी विद्रोही को इस किले के समीप न फटकने दूँ।" हजरत पादशाह ने पुन पूछा कि, "इस किले को प्रदान किय जाने के विषय में तू क्या परामर्श देता है ?" उसने निवेदन किया कि, "इन अमीरो मे से बेग मीरक के अतिरिक्त किसी को इसके योग्य नही देखता।" हजरत पादशाह ने किले को बेग मीरक को प्रदान कर दिया। इस कारण समस्त अमीर रूमी खा से शत्रुता रखने लगे और इस शत्रुता एव विरोध के कारण अमीरो ने आपस में मिलकर उसे मौत का प्याला पिला दिया[2]।

१ बादशाही।

२ च एव छ में इस घटना के बाद निम्नांकित कहानी का उल्लेख है —"एक दिन व नौका में बैठे थे कि मख़ादीम (स्वामियों, प्रतिष्ठित गणों) के समूह के एक व्यक्ति ने रोते पीटते आकर फरियाद की कि 'अत्याचारी मीर तबरतेशा (?) ने बरात (वह पत्र जिसमे खजाने अथवा किसी जागीर से धन मिले) के धन के लिये मेरी पत्नी के हाथ पाव में रुई लपेट कर उसे तल से भिगोकर उसमें आग लगा दी।' वे कृपालु (बादशाह) उससे इस विषय में पूछते जाते थे और रोते जाते थे। दूसरे दिन दरबार में पहुँच कर वे न्याय के सिंहासन पर आरूढ हुये। बेत मगवाये। जो लोग उपस्थित थे, वे सकेत में वार्ता करने लगे कि यह क्या रहस्य है किन्तु तबरतेशा को इसका पता चल गया। वह कापने लगा। (हजरत ने) कहा,'हे धृष्ट तबरतेशा ! अमुक मख्दूम की स्त्री के प्रति तूने बरात के धन के कारण क्यों इतनी कठोरता की' तूने न ईश्वर का भय किया और न मुझे मेरे न्याय की कोई चिन्ता रही।' उसने अपना अपराध स्वीकार न किया। उसे लिटा कर उन बेतों से मारने का आदेश हुआ। उसे इतना पीटा गया कि वह अचेत हो गया। लोगों ने आकर निवेदन किया कि, 'वह मर गया।' हजरत ने कहा, "नरक

(४)

हजरत पादशाह का बंगाला की ओर प्रस्थान तथा उसकी विजय[1]

जब चुनार का किला अधिकार में आ गया तो हजरत पादशाह ने किले से प्रस्थान करके बनारस के समीप पड़ाव किया और पूछा कि "शेर खां सूर के क्या समाचार हैं और वह कहाँ है?" राय बूचा[2] ने निवेदन किया कि, "शेर खां बंगाले को घेरे हुए है और उसने उसकी बड़ी दुर्दशा कर दी है। सम्भव है कि वह शीघ्र ही बंगाले पर अधिकार जमा ले।" हजरत पादशाह ने कहा कि, "जब तक अफगान बंगाले में उलझा है, उचित यही है कि हम रोहतास तथा भरकुन्दा के किले (१५ अ) की ओर रवाना हों।" संक्षेप में, हजरत पादशाह ने भरकुन्दा की ओर प्रस्थान किया। वे सोन नदी पर पहुँचे ही थे कि समाचार प्राप्त हुए कि शेर खां ने बंगाले को अधिकार में कर लिया है और बंगाले के खज़ाने को उठाकर रोहतास तथा भरकुन्दा के किले में ले आया है।

मीर्ज़ा यादगार नासिर को देहली तथा मीर्ज़ा हिन्दाल को आगरा भेजना

हजरत पादशाह ने मीर्ज़ा हिन्दाल, यादगार नासिर मीर्ज़ा एवं खुसरो कूकुल्ताश को देहली की ओर रवाना किया और आदेश दिया कि, "मीर्ज़ा यादगार नासिर तथा फख्र अली बेग राजधानी देहली में रहें। मीर्ज़ा हिन्दाल, नूर मुहम्मद मीर्ज़ा, खुसरो कूकुल्ताश राजधानी आगरा में रहें।"

शेर खां के पास हुमायूं का दूत

जब उन्हें देहली तथा आगरा की ओर भेज दिया तो वे स्वयं भरकुन्दा के किले की ओर रवाना हुए। हजरत पादशा_ का लश्कर भरकुन्दा के किले के समीप पहुँच गया। हजरत पादशाह ने कब्ल[3] हुसेन तुर्कमान को शेर खां के पास दूत बनाकर भेजा और आदेश दिया कि, "चत्र राजसिंहासन तथा खजाने दरबार में भेज दे और बंगाला प्रदेश तथा रोहतास के किले को खाली कर दे और उन्हें दरबार के दासों को सौंप दे। उसके बदले में चुनार का किला तथा वल्दये जौनपुर[4] एवं जो

में जाय'। तदुपरान्त उसे मुर्दा समझ कर लोग उठा ले गये। कई बार उसे कच्ची खाल में लपेटा गया। रक्त जम कर उसका शरीर सूज गया था। उसके शरीर में जो बेंत के छोटे-छोटे टुकड़े रह गये थे उन्हें चिम्टी से निकाला गया। दो-तीन मास उपरान्त वह स्वस्थ हो गया। तदुपरान्त अमीरों ने कहा, 'वह लज्जित है और तोबा कर रहा है। यदि आदेश हो तो उसे कोई सेवा प्रदान कर दी जाय।' हजरत ने कहा, 'मैंने उसे क्षमा कर दिया।' [च पृ० १८ अ व, छ पृ० १५ब व १६अ]।

१ च, छ और ज में यह प्रथम फस्ल (अध्याय) नहीं है।

२ च, छ और ज में —"जब वे बनारस के समीप पहुँचे तो शेर खां के विषय में पूछा। राय बूचा हिन्दू ने जो फ़िरदौस मकानी के समय से प्राचीन सेवक था, निवेदन किया कि, 'वह बंग प्रदेश की राजधानी को घेरे हुये है।"

३ च, छ एवं ज में 'कुबूल हुसेन तुर्कमान,' (च पृ० १६अ, छ पृ० १६अ, ज पृ० १८अ)।

४ जौनपुर कस्बा, किन्तु यहाँ प्रदेश से तात्पर्य है।

(१५ ब) भी स्थान[1] उसे पसन्द होगा, दे दिया जायेगा।" शेर खा ने स्वीकार न किया और कहा कि, "मैंने ५-६ वर्ष के परिश्रम से बगाले को तलवार द्वारा विजय किया है। मेरा अधिकाश लश्कर इसमें मारा गया। अत बगाला प्रदेश मैं किस प्रकार दे सकता हूँ?"

हुमायूं का गढी की ओर प्रस्थान

इसी बीच में बगाले[2] के पादशाह का प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ कि, "हजरत पादशाह निरन्तर *यात्रा करते हुए गढी की ओर आ जायें[3]।*" इस प्रार्थना-पत्र के पाते ही हजरत पादशाह ने प्रस्थान कर दिया। इसी बीच में कल्ल हुसेन तुर्कमान जो दूत बनाकर भेजा गया था, वहाँ से आया और हजरत पादशाह से निवेदन किया कि, "शेर खा ने फरमान स्वीकार नही किया और पर्वत के पीछे से बगाले की ओर आ रहा है।" हजरत पादशाह की सेना मुनेर पहुँच चुकी थी कि सैयिद महमूद बगाले का बादशाह उपस्थित हुआ। वह घायल तथा पराजित हो चुका था। उसने पादशाह के प्रति अभिवादन करके निवेदन किया कि, "बगाले में इतना अधिक भडार[4] है कि यदि अधिकार में आ जाय तो समस्त ससार का खराज उससे अदा हो सकता है।" हजरत पादशाह ने उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुए उसे प्रोत्साहन दिया और कहा कि, "तेरे राज्य को अधिकार मे करके तुझे प्रदान कर दूँगा। तू साहस से काम ले। वीरो को ऐसी दुर्घटनाओं का सामना करना ही पडता है।" हजरत पादशाह (१६अ) ने जहाँगीर कुली बेग, बेग अली[5], दीनदार बेग[6], मुगुल बेग, हाजी मुहम्मद कोकी, अली खा महावनी[7], हैदर बख्शी, मेहतर जम्बूर तथा कुछ अन्य अमीरों को इस आशय से नियुक्त किया कि वे बगाले की ओर जाकर गढी पर अधिकार जमा लें। उपर्युक्त अमीर आदेशानुसार रवाना हुए।

गढ़ी में हुमायूं की सेना की पराजय

जब वे गढी के समीप पहुँचे तो उन्हे समाचार प्राप्त हुए कि, "शेर खा का पुत्र जलाल खा उस स्थान पर है। हजरत पादशाह के अमीर युद्ध हेतु रवाना हुए। गढी के समीप एक बडा दुर्गम स्थान था[8]। वे[9] वहाँ प्रविष्ट हो गए। जलाल खा ने अपने आदमियो को नियुक्त किया। (वहाँ) एक

१ च, छ एव ज में 'विलायते' अथवा प्रदेश।
२ च, छ में 'सैयिद महमूद बादशाहे बगाला', (ज) में 'बगाले के बादशाह का जिसका नाम सैयिद महमूद शाह था'।
३ च, छ में इस प्रकार है —"अविलम्ब एव नि सकोच गढी नामक कस्बे में पहुँच जायें"।
४ जखीरा, किन्तु खजाने से तात्पर्य है। च एवं छ में 'जखीरा एव खजाएन'।
५ च, छ में 'अली बेग'।
६ क, ख, ग एव घ में 'दिन्दार बेग'।
७ क, ख, ग एव घ में 'महावनी' तथा च, छ एव ज में 'महावनी'। महावनी अथवा महावन निवासी ही उचित है।
८ च, छ में इस प्रकार है —"अमीर लोग उस प्रदेश की ओर रवाना हुये। जब वे गढी के समीप पहुँचे तो उन्हें समाचार प्राप्त हुये कि शेर खा का पुत्र जलाल खा वहा है। वे उस दुर्गम स्थान पर, जिसकी एक ओर पर्वत है और दूसरी ओर गगा नदी तथा मार्ग बडा सकरा है, पहुँच गये। जलाल खा ने अपने आदमी नियुक्त कर दिये और उनके पीछे से पहुँच कर सकरे मार्ग पर अधिकार जमा लिया"। (ज में क, ख, ग एवं घ के समान ही है)।
९ शाही सेना वाले।

ओर गगा नदी है और दूसरी ओर पर्वत है, मार्ग बडा सकरा है। (उसने आदेश दिया) उसी सकरे मार्ग से चले जाओ और युद्ध करो। लश्कर के पीछे से पहुँच कर उन्होंने सकरे मार्ग पर अधिकार जमा लिया। वह स्वय अपनी सेना को तैयार कर उस ओर से पहुँचा और युद्ध छेड दिया। हज़रत पादशाह के अमीर पराजित हुए। अली खा महावती तथा हैदर बख्शी शहीद हुए। यह समाचार हज़रत पादशाह को प्राप्त हुए।

हुमायूं का गढी की ओर प्रस्थान

वे इसे सुनकर बडे दुखी हुए। जो अन्य अमीर बच गए थे वे कहल ग्राम में हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुए। (हज़रत ने) गढी की ओर प्रस्थान किया। ईश्वर की कृपा से वर्षा होने (१६ब) लगी। जब कुछ समय उपरान्त वर्षा कम हो गई तो खेमे[1], डेरे तथा सरापरदे लगवाये गए। हाजी मुहम्मद बेग को इस आशय[2] से नियुक्त किया गया कि वह गढी के समाचार प्राप्त करे और पता लगाये कि जलाल खा वहाँ है। हाजी मुहम्मद जाकर समाचार लाया कि "जलाल खा गढी मे है। शेर खा ने अपने पुत्र जलाल खा को लिख दिया है कि, 'मैं धन-सम्पत्ति को रोहतास भेज रहा हूँ। जब तक मैं अपने कार्य में व्यस्त रहूँ तू भरकन्डा की ओर चला आ, हज़रत पादशाह बगाले में प्रविष्ट हो जाँय। तदुपरान्त जो कुछ उचित होगा, किया जायेगा। देखें क्या होता है?'' जब जलाल खा को यह समाचार प्राप्त हुए कि शेर खा रोहतास चला गया तो आधी रात्रि में हाजी मुहम्मद कश्का तथा मुग़ुल बेग ने आकर बधाई दी और कहा कि, 'जलाल खा गढी छोडकर चला गया है[3]।"

हुमायूं का गढ़ी पहुँचना

तत्काल हज़रत पादशाह स्वय बगाले की ओर चल दिए। कुछ दिन उपरान्त वे बगाले में पहुँचे। बगाले का प्रदेश अफगानो तथा बगाले वालो के अत्याचार के कारण बडी दुर्दशा को प्राप्त हो (१७अ) गया था। हर ओर लाशें पडी हुई थी और बाजारो तथा गलियो में दुर्गन्ध आ रही थी। हज़रत पादशाह के शुभ चरणो के आशीर्वाद से अल्प समय मे वह पुन बस गया। हजरत पादशाह ने बगाले की विलायत को अपने अमीरो को बाँट दिया। वे ९ मास तक बगाले म रहे और इस प्रकार भोग विलास मे ग्रस्त हो गए कि एक मास के उपरान्त उनके दर्शन किसी को न हो सके। सर्वदा व एकान्त[4] में महल के भीतर रहते थे।[5]

१ च एव [illegible] में —"भीगे खेमे लगवाये"।

२ च एव छ में —"हाजी मुहम्मद बेग को करावली हेतु नियुक्त किया"।

३ च, छ एव ज में —"जब जलाल खा को यह पत्र मिला तो वह तत्काल गढ़ी से चल दिया। हाजी मुहम्मद कश्का एव मुग़ुल बेग ने पहुँच कर बधाई दी कि जलाल "खा गढी छोड कर चला गया"।

४ इस प्रसन्नता के कारण कि एक बार के आक्रमण में उन्होंने चुनार पर भी अधिकार प्राप्त कर लिया और बगाला पर भी, वे इस प्रकार खास खिलवत (एकान्त) एव विशेष महल में भोग विलास में ग्रस्त हो गये यहा तक कि सैनिक चन्द्रमा क समान उनकी प्रतीक्षा किया करते थे किन्तु वे दृष्टिगत न होते थे।" (च पृ० २० ब, २१ अ, [illegible]. पृ० १७अ, ज पृ० २०ब)।

५ च एव छ में निम्नांकित कहानी भी दी हुई है —

एक दिन अभागा कन्दा नदी (?) में वर्षा ऋतु में नौका पर हज़रत इस प्रकार पधारे जिस प्रकार सीपी में मोती होता है। उन्होंने आदेश दिया कि समस्त विश्वास पात्र अपने एक एक विशेष सेवक को लेकर

हज़रत पादशाह की बंगाले से वापसी एवं कुछ दुष्ट अमीरों का विद्रोह तथा शेर खाँ सूर से युद्ध[1]

यहाँ तक कि समाचार प्राप्त हुए कि 'शेर खाँ ने बनारस पर अधिकार जमा लिया[2] और मीर फरज़ीन को ७०० मुग़लों सहित हत्या कर दी और चुनार के किले तथा जौनपुर[3] का अवरोध कर लिया है। उसने अपनी सेनाओं को गंगा तट पर कन्नौज तक पहुँचा दिया है तथा कन्नौज को अपने अधिकार में कर लिया है। मीरान सैयिद अलाउद्दीन बुखारी[4] के परिवार को बन्दी बना कर राहतास भेज दिया है।"

ज़ाहिद बेग का विद्रोह

जब हज़रत पादशाह को यह समाचार प्राप्त हुए तो उन्होंने इस पर विश्वास न किया

नौका में चले आयें। मल्लाह लोग उनकी सेना को नौका पर बैठा कर नौका छोड़ दें। वह जहाँ भी ले जाय, ले जाने दें और फिर हम सब जाकर एक टापू में उतरें।' उन लोगों ने ३ ४ कुरोह यात्रा की थी कि सब घबराने लगे। कारण कि ४ ५ कुरोह आगे समुद्र था। यह नदी उसी में गिरती थी किन्तु कोई निवेदन न कर सकता था। ज़ाहिद बेग ने बड़े सुन्दर ढंग से निवेदन किया कि, 'हज़रत का उद्देश्य यह है कि हम किसी स्थान पर पहुँच कर पौरुष प्रदर्शित करें। हममें से किसी के पास अस्त्र शस्त्र नहीं हैं। यदि आदेश हो तो अमीरों के आदमी पीछे से नौकाओं में अस्त्र-शस्त्र ले आयें ताकि हम लोग वहाँ जा कर कोई कार्य कर सकें। जब तक यह लोग वापस आयें पादशाह जिस नौका पर सवार हैं, वह ठहरी रहे।' आदेश हुआ कि नौकाओं को किनारे पर खींच लें। आने जाने में पर्याप्त समय लगता। संयोग से दूर से नौका दिखाई दी। कुछ लोगों ने कहा कोई वृक्ष जल में बहता आ रहा है। कुछ ने कहा, 'नौका है'। सब ने कोई न कोई बात कही। जब वह (वस्तु) निकट पहुँची तो ज्ञात हुआ कि उलुग मीर्ज़ा सेवक सहित नौका में बैठ कर आ रहा है। जब वह निकट पहुँचा तो उसने अभिवादन करके खड़ा होना चाहा। नौका हिलने लगी। आदेश हुआ कि वह ज़ोर लगा कर झुके तथा अभिवादन करे। उसने ऐसा ही किया। तदुपरान्त आदेश हुआ कि सभा में उपस्थित हो। उसने आकर अभिवादन किया और बैठ गया। कुछ देर बाद हज़रत ने कहा, "भूख लगी है। क्या ही अच्छा हो जो भोजन आ जाय।' उलुग मीर्ज़ा ने निवेदन किया कि, 'नदी में धुआँ उठ रहा है। ज्ञात होता है कि बादशाही बावर्ची खाना होगा।' हज़रत ने कहा, 'भूख के समय इस खुशखबरी से बढ़ कर क्या है कि कोई भोजन की सूचना दे।' उलुग मीर्ज़ा ने अभिवादन किया। अन्य अमीरों ने संकेत से कहा कि, 'यह क्या मूढ़ता तूने की? तेरी कृतज्ञता की ओर से सम्मानित हृदय साफ नहीं हुआ है।' उसने कहा, 'क्या करूँ, उसका समय निकल गया। इस कारण उनके हृदय में क्रोध उत्पन्न हो गया।' कुछ समयोपरान्त भोजन आ गया। उन्होंने भोजन किया और कहा, 'लोग खाने की नौका से चले जायें।' इन लोगों के छोटे एवं नौकायें न आई थीं कि वर्षा होने लगी। उनके विषय में पता न चला। रात्रि व्यतीत हो जाने के उपरान्त वहाँ से लौट कर वे अपने स्थान पर पहुँचे।" (च पृ० २१ब—२२अ, छ १७अ—१८अ, ज में यह कहानी नहीं है)।

१ च, छ एवं ज के अनुसार 'पाँचवीं फस्ल'।

२ च, छ एवं ज में —"हज़रत अभी बंगाले की विलायत में थे कि आस पास के आदमियों ने आकर समाचार पहुँचाये कि . . ."।

३ च एवं छ में 'कर्दये जौनपुर (जौनपुर करो)'।

४ च, छ में —'जो उस प्रदेश के अयान (प्रतिष्ठित लोगों) में से था'।

और कहा कि, "यह कदापि नहीं हो सकता। शेर खां को इतना दुस्साहस कहां हो सकता है कि वह अपने पांव को इतना बढ़ाये ?" किन्तु एक बार उन्होंने विशेष गोष्ठी आयोजित की और अमीरों से पूछा कि 'बंगाला प्रदेश को किसे सिपुर्द किया जाय ?" राज्य के उच्च पदाधिकारियों ने निवेदन किया कि, "हजरत पादशाह जिस किसी को भी उचित समझें, प्रदान कर दें।" पादशाह ने आदेश दिया कि, 'क्योंकि जाहिद बेग सर्वदा हमसे आश्रय का प्रार्थना किया करता था और आशा लगाये रहता था अतः उचित होगा कि बंगाले का राज्य उसी के सिपुर्द कर दिया जाय। कुछ अन्य अमीरों उदाहरणार्थ हाजी मुहम्मद खां कोकी[1], कासिम बेग, दीनदार[2] बेग को उसके साथ नियुक्त कर दिया जाय।" जाहिद बेग ने उसी गोष्ठी में निवेदन किया कि, "मेरी हत्या के लिए कोई अन्य स्थान न था जो बंगाला दिया जा रहा है ?' इस उत्तर से हजरत पादशाह बड़े रुष्ट हुए और क्रोध प्रदर्शित करते हुए कहा कि, 'इस दुष्ट की हत्या कर देनी चाहिये ?" जाहिद बेग गोष्ठी से उठ कर बाहर चला गया। हजरत बेगा बेगम[3] ने हजरत पादशाह से उसके अपराधों को क्षमा करने की सिफारिश की और निवेदन किया कि, 'मेरे कारण उसे क्षमा करके उसकी हत्या (१८ अ) न कराई जाय और प्रोत्साहन देकर बंगाले में नियुक्त कर दिया जाय।" हजरत पादशाह ने स्वीकार न किया और आदेश दिया कि, 'उसकी हत्या करा दी जाय।' बेगा बेगम ने जाहिद बेग से कहलाया कि मैंने तेरे अपराध को क्षमा कराने के विषय में हजरत पादशाह से बड़ा आग्रह किया किन्तु वे क्षमा नहीं कर रहे हैं। तू अब अपनी चिन्ता स्वयं कर।" बेगा बेगम की इतनी अधिक कृपा का कारण यह था कि बेगम की बहिन जाहिद बेग के घर में थी[4]। जाहिद बेग ने इससे उचित कोई अन्य उपाय न देखा कि वह वहां से भाग जाय।

मीर्जा हिन्दाल का विद्रोह

अतः हाजी मुहम्मद कोकी तथा दीनदार बेग को जाहिद बेग ने मार्ग-भ्रष्ट कर दिया और तीनों मिलकर भाग गए और राजधानी आगरा पहुंचे। मीर्जा हिन्दाल को चकमा देकर विद्रोही बना दिया[5]। मीर्जा हिन्दाल ने उन लोगों के परामर्श से तथा खुसरो कूकुल्ताश एवं अन्य अमीरों

१ च, छ में, 'हाजी मुहम्मद खां कोकी' अन्य स्थानों पर भी कोकी है। क, ख, ग, घ में 'हाजी मुहम्मद कोका' किन्तु आगे 'कोकी'।

२ क, ख, ग एवं घ में 'जिन्दार बेग'।

३ च, छ में, 'हजरत फातमा माना, मख्दूमा मासूमा बेगम बेगा बेगम'।

४ जाहिद बेग की पत्नी थी। च, छ में सम्बन्ध का स्पष्ट नहीं किया है, केवल यह लिखा है कि 'निकटतम सम्बन्ध के कारण'। ज में इसे इस प्रकार स्पष्ट किया है — 'बेगा बेगम जो हजरत (पादशाह) की सम्मानित पत्नी थी और बाद में हाजी बेगम के नाम से प्रसिद्ध हुई और वह (जाहिद बेग) बेगम का सम्बन्धी था "।

५ च, छ और ज में इस प्रकार है —' तीनों मिलकर भाग खड़े हुये और राजधानी आगरा पहुंचे। मीर्जा हिन्दाल को, जो राजधानी देहली में था, चकमा देकर विद्रोही बना दिया यहां तक कि मीर्जा ने इस समूह एवं खुसरो कूकुल्ताश तथा कुछ अन्य अमीरों से मिलकर जो उस महाल में नियुक्त थे, अपने नाम का खुत्बा पढ़वाना चाहा। नूरुद्दीन मुहम्मद मीर्जा (हिन्दाल) से कहा कि 'जब तक तू शेख फूल की हत्या न करायेगा हमें विश्वास न होगा और हम तेरा साथ न देंगे। यदि उसकी हत्या करा दो तो फिर हम इस विषय में आज्ञाओं का पालन करें।" (च पृ० २२ ब—२३ अ, छ पृ० १६अ, ज पृ० २२ अ)।

थे, जो वहाँ थे, कहने पर अपने नाम का खुत्बा पढ़वाना चाहा। नूरुद्दीन मुहम्मद मीर्ज़ा ने, मीर्ज़ा हिन्दाल से निवेदन किया कि, "आप शेख फूल की हत्या करा दें ताकि यह विश्वास हो जाय कि आपने पादशाह के विरुद्ध विद्रोह कर दिया है। उसी समय हम आपकी आज्ञाकारिता स्वीकार करेंगे और आपके नाम का खुत्बा पढ़वायेंगे'। अतः मीर्ज़ा हिन्दाल ने नूरुद्दीन मुहम्मद मीर्ज़ा को आदेश दिया (१८ अ) कि, "जाकर किसी बहाने से शेख फूल की हत्या कर दो।" शेख फूल पर झूठा इल्ज़ाम लगाया गया कि, "तूने शेर ख़ां के पास शराब[1] भेजा है और पत्र भी लिखे हैं।" इस बहाने से शेख की हत्या करा दी गई और मीर्ज़ा हिन्दाल के नाम का खुत्बा पढ़वा दिया गया।

मीर्ज़ा कामरान का देहली पहुँचना

जब यह समाचार लाहौर में मीर्ज़ा कामरान को प्राप्त हुए कि हज़रत पादशाह बंगाले में हैं और मीर्ज़ा हिन्दाल[2] ने देहली में अपने नाम का खुत्बा पढ़वा दिया है तो उसने कहा कि "यह अच्छा नहीं हुआ।" उसने अपने अमीरों से परामर्श किया कि, 'देहली और आगरा की ओर जाकर इस विद्रोह को शान्त करना चाहिये।" अतः निरन्तर यात्रा करता हुआ देहली की ओर रवाना हुआ। मीर्ज़ा यादगार नासिर तथा फ़ख्रुद्दीन अली बेग दहली के किले के भीतर थे और मीर्ज़ा हिन्दाल देहली का अवरोध किए हुए था।

हुमायूँ द्वारा ख़ाने ख़ाना लोदी को मुंगेर भेजना

जब शेख फूल की हत्या तथा मीर्ज़ा हिन्दाल के अपने नाम का खुत्बा पढ़वाने के समाचार बंगाले में हज़रत पादशाह को प्राप्त हुए तो वे बड़े परेशान हुए और ख़ानेख़ाना लोदी को इस आशय से नियुक्त किया कि, जब तक शाही सेना पीछे से पहुँचे वह मुंगेर पर अधिकार जमा ले। ख़ानेख़ाना ने बादशाह से विदा होकर मुंगेर पर अधिकार जमा लिया।

ख़वास ख़ां द्वारा मुंगेर पर अधिकार

हज़रत पादशाह बंगाले की व्यवस्था की चिन्ता करने लगे कि बंगाला किसे प्रदान करें। (१९ अ) उन्होंने सोचा कि जहाँगीर कुली बेग, शादमान बेग, निहाल बेग, तोवरा बेग तथा कुछ अन्य अमीरों को नियुक्त किया जाय। अन्त में निश्चय हुआ कि, "जहाँगीर कुली बेग तथा निहाल बेग एवं अन्य अमीरों को बंगाले में नियुक्त कर दिया जाय।" उन्होंने स्वयं बंगाले के बाहर शिविर लगवाये और मुंगेर की ओर रवाना हुए। इसी बीच में समाचार प्राप्त हुए कि "ख़वास ख़ां शीघ्रातिशीघ्र बढ़ता हुआ पहुँचा और उसने मुंगेर के द्वारों में आग लगा दी। ख़ानेख़ाना लोदी को जीवित बन्दी बनाकर शेर ख़ां के पास ले गया।"

मीर्ज़ा अस्करी को आगे भेजना

हज़रत[3] पादशाह इस समाचार से बड़े परेशान हुए और मीर्ज़ा अस्करी से कहा कि,

१ अस्त्र-शस्त्र।
२ च, छ में 'देहली' नहीं है।
३ च, छ में .—"हज़रत पादशाह के हृदय में आया कि मीर्ज़ा अस्करी को आगे भेजा जाय। उसने कहा, 'तुझे जिन चार वस्तुओं ... ...''।

"जिन चार वस्तुओं की तुझे इच्छा हो, मुझसे माँग ले।" मीर्ज़ा ने निवेदन किया कि, "मैं अपने अमीरों से परामर्श करता हूँ कि क्या माँगना चाहिये। तदुपरान्त हज़रत पादशाह से निवेदन करूँगा।" हज़रत पादशाह का आदेश हुआ कि ऐसा ही कर। मीर्ज़ा ने अपने अमीरों से पूछा कि, "पादशाह से क्या चीज माँगनी चाहिये?" अमीरों ने निवेदन किया कि, "हम लोग आपस में परामर्श करके निवेदन करेंगे।" मीर्ज़ा के अमीरों ने यह बात उचित समझी कि "सर्वप्रथम मीर्ज़ा से पूछा जाय कि (१९ ब) उनकी क्या इच्छा है?" उन्होंने जाकर मीर्ज़ा से निवेदन किया कि, "इस विषय में आपके हृदय में क्या आ रहा है?' मीर्ज़ा ने कहा कि, "बंगाले के कुछ माल असबाब तथा कपड़े एवं कुछ सुन्दर पातुर तथा घोड़े एवं उत्तम ख़्वाजा सराओं की मुझे इच्छा है।' मीर्ज़ा के अमीर इस उत्तर से बड़े आश्चर्य में पड़ गए। जब मीर्ज़ा ने देखा कि, 'इन लोगों का यह बात पसन्द नहीं और अमीरों की इच्छा पूरी नहीं हुई" तो उसने आग्रह किया कि, 'तुम लोगों की क्या राय है, बताओ?" अन्त में अमीरों ने निवेदन किया कि, "इस समय हज़रत पादशाह का शेर ख़ाँ से युद्ध हो रहा है, प्राणों के बलिदान एवं पौरुष के प्रदर्शन का समय है अतः हज़रत पादशाह से वीर सैनिकों एवं योद्धाओं तथा अपार धन-सम्पत्ति की इच्छा करनी चाहिये और यह निवेदन करना चाहिए कि 'यह अभियान मुझे सिपुर्द कर दिया जाय। मैं जानूँ और शेर ख़ाँ।" मीर्ज़ा अस्करी (२० अ) को अमीरों की राय पसन्द आ गई। हज़रत पादशाह से इस विषय में निवेदन किया। उन्होंने स्वीकार कर लिया और अत्यधिक धन सम्पत्ति एवं बहुत बड़ी सेना प्रदान की और कुछ प्रतिष्ठित अमीर उदाहरणार्थ क़ासिम कराचा[1], तुग़लान बेग[2] कोका, बाबा शेख़ कूरबेगी तथा कुछ उत्तम अमीरों के समूह को उनके साथ करके शेर ख़ाँ के विरुद्ध नियुक्त कर दिया और आदेश दिया कि, "तुम कुछ मंजिल आगे जाओ और गढ़ी पार करो। कहल ग्राम में सेना के पहुँचने तक प्रतीक्षा करो तथा शेर ख़ाँ के समाचार प्राप्त करते रहो और जो समाचार हों वे संसार को शरण प्रदान करने वाले दरबार में भेजते रहो।' अतः मीर्ज़ा के आदेशानुसार वे निरन्तर यात्रा करते हुए रवाना हुए। जब वे कहल ग्राम[3] पहुँचे तो समाचार ज्ञात हुए कि 'शेर ख़ाँ की सेना चुनार के किले तथा जौनपुर[4] को घेरे हुए है और क़न्नौज तक के स्थान अपने अधिकार में कर लिए हैं। उसने अपनी समस्त सेना को बुलवा लिया है और रोहतास के समीप एक बहुत बड़ी सेना एकत्र करके मार्ग रोके हुए बैठा है।"

हुमायूं का मुंगेर पहुँचना तथा अमीरों से परामर्श

मीर्ज़ा अस्करी ने हज़रत पादशाह के पास प्रार्थना पत्र प्रेषित किए। हज़रत पादशाह निरन्तर यात्रा करते हुए बंगाल से रवाना हुए। मुंगेर के समीप नदी की उस ओर मीर्ज़ा अस्करी तथा उपर्युक्त अमीर जो उसके साथ थे, सेवा में उपस्थित हुए। हज़रत पादशाह ने समस्त अमीरों (२० ब) एवं मीर्ज़ाओं को बुलवाकर परामर्श किया कि, 'क्या करना चाहिये? गंगा नदी पार करें

१ च, छ में 'क़ासिम ख़ाँ कराचा'।
२ च, छ में 'तुग़लान बेग'।
३ च, छ एवं ज में 'परगना कहल ग्राम'।
४ च, छ एवं ज में 'बल्दये जौनपुर (जौनपुर क़स्बे)'।

या नहीं ?" पहलवान बेग व मुल्ला मुहम्मद फरग अली[1] जो बड़े विश्वासपात्र थे, तथा अधिकाश अन्य अमीरो ने राय दी कि "नदी पार करनी चाहिये। नदी के किनारे-किनारे एक दिशा में यात्रा करते हुए जौनपुर की ओर प्रस्थान करना चाहिये। जौनपुर में इतनी देर तक ठहरना चाहिये कि सेना देहली से आ जाय एव अस्त्र-शस्त्र प्राप्त हो जाय। तदुपरान्त सेना एकत्र करके वर्षा ऋतु के पश्चात् युद्ध करें।" मुईद बेग ने इस मत का विरोध करते हुए निवेदन किया कि, "शेर खा समझेगा कि पादशाह ने भय के कारण नदी न पार की और धृष्ट हो जायगा। नदी अवश्य ही पार करनी चाहिये इस कारण कि दुर्भाग्य बुद्धि को भ्रष्ट कर देता है।" मुईद बेग की बात स्वीकार कर ली गई और आदेश हुआ कि नदी पार की जाय। पहलवान बेग तथा मुल्ला मुहम्मद फरग अली ने हजरत पादशाह से निवेदन किया कि, "यह राय ठीक नही है। पादशाह को सभी कुछ ज्ञात है।"

हुमायूं का नदी पार करना

सक्षेप में जब समस्त सेना नदी पार कर चुकी और निरन्तर यात्रा करती हुई मुगेर (२१अ) के निकट शेख यहया[2] के मकबरे के समीप पहुँची तो चन्दौल[3] के लोगो ने पादशाह को सूचना दी कि, "आज अफगान लोग सेना के पीछे से दृष्टिगत हुए है।" आदेश हुआ कि, "यह ढिंढोरा पिटवा दिया जाय कि सेना वाले अपने अस्त्र शस्त्र साथ ले लें और वहाँ से प्रस्थान करें"। दूसरे दिन समाचार प्राप्त हुए कि, "आज उन लोगो ने मुकाबला करके बाणो तथा बन्दूको से युद्ध किया।" तीसरे दिन प्रस्थान किया गया तो समाचार प्राप्त हुए कि, "कोह शिकन[4] नामक तोप, जिसने चुनार के किले के बुर्ज को गिरा दिया था और जो नौका में थी, अफगान लोग ले गए।" पादशाह ने आदेश दिया कि "लोग अपने अस्त्र-शस्त्र धारण करें और सवार हो।"

हुमायूं का चौसा में पहुँचना एवं शेर खा से युद्ध

चौथे दिन सेना अस्त्र-शस्त्र धारण करके सवार हुई। एक पहर दिन व्यतीत हो चुका था कि चौसा[5] पहुँची। अभी सेना ने पड़ाव भी न किया था कि पूर्व दिशा से अपार धूल दिखाई पडी। हजरत पादशाह ने कहा, "पता लगाओ यह कैसी गर्द है?" थोडी देर बाद समाचार प्राप्त हुए कि, "शेर खा धावा मारता हुआ पहुँच गया है।" हजरत पादशाह ने अमीरो से पूछा कि, (२१ ब) "क्या करना चाहिये?" कासिम हुसेन सुल्तान ने निवेदन किया कि, "शेर खा आज १८-१९ कुरोह का धावा मारे हुए आ रहा है। उसके घोडो की गरदनें टूटी हुई है और वे थके हुए है। हमारी सेना के घोडे सुस्ता चुके है और ताजा दम है। आज ही युद्ध करना चाहिये, ईश्वर को जिसे विजय प्रदान करनी है उसे विजय प्रदान करेगा।"

मिसरा

'फिर जो कुछ भाग्य में लिखा हो।'

१ च, छ में 'फरग्रली' एवं ज में 'फरगली'।
२ शेख शरफुद्दीन यहया मुनेरी।
३ 'चन्दावल' शुद्ध है, सेना का पिछला भाग।
४ पहाड तोडने वाली।
५ च, छ, ज में 'चौसा घाट'।

पादशाह ने यह बात स्वीकार कर ली किन्तु मुईद बेग का यह राय उचित नहीं ज्ञात हुई अतः मुईद बेग का समर्थन करते हुए (पादशाह ने) कहा कि "युद्ध प्रतीक्षा करके करना चाहिये। इसमें घबड़ाने की आवश्यकता नहीं[1]।" अमीर तथा सैनिक पादशाह के मुख से यह बात सुनकर हताश हो गए। सेना ने पड़ाव किया। शेर खां की सेना भी शाही लश्कर के समक्ष उतरी और उसने मिट्टी का किला बनाकर अपनी सेना को किले में कर लिया। दो मास तक उस स्थान पर दोनों सेनाएं एक दूसरे के सामने पड़ी रहीं। नित्य-प्रति युद्ध होता था और दोनों ओर से लोग मारे जाते थे। दूसरे[2] मास के बाद बड़ी जोर की वर्षा होने लगी। शेर खां के किले में पानी भर गया। वह पर्वत के आंचल के दाहिनी ओर ३-४ कुरोह पर उतर पड़ा। नित्य प्रति का युद्ध बन्द हो गया। उस समय (२२ अ) हज़रत पादशाह ने यह उचित समझा कि शेर खां से संधि कर ली जाय।

इस उद्देश्य से मशीखत मआब सिलालतुल मशायख शेख खलील कुतुबुल अक्ताब शेखुल इस्लाम हज़रत शेख फरीद शकर गंज की सतान को संधि के विषय में वार्तालाप करने के लिये शेर खां के पास भेजा गया। शेख खलील, शेर खां के पास पहुँचा और उसने उसे अत्यधिक उपदेश दिए। वह संधि के लिए राजी हो गया और कहा कि, "इस शर्त पर संधि हो सकती है कि चुनार का किला हज़रत पादशाह मुझे प्रदान कर दें।" शेख ने हज़रत पादशाह को लिखा कि "शेर खां ने चुनार के किले पर बात अटका रक्खी है, यदि वह शेर खां को प्रदान हो जाय तो वह संधि के लिए राजी है।" पादशाही अमीरों ने इसे उचित न समझा कि चुनार के किले को शेर खां को दे दिया जाय अतः इसी कारण संधि न हो सकी।

(५)

हज़रत पादशाह के लश्कर पर अफगानों द्वारा रात्रि में छापा[3]

जब संधि न हो सकी तो शेर खां ने अपने अमीरों को बुलवा कर कहा कि, "हमारे अमीरों (२२ ब) में से कोई ऐसा है जो तलवार बांधकर शाही सेना में जा सकता है ?" अफगान अमीरों में से किसी को इस बात का साहस न हुआ। ख्वास खां ने यह बात स्वीकार कर ली और निवेदन किया कि 'प्रतिष्ठित जवानों, मस्त हाथियों तथा वीर सेना को दास को प्रदान कर दिया जाय। मैं शाही लश्कर में जाता हूँ और यथा-सम्भव प्रयत्न करता हूँ। इसका परिणाम क्या होता है, यह सब सौभाग्य पर निर्भर है। ईश्वर जिसे भी विजय प्रदान करे।' शेर खां ने अत्यधिक सेना एवं युद्ध के अनुभवी हाथी ख्वास खां के साथ कर दिये। मध्याह्नोपरान्त की दूसरी नमाज़ के समय ख्वास खां ने अपनी सेना से धूर्तता एवं छल प्रदर्शित करते हुए निश्चय किया कि दिन में युद्ध करना सम्भव नहीं, रात्रि में छापा

१ च, छ, ज में —"तदुपरान्त उन्होंने मुईद बेग से भी पूछा। उसे यह राय पसन्द न आई। हज़रत की राय भी बदल गई। मुईद बेग से सहमत होकर उन्होंने कहा, 'युद्ध प्रतीक्षा करके करना चाहिये। जल्दी की आवश्यकता नहीं।" (च पृ० २१अ, छ पृ० २१अ, ज पृ० २४ब)।

२ क, ग में 'दोय्म', ख, घ में 'दो-नीम (ढाई)', च, छ में 'दोय्म (दूसरे)', न में 'ढाई'।

३ च, छ, ज में यह पृथक फस्ल नहीं है।

मारना चाहिए[१]। यह निश्चय करके निकला। शेख खलील ने पादशाह को लिखा कि, "शेर खां को मैंने संधि के लिए राजी कर लिया था किन्तु संधि न हो सकी। आज मध्याह्नोपरान्त की दूसरी नमाज के समय ख्वास खां एक बहुत बडी सेना लेकर अपने लश्कर से निकला है, आप सावधान रहें कि कहीं कोई बात न हो जाय।" पादशाह ने इस कारण कि, "जब दुर्भाग्य बुद्धि भ्रष्ट कर देता है" उसकी बात की ओर कोई ध्यान न दिया। मुईद बेग ने कहा कि, 'उस दास का इतना दुस्साहस नहीं हो सकता है। पहिले उसका स्वामी तो आये।' उसे यह बात ज्ञात न थी कि ईश्वर (२३ अ) शिक्षा देता रहता है और उसे उपेक्षा सम्बन्धी बात एवं अभिमान अच्छा नहीं लगता। पलक झपकाते वह कुछ का कुछ कर देता है।

अमीर हमज़ा की कहानी से उदाहरण

अमीरुल मोमनीन हमज़ा[२] ने हिन्द के पुत्र की भाले द्वारा हत्या कर दी, हिन्द की माता रूम[३] के पादशाह की पुत्री थी। उसने रूम, हल्ब, फिरंग तथा मिस्र की सेना एकत्र की और नूशीरवाँ के पुत्र हुरमुज़ के पास पहुँची और कहा कि, 'हे पुत्र! हमज़ा अरब ने मेरे पुत्र की हत्या कर दी है। इस समय मैंने एक बहुत भारी सेना जमा कर ली है और तेरे पास आई हूँ। यदि साथ दे तो उस अरब बच्चे से न्याय तथा बदला ले सकूँ एवं मक्का को नष्ट भ्रष्ट कर सकूँ। हुरमुज़ ३० लाख अश्वारोहियों सहित मदाएन के बाहर निकला और मक्का की ओर रवाना हुआ, यहां तक कि मक्का पहुँच गया और उहद पर्वत में पडाव किया। हज़रत मुहम्मद को सूचना दी गई कि पृथ्वी की समस्त सेना एकत्र हो गई है। हज़रत मुहम्मद की शुभ जिह्वा से निकला कि, 'इतनी बडी सेना की क्या (२३ ब) चिन्ता, अकेले मेरे चाचा हमज़ा पर्याप्त हैं। यह बात ईश्वर को अच्छी न लगी। उसने इस्लामी सेना को पराजित कर दिया अतः ईश्वर के स्वाभिमान का प्रश्न है[४]। शूर वीर ऐसी बातों का सामना करते रहे हैं।

हुमायूं का पलायन

संक्षेप में, जब रात्रि असावधानी में व्यतीत हो गई तो प्रातःकाल सूर्योदय के पूर्व ख्वास

१ च, छ में —"मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय वह अत्यधिक सेना, पर्वत रूपी मस्त हाथी सहित धूर्तता पूर्वक अपनी सेना से निकला क्योंकि उसमें इतनी शक्ति न थी कि वह दिन में मुकाबला करे अतः उसने रात्रि में छापा मारना निश्चय किया"।

२ हज़रत मुहम्मद के चाचा तथा अब्दुल मुत्तलिब के पुत्र, जो अपनी वीरता के लिये बड़े प्रसिद्ध थे। वे उहद के युद्ध में मारे गये। शत्रुओं का सरदार अबू सुफियान था। यह युद्ध शव्वाल ३ हि० (मार्च ६२५ ई०) में हुआ। युद्ध के उपरान्त, अबू सुफयान की पत्नी हिन्दा ने हज़रत हमज़ा की लाश से उनका जिगर निकाल कर चबा डाला। जौहर ने इस कहानी को केवल शिक्षा हेतु प्रस्तुत किया है और इसमें अधिक ऐतिहासिक तथ्य नहीं अतः इसकी टिप्पणियां नहीं लिखी गई।

३ टर्की।

४ च, छ में इस कहानी का विस्तार से उल्लेख नहीं किया गया है। इस कहानी की रचना एवं **मतालये अनवार** नामक ग्रंथ का हवाला दिया गया है। **मतालये अनवार** की रचना अफ़ीफ़ुद्दीन बिन नूरुद्दीन काशानी ने की। सम्भवतः इसकी रचना १६वीं शती ईस्वी में हुई। इसकी हस्तलिपियां अलीगढ़ विश्वविद्यालय, रिज़ा लाइब्रेरी रामपुर एवं हिन्दुस्तान तथा यूरोप के हस्तलिखित ग्रन्थों के पुस्तकालयों में प्राप्त हैं। यह ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ है।

खा पश्चिम दिशा को अपनी पीठ की ओर करते हुए नख़्खास[1] पर पहुँचा और उसे नष्ट भ्रष्ट कर दिया। समस्त सेना म हाहाकार मच गया। अल्प समय म सेना छिन्न भिन्न हो गई। हजरत पादशाह का समाचार प्राप्त हुए। वे सवार हुए और तब्ल बजवाया। लगभग ३०० व्यक्ति एकत्र हुए और उन्होंने देखा कि एक हाथी बढता चला आ रहा है। हजरत पादशाह ने मीर बचका की ओर देखा। वह सामने नहीं आया और अपना सिर झुका लिया। उसके दो पुत्र थ। एक गुग अली और दूसरा तत्ता बेग। एक के हाथो में पादशाह का जौलका[2] और दूसरे हाथ में हजरत पादशाह का भाला था। पिता तथा दोनो पुत्र पौरुष में अद्वितीय थ। जब पादशाह न देखा कि उन्होंने साहस छोड दिया है (२४अ) और किसी म इतनी शक्ति नही है कि युद्ध कर सके तो उन्होंने गुग अली के हाथ से भाला लेकर हाथी पर वार किया और हाथी के मस्तक पर भाला मारा। हाथी के हौदज म एक धनुर्धर था जिसने हजरत पादशाह पर बाण चलाया। बाण पादशाह के शुभ हाथो म लगा। जब उन्होंने जोर करके भाले को हाथी के मस्तक से निकालना चाहा तो वह मस्तक म इतना अधिक घुस गया था कि अत्यधिक जोर करने पर भी बाहर न निकला। अन्त म उसी प्रकार भाले को छोडकर वे सैनिको के पास आय और आवाज दी कि आओ आक्रमण कर किन्तु सैनिको म से किसी ने भी वीरता का कोई नारा न लगाया। अफगानो न समस्त सेना को छिन्न भिन्न कर दिया था। इसी बीच म एक व्यक्ति आया और उसने पादशाह के घोड की लगाम को पकड कर कहा कि अब खडे होने का समय नही है सब लोग छिन्न भिन्न हो गए हैं आप किस शक्ति के भरोसे पर खडे हैं।

शेर

जब तू देखे कि मित्र लोग सहायता नही कर रहे हैं
तो पराजय को ही बहुत बडी देन समझ।

जब हजरत पादशाह नदी के किनारे आए तो गिदराज नामक एक हाथी उनके साथ (२४ब) था। महावत स कहा कि पुल तोड डाल। महावत ने पुल तोड डाला। हजरत पादशाह ने घोडे को नदी म डाल दिया। घोडा उनकी रान के नीचे से निकल गया। इसी बीच म एक व्यक्ति मश्क को फुलाए हुए दृष्टिगत हुआ और उसन सकेत किया कि हे पादशाह। मश्क पकड लें।' उन्होंने मश्क को पकड लिया और पूँछा कि तेरा नाम क्या है? उसने कहा कि निजामा।' पादशाह न कहा निजामुद्दीन औलिया होगा। अन्त म पादशाह इस खतरे के बाहर निकल आये और उसको वचन दिया कि तुझे सिंहासनारूढ करूँगा। कुछ लोग नदी म डूब गए और कुछ मारे गए।

१ घोडों तथा मवेशियों का बाजार यहा सम्भवत अश्वशाला से तात्पर्य है।
२ जौलका —भाले का नुकीला भाग जो लोहे का होना है। च एव म में 'दबकगा । इस शब्द के विषय में निश्चित रूप से कहना कि किस हथियार से तात्पर्य है कठिन है। स्टीवर्ट का यह अनुवाद तो किसी प्रकार शुद्ध नहीं—'One of whom carried the king's double barrelled gun and the other the royal spear'। [*Memoirs of Humayun* (London M D ccc x x x ii) पृ० १८]।

हुमायूं का कड़ा पहुँचना

हजरत पादशाह वहाँ से कड़ा की ओर पहुँचे। समाचार प्राप्त हुए कि बरमजीद गोर[1] पीछे से आ रहा है। दूसरे समाचार प्राप्त हुए कि आगे से शाह मुहम्मद[2] अफगान ने मार्ग रोक रक्खा है। इस समाचार से लोगो के हाथ पाँव फूल गए और वे बड़ी चिन्ता मे पड़ गए। राजा प्रभान[3] ने निवेदन किया कि, "बरमजीद गोर जो पीछे से आ रहा है उससे मैं समझ लूँगा। हजरत पादशाह प्रस्थान करें। उसकी क्या मजाल है कि वह मुकाबला कर सके[4]।" अन्त में उन्होंने यही किया।

हुमायु का काल्पी पहुँचना

शाह मुहम्मद उनके समक्ष न ठहर सका और उसने मार्ग दे दिया। पादशाह निरन्तर यात्रा करते हुए काल्पी पहुँचे। कासिम कराचा के पुत्र ने पादशाह के लिए अत्यधिक पेशकश[5] का प्रबन्ध (२५अ) किया था। उसके पिता ने, जो हजरत पादशाह के साथ आ रहा था, उसे रोक दिया। अन्त में थोड़ा सा उसने पादशाह के समक्ष प्रस्तुत किया। यह समाचार उनके शुभ कानो तक पहुँच गए। उसके पेशकश में से कुछ भी न स्वीकार किया। केवल एक जड़ाऊ जीन ले ली और कहा कि 'इसे मीर्जा कामरान को दूँगा।"

हुमायू का आगरा पहुँचना

वहाँ से वे निरन्तर यात्रा करते हुए आगरा पहुँचे। मीर्जा कामरान जर अफ़शाँ[6] नामक उद्यान में था कि पादशाह पहुँच गए। जब हजरत पादशाह के पहुँचने के समाचार मीर्जा कामरान को प्राप्त हुए तो वह दौड़कर जिलौ खाने[7] तक पहुँचा और अभिवादन किया। हजरत पादशाह घोड़े से उतर पड़े और मीर्जा को आलिंगन किया तथा पहुँचकर मीर्जा के खरगाह में बैठे। थोड़ी देर बैठने के उपरान्त मीर्जा कामरान ने निवेदन किया कि, "पादशाह दूर से आ रहे हैं और थके हुए हैं, राजसिंहासन पर आरूढ़ हो और मेरी खातिर मीर्जा हिन्दाल के अपराध क्षमा कर दें।" मीर्जा हिन्दाल अलवर में था। पादशाह ने कहा कि "उसका अपराध तेरी खातिर क्षमा कर दिया। उसे कुछ लिख दे कि वह आ जाय।" पादशाह स्वयं सिंहासन पर पहुँचे और निजाम को, जिसने गंगा नदी में मशक पहुँचाई थी, अपने वचनानुसार दो घड़ी तक सिंहासनारूढ़ किया। उसने दो घड़ी (२५ ब) तक शासन किया।

१ च व छ में बरमजीद गोर उसका (शेर शाह का) अमीर।
२ च, छ एवं ज में 'शाह मुहम्मद फरमुली'।
३ च, छ में 'राना बीर वान' एवं ज में 'राना बीर भान' अथवा 'राना वीर भानु'।
४ च, छ एवं ज में —"भट्ठे के राजा बीर भान ने, जो सेवा में था, निवेदन किया कि इन लोगों की यह मजाल नहीं कि वे हजरत का मुकाबला कर सकें। वास्तव में वही हुआ।' (च पृ० २७ ब, छ पृ० २३ ब, ज पृ० २७अ)।
५ वह उपहार जो अधीन हाकिम, बादशाहों को प्रस्तुत करते थे। इस शब्द से खराज भी समझा जाता है।
६ च, छ, एवं ज में —"फ़िरदौस मकानी के जर अफ़शा उद्यान में"।
७ अश्वशाला, च, छ में 'जिलौ खाना'।

सा पश्चिम दिशा को अपनी पीठ की ओर करते हुए नस्वास[1] पर पहुँचा और उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। समस्त सेना में हाहाकार मच गया। अल्प समय में सेना छिन्न भिन्न हो गई। हजरत पादशाह को समाचार प्राप्त हुए। वे सवार हुए और तब्ल बजवाया। लगभग ३०० व्यक्ति एकत्र हुए और उन्होने देखा कि एक हाथी बढता चला आ रहा है। हजरत पादशाह ने मीर बचका की ओर देखा। वह सामने नहीं आया और अपना सिर झुका लिया। उसके दो पुत्र थे। एक गुग अली और दूसरा तत्ता बेग। एक के हाथो में पादशाह का जौलका[2] और दूसरे हाथ में हजरत पादशाह का भाला था। पिता तथा दोनो पुत्र पौरुष में अद्वितीय थे। जब पादशाह ने देखा कि उन्होने साहस छोड दिया है (२४ अ) और किसी में इतनी शक्ति नहीं है कि युद्ध कर सके तो उन्होने गुगं अली के हाथ से भाला लेकर हाथी पर वार किया और हाथी के मस्तक पर भाला मारा। हाथी के हौदज मे एक धनुर्धर था जिसने हजरत पादशाह पर बाण चलाया। बाण पादशाह के शुभ हाथो मे लगा। जब उन्होने जोर करके भाले को हाथी के मस्तक से निकालना चाहा तो वह मस्तक म इतना अधिक घुस गया था कि अत्यधिक जोर करने पर भी बाहर न निकला। अन्त म उसी प्रकार भाले को छोडकर वे सैनिको के पास आये और आवाज दी कि आओ आक्रमण करे, किन्तु सैनिको मे से किसी ने भी वीरता का कोई नारा न लगाया। अफगानो ने समस्त सेना को छिन्न भिन्न कर दिया था। इसी बीच में एक व्यक्ति आया और उसने पादशाह के घोडे की लगाम को पकड कर कहा कि, अब खडे होने का समय नहीं है सब लोग छिन्न-भिन्न हो गए है आप किस शक्ति के भरोसे पर खडे है।'

शेर

जब तू देखे कि मित्र लोग सहायता नहीं कर रहे है
तो पराजय को ही बहुत बडी दन समझ।'

जब हजरत पादशाह नदी के किनारे आए तो गिर्दबाज नामक एक हाथी उनके साथ (२४ब) था। महावत से कहा कि 'पुल तोड डाल।' महावत ने पुल तोड डाला। हजरत पादशाह ने घोडे को नदी में डाल दिया। घोडा उनकी रान के नीचे से निकल गया। इसी बीच मे एक व्यक्ति मश्क को फुलाए हुए दृष्टिगत हुआ और उसने सकेत किया कि हे पादशाह। मश्क पकड ले।" उन्होने मश्क को पकड लिया और पूँछा कि तेरा नाम क्या है? उसने कहा कि, 'निजामा।" पादशाह ने कहा, निजामुद्दीन औलिया होगा। अन्त म पादशाह इस खतरे के बाहर निकल आये और उसको वचन दिया कि 'तुझे सिंहासनारूढ करूँगा। कुछ लोग नदी में डूब गए और कुछ मारे गए।

१ घोडों तथा सवारियों का बाजार, यहा सम्भवत अश्वशाला से तात्पर्य है।

२ जौलका —भाले का नुकीला भाग जो लोहे का होता है। च प्व त्व में 'दवगगा। इस शब्द के विषय में निश्चित रूप मे कहना कि किस हथियार मे तात्पर्य है, कठिन है। स्टीवर्ट का यह अनुवाद तो किसी प्रकार शुद्ध नहीं—'One of whom carried the king's double barrelled gun and the other the royal spear"। [*Memoirs of Humayun* (London M D ccc x x x II) पृ० १८]।

हुमायूं का कड़ा पहुँचना

हज़रत पादशाह वहाँ से कड़ा की ओर पहुँचे। समाचार प्राप्त हुए कि बरमज़ीद गौर[1] पीछे से आ रहा है। दूसरे समाचार प्राप्त हुए कि आगे से शाह मुहम्मद[2] अफ़गान ने मार्ग रोक रक्खा है। इस समाचार से लोगों के हाथ पाँव फूल गए और वे बड़ी चिन्ता में पड़ गए। राजा भभान[3] ने निवेदन किया कि, "बरमज़ीद गौर जो पीछे से आ रहा है उससे मैं समझ लूंगा। हज़रत पादशाह प्रस्थान करें। उसकी क्या मजाल है कि वह मुकाबला कर सके[4]।" अन्त में उन्होंने यही किया।

हुमायूं का काल्पी पहुँचना

शाह मुहम्मद उनके समक्ष न ठहर सका और उसने मार्ग दे दिया। पादशाह निरन्तर यात्रा करते हुए काल्पी पहुँचे। कासिम कराचा के पुत्र ने पादशाह के लिए अत्यधिक पेशकश[5] का प्रबन्ध (२५अ) किया था। उसके पिता ने, जो हज़रत पादशाह के साथ आ रहा था, उसे रोक दिया। अन्त में थोड़ा सा उसने पादशाह के समक्ष प्रस्तुत किया। यह समाचार उनके शुभ कानों तक पहुँच गए। उसके पेशकश में से कुछ भी न स्वीकार किया। केवल एक जड़ाऊ जीन ले ली और कहा कि "इसे मीर्ज़ा कामरान को दूंगा।"

हुमायूं का आगरा पहुँचना

वहाँ से वे निरन्तर यात्रा करते हुए आगरा पहुँचे। मीर्ज़ा कामरान ज़र अफ़्शाँ[6] नामक उद्यान में था कि पादशाह पहुँच गए। जब हज़रत पादशाह के पहुँचने के समाचार मीर्ज़ा कामरान को प्राप्त हुए तो वह दौड़कर जिलौ ख़ाने[7] तक पहुँचा और अभिवादन किया। हज़रत पादशाह घोड़े से उतर पड़े और मीर्ज़ा को आलिंगन किया तथा पहुँचकर मीर्ज़ा के खरगाह में बैठे। थोड़ी देर बैठने के उपरान्त मीर्ज़ा कामरान ने निवेदन किया कि, "पादशाह दूर से आ रहे हैं और थके हुए हैं, राजसिंहासन पर आरूढ़ हों और मेरी ख़ातिर मीर्ज़ा हिन्दाल के अपराध क्षमा कर दें।" मीर्ज़ा हिन्दाल अलवर में था। पादशाह ने कहा कि, "उसका अपराध तेरी ख़ातिर क्षमा कर दिया। उसे कुछ लिख दे कि वह आ जाय।" पादशाह स्वयं सिंहासन पर पहुँचे और निज़ाम को, जिसने गंगा नदी में मशक पहुँचाई थी, अपने वचनानुसार दो घड़ी तक सिंहासनारूढ़ किया। उसने दो घड़ी (२५ ब) तक शासन किया।

१ च व छ में बरमजीद गौर उसका (शेर शाह का) अमीर।
२ च, छ एवं ज में 'शाह मुहम्मद फरमुली'।
३ च, छ में 'राजा बीर बान' एवं ज में 'राना बीर भान' अथवा 'राना बीर भानु'।
४ च, छ एवं ज में :—"भरैल के राजा बीर भान ने, जो सेना में था, निवेदन किया कि इन लोगों की यह मजाल नहीं कि वे हज़रत का मुकाबला कर सकें। वास्तव में यही हुआ।" (च पृ० २७ ब, छ पृ० २३ ब, ज पृ० २७अ)।
५ वह उपहार जो अधीन हाकिम, बादशाहों को प्रस्तुत करते थे। इस शब्द से खराज भी समझा जाता है।
६ च, छ, एवं ज में :—"फ़िरदौस मकानी के ज़र अफ़्शा उद्यान में"।
७ अश्वशाला, च, छ में 'तवेला खाना'।

गाडियों के कुल्लाब[1] खोल दिये जाये।" हजरत पादशाह ने आदेश दिया कि, "गाडियों के कुल्लाब खोल दिए जायें" और वे आगे बढे थे कि सेना अचानक पराजित हो गई। एक व्यक्ति काले वस्त्र धारण किए हुए पहुँचा और उसने हजरत पादशाह के घोडे पर ऐसा घूंसा मारा कि घोडे की लगाम मुड गई। "हे खुदा! समस्त सृष्टि का स्वामी तू है, जिसको चाहे सल्तनत दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले और तू ही जिसको चाहे इज्जत दे और तूही जिसे चाहे जिल्लत दे, हर तरफ की भलाई तेरे ही हाथ मे है। नि सन्देह तुझको हर चीजपर प्रभुत्व प्राप्त है[2]"। हे जवांमर्दो! अधिकार की लगाम ईश्वर के हाथ मे है। उसका आदेश सभी आदेशो पर भारी है। अधिकाश लोगों को इसका ज्ञान नही होता। ख्वाजा हाफिज का कथन है --

शेर

'सुखद समाचार प्राप्त हुए कि शोक के दिन न रहेगे,
वैसे (दिन) नही रहे, ऐसे भी न रहगे।'

हुमायूं का नदी पार करना

(२८ अ) हजरत पादशाह जन्नत आशियानी अपनी शुभ जिह्वा से कहा करते थे कि, "जब मैंने नदी की ओर देखा कि अफगान लोग मुगलो के समूहो को घेरे हुए हैं तो मैंने यह निश्चय किया कि उनपर आक्रमण करूँ। एक व्यक्ति मेरे घोडे की लगाम पकडकर नदी तट पर लाया। परीसाल नामक हाथी, जो फिरदौस मकानी के हाथियो मे था, दिखाई पडा। मैंने महावत को पुकारा। वह हाथी लाया। एक सेवक मेहतर शाहू शहनये फील[3] हाथी के हौदज मे बैठा था। उसने अभिवादन किया। मैंने उससे उसका नाम पूछा। उसने कहा कि, 'काफूर।' उसने हाथी को बैठाया। मैं सवार हो गया। मैंने महावत से कहा कि, 'नदी पार कर।' उस महावत ने कहा कि, 'हाथी डूब जायेगा।' ख्वाजा काफूर ने सकेत से निवेदन किया कि, 'महावत हाथी को अफगानो की ओर ले जाना चाहता है। यदि इसकी हत्या करा दी जाय तो उचित होगा।' मैंने कहा कि, "हाथी कौन चलायेगा?" काफूर ने निवेदन किया कि, 'दास हाथी चलाना जानता है।' इस बात पर मैंने तलवार खीचकर महावत की हत्या कर दी। काफूर ने उसे नदी मे फेंक दिया और स्वय उसके स्थान पर बैठकर हाथी को (२८ ब) पार करा ले गया। तदुपरान्त मैंने ख्वाजा काफूर को अत्यधिक प्रोत्साहन प्रदान किया।"

वे कहते थे कि, 'जब मैं हाथी से उतरा तो मुझे मार्ग न मिला कि नदी तट पर पहुँचूँ। देखा कि कुछ मुगल रोते चिल्लाते हुए मेरे विषय में पूछते हुए घूम रहे हैं। तूगबानो[4] के उस समूह की दृष्टि मुझपर पड गई। वे दौडकर आये और अपनी पगडिया को नीचे लटका दिया तथा मझे नदी तट पर लाये[5]। घोडा भेंट किया। सवार होकर हम आगरा की ओर रवाना हुए।"

१ कुंडे जिनसे जजीरें बाधी जाती हैं। यहा जजीरों के खोल देने से तात्पर्य है।
२ कुरान शरीफ, सूरा ३ आयत २६।
३ हाथियों की देख-रेख करने वाला अधिकारी।
४ तूगबान --झंडा उठाने वाले।
५ च, छ में --"क्योंकि नदी का किनारा ऊँचा था अत मैं ऊपर न चढ सका। उन लोगों ने अपनी पगडिया लटका दीं। मैं निकट पहुँचा था कि शम्सुद्दीन मुहम्मद खा अतका ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे ऊपर खींच लिया, और अपना घोडा प्रस्तुत किया"। (च पृ० ३१ अ, छ पृ० २६ ब)।

हुमायूं का आगरा की ओर प्रस्थान

तूगबानो के अतिरिक्त जो उस समय सेवा में पहुँचे उनमें बाबा बेग जलायर के पुत्र मीर्जा मुहम्मद तथा तरशुन (अथवा तरसून) बेग थे। "मैंने सोचा कि, क्या ही अच्छा हो कि जिस प्रकार यह भाई एक स्थान पर आ गये हैं, हमारा भाई हिन्दाल भी मुझसे मिल जाता।' क्षण भर बाद यह प्रार्थना स्वीकार हो गई और मीर्जा हिन्दाल उपस्थित होकर हजरत पादशाह का अभिवादन करके सम्मानित हुआ।

उस परमेश्वर का लाख लाख शुक्र है कि काफ तथा नून[1] मिलने भी न पाये थे कि उसने समस्त संसार को उत्पन्न कर दिया अर्थात् ईश्वर ने कहा, "हो जा", हो गया। हजरत पादशाह (२९ अ) प्रसन्न हो गए। हे मित्रो ! ऐसा क्यों न हो। हजरत पादशाह की समस्त प्रार्थनायें स्वतः ईश्वर द्वारा स्वीकार हो जाती थीं किन्तु भाग्य के सामने किसी की नहीं चलती। सौभाग्य एवं दुर्भाग्य समय पर निर्भर हैं। ईश्वर जो चाहता है प्रकट करता है और तदनुसार व्यवस्था करता है।

मुहम्मद हनफिया की कहानी

हे जवां मर्दो ! मुहम्मदे हनफिया[2] बिन अली मुरतुजा की कहानी बड़ी दूर की बात है किन्तु उसकी इस आशय से चर्चा करता हूँ कि परमेश्वर का आदेश सभी आदेशों पर भारी है।

जब मुहम्मद हनफिया ने अपने भाइयों अमीरुल मोमनीन हसन तथा अमीरुल मोमनीन हुसेन का बदला लेने के लिए यजीद लईन[3] पर दमिश्क में आक्रमण किया तो यजीद लईन १२ लाख अश्वारोही, ४० हजार पदाती तथा ५ सौ हाथियों को लेकर अमीरुल मोमनीन मुहम्मद हनफिया का मुकाबला करने के लिए निकला। एक हजार वीर तथा दो सौ हाथी अमीरुल मोमनीन मुहम्मद हनफिया ने एक आक्रमण में मार डाले। जब यजीद ने अमीरुल मोमनीन मुहम्मद हनफिया को (२९ ब) देखा तो वह भागकर दमिश्क के किले में प्रविष्ट हो गया और द्वारा को बन्द कर लिया। रात भर वह चैन से न बैठा। उसने अपने वजीर मरवान को बुलवाकर १२ लाख अश्वारोही, पदाती तथा हाथी उसके सिपुर्द किए। जब मरवान अमीरुल मोमनीन मुहम्मद हनफिया से युद्ध हेतु पहुँचा और उनकी दृष्टि उस सेना पर पड़ी तो वे शेर के समान दहाड़े और अपने पिता की

१ 'कुन' : मुसलमानों का विश्वास है कि सृष्टि की रचना ईश्वर की इच्छा से हुई। उसने "कुन हो जा" कहा और संसार हो गया। कुरान शरीफ के सूरा नं० ३६ आयत ८२ में इस प्रकार है, "उसकी शान तो यह कि जब किसी चीज को पैदा करना चाहता है तो वह कह देता है कि हो जा तो वह (तत्काल) हो जाती है।" इसी बात का कुरान शरीफ में लगभग १२ स्थानों पर भी उल्लेख हुआ है। कुन शब्द को कलमये हजारह भी कहते हैं।

२ मुहम्मद हनफिया अथवा मुहम्मदे बिन अली हजरत अली के तीसरे पुत्र थे। वे हजरत हसन एवं हुसेन की भांति हजरत फातमा के पुत्र न थे। उनकी मृत्यु ८१ हि० (७०० ई०) में हुई।

३ मआविया का पुत्र यजीद प्रथम तथा उमय्या वंश का दूसरा खलीफा। वह १ रजब ६० हि० (७ अप्रैल ६८० ई०) को अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त सिंहासनारूढ़ हुआ। उसने १० मुहर्रम ६१ हि० (१० अक्तूबर ६८० ई०) को इमाम हुसेन को कर्बला के मैदान में शहीद करा दिया। इसी कारण अधिकांश मुसलमान उसे यजीद लईन (निन्दनीय) अथवा लानतुल्लाह (ईश्वर की उस पर फटकार हो) कहते हैं। ४ रबी-उल अव्वल ६४ हि० (३१ अक्तूबर ६८३ ई०) को उसकी मृत्यु हो गई।

जुल्फेकार[1] को खींचकर आक्रमण किया। ५० हजार वीर तथा ३ सौ हाथियों की हत्या कर दी। इसी प्रकार उन्होंने कई आक्रमण किए और उस सेना के इतने आदमी मार डाले कि उनकी संख्या परमेश्वर को ही ज्ञात होगी। यजीद लईन की सेना वाला को हाथियों से घेर कर लाते थे। यहाँ तक कि अमीरुल मोमनीन मुहम्मद हनफिया की दृष्टि मध्य भाग पर पड़ी। वे हाथी के पास पहुँचे। जब समीप पहुँचे तो दाहनये फील ने अवसर पाकर छिप कर तलवार द्वारा अमीरुल मोमनीन मुहम्मद हनफिया पर आक्रमण किया और उनके हाथ एवं पंजा को तलवार द्वारा जमीन पर गिरा दिया। शाहजादा[2] बिना हाथ के किस प्रकार युद्ध कर सकता था। यजीद की सेना ने शाहजादे को जीवित बन्दी बना लिया और यजीद लईन के पास ले गए। अन्त में निश्चय हुआ कि इमाम मासूम[3] को जलवा डाला जाये। यजीद लईन के वजीर मरवान ने अमीरुल मोमनीन के (३० अ) भाइयों को मुहम्मद हनफिया के विषय में लिखा और अपने दास के साथ भेजा। दास रातों रात उन लोगों के पास पहुँचा कि, अमुक द्वार एवं अमुक समय पर अमीरुल मोमनीन मुहम्मद हनफिया जलाये जायेंगे। यदि हो सके तो तैयार होकर आओ और बचा ले जाओ।" ईश्वर के आदेशानुसार जैसे ही लोग इमाम मासूम को जलाने के लिए द्वार पर ले गए, वैसे ही उनके भाई आकर उन्हें खींच ले गए और अत्यधिक धन-सम्पत्ति न्योछावर की। उन्होंने निवेदन किया कि, 'हे इमाम! हम क्या करें? हमसे आपका हाथ अच्छा नहीं हो सकता।" उसी रात्रि में अमीरुल मोमनीन मुहम्मद हनफिया ने हजरत मुहम्मद को स्वप्न में देखा। उन्होंने कहा कि, 'हे पुत्र! जो ईश्वर का आदेश था, वह पूरा हुआ। तेरा हाथ एवं पंजा उस स्थान पर जहाँ तूने ३ सौ हाथियों तथा ४० हजार आदमियों की हत्या की थी, पड़ा (३० ब) है। किसी को भेजकर मंगवा ले और अपने हाथ को नबूवत की मुहर पर मल। ईश्वर के आदेश से तेरा हाथ ठीक हो जायेगा और उसमें दुगनी शक्ति आ जायेगी। अपने भाइयों का बदला ले। इसके बाद तुझे विजय ही प्राप्त होगी। अमीरुल मोमनीन मुहम्मद हनफिया ने ऐसा ही किया। उनके शुभ हाथ ठीक हो गए और उनमें ईश्वर की दया से दुगनी शक्ति आ गई। हजरत अली की जुल्फकार खींच कर यजीद लईन की सेना पर आक्रमण किया। जिस प्रकार भेड़िया, भेड़ों के गल्ले पर टूटता है उसी प्रकार वे टूटे और जुल्फेकार को इस प्रकार चलाया कि खून की नहरें बह निकली। संक्षेप में यजीद लईन भाग गया। प्राणों के भय तथा अमीरुल मोमनीन मुहम्मद हनफिया के डर से गहरी सडास में घुस गया। अमीरुल मोमनीन मुहम्मद हनफिया ने उसे उस सडास से निकलवाया और उसी स्थान पर उसकी हत्या कर दी। अतः हे भाइयो! सौभाग्य एवं दुर्भाग्य अवसर पर निर्भर है। वीरों तथा गाजियों को इसका सामना करना पड़ता है।[4]

१ हजरत अली की तलवार जो बद्र के युद्ध में उन्हें प्रदान हुई थी।

२ मुहम्मद हनफिया।

३ जिसने न कोई अपराध किया हो और न कर सकता हो।

४ हुमायूँ शाही (च, छ) एवं जवाहर शाही में इसका उल्लेख नहीं है और न इसमें ऐतिहासिक तथ्य है।

हुमायूं का आगरा की ओर प्रस्थान

(३१ अ) तदुपरान्त हजरत पादशाह अपने भाई मीर्जा हिन्दाल एव अपनी सेना तथा मीर्जा यादगार नासिर इत्यादि सहित आगरा की ओर रवाना हुए[१]। जब वे कस्बा बहल गाँव[२] के समीप पहुँचे तो गवारा ने मार्ग रोक लिया और लूट मार करने लगे। अचानक एक बाण यादगार नासिर मीर्जा के लगा। उसने अस्करी मीर्जा से कहा कि, "तुम गवारों पर आक्रमण करो, ताकि मैं अपने घावों को बाँध लूँ।" मीर्जा को यह बात अच्छी न लगी और उसने गाली दी। मीर्जा यादगार नासिर ने भी उत्तर म कठोर शब्द कहे। तदुपरान्त मीर्जा अस्करी ने (उसके) तीन चाबुक मारे। उसने कहा कि, "यह तीन चाबुक पादशाही तोरे[३] की दृष्टि से स्वीकार किए।' यह कहकर उसने मीर्जा अस्करी के निरन्तर चाबुक मारे। यह समाचार हजरत पादशाह को प्राप्त हुए। उन्होंने कहा ' कि अच्छा होता यदि उस अभागे की हत्या कर देता। जो हुआ सो हुआ[४]।"

हुमायूं का आगरा पहुँचना

हजरत पादशाह आगरा पहुचे। सैयिद रफीउद्दीन[५] के मुहल्ले मे उतरे। तदुपरान्त मीर्जा हिन्दाल को आदेश दिया 'कि किले के भीतर जाकर अपनी माता तथा परिवार वालो एव सेवको (३१ ब) में से जिसे उचित समझो तथा खजाना इत्यादि ले आओ[६]।' मीरान सैयिद रफी उद्दीन के पास रोटी तथा खरबूजा खाने के लिए उपस्थित था। उन्होने पेश किया। उन्होने उसे खा लिया। तदुपरान्त मीर ने हजरत पादशाह से निवेदन किया कि, 'ससार का कार्य बहती हुई नदी के समान है। आपको पुन (अधिकार) प्राप्त होगा। राज्य के लिए यह उचित है कि आप इस समय चले जायँ।' घोडा तथा तुरूग[७] उपहार-स्वरूप भेंट किए और फातेहा पढा।

हुमायूं का लाहौर की ओर प्रस्थान

हजरत पादशाह सवार होकर सीकरी कस्बे की ओर रवाना हुए। मीर्जा हिन्दाल भी उनकी सेवा मे पहुँचा। मीर्जा हिन्दाल जो खजाना लाया था उनमें खन्जर तथा जडाऊ तलवारें थी। उसने हजरत पादशाह की सेवा मे उपस्थित की। हजरत पादशाह प्रात काल फिरदौस मकानी के उद्यान में बैठे हुए थे कि सीकरी पर्वत की ओर से एक बाण आया। बाण के आने के उपरान्त

१ च, छ एव ज में —"तदुपरान्त मीर्जा अस्करी एव यादगार नासिर मीर्जा पहुँचे। इन लोगों के साथ वे आगरा की ओर रवाना हुये"।

२ च, छ एवं ज में 'बेहीन गाव'।

३ पादशाही विधान।

४ **जवाहर शाही** में भी लगभग इसी प्रकार है। **हुमायूं शाही** (च एव छ) में यह इस प्रकार है —"तदुपरान्त उसने (यादगार नासिर मीर्जा ने) भी तीन चाबुक मारे। मीर्जा रो रहा था कि हजरत पादशाह पहुँच गये उन्हें इस विषय में सूचना दी गई। उन्होने कहा, 'जिस अवसर पर युद्ध करना चाहिये था, न किया। इस स्थान पर आपस में युद्ध करते हो।' मीर्जा यादगार नासिर ने उन लोगों पर आक्रमण किया। कुछ की हत्या कर दी और कुछ को गाव में भगा दिया।" (च पृ० ३१ अ-ब, छ पृ० २६ ब)।

५ च, छ में —"मीर सैयिद रफी उद्दीन जो नगर के प्रतिष्ठित लोगों में से थे।"

६ च, छ में —"खजाना इत्यादि जो ला सकते हो, ले आओ।"

७ कोतल घोडा।

(३२ अ) मीर्ज़ा हैदर कश्कारी तथा मेहतर सभा का[1] रिकाबदार खाण के विषय में सूचना लाने के लिए पर्वत की ओर गए। दोनो घायल हुए और हज़रत पादशाह से आकर निवेदन किया कि "यह उचित स्थान नही है।' सवार होकर वे बजौना[2] की ओर रवाना हुए। हज़रत पादशाह की सेवा मे उच्च पदाधिकारियो में से मीर्ज़ा हैदर कश्कारी, ख़ुदाए दोस्त, मीर्ज़ा रोशन बेग, मीर नौकार[3] तथा सेवको का एक समूह उपस्थित था। वे हजरत पादशाह के साथ जा रहे थे कि क्या देखते हैं कि फ़्ख़्र अली हजरत पादशाह के आगे आगे जा रहा है। हजरत पादशाह ने फ़्ख़्र अली के प्रति क्रोध प्रदर्शित करते हुए कहा कि, 'तेरे परामर्श से गगा नदी पार की, अच्छा तो यही था कि तू वही मार डाला जाता। यह भी सम्भव न हो सका तो अब इस समय हमसे पृथक् हो कर चला जा रहा है।" इस कारण फ़्ख़्र अली वापस आ गया और हजरत पादशाह की सेवा में पीछे पीछे रवाना हुआ।

जब वे बजौना कस्बे में बन्देर (?) नदी तट पर पहुँचे तो वहाँ मीर्ज़ा अस्करी उपस्थित हुआ और निवेदन किया कि, "हमें समाचार प्राप्त हुए हैं कि शेर खा ने बरमज़ीद गोर को हमारे (३२ ब) पीछे रवाना किया है। हजरत पादशाह थोडे से सैनिकों को लेकर[4] शीघ्रातिशीघ्र आगे बढे, अन्य लोग पीछे आते रहेगे। यदि इस स्थान से प्रस्थान कर दें तो अच्छा है।" मीर्ज़ा अस्करी ने इसे उचित बताया। हजरत पादशाह को सवार कर दिया। सेना मे हा हाकार मच गया। लोग व्याकुल थे, कि क्या करेंगे, कोई भी सहायता नही करता, न पिता की पुत्र और न पुत्र की पिता। जिसके पास जो कुछ माल असबाब था, उसे छिपा कर वे परेशान चले जा रहे थे। इसी बीच में आँधी के साथ वर्षा होने लगी और ओले गिरने लगे। इतनी अधिक हानि हुई कि ईश्वर उस दिन से अपनी रक्षा मे रक्खे। ईश्वर ने कहा है, "उस दिन आदमी अपने भाई और अपनी माँ और अपने बाप और अपने लडके बालकों से भागेगा[5]'।

शेर

'उस दिन के प्रति शोक है जब कोई साथ न देगा,
मर्यादा एव साहस कोई भी प्राण का साथ न देगे।'

जब हजरत पादशाह ने यह देखा कि लोग हताश तथा व्याकुल हैं तो वे लगाम खीचकर खड़े हो गए। मीर्ज़ा हिन्दाल, यादगार नासिर मीर्ज़ा, तरदी बेग तथा अमीरो का जो समूह साथ था, वह उपस्थित हुआ। हजरत पादशाह ने कहा कि, "रूम, शाम तथा एराक हर दिशा से लोग मेरी (३३ अ) सेवा मे उपस्थित होते रहते थे। कुछ लोग चौसा के युद्ध में मारे गए, कुछ कन्नौज के युद्ध में, जो शेष रहे थे वे यहा नष्ट हो रहे हैं। अब यह उचित होगा कि हम धैर्य के साथ रवाना हो। यदि हमारी हत्या हो जाय तो हमें स्वीकार है' और कहा कि, "लोगो को उतरवाओ। इतना

१ च, छ एव ज में 'मवाक़ा'। 'मवह्राक़ा' भी प्रयुक्त हुआ है।
२ च, छ एव ज में 'बचौना'।
३ क, ख, ग, घ में 'मीरन्द कार'।
४ 'नरीदा'।
५ क़ुरान शरीफ़, सूरा न० ८० आयत न० ३४ ३६। यह आयत क़यामत के दिन जब कोई किसी का साथ न देगा, से सम्बन्धित, है।

हताश न हो। इस स्थान से एक निश्चित योजना के साथ रवाना हो।" अन्ततोगत्वा यह निश्चय हुआ कि हज़रत पादशाह आगे रहें। दायें हाथ की ओर मीर्ज़ा हिन्दाल, बायें हाथ की ओर मीर्ज़ा यादगार नासिर तथा अन्य अमीर उनके पीछे चलें। जहाँ तक लोग चल सकते हों, वहाँ तक वे इसी प्रकार चलें। आदेश हुआ कि जो कोई पादशाह के आगे रवाना हो उसे दंड दिया जाय और उसके घर को नष्ट कर दिया जाय।

इसी बीच में एक मुग़ुल ने आकर हज़रत पादशाह से न्याय की याचना की और कहा कि, 'हे पादशाह! मेरे घोड़े को चौपत्ता[1] बहादुर ने छीन लिया है।' हज़रत पादशाह ने किसी को आदेश दिया कि, 'उसका घोड़ा उसे दिला दिया जाय।' पादशाह के आदेशानुसार उसने आकर कहा कि, 'मुग़ुल का घोड़ा दे दिया जाय।' चौपत्ता बहादुर ने आदेश का पालन न किया और (३३ ब) घोड़ा न दिया अपितु कठोरता प्रदर्शित की। पादशाह को इस बात का पता चला। आदेश हुआ कि उसकी गरदन मार दी जाय। हज़रत पादशाह के आदेशानुसार उसकी गरदन मार दी गई। उसके सिर को काटकर भाले की नोक पर समस्त सेना में घुमाया गया। उस समय सेना में आतंक छा गया और लोगों ने असावधानी को त्याग कर अत्याचार की ओर से अपनी लगाम खींच ली।

हुमायूँ का लाहौर पहुँचना

इस स्थान से प्रस्थान करके कभी १० कुरोह और कभी १२ कुरोह पर पड़ाव किया जाता था[2]। यहाँ तक कि सरहिन्द पहुँच गए। हज़रत पादशाह ने मीर्ज़ा हिन्दाल को सरहिन्द में छोड़ दिया और स्वयं माछीवारा में पड़ाव किया। क्योंकि नदी में बाढ़ आई हुई थी और नौका नहीं मिलती थी अतः जिस प्रकार सम्भव हो सका माछीवारा नदी पार की। शेर खाँ स्वयं राजधानी देहली में था। उसकी सेना हज़रत पादशाह का पीछा करती हुई ५० कुरोह[2] पर आ रही थी। हज़-

१ च, छ एवं ज में 'जीवना बहादुर'।

२ ब, द में —"वहाँ से १० कुरोह मंज़िल निश्चित करके एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल पार करते हुये सरहिन्द नामक कस्बे में पहुँचे। मीर्ज़ा हिन्दाल को उस कस्बे में छोड़ कर, माछीवारा कस्बे के घाट की ओर रवाना हुये। नौकाओं की कमी के कारण ६-७ दिन में सतलज नदी पार की। उस समय शेर खाँ स्वयं देहली में था और उसकी सेना ४० कुरोह पर। एक रात्रि में उस घाट पर जब चाँदनी निकली थी, मैंने मीर्ज़ा हैदर कशग़री से पूछा कि, 'मेरे मित्र! तूने कश्मीर को देखा है उसका चित्र बालू पर बना। मैं गुजरात तथा मांडू का चित्र बनाता हूँ। मुनइम बेग का भाई फ़ज़ील बेग क़न्धार का चित्र बनाये।' प्रत्येक ने हर स्थान के चित्र बनाये। कश्मीर के चित्र के विषय में कहा कि वह बड़ा ही आश्चर्यजनक प्रदेश एवं दर्शन करने योग्य है। उसके दर्शन की बड़ी इच्छा प्रकट की और कहा —

शेर

'कश्मीर मत कहो, चीन के फ़ीस्तान की ईर्ष्या का विषय है,
संक्षेप में पृथ्वी पर स्वर्ग है।'

तदुपरान्त कहा, 'ईश्वर ने चाहा, जब मैं लाहौर पहुँचूँगा, सर्व प्रथम कश्मीर के अभियान की ओर ध्यान दूँगा।' संक्षेप में, जब वे लाहौर पहुँचे तो मीर्ज़ा हैदर, मुईद बेग, रोशन बेग कोका एवं मीर्ज़ा सजर को एक बहुत बड़ी सेना सहित यह निश्चय करके नियुक्त किया कि, 'उस प्रदेश को विजय करके मीर्ज़ा हैदर को दे दिया जाय और वे लौट कर हमारी सेवा में आ जायँ'। आदेशानुसार वे इस प्रदेश की ओर रवाना हुये। उस देश को

रत पादशाह स्वय जालधर कस्बे में पहुँचे। मीर्ज़ा हिन्दाल भी जालधर मे आया। अफगानो की सेना मरहिन्द में पहुँच गई। हजरत पादशाह मीर्ज़ा हिन्दाल को जालधर में छोडकर स्वय एक (३४ अ) मजिल से दूसरी मजिल पार करते हुए लाहौर के भू-भाग में पहुँचे और दोशईमा[1] की हवेली में उतरे। मुज़फ्फर बेग तुर्कमान को आदेश दिया कि, "मीर्ज़ा हिन्दाल जालधर में हैं, वहाँ जाकर वे दोनो साथ रहे[2]।" इस प्रकार मुज़फ्फर बेग गोविन्द वाल नदी के तट पर उतरा। मीर्ज़ा हिन्दाल गोविन्द वाल नदी पार करके लाहौर आया[3]। मुज़फ्फर बेग तथा अफगानो के बीच मे यही गोविन्द वाल नदी थी।

सक्षेप में जब हज़रत पादशाह तथा मीर्ज़ा लोगो को जो लाहौर में थे, यह समाचार प्राप्त हुआ कि शेर खा के पास से दूत आ रहा है तो हज़रत पादशाह ने मीर्ज़ा लोगो से पूछा कि "उससे कहाँ भेट की जाय?" निश्चय हुआ कि मीर्ज़ा कामरान के बाग में जाकर दरबार किया जाय। आदेश हुआ कि ७ वर्ष से लेकर ७० वर्ष तक के लोग उस बाग में उपस्थित हो। वैसा ही किया गया। शेर खा का दूत उपस्थित हुआ। उसी दिन उपर्युक्त दूत को विदा कर दिया गया[4]। मीर्ज़ा (३४ ब) कामरान ने अपनी ओर से शेर खा को लिखा कि, "तूने हमसे प्रतिज्ञा की थी कि मैं सधि कर लूंगा।" शेर खा ने लिखकर भेजा कि, "तुम किस शक्ति के भरोसे पर सधि चाहते हो? तुम कहाँ से कहाँ पहुँच गए और सधि स्वीकार न की[5]।"

हज़रत पादशाह ने मीर्ज़ाओ तथा अमीरो को बुलाकर परामर्श किया कि, "क्या करना चाहिए?" सभी ने (युद्ध करना) निश्चय किया[6] और फातहा पढा। एक मास तक पाईने दौलत-

विजय करके मीर्ज़ा (हैदर) को सौंप दिया और उन लोगों ने उस समय जब मीर्ज़ा हिन्दाल गुजरात की ओर प्रस्थान करने के उद्देश्य से पृथक हो गया था, हजारा परगने में पहुँचने का सम्मान प्राप्त किया। इसका उल्लेख उचित स्थान पर किया जायगा।" (च पृ० २३अ २३ब, छ २७ब-२८अ)।

१ च, छ एव ज में 'हवेली दोस्त मुशी'।

२ क, ख, ग, घ 'आजा रफ्ता व इत्तफ़ाके यक दिगर बाशद" किन्तु "ब इत्तेफ़ाके यक दिगर बे आयेन्द" 'दोनों मिल कर आ जायें' होना चाहिये।

३ च, छ एव ज में —"मुज़फ्फर बेग तुर्कमान को आदेश दिया कि वह मीर्ज़ा हिन्दाल के पास चला जाय और उसे ले आये। मुज़फ्फर बेग स्याह (श्याम) नदी तट पर गोविन्द वाल (गोविन्द वाल) परगने में पहुँचा था कि मीर्ज़ा नदी पार करके उपर्युक्त कस्बे में धरती का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। उस बीच में मुज़फ्फर बेग शत्रु की सेना का मुक़ाबला करता रहा"।

४ च, छ में —'राजदूत बातचीत करके उसी दिन वापस चला गया'।

५ च, छ में मीर्ज़ा कामरान के पत्र लिखने का उल्लेख नहीं है। ज में इस प्रकार है —"मीर्ज़ा कामरान ने अपनी ओर से शेर खा को लिखा कि 'हमने और तुमने सधि की प्रतिज्ञा की थी'। शेर खा ने उत्तर लिखा कि, 'अब सधि का क्या अवसर है?'"

६ क, ख, ग, घ में "युद्ध करना निश्चय हुआ है" स्पष्ट नहीं किन्तु च, छ, ज में स्पष्ट रूप से इस प्रकार है — "निश्चय हुआ कि एक बार पुन युद्ध करना चाहिये। इसी निश्चयानुसार फातेहा पढा।"

—

खाने[1] में निवास किया। मीर्जा हिन्दाल तथा कुछ अमीरो ने परामर्श करके हजरत पादशाह से निवेदन किया कि, "मीर्जा कामरान की समस्या का समाधान कर दिया जाय ताकि सेना एक दिल तथा एक जान हो जाय और युद्ध कर सके।" हजरत पादशाह ने यह राय स्वीकार न की और कहा कि, 'इस नश्वर ससार के लिए मैं अपने भाई की हत्या न कराऊँगा।' इसके अतिरिक्त फिरदौस मकानी के उपदेश का भी स्मरण किया कि, 'हे हुमायूँ! अपने भाइयो की कदापि हत्या न कराना और इस विषय में अपने मत को भ्रष्ट न करना। मुझे उनकी इसी बात का ध्यान है और मैं इस प्रकार का कार्य नही कर सकता।"

(७)

हजरत पादशाह का लाहौर से प्रस्थान, उच्च में पहुँचना तथा मीर्जा कामरान का काबुल की ओर प्रस्थान[2]

मीर्जा हिन्दाल की गुजरात की ओर प्रस्थान करने की योजना

(३५ अ) सक्षेप में इसी बीच में मीर्जा कामरान अपने असबाब को नौका में लदवा कर अपनी सेना सहित रवाना हो गया[3]। तदुपरान्त हजरत पादशाह एक मजिल के पश्चात् दूसरी मजिल को पार करते हुए हजारा कस्बे की ओर रवाना हुए। जब वे उस स्थान पर पहुँचे तो प्रातःकाल यह समाचार प्राप्त हुए कि 'मीर्जा कामरान अपनी सेना सहित अस्त्र शस्त्र धारण किए हुए पादशाह के विरुद्ध आ रहा है। यदि आदेश हो तो दास भी अस्त्र शस्त्र धारण करे।' आदेश हुआ कि, "आवश्यकता नही" और कहा कि, "आये! क्या होता है?" तदुपरान्त मीर्जा कामरान आकर बैठ गया। एक क्षण भी न व्यतीत हुआ था कि उसने निवेदन किया कि, "दास जिस दिन से हिन्दुस्तान आया है, शान्ति नही मिली। निरन्तर कोई न कोई युद्ध होता रहा है। हमारे सेवक बड़े परेशान हो गए हैं, यदि आज्ञा हो तो काबुल जाकर अपने आदमियो की व्यवस्था करके पुन सेवा में उपस्थित (३५ ब) हूँ।" हजरत पादशाह ने कुशलता के लिए फातेहा पढ़ा और विदा कर दिया। स्वय वहा से प्रस्थान करके हजारा से चार कुराह पर पडाव किया। समाचार प्राप्त हुए कि, "मीर्जा हिन्दाल, यादगार नासिर मीर्जा, तथा कासिम हुसेन सुल्तान को बेग मीरा ने मार्ग-भ्रष्ट कर दिया है और वे

१ पाईन दौलतखाना का अर्थ 'दौलतखाने के निचले अथवा पीछे के भाग में', किन्तु यह अशुद्ध है। च एव छ में "ता यक माह दर पाईने दौलतखाना फुरूद आमदन्द" के स्थान पर "बर सर बावरी दौलत खाँ लोदी फुरूद आमदन्द" है, ज में "बावली लोदी खा" है। सम्भवत दौलत खा लोदी की बावली पर पडाव करने से तात्पर्य है।

२ च, छ में भी ७ वी फस्ल और शीर्षक इस प्रकार है—"जन सरीरे उस शाह का तख्त एवं बक्कर की ओर प्रस्थान, मीर्जा कामरान का काबुल तथा मीर्जा हिन्दाल का कन्धार के लिये रवाना होना", ज में "तख्त सरीरे पादशाह का बक्कर की ओर प्रस्थान, मरियम मकानी हमीदा बानो बेगम से विवाह ..."।

३ च, छ एव ज में मीर्जा कामरान के प्रस्थान का उल्लेख नहीं।

गुजरात की ओर प्रस्थान करने वाले हैं। इस कारण हजरत पादशाह के सेवकों में से अधिकांश हिन्दाल मीर्ज़ा की सेना में चले गए और मीर्ज़ा बिलोचो के मार्ग की ओर रवाना हुआ[1]"।

हुमायूं का भीरा पहुँचना

ख्वाजा कलाँ बेग भीरा में था। उसने हजरत पादशाह को प्रार्थना-पत्र भेजा कि, "यदि भीरा मुझे प्रदान कर दिया जाय तो मैं सेवा एवं प्राण न्योछावर करने के लिए तैयार हूँ और आपकी सेवा करने में कोई कसर न उठा रक्खूंगा।" मीर्ज़ा कामरान को भी उसने इसी विषय का एक प्रार्थना-पत्र लिखा। यह समाचार पाते ही हजरत पादशाह चल दिए। अस्र की नमाज़ के समय (३६ अ) भीरा नदी के निकट पहुँच गए और तरदी बेग से कहा कि, "नदी में घोड़ा डाल दे।" उसने घोड़े को नदी में डाल दिया। घोड़ा तैरने लगा किन्तु वापस लौट आया और आगे जाने का उसे साहस न हुआ। तदुपरान्त हाथी को नदी में डाला गया और हाथी के पीछे हज़रत पादशाह स्वयं रवाना हुए[2]। सायंकाल की नमाज के समय ४० व्यक्तियों सहित नदी पार करके शीघ्रातिशीघ्र बढ़ते चले गए। रात भर यात्रा करके प्रातःकाल भीरा पहुँचे। समाचार प्राप्त हुए कि मीर्ज़ा कामरान पहिले ही पहुँच गया और ख्वाजा कलाँ बेग को अपने साथ ले गया। जब्बार कुली[3] कूरची ने हजरत पादशाह से निवेदन किया कि, "यदि आदेश हो तो मीर्ज़ा कामरान पर आक्रमण किया जाय।" हजरत पादशाह ने कहा कि, "जिस समय लाहौर में मीर्ज़ा हिन्दाल ने मीर्ज़ा कामरान की हत्या कराने का प्रस्ताव रक्खा था उस समय भी मैंने उसे स्वीकार न किया था, इस समय अब यह कैसे हो सकता है[4]?"

हुमायूं का खुशाब पहुँचना

"आगे चलो, यही अच्छा है कि हम स्वयं खुशाब पहुँच जायें और हुसेन[5] तीमूर सुल्तान तथा उसके पुत्र को बन्दी बना लें।" हजरत पादशाह वहां से शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए जुहर की नमाज के समय खुशाब पहुँचे।

उसने अपने पुत्रों सहित उपस्थित होकर हजरत पादशाह के रिकाब चूमे। उन्होंने उसे (३६ ब) अत्यधिक प्रोत्साहन दिया[6]। हजरत पादशाह ने पूछा कि, "यदि इस समय मीर्ज़ा कामरान आ जाय तो क्या किया जाय?" उसने निवेदन किया कि, 'यह दास हजरत पादशाह का गुलाम है, युद्ध

१ च, छ एवं ज में इस प्रकार है —"मीर्ज़ा बिलोचों के मार्ग की ओर रवाना हुआ। उन लोगों ने रास्ता न दिया।"

२ च, छ में —"उसके पीछे उन्होंने स्वयं घोड़ा बढ़ाया"।

३ च, छ में —"जब्बार कुली ने निवेदन किया कि, 'मीर्ज़ा (कामरान) थोड़ी सी सेना सहित खड़ा है। आदेश हो तो बन्दी बना लें।"

४ च, छ में इस प्रकार है —"लाहौर में मीर्ज़ा हिन्दाल एवं अमीरों के एक समूह के कहने पर यह कार्य न किया। मीर्ज़ा (हिन्दाल) के रुष्ट होने का यही कारण था। वह हमसे पृथक् हो गया। अब हम क्यों बाध्य हों। जहाँ चाहे चला जाय"। (च पृ० ३५ अ, छ पृ० २९ ब)।

५ च छ में.—"वाएश तिमुर सुल्तान", ज में, "वैस तिमुर सुल्तान"।

६ च, छ में, "वह अपने पुत्र के साथ आकर सेवा में उपस्थित हुआ। एक बहुत बड़ी बारगाह जिसकी कनात हाथी पर सवार होकर लगाई जाती थी, उपहार स्वरूप भेंट की। अपार कृपाओं द्वारा सम्मानित हुआ। उन्होंने पूछा 'यदि इस समय मीर्ज़ा कामरान आ जाय तो तू क्या करेगा?' उसने उत्तर दिया, 'हम पादशाह के दास हैं। दासों को क्या अधिकार है? जिस बात का आदेश हो उसके सम्बन्ध में कोई आपत्ति नहीं।"

एव प्राण न्योछावर करने में कोई कसर न उठा रक्खेगा।" आदेश हुआ कि "अपने असबाब को लादकर हमारे शिविर में पहुँचा दे और स्वय साथ चल।" उसने ऐसा ही किया। प्रातःकाल उस मंजिल से कूच करके मुल्तान के क्षेत्र की ओर रवाना हुए।

खुशाब से ६ कुरोह पर पहुँचे थे कि, एक ऐसा मार्ग मिला कि यदि दो सेनाएँ उस रास्ते पर चलना चाहे तो नही चल सकती[1]। आगे दो मार्ग वहाँ से पृथक् हो जाते हैं। एक मार्ग काबुल की ओर और दूसरा मुल्तान की ओर जाता है। मीर्जा कामरान भी उस मार्ग पर पहुँच गया। हजरत पादशाह ने चाहा कि, "इस मार्ग से मुल्तान की ओर जायें।" मीर्जा कामरान ने कहा कि, "इस मार्ग से सर्व प्रथम मैं जाऊँगा, तदुपरान्त आप प्रस्थान करें।" (३७ अ) हजरत पादशाह को यह बात अच्छी न लगी। अमीर अबुल बका एक बड़ा सम्मानित व्यक्ति उपस्थित था। उसने जाकर मीर्जा कामरान को समझाया कि, "झगडा करना उचित नही, सर्व प्रथम हजरत पादशाह रवाना हो, तदुपरान्त तुम चले जाना।" मीर्जा ने स्वीकार कर लिया। हजरत पादशाह स्वय उस मार्ग से प्रस्थान करके मुल्तान की ओर रवाना हुए और मीर्जा कामरान अपनी ओर।

हुमायूं का उच्च पहुँचना

अन्ततोगत्वा वहाँ से निरन्तर यात्रा करते हुए वे कुल बिलोचान पहुँचे। समाचार प्राप्त हुए कि हिन्दाल मीर्जा, यादगार नासिर मीर्जा तथा कासिम हुसेन सुल्तान ने बिलोचो से युद्ध किया, उन्होंने मार्ग न दिया कि वे गुजरात की ओर जा सकें[2]। हजरत पादशाह ने उस मंजिल पर पड़ाव किया। तदुपरान्त समाचार प्राप्त हुए कि २० कुरोह की दूरी पर ख्वास खा युद्ध हेतु पहुँच गया है। उन्होंने निश्चय किया कि, "युद्ध करेंगे।" तदुपरान्त समाचार प्राप्त हुए कि "उलुग मीर्जा दोनो पक्षों के बीच से होता हुआ निकल गया[3] और ख्वास खा अपने स्थान पर रह गया है। आगे नही आ रहा है।" *मीर्जा लोगो के लिए जब यह सम्भव हो सका कि वे गुजरात जायें तो वे* हजरत पादशाह के चरणो का चुम्बन करके सम्मानित हुए। सबने मिलकर वहा से प्रस्थान किया (३७ ब) और उच्च नामक स्थान पर पड़ाव किया। सम्मानित फरमान बख्शू लगाह के लिए भेजा गया। उन्होंने उसे तूग, जूलचा तथा चार हाथी भी भेजे और लिखा कि 'खाने जहाँ की उपाधि की तुझे बधाई दी जाती है[4]। वहा से रसद, अनाज तथा नौकाएँ भेजता रहे।" बख्शू लगाह पादशाह की सेवा मे उपस्थित न हुआ और उसने नौकाए भेज दी।

१ यह वाक्य, "यदि दो सेनायें उस ... सकती" च, छ एव ज में नही है।
२ च, छ में इस प्रकार है—"समाचार प्राप्त हुये कि मीर्जा लोग जो गुजरात जा रहे थे, उन्हें बिलोचों ने मार्ग न दिया अत वे वापस आ गये।"
३ यह वाक्य स्पष्ट नहीं। ज में इस प्रकार है—"तदुपरान्त उलुग मीर्जा इस पक्ष के मध्य में हो गया और चला गया"।
४ च, छ एव ज में—"खाने जहाँ की उपाधि द्वारा सम्मानित किया गया"।

(८)

हज़रत पादशाह का उच्च से भक्कर की ओर प्रस्थान[१]

जब बख्शू लगाह ने नौकाएँ भेज दी तो हज़रत पादशाह उच्च नामक नदी पार करके विभिन्न मञ्ज़िलों को पार करते हुए भक्कर नामक स्थान पर पहुँचे और शाह हुसेन मीर्ज़ा के उद्यान में पड़ाव किया। वह हज़रत पादशाह का ख़ुत्बा पढ़वाता था। उसके पिता तथा पितामह चग़ताई पादशाहों की सेवा करते आये थे। वह मीर ज़ुनून अरग़ून की सतान से था[२]। तदुपरान्त मीर्ज़ा हिन्दाल को आदेश हुआ कि वह नदी पार करके पात नामक स्थान पर जो कि सीहान के उपान्त में है पड़ाव करे। यादगार नासिर मीर्ज़ा को आदेश हुआ कि वह भीरा[3] के उपान्त में, जो कि भक्कर (३८ अ) से २० कुरोह पर है, रहे।

कम्बर बेग, यारबेगी तथा मीर ज़ाहिर[४] पीरज़ादा[५] को आदेश हुआ कि दूत बनकर शाह हुसेन मीर्ज़ा के पास चला जाये। जब उन्होंने जाकर शाह हुसेन मीर्ज़ा से भेंट की तो अधिक समय व्यतीत हो गया और कोई समाचार प्राप्त न हुए। हज़रत पादशाह ने यह आदेश दिया कि, 'यदि वह टाल मटोल करे तो हमें पत्र भेजें ताकि हम उसका कोई न कोई उपाय करें।" उन्होंने प्रार्थना-पत्र भेजा कि, "वह आ रहा है। आप चिन्ता न करें।" इस कारण उन्होंने कई दिन तक प्रतीक्षा की। (तदुपरान्त) दूसरा फरमान भेजा कि, "यदि वह आने में टाल मटोल कर रहा है तो तुम शीघ्र चले आओ और हमसे उच्च नामक स्थान पर पहुँच कर मिलो[६]।" फरमान पहुँचते ही कम्बर बेग दरबार की ओर रवाना हुआ। मीर ज़ाहिर को उसी स्थान पर छोड़ गया। हज़रत पादशाह की सेवा में एक बारगाह, एक गिलीम ख़ाना[७], ९ घोड़े, एक कतार ऊँट तथा एक कतार खच्चर उपस्थित किए और हज़रत पादशाह की रिकाब को चूमकर सम्मानित हुआ। कम्बर बेग ने निवेदन (३८ ब) किया कि,"हज़रत शीघ्र रवाना हो गए अन्यथा शाह हुसेन मीर्ज़ा का रिकाब चूमने का विचार था किन्तु जब उसे सम्मानित फरमान की सूचना मिली तो उसने यह निवेदन किया कि 'हज़रत पादशाह चले गए, हम उनके पीछे कहाँ जायँ?' इस बहाने से वह न आया। इससे पूर्व मीर्ज़ा हिन्दाल ने प्रार्थना पत्र भेजा कि, "यदि आदेश हो तो सीहान पर हज़रत पादशाह के प्रताप (की सहायता) से आक्रमण करूँ।" सम्मानित फरमान, मीर्ज़ा के नाम भेजा गया कि, 'शाह हुसेन मीर्ज़ा बड़ा ही धूर्त है, कम्बर बेग को दूत बनाकर यह देखने के लिए भेजा गया है कि क्या होता है।"

१ च, छ एवं ज में यह फस्ल (अध्याय) पृथक नहीं है।
२ च, छ में इसके आगे है —"क्योंकि उसने देखा कि मेरा स्थान छिना जाता है अत: उसने विद्रोह कर दिया।"
३ च, छ में एवं ज में —"मीर्ज़ा हिन्दाल को आदेश हुआ कि नदी पार करके ५० कुरोह पर बात (ज में 'वाद') नामक स्थान पर पड़ाव करे"।
४ च, छ, ज में 'मीर ताहिर'।
५ च, [illegible] में —"पीरज़ादों में से मीर ताहिर एवं कम्बर बेग यारबेगी को आदेश हुआ"।
६ च, छ, एवं ज में —"यदि वह आने में टाल मटोल करता है तो तुम लोग शीघ्र लौट आओ। हम यहाँ से वापस आ रहे हैं। हमसे उच्च में आकर मिलना"।
७ सम्भवत फ़र्श इत्यादि का भंडार।

जब कम्बर बेग आया तो मीर्ज़ा के लिए फ़रमान भेजा गया कि, "कम्बर बेग आया है। शाह हुसेन ने अपराध किया है। पहुँच कर एक दूसरे की सहायता से उसकी चिन्ता की जायेगी।"

हुमायूं का मीर्ज़ा हिन्दाल के पास पहुँचना

तदुपरान्त हज़रत पादशाह मीर्ज़ा हिन्दाल की ओर रवाना हुए। चार दिन उपरान्त जिस स्थान पर मीर्ज़ा यादगार नासिर था, पहुँचे। मीर्ज़ा स्वागतार्थ आया और हज़रत पादशाह के चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। दो दिन तक (उन्होंने) उस मंज़िल पर पड़ाव किया। उसने हज़रत पादशाह के आतिथ्य का प्रबन्ध किया। तीसरे दिन वहाँ से प्रस्थान करके मीर्ज़ा (३९ अ) यादगार नासिर को उसी मंज़िल पर छोड़ दिया और आदेश दिया कि, 'जो कुछ भी मीर्ज़ा के साथ योजना बनेगी, तुझे लिख दूँगा। तू तदनुसार पालन करना।' वे विदा होकर चल खड़े हुए। तीन दिन उपरान्त पात नामक स्थान पर पहुँचे, और सिन्ध नदी से १० कुरोह पर इस ओर मीर्ज़ा हिन्दाल पड़ाव किए हुए था कि समाचार प्राप्त हुए कि हज़रत पादशाह स्वयं पहुँच गए। मीर्ज़ा हिन्दाल स्वागत् करके चरण चूमने के सम्मान द्वारा सम्मानित हुआ। हज़रत पादशाह को अपने स्थान पर लाया और उनके आतिथ्य का प्रबन्ध किया।

(६)

हज़रत पादशाह का ज़ैनुल मस्तूरात[1], अफ़ीफ़ा मरियम मकानी हमीदा बानो बेगम से विवाह और उच्च की ओर वापसी[2]

एक दिन मीर्ज़ा हिन्दाल की माता ने हज़रत पादशाह की दावत की। हज़रत की दृष्टि अफ़ीफ़ा राबेआ[3], साजिदा[4] हज़रत बेगम पर पड़ी[5]। पूछा कि "यह पुत्री किसकी है?" निवेदन किया गया कि, "यह पुत्री मीर्ज़ा हिन्दाल के आख़ुन्द[6] की है[7]।" पूछा कि, "कहीं सगाई हो चुकी है?" उत्तर मिला कि, "अभी बात हो रही है[8]।" आदेश हुआ कि, "हमारी ओर से स्वीकृति है[9]।" मीर्ज़ा

१ 'महिलाओं की शोभा, सती साध्वी'।
२ च, छ एवं ज में यहाँ पृथक् शीर्षक नहीं है।
३ राबेआ बसरा की बड़ी प्रसिद्ध साध्वी थी। उसका निधन १८५ हि० (८०१ ई०) में हुआ।
४ तपस्वी।
५ च, छ एवं ज में—"दूसरे दिन रफ़अत पनाही मख़्दूमा मासूमा दिलदार बेगम, मीर्ज़ा की माता ने दावत की और अपने पर्दा सरा में बुलवाया। उनकी दृष्टि मरियम मकानी, फ़ातमा सानी, बिल्क़ीस ज़मानी हमीदा बानो बेगम पर पड़ी।"
६ गुरु।
७ च, छ एवं ज में इस प्रकार है—"उन्होंने पूछा, 'यह किसकी पुत्री है?' उत्तर मिला कि, 'सलालतुल मशायखुल उज़्ज़ाम हज़रत शेख़ अहमद ज़िन्दा फ़ील के सिलसिले की है। इनके पिता ने मीर्ज़ा को दो-तीन वाक्य आशीर्वाद के रूप में पढ़ाये हैं, इस कारण हमारे साथ हैं।" (च पृ० ३७ अ, छ ३१ ब, ३६ ब)।
८ 'हिनोज़ दरमियान अस्त', च, छ एवं ज में, "गुफ़्त द नै" (कहा 'नहीं')।
९ च, छ एवं ज में—"क्योंकि वे उस सम्मानित सिलसिले से हैं, अतः यह उचित है कि उस अद्वितीय मोती का विवाह मुझसे हो।"

(३९ ब) हिन्दाल को यह बात अच्छी न लगी। उसने रुष्ट होकर कहा, "आप हमारे प्रोत्साहन हेतु नहीं आये हैं, विवाह करने आये हैं, यदि आप यह कार्य करेंगे तो हम आपसे पृथक् हो जायेंगे[1]"। मीर्ज़ा हिन्दाल की माता दिलदार बेगम ने मीर्ज़ा को बहुत डाँटा फटकारा और कहा कि, "पादशाह के प्रति धृष्टता करता है। तेरा पालन पोषण पादशाह ने किया है। तूने फ़िरदौस मकानी के दर्शन नहीं किए थे।" संक्षेप में, मीर्ज़ा अपनी बात से बाज़ न आया। हज़रत पादशाह रुष्ट होकर नौका पर सवार हो गए। मीर्ज़ा हिन्दाल की माता ने पहुँचकर हज़रत पादशाह को मनाया और अपने ख़ेमे में लाई। तदुपरान्त उसने मीर्ज़ा हिन्दाल को राज़ी किया और हज़रत बेगम का हज़रत पादशाह से विवाह करके फ़ातेहा पढ़कर सिपुर्द कर दिया।

हज़रत पादशाह का सीहान पहुँचना

उन्होंने वहाँ से नौका पर सवार होकर प्रस्थान किया। मीर्ज़ा हिन्दाल कन्धार की ओर चला गया[2]। हज़रत पादशाह भक्कर के उद्यान में, जहाँ इससे पूर्व पड़ाव किए हुए थे, पहुँचे। मीर्ज़ा (४० अ) यादगार नासिर को भक्कर में छोड़कर वहाँ से प्रस्थान करके सीहान नामक स्थान पर पहुँचे। सीहान का हाकिम मीर अलका शाह हुसेन के अमीरों में से था। वह युद्ध हेतु किले के बाहर निकला। हज़रत पादशाह के अमीरों ने आपस में निश्चय किया कि, "हम उस पर छापा मारने के लिए जाते हैं। जिस समय वह किले में प्रविष्ट होगा, उसके साथ साथ किले में घुस जायेंगे।" हज़रत पादशाह वज़ू कर रहे थे। देर हो गई। रात आ गई। मीर अलका शीघ्रातिशीघ्र किले में पहुँचा। हज़रत के अमीर लोग वापस लौट आये। प्रातःकाल हज़रत ने कहा कि, 'किले को घेर कर विभिन्न स्थानों पर मोर्चे लगवाकर आक्रमण किया जाय और बुर्जों को तोड़ डाला जाय।" क्योंकि अमीरों ने शाह हुसेन से घूस ले ली थी अतः उन्होंने उस उत्साह से युद्ध न किया कि किले विजय हो जाता। मीर शेख़ अली बेग जलायर ने निवेदन किया कि, शाह हुसेन मीर्ज़ा थत्ता से १५ कुरोह पर नदी के इस ओर ठहरा हुआ है। दास के साथ पाँच सौ अश्वारोही कर दिए जायें ताकि वह शीघ्रातिशीघ्र पहुँच कर रात दिन आक्रमण करे। उसकी सेना आप ही आप नष्ट (४० ब) हो जायेगी। तदुपरान्त परमेश्वर से आशा है कि विजय प्राप्त हो जायेगी[3]।" यद्यपि अत्यधिक प्रयत्न किया गया किन्तु इतनी सेना संगठित न हो सकी कि उसके साथ नियुक्त की जा सकती। वे (अमीर) उपेक्षा करने लगे। तदुपरान्त मीर्ज़ा यादगार नासिर के लिये आदेश हुआ कि 'तरदी बेग तथा कुछ सैनिकों को हमारी सहायतार्थ भेजो कारण कि उनकी आवश्यकता है।" वहाँ से तरदी बेग तथा मीर कासिम बेग लगभग १५० अश्वारोहियों सहित हज़रत

१ च, छ में —"उसने उनकी ममत्त शिष्टाचार की दृष्टि से कुछ न कहा। जाकर अपनी माता से कहा कि, 'वे हमारे प्रोत्साहन हेतु नहीं आये हैं, अपितु अपना विवाह करने आये हैं। यदि ऐसा हुआ तो मैं उनकी सम्मानित सेवा से पृथक हो जाऊँगा।"

२ च, छ एवं ज में —"तदुपरान्त उस क्रोध में वह पृथक होकर कन्धार चला गया।"

३ च एवं छ में इसके बाद इस प्रकार है —"किन्तु अन्य सेना उपेक्षा करने लगी"; ज में —"किन्तु यह अमीर इस प्रकार संगठित न हुये और उपेक्षा करने लगे"।

पादशाह की सेवा मे पहुँचे। उनके[1] आने पर भी किले को विजय की कोई व्यवस्था न हुई। हजरत के अमीरा ने किसी न किसी प्रकार वहा से प्रस्थान कर दिया।

शाह हुसेन मीर्जा नौकाओ से बादवान उठाये हजरत पादशाह के पीछे आ रहा था। जिस समय वे सीहान से रवाना हुए कुछ घटनायें घटी। सर्व प्रथम हजरत पादशाह के दुश्मन[2] घोडे से गिर पडे और उनके हाथ पाँव घायल हो गए। नौकाओ पर जो असवाब था उन्हे शाह हुसेन के आदमियो ने ले लिया। कुछ स्त्रियाँ जो उन नौकाओ पर थी, नगे पाव बाहर निकल कर सेना में पहुँची। शाह हुसेन मीर्जा के पास से जो पत्रवश आया था वह भी नष्ट हो गया[3]। तदुपरान्त (४१ अ) हजरत पादशाह ने मुनइम बेग को शाह हुसेन मीर्जा के पास भेजा कि, "हमारे पीछे न आये और रुका रहे[4]।" उसने मुनइम बेग से भेंट न की। उत्तर लिखा कि आपने मेरे साथ कौन सी भलाई की है जो मैं आपका ध्यान रक्खूँ?"

हुमायूँ की भक्कर को वापसी

सक्षेप में, अधिकाश लोग छिन्न-भिन्न होकर चले गए। हजरत पादशाह भक्कर के सामने उतर पडे। हजरत पादशाह के अमीरा ने निवेदन किया कि, सिंध नदी बहुत बडी नदी थी, उसे कुशलतापूर्वक पार कर लिया। अब यही अच्छा है कि कन्धार की ओर प्रस्थान करें। हजरत ने कहा कि, "जब तक विवश न हो जाऊँगा, भाइयो के पास न जाऊँगा और उनके राज्य की ओर मुख न करूँगा[5]।' रोशन बेग कोका को आदेश हुआ कि '१०-१२ कुरोह तक ग्रामा पर छापा मारे और वहाँ से गाय, भैंस लाकर खीक[6] तैयार करे ताकि जिस नदी को पार किया था उसे पुन पार करें।' ऐसा ही किया गया। घाट पर एक नौका थी जो तरदी बेग के अधिकार में थी।

शाह हुसेन मीर्जा से दो कुरोह दूर पर हजरत ने पडाव किया। जो कोई एक कुरोह की दूरी पर पहुँच जाता, वह अपनी सेना मे आ जाता। जो कोई उसके आगे चला जाता था वह (४१ ब) मीर्जा शाह हुसेन के आदमियो द्वारा बन्दी बना लिया जाता था[7]। सक्षेप में, हजरत पादशाह के ईशक आका[8] मीर खतनक ने तरदी बेग से नौका माँगी और कहा कि तुमने अपने असबाब को

१ च, छ एव ज में —"उन्होंने (हुमायूँ ने) उन लोगों को सगठित न पाया अत उस किले की ओर न रवाना हुये तथा विवश होकर वहा से प्रस्थान कर दिया'।

२ हजरत पादशाह से तात्पर्य है।

३ च, छ में स्त्रियों से सम्बन्धित वाक्य नहीं है।

४ च, [illegible] एव ज में —"पीछे से मीर्जा शाह हुसेन नौकाओं से बादबान उठाये हुये रवाना हुआ। मुनइम बेग आदेशानुसार उस ओर रवाना हुआ (और यह संदेश पहुँचाय कि) सब्र कर आये अन्यथा इसका दड भोगेगा। बिना भेंट किये ही मुनइम बेग को कहला भेजा .. ।" (पृ० ३६अ, ३३अ, ३८अ)।

५ च, छ में इसके आगे इस प्रकार है —"जब तक कोई अन्य स्थान नहीं प्राप्त होगा, उन्हें बिना स्थान का न करूँगा'।

६ खीक का अर्थ चमडे का थैला होता है। तैर कर नदी पार करने के लिए खीक बनवाने की आवश्यकता पडी होगी।

७ च छ में उपर्युक्त वाक्य नहीं है।

८ च, छ में मीर खदग ईशी आगा' तथा ज में 'मीर खदम आतश आका'।

पार करा लिया। यह नौका हज़रत पादशाह को दे दो ताकि उनके परिवार[१] को नदी पार करा दूँ।" तरदी बेग ने उसे मरदक[२] कहा। उसने उत्तर दिया, "मरदक वह है जो ऐसी बात करता है।" तदुपरान्त तरदी बेग ने चाबुक मारा। मीर ख़तनक ने तलवार खींच कर (उस पर) वार किया। मीर तरदी बेग के घोड़े की ज़ीन का उभड़ा हुआ भाग कट गया। लोगों ने बीच में पड़कर एक दूसरे को पृथक् करा दिया। यह समाचार हज़रत पादशाह को प्राप्त हुए। क्योंकि मीर तरदी बेग प्रतिष्ठित अमीरों में था अतः हज़रत पादशाह ने उसके प्रोत्साहन हेतु कहा कि, "मीर ख़तनक के हाथों को रूमाल से बाँध कर तरदी बेग के सामने ले जाओ।" ऐसा ही किया गया। जब तरदी बेग ने उसे इस दशा में देखा तो उसके हाथों को खुलवा दिया और उसके प्रति आदर प्रदर्शित करके उत्तम स्थान पर बिठलाया तथा सरोपा एवं घोड़े प्रदान किए और प्रोत्साहन देकर विदा कर दिया।

यादगार नासिर मीर्ज़ा द्वारा विरोध

(४२ अ) यादगार नासिर मीर्ज़ा का हाल इस प्रकार है —शाह हुसेन ने मीर्ज़ा यादगार से तै किया था कि, "मैं अपनी पुत्री का विवाह तुमसे कर दूँगा। ख़ुत्बा तथा सिक्का तुम्हारे नाम से चलता रहेगा।" मीर्ज़ा ने स्वीकार कर लिया था और सतुष्ट हो गया था। तदुपरान्त वह हज़रत पादशाह की सेवा में पहुँचा और चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। हज़रत पादशाह ने देखा कि मीर्ज़ा ने नए प्रकार का व्यवहार प्रारम्भ कर दिया है। उन्होंने उस ओर से उपेक्षा की। मीर्ज़ा पादशाह को अतिथि बनाकर अपने स्थान पर ले गया। भक्कर के समीप एक मदरसा था जो बुर्ज के समान था। वहाँ उतरवाया। हज़रत पादशाह ने आदेश दिया कि 'ज़र्बज़ंग (ज़र्बज़न)[३] लाकर गिरा दो।" जब ज़र्बज़ंग के गोले ने किले के भीतर के एक घर को गिरा दिया तो वहाँ शोर गुल होने लगा[४]। शत्रुओं ने कहा कि, 'सर्व प्रथम पहेल उधर से हुई।" उन लोगों ने भी ज़र्बज़ंग के गोले चलाये। उस ऐवान[५] के बुर्ज पर जहाँ हज़रत पादशाह एवं मीर्ज़ा बैठे थे, गोला मारा। हज़रत पादशाह तथा मीर्ज़ा वहाँ से बाहर चले गए। मीर्ज़ा ने निवेदन किया कि, 'फल मिल गया।" इसी बीच में एक (४२ ब) व्यक्ति ने आकर कहा कि, "मीर्ज़ा यादगार आपको बन्दी बनवा देना चाहता है।" आदेश हुआ कि, "भोजन का प्रबन्ध किया जाय।" थोड़ा सा खाया और चल दिये। मीर्ज़ा ने एक घोड़ा

१ च, छ में —"अब यह नौका सरकारे ख़ासा को दे दो ताकि विशेष लोग पार कर लें"।

२ अधम, नीच।

३ ज़र्बज़न —एक प्रकार की तोप। ज़र्बज़न तथा ज़र्बज़ंग दोनों ही प्रयोग किये गये हैं।

४ च, [illegible] एवं ज में :—"दूसरे दिन मीर्ज़ा ने षड्यन्त्र रच कर, भोजन की दावत की। हज़रत जहाँबानी को अपने स्थान पर ले गया। भक्कर के समीप जहाँ वह पड़ाव किये था, एक मदरसा था। उसकी प्रत्येक कोठरी किले के बुर्ज के समान थी। (हज़रत ने) आदेश दिया कि, 'ज़र्बज़ंग लाकर (इनमें से) एक को गिरा दो।' जब (गोला) चलाया गया तो वह उछल कर, किले के भीतर एक घर में पहुँच गया और उसे गिरा दिया। शत्रुओं के समूह में कोलाहल होने लगा। उन लोगों ने कहा, 'अच्छा हुआ, पहेल हमारी ओर से न हुई।' वे लोग भी तोप लाये और जिस बुर्ज में हज़रत (पादशाह) बैठे थे, उस पर गोला मारा। वे लोग वहाँ से कुशलतापूर्वक चले गये।" (च पृ० ४० अ, छ ३३ब ३४अ, ज ३९अ-ब)।

५ दालान।

तथा चाँदी[1] की जीन और लगाम तथा एक हाथी हजरत पादशाह को भेंट किया। हजरत पादशाह अपने स्थान पर पहुँचे। ख्वाजा मुअज्जम[2] ने निवेदन किया कि, "यह घोडा इस दास को प्रदान कर दिया जाय।" तत्काल उसे दे दिया गया। वह घोडे को लेकर भाग गया और मीर्जा यादगार नासिर की सेवा मे पहुँचा। मीर्जा ने कहा कि, "यह आदमी ठीक नही है," उससे घोडा ले लिया और एक याबू उसको सवारी के लिए दे दिया और कहा कि, "यह घोडा शाही लश्कर मे पहुँचा दो।" वैसा ही किया गया।

दूसरे दिन तारची बेग तथा फजाएल बेग[3] भागकर मीर्जा यादगार के पास पहुँचे। मीर्जा ने लिखकर भेजा, "जो कोई प्रात काल यहाँ रह जायेगा उसका रक्त उसकी गरदन पर होगा[4]।" (४३ अ) तदुपरान्त समाचार प्राप्त हुए कि "फजाएल बेग चाहता है कि अपने भाई मुनइम बेग को इस स्थान से ले जाय।" उन्होने कहा कि, "यदि वह आयेगा तो उसे इसका बदला मिल जायेगा।" तदुपरान्त सुना गया कि, "मुनइम बेग तथा तरदी बेग भागे जा रहे हैं।" हजरत पादशाह रात भर जागते रहे। वे भी हजरत पादशाह की सेवा मे उपस्थित रहे। प्रात काल हजरत पादशाह तहारत के लिए जाने लगे। उन्हे आदेश दिया कि, 'वे लोग यहाँ रहे। मै तहारत करके आता हूँ।" हजरत पादशाह तहारत[5] के स्थान की ओर चले गए। मुनइम बेग तथा तरदी बेग अपने घोडो की ओर रवाना हुए। रोशनक बेग तूशक[6] बेगी ने हजरत पादशाह के पास समाचार पहुँचाये कि, "वे लोग जा रहे है।" आदेश हुआ कि, "बुलवाओ।' यद्यपि बहुत बुलवाया गया किन्तु वे उपेक्षा करते रहे। हजरत पादशाह स्वय रवाना हुए और आदेश दिया कि, 'आओ।" उस समय उनके पास कोई अन्य उपाय न रह गया। लौट कर आये। तदुपरान्त आदेश हुआ कि मुनइम बेग की निगरानी की जाय (४३ ब) और वह जाने न पाये। उसे बन्दी बना लिया गया तो तरदी बेग भी कुछ न कर सका और ठहर गया।

हुमायूँ का उच्च की ओर प्रस्थान

वे वहाँ से रवाना होकर भक्कर के आरू नामक एक ग्राम मे पहुँचे। यह ग्राम कारवान के मार्ग पर है और रसद तथा अनाज इत्यादि जैसलमीर से उस ग्राम मे आया हुआ था। कारवान वालो को समाचार प्राप्त हुए कि, "हजरत पादशाह आ रहे है।" कारवान वाले असबाब, अनाज तथा जो कुछ भी उनके पास था, लाद कर ऊँटो सहित भाग गए। जो कुछ चीजें थी वह हजरत पादशाह के लश्कर को प्राप्त हो गई[7]। वहाँ पडाव करके निश्चिन्त होकर समय व्यतीत किया।

१ च, छ मे 'जडाऊ जीन'।
२ च, छ एव ज मे 'ख्वाजा मुअज्जम मरियम मकानी के भाई'।
३ च, छमे —"तारची बेग तरकाची बेग फजाएल बेग तथा मीर नौकार", ज मे 'मीर नौकार' के स्थान पर 'मेहतर नौकार'।
४ च, छ मे "मीर्जा ने लिख कर .होगा" नहीं है।
५ शुद्धता, पवित्रता, पाकीजगी, शौच, सम्भवत नित्य-कर्म से तात्पर्य है।
६ च, छ एव ज मे 'तूशकची'।
७ च, छ एव ज मे —"वे सब लश्कर वालों के हाथ में पड गये। वह रात्रि शांति से एव निश्चिन्त होकर व्यतीत की।"

मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय वहाँ से कूच करके उच्च की ओर रवाना हुए। एक मंज़िल से दूसरी मंजिल बिना किसी सामान के बड़े कष्ट से पार कर रहे थे। यहाँ तक कि मऊ नामक स्थान पर पहुँचे। वह परगना भक्कर की सीमा पर है। वहाँ से प्रस्थान करके एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ जल नही मिलता। हज़रत पादशाह की करौती[1] में पानी न था। हज़रत पादशाह ने इस तुच्छ आफ़्तावची[2] से पूछा कि, "इस आफ़्ताबे[3] में कुछ पानी है?" जौहर ने निवेदन किया कि, "हाँ, है।" तदुपरान्त कहा कि, "इस जल को मेरे आबरेज़[4] में डाल दो।" जो कुछ जल आफ़्ताबे में था (४४ अ) वह मैंने हज़रत पादशाह की करौती में डाल दिया। तदुपरान्त जौहर ने निवेदन किया कि, "बड़ी कठिनाई है, जल प्राप्त नही होता। रात्रि में यात्रा करनी है, यदि मैं दूर हो जाऊँगा तो बिना जल के मेरी क्या दशा हो जायेगी?" तदुपरान्त उन्होंने थोड़ा सा जल आफ़्ताबे में डाल दिया और कहा कि, 'तेरे काम आयेगा" और चल खड़े हुए।

प्रातःकाल सेना एक झील के समीप पहुँची। उस स्थान पर पड़ाव किया गया। जौहर आफ़्तावची नदी पार करके जल के उस ओर गया हुआ था। एक गोज़न[5] जंगल से निकल कर लश्कर की ओर बढ़ा। यद्यपि लोगों ने उसके मारने का बड़ा प्रयत्न किया किन्तु वह प्राप्त न हुआ, भाग कर जल में कूद पड़ा और तैरने लगा। हज़रत पादशाह को समाचार प्राप्त हुए कि, "गोज़न का शिकार आया था और निकल गया।" कहा कि, "यदि प्राप्त हो जाता तो बड़ा अच्छा था।" तदुपरान्त हज़रत पादशाह की दृष्टि जौहर पर पड़ी। कहा, 'नदी के उस ओर एक आदमी है, उससे चिल्ला कर कहो कि इस स्थान से शिकार गया है। यदि तेरे हाथ आये, तो गोज़न को पकड़ (४४ ब) ले।" शोर मचाया गया। जब इस तुच्छ जौहर ने गोज़न को आते हुए देखा तो शीघ्रातिशीघ्र स्वयं जल में कूद पड़ा और निवेदन किया कि, 'एक रान फ़कीर की होगी।" हज़रत ने कहा कि, 'तुम्हे अधिकार है।' शेष के तीन भाग किए। गोज़न तैर रहा था। वह अपनी शक्ति न लगा सका। मैंने उसे पकड़ लिया[6]। फ़तहुल्लाह बेग को आदेश हुआ कि, "उसे ज़िबह कर।" फ़तहुल्लाह हज़रत के आदेशानुसार पहुँचा और उसने उस गोज़न को ज़िबह कर दिया। हज़रत की सेवा में उपस्थित किया गया। आदेश हुआ कि, 'इन चार पैरों में से एक पाँव जौहर को दे दो।" जौहर ने आदेशानुसार एक रान ले ली। शेष के तीन भाग किए गए, दो विशेष रसोई में और एक भाग मरियम मकानी हमीदा बानो बेगम को दे दिया गया। कहा जाता है कि उस तारीख़ को हज़रत अकबर जलालुद्दीन मुहम्मद ७ मास के माता के गर्भ में थे[7]।

हुमायूं का उच्च पहुँचना

वहाँ से प्रस्थान किया गया। एक मंजिल से दूसरी मंज़िल पार करते हुए वे उच्च पहुँचे।

१ सम्भवतः जल हेतु छोटा बरतन।
२ च, छ एवं ज में 'आफ़्तावची'।
३ च, छ एवं ज में 'आफ़ताबा'।
४ जल पात्र, सम्भवतः 'करौती'।
५ एक प्रकार का मृग।
६ च, छ एवं ज —"मैंने उसकी सींग पकड़ लिये'।
७ च, छ एवं ज में "कहा जाता है   में थे" नहीं है।

बख्शू लगाह को आदेश हुआ कि, "यदि हमारे निष्ठावान् हो तो सेवा में उपस्थित हो और अपने आदमियों से कह दो कि गल्ले की रसद इत्यादि हमारे लश्कर में पहुँचा दी जाय।" उस मूर्ख (४५ अ) विद्रोही ने अपराध किया। यहाँ तक कि हजरत पादशाह के आदमी जहाँ अनाज मोल लेने जाते, उन्ही विद्रोहियो को पाते थे। जो कुछ उनके पास होता, वह जबरदस्ती ले लिया जाता था। डेढ मास तक वे उस स्थान पर रहे। अनाज के न प्राप्त होने के कारण उस जगल मे सगर[1] बेर तथा इसी प्रकार के वृक्षो के फल खाते रहे।

(१०)

हजरत पादशाह का उच्च से दुबारा प्रस्थान, रेगिस्तान में भटकना, कुछ लोगो का जल के अभाव के कारण नष्ट हो जाना[2]

सगर तथा बेर के वृक्ष भी उस भू-भाग मे न रह गये। (उन्ही दिना में) एक दरवेश सगर की खोज मे जगल मे जा रहा था। एक किला दिखाई पडा जो मालदेव के राज्य जैसलमीर की सीमा पर था और वह दिलावरा का किला था[3]। दरवेश ने हजरत पादशाह के पास पहुँच कर उस किले के समाचार पहुँचाये। आदेश हुआ कि, "उचित होगा कि हम उस किले में चले।" (४५ ब) वहाँ से प्रस्थान करके उसके समीप पडाव किया गया। अनाज तथा जल प्राप्त हो गया। तीन दिन वहा रहे। शेख अली बेग ने कहा कि, "यदि इस किले पर अधिकार जमा लिया जाय तो कैसा है[4]?" हजरत पादशाह ने कहा कि, इस किले पर अधिकार जमा लेने से मै

१ जगली वृक्ष।

२ च, छ एव ज में दसवीं फस्ल।

३ च, छ एव ज में इस प्रकार है —"शाही सेना वहा कष्ट भोगने लगी। बख्शू लगाह को पूर्णत उपेक्षा करते हुये पाया। वे चिन्ता में थे कि कहा जायें। एक दिन एक दरवेश उस जगल में सगर की खोज कर रहा था। उसे एक किला दिखाई पडा जिसे दिलावरा कहते है और जो जैसलमीर की सीमा पर है।"

४ च, छ मे विस्तार से तथा ज में सक्षिप्त रूप से निम्नाकित कहानी का उल्लेख किया गया है —

"प्रात काल वहा से प्रस्थान किया और १८, १६ कुरोह की यात्रा करके पडाव किया। उस दिन सेवकों में से सात व्यक्ति जल के अभाव के कारण नष्ट हो गये। उन्होंने आदेश दिया कि, 'लश्कर यहीं रहे, हम स्वय आगे जाकर खोज करेंगे कि जल कहा है।' रात भर यात्रा करने लगे। प्रात काल जल देखकर लौट आये और सेना को रवाना कर दिया। जल की कुसैनी (चमडे की बोतल अथवा मशक) जिस पर इस्माये आजम का कागज वर्षा की प्रार्थना हेतु लिखकर चिपकाया हुआ था, तरसून बेग के हाथ में थी। यह तुच्छ दास उपस्थित हुआ। आदेश हुआ कि 'जल की यह कुसैनी मुझे दे दी जाय।' फकीर को सौंपकर सवार हुये। जो लोग साथ थे उदाहरणार्थ सन्दल खा मीर हजार, मीर कोचक बेग एवं तोफकुल अहमनवं बडे व्याकुल थे। हजरत ने मार्ग में सुल्तान फीरोज की कहानी का उल्लेख करना प्रारम्भ किया और कहा कि 'मैंने एक व्यक्ति से इस प्रकार सुना है, इसका उत्तर दायित्व उसी पर है —जब फीरोज शाह ने देहली से बक्खर पर चढाई की तो उसने उस यात्रा में निश्चय किया कि केवल जवान ही उपस्थित रहें और वृद्धों में से कोई भी न आये। सयोग से एक वृद्ध के जो लुकमान के वृद्ध के समान था यूसुफ सरीखे दो पुत्र थे और इनमें आपस में बडा प्रेम था। उन्होंने विवश होकर उस वृद्ध को सदूक में रख लिया और अपने साथ लेते गये। जब वे निरन्तर यात्रा करते हुये रेगिस्तान में पहुँचे और शिविर के लोग

संसार का पादशाह न हो जाऊँगा, मालदेव को इससे दुःख होगा। दो पहर दिन व्यतीत हो चुका था कि उस किले से प्रस्थान किया गया।

समस्त दिन तथा दूसरे दिन दो पहर तक यात्रा के उपरान्त जल मिल गया। वहां पड़ाव हुआ। रात्रि में वे उसी स्थान पर रहे। दो पहर दिन रह गया था कि उस किले से पुनः कूच किया गया। दो पहर दिन चार पहर रात तथा तीन पहर दूसरे दिन तक यात्रा की गई। किसी भी जल के स्थान पर न पहुँचे। लोग मरने के निकट पहुँच गए। कुछ लोग नष्ट हो गए। एक घड़ी दिन रह गया

जल के अभाव के कारण मरने के निकट पहुँच गये तो सुल्तान ने कहा, यदि इस स्थान पर कोई अनुभवी वृद्ध होता तो उससे सब बातों एवं मंजिलों तथा महालों के विषय में सूचना मिल जाती। जब इन दोनों जवानों ने सुल्तान की यह बात सुनी तो निवेदन किया कि "हे पादशाह! आपके आदेश के विरुद्ध अपने पिता से अत्यधिक प्रेम होने के कारण हमने उसे अपने साथ रख लिया है। क्या कि वह अनुभवी है अतः यदि आदेश हो तो उपस्थित करें।' आदेशानुसार उसे उपस्थित किया गया। उस वृद्ध ने यह निश्चय किया कि 'हमारे साथ एक सेना नियुक्त कर दी जाय ताकि हम आगे आगे प्रस्थान करें'। उस अनुभवी वृद्ध के पीछे शाही लश्कर यात्रा करने लगा। अत्यधिक यात्रा के उपरान्त वह एक स्थान पर पहुँचा, जहां एक हरा भरा वृक्ष बालू के टीले के ऊपर दृष्टिगत था। वह उसके नीचे पहुँचा। तदुपरान्त उसने कहा कि, इस वृक्ष के नीचे खोदो। ऐसा ही किया गया। उस वृक्ष के नीचे से एक गुम्बद प्रकट हुआ। यह वृक्ष उसी गुम्बद के बीच से निकला था। उस वृद्ध ने कहा कि, 'अब मुझमें सामर्थ्य नहीं, जाकर सुल्तान को सूचना दो। वे स्वयं आकर इस गुम्बद के तथ्य के विषय में अवगत हों।' सुल्तान पहुँचा। गुम्बद को खटखटाया। भीतर से एक आवाज आई कि, 'हे सुल्तान फ़ीरोज़! आ जा।' सुल्तान समझ गया कि, मेरी इच्छा पूरी हो जायगी। जब वह गुम्बद में प्रविष्ट हुआ तो उसने देखा कि एक नागी अपने सामने एक जल से भरा हुआ एक कघर (कोई बड़ा बरतन) रखे हुये है। यह वृक्ष उसी में से निकला है। बातचीत के उपरान्त सुल्तान ने कहा कि हमारे लश्कर वाले जल के अभाव के कारण नष्ट हो रहे हैं, क्या करना चाहिये? उसने कहा यदि आपको विशेष व्यक्तियों को मीठे जल की आवश्यकता है तो यहां जल पर्याप्त है। सुल्तान ने कहा कि लश्कर वालों का क्या होगा? उसने कहा कि, यदि मैं इस बरतन को उलट दूं तो जल की एक नहर बह निकलेगी किन्तु वह खारी होगा। सुल्तान ने कहा जल की आवश्यकता है, जैसा भी हो।' ईश्वर की कृपा से उसी प्रकार प्रकट हुआ समस्त मनुष्यों तथा पशुओं ने जल पिया। तदुपरान्त सुल्तान ने पूछा कि अब भेंट कब होगी? उसने कहा कि, यदि भाग्य में है तो देहली के समीप भेंट होगी। उन्होंने इतनी बात कही। बादशाह जिस समय यह कहानी कह रहे थे यह दास उनके साथ था। जब कहानी का अन्त हो गया तो उन्होंने जल की वह हमनी सन्दल खा को दे दी और भूख के कारण साथ चलने की शक्ति न रही। उस कृपालु शाह ने अहमद ताज़ुल से कहा कि, वह (जौहर) थक गया है। उसके साथ रहो और उसे लाओ। उसने अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु वह न पहुँच सका। फ़कीर स्वयं न पहुँच सकता था। जब वे (पादशाह) मंजिल पर पहुँचे तो फ़कीर भी किसी न किसी प्रकार उपस्थित हुआ। उन्होंने आदेश दिया कि, तहारत के लिये जल लाओ। तहारत के समय शक्तिहीनता के कारण मेरे हाथ से आफ़्ताबा गिर पड़ा। वे रुष्ट हुए। मैंने निवेदन किया कि मेरी यह विवशता भूख की अधिकता के कारण है। वहां से वे प्रस्थान करके उस किले में पहुँचे। अत्यधिक जल तथा अनाज प्राप्त हो गया। वे तीन दिन तक वहां रहे। शेख़ अली बेग जलायर ने कहा कि यदि आदेश हो तो इस किले पर अधिकार जमा लूं। उन्होंने कहा कि, इस किले की विजय से क्या होगा? इस समय मालदेव ने मुझे इस आशय से बुलाया है कि वह सेवा करे। वह रुष्ट होगा। जो कुछ भी हो मैं वहां पहुँचता हूँ। देखता हूं कि वह किस प्रकार सेवा करता है। आधा दिन रह गया था कि वे वहां से चल खड़े हुए।' (च पृ० ४१ब ४३ब, छ ३५ब ३६ब, ज ४१ब ४३ब)।

था। जल की खोज हो रही थी, जल मिल गया। इसी बीच में दो नमाज़ों के मध्य[1] में ईश्वर की कृपा (४६ अ) से जल का भरा हुआ हौज़ प्राप्त हो गया। हज़रत पादशाह उतर पड़े और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की तथा उसी स्थान पर पड़ाव कर दिया।

हज़रत पादशाह ने मशकों में जल भरवा कर अपने घोड़ों पर बंधवा लिया ताकि जिसके पास जल न रहे उसे जल दे दिया जाय और सेना में पहुँचा दिया जाय। वे वापस हो रहे थे कि मार्ग में एक मुग़ुल मिला जिससे हज़रत पादशाह ऋण ले चुके थे। वह जल न होने के कारण पड़ा हुआ था और मरने के समीप था। उसका पुत्र उसके सिरहाने बैठा था कि हज़रत पहुँच गए। हज़रत पादशाह ने कहा कि 'जो ऋण मुझ पर है यदि उसे तू जल की एक करौती के बदले में क्षमा करदे तो मैं तुझे जल पिलाऊँ।' उस मुग़ुल ने कहा कि 'मुझे जीवन प्राप्त हो जायेगा। ऋण को मैं एक करौती के बदले में क्षमा करता हूँ"। एक साक्षी मुनइम बेग दूसरा मुज़फ्फ़र बेग तुर्कमान, तीसरा रौशन कोका हुए। उन लोगों के गवाह हो जाने के उपरान्त हज़रत पादशाह ने जल दिया। मुग़ुल ने जल पिया और उसे सेना की ओर रवाना कर दिया गया। जो लोग जल न मिलने के कारण मर चुके थे, उन्हें दफ़्न कर दिया गया, जो जीवित थे, उन्हें तृप्त करके शिविर में पहुँचा दिया गया।

(४६ ब) वहाँ से प्रस्थान करके वे पुन्कर[2] पहुँचे और वहाँ से फ़लौदी नामक स्थान पर पड़ाव किया। लोगों को पर्याप्त अनाज प्राप्त हो गया। उस स्थान पर पड़ाव किया गया। वह स्थान भी मालदेव के अधीन था। तदुपरान्त हज़रत ने मालदेव के नाम पत्र भेजा। उसने क्षमा-याचना करते हुए थोड़ा सा मेवा भिजवा दिया किन्तु उसने कोई निष्ठा प्रदर्शित न की जिससे हज़रत पादशाह की तसल्ली हो सकती। हज़रत पादशाह का राजू नामक द्वारपाल भागकर मालदेव के पास पहुँच गया। उस समय हराम ख़ोर[3] ने मालदेव से कहा कि "पादशाह के पास बहुत से लाल[4] हैं, उनसे माँग।" उस दिन जान मुहम्मद ईशक आका भी भागकर मालदेव के पास पहुँचा और उसे समझाया कि, "लाल माँग'। मालदेव ने अपने आदमियों से यह निश्चय किया कि, 'हज़रत पादशाह से लाल माँगें। वे या तो लाल दे दें या मेरे राज्य को छोड़कर किसी अन्य स्थान को चले जायें।" हज़रत (४७ अ) पादशाह जोगी नामक हौज़ पर पड़ाव किए हुए थे। उन्होंने पता लगाया कि मालदेव की ओर किस प्रकार के समाचार हैं। संक्षेप में, निश्चय रूप से ज्ञात हो गया कि मालदेव कष्ट पहुँचाना चाहता है और सेवा में उपस्थित होना नहीं चाहता। वहाँ से प्रस्थान करके उन्होंने सातलमीर नामक हौज़ पर पड़ाव किया।

१ मध्याह्नोत्तर की दो नमाज़ों के मध्य में।

२ च, [illegible] एवं ज में 'बेरपुर'।

३ धिक्कृत।

४ च, छ, एवं ज में —"वहाँ से राजू नामक तोशकख़ाने का दरबान भाग कर उसके पास पहुँचा। उस नमक हराम ने राय को समझा दिया, तुम्हारे स्वामी में ऐसे लाल हैं, जिनका मूल्य ईश्वर को ही ज्ञात होगा।"

(११)

हजरत पादशाह का अमरकोट की ओर प्रस्थान एवं मार्ग में युद्ध[1]

जब मालदेव के समाचार इस प्रकार प्राप्त हुए कि वह कष्ट पहुँचाने पर उद्यत है, तो हजरत पादशाह अमरकोट की ओर चल दिए और आदेश दिया कि, 'रोशनबेग कोका तथा शम्सुद्दीन मुहम्मद अतका[2] लश्कर के बाहर जाकर किसी मार्ग दर्शक को ले आयें ताकि वह अमरकोट का रास्ता दिखलाये।" वे जाकर दो शुत्र सवार[3] लाये। हजरत ने आदेश दिया कि 'ऊँटों को तवेले से बंधवा दिया जाय और उनकी तलवारों को पास रख लिया जाय। काजी महदी[4] अली उन्हें समझाये बुझाये।" काजी महदी अली ने उनसे कहा कि, 'तुम लोगों को इनाम तथा इदरार मिलेगा। (४७ ब) मार्ग दर्शाओ।" वे लोग गवार थे। उन्होंने कहा "हम लोग मार्ग क्या जानें?" तदुपरान्त कटार निकाल कर उन लोगों ने तरशून बेग पर वार किया और वह मृत्यु को प्राप्त हो गया[5]। इसके पश्चात् वह तवेले में पहुँचे और अपने ऊँटों, पादशाह के एक घोड़े तथा एक खच्चर को कटार से मार डाला। उनके[6] पास केवल दो ही घोड़े तथा एक खच्चर था। इस घटना के कारण लोग उन पर टूट पड़े और उन दोनों गवारों को मार डाला। लोग बड़ी चिन्ता में तथा व्याकुल थे। यहाँ तक कि पृथक् होने के विषय में सोचने लगे। हजरत पादशाह ने कहा कि, 'हमें छोड़कर कहाँ जाओगे? कोई अन्य स्थान नहीं है?" ख्वाजा कबीर, ख्वाजा अबीर तथा महतर रमजान तीनों बड़े विश्वासपात्र थे। वे भागकर मालदेव के पास चले गए।

जैसलमीर प्रदेश में प्रवेश

निश्चय हुआ कि "पश्चिम दिशा की ओर रवाना हो और अमीर लोग आगे आगे चलें। तदुपरान्त हजरत पादशाह इस क्रम से यात्रा करते हुए बढ़े। यहाँ तक कि सुबह हो गई। पीछे से अश्वारोहियों की तीन सेनाएँ आती हुई दिखाई पड़ीं। हर सेना में लगभग पाँच सौ सवार रहे (४८ अ) होंगे। हजरत पादशाह ने पूछा कि "अमीर लोग कहाँ गए?' उन्होंने[7] निवेदन किया कि,

१ च, छ एवं ज में पृथक फस्ल नहीं है।

२ च, छ एवं ज में, "शम्सुद्दीन मुहम्मद जो बाद में शाहजादये आलमियान का अतका हुआ"।

३ ऊट की सवारी करने वाले।

४ च, [redacted] एवं ज में 'काजी मुहम्मद अली' ग में 'मेवी अली'।

५ च, छ एवं ज में —"तरशून अथवा तरशुन बेग उसी दिन सम्मानित सेवा की अभिलाषा में हिन्दुस्तान से आया था। उसके हिन्दुस्तान में पृथक हो जाने का कारण यह था कि जब हजरत पादशाह उस देश से आने लगे तो वह मीर अबुल कासिम बेग के साथ दीर्घ काल तक ग्वालियर के किले की प्रतिरक्षा करता रहा। तदुपरान्त जब दोनों शेर खां की सेवा में उपस्थित हुये तो क्योंकि वह बड़ा शूर वीर था, शेर खां ने उससे बड़ा आग्रह किया कि, 'यदि तू मेरी सेवा में आ जाय तो तुझे एक लाख वार्षिक तन्के की जागीर प्रदान कर दूंगा।' उसने यह बात स्वीकार न की। उसने कहा, 'मैं यदि एक बार अपने स्वामी की सेवा द्वारा सम्मानित हो जाऊँ तो इसमें अपना बहुत बड़ा सौभाग्य समझूंगा।" (च पृ० ४४ ब ४५ अ, छ पृ० ३८ अ, ज पृ० ४४ ब)।

६ हुमायूं के पास।

७ च, छ में —'जो लोग उपस्थित थे, उन्होंने "।

"मार्ग भूल गए।" हज़रत पादशाह ने पूछा कि, "जो सेना पीछे आ रही है वह मित्रों की है अथवा शत्रुओं की ?" और कहा, "जो असबाब घोड़ा पर है वह ऊँटों पर लाद दिया जाय। जो लोग पैदल हैं वे घोड़ों पर सवार हो जायें।" कुल १६ अश्वारोही निकले। शेख[1] अली बेग ने पूछा कि, "क्या करना चाहिये ?" उसने निवेदन किया कि, "यह युद्ध हज़रत इमाम हुसेन के युद्ध के समान है। प्रयत्न करना चाहिये, अधिक से अधिक यही होगा कि शहीद हो जायेंगे।" शेख अली बेग ने (पुन:) निवेदन किया कि, "हज़रत नमक के हक को क्षमा करें। सेवा के हक को इस दास ने क्षमा किया। कुछ सवार दास के साथ कर दिए जायें ताकि सूचना प्राप्त कर सकूँ कि यह कौन लोग हैं ?" हज़रत (पादशाह) ने सात सवार साथ कर दिए और नमक का हक क्षमा करके कुशलता हेतु फातेहा पढ़ा और विदा कर दिया। शेख अली बेग ने अपने साथियों से कहा कि, "हम लोगों की संख्या बड़ी थोड़ी है। वे लोग अधिक संख्या में हैं। हम लोग सावधानी से प्रस्थान करें[2]। जिस समय निकट पहुँचें, बाण चलाना (४८ ब) प्रारम्भ कर दें। विजय आकाश से प्राप्त होती है[3], देखिये क्या होता है ?" इन लोगों ने ऐसा ही किया। जब वे सेना के समीप पहुँचे तो बाण चलाये। ईश्वर की कृपा से विजय हो गई। विद्रोहियों के दो सवारों को बाण का गहरा घाव लगा और वे घोड़े से गिर पड़े। उनके गिरने के समय विद्रोहियों की समस्त सेना पराजित हो गई। तदुपरान्त शेख अली बेग ने बेहबूद चोबदार[4] से कहा कि, "हज़रत पादशाह को जाकर बधाई दे और इस विजय का भी उल्लेख कर।' बेहबूद उन दोनों दुष्टों का सिर काटकर अपनी ज़ीन में लटका कर रवाना हुआ। हज़रत की दृष्टि इस सवार पर पड़ी, पूछा कि, "यह कौन सवार है, जो आ रहा है ?" लोगों ने अनुमान से कहा कि, 'यह-बूद चोबदार होगा।" हज़रत पादशाह ने उससे बड़ी उत्तम फाल निकाली और कहा कि, 'ईश्वर ने चाहा तो भलाई[5] ही होगी।" इसी बीच में बेहबूद आ गया। विद्रोहियों के सिरों को हज़रत पादशाह की सेवा में प्रस्तुत करके बधाई दी। हज़रत ने कहा कि, 'शेख अली बेग को बुला कर लाओ।' बह-(४९ अ) बूद वापस लौट गया और शेख अली बेग को बुला लाया। हज़रत पादशाह ने उससे पूछा कि, "अब क्या करना चाहिये ?" उसने कहा, "हज़रत पादशाह इस दास के सैनिकों को देखकर आगे बढ़ें। दास हज़रत के सैनिकों को देखकर पीछे से आता है[6]।" ये लोग इसी प्रकार रवाना हुए।

१ विश्वासपात्रों में शेख अली बेग जलायर सेवा में उपस्थित था। उससे पूछा, "क्या करना चाहिये ?" उसने निवेदन किया कि, "यह भयानक मैदान कर्बला का मैदान है। यह अपार सेना यज़ीद के ओर की है। हमें साहस न त्यागना चाहिये और पाँव पीछे न हटाना चाहिये। या तो अमीरुल मोमनीन शाह हुसेन एवं उनके सहायकों के समान शहीद हो जायेंगे अथवा इन काफ़िरों को नरक में पहुँचा देंगे।"

२ 'फ़ितरत कर्दा रफ़्तन्द'।

३ भाग्य से प्राप्त होती है।

४ च, छ में "बेहबूद मुबीजदार (मुनक्के अथवा सूखे अंगूर को कहते हैं)", 'मुबीजदार' का तात्पर्य स्पष्ट नहीं। ज में 'बेहबूद खुदादाद'।

५ "इनशा अल्लाह तआला बहबूद ख्वाहद बूद", बहबूद का अर्थ भलाई अथवा कल्याण है।

६ च,छ में—"हज़रत आगे-आगे रवाना हों। हम एक दूसरे की सियाही (सेना) देखकर पीछे-पीछे चलते हैं।"

(११)

हजरत पादशाह का अमरकोट की ओर प्रस्थान एव मार्ग मे युद्ध[1]

जब मालदेव के समाचार इस प्रकार प्राप्त हुए कि वह कष्ट पहुँचाने पर उद्यत है, तो हज़रत पादशाह अमरकोट की ओर चल दिए और आदेश दिया कि, रोशनबेग कोका तथा शम्सुद्दीन मुहम्मद अतका[2] लश्कर के बाहर जाकर किसी मार्ग दर्शक को ले आयें ताकि वह अमरकोट का रास्ता दिखलाये।" वे जाकर दो शुत्र सवार[3] लाये। हजरत ने आदेश दिया कि ऊँटों को तबले से बधवा दिया जाय और उनकी तलवारों को पास रख लिया जाय। काजी महदी[4] अली उन्हे समझाये बुझाये।" काजी महदी अली ने उनसे कहा कि तुम लोगो को इनाम तथा इदरार मिलेगा। (४७ ब) मार्ग दर्शाओ।" वे लोग गवार थे। उन्होंने कहा हम लोग मार्ग क्या जानें?' तदुपरान्त कटार निकाल कर उन लोगो ने तरशुन बेग पर वार किया और वह मृत्यु को प्राप्त हो गया[5]। इसके पश्चात् वह तबेले मे पहुँचे और अपने ऊँटों, पादशाह के एक घोडे तथा एक खच्चर को कटार से मार डाला। उनके[6] पास केवल दो ही घोडे तथा एक खच्चर था। इस घटना के कारण लोग उन पर टूट पडे और उन दोनो गवारों को मार डाला। लोग बडी चिन्ता में तथा व्याकुल थे। यहाँ तक कि पृथक् होने के विषय में सोचने लगे। हजरत पादशाह ने कहा कि, हम छोडकर कहाँ जाओगे? कोई अन्य स्थान नही है?' ख्वाजा कबीर ख्वाजा अबीर तथा महतर रमजान तीनो बडे विश्वासपात्र थे। वे भागकर मालदेव के पास चले गए।

जैसलमीर प्रदेश में प्रवेश

निश्चय हुआ कि 'पश्चिम दिशा की ओर रवाना हो और अमीर लोग आगे आगे चलें। तदुपरान्त हजरत पादशाह इस क्रम मे यात्रा करते हुए बढे। यहा तक कि सुबह हो गई। पीछे से अश्वारोहियों की तीन सेनाएँ आती हुई दिखाई पडी। हर सेना मे लगभग पाच सौ सवार रहे (४८ अ) होगे। हजरत पादशाह ने पूछा कि अमीर लोग कहा गए? उन्होने[7] निवेदन किया कि,

१ च, छ एव ज में पृथक फस्ल नहीं है।

२ च, छ एव ज में, "शम्सुद्दीन मुहम्मद जो बाद में शाहजादये आलमियान का अतका हुआ"।

३ ऊट की सवारी करने वाले।

४ च, छ एव ज में 'काजी मुहम्मद अली' ग में मेधी अली।

५ च, छ एव ज में —"तरशून अथवा तरशुन बेग उसी दिन सम्मानित सेवा की अभिलाषा में हिंदुस्तान से आया था। उसके हिंदुस्तान में पृथक हो जाने का कारण यह था कि जब हजरत पादशाह उस देश मे आने लगे तो वह मीर अबुल कासिम बेग के साथ दीर्घ काल तक ग्वालियार के किले की प्रतिरक्षा करता रहा। तदुपरान्त जब दोनों शेर खा की सेवा में उपस्थित हुये तो क्यों कि वह बडा शूर वीर था शेर खा ने उससे बहुत आग्रह किया कि, 'यदि तू मेरी सेवा में आ जाय तो तुझे एक लाख वार्षिक तन्के की जागीर प्रदान कर दूगा।' उसने यह बात स्वीकार न की। उसने कहा, मैं यदि एक बार अपने स्वामी की सेवा द्वारा सम्मानित हो जाऊ तो इसमें अपना बहुत बडा सौभाग्य समझूगा।" (च पृ० ४४ ब ४५ अ, छ पृ० ३८ अ, ज पृ० ४४ ब)।

६ हुमायू के पास।

७ च, छ में —'जो लोग उपस्थित थे, उन्होंने "।

"मार्ग भूल गए।" हजरत पादशाह ने पूछा कि, "जो सेना पीछे आ रही है वह मित्रों की है अथवा शत्रुओं की?" और कहा, "जो असबाब घोडा पर है वह ऊँटों पर लाद दिया जाय। जो लोग पैदल हैं वे घोडों पर सवार हो जायें।" कुल १६ अश्वारोही निकले। शेख[1] अली बेग ने पूछा कि, "क्या करना चाहिये?" उसने निवेदन किया कि, "यह युद्ध हजरत इमाम हुसेन के युद्ध के समान है। प्रयत्न करना चाहिये, अधिक से अधिक यही होगा कि शहीद हो जायेंगे।" शेख अली बेग ने (पुनः) निवेदन किया कि, "हजरत नमक के हक को क्षमा करें। मेवा के हक को इस दास ने क्षमा किया। कुछ सवार दास के साथ कर दिए जायें ताकि सूचना प्राप्त कर सकूँ कि यह कौन लोग हैं?" हजरत (पादशाह) ने सात सवार साथ कर दिए और नमक का हक क्षमा करके कुशलता हेतु फातेहा पढा और विदा कर दिया। शेख अली बेग ने अपने साथियों से कहा कि, 'हम लोगों की संख्या बडी थोडी है। वे लोग अधिक संख्या में हैं। हम लोग सावधानी से प्रस्थान करें[2]। जिस समय निकट पहुचें, बाण चलाना (४८ ब) प्रारम्भ कर दें। विजय आकाश से प्राप्त होती है[3], देखिये क्या होता है?" इन लोगों ने ऐसा ही किया। जब वे सेना के समीप पहुँचे तो बाण चलाये। ईश्वर की कृपा से विजय हो गई। विद्रोहियों के दो सवारों को बाण का गहरा घाव लगा और वे घोडे से गिर पडे। उनके गिरने के समय विद्रोहियों की समस्त सेना पराजित हो गई। तदुपरान्त शेख अली बेग ने बेहबूद चोबदार[4] से कहा कि, "हजरत पादशाह को जाकर बधाई दे और इस विजय का भी उल्लेख कर।" बेहबूद उन दोनों दुष्टों का सिर काटकर अपनी जीन में लटका कर रवाना हुआ। हजरत की दृष्टि इस सवार पर पडी, पूछा कि, "यह कौन सवार है, जो आ रहा है?" लोगों ने अनुमान से कहा कि, "बहबूद चोबदार होगा।" हजरत पादशाह ने उससे बडी उत्तम फाल निकाली और कहा कि, 'ईश्वर ने चाहा तो भलाई[5] ही होगी।" इसी बीच में बेहबूद आ गया। विद्रोहियों के सिरों को हजरत पादशाह की सेवा में प्रस्तुत करके बधाई दी। हजरत ने कहा कि, "शेख अली बेग को बुला कर लाओ।" बहबूद (४९ अ) वापस लौट गया और शेख अली बेग को बुला लाया। हजरत पादशाह ने उससे पूछा कि, "अब क्या करना चाहिये?" उसने कहा, "हजरत पादशाह इस दास के सैनिकों को देखकर आगे बढें। दास हजरत के सैनिकों को देखकर पीछे से आता है[6]।" वे लोग इसी प्रकार रवाना हुए।

१ विश्वासपात्रों में शेख अली बेग जलायर सेवा में उपस्थित था। उससे पूछा, "क्या करना चाहिये?" उसने निवेदन किया कि, "यह भयानक मैदान कर्बला का मैदान है। यह अपार सेना यजीद के ओर की है। हमें साहस न त्यागना चाहिये और पाव पीछे न हटाना चाहिये। या तो अमीरुल मोमनीन शाह हुसेन एवं उनके सहायकों के समान शहीद हो जायेंगे अथवा इन काफिरों को नरक में पहुँचा देंगे।"

२ 'फितरत कर्दा रवां शवन्द'।

३ भाग्य से प्राप्त होती है।

४ च, छ में "बेहबूद मुवीजदार (मुनक्के अथवा सूखे अंगूर को कहते हैं)", 'मुवीजदार' का तात्पर्य स्पष्ट नहीं। ज में 'बेहबूद खुदादाद'।

५ "इनशा अल्लाह तआला बहबूद ख्वाहद बूद"; बहबूद का अर्थ भलाई अथवा कल्याण है।

६ च,छ में:—"हजरत आगे-आगे रवाना हों। हम एक दूसरे की सिपाही (सेना) देखकर पीछे-पीछे चलते हैं।"

अब मैं उन अमीरो का विवरण देता हूं जो मार्ग भूलकर हजरत से पृथक् हो गए थे। लोग गाय भैंसे जैसलमीर की विलायत से भगाकर लाये और एक हौज पर उतर पडे तथा आन मगल एव जश्न मे व्यस्त हो गए। इसी बीच मे हजरत पादशाह वहाँ पहुँच गए। समस्त अम दौडकर हजरत के रिकाब का चुम्बन करके सम्मानित हुए। पादशाह उतर पडे। जो घटनायें घटी उनका उल्लेख हुआ[१]। समस्त अमीरो ने क्षमा-याचना की और खेद प्रकट किया कि, 'ऐसे स्थान सेवा मे पृथक् हुए' तथा शुभ कामना के लिए हाथ उठाये कि, उत्कृष्ट छाया हजरत मुहम्मद उनकी सम्मानित सतान के आशीर्वाद म दासा के सिर पर सर्वदा कायम रहे।'

(४९ ब) सक्षेप में राजा[२] जैसलमीर के दो दूता ने आकर निवेदन किया कि "माल के राजा ने आपको आमत्रित किया था, उसके राज्य में आपने गौ-वध न किया और आ हमारे राज्य मे आकर गौ-वध किया, यह अच्छा नही किया। हम लोग आपके मार्ग पर हैं, अ कहाँ जायगे[३]।' पादशाह ने अपने अमीरो से पूछा कि, इन दूतों को क्या उत्तर देना चाहिये?" अमी ने निवेदन किया कि, 'नम्रता स कार्य नही चलता तलवार के प्रयोग के बिना काम न चलेगा।" आ हुआ कि, 'दूता को वन्दी बना दिया जाय और यहा से प्रस्थान किया जाय[४]'।

वे जैसलमीर में पहुँचे ही थे कि गवारा ने उपस्थित होकर युद्ध प्रारम्भ कर दिय एक भाला पीर मुहम्मद आख्ता की कमर में लगा जो नाभि को पार करके निकल आया। पीर मुहम की आर अली वेग झपटा और उस गवार पर प्रहार करके पीर मुहम्मद को मुक्त करा लिय एव अन्य तलवार रोशनक तूशक बेगी[५] के दायें हाथ मे लगी और उसका हाथ बेकार हो गय तरशुन वेग[६] उसके विरुद्ध बढा और उसे मुक्त करा दिया। अन्य तलवार जो गवारा ने चल (५० अ) वह तरशुन वेग के लगी (उसके हाथ की) बीच की दो अगुलियाँ कट गई। जुहर की नम के समय युद्ध प्रारम्भ हुआ था अस्र की नमाज के समय गवार लोग अपने किले मे प्रविष्ट हो गए

जैसलमीर से पाच कुराह पर एक ग्राम था। हजरत पादशाह ने वहा पहुँचकर पड किया। उस ग्राम म अनाज तथा जल अधिक मात्रा म था किन्तु मनुष्य न थे। जैसलमीर के रा

१ च, छ में यह वाक्य भी है — 'कुछ लोगों ने हाकिम सुल्तान मुहम्मद रखना का जिसकी देख रेख में म वन वाग इश्के निगा (स्वर्ग के लिये ईर्ष्या का उद्यान) का निर्माण मस्जिद में हुआ है उल्लेख किया। लोग उसके साहस एव वीरता की गवाही दी।"

२ च, छ एव ज में 'लौन करण, राजा जैसलमीर'।

३ च एव छ में — उन्होने निवेदन किया कि 'आपने राय माल देव के राज्य में उसकी कृतघ्नता एव प्रतिज्ञा करने के बावजूद गोवध न किया। हमारे राज्य में आकर गोवध किया और हमें नष्ट किया। अब हम सेना मार्ग रोक कर बैठ गये हैं। देखें आप कहा जायेंगे।" (च पृ० ४६ व ४७ अ, छ पृ० ४० अ)।

४ च, छ एव ज में इसके आगे इस प्रकार है —"तदुपरात वहाँ से प्रस्थान किया। जिस मजिल पर युद्ध हुए वहीं पडाव किया और वहा से जैसलमीर। गवारों का समूह पास से आकर युद्ध करने लगा"।

५ च, छ एव ज में 'तूशकची'।

६ च, छ एव ज में 'सादिम ख्वा ज्वायर का भाई तरशुन वेग ज्वायर'।

ने अपने पुत्र को जिसका नाम मालदेव था, इस आशय से नियुक्त किया था कि वह आगे जाकर जहाँ कोई कुआँ मिले, उसे बालू से पाट दे ताकि पादशाह की सेना जल के अभाव के कारण परेशान हो जाय। उसने ऐसा ही किया और बालू कुओं में डलवा दी। हज़रत पादशाह ने उस स्थान से प्रस्थान किया। दोपहर के समय एक कुए पर पहुँचे[१]। जिस कुए में भी डोल डालते थे, जल न निकलता था। वे समझ गए कि, 'कुओं को बालू से भर दिया गया है।' वे वहाँ से चल पड़े। जुहर तथा अस्र की दोनों नमाज़ों के मध्य में एक अन्य कुए पर पहुँचे और वहाँ पर उतर पड़े और कहा कि "यदि इस कुए में भी जल न हुआ तो क्या होगा?" रात्रि निकट होने के कारण विवश होकर उतर पड़े और सावधानी की दृष्टि से अपने चारों ओर ऊँटों का घेरा बना लिया। ऊँटों के चारों (५० ब) ओर हज़रत पादशाह चक्कर लगाने लगे। यह समाचार शेख अली बेग को प्राप्त हुए। शेख ने आकर निवेदन किया कि, "हज़रत जाकर विश्राम करें। यह दास ऊँटों के चारों ओर चक्कर लगायेगा।"

शेर शाह के आदमी द्वारा हुमायूँ की हत्या का प्रयत्न

तदुपरान्त हज़रत पादशाह अपने तकिये पर पहुँच कर सो गए। एक अफ़ग़ान ने, जिसे शेर खाँ ने इस आशय से भेजा था कि, 'यदि अवसर मिले तो पादशाह पर तलवार का वार कर दे,' पादशाह की तलवार को, जो उनके बराबर रक्खी हुई थी, मियान से निकाला और आधी तलवार ही खींची थी कि चोर को अपने बन्दी बना लिए जाने का भय हो गया। उसने तलवार को उसी स्थान पर छोड़ दिया और बाहर निकल आया। क्योंकि हज़रत जाग उठे थे, उन्होंने देखा कि आधी तलवार मियान से निकली हुई है। आश्चर्य हुआ कि, "यह क्या बात है?" सब्दल खाँ[२] उर्फ मुम्बुल सेवक पलंग के पास सो रहा था। उससे पूछा कि, "मियान से तलवार तूने निकाली है?" उसने निवेदन किया कि, "दास यह दुस्साहस कैसे कर सकता है[३]?" इतने ही पर बात समाप्त हो गई।

जल के अभाव के कारण कष्ट

संक्षेप में, वहाँ से प्रस्थान करके वे चार कुओं पर उतरे जिनमें से तीन कुओं में जल था और एक खाली था। तीनों कुएँ उन्होंने बाँट दिए। एक हज़रत पादशाह के लिए, एक तरदी बेग (५१ अ) तथा मुनइम बेग के लिए और तीसरा मीर खलीफा के पुत्र खालिद बेग, नदीम बेग कोका, रोशन बेग काका, मीर मुज़फ्फर तुर्कमान[४], अली बेग[५] तथा तरसुन बेग को प्रदान हुआ। किसी के पास

१ च, छ एवं ज में —"लौन करण ने अपने पुत्र को, जिसका नाम मालदेव था, इस आशय से नियुक्त किया कि जहाँ कहीं कुआँ हो उसे बालू से पाट दे ताकि जल के अभाव के कारण वे इस राज्य से शीघ्र चले जायें दोपहर के समय वहाँ से प्रस्थान करके वे ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ ३० ४० कुयें थे किन्तु लोग जिस कुयें में डोल डालते जल न निकलता। ज्ञात हुआ कि उन्हें बालू से भर दिया गया है।"

२ च, छ में 'मीर हजार', ज में 'सन्दर खाँ उर्फ मीर सुहैल'।

३ च, छ एवं ज में —"उसने निवेदन किया मेरे सरीखे हजारों के प्राण तथा हृदय आपके एक सम्मानित बाल पर न्यौछावर हों। किसी की क्या मजाल जो यह करे।"

४ च, छ में 'मुज़फ्फर बेग तुर्कमान' ज में 'मीर मंगू तुर्कमान'।

५ च एवं छ में 'शेख अली बेग'।

डोल न था। डोल के स्थान पर देग बांधकर कुएँ में डाला जाता था और ऊँट[1] उसे निकालते थे। जब देग को हाथ से पकड़ते थे तो उस समय नक्कारा बजाते थे, जिससे इस सम्बन्ध में सूचना हो जाती थी और रस्सी छोड़ दी जाती थी। इस कठिनाई एवं परिश्रम से जल निकाला जाता था। जल के लिए आपस में झगड़ा करते थे। पर्याप्त जल प्राप्त न होता था। हजरत पादशाह के कुछ शागिर्दपेशा लोगों ने उपस्थित होकर निवेदन किया कि, तरदी बेग ने अपने घोड़े तथा ऊँटों को पानी पिला दिया। जब उन दासों ने उस कुएं को उससे इस आशय से मांगा कि अपने घोड़ों तथा ऊँटों को पानी पिलायें तो उसने अनुमति न दी। हजरत पादशाह उसे रोक दें अन्यथा हम उससे युद्ध करेंगे, अधिक (५१ ब) से अधिक मारे जायेंगे अथवा जल प्राप्त कर लेंगे।' जब हजरत पादशाह ने समझ लिया कि झगड़ा होगा तो वे सवार हो गए और स्वयं कुएं पर पहुँचे और तुर्की भाषा में कहा कि, "दासों के विचार अच्छे नहीं हैं। अपने आदमियों को एक क्षण के लिए जल लेने से रोक दो।' तरदी बेग ने अपने आदमियों को जल लेने से मना कर दिया। हजरत के शागिर्दपेशों ने जल लिया। कुछ को जल मिला और कुछ खाली रह गए। संक्षेप में, उस मंजिल में जल की अत्यधिक कठिनाई थी।

जैसलमीर के राजा के पुत्र का आगमन

तदुपरान्त राजा जैसलमीर का पुत्र[2] अपनी सेना सुव्यवस्थित करके प्रकट हुआ और मुकाबले के लिए खड़ा हो गया और नम्रता प्रदर्शित करने के लिए[3] अपने आदमी हजरत पादशाह के पास भेजे और निवेदन कराया कि, राय मालदेव ने आपको बुलवाया था, उसके राज्य में आपने गौ वध न किया। आप लोगों ने कोई अत्याचार नहीं किया[4]। उस अभागे ने कृतघ्नता प्रदर्शित की, यह उसका दुर्भाग्य था। यह अच्छा हुआ कि आप लोग एक अनुचित स्थान से बाहर निकल (५२ अ) आये। जब आप इस क्षेत्र में पहुँचे थे तो यह उचित था कि दास को सूचना कर देते वह सेवा हेतु उपस्थित होता जैसा कि जमींदारी की प्रथा है। आपने हमारे राज्य में पहुँचकर गौ-वध किया, इस बात को हिन्दू लोग बहुत बुरा समझते हैं। यदि इस स्थान पर ठहरें तो मैं डोल तथा बैल मंगवाऊँ और जल निकलवाकर हौज भरवा दूँ। आपके आदमी तथा पशु जी भर कर जल पी लें। दास के जिन आदमियों को बन्दी बना लिया गया है वे निरपराध हैं उन्होंने कोई अपराध नहीं किया है। उन्हें मुक्त कर दें।' तरदी बेग ने आकर उन दूतों को मुक्त कर दिया।

अमरकोट की ओर हुमायूं का प्रस्थान

हजरत पादशाह समझ गए कि यह लोग अच्छे आदमी नहीं हैं।' कहा कि, "आगे की मंजिल पर एक ही कुआं है लोगों को जल के कारण कष्ट होगा। तीन टुकड़ों में विभाजित होकर बारी बारी प्रस्थान करो ताकि कुएँ का पानी प्रत्येक को प्राप्त हो जाय। सर्व प्रथम हजरत

१ च, छ एवं न में — 'बैल के स्थान पर ऊंट निकालते थे"।

२ न, छ में —'लोन करण का पुत्र मान देव'।

३ क, ख, ग एवं घ में 'मुलाज्मियत' है किन्तु च छ एवं ज में 'मुलाजेमत' है और यही ठीक है। इस वाक्य को इस प्रकार पढ़ा जाय —'किसी को सम्मानित सेवा में भेजा कि "।

४ न, छ एवं ज में — हजरत ने राय मालदेव के राज्य में पहुँच कर उसको सन्तुष्ट करने के लिए जो वचन एवं प्रतिज्ञा की थी उसके कारण गौ-वध न किया और उसके राज्य को नष्ट न किया।"

पादशाह और उनके साथ तरदी बेग, तिमुर सुल्तान, खालिद बेग तथा रोशन बेग कोका रवान हुए। तदुपरान्त मुनइम बेग एवं नदीम कूकुल्ताश तथा कुछ अन्य लोग, उनके उपरान्त शेख अली बेग तथा दूसरे आदमी। इस प्रकार यात्रा करने के बावजूद भी अधिकाश आदमी प्यास (५२ ब) के कारण नष्ट हो गए। वहा से अमरकोट का कस्बा १० कुरोह की दूरी पर था।

रोशन बेग ने वहा पहुँच कर अपने घोडे को हजरत बेगम से ले लिया। यह समाचा हज़रत पादशाह को प्राप्त हुए। उन्होने अपना घोडा हजरत बेगम को प्रदान कर दिया और स्वय पैदल चल खडे हुए। तदुपरान्त आदेश दिया कि, "आफताबखाने से ऊँट ले आओ। हम उस प सवार होंगे।" ऊँट लाया गया और वे सवार हुए। उन्होंने एक कोस यात्रा की होगी कि खालिद बे को सूचना मिल गई। उसने अपना घोडा हजरत पादशाह को दे दिया। वे उस पर सवार हो गए[1]

अमरकोट पहुँचना

वे ७ अश्वारोहियो सहित अमरकोट के किले में पहुँचे। राणा बरसिया[2] ने अपने भाइ क हज़रत पादशाह की सेवा मे भेजा। उन लोगो ने पहुँचकर हजरत पादशाह के रिकाब चूमे और निवेद किया कि "आज मुहूर्त अच्छा नही है। प्रात काल वह धरती-चुम्बन करके सम्मानित होगा।" तदुपरान हज़रत पादशाह की सेना पीछे से पहुँच गई। दूसरे दिन राणा ने उपस्थित होकर हज़रत पादशा (५३ अ) के रिकाब चूमने का सम्मान प्राप्त किया और निवेदन किया कि "हजरत का आगम शुभ हो। इस दास के पास सूदा कौम के दो हजार अश्वारोही तथा समीचा कौम के पाँच हजा अश्वारोही है जो एक ही पूर्वज की सतान हैं। सात हज़ार सगठित अश्वारोही हैं वे हृदय हजरत पादशाह के लिए प्रयत्न करके समस्त थट्टा एव भक्कर प्रदेश हजरत पादशाह के अधीन क देगे।" हजरत ने कहा कि, "हमारे पास खज़ाना नही है जो तर्कश बदो[3] को प्रदान करें किन्तु अमी के पास धन है, उनसे ले लेंगे।" शाह मुहम्मद खुरासानी ने निवेदन किया कि, "अमीर लोगों ने जि स्थान पर धन रक्खा है, वह दास को ज्ञात है।"

हुमायू की चित्र-कला से रुचि

हजरत पादशाह ने अपने वस्त्र धोने के लिए दे दिए और स्नान के वस्त्र धारण कि (५३ ब) बैठे थे कि एक पक्षी[4] उडकर खेमे मे प्रविष्ट हुआ। हजरत पादशाह स्वय बैठे रहे औ खेमे का द्वार बन्द करा दिया। उस पक्षी को पकडवाकर कैंची मगवाई और उसके पर कटवा दिए

१ हुमायूं शाही (च, छ) एव जवाहर शाही (ज) में यह कहानी नहीं है।

२ क, ख, ग, घ में यह नाम स्पष्ट नहीं किन्तु च, छ एव ज में " राणा बरसिया नाम बादरे खुद रा" लिख नाम स्पष्ट कर दिया है —"वे उस ओर रवाना हुये सात व्यक्तियों सहित उस किले के समीप पडाव किय राणा बरसिया नामक ने अपने भाई को सम्मानित सेवा में भेजा।"(च · ४९ अ, छ · ४२ अ) ज में 'रा परसा नामक' (पृ० ४९ अ)।

३ च, छ एव ज में 'सिपाहियान', 'तर्कश बन्द' से भी यही तात्पर्य है।

४ क, ख, ग, घ में 'जानवर', च, छ एवं ज में 'जानवरे खुशरंग'। च एव छ में स्नान के वस्त्र आदि उल्लेख नहीं।

चित्रकार से कहा कि, "इस पक्षी का चित्र बनाकर कागज पर सुरक्षित कर ले और इसे जंगल में छोड़ दे[१]।"

अमीरों से धन की वसूली

तदुपरान्त आदेश दिया कि अमीरों को बुलवाया जाय। जब सब अमीर आ गए तो आदेश हुआ कि "वे इसी स्थान पर रहें। शागिर्द-पेशा जाकर शाह मुहम्मद खुरासानी के साथ जहाँ भी धन हो ले आयें। देग तथा तबक[२] के अतिरिक्त जो कुछ असबाब अमीरों के डेरों में हो, वह उठा लायें।" लोग दौड़कर पहुँचे और उन्होंने अमीरों के ऊँटों की काठियाँ झूल तथा जीन इत्यादि फाड़ डाली और धन तथा कपड़े निकाल लिये और उन्हें हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित किया। एक वृद्धा ने इस चिन्ताजनक अवस्था में अपने सन्दूक को हुसेन कूरची[३] को सौंप दिया था कि जब तक शान्ति हो, वह उसे सुरक्षित रखे। हुसेन उस सन्दूक को बाहर ले जा रहा था कि *हाफिज़ मुहम्मद सुल्तान उर्फ रखना[४] द्वारा बन्दी बना लिया गया।* उसे भी हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित किया गया। जब वह सन्दूक खोला गया तो सोने की तीन ईंटें, जड़ाऊ आभूषण (५४ अ) तथा ४२ अलाई[५] अशर्फियाँ निकली। काफूर को आदेश हुआ कि, "हुसेन के कान का एक कोना काटकर छोड़ दो[६]।" काफूर ने पूरा कान काट डाला। हजरत पादशाह ने रुष्ट होकर कहा कि, "उसका पूरा कान क्यों काटा?" रूमाल मंगवाकर अपने शुभ हाथों से उसके कान को बाँधा और उसे प्रोत्साहन दिया। काफूर को फटकारते हुए उसके प्रति क्रोध प्रदर्शित किया[७]। अमीरों द्वारा जो वस्तुएँ प्राप्त हुई थी उनमें से आधी उनके स्वामियों को सौंप दी। शेष आधी शागिर्द-पेशा इत्यादि को प्रदान कर दी। कपड़ों इत्यादि में जो कुछ था उनके दो भाग उनके स्वामियों का तथा एक भाग सरकारे खासा[८] को सौंप दिया गया।

तदुपरान्त राणा से पूछा कि, "अब क्या करना चाहिये?" उसने निवेदन किया कि, "थट्टा[९] पर आक्रमण करना चाहिये। यहाँ से रवाना हों और जून नामक स्थान पर पड़ाव करें। आस-(५४ ब) पास के लोग हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित हो जायेंगे।' शुभ मुहूर्त में हजरत

१ च एवं छ में इसके आगे 'मानो उत्तर फाल निकाला हो'।
२ थाल, भोजन पकाने के बरतनों से तात्पर्य है च [illegible] एवं ज में स्पष्ट कर दिया गया है—"उनके तम्बों, देग एवं तबक इत्यादि आवश्यक वस्तुओं के अतिरिक्त जो कुछ भी हो उठा लायें और प्रस्तुत करें।"
३ च, छ एवं ज में 'मुहम्मद हुसेन कूरची'।
४ च में 'हाफिज सुल्तान मुहम्मद रखना', छ में 'हाफिज सुल्तान मुहम्मद रखना,' ज में—"हाफिज सुल्तान मुहम्मद जिसने सरहिन्द नामक कस्बे में रश्के जहाँ का निर्माण कराया"।
५ सुल्तान अला उद्दीन के समय की।
६ च, [illegible] एवं ज [illegible]—"यह विचित्र आदेश उसके कान में न पहुँचा।"
७ च, छ एवं ज में आगे इस प्रकार है—"तदुपरान्त उस वृद्धा के धन के विषय में पूछताछ कराई। ज्ञात हुआ कि वह हजरत फिरदौस मकानी के इनाम में से है। ऐसी कठिनाई के समय के बावजूद उसने कहा 'तुझे प्रदान कर दिया।'" (च पृ० ५० अ, छ ४२ ब, एवं ज: पृ० ५० अ)।
८ शाही सरकार, च, छ में "सरकारे खालसा शरीफा' ज में 'खालसा शरीफा'।
९ च, छ एवं ज में 'तत्ता व बक्कर'।

पादशाह ने वहाँ से प्रस्थान किया और अपने परिवार को अमरकोट के किले में छोड दिया। वहाँ से प्रस्थान करके १२ कुरोह पर एक हौज था, लश्कर वही उतर पडा।

(१२)[1]

ससार वालो के शाहज़ादे मुहम्मद अकबर (उनका राज्य अनन्त तक स्थायी रहे) का अमरकोट में जन्म[2]

जब वे हौज पर पडाव किए हुए थे तो प्रात काल नमाज के समय एक दूत ने अमरकोट के किले से उपस्थित होकर हजरत पादशाह की सेवा में वधाई देते हुए निवेदन किया कि "परमश्वर ने एक पुत्र हजरत पादशाह को प्रदान किया है।"

शेर

'प्रसन्नता से आकाश की दुहरी हुई (झुकी हुई) पीठ सीधी हो गई,
जब युग की माता ने तेरे सरीखे पुत्र को जन्म दिया।'

यह समाचार सुनते ही हजरत पादशाह बडे प्रसन्न हुए। हजरत शाहजादा का जन्म १४ शाबान की शनिवार को रात्रि में हुआ[3]। १४वी रात के चाँद को बद्र कहते है अत शाहजादा मुहम्मद अकबर गाजी बद्रुद्दीन वहनिया दोना लोको को प्रकाश देने वाले घर में पधारे। जला-(५५ अ) लुद्दीन तथा बद्रुद्दीन दोना एक ही उपाधियाँ है। इन रात्रियो में बद्र की रात्रि के समान कभी प्रकाश नही होता अत इस बद्र की रात्रि का प्रभाव देखो कि दोनो लोक प्रज्वलित हो गए। सक्षेप में जब हजरत पादशाह नमाज पढ चुके तो अमीरो ने आकर अभिवादन किया। तदुपरान्त हजरत पादशाह ने तुच्छ दास जौहर आफ़्तावची को आदेश दिया कि मैंने तुझे कोई धरोहर दी थी?" निवेदन किया कि, "हाँ।' दूसरी वार पूँछा कि, 'क्या थी? निवेदन किया कि, 'दो सौ शाहरुखी, चादी का दस्ताना तथा एक मृग नाभि थी[4]। शाहरुखी तथा चाँदी का दस्ताना पादशाह के आदेशानुसार मैंने उनके स्वामियो को दे दिया।" हज़रत ने कहा कि, 'वह शाहरुखियाँ तथा दस्ताना मैंने तुझे प्रदान किया था, तूने क्यो दे दिया?" फकीर ने निवेदन किया कि, "हजरत पादशाह के आदेशानुसार दे दिया।" हज़रत पादशाह ने कहा कि, 'वह कस्तूरी ले आ।" फकीर कस्तूरी लेकर उपस्थित हुआ। पादशाह ने आदेश दिया कि, "चीनी की रकाबी ला?" मैं रकाबी लाया। कस्तूरी को उन्होंने तोडा और अमीरो को बुलवाकर बाँट दिया और कहा कि, "यह पुत्र के जन्म की

१ च, छ एव ज में 'फस्ल ६'।
२ च, छ एव ज में इसके आगे इस प्रकार है, "वहा से तत्ता एव बक्कर की ओर प्रस्थान तथा शाह हुसेन मीर्जा द्वारा ससार को शरण प्रदान करने वाले उस विजयी बादशाह से सधि।"
३ च, छ एव ज में —"शनिवार शाबान ६४९ हि० को प्रार्थनाओं की स्वीकृति के क्षितिज से, ससार को शोभा देने वाला चन्द्रमा १४ वी रात्रि में उदय हुआ और ससार को चाद से मछली तक प्रज्वलित कर दिया।" (च. पृ० ५०ब, [illegible] पृ० ४३अ, ज पृ० ५१अ)।
४ च, छ में 'थोडा सा धन एव आभूषण एव एक मृग-नाभि।'

(५५ ब) खुशी में है जो कि परमेश्वर ने हमें प्रदान किया है।" इन सब लोगों ने शुभकामनाएँ एव बधाई दी। उस दिन उस मंजिल पर पडाव किया गया और प्रथानुसार आनन्द मंगल मनाया[१]। अत हे मित्र! वही सुगन्धि आज समस्त ससार के चारो ओर फैली हुई है।

जून की ओर प्रस्थान एव उस स्थान पर अधिकार

सायंकाल की नमाज के समय वे रवाना हो गए। पाँचवी मंजिल पर पडाव किया। हजरत पादशाह ने पूछा कि, "अमरकोट का हाकिम जानी बेग कजाक कहाँ है[२]?" गुप्तचर[३] ने निवेदन किया कि, "जून नामक स्थान पर पडाव किए हुए है।" वहाँ से ५०० समीचा अश्वारोही तथा ५०० सूदा एव १०० मुगल शेख अली बेग के अधीन इस आशय से नियुक्त किए कि वे जाकर जून नामक स्थान पर अपना अधिकार कर लें। शेख अली बेग अपनी सेना सहित रवाना हो गया। उन्होने देखा कि जानी बेग एव सेना सहित जल[४] का सामने किये खडा है। पहुँचते ही उसने एव उस समूह ने ऐसा आक्रमण किया कि जानी बेग पराजित हो गया। उसके कई आदमियों की (५६ अ) हत्या हो गई। जानी बेग स्वय भाग गया। उसकी सेना कत्ल हो गई। उसका एक मुगल[५] मीर्जा कुली चोली द्वारा बन्दी बना लिया गया उसके गहरा घाव लगा था। उसे पकड कर हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित किया गया। तुर्की ने निवेदन किया कि, यह व्यक्ति वही है जिसने पादशाह का अपशब्द कहे थे।' हजरत ने कहा कि, 'उसे इसका बदला मिल गया, छोड दो।" जो लोग युद्ध मे बन्दी बनाये गए थे उनके लिए आदेश हुआ कि उनकी हत्या करा दी जाय।

अकबर का हुमायू के पास जाना

उस स्थान से प्रस्थान करके वे जून में उतरे। जून की विजयोपरान्त आमा के बाग मे पडाव किया। जितने जमींदार हजरत पादशाह की सहायतार्थ आये थे वे उद्यान के चारो ओर उतर पडे। आदेश हुआ कि उसके चारो ओर खाई खोद दी जाय और युद्ध लाग को इस आशय से नियुक्त किया कि वे शाहजादे तथा उनके परिवार को जून मे ले आय। २० रमजान[६] को अमरकोट से जून पहुँचे और अपने आश्रयदाता की सेवा मे उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। हजरत शाहजादे के जन्म को ३५ दिन व्यतीत हो गए थे कि एक दूसरे की भेंट हुई।

हुमायू की हत्या का प्रयत्न करने वाले का बन्दी होना

जिस समय वे सौहान के किले को घेरे हुए थे एव बन्दूक चलाने वाला किले के भीतर से बिना चूके हुए निशाना लगा रहा था। हजरत पादशाह ने कहा कि, '(ईश्वर करे) एक दिन यह बन्दूक

१　च, छ एव ज में आनन्द मगल का सविस्तार उल्लेख है।
२　च [illegible] एव ज में —"जानी बेग कजाक का, जो अमरकोट का हाकिम था द्वारा पूछा।'
३　मुखबिर, च, छ एव ज में — 'एक व्यक्ति ने समाचार पहुँचाये।"
४　सम्भवत कोई हौज, तालाब अथवा छोटी नदी। मूल वाक्य सभी हस्तलिपियों में इस प्रकार है —"जानी बेग बा जमाअत आब व रूये दादा इस्तादा अस्त।'
५　च, छ एव ज में 'उस सेना का एक मुगल'।
६　च, छ में '३५ दिन उपरान्त २१ रमजान,' ज में '३५ दिन उपरान्त २० रमजान'।

चलाने वाला हमारे हाथ आ जाये तथा वह चोर भी जो तलवार मियान से निकालकर छोड गया था।" यह दोनों इच्छाएँ हज़रत के हृदय में थी। ईश्वर की कृपा से यह दोनो व्यक्ति जून कस्बे में एक बजागर[1] के घर में अपने कारनामो के विषय में वार्ता कर रहे थे कि अचानक हजरत पादशाह के कानो मे यह बात पड गई[2]। उन्हे बन्दी बनाकर ससार को शरण देने वाले दरबार मे उपस्थित किया गया। हजरत पादशाह ने पिछली घटना के विषय में पूछा और बन्दूक चलाने वाले की हत्या करने का आदेश दे दिया। दूसरे को इनाम तथा अदरार प्रदान करके क्षमा कर दिया।

शाह हुसेन मीर्ज़ा से मुकाबला एव कुछ अमीरो का पलायन

आसपास के आदमियो को आदेश भेजा कि, "वे सेवा में उपस्थित हो।' अत सूदा एव समीचा तथा कच्छ एव जाम की विलायत के राय, जो इससे पूर्व भक्कर के सर्वोच्च व्यक्तिया मे थे, हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुए। लगभग १५-१६ हजार अश्वारोही एकत्र हो गए[3]। (५७ अ) शाह हुसेन मीर्जा चार कुरोह पर नदी तट के सामने पडाव किए हुए था। रमज़ान मास का रोजा खोलने के समय हज़रत के हाथ में जल था कि समाचार प्राप्त हुए कि तरशुन बेग[4] भाग गया। यह समाचार सुनकर हिन्दुस्तान के पादशाह को दुख हुआ। कहा कि, "युवावस्था में मृत्यु को प्राप्त हो जाय।" ऐसा ही हुआ। भाग्य का बाण स्वीकृति के लक्ष्य पर लगा। जब तरशुन बेग भागकर शाह हुसेन मीर्जा के पास पहुँचा तो शाह हुसेन ने एक दास तरशुन बेग को प्रदान कर दिया। उस दास द्वारा एक अपराध हुआ। तरशुन बेग ने उसकी नाक काट ली। तीन दिन उपरान्त उस दास ने तरशुन बेग का सिर काट लिया। नि सन्देह नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ पादशाह गाजी बडी करामातो वाले थे। पादशाहो को ४० वलिया[5] की करामाते प्राप्त होती है। हजरत पादशाह करामात की साक्षात मूर्ति थे कारण कि वे खुदा के खलीफा थे, अत ज्ञात होना चाहिये कि यह खिलाफत कहा से थी। इसका उल्लेख ऊपर हो चुका है।

शाह हुसेन द्वारा राणा को मिलाने का प्रयत्न

(५७ ब) सक्षेप में शाह हुसेन मीर्जा ने उपर्युक्त राणा को खिलअत तथा कटार भेज कर प्रोत्साहन देते हुए लिखा कि, 'हमारे प्रति निष्ठावान् रहा।" राणा ने खिलअत हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित की। आदेश हुआ कि, "यह उचित है कि यह कुत्ते को पहिना दी जाय।" राणा ने ऐसा ही किया। खिलअत कुत्ते को पहिना दी और कटार उसकी कमर में बाँधी। यह

१ मदिरा बनाने वाला, च, छ एव ज में 'दुकाने बूज़गर' अथवा 'मदिरा बनाने वाले की दूकान'।

२ च, छ एव ज में —"उनकी बातें लोगों के कान में पहुँची"।

३ च, छ एवं ज में —"उस स्थान पर आस पास के आदमियों को बुलाने के लिये सूदा, समीचा, कच्छ एव जाम की विलायत के रायों को जो प्राचीन काल मे उस प्रदेश के प्रतिष्ठित लोगों में थे अनुल्लघनीय फरमान जारी किये। लगभग १५ १६ हजार अश्वारोही एकत्र हो गये।' (च : पृ० ५२ब, छ : पृ० ४५अ, ज : पृ० ५३ब)।

४ च, छ एवं ज में —"तरशुन बेग जलायर भाग कर एव नमक हरामी करके मीर्जा से मिल गया हज़रत रमजान के पवित्र मास का रोजा खोलने के लिये अपने पवित्र हाथों में जल लिये हुये थे कि उनसे इस घटना का उल्लेख किया गया। क्योंकि वह प्राचीन सेवक था, हज़रत को दुख हुआ। हज़रत ने कहा, 'यदि ईश्वर ने चाहा तो युवावस्था में ही मृत्यु को प्राप्त होगा।"

५ सन्तों।

समाचार शाह हुसेन मीर्ज़ा को प्राप्त हुए। वह लज्जित हुआ। वार्तालाप के समय ख्वाजा गा तथा राणा के मध्य में कोई अनुचित बात हो गई। राणा ने रुष्ट होकर कहा कि, "मुग़ुलों के सेवा करना व्यर्थ है।" वहां से चल दिया। उसके चले जाने से समस्त जमींदार छिन्न-भिन्न गए। यद्यपि हज़रत पादशाह ने अमीरों को प्रोत्साहन दिया किन्तु उससे कोई लाभ न हुआ।

दूसरे दिन मुनइम बेग भाग गया और शाह हुसेन मीर्ज़ा की सेवा में पहुँचा और कि, "पादशाह मैदान में उतरे हुए हैं। उन्हें कोई शरण का स्थान नहीं प्राप्त है[२]"। यह समा हज़रत पादशाह को प्राप्त हुए। आदेश हुआ कि, 'किला तैयार किया जाय और खाईं ■ (५८ अ) जाय।' अपने हाथ में डंडा लेकर किले के विभिन्न स्थान लोगों को बाँट दिए आदेश दिया कि, 'शीघ्रातिशीघ्र तैयार करें।" तीन दिन में किला तैयार हो गया। जब शाह हु मीर्ज़ा आया तो किले को देखकर मुनइम बेग से कहा कि, तूने गलत बात कही।" सक्षेप[३] में, द पक्षों में युद्ध हुआ। महमूद गिर्दबाज[४] मार डाला गया।

बैरम बेग का आगमन

तदुपरान्त समाचार प्राप्त हुए कि बैरम[५] बेग गुजरात से आ रहा है। हज़रत पादशा समस्त अमीरों को उसके स्वागतार्थ भेजा। वह हज़रत के चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हु हज़रत पादशाह प्रसन्न हुए और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और कहा कि, हमारे दु:ख साथी आ गया[६]'।

शाह हुसेन के गुलाम बच्चे का आक्रमण

रात्रि का अन्तिम पहर[७] था कि शाह हुसेन का गुलाम बच्चा किले के निकट आ गय उसने नफ़ीरी बजाई[८]। आवाज़ सुनते ही, बैरम बेग रोशन[९] बेग तथा कुछ अमीरों ने किले के बा निकल कर उसपर आक्रमण किया। हज़रत पादशाह ने आदेश दिया कि, "बैरम बेग किले (५८ ब) प्रविष्ट हो[१०]। रोशन बेग इत्यादि आक्रमण करें।" ऐसा ही हुआ। जब वे शाह हुसेन सेना के समीप पहुँचे तो युद्ध प्रारम्भ हो गया। बाबर कुली को, जो कि शाह हुसेन के अमीरो

१ च, छ में 'ख्वाजा गाजी दीवान'।

२ च, छ में —"मुनइम बेग कृतघ्नता करके मीर्ज़ा के पास पहुँचा और कहा 'सकोच एवं विलम्ब किस कारण उनकी सेना कम है और उस मैदान में जहां शरण नहीं, पड़ाव किये है। आक्रमण करना चाहिये।"

३ च, ■ में —"उसे (मुनइम बेग) झूठ के कारण उसे दुःख हुआ कि न आना चाहिये था किन्तु आवश्यकता दोनों पक्ष वाले सहन न कर सके, युद्ध हुआ। इस सेना की ओर से महमूद कारद बाज शहीद हुआ।"

४ ज में 'महमूद खिदमतगार'।

५ अन्य ग्रन्थों में 'बैराम'।

६ 'शरीके दर्दे मा आमद'।

७ च, छ में 'प्रातःकाल'।

८ 'आवाज़े नफ़ीर कर्द'।

९ च, छ एवं ज में 'रोशन बेग कोका'।

१० च, छ एवं ज में 'वापस आ जाये।

से था, रोशन बेग ने भाले से गिरा दिया। तदुपरान्त एक व्यक्ति ने रोशन बेग के घोड़े की मागरा[1] पर तलवार मारी। घोड़ा अपनी सेना में पहुँचते पहुँचते भूमि पर गिर पड़ा। तीपूचाक़ (घोड़े) की यह विशेषता है कि वह सवार को मंज़िल पर पहुँचा देता है।

शेख़ अली बेग का रसद हेतु भेजा जाना और उसकी मृत्यु

तदुपरान्त शेख़ अली बेग को आदेश हुआ कि चाचकाव[2] नामक स्थान पर जाकर रसद भेजता रहे। वह रवाना हुआ और रसद भेजता रहा। यह समाचार सुनते ही शाह हुसेन मीर्ज़ा ने सुल्तान महमूद भक्करी को इस आशय से नियुक्त किया कि रसद को पादशाह की सेना में पहुँचने से रोके। जब यह समाचार हज़रत पादशाह को प्राप्त हुए तो आदेश दिया कि "तीमूर सुल्तान, शेख़ अली बेग की सहायतार्थ जाय।" जब वह सहायतार्थ पहुँचा तो उसे यह बात अच्छी न लगी, इस कारण कि जब वह अकेला था तो छापा मारकर परेशान कर सकता था। अतम तीमूर सुल्तान के आ जाने के कारण छापा मारने का अवसर न रहा। बराबरी हो गई। विवश होकर आमने सामने युद्ध करना पड़ा। युद्ध[3] हुआ।

(५९ अ) इसी बीच में पादशाह ने कहा कि, "३-४ बार शाह हुसेन मीर्ज़ा युद्ध हेतु आया यदि वह प्रातःकाल आ जाय तो मैं स्वयं जाकर युद्ध करूँगा तथा शाह हुसेन मीर्ज़ा पर आक्रमण करूँगा।" इस उद्देश्य (की सफलता हेतु) फ़ातेहा पढ़ा। जिन लोगों के पास उत्तम घोड़े न थे उन्हें उत्तम घोड़े दिए। यह निश्चय हुआ कि कल युद्ध होगा। रमज़ान मास था। रोज़े के खोलने के उपरान्त एक पहर व्यतीत होने पर एक व्यक्ति नदी तट से आया और उसने कहा कि, "कोई नदी के उस पार से नौका माँग रहा है।" आदेश हुआ कि, "पूछो तेरा क्या नाम है, जो इस समय नौका माँग रहा है?" पूछा गया कि, "तू कौन है जो नौका माँग रहा है?" उसने कहा, "अतम तीमूर सुल्तान हूँ।" यह समाचार हज़रत पादशाह को पहुँचाये गए। कहा कि, "ईश्वर कुशल करे।"संक्षेप में, नौका पहुँचाई गई। वह राजसिंहासन के समीप पहुँचा। शेख़ अली बेग के शहीद होने और अपनी (५९ ब) पराजय के विषय में निवेदन किया। यह निश्चय हुआ ही था कि प्रातःकाल रणक्षेत्र में युद्ध होगा कि यह घटना घटी।

हज़रत पादशाह उस रात्रि में इतने चिन्तित रहे कि उसका उल्लेख सम्भव नहीं। शाह हुसेन मीर्ज़ा अस्त्र शस्त्र तैयार करके युद्ध हेतु रवाना होना चाहता था कि मुहम्मद हुसेन कोणाकार भाग कर शाह हुसेन मीर्ज़ा के पास पहुँचा। उसने सूचना दी कि, "तीमूर[4] सुल्तान की सेना पराजित हो गई तथा शेख़ अली बेग मारा गया। हज़रत पादशाह ने उस दिन के लिए यह निश्चय किया है कि क़िले के बाहर निकलकर युद्ध करेंगे। तू कहाँ जायेगा? वे कठिनाई में हैं किन्तु तू समृद्ध है।" कई दिन तक दोनों ओर से कोई आदमी न आया।

शाह हुसेन मीर्ज़ा द्वारा संधि

कुछ दिन उपरान्त शाह हुसेन मीर्ज़ा ने संधि करना निश्चय किया। बाबर कुली को

१ गुद्दा।
२ च, छ एवं ज में 'जाचकाव', अन्य ग्रंथों में 'चाचकान, हाजकान अथवा जानकान' है।
३ च, छ में 'इस प्रकार' है।
४ 'तिमुर' तथा 'तीमूर' दोनों ही प्रयुक्त हुये हैं।

हज़रत पादशाह की सेवा मे भेजा। वह थोडी सी मिश्री एव मेवा लेकर हज़रत के रिकाब के चुम्बन द्वारा सम्मानित हुआ एव शाह हुसेन मीर्जा के अपराधो की क्षमा माँगी और निवेदन किया कि वह लज्जावश उपस्थित न हो सका। हज़रत पादशाह ने पूछा कि, "तू बडा है या रोशन बेग ?" (६० अ) जब दोनों ने अपनी अवस्था के वर्ष गिने तो रोशन बेग के वर्ष कम निकले। पुन पूछा कि, 'तुम दोनो मे किस प्रकार युद्ध हुआ ?" निवेदन किया कि, 'रोशन बेग ने दास को भाले द्वारा घोडे से गिरा दिया किन्तु हत्या न की। रोशन बेग के घोडे को दूसरे ने तलवार मारी।" हज़रत पादशाह ने कहा कि, "तोरे[1] मे तलवार को, आयु की अपेक्षा अधिक सम्मान प्राप्त है। इस समय रोशन बेग के प्रति सम्मान प्रदर्शित करो।" बाबर कुली ने रोशन बेग के प्रति सम्मान प्रदर्शित किया और क्षमा याचना की। हज़रत पादशाह ने बाबर कुली को विदा कर दिया और कहा कि, "हम इस स्थान से प्रस्थान कर रहे हैं।"

(१३)

शाह हुसेन मीर्जा द्वारा पेशकश भेजना और पादशाह का कन्धार की ओर प्रस्थान[2]

जब बाबर कुली शाह हुसेन मीर्जा की सेवा मे पहुँचा तो उसने कहा कि, "हज़रत पादशाह प्रस्थान कर रहे हैं, उनकी यात्रा की कोई व्यवस्था करनी चाहिये।' सक्षेप मे, आपस मे निश्चय किया कि, 'दो हज़ार[3] खरवार अनाज तथा तीन सौ ऊँट रौनाई नामक ग्राम मे पहुँचा दिए जाय (६० ब) ताकि वहाँ से (वे अपनी) व्यवस्था करके चले जाये।" हज़रत पादशाह ने असबाब को नौकाओं में लदवाया और रौनाई नामक ग्राम मे पडाव किया। अनाज तथा ऊँट भी उसी मज़िल पर पहुँच गए। हज़रत पादशाह ने उस स्थान पर प्रत्येक के सम्मान के अनुसार ऊँट बाँट दिए[4], और सीहान की ओर चल खडे हुए।

यादगार नासिर मीर्ज़ा की दुर्दशा

यादगार नासिर मीर्जा को शाह हुसेन मीर्जा की पुत्री से विवाह तथा पादशाही के लोभ ने, जिसका बीच मे उल्लेख हो चुका है, अभिमानी बना दिया था। उसे अत्यधिक अपमानित करके *निकाल दिया गया। शाह हुसेन मीर्जा ने आदेश दिया कि, 'मीर्जा यादगार नासिर के प्रत्येक आदमी* से एक शाहरुखी, प्रत्येक ऊँट के लिए ७ शाहरुखिया तथा प्रत्येक घोडे के लिये ५ शाहरुखिया[5] ली

१ चिंगेज़ी विधान।
२ हुमायूं शाही तथा जवाहर शाही में यह पृथक् कथन नहीं है।
३ च, छ एव ज में 'दस हज़ार खरवार (गधों के बोझ के बराबर)'।
४ च, छ एव ज में —" जो पेशकश निश्चित हुई थी, वहा प्रस्तुत की गई। उन्हें प्रत्येक की आवश्यकतानुसार बाट दिया गया"।
५ च, छ एव ज में यह वाक्य अधिक स्पष्ट है —"उसने आदेश दिया कि सिंध नदी के घाट पर मीर्जा से प्रत्येक आदमी के लिये एक शाहरुखी, प्रत्येक ऊट के लिये ७ शाहरुखियाँ और प्रत्येक घोडे के लिये ५ शाहरुखिया बाज (कर) के रूप में ली जायें।"

जाये।" सक्षेप मे मीर्जा यादगार नासिर हज़रत पादशाह से पृथक् हो गया। शाह हुसेन मीर्जा ने उसे इस प्रकार की पादशाही तथा पुत्री दी[१] कि सिंध नदी से अत्यधिक अपमानित करके विदा (६१ अ) किया। निसन्देह अपने आश्रयदाता से पृथक् होने के कारण वह इस शोचनीय दशा को प्राप्त हुआ।

हुमायूं का सौहान की ओर प्रस्थान

हज़रत पादशाह ने सौहान से प्रस्थान किया। दो रात्रि के उपरान्त फतहपुर गदाना में पहुँचे। वहाँ से दो रात उपरान्त दो कड़ुए तथा मीठे जल के चश्मो के बीच में पडाव किया। पूछा कि 'मीठे पानी का चश्मा कौन है?" गुप्तचर[२] ने निवेदन किया कि, "७ कुरोह पीछे रह गया।" हज़रत पादशाह ने[३] क्रोध प्रदर्शित करते हुए कहा कि, "मीठे जल के चश्मे पर क्या नही उतारा?" यह शाह हुसेन मीर्जा का सकेत था कि, "उन्हें यह चश्मा तथा यह मार्ग न मिलने पाये, सेना को कड़ुए पानी के चश्मे पर पहुँचा दे।" उन्होंने स्वय कुछ लोगो को लेकर मीठे जल के चश्मे पर एक पहर रात्रि व्यतीत हो जाने के उपरान्त पहुँच कर पडाव किया तथा उस चश्मे पर वुज़ू किया और नमाज पढ़ी। मीठा जल पिया। लोगो ने जल ले लिया और वहाँ से अपने लश्कर में आ गए। उस दिन ठहरे रहे।

हुमायूं के शिविर पर कुरकचियो द्वारा छापा

(६१ ब) अस्र की नमाज के समय प्रस्थान किया। मज़िल के समीप आफताबखाने का ऊँट थक कर गिर पडा। तुच्छ जौहर आफताबची ने हज़रत से निवेदन किया कि, "ऊँट थक जाने के कारण यात्रा नही कर सकता।" लोगो को आदेश हुआ कि, 'उस ऊँट पर से असबाब उतार कर मंजिल पर, जो कि निकट है, लाया जाय।' किसी ने इस बात की ओर ध्यान न दिया। यह ऊँट पीछे था कि कुरकची[४] लोग पहुँच गए। उन्होने लूट मार तथा बाणो की वर्षा प्रारम्भ कर दी। एक बाण का घाव तुच्छ जौहर आफताबची के भी लगा और एक बाण रूई[५] तोपची के लगा। जौहर फरियाद कर रहा था कि कुरकची आकर टूट पडे और खेमे के अतिरिक्त शलीते[६] में जो कुछ सामग्री थी, वह ले गए। इन लोगो ने शोर मचाया। हज़रत पादशाह ने शोर सुना और पूछा कि, "यह शोर कैसा है?" तरदी बेग ने कहा, "यह उन लोगो का शोर है जो (शिकार) खेल कर आ रहे है।' पुन हज़रत पादशाह ने कहा कि, "लोग कहते है कि हमारे ऊपर कुरकचियो ने आक्रमण किया, खेल

१ व्यग्य की दृष्टि से लिखा गया है अर्थात् न तो उसे पादशाही ही दी और न अपनी पुत्री का विवाह ही किया
२ क, ख, ग, घ मे 'मुखबिर' च, छ एवं ज में 'शम्भे से—एक व्यक्ति'।
३ च, छ मे —' पादशाह ने मीर मज़िल के प्रति क्रोध प्रदर्शित करते हुये कहा कि, 'मीठे जल के चश्मे पर क्यों नहीं मंज़िल की?' उन्होंने हृदय में सोचा कि यह मीर्जा की दुष्टता होगी। उसने इन लोगो को कुछ दिया होगा कि यहा मजिल न करायें। अन्ततोगत्वा शिविर को वहीं छोड कर अपने विश्वासपात्रों सहित वापस हुये और उस चश्मे पर पहुँचे। वहां वुज़ू किया और नमाज पढ़ी"। (च पृ० ५६ अ ५६ ब, छ ४८ ब)
४ कुरकची का अर्थ 'शिकार के रक्षक' होता है। सम्भवत उन लोगों से तात्पर्य है जो शिकार की देख भाल करते हों।
५ च, छ एव ज में यह नाम स्पष्ट रूप से पढ़ा नहीं जाता।
६ सम्भवत ऊँटों पर लदे हुये समान से तात्पर्य है।

(६२ अ) की क्या बात है[1] ?" इसी कारण, ख्वाजा मुअज्जम घोडा दौडाता हुआ आया। उसने देखा कि कुरुकची लोग असबाव उठाकर भाग गए। ऊँट तथा खेमा पडाव पर पहुँचाया गया।

वहाँ से प्रस्थान करके दश्त[2] में पडाव किया। उस भूमि की यह विशेषता है कि गर्मी के मौसम मे ऐसी लू चलने लगती है जिससे मनुष्य के शरीर के समस्त अग पिघलने लगते हैं और उसमें प्राण नही रह जाते। शीत ऋतु मे इतनी ठडक पडती है कि यदि भोजन देग से निकाल-कर थाल मे रख दिया जाय तो बरफ बन जाता है। सक्षेप मे, बिना वस्त्र तथा बिना भोजन के उन्हे उस मजिल पर इतनी कठिनाई और परेशानी उठानी पडी कि उसका उल्लेख सम्भव नही! हजरत पादशाह के पास एक पोस्तीन थी। उसके अवरे को पृथक् करके मेहतर वासिल को बुल-वाया और कहा कि, "यह पोस्तीन बैरम वेग को पहना दो कारण कि वह जाडा खा रहा होगा।" अवरा मेहतर अनीस को प्रदान कर दिया जो अब मेहतर खानी की उपाधि द्वारा सुशोभित है।

संसार वालों के उस शाह का शाह तहमास्प से भेंट हेतु ख़ुरासान की ओर प्रस्थान[3]

मीर्ज़ा अस्करी द्वारा आक्रमण

वहाँ[4] से प्रस्थान करके साल शाल मस्तान नामक स्थान पर जो कन्धार का एक परगना है, पडाव किया। हजरत (पादशाह) एक बाग में ठहरे हुए थे कि एक आदमी ने आकर अभिवादन (६२ ब) किया और निवेदन किया कि, "मीर्ज़ा अस्करी के भी कोई समाचार है ?" हजरत पाद-शाह ने कहा कि, "नहीं। यदि तुझे ज्ञात हो तो बता।" उसने निवेदन किया कि, "लोगों को एक कोने मे कर दिया जाय।" लोग कोने में कर दिये गए। तुच्छ दास जौहर उपस्थित था। उसने कहा कि, "इसे भी अलग कर दे।" हजरत पादशाह ने कहा कि, "यह बालक है, कोई आपत्ति नही।" उसने कहा कि, "कल दो पहर व्यतीत होने के पूर्व ही मीर्ज़ा अस्करी पहुँच जायेगा और वह आपके शत्रुओं[5] को बन्दी बना लेना चाहता है।" हजरत पादशाह ने पूछा कि, "यह समाचार तुझे कहाँ से प्राप्त हुए ?" उसने निवेदन किया कि, "इस दास का पुत्र मीर्ज़ा के साथ आ रहा था। वे लोग कोतल पज में पर्वत के दर्रे से पार हो रहे थे। वह अकेला[6] था, जल्दी चला आया।" यह समाचार सुनते ही हजरत पादशाह अपने खेमे मे पहुँचे। जो कुछ मौजूद था उससे रोज़ा खोला

१ च, छ एव ज में —"हजरत पादशाह ने कहा, 'कुरुकचियों का नाम लिया जाता है। खेल न होगा।' ख्वाजा मुअज्जम घोडा भगाता हुआ पहुँचा। कुरुकची सामान लेकर भाग गये"।

२ दश्त का अर्थ कानन, वन, जगल, ब्याबान होता है।

३ च, छ एव ज में यह बाब (खड २) है। **तज़किरतुल वाकेआत** में यहा कोई फस्ल नहीं और न इस प्रकार बाब (खड) विभाजित किया गया है। (च पृ० ५७ अ, छ : पृ० ४६ अ, ज : पृ० ५६ अ)।

४ च, छ एव ज में —"क्योंकि उन्होंने अपने सम्मानित हृदय में यह सकल्प कर लिया था कि मैं भाइयों की विला-यत एवं इमलाक की ओर ध्यान न दूंगा, अतः उन्होंने खुरासान के भ्रमण के उद्देश्य से साल मस्तान के उद्यान में जो कन्धार की सरहद पर एक परगना है पडाव किया।"

५ आपको, च, छ एव ज में —"उसके इरादे और ही हैं"।

६ "जरीदा —अकेला अथवा थोड़े से साथियों सहित"।

और सहर[१] के समय भोजन किया[२]। तदुपरान्त कहा कि, 'हिन्दुस्तान वाले बड़े विचित्र प्रकार से स्वामी-भक्त हैं।" तदुपरान्त दासों की ओर दृष्टि करके कहा कि, 'सतुष्ट रहो, यदि ईश्वर ने चाहा तो (६३ अ) मित्रों की इच्छानुसार समस्त कार्य पूरे हो जायेंगे।" उन्होंने पादशाह की कुशलता हेतु शुभ कामना करने के लिये हाथ उठाये। हज़रत पादशाह प्रातकाल की नमाज में व्यस्त हो गए। नमाज़ के उपरान्त वे आराम से सो गए। लोग इधर उधर अपने कार्य हेतु चले गए। दोपहर के समय जगल की ओर से एक सवार घोड़ा दौड़ाता हुआ आया। उसने हज़रत पादशाह के समाचार पूछे कि, "वे क्या कर रहे हैं ?" सक्षेप में, वह बड़ी तेज़ी से पहुँचा[३]। लोगों ने कहा, "अपने घोड़े को इसी स्थान पर छोड़ दो और चले जाओ।"उसने न छोड़ा। अपने हाथ में घोड़े की लगाम लपेटकर खेमे में प्रविष्ट हो गया। हज़रत पादशाह सो रहे थे। उसने उन्हें जगाया। निवेदन किया कि, "कुछ ज्ञात है " हज़रत पादशाह ने कहा कि, 'नहीं।' उसने निवेदन किया कि, "मीर्ज़ा अस्करी शत्रुओं[४] को हानि पहुँचाने के लिए आ रहा है।" हज़रत पादशाह ने पूछा, 'तेरा क्या नाम है ?" उसने कहा कि, "चोली बहादुर[५], कौम ऊज़बेक, कासिम हुसेन सुल्तान का दूत।" हज़रत पादशाह ने कहा, "सच है ?"

बैरम बेग को बुलवाया और पूछा कि, "क्या करना चाहिए ?" उसने कहा कि, "यहाँ (६३ब) से चल देना चाहिये।" हज़रत पादशाह ने कहा कि, 'युद्ध करना चाहिये। बैरम बेग ने कहा कि, 'हमारी सख्या बड़ी थोड़ी है और वे बड़ी अधिक सख्या में हैं, यही उचित होगा कि यहाँ से चले जायें।" हज़रत पादशाह ने कहा, 'हमारे पास दो ज़र्बज़न[६] हैं। शागिर्दपेशा में अधिकाश बन्दूक चलाने वाले हैं, दुष्टों पर बन्दूक चलाई जायेगी। ईश्वर की जो इच्छा होगी, वह होगा", किन्तु मीर्ज़ा के लश्कर के अधिक होने तथा इन लोगों के अल्प सख्या में होने के कारण यह निश्चय हुआ कि प्रस्थान करना चाहिये[७]।

हज़रत पादशाह ने तरदी बेग से घोड़ा माँगा। उसने न दिया। सक्षेप में, हज़रत बेगम को घोड़े पर सवार करके लश्कर से निकले[८]। कुल ४२ व्यक्ति थे, ४० पुरुष तथा दो स्त्रियाँ, एक हज़रत मरियम मकानी बेगम जियु और दूसरी हसन अली ईशक आका की पत्नी जो बिलोच की पुत्री थी।

१ दिन भर के रोज़े के पूर्व सूर्योदय से काफी पूर्व किये जाने वाला अल्प-आहार।
२ च, छ एव ज में, 'अधिक भोजन किया'।
३ च, ■ एव ज में —'क्योंकि वह बड़ा तेज़ी से आ रहा था अत जो लोग उपस्थित थे, उन्होंने पूछा, 'कोई समाचार लाये हो ?' उसने कहा, 'हाँ'। लोगों ने कहा, 'अपना घोड़ा यहीं छोड़ दो और स्वय सेवा में चले जाओ'। उसने अपना घोड़ा न छोड़ा और अपने घोड़े की लगाम अपने हाथ में लपेटे हुये खेमे में प्रविष्ट हो गया।'
४ बाप को।
५ च, छ एव ज में 'चूक़ा बहादुर ऊज़बेक, कासिम हुसेन सुल्तान का दूत', क, ख में "चोली बहादुर"।
६ ज़र्बज़न (एक प्रकार की तोप)।
७ च, एव छ में —" समस्त बुद्धिमान् अमीरों ने भी बैरम बेग का समर्थन किया और आग्रह किया कि हमारा अन्य उद्देश्य है।"
■ हुमायूं शाही एव जवाहर शाही में यह विवरण नहीं है।

समस्त शागिर्दपेशा इत्यादि को हजरत शाहजादे की सेवा में छोड दिया। हजरत शाहजादे (६४ अ) उस दिन डेढ वर्ष के थे।

मीर्जा अस्करी का हुमायू के शिविर पर अधिकार

ख्वाजा सिकन्दर मीर्जा अस्करी का सद्र हजरत पादशाह के लश्कर मे पहुँचा। जब उन्हे न देखा तो कहा कि, 'मीर्जा के आने का कारण यह था कि वह हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त करे। ऐसे जगलो में वे क्या चले गए ?' एक घडी उपरान्त मीर्जा अस्करी हज़रत पादशाह के लश्कर मे पहुँचा। माहम अनगा हजरत शाहजादे को मीर्जा के समक्ष लाई और मीर्जा ने उन्हे गोद में लिया। हज़रत पादशाह की सरकार में जितनी वस्तुएँ थी, उनका निरीक्षण किया। एक सन्दूक में माजून सरीखे विचित्र रग के पत्थर थे। क्योकि वह भारी था अत उसने लोभ प्रदर्शित किया और समझा कि सोना होगा। उस सन्दूक को खोला किन्तु पत्थर निकले। बडा दु ख हुआ। सक्षेप में व शाहजादे को कन्धार की ओर ले गए। तुच्छ जौहर आफताबची शाहज़ादे के साथ कन्धार में रह गया।

हुमायू का बिलोचो की ओर प्रस्थान

कन्धार पहुँचने के उपरान्त दास जौहर आफताबची भाग कर हेरी नामक स्थान मे हजरत के चरणो का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। हजरत पादशाह ने अपनी शुभ जिह्वा से कहा (६४ ब) कि जिस समय सेना से पृथक हुए तो हमारे साथ ४० हिन्दुस्तानी अश्वारोही तथा २ स्त्रियाँ थी एक मरियम मकानी बेगम तथा दूसरी कुल बिलोच स्त्री। रातो रात यात्रा करते हुए चले जा रहे थे कि कुत्ते की आवाज कान में पहुँची। हजरत पादशाह ने कहा कि इस स्थान पर आबादी होगी।' इसी बीच में बिलोचो ने पहुँचकर मार्ग रोक लिया। हजरत ने कहा हम उन लोगो से बात करेंगे[1]। बिलोचो ने पूछा कि तुम कौन लोग हो ? हजरत पादशाह ने कहा कि, "मैं हुमायूं पादशाह हूँ। बिलोच आपस में वार्ता करने लगे कि 'मलिक खत्ती इस स्थान पर नही है[2]। हजरत पादशाह यहाँ पहुँच गए हैं, हमें चाहिये कि उन्हे उतार ल। निवेदन करें कि, "हज़रत पादशाह ऊपर आ जाय और किसी को भेज देना चाहिये जो मलिक खत्ती को सूचना कर दे।' हज़रत पादशाह ने उस बिलोच स्त्री से जो साथ थी पूँछा कि बिलोच लोग क्या कह रहे हैं ?' उसने बताया कि, 'यह लोग बातें कर रहे है कि मलिक खत्ती इस स्थान पर नही है हजरत पादशाह इस स्थान पर आ गए है जब तक मलिक खत्ती आये उस समय तक हजरत पादशाह (६५ अ) को उतार लेना चाहिये। बिलोचो ने कहा कि, ऊपर आ जायें। तदुपरान्त हज़रत पादशाह ऊपर पहुँचे। बिलोच लोगो ने अभिवादन किया। ज़ीलूचा[3] लगवाकर हजरत पादशाह ने पडाव कर दिया। पीछे हजरत बेगम और कुछ दूर पर ख्वाजा अम्बर थे[4]। प्रात काल हजरत पादशाह ने नमाज़ पढी। नमाज पढ चुकने के उपरान्त मलिक खत्ती आ गया। हजरत पादशाह

१ च एव छ में —"उन्होंने कहा कि, 'इनमे कोई बात न करे। हम स्वय इन लोगों से बात करेंगे।"
२ च एवं [redacted] में — 'हमारी कौम का सरदार मलिक हत्ती (ज में खत्ती) इस स्थान पर नहीं है।"
३ ज में 'कालीचा', च, छ में इस प्रकार का कोई शब्द नहीं। 'जुलया अथवा 'जूलचा भी लिखा गया है।
४ च, छ में हमीदा बानो बेगम एव ख्वाजा अम्बर का कोई उल्लेख नहीं। ज में केवल हमीदा बानो बेगम का उल्लेख है।

ने बताया कि, "जब मलिक खत्ती आ रहा था तो मैंने अपने हृदय में सोचा कि "यदि इस व्यक्ति के विचार हमारे सम्बन्ध में अच्छे हैं तो हमारे दायें हाथ की ओर से आयगा।" वह बायें हाथ की ओर से आ रहा था। आते समय एक बारगी दायें हाथ की ओर पहुँचकर अभिवादन किया[1]। हजरत पादशाह ने उसके कुशल समाचार पूछे। तदुपरान्त उसने निवेदन किया कि, 'इससे तीन दिन पूर्व मीर्जा कामरान का फरमान प्राप्त हुआ था कि, 'यदि हुमायूँ पादशाह उस ओर आयें तो जाने मत देना और उन्हे बन्दी बना लेना।' क्योंकि हजरत पादशाह अब हमारे सिर आँखों पर (६५ ब) आ गए हैं[2] अत यह उचित होगा कि सवार हो ताकि मैं अपनी सीमान्त तक आपको पहुँचा दूँ।" हजरत पादशाह सवार हो गए। १५ कुरोह की यात्रा करके अपनी सरहद तक पहुँचाया और विदा हो गया।

हुमायूँ का गरमसीर पहुँचना

वहाँ से गरमसीर[3], जो कन्धार तथा गुरागान की सीमा थी, पहुँचे। सैयिद अब्दुल हई गरमसीर के हाकिम को सूचना मिल गई। उस मूर्ख ने किसी सौजन्य का प्रदर्शन न किया। उसके दास ने हजरत पादशाह का आतिथ्य किया। इस क्रोध में उसने अपने दास को अन्धा बनवा दिया। वे इसी पडाव पर थे कि ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद, जो मीर्जा अस्करी के साथ था, कन्धार से भागकर हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ। खेमा, खच्चर तथा घोडे जो लाया था उन्हे भेंट किए। हजरत पादशाह ने आदेश दिया कि, "हमारी सरकार के ब्यूतात[4] का प्रबन्ध तेरे सिपुर्द है।" उसने स्वीकार किया।

हुमायूँ का सीस्तान पहुँचना

वहाँ से प्रस्थान करके एक पडाव से दूसरे पडाव को पार करते हुए सीस्तान नामक स्थान पर पहुँचे। उस नगर मे अहमद सुल्तान[5] शाह तहमास्प का अमीर हाकिम था। वह हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ और लैलतुल क़द्र नामक घोडा पेश किया[6]। हजरत पादशाह अपनी मजिल (६६ अ) पर उतर पडे। जो कुछ सेवा का हक था, उसे पूरा किया और निवेदन किया कि, "कन्धार इस स्थान से निकट है। जो सेवक भी शोचनीय दशा में होगे, वे सेवा मे उपस्थित होगे। आप यहाँ ठहरें।" वे कई दिन तक रहे। तदुपरान्त हाजी मुहम्मद खा कोकी[7] एव मीर्जा कामरान के कोका हसन बेग कोका ने उपस्थित होकर हजरत पादशाह के रिकाब चूमे।

१ च, छ एव ज मे —"(हजरत ने) कहा, 'अल्हम्दो लिल्लाह। जो मैंने सोचा था वह सच निकला।"
२ च, छ में —"किंतु यह मेरा सौभाग्य है कि आप तशरीफ ले आये। हमारे सिर आखों पर अपने पाव रक्खें। उचित होगा कि आप अभी सवार हो जायें ताकि आपको अपनी सरहद तक पहुँचा दू।"
३ च, छ एव ज में 'गरमसील'।
४ च, छ एव ज में —"सरकारे ब्यूतात खाना तेरे अधीन रहे।"
५ च, छ में 'सुल्तान अहमद'।
६ च, छ एव ज में 'पेशकश किया'।
७ क, ख, ग एव घ में 'कोका'।

शाह तहमास्प को पत्र

बैरम बेग तथा अन्य अमीरों ने कहा कि, "इस स्थान पर रहने से हजरत शाहे आलम पनाह[१] शाह तहमास्प अपने हृदय में क्या सोचेंगे? यही उचित होगा कि यहाँ से चल दें[२]। एक पत्र हजरत शाह आलमपनाह के पास लिखकर भिजवाया कि 'हम आप की विलायत में आ गए, "तदुपरान्त अब जो कुछ भी आदेश हो।" पत्र इस प्रकार है —

मुहम्मद हुमायूँ का निष्ठा-युक्त प्रार्थना-पत्र[३]

शुभ-कामनाओं एवं निष्ठा के, जिसमें लेश मात्र को भी दिखावा नहीं, प्रदर्शन के उपरान्त, जो विश्वासपात्रों के उत्तम कर्त्तव्यों की आवश्यकता है, ज्ञात होना चाहिये कि मैं दासता के (प्रदर्शन) की कमी एवं लज्जा की अधिकता के कारण अपने आपको हजरत शाह के ऐश्वर्य एवं गौरव की सूर्य रूपी दृष्टि के समक्ष, जो नाना प्रकार के गुणों एवं कुशलताओं का प्रतिबिम्ब है, कण के समान समझता हूँ और यह निवेदन करता हूँ कि यद्यपि मैंने अपने मुख को उत्कृष्ट सेवकों की श्रेणी में नहीं रक्खा है किन्तु अपने आपको प्रेम एवं निष्ठा के फंदे में फंसा दिया है। आपकी इच्छाओं की पूर्ति सर्वदा मेरा लक्ष्य रहा है और मेरा हृदय आपके हर्ष वर्धक एवं नूर से परिपूर्ण दरबार की, और जो नाना प्रकार के सौभाग्य एवं चमत्कार का साधन है, सर्वदा आकृष्ट रहा है। उस ओर आकृष्ट होने के कारण मेरा अत्यधिक उपकार होता रहा है, यहां तक कि कमीने युग एवं सर्वदा परिवर्तनशील आकाश के कुचक्र से हिन्दुस्तान के विशाल देश से अंधकारमय एवं अनाकर्षण-शून्य सिन्ध की ओर पहुँचा।

शेर

'जो कुछ मेरे सिर पर बीतनी थी, वह बीत गई,
क्या समुद्र, क्या पहाड़, क्या जंगल, क्या बयाबान।'

अब अभिलाषा का पक्षी अपने पंख, ऐश्वर्य एवं वैभव के सूर्य के सौन्दर्य के दर्शन हेतु फैला रहा है। दैवी अनुकम्पा से यह आशा है कि अगाध समुद्र रूपी दरबार में जो कि असंख्य अभिलाषाओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ति का स्रोत है, उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त करने के उपरान्त, जो कुछ प्रार्थना करनी होगी, वह करूँगा।

१ संसार को शरण देने वाले।

२ च, छ में —"बैरम बेग एवं अन्य अमीरों के हृदय में आया कि, 'यह शाह की विलायत है। उसकी भेंट, बिना उसकी अनुमति के खतरनाक है। यहां से प्रस्थान करना चाहिये और शाह को लिख देना चाहिये कि हम आपके राज्य में आपकी भेंट की इच्छा से पहुँच गये हैं। अब जो आदेश हो।" (च पृ० ५६ ब, छ. पृ० ५१ब)। ज में —"क्योंकि यह शाह की विलायत है अतः पादशाह के इस स्थान पर रहने से शाह के हृदय में खतरे उत्पन्न होंगे। यहां से प्रस्थान कर दें।"

३ क में यह पत्र नहीं है। इसके अतिरिक्त **हुमायूँ शाही** एवं **जवाहर शाही** में भी यह पत्र नहीं है।

हुमायूँ पादशाह का कतआ जिसकी उन्होने रचना की

'हे पादशाह ! दीर्घकाल से मेरे उत्कृष्ट साहस का अनका[१],
सतोष के पर्वत की चोटी पर अपना घोसला बनाये है।
गेहूँ दिखा कर जौ बेचने वाले कमीने युग ने,
मेरे हृदय के तोते को बाजरे पर सतुष्ट कर रक्खा है।
मेरा शत्रु शेर है, और दीर्घ काल से वह मेरी ओर पीठ किए था,
अब शत्रुता के कारण मेरी ओर मुख किए है।
मैं शाह से यह प्रार्थना करता हूँ, कि वे मुझ से वही व्यवहार करे,
जो सलमान[२] के प्रति अली ने अरजन के जगल मे किया था[३]।'

(१८)

जम सरीखे शाह का भेंट की इच्छा से सम्बन्धित पत्र हजरत पादशाह को पहुँचना[४]

हजरत शाहे आलम पनाह शाह तहमास्प सफवी ने अपने अमीरो एव पदाधिकारियो को रमान भेजा कि जिस मजिल पर हजरत हुमायूँ पादशाह पहुँचें तो वे सेवा करने मे कोई कसर न ठा रक्खें। जिस प्रकार वे मेरे आज्ञाकारी रहते हैं, उनकी आज्ञाकारिता उससे भी अधिक करे। जरत पादशाह को पत्र लिखा, "आप बिना किसी सकोच के पधारे। आपकी इच्छानुसार आपके द्देश्य की पूर्ति की जायगी।" शाहे आलम पनाह के पत्र में यह शेर उनके हाथ से शीर्षक के रूप लिखा था .—

शेर

'कस्तूरी सरीखा एव सुगधित, प्रात काल,
तेरा पत्र लाई सबा, ईश्वर करे कुशल हो।'

अत्यधिक प्रेमवश उन्होने यह शेर पत्र मे लिखवाया :

एक प्रसिद्ध काल्पनिक पक्षी। किसी अप्राप्य वस्तु को भी अनका कहते हैं।

सलमान, इस्फहान के समीप के एक छोटे से स्थान के निवासी थे। इसी कारण वे सलमान फारसी कहलाते थे। बाद में हजरत मुहम्मद के सम्पर्क में आकर वे मुसलमान हो गये। ३३ हि० (६५३ ई०) में मदाएन (ईरान) में उनका निधन हो गया।

हजरत अली ने सलमान को शेर के आक्रमण से बचाया था। शेर शाह के शत्रु होने के कारण इन शब्दों का प्रयोग किया गया है।

च, छ एवं ज के अनुसार बाब २ फस्ल १; (च॰ पृ० ६०अ, छ: पृ० ५२अ, ज॰ पृ० ६२ब)।

वहाँ से सिमनान और वहाँ से अगजवार और फिर वहाँ से इस्हाक चश्मे और वहाँ से मतीमा किले में पहुँचे और अखरोट के वृक्ष के नीचे उतर पडे।

मीर्जा सुलेमान के दूत का आगमन

उनकी दृष्टि जगल की ओर थी कि अचानक एक पैक[1] दृष्टिगत हुआ। वे समझ गये कि वह पैक कहीं से आ रहा होगा। पैक ने उपस्थित होकर अभिवादन किया। उन्होंने पूछा कि, "कहाँ से आ रहे हो ?" उत्तर दिया कि "किलये[2] जफर से।" हजरत पादशाह ने पूछा कि, "कोई समाचार है ?" उसने कहा कि, "हाँ।" आदेश हुआ कि, "बताओ।" उसने मीर्जा सुलेमान का प्रार्थनापत्र प्रस्तुत किया। पादशाह ने प्रार्थनापत्र पढ़कर[3] कहा कि, "इन कृतघ्न कोकाओ के प्रति आश्चर्य होता है। उन्होने हजरत बाबर बादशाह[4] के साथ इतना दुर्व्यवहार किया और मेरे साथ भी वही दुर्व्यवहार कर रहे हैं।' मीर्जा सुलेमान का कोका, जिसका नाम अल्लाह कुली अन्दराबी[5] था, जाकर मीर्जा कामरान को लाया। मीर्जा सुलेमान को सपरिवार बन्दी बनाकर काबुल ले गए। तदुपरान्त पत्र का उत्तर लिखा कि, "तुम्हारे प्रति शुभ कामनाएँ करता हूँ। तुम आशा रखो, ईश्वर[6] ने चाहा (६८ ब) तो शीघ्र ही तुम्हारी इच्छा पूरी हो जायेगी।" पैक को पत्र देकर विदा कर दिया और मौखिक सदेश भेजा कि मीर्जा सुलेमान को मेरा सलाम पहुँचाकर कह दो कि यह सब हमारे कारण है कि तुम इतने कष्ट भोग रहे हो, आशा रखो कि मित्रो की इच्छानुसार सफलता प्राप्त हो जायेगी[7]।"

नीबू जल के पात्र का टूटना

(मध्याह्नोत्तर) की दूसरी नमाज उपरान्त प्रस्थान किया। नीबू के जल का एक शीशे का पात्र था। सवार होने के समय जौहर यद्यपि आफताबची था किन्तु रिकाब के साथ सवार होता था। उसने मेहतर दौला रिकाबदार से कहा कि, "नीबू के पानी का शीशे का पात्र मुझे दे दे। जब तू सवार होगा तो शीशा तेरे हाथ में दे दिया जायेगा।' उसने फकीर जौहर आफताबची की बात स्वीकार न की। उत्तर दिया कि, "सवार होने के उपरान्त हम स्वय शीशा भूमि से उठा लेंगे।" जब वह सवार होकर शीशे को भूमि से उठाने लगा तो उसके हाथ से गिरकर टूट गया। जब वे एक स्थान पर पहुँचे तो सायकाल की नमाज का समय आ गया। हजरत पादशाह तहारत के लिए उतर पड़े, और नीबू जल माँगा ताकि नीबू का शरबत तैयार किया जाय। शीशे

१ प्यादा, दूत।
२ च, छ में 'पगाने किलये जफर', ज में, 'सगाने किलये जफर (किलये जफर के सरदारों के पास से)'।
३ च, छ एवं ज में 'खुल्लम खुल्ला'।
४ च, छ में 'फिरदौस मकानी'।
५ च, छ में 'अली कुली अन्दराबी' ज में 'कोकये मीर्जा सलेमान, अली कुली नाम अन्दराब'।
६ यदि ईश्वर ने चाहा तो शीघ्र दुःख की साय उत्तम रूप से प्रसन्नता की प्रात में परिवर्तित हो जायेगी।
७ च, छ एवं ज में यह शेर भी है —

शेर

'खोया हुआ यूसुफ किनआन से लौट आयेगा, चिन्ता मत कर,
दुःख की कोठरी एक दिन वाटिका बन जायेगी, चिन्ता मत कर।'

(६९ अ) की घटना के विषय में निवेदन किया गया। हज़रत पादशाह रुष्ट हो गए। फ़कीर जौहर तथा दौला[1] को पैदल करके रवाना किया। लगभग दो कुरोह तक पैदल चलते रहे। तदुपरान्त उन्होंने कहा कि, "जौहर आफ़्ताबची का कोई अपराध नहीं। वह सवार हो जाय। अपराध दौला का है। वह पैदल चले[2]।"

बैरम खां की शाह से भेंट

तदुपरान्त वहाँ से साऊक योलाक[3] चश्मे पर और वहाँ से दर्स नामक किले पर पहुँचे। वहाँ हज़रत शाह आलम पनाह का पत्र प्राप्त हुआ कि अपने वकील बैरम बेग को भेज दें। हज़रत पादशाह ने बैरम बेग को १० अश्वारोहियों सहित हज़रत शाहे आलम पनाह की सेवा में भेजा। शाह कज़वीन में थे, उसने पहुँच कर शाहे आलम पनाह के रिकाब चूमे। तदुपरान्त हज़रत शाह ने आदेश दिया कि, "सिर के बाल को कटवाओ और ताज[4] पहिनो।" बैरम बेग ने निवेदन किया कि "दास अन्य व्यक्ति का सेवक है। वह उसके विषय में जो आदेश होगा उसे स्वीकार करेगा।" हज़रत शाहे आलम पनाह को यह बात अच्छी न लगी। कहा कि, 'तू अपने अधीन है।" कुछ लोगों को जो चिरागकुश[5] कहलाते थे और इससे पूर्व बन्दी थे, सुन्नी[6] कह कर मृत्युदंड दे दिया गया।

हज़रत शाहे आलम पनाह ने उस स्थान से प्रस्थान करके जकी जकी नामक चश्मे पर पड़ाव किया और पत्र लिखा कि, "हुमायूँ पादशाह अपने स्थान पर रहें। जब मैं बुलवाऊँ तब आयें तथा

१ हस्तलिपियों में 'दौना'।

२ च, छ में यह कहानी नहीं है।

३ च, छ में 'मूक़ यलाक़' ज में यह नाम स्पष्ट नहीं, "शौक़ मुलाज़ी" के समान कुछ लिखा है।

४ ताज अथवा ताजे हैदरी, लाल रेशमी कपड़े एवं सोने के काम का मुकुट जिसे ईरान के पादशाह पहनते थे। शाह इस्माईल के पिता हैदर के नाम पर यह ताजे हैदर अथवा ताजे हैदरी कहलाता था। यह ऊँचा सूचियाकार होता था और १२ इमामों के सम्मान की दृष्टि से १२ लड़ों में विभाजन होता था। बाद में ईरानी पदाधिकारियों एवं सैनिकों को भी इसी प्रकार की टोपी पहिनने का आदेश मिल गया। इसी कारण वे किज़िलबाश अथवा लाल सिर वाले प्रसिद्ध हो गये।

५ इस फ़िर्के के प्रामाणिक ग्रन्थों का पता नहीं चल सका है। केवल उनके शत्रुओं के लेखों से ही उनके विषय में थोड़ा बहुत ज्ञान प्राप्त हो सका है। कहा जाता है कि उनका विश्वास है कि संसार अनादि काल से चला आ रहा है। वे कयामत पर विश्वास नहीं रखते। उनका विश्वास है कि हज़रत मुहम्मद के समय में तो सब के लिये शरीअत का पालन करना परमावश्यक था किन्तु बाद में केवल मनुष्य को अपनी बुद्धि एवं विवेक के अनुसार आचरण करना चाहिये। पति एवं पत्नी के सम्बंध हेतु विवाह आवश्यक नहीं। उनके चिरागकुश अथवा 'दीपक बुझा देने वालों' के नाम से प्रसिद्ध होने का कारण यह बताया जाता है कि उनकी धार्मिक सभायें रात में होती थीं जब कि दीपक बुझा दिये जाते थे और स्त्री तथा पुरुष अपनी इच्छानुसार सम्भोग करते थे। जहाँ तक स्त्रियों एवं पुरुषों के इस प्रकार के सम्भोग का प्रश्न है अनेक धर्म वालों के विषय में इस प्रकार के आरोप लगाये जाते हैं। कुछ सुन्नी शीओं पर भी यही आरोप लगाते थे। रौशनाइयों पर आखुन्द दरवेज़ा ने यही आरोप लगाया है। कुछ लोगों का विचार है कि वे इस्माइलियों की किसी शाखा से सम्बंधित थे। तारीखे रशीदी में भी इन लोगों की चर्चा हुई है।

६ वाक्य में 'सुन्नी गोयान' स्पष्ट नहीं। "दरा रोज़ चन्द नफ़र चिरागकुश रा कि क़त्ल यक़ी दर बन्द ख़ाना बूदन्द, सुन्नी गोयान कुश्तन्द।"

बूवक बेग को सेवा मे भेज दें।" बूवक बेग ऊजबेक को उन्होंने हजरत शाहे आलम पनाह की सेवा मे भेज दिया। तदुपरान्त शाहे आलम पनाह का आदेश हुआ कि, "हुमायूँ पादशाह कजवीन में चले (६९ ब) आयें और वहाँ तीन दिन तक ठहरें, तथा तीन दिन उपरान्त आकर हमसे भेंट करें।"

हजरत पादशाह का कजवीन पहुँचना एवं शाह से उस क्षेत्र में भेंट[1]

हजरत पादशाह दर्स से रवाना हुए। जब वे कजवीन पहुँचे तो वहा के हाकिम ने उनका स्वागत किया। वे शाहे आलम पनाह के महलो में ठहरे। प्रथम दिन हाकिम ने आतिथ्य का प्रबन्ध किया। दूसरे दिन काजी ने तथा तीसरे दिन सर्व-साधारण ने। जुहर की नमाज के समय वहाँ से प्रस्थान कर दिया।

रात्रि में यात्रा कर रहे थे, अन्तिम पहर था[2]। हजरत पादशाह ने कहा कि, "किसी स्थान पर जल का पता लगाओ ताकि उतर पडे।" लोग इसी खोज मे थे कि समाचार प्राप्त हुए कि बैरम बेग आ रहा है। उसने पहुँचकर रिकाब चूमने का सम्मान प्राप्त किया और निवेदन किया कि, "आप बहुत समीप पहुँच गए[3]।" हजरत पादशाह ने कहा कि, अब वापस होना सम्भव नही।'

शाह तहमास्प द्वारा स्वागत का प्रबन्ध

सक्षेप मे, प्रातःकाल नमाज पढने के उपरान्त सो रहे थे कि बेलदारो ने अपनी धुन मे गाना प्रारम्भ कर दिया और विभिन्न स्थानो को सुव्यवस्थित करते हुए पहुँच गए। हजरत पादशाह उन लोगो के गाने की आवाज से जाग उठे। उन्हे बुलवाया। हजरत समझ गए कि वे शाही बेलदार (७० अ) हैं अत उन्होंने कहा कि, "उन लोगो को मना कर दो कि हम रात्रि मे यात्रा करते रहे हैं। इस समय सोना चाहते हैं।" तुच्छ जौहर आफताबची ने निवेदन किया कि, "यह लोग हजरत शाहे आलमपनाह के बेलदार हैं, वे इस आशय से आये हैं कि पडाव के स्थान को ठीक करें।" उस समय आदेश हुआ कि बैरम बेग को बुलवाया जाय। बैरम बेग ने आकर निवेदन किया कि, "हजरत शाहे आलमपनाह के आदमी हजरत पादशाह के स्वागतार्थ आ रहे हैं। हजरत दीवनखाने[4] में पधारें। हजरत पादशाह ने स्नान करके वस्त्र[5] धारण किए और अपने दीवानखाने म बैठ गए। तदुपरान्त सुल्तानो के वकील और फिर खानो के और तत्पश्चात् मीर्जाओ के वकील उपस्थित हुए। इसके उपरान्त प्रतिष्ठित सैयिद लोगो ने आने का सम्मान प्राप्त किया और हजरत पादशाह को

१ हुमायूं शाही एवं जवाहर शाही के अनुसार दूसरी फस्ल।
२ च, छ एव ज में 'प्रात काल।'
३ च एव छ में —'बहुत समीप पहुँच गये। पहिले ही ठहर जाना चाहिये था। (हजरत ने) कहा 'अब वापस होना सम्भव नहीं'। (च पृ० ६२ब, [illegible] पृ० ५४अ)। ज में इस प्रकार है —"(बैरम बेग ने) निवेदन किया कि आप शहर के समीप पहुँच गये (?) अब वापस होना सम्भव नहीं।"
४ च एवं छ में 'दौलत खाना'।
५ च एव छ में स्नान करने एव वस्त्र धारण करने का उल्लेख नहीं। ज के अनुसार —"नया सरोपा धारण किया।"

सवार करके चल दिए[1]। तदुपरान्त जिस क्रम से लिखा गया है, सुल्तानो तथा खानो ने स्वागत् किया। (७० ब) जब मीर्जाओ की बारी आई तो साम मीर्जा[2] एक बाण के पहुँचने की दूरी पर घोड़े से उतर पड़ा। हजरत पादशाह भी घोड़े से उतर पड़े। दोनो लोगो ने एक दूसरे के प्रति अभिवादन करके भेट की। साम मीर्जा भेट के उपरान्त चल दिया और जिस स्थान पर उतरा था, वहाँ सवार हो गया। वे एक बाण के मार की दूरी तक पहुँच थे कि बहराम मीर्जा[3] सरोपा एव अस्पे गजाला[4] लाया। जसावला[5] ने आकर दानो ओर की सेनाओ के स्थान को सुव्यवस्थित किया।

हजरत पादशाह घोड़े स उतर पड़े। शाहे आलम पनाह की ओर से जा कालीन लाया गया था, वह बिछवाया गया। हजरत पादशाह उस पर बैठे। बहराम मीर्जा ने आकर भेट की। ताज के अतिरिक्त सरोपा पहिनाया गया। वे अस्पे गजाला पर सवार होकर रवाना हुए। अस्पे गजाला हजरत पादशह के सवार होने से शान्त हो गया। तुर्कमानो को बडा आश्चर्य हुआ। उन्होने परीक्षा की थी। उन्हे ज्ञात हो गया कि इस पादशाह का प्रताप उन्नति पर है। वे जा रहे थे कि कूरची बाशी ने उपस्थित होकर सलामअलैक[6] किया और चल खडा हुआ। छोटे लोग किरमानी घोड़ो पर सवार होकर स्वागतार्थ पहुँचे। उन लोगो के आगमन का यह उद्देश्य था कि छोटे बड़े सभी हजरत पादशाह के समक्ष उपस्थित हो[7]।

(७१ अ) जब हजरत पादशाह हजरत शाह आलम पनाह के स्वर्ग रूपी दरबार मे पहुँचे तो हजरत पादशाह ने कालीन के अन्तिम भाग तक पहुँचकर स्वागत् किया। दोनो ने एक दूसरे से भेट की[8]। अपने दाये हाथ की ओर हजरत के बैठने का सकेत करके वे स्वय बैठ गए। उनने प्रोत्साहन हेतु कुशल समाचार एव मार्ग के कष्टो के विषय म प्रश्न किए[9]। तदुपरान्त पूछा कि आप ताज पहि

१ च, छ एव ज में —"सर्व प्रथम सुल्तानों के वकील, तदुपरान्त खानों के वकील, फिर मीर्जाओं के वकील और तदुपरान्त सर्वसाधारण ने अभिवादन किया और सवार करके रवाना किया।"
२ च एव [illegible] में 'साम मीर्जा, शाह का मझला भाई', ज में 'साम मीर्जा'।
३ च, छ एव ज में 'बहराम मीर्जा, शाह का छोटा भाई'।
४ क, ख, ग एव घ में 'अस्प गजाला', च, छ एव ज में, 'अस्प गजाला नाम अथवा गजाला नामक घोड़ा'। गजाला का अर्थ "हिरन का बच्चा, मृगशावक, सूर्य, सूर्य के निकट एक गाव।" सम्भवत यहा अस्पे गजाला का अर्थ 'चञ्चल घोड़ा' है। उसके गुण जो आगे बताये गये है वे इस निष्कर्ष के प्रमाण हैं। इसे नाम न समझना चाहिये।
५ च, छ एव ज में 'मीर तुजुक एव यसावल (वे लोग जो दरबार इत्यादि का प्रबन्ध करते थे)'।
६ च एव छ में 'सलाम'।
७ क, ख, ग एव घ में "गरज अज आमदने ईशा आ बूद कि सगीर व कबीर हम पाय अन्द"। यह वाक्य अधिक स्पष्ट नहीं, च, छ एव ज में —'शाह का उद्देश्य यह था कि छोटे से बड़े तक उपस्थित हों एव अभिवादन करें।"
८ 'शाह ने गिलीम (कम्बल, कालीन)'।
९ च, छ एव ज मे —"   ...प्रश्न किये और कहा,

शेर

'हे! व्याकुल हृदय के लिये तू प्रियतम एव उसका उद्देश्य आया।
मेरे हृदय को तेरे दर्शन की इच्छा थी, क्या अच्छा हुआ तू आया।"

नेंगे ?" हजरत पादशाह ने कहा कि, "ताज सम्मान (का चिह्न) है, पहिनूँगा।" हजरत शाहे आलम-पनाह ने अपने शुभ हाथों से स्वय उनके सिर पर ताज रक्खा[१]। समस्त उपस्थित खानों तथा मुल्तानों ने युद्ध-नाद लगाया। अल्लाह अल्लाह कहकर जैसा कि उनकी प्रथा है सिज्दा किया। हजरत पादशाह ने कहा कि, "मीर्जाओं को बैठने का आदेश दिया जाय।" हजरत शाहे आलम पनाह ने कहा कि, "हमारे तोरे में यह नियम नहीं है।" तदुपरान्त नाना प्रकार की भोजन सामग्री लगाई गई। शाहे आलम पनाह ने कहा कि, "हजरत पादशाह का मुफरची[२] सुफरा[३] लगाये।" याकूब[४] ने उपस्थित होकर सुफरा लगाया और वे भोजन में व्यस्त हो गए। भोजन के उपरान्त पूर्व-उल्लिखित नियमानुसार युद्ध-नाद लगाया गया और लोगों ने सिज्दा किया। सिज्दों का उद्देश्य यह था कि, (७१ ब) "हुमायूं सरीखा पादशाह ईश्वर की महान् अनुकम्पा से यहाँ आ गया है"।

हजरत शाहे आलम पनाह ने आदेश दिया कि 'उनका निवास स्थान बहराम मीर्जा[५] तथा बद्र खां के बीच में हो[६]।" हजरत पादशाह को विदा कर दिया। बहराम मीर्जा हजरत पादशाह को अपने निवास स्थान पर लाया और हम्माम में ले गया। हजरत पादशाह ने अपने सिर के बाल कटवाये। बहराम मीर्जा तीन सरोपा लाया और उनकी सेवा में उपस्थित किए। सरोपा पहिनकर वे रात्रि आनन्द मंगल तथा जश्न में व्यतीत करते रहे। प्रातःकाल हजरते शाह आलम पनाह ने वहाँ से प्रस्थान कर दिया और मुल्तानिया में पड़ाव किया।[७]

१ च, [illegible] में ताज पहिनने का उल्लेख नहीं।
२ वह अधिकारी जो दस्तरख्वान बिछवाता एवं भोजन लगवाता है।
३ दस्तरख्वान।
४ च, छ में 'मीर याकूब'।
५ च, छ एवं ज में 'बद्र खां यकना (बहनोई)'।
६ अर्थात् चाहे बहराम मीर्जा के यहां और चाहे बद्र खां के यहां।
७ च, [illegible] में निम्नांकित घटना का भी उल्लेख है —

"जब वे गी में थे तो एक व्यक्ति ने शाह के पास आकर न्याय की याचना की। क्योंकि वे बात चीत में व्यस्त थे अतः उन्होंने उसकी ओर ध्यान न दिया। हजरत (पादशाह) की सम्मानित दृष्टि उस पीड़ित की ओर थी। शाह के तवाची उसे पीटते थे। क्योंकि उनमें अत्यधिक कृपा एवं दया थी अतः उन्होंने हृदय में सोचा कि बड़ी विचित्र बात हुई। वह पीड़ित मारा भी गया और उसे न्याय भी न प्राप्त हुआ। जब वे अपनी मंजिल पर पहुँचे तो काज़ी ख्वालियारी से कहा कि, 'उस पीड़ित को वहाँ से बुलवाओ। उससे इसके विषय में पूछा जाय ताकि इसका अपराध मेरी गरदन पर न रहे।' पूछ-ताछ के उपरान्त उसे लाया गया। उससे पूछा गया तो उसने निवेदन किया कि, 'मैं ग्रामीण हूँ। मेरे ग्राम को शाह ने अपने कूरची को जागीर में दे दिया। वह मेरे घर पहुँचा। मेरी पुत्री को जबरदस्ती मुझसे ले लिया। जो बाग एवं आराजी इत्यादि मेरे पास थी, उस पर भी जबरदस्ती अधिकार जमा लिया। प्रजा का दो वर्ष का लगान मुझसे वसूल किया। मैं इस बात का न्याय चाहता हूँ।' उन्होंने कहा, 'हे परमेश्वर! मेरी पादशाही में इस प्रकार का अत्याचार न हुआ होगा।' तदुपरान्त उन्होंने इस विषय में शाह से कहा। शाह ने ईशी आगा को आदेश दिया कि उसके साथ जाकर अपराधी को उपस्थित करें। वह उपस्थित किया गया। पूछ ताछ के उपरान्त उसके अपराध का प्रमाण मिल गया। आदेश हुआ कि 'अपराधी का सिर काट डाला जाय और जो कुछ उससे छीना गया हो उसे वापस कर दिया जाय। मैंने उसे दो वर्ष का लगान क्षमा कर दिया।" (च पृ० ६४अ ६४ब, छ ५५ब ५६अ)।

मजहब एवं मिल्लत के तअस्सुब का उल्लेख और उनमें पारस्परिक क्षोभ[1]

जिस समय हजरत शाह प्रस्थान करने लगे, हजरत पादशाह अभिवादन हेतु गए किन्तु उन्होंने अपने प्रति उनकी अधिक कृपा न देखी। वे इससे दुखी हुए। जो कृपा तथा दया उनके प्रति होती थी, उसमें अन्तर पाया[2]। सुल्तान मुहम्मद खुदा बन्दा[3] के, जिसने शीआ मजहब निकाला है, गुम्बद में पड़ाव किया और अपने आपको इस बात का अपराधी ठहराने लगे कि, "काश हम न आये होते।" हजरत पादशाह के आतिथ्य के लिए ईंधन एकत्र किया गया था। हजरत शाह ने कहला भेजा कि, "यदि हमारा धर्म स्वीकार कर लें तो मैं उन्हें आश्रय प्रदान करूँगा, अन्यथा उनके (७२ अ) समस्त धर्म वालों को इसी ईंधन में जलवा डालूँगा।" हजरत पादशाह[4] ने कहला भेजा कि "हम अपने धर्म पर दृढ़ हैं। हम यहाँ आ गए हैं और हमें पादशाही की इतनी इच्छा नहीं है। जो कुछ होगा वह परमेश्वर की इच्छा से होगा, हमने अपना हृदय उसकी ओर लगा लिया है, जो ईश्वर चाहेगा वही होगा।" हजरत पादशाह अपने दृढ़ सकल्प से पीछे न हटे और कहा "मक्का का मार्ग आपके हाथ में है। वैसे आप हाकिम हैं। पुन निवेदन करने का कोई अवसर नहीं।" हजरत शाह का कथन था, "मैं चाहता था कि सुन्नी पर चढ़ाई करूँ। जब वह अपने पाँव से आ गया तो उसे उसके धर्म पर न रहने दूँगा।"

हजरत शाह का वकील काजी जहाँ बड़ा प्रतिष्ठित आदमी था। वह हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने निवेदन किया कि, 'आप अकेले नहीं हैं, आपके कारण लगभग सात सौ व्यक्ति मार डाले जायेंगे। अब आपके लिए यह अवसर आ गया है कि यदि आपसे कहा जाय कि आप, (ईश्वर न करे), खुदा तथा मुस्तफा की निन्दा करें तो भी आपके पास कोई अन्य उपाय नहीं[5]।" हजरत पादशाह ने पूछा कि, "उनकी क्या इच्छा है, लिखकर ले आओ।"

१ च, छ एव ज में फस्ल ३।

२ छ में "जो कृपा .....अन्तर पाया" वाक्य नहीं है।

३ च, छ एव ज में 'सुल्तान खुदा बन्दा'।

४ हजरत ने अपने हृदय में सोचा कि "यह नमरूद एव खलील (हजरत इब्राहीम) का किस्सा है और मैं उस आग के समक्ष पतिंगे के समान हूँ।.....उन्होंने अपने साहस एव धैर्य को न त्यागा। उत्तर कहला भेजा, 'हे शाह! प्रत्येक अपना अपना धर्म रखता है। मैं अपने धर्म पर दृढ़ हूँ। हमें अब पादशाही की कोई अधिक इच्छा नहीं रही। जो कुछ थी उसे भी त्याग दिया। मैं इस स्थान पर इस उद्देश्य से आया हूँ कि मक्का मुअज्जमा का मार्ग आपके अधिकार में है। आप हाकिम हैं,

मिसरा

'चाहे तू जला डाल, चाहे हत्या करा, तुझे अधिकार है।"

५ च, छ एव ज में —"तदुपरान्त शाह ने काजी जहा को जो उनका विश्वस्त वकील था भेजा। उसने आकर कहा, 'अधिकार आपके हाथ से निकल चुका है। आप स्वय जानते हैं कि आप जिस दशा में हैं, यदि ईश्वर एव रसूल के प्रति कुफ्र करना पड़े तो कोई उपाय नहीं।' हजरत पादशाह ने कहा, 'जो उनकी इच्छा हो उसे कागज पर लिख लाओ।' कागज के तीन टुकड़े लाये गये। उन्होंने दो कागजों को पढ़ा और रख दिया। तीसरे कागज पर सोच में पड़ गये। शाह स्वय खरगाह के कोने पर पहुँच कर उच्च स्वर में कुछ कहने लगा। काजी (जहा) वापस आया और उसने कहा, 'यह मवज्ञा का समय नहीं।' हजरत पादशाह ने कहा, 'कुरान का पालन करन

तदुपरान्त वह हजरत शाह तहमास्प के पास से तीन कागज लाया और उन्हे दिखाया। हजरत पादशाह (७२ ब) ने दो कागज देख कर रख दिये। तीसरा कागज देखकर सोच में पड गए कि शाह स्वय उठकर खरगाह के कोने तक आये, और उच्च स्वर में कुछ कहना प्रारम्भ कर दिया। काजी ने पुन हजरत पादशाह को समझाया और कहा कि, 'अब अवज्ञा का अवसर नही है, अपने समय पर दृष्टि रखनी चाहिये।" उस समय तीसरे कागज को हजरत शाहे आलम पनाह ने स्वय हजरत पादशाह के हाथ मे दिया। उन्होंने हजरत शाहे आलम पनाह की सेवा मे उसे पढा[1]।

शिकार

तदुपरान्त हजरत शाह प्रातकाल सेना को उसी स्थान पर छोडकर शिकार के लिये रवाना हो गए। काजी जहाँ को आदेश दे दिया कि वह हुमायूं पादशाह की सेवा में रहे। तीन दिन में शिकार एकत्र हो गया। आदेश हुआ कि, 'सेना उस ओर से आये।" शिकार को घेरे मे कर लिया गया। बहुत बडी सख्या मे जानवर जिबह कर दिए गए। कूरचियों की ओर से कुछ हिरन भाग गए। आदेश हुआ कि, "इसके जुर्माने में प्रत्येक एक घोडा तथा एक तूमान अदा करे।' तदुपरान्त दूसरे दिन आदेश हुआ कि, हजरत मुहम्मद हुमायूं पादशाह एव बहराम मीर्जा तख्ते सुलेमान पहुँचकर शिकार एकत्र करें।' वे लोग राता रात तख्ते सुलेमान पहुँचे। बहराम मीर्जा

है ?' उसने कहा, 'नि सन्देह'। हजरत पादशाह ने कहा, 'क्या धर्म के मामले में कोई जबरदस्ती नहीं, उनको याद नहीं ?' इसी प्रकार छोड दिया —

मिसरा

'बला आई थी किंतु खैरियत हुई।'

ज में अन्तिम वाक्य इस प्रकार है —"हजरत ने कहा, कुरान का पालन करते हो या नहीं ?" उसने उत्तर दिया 'इसमें कोई सन्देह नहीं।' हजरत पादशाह ने कहा, 'धर्म में कोई जबरदस्ती नहीं क्या उनको याद नहीं।' यह बात सुन कर चुप हो रहे और टाल गये।" (च पृ० ६५अ, छ पृ० ५६ब, ज पृ० ६६अ)।

१ ख एव ग में स्पष्ट रूप से यह लिखा है कि हुमायूं ने शीआ (इमामिया) असना अशरी धर्म स्वीकार कर लिया — "हैशा दर हुजूरे शाहे आलम पनाह खुन्दन्द व मजहब बर हके इमामिया असना अशरिया इख्तियार कर्दन्द।" अन्तिम वाक्य सम्भवत पुस्तक नकल करने वाले ने अपनी ओर से बढा दिये हैं। बीच बीच में भी ख एव ग, क एव घ से भिन्न है। तत्सम्बन्धी वाक्यों का अनुवाद नीचे दिया गया है —

"उन्होंने सुल्तान मुहम्मद खुदा बन्दा के गुम्बद में पडाव किया। मजहब शीआ इमामिया को उसी के द्वारा शक्ति प्राप्त हुई है। हजरत पादशाह लश्कर में चिन्ता में बैठे थे। इसी बीच काजी-उल कुज्जात काजी जहाँ हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ। पादशाह ने उससे पूछा कि, 'इसका क्या कारण है कि शाहे आलम पनाह मेरी ओर से उपेक्षा कर रहे हैं ?' काजी ने उत्तर दिया, 'आपके सेवक एव परिजन समार्ग पर नहीं हैं। खारजियों की बातें बका करते हैं। इस कारण शाहे आलम पनाह रुष्ट हैं।' हजरत पादशाह ने कहा, 'मैं हृदय से हजरत मुहम्मद की सतान एव मासूम इमामों का मुरीद एव अनुयायी हूँ।' तदुपरान्त काजी जहाँ, हजरत शाहे आलम पनाह के लिखे हुये तीन कागज के टुकडे लाया। हजरत मुहम्मद हुमायूं पादशाह की सेवा में दो टुकडे पेश किये। हजरत पादशाह उठ कर खडे हुए। (हजरत शाहे आलम पनाह) खरगाह के कोने पर पहुँचे और उच्च स्वर में हजरत मुहम्मद एव इमामों के शत्रुओं के प्रति खुल्लम खुल्ला 'लान तान' करने लगे। उस समय हजरत शाहे आलम पनाह ने तीसरा कागज को स्वय पेश किया और हजरत (पादशाह) के हाथ में दे दिया। उन्होंने शाहे आलम पनाह के समक्ष उसे पढा और इमामिया असना अशरिया का सच्चा धर्म स्वीकार कर लिया।"

(७३ अ) ने कहा कि, "हज़रत शाहे आलम पनाह तीन दिन उपरान्त शिकार करेंगे। इस समय शिकार के लिए घेरा तैयार किया जाय[1]।" पहुँचकर घेरा तैयार किया गया। कुछ हिरन तथा सुअर जो कि घेरे में प्रविष्ट हो गए थे, उनमें से थोड़े से बहराम मीर्ज़ा की ओर से भाग खड़े हुए। उसने रुष्ट होकर कहा कि, "जानवरों का शिकार करना चाहिये।" रात भर यात्रा हुई। ज़ुहर की नमाज़ के उपरान्त शिकार से निश्चिन्त होकर हज़रत पादशाह वुज़ू के लिए उतरे। उनकी सेवा में याक़ूब सुफ़रची के अतिरिक्त कोई अन्य न था। वह घोड़ा पकड़े हुए खड़ा था। उसने आवाज़ दी कि आफ्तावची उपस्थित हो। तुच्छ दास जौहर आफ्तावची उपस्थित हुआ। जब हज़रत पादशाह तहारत कर लेने के उपरान्त अपने घोड़े की ओर बढ़े तो सवारी की थकावट अधिक थी अतः पड़ाव कर दिया। जौहर को आदेश हुआ कि वह खादिमी[2] करे। वह खादिमी में व्यस्त रहा यहाँ तक कि थकावट दूर हो गई। तदुपरान्त वे घोड़े पर सवार होकर लश्कर की ओर रवाना हुए।

शाह को लाल भेंट करना

हज़रत पादशाह अपने बहुमूल्य लाल तथा हीरे अपनी जेब की थैली में रखते थे। उनका नियम था कि तहारत के समय जेब से निकाल कर पृथक् रख देते थे। चलते समय वे भूल गए। (७३ ब) दास जौहर आफ्तावची अपने घोड़े की ओर आ रहा था। उसने देखा कि थैली एवं दावात कलम की थाली[3] पड़ी हुई है। उठाकर हज़रत पादशाह की सेवा में ले गया। जब हज़रत पादशाह की दृष्टि उस पर पड़ी तो वे बड़े आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने कहा कि, 'हे दास! तूने बहुत बड़ा कार्य किया और हमें हज़रत शाह की सेवा में अपमानित होने से बचा लिया। ईश्वर ने चाहा तो अमानत वाले को अमानत सिपुर्द कर दी जायेगी।" हज़रत[4] शाह लाल तथा हीरे इस कारण अपने पास रखते थे कि उन्होंने उनको रोशन बेग को सौंप दिया था। उसने अपहरण किया। इस कारण उन्होंने सोचा कि, 'जिस किसी को भी मैं सौंपूंगा वह अपहरण करेगा।"

शाह के साथ शिकार

यात्रा के समय उन्होंने सोचा कि हज़रत मेहतर सुलमान के तख़्तगाह की सैर (७४ अ) करके शिकारगाह पहुँचे। जब वे वहाँ तशरीफ़ ले गए तो देखा कि एक बहुत बड़ा पर्वत खोद कर एक बन्दीगृह[5] बनाया गया है। वहाँ से प्रस्थान करके वे सायंकाल की नमाज़ के समय

१ च, छ एवं ज में —"मीर्ज़ा ने कहा कि, 'शाह तीन दिन उपरान्त शिकार खेलेंगे। इस समय हज़रत सुलेमान के चबूतरे में, जो २ ३ कोस का पक्का चबूतरा था और जहाँ दरबारे आम होता था, कमरगह शिकार किया। उस चबूतरे को घेर लिया।"

२ शरीर तथा पाँव दबाना।

३ सम्भवतः कलमदान से तात्पर्य है।

४ च, एवं [illegible] में —"हज़रत लाल तथा हीरे को जो बहुमूल्य थे, उपहार के उद्देश्य से अपने साथ रखते थे। इस यात्रा में बहुत समय तक रोशन बेग कोका को सौंप रखे थे। क्योंकि उसने अपहरण किया अतः उन्होंने सोचा कि 'जिस किसी को भी सौंपूगा, इसमें शंका ही रहेगी। स्वयं रुष्ट होना तथा किसी को रुष्ट करना उचित नहीं कारण कि यह बड़ा विचित्र समय है तथा लम्बी चौड़ी यात्रा करनी है अतः वह इसे सर्वदा जेब की थैली में रखते थे।'

५ क, ख, [illegible] एवं ध में 'बन्दी खान्ये दीवान"। च एवं [illegible] में 'बंदे दीवान' ज में 'बन्दीखाना दीवान'। सम्भवतः यह तत्कालीन राजनैतिक बंदियों तथा बड़े बड़े विद्रोहियों के लिए प्रयोग में आता होगा।

पडाव पर पहुँचे। प्रात काल शाही शिकार हेतु शिकारगाह मे पहुँचे। मध्याह्नोतर की प्रथम नमाज के समय तक शिकार जमा होता रहा[१]। तल्ने मेहतर सुलेमान से चार कुरोह पर शाह शिकारगाह में पहुँच गए और जानवरो पर बाण चलाने लगे। भाइयों तथा अमीरो में से किसी अन्य को आदेश न था कि वह बाण चलाये, केवल हजरत पादशाह को शाहे आलम पनाह ने आदेश दिया कि, "हुमायूँ पादशाह ! आप बाण चलायें[२]।" इसी बीच मे एक मृग टहलता हुआ आ गया। शाहे आलम पनाह ने कहा कि, "हे हुमायूँ पादशाह ! यह मृग आ रहा है, देखते है कि कैसे मारते है।" यह बात हो रही थी कि, हजरत पादशाह ने बाण चलाया। मृग के कान के नीचे बाण लगा और वह भूमि पर लोट गया। समस्त तुर्कमान लोग चकित रह गए और कहने लगे, 'मुहम्मद हुमायूँ पादशाह बडे भाग्यशाली हैं।" तदुपरान्त वे वापस आ गए। हजरत पादशाह के लिए ९ हिरन भेजे गए।

हुमायूं द्वारा शाह तहमास्प को लाल तथा हीरों का उपहार

(७४ ब) वहाँ कुछ दिन तक पडाव हुआ[३]। उसी स्थान पर लाल तथा हीरे जो वे शाह के लिये लाये थे, उन्हे भेजे। उन्होने एक छोटा थाल तथा सदूकचा मगवाया। एक हीरा जो कि बहुत बडा था, सीपी के सन्दूक में रखा। अन्य लाल तथा हीरे उस सन्दूक के चारो ओर लगाये और थाल मे रखकर बैरम बेग के हवाले कर दिए कि, "शाहे आलम पनाह की सेवा में उपस्थित किए जायें कारण कि हम उनकी सेवा में भेंट करने की दृष्टि से लाये थे, अमानत को सौंप दो।" जब बैरम बेग ने यह उपहार प्रस्तुत किए तो हजरत शाहे आलम पनाह ने हीरे तथा लाल को सदूकचे से निकलवा कर जौहरी से उसका मूल्य पूछा। जौहरी ने निवेदन किया कि, "इसका कोई मूल्य निश्चित नही हो सकता। जो कुछ भी इसके बदले में दे दिया जाय, कम है।' शाह ने वह उपहार स्वीकार कर लिया। बैरम बेग को विदा कर दिया और पादशाह से कहला दिया कि, "हम बैरम बेग को खान की उपाधि तथा नक्कारा प्रदान करते हैं।" दूसरे दिन खान का खिताब तथा नक्कारा भिजवाया। तदुपरान्त दो मास तक कोई बातचीत तथा आना जाना न हुआ।

१ मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज के समय उस तख्त के चार कुरोह (कोस) पर शिकार एकत्र किया गया था।

२ ब, [illegible] एव ज में —"शाह एव हजरत पादशाह उस शिकार गाह में बाण चलाते थे। खान एव मीर्जा लोग दूर से लीला देखते थे। इसी बीच में एक मृग उछलता कूदता पहुँच गया।"

३ ब, छ एव ज में —"एक दिन वे दोनों जा रहे थे। जाते समय एक कीलक (?) को लाया गया। उसके नीचे एक वेशवाज थी जो दिखाई दे रही थी। क्योंकि इस प्रकार के वस्त्र तुर्कमान लोग न पहिनते थे, शाह को बडा विचित्र लगा। शाह ने विचित्र दृष्टि से देखा। उस प्रकार देखने पर वे समझ गये और लगाम खींच ली। उन लोगों के समान वस्त्र धारण किये। शाह ने अपने विश्वास पात्रों से कहा कि, 'हुमायूं पादशाह में कैसी सूझ-बूझ है। मैंने कनखियों से ही देखा था और अपने हृदय में प्रसन्नता को प्रविष्ट न किया था कि वे समझ गये। यह शेर उनकी दशा के अनुकूल है —

शेर

'हुमायूं जो सल्तनत में जम के समान है,
उसकी बुद्धि के विषय में जो कुछ कहा जाय कम है।'

(१६)

हुमायूँ पाद्शाह का मीर्जा कामरान के सेवको को शाह तह्मास्प को सौपना[1]

शाह का हुमायूं से असन्तुष्ट होना

(७५ अ) उस[2] समय दो वातें वीच में थी। एक यह कि हजरत मुहम्मद हुमायूँ पादशाह के अमीरो में से रोशन बेग कोका, ख्वाजा गाजी दीवान तथा सुल्तान मुहम्मद नेजावाज जो कि मीर्जा कामरान के सेवक थे और मक्का का हज करके लौटे थे, हजरत शाहे आलम पनाह शाह तहमास्प सफवी से अनुचित एव शत्रुता से परिपूर्ण वातें करते थे और कहते थे कि, "यदि मुहम्मद हुमायूं पादशाह में सलीका[3] होता तो उसके भाई उससे पृथक् न हो जाते। इन लोगो को वन्दी बनाकर इन दासो को सेना प्रदान कर दी जाय ताकि वे कन्धार पर अधिकार जमाकर उसे हजरत शाहे आलम पनाह को सौप दें।" किजिलवाश तथा तुर्कमान लोग[4] कहते थे कि, "हुमायूँ पादशाह के पिता वावर पादशाह ने शाह इस्माईल सफवी से कई बार आश्रय एव सहायता प्राप्त की[5]। इसके बदले में उसने नज्म[6] बेग वजीर तथा १२ हजार अश्वारोहियो की जो उसकी सहायतार्थ नियुक्त थे हत्या करा दी और ऊजबको के चक्मे में आकर अपने आपको नष्ट कर लिया[7]। यदि दासो को मुहम्मद हुमायूँ पादशाह की सहायता (७५ ब) हेतु भेजा जायेगा तो वह किसी स्थान पर अकारण अपने प्रतिष्ठित पिता के समान समस्त सेना की हत्या करा देगा।" गुप्त रूप से मीर्जा कामरान बहादुर ने अपने बड़े भाई को एक पत्र लिखा[8]। यह घटनाएं एक दूसरे के विरुद्ध थी। एक अन्य वात यह थी कि जब हजरत पादशाह गुजरात के अभियान से राजधानी आगरा पहुँचे थे तो एक दिन राजसिंहासन पर बैठे बैठे सर्व साधारण के समक्ष कहा था कि, "मैं ऐश्वर्य तथा वैभव में शाह तहमास्प सफवी से अधिक हूँ।" इस प्रकार की बातें शाह

१ च, छ एव ज में चौथी फस्ल जिसका शीर्षक इस प्रकार है —
"शाह का हजरत पादशाह के विषय में कुत्सित विचार, तदुपरान्त अपनी बहिन के कहने पर लज्जित होना और उन्हें उनकी इच्छानुसार विदा करना।"

२ घ, [redacted] एव ज में —"शाह के हृदय में जो यह कुत्सित विचार आये तो इसके दो कारण थे। एक यह कि रोशन बेग कोका, ख्वाजा गाजी दीवान, सुल्तान मुहम्मद नेजावाज जो मीर्जा कामरान के सेवकों में से थे, मक्का मुअज्जमा से लौट कर आये थे। एक दिन शाह के दरबार में हजरत पादशाह के विषय में वार्ता एव शिकायतें होने लगी "

३ च, एव छ में —"अगर ईशा सलीकये इस्लाम व तरीकये इस्तेमाम दाश्तन्द"।

४ च एव छ में —"इसी बीच में, तुर्कमानों का समूह, जो उनकी सेवा हेतु नियुक्त हुआ था, कहता था "।

५ ब में यह वाक्य "हुमायू पादशाह के पिता बदले में उसने" नहीं है।

६ इस घटना के विषय में देखिये ख्वन्द मीर **हबीबुस्सियर भाग ३, खड ४** (ईरान १२७१ हि०/१८५५ ई०), पृ० ३६१-३६२, मीर्जा हैदर (**मुगल कालीन भारत—बाबर, पृ० ६०२-६०६**)।

७ ब में "ऊजबेगों के चक्मे कर लिया" नहीं है।

८ ब में "गुप्त रूप से पत्र लिखा है" नहीं है।

आलम पनाह से कही गई थी[1]। शाहे आलम पनाह ने एकान्त में अपने विश्वासपात्रों से कहा था कि, हुमायूं पादशाह म योग्यता होती तो अपने भाइयों, सम्बन्धियों तथा सेना को अपने से पृथक् न करा देते और मित्रों को सतुष्ट रखते तथा पाजी अफगानों एव शेरखा स पराजित न होते।'

निःसन्देह यह बातें सत्य हैं और शाह आलम पनाह ने ठीक कहा था किन्तु भाग्य के समक्ष किसी की कुछ नही चलती[2]। पैगम्बर लोग भी पराजित हो चुके हैं। इस प्रकार हजरत मुहम्मद भी उहद क युद्ध में पराजित हुए और इस्लामी सेना बुरी तरह हार गई। वीरो को ऐसी (७६ अ) घटनाओ का सामना करना पडता ही है। एक स्त्री हजरत अमीर हमजा के कलेजे को कच्चा चबा गई और उनके शुभ शरीर के ७० टुकडे कर दिए। हजरत मुहम्मद के शुभ दांत शहीद हुए। बुद्धिमानो को चाहिये कि हर समय वे ईश्वर से क्षमा मागा करें कारण कि ईश्वर का आदेश सभी के ऊपर भारी होता है[3]।

बहराम मीर्ज़ा तथा शाह की बहिन की सिफारिश

सक्षेप में एक दिन हजरत शाह आलम पनाह ने बहराम मीर्जा से ऐसी बातें जिनका पूव म उल्लेख हो चुका है कही और कहा कि अमीर लोग निवेदन कर रहे हैं कि यह बात बुद्धि-सगत नही कि किसी को हुमायूं पादशाह की सहायतार्थ भेजा जाय। इस प्रकार वह सहायता के योग्य

१ क में इस घटना का सविस्तार उल्लेख किया गया है। (ग पृ० ७५ अ)। [illegible] [illegible] एव ज में भी सक्षिप्त रूप से (क) का समर्थन किया गया है। (च पृ० ६७ ब ६८ अ, छ पृ० ५६ अ ज पृ० ७१ ब)।

"दूसरी बात यह थी कि हजरत पादशाह गुजरात प्रदेश स राजधानी आगरा पधारे तो एक दिन ! सिंहासन पर आसीन थे। उन्होंने १२ उत्तम बाण स्वय अपने लिये लिखे और ११ साधारण बाण शाह तहमास्प के नाम लिखे। हजरत शाहे आलम पनाह के सम्मानित कानों तक यह बात पहुँच गई थी। जब दोनों सम्मानित पादशाह एक ही दरबार में उपस्थित [illegible] तो हजरत शाह तहमास्प ने हजरत पादशाह मुहम्मद हुमायू से पूछा कि, 'अपने लिये १२ उत्तम बाण लिखे और हमारे लिये साधारण ११ बाण, कारण बतायें ?' हजरत पादशाह ने कहा 'इसका सम्बन्ध देश से है। समस्त खुरासान जो आपके अधीन है, दो दाग है और हिन्दुस्तान जो मेरे अधीन है चार दाग था।' तदुपरान्त शाहे आलम पनाह ने कहा कि, 'यह उस अभिमान का फल है कि आपने उस देश पर इस प्रकार शासन किया कि एक साधारण व्यक्ति के सामने से भाग खडे हुये और अपने परिवार को बन्दी बनवा दिया।' हजरत मुहम्मद हुमायू पादशाह ने कहा, 'आप जो कुछ कहें ठीक है। किन्तु यह ईश्वर की लीला है। शरण मागनी चाहिये। इसमें किसी का कोई बस नहीं।' हजरत शाह आलम पनाह सतुष्ट हो गये।'

२ ख, च छ एव ज में शाह तहमास्प का हुमायू के प्रति जो मत दिया गया है, उसका कोई उल्लेख नहीं।

३ क के हाशिये पर एक टिप्पणी इस प्रकार है — पुस्तक का सकलनकर्ता 'इस प्रकार की बातें हर स्थान पर लिखता है। झूठ, मानो उसका पागल पन है। यह बातें किसी अन्य पुस्तक में नहीं देखीं।' मेजर चार्ल्स स्टीवर्ट ने सम्भवत क से ही अपना अनुवाद तैय्यार किया। वह इस टिप्पणी के विषय में लिखता है, "जिस समय मेजर यूल ने यह हस्तलिपि प्राप्त की, तो सेफी (सफवी) वश का एक व्यक्ति लखनऊ में रहता था जिसे नवाब असफुद्दौलह से थोडी सी पेंशन मिलती थी। उसकी उपाधि ईरानी शाहजादा थी। मेजर यूल ने यह हस्तलिपि उसे उधार दे दी थी। उसने इस अनुच्छेद के हाशिये पर यह लिख दिया। [Major Charles Stewart *Tazkereh al-vakiat or Private Memoirs of the Moghul Emperor Humayun* (London 1832)]।

नही[1]।" बहराम मीर्जा का हुमायूँ पादशाह के प्रति बड़ा स्नेह तथा घनिष्ठता थी, इस कारण वह बड़ा दुखी हुआ और रोने लगा। महल के भीतर जाकर उसने यह बात अपनी बहिन से कही और बताया कि, "हुमायूँ पादशाह तीमूर की सतान है और सहायता की आशा में हमारे घर आये है। इस वश से हम लोगो की प्राचीन काल से घनिष्ठता है। जिन किजिलबाश अमीरो के पिता तथा भाई बाबर पादशाह के साथ विश्वासघात के कारण मार डाले गए है, वे पादशाह की निन्दा करते है। जिस समय हजरत शाह आपसे भेंट करने आये, आप उनकी सिफारिश करे[2]। जब शाह अन्त पुर मे पहुँचे तो वह सती एव पवित्र स्त्री दुख की अवस्था मे बैठ गई। जब शाह उनके घर मे पहुँचे तो वे रोने लगी। शाहे आलम पनाह का भाई बहराम मीर्जा अभिवादन करके बाहर चला गया। (७६ ब) हजरत शाह आलम पनाह ने रोने का कारण पूछा। उन्होने निवेदन किया कि 'अपने भाग्य पर रो रही हूँ।" पुन पूछा कि "आप हमारे प्रति शुभकामनाए न करेगी?" उन्होने निवेदन किया कि, 'मै सर्वदा हजरत शाह के प्रति शुभकामनाए किया करती हूँ किन्तु यह समय के अनुकूल बात कह रही हूँ कि आप स्वार्थियो एव धूर्तो की बात में न आ जाय तथा अपने यश के अनुकूल हुमायूँ पादशाह को सेना देकर हिन्दुस्तान भेज दे ताकि सातो इकलीमो मे हजरत शाह की प्रसिद्धि हो जाय।" शाह की बहिन सुल्तान बेगम ने हुमायूँ पादशाह की यह रुबाई शाह तहमास्प के समक्ष पढी

रुबाई

'हम[3] है हृदय से (हजरत) अली की सन्तान के दास,
रहते है सर्वदा प्रसन्न (हजरत) अली के स्मरण से।

१ [redacted] में —"संक्षेप में एक दिन हजरत शाहे आलम पनाह ने बहराम मीर्जा से हजरत पादशाह के विनाश के सम्बन्ध में कुछ बातें कहीं।" च, [redacted] एव ज में —"शाह ने एक दिन मीर्जा बहराम से प्राचीन ईर्ष्या के कारण जो उसके सीने में था, कुछ ऐसी बातें कही जिससे मीर्जा का दिल टूट गया।"

२ क में इस प्रकार है —"उसने अपनी बहिन से कहा कि हुमायूँ पादशाह जो तीमूर पादशाह की सतान से हैं बड़ी आशा लेकर आये है। कुछ समय से हम और व हम नमक है। (वह हमारे अतिथि है) इस समय शाहे आलम पनाह इस प्रकार का गलत आदेश दे रहे थे। जब उस पवित्र स्त्री ने यह बात सुनी तो वह रोने लगी। हजरत शाह उस पवित्र स्त्री के घर में पहुँचे। बहराम मीर्जा अभिवादन करके चला गया। हजरत शाह ने पहुँच कर रोने का कारण पूछा। उन्होंने कहा 'अपने भाग्य पर रो रही हूँ।' हजरत शाह ने कहा 'मेरी कुशलता के लिये शुभ कामना कीजिये'। उन्होंने कहा, 'मैं सर्वदा हजरत शाहे आलम पनाह की कुशलता की कामना में व्यस्त रहती हूँ किन्तु आप चारों ओर से शत्रुओं से घिरे हैं, (रूम, उजबेक, चर्कस, फिरग)। मुझे शका है और मैं सुनती हूँ कि मुहम्मद हुमायूँ पादशाह के भी पुत्र एव भाई है। उन्हें कष्ट पहुँचाने से क्या प्राप्त होगा? यदि आप उनके प्रति कृपा नहीं प्रदर्शित करते और उन्हें सम्मानित नहीं करते तो उन्हें विदा कर दें ताकि वे जहा चाहें चले जायें।" च, छ एव ज में भी लगभग इसी प्रकार है (च पृ० ६८ अ, [redacted] पृ० ८६ ब, ज पृ० ७२ ब)।

३ क में कोई रुबाई नहीं, च, छ एवम् ज में निम्नाकित रुबाई है —

रुबाई

'हे ससार के पादशाह! तू है आकाश सरीखा,
उपकार एव दान सर्वदा तेरी पूजा है।
ससार के समस्त बादशाह, हुमा की इच्छा करते है,
धन्य है कि किस प्रकार हुमा तेरी छाया में है।'

क्योंकि विलायत का रहस्य (हजरत) अली द्वारा प्रकट होता है,
करते हैं हम सर्वदा नादे अली[1] का सुमिरन।'

शाह का हुमायूं के प्रति संतुष्ट होना

शाहे आलम पनाह ने यह बात सुनकर उन्हें सांत्वना दी और कहा, "ईरान के समस्त अमीर अपने स्वार्थ अनुसार बातें कर रहे हैं। जो आप कह रहे हैं, वही ठीक है[2]। "तदुपरान्त हजरत शाहे आलम पनाह ने हजरत पादशाह को पत्र लिखकर भेजा कि, 'वे हमारी सरकार में उपस्थित हों।" मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज के उपरान्त हजरत पादशाह ने शाहे आलम पनाह से भेंट की[3]। रात्रि में हजरत शाह ने हजरत पादशाह को सान्त्वना दी कि, आप सन्तुष्ट रहें, आपको अपनी इच्छानुसार (७७ अ) विदा किया जायेगा। कुछ बातें काजी जहां बतायेगा, आप उन्हें स्वीकार करें।" हजरत पादशाह ने शाह की कुशलता हेतु फातेहा पढ़ा।

तदुपरान्त शाह आलम पनाह सवार हो गए। एक स्थान पर हजरत पादशाह घोड़े से उतर पड़े। मेहतर कोचक के अतिरिक्त उनकी सेवा में कोई अन्य न था। हजरत शाहे आलमपनाह ने हजरत पादशाह को न देखा। वे चिन्ता में पड़ गए कि वे कहां गये। भय था कि तुर्कमानों से कहीं पर मूर्खता न हो जाय[4]। हजरत शाह दो मशालें अपने साथ रखते थे। एक मशाल अपने कूरची को दी और आदेश दिया कि, 'मुहम्मद हुमायूं पादशाह को ले आओ।" कूरची तुर्की भाषा में आवाज देता घूमता था। हजरत पादशाह ने कोचक को आदेश दिया कि शीघ्रातिशीघ्र उसे यहाँ ले आओ। उन तुर्कमानों ने उपस्थित होकर निवेदन किया कि, हजरत शाहे आलम पनाह बुला रहे हैं।" वे सवार हो गए। संक्षेप में, हजरत शाह के पास पहुंच। वह स्थान जहां शिविर लगे थे दृष्टिगत हुआ। (७७ ब) जब वे निकट पहुँचे तो हजरत शाह ने पूछा कि, 'यह खेमे किसके हैं?" लोगों ने निवेदन किया कि, "यह खेमे मुहम्मद हुमायूं पादशाह के हैं।' तदुपरान्त हजरत पादशाह से हाथ मिलाकर उन्हें विदा कर दिया और स्वयं अपने सरापरदे की ओर चल दिए। आधी रात्रि व्यतीत हो जाने के बाद हजरत पादशाह ने अपने आदमियों से कहा कि, "अत्यधिक भूख लगी है।" हजरत शाहे आलम पनाह का फर्राश उस समय हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित था। उसने

१ एक प्रकार का जप जो शीओं में बड़ा प्रचलित है। इसमें हजरत अली से सहायता की याचना की जाती है। इसे लिखवा कर लोग तावीज के रूप में भी पहिनते हैं।

पुकारो जोर से हजरत अली को, जो आश्चर्यजनक बातों के स्वामी हैं,
उनसे मिलेगी मुक्ति, कष्टों से।
वे समस्त दुख एवम् चिन्ता शीघ्रातिशीघ्र दूर लेते हैं,
हजरत मुहम्मद की नबूवत एवं अपनी विलायत (सहायता) से।'

२ ख, छ एवम् ज में —"उन्होंने कहा कि इन सब लोगों ने अपनी मूर्खता के कारण कुछ कहा था। उचित वही है जो आप कह रहे हैं। इस विषय में शाह के छोटे भाई अलकास मीर्ज़ा ने भी जो रूम की सरहद पर नियुक्त था, प्रार्थना-पत्र भेजा कि इस अतिथि को बहुत बड़ी देन समझ कर, जिस प्रकार सम्भव हो, (उत्तम रूप से) विदा करें।"

३ क में इस प्रकार है —"मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय उन्हें बुलवाया। अस्र की नमाज के समय वे पहुँचे और शाहे आलम पनाह से भेंट की। रात्रि में शाह ने उनको सान्त्वना दी।"

४ क में —"कारण कि तुर्कमान लोग जाहिल हैं। उनसे कहीं मूर्खता न हो जाय।"

जाकर शाहे आलम पनाह को सूचना दी कि, "हजरत मुहम्मद हुमायूँ पादशाह भूखे हैं।" सुनते ही शाहे आलम पनाह ने आदेश दिया कि, "खाने की चीजें भेजी जायें।" भोजन के ९ थाल भिजवाये गए। भोजन करके वे लेट गए और वहाँ पडाव किया गया, निकट एक घाटी थी। हजरत पादशाह[1] उस घाटी की ओर चढ खडे हुए और आदेश दिया कि, 'बाबा दोस्त कूरबेगी, मेहतर वासिल तूशकची, मेहतर यूसुफ शरबती, मेहतर कोचक बेग, मियाँ वाकिफ सेवक एव जौहर आफताबची हमारी सेवा मे आ जायें।" हम लोग वहा पहुँचे। वह बडा ही हृदयग्राही स्थान था। (७८ अ) तदुपरान्त उन्होने अपने इन सेवको से कहा कि, "शाह ने आज रात्रि मे कृपापूर्वक आशा दिलाई है।" जो कुछ बाते थी एक एक करके बताई और कहा कि, 'कुछ बातें काजी जहाँ समझा देगा।" समस्त सेवको ने शुभकामना हेतु हाथ उठाये। वे प्रसन्न हो गए।

शिकार

जब शाहे आलम पनाह की सेवा मे पहुचे तो शाह ने कहा कि 'हमारे समीप रहे।' तदुपरान्त शिकार में व्यस्त हो गए। एक स्थान पर हिरनो को घिरवा लिया। वह मेहतर सुलेमान का स्थान था। वहाँ कोई अन्य मार्ग न था। मार्ग ऐसा था कि जहा से निकला न जा सकता था। एक ओर से हजरत शाहे आलम पनाह और एक ओर से हजरत पादशाह हिरन को सीघ पकड कर लाते थे और शिकार के घेरे में छोड देते थे। कमरगह में शिकार से अत्यधिक रुचि का प्रदर्शन किया। दिन भर शिकार में व्यतीत हुआ। रात्रि के समय लश्कर में पहुँचे। हजरत मेहतर सुलेमान के तख्त के समीप आये। उस दिन से हजरत शाहे आलम पनाह हजरत पादशाह के आतिथ्य के प्रबन्ध मे व्यस्त हो गए। जो वस्तुएँ उचित थी उन्हे पृथक् करते जाते थे।

रोशन बेग इत्यादि का बन्दी बनाया जाना

पाचवें दिन इसी पडाव पर हजरत पादशाह को समाचार प्राप्त हुए कि रोशन बेग[2] (७८ ब) ख्वाजा गाजी[3], तथा सुल्तान मुहम्मद नेजाबाज के विषय में हजरत शाह का आदेश हुआ है कि उन्हे बन्दी बनाकर लाया जाय। हजरत पादशाह ने कहा, 'वे इसी योग्य है। जो अपने पडोसी के लिए गड्ढा खोदेगा, वह स्वय उसमें गिरेगा।" हजरत शाह का आदेश हुआ कि 'खेमा से रस्सिया काट कर उनकी कमर में बाँध दी जायें और उन्हे दीवाने हजरत मेहतर सुलेमान के बन्दीगृह[4] के गड्ढे मे डाल दिया जाय। यदि रस्सियाँ नीचे तक पहुँच जाये तो वही छोड दे और यदि न पहुँचें तो बाहर निकाल लें।"

रोशन बेग इत्यादि का क्षमा किया जाना

जब यह आदेश हो गया तो रोशन बेग ने हजरत पादशाह को प्रार्थनापत्र भेजा कि पापी एव धृष्ट दासो को अब अपने प्राणो की आशा नही है, केवल हजरत पादशाह की सिफारिश से आशा है। मूर्ख लोग भूल करते हैं और पादशाह लोग क्षमा करते हैं[5]।

१ क, ख, ग एव घ में 'हजरत शाहे आलम पनाह,' च, छ में 'बन्देगाने हजरत (हुमायू)', ज में 'बादशाह'।
२ ख, ग एव घ में 'रोशन बेग खजाची, च, छ एव ज में 'रोशन बेग कोका'।
३ च एव छ में 'ख्वाजा गाजी दीवान'।
४ च, छ में —"उस गड्ढे में जो बन्द खानये दीवान है और जिसका निर्माण हजरत सुलेमान ने कराया था, डाल दें।"
५ च, छ में —"दास लोग भूल करते हैं, स्वामी लोग क्षमा करते हैं।"

शेर

'यदि हम अपराधी हैं, तो तू अनुकम्पा का समुद्र है,
तू मेरी ओर न देख, अपनी अनुकम्पा की ओर देख।'

आपने हमारी माता का दूध पिया है।" हजरत पादशाह को दया आ गई। शाहे आलम (७९ अ) पनाह को पत्र लिखा कि, "शाह इस्माईल की कब्र के न्योछावर के रूप में इन्हें मुक्त कर दें।" जब पत्र पहुँचा और पढ़ा गया तो हजरत शाहे आलम पनाह को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने कहा कि, "मुहम्मद हुमायूँ पादशाह में कितनी सहनशीलता है। ये लोग उनको हानि पहुँचाने का प्रयत्न कर रहे थे। वे इस समय उनकी सिफारिश कर रहे हैं।" आदेश हुआ कि "उन्हें मुहम्मद हुमायूँ पादशाह को सौंप दिया जाय।"

बादशाह के लिये शाह द्वारा दावत एवं सभा का आयोजन, तदुपरान्त अपनी मंजिल पर पहुँचना[1]

सात दिन दावत की व्यवस्था होती रही। तदुपरान्त हजरत पादशाह को बुलवाया गया। लगभग छ सौ सायावान[2] लगवाये गए। १२ स्थानों पर खुशी के नक्कारे बजाये जाते थे तथा शाही कालीन बिछाये गए। हजरत पादशाह उस सभा में उपस्थित हुए। प्रथम दिन नाना प्रकार के भोजन की वस्तुएँ प्रस्तुत की गईं। शाहाना जड़ाऊ सरोपा, तलवार तथा जड़ाऊ कटार प्रदान हुई। दूसरे दिन हजरत पादशाह को बुलवाकर उन्होंने अपने बराबर बिठाया[3]। जिन वस्तुओं की व्यवस्था हुई थी वे सब हजरत पादशाह को प्रदान कर दी गईं। खेमा, डेरा, कालीन, घोड़े, ऊँट तथा (७९ ब) खच्चर एक ऊँचे स्थान पर एकत्र किए गए। सल्तनत तथा बादशाही के लिए जितनी भी आवश्यकतायें थीं, प्रदान की गईं तथा सहायता की गई। अपने पुत्र को १२ हजार अश्वारोहियों सहित सहायता हेतु नियुक्त किया और कहा कि, 'इनका निरीक्षण आप सीस्तान में करें।" शाही साज व सामान देने के उपरान्त शाहे आलम पनाह खड़े हो गए और अपने सीने पर हाथ रखकर कहा कि, "हे मुहम्मद हुमायूँ पादशाह! हमारी ओर से कमी हुई, आप कृपा दृष्टि रखें।" तीसरे दिन कबूक[4] पर बाण चलाये गए। जब रात्रि हो गई तो सभा आयोजित की गई। अरकदार[5] चीनी[6] लाया। प्रत्येक व्यक्ति के समक्ष सुराहियाँ तथा शीशे रखे गए। जो कोई भी उस सभा में उपस्थित था, वह स्वयं प्याला भर कर पीता था। किसी को साकी ने नहीं दिया। जब सुबह हो गई तो उस स्थान से प्रस्थान हुआ।

१ **हुमायूँ शाही** एवं **जवाहर शाही** के अनुसार पाचवीं फस्ल।
२ एक प्रकार के शामियाने।
३ च, छ में —"प्रतिष्ठित इस्तान, एवं उत्कृष्ट खान, मीर्जा लोग, एवं सिपहसालार प्रत्येक कोने से पहुँचे एवं दरबार को वाटिका रूपी बना दिया। नाना प्रकार के भोजन तथा पेय प्रस्तुत किये गये'।
४ च, छ एवं ज में —"कब्क लगाये गये और बाण चलाये गये"।
५ वह अधिकारी जो पेय पात्र इत्यादि की व्यवस्था करता हो।
६ चीनी के पात्र।

हाजी मुहम्मद बख़्शी की स्वामी-भक्ति

इसी समय हज़रत बादशाह, शाह आलम पनाह के पास पहुँचे। देखा कि हज़रत शाह तीन चार तह किए हुए छोटे क़ालीन पर बैठे हैं। वे ज़मीन पर बैठने में संकोच कर रहे थे। हाजी मुहम्मद बख़्शी मुग़ुल ने तत्काल अपने सिर का साफ़ा भूमि पर बादशाह के बैठने के लिए बिछा दिया। हज़रत बादशाह उसपर बैठ गए। हज़रत शाह ने उससे पूछा कि, 'तू कौन है?' उसने निवेदन किया कि, "मैं मुग़ुल हूँ।' हज़रत शाह ने कहा कि 'तू हमारे पास रह।' उसने निवेदन (८० अ) किया कि, 'हमारे स्वामी आपकी सेवा में हैं दास का क्या मूल्य है। जो आश्रय दास के स्वामी को प्रदान होगा वह इस दास का समझा जायेगा। तदुपरान्त शाह आलम पनाह की सेवा में आ जाऊँगा[1]। इसके अतिरिक्त आप हाकिम हैं।'

हुमायूँ द्वारा शाह की दावत

इसके उपरान्त सुल्तानिया से ख़्वाजा हाफ़िज़ उसने सब्ज़ की ओर प्रस्थान किया। चार कुरोह पर पड़ाव हुआ और वे वहीं उतर पड़े। शाह आलम पनाह ने हज़रत बादशाह से कहा कि 'आप अपना पड़ाव पर सभा आयोजित करें।' हज़रत बादशाह ने बादशाहों के योग्य सभा आयोजित की और नाना प्रकार के भोजन का प्रबन्ध करवाया। हज़रत शाह तहमास्प ने कहा था कि, 'हिन्दुस्तानी भोजन भी पकवाया जाय।' हज़रत शाह के उपस्थित होने की सूचना दी गई। हज़रत बादशाह ने उन्हें अपने पास बुलवाया। शाह आलम पनाह हज़रत बादशाह के पास पहुँचे। शाहाना सभा सजाई गई। उसमें हर प्रकार के गायकों एवं वादकों ने संगीत एवं वादन का प्रदर्शन किया। प्रत्येक ने अपनी रुचि के अनुसार वस्तु का सेवन किया। शाही भोजन के उपरान्त पान लाया गया। शाह (८० ब) आलम पनाह ने कहा कि, 'इसे बाँट दिया जाय।' हज़रत बादशाह ने कहा कि 'जो आज्ञा हो।' शाह आलम पनाह ने कहा 'इस भोजन का वितरण कौन करेगा?' हज़रत शाह ने कहा 'ख़्वाजा मुअज़्ज़म वितरण करेंगे[2]।' ख़्वाजा ने वितरण किया। जब रिकाबी शाह आलम पनाह के सामने गया तब रिकाबी हज़रत बादशाह के सामने रखी। [illegible] दोनों के अनुसार दे दिया। तदुपरान्त भोजन लाया गया और खाना खाना हुआ। हिन्दुस्तानी भोजनों में [illegible][3] [illegible] के साथ [illegible] कि [illegible] में [illegible] अंडे में मिलाकर पकाया जाता है। भोजन के उपरान्त [illegible] पर प्रहार किया और आदेश दिया कि 'हज़रत हुमायूँ बादशाह का डेरा उसी स्थान पर रहे।' हज़रत बादशाह [illegible] शाह आलम पनाह की सेवा से [illegible][4] की ओर रवाना हुए। [illegible] (८१ अ) [illegible] किया। हज़रत बादशाह हज़रत शाह के [illegible]। [illegible] होने लगी।

1 [illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
5 [illegible]

(१७)

शाहे आलम पनाह शाह तहमास्प सफवी का हजरत पादशाह को विदा करना, वर्षा उपरान्त कन्धार की ओर उनका प्रस्थान[1]

एक[2] घडी व्यतीत न हुई थी कि हजरत शाह आलम पनाह हाथ में चाक् तथा दो सेब लेकर खडे हो गए और कहा, मुहम्मद हुमायूं पादशाह, आपसे विदा होता हूँ। इसे आप ले लें।" हजरत पादशाह ने हाथ बढाया। शाह आलम पनाह ने कहा कि, 'ले लें।' क्षण भर का समय अभिवादन में व्यतीत हुआ। तदुपरान्त अपनी अंगुलियों को नीचा करके वह उपहार शीघ्रातिशीघ्र हजरत पादशाह को दिया तथा कुशलता के विषय में फातेहा पढकर विदा किया और आदेश दिया कि बहराम मीर्जा[3] उन्हें उनके डेरे तक पहुँचाकर वापस आ जाए।

जब वे वहाँ से रवाना हुए तो उनके आदमी दूर पर आ रहे थे। दोनों आपस में बात करते चले जाते थे। हजरत पादशाह ने उस चाकू से अपने हाथ से सेब[4] छीला और आधा काटकर खाया और आधा बहराम मीर्जा को दिया[5]। इस प्रकार शिविर तक पहुँचे। जब हजरत पादशाह के खेमे (८१ ब) दिखाई देने लगे तो बहराम मीर्जा ने घोडे की लगाम खींचकर विदा होने की प्रार्थना की। हजरत पादशाह ने अपनी जेब से एक अंगूठी निकालकर बहराम मीर्जा को दी। उस अंगूठी का नग हीरे का था और कहा, यह हमारी माता का स्मृति चिह्न है। तुम्हें दे रहा हूँ ताकि हमारी स्मृति तुम्हारे पास रहे और कहा कि, तुम्हारे कारण मुझे बडा संतोष था। तुमसे पृथक् नहीं होना चाहता था जैसे होगा समय व्यतीत करूँगा किन्तु हृदय नहीं मानता। बहराम मीर्जा ने कहा कि, ऐसा ही होता है। आप सन्तुष्ट रहें। आपकी इच्छा पूरी होगी।

आकाश सरीखे तथा संसार के आधार उस शाह का एराक से कन्धार की ओर प्रस्थान[5]

विदा हो जाने के उपरान्त रात्रि में मियानाना नामक स्थान से प्रस्थान किया और ५-६ कुरोह पर ठहर गए। तीन दिन उपरान्त तबरेज पहुँचे। पांच दिन तक वहां पडाव किया। बाजारे कैसरिया एवं गुम्बदे शाम की सैर की। उस गुम्बद को शाम की मिट्टी से लाकर तैयार किया गया था।

१ च, छ एवं ज में पृथक् फस्ल नहीं है।

२ च, छ एवं ज में 'बादल खुल जाने के उपरान्त।

३ च, छ एवं ज में —'क्योंकि मीर्जा बहराम तथा हजरत पादशाह की पारस्परिक निष्ठा का हाल शाह को ज्ञात था, अतः उन्होंने आदेश दिया कि मीर्जा बहराम उन्हें उनके स्थान तक पहुँचा आये। वे लोग साथ साथ रवाना हुये। लोग दूर यात्रा कर रहे थे।'

४ च, छ में —'दोनों सेबों को उसी चाकू से छीला और काट कर एक टुकडा स्वयं खाते थे और एक मीर्जा (बहराम) को देते जाते थे। इसी प्रकार वे मंजिल तक पहुँचे।'

५ च, छ में बाब (खंड) ३ तथा ज में फस्ल ६ बाब (खंड) २।

दो रूमी[1] निवासी बाज़ार में मिले। उन्होंने हज़रत पादशाह को सलाम किया। हज़रत ने कहा[2], (८२ अ) "हमारी ओर से रूम के पादशाह को शुभ कामनाए पहुँचा देना।" उन्होंने कहा कि "आँखो से।"

वहाँ से प्रस्थान करके चार रात्रि के उपरान्त अर्दबेल[3] पहुँचे। एक सप्ताह वहाँ पडाव हुआ। वहाँ सुल्तान शेख़ सफी[4] की, जो हज़रत शाह तहमास्प सफवी के पूर्वज है, तथा शाह इस्माईल की क़ब्र है, उनका तवाफ किया। शेख़ सफी हज़रत शाह कमाल के मुरीद थे, जो हज़रत अमीर तीमूर साहब किराने आज़म गूरगान की कृपा द्वारा पादशाही को प्राप्त हुए थे[5]। शाहे[6] आलम पनाह की भानजी का, जो मासूम बेग की पुत्री थी, हज़रत पादशाह से विवाह निश्चय हो गया था। वे वहाँ अधिकाश इसी उद्देश्य से पहुँचे थे कि वहाँ तवाफ करें और इन लोगो से अपना परिचय करायें[7]। अर्दबेल पहुँचकर तवाफ किया और एक सप्ताह वहाँ पडाव हुआ। वहाँ मक़बरे के द्वार में ज़जीरें बधी हुई हैं। यह नियम रखा गया है कि, "यदि कोई पापी भागकर उन ज़जीरों को पार कर ले तो उसे मुक्त कर दिया जाता है चाहे उसने छोटा पाप किया हो अथवा बडा।" तदुपरान्त दरियाये कुलज़ुम[8] की सैर की गई। वहा सर्वदा बादल छाये रहते थे। वहा से लौटकर वे अर्दबेल[9] (८२ ब) पहुँचे, फिर ख़र्दबेल, वहाँ से तारून[10] और फिर निरन्तर यात्रा करते हुए कज़वीन पहुँचे। जब तक हज़रत पादशाह अर्दबेल, ख़र्दबेल, तारून तथा सुर्खाब की सैर करते हुए कज़वीन पहुँचे, उस बीच में हज़रत शाहे आलम पनाह भी सैर करते हुए वहाँ पहुँचे। उस ओर से हज़रत पादशाह कज़वीन पहुँचे और इस ओर से हज़रत शाहे आलम पनाह। उन्होंने पुछवाया, कि, "यह किसका लश्कर है?" निवेदन किया गया, "मुहम्मद हुमायूँ पादशाह की सेना है।" पादशाह ने कहा कि, "क्या अभी तक वे इस देश के बाहर नही गए है?" तदुपरान्त मेहतर ख्याली[11] को आदेश हुआ कि, "मुहम्मद हुमायूँ पादशाह को १२ फरसख तक पहुँचा आओ।" हज़रत पादशाह निरन्तर यात्रा करते हुए दर्स[12] नामक किले में पहुँचे।

१ टर्की।
२ च, छ एवं ज में '—"पादशाह ने तुर्की भाषा में कहा"।
३ च, छ में 'अर्दपूत', ज में 'उर्दू ये पुत'।
४ ख, ग एवं घ में 'शेख़ सफी उद्दीन इस्हाक'।
५ केवल ख, ग एवं घ में "शेख़ सफी ..हुये थे" नहीं है।
६ च, छ एवं ज में —"उस स्थान पर उनके पधारने के दो उद्देश्य थे। एक तो मज़ारों का तवाफ़, दूसरा यह कि शाह ने अपनी भानजी की जो मासूम बेग की पुत्री थी, मगनी उनसे कर दी थी। वे चाहते थे कि उन लोगों से परिचय प्राप्त कर लें।" (च : पृ० ७३अ, छ : पृ० ६३ब, ज : पृ० ७८ब)।
७ सम्भवतः विवाह नही हो सका।
८ लाल सागर, रेड सी।
९ च, छ एवं ज में 'ख़र्दबील'।
१० च, छ में 'मारून,' ज में 'हारून'।
११ ज में 'ह्याल' क, ख, एवं ग में 'जियाई'।
१२ क, ख, ग एवं घ में 'फ़र्स,' च, छ एवं ज में 'दर्म'।

शाह के आदमियों द्वारा याकूब सुफरची की हत्या

जगल से चार अश्वारोही दृष्टिगत हुए और उन्होंने याकूब[1] सुफरची की हत्या कर दी। (८३ अ) यह समाचार पादशाह को प्राप्त हुए। वे उनके पीछे रवाना हुए। जब वे उनके समीप पहुँचे तो उन्होंने कहा कि, "आप लोग क्या हमारे पीछे आ रहे हैं? हमने उसकी शाहे आलम पनाह के आदेशानुसार हत्या की है। किन्तु याकूब की हत्या का कारण यह था कि हसन अली ईशक आका[2] का याकूब से झगडा हो गया था। इस झगड़े का यह कारण था कि एक दिन जब शाहे आलम पनाह ने हजरत पादशाह को तलवारें प्रदान की तो उन तलवारों में से एक हसन अली ईशक आका ने ले ली। याकूब ने जाकर हजरत से कहा कि, 'तलवार हसन अली ले गया है।' इस कारण उसने शाहे आलम पनाह से कहा कि, 'याकूब ने ताज का अपमान किया है।' याकूब सुफरची की हत्या का यही कारण था।

तदुपरान्त वे सब्जवार पहुँचे और आदेश दिया कि हजरत बेगम मना गहिन तबमारेकी की ओर रवाना हों' और वे स्वयं मशहद की ओर जहाँ इमाम अली बिन मूसी रिज़ा का रौज़ा है, रवाना हुए[3]। वहाँ पहुँचकर हजरत इमामे दीन व दुनिया अली इब्ने मूसी अर्रिज़ा की चौखट का तवाफ किया और फातेहा पढा। जो धनुष वहा छोडा था[4], उसे चिल्ले सहित पाया। अत्यधिक प्रसन्न हुए और समझ गए कि 'हजरत इमाम हमारी सहायता कर रहे हैं[5]।' सात दिन तक मशहदे मुकद्दस मे (८३ ब) हिमपात होता रहा। जब हिमपात समाप्त हो गया तो उन्होंने प्रस्थान किया और रावत तुरुक[6] नामक स्थान पर पडाव किया। वहाँ से प्रस्थान करके तगर नामक स्थान पर जहाँ शाह कासिम अनवार का रौज़ा है, पडाव किया। वहाँ से रवाना होकर काह नामक किले में पहुँचे। वहा से १२वें इमाम अदृश्य हो गए थे। इस समय तक नक्कार तथा तुरही की आवाज वहाँ आती रहती है। जिस किसी को कोई आवश्यकता होती है वह वहाँ जाकर विनय तथा नम्रतापूर्वक प्राथना करता है। ईश्वर उसकी इच्छा पूरी करता है। हजरत पादशाह वहाँ पहुँच गए। रात्रि म तबस[7] नामक स्थान पर पडाव हुआ। वहाँ से कुछ पडाव के उपरान्त सीस्तान नामक स्थान पर पहुँचे। उस स्थान पर लगभग १५ दिन तक रहे। इसका कारण यह था कि हजरत शाहे आलमपनाह ने आदेश दिया

१ च एवं छ में 'मीर याकब'।
२ च, छ में 'हसन अली ईशी आगा', ज में 'हसन अली आनशी'।
३ च, छ एव ज में —"मशहद से १२ कुरोह पर पहुँचे थे कि रमज़ान की ईद हो गई। आधी रात के समय मार्ग की थकावट के कारण व हम्माम में पहुँचे"।
४ च, छ एव ज में —"जो बिना चिल्ले का धनुष छोडा था, वह याद आ गया और उसे चिल्ले सहित पाया"।
५ न में इसके आगे इस प्रकार है —इसने निश्चिन्त हो कर पवित्र रौज के मुतवल्ली से पूँछा, 'ईद क्यों नहीं करते'? उसने कहा, 'चाद नहीं देखा'। पादशाह ने कहा, 'हमने देखा है।' उन लोगों ने कहा, 'हवा साफ न थी। ४२ आदमियों की गवाही आवश्यक है।' पादशाह ने कहा 'हमारे साथ २ आदमी हैं।' मुतवल्ली ने कहा, 'न्यायकारी पादशाह २० आदमियों के स्थान पर है।' नाकर ईद की ओर खुशी के बाजे बजवाये।" (न पृ० ७६ ब)।
६ च, छ में 'रवात' ज में 'रयात तुरुक'।
७ न में 'तबस,' च में इस स्थान का उल्लेख नहीं।

(८४ अ) था कि अमीरो की सेना का निरीक्षण वही होगा। जब समस्त अमीर अपने परगनो से आये तो उन्होने हज़रत पादशाह से निवेदन किया कि, "इन दासो की सेना का उचित रूप से निरीक्षण कर ले।" उन्होंने कहा, "इस स्थान से १० कुरोह पर किस नामक किला है जो मदाएन कहलाता था। यह नूशीरवा की राजधानी था। उस स्थान पर अस्करी मीर्ज़ा के अमीरो मे से मीर खल्ज है। प्रात काल वहाँ पहुँचकर तुम्हारी सेना का निरीक्षण करूँगा। यदि वह सेवा में उपस्थित हो जायेगा तो बडा अच्छा है अन्यथा तुम लोगो को नियुक्त करूँगा, ताकि तुम लोग उस किले को नष्ट करके हरामखोरो की हत्या कर दो।" तुर्कमानो ने निवेदन किया कि, "यह हज़रत शाहे आलम पनाह के आदेश के विरुद्ध हो रहा है।" हज़रत पादशाह ने कहा कि, "हम शाहे आलम पनाह को लिख देंगे।" जब उस स्थान पर सेना का निरीक्षण किया गया तो १२ हज़ार अश्वारोहियो के, जो कि सूची में लिखे हुए थे, स्थान पर १४ हज़ार सवार निकले। तदुपरान्त[1] मीर खल्ज अपने गले मे (८४ ब) तलवार लटकाकर पहुँचा और रिकाब का चुम्बन करके सम्मानित हुआ।

हज़रत का कन्धार के किले मे ऐश्वर्य एवं गौरव से पहुँचना और बैरम खा को मीर्ज़ा कामरान के पास पत्र सहित भेजना[2]

वहाँ से निरन्तर यात्रा करते हुए कन्धार पहुँचे। बैरम खा को कामरान मीर्ज़ा के पास दूत बनाकर काबुल भेजा। मीर्ज़ा अस्करी सेवा में उपस्थित न हुआ। किले के भीतर के लोग युद्ध के लिए तैयार हो गए। घोर युद्ध हुआ। सर्वप्रथम युद्ध में ही बाबा दोस्त कूरबेगी एव मेहतर यूसुफ शहीद हो गए। हज़रत पादशाह ने आदेश दिया कि, 'कन्धार के किले को घेर कर मोर्चे बाँट दिए जायें। उलुग[3] मीर्ज़ा, कामरान मीर्ज़ा की कैद मे मीर शेर अफगन की देख-रेख में था। मीर शेर अफगन तथा उलुग मीर्ज़ा काबुल से भाग खडे हुए और हज़रत पादशाह की सेवा में पहुँच कर चरणो का चुम्बन करके सम्मानित हुए। एक दिन हज़रत पादशाह पर्वत के ऊपर गए हुए थे। उनकी दृष्टि खच्चरो की एक कतार पर पडी। पूछा कि, "यह किसके है?" गुप्तचर ने निवेदन किया कि, "अस्करी की माता, बेगम के है।'[4] उन्होने कहा कि, "उन्होने हमारी सेवा की है[5]।" तदुपरान्त उन्होने मीर्ज़ा के दीवानखाने पर दृष्टि डाली। उन्होने आदेश दिया कि (८५ अ) इसकी अक़्क़री पर ज़र्बज़न से गोला चलाया जाय। आदेशानुसार ज़र्बज़न चलाई गई। किले के भीतर हाहाकार होने लगा। लोग छिन्न-भिन्न हो गए।

१ उसी स्थान पर।
२ न एव ड के अनुसार पहली करन ज के अनुसार सातवी फस्ल।
३ न, छ एव न के अनुसार 'उलुग मीर्ज़ा', यही ठीक है।
४ न, छ एव ज के अनुसार 'अस्करी की बेगम', यही उचित है।
५ न, छ एव ज मे इसके आगे यह है —"क्षमा किया"।

(१८)

मीर्ज़ा अस्करी का बादशाह की सेवा में उपस्थित होना और कन्धार के किले की विजय[1]

जब हजरत पादशाह ने कन्धार के किले का अवरोध कर लिया तो उन्हीं दिनों में मीर्ज़ा कामरान ने नवाब खानजादा बेगम को जो कि फिरदौस मकानी बाबर पादशाह की बहिन थीं, सदेश भेजा कि अस्करी मीर्ज़ा को हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित कर दिया अत सतीत्व की रक्षक बेगम ने मीर्ज़ा अस्करी के अपराधो की क्षमा माँगी और मीर्ज़ा को किले से बाहर लाकर हजरत पादशाह के चरणो के चुम्बन द्वारा सम्मानित कराया। तुर्कमान लोग मीर्ज़ा उलुग को गम्भीर देखकर कहते थे कि, "यह मुहम्मद हुमायूँ पादशाह का भाई है[2]।" सक्षेप में कन्धार की विजय के उपरान्त हजरत शाह के अमीरो ने निवेदन किया कि मीर्ज़ा अस्करी के खज़ाने की रक्षा की जाय और मीर्ज़ा को हज़रत (शाह तहमास्प) की सेवा में भेज दिया जाय तथा खजाना शाह आलम पनाह के दरबार में प्रेषित कर दिया जाय।" हजरत पादशाह ने कहा कि, "खजाना पेशकश के रूप में भेंट किया जाय[3]।' तदुपरान्त हज़रत पादशाह किले के भीतर प्रविष्ट हुए। उनके साथ साथ सेवको (८५ ब) में से मेहतर वासिल तूशकची तथा मेहतर अनीस, जो कि मेहतर खानी की उपाधि द्वारा सुशोभित था एव तुच्छ जौहर आफ्ताबची तथा शागिर्दपेशा एव सैनिक इत्यादि में से लोग प्रविष्ट हुए। जब हजरत पादशाह मीर्ज़ा अस्करी के महल मे दाखिल हुए तो आदेश दिया कि खजाने को बाहर निकाल कर एकत्र किया जाय। खजाना एकत्र किया जा रहा था, उस समय हजरत पादशाह के साथ किरमान का हाकिम शाह कुली खा[4], उसका भाई हज़रत शाह का कूरची बाशी, बुदाग खा शाह के पुत्र का लला[5], सजाव का हाकिम हसन सुल्तान, सीस्तान का हाकिम अहमद सुल्तान जिसने हजरत पादशाह के प्रस्थान के समय उचित रूप से सेवा की थी (उपस्थित थे)। उनके समक्ष उस पर ताला लगा दिया गया। उस पर हजरत पादशाह की तथा शाह के अमीरो मे से शाह कुली खा मीर[6] बुदाग खा की मुहरे लगवाई गई। वे किले के बाहर निकले। तुर्कमानों ने आपस में निश्चय किया कि 'पादशाह, मीर्ज़ा अस्करी तथा खजाने को हजरत शाह की सेवा में भेज देना चाहिये। फिर जो कुछ उनका आदेश हो।" हज़रत पादशाह को समाचार प्राप्त हुए[7]। आदेश दिया (८६ अ) कि "समस्त सेना के अमीर लोग ५० ५० अश्वारोहियो के दस्ते बनाकर अस्त्र-शस्त्र धारण किए हुए प्रत्येक दिशा से आयें।' जब अमीर लोग विभिन्न दिशाओ से सगठित होकर आने लगे तो

१ च, छ एवम् ज में यह शीर्षक नहीं है।
२ च, छ में यह वाक्य नहीं। ज में इस प्रकार है —"तुर्कमान लोग उलुग मीर्ज़ा को हजरत पादशाह की सच्चे हृदय से सेवा करते हुये एव उसके उत्तम रग ढग को देखकर यह समझते थे कि यह पादशाह का भाई होगा।"
३ च, [redacted] एव ज में, इसके आगे यह है —" किंतु मीर्ज़ा के भेजने में उन्हें सकोच था।"
४ च, छ एव ज में 'शाह कुली किरमानी'।
५ च, छ एव ज में 'अतका'। अतका तथा लला का एक ही अर्थ है।
६ च एवं छ में 'मीर' नहीं है, ज में 'बुदाग खा' भी नहीं।
७ च, [redacted] एव ज में —"हज़रत को इस प्रकार की हरकतें अच्छी न लगीं।"

तुर्कमान लोग सावधान हो गए और उन्होंने आपस में कहा कि, "इस पादशाह के विचार अच्छे नहीं हैं। जिस प्रकार इसके पिता ने नज्म बेग वजीर[1] की ऊजबेका द्वारा हत्या करा दी, उसी प्रकार यह हमारी भी हत्या करा देगा।" यह बात समझकर उन्होंने मीर्जा अस्करी के खजाने को लदवाया और १२ कुरोह[2] पर पडाव किया। तदुपरान्त वे एक मंजिल से दूसरी मंजिल को पार करते हुए शाह आलम पनाह की सेवा में पहुँच गए। वहाँ से शाह ने ९ थान तथा १ द्रुतगामी खच्चर भेजा। हजरत पादशाह (शाह के) प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिये सवार हुए और ५-६ कदम तक चलकर उतर पड़े। वहाँ से प्रस्थान करके खलजा[3] नामक उद्यान में पडाव किया। एक मास तक वे उस स्थान पर रहे।

बुदाग खा की दुष्टता के कारण कन्धार के किले को तुर्कमानों से विजय करना तथा शाह के पुत्र की मृत्यु[4]

बुदाग खा[5] ने (अपनी सेना को) आदेश दे दिया कि 'हुमायूँ पादशाह की सेना में अनाज की रसद न पहुँचने दे।" जब हजरत पादशाह को यह समाचार प्राप्त हुए तो उन्होंने इस विषय में अमीरों[6] से परामर्श किया। उन्होंने निवेदन किया कि, "तुर्कमान लोगों ने १७ सौ घोड़े व्यापारियों (८६ब) के हाथ बेचे हैं। घोड़े किले के बाहर हैं। उन्हें ले लेना चाहिये।" हजरत पादशाह ने आदेश दिया कि सेना सफेद गुम्बद नामक स्थान पर पडाव करे और वे बाबा हसन अब्दाल नामक स्थान पर पहुँचे। मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज वहाँ पढ़ी। तदुपरान्त आदेश हुआ कि हाजी मुहम्मद कोकी[7] आगे रवाना हो, उसके पीछे उलुग बेग और उसके पीछे बैरम खा तथा उनके पीछे हजरत पादशाह रवाना हुए। जुहर तथा अस्र की नमाज के मध्य[8] में कन्धार पहुँच गए तथा घोड़ों को अधिकार में कर लिया। वहाँ से लौटकर आधी रात को विजयी शिविर में वापस आ गए। प्रातःकाल समस्त घोड़ों को दागने का आदेश हुआ। व्यापारियों को तमस्सुक लिखकर दे दिया कि, "यह

१ ब, छ एवं न में 'वजीर' नहीं है।
२ ब, [illegible] एवं ज में '१५ कुरोह'।
३ ब एवं छ में 'खलीजा'।
४ ब, छ के अनुसार दूसरी फस्ल एवं ज के अनुसार नवीं फस्ल।
५ न एवं छ में इससे पूर्व यह है —"शाहे आलम पनाह यद्यपि हजरत पादशाह के सन्तुष्ट रखने का अत्यधिक प्रयत्न करते थे किन्तु बुदाग खा ने कोई अन्य बात सोच रक्खी थी।"
६ ब, छ एवं ज में —"अमीरों ने सर्व सम्मति से कहा, इस प्रकार उपेक्षा एवं शिथिलता राज्य के हित में नहीं है। षड्यन्त्र को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये। उसकी व्यवस्था के विषय में भी उल्लेख किया कि तुर्कमान लोगों ने ... "।
७ क, ख, ग एवं घ में 'कोका'।
८ ब, एवं छ में —"मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समीप"।

तुमसे ऋण के रूप में है।" १५० घोड़े हिन्दाल मीर्ज़ा तथा यादगार नासिर मीर्ज़ा के लिए[1] पृथक् कर दिये और शेष घोड़े प्रत्येक व्यक्ति को उसकी श्रेणी के अनुसार बाँट दिये।

(१६)

शाहे आलम पनाह के पुत्र की मृत्यु, कन्धार के किले को तुर्कमानों से अधिकार में करना, एवं काबुल की ओर प्रस्थान[2]

(८७ अ) घोड़ों के वितरण के उपरान्त वे प्रस्थान के विषय में सोच रहे थे कि इसी बीच में शाह आलम पनाह के पुत्र की मृत्यु हो गई। बुदाग़ ख़ाँ ने यह समाचार हज़रत पादशाह को न पहुँचाये[3]। हज़रत ने अपने अमीरों से परामर्श किया कि, 'क्या करना चाहिये? शाह के पुत्र की मृत्यु हो गई है, बुदाग़ ख़ाँ किले के भीतर है।' अन्त में निश्चय हुआ कि बुदाग़ ख़ाँ से कन्धार के किले को ले लेना चाहिये। हज़रत पादशाह ने पूँछा कि, 'किस प्रकार किला अधिकार में किया जाय?' हाजी मुहम्मद ख़ाँ कोकी ने निवेदन किया कि, "यह सेवा दास के सिपुर्द की जाय।' इस निर्णय पर उन्होंने फ़ातेहा पढ़ा और आधी रात में उसने प्रस्थान कर दिया। प्रातःकाल जब कन्धार का द्वार खोला जा रहा था तो हाजी मुहम्मद कोकी किले में प्रविष्ट हो गया। एक को बाण से हत्या कर दी। बुदाग़ ख़ाँ के आदमी अरक[4] में प्रविष्ट हो गए। हज़रत पादशाह कन्धार से एक कुरोह पर पहुँचे थे कि हाजी मुहम्मद कोकी के होश नामक सेवक ने हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित होकर किले के विषय में बधाई दी और कहा कि, "यह विजय हो गया।' हज़रत पादशाह ने जाकर अक्शआ[5] (८७ ब) नामक बुर्ज में पड़ाव किया। बुदाग़ ख़ाँ अरक के भीतर था। हज़रत पादशाह ने उस यह सन्देश भेजा कि, "शाहे[6] आलम पनाह का पुत्र मेरा पुत्र था। हमें सौंपा गया था, उसकी मृत्यु हो गई। तूने मुझे सूचना क्यों न की ताकि मैं उसके प्रति संवेदना प्रकट करता और जल तथा भोजन देता[7]? तुझे यही दंड है कि तू द्वार के बाहर मत निकल कारण कि चग़ताई लोग तेरी हत्या कर डालेंगे। किले के पीछे से दराज़ बनाकर बाहर चला जा। मैं तेरी हत्या न कराऊँगा किन्तु तेरा मुह न देखूँगा।' अन्ततोगत्वा बुदाग़ ख़ाँ किले के अरक के पीछे के भाग को तोड़कर किले के बाहर चला गया। हज़रत पादशाह ने कन्धार की विलायत अपने अमीरों में बाँट दी। रबी के महसूल में से कुछ तुर्कमान लोग ले जा चुके थे, शेष उन लोगों ने अपने अधिकार में कर लिया। तदुपरान्त हज़रत बेगम

१ च, छ एवं ज में इसके आगे इस प्रकार है—"जो मीर्ज़ा कामरान से अलग होकर हज़रत पादशाह के पास आ रहे थे'।
२ च छ एवं ज में पृथक् शीर्षक नहीं।
३ च, छ एवं ज में यह भी है—' इससे उनके सम्मानित हृदय को और भी कष्ट हुआ"।
४ भीतरी किला अथवा महल।
५ च एवं छ में 'कशाका' ज में 'अकराका'।
६ च एवं छ में इससे पूर्व यह वाक्य भी है—"तूने बहुत बड़ी भूल की। शाहे ''।
७ आत्मा की शांति हेतु।

तथा बैरम खा को[1] कन्धार के किले मे छोड दिया और कहा कि, "कन्धार के किले को बैरम खा के सिपुर्द तथा अन्त पुर को ख्वाजा अम्बर के सिपुर्द करता हूँ।" वहाँ से वे काबुल की ओर (८८ अ) रवाना हुए।

हज़रत पादशाह का काबुल की ओर प्रस्थान, उस प्रदेश की विजय, मीर्ज़ा कामरान का वहाँ से पलायन और भक्कर की ओर प्रस्थान[2]

कामरान मीर्ज़ा के समस्त अमीरो ने प्रार्थना-पत्र भेजा कि, "दास तथा काबुल की विलायत आपके हैं, आप यहाँ पधारें। हम आपकी सेवा के बाहर नही हैं।"

वे तीरी नामक स्थान पर पहुँचे। तीरी नामक नगर हजारा लोगो के मध्य में था तथा उलुग मीर्ज़ा की जागीर था। मीर्ज़ा हिन्दाल एव तरदी बेग ने उपस्थित होकर तीरी में हज़रत पादशाह से भेट की। मीर्ज़ा कामरान ने काबुल से निकलकर गुजरगाह नामक उद्यान मे पडाव किया। हज़रत पादशाह सशस्त्र विजयी सेनाओं को लेकर निरन्तर यात्रा करते हुए जा रहे थे कि समाचार प्राप्त हुए कि कासिम बरलास[3] मीर्ज़ा कामरान की ओर से युद्ध के उद्देश्य से नीनगनहार[4] मे पहुँच गया है। हज़रत पादशाह ने हाजी मुहम्मद खा कोकी, ख्वाजा मुअज्जम तथा तोलक कूरची एव कुछ अन्य जवानो को युद्ध के उद्देश्य से कासिम बरलास के विरुद्ध नियुक्त किया। वे लोग रवाना हुए और नीनगनहार में युद्ध हुआ। ख्वाजा मुअज्जम तथा तोलक कूरची ने खूब तलवार चलाई। (८८ ब) परमेश्वर ने विजय प्रदान की। पराजित लोग भाग गए। हज़रत पादशाह ने नीनगनहार में पडाव किया। अमीरों ने बधाई दी और कहा[5] कि, 'विजय मुबारक हो।" कुछ अमीरो तथा राज्य के प्रतिष्ठित लोगो ने निवेदन किया कि, "मीर्ज़ा कामरान के अपराध को क्षमा कर देना चाहिये।" हज़रत पादशाह ने कहा कि, "अभी आगे चलते है, देखते है कि यह अभियान कहाँ तक पहुँचता है, जो कुछ उचित होगा वह करूँगा।" कूच का तब्ल बजवा दिया। अल्लाह[6] कुली एव बहादुर ने उपस्थित होकर चरणो के चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया[7] और निवेदन किया कि, "फकीरों का पिता हैदर सुल्तान मृत्यु को प्राप्त हो गया[8]।" हज़रत ने उन्हे आलिंगन करके कहा कि, "मै तुम लोगो के पिता के स्थान पर हूँ और आश्रय प्रदान करूँगा। तुम लोग कोई चिन्ता मत करो एव साहस से कार्य लो।"

१ च, छ एवं ज में —"खाने खानां की उपाधि द्वारा सम्मानित करके"।
२ च एव छ के अनुसार तीसरी फस्ल, ज के अनुसार ६वीं फस्ल।'
३ च एव छ में 'कासिम बेग बरलास'।
४ ज में 'यकनाये खुमार'।
५ च एव छ के अनुसार —"कुछ अमीरों ने कहा"।
६ च, छ एव ज में 'अली कुली', यही ठीक है।
७ ज में इस प्रकार है —"वहा से उन्होंने कूच का नक्कारा बजवा दिया था कि अली कुली जिसे इसके उपरान्त हिन्दुस्तान में खाने जमा की उपाधि प्राप्त हुई, एव बहादुर दोनों भाई सेवा में उपस्थित होकर चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुये।" (ज - पृ० ८५अ)।
८ च, छ एवं ज में —"स्वर्गीय (हैदर सुल्तान) उन लोगों में था, जिन्हें शाह ने कुमक हेतु नियुक्त किया था। जब सब तुर्कमान लोग चले गये तो वह सेना में प्रविष्ट हो गया।"

हजरत पादशाह ने उन लोगों को सात्वना देकर हैदर सुल्तान को दफन करा दिया और वहाँ से प्रस्थान कर दिया। ख्वाजा बुस्तान नामक स्थान पर पहुँच कर पड़ाव किया। वह गुजरगाह नामक (८९ अ) उद्यान से, जहाँ वह[1] युद्ध हेतु आया था, तीन कुरोह पर था[2]। उसी समय पीरजादों[3] में से ख्वाजा अब्दुल हक तथा ख्वाजा खान महमूद सधि के उद्देश्य से हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुए। हजरत पादशाह घोडे से उतरे और उनके प्रति जो सम्मान प्रदर्शित किया जाता था, वह किया। मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज उनके साथ पढकर उन्हे विदा कर दिया। पीरजादो ने कहा कि, "हम सधि करायेगे। यदि कामरान मीर्जा उपदेश स्वीकार करेगा तो मध्याह्न के समय दोनों नमाजों के मध्य में आपकी सेवा में उपस्थित हो जायेगे अन्यथा[4] हजरत पादशाह अपनी चिन्ता स्वय कर ले।"

क्योंकि कामरान मीर्जा ने उपदेश स्वीकार न किए अत पीरजादे विदा होकर काबुल चले गए। वचन का समय व्यतीत हो जाने के उपरान्त हजरत पादशाह ने रोशनक तूशकबेगी को कामरान मीर्जा के पास भेजकर कहलाया कि, "हम यात्री हैं और तुम लोग वहाँ के निवासी हो। (८९ ब) यदि तुम आओ तो तुम्हारी इच्छा है अन्यथा हम विवश है।" जब रोशनक पहुँचा तो मीर्जा कामरान ने उससे भेंट करके सब बातो का पता लगा लिया। मीर्जा वुजू कर रहा था। उसने कहा कि, "मैं आ रहा हूँ।" इसी समय रोशनक ने देखा कि लोग व्याकुल होकर काबुल की ओर जा रहे हैं। रोशनक बिना मीर्जा से विदा हुए वापस चला आया और जो कुछ उसने देखा था उसके विषय में निवेदन किया। हजरत पादशाह ने मीर्जा हिन्दाल, हाजी मुहम्मद कोकी तथा कुछ अन्य अमीरो को आदेश दिया कि वे प्रस्थान करें[5]। ७०० अश्वारोही[6] भाले लिए हुए हमारे चारो ओर होकर रवाना हुए। सबसे[7] आगे आगे मुसाहिब बेग, मीर्जा कामरान का अमीरुल उमरा (तथा) ख्वाजा कला का पुत्र उपस्थित हुये। उसने शुभ कामनाएं की और मीर्जा कामरान के अमीरो की, जो आ रहे थे, शुभकामनाए पहुँचने लगी।

१ मीर्जा कामरान।

२ च एव छ में —"ख्वाजा बुस्तान नामक स्थान पर जो गुजरगाह उद्यान से तीन कुरोह पर था, पड़ाव किया। उस ओर मीर्जा (कामरान) गुजरगाह उद्यान में, जो पादशाह के मार्ग में था, पड़ाव किये था।"

३ पीर के पुत्र, च एव छ में 'ख्वाजा जादा—ख्वाजा के पुत्र'।

४ च, छ एव ज में —"अन्यथा आप जो उचित समझेंगे वह होगा। ख्वाजा जादों (च में पीर जादों) ने मीर्जा के पास जा कर जो उचित उपदेश समझे, वह दिये और इस प्रकार कहा कि, 'इन दिनों में जब तक बन्देगान हजरत इस प्रदेश में तशरीफ न रखते थे, आप उसे अधिकार में किये रहे। अब राज्य मुकुट एव राज सिंहासन का स्वामी आ गया। इस राज्य को छोड दें और अपने अपहरण के हाथ हटा लें। राज्य को राज्य के स्वामी को सौंप दें।" (च. पृ० ७१अ, छ ६८ब, ज ८५ब)।

५ च, छ एव ज के अनुसार —"आगे प्रस्थान करें"।

६ च, छ एव ज में 'कूर्ची'।

७ च, छ एव ज में —"मीर्जा (कामरान) की ओर से, उसका अमीरुल उमरा ख्वाजा कला बेग का पुत्र मुसाहिब बेग सबसे पहिले पहुँचा और कोरनिश की। तदुपरान्त मीर्जा के समस्त अमीरों, जो बारी बारी आ रहे थे, शुभ कामनायें दूर से पहुँचती थीं। हजरत का आदेश था कि वे जिरगे में आ जायें"।

(२०)

काबुल पर अधिकार, मीर्ज़ा कामरान का प्रथम बार भक्कर की ओर पलायन, हज़रत पादशाह का सुलेमान मीर्ज़ा से तीर गरा नामक स्थान पर युद्ध तथा उनकी विजय[1]

(९० अ) जब हज़रत पादशाह पूर्ण वैभव तथा धैर्य से पहुँचे तो मीर्ज़ा कामरान भागकर किले के भीतर चला गया और कराचा खाँ तथा ख्वाजा दोस्त खाँ से कहा कि "तुम पादशाह को उस समय तक टालते रहो जब तक कि मैं अपने परिवार को यहाँ से बाहर निकाल न ले जाऊँ।" कराचा खाँ तथा ख्वाजा दोस्त खाँ ने इसी प्रकार टाला कि उन्होंने हज़रत पादशाह से भेंट न की। हज़रत पादशाह किले के भीतर प्रविष्ट न हुए। जब मीर्ज़ा अपने परिवार को बाहर निकाल ले गया और ३-४ घड़ी रात्रि व्यतीत हो गई तो कराचा खाँ तथा ख्वाजा दोस्त खाँ ने उपस्थित होकर हज़रत के रिकाब चूमने का सम्मान प्राप्त किया और बधाई देते हुए निवेदन किया कि 'किले में प्रवेश करें।' हज़रत पादशाह किले में प्रविष्ट हो गए। मीर्ज़ा कामरान के दीवानखाने में एक (९० ब) उत्कृष्ट ख़रगाह था। वे वहीं उतरे।

हज़रत ने वासिल तुग़्चची से कहा कि, 'एक पहर रात व्यतीत हो चुकी है अभी रोज़ा नहीं खोला है। कोई यहाँ होगा जो एक प्याला गर्म पेय[2] हमारे लिए ले आये?' तदुपरान्त हज़रत को स्वयं स्मरण हुआ कि बीबी[3] के घर जाना चाहिये। सतीत्व की रक्षक बेगम का नाम बेगा[4] बेगम था। आदेश हुआ, 'यदि उनके यहाँ भोजन हो तो ले आओ।' *महतर वासिल तूशकबेगी तथा* जौहर आफ़ताबची दोनों रवाना हुए और सलाम एवं शुभ कामना करते हुए कहलाया कि हज़रत पादशाह ने अभी रोज़ा नहीं खोला है। हमें आपकी सेवा में भेजा है यदि खाने की कोई वस्तु हो तो प्रदान की जाय।' सतीत्व की रक्षक के पास गौ मांस का कलिया[5], उसका शोर्बा एवं गौ की आँतें थीं। लाईं। महतर वासिल ने दस्तरख़्वान बिछाया और जो कुछ भोजन था, वह लगाया। हज़रत पादशाह ने भोजन में चमचा डाला। देखा कि गौ मांस एवं गौ की आँतें हैं। चमचा हाथ से छोड़ दिया और खेद प्रकट करना प्रारम्भ कर दिया और कहा कि, हे मीर्ज़ा कामरान! तेरा कल्याण किस प्रकार (९१ अ) हो सकता है? कारण कि तूने सतीत्व की रक्षक बीबी जियू के भोजन हेतु गौ मांस एवं गौ की आँतें निश्चित कर रक्खी हैं। तुझसे इतना न हुआ कि उनकी रसोई के लिए एक भेड़ निश्चित कर देता। सतीत्व की रक्षक बीबी जियू ने फ़िरदौस मकानी की हड्डियाँ का लाकर, बाप दादा एवं बुज़ुर्गों के रौज़े में रक्खा[6]। फ़िरदौस मकानी के हम चार पुत्र थे। जो कुछ उन्होंने

१ च, छ एवं ज में यह पृथक फ़स्ल नहीं है।
२ क, ख, ग, घ में 'आश,' 'आश' का अर्थ भोजन एवं पेय दोनों होता है। च, छ एवं ज में 'एक प्याला गरम जल'।
३ बेगा बेगम।
४ च, छ एवं ज में 'हाजी बेगा बेगम'।
५ च, छ एवं ज में 'केवल गौ-मांस'।
६ यह घटना शेर शाह के राज्य-काल में हुमायूँ के हिंदुस्तान से प्रस्थान के बाद घटी।

किया, हम भी न कर सके।" अन्त में उन्होंने एक प्याला शरबत पिया और पुनः रोजा रख लिया।

मीर्जा कामरान के छोटे बड़े अमीर उपस्थित होकर हजरत पादशाह के चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुए। हजरत ने प्रत्येक व्यक्ति को सांत्वना एवं प्रोत्साहन दिया और ढिंढोरा पिटवा दिया कि शान्ति हो गई[1]। प्रत्येक की स्थिति के अनुसार उसे खिलअत बाँट दी।

तदुपरान्त मीर्जा सुलेमान को लिखा कि "हमारे कारण मीर्जा कामरान ने तुम्हारे प्रति कठोरता प्रदर्शित की और तुमने बहुत कष्ट भोगे। अब मिर्जा की इच्छानुसार सफलता प्राप्त हो गई है। संतुष्ट रहो। हमें भेंट की इच्छा है जो ईश्वर पूरी करे। मीर्जा सुलेमान ने उत्तर भेजा (९१ब) कि, मीर्जा कामरान ने हमसे यह वचन ले लिया है कि जब तक आपस युद्ध न कर लेंगे उस समय तक भेंट न करेंगे।

नाना प्रकार के आनन्द-मंगल के आयोजन के साथ शाहजादये आलमियाँ के खतने के जश्न की दावत[2]

मीर्जा सुलेमान की पराजय

तदुपरान्त हजरत पादशाह को शाहजादा मुहम्मद अकबर के सुन्नत की चिन्ता हुई और आदेश दिया कि 'बागे सूरतखाना में आईन बन्दी की जाय[3]। करांचा बेग तथा मुसाहिब बेग को इस आशय से कन्धार भेज दिया कि मरियम मकानी हमीदा बानो बेगम को ले आयें ताकि शाहजादे की सुन्नत कराई जा सके। वे स्वयं बारान नदी की सैर को चल दिए। दूसरे मास के उपरान्त मरियम मकानी कन्धार से आईं और हजरत भी सैर से लौट आये। हजरत पादशाह का राज सिंहासन तैयार किया गया तथा मीर्जाओं के लिए चौकिया। हजरत पादशाह ने राजसिंहासन पर आसन ग्रहण किया और मीर्जाओं तथा अमीरों ने चौकियों तथा तकिये के सहारे। दावत हुई। शाहजादे

१ च, छ एवं न में —' शाहाना सभा का आयोजन किया। समस्त उत्तम कवियों में से मुल्ला नवेदी ने विजय की शुभ-सूचना पहुँचा कर यह तारीख प्रस्तुत की

शेर

'प्रतिभा शाली बादशाह, हुमायूं बादशाह,
जिसने न्याय द्वारा दिलों के राज्य विजय किये।
काबुल का भूभाग जब उसने विजय किया,
सफलता के राज सिंहासन पर स्थान ग्रहण किया।
उस प्रदेश की विजय की तारीख हेतु
उद्घोषक ने कहा, कि काबुल रा गिरिफ्त (काबुल विजय कर लिया)।'

२ क ख, ग, घ में यह शीर्षक नहीं है। च, छ के अनुसार चौथी फस्ल, न के अनुसार १०वीं फस्ल।

३ च, छ एवं न में आईन-बन्दी की व्यवस्था का उल्लेख इस प्रकार किया गया है —

' कुशल कारीगरों ने उसके दर व दीवार को अतलस (साटन) व दीबा (एक बारीक तथा चित्रित रेशमी कपड़ा) द्वारा स्वर्ग के उद्यान के समान सजा दिया। मार्गों का अबीर, एवं इत्रों से महका दिया। उसके मार्गों को खालिस अम्बर, गुलाब एवं कस्तूरी द्वारा सुगंधित कर दिया।"

(९२ अ) की सुन्नत की रस्म कराई गई[1]। मीर्ज़ाओं तथा अमीरों को सरोपा प्रदान किए गए[2]। सुन्नत के उपरान्त हज़रत पादशाह किलये ज़फर की ओर रवाना हुए। मीर मुहम्मद अली तगाई को काबुल का हाकिम बना दिया गया। तदुपरान्त हज़रत पादशाह युद्ध की तैयारी करके रवाना हुए। जब वे अन्दराब नामक स्थान पर पहुँचे तो उस ओर से मीर्ज़ा सुलेमान उपस्थित हुआ और तीर गरा नामक ग्राम में युद्ध हुआ। ईश्वर ने उन्हें विजय प्रदान की। मीर्ज़ा सुलेमान भाग गया।

हुमायूं का रुग्ण होना

हज़रत पादशाह किश्म पहुँचे और तीन मास तक वहाँ रहे। तदुपरान्त किश्म से चार कुरोह पर जाकर पड़ाव किया। वहाँ हज़रत पादशाह के शत्रु[3] रुग्ण हो गए। एक रात्रि वे अचेत[4] रहे। लोग निराश होकर असबाब लेकर भागने लगे। कराचा खाँ मीर्ज़ा अस्करी को छल के भय से घर के द्वार के निकट ले आया और पूर्ण रूप से रक्षा करने लगा। हज़रत माह चोचक बेगम (९२ ब) बड़ी ही व्याकुल हो रही थीं और अनार का रस हज़रत पादशाह की हल्क में टपकाती थीं कि, *"ईश्वर उन्हें स्वस्थ करे।" उन्होंने अपनी आँख खोलकर देखा कि बेगम की दशा बड़ी* शोचनीय है। सकेत से पूछा, कि, "क्या दशा है?" उन्होंने निवेदन किया कि, "संसार अस्त व्यस्त हो रहा था।" आदेश हुआ कि कराचा खाँ को बुलवाया जाय। जब वह उपस्थित हुआ तो उसे अपने पास बुलाकर कहा कि, "हम सावधान हैं लोगों को सांत्वना दे दी जाय।" उसने बाहर जाकर उनके स्वस्थ होने के विषय में घोषणा की[5]। हज़रत पादशाह पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गए और किलये ज़फर की ओर रवाना हो गए। जब वे वहाँ पहुँचे तो आदेश हुआ कि, महतर वासिल

१ खतना कराया गया।

२ च, छ एवं ज में सभा के आनन्द मंगल, गायन, वादन एवं इनाम इकराम का अधिक विस्तार से उल्लेख किया गया है।

३ हज़रत पादशाह।

४ च, छ एवं ज में —"तदुपरान्त वहाँ से चार कुरोह पर पड़ाव किया। संयोग से हज़रत के शत्रु बीमार एवं कमजोर हो गये, यहाँ तक कि नित्य प्रति रोग बढ़ने लगा। इस कारण किश्म के अधीन शाखदान नामक स्थान पर पर्वत के आंचल में पड़ाव किया। यहाँ तक कि वे एक दिन इतने अचेत रहे कि लोग निराश होकर अपनी धन-सम्पत्ति ले लेकर भागने लगे। मीर्ज़ा अस्करी को, जो कैद में था, कराचा खाँ एवं कुछ खानों ने छल एवं धूर्तता के भय से निगरानी प्रारम्भ कर दी। जब कराचा खाँ ने उन्हें अत्यधिक रुग्ण देखा तो मीर्ज़ा हिन्दाल को, जो किलये ज़फर में था, उपद्रव एवं अशान्ति की रोक थाम के लिये बुलवाया और कहलाया कि वह शीघ्रातिशीघ्र यहाँ पहुँच जाय और समझ ले कि स्थिति बिगड़ चुकी है। इफ्फत पनाही माह चोचक बेगम, शाहज़ादा मीर्ज़ा मुहम्मद हकीम की माता, जिनसे हज़रत पादशाह ने स्वतने के जश्न के उपरान्त विवाह किया था, इस यात्रा में साथ थीं। वे अत्यधिक व्याकुलता प्रदर्शित करने लगीं। रोग पहिचानने वाले हकीम एवं अरिस्तू जैसे तबीब निराश होकर चले गये। अन्ततोगत्वा बेहोशी दूर करने के लिये उनके पवित्र मुख में अनार का रस टपकाने लगीं। अचानक परोक्ष के कारखाने से अनार का वह रस स्वस्थ होने का कारण बन गया।" (च-पृ० ८२ब ८३ अ, छ ७१ ब ७५ अ, ज ८९ ब ९० अ)।

५ च, छ एवं ज में इसके आगे इस प्रकार है —"मीर्ज़ा हिन्दाल को लिखा कि वह जिस स्थान पर हो, वहाँ से वापस चला जाय और अपने स्थान पर रहे"।

तथा मेहतर वकीला काबुल पहुँचकर अस्त्र-शस्त्र एवं खेमों का प्रबन्ध करें ताकि यहाँ से कुशलता पूर्वक लौटकर हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान किया जा सके।

(२१)

मीर्ज़ा कामरान का भक्कर से काबुल वापस होना, लोगों को कष्ट पहुँचाना, तथा शाहज़ादये आलमिया मुहम्मद जलालुद्दीन अकबर को बन्दी बनाना[1]

जब मेहतर वासिल तथा मेहतर वकीला काबुल पहुँच कर अपने कार्यों में व्यस्त हो गए तो मीर्ज़ा कामरान भक्कर की ओर से शीघ्रातिशीघ्र तीरी नामक स्थान पर पहुँचा और उसने मीर (९३ अ) सैयिद[2] अली को बन्दी बनवाकर अंधा बनवा दिया। वहाँ से वह ग़ज़नी पहुँचा तथा ज़ाहिद बेग को बन्दी बनवाकर उसकी हत्या करवा दी। वहाँ से शीघ्रातिशीघ्र काबुल पहुँचा। मीर फ़ज़ाएल बेग मुनइम खाँ के भाई, मेहतर वासिल तथा मेहतर वकीला[3] को बन्दी बनवा लिया और उनको अंधा करवा दिया[4]। मुहम्मद अली[5] तग़ाई की जो कि काबुल का हाकिम था हत्या करा दी। हज़रत शाहज़ादा मुहम्मद अकबर पुनः मीर्ज़ा कामरान के अधिकार में आ गए थे। यह समाचार हज़रत पादशाह को प्राप्त हुए[6]। उन्होंने मीर्ज़ा सुलेमान से संधि कर ली और किलये ज़फ़र मीर्ज़ा सुलेमान को दे दिया। कुन्दुज़ का किला जो कि किलये ज़फ़र में सम्मिलित था, अलग कर दिया और उसे मीर्ज़ा हिन्दाल को प्रदान किया। लोगों को सान्त्वना देकर काबुल की ओर रवाना हुए। शेर अफ़गन[7] एवं खुद ग़जब भाग कर मीर्ज़ा कामरान के पास चले गए। हज़रत पादशाह ने प्रस्थान करके तालीक़ान नामक स्थान पर पड़ाव किया। कई दिन तक बरफ़ गिरती रही। वे तालीक़ान में ठहरे रहे। जब बरफ़ कम हो गई तो वहाँ से निरन्तर यात्रा करते हुए कुन्दुज़[8] पहुँचे। मीर्ज़ा (९३ ब) हिन्दाल कुन्दुज़ में था। कुछ दिन तक उसने आतिथ्य किया। कराचा खाँ ने निवेदन किया कि, शेर[9] अफ़गन एवं खुद ग़जब के भागने से सेना वाले हतोत्साहित हो गये हैं। कुछ आदमियों को हज़रत सान्त्वना दें और कुछ को यह दास दे। संक्षेप में सान्त्वना के उपरान्त लोगों

१ च एवं छ के अनुसार फ़स्ल ५, न के अनुसार फ़स्ल ११।
२ च, छ एवं ज में—"मीर सैयद अली मुलतानी को जो उस स्थान का जागीरदार था"।
३ च, छ एवं ज में इसके आगे इस प्रकार है—"जो आदेशानुसार हिन्दुस्तान की यात्रा (अभियान) के प्रबन्ध में व्यस्त थे"।
४ च, छ में—"खरक मीर हज़ार के घुटने के भीतर की नस कटवा दी"।
५ च एवं छ में 'मीर मुहम्मद अली तग़ाई' न में 'मीर मुहम्मद तग़ाई'।
६ च, छ एवं ज में—"किलये ज़फ़र में प्राप्त हुये"।
७ ज में केवल 'मीर शेर अफ़गन', च छ एवं ज में 'मीर शेर अफ़गन'।
८ ग, ग घ एवं न में 'कंधार'।
९ च एवं छ के अनुसार—'नमक हरामों के भागने से'।

ने चहार दर[1] के मार्ग से काबुल की ओर प्रस्थान किया। शीत ऋतु थी। बरफ बहुत पडी थी। मार्ग बरफ से भर गए थे। जाने का मार्ग न मिलता था। सर्व-प्रथम मार्ग की बरफ हटाई जाती थी, तदुपरान्त घोडे तथा ऊँट यात्रा करते थे। जब चहार कारान नामक स्थान पर पडाव हुआ तो मीर्जा कामरान के विषय मे समाचार प्राप्त हुए कि युद्ध करेगा। वहाँ से प्रस्थान करके वे मामा खातून[2] नामक स्थान पर उतरे। वहाँ से अस्त्र-शस्त्र धारण करके सवार हुए और यूरत चालाक नामक स्थान पर आये तथा तहारत के लिए उतरे। हजरत पादशाह के एक हाथ में सेब तथा रूमाल था और दूसरे हाथ से मुह के ऊपर पानी डालते जाते थे कि उनकी दृष्टि सूर्य पर पडी। उन्होंने देखा कि सूर्य हाले[3] मे इस प्रकार है जैसे कोई बादशाह खरगाह म बैठा हो[4]। हृदय में सोचा कि "ईश्वर ने चाहा तो इस स्थान से मेरी विजय होगी कारण कि मेरे हाथ में सेब तथा रूमाल है (९४ अ) और दूसरे हाथ से जल द्वारा मुह धो रहा हूँ।" उन्होंने कहा, 'यह उत्तम फाल है।"

तदुपरान्त सवार होकर अफगानो के एक ग्राम मे पहुँचे थे कि मीर्जा कामरान की ओर से शेर अफगन[5] प्रकट हुआ। मीर्जा हिन्दाल हजरत पादशाह की ओर से रवाना हुआ और युद्ध होने लगा। मीर्जा हिन्दाल का एक कूरची मारा गया। आपस में युद्ध हो रहा था कि इसी बीच में हजरत पादशाह की दृष्टि मीर्जा हिन्दाल पर पडी कि वह अकेला है और लोग छिन्न भिन्न हो गए हैं। हजरत स्वय युद्ध के लिए बढे। कराचा खा ने निवेदन किया कि, "इस दास को आदेश हो कि युद्ध करे।" हजरत पादशाह ने अनुमति दे दी। उसने युद्ध किया। शेर अफगन ने तीन बार तलवार चलाई। कराचा खा ने तीनो बार उसकी तलवार अपनी तलवार पर रोकी। चौथी बार वह तलवार

१ च, छ एव ज में —"तदुपरान्त वहा से प्रस्थान किया। मार्गों के समाचार पूछे। समाचार प्राप्त हुये कि 'आब दरा के मार्ग के अतिरिक्त समस्त मार्ग बरफ से भर गये हैं'। विवश होकर उस मार्ग से काबुल की ओर रवाना हुये। शीत ऋतु थी। बरफ इतनी पड चुकी थी कि सर्वप्रथम लोग कूट-कूट कर बरफ हटाते थे, तदुपरान्त घोडे तथा ऊँट चलाते थे। इस कठिनाई से यात्रा करते हुये एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहा कारवाले न पहुँच सके। अत्यधिक कष्ट भोगकर तुच्छ जौहर ने बरफ गरम की और जल तैयार करके तहारत कराया। सायकाल की नमाज के समय एक मोम बत्ती तहारत' खाने में जला दी। एक अन्य शमा सोने के कमरे के लिये तैयार की। उन्होंने कहा, 'हे योग्य दास। ऐसे स्थान पर इन्हें कहा से लाया ?' मैंने निवेदन किया कि, 'यह मेरी जेब में थी ताकि कभी काम आ सके'। आदेश दिया कि, 'एक मोम बत्ती जलाये रखना। जब पुस्तक पढने लगूँ तब जला देना'।

उस कष्ट के समय जब मीर्जा असकरी जो बन्दी था, प्यास के कारण मरने लगा तो उसने ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद से रुष्ट होकर कहा कि, 'मुझे एक प्याला जल भी नहीं देता। तेरी नाक जो काटी गई, क्या उसका बदला लेता है ?' ख्वाजा ने कहा, 'आपने मेरी नाक काट ली, अब क्या काटेंगे' ? जब हजरत के सम्मानित कानों तक यह बात पहुँची, तो उन्होंने मुस्कुरा कर फर्राश (जौहर) से कहा, 'ख्वाजा से कहो कि वह चीनी के प्याले भर जल मीर्जा के लिये पृथक् कर दें।' इसका कारण यह था कि इससे पूर्व उनमें आपस में शत्रुता हो गई थी"। (च पृ० ८४अ-ब, छ पृ० ७३ अ, ज पृ० ९१अ ९२)।

२ मेजर चार्ल्स स्टीवर्ट के अनुवाद में 'आमा खातून'।

३ चाँद अथवा सूर्य के गिर्द पडने वाला घेरा।

४ इस वाक्य का अनुवाद च, छ एव ज की सहायता से किया गया है। क, ख, ग एव घ में यह वाक्य स्पष्ट नहीं है।

५ च, छ एव ज में 'मीर शेर अफगन'।

चलाना चाहता था कि ईश्वर की कृपा से वह घोड़े पर झुक गया। कराचा खा ने अपने घोड़े को बढ़ाकर शेर अफ़गन को घोड़े से पृथक् कर दिया और उसे जीवित बन्दी बनाकर हज़रत पादशाह की सेवा मे प्रस्तुत किया। हज़रत ने आदेश दिया कि, "उसको बन्दी रक्खा जाय।" कराचा खा ने निवेदन किया कि, "वह हरामखोर है, उसकी हत्या कर देनी चाहिए।" उस समय शेर अफ़गन (९४ ब) की हत्या करा दी गई। विजय हो गई। मीर्ज़ा हिन्दाल ने लोगों[1] की सिफ़ारिश की। हज़रत पादशाह ने भी उन लोगो को सात्वना दी।

हज़रत पादशाह का काबुल पहुँचना, मीर्ज़ा कामरान का वहाँ से दुबारा किलये जफ़र एवं तालीकान की ओर पलायन, उस राज्य को मीर्ज़ा सुलेमान से छीनना, तथा हज़रत के पास से कुछ अमीरों का पलायन[2]

कराचा[3] खा समाचार लाया कि मीर्ज़ा कामरान काबुल से भाग जाना चाहता है। हज़रत ने आदेश दिया कि, 'जिस स्थान पर सियाह सग है, मैं वहा जाता हूँ, कही वह उधर से न निकल जाय। तुम काबुल के आस पास के स्थानो मे सावधान रहो। किले की ओर एक व्यक्ति को इस आशय से भेजा कि वह पता लगाकर आये कि क्या समाचार है। जब यह पता चला कि विभिन्न स्थानों पर लोग नियुक्त हैं और वह किले के बाहर नही निकल रहे हैं तो हज़रत पादशाह ने जाकर कराचा खा की मज़िल मे पड़ाव किया। उसने हज़रत पादशाह के पाँव पर अपनी पगड़ी रख दी। (९५ अ) हज़रत पादशाह ने उस पगड़ी को कराचा खा के सिर पर रख दिया, और प्रसन्नता प्रकट की। तदुपरान्त मीर्ज़ा कामरान ने कराचा खा के विषय मे कहलाया कि वह उसकी सेवा में चला आये, अन्यथा उसके पुत्र सरदार बेग की हत्या करा दी जायेगी। उसने जाकर यह बात हज़रत पादशाह के समक्ष प्रस्तुत की[4]। हज़रत ने कहा कि, 'मै तुम्हारा सरदार बेग हूँ।' उसने निवेदन किया कि, "सरदार बेग सरीखे एक लाख सरदार बेग आपके एक बाल पर न्योछावर है। सूर्योदय के समय आदेश हुआ कि, "किले को घेर लिया जाय और विभिन्न स्थानो पर मोर्चे बाँट दिये जायें।" उन्होने स्वय उकाबैन नामक पर्वत पर जो कि काबुल के किले के सरकोब के समान है, पड़ाव किया और वहाँ पर किले के विजय की व्यवस्था करके युद्ध हेतु जर्बजग लगवा दिये। मीर्ज़ा कामरान ने आदेश दिया कि उनके पुत्र मुहम्मद अकबर को उनके समक्ष रख दिया जाय। (९५ ब) यह समाचार हज़रत पादशाह को प्राप्त हुए। उन्होने आदेश दिया कि "जर्बजग रुकवा दी जाय। सैनिक अपने-अपने स्थान पर दृढ रहे और अपने मोर्चो की भली भाति रक्षा करें"[5]।

१ सेना के आदमियों की।

२ च एवं [redacted] के अनुसार छठी फस्ल, [redacted] के अनुसार १२वीं फस्ल।

३ च एवं छ में —"जब बन्दगान हज़रत काबुल के समीप पहुँचे तो कराचा खा समाचार लाया ..."।

४ च, छ में —"उसका पुत्र सरदार बेग मीर्ज़ा की सेवा में था। उसने उसके पास सूचना भेजी कि यदि तू मेरे पास आ जाय तो अच्छा है, अन्यथा मैं उसकी हत्या कर दूँगा। यह बात सम्मानित कानों तक पहुँची।

५ च, छ एवं ज में —"मीर्ज़ा कामरान ने उस क्रोध के कारण क्रोधित होकर मीर्ज़ा बाबूस बेग के दो दो-तीन वर्षीय तीन पुत्रों की हत्या करा दी। उसकी पुत्री को दासों को दे दिया"।

तूमान[1] दे दिये जायें। हज़रत पादशाह ने आदेश दे दिया। कराचा खाँ ने स्वयं परवाना लिख कर (९६ ब) दे दिया। जब उस व्यक्ति ने उसे ख़्वाजा ग़ाज़ी के समक्ष प्रस्तुत किया तो उसने स्वीकार न किया और पादशाह को समझा दिया कि, "हम सेना की व्यवस्था कर रहे हैं, यदि किसी को किसी चीज का आदेश होगा तो सरकार में गुंजाइश नहीं।" उस व्यक्ति ने वह परवाना कराचा खाँ को वापस कर दिया। उसने हज़रत पादशाह से निवेदन किया। उन्होंने उपेक्षा की। इस क्रोध के कारण वह कुछ अमीरों को मार्ग-भ्रष्ट करके मीर्ज़ा कामरान के पास भाग जाने के विषय में सोचने लगा। यह समाचार हज़रत पादशाह को प्राप्त हुए। उन्होंने आदेश दिया कि, "मुहम्मद अकबर शाहज़ादा जाकर कराचा खाँ एवं अन्य अमीरों को सान्त्वना देकर ले आयें।" ख़्वाजा अम्बर ने निवेदन किया कि, "हज़रत शाहज़ादे का जाना उचित नहीं। कहीं ऐसा न हो कि उन्हें अस्करी मीर्ज़ा के बदले में रोक लिया जाय।" अतः हज़रत ने कराचा खाँ को संदेश भेजा कि, "बात मान ले और हमारी सेवा से पृथक् न हो कारण कि तू हमारे राज्य का हितैषी है।" उसने निवेदन किया कि, "ख़्वाजा ग़ाज़ी दीवान को मुझे सौंप दिया जाय[2]।" हज़रत ने कहा कि, "इस समय हमारे लिए यह उचित न होगा किन्तु तू हमारा वज़ीर तथा वकील है। एक दिन वह तेरे अधिकार में (९७ अ) आ जायेगा।" अन्ततोगत्वा उपदेश से कोई लाभ न हुआ। कराचा खाँ, मुसाहिब बेग, बाबूस बेग एवं मुग़लों के समूह विभिन्न दस्तों में चले गए। हज़रत पादशाह को समाचार प्राप्त हुए कि अमीरों ने हरामख़ोरी की है। वे लोग पाये मीनार दर्रे तक पहुँचे ही होंगे कि यह समाचार सुनते ही हज़रत पादशाह सवार हो गए और उनकी सेना शीघ्रातिशीघ्र बढ़ती हुई उश्तुर ग्राम[3] नामक स्थान पर पहुँची। युद्ध होने लगा। जो अमीर लोग भागे थे वे पराजित हो गए एवं मीर्ज़ा कामरान से मिल गए।

हज़रत पादशाह[4] ने उनके नामों के अनुसार उनकी उपाधियाँ निश्चित कीं। कराचा खाँ को कराबख़्त, मुसाहिब बेग को मुनाफ़िक, एवं बाबूस को दम्यूस की उपाधि प्रदान की।

हज़रत पादशाह का तालीक़ान की विलायत की ओर प्रस्थान, उन स्थानों की विजय, मीर्ज़ा कामरान का सेवा में उपस्थित होना, मीर्ज़ा अस्करी का मुक्त किया जाना[5]

जब हरामख़ोर चले गए तो हज़रत पादशाह काबुल में पधारे। महा सुल्तान मीर्ज़ा को बुलवाकर कहा कि, "तूने घाटियों में छापे मारे हैं। अधिक बातें मत बना। संक्षेप में बता कि क्या करना चाहिये ?" मीर्ज़ा ने निवेदन किया कि, "यदि आप हिन्दूकुश पर्वत को पहिले पार कर लें तो

१ चार्ल्स स्टीवर्ट के अनुसार '१० पौंड'।
२ च, [illegible] एवं ज में इसके आगे इस प्रकार है, "सौंप दिया जाय तो हमारी शिकायत समाप्त हो जाय।"
३ 'उश्तुर कराम' पूर्व में प्रयुक्त हुआ है।
४ च एवं द में 'शाहे जवान दस्तगाह—विनोद-प्रिय पादशाह' एवं ज में 'बादशाहे हकीकत आगाह (सत्य से परिचित बादशाह)'।
५ च, द के अनुसार [illegible] वीं फस्ल, ज के अनुसार १३वीं फस्ल।

(९७ ब) विजय आपकी है। यदि वह पहिले पार कर लेगा तो विजय उसकी है। जो[1] अमीर लोग उसके पास भाग कर चले गए हैं, उनके कारण वह अभिमानी हो गया है।" हज़रत ने कहा, "यदि[2] वह अभिमानी है, तो हम ईश्वर के समक्ष विनय एवं नम्रता प्रदर्शित करते हैं। हमारी विजय होगी[3]"। कुशलता हेतु फातेहा पढ़ा। मंगलवार की रात में सवार हुए और वहाँ से मूरत चालाक में पडाव किया। हाजी मुहम्मद कश्का गज़नी में था, उसके बुलाने के लिए आदेश भेजा गया। अधिकांश लोगों ने कहा, "वह न आयेगा।" किन्तु सम्मानित फरमान के पहुँचते ही वह आ गया और रिकाब चूम कर सम्मानित हुआ।

(२३)

हज़रत पादशाह के कंधे पर मुर्ग का बैठना और उससे उनका फाल निकालना, तालीकान के किले का, जिसे मीर्ज़ा कामरान बन्द किये था, अवरोध[4]

यह इस प्रकार है कि एक सफेद एवं विचित्र प्रकार का उत्तम रंग का मुर्ग आफताबखाने में सर्वदा रहता था। हज़रत पादशाह उसे किशमिश खिलाया करते थे। उसे इस कारण रख छोड़ा था कि रात्रि के अन्त में वह बाँग देकर सेवकों को जगा दे और वे अपने कार्य में व्यस्त हो जायें। हज़रत पादशाह एक दिन आफताबखाने में खड़े थे। उन्होंने अपने हृदय में सोचा कि "यदि (९८ अ) मेरा प्रताप उन्नति पर है तो यह मुर्ग मेरे कंधे पर आ जाय तथा बाँग देने लगे।" वे सोच ही रहे थे कि मुर्ग उनके कंधे पर बैठकर बाँग देने लगा। हज़रत पादशाह प्रसन्न हो गए। वे उसे अपने शुभ हाथों में इस आशय से पकड़े रहे कि उस मुर्ग के पाँव में चाँदी का छल्ला डाल दें।

वहाँ से प्रस्थान करके उन्होंने करावाग में पडाव किया और वहाँ से चहार ग्राम[5] तथा उस स्थान से गुलबहार और फिर वहाँ से पजहीरा[6] में उतरे। वह दर्रा नाना प्रकार की उत्तम वस्तुओं से परिपूर्ण है। वहाँ के निवासी सियाहपोश काफिरों के सम्बन्धी[7] तथा काबुल के अधीन हैं। वहाँ से प्रस्थान करके उन्होंने हिन्दूकुश में पडाव किया। प्रातःकाल हिन्दूकुश दर्रे को पार करके (९८ ब) बकी[8] नामक नदी पर पडाव किया। वहाँ हिन्दाल मीर्ज़ा का प्रार्थना-पत्र एवं उसके भेजे

१ च, छ एवं ज में इसके पूर्व यह है —"किन्तु आपको ज्ञान होना चाहिये कि जो अमीर "।
२ च, छ एवं ज में इसके पूर्व इस प्रकार है —"हमने अभिमान का परिणाम बहुत देख लिया है।"
३ च, छ एवं ज में —"यदि ईश्वर ने चाहा तो सर्व प्रथम हम पार करेंगे। इसी बीच में अली कुली बहादुर जो आज कल खाने ज़मान की उपाधि द्वारा सुशोभित है, बगश की विलायत से, एवं मीर्ज़ा इब्राहीम किलये ज़फर से पहुँचे। उन्हें आगे आगे भेजा गया।"
४ च, छ एवं ज में यह पृथक फस्ल नहीं है।
५ च, छ, एवं ज में 'चारी कारान'।
६ चार्ल्स स्टीवर्ट के अनुवाद में 'पन शहर'।
७ च, छ एवं ज में 'सम्बन्धी' नहीं है, (अपितु) "वहाँ के निवासी सियाह पोश काफिर"।
८ च, छ में 'नेरी', ज में 'मगीन', स्टीवर्ट के अनुवाद में 'बगी'।

हुए खरबूजे मिले। जुहर की नमाज के समय वहाँ से प्रस्थान करके यात्रा कर रहे थे और एक पहर रात्रि व्यतीत हो गई थी कि मीर्ज़ा घोड़े से उतरना चाहता था। हजरत पादशाह ने अपने सिर की शपथ दी कि घोड़े से मत उतरो। संक्षेप में उसने अभिवादन करने का सम्मान प्राप्त किया। हजरत पादशाह ने उसे अत्यधिक प्रोत्साहन दिया एवं कृपा प्रदर्शित की तथा बात चीत करने लगे और कहा कि, 'कामरान तथा षड्यन्त्रकारियों के समाचार सुनाओ।' उसने निवेदन किया कि वे किलये जफर में हैं। रात्रि के अन्त में एक पहर रह गया था कि वे लोग हलवना[1] नदी पर पहुँचे। मीर्ज़ा कामरान किलये जफर से २५ कुरोह का धावा मारता हुआ पहुँचा। एक घड़ी रात रह गई थी कि वह (पादशाह की) सेना के समक्ष अपनी पंक्तियां जमाकर खड़ा हो गया। सूर्योदय के समय पता चला कि मीर्ज़ा कामरान सेना की पंक्तियां जमाये हुए खड़ा है। हजरत पादशाह ने (९९ अ) अपनी सेना को आदेश दिया कि वह भी पंक्तियां सुव्यवस्थित करके मुकाबला करे। हाजी मुहम्मद खां कोकी हजरत पादशाह के बायें हाथ पर था। जब कामरान मीर्ज़ा ने उत्तम सेना एवं पताकायें देखीं तो समझा कि पादशाह हैं। उसने अचानक आक्रमण कर दिया। हाजी मुहम्मद खां की सेना मुकाबला न कर सकी। उसकी समस्त वस्तुएँ एवं असबाब मीर्ज़ा के सैनिकों को प्राप्त हो गए जिन्हें उसने नष्ट भ्रष्ट कर दिया और तालीकान के किले में प्रविष्ट हो गया। जनश्रुति के रूप में सुना गया है कि चाकर नामक हाजी मुहम्मद कोकी के एक विश्वासपात्र के मीर्ज़ा कामरान ने अपने हाथ से इस प्रकार तलवार मारी कि उसके कान के नीचे तक पहुँच गई। हजरत पादशाह ने रिकाब खाने के समाचार पुछवाये। निवेदन किया गया कि वह सुरक्षित है[2]।

तदुपरान्त आदेश हुआ कि १२ पताकायें एवं कौकबा[3] खोल दिए जायं तथा युद्ध के नक्कारे बजवाये जायें। जब मीर्ज़ा कामरान ने नक्कारे की आवाज सुनी और उन पताकाओं को देखा तो समझ गया कि पादशाह हैं। उसने कहा कि मैं चकमा खा गया। किले के भीतर प्रविष्ट हो गया। मीर्ज़ा की सेना में से प्रथम व्यक्ति जिसे बन्दी बनाकर लाया गया वह शेखिम ख्वाजा खुदाइ[4] था। आदेश हुआ कि पताका के नीचे उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये जायं। उसके ४२ घाव लगाये (९९ ब) गए। उसकी मृत्यु न हुई[5]। वह उठकर अपने घर चला गया। हजरत पादशाह विजय

१ ज में खलवना।

२ च छ एवं ज में —'हाजी मुहम्मद खां कोकी हजरत पादशाह के बायें हाथ पर था। उसके पास बड़ी उत्तम पताकायें एवं सेना थी। मिर्ज़ा ने उसके विषय में सोचा कि पादशाह हैं। अचानक आक्रमण कर दिया, वह मुकाबला न कर सका। पराजित हो गया। उसके कूरचियों में से चाकर नामक एक वीर के गहरा घाव लगा यहां तक कि उसके दोनों कानों के नीचे के भाग तक पहुँच गया। सर्वसाधारण में प्रसिद्ध है कि स्वयं मीर्ज़ा ने उस पर तलवार चलाई। इस कोलाहल में पादशाह एवं सेना के असबाब नष्ट भ्रष्ट हो गये। मीर्ज़ा के सैनिक लूट मार करके तालीकान के किले में प्रविष्ट हो गये। हजरत पादशाह ने रिकाब खाने के समाचार पूछे। कहा गया, सुरक्षित है। उन्होंने कहा, अल हम्दो लिल्लाह, जो खजाना पुनः नहीं प्राप्त किया जा सकता, सुरक्षित है। अन्य (बातें) सामान्य हैं। (ज पृ० ८९अ, छ पृ० ७७अ च पृ० ९७ अ ९७ ब)।

३ नक्कारे एवं शाहीचिह्न।

४ च छ एवं ज में 'शेखम ख्वाजा खिज्री'।

५ च छ एवं ज में —"उसे मुर्दा समझ कर छोड़कर चले गये। वह उसी प्रकार रात्रि में अपने घर चला गया"।

प्राप्त करके ताग़ीकान के किले की ओर रवाना हुए। सेना वाले मीर्ज़ा कामरान के जिस आदमी को भी बन्दी बनाकर लाते थे, उसकी हत्या का आदेश दे दिया जाता था। जब बहुत से लोगों की हत्या करा दी गई तो पादशाह के हृदय में दया आ गई। एक उद्यान में पड़ाव किया और मीर्ज़ा कामरान को एक पत्र लिखकर भेजा जिसमें यह लिखा कि, "हे निष्ठुर भाई ! तू यह क्या कर रहा है? जो ख़ून होता है वह तेरी गरदन पर होगा। क़यामत के दिन तुझसे इस विषय में पूँछताछ होगी। आ हम लोग संधि कर लें ताकि प्राणियों को कष्ट न हो।" नसीब रम्माल को बुलाकर कहा कि, "इस पत्र को मीर्ज़ा कामरान के पास ले जा।" जब वह पत्र लेकर पहुँचा तो मीर्ज़ा को सूचना कराई गई। उसने नसीब को बुलवाया। नसीब ने पत्र प्रस्तुत किया। पढ़कर मौन हो (१०० अ) गया। नसीब ने उत्तर के विषय में निवेदन किया। मीर्ज़ा कामरान ने यह शेर पढ़ा

शेर

'राज्य की सम्पत्ति को वह आलिंगन करता है,
जो चमकती हुई तलवार का चुम्बन लेता है।'

नसीब ने लौटकर हज़रत से निवेदन किया। हज़रत का आदेश हुआ कि 'विभिन्न स्थानों पर मोर्चे बाँट दिये जायें।" तदुपरान्त तुच्छ जौहर का आदेश हुआ कि, "हमारे आने तक मोर्चों[1] के हिस्से ठीक कर दिये जायें।" आधी रात से प्रातःकाल तक हज़रत पादशाह मोर्चे बाँटते रहे[2]। सम्बल खां उर्फ़ मुम्बुल मीर हज़ार[3] का आदेश हुआ कि, "ज़र्बज़न के लिए गरकाब तैयार करो।" मोर्चों के वितरण के उपरान्त ज़र्बज़न, बन्दूक तथा बाण से युद्ध होता रहा। दो मास व्यतीत हो गए। मीर्ज़ा कामरान ने व्याकुल होकर सूचना भेजी कि अपने सद्र[4] को भेज दें जो हज़रत पादशाह के नाम का ख़ुत्बा पढ़ दे। शुक्रवार के दिन पादशाह के आदेशानुसार मौलाना अब्दुल बाक़ी (१०० ब) ने जाकर ख़ुत्बा पढ़ा। शनिवार की रात्रि[5] में क़राचा खां, मुसाहिब बेग, बाबूस बेग, जो भागकर चले गए थे, निपग तथा तलवारें अपनी गरदन में लटकाकर हज़रत के चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुए। हज़रत ने उनके अपराध क्षमा कर दिए। शनिवार के दिन मीर्ज़ा कामरान किले के बाहर निकला और ककी नामक नदी पर पड़ाव किया। जब मीर्ज़ा कामरान किले के बाहर चला गया तो मीर्ज़ा सुलेमान बदख़्शी के पुत्र मीर्ज़ा इबराहीम हुसेन ने मीर्ज़ा कामरान के आदमियों के प्रति बड़ी धृष्टता की। इसका मीर्ज़ा कामरान को बड़ा दुःख हुआ। यह समाचार हज़रत पादशाह को प्राप्त हुए। उसे बुलवाया। तदुपरान्त उन्होंने घोड़ा, सरोपा, ज़ीन सहित घोड़ा[6],

१ ब, द एवं ज में 'मुचल्के ख़ास'।
२ च एवं छ में —"तुच्छ दास जौहर को आदेश दिया कि हमारे आगमन तक मुचल्के ख़ास तैयार कर दे। आधी रात से प्रातःकाल तक तैयार कर दिया"।
३ च एवं छ में 'सम्बल खां', ज में 'मीर हज़ार' जो बाद में मुअज़्ज़म ख़ानी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
४ च एवं छ में —"मुल्ला अब्दुल बाक़ी सद्र आ जाएँ एवं (आपके नाम का) ख़ुत्बा पढ़ दें"।
५ च, छ एवं ज में —"जब रात्रि हो गई, अथवा शुक्रवार का दिन व्यतीत हो जाने के उपरान्त शुक्रवार की रात्रि।"
६ च, छ एवं ज में —"ज़ेब व बालाये अस्प- अथवा घोड़े पर की ज़ीन"।

लचा रेजा[1], कलाकन्द[2], ९ सूती वस्त्र ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद मीर ब्यूतात के हाथ भेजे, और फरमान लिखा कि "मीर्जा इब्राहीम ने भूल की। बालक है। समझता न था, क्षमा करें। जलालुद्दीन महमूद मीर ब्यूतात को क्षमा याचना करने के लिए भेज रहा हूँ। कन्धार[3] तुम्हें प्रदान कर दिया।" वह मीर्जा कामरान की सेवा में पहुँचा और घोड़ा तथा सरोपा एवं जो कुछ लाया था, पेश किया। (१०१ अ) मीर्जा कामरान ने आदरपूर्वक सरोपा धारण किया। फरमान[4] पढ़कर कहा कि, "मैं हजरत की सेवा में चलता हूँ, जो कुछ उनकी इच्छा होगी मुझे स्वीकार है।" जलालुद्दीन बेग ने अपनी दवात तथा कलम मंगवाई और प्रार्थना-पत्र लिखा कि, "मीर्जा कामरान हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त करना चाहता है। अब जो भी आदेश हो।"

(२४)

नालीकान के किले की विजय, मीर्जा क़ामरान का सेवा में उपस्थित होना, मीर्जा अस्करी का मुक्त होना तथा हजरत पादशाह का बल्ख की ओर प्रस्थान[5]

जब उस पैक[6] ने प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया तो उन्होंने कहा कि, 'बड़ा अच्छा है। आये और अपने भाई से भेंट करें।" हजरत प्रसन्न हो गए। फरमान लिखकर भेजा। पैक अपने स्वामी के पास फरमान ले गया और प्रस्तुत किया। तदुपरान्त मीर्जा कामरान हजरत पादशाह के दरबार की ओर रवाना हुआ। हजरत ने आदेश दिया कि 'मीर्जा अस्करी के पाव से जंजीर पृथक् कर दी जाय।' ऐसा ही किया गया। समाचार प्राप्त हुए कि, "मीर्जा कामरान आ रहा है।' आदेश हुआ (१०१ ब) कि, "समस्त मीर्जा लोग तथा अमीर स्वागत करें। सायाबान लगवाये जायें तथा खुशी के नक्कारे बजाये जायें।" उन्होंने आदेश दिया कि, 'जब मीर्जा कामरान आये तो उसे मीर्जा हिन्दाल के पेश खाने[7] में ले जायें। जब वह गिलीम[8] पर बैठने लगे तो गिलीम पर जानू मोड़ने के पूर्व कह दिया जाय कि, 'यहाँ बैठने का आदेश नहीं है। पादशाह की सेवा में जाओ[9]।" जब आदेशानुसार वह कालीन तक पहुँचा तो मुनइम खां की कमर से रूमाल लेकर अपनी गरदन में डाल लिया। पादशाह ने कहा कि, 'हाय हाय! इसकी आवश्यकता नहीं गरदन से निकालो।" तीन तस्लीम करके[10]

१ सम्भवतः रोटी के टुकड़े।
२ मिठाई।
३ 'कुन्दुज' का प्रभाव होगा।
४ च, छ एवं ज में —"उत्कृष्ट फरमान अपने हाथ में लेकर पढ़ा, कन्धार के उल्लेख पर कहा कि 'एक बार मैं उनकी सम्मानित सेवा में जाता हूं। इसके बाद जो उनकी इच्छा होगी मुझे स्वीकार है।"
५ च, छ एवं ज में पृथक् फस्ल नहीं है।
६ संदेश वाहक।
७ दालान, ऐसे खेमे जो आगे भेज दिये जाते हैं
८ कालीन।
९ इस वाक्य का अनुवाद च, छ एवं ज की सहायता से किया गया है। क, ख, ग, घ में स्पष्ट नहीं।
१० तीन तस्लीम।

अभिवादन किया। हज़रत पादशाह ने उसे आलिंगन किया और अपने दायें हाथ की ओर स्थान दिया। तस्लीम करके वह दायें हाथ की ओर बैठ गया तथा क्षमा-याचना करने लगा। तदुपरान्त हज़रत पादशाह ने कहा कि, "वह तोरे के अनुसार भेंट थी, अब मैं भाई के रूप में भेंट करता हूँ।" दोनों भाई खड़े होकर आलिंगन हुए और रोने लगे। समस्त दरबारी तथा उपस्थितगण प्रसन्न हो गए। (१०२अ) वह बड़ा विचित्र समय था, किसी का कोई दुःख न था। अला नूर[1] प्याला लाया गया। आधा हज़रत पादशाह को और आधा मीर्ज़ा कामरान को दिया गया। जो घटनायें एक दूसरे पर घटी थीं उनका उन लोगों ने उल्लेख किया। चारों भाई एक गिलीम पर बैठ गए और भोजन करने लगे। कुशलता सम्बन्धी फ़ातेहा पढ़ा तथा ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। दो दिन तक वहाँ सभा होती रही एवं आनन्द-मंगल में समय व्यतीत होता रहा। तीसरे दिन तालीक़ान के किले के समीप से प्रस्थान किया गया और वे अदक मुबक नामक चश्मे पर ठहरे। आपस[2] में प्रतिज्ञा करके राज्य को बाँट लिया। सात दिन ठहर कर प्रान्तों को मीर्ज़ाओं तथा अमीरों में वितरण किया। मीर्ज़ा कामरान एवं मीर्ज़ा अस्करी को कोलाब प्रदान किया। चाकर बेग को मीर्ज़ा का अमीरुल (१०२ब) उमरा बनाया और दरे-खाना उसे सौंप दिया। किल्ये ज़फ़र तथा तालीक़ान एवं कुछ अन्य परगने मीर्ज़ा सुलेमान को दिये। कन्धार की विलायत मीर्ज़ा हिन्दाल को प्रदान की। विभिन्न स्थानों का वितरण करके लोगों को विदा कर दिया।

वे स्वयं काबुल पहुँच और वहाँ से परियान नामक किले की ओर रवाना हुए और उस किले को विजय[3] कर लिया। वहाँ सियाहपोश काफ़िर लोग लूट-मार किया करते थे। उस किले का मलिक अली पजहीरी को सौंपकर वे काबुल पहुँच गए।

हज़रत पादशाह का बल्ख़ की ओर प्रस्थान, उसकी विजय, तदुपरान्त पराजय और मीर्ज़ा का ऊज़बेकों से अत्यधिक कुमक लाना[4]

तदुपरान्त समाचार प्राप्त हुए कि मीर्ज़ा कामरान तथा चाकर बेग में झगड़ा हो गया। मीर्ज़ा कामरान ने कोलाब की विलायत से जाकर चाकर बेग को मारा[5]। हज़रत पादशाह ने मीर्ज़ा शाह

१ च एवं छ में —"तदुपरान्त अली नूर (अला नूर) नामक शाही भोजन का प्याला लाया गया।" ज में —"तदुपरान्त उनके द्वारा विशेष रूप से आविष्कार किया हुआ भोजन जिसे नूरन अला नूर कहते हैं लाया गया।" च में अभिप्राय को उचित रूप से स्पष्ट कर दिया गया है।

२ च, छ एवं ज में —"उत्कृष्ट मीर्ज़ाओं, सिपह सालार अमीरों ने पुनः बैअत की ओर नई प्रतिज्ञा की"।

३ "फ़तह" बाद में बढ़ाया गया है, किले की मरम्मत से अभिप्राय है। च, छ एवं ज में —"उस स्थान से परियान नामक किले पर पहुँचे उस किले का प्राचीन काल में साहबे क़िरान ने निर्माण कराया था, किन्तु वह नष्ट एवं वीरान हो गया था। उसे नये सिरे से दृढ़ कराया।" (च पृ० ९२अ, छ पृ० ७९ब, ज पृ० १०१अ)।

४ च, छ के अनुसार फ़स्ल ८, ज के अनुसार फ़स्ल १४।

५ च, छ एवं ज में स्पष्ट रूप से इस प्रकार है —"मीर्ज़ा क़ामरान ने चाकर बेग को मारकर कोलाब से निकाल दिया"।

मुल्तान को भेजा और फरमान लिखा कि, "चाकर वेग[१] ने अच्छा न किया। तुम यहाँ आ जाओ, तुम्हे दूसरी विलायत दे दूंगा।" उसने जाकर फरमान प्रस्तुत किया। मीर्जा कामरान न आया और कहा कि, '*मैं दरवेश हो गया हूँ तथा ससार को त्याग दिया है। मुझे सल्तनत से कोई सम्बन्ध* नही।" जबान से वह यह कहता था और हृदय में छल एव धूर्तता भरी थी।

(१०३ अ) हजरत पादशाह के वल्ख की ओर प्रस्थान का यह कारण था कि "जब वल्ख पर अधिकार प्राप्त हो जाय और कामरान मीर्जा मुझसे भेंट करने आये तो मैं वल्ख को मीर्जा को दे द।" हजरत पादशाह के साथ अमीरा म से हिन्दाल मीर्जा सुलेमान शाह मीर्जा, हाजी मुहम्मद खा कोकी, तरदीबेग[२], मुनइम खा तथा कुछ अन्य अमीर थे। हजरत पदशाह वल्ख की विलायत की ओर रवाना हो गए। वे समझते थे कि मीर्जा कामरान से सधि हो गई है। वह आ जायेगा। वे निरन्तर यात्रा करते गए। जब वे ऐवक नामक स्थान के समीप पहुचे तो मीर्जा कामरान न आया। पीर मुहम्मद खा ऊजबेक के अमीर किले के भीतर थे। (हजरत पादशाह ने) किले का अवरोध करके उसे विजय कर लिया। समस्त अमीर बन्दी बना लिये गए। मीर्जा के घर वाला तथा कुछ अमीरा को काबुल भेज दिया गया। मीर अतालीक बेग को, जो पीर मुहम्मद का अमीरुल उमरा था अपने साथ लेकर वे बल्ख की ओर चल दिए। अतालीक बेग ने कराचा खा से कहा कि, 'राज्य के हित मे यह उचित (१०३ ब) नही कि हजरत पादशाह वल्ख की ओर प्रस्थान करें उन्हे रोक लिया जाय।' कराचा खा ने कहा कि, 'हमारे पादशाहो के तारे मे यह प्रथा नही है।" अतालीक बेग ने कहा कि, 'पादशाह मुसलमान है। यदि हमारे सरीखे लोग किसी अन्य व्यक्ति द्वारा बन्दी बनाये गए होते तो ईश्वर ही जानता है कि क्या आदेश देता। उन्होने कुछ को काबुल भेज दिया और कुछ को अपनी सेवा मे रख लिया। किसी के प्राण को कोई हानि न पहुँचाई। अत मैं उनका हितैषी हूँ। ऊजबेक लोग ऐसी कौम है जिनका उल्लेख सम्भव नही। यदि हजरत पादशाह इस स्थान से वापस चले जायं तो अच्छा है। सक्षेप म, कराचा खा ने[३] पादशाह के काना तक यह बात न पहुँचाई। एक मजिल से दूसरी *मजिल को पार करते हुए व वल्ख पहुँचे। युद्ध हुआ। ऊजबक लोग भागकर बल्ख के किले में* प्रविष्ट हो गए। मीर्जा हिन्दाल पीछा करता हुआ तख्ते पुल तक पहुँचा और पादशाह को सदेश भेजा कि, 'यदि वे स्वय तख्ते पुल पर पहुँच जाये तो यह दास बल्ख नगर मे प्रविष्ट हो जाय।' हजरत पादशाह न पधारे। इसका कारण यह था कि वे प्रात काल युद्ध करना चाहते थे। तदुपरान्त (१०४ अ) समाचार प्राप्त हुए कि मीर्जा कामरान काबुल पहुँच गया[४]। यह समाचार सुनते

१ च, छ एव ज में —"चाकर बेग ने, यद्यपि वह उत्तम सेवक था, अच्छा [illegible] किया। तुम खिन्न मत हो। इसे पढ़त ही दरबार में आ जाओ। उसके बदले में तुम्हें दूसरी उत्तम विलायत दे दूगा। उन्होंने यह सोचा था कि 'क्योंकि मुझमें तथा मीर्जा में मेल है अत यदि वह आ जाय तो उसके साथ मिल कर वल्ख विजय कर लें और मीर्जा को दे दें।' मीर्जा उस आदेश को पढ़कर दरबार की ओर रवाना न हुआ और बहाना बना दिया कि 'मैं दरवेश हो रहा हूं। मुझे राज्य से कोई मतलब नहीं।" (च पृ०९२ अ, छ ७९ब, ज १०१ब)।

२ [illegible] में 'कराचा खा' का भी उल्लेख है।

३ च एव छ में —"सक्षेप में (कराचा) खा ने यद्यपि यह बात बड़ी उचित थी किन्तु उनके कानों तक न पहुँचाई।"

४ च एव छ में —" काबुल पहुँच गया। लोगा के परिवार वाले बन्दी बना लिये गये। इस समाचार से सेना बड़ी व्याकुल हुई"।

ही समस्त सेना व्याकुल हो उठी और यह निश्चय हुआ कि गज दर्रे के मार्ग से काबुल की ओर प्रस्थान कर दिया जाय। रात्रि में प्रस्थान किया गया और पराजित होकर वे काबुल के समीप पहुँचे[1]। हज़रत पादशाह पाये मीनार में उतर गए। सेना की दुर्दशा के विषय में बात होने लगी। हज़रत पादशाह ने कहा कि, "हमारे आदमियों की ईमानदारी का अन्त हो गया है। जो कुछ होता है वह उनकी दुष्टता के कारण होता है।"

पादशाह का सुल्तान महमूद ग़ज़नवी तथा याकूब लैस की कहानी सुनाना

हज़रत पादशाह ने कहा —सुल्तान महमूद के पास १२ हज़ार कपक[2] पोश तथा याकूब लैस के पास ६० हज़ार आहन[3] पोश अश्वारोही थे। जब उसने याकूब लैस पर आक्रमण किया तो मार्ग में वह एक उद्यान में प्रविष्ट हुआ। वह विलायत याकूब लैस के अधीन थी। उसने देखा कि उस उद्यान के फल पक जाने के कारण भूमि पर पड़े हुए हैं और इस प्रकार धरोहर के रूप में हैं कि मानो आदमी यहाँ न पहुँचते हों। सुल्तान महमूद ने अपने वज़ीर से पूछा कि हमारी सेना तीन (१०४ ब) दिन से भूखी थी, उन्हें भोजन न मिला था, यहाँ पहुँचकर फल क्यों न खाया?" वज़ीर ने निवेदन किया कि, "सेना इसी मार्ग से गई है किन्तु यह फल उनके लिए हराम थे, अतः न खाया। इसका कारण यह है कि यह राज्य विजय नहीं हुआ है, जिस समय विजय हो जायेगा उस समय हलाल हो जायेंगे।" यह बात सुनते ही सुल्तान महमूद ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और कहा कि, 'ईश्वर को धन्य है कि हमारी सेना इतनी ईमानदार है। ईश्वर से आशा है कि विजय प्राप्त हो जायेगी।" जब दोनों सेनाओं का युद्ध हुआ तो याकूब लैस एगरी[4] घोड़े पर सवार था। अचानक एक घोड़ी (महमूद की) सेना से भाग कर याकूब लैस के घोड़े के सामने से होती हुई गुजरी। याकूब के घोड़े ने जोड़ा खाने की इच्छा से इस घोड़ी का पीछा किया। यद्यपि याकूब ने बहुत लगाम खींची किन्तु कोई लाभ न हुआ। वह घोड़ी सुल्तान महमूद की सेना में पहुँची। ऐगरी घोड़ा उसके पीछे था। सुल्तान महमूद के सैनिकों ने प्रत्येक दिशा से बढ़कर याकूब लैस की हत्या कर दी। जब उस आहनपोश सेना ने देखा कि उसका कोई स्वामी नहीं है तो इन ६० (१०५ अ) हज़ार अश्वारोहियों ने सुल्तान महमूद की सेवा में पहुँचकर अभिवादन किया और विजय की बधाई दी। तदुपरान्त सुल्तान महमूद याकूब लैस के पड़ाव पर पहुँचा। जो वस्तुएँ, स्त्रियाँ इत्यादि थीं, उन्हें अपने अधिकार में कर लिया। सेना भूखी थी। सुल्तान महमूद की इच्छा थी कि जो खज़ाना प्राप्त होगा वह सेना को बाँट दिया जायेगा। किसी को कोई भी खज़ाना प्राप्त न हुआ। केवल याकूब लैस के अन्तःपुर से एक स्त्री सुल्तान महमूद की सेवा में प्रस्तुत की गई। उसे उसने अपने अन्तःपुर में स्थान दे दिया। उस स्त्री के बाजूबंद पर एक बहुमूल्य लाल था। एक बार जल

१ च, छ एवं ज में —"इस प्रस्थान के समय, जो रात्रि में किया गया, पराजय हो गई। मीर्ज़ा हिन्दाल वहाँ से पृथक होकर कुन्दुज़ (ज में 'कन्धार') की ओर चला गया"।

२ ऊनी लबादा अथवा कम्बल जिसका दरिद्र लोग शीत ऋतु में प्रयोग करते हैं।

३ लोहा पहिने हुये अथवा जिरह बकतर धारण किये हुये।

४ ऐसा घोड़ा जिसे जोड़ा खाने की इच्छा हो।

प्रविष्ट होते समय उसने वह लाल उतार दिया। एक मूश ख्वार[1] जा रहा था। वह नगुल मारकर लाल को ले गया। यह समाचार सुल्तान महमूद को प्राप्त हुआ। उसने कुछ सवार उसके पीछे (१०५ ब) भेजे। वे घोडा दौडाते हुए जा रहे थे। उन्होंने देखा कि उसके पंजे से लाल निकल गया। एक प्राचीन कारेज[2] में एक सन्दूक पर वह लाल गिर पडा। सवार वहाँ पहुँचे। उन्होंने सुल्तान महमूद को सूचना दी। उस कारेज में जो कुछ था निकाला और सुल्तान महमूद के साथ जो १२ हजार अश्वारोही थे, उन्हें बाँट दिया।

हजरत पादशाह ने अपने आदमियों से यह कहानी बताकर कहा कि नेकनीयती से कितना लाभ होता है। क्योंकि सुल्तान की नीयत अच्छी थी अत विजय प्राप्त हो गई और खजाना भी मिल गया[3]।

(२५)

किबचाक में युद्ध, हजरत पादशाह का तलवार द्वारा घायल होना[4]

जब हजरत पादशाह सुल्तान महमूद की कहानी पूरी कर चुके तो काबुल पहुँचने के तीन मास उपरान्त समाचार प्राप्त हुए कि मीर्ज़ा कामरान मारा मारा फिर रहा है और चाहता है कि काबुल की सरहद से होकर निकल जाय। हजरत पादशाह काबुल से प्रस्थान करके करावाग में उतरे। वहाँ से चारी कारान[5], वहाँ से कारान नदी और फिर वहा से किबचाक दर्रे की ओर कूच किया। वहाँ एक नहर थी। हजरत पादशाह ने उस नहर में अपना घोडा डाल दिया। सेना में (१०६ अ) किसी ने भी साथ न दिया। समस्त सैनिकों ने उसे घाट से पार किया। हजरत

१ एक प्रकार की चील जो खेतों के चूहे खाती है।
२ पटी हुई नाली जो खेतों में पानी देने के लिये बनाई जाती है।
३ च, छ एवं ज में इसके बाद निम्नांकित घटना का उल्लेख है —
"वहा से वे (हजरत पादशाह) काबुल पहुँचे। कुछ दिन उपरान्त मीर्ज़ा कामरान का हाल बताया गया। लोगों ने बताया कि जब कलव की दुर्घटना एवं उज़बेकों की शत्रुता के समाचार मिले तो वह (मीर्ज़ा कामरान) उनके पास पहुँचा और कुमक मागी। कुन्दुज के किले को घेर लिया। मीर्ज़ा हिन्दाल ने जो उस किले में था, धोखा देने के लिये मीर्ज़ा कामरान की ओर से अपने नाम पत्र लिखवा कर किसी को दे दिया। उसमें लिखा था कि 'हे भाई! उज़बेक लोग इस वंश के प्राचीन शत्रु हैं। उनकी एक सेना को धोखा देकर लाया हूँ। तू किले से निकल आ ताकि मिलकर हम लोग इस समूह की हत्या कर दें।' वह उन्हें प्राप्त हो गया। उन लोगों को इस बात का विश्वास हो गया कि भाई लोग आपस में मिले हैं और हमें धोखा देकर लाये हैं। उज़बेक लोग सुन चुके थे कि मीर्ज़ा कामरान, मीर्ज़ा हिन्दाल की सहायता से काबुल से पैदल भाग गया था। उनको बात की पुष्टि हो गई, उज़बेक भाग गये। मीर्ज़ा कामरान बड़ी अव्यवस्थित दशा में तथा व्याकुल एवं लज्जित है'।
(च पृ० ९४ अ, छ पृ० ८१ ब, ज पृ० १०४ अ—१०४ ब)। क, ख ग एवं घ में इसका जो उल्लेख दिया गया है वह ठीक नहीं।
४ च एवं छ के अनुसार ६ वीं फस्ल तथा ज में २५ वीं फस्ल।
५ च एवं छ में 'चार कारान'।

पादशाह ने कहा कि, "हे धृष्टो ! शाह इस्माईल सफवी ने अपना एक रूमाल पर्वत से नीचे डाल दिया। उसके पीछे-पीछे १२ हजार कूरची[1] कूद पडे और टुकडे-टुकडे हो गए। तुममें से एक सिपाही ने भी मेरा साथ न दिया। तुम्हारे पादशाह ने अकेले नदी पार की। मेरे पीछे किसी ने भी नदी न पार की अतः ऐसे सैनिकों से किस प्रकार उन्नति हो सकती है ?' तदुपरान्त कराचा[2] खा से पूछा कि, 'क्या करना चाहिये ?'' उसने निवेदन[3] किया कि, यह थोडे से दर्रे हैं। इन्हें अधिकार में कर लेना चाहिये। सम्भव है कि किसी स्थान पर मीर्जा कामरान बन्दी बना लिया जाय (१०६ ब) तो उपद्रव शान्त हो जायेगा[4]।' हजरत पादशाह ने हाजी मुहम्मद खा कोकी तथा उसकी सहायतार्थ अल्लाह कुली[5], बहादुर, अल्लाह[6] कुली अन्दराबी, मुसाहिब बेग एवं कुछ अन्य जवानों को, जो तलवार चलाने में प्रसिद्ध थे, कराचा खा के कहने पर शिब्रतू दर्रे की ओर नियुक्त किया। वे स्वयं किबचाक दर्रे की ओर रवाना हुए। किबचाक दर्रे से एक कुरोह पर पडाव किए थे कि समाचार प्राप्त हुए कि मीर्जा कामरान किबचाक दर्रे से प्रकट हुआ। हजरत पादशाह किबचाक दर्रे की ओर रवाना हुए। मीर्जा कामरान ने आकर मुकाबला किया। मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज हो चुकी थी कि वे सवार हुए। दो नमाजों के मध्य में युद्ध हुआ। पीर मुहम्मद आख्ता, जिसे हजरत कृपापूर्वक पीरक कहते थे और जिसकी यह इच्छा थी कि हजरत पादशाह के समक्ष मारा जाय, सर्वप्रथम युद्ध में मारा गया। मीर्जा कुली चोली का पुत्र दोस्त मुहम्मद भी मारा गया। मीर्जा कुली घायल हुआ। मुहम्मद अमीन का घोडा तलवार द्वारा घायल होकर गिर पडा। हजरत ने अपना कोतल (१०७ अ) घोडा उसे प्रदान कर दिया और कहा कि, 'तेरा पिता मीर्जा कामरान की सेवा में है, तू भी वहा चला जा।'' उसने निवेदन किया कि, 'मेरा अपने पिता से कोई सम्बन्ध नहीं और मैं सेवा से पृथक् न हूँगा।' इसी बीच में एक मलऊन[7] ने पहुँच कर हजरत पादशाह के शत्रुआ[8] पर तलवार चलाई और हजरत के सिर पर घाव लगा। वह दूसरी बार तलवार चलाना चाहता था। हजरत पादशाह ने उसकी ओर क्रोध की दृष्टि से देखा और कहा कि, 'हे मर्दक कलकची[9] !'' इस बात से उस दुष्ट के हाथ पांव ढीले पड गए। वह इसी असमंजस में था कि फरहाद खा उर्फ सबहा शीघ्रातिशीघ्र पहुँचा और उसने उसे बगल[10] में ले लिया। दोनों ओर के लोग इधर उधर ढूँढ रहे थे कि हजरत पादशाह रणक्षेत्र से निकले और मुहम्मद अमीन तथा अब्दुल वहहाब को आदेश दिया कि, 'पीछे पीछे चलो।'' घाव के कारण उनमें कमजोरी आती गई। अपने शरीर से जीबा[11] उतार कर सब्दल खा उर्फ मुम्बुल मीर हजार को प्रदान कर दिया। क्योंकि वे पराजित होकर

१ च एवं छ में 'न जाने कितने आदमी', ज में संख्या स्पष्ट नहीं, किन्तु सम्भवतः हजार।
२ च में 'कराक खा', छ में 'फजाक खा'।
३ च, छ एवं ज में —''उसने तिरस्कार (शत्रुता) की दृष्टि से कहा''।
४ च, छ एवं ज में इसके आगे इस प्रकार है —''उस स्वार्थी शत्रु ने प्रतिष्ठित सेना को सम्मानित सेवा से पृथक कर दिया''।
५ च, छ एवं ज में 'अली कुली'।
६ च, छ में 'अली कुली अन्दराबी'।
७ धिक्कृत, च, छ एवं ज में 'नमक हराम'।
८ हजरत पादशाह पर।
९ ज में 'कचूकची'।
१० अधिकार में कर लिया।
११ एक प्रकार की रुई दार वास्कट जिसे जिरह के नीचे पहिना जाता था। इसमें गद्दे के समान रुई भरी रहती थी और यह ऐसे कपड़े का बना था कि सुगमतापूर्वक कट न सकता था।

यात्रा कर रहे थे, उसने उस जीवे को फेंक दिया। वह जीवा मीर्ज़ा कामरान के सैनिकों को प्राप्त (१०७ ब) हो गया। उसे वे मीर्ज़ा कामरान के पास ले गए और कहा कि, 'पादशाह की मृत्यु हो गई[1]।"

जो लोग रणक्षेत्र से निकल सके और सम्मानित रिकाब के साथ थे, उनमें मीर सैयिद बरका, ख़िज़्र ख़्वाजा ख़ाँ, मीर्ज़ा मुहम्मद हकीम का चाचा[2] फरीदूँ मीर बोलक[3] तूशकबेगी, मीर गजब का पुत्र मीर अफ़ज़ल, एवं सेवकों में मुम्बुल मीर हज़ार, मीर आतश तोपची, मौलाना सालेह मुशरिफ अवार ख़ाना[4], रनहा लकड़हारा तथा तुच्छ दास जौहर आफ़्ताबची थे। क्योंकि हज़रत पादशाह अत्यधिक कमज़ोर हो गए थे और बड़ी शिथिल गति से चलने वाले घोड़े पर सवार थे, अतः मीर सैयिद बरका ने अपना घोड़ा हज़रत को भेंट करके उन्हें उस पर सवार किया। दायें हाथ की ओर मीर सैयिद बरका और बायें हाथ की ओर ख़िज़्र ख़्वाजा सहारा दिए हुए थे। वे इस प्रकार यात्रा करने लगे। उन लोगों ने समझाया कि "आप इतने निराश न हों। धैर्य धारण करें।" भूत-काल के पादशाहों की घटनायें सुनाईं और कहा, 'कहीं ऐसा न हो कि शत्रु पीछे से आ जाय। आप साहस से (१०८ अ) काम लें। यह होता आया है।' उनके इस कहने पर हज़रत पादशाह सन्तुष्ट हो गए।

अस्र की नमाज़ का समय था कि शाह ने आकर हज़रत पादशाह के रिकाब का चुम्बन किया। हज़रत पादशाह ने पूछा कि "हाजी मुहम्मद ख़ाँ[5] कहाँ है?" उसने निवेदन किया कि, "शिब्रतू दर्रे को पार कर चुका है।" उन्होंने कहा कि 'दूर निकल गया। यदि इस समय पहुँच जाता तो हम वापस हो जाते[6]।' सायंकाल की नमाज़ के समय ख़्वाजा जलालुद्दीन महमूद सेवा में उपस्थित हुआ। रात के अन्तिम पहर शिब्रतू दर्रे पर पहुँचे। हज़रत पादशाह पर शीत ऋतु का कुप्रभाव हो गया था। इसके अतिरिक्त, तलवार के घाव के कारण कमज़ोर हो गए थे। (मीर) बरका अपनी फरजी[7] लाया और उसे हज़रत पादशाह को पहिनाया। प्रातःकाल शिब्रतू दर्रे पर पहुँचे। जब हवा गर्म हो गई तो हज़रत पादशाह ने नदी के किनारे पड़ाव किया। घाव से रक्त धोकर वुज़ू[8] करके खड़े हुए। नमाज़ पढ़ने के लिए जानमाज़ न थी[9]। दास तुच्छ जौहर आफ़्ताबची के पास चौकी पर बिछाने (१०८ ब) की बनात थी। जानमाज़ के लिए बिछा दिया। हज़रत ने उस पर नमाज़ पढ़ी।

१ च, छ एवं ज में —मीर्ज़ा (कामरान) ने उस संग्राम से निकल कर चारकारान में पड़ाव किया और प्रातःकाल काबुल की ओर रवाना हुआ और उस स्थान का अवरोध कर लिया। कासिम ख़ाँ बरलास को, जो मीर्ज़ा कामरान का प्राचीन सेवक था और जिसने उसके सेवकों में सबसे पहिले (पादशाह की) सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया था, (हज़रत पादशाह ने) काबुल का हाकिम बना दिया था। वह उस क़िले को मीर्ज़ा को नहीं देता था। जब हज़रत के शरीर का जामा उसे दिखाया गया और उसे बताया गया कि उनकी मृत्यु हो गई है तो उसने निराश होकर आवश्यकतावश वह क़िला मीर्ज़ा को दे दिया। शाहज़ादये आलमियान मीर्ज़ा भी क़ैद में पहुँच गये। क़राचा ख़ाँ षड्यन्त्रकारियों का सरदार मीर्ज़ा कामरान से मिल गया"। (च पृ० ९६४, छ पृ० ८३ ब, ज पृ० ९६ ब)।

२ निश्चित रूप से इस 'अमको' शब्द का अनुवाद सम्भव नहीं।

३ च में 'मीर लोलक', छ, ज में 'मीर तोलक', 'मीर तोलक' ही शुद्ध है।

४ शाही भंडार का हिसाब किताब रखने वाला।

५ च एवं छ में 'हाजी मुहम्मद ख़ाँ कोकी', ज में 'हाजी मुहम्मद ख़ाँ कोका'।

६ च, छ में इसके आगे इस प्रकार है —" वापस हो जाते और अन्य खोज करते"।

७ अन्य कपड़ों के ऊपर से पहिनने का एक प्रकार का कोट।

८ च, छ एवं ज में 'तहारत'।

९ वह कपड़ा अथवा चटाई जिसे बिछा कर, उस पर नमाज़ पढ़ी जाती है।

किब्ले की ओर बैठे थे कि सुल्तान महमूद करावल[1] उपस्थित हुआ और हज़रत पादशाह के चारों ओर चक्कर लगाकर उसने अपने आपको न्योछावर किया। हज़रत ने उसे अत्यधिक सान्त्वना दी और पूछा कि, "हाजी मुहम्मद खाँ कहाँ है?" उसने निवेदन किया कि, "निकट है, आ जायेगा।" हज़रत पादशाह सवार हुए। इसी बीच में हाजी मुहम्मद खाँ लगभग ३०० योग्य अश्वारोहियों सहित हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ और उनकी कुशलता के विषय में ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और निवेदन किया कि, "इस स्थान से लौट जायें।" उन्होंने कहा कि, "मीर्ज़ा कामरान काबुल पहुँच गया होगा। कल जिस समय शाह मुहम्मद आया था यदि तू उस समय आ जाता तो मेरे हृदय में था कि रात्रि में लौटकर उस पर छापा मारूँ। यदि ईश्वर ने चाहा तो अगली समय पर वापस हूँगा[2]"।

हज़रत पादशाह ने हृदय में सोचा कि, "शाह हुसेन बड़ा ही धूर्त है। हाजी मुहम्मद खाँ (१०९ अ) को मार्ग-भ्रष्ट करके हमसे पृथक् कर देगा।" जुहाक बार्रा[3] नामक स्थान पर दोपहर को वृक्ष के नीचे पड़ाव हुआ। बहादुर[4] खाँ से पूँछा कि, "तेरे पास कलम दवात हो तो ले आ, ताकि घर के लिए पत्र लिख दूँ कि युद्ध में कुशलता-पूर्वक सुरक्षित लौट आये।" जो सहायक साथ थे उन्होंने भी अपने घरों के लिए कुशलता के समाचार लिखे। तदुपरान्त हाजी मुहम्मद खाँ एवं शाह मुहम्मद खाँ को बुलवाकर आदेश दिया कि, 'गज़नी को शाह मुहम्मद को जागीर में दे दिया। वह शीघ्रातिशीघ्र चला जाय ताकि उस समय तक कामरान मीर्ज़ा के आदमी न पहुँच पायें। यह पत्र काबुल में हमारे पुत्रों को पहुँचा दे और स्वयं शीघ्रातिशीघ्र गज़नी पहुँच जा तथा मेरे आने के समय तक गज़नी को दृढ़ रख"।

संक्षेप में, पत्रों को देकर उसे विदा कर दिया। वहाँ से सवार होकर वे बमियान नामक स्थान पर पहुँचे तथा पड़ाव कर दिया। अली दोस्त खाँ के पिता हसन अली ईशक आका के पास (१०९ ब) एक शामियाना था जिसकी छाया में एक व्यक्ति रह सकता था। उसने लाकर उसे लगाया। हज़रत पादशाह ने उसकी छाया में आराम किया। प्रातःकाल तुच्छ जौहर आफ़तावची ने पादशाह को जगाकर कहा कि, 'नमाज़ का समय हो गया है।' उन्होंने कहा कि, 'हे दास! मैं घायल हूँ। ठंडे जल में किस प्रकार तहारत करूँ?" दास ने निवेदन किया कि, "गरम जल उपस्थित है।" हज़रत पादशाह उठे और तहारत तथा प्रातःकाल की नमाज़ के उपरान्त सवार हुए। मार्ग में तहारत के लिए ठहरे और कहा कि, "मेरे शरीर पर जो वस्त्र है वह रक्त में सना है, मुझे इससे कष्ट होता है।" बहादुर खाँ[5] से कहा कि, 'यदि कोई जामा[6] हो तो ला।" बहादुर खाँ ने निवेदन

१ ज के अतिरिक्त प्रत्येक हस्त-लिपि में 'करक'।
२ 'यदि ईश्वर ने चाहा अगली फिर करके वापस हूँगा'।
३ कुछ हस्तलिपियों में 'जुहाक मारान'।
४ च, छ एवं ज में 'बहादुर खाँ ऊज़बेक'।
५ च, [illegible] में —"अली कुली के भाई बहादुर ने जिसे उन्होंने पुत्र की उपाधि दे रक्खी थी", ज में —"बहादुर खाँ जिसे वे पुत्र कहते थे।"
६ जामा —एक प्रकार का कोट।

या कि, "हे पादशाह। एक जामा यक्ताई[1] जो हज़रत पादशाह ने फकीर को प्रदान किया था, रे पास है।" हजरत पादशाह ने कहा कि, "जो जामा तू पहिने है, उसे मैं मांग रहा हूँ। यदि वह जामा तेरे पास हो तो ले आ।" अतः बहादुर खां जामा लाया, हज़रत ने पहिना[2]। जो जामा उनके शरीर पर था उसे जौहर आफ़्तावची को प्रदान कर दिया कि इसको साफ करके रख ले।

(११० अ) वहां से कहमर्द नामक स्थान पर पडाव किया। ताहिर मुहम्मद ने, जो कि मीर गुर्द का पुत्र था, आकर हजरत पादशाह के रिकाब के चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया। एक प्राचीन खेमा लाकर लगाया। थोडा सा भोजन जो उसके पास था उपस्थित किया। उस मूर्ख ने कोई पेशकश[3] भेंट न की, यहां तक कि एक सरोपा भी न लाया। हजरत पादशाह ने लोगों को खाने की अनुमति दे दी और स्वयं पानी के झरने की ओर रवाना हुए। कई स्थानों से फटा हुआ एक सदा सा एक खरगाह लाकर लगाया। एक तहारत ख़ाना[4] भी न लाया। अन्ततोगत्वा तुच्छ दास जौहर आफ़्तावची बडे परिश्रम से घास के दो गट्ठर लाया और हजरत के लिए तहारत खाना तैयार किया। हजरत पादशाह ने उसकी आलोचना करते हुए कहा कि, इस नामर्द से इतना भी न हो सका कि वह एक आबखाना[5] ले आता।"

एक स्त्री तम्बाने मिस्री मुश्न देदान[6] उपहार स्वरूप लाई। उन्होने कहा, यद्यपि इसे पुरुष लोग नही पहिनते किन्तु मेरे तम्बान गंदे हो गए हैं अतः आवश्यकतावश उसे पहिन लिया। उस स्त्री (११० ब) से उसके जीवन निर्वाह के विषय में पूंछा और आदेश दिया कि "जो कर भी उसपर वाजिब हो, कोई उससे न ले।" इनाम[7] के रूप में लिखकर दे दिया।

तदुपरान्त समाचार प्राप्त हुए कि कारवान के ३०० घोडे पडाव किए हुए हैं। अल्लाह कुली[8] अन्दराबी तथा हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी को इस आशय से नियुक्त किया गया कि वे घोडों को ले आयें। मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज़ के समय समाचार प्राप्त हुए कि एक अन्य कारवान वालों के १७ सौ घोडे आ गए। हजरत पादशाह ने कहा कि, "जब तक मैं स्वयं न जाऊँगा कोई काम न चलेगा।" उन्होने स्वयं सवार होकर दर्रे का मार्ग रोक दिया। कारवान वाले भाग न सके। विवश होकर पादशाह की सेवा में उपस्थित हुए। कारवान वालों में से एक वृद्ध ने एक धनुष तथा

१ च, छ में 'जामये यकता', ज में 'यकतही'। सम्भवतः किसी प्रकार का एकहरा कोट। जामये यक्ता का अर्थ अद्वितीय कोट है।

२ च, छ एवं ज में —"उसने कहा कि 'जामये यकता जो हजरत ने फ़क़ीर को प्रदान किया था, है। आशीर्वाद के रूप में (एक बार) पहिना था।' (ज में 'बड़ी इच्छा से एक बार पहिना था')। उन्होंने कहा, 'ले आ।' उन्होंने उसे पहिना और जो वस्त्र शरीर पर थे वह तुच्छ दास को दे दिये।"

३ च, छ में —"जो खिदमती (पेशकश अथवा सेवा) वाजिब थी वह भी न की"।

४ तहारत गृह।

५ च एवं छ में 'तहारत ख़ाना'।

६ रेशम के पाजामों से तात्पर्य है।

७ ज एवं छ में —"इनाम एवं माफ़ी लिख कर दे दिया"।

८ च एवं छ में 'अली कुली अन्दराबी'।

नौ काण उपहार स्वरूप भेंट किए[1] और हज़रत पादशाह के रिकाब का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। उसने कहा कि, 'यदि ईश्वर ने चाहा तो महान् विजय प्राप्त होगी।' वे भी वही उत्तर पढ़े। तदुपरान्त घोड़ों का मूल्य निश्चय किया और तमस्सुक[2] लिख कर व्यापारियों को दे दिया और कहा (१११ अ) कि, 'विजयोपरान्त ईश्वर ने चाहा तो तुम्हें धन मिल जायेगा।'

वहाँ से प्रस्थान करके अग्जक[3] नामक स्थान पर जहाँ जंगली लोग रहते हैं पड़ाव किया। वह ईमाक कौम का निवास स्थान था[4]। वहाँ अनाज न था। सात दिन तक वहाँ पड़ाव हुआ। ईमाक वाले सर्वदा ६० भेड़ें तथा ६० मशक दही उपहार स्वरूप लाते थे। इससे लोगों का काम चलता था। घोड़ों को एक एक आदमी को बाँट दिया गया और वे वहाँ से रवाना हो गए। कबी नामक नदी पर पड़ाव किया। एक व्यक्ति ने आकर आवाज़ दी कि, "हे कारवान वालो! हुमायूँ पादशाह की भी तुम्हें कोई सूचना है?" जब यह आवाज़ उनके कानों तक पहुँची तो उन्होंने कहा कि, "हमारा समाचार कोई इसे न बताये और पूछो कि तू कौन है और तुझे किसने भेजा है तथा तुम लोगों में क्या समाचार हैं?" उसने कहा कि, "मैं नज़री साल अज़की का दूत हूँ। व बेंदी[5] कौम से सम्बन्धित हैं। हमारी कौम वालों को यह समाचार मिले हैं कि हुमायूँ पादशाह तथा मीर्ज़ा कामरान में युद्ध हुआ। हुमायूँ पादशाह घायल होकर रणक्षेत्र से भाग गए। हज़रत के शरीर पर जो जीवा था वह जंगल में पाया (१११ ब) गया। मीर्ज़ा कामरान के समक्ष प्रस्तुत किया गया। वह प्रसन्न हो गया कि हज़रत (पादशाह) की मृत्यु हो गई।' तदुपरान्त हज़रत पादशाह ने उस व्यक्ति को अपने सामने बुलवाया और कहा कि, "तू मुझे पहिचानता है?" उसने निवेदन किया कि, 'हाँ, पहिचानता हूँ।' उन्होंने फिर कहा कि, "नज़री साल अज़की को मेरा सलाम पहुँचा दे और कह दे कि मेरी वापसी के समय सेवा में उपस्थित हो।"

ज़ुहर की नमाज़ के समय हाजी मुहम्मद काकी[6] को आदेश दिया कि, 'जल अधिक हो गया है, नदी के घाट का पता लगा[7] और मुझे उस पार पहुँचा।" उसने जाकर घाट का पता लगाया और स्वयं पार किया। अस्र की नमाज़ के समय अपने आदमी द्वारा समाचार भेजा कि 'हम घाट द्वारा पार हो गए। हज़रत भी आ जायँ," किन्तु वह स्वयं न आया। हज़रत पादशाह को चिन्ता हुई कि, "कहीं वह हमसे पृथक् न हो जाय।' हज़रत पादशाह सवार हुए। उनकी दृष्टि तुच्छ जौहर पर पड़ी और उन्होंने संकेत किया कि, "तू चला आ" और वे चल खड़े हुए। अल्लाह कुली[8] अन्दराबी एवं दास जौहर आफ़्तावची ने एक पहर रात्रि व्यतीत होने के उपरान्त नदी पार की। हाजी

१ च, छ एवं ज में —"   भेंट किये। उन्होंने कहा यह बड़ी उत्तम फ़ाल है। ईश्वर ने चाहा तो विजय हमारी है।"

२ ऋण पत्र।

३ च, छ एवं ज में 'अजचक'। यह शब्द स्पष्ट नहीं।

४ च, छ एवं ज में —"वे ईमाक वाले हैं।" यही वाक्य शुद्ध है।

५ च एवं छ में 'पमी'।

६ च एवं छ में 'हाजी मुहम्मद खाँ कोकी'।

७ च, छ एवं ज में —"इस घाट पर जल अधिक हो गया है। नदी पार करने का पता लगा लो"।

८ अली कुली।

किया कि, "हे पादशाह। एक जामा यक्ताई[1] जो हजरत पादशाह ने फकीर को प्रदान किया था, मेरे पास है।" हजरत पादशाह ने कहा कि, 'जो जामा तू पहिने है, उसे मैं मांग रहा हूँ। यदि वह जामा तेरे पास हो तो ले आ।" अतः बहादुर खां जामा लाया, हज़रत ने पहिना[2]। जो जामा उनके शरीर पर था उसे जौहर आफ़ताबची को प्रदान कर दिया कि इसको साफ करके रख ले।

(११० अ) वहाँ से कहमर्द नामक स्थान पर पड़ाव किया। ताहिर मुहम्मद ने, जो कि मीर गुर्द का पुत्र था, आकर हज़रत पादशाह के रिकाब के चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया। एक प्राचीन खेमा लाकर लगाया। थोड़ा सा भोजन जो उसके पास था उपस्थित किया। उस मूर्ख ने कोई पेशकश[3] भेंट न की, यहाँ तक कि एक सरोपा भी न लाया। हजरत पादशाह ने लोगों को खाने की अनुमति दे दी और स्वयं पानी के झरने की ओर रवाना हुए। कई स्थानों से फटा हुआ एवं गंदा सा एक खरगाह लाकर लगाया। एक तहारत खाना[4] भी न लाया। अन्ततोगत्वा तुच्छ दास जौहर आफ़ताबची बड़े परिश्रम से घास के दो गट्ठर लाया और हजरत के लिए तहारत खाना तैयार किया। हजरत पादशाह ने उसकी आलोचना करते हुए कहा कि, 'इस नामर्द से इतना भी न हो सका कि वह एक आबखाना[5] ले आता।'

एक स्त्री तम्बाने मिस्री मुश्त देदान[6] उपहार स्वरूप लाई। उन्होंने कहा, 'यद्यपि इसे पुरुष लोग नहीं पहिनते किन्तु मेरे तम्बान गंदे हो गए हैं अतः आवश्यकतावश उसे पहिन लिया।' उस स्त्री (११० ब) से उसके जीवन निर्वाह के विषय में पूँछा और आदेश दिया कि 'जो कर भी उसपर वाजिब हो, कोई उससे न ले।' इनाम[7] के रूप में लिखकर दे दिया।

तदुपरान्त समाचार प्राप्त हुए कि कारवान के ३०० घोड़े पड़ाव किए हुए हैं। अल्लाह कुली[8] अन्दराबी तथा हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी को इस आशय से नियुक्त किया गया कि वे घोड़ों को ले आयें। मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज के समय समाचार प्राप्त हुए कि एक अन्य कारवान वालों के १७ सौ घोड़े आ गए। हजरत पादशाह ने कहा कि, "जब तक मैं स्वयं न जाऊँगा कोई काम न चलेगा।" उन्होंने स्वयं सवार होकर दर्रे का मार्ग रोक दिया। कारवान वाले भाग न सके। विवश होकर पादशाह की सेवा में उपस्थित हुए। कारवान वालों में से एक वृद्ध ने एक धनुष तथा

१ च, छ में 'जामये यक़्ता', ज में 'यक्तही'। सम्भवतः किसी प्रकार का इकहरा कोट। जामये यक़्ता का अर्थ अद्वितीय कोट है।

२ च, छ एवं ज में —"उसने कहा कि 'जामये यक़्ता जो हजरत ने फकीर को प्रदान किया था, है। आशीर्वाद के रूप में (एक बार) पहिना था।' (च में 'कभी इच्छा से एक बार पहिना था')। उन्होंने कहा, 'ले आ।' उन्होंने उसे पहिना और जो वस्त्र शरीर पर थे वह तुच्छ दास को दे दिये।"

३ च, छ में —"न खिदमती (पेशकश अथवा सेवा) वाजिब थी वह भी न की"।

४ तहारत गृह।

५ च एवं छ में 'तहारत खाना'।

६ रेशम [illegible] धागों से तात्पर्य है।

७ च एवं छ में —"इनाम एवं माफी लिख कर दे दिया"।

८ च एवं छ में 'अली कुली अन्दराबी'।

नी बाण उपहार स्वरूप भेट किए[1] और हजरत पादशाह के रिकाब का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। उसने कहा कि, 'यदि ईश्वर ने चाहा तो महान् विजय प्राप्त होगी।" वे भी वहीं उतर पड़े। तदुपरान्त घोड़ों का मूल्य निश्चय किया और तमस्सुक[2] लिख कर व्यापारियों को दे दिया और कहा (१११ अ) कि, 'विजयोपरान्त ईश्वर ने चाहा तो तुम्हें धन मिल जायेगा।

वहाँ से प्रस्थान करके अल्जक[3] नामक स्थान पर जहाँ जगरी लोग रहते हैं पड़ाव किया। वह ईमाक कौम का निवास स्थान था[4]। वहाँ अनाज न था। सात दिन तक वहाँ पड़ाव हुआ। ईमाक वाले मर्यादा ६० भेड़े तथा ६० मशक दही उपहार स्वरूप लाते थे। इससे लोगों का काम चलता था। घोड़ों को एक एक आदमी को बाँट दिया गया और ये वहाँ से रवाना हो गए। यकी नामक नदी पर पड़ाव किया। एक व्यक्ति ने आकर आवाज दी कि, हे कारवान वालो! हुमायूँ पादशाह की भी तुम्हें कोई सूचना है?" जब यह आवाज उनके कानों तक पहुँची तो उन्होंने कहा कि हमारा समाचार कोई हमें न बतायेगा और पूछा कि तू कौन है और तुझे किसने भेजा है तथा तुम लोगों में क्या समाचार है?" उसने कहा कि, "मैं नजरी सालू अलकी का दूत हूँ। वे केशी[5] कौम से सम्बन्धित हैं। हमारी कौम वालों को यह समाचार मिला है कि हुमायूँ पादशाह तथा मीर्जा कामरान में युद्ध हुआ। हुमायूँ पादशाह घायल होकर रणक्षेत्र से भाग गए। हजरत के शरीर पर जो जोशन था वह जंगल में पाया (१११ ब) गया। मीर्जा कामरान के समक्ष प्रस्तुत किया गया। वह प्रसन्न हो गया कि हजरत (पादशाह) की मृत्यु हो गई।" तदुपरान्त हजरत पादशाह ने उस व्यक्ति को अपने सामने बुलवाया और कहा कि, "तू मुझे पहिचानता है?" उसने निवेदन किया कि, "हाँ, पहिचानता हूँ।" उन्होंने फिर कहा कि, 'नजरी सालू अलकी को मेरा सलाम पहुँचा दे और कह दे कि मेरी वापसी के समय सेवा में उपस्थित हो।"

जुहर की नमाज के समय हाजी मुहम्मद कोकी[6] को आदेश दिया कि, 'जल अधिक हो गया है, नदी के घाट का पता लगा[7] और मुझे उस पार पहुँचा।' उसने जाकर घाट का पता लगाया और स्वयं पार किया। अस्र की नमाज के समय अपने आदमी द्वारा समाचार भेजा कि, 'हम घाट द्वारा पार हो गए। हजरत भी आ जाँय," किन्तु वह स्वयं न आया। हजरत पादशाह को चिन्ता हुई कि, 'कहीं वह हमसे पृथक् न हो जाय। हजरत पादशाह सवार हुए। उनकी दृष्टि तुच्छ जौहर पर पड़ी और उन्होंने संकेत किया कि, 'तू चला आ और वे चल खड़े हुए। अल्लाह कुली[8] अन्दराबी एवं दास जौहर आफ्तावची ने एक पहर रात्रि व्यतीत होने के उपरान्त नदी पार की। हाजी

१ च, छ एवं ज में —" भेंट किये। उन्होंने कहा यह बड़ी उत्तम फाल है। ईश्वर ने चाहा तो विजय हमारी है।"

२ ऋण पत्र।

३ च, छ एवं ज में 'अलजक। यह शब्द स्पष्ट नहीं।

४ च, छ एवं ज में —" वे ईमाक वाले हैं।' यही वाक्य शुद्ध है।

५ च एवं छ में 'पमी'।

६ च एवं छ में ' हाजी मुहम्मद खाँ कोकी '।

७ च छ एवं ज में —" इस घाट पर जल अधिक हो गया है। नदी पार करने का पता लगा ला"।

८ अली कुली।

(११२ अ) मुहम्मद खां भी उनकी सेवा में उपस्थित हुआ। रात भर किस्से-कहानी तथा बातचीत होती रही।

(२६)

किबचाक के युद्ध के उपरान्त हज़रत पादशाह का औलिया खचा नामक स्थान पर पड़ाव, मीर्ज़ा हिन्दाल का आगमन, पादशाही मरातिब प्रस्तुत करना, मीर्ज़ा कामरान का रण-क्षेत्र से निकलना, काबुल के किले पर मीर्ज़ा कामरान का अधिकार, शाहज़ादये आलमियान का बन्दी बनाया जाना[1]

हज़रत पादशाह तथा हाजी मुहम्मद खां कोकी ने रात्रि वार्ता एवं कहानियों में व्यतीत करने के उपरान्त प्रातःकाल वहां से प्रस्थान किया और औलिया खचा[2] नामक स्थान पर पड़ाव किया। मीर्ज़ा हिन्दाल हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ। उनकी सरकार में जो कुछ शाही वस्त्र, पताका, तूग, नक्कारा[3] इत्यादि थे, वे उपहार स्वरूप भेंट किए और वहां से प्रस्थान करके अन्दराब में पड़ाव किया।

मीर्ज़ा कामरान

जिस दिन मीर्ज़ा कामरान रणक्षेत्र से निकला तो चार कारान में पड़ाव हुआ। प्रातःकाल (११२ ब) उसने वहां से कूच करके काबुल को घेर लिया। इससे पूर्व कासिम बरलास[4] मीर्ज़ा कामरान का सेवक था। जब इससे पूर्व कामरान के अमीरों का समूह हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित होकर सम्मानित हुआ तो कासिम अली भी आ गया और हज़रत पादशाह ने काबुल कासिम अली को प्रदान कर दिया था। जब मीर्ज़ा कामरान ने काबुल पहुँचकर उसको घेर लिया तो कासिम बरलास ने उसे काबुल समर्पित न किया। अन्त में हज़रत पादशाह का जीवा दिखाकर कहा कि, "तुम किस आशा में प्रतिरक्षा कर रहे हो।" कुछ दिन उपरान्त कासिम अली ने काबुल दे दिया। मीर्ज़ा मुहम्मद अकबर पुनः मीर्ज़ा कामरान की कैद में पहुँच गए। यह समाचार हज़रत पादशाह को अन्दराब में प्राप्त हुए[5]।

सुलेमान मीर्ज़ा एवं इब्राहीम मीर्ज़ा, हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुए और निवेदन किया कि, "यदि ईश्वर ने चाहा तो जब तक हम जीवित हैं, सेवा एवं प्राण न्योछावर करने में कोई कमी न करेंगे।" एक मास बीस दिन तक वे उस स्थान पर रहे। (तदुपरान्त) समाचार

१ च, छ में —"फ़स्ल १० उस सम्मानित शाह द्वारा अन्दराब पर चढ़ाई, मीर्ज़ा कामरान की पराजय, करांचा की शोचनीय दशा में मृत्यु"। ज के अनुसार '१६ वीं फ़स्ल'। यही शीर्षक शुद्ध है।
२ च, छ एवं ज में 'औलिया खनान'।
३ राज्य के विशेष चिह्न।
४ क, ख, ग एवं घ में 'कासिम बरलास तथा कासिम पयाम'।
५ च, छ एवं ज में इस घटना का उल्लेख इससे पहिले के अध्याय में कर दिया गया है।

प्राप्त हुए कि मीर्जा कामरान चाहता है 'कि हिन्दूकुश के मार्ग[1] मे जहा भी समतल स्थान हो, उसे (११३ अ) दृढ बना ले'। हजरत पादशाह ने कहा कि "राज्य के हित मे यही उचित है कि सर्व प्रथम उस पर्वत की ओर प्रस्थान करे ताकि वह उन स्थानो को नष्ट न करने पाये।" उस दिन से वे अपनी तैयारी करने लगे।

एक दिन हजरत पादशाह ने मीर्जाओ तथा अमीरा को बुला कर कहा कि, "मैं तुम सब लोगो को कुरान की शपथ देता हूँ कि हमारी सेवा से पृथक् न होना और विश्वासघात मत करना।" हाजी मुहम्मद खा ने निवेदन किया कि, "सर्व प्रथम आप शपथ लें।" मीर्जा हिन्दाल ने पूछा कि, "वे किस बात की शपथ लें? हजरत पादशाह के लिए यह उचित नही कि हम उन्हे शपथ दे[2]।" हजरत पादशाह ने कहा कि, "कोई आपत्ति नही है। हाजी मुहम्मद खा तथा अन्य अमीर जो बात राज्य के हित के लिए बतायेगे हम उसके विरुद्ध कार्य न करेगे।" सक्षेप में, दोनो ओर के लोगो ने शपथ ली और वचनबद्ध हुए[3]। हजरत रोजा रक्खे हुए थे। बृहस्पतिवार का वहाँ से प्रस्थान करके हिन्दूकुश के दामन में पडाव किया। वहा से रवाना होकर पजहीरा[4] नामक स्थान पर ठहरे। वहाँ से (११३ब) उश्तुर ग्राम पहुँचे। वहाँ देखा कि मीर्जा कामरान पडाव किए हुए है। हजरत पादशाह ने मीर्जा शाह सुल्तान को बुलवाया और मीर्जा कामरान के पास भेजकर कहलाया कि, "काबुल ऐसा स्थान नही है कि हम दोना भाई काबुल के लिए परस्पर युद्ध करते रहे। यह उचित होगा कि हम आपस के झगडो को समाप्त कर दें। काबुल तुम्हारी पुत्री और मेरे पुत्र को दे दिया जाय, यहाँ से लगमा[5] की ओर प्रस्थान करें तथा हिन्दुस्तान के लिए प्रयत्न करें।' दूत मीर्जा को जिस प्रकार समझा सकता था, उसने समझाया। मीर्जा ने इस विषय मे परामर्श किया। कराचा करावस्त ने कहा, "काबुल कदापि न देंगे। हमारा सिर है और काबुल का द्वार। हम मार भी डाले जाये किंतु हम सधि स्वीकार न करेंगे।" मीर्जा कामरान को उस मूर्ख की धृष्टता पसन्द आ गई। मीर्जा शाह सुल्तान को विदा कर दिया और सधि स्वीकार न की। वह हजरत पादशाह के दरबार मे पहुँचा। कामरान (११४ अ) मीर्जा एव कराचा करावस्त ने जो सलाह मशवरे किए थे, उनका उल्लेख हजरत पादशाह से किया।

हजरत पादशाह ने मीर्जाओ तथा अमीरो को बुलाकर परामर्श किया। उन लोगो ने निवेदन किया कि, 'जिस समय चार घडी रात रह जाय यसावल[6] लोग ढिंढोरा पिटवा दे कि समस्त सेना अस्त्र-शस्त्र धारण करके युद्ध के लिए प्रस्थान करे।" जब यह निश्चय हो चुका तो प्रातःकाल लोग सेना तैयार करके रवाना हुए। मीर्जा सुलेमान तथा मीर्जा इब्राहीम दायें भाग की तथा मीर्जा हिन्दाल बायें भाग की सेना मे थे। हाजी मुहम्मद खा अग्र भाग की सेना में था। कुछ अमीर लोग

१ च एवं छ में 'सरे राहे कोतल हिन्दूकुश (हिन्दू कुश दर्रे के मार्ग में)'।
२ च छ एव ज मे —"दामा (ज में 'सेना') के लिए उचित नहीं कि वे धृष्टता करें और शिष्टाचार के क्षेत्र से पाव बाहर निकालें "।
३ च, छ एवं ज में —"और नये सिरे से बैअत की।"
४ च, छ एवं ज में 'पंजहीरा'।
५ च, छ एवं ज में 'लमगान'; 'लमगान' होना चाहिये।
६ क, ख, ग, घ एवं ज में, "जामूलान तथा जामूमान"। हुमायूँ शाही की च, एवं छ दोनों प्रतियों में, 'यसावल' है और यही उचित है।

उसके साथ थे। जब वे निकट पहुँचे और कोई दूरी न रह गई तो हाजी मुहम्मद खाँ ने निवेदन[1] किया कि, "आज युद्ध स्थगित रखा जाय और आदेश दिया जाय कि सेना का पड़ाव हो।" क्योंकि हज़रत पादशाह ने प्रतिज्ञा की थी अतः वे विवश हो गए। बेग मीरक को आदेश दिया कि लश्कर को उतारो। इसी बीच में मीर्ज़ा लोगों ने आकर कहा कि, "यह उचित नहीं कि हम पड़ाव करें। आज (११४ ब) युद्ध होना चाहिये ताकि लोग यह न कह सकें कि हमने सुस्ती की। यह उचित होगा कि कामरान मीर्ज़ा से युद्ध हो और या मारे जाय।" बेग मीरक ने भी निवेदन किया कि, "दास ने भी अपराध किया था। इच्छा है कि वृद्धावस्था में मारा जाय, ताकि पाप से मुक्त हो सके[2]।" तदुपरान्त तोलक[3] कूरची को आदेश हुआ[4]। वह भी न गया और कहा कि, "युद्ध के समय सेवा से पृथक् न हूँगा।" तदुपरान्त अब्दुल वहहाब को आदेश हुआ। उसके पास कोई अन्य उपाय न रह गया। कोई खेमा-डेरा न था जो लगाया जा सकता। उसने पहुँच कर हज़रत पादशाह से निवेदन किया कि, "सेना[5] शत्रु के मुकाबले में है। कोई खेमा डेरा नहीं है जो हम उतर सकें।" हज़रत पादशाह ने कहा कि, "हम बाँध पर जा रहे हैं यदि युद्ध हुआ तो अच्छा है अन्यथा नदी के किनारे (११५ अ) पड़ाव करेंगे।" वे जा ही रहे थे कि सैनिकों में से एक वृद्ध ने कोने से आकर हज़रत पादशाह की लगाम पर हाथ डालकर कहा कि, आपकी विजय है। वापस हो जायें।" हज़रत ने कहा कि, "दो रकात नमाज़ पढ़ लूँ[6]।" दो रकात नमाज़ पढ़कर वे रवाना हुए। मीर्ज़ा कामरान ने मुहम्मद अकबर को हसन आक़्ता के सिपुर्द कर दिया।

१ ब, छ एवं ज में —"जब वे निकट पहुँचे तो हाजी मुहम्मद खाँ की राय बदल गई। उसने कहा, 'आज युद्ध स्थगित रखा जाय।'"

२ ब, [redacted] एवं ज में —"बेग मीरक भी इसी बात में सहमत था। उसने कहा, 'इससे पूर्व क्योंकि दास अपराध कर चुका है अतः वह अत्यधिक लज्जित है। उसने अभी तक अपने अपराध का प्रायश्चित नहीं किया। उसकी इच्छा है कि इस वृद्धावस्था में आपकी सेवा में मारा जाय ताकि पापों से मुक्त हो सके। वह पाप यह था कि उसने हिन्दुस्तान से प्रस्थान के समय हज़रत को विलायत में मीर्ज़ाओं एवं कुछ अमीरों को मार्ग भ्रष्ट करके शुगनान की ओर, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, भगा दिया था"।

३ ब, छ एवं ज में 'तोलक कूरची'।

४ ब, छ एवं ज में —"तदुपरान्त तोलक कूरची को आदेश हुआ कि वह लोगों को उतारे। उसने भी कहा कि, "क्योंकि यह युद्ध का समय है और शत्रु सामने है, अतः मैं सेवा से पृथक् न हूँगा"।

५ ब, छ एवं ज में —"लोग जीदा हैं। शत्रु की सेना सामने है। कहाँ पड़ाव करें?"

६ ब, छ एवं ज में —"उन्होंने कहा जुहर की फ़र्ज़ तथा दो रकात नमाज़ पढ़ कर प्रस्थान करूँगा। घोड़े से उतर पड़े। घोड़े ने लातें चलानी प्रारम्भ कर दीं। उसने कहा, 'इससे उत्तम और कौन शकुन होगा। आप शीघ्र सवार हो जायँ, विजय आप की है।' क्योंकि वे अस्त्र शस्त्र धारण किये थे और अलग (?) हाथ से नहीं निकलता था अतः उन्होंने सुल्तान दास जौहर को आदेश दिया कि जामे का दगला (?) फाड़ कर तत्काल उतारा जाय।" (ब पृ० १०२ अ ब, छ पृ० ८८अ, ज पृ० ११३अ)।

(२७)

मीर्जा कामरान की पराजय, शत्रु करा नामक स्थान पर कराचा करावख्त की हत्या, मीर्जा कामरान का खलील अफगानो के पास प्रस्थान, मीर्जा हिन्दाल का शहीद होना[1]

संक्षेप में हजरत पादशाह अन्दराब मे निरन्तर यात्रा करते हुए शुत्र करी[2] मे पहुँचे। वहाँ एक ऊँचा पर्वत था जहा मीर्जा कामरान था। मीर्जा कामरान की सेना उस पर्वत की ऊँचाई के समीप थी। मीर्जा कामरान की निकटता के बावजूद इब्राहीम मीर्जा ने साहस से कार्य लिया और जबरदस्ती उस ऊँचाई को अधिकार में कर लिया। वहाँ[3] से हजरत पादशाह प्रस्थान करके उस ऊँचाई के समीप पहुँचे। जो तुफग चलाने वाले उनके साथ थे, उन्हे आदेश हुआ कि वे पर्वत की (११५ ब) ऊँचाई पर आ जायें और तुफग चलायें। मीर्जा कामरान की सेना के विरुद्ध २-३ तुफग चलाई गई थी कि कराचा खा करावख्त[4] अपनी सेना मे हजरत पादशाह की सेना के बायी ओर पहुँच गया और उस सेना को पराजित कर दिया। दूसरी बार दायें भाग की सेना पर आक्रमण किया। दुर्भाग्यवश घोडे से गिर पडा। मीर्जा हिन्दाल के आदमियो ने शीघ्रातिशीघ्र करावख्त का सिर काट लिया और हजरत पादशाह के पास ले गए। मीर्जा कामरान पराजित हुआ। कराचा करावख्त के सिर के विषय में आदेश हुआ कि उसे काबुल के द्वार पर लटका दिया जाय। उसने कहा था कि "मेरा सिर काबुल के द्वार से सम्बन्धित है।" हजरत पादशाह ने ऐसा ही किया। मीर्जा इब्राहीम को आदेश दिया कि वह शीघ्रातिशीघ्र काबुल जाय[5]। मीर्जा हिन्दाल को मीर्जा कामरान के पीछे नियुक्त किया गया। मीर्जा सुलैमान को अपने पास रख लिया।

अकबर की हुमायूँ से भेंट

(११६ अ) जब मीर्जा कामरान पराजित हो गया तो हमन आख्ता शाहजादे को हजरत पादशाह की सेवा में ले गया। शाहजादये आलम पनाह उनकी सेवा मे उपस्थित हुए। हजरत पादशाह ने उन्हे आलिगन किया और उनके सिर और आँखो का चुम्बन किया तथा अत्यधिक प्रसन्नता प्रकट की, मानो याकूब तथा यूसुफ का मिलन हो।

शेर

'नश्वरी प्रियतम का मिलन बडी कठिन समस्या समझ,
हमें प्रियतम के वियोग ने मार डाला।

१ च, छ एव ज में पृथक फस्ल नहीं है।
२ अन्य ग्रन्थों मे 'उश्तुर ग्राम'।
३ च, छ एव ज —में "हजरत पादशाह भी पीछे से उस ऊचाई पर पहुँचे। तोपचियों का जो समूह साथ था उसे आदेश हुआ कि उस ऊचे पर्वत पर तुफग चलायें।"
४ च, छ एव ज मे —"कराचा करावख्त उस मर्यादा के कारण जो उसके हृदय में आरूढ थी"।
५ च, छ एव ज मे —"और उसे अधिकार में कर ले"।

ईद तथा नवरोज़ के विषय में तू जानता है, क्या है ?
यह कि आशिक का मिलन माशूक से हो[1]।'

संक्षेप में वहाँ से प्रस्थान करके रात्रि के उपरान्त काबुल पहुँचे। प्रत्येक[2] व्यक्ति आनन्द मग्न एवं जश्न मनाने लगा[3]।

हज़रत पादशाह का अफ़गानों पर, इस कारण कि मीर्ज़ा उनके पास चला गया था, आक्रमण, मीर्ज़ा हिन्दाल का शहीद होना[4]

तदुपरान्त समाचार प्राप्त हुए कि मीर्ज़ा कामरान कनूलकर[5] नामक स्थान पर पहुँच गया है। हज़रत पादशाह शीघ्रातिशीघ्र धावा मार कर वहाँ पहुँचे। जब मीर्ज़ा कामरान ने यह सुना तो वहाँ से भी भागकर चकरी[6] पहुँच गया। हज़रत पादशाह पुनः धावा मारकर चकरी पहुँचे। (११६ ब) तदुपरान्त मीर्ज़ा कामरान ने महमन्द एवं खलील[7] अफ़गानों के मध्य में पहुँचकर स्थान ग्रहण किया। वह चढ़ाई करना चाहता था कि हज़रत पादशाह ने अफ़गानों की ओर प्रस्थान करना निश्चय किया। एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल पार करते हुए जहरहा नामक स्थान पर पहुँचे। यह स्थान अधिक दृढ़ न था। वे इस आशय से सवार हुए कि किसी ऊँचे तथा दृढ़ स्थान पर अधिकार जमा लें और किला तैयार कर लें। जब स्थान निश्चित हो गया तो वे लौट गए। मार्ग में तीन मृग दृष्टिगत हुए। एक मीर्ज़ा हिन्दाल के सामने, एक शाह अबुल मआली के सामने पहुँचा और एक भाग गया। जब मीर्ज़ा हिन्दाल मृग के समीप पहुँचे तो उसने उसके ऐसा बाण मारा कि वह हिरन अपने स्थान से हिल न सका और अपने सिर तथा पाँव तीन बार आकाश की ओर करके मर गया।

१ च, छ एवं ज में इसके स्थान पर अन्य शेर है।
२ च, छ एवं ज में —"प्रत्येक की स्थिति के अनुसार इदरार एवम् इनाम प्रदान किये"।
३ च एवं छ में —"एक दिन ख्वाजा गाज़ी, ख्वाजा अबुल क़ासिम, ख्वाजा क़ासिम तूनी ने ख्वाजा सुल्तान अली के विरुद्ध जो दीवाने कुल था, और आजकल 'वज़ीर खानी' की उपाधि से प्रसिद्ध है, इल्ज़ाम लगाया कि उसने ३ लाख शाहरुखी का अपहरण कर लिया है। आदेश हुआ कि, 'प्रमाण दिया जाय'। उन्होंने कहा, 'जब तक उसके हाथ में मुहर है, किस प्रकार प्रमाण मिल सकता है ?' पादशाह के आदेशानुसार उसके हाथ से मुहर ले ली गई। प्रमाण प्राप्त हो जाने के उपरान्त उससे वसूल करने (तन तहसील ?) का आदेश दे दिया गया। उसने जिन लोगों की सहायता की थी, कोई भी उसके काम न आया। उसने कुछ दाम जौहर से, यदि वह (इससे पूर्व) उसका (जौहर का) विरोधी था, इस कारण कि हज़रत पादशाह उसके प्रति अत्यधिक कृपा दृष्टि प्रदर्शित करते रहते थे, प्रार्थना की। उसने (जौहर ने) उसके विषय में निवेदन किया और उसका प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। आदेश हुआ कि '४० हज़ार शाहरुखी पर मामले को समाप्त कर दिया जाय'। जब वह धन अदा हो गया तो उसे १०० तुमन जागीर प्रदान कर दी गई।" (च पृ० १०३ब, छ. पृ० ८६ अ)।
४ च, छ में ११ वीं फस्ल, ज में १७ वीं फस्ल।
५ च एवं छ में क़न्तुनुलकर, ज में 'कनूलकर'।
६ ज में स्पष्ट नहीं है। 'चकरी अथवा जकरी' ऐसा ज्ञात होता है।
७ सभी हस्तलिपियों में 'मुहम्मद व खलील'।

उपस्थितगण आश्चर्य में पड़ गए। उन्हें भय हुआ कि कहीं मृग ने परमेश्वर से फरियाद न की हो। इस घटना के दो दिन उपरान्त मीर्ज़ा अफगानों द्वारा मारा गया।

(११७ अ) मीर्ज़ा हिन्दाल मृग का शिकार करके हज़रत पादशाह की सेवा में पड़ाव पर पहुँचा। दूसरे दिन मीर्ज़ा कामरान ने अफगानों से मिलकर रात्रि में छापा मारना चाहा। हज़रत पादशाह ने निश्चय किया कि, "यदि वह रात्रि में छापा मारेगा तो हम ऊँचाई पर रहेंगे और अन्य लोग चारों ओर मोर्चों में रहें।" मीर्ज़ा हिन्दाल रात्रि में मोर्चों का चक्कर लगा रहा था और आदमियों को सांत्वना दे रहा था कि इसी बीच में समाचार प्राप्त हुए कि अफगानों ने रात्रि में छापा मारा और मीर्ज़ा हिन्दाल के मोर्चे पर पहुँच गए। मीर्ज़ा हिन्दाल के पास दो बाण तथा धनुष के अतिरिक्त कुछ न था। घबराहट[1] में उसे कोई अन्य अस्त्र-शस्त्र न मिला। वही धनुष तथा दो बाण लेकर अग्रसर हुआ। उन मलऊनों ने मीर्ज़ा हिन्दाल पर एक साथ आक्रमण करके उसकी हत्या कर दी। उसकी सहायतार्थ अन्य सेना न पहुँच सकी। वे लोग वापस चले गए। तदुपरान्त हज़रत (११७ ब) पादशाह ने मीर्ज़ा हिन्दाल के विषय में पूछा। किसी को निवेदन करने का साहस न होता था। हज़रत पादशाह उस ऊँचाई पर आवाज़ देते थे किन्तु ३०० व्यक्तियों में से कोई भी उत्तर न देता था। तदुपरान्त अब्दुल वहहाब को आदेश दिया कि जाकर मीर्ज़ा हिन्दाल के समाचार लाओ। वह समाचार लेकर आ रहा था कि मार्ग में एक[2] तुफंग चलाने वाले ने अब्दुल वहहाब को अफगान समझकर तुफंग से मार डाला। तदुपरान्त मीर अब्दुल हई को समाचार लाने के लिए भेजा। मीर अब्दुल हई ने समाचार लाकर यह शेर पढ़ा —

शेर

'ऐ पादशाह! संसार का नवरोज़ नष्ट हो गया,
गेरुआ पगड़ियों वाला गुलाब खिला रहे।'

हज़रत पादशाह खरगाह में पहुँचे और अत्यधिक शोक प्रकट करने लगे। अमीरों ने उपस्थित होकर क्षमा याचना की और कहा कि, "यह उसका सौभाग्य था कि हज़रत की सेवा में मारा गया। हज़रत (११८ अ) पादशाह सुरक्षित रहें[3]।"

वहाँ से प्रस्थान करके बेगूर[4] नामक किले में पड़ाव किया। अफगान लोग खुले मैदान में

१ क, ख, ग एवं घ में 'ब गलबे इश्तेगुने', च एवं छ में 'बस सुरअत व जुरअत—जल्दी तथा वीरता से', ज में, 'शिताबी व जल्दी'।

२ च, छ में —"इस ओर के तुफंग चलाने वाले ने", ज में —"पादशाह के तुफंग चलाने वाले ने"।

३ च एवं छ में यह तारीख भी है :

शेर

"हिन्दाल मुहम्मद शुभ उपाधि का शाह,
अचानक मौत आ जाने के कारण रात्रि में शहीद हो गया।
क्योंकि शबखून (रात्रि के छापे) के कारण वह शहीद हुआ,
अतः उसके शहीद होने की तारीख 'शबखून' से निकाल।"

४ च एवं छ में 'बेगुरद', ज में 'बहूद'।

थे। यगमानान[1] मुग़लों को धिक्कारते थे कि, "तुम्हे हम लोगो द्वारा शक्ति प्राप्त होती थी। अफ़गान लोग निश्चिन्त होकर मैंदान में पडाव किए हुए हैं और तुमसे इतना नही होता कि उनपर आक्रमण करो।"

(२८)

अफ़गानो पर हज़रत पादशाह का आक्रमण, विजय प्राप्त करना एव उन्हे नष्ट-भ्रष्ट करना, मीर्ज़ा कामरान का इस्लाम ख़ा[2] सूर के पास प्रस्थान, वहाँ से पलायन, सुल्तान आदम के पास पहुँचना, सुल्तान आदम का प्रार्थना पत्र, पादशाह का सुल्तान आदम के घर पहुँचना, मीर्ज़ा कामरान का अंधा बनाया जाना[3]

जब अमीरो तथा हज़रत पादशाह के आदमियों ने निवेदन किया कि, 'यह बडे खेद का विषय है कि हम लोग किले के भीतर रहें और अफ़गान लोग निश्चिन्त होकर मैंदान मे निवास करें तथा उन्हे कोई भय न हो। यदि हम उनपर आक्रमण करें तो कैसा है ?' हज़रत पादशाह ने कहा कि, (११८ ब) 'एक जवागीर[4] अथवा ख़बरदार[5] को बुलवाओ जो अफ़गानो के विषय मे सविस्तार समाचार पहुँचाये और यह सूचना दे कि उनकी क्या दशा है तथा वे क्या कर रहे हैं।" तदनुसार ज़बागीर को लाया गया। उसने निवेदन किया कि, 'वे अपने अपने कबीलो मे निश्चिन्त हैं[6]। कामरान मीर्ज़ा को सात-सात दिन तक अपने-अपने कबीले में रखते हैं।' यह समाचार सुनकर शुक्रवार के दिन हज़रत पादशाह शाहज़ादा जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर एव शाह अबुल मआली तीनों व्यक्तियो ने अपने सिर के बाल मुड़वाकर[7] स्नान किया और शुक्रवार की नमाज़ के उपरान्त अफ़गानो के विरुद्ध रवाना हुए। शनिवार को प्रातःकाल बहुत बडी विजय हो गई। लगभग १२ हज़ार स्त्री तथा पुरुष बन्दी बना लिये गए। लगभग तीन लाख मवेशी, गाय तथा भेड़ें प्राप्त हुई। आदेश हुआ कि स्त्रियाँ[8] को बेच डाला जाय। तदुपरान्त विजय तथा सफलता प्राप्त करके हज़रत काबुल पहुँचे और मीर्ज़ा कामरान हिन्दुस्तान मे इस्लाम ख़ा सूर[9] के पास पहुँचा। हज़रत पादशाह ने काबुल पहुँच कर (११९अ) अमीरो को दावत दी और प्रसन्नतापूर्वक प्रत्येक की श्रेणी के अनुसार उसे तसल्ली दी और

१ च, छ में 'रिआयाये लग़मानात' ज में "देहकानान (ग्रामीण)'।
२ इस्लाम ख़ा।
३ च, छ एव ज में यह क़िस्सा नहीं।
४ गुप्तचर, ऐसा बन्दी जो शत्रुओं के विषय में समाचार पहुँचा सके।
५ जिसे हर प्रकार की सूचना हो।
६ च, छ एव ज में —"अत्यधिक असावधान हैं"।
७ च, छ एव ज में सिर के बाल मुडवाने का उल्लेख नहीं।
८ च, छ एव ज में 'ज़ेह वे नाद (धन-सम्पत्ति)'।
९ च, छ एव ज में 'इस्लाम ख़ा सूर बन्द शेर ख़ा सूर'।

हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करने के विषय में सोच विचार करने लगे। वे यह चाहते थे कि कन्धार पहुँच कर हिन्दुस्तान के विषय में कुछ निश्चय करें।

हज़रत पादशाह का गक्कर की विलायत की ओर प्रस्थान, मीर्ज़ा का वहाँ से पलायन, उसकी आँखों में नश्तर लगवाना एवं मक्का की ओर विदा करना[1]

इसी बीच में सुल्तान आदम गक्कर[2] का प्रार्थना पत्र प्राप्त हुआ कि "मीर्ज़ा कामरान इस दास के पास आ गया है, हज़रत पादशाह शीघ्रातिशीघ्र इस ओर आ जायें।" तदनुसार वे निरन्तर यात्रा करते हुए बगश पहुँचे। वहाँ उन्होंने सुना कि, "एक व्यक्ति धर्म का खंडन कर रहा है[3]। वह बगश के आस पास के स्थान वालों को मिलाकर मार्ग भ्रष्ट कर रहा है।" हज़रत पादशाह ने किया[4] खां तथा अन्य सैनिकों को (उसके विरुद्ध) नियुक्त किया। उन्होंने उसे दंड दिया और उसके परिवार को बन्दी बना लिया[5]। वह धनकोट[6] की ओर चल दिया।

तदुपरान्त हज़रत पादशाह नीलाब[7] तट पर पहुँचे और रेशी[8] नामक घाट से नदी पार की तथा निरन्तर यात्रा करते हुए सुल्तान आदम की विलायत में पहुँचे। वे सुल्तान (११९ब) आदम से लगभग १० कुरोह पर थे कि उधारन नामक उसका दूत उपस्थित हुआ और उसने कहा कि, "हज़रत पादशाह शीघ्रातिशीघ्र पधारें।" इस कारण मध्याह्न में हज़रत पादशाह भरहाला[9] के समीप पहुँचे तथा मीर्ज़ा कामरान से भेंट करने के लिए स्थान निश्चित किया। सायाबान लगवाये गए। उधारन ने पुनः उपस्थित होकर कहा कि, "मीर्ज़ा कामरान कहते हैं कि आप और आगे आयें[10]।" हज़रत पादशाह को आश्चर्य हुआ कि, "उन्होंने स्थान बनाया, शामियाना लगवाया, अब टाल-मटोल का क्या कारण है?" आवश्यकतावश वे आगे बढ़े

१ च, छ के अनुसार १२ वीं फ़स्ल, ज के अनुसार १८ वीं फ़स्ल।

२ च, छ एवं ज में 'आदम सुल्तान गक्कर'।

३ च, छ में —"वहां एक मार्ग-भ्रष्ट नये धर्म का आविष्कार करता है"। ज में —"उन्होंने सेना सहित बगश की ओर प्रस्थान किया। वहां एक व्यक्ति ने एक नये धर्म का आविष्कार किया है और धर्म (इस्लाम) का खण्डन कर रहा है"। (ज पृ० ११६ब)।

४ क में स्पष्ट नहीं, ख, ग एवं घ में 'कराचा खाँ', ज में 'किया खा गुर्ज'।

५ ज में —"उपर्युक्त समूह उस क्षेत्र की ओर रवाना हुआ। उसका परिवार जो हाथ लगा वह बन्दी बना लिया गया। वह कुछ घाव खाकर दीन कोट के किले की ओर चला गया"। (ज पृ० ११६ब)।

६ च, छ एवं ज में, 'दीनकोट'।

७ सिन्ध; ज में 'नील नदी'।

८ च एवं छ में 'रेशी'।

९ च, छ में 'परहाला'।

१० च, छ एवं ज में —"जब प्रतीक्षा में अधिक समय व्यतीत हो गया तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि विलम्ब एवं टाल मटोल का क्या कारण है। इसी बीच में ..."।

और वहाँ भी स्थान बनाया। उस स्थान पर भी उधारन एवं भूरन नामक दो हिन्दू[१] आये और निवेदन किया कि "मीर्ज़ा कामरान और आगे आने का आग्रह कर रहा है।" हज़रत पादशाह ने कहा, "अच्छा। शाम की नमाज पढ़ने के उपरान्त आयेंगे।" इसी बीच में करा बहादुर, पादशाह जादा[२] काशकार तथा सुल्तान आदम पहुँचे और शुभकामनाएँ पहुँचाईं। हजरत पादशाह दो रकात नमाजे सुन्नत पढ़कर पलंग पर बैठे। करा बहादुर तथा सुल्तान आदम ने पहुँचकर हजरत के चरणों का (१२० अ) चुम्बन किया। हजरत पादशाह ने कहा कि, "सुल्तान आदम! तूने मुझे बड़ी देर में याद किया।" सुल्तान आदम ने निवेदन किया कि, "यह दास नीलाब पर पहुँच कर चरणों का चुम्बन करना चाहता था किन्तु घर पर अतिथि के[३] होने के कारण उसे छोड़ कर हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित न हो सकता था।" हजरत पादशाह ने कहा कि, "यह सेवा उस सेवा से उत्तम थी।" सुल्तान आदम ने पुनः निवेदन किया कि, "मीर्ज़ा कामरान और आगे बुलवा रहा है।" हजरत पादशाह के हृदय में इस बात से कुछ शंका हुई। सुल्तान आदम ने कहा, 'मीर्ज़ा मेरे बन्दीगृह में है, हजरत पादशाह आगे चलें।' तदुपरान्त हजरत पादशाह एक नदी तट पर पहुँचकर उतर पड़े। दो घड़ी रात्रि पश्चात् मीर्ज़ा कामरान ने उपस्थित होकर सिर झुका लिया। हजरत पादशाह ने उससे भेंट की और दायें हाथ की ओर बैठने का संकेत किया। दायें हाथ की ओर (१२० ब) मीर्ज़ा कामरान बैठ गया। बायें हाथ की ओर शाहजादा मुहम्मद अक्बर और शाह अबुल मआली। सामने दिगल[४] में तरदी बेग खां सुल्तान आदम तथा मुनइम खां बैठे। हजरत पादशाह ने कमाली[५] मंगवाई। डेढ़ पूरी स्वयं खाई और आधी मीर्ज़ा कामरान को दी। एक पूरी शाहजादये आलमियान और शाह अबुल मआली को दी। एक पूरी तरदी बेग तथा सुल्तान आदम को दी[६]। इसी बीच में मीर्ज़ा कामरान ने कहा कि, "महमूद खां नियाज़ी, सुल्तान शायर का पुत्र कमाल खां[७], इस्लाम खां नियाज़ी तथा सुल्तान आदम का पुत्र लश्करी हजरत पादशाह के चरणों का चुम्बन करेंगे[८]।" हजरत पादशाह ने कहा कि, "ऐसा ही हो।" सुल्तान आदम की ओर देख कर कहा कि, "वे कल हमसे भेंट करेंगे[९]।" सुल्तान ने कहा, 'बहुत अच्छा। उनसे कल भेंट करें। यह उनका दुर्भाग्य होगा, हजरत पादशाह इतनी लम्बी यात्रा करके आये और वे उनसे कल भेंट करें!' सुल्तान ने किसी

१ च, छ में 'आदम सुल्तान के वकील'।

२ च, छ में 'करा बहादुर मीर्ज़ा शाहजादा काशकार', ज में 'करा बहादुर मीर्ज़ा पादशाहजादा काशगर।'

३ च, छ एवं ज में 'सम्मानित अतिथि।'

४ दिगल का अर्थ जन समूह, एवं भीड़ इत्यादि है किन्तु यहां ऐसे स्थान से तात्पर्य है जहां अधिक लोगों के बैठने का स्थान हो।

५ शब्दकोशों में यह शब्द नहीं मिल सका। सम्भवतः भोजन के थाल से तात्पर्य है।

६ च, एवं छ में —"एक पूरी में से आधी स्वयं खाई, आधी मीर्ज़ा को प्रदान की, एक पूरी शाहजादये आलमियां एवं शाह अबुल मआली को प्रदान की और एक पूरी दिगल में बैठने वालों को"।

७ च, छ में —"सायर सुल्तान का पुत्र कमाल खां"।

८ च, छ एवं ज में —"मीर्ज़ा ने सम्भवतः यह समाचार इस कारण पहुँचाये कि उनके न आने के कारण सम्मानित हृदय में शंका पैदा हो"।

९ च, छ एवं ज में —"क्या वास्तव में वे कल हमसे भेंट करेंगे"।

को भेजा कि उन्हें बुला लायें और वे चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हों। वे उपस्थित हुए। (१२१ अ) सर्वप्रथम महमूद खाँ नियाज़ी तदुपरान्त सुल्तान शायर का पुत्र कमाल खाँ उपस्थित हुए, तत्पश्चात् इस्लाम खाँ नियाज़ी, और फिर सुल्तान आदम का पुत्र लश्करी चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुए। हज़रत पादशाह ने पूछा कि, "खेमे लग गए हैं?" उन लोगों ने निवेदन किया कि, 'खेमे लगे हैं।" (हज़रत पादशाह) ने कहा कि, "मंज़िल पर चलना चाहिये।' फिर कहा कि, कहीं से पान मिलेंगे?" सुल्तान आदम का पुत्र लश्करी १२ बीड़े लाया। उन्होंने एक बीड़ा स्वयं खाया और ११ बीड़े आदमियों को प्रदान किए और कहा कि, "लश्करी ने बड़ा विचित्र कार्य किया कि जितने बीड़े आवश्यक थे उतने ही लाया।" तदुपरान्त हज़रत पादशाह सवार होकर पड़ाव पर (१२१ ब) पहुँचे। सभा आयोजित की गई। संगीतज्ञ संगीत, एवं वाद्य वादन में व्यस्त हो गए। पूरी रात आनन्द-मंगल होता रहा। प्रातःकाल नमाज़ के उपरान्त हज़रत पादशाह सो गए। मीर्ज़ा कामरान भी अपने स्थान पर चला गया। मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज़-उपरान्त भोजन लाया गया और भोजन किया गया। दस्तरख़्वान उठा दिया गया। वह रात भी आनन्द-मंगल में व्यतीत हुई। दूसरे दिन अमीरों ने उनसे कहा कि, "मीर्ज़ा कामरान की चिन्ता करें। हज़रत पादशाह ने कहा, "सुल्तान आदम की दावत करके जो उचित होगा करूँगा।" तीसरे दिन सुल्तान आदम की दावत की गई और उसे पताका एवं नक्क़ारा जो पादशाही मरातिब है प्रदान हुए और सुल्तान विदा कर दिया गया। चौथे दिन वे मीर्ज़ा कामरान के विषय में सोचने लगे और निश्चय किया कि, 'मीर्ज़ा कामरान के साथियों को उससे पृथक् कर दिया जाय।' ख़जर बेग, आरिफ़ बेग, अली दोस्त, सिदी मुहम्मद पक़ना तथा तुच्छ दास जौहर को आदेश हुआ कि, 'वे मीर्ज़ा कामरान की सेवा में जायें'[1] (१२२ अ) और कहा कि, "हे दास! तू जानता है कि तुझे कहाँ भेजा जा रहा है? तुच्छ जौहर ने उत्तर दिया, "हे पादशाह! मैं जानता हूँ।" उन्होंने आदेश दिया कि "ख़रगाह के भीतर की[2] सेवा भी तुझ से सम्बन्धित है, अपने ऊपर नींद हराम कर ले।" हज़रत पादशाह के आदेशानुसार मीर्ज़ा कामरान की सेवा में हम मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज़ के समय पहुँचे। मीर्ज़ा ने जा-नमाज़ मँगाई। दास जौहर ने जा-नमाज़ प्रस्तुत की। मीर्ज़ा ने सायंकाल की नमाज़ ख़रगाह के भीतर पढ़ी और दास से पूछा कि, "हे दास! तेरा क्या नाम है?" निवेदन किया कि, "दास जौहर"। पुनः पूछा कि, "हे मेहतर! ख़ादिमी भी जानता है?" निवेदन किया कि, "हाँ थोड़ी सी।" तदुपरान्त ख़ादिमी करने लगा। पूछा कि, 'कितने वर्ष से हज़रत पादशाह की सेवा कर रहा है? निवेदन किया कि, "१९ वर्ष से सेवा में हूँ।" उसने कहा कि, 'तू बहुत समय से सेवा में है?' निवेदन किया, 'हाँ'। (१२२ ब) पुनः पूछा कि, "मीर्ज़ा अस्करी की सेवा में भी तू था?" निवेदन किया, 'नहीं। जलाल नामक एक व्यक्ति फ़कीर का एक सम्बन्धी मीर्ज़ा अस्करी की सेवा में था।' पुनः कहा कि, "रमज़ान मास में मैं ६ रोज़े नहीं रख सका, क्या तू मेरे बदले रोज़ा रख सकता है?" फ़कीर जौहर ने निवेदन किया कि, "हाँ, रख सकता हूँ किन्तु मीर्ज़ा स्वयं अपने छोड़े हुए रोज़े रखेंगे। साहस से कार्य

१ च, छ एवं ज में —"ख़जर बेग, आरिफ़ बेग अली दोस्त एवं सिदी मुहम्मद पक़ना को उन लोगों (मीर्ज़ा कामरान के आदमियों) को प्राप्त करने के लिये नियुक्त किया गया। तुच्छ दास को आदेश दिया कि तू भी मीर्ज़ा की सेवा कर।" (च पृ० १०८ ब, छ पृ० ६३अ, ज पृ० ११६ अ)।

२ मीर्ज़ा कामरान की।

ले, अपने हृदय मे निराशा को इतना स्थान न दे।" तदुपरान्त उसने पूछा कि, "क्या तू जानता है कि मेरी हत्या कर दी जायेगी ?" फकीर ने उत्तर दिया कि, "पादशाहो के स्वभाव को पादशाह ही जानते हैं। मैं स्वय इतना जानता हूँ कि कोई अपने हाथ को स्वय नही तोडता। इसके अतिरिक्त हजरत पादशाह मुहम्मद हुमायूँ बडे उदार है।" रात्रि इसी प्रकार व्यतीत हो गई। प्रात काल हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान हुआ और निश्चय किया[1] कि, 'मीर्जा कामरान की आँखो मे नश्तर लगा दिया जाय"। जब हजरत पादशाह यह आदेश देकर चल गए तो कोई भी मीर्जा की (१२३ अ) आखो मे नश्तर न लगाता था। किसी व्यक्ति की खोज हो रही थी कि सुल्तान अली बख्शी ने अली दोस्त ईशक आका से कहा कि, "तू नश्तर लगा।" अली दोस्त ने उत्तर दिया कि, "जब तू किसी का एक शाहरुखी देता है तो हजरत पादशाह स पूँछ लेता है। मैं पादशाह के आदेश के बिना तेरे कहने पर यह कैसे कर डालूँ ? कल अगर हजरत पादशाह पूछेंगे कि तूने यह कार्य क्यो किया और हमारे भाई को नष्ट कर डाला तो (क्या) मैं उस समय यह उत्तर दूँगा कि सुल्तान अली दोस्त ने आदेश दिया था। यह मुझसे नही हो सकता।' वे आपस मे यही वार्ता कर रहे थे कि तुच्छ दास जौहर ने कहा कि, "मैं जाकर हजरत पादशाह से कहता हूँ।' अली दोस्त बारबेगी, गुलाम अली शशअगुश्त दारोगा फर्राश खाना एव फकीर जौहर घोडा दौडाते हुए हजरत पादशाह की (१२३ ब) सेवा मे पहुँचे और हजरत पादशाह मे निवेदन किया। अली दोस्त ने भी हजरत पादशाह से कहा[2] कि, कोई भी यह कार्य नही करता।" हजरत पादशाह ने गाली देते हुए[3] कहा कि, 'तुझे क्या हुआ है तू कर[4]।' आदेशोपरान्त वे मीर्जा कामरान के पास पहुँचे। गुलाम अली ने मीर्जा से निवेदन किया कि, "हे मीर्जा ! यदि यह बात मैंने अपनी ओर स कही हो तो ईश्वर मेरी जिह्वा को गुद्दी से खीच ले, किन्तु पादशाह के आदेश का उल्लघन सम्भव नही। उनका आदेश इस प्रकार है कि आपकी आँखो मे नश्तर लगाया जाय।" मीर्जा ने कहा, 'मेरी हत्या कर दी जाय।" गुलाम अली ने उत्तर दिया, "आपकी हत्या का कोई भी साहस नही कर सकता।' मीर्जा कामरान किसी चीज की खोज करने लगा, उसके हाथ मे रूमाल था[5]। गोला बनाकर उस फर्राश के मुह पर जो मीर्जा को पकडने के लिए हाथ फैलाये था, मारी। तदुपरान्त उसने मीर्जा का हाथ पकडा। खरगाह के बाहर लाया और मीर्जा को लिटाया। उसकी आखो मे नश्तर लगाया। लगभग ५० नश्तर लगाये गए। उसने पौरुष प्रदर्शित करते हुए दम न मारा। जो व्यक्ति उसके जानू पर बैठा था उससे मीर्जा ने केवल यह बात

१ च, छ एव ज मे —"आदेश दिया कि, जिस प्रकार मीर्जा ने मीर सैयिद अली मुल्तानी, एव एक समूह को अकारण अधा बना दिया था, इसके बदले मे उसकी आखो मे नश्तर लगा दिया जाय।" (च पृ० १०६ अ, छ पृ० ६३ब, ज पृ० १२०अ)।

२ च, छ एव ज मे —"तुर्की भाषा मे कहा'।

३ तुर्की भाषा मे कहा।

४ च, छ एव ज मे —"यदि कोई नही करता तो तू कर"।

५ ज मे —"उस समय वहा किसी प्रकार का कोई अस्त्र शस्त्र न था, जिस समय फर्राश ने मीर्जा को पकडने के लिये हाथ फैलाये और खरगाह के बाहर लाना चाहा तो मीर्जा ने जो रूमाल उसके हाथ मे था, उसका गोला बना कर फर्राश के मुह पर मारा। बहर हाल फर्राश मीर्जा को पकड कर खरगाह के बाहर लाये"। (ज पृ० १२० ब)।

(१२४ अ) कही, "तू जानू पर क्यों बैठा है ? क्या इसके बिना तेरी तसल्ली न होगी[1] ?" इस बात के अतिरिक्त उसने कुछ न कहा। बडी वीरता से धैर्य धारण किए रहा। तदुपरान्त किरदी मेवादार ने उसकी आँखो में नमक छिडका। अधीर होकर उसने अल्लाह का नाम लिया, तदुपरान्त यह कहा कि, 'हे ईश्वर ! मैंने ससार में जो कुछ किया था उसका बदला मिल गया, अब मुझे कयामत में आशा है।" तदुपरान्त मीर्जा को सवार करके प्रस्थान किया गया। उस तोप के समीप जिसका निर्माण सुल्तान फीरोज शाह ने कराया था, पडाव कराया गया[2]। वहाँ की वायु बडी गरम थी। तदुपरान्त सवार करके लश्कर में पहुँचाया गया। मीर्जा कासिम कोहबर का खेमा लगा था। वहीं ठहरा दिया गया। जौहर फकीर कहता है कि जब उसने मीर्जा को बडा व्याकुल तथा अधीर देखा तो वह मीर्जा के पास न रह सका, अपने स्थान पर आ गया। कारखाने में पहुँचकर चिन्ता में सिर (१२४ ब) झुकाये हुए था कि पादशाह की दृष्टि फकीर पर पड गई। उन्होने जान मुहम्मद कितावदार को फकीर के पास भेजा कि ' उस दास से पूछो कि जिस कार्य हेतु मैंने नियुक्त किया था उसका क्या हुआ और उसे किस प्रकार सम्पन्न किया ?' तुच्छ दास जौहर ने निवेदन किया कि, ' जिस कार्य का आदेश हुआ था उसे सम्पन्न कर दिया।" हजरत पादशाह ने कहा, ' अब तू उस स्थान पर मत जा और स्नान के लिए जल का प्रबन्ध कर।'

तदुपरान्त हजरत पादशाह निरन्तर यात्रा करते हुए पराना जानूहा की विलायत मे पहुँचे। पराना ने आकर चरणो का चुम्बन किया। सुल्तान आदम ने[3] पराना के विषय में सिफारिश की। हजरत पादशाह ने उसे सुल्तान आदम के सिपुर्द कर दिया[4]। करछाक[5] नामक स्थान के समीप (लोग) लगभग ५० ग्रामो का मुनक्कर[6] बाँधे हुए एकत्र थे। हजरत पादशाह ने उसपर आक्रमण किया (१२५ अ) और मुनक्कर को तोड डाला। बहुत से लोग बन्दी बना लिये गए[7]। हजरत पादशाह ने आदेश दिया कि, ' जिसे भी मुक्त किया जाय धन लेकर मुक्त किया जाय।" समस्त लश्कर का उसकी श्रेणी के अनुसार धन प्राप्त हो गया।

तदुपरान्त हजरत पादशाह ने कश्मीर जाने का सकल्प किया। अमीरो के एक समूह ने कहा कि, "कश्मीर जाने का समय नहीं है।' हजरत पादशाह ने इस बात पर जोर दिया। शाह अबुल

१ च में जानू पर बैठने वाले से वार्ता का उल्लेख नहीं।
२ च, छ एव ज में —"मार्ग में एक गुम्बद है। उसे उस विलायत में तोप कहते है। उसका निर्माण सुल्तान फीरोज ने कराया था हवा के गरम होने के कारण वहा पडाव किया गया।"
३ च, [illegible] एव ज में —' इस कारण कि वह अफगानों का हितैषी कहलाता था।"
४ च, छ में —"उसके अपराध क्षमा कर दिये "।
५ च एव छ में 'करनाक,' ज में, 'करचाक'।
६ सगठित हो कर एक प्रकार का घेरा। पूर्व में 'मकर' भी प्रयुक्त हुआ है।
७ च, छ एव ज में —"करजाक (ज में 'करचाक') जमींदारों के एक समूह ने लगभग ५० ग्रामों को घेर कर उसे दृढ़ बना लिया था। सैनिकों ने उस पर आक्रमण करके उसे विजय कर लिया और उन्हें पराजित कर दिया। बहुत बड़ी सख्या में लोग बन्दी बना लिये गये "। (च - पृ० ११० ब, छ पृ० ९४ ब, ज - पृ० १२१ ब)।

मआली ने कश्मीर की ओर प्रस्थान के कारण एक मुगल को बाण द्वारा मारा और कहा, "तत्काल कश्मीर की ओर जाओ। बिना गए न रहूँगा[१]।"

जब अमीरों ने देखा कि हजरत पादशाह बहुत जिद कर रहे हैं तो वे सब मिलकर सुल्तान आदम के पास पहुँचे और उससे इस विषय में कहा। उसने हजरत पादशाह के चरण पकड़कर निवेदन किया कि, "इस बार कश्मीर की यात्रा को स्थगित रखें। सुना जाता है कि इस्लाम खा सूर ने इस ओर प्रस्थान किया है। अफगान लोग जो रोहतास के किले को छोड़कर बेहत एवं चनाब नदी पार कर चुके थे वापस आ गए हैं। यह अच्छा होगा कि इस बार आप काबुल तथा कन्धार की ओर चले जायें[२] और खाने खानाँ बैरम खा को अपने साथ लेकर आयें। हिन्दुस्तान भी अधिकार में आ जायेगा और कश्मीर भी। इस समय नीलाब को सरहद निश्चित किया जाय (१२५ ब) और देखा जाय कि ईश्वर क्या करता है?"

(२६)

हजरत पादशाह का काबुल एवं कन्धार की ओर प्रस्थान और मीर्जा कामरान को मक्का मुअज्जमा की ओर विदा करना

जब हजरत पादशाह ने प्रस्थान करने का सकल्प कर लिया तो सुल्तान आदम ने निवेदन किया कि, "इस विलायत के आदमियों की बड़ी हानि हुई है[३]। हजरत पादशाह के कूच करने पर सम्भवतः लोग उत्पात मचाये[४], अतः यह उचित होगा कि ढिंढोरा पिटवा दिया जाय कि हजरत पादशाह रोहतास में छपर-बदी[५] करेंगे[६]। जब लोग इस ढिंढोरे को सुनेंगे तो वे विभिन्न स्थानों पर ठहर जायेंगे

१ च, छ एवं ज में —"हजरत की बहुत समय से कश्मीर जाने की इच्छा थी अतः उन्होंने उस ओर प्रस्थान किया। समस्त खाना एवं सुल्तानों ने निवेदन किया, 'यह उस मुकाम में जाने का समय नहीं है।' उनकी प्रार्थना स्वीकार न की गई। शाह अबुल मआली भी जिसके प्रति हजरत पादशाह बड़ी कृपा प्रदर्शित किया करते थे, जिद करने लगा, यहा तक कि उसने एक मुगल को बाण द्वारा मारा कि तू भाग दर्शा।' (च पृ० ११०ब, छ पृ० ६४ब, ज पृ० १२१ब)।

२ च, [illegible] एवं ज में —"इस बार आप काबुल तथा कन्धार की ओर वापस चले जायें कारण कि वहा से हिंदुस्तान के अभियान की व्यवस्था की गई थी। मीर्जा की समस्या के समाधान हेतु आ गये थे। वहा से लौट कर खाने खाना बैरम को कन्धार से बुलवा कर आस पास की सेनाओं को सूचना दे दें और फिर एक बहुत बड़ी सेना तैयार करके इस देश की ओर रवाना हों। हिन्दुस्तान भी विजय हो जायगा और कश्मीर भी ।" (च. पृ० १११अ, छ. पृ० ६५अ, ज पृ० १२२अ)।

३ क, ख, ग, घ एवं ञ में, 'खीले जरर रसीदा अस्त' है किन्तु च एवं [illegible] में 'खबर रसीदा अस्त (सूचना मिल गई है)'।

४ च एवं छ में इसके आगे इस प्रकार है —"शिकार वालो को कहीं कष्ट न पहुँचायें"।

५ ग एवं छ में 'चपर बदी (घेरा बाधना, अवरोध करना)'।

६ च, छ एवं ज में इसके आगे —"और दीर्घ काल तक वहा रहेंगे"।

और उन्हे सांत्वना एव शान्ति प्राप्त हो जायगी[१]। तदुपरान्त हजरत पदशाह ने कहा कि, "ढिंढोरा पिटवा दिया जाय।" तत्पश्चात् वे निरन्तर यात्रा करते हुए नीलाब पहुँचे और नीलाब से मीर्ज़ा कामरान को मक्का की ओर विदा कर दिया। वे स्वय पेशावर पहुँचे और आदेश दिया कि, "इस (१२६ अ) स्थान पर किले का निर्माण किया जाय।" अमीरो ने इस विषय में निवेदन किया कि, "किला न बनाया जाय[२]।" हजरत पादशाह ने कहा कि, "जब मैं कश्मीर जाना चाहता था तो तुम लोगो ने रोका, अब इस समय किले के लिए रोकते हो। यदि अब किले के निर्माण के विषय मे प्रतीक्षा करने की बात कोई कहेगा तो वह दड का पात्र बनेगा।" जिस दिन पहुँचे थे उसी दिन किले की नीव डाल दी गई। सात दिन में किला पूरा हो गया। गेहूँ उस समय तक न कटा था। आदेश दिया कि उसे कटवा कर किले के भीतर भडार मे एकत्र कर दिया जाय। शुक्रवार के दिन खुत्बा पढवाया गया। सिकन्दर खा उजबेक को सरोपा प्रदान किया गया। किला उसको सौप दिया गया। मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के उपरान्त वे सवार हुए और निरन्तर यात्रा करते हुए काबुल पहुँचे। उकाबैन के ऊपर पहुँचे। नवरोज़ बडी धूम-धाम से काबुल मे मनाया गया[३]।

नवरोज के उपरान्त वे कन्धार की ओर रवाना हुए। तीन मास वहा कुशलतापूर्वक रहे[४]। तदुपरान्त काबुल वापस चले आये। बैरम खा को तुरग[५] नदी तक जो कि गजनी तथा कन्धार के (१२६ ब) मध्य में है, साथ ले गए और उपर्युक्त नदी से कन्धार की ओर विदा कर दिया और प्रतिज्ञा की कि "शीत ऋतु के उपरान्त यदि ईश्वर ने चाहा तो हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करेगे।" तदुपरान्त वे स्वय काबुल गए।

हाजी[६] मुहम्मद खा कोकी गजनी में था। वह कुछ खिन्न था। जब खाने खाना बैरम खा कन्धार की ओर से हजरत पादशाह के पास आ रहा था तो वह हाजी मुहम्मद खा को तसल्ली देकर अपने साथ काबुल ले गया। हाजी मुहम्मद खा पुन गजनी भाग गया। हजरत पादशाह उसे अत्यधिक सांत्वना देकर लाये किन्तु उसके हृदय में क्रोध बना रहा। हजरत पादशाह लमगानात के तूमान में पहुँचे। हाजी मुहम्मद खा ने अपनी पताका तथा नक्कारा तोड डाला। यह समाचार हजरत पादशाह को प्राप्त हुए। हाजी मुहम्मद तथा उसके भाई अर्थात् शाह मुहम्मद को बन्दी बना लिया और कहा "तू अपनी सेवाओ को लिख। मैं तेरे अपराध लिखता हूँ ताकि दोनो की तुलना की जाय। यदि तेरी सेवाएं तेरे अपराधो के बराबर निकलेंगी तो तेरे अपराध क्षमा कर दिए जायेगे। यदि तेरे (१२७ अ) अपराध सेवा की अपेक्षा अधिक निकले तो तुझे न छोडूँगा और तेरी हत्या करा दूँगा।"

१ च, छ एव ज में :—"तदुपरान्त आप अचानक कूच कर दें"।

२ च, छ एव ज में —"अमीरों एव सिपहसालारों ने (ज में 'सिपहसालारों' नहीं है) एक दिल एव एक मन हो कर कहा कि कुछ दिन प्रतीक्षा करनी चाहिये।" (च पृ० १११ब, छ पृ० ६५ब, ज पृ० १२२ब)।

३ च, छ एव ज में नवरोज के समारोह के आनन्द मगल का बडे विस्तार से उल्लेख हुआ है।

४ ज में —"वहा से हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुये"।

५ च एव छ में 'तनक नदी'।

६ च, छ एव ज में हाजी मुहम्मद खा कोकी सम्बन्धी इस घटना का उल्लेख नहीं।

अन्ततोगत्वा उसने अपनी सेवाएँ लिखीं, हज़रत पादशाह ने उसके अपराध लिखे[1]। उसके अपराध सेवा से अधिक निकले। हज़रत पादशाह ने हाजी मुहम्मद खां को बन्दी बना दिया। कुछ दिन उपरान्त दोनों भाइयों की हत्या करा दी और स्वयं काबुल पहुँचे। खाने खानां को कन्धार की ओर विदा कर दिया और कहा कि, 'शीत ऋतु उपरान्त तुम आना। तब हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करेंगे।'

इन दिनों[2] हज़रत पादशाह अधिकांश आबे बारां ख्वाजा बस्तयारान[3], ख्वाजा रेगे रवाँ की सैर किया करते थे। समरकन्द बुखारा तथा इसी प्रकार के स्थानों के प्रतिष्ठित लोगों एवं तलवार (१२७ ब) चलाने वालों को सूचना कराई और कुछ को उपहार भेजे और लिखा कि, 'यदि ईश्वर ने चाहा तो मैं हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करूँगा। आप लोग पधारें तो कोई रोक नहीं है, आ जायँ ताकि एक बार हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया जाय। फिर जो कुछ ईश्वर की इच्छा होगी, वही होगा।' तदुपरान्त उन्होंने कुमाल्ना हेतु फातहा पढ़ा।

(३०)

हज़रत पादशाह का अनन्त तक स्थायी रहने वाले सौभाग्य के साथ हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान[4]

कतआ

नश्वर[?] संसार परिवर्तन शील है,
वह जमशेद को द्वारपाल बनाता है।
कौन सा ऐसा आराम है जिसमें कष्ट नहीं
बिना पतन के किसने प्रसन्नता देखी।

१ एच छ में —'हज़रत पादशाह राजधानी काबुल में ऐश्वर्य एवं गौरव के साथ राज्य कर रहे थे। हाजी मुहम्मद खां कोकी गज़नी में था। वह कुछ मलीन था। जब खाने खानां बैरम खां कन्धार से आया तो उसे वह सान्त्वना देकर सम्मानित दरबार में लाया तथा धरती का चुम्बन करवाकर सम्मानित कराया। वह (हाजी मुहम्मद खां कोकी) पुनः भाग कर गज़नी चला गया। शाहे आलम पनाह ने उसे अत्यधिक प्रोत्साहन देकर पुनः बुलवाया किन्तु उसके हृदय में क्रोध एवं मलीनता उसी प्रकार बनी रही। इसी बीच में शाहे आलमियान लमगानात के तूमान की ओर रवाना हुये। हाजी मुहम्मद खां ने अपनी पताका तथा अपना नक्कारा तोड़ डाला यह समाचार उनके सम्मानित कानों तक पहुँचे। यही कार्य उसके विनाश का कारण बन गया। उन्होंने आदेश दिया कि उसे तथा उसके भाई शाह मुहम्मद को बन्दी बना लिया जाय। शाही आदेशानुसार वे बन्दी बनाकर लाये गये। हज़रत पादशाह ने कहा 'मैं न्याय से न हटूँगा। तू अपनी सेवाओं को लिख, मैं तेरे अपराधों को लिखता हूँ। देखता हूँ कौन अधिक निकलता है। यदि तेरे अपराध तेरी सेवाओं के बराबर निकले तो तुझे क्षमा कर दूँगा। यदि अपराध सेवाओं से अधिक निकले तो ईश्वर की शपथ न छोड़ूँगा अपितु हत्या करा दूँगा।' ऐसा ही किया गया। प्रत्येक ओर का ब्योरा तैयार हुआ। उसके अपराध सेवाओं से अधिक निकले। उन्होंने आदेश दिया कि उन्हें बन्दी बना लिया जाय। कुछ दिन उपरान्त दोनों की हत्या करा दी और महमन्द, खलील, एवं यूसुफ़ज़ई से संधि करके काबुल लौट आये। (त० पृ० १०३ब १०४अ छ० पृ० ८६अ ८६ब)।

२ त एवं छ में इस घटना का उल्लेख है किन्तु त में नहीं।

३ सम्भवतः 'ख्वाजा सेहयारान'।

४ एच छ के अनुसार बाब (खंड) ४ त में फस्ल ११। यह बाब (खंड) ३ होना चाहिये कारण कि आगे का अध्याय त, छ एवं ज तीनों में फस्ल १ है। किन्तु इन ग्रन्थों में शीर्षक इस प्रकार है —"उस शाहे आलमियान का, देशों को विजय करने वाले सिपहसालारों के साथ हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान के उद्देश्य से रवाना, तदुपरान्त भाग्यशाली झंडे का उस देश की ओर प्रस्थान और उसकी विजय"।

क़तआ

'ऐ बुद्धिमान् ससार परिवर्तन शील है,
सुखी तथा दुःख दोनो इसमे साथ साथ रहते है।
कौन आराम सर्वदा देख सकता है,
कष्ट सर्वदा कम रहता है।'

जब[1] वे काबुल स जलालाबाद पहुँचे तो वहाँ से जाला[2] पर बैठकर आनन्द मगल मनाते

१ च, छ एव ज में —"हजरत पादशाह ने दरबारे आम किया। ईरान तथा तूरान के सिपहसालारों ने आस पास से आकर कोरनिश की तथा धरती चुम्बन किया। प्रत्येक विषय में तथा सदम में कोई न कोई बात कही गई। हजरत पादशाह ने हिन्दुस्तान की प्रशसा को जो मोती बरसाने वाले बम बादल से बरसे, उन्हें ईरान तथा तूरान के सिपहसालारों ने हृदय से पसन्द किया और उन मोतियों को अपने कानों में पहिना। धरती चुम्बन करके यात्रा की तैयारी एव व्यवस्था करने लगे। खाने खाना बैरम खा भी कधार स पहुँच गया।

इसी बीच में मलिकुत्तुज्जार ख्वाजा दौलत ने हिन्दुस्तान से आकर चौखट का चुम्बन करके निवेदन किया कि हिन्द के सुल्तान ने मुझसे एक बारगाह तैयार करने का आदेश दिया था। जब मैं तैयार करके उसके पास ले गया तो उस अभागे ने कहा कि मैं इस बारगाह का न लूगा। जहा तू चाहे ले जा और जिस राज्य के अधिकारी को चाहे दे।' अब मैं इस बारगाह को इस राज्य के लिये उचित समझ कर दूर से लाया हूँ।' हजरत पादशाह ने कहा कि, 'यह राज्य की बारगाह है उसमे लेकर हमारे पास लाया है। क्योकि उसमें उत्कृष्ट फाल एव शुभ सवाद निकलत थ, अत उद्यान एव वाटिका की ईर्ष्या के विषय उस बारगाह को लेकर उद्यान के प्रागण में लगाया।

दूसरे दिन शुभ मुहूर्त में हिन्दुस्तान की यात्रा के उद्देश्य से प्रस्थान किया। जब वे मजिल पर पहुँचे तो हर दिशा स बधाई की आवाजें एव नारे लगने लगे। वहाँ से निरन्तर यात्रा करते हुये वे सुर्खाब पहुँचे। जब उन्होंने वहाँ से प्रस्थान किया तो तरदी बेग खा को आदेश दिया कि आगे आकर मजिल के लिये समतल स्थान तैयार करो।' वह थोड़ी दूर गया था कि तुच्छ दास जौहर से कहा कि, 'तू भी जा और दोनों मिल कर स्थल निश्चित करो।' जब मैं पीछे से जाकर खान के पास पहुँच गया तो उसने पूछा, 'तू कैसे आया और किस कारण से सेवा से पृथक हुआ?' मैंने कहा, 'दास को आपकी सेवा के हेतु भेजा गया है।' उसने कहा 'अल हम्दो-लिल्लाह! यह बड़ा अच्छा हुआ।' पादशाह के आदेशानुसार उसके साथ जाकर हम लोगों ने मिल कर एक स्थान निश्चित किया। इसी बीच में पेश खाने के खच्चर आ गये। दरबार के फर्राशों ने बारगाह एव खरगाह लगवाया। वहा पड़ाव किया गया। प्रात काल कूच का तब्ल बजवा दिया गया। अभी खरगाह एव तहारत खाना लगा था कि वे वुजू करने लगे। फकीर उनके शुभ चरणों पर जल डाल रहा था। मीर तौलक तूशकची से जो उस समय उपस्थित था मैंने कहा, 'हजरत नमाज पढ़ कर सवार हो जायेंगे। जुलचा (ज में जा नमाज) लाकर बिछा दो।' तूशकची ने दूसरे को लाने का आदेश दिया। जब वे वुजू कर चुके तो दास ने झुक कर खरगाह के भीतर देखा। हजरत पादशाह ने कहा, 'अभी तक (ज के अनुसार जुलचा) नहीं लाया?' जब तूशकची की भूल और इस कमीने दास की उत्तम सेवायें देखीं तो यह शेर पढ़ा .

दास ने तस्लीम करके धरती चुम्बन किया। वहाँ से निरन्तर यात्रा करते हुये लमगानात में पहुँचे। तुच्छ दास के हाथ में आफ्ताबा था। हजरत ने आदेश दिया कि, 'इसी प्रकार के कुछ अन्य आफताबों को शीघ्र तैयार करा ले।' मैंने निवेदन किया, 'यदि ईश्वर ने चाहा, लाहौर में तैयार करा लूगा।' उस सम्मानित शाह ने इस तुच्छ की ओर कनखियों से कृपापूर्वक देखा। जलालाबाद से जाला पर बैठ कर पेशावर पहुँचे" (च पृ० ११३ब, [redacted] पृ० ६६ब-६८ ब, ज पृ० १२४ १२५)।

२ जाला—लट्ठों, अथवा बास की हलकी फुलकी नौका। बाबर ने इस नौका द्वारा यात्रा का **बाबर नामा** में अनेक स्थानों पर बड़ा रोचक विवरण दिया है।

हुए पेशावर आये और वहा दो रोज ठहरे। सुल्तान आदम को आदेश हुआ कि "मैं ईश्वर की कृपा से हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान कर रहा हूँ।"

(१२८ अ) तदुपरान्त निरन्तर यात्रा करते हुए नीलाब पहुँचे। उस समय शीत ऋतु थी। नीलाब पार किया। नदी पार करते ही तुच्छ जौहर की दृष्टि नवचन्द्र पर पडी। हजरत पादशाह का बधाई देते हुए निवेदन किया कि, 'पादशाहे आलम! नवचन्द्र, नदी का पार करना तथा हिन्दुस्तान मे प्रवेश मुबारक हो।" हजरत पादशाह ने तीन बार कहा, ' इनशा अल्लाह, इनशा अल्लाह, इनशा अल्लाह"। तदुपरान्त यात्रा करते हुए भरहाला[1] की विलायत के समीप पहुँचे। उस स्थान पर हजरत पादशाह ने तुच्छ जौहर से कहा कि, "शाहजादे को स्नान करा कर एव वस्त्र[2] पहिनाकर सेवा में ला।" पादशाह के आदेशानुसार तुच्छ जौहर ने शाहजादये आलमियान से निवेदन किया कि, "हजरत पादशाह ने आपको बुलवाया है। स्नान करके तथा वस्त्र पहिन कर उनकी (१२८ ब) सेवा में चलें।" शाहजादे ने कहा कि, 'मैं तुम्हारे सामने नगा नही हो सकता। मुझे लज्जा आती है, किस प्रकार नगा होऊँ?" तुच्छ जौहर ने निवेदन किया कि,' यदि आपका आदेश हो तो रफीक को बुला लाऊँ।' आदेश हुआ कि, "ऐसा ही करो।' रफीक के आने पर स्नान किया और वस्त्र पहिने। तुच्छ जौहर उन्हे हजरत पादशाह की सेवा में ले गया। वे स्वय किबले[3] की ओर मुख किए बैठे थे। शाहजादे को अपने सामने बैठाया। हर बार कुछ पढकर शाहजादे पर फूँकते जाते थे और इतनी प्रसन्नता प्रकट करते थे कि मानो वह देन सौभाग्य एव सफलता उसी समय प्राप्त हुई हो।

तदुपरान्त रवाना होकर भरहाला से चार कुरोह पर पडाव किया और कहा[4] कि, 'मैं शुभ शकुन लेता हूँ। सैनिको का निरीक्षण एव गणना कराता हूँ। अलिफ से प्रारम्भ करता हूँ। अलिफ में आफताबची लोग सम्मिलित है। आफताबची अपने अस्त्र शस्त्र का निरीक्षण करायें।" लश्कर खा उर्फ मुहम्मद हुसेन[5] ने आकर आफताबचियों को आदेश पहुँचाया। आदेशानुसार दास तुच्छ (१२९ अ) जौहर, मेहतर सबीहा, तौफीक एव कुछ आफताबची अस्त्र-शस्त्र धारण करके खडे हुए। हजरत पादशाह उन्हे देखकर प्रसन्न हुए और कहा कि, "मुबारक हो। शकुन मिल गया।" दासो में से प्रत्येक ने बधाई दी और निवेदन किया कि "यदि ईश्वर ने चाहा तो हजरत पादशाह की आकाक्षायें शुभचिन्तको की इच्छानुसार पूरी होगी। (आमीन या रब्बुल आलमीन[6])" कुछ

१ च, छ एवं ज में, 'परहाला'।

२ क, ख, ग एवं छ में 'जामा', च, छ एव ज में 'सरोपा'।

३ पश्चिम की ओर, जिधर मुख करके नमाज पढी जाती है।

४ च, छ एवं ज में —"आदम सुल्तान बावजूद इसके कि हजरत बादशाह उसके राज्य में तशरीफ ले गये, सेवा में उपस्थित न हुआ। सम्भवत वह समझता था कि 'इस प्रकार के शत्रु पर विजय कठिन है। जब शत्रु को पता चलेगा कि मैं उनका सहायक हूँ तो वह मुझे हानि पहुँचायेगा।' इस कारण कुछ अमीरों ने निवेदन किया कि 'उस पर आक्रमण करना चाहिये और सर्व प्रथम उस कोने को साफ कर लेना चाहिये।' तुच्छ दास ने निवेदन किया कि 'वह एक कण से अधिक नहीं। यदि हजरत पादशाह उस दुष्ट (अफगान) को पराजित कर लेंगे तो आदम सुल्तान सरीखे सहस्रों दास बन जायेंगे।' फकीर की प्रार्थना स्वीकार कर ली गई।" (च पृ० ११५ब, छ: पृ० ६८ब–६६ अ, ज पृ० १२६ब)।

५ च, [redacted] एव ज में —"मुहम्मद हुसेन, जिसे बाद में लश्कर खा की उपाधि प्रदान हुई"।

६ हे परमेश्वर! एवमस्तु।

शागिर्दपेशा उदाहरणार्थ मेहतर सब्रहाका[1], फरहाद एव अन्य लोगो ने कहा कि, "हम लोगो का भी निरीक्षण कर लिया जाय।" हजरत पादशाह ने कहा कि, "हमें ज्ञात है कि किसके पास क्या अस्त्र-शस्त्र है। हमने केवल शकुन के लिए यह किया था।"

शाहे आलमियान का हिन्दुस्तान में प्रवेश और आसपास सैनिको की नियुक्ति करना[2]

तदुपरान्त निरन्तर यात्रा करते हुए चनाव नदी की ओर पहुँचे। चनाव नदी चार कुरोह रह गई थी कि एक ऊँचा स्थान दृष्टिगत हुआ। हजरत पादशाह ने उस स्थान पर पहुँचकर कहा कि "यहाँ सायावान लगाये जायें और भोजन का प्रबन्ध किया जाय।" तदुपरान्त सायाबान लगाये गए और भोजन का प्रबन्ध किया गया। उन्होने भोजन किया। तदुपरान्त अमीरो को नियुक्त किया। (१२९ ब) खाने खाना बैरम खा, सिकन्दर खा ऊज़बेक, तरदी बेग[3], लाल बेग तथा कुछ अन्य अमीरो एव सुल्तानों को विदा करके आदेश दिया कि, "पर्वत के आँचल के आस पास के स्थानो को विजय करके जालधर तक पहुँच जायें और वहाँ चौकन्ने रहे। यदि अफगान लोग निकट हो तो मुझे सूचना दें अन्यथा सतलज नदी पार करके सरहिन्द के भूभाग में पहुँच जायें।" मीर मुशी[4], शिहाब खा[5], फरहाद खा[6] उर्फ मेहतर सखा, तोशाखाने का दारोगा, मेहतर सबीह आफ्तावची एव कुछ अन्य लोगो को लाहौर की ओर नियुक्त किया।

इसी बीच में हरयाई[7] नामक आवदार ने निवेदन किया कि, "मेरे परिवार वाले तथा माल असबाब लाहौर में हैं, यदि आदेश हो तो उनके समाचार प्राप्त करूँ।" हजरत ने कहा, 'यदि तू वहाँ चला जायेगा तो जल की करौती कौन ले आयेगा ?" ख्वाजा सुल्तान अली मीर बख्शी ने निवेदन किया कि, "उसका भाई फतहुल्लाह जल की करौती ले आयेगा।' हजरत ने स्वीकार न किया और कहा कि, 'वह चला जाय। मैं करौती किसी को सौप दूंगा।" तदुपरान्त तुच्छ जौहर (१३० अ) को करौती सौप दी। वह[8] थोडी दूर गया था कि उसने सोचा कि "यदि किसी सवक को करौती सौंप दी गई तो ईश्वर ही को ज्ञात है कि मुझे पुन प्राप्त हो या न हो।" यह सोचकर लज्जित होकर रात्रि मे लौट आया। जब तुच्छ जौहर को करौती प्रदान की गई तो उसने निवेदन किया कि, "हे हजरत ! फकीर आबदार-खाने मे रहे या आफ्ताब खाने में ?" आदेश हुआ कि, "तू आफ्तावखाने

१ च एवं छ मे 'मेहतर सवाकी रिकाबदार', ज मे 'मेहतर सकाई रिकाबदार'। ऊपर 'सबीह' लिखा गया है।
२ च, छ एव ज में 'फस्ल अव्वल'।
३ च, छ एव ज में 'तरदी बेग खा'।
४ च, छ एव ज में 'मीर मुशी अशरफ खा'।
५ च, [illegible] एव ज में 'शिहाबुद्दीन खा'।
६ च, एव छ में 'फरहत खा दारोगये तोशा खाना', ज में 'फरहत खा दारोगये तूशक खाना'।
७ च एव छ में 'हरिया', ज में, 'नूरभाई'।
८ हरिया।

में रह, किन्तु पानी पीने का एक कूजा[1], एक चीनी का प्याला और करौती अपने पास रख। जल का कूजा बिना मुहर के मत छोड। रात्रि में करौती को खाली मत रख। जब पीने के लिये जल लाये तो चीनी के प्याले से पिला। सवार होने के समय करौती लेकर सवार हो।" हजरत पादशाह ने फकीर जौहर को इस प्रकार समझाया। जब हरिया रात में लौट आया तो कूच के समय हरिया, फकीर जौहर के पास करौती माँगने आया। इस कारण कि मनुष्य के विषय में प्रसिद्ध है कि वह भूल (१३० ब) एवं त्रुटियों का संग्रह है भूलकर करौती हरिया को दे दी। जब सवारी के समय हजरत पादशाह ने हरिया के हाथ में करौती देखी तो वे बडे रुष्ट हुए। जब तहारत के लिए उतरे तो जौहर के मुह पर दो तमाचे मारे। उन्हे उसके प्रति जो दया तथा कृपा थी उसके कारण इतने ही पर क्षमा कर दिया और कहा कि, मैंने तुझे जो सेवा सौपी, वह तूने उसे फिर दे दी।"

संक्षेप मे, जो व्यक्ति जालधर की ओर नियुक्त हुए थे, उन्होंने सतलज नदी माछीवारा पर पार की और सरहिन्द पहुँचे। ततार खा कासी का जो खजाना तथा धन सम्पत्ति थी[2] उसे नष्ट भ्रष्ट कर दिया। हजरत पादशाह स्वय कलानूर तदुपरान्त पातान नामक परगने में पहुँचे। कुछ दिन तक वहाँ पडाव किया।

शाह अबुल मआली तथा हजरत पादशाह ने मिलकर निश्चय किया कि उस पर्वत मे प्रवेश करें[3] किन्तु अमीर लोगो ने स्वीकार न किया। वे हजरत पादशाह से इस विषय में निवेदन

१ एक प्रकार की बोतल जिसमें जल गिराने के लिये करारे मुह की गर्दन होती है।

२ च, छ एवं ज में —"जिसका मूल्य एक करोड था"।

३ च, [illegible] एवं ज —"एक दिन एक सेवक, जिसे हजरत पादशाह ने खाने खानाँ बैरमखा के पास भेजा था, लौटकर सम्मानित सेवा मे आ रहा था। बटाला के मार्ग में उसने कुछ गायें तथा भैंसें छीन लीं। उन्हें वह ला रहा था। गवारों का एक समूह उनमें से कुछ छीन ले गया। जब यह घटना उनके सम्मानित कानों तक पहुँचाई गई तो उन्होंने कहा कि 'क्योंकि हम हिन्दुस्तान में यहा वालों की सुव्यवस्था हेतु आये हैं, अत यह आवश्यक होगा कि उन्हें दंड दिया जाय।' इस कारण मुहम्मद कुली बरलास, हैदर बेग सुल्तान आख्ता बेगी को आदेश दिया कि वे उस ग्राम पर आक्रमण करें। तुच्छ दास के भी हृदय में आया कि दास को भी आदेश होता तो बडा अच्छा था। उस उदार पादशाह ने आदेश दिया कि 'तू भी जा और उस समूह से कह दे कि जब वे उस ग्राम में पहुँच जायें तो सब प्रथम उस ग्राम से होते हुये निकल जायें फिर लौट कर आक्रमण करें।' इन लोगो ने आदेशानुसार आक्रमण किया और उन ग्रामों के सरदारों की हत्या करा दी। अधिकांश नर नारियों को बन्दी बना लिया। एक घर में कुछ घोडियाँ थीं। मेरे पहुँचने के पूर्व एक मुगुल उनके बायें कान काट कर लौट आया। दास को इसकी सूचना न थी। उस व्यक्ति ने वहा न बताया। फकीर उन्हें बडे परिश्रम से ले गया। प्रातःकाल हजरत की सेवा में पहुँचा। उसने (मुगुल ने) न्याय की याचना की। दास ने कहा, 'मैं इन्हें बडे परिश्रम से लाया हूँ।' उसने कहा, 'मैं ने उनके बायें कान काट लिये हैं' और अपने जेब के थैले से निकाल कर (दिखाया)। हजरत पादशाह ने दास से कहा, 'अभी तक तू सैनिक नहीं बन सका है। यदि लूट-मार में कोई १०० अथवा उससे अधिक मवेशी प्राप्त करता है, तो वह सबको तो पकडकर ला नहीं सकता। सैनिक की परिभाषा में यही है कि वह जिनके दायें कान काट लेता है, वे उसी के हो जाते हैं।' दास ने तस्लीम की और कहा, 'हजरत अब मैं सिपाही हो गया। उसके दायें कान काटे हैं।' उन्होंने पूछा, 'कहाँ है जिसने काटा है?' दास ने अपनी ओर संकेत किया। क्योंकि वे दास के प्रति अत्यधिक कृपा रखते थे अत उन्होंने आदेश दिया, 'तुम दोनों मिलकर बाट लो।'" (च पृ० ११७ ब ११८ अ, छ : पृ० १०० ब १०१ अ, ज पृ० १२६ अ-१२६ ब)।

(१३१ अ) नहीं कर सकते थे किन्तु तुच्छ दास जौहर ने यह बात स्वीकार करके हज़रत पादशाह से निवेदन किया कि, "क्या हज़रत पादशाह यही उचित समझते हैं कि पर्वत में प्रवेश किया जाय?" हज़रत ने कहा कि, 'तेरी क्या इच्छा है और तू क्या कहता है?" दास जौहर ने निवेदन किया कि, "इस समय कार्य अधिक है, जो कुछ हुक्म हो।" हज़रत पादशाह ने कहा कि, "बहुत अच्छा। हम लाहौर की ओर प्रस्थान करेंगे।" अन्त में यही निश्चय हुआ और निरन्तर यात्रा करते हुए लाहौर की ओर रवाना हुए। लाहौर से दस कुरोह पर तप्पा वहरी[1] था, वहाँ पड़ाव किया। लाहौर के प्रतिष्ठित लोग, सैयिद, मख्दूमुल मुल्क मुल्ला शेख अब्दुल्लाह[2], मियाँ हाजी मधी एवं क़ाज़ी लोग तथा लाहौर के समस्त निवासी हज़रत पादशाह के दर्शन हेतु पहुँचे। मियाँ हाजी मेंधी ने कहलाया कि, 'हममें तथा मख्दूमुल मुल्क में झगड़ा है, हम लोग एक स्थान पर दर्शन द्वारा सम्मानित न होंगे।' हज़रत पादशाह ने कहा कि मैं तुम लोगों में संधि कराने आया हूँ, (१३१ ब) ताकि तुम लोगों में प्रेम और निष्ठा बढ़े।" अन्त में यह निश्चय हुआ कि सर्व प्रथम मख्दूमुल मुल्क हज़रत पादशाह से भेंट करे, तदुपरान्त मियाँ हाजी मेंधी। जब मख्दूमुल मुल्क ने अपने सम्मानित साथियों सहित हज़रत पादशाह से भेंट की तो हज़रत पादशाह ने भेंट के उपरान्त कहा कि, "दोनों पक्षों की यह भेंट याकूब तथा यूसुफ की भेंट के समान है। स्तुति करता हूँ मैं उस ईश्वर की जो दोनों लोकों का रब है।" यह कहकर रोटी तथा शरबत मँगवाया और साथ साथ खाया पिया तथा कुशलता के लिए फ़ातेहा पढ़ा। तदुपरान्त मियाँ हाजी मेंधी ने आकर हज़रत पादशाह से भेंट की। जिस प्रकार मख्दूमुल मुल्क से भेंट हुई थी, उनसे भी हुई। रोटी तथा शरबत मँगवाया। हाजी मेंधी ने कहा, "मैं किसी अन्य के घर भोजन नहीं करता।" हज़रत पादशाह ने कहा कि, 'गेहूँ काबुल से अपने खेतों से आया है। शरबत काबुल के हिन्दुओं[3] के धन से तैयार हुआ है, जो जिज़िये के रूप में लिया गया है। अभी तक हिन्दुस्तान में हाथ नहीं (१३२ अ) लगाया और न तहसील वसूल हुई है, अतः इस भोजन में कोई सन्देह नहीं किया जा सकता।" हाजी मेंधी ने उत्तर दिया कि, 'संदेह का कोई स्थान नहीं किन्तु मैं प्रायः किसी के घर भोजन नहीं करता।" हज़रत पादशाह ने कहा कि 'धर्म परायणता की दृष्टि से जो नियम तथा प्रथा थी, मैंने उसका पालन किया, अब आपको अधिकार है।"

तदुपरान्त वहाँ से प्रस्थान करके वे लाहौर पहुँचे[4] और निश्चय हुआ कि आसपास के

१ च एव छ में 'वहरा तप्पा वहरहरी,' ज में 'वहरा तप्पा करहरी'।
२ च, छ एव ज में 'मख्दूमुल मुल्क शेख अब्दुल्लाह सुल्तानुल इस्लाम'।
३ च, छ एव ज में 'जुहदान (यहूदी)'।
४ च, छ एव ज में — लाहौर पहुँचे और बहुत समय तक वहाँ ठहरे रहे। एक दिन प्रसिद्ध सूफ़ी शेख मूसा शाहनगर सम्मानित दरबार में उपस्थित हुये और हज़रत पादशाह ने उनकी ओर विशेष रूप से ध्यान दिया। इससे पूर्व शेख ने अपने पुत्र को काबुल इस भविष्य-वाणी के साथ भेजा था कि, 'हिन्द आपका है। आप आ जायें।' इस दरबार में अपनी पगड़ी अपने सिर से खोल कर पश्चिम दिशा की ओर उछाली और हज़रत पादशाह के शुभ चरणों के जूते ऊँचे आने पर क़िब्ला के समक्ष रक्खे। हज़रत पादशाह इस की भाषा से परिचित न थे। बैरम खाँ से कहा, 'मैं जो कुछ कहूँ उसे शेख से पूछ और जो कुछ इस वर्ष मुझे समझा।' पगड़ी इत्यादि उछालने का कारण पूछा। उसने कहा, 'हमारे पादशाह के आदमियों की संख्या बड़ी कम है। अपनी पगड़ी को ऊपर उछालने का उद्देश्य यह था कि मैं ईश्वर से चाहता था कि विलायत के द्वार (ज में दर)

परगनों में विशेष सेवकों को तहसील के लिए नियुक्त किया जाय। फ़क़ीर जौहर को हैबतपुर पत्ती[1] परगने में नियुक्त किया गया। याकूब[2] जर्री क़लम ने निवेदन किया कि, "जौहर को हैबतपुर पत्ती का परगना दिया गया है, उसे बिदा किया जाय।" हज़रत पादशाह ने मुझसे संकेत में कहा "हे दास! तूने सुना है, एक मुग़ल शाही लश्कर से निकला और एक जत्त[3] के दो कम्मल छीन लिए और कहा, 'हे मर्दक[4]! मैं तहसील के लिए आया हूँ।" इस संकेत के सुनने के उपरान्त दास जौहर ने कहा, 'हे पादशाह! निस्सन्देह ऐसा ही है, किन्तु यदि ईश्वर ने चाहा तो हज़रत पादशाह (१३२ ब) के आशीर्वाद और इस कारण कि उसने आपके पवित्र हाथ धुलाये हैं[5] कार्य भली भांति एवं सच्चाई से होगा।" हज़रत पादशाह ने फिर कहा, 'नेकी का बदला नेकी है, बुराई के लिए दण्ड एवं चेतावनी है[6]।"

जब जौहर उस परगने में पहुँचा तो उसने देखा कि अफ़ग़ान मवालियों[7] ने अपने परिवार एवं असबाब को महमूक के बदले में अफ़ग़ानों के पास गिरो रख दिया है और मुचलिग[8] ले लिया है। अब वे किसी प्रकार मुक्त नहीं हो सकते। दास जौहर को अफ़ग़ानों का अनाज खत्तियों इत्यादि जहां मिला, उसने निकलवा कर बिकवा दिया। बक्कालों को धन देकर मवालियों के परिवार एवं असबाब को मुक्त करा दिया। यहाँ तक कि सभी मुक्त हो गए। जब इस घटना का हज़रत पादशाह को पता चला तो उन्होंने बहुत पसन्द किया और कहा, "मैंने कहा था कि नेकी का बदला नेकी होगा[9]।"

खुल जायें और ऊपर से लोग सम्मानित सेवा में आ जायें। ऊँचाई पर जूते रखने का उद्देश्य यह है कि उनका सम्मान बुलन्द हो और पीछे की ओर रखने का उद्देश्य यह है कि वह सम्मानित शरा के मार्ग पर दृढ़ रहें।" (च: पृ० ११६ अ ११६ ब, छ पृ० १०१ अ, ज पृ० १३० ब १३१ अ)।

१ ज में केवल 'हैबतपुर'।

२ च, छ एवं ज में 'ख़्वाजा याकूब ज़र्री क़लम,'

३ जाट, च छ एवं ज में 'रमाया'।

४ अधम, नीच, कमीन।

५ च, छ एवं ज में—"पाँव धुलाये हैं"।

६ च, छ एवं ज में यह भी है—"रोगी का दुःख एवं शर्बत अपने प्रयोग के भोजन एवं शर्बत में से दिया"।

७ कृषकों।

८ नक़द धन, रुपया।

९ च, छ, एवं ज में—"और कहा कि 'रैयत को आश्रय प्रदान करना, समृद्धि एवं शांति का साधन एवं परमावश्यक है। बादशाहों से क़यामत में इसी विषय में प्रश्न किये जायेंगे।' यह शेर इस विषय में पढ़े :

शेर

'जब तू हर समय एक चमार के कष्टों का भार सहन करता रहेगा,
तो भंडार तेरे लिए कष्ट उठाता रहेगा।
यदि एक चमार को हानि होगी,
तो दोनों लोकों के कार्य में हानि होगी।
यदि किसान अपने जौ की खेती की देख भाल करता है,
तो अपने खलिहान को नये जौ से परिपूर्ण पाता है,
यदि माली अपने बाग़ को फलों से लदा हुआ देखता है,
वह एक बार फल पाता है न कि हर बार।

(१३३ अ) उन्होने इस तुच्छ को सम्मानित करके आदेश दिया कि "ततार खा लोदी[1] का खजाना एव विलायत फकीर जौहर को प्रदान कर दिया[2]।"

[अब मैं उमर खा काकर से युद्ध का हाल लिखता हूँ। वह चाहता था कि १२,००० अश्वारोहियो सहित मुल्तान की ओर से चुहनी एव फीरोजपुर के परगने से होता हुआ अफगानो के पास हिन्दुस्तान पहुँच जाय।]

(३१)

शाह अबुल मआली की उमर खां काकर पर विजय[3]

जब हजरत पादशाह को यह समाचार प्राप्त हुए कि मुहम्मद उमर खा काकर चुहनी[4] तथा फीरोजपुर परगने के मध्य में होकर व्याह नदी को अपने बाये हाथ की तरफ करके हिन्दुस्तान की ओर जा रहा है, तो हजरत पादशाह ने अपने अमीरा से परामर्श किया। यह निश्चय हुआ कि इस समय उससे युद्ध करना अच्छा है[5]। हजरत पादशाह ने शाह अबुल मआली, मुहम्मद कुली बरलास[6], खाने जमां बहादुर खा, अल्लाह कुली अन्दरावी एव कुछ अमीर तथा वीर जवान[7] उमर खा काकर के मुकाबले में नियुक्त किये।

वे लोग निरन्तर यात्रा करते हुए चुहनी नामक परगने में पहुँचे। वहां से उमर खा काकर बारह हजार अश्वारोहियों[8] की सेना लेकर पहुँचा। हजरत पादशाह के अमीरो के साथ केवल

रैयत का आधार धन सम्पत्ति पर है,
माल असबाब से राज्य आबाद रहता है।
रैयत जब अपनी बुनियाद में विघ्न पडते देखती है,
तो फिर राज्य की नींव किस प्रकार दृढ रह सकती है'

१ च एव छ में 'ततार खा नासी'।

२ च, छ, एव ज में —"वह समस्त पजाब एव सरकार मुल्तान में थी"।

३ च एवं छ के अनुसार फस्ल २
"शाह अबुल मआली का उमर खा काकर से पजाब में युद्ध, उसकी विजय, उमर खा की बडी शोचनीय दशा में पराजय"।
ज में शीर्षक का स्थान छूटा हुआ है।

४ कुछ पोथियों में 'जूही'।

५ च, छ एव ज में —"हजरत पादशाह अभी लाहौर में ही थे। आस पास से समाचार प्राप्त होते रहते थे। एक दिन समाचार प्राप्त हुये कि उमर खा काकर १२ हजार सशस्त्र अश्वारोहियों सहित मुल्तान से आ गया है। उसका इरादा है कि चुहनी तथा फीरोजपुर परगने से होता हुआ, व्याह नदी को अपने बायें हाथ पर करके, सीधा दहली चला जाय और सिकन्दर सूर से, जिसने अपने नाम का खुत्बा पढ़वा दिया तथा सिक्का चलवा दिया है, मिल जाये"। (च पृ० १२०ब छ पृ० १०३अ ज पृ० १३२ब)।

६ क, ख, ग एवं घ में 'बलास'।

७ च, छ एवं ज में '७०० अश्वारोही'।

८ च, छ एवं ज में 'बहुत बडी सेना'।

सात सौ अश्वारोही थे। उन लोगो में युद्ध हुआ। अफगानो ने शाह अबुल मआली पर (१३३ब) आक्रमण किया। अबुल मआली के सिर पर तलवार की छाया के अतिरिक्त कुछ अन्य न था। वे शाह अबुल मआली को घोडे से गिराने ही वाले थे कि अमीर सादान शाह मुग़ुल यक्का तब्ल बाज, जो मुरीदो में से था, और कुछ कूरची लोग जिन्हें हजरत शाह तहमास्प सफवी ने हजरत पादशाह के साथ नियुक्त किया था तब्ल के चमडे को फाड कर खोद के स्थान पर सिर पर रखकर तक्बीर[1] का नारा लगाते हुए, रण-क्षेत्र में शाह अबुल मआली के पास पहुँच गये और उमर खा काकर पर आक्रमण करके उसे घोडे से गिरा दिया। अफगान लोग पराजित हो गए। वे बन्दी बना लिये गए। यह सोचना चाहिए कि कहाँ सात सौ अश्वारोही और कहाँ बारह हजार अश्वारोही, किन्तु इस कारण कि ईश्वर की कृपा उनकी सहायता कर रही थी, उन्होंने अपने साहस एव हजरत पादशाह के प्रताप से विजय प्राप्त कर ली। हजरत पादशाह को परमेश्वर ने जो विजयें प्रदान की उनमें प्रथम यह थी। शाह अबुल मआली तथा अमीरो ने हजरत पादशाह के पास प्रार्थनापत्र एव विजय पत्र भेजे कि, "यह महान् (१३४अ) विजय मुबारक हो।" हजरत पादशाह ने उत्तर में उन लोगो को अत्यधिक प्रोत्साहन दिया और लिखा कि, "यदि ईश्वर ने चाहा तो उनके मसब एव उनकी श्रेणिया में उनकी निष्ठा के अनुसार वृद्धि कर दी जायेगी। वे सतुष्ट रहे। अफगान बंदियो को एकत्र करके ले आयें।" इसी बीच में फरहाद खा[2] ने निवेदन किया कि, 'हजरत पादशाह ने ईश्वर से कोई प्रतिज्ञा की थी?" आदेश हुआ कि, "बताओ, मुझे याद नही।" फरहाद खा ने निवेदन किया कि, "हजरत पादशाह ने प्रतिज्ञा की थी कि बन्दी न बनायेंगे[3]।" हजरत पादशाह का स्मरण हो आया और कहा कि, "जैसा कि कहता है ऐसा ही है" और कहा, "तू जाकर समस्त बन्दियों को मुक्त करा दे।"

(३२)

माछीवारा नामक स्थान पर विजय[4]

जब फरहाद खा[5] को बंदियो का मुक्त कराने का आदेश हुआ तो इसी बीच मे खाने खाना (१३४ब) बैरम खा, सिकन्दर खा ऊजबेक, लाल बेग, शाह कुली नारजी एव अन्य अमीरो के प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुए कि "ततार खा कासी, हबीब खा[6] सुरतानी एव मुबारक खा का भाई फतह खा और उनके सरीखे अन्य अमीर जो सरहिन्द मे नियुक्त कर दिए गए थे, उन सबने मिलकर

१ अल्लाहो अकबर का नारा।

२ च, छ एवं ज में फरहत खा'।

३ च, छ एवं ज में—'इस देश की ओर प्रस्थान के समय आपने प्रतिज्ञा की थी कि 'मैं बन्दी न बनाऊँगा। यदि कोई बन्दी हुआ तो उसे मुक्त कर दूगा।" (च पृ० १२१ ब, छ पृ० १०२ ब, ज पृ० १३३ ब)।

४ च एव छ में—"खाने खाना बैरम खा का ततार खां कासी के समस्त अमीरों एव अफगान सेना से माचवारा नामक स्थान पर युद्ध, उनकी पराजय, तथा रणक्षेत्र से बडी शोचनीय दशा में पलायन"; ज में— "शाह अबुल मआली का उमर खां काकर से पजाब में युद्ध, उसकी विजय, उमर खा की शोचनीय दशा में पराजय"। च, छ एव ज के अनुसार फस्ल ३।

५ च, छ एव ज के अनुसार 'फरहत खा'।

६ ज में 'हैबत खां'।

आक्रमण कर दिया है[1]। जो आदेश हो, उसका पालन किया जाय।" आदेश हुआ कि, "तुम्हे ज्ञात है कि शाह अबुल मआली ने, जो बालक है और जिसने कभी युद्ध न किया था, ७०० अश्वारोहियो से उमर खा काकर के बारह हजार अश्वारोहियो को पराजित कर दिया। तुम लोग जो मेरे पास प्रार्थना-पत्र लिखते हो तो तुम्हारे हृदय में क्या है, क्या युद्ध करना नही चाहते?" यह फरमान पाते ही अमीरो की वीरता एव पौरुष मे वृद्धि हो गई। अफगानो ने अभिमानवश सतलज नदी तथा माछीवारा नदी के मध्य मे पार करने के लिये स्थान निश्चित कर लिये थे और यह निश्चय किया था कि जब पादशाह की सेना वापस हो तो किसी को निकल कर भागने न दे[2]। ईश्वर को अभिमान (१३५ अ) एव गुरूर अच्छा नही लगता। परमेश्वर की अपार कृपा तथा दया ने उस समय हज़रत पादशाह की सहायता की। जिस घाट का अफगानो ने निश्चित किया था उसी से हज़रत पादशाह के अमीरो ने नदी पार कर ली। जिन ग्रामो मे अफगानो ने आग लगा दी थी उन्ही के प्रकाश से उन अफगानो को बाण तथा बन्दूक का निशाना बनाया। अफगान लोग पराजित हो गए[3]। हज़रत पादशाह के सौभाग्य तथा प्रताप से माछीवारा अफगानो से विजय कर लिया गया और विजयी सेना ने सरहिन्द में पडाव किया। (हज़रत पादशाह को) समाचार प्राप्त हुए कि हज़रत पादशाह के अमीरो का लश्कर विजय तथा सफलता प्राप्त करके सरहिन्द पहुँच गया।

हज़रत पादशाह का फतहाबाद सरहिन्द की ओर प्रस्थान, सिकन्दर सूर से युद्ध और परमेश्वर की कृपा से विजय[4]

उन्होने वहाँ से हज़रत पादशाह को प्रार्थना-पत्र भेजा कि 'सिकन्दर सूर ने इस ओर प्रस्थान किया है, अब जो आदेश हो।" अमीरो के प्रार्थना पत्र हज़रत पादशाह को पुन प्राप्त हुए कि 'सिकन्दर सूर सत्तर हज़ार अश्वारोहियो को लेकर निकट आ गया है[5]। दास सात अथवा आठ (१३५ ब) सौ अश्वारोहियो सहित उसका मुकाबला नही कर सकते है, या तो हज़रत पादशाह स्वय आ जाय या इन दासो को अपने पास बुला ले[6]।" इस प्रार्थना-पत्र के पहुँचते ही हज़रत पादशाह

१ च, [redacted] एव ज में इसके आगे इस प्रकार है —"हम सतलज नदी (ज में 'आबे सतलज माछीवारा') को सामने किये बैठे है।"

२ च, छ एव ज में —"सतलज नदी में उन्होंने नदी पार करने के चिह्न निश्चित कर लिये थे। उनका विचार था कि जब वे लोग भागेंगे तो इन्हीं घाटों से गुजरेंगे। इनमें से किसी को भी कुशलतापूर्वक न गुजरने दें।" (च पृ० १२२ ब, छ पृ० १०४ व, ज पृ० १३४ ब)।

३ च, छ एव ज में —"इस भाग्यशाली सेना में से भीर हज़ार शहीद हुआ।"

४ च, छ एव ज के अनुसार फस्ल ४।

५ च, छ एव ज में —"इसी बीच में ख़ान खाना तथा उस सेना का, जो सरहिन्द में ठहरी थी, प्रार्थना पत्र प्राप्त हुआ कि अभागा सिकन्दर सूर, जिसने अपने आपको मुकुट एव सिंहासन का अधिकारी समझ लिया है, लगभग १ लाख अश्वारोहियों सहित, देहली से आकर निकट पहुँच गया है"।

६ च, छ एवं ज में —"ताकि भाग्य शाली रिकाब के अधीन उस पिशाच को नष्ट एव पराजित करने के लिये उत्तम सेवायें सम्पन्न कर सकें अन्यथा कयामत में ही दर्शन होंगे"।

आदेश भेजा कि "दो दिन[१] प्रतीक्षा करो मैं पहुँच रहा हूँ।" तदुपरान्त हजरत पादशाह निरन्तर त्रा करते हुए माछीवारा[२] पहुँचे और तत्काल माछीवारा पार[३] करके वीरता, पौरुष, प्रताप एवं फलता सहित सरहिन्द[४] पहुँचे। उस ओर से सिकन्दर सूर ने पहुँच कर सामने पडाव[५] कर दिया। सकन्दर सूर ने कहा कि, "हुमायूँ पादशाह के साहस, वीरता एवं मस्तिष्क को धन्य है कि पाँच जार[६] अश्वारोहियों को लेकर मेरे सत्तर हजार[७] अश्वारोहियों का मुकाबला करने के लिये बराबर शिविर लगा दिए हैं।"

मीर्ज़ा[८] शाह सुल्तान अमीन, बाबूस खाँ फौजदार[९], फरहाद खाँ हाकिम[१०], तातार खाँ उर्फ़ ख्वाजा ताहिर मुहम्मद लाहौर का दीवान[११] एवं तुच्छ दास जौहर आफ़ताबची पंजाब एवं मुल्तान सरकार के खज़ाची नियुक्त हुए थे[१२]। इसी बीच में महमन्द एवं खलील अफ़गानों के ४०० अश्वारोही (१३६ अ) कुत्सित विचारों से लाहौर के बल्दे के मजग एवं फर्मुली कबीलों को नष्ट-भ्रष्ट करके वहाँ से निकले और चाहते थे कि सेना एकत्र करके उस प्रदेश में अत्यधिक विघ्न डालें। यह समाचार इस विलायत के हाकिमों को जिनका ऊपर उल्लेख हो चुका है प्राप्त हुए। वे उपेक्षा करना चाहते थे[१३]। दास जौहर ने निवेदन किया कि यह उत्पात ठीक नहीं है। दास जौहर तथा फरहाद खाँ ने परामर्श किया कि "अभी हजरत पादशाह शत्रुओं से युद्ध कर रहे हैं, यदि यह अफवाह अफ़गानों को प्राप्त हो जायेगी तो उनका साहस बहुत बढ़ जायेगा। यह अच्छा नहीं है। मीर्ज़ा शाह सुल्तान अमीन एवं बाबूस खाँ दोनों सरदार बहाना बनाना चाहते हैं। वे कहेंगे कि हमारा कोई

१ च, छ एवं ज में 'दो-तीन दिन'।
२ च एवं छ में 'माचवारा', ज में 'माछवारा'।
३ च, छ एवं ज में —"और तत्काल सतलज नदी पार की"।
४ च एवं छ में 'फतहाबाद सरहिन्द', ज में 'फतहाबाद'।
५ च, छ एवं ज में —"सामने अपितु तनाव से तनाव (खेमे की डोरी) मिलाकर पडाव कर दिया"।
६ च एवं छ में —"ई मेकदार (कुल इतने ही)", ज में भी '५०००'।
७ च, छ एवं ज में '६० हज़ार'।
८ च एवं ज में —'सक्षेप में जिस समय वे बल्दये लाहौर (लाहौर कस्बे) से सिकन्दर सूर का मुकाबला करने के लिए बल्दये सरहिन्द की ओर रवाना हुये, तो एक सेना को उचित मसबों द्वारा सुशोभित करके उस बल्द में छोड़ दिया।" ज में —"जब अकबर बादशाहे आलम पनाह को बल्दये लाहौर में छोड कर, सिकन्दर सूर का मुकाबला करने के लिये सरहिन्द की ओर रवाना हुये"।
९ च, छ में 'बाबूस बेग फौजदार', ज में 'बाबूस बेग खाँ फौजदार'।
१० च, छ एवं ज में 'फरहत खाँ हाकिम'।
११ च में 'ख्वाजा ताहिर मुहम्मद खाँ तातार दीवान', छ में 'ख्वाजा मुहम्मद ताहिर व तातार खाँ दीवान', ज में इसे भली भाँति स्पष्ट कर दिया गया है —"ख्वाजा ताहिर मुहम्मद दीवान लाहौर जो बाद में तातार खाँ की उपाधि द्वारा सुशोभित हुआ।"
१२ च, छ एवं ज में —"बन्दये खाकसार सरकार पंजाब एवं सरकार मुल्तान की खज़ीनादारी के लिये नियुक्त था।"
१३ च छ एवं ज में वाक्य अधिक स्पष्ट रूप से इस प्रकार समाप्त किया गया है —"प्रत्येक उन विलायतों के प्रबंधों की देख भाल करता था"।

स्वामी नही है। अत जो कुछ भी हो हम ही (जौहर तथा फ़रहाद[१]) मुकाबला करें कारण कि लोग कहेंगे कि दासो द्वारा इतना कार्य भी न हुआ। कुछ ईर्ष्यालु यही चाहते हैं कि हमारी भर्त्सना की जाय।" फरहाद खां[२] ने कहा कि, "क्या करना चाहिये?" दास जौहर ने कहा, "अपने अश्वारोहियो को नियुक्त कर देना चाहिये। हजरत पादशाह का प्रताप उन्नति पर है, ईश्वर ने चाहा तो विजय प्राप्त कर लेंगे।" जलाल[३] सम्बली बडा ही उत्तम तथा चतुर जवान था। उसे हिरावल अथवा आगे (१३६ ब) के दल मे रक्खा गया तथा महतर सबीह को भी साथ कर दिया गया। फरहाद खा तथा जौहर ने लगभग ४०० अश्वारोही एकत्र किए। एक पहर रात्रि बाकी थी कि जगी साज[४] पार करके शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए प्रात काल पत्ता बहरी[५] में अफगान लोगो के समक्ष पहुँच गए। सब लोगो ने एक बार आक्रमण कर दिया। जलाल सम्बली अनुभवी सैनिक था। अपने आदमियो को वहाँ से रवाना करके एक ओर ले गया। वे लोग असावधान हो गए। वे फरहाद खा का नाम लेते हुए अफगानो पर टूट पडे और चिल्लाने लगे कि फरहाद खा आ गया। हजरत पादशाह के उन्नतशील भाग्य एव प्रताप के कारण अफगान पराजित हो गए तथा विजय प्राप्त कर ली। अफगानो के पाँच सरदार बन्दी बना लिये गए। इस घटना के विषय में हजरत पादशाह को (१३७ अ) प्रार्थना-पत्र भेजा गया। जब हजरत पादशाह को ज्ञात हुआ कि दासो ने विजय प्राप्त कर ली तो उन्होने कहा कि, "यदि ईश्वर ने चाहा तो मैं भी विजय प्राप्त करूँगा।" प्रोत्साहनयुक्त फरमान भेजे कि, "यह बडा उचित एव उत्तम कार्य हुआ। राजभक्ति ऐसी ही होनी चाहिये। जिन अफगानो को तुमने बन्दी बनाया है, उन्हे अपने पास रक्खो, विजयोपरान्त जो उचित होगा, आदेश दिया जायेगा।"

(३३)

हजरत पादशाह की सरहिन्द में विजय एव सिकन्दर सूर की पराजय[६]

जब हजरत पादशाह तथा सिकन्दर सूर लगभग डेढ मास तक सरहिन्द के समक्ष पडाव किए रहे[७] तो हजरत पादशाह ने कहा कि, 'मैं सिकन्दर सूर से उसी प्रकार युद्ध करूँगा जिस प्रकार सुल्तान बहादुर से गुजरात मे युद्ध किया था। ऐसा करना चाहिये कि उनके पास अनाज एव रसद न

१ यह अनुवाद च, छ एव ज के आधार पर किया गया है। क, ख, ग एवं घ में यह वाक्य स्पष्ट नहीं।
२ च एवं ज में हर स्थान पर 'फ़रहत खा'।
३ च, छ एव ज में —"हमारे समूह में जलाल . ।"
४ यह नाम स्पष्ट नहीं। च, छ एवं ज में इसका उल्लेख नहीं।
५ च, एव छ में, 'महरी', ज में 'तप्पा महरी'।
६ च, छ एव ज में इस स्थान पर पृथक् फस्ल नहीं है।
७ च, छ एव ज में —"इस बीच में दोनों ओर से वीर जवान एव शक्तिशाली भाग्यशाली आपस में युद्ध करते थे। अन्ततोगत्वा हजरत पादशाह ने अपने बुद्धिमान् अमीरों से परामर्श किया और कहा. "।

पहुँचने पाये।" ऐसा ही किया गया। तरदी बेग खा को इस कार्य हेतु नियुक्त किया गया। तरदी बेग खा ने रसद का मार्ग रोक लिया और सिकन्दर सूर के भाई[1] की हत्या कर दी तथा उसके (१३७ ब) मरातिब ले आया। विजयी सेना की यह दूसरी विजय तथा सफलता थी।

तदुपरान्त जब शुभ मुहूर्त एव सफलता का समय आया तो उन्होने सेनाये युद्ध के लिए सुसज्जित की[2]। सर्व प्रथम हजरत पादशाह का मुक़द्दमा दूसरे खाने खाना बैरम खा की तीसरे शाह अबुल मआली एव तरदी बेग खा की सेना, चौथे सिकन्दर खा ऊजबेक, अल्लाह कुली अन्दराबी एव अन्य अमीरो की सेनाये युद्ध के लिए बढी। क्योकि खानेखानाँ बैरम खा की सेना की सख्या अधिक थी और वह बडी दृढ थी, अत सिकन्दर सूर ने यह समझा कि जो कुछ है यही सेना है। सिकन्दर ने स्वय खाने खानाँ की सेना पर आक्रमण किया। खानेखानाँ बैरम खा ने देखा कि सिकन्दर बडा ही शक्तिशाली है, अत वह अपनी प्रतिरक्षा हेतु किले में पहुँच गया। हज़रत पादशाह जा-नमाज पर बैठे हुए ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे[3] कि खाने खाना के यह समाचार प्राप्त हुए। हजरत पादशाह ने कहा कि, "कोई पता लगाये कि खाने खाना जीवित है या मारा गया।" गुप्तचरों ने समाचार पहुँचाया कि, "खाने खाना जीवित है और युक्ति द्वारा सिकन्दर सूर से युद्ध कर रहा है।" हजरत पादशाह ने शाह अबुल मआली तथा तरदी बेग खा को आदेश दिया कि, 'क्योकि सिकन्दर सूर (१३८ अ) खाने खानाँ का पीछा करते हुए आगे बढ गया है अत तुम लोग उसके पीछे पहुँच कर उन पर आक्रमण करो।" शाह अबुल मआली तथा तरदी बेग खा ने ऐसा ही किया और सिकन्दर सूर के पीछे पहुँच कर आक्रमण कर दिया। परमेश्वर पलक झपकाते ही भिखारियो को पादशाह बना देता है और पादशाह को भिखारी। हजरत शाहशाह के प्रताप एव सौभाग्य की उषा का उदय हुआ और उनकी विजयी सेना को विजय तथा सफलता प्राप्त हा गई।

१ च, छ एव ज में —"सिकन्दर सूर ने अपने भाई काला पहाड को (तरदी बेग खा) से युद्ध करने के लिये भेजा। तरदी बेग खा ने उस पहाड की कमर पकड कर पटक दिया और उस तन पहाडी आधी को तिनका समझ कर नष्ट भ्रष्ट कर दिया। उसके मरातिब, पताका एव नक्कारा, सम्मानित दृष्टि के समक्ष उपस्थित किये। जब काला पहाड की हत्या एव उसकी पराजय के समाचार शत्रुओ के कानों में पहुँचे तो वह हताश हो गया। उसने शोक प्रकट करते हुये कहा 'कि टूटे हुये बाजुओं से मैं क्या कर सकूगा?" (च पृ० १२६ अ, [illegible] पृ० १०७ अ, ज पृ० १३८ ब)।

२ च एव छ में —"दूसरे दिन शुभ मुहूर्त एवं समय पर आदेश हुआ कि सेना की पक्तियां सुसज्जित की जायें। एक खाने खाना बैरम खा, दूसरी शाह अबुल मआली एव तरदी बेग खा, तीसरी सिकन्दर खा ऊजबेक, अली कुली खा एव समस्त अमीरों की। उस ओर से सिकन्दर सूर पर्वत रूपी हाथियों एव चींटियों तथा टिड्डियों से बडी सेना लेकर दृष्टिगत हुआ"। ज में भी इसी प्रकार है। च, छ, ज किसी में हजरत पादशाह के मुक़द्दमे का उल्लेख नहीं। इसका यह अर्थ नहीं कि हुमायू स्वय मुकद्दमे अथवा अग्र भाग में था अपितु मुक़द्दमे की सेना से अभिप्राय है। आगे हुमायू को ईश्वर से प्रार्थना करते हुये दिखाया गया है।

३ च, छ एव ज में —"उस समय ख्वाजा मुअज्जम सुल्तान ने पहुँच कर खाने खाना के युद्ध के विषय में निवेदन किया। हजरत पादशाह ने पूछा, 'उसके जीवित होने अथवा न होने के विषय में क्या समाचार है?' उसने निवेदन किया कि 'निश्चय रूप से कुछ ज्ञात नहीं।' तदुपरान्त लोगों ने बताया कि,'वह जीवित है और उसी प्रकार दृढ है।' आदेश हुआ कि, 'क्योंकि शत्रु उसके सामने है, शाह अबुल मआली एव तरदी बेग खा पीछे से पहुँच कर आक्रमण करें'। उन्होंने ऐसा ही किया और पीछे से पहुँच गये।'

शेर

'तुझे सर्वदा विजय एवं सौभाग्य प्राप्त रहे,
मुहम्मद अलैहिस्सलाम के आशीर्वाद से।'

सिकन्दर सूर को दुर्भाग्यवश पराजय हुई[1]। वह पर्वत की ओर चल दिया।

कतआ

'पर्वत की ओर निकल जाती है,
नक्शवी! बादशाहों के प्रति सर्वदा शुभ-कामनायें किया कर।
संसार के कार्य उनपर अवलम्बित रहते हैं,
बादशाहों के जीवन के लिए शुभ-कामनायें किया कर।'

क़तआ

'बादशाहों के जीवन द्वारा उपकार ही उपकार है,
नक्शवी! युग हानि पहुँचाता रहता है।
दुःख एवं प्रसन्नता दोनों ही जुड़वाँ प्रदान की,
यदि किसी को वह दुःख देता है।
प्रसन्नता भी वह उसे प्रदान करेगा,
नक्शवी! किसी का दुःख नष्ट नहीं होता।'

क़तआ

'मिट्टी के नीचे से वह (ईश्वर) ख़जाना दिलाता है।

१ च, छ एवं ज में —"जब हज़रत पादशाह इस सुखद समाचार को सुनकर कि इतना शक्तिशाली शत्रु जो चींटियों एवं टिड्डियों से भी अधिक सेना लेकर आया था, हमारे अमीरों द्वारा पराजित हो गया तो उन्होंने तत्काल सिज्दा किया। . संक्षेप में, रक्त बहाने वाले वीरों ने इतनी तलवारें चलाई कि मुर्दों के ढेर के ढेर लग गये। इतने अधिक लोग बन्दी बना लिए गए कि अधिकांश की सरदारों ने हत्या कर दी.. अनुभवी सिपहसालारों एवं प्रसिद्ध विजेताओं ने पहुँच कर बधाई दी। हज़रत पादशाह ने प्रत्येक को शाही कृपाओं द्वारा सम्मानित किया एवं सभा आयोजित कराई। प्रत्येक को उसकी श्रेणी के अनुसार दान प्रदान किया। योग्य कवियों ने कवितायें एवं तारीख़ें प्रस्तुत की और उन्हें इनाम प्रदान हुये।

शेर

"बद हुमायूँ! सुलेमान सरीखे ऐश्वर्य वाला बादशाह,
जिसके चरणों से संसार को शोभा प्राप्त हुई।
जब उसने हिन्दुस्तान विजय किया,
आकाश सरीखे राज सिंहासन पर स्थान ग्रहण किया।
उसके तारीख़ का मान मैंने बुद्धि से पूछा,
बुद्धि ने मुझसे कहा, 'हिन्द रा बेगिरिफ़्त (हिन्द विजय किया)'।"

(च पृ० १२७ अ)।

(१३८ ब) सेवा की डाली फल से शून्य नही होती।
कोई भी दुख प्रसन्नता से पृथक् नही।
जब ईश्वर कृपा करता है।'

उस शाहे आलमियान का राजधानी देहली की ओर प्रस्थान, शाह अबुल मआली का उस दुष्ट शत्रु के पीछे नियुक्त होना[1]

जब ईश्वर ने अपनी कृपा तथा दया से हजरत पादशाह को विजय प्रदान कर दी तो वे स्वय अपनी सेना लेकर राजधानी देहली की ओर रवाना हुए और सिकन्दर सूर भागकर पर्वतो मे प्रविष्ट हो गया। हजरत पादशाह ने शाह अबुल मआली को आदेश दिया कि, "तुम जालधर में रहो और सिकन्दर सूर से युद्ध करने तथा उसे पराजित करने का प्रयत्न करते रहो।" किन्तु शाह अबुल मआली जालधर में न ठहरा और लाहौर की ओर चला गया। हजरत पादशाह के पदाधिकारी लाहौर में थे। उन्होने निश्चय किया कि, "लाहौर का किला न प्रदान करें" किन्तु उन्हे सफलता न हुई। शाह अबुल मआली किले के भीतर प्रविष्ट हो गया।[2] हजरत पादशाह का जौहर को (१३९ अ) आदेश था कि, "तू पर्वत के आँचल मे, काबुल तथा कन्धार एव चारो ओर के स्थानो के प्रति सावधान रहना और जो कुछ तुझे ज्ञात हो मुझे सूचना देते रहना और स्वय एक सेना सहित उस समाचार के अनुसार तैयार एव सावधान रहना।" इस कारण तुच्छ जौहर ने सिकन्दर सूर की ओर गुप्तचर भेजे थे। वे समाचार लाये कि, "जब अफगानो की पराजय हो गई और हबीब खा मुल्तानी बमरी[3] मे पर्वत में प्रविष्ट हो गया तो सिकन्दर सूर भी उस पर्वत में प्रविष्ट हुआ और हबीब खा तथा उसके भाई की हत्या कर दी। उसका समस्त खजाना जिसमें पाँच करोड की सम्पत्ति थी, सिकन्दर को प्राप्त हो गई। जहाँ कहीं बिना किसी सामान के तथा भूखे तर्कशबद[4] मिलते उन्हे धन देकर सेना एकत्र करके मानकोट एव बमरी के किले के आस पास रहने लगा। यह समाचार तुच्छ जौहर ने शाह अबुल मआली को पहुँचाये[5]। शाह अबुल मआली सावधान हो गया। वह हृदय से इस बात को सुनने लगा कि, "मैं क्या कहता हूँ।"। तुच्छ जौहर ने जो बात थी उसके विषय में निवेदन किया। शाह अबुल मआली ने उन अमीरो से, जिन्हे हजरत पादशाह (१३९ ब) ने उसकी सहायता हेतु नियुक्त किया था, उदाहरणार्थ मुहम्मद कुली बरलास[6], इस्माईल

१ च, छ एव ज के अनुसार फस्ल ५।

२ च, [illegible] एव ज में —"वह उस परगने में न ठहरा। निरन्तर यात्रा करता हुआ बल्दये लाहौर की ओर रवाना हुआ। जो सेना हजरत पादशाह के आदेशानुसार उस बल्दे में थी उसने निश्चय किया कि, 'क्योंकि वह आदेश के बिना इधर आया है अत किले में प्रविष्ट न होने दें।' क्योंकि उन्हें ज्ञात था कि वह हजरत का बहुत बडा विश्वासपात्र है अत वे इस प्रस्ताव पर दृढ न रह सके।" (च. पृ० १२७ ब—१२८ अ, छ पृ० १०८ ब, ज पृ० १४० अ)।

३ कुछ पोथियों में 'मरी'।

४ सैनिक।

५ च, छ एवं ज में —"शाह शाह को सन्तुष्ट करने के लिये उन्हीं गुप्तचरों को उसके पास ले गया। उन लोगों ने जो सत्य बात थी उसका उल्लेख उसके सामने किया।"

६ क, ख, ग एवं घ में 'बरलास'।

मुल्तान दूल्दी, ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद, मुसाहिब बेग एवं फरहाद खां[1] से, जो अपने आमिलो के साथ लाहौर मे थे, परामर्श किया। सबने यही उचित बताया कि सिकन्दर सूर से युद्ध किया जाय। तुच्छ जौहर ने निवेदन किया कि, 'ऐसा कभी न करें। अराबा के बिना सिकन्दर सूर का मुकाबला न करे।" शाह अबुल मआली ने कहा कि, ऐसा ही होगा, बिना अराबे के युद्ध न करूँगा[2]।' अराबा तैयार करने का प्रयत्न करने लगा। जो लट्ठे लाहौर के किले के बुर्ज के लिए लाए गए थे, उनसे अराबे बनाना प्रारम्भ करा दिया। क्योंकि लोहा एकत्र करने में अधिक समय लगा जा रहा था, अत मैंने कहा कि जजीर के जितने कुडे मौजूद हैं, वही काफी होगे। अन्य कार्य कच्चे चमडे से चल जायगा। वह लोहे से मजबूत होता है[3]। इस समय इतने अराबे बना लेने चाहिये जिनसे पूरा लश्कर घेरा जा सके।" हजरत पादशाह के युद्ध की सफलता हेतु फकीर जौहर ने ३०० धनुष, ३०० दस्ते[4] बाण, ३०० भाले, २५० ढालें ५० मन बन्दूक की बारूद, ३९ मन सीसा एव एक[5] जीवा शाह अबल मआली की सेवा मे प्रस्तुत किए।

शाह अबुल मआली बडा प्रसन्न हुआ और उसने तुच्छ जौहर का अत्यधिक प्रोत्साहन देकर (१४० अ) कहा कि 'हम तेरा मूल्य नही समझते। जब हजरत पादशाह के समक्ष जायगे तो देखना तेरी कैसी सिफारिश करेंगे।" तदुपरान्त अस्त्र-शस्त्र, जिनका पूर्व मे उल्लेख हो चुका है सैनिको को बाँटे गए। लगभग पाँच सौ मुगुल प्यादे शाह अबुल मआली के पास विलायत से आये थे। जौहर से पूछा कि, "इन प्यादो का किस प्रकार प्रबन्ध करूँ ?' फकीर जौहर ने निवेदन किया कि, 'प्रत्येक को एक धनुष और एक दस्ता बाण तथा दो सौ तन्के दे देना चाहिए और कह देना चाहिये कि, तुम्हारे तथा सिकन्दर के मध्य म एक मास से अधिक युद्ध न चलेगा, इसके लिए एक मास की व्यवस्था पर्याप्त है।' शाह अबुल मआली ने पूँछा कि 'दो सौ तन्के से प्रत्येक का काम किस प्रकार (१४० ब) चल जायेगा ?" जौहर ने निवेदन किया कि, 'प्रत्येक को एक व्यक्ति अस्त्र शस्त्र ले जाने के लिए चाहिए, उसका वेतन चालीस तन्के मासिक होगा। दो तन्के प्रति दिन के हिसाब से (मुगुल की) खूराक के होगे। इस प्रकार एक मास के लिए ६० तन्को की आवश्यकता होगी। ४० और ६० सौ तन्के होने हैं। शेष १०० तन्के से वस्त्र इत्यादि का प्रबन्ध हो जायेगा।" शाह अबुल मआली को यह बात पसन्द आई और उसने प्रत्येक व्यक्ति के लिए इतना ही निश्चित कर दिया और प्रत्येक को प्रदान कर दिया। वह निरन्तर यात्रा करता हुआ सिकन्दर सूर के विरुद्ध रवाना हुआ। दो[6] कुरोह की यात्रा के उपरान्त वह प्रत्येक मंजिल पर अराबा तथा किला दृढ कर लेता था यहाँ

१ च, छ एव ज में —"बुलाकर परामर्श किया"।

२ च, छ एव ज में —"ख्वाजा ताहिर मुहम्मद दीवान ने पूँछा, 'कितने अराबे तैयार कराने होंगे ? मैंने कहा, इस समय लगभग १०० २०० अराबे तैयार करा लिए जायें। फिर देखना चाहिये कि अन्य कितने आवश्यक होंगे ?" (च पृ० १२८ब, छ - पृ० १०६ब, ज पृ० १४१अ)

३ इस वाक्य का अनुवाद च, छ एव ज के आधार पर किया गया है।

४ मुट्ठे।

५ च एव छ में '१००'।

६ च एव छ में '१० कुरोह'।

(१३८ ब) सेवा की डाली फल से शून्य नहीं होती।
कोई भी दुख प्रसन्नता से पृथक् नहीं।
जब ईश्वर कृपा करता है।'

उस शाहे आलमियान का राजधानी देहली की ओर प्रस्थान, शाह अबुल मआली का उस दुष्ट शत्रु के पीछे नियुक्त होना[1]

जब ईश्वर ने अपनी कृपा तथा दया से हजरत पादशाह को विजय प्रदान कर दी तो वे स्वय अपनी सेना लेकर राजधानी देहली की ओर रवाना हुए और सिकन्दर सूर भागकर पर्वतो में प्रविष्ट हो गया। हजरत पादशाह ने शाह अबुल मआली को आदेश दिया कि, "तुम जालधर में रहो और सिकन्दर सूर से युद्ध करने तथा उसे पराजित करने का प्रयत्न करते रहो।" किन्तु शाह अबुल मआली जालधर में न ठहरा और लाहौर की ओर चला गया। हजरत पादशाह के पदाधिकारी लाहौर में थे। उन्होंने निश्चय किया कि, 'लाहौर का किला न प्रदान करें ' किन्तु उन्हे सफलता न हुई। शाह अबुल मआली किले के भीतर प्रविष्ट हो गया।[2] हजरत पादशाह का जौहर को (१३९ अ) आदेश था कि, 'तू पर्वत के आँचल में, काबुल तथा कन्धार एव चारो ओर के स्थानो के प्रति सावधान रहना और जो कुछ तुझे ज्ञात हो मुझे सूचना देते रहना और स्वय एक सेना सहित उस समाचार के अनुसार तैयार एव सावधान रहना।" इस कारण तुच्छ जौहर ने सिकन्दर सूर की ओर गुप्तचर भेजे थे। वे समाचार लाये कि, 'जब अफगानो की पराजय हो गई और हबीब खा मुल्तानी बमरी[3] में पर्वत में प्रविष्ट हो गया तो सिकन्दर सूर भी उस पर्वत में प्रविष्ट हुआ और हबीब खा तथा उसके भाई की हत्या कर दी। उसका समस्त खजाना जिसमें पाँच करोड की सम्पत्ति थी, सिकन्दर को प्राप्त हो गई। जहाँ कही बिना किसी सामान के तथा भूखे तवकावद[4] मिलते उन्हे धन देकर सेना एकत्र करके मानकोट एव बमरी के किले के आस पास रहने लगा। यह समाचार तुच्छ जौहर ने शाह अबुल मआली को पहुँचाये[5]। शाह अबुल मआली सावधान हो गया। वह हृदय से इस बात को सुनने लगा कि "मैं क्या कहता हूँ।"। तुच्छ जौहर ने जो बात थी उसके विषय में निवेदन किया। शाह अबुल मआली ने उन अमीरो से, जिन्हे हजरत पादशाह (१३९ ब) ने उसकी सहायता हेतु नियुक्त किया था, उदाहरणार्थ मुहम्मद कुली बरलास[6], इस्माईल

१ च, [illegible] एव ज के अनुसार फस्ल ५।

२ च, छ एव ज में —"वह उस परगने [illegible] न ठहरा। निरन्तर यात्रा करता हुआ कस्बये लाहौर की ओर रवाना हुआ। जो सेना हजरत पादशाह के आदेशानुसार उस कस्बे में थी उसने निश्चय किया कि, 'क्योंकि वह आदेश के बिना इधर आया है अत किले में प्रविष्ट न होने दें।' क्योंकि उन्हें ज्ञात था कि वह हजरत का बहुत बड़ा विश्वासपात्र है अत वे इस प्रस्ताव पर दृढ न रह सके।" (च पृ० १२७ ब–१२८ अ, छ पृ० १०८ ब, [illegible] पृ० १४० अ)।

३ कुछ पोथियों में 'मरी'।

४ सैनिक।

५ च, [illegible] एव ज में —"दास शाह को सतुष्ट करने के लिये उन्हीं गुप्तचरों को उसके पास ले गया। उन लोगों ने जो सत्य बात थी उसका उल्लेख उसके सामने किया।"

६ क, ख, ग एव घ में 'बरास'।

सुल्तान दूल्दी, ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद, मुसाहिब बेग एवं फरहाद ख़ा[1] से, जो अपने आमिलो के साथ लाहौर में थे, परामर्श किया। सबने यही उचित बताया कि सिकन्दर सूर से युद्ध किया जाय। तुच्छ जौहर ने निवेदन किया कि, 'ऐसा कभी न करे। अराबा के बिना सिकन्दर सूर का मुकाबला न करे।" शाह अबुल मआली ने कहा कि, "ऐसा ही होगा, बिना अराबे के युद्ध न करूँगा[2]।' अराबा तैयार करने का प्रयत्न करने लगा। जो लट्ठे लाहौर के किले के बुर्ज के लिए लाए गए थे, उनसे अराबे बनाना प्रारम्भ करा दिया। क्योकि लोहा एकत्र करने में अधिक समय लगा जा रहा था, अत मैंने कहा कि जजीर के जितने कुडे मौजूद हैं, वही काफी होगे। अन्य कार्य कच्चे चमडे से चल जायगा। वह लोहे से मजबूत होता है[3]। इस समय इतने अराबे बना लेने चाहिये जिनसे पूरा लश्कर घेरा जा सके।" हजरत पादशाह के युद्ध की सफलता हेतु फकीर जौहर ने ३०० धनुष, ३०० दस्ते[4] बाण, ३०० भाले, २५० ढाले, ५० मन बन्दूक की बारूद, ३९ मन सीसा एवं एक[5] जीवा शाह अबुल मआली की सेवा में प्रस्तुत किए।

शाह अबुल मआली बडा प्रसन्न हुआ और उसने तुच्छ जौहर का अत्यधिक प्रोत्साहन देकर (१४० अ) कहा कि "हम तेरा मूल्य नही समझते। जब हजरत पादशाह के समक्ष जायेगे तो देखना तेरी कैसी सिफारिश करेगे।" तदुपरान्त अस्त्र-शस्त्र, जिसका पूर्व में उल्लेख हो चुका है, सैनिको का बाँटे गए। लगभग पाँच सौ मुगुल प्यादे शाह अबुल मआली के पास विलायत से आये थे। जौहर से पूछा कि, "इन प्यादो का किस प्रकार प्रबन्ध करूँ?" फकीर जौहर ने निवेदन किया कि, "प्रत्येक को एक धनुष और एक दस्ता बाण तथा दो सौ तन्के दे देना चाहिए और कह देना चाहिये कि, तुम्हारे तथा सिकन्दर के मध्य में एक मास से अधिक युद्ध न चलेगा', इनके लिए एक मास की व्यवस्था पर्याप्त है।" शाह अबुल मआली ने पूँछा कि "दो सौ तन्के से प्रत्येक का काम किस प्रकार (१४० ब) चल जायेगा?" जौहर ने निवेदन किया कि, 'प्रत्येक को एक व्यक्ति अस्त्र-शस्त्र ले जाने के लिए चाहिए, उसका वेतन चालीस तन्के मासिक होगा। दो तन्के प्रति दिन के हिसाब से (मुगुल की) खूराक के होंगे। इस प्रकार एक मास के लिए ६० तन्को की आवश्यकता होगी। ४० और ६० सौ तन्के होते हैं। शेष १०० तन्के से वस्त्र इत्यादि का प्रबन्ध हो जायेगा।" शाह अबुल मआली को यह बात पसन्द आई और उसने प्रत्येक व्यक्ति के लिए इतना ही निश्चित कर दिया और *प्रत्येक को प्रदान कर दिया। वह निरन्तर यात्रा करता हुआ सिकन्दर* सूर के विरुद्ध रवाना हुआ। दो[6] कुरोह की यात्रा के उपरान्त वह प्रत्येक मंजिल पर अराबा तथा किला दृढ कर लेता था यहाँ

१ च, छ एवं ज में —"बुलाकर परामर्श किया"।
२ च, छ एवं ज में —"ख्वाजा ताहिर मुहम्मद दीवान ने पूँछा, 'कितने अराबे तैयार कराने होंगे?' मैंने कहा, इस समय लगभग १०० २०० अराबे तैयार करा लिए जायें। फिर देखना चाहिये कि अन्य कितने आवश्यक होंगे?" (च: पृ० १२८ब, छ. पृ० १०६ब, ज पृ० १४१अ)
३ इस वाक्य का अनुवाद च, छ एवं ज के आधार पर किया गया है।
४ मुट्ठे।
५ च एवं छ में '१००'।
६ च एवं छ में '१० कुरोह'।

तक कि सिकन्दर सूर पर्वत में प्रविष्ट हो गया।

इससे पूर्व जब शाह अबुल मआली लाहौर में था उसकी असावधानी एवं उपेक्षा की बातों और अभिमान के कारण लोग उसकी ओर से बुरे विचार रखने लगे। कुछ लोगों तथा लाहौर के (१४१ अ) आमिलों ने यह बात हज़रत पादशाह तक पहुँचाई कि "हज़रत या तो स्वयं इस ओर आ जायें और या कोई सेना नियुक्त कर दें ताकि शाह अबुल मआली हज़रत पादशाह की आज्ञाकारी हो जायें[1]।" तदनुसार हज़रत पादशाह ने शाहज़ादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर ख़ाने ख़ानाँ बैरम ख़ाँ तथा कुछ अन्य अमीरों[2] को नियुक्त किया। वे सरहिन्द तक पहुँचे थे कि मुहम्मद कुली बरलास, ख़्वाजा जलालुद्दीन महमूद, फ़रहाद[3] ख़ाँ, ताहिर मुहम्मद मीर ख़ुर्द[4] तथा महतर तिमुर नरवती, जो शाह अबुल मआली के अधीन नियुक्त किए गए थे, करावली के बहाने से बाहर निकले और शाहज़ादये आलमियान तथा ख़ाने ख़ानाँ की सेवा में उपस्थित हो गए[5]। शाह अबुल मआली सिकन्दर सूर को जालधर के आस पास से पर्वत में पहुँचा चुका था। यदि यह अमीर पृथक् न हुए होते तो शाह अबुल मआली सिकन्दर सूर को पराजित कर देता। संक्षेप में, जो अमीर शाह अबुल मआली से पृथक् हुए थे और हज़रत पादशाह एवं ख़ाने ख़ानाँ से मिल गए थे उनमें से प्रत्येक के विषय (१४१ ब) में शाह अबुल मआली ने हज़रत पादशाह को सविस्तार सूचना भेजी और लिखा कि "सिकन्दर सूर को हमने पर्वत के आँचल में पराजित कर दिया था और उस पर्वत में ऐसी सफलता प्राप्त कर लेने वाले थे जिससे सभी लाभान्वित होते किन्तु जिन अमीरों का उल्लेख हो चुका है वे करावली के बहाने से शाहज़ादये आलमियान और ख़ाने ख़ानाँ से मिल गए। यदि यह लोग इस अवसर पर विश्वासघात न करते तो पता चल जाता कि मैं सिकन्दर सूर के प्रति क्या करता। कुछ सैनिकों द्वारा जो मेरे साथ थे यह सम्भव न हो सका कि वे पर्वत में प्रविष्ट हों। सब छिन्न भिन्न हो गए और वे मुक़ाबला न कर सके।

शाह अबुल मआली ने एक प्रार्थनापत्र शाहज़ादये आलमियान एवं ख़ानेख़ाना को लिखा कि, 'देश को हमने शत्रुओं से ख़ाली करा लिया, अब देर करने का क्या कारण है? यह उचित होगा कि आप लोग शीघ्रातिशीघ्र पहुँच जायें ताकि सिकन्दर को पर्वत के आँचल में पराजित कर दें। हम लाहौर आ रहे हैं।' ख़ाने ख़ाना ने हज़रत पादशाह की सेवा में प्रार्थना पत्र भेजा कि

१ च, छ एवं ज में —'किन्तु इसी बीच में जब कि शाह (अबुल मआली) हज़रत की सेवा से पृथक् रहा उसके स्वभाव में परिवर्तन आ गया। इस कारण लाहौर के आमिलों (पदाधिकारियों) एवं शुभेच्छु दास ने जो समाचार पहुँचाने के लिये नियुक्त थे, शाह (अबुल मआली) के विषय में हज़रत पादशाह को लिखा कि वह कभी कभी कम अवस्था एवं जवानी के प्रारम्भ, अभिमान, वीरता एवं असावधानी के कारण अपनी सीमा के बाहर पाँव निकालता रहता है। यदि आप इस ओर नहीं पधार सकते तो वास्तविक विषय की चिन्ता करके एक अन्य सेना नियुक्त कर और उसे अपने पास बुला लें"। (च पृ० १२६ब, छ पृ० ११०अ ज पृ० १४२अ)।

२ च, छ में —"ख़ानों एवं सुल्तानों को"।

३ च, छ एवं ज में "फ़रहत ख़ाँ।

४ च, छ एवं ज में — ख़्वाजा ताहिर मुहम्मद वल्द मीर ख़ुर्द।

५ च, छ एवं ज में इसके आगे इस प्रकार है —"यदि यह समूह उस समय पृथक् न हो जाता तो वह शत्रु को पराजित कर देता। इस कारण शाह ने प्रार्थना पत्र भेजा "।

'हम सरहिन्द के भू-भाग मे पहुँच गये है, और शाह अबुल मआली ने सिकन्दर को पर्वत के आँचल में (१४२ अ) भगा दिया है, यदि ईश्वर ने चाहा तो हम पंजाब पहुँच जायेंगे और शाह अबुल मआली संसार का शरण प्रदान करने वाले दरबार मे उपस्थित हो जायगा।" जब शाह अबुल मआली का पत्र दरबार में पहुँचा तो हज़रत पादशाह ने उसका उत्तर भेजा कि, "उस सम्मानित पुत्र का प्रार्थनापत्र प्राप्त हुआ। उन मूर्खों की कृतघ्नता के विषय में जो कुछ लिखा है उसका ज्ञान प्राप्त हुआ। यदि ईश्वर ने चाहा तो जब वे उपस्थित होंगे तो उनसे पूँछताँछ की जायेगी और प्रत्येक को उसके अपराध-अनुसार दंड दिया जायेगा, तुम इस ओर चले आओ[1]।" शाहज़ादये आलमियान एवं खाने खानाँ ने शाह अबुल मआली के पत्र के उत्तर में लिखा कि, तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। जो कुछ (१४२ ब) लिखा था, ज्ञात हुआ। तुम कुशलतापूर्वक इस ओर चले आओ और पादशाह से भेंट करो। हम शीघ्र उस क्षेत्र में पहुँच जायेंगे।"

हज़रत पादशाह ने खाने खानाँ को उत्तर भेजा, "यारे चोली वफ़ादार जाँ सिपार[2] बैरम खाँ सिपहसालार फ़र्जन्द को ज्ञात हो कि सम्मानित पुत्र शाह अबुल मआली का प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ कि देश को शत्रुओं से खाली करा लिया। शीघ्र क्यों नहीं पहुँच जाते।"

जब शाह अबुल मआली लाहौर पहुँच गया तो उसी समय बन्द[3] अली कूरबेगी नामक खाने खानाँ के दूत ने[4] पहुँच कर कहा, "आप लाहौर अकारण आ गए, हज़रत पादशाह की ओर रवाना हो जाइए।" तदुपरान्त अबुल मआली ने कहा कि "अमीरों को बुलवाओ।" इस्माईल सुल्तान दूल्दी ने[5] कहा कि, "हम १४-१५ कुरोह की यात्रा करके आये हैं, थके हैं, शाम का समय हो गया है, (१४३ अ) बादल घिरे हुए हैं और वर्षा होने वाली है। यदि कुशलता रही तो प्रातःकाल[6] परामर्श करके रवाना होंगे।" शाह अबुल मआली का वकील मौलाना[7] ख्वाजा कश्मीरी उपस्थित था। उसने इस्माईल सुल्तान से कहा कि, 'बन्द अली किसका मेहमान होगा?" शाह अबुल मआली ने कहा कि, 'मेहतर जौहर का मेहमान होगा।" तदनुसार तुच्छ जौहर बन्द अली को अपने घर ले गया और आतिथ्य का प्रबन्ध किया। हज़रत रसूल के सदके तथा हज़रत पादशाह के प्रताप से समस्त वस्तुएँ उपस्थित थीं। उचित रूप से आतिथ्य किया। शाह अबुल मआली ने प्रातःकाल लाहौर से निकल कर दौलतख़ाने के नीचे पड़ाव किया[8]।

१ च, छ एवं ज में —"हमें तुम्हारे दर्शन की बड़ी अभिलाषा है"।
२ स्वामी भक्त एवं प्राण न्योछावर करने वाले घनिष्ठ मित्र।
३ सम्भवतः बन्दे अली।
४ च, छ में —"सरहिन्द से पहुँच कर।"
५ च, छ एवं ज में —'जो उसका अभीष्ट उमरा था'।
६ च, छ एवं ज में —"प्रातःकाल परामर्श करके जो स्थान निश्चित होगा, उस ओर प्रस्थान करेंगे और जो स्थान उचित होगा, उस ओर रवाना होंगे।" (च पृ० १३०ब, छ पृ० १११अ, ज पृ० १४४अ)।
७ च, छ एवं ज में —'मुल्ला'।
८ च एवं छ में —'बर बालाये बावली ए-दौलत खाँ लोदी फ़ुरूद आमद (दौलत खाँ लोदी की बावली पर पड़ाव किया), ज में —"बर पाये दौलत खाँ फ़ुरूद आमदा (दौलत खाँ के नीचे पड़ाव किया)", क, ख, ग एवं घ में —"दर पाये दौलतख़ाना फ़ुरूद आमदन्द (दौलतख़ाने के नीचे पड़ाव किया)"।

(३४)

हजरत जन्नत आशियानी का निधन एवं हजरत जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह गाजी का सिंहासनारोहण[1]

शाह अबुल मआली दौलतखाने के नीचे पड़ाव करके दो दिन तक ठहरा रहा। तदु-(१८३ ब) परान्त निरन्तर यात्रा करता हुआ कलानूर पहुँचा। इस ओर से शाहजादये आलमियान, खाने खाना तथा अमीरों का एक दल भी पहुँच गया। सब लोग एकत्र हो गए। उन्हीं अशुभ दिनों में सुना गया कि हजरत (पादशाह) ने मौत के साकी से "प्रत्येक व्यक्ति को मौत का स्वाद चखना है[2]" का शरबत पिया तथा परलोक-गामी हो गए। इससे पता चलता है कि माँगे हुए अस्तित्व की स्थायित्व एवं अस्थाई अवस्था का कोई मूल्य नहीं। जो कोई जीवन का वस्त्र धारण करता है वह मृत्यु का प्याला भी पीता है। सभी को इस मार्ग पर चलना है।

शेर

"जो पैदा होता है उसे विवश होकर पीना पड़ता है,
संसार के प्याले से, 'सभी वस्तुएँ नश्वर हैं' का पेय।"

(१८४ अ) जिस वृक्ष में फल निकलेंगे वह अन्त में अपमान की धूल में मिल जायगा। जिस पत्ते में ताज़गी एवं तरावट होगी वह काल की लू से कुम्हला जायेगा।

शेर

'संसार ने किस सरो को सींचा,
जो अत्याचार की अग्नि से नहीं सूख गया।'

हुमायूँ पादशाह की मृत्यु की तारीख की काही ने रचना की[3]।

कतआ

"हुमायूँ पादशाह वह सूर्य था,
जिसके उपकार से सभी लाभान्वित होते थे।
जब उसके राज्य के महल का उन्नति प्राप्त हुई,
उसकी अवस्था की नींव गिर पड़ी,
संसार को प्रकाश देने वाले सूर्य के समान, ऊँचाई से,
अन्त को सायंकाल की नमाज के समय पहुँचा।
लोगों के लिए संसार में अंधकार छा गया,
विशेष तथा सर्वसाधारण के कार्यों में विघ्न पड़ गया।

१ च, छ एवं ज में छठी फस्ल —"हजरत पादशाह का निधन एवं स्वर्ग वास होना।" च एवं छ में अकबर के सिंहासनारोहण के लिये पृथक अध्याय है। (अध्याय ५), ज में फस्ल ७।

२ कुरान शरीफ की आयत।

३ च, छ एवं ज में —"सूक्ष्म बूझ वाले विद्वानों एवं उत्तम कवियों ने अत्यधिक तारीखों एवं मरसियों की रचना की। उन्हीं में से मुल्ला नवेदी नीशापुरी ने इस मरसिये की रचना की।"

उसकी तारीख के लिए काही ने लिखा,
'हुमायूं पादशाह कोठे मे गिर पड़ा'।"

नि सन्देह परिवर्तनशील आकाश का यही कार्य है कि प्रत्येक मीठे (घूंट) के उपरान्त कड़ुआ (घूंट) देता है। प्रत्येक निश्चिन्तता की मध् के घूंट के बाद धिक्कार के विष की सैकड़ा बूंदे चखाता है। ईश्वर के आदेश के समक्ष किसी की कुछ नही चलती।

मिसरा

'यहाँ इसके अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं कि प्राण त्याग दे।'

सतोप के मार्ग मे कदम रखना चाहिये कारण कि सभी को अधेरी मिट्टी के नीचे अपना सिर छिपाना (१४४ व) होना है। ईश्वर सतोप एव उत्तम फल प्रदान करे (मुहम्मद एव उनकी समस्त सतान के आशीर्वाद से)।

रुबाई

'हे मौत तूने सहस्रो घर वीरान कर दिये,
अस्तित्व के ससार में प्राण नष्ट कर दिये।
जो कोई बहुमूल्य मोती ससार में आया,
ले गया तू और उसे मिट्टी के नीचे छिपा दिया।'

....[1]

हज़रत शाहज़ादये आलमियान का ख़लीफा होना[2]

जब हज़रत पादशाह सिकन्दर सूर पर विजय प्राप्त करके देहली की राजधानी में सिंहासनारूढ हुए तो उन्होंने शुभचिन्तक जौहर को पजाब सरकार तथा मुल्तान सरकार का लाहौर में खज़ाची नियुक्त कर दिया था। यह शुभचिन्तक रात दिन उनके प्रति शुभकामनायें किया करता था। अचानक परोक्ष से उसने स्वप्न में देखा कि मानो हज़रत पादशाह इस शुभचिन्तक को आदेश दे रहे हो कि एक स्थान तैयार कर। इस शुभचिन्तक ने एक ऊँचे पहाड़ पर जहाँ घास ने हरा कालीन बिछा रक्खा था, एक उत्कृष्ट बारगाह देखी। उसकी डोरियाँ समुद्र के उस पार पहुँच रही थी। जब ऐसा आश्चर्यजनक स्थान देखा तो इस शुभचिन्तक ने हज़रत पादशाह से निवेदन किया कि 'स्थान तैयार है'। आदेश हुआ कि, "जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह को वहाँ ले जाओ।" जब इस शुभचिन्तक ने हज़रत पादशाह की शुभ जिह्वा से यह शब्द सुने तो उसने अपने हृदय में सोचा कि "सर्वदा हज़रत पादशाह उन्हे मीर्ज़ा कहा करते थे, क्या इस समय उन्हे पादशाह नियुक्त कर दिया?" सक्षेप में, हज़रत शाहज़ादे को वहाँ ले जाकर हमने बैठाया। क्या देखते है कि हज़रत शाहज़ादे के शुभ हाथो में एक सफेद शाल है, कभी वे उसे लपेटते है और कभी खोलते है। इस

१ अकबर के सिंहासनारोहण के हाल का अनुवाद नहीं किया गया।
२ च एव द के अनुसार ४वा बाब (खड), ज के अनुसार ७ वीं फ़स्ल।

शुभचिन्तक ने निवेदन किया कि, "हे हजरत (शाहजादे)! आपको इस स्थान पर खेल के लिए नहीं बैठाया गया है।" इस बात पर हजरत (शाहजादे) खड़े हो गए। एक देग[1] शुभचिन्तक के हाथ में दिया और कहा कि, "इसे ले, तुझे मेरे खेल से क्या मतलब?" मैं यह देखकर जाग उठा।

इस स्वप्न के सात दिन उपरान्त परमेश्वर ने खिलाफत एवं पादशाही का मुकुट तथा सल्तनत एवं जहाँदारी का ताज मुहम्मद जलालुद्दीन अकबर पादशाह गाजी (ईश्वर उनके राज्य को उन्नति दे) के सिर पर कलानूर नामक स्थान पर ९६२ हि० (१५५५ ई०) में रक्खा। वे खिलाफत के सिंहासन पर आरूढ़ हुए। उस समय से परमेश्वर की महान् अनुकम्पा से, सौभाग्य के नक्षत्र का उदय हो रहा है। धारा के विरुद्ध एवं घृणित वस्तुओं के अधकार का राज्य में विनाश एवं खंडन हो गया। उस स्वप्न एवं उस रस्सी का, जो समुद्र को पार कर गई थी, अर्थ यह है कि ईश्वर की महान् अनुकम्पा हजरत मुहम्मद साहब के सदके एवं साहब किरान के वंश के आशीर्वाद से समस्त संसार इस पादशाह के अधीन है। तुच्छ जौहर का आश्रयदाता शाहंशाह एवं देहली का पादशाह कयामत तक जीवित रहे (आमीन या रब्बुल आलमीन)।

यह थोड़ी सी पंक्तियाँ हजरत जिल्ल सुबहानी[2], जालिसे सरीरे किशवर सितानी, वाइसे अम्न व अमानी, नूरे बागे जहाँबानी, नूरे चिरागे शबिस्तानी, समरये शजरये हदीकये दौलत व कामरानी —

पद्य

सिकन्दर सरीखा शाह, नक्षत्रों की सेना वाला,
धर्म को सहायता देने वाला संसार को शरण प्रदान करने वाला पादशाह
उसका फेन दान-पुण्य का समुद्र है,
सबके दान-पुण्य उसके दान पुण्य के समक्ष शून्य हैं।
समस्त राज्य उसकी आज्ञा के अधीन है,
उसके चौगान के घुमाव में दान, गेंद है।
अत्याचार एवं निष्ठुरता की बुनियादों का खंडन करने वाला,
नाना प्रकार की स्वामी भक्तियों एवं दान-पुण्य का सकलन।'

१ इस शब्द का अर्थ यहाँ स्पष्ट नहीं। देग का अर्थ देगची एवं तोप दोनों होता है।

२ ईश्वर की छाया, देशों को विजय करने वाले सिंहासन पर आरूढ़ होने* वाला सुख शांति का कारण, ससार के शासन प्रबन्ध के उद्यान का प्रकाश रात्रि के निवास के महल के दीपक का नूर, सौभाग्य एवं सफलता के वृक्ष का उत्तम फल।

*च छ (हुमायूं शाही) में एक खातेमा भी है —'बुद्धिमानों एवं प्रतिभाशालियों से यह बात छिपी न रहनी चाहिये कि इस लेख एवं रचना का कारण यह है कि स्वामी अकबर के दरबार का दास मेहतर जौहर दीर्घ काल से इन वकाये के संकलन में व्यस्त था। उसने यथा-शक्ति इसकी रचना का अत्यधिक प्रयत्न किया। अन्ततोगत्वा तुच्छ फकीर अल्लाह दाद सरहिन्दी को आदेश हुआ कि इस रचना को तवारीख एवं दशा (विद्वता-पूर्ण लेख) के रूप में लिखो अत मैंने अपनी योग्यता अनुसार न कि जैसा उचित था, काल चक्र की दुर्घटनाओं में ग्रस्त होने के बावजूद इसकी रचना की।' (च पृ० १३४ अ-ब, छ पृ० ११४ अ ११५) ज में केवल 'तमाम शुद तारीखे हुमायूनी' लिखा है।

तज़किरये हुमायूं व अकबर

लेखक—बायजीद ब्यात

(प्रकाशन—कलकत्ता १९४१ ई०)

प्रस्तावना

(१) यद्यपि जमशेद शरीके ऐश्वर्य वाले जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह ने आदेश दिया था कि "दरबार के दासों में जिस जिस को इतिहास लिखना आता हो वह लिखे बल्कि हजरत जन्नत आशियानी हुमायूं पादशाह के राज्यकाल के विषय में (भी जिस) किसी को कुछ याद हो तो वह उसे लिपिबद्ध करके हमारे सम्मानित नाम पर समाप्त करे[1]। इस परवाने[2] की नक़्ल शेखुल मशायख शेख अबुल्फज़ल वल्द शेख मुबारक ने तुच्छ बायजीद ब्यात तक पहुँचवाया। (२) उस समय (लेखक) बकावल बेगी था[3]। वह (बायजीद) बोलता जाता था और उपर्युक्त शेख का कातिब[4] लिखता जाता था और वह (बायजीद) बावर्चीखाने की सेवायें भी सम्पन्न करता जाता था। यद्यपि बायजीद के पास कुछ लिखा हुआ न था और वह मसवदा[5] न तैयार कर सकता था[6], फिर भी उसने ९४९ हि० (१५४२-४३ ई०) की घटनायें जो जकान[7] में हुमायूं पादशाह के

१ सम्भवत "समर्पित करने से" तात्पर्य है।

२ "ई परवाना रा", डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद (a copy of this *Firman*) किया है। डा० बनारसी प्रसाद (पृ० ७१ Allahabad University Studies, 1930)।

३ बकावल बेगी अथवा मीर बकावल, (आईने अकबरी आईने मतबख देखिये)। शाही रसोई का प्रबन्धक।

४ सचिव अथवा मुन्शी।

५ पाडुलिपि।

६ मूल में "बायजीद रा खत्ते व सवादे नबूद व मसवेदये हम न दाशित" है,

بایزید را خط و سوادی نبود و مسوده هم نداشت

ग्रंथ के सम्पादक का विचार है कि सम्भवत यह 'हज्जे व सवादे होगा' किन्तु इससे भी अभिप्राय अधिक स्पष्ट नहीं होता। यदि 'मसवद्ये हम न दाशिश्त' के स्थान पर मसवेदये हम न दाश्त' पढ़ा जाय तो इस प्रकार से अर्थ निकाला जा सकता है—'यद्यपि बायजीद ने कुछ लिखा न था और इसके पास कोई मसवदा भी न था।' बायजीद का अभिप्राय स्पष्ट रूप से यही है कारण कि आगे चलकर उसने लिखा है कि ९४९ हि० की घटना को ९९९ हि० में वृद्धावस्था में लिखने के कारण जब कि कोई नोट अथवा मसवेदा न हो भूल हो सकती है जिसके लिये उसने क्षमा याचना की है डा० बनारसी प्रसाद ने इस वाक्य का अनुवाद इस प्रकार किया है। 'Since he (Baizid) has neither an aptitude nor zest (for historiography), nor does he possess any memoranda (of events)"। (डा० बनारसी प्रसाद पृ० ७१)। डा० बनारसी प्रसाद ने भी 'हज्जे' ही पढ़ा है। इस वाक्य के शब्द बड़े ही अस्पष्ट हैं।

७ आगे पृ० ७३६ देखिये। डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार 'जनाल' (पृ० ७२)

विर में घटी ९९९ हि० (१५९०-९१ ई०) मे लाहौर के कस्बे मे लिखी है। उसकी युवावस्था प्राप्त हो चुकी है तथा वृद्धावस्था आ चुकी है और उसकी स्मरण शक्ति भी अच्छी नहीं रही अन यदि कोई भूल हो जाय तो पाठकगण उसके अपराध को क्षमा कर दें। यह "मुख्तसर"[1] चार स्लो मे विभाजित है। ईश्वर ही को सत्य का ज्ञान है।

अध्याय १

हुमायूं पादशाह का भक्कर से खुरासान एव एराक की ओर प्रस्थान तथा इमाम अबुल हसन अली अर्रिजा बिन मूसियुल काज़िम के पवित्र रौजे का तवाफ तथा इस यात्रा का वर्णन

९४९ हि० (१५४२-४३ ई०) मे हजरत हुमायूं पादशाह अपने भाइयो की निष्ठुरता एव सैनिको की कृतघ्नता के कारण बक्कर से निकल कर खुरासान तथा एराक की ओर शाह (३) तहमास[2] बल्द शाह इस्माईल से भेंट के लिए रवाना हुए। मुल्तान अली मूसी रिजा[3] के पवित्र रौजे का तवाफ करके जवान मे, जो सुलतानिया तथा तबरेज के मध्य में है, शाह से भेंट की। शाह ने अपने पुत्र सुल्तान मुराद को १० हजार किजिल्बाश जागीरदार वीर अश्वारोहियो को नियुक्त किया। इन सरदारो के नाम नीचे लिखे जाते हैं। शाह ने प्रत्येक कारखाने से शाही असबाब, जो इस सम्मानित पादशाह के लिए उपयुक्त समझता था, उपहार स्वरूप भेंट किए।

पादशाह तबरेज की जो आज़रबाईजान की राजधानी है तथा हिरात की सैर करके वहाँ से लौटे और ९४९ हि०[4] (१५४२-४३ ई०) के प्रारम्भ मे मीर्ज़ा अस्करी से कन्धार और (४) ९५२ हि०[5] (१५४५ ई०) में मीर्ज़ा कामरान से काबुल छीन कर पुन सिंहासनारूढ हुए।

उन सेवको के नाम जो विजयी रिकाब के साथ साथ शाह के शिविर मे गये थे —

(१) ख्वाजा मुअज्जम नव्वाब जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा का नगाही[6],

(२) बैरम बेग

१ 'मुख्तसर' का अर्थ सक्षिप्त है। डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार "This is the title which Baizid gives to his work" (पृ० ७२)। सम्भवत बायजीद ने पुस्तक का कोई नाम न रखा था।

२ शाह तहमास्प सफ़वी।

३ इमाम अबुल हसन अली अर्रिज़ा बिन मूसी अल-काज़िम। इमामिया शिओं के ८वें इमाम।

४ ९५२ हि० (१५४५ ई०) बृहस्पतिवार २५ जमादि उल आखिर ९५२ हि० (३ सितम्बर १५४५ ई०), **अकबर नामा** भाग १ (प्रकाशित पृ० २३५, प्रस्तुत अनुवाद पृ० १८५)। मूल में तारीख स्पष्ट नहीं।

५ मूल में ९४२ हि० (१५३५-३६ ई०) जो अशुद्ध है। **अकबर नामा** के अनुसार अलाजी मास के १३वीं आज़र की रात्रि अर्थात् १२ रमजान ९५२ हि० (१७ नवम्बर १५४५ ई०) बुधवार की रात्रि में काबुल विजय हुआ। **अकबर नामा** भाग १, प्रकाशित पृ० २४४, अनुवाद पूर्व पृ० १७७)।

६ **अकबर नामा** में —"हज़रत मरियम मकानी का एक ही माता का भिन्न पिता से उत्पन्न भाई", (**अकबर नामा** भाग १ प्रकाशित पृ० २२१, अनुवाद पूर्व पृ० १६८)। नगाही का अर्थ 'मामा' हुआ।

(३) रोशन कोका[1]

(५) (४) हाजी मुहम्मद कोका[2]

(५) कोका हसन[3]

(६) मुहम्मद कासिम मौजी बख़्शी बेगी[4]

(७) मुहम्मद हैदर आख़्ता बेगी[5]

(६) (८) ख़्वाजा जलालुद्दीन महमूद ओभी[6]

(९) शेख यूसुफ जोशी[7]

(१०) मुहम्मद अली मुहतसिब[8]

(११) बाबा दोस्त बख़्शी[9]

(१२) शेख नज़र तुर्किस्तानी[10]

(१३) इबराहीम ईशक आगा[11]

(१४) सामी तूषबेगी[12]

(१५) बाबा दोस्त कूरबेगी[13]

(१६) मीर यूसुफ ख़ज़ीनादार[14]

१ देखिये **अकबर नामा भाग १** (प्रकाशन पृ० २२२, अनुवाद पूर्व पृ० १६८)।

२ अन्य ग्रन्थों में 'कोकी'। (देखिये **अकबर नामा भाग १**, प्रकाशित पृ० २२१, अनुवाद पूर्व पृ० १६८)।

३ हसन बेग, महरम कोका का भाई। (**अकबर नामा भाग १**, प्रकाशन पृ० २२२, अनुवाद पृ० १६६)।

४ मुहम्मद कासिम मौजी, बदख़्शा निवासी (बदख़्शी)। (**अकबर नामा भाग १**, प्रकाशित पृ० २२३, अनुवाद पूर्व पृ० १७०)।

५ हैदर मुहम्मद आख़्ता बेगी। (**अकबर नामा भाग १**, प्रकाशित पृष्ठ २२३, अनुवाद पूर्व पृ० १७१)।

६ उसका नाम **अकबर नामा** में जो इस सम्बन्ध में सूची दी गई है उसमें नहीं है किन्तु वह हुमायूं का बड़ा विश्वास पात्र था और इस यात्रा में उसने हुमायूं के क़न्धार से प्रस्थान से लेकर अन्त तक सभी प्रशंसनीय सेवायें सम्पन्न की। **अकबर नामा** में उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की गई है। (**अकबर नामा भाग १**, प्रकाशित पृ० २०२, अनुवाद पृ० १३५-१३७)। इसके अतिरिक्त **अकबर नामा** में अन्य स्थानों पर भी उसका उल्लेख हुआ है, (देखिये प्रकाशित **अकबर नामा** पृ० २४१, २५०, २५४, २६२, २६६, ३०७, ३०६, ३२२, ३२६, ३३०, ३६६)।

७ शेख यूसुफ चोबी। (देखिये **अकबर नामा भाग १**, प्रकाशित पृ० २२३, अनुवाद पृ० १७०)।

८ **अकबर नामा** में मुहम्मद अली मुहतसिब का कोई उल्लेख नहीं। बायज़ीद ने भी किसी अन्य स्थान पर उसकी चर्चा नहीं की।

९ देखिये **अकबर नामा भाग १**, प्रकाशित पृ० २२२, अनुवाद पूर्व पृ० १६१।

१० **अकबर नामा** में उसकी कोई चर्चा नहीं।

११ इबराहीम (बेग) ईशक आका, (**अकबर नामा भाग १**, पृ० १२३, अनुवाद पृ० १७०)।

१२ **अकबर नामा** में उसका उल्लेख नहीं। बायज़ीद ने भी किसी अन्य स्थान पर उसकी चर्चा नहीं की है।

१३ **अकबर नामा** में उसका उल्लेख नहीं। बायज़ीद ने पृ० ४२ पर उसका उल्लेख किया है।

१४ **अकबर नामा** में उसका उल्लेख नहीं। बायज़ीद ने केवल पृ० ४२ पर उसका उल्लेख और किया है।

(१७) हसन अली ईशक आगा[1]

(१८) शाह बर्दी बयावल[2]

(१९) अली दोस्त यसावल[3]

(२०) अली मुहम्मद रूदुरी[4]

(२१) मेहतर वासिल[5]

(७) (२२) मेहतर वकील[6]

(२३) मेहतर बाबर सवार[7]

(२४) कासिम कूकूलताश[8]

(२५) मक़सूद बगाली[9]

(२६) मन्नार बुखारी[10]

(२७) आरिफ तूशान[11]

(२८) अन्य छोटे छोटे बहुत से दास अमीर[12]।

हुमायूँ का ईराक की ओर प्रस्थान

जब हज़रत हुमायूँ बादशाह यक्कर (भाकर) की विलायत से निकल कर, कन्धार की ओर रवाना हुए तो शाल[13] तथा मस्तुंग के समीप समाचार प्राप्त हुए कि मीर्ज़ा अस्करी तथा सेना सहित मीर्ज़ा कामरान के आदेशानुसार बादशाह को बन्दी बनाने के उद्देश्य से कन्धार से बढ़ता चला आ रहा है। जब बादशाह दूसरी मंज़िल पर पहुँचे तो चार्ई ऊज़बेग[14] जो मीर्ज़ा अस्करी के अमीरों में

१ [illegible]। (देखिये अकबर नामा भाग १ पृ० २०३, हिन्दी अनुवाद पृ० १७०)।

२ अकबर नामा में [illegible] पृ० ४३ [illegible] किया है।

३ अकबर नामा में [illegible] उल्लेख किया है। पृ० [illegible] १०१, ११९ [illegible]।

४ अकबर नामा [illegible] पृ० १४०, १८६, ३९१ [illegible] है।

५ अकबर नामा भाग १, पृ० २०८, हिन्दी अनुवाद पृ० १७२।

६ अकबर नामा भाग १, पृ० २२८ हिन्दी अनुवाद पृ० १७१।

७ अकबर नामा भाग १, में [illegible] है।

८ अकबर नामा में [illegible] है।

९ अकबर नामा भाग १, पृ० २२२ हिन्दी अनुवाद पृ० १८०।

१० अकबर नामा में [illegible] किया है।

११ [illegible] अकबर नामा में [illegible]। (अकबर नामा भाग १, पृ० ११९, हिन्दी अनु० पृ० [illegible])।

१२ अकबर नामा भाग १, पृ० [illegible] हिन्दी अनुवाद पृ० [illegible]।

१३ अकबर नामा भाग १, [illegible] तबक़ाते अकबरी भाग [illegible] मुन्तख़बुत्तवारीख़ भाग १, [illegible] है।

१४ अकबर नामा भाग १, [illegible] हिन्दी अनुवाद पृ० [illegible]।

(८) से एक था, भागता हुआ आया और समाचार पहुँचाये कि मीर्ज़ा अस्करी पहुँच गया। पादशाह को इतना अवसर न मिल सका कि नव्वाब लोक परनाव के शाहज़ादे जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा को अपने साथ ले सकते। मीर्ज़ा की माता हज़रत मरियम मकानी, ख्वाजा मुअज्ज़म मरियम मकानी के भाई, मीर काली[1], मकसूद बंगाली, ख्वाजा अम्बर तथा कुछ अन्य सेवक बादशाह के साथ हो लिये। दूसरे क्षण में मीर्ज़ा अस्करी ने पहुँचकर शाहज़ादये आलमियान को बन्दी बना लिया और कन्धार की ओर रवाना हो गया। पादशाह खुरासान तथा एराक की ओर रवाना हुए।

हुमायूं का सीस्तान की ओर प्रस्थान

कुछ समय उपरान्त वे हल्मन्द नदी[2] को पार करके सीस्तान[3] की विलायत में एक झील[4] के तट पर जहाँ हलमन्द नदी गिरती है किन्तु यह ज्ञात नहीं कि कहा जाती है, पहुँचे[5]। उस मंजिल पर कुछ दिन तक पड़ाव किया। अहमद सुल्तान शामलू, जो कि सीस्तान का हाकिम था, अपने सहायकों सहित पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ। कई दिन तक वे मुर्ग़ाबी के शिकार हेतु, जिन्हें भाले से मारते हैं, ठहरे रहे। ज़ौरक[6] को सीस्तानी भाषा में तूती[7] कहते हैं। अहमद सुल्तान नित्यप्रति नाना प्रकार के भोजन, मिठाइयाँ, शरबत एवं मेवे का प्रबन्ध करके (इतनी अधिक मात्रा में) उपस्थित करता था कि उन लोगों के, जो पादशाह की सेवा में साथ थे, खाने (९) के उपरान्त बच रहते थे।

हुमायूं का सीस्तान में निवास

तदुपरान्त पादशाह स्वयं सीस्तान नामक कस्बे में पधारे। अहमद सुल्तान ने अपनी माता एवं स्त्रियों को हज़रत मरियम मकानी की सेवा में भेजा और अपनी समस्त धन-सम्पत्ति एवं विलायत पादशाह की सेवा में भेंट कर दी। पादशाह ने कुछ आवश्यक असबाब, एवं शागिर्द-पेशा[8] जो जल्दी से स्वीकार कर लिये और शेष सब कुछ अहमद सुल्तान को प्रदान कर दिया।

मीर्ज़ा अस्करी के सेवकों का हुमायूं की सेवा में पहुँचना

उसी मंजिल पर ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद ओमी जो उस समय मीर्ज़ा अस्करी का सेवक था और बाबा हाजी नामक किले में जो हलमन्द नदी के तट पर स्थित है वसूली[9] करता था, (उनके) समाचार पाकर अपने सेवकों सहित पादशाह की चौखट चूम कर सम्मानित हुआ।

१ डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार 'मीर कुली' (पृ० ७४)। मूल में 'काली' स्पष्ट रूप से है, (पृ० २ ब)।
२ अकबर नामा में 'हीरमन्द' (प्रकाशित पृ० २०४)। यह नाम भी विभिन्न रूप से मिलता है।
३ "Raverty speaks of Zaranj as being called the city of Sistan"—Raverty *Tabaqat e-Nasiri* p 1122 (डा० बनारसी प्रसाद पृ० ७४)।
४ हामून झील (Elphinstone's *Kabul*, डा० बनारसी प्रसाद पृ० ७४)
५ 'नुज़ूल नुमूदन्द'।
६ नौका।
७ तोता।
८ निम्न श्रेणी के सेवक।
९ 'तहसील मी कर्द (कर तथा राजस्व की वसूली)'।

(१७) हसन अली ईशक आगा[१]
(१८) शाह वली ववावल[२]
(१९) अली दोस्त यसावल[३]
(२०) अली मुहम्मद कुन्दुजी[४]
(२१) मेहतर वासिल[५]
(७) (२२) मेहतर वकीला[६]
(२३) मेहतर कोचक फतह[७]
(२४) कोमल फूक्तरार[८]
(२५) महमूद बगाली[९]
(२६) मेहतर खाली[१०]
(२७) आक़िल सुल्तान[११]
(२८) अन्य छोटे छोटे बेग एवं यक्का जवान[१२]।

हुमायूँ का एराक की ओर प्रस्थान

जब हजरत हुमायूँ पादशाह बक्कर (भक्कर) की विलायत मे निकल कर, कन्धार की ओर रवाना हुए तो शाल[१३] एव मस्तून के समीप समाचार प्राप्त हुए कि मीर्ज़ा अस्करी एक सेना सहित मीर्ज़ा कामरान के आदेशानुसार पादशाह को बन्दी बनाने के उद्देश्य से कन्धार से बढ़ता चला आ रहा है। जब पादशाह दूसरी मंज़िल पर पहुँचे तो चाई उज़बेक[१४] जो मीर्ज़ा अस्करी के अमीरों में

१ हसन अली ईशक आगा। (देखिये अकबर नामा भाग १ पृ० २२३, हिन्दी अनुवाद पृ० १७०)।
२ अकबर नामा में उनका कोई उल्लेख नहीं। बायज़ीद ने पृ० ५३ पर उसका उल्लेख किया है।
३ अकबर नामा में उसका उल्लेख नहीं। बायज़ीद ने उसका कई स्थानों पर उल्लेख किया है। (पृ० ५२, ६५, ६८, १०६, १११, १८६)। वह हसन अली कुर्द का पुत्र था।
४ अकबर नामा में उसका कोई उल्लेख नहीं। बायज़ीद ने पृ० १२०, १८१, ३६१ पर भी उसकी चर्चा की है।
५ अकबर नामा भाग १, पृ० २२४, हिन्दी अनुवाद पृ० १७२।
६ अकबर नामा भाग १, पृ० २२४, हिन्दी अनुवाद पृ० १७२।
७ अकबर नामा भाग १, में उसका उल्लेख नहीं। बायज़ीद ने भी किसी अन्य स्थान पर उसकी चर्चा नहीं की है।
८ अकबर नामा में उसका उल्लेख नहीं। बायज़ीद ने पृ० ५३ पर उसकी चर्चा की है।
९ अकबर नामा भाग १, पृ० २२२, हिन्दी अनुवाद पृ० १७०।
१० अकबर नामा में उसका उल्लेख नहीं। बायज़ीद ने पृ० १५८ पर उसका उल्लेख किया है।
११ आक़िल सुल्तान उज़बक नामक एक व्यक्ति का उल्लेख अकबर नामा में हुआ है। (अकबर नामा भाग १, पृ० २२१, हिन्दी अनुवाद पृ० १६७-१६८)।
१२ अकबर नामा भाग १, पृ० २२१-२२४, हिन्दी अनुवाद पृ० १६८-१७२। यह सूची अधिक बड़ी है।
१३ अकबर नामा भाग १, में केवल 'शाल', (प्रकाशित पृ० १९०, अनुवाद पृ० १०६)। तबक़ाते अकबरी भाग २ 'कस्बे शाल व मस्तान' (प्रकाशित कलकत्ता पृ० ५७), मुन्तख़बुत्तवारीख़ भाग १ (प्रकाशित कलकत्ता पृ० ४४२), तारीख़े शाही (प्रकाशित कलकत्ता पृ० १६८)। शाल तथा मस्तंग अधिक उचित है।
१४ अकबर नामा भाग १, 'जी बहादुर उज़बक' (प्रकाशित पृ० १९०, हिन्दी अनुवाद पृ० ११७-११८)। डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार 'जी बर्दी उज़बक' (पृ० ७२)। मूल में स्पष्ट नहीं। (इंडिया आफ़िस पृ० २३)।

(८) से एक था, भागता हुआ आया और समाचार पहुँचाये कि मीर्ज़ा अस्करी पहुँच गया। पादशाह को इतना अवसर न मिल सका कि नव्वाब लोक परलोक के शाहज़ादे जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा को अपने साथ ले सकें। मीर्ज़ा की माता हज़रत मरियम मकानी, ख्वाजा मुअज्ज़म मरियम मकानी के भाई, मीर काज़ी[1], मक्सूद बंगाली, ख्वाजा अम्बर तथा कुछ अन्य सेवक बादशाह के साथ हो लिये। दूसरे क्षण में मीर्ज़ा अस्करी ने पहुँचकर शाहज़ादये आलमियान को बन्दी बना लिया और कन्धार की ओर रवाना हो गया। पादशाह खुरासान तथा एराक की ओर रवाना हुए।

हुमायूं का सीस्तान की ओर प्रस्थान

कुछ समय उपरान्त वे हलमन्द नदी[2] को पार करके सीस्तान[3] की विलायत में एक झील[4] के तट पर, जहाँ हलमन्द नदी गिरती है, किन्तु यह ज्ञात नहीं कि कहाँ जाती है, पहुँचे[5]। उस मंज़िल पर कुछ दिन तक पड़ाव किया। अहमद सुल्तान शामलू, जो कि सीस्तान का हाकिम था, अपने सहायकों सहित पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ। कई दिन तक वे मुर्गाबी के शिकार हेतु, जिन्हें भाले से मारते हैं, ठहरे रहे। जौरक[6] को सीस्तानी भाषा में तूती[7] कहते हैं। अहमद सुल्तान नित्यप्रति नाना प्रकार के भोजन, मिठाइयाँ, शरबत एवं मेवे का प्रबन्ध करके (इतनी अधिक मात्रा में) उपस्थित करता था कि उन लोगों के, जो पादशाह की सेवा में साथ थे, खाने (९) के उपरान्त बच रहते थे।

हुमायूं का सीस्तान में निवास

तदुपरान्त पादशाह स्वयं सीस्तान नामक कस्बे में पधारे। अहमद सुल्तान ने अपनी माता एवं स्त्रियों को हज़रत मरियम मकानी की सेवा में भेजा और अपनी समस्त धन-सम्पत्ति एवं विलायत पादशाह की सेवा में भेंट कर दी। पादशाह ने कुछ आवश्यक असबाब, एवं शागिर्द-पेशा[8] जो ज़रूरी थे स्वीकार कर लिये और शेष सब कुछ अहमद सुल्तान को प्रदान कर दिया।

मीर्ज़ा अस्करी के सेवकों का हुमायूं की सेवा में पहुँचना

उसी मंज़िल पर ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद आभी, जो उस समय मीर्ज़ा अस्करी का सेवक था और बाबा हाजी नामक किले में जो हलमन्द नदी के तट पर स्थित है, वसूली[9] करता था, (उनने) समाचार पाकर अपने सेवकों सहित पादशाह की चौखट चूम कर सम्मानित हुआ।

१ डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार 'मीर वली' (पृ० ७४)। मूल में 'काज़ी' स्पष्ट रूप से है, (पृ० २ ब)।
२ अकबर नामा में 'हीरमन्द' (प्रकाशित पृ० २०४)। यह नाम भी विभिन्न रूप से मिलता है।
३ "Raverty speaks of Zaranj as being called the city of Sistan"—Raverty *Tabaqat-e-Nasiri* p 1122 (डा० बनारसी प्रसाद पृ० ७४)।
४ हामून झील (Elphinstone's *Kabul*, डा० बनारसी प्रसाद पृ० ७४)
५ 'नुज़ूल नुमूदन्द'।
६ नौका।
७ ताना।
८ निम्न श्रेणी के सेवक।
९ 'तहसील मी कर्द (कर तथा राजस्व की वसूली)'।

खच्चरा[१] की एक कतार, जिनपर उत्तम असबाब लदे हुए थे, पेशकश के रूप में भेंट की। उसे उसी मंजिल पर मीर सामान[२] नियुक्त कर दिया गया और उसके प्रति अत्यधिक कृपा एवं दया प्रदर्शित की गई।

उसी पडाव पर हाजी कोकी, जो मीर्ज़ा अस्करी के अमीरो में से था, कन्धार से भाग कर चौखट चूमने पहुँचा[३]।

हुसेन क़ुली मीर्ज़ा का आगमन

हुसेन कुली मीर्ज़ा, अहमद सुल्तान का भाई मशहद से मक्का जाने के उद्देश्य से अपनी माता एवं भाइयो से विदा होने आया था। वह पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ और कुछ पुस्तकें, जो उसके पास थी, उसने भेंट की। पादशाह को जो पुस्तके अच्छी लगी, वह उन्होंने ले लीं और शेष उसे प्रदान कर दी।

हुमायूं तथा हुसेन कुली मीर्ज़ा की वार्ता

वार्तालाप के अन्त में पादशाह ने उससे मजहब एवं मिल्लत के विषय[४] में प्रश्न किया (१०) उसने निवेदन किया कि "पाँच वर्ष से मैं मशहदे मुक़द्दस में विद्याध्ययन कर रहा हूँ और हनफी एवं शीआ फिक्ह का अध्ययन किया है। शीआ धर्म के अनुसार (ईश्वर क्षमा करे) यदि कोई असहाब[५] पर लानत[६] करता है तो इसे प्रशसनीय माना जाता है। हनफिया का कथन है कि यदि कोई लानत भेजे तो काफिर हो जाता है।" मीर्ज़ा ने कहा कि, "प्रशसा के लोभ में काफिर न बन जाना चाहिये।" पादशाह को यह बात बडी पसन्द आयी और उन्होने उसके प्रति अत्यधिक कृपा दृष्टि प्रदर्शित की। उससे अपनी सेवा मे सम्मिलित हो जाने के लिए कहा। मीर्ज़ा ने निवेदन किया कि, "यदि ईश्वर ने चाहा तो पवित्र घर[७] के दर्शन करके समुद्र के मार्ग से हिन्द अथवा काबुल में दासता का सम्मान प्राप्त करूँगा।"

हुमायूं का हिरात होते हुए शाह के पास जाने का संकल्प

क्योंकि हजरत पादशाह को वह विलायत बडी अच्छी लगने लगी थी, अत वे वहाँ कुछ दिनो तक ठहरे रहे। तदुपरान्त उन्होने अहमद सुल्तान से शाह से भेंट के विषय में परामर्श किया। उसने उत्तर दिया कि "यह उचित होगा कि फकीर आपकी सेवा मे रहे और तबसे कीलकी के मार्ग से शाह की सेवा में पहुँचा दे।" हज़रत पादशाह ने कहा कि, "आयु का कोई भरोसा नही। मैंने हेरी की अत्यधिक प्रशसा सुन रक्खी है[८]। (जो चाहता है) कि हेरी की सैर

१ अस्तर डा० बनारसी प्रसाद ने इसे 'उश्तुर (ऊंट)' पढा है, (पृ० ७६)। मूल में 'अस्तर' ही है।
२ बादशाह की व्यक्तिगत सम्पत्ति का अधीक्षक।
३ सेवकों में सम्मिलित हो गया।
४ सुन्नी शीआ मतभेद से तात्पर्य है।
५ हजरत मुहम्मद के मित्र विशेष रूप से प्रथम तीन खलीफा।
६ धिक्कार।
७ काबा।
८ हुमायूं के अमीरों का ईरान की ओर प्रस्थान के विषय में विरोध तथा अहमद सुल्तान के परामर्श का अकबर नामा में विस्तार से उल्लेख किया गया है। (अकबर नामा भाग १, पृ० २०५, हिन्दी अनुवाद पृ० १४१)

करके (शाह के) लश्कर की ओर रवाना हूँ।" क्योंकि अहमद सुल्तान हजरत (पादशाह) की इच्छानुसार ही हर काम करना चाहता था अतः उसने इस विषय में कोई आग्रह न किया।

हिरात की ओर प्रस्थान

(११) वे ऊक किले के मार्ग से हिरात की ओर रवाना हुए। जब उन लोगों ने उपर्युक्त किले के समीप पड़ाव किया तो अली सुल्तान कूची काशी तक्कू ने, जो मुहम्मद खां शरफुद्दीन ऊगली के निकटतम सम्बन्धियों में से था, हेरी में सुल्तान खुदा बन्दा[१] के अमीरों के साथ इसी मंजिल पर पादशाह की सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। उसे पादशाह के स्वागतार्थ भेजा गया था। हजरत पादशाह अहमद सुल्तान के साथ हिरात की ओर रवाना हुए। जब हजरत पादशाह के आगमन के समाचार सुल्तान मुहम्मद खुदा बन्दा[१] को प्राप्त हुए तो वह स्वयं मुहम्मद खां शरफुद्दीन ऊगली के साथ, जो उस समय मीर्जा का लला[२] था, उसके पुत्रों एवं अमीरों सहित पादशाह की भेंट के लिए रवाना हुआ। सब लोग चरण चूमने का सौभाग्य प्राप्त करके सम्मानित हुए।

हजरत पादशाह ने हेरी नामक नगर में पड़ाव किया। शाही पेशकश में से जो जो चीज हजरत पादशाह के लिए उपयुक्त थी उन्हें उनकी सेवा में प्रस्तुत किया गया। क्योंकि अहमद सुल्तान ने सीस्तान एवं मुहम्मद खां शरफुद्दीन ऊगली ने हिरात से शाह की सेवा में प्रार्थना-पत्र भेजे थे अतः उनके उत्तर में शाह का फरमान प्राप्त हुआ। २० रजब १००० हि० (२ मई १५९२ ई०) को शाह के फरमान की प्रतिलिपि (शाहनशाह अकबर) के दफातिर के दारोगा मीर मुराद जुवेनी के पास प्राप्त हुई अतः उसे मूल रूप से इस "मुख्तसर" में उद्धृत किया जाता है[३]।

हुमायूं का मशहद पहुँचना

क्योंकि पादशाह को हेरी में निवास करने की इच्छा थी, अतः वे कुछ दिन तक वहां ठहरे रहे। गायक इत्यादि जो लोग विजयी रिकाब के साथ थे, वे मशहदे मुकद्दस की ओर रवाना हो गए[४]। अहमद सुल्तान को इस कारण कि वह बहुत समय से उनकी सेवा में था, सीस्तान की ओर जाने की अनुमति दे दी और वे स्वयं (शाह के) शिविर की ओर रवाना हुए। जब वे मशहदे मुकद्दस के समीप पहुँचे तो शाह कुली सुलतान वल्द काजक बहादुर[५] इस्तजलू जो उस समय मशहद का हाकिम था सैयिदों, सर्व साधारण एवं विशेष व्यक्तियों तथा आलिमों सहित स्वागत उपरान्त हजरत पादशाह (३२) की सेवा में उपस्थित हुआ। पादशाह ने इमाम के रौज़े के दर्शन करके वहीं पड़ाव कर दिया।

१ डा० बनारसी प्रसाद ने इसे 'खुदा बन्दा' पढ़ा है। मूल में 'खुदा बन्द' स्पष्ट है (३ब)।

२ अतालीक।

३ प्रस्तुत ग्रन्थ में पत्र पृ० १२ से पृ० ३१ में प्रकाशित हुआ है। **अकबर नामा भाग १** में (पृ० २०६-२१३) में भी यह पत्र सम्मिलित था। इसका अनुवाद पूर्व पृ० १४२-१५३ में देखिये। बायजीद ने पत्र के अन्त में लिखा है —"दर तारीखे सन ९९० (१५८२-८३ ई०) नकल। दर तारीख सन् १००० (१५९१-९२ ई०) नक्ल गिरिफ्ता शुद"। इसका अर्थ सम्भवतः यह है कि दफ्तर में ९९० हि० में नकल किया गया तथा बायजीद ने १००० हि० में नक्ल किया, कारण कि इसके पूर्व इसका उल्लेख हो चुका है।

४ सम्भवतः वे लोग आगे भेज दिये गये और हुमायूं उनके बाद रवाना हुआ।

५ यह नाम स्पष्ट नहीं। डा० बनारसी प्रसाद ने इसे 'फारूक बहादुर' पढ़ा है, (पृ० ७७)। मूल में स्पष्ट रूप से 'काज़क' है। इसके अतिरिक्त शीओं का नाम फारूक नहीं होता।

बैराम खाँ का शाह के पास दूत बन कर जाना

कुछ दिन उपरान्त व नीशापुर पहुँचे और वहाँ से सब्जवार। सब्जवार का हाकिम, शम्सुद्दीन अली सुल्तान सब्जवारी था। नीशापुर का जागीरदार मशहद का हाकिम शाह वली सुल्तान था। हजरत पादशाह सब्जवार से दमगान, दमगान से सिमनान और सिमनान से कजवीन पहुँचे।

पादशाह के कजवीन पहुँचने के कुछ दिन पूर्व शाह यीलाक सलक[1] की ओर इस आशय से रवाना हो गया कि 'पादशाह के मनोरंजन हेतु शिकार की व्यवस्था कराये। जब शाह जवान के समीप पहुँच गया तो समाचार प्राप्त हुए कि पादशाह ने नव्वाब बैरम बेग[2] को शाह की सेवा में भेजा है। वह शाह की सेवा में उपस्थित हुआ और हजरत पादशाह का पत्र प्रस्तुत किया। उसी मंजिल पर उसे उत्तर प्राप्त हो गया और वह लौट गया।

प्रथम कमरगह शिकार

कुछ दिन उपरान्त पादशाह तथा शाह की उसी पड़ाव पर एक दूसरे से भेंट हुई। दोनों मिल कर शिकार-गाह की ओर रवाना हुए। पादशाह के आगमन से पूर्व बड़े बड़े काजियान[3] को आदेश दे दिया गया था कि वे १० दिन के मार्ग में शिकार को हका कर ले आयें। उस चश्मे पर, जिसे सावूक यीलाक कहते हैं और जो यीलाक सलक की प्रथम मंजिल है[4] इतने अधिक वन-पशु एकत्र हो गए कि उनका उल्लेख सम्भव नहीं। पशुओं का कमरगह[5] करके वे लोग शिकार खेलने लगे। वे लोग एक सप्ताह तक उस मंजिल पर रहे यहाँ तक कि उस मंजिल की खाद्य सामग्री (३३) एवं शिकार का मांस समाप्त हो गया।

द्वितीय कमरगह की तैयारी

वहाँ से दूसरे शिकार की व्यवस्था के उद्देश्य से सेना को १० दिन के लिए इस बात की अनुमति दे दी गई कि वे शिकार को हका कर लायें और तख्ते सुलेमान में कमरगह की व्यवस्था की जाय। जब कमरगह पूरा हो गया तो वे शिकार खेलने लगे। वन पशु एवं पक्षी इतनी अधिक संख्या में एकत्र हो गए थे कि उनकी संख्या का उल्लेख इस मुख्तसर में सम्भव नहीं। कुछ मुर्गा मृग कमरगह से निकल कर रूद-खाने[6] में जो कमरगह के पीछे थी, कूद पड़े। सेना के कूरचियों एवं कज़कचियों[7] ने बाणों एवं तलवारों से उनकी हत्या कर दी। कोई भी जीवित न बच सका। इसके बावजूद जिस ओर से शिकार बाहर निकल गए थे और जो लोग बन्द की ओर थे उनमें से कुछ अधिकारियों की हत्या करा दी गई।

१ डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार 'मलक कूलार', किन्तु मूल में 'यीलाक सलक' ही है।
२ बैराम खाँ खाने खानाँ।
३ यह शब्द, शब्द कोशों में नहीं मिलता। सम्पादक का विचार है कि यह काज चरान होगा। काज चरान का अर्थ हंस चराने वाला होता है किन्तु यहाँ शिकार हँकाने वालों से तात्पर्य है।
४ देखिये **अकबर नामा भाग १**, पृ० २१८ हिन्दी अनुवाद पृ० १६१।
५ घेरा बनाकर।
६ रूद-खाने का अर्थ नदी को पार होना है किन्तु यहाँ रूद खाना नामक झील से तात्पर्य है।
७ रक्षकों से अभिप्राय है।

द्वितीय कमरग़ाह शिकार

(३४) जब कमरगह तैयार हो गया तो हजरत पादशाह एव शाह तथा नव्वाब साम मीर्ज़ा, वहराम मीर्ज़ा, और शाह के अमीरो मे से अब्दुल्लाह खा इस्तजलू, जो शाह इस्माईल का जामाता था, मून्दक[1] सुल्तान कूरची बाशी अफशार, बद्र खा इस्तजलू, शाह कुली सुल्तान मुहरदार एव हजरत पादशाह के सेवको में से ख्वाजा मुअज्जम, बैरम बेग हाजी मुहम्मद कोका[2], रोशन कोका तथा हसन कोका एव शाह तथा हजरत पादशाह के खान लोग आदेशानुसार कमरगह में प्रविष्ट हो गए। जो शिकार उन्हे अच्छा लगता उसको बाण द्वारा हत्या करने लगे।

मनोरंजन

शिकार के उपरान्त वे लोग उसी पडाव पर शिविरो में उतर पडे। हजरत पादशाह के सम्मान हेतु जश्न के लिए वहा पडाव किया गया। लगभग १०-१२ दिन तक हौज तथा तख्ते सुलेमान पैगम्बर के समीप कबक[3] का आयोजन हुआ। दूसरे दिन वे जिन्दान[4] तथा हजरत सुलेमान के तबेले की सैर के लिए रवाना हुए। इस मंजिल पर पडाव के तीन दिन उपरान्त वे चौगान खेलने तथा कबक पर निशाना लगाने के लिये रवाना हुए। उसी दिन जब कबक पर निशाना लगाया जा रहा था, बैरम बेग को खान की उपाधि तथा हाजी मुहम्मद कोकी को सुल्तान की उपाधि प्रदान की गई।

हुमायूं को कुमक

(३५) उसी दिन १०००० अश्वारोहियो[5] की सूची एव मीर्ज़ा मुराद को जो शाह का पुत्र था और हजरत पादशाह की सहायता हेतु नियुक्त किया गया था प्रस्तुत किया गया। बादशाही असबाब की सूची, जो प्रत्येक कारखाने के लिए उपयुक्त देख कर पृथक् की गई थी, पादशाह के वकीलो को सौप दी गई। चीजो का हजरत पादशाह द्वारा निरीक्षण कराया गया। याकूब मीर्ज़ा को, जो सुल्तान मुहम्मद खुदा बन्दा वल्द हजरत शाह का तग ई[6] था, पादशाह का मुहरदार नियुक्त किया गया और ख्वाजा रशीदी को दीवान। यह दोनो १०,००० अश्वारोहियो के सरदारो की जो कुमक हेतु नियुक्त किए गए थे, सूची में सम्मिलित थे। सरदारो का ब्योरा इस प्रकार है —

(१) मीर्ज़ा मुराद वल्द शाह
(२) बुदाग खा कूज[7], उपर्युक्त मीर्ज़ा का लला
(३) शाह कुली सुल्तान अफशार[8]

१ अकबर नामा में 'सोंदुक सुल्तान कूरची बाशी अफशार'।
२ अन्य स्थानों पर 'हाजी मुहम्मद कोकी'।
३ तुर्की में कद्दू को कहते हैं। मध्य काल में लकडियों में बाधकर कद्दू लगा दिये जाते थे जिन पर निशाना लगाया जाता था।
४ कारागृह, देखिये जौहर तज़किरतुल वाकेआत।
५ अकबर नामा में १२,००० (प्रकाशित भाग १, पृ० २१८, हिन्दी अनुवाद पूर्व पृ० १६४)।
६ तगाई —मामा।
७ अकबर नामा में —'बुदाग खा काचार, मीर्ज़ा का लला'।
८ अकबर नामा के अनुसार किरमान का हाकिम।

बैराम खाँ का शाह के पास दूत बन कर जाना

कुछ दिन उपरान्त वे नीशापुर पहुँचे और वहाँ से सब्ज़वार। सब्ज़वार का हाकिम, शम्सुद्दीन अली सुल्तान सब्ज़वारी था। नीशापुर का जागीरदार मशहद का हाकिम शाह कुली सुल्तान था। हज़रत पादशाह सब्ज़वार से दमगान, दमगान से सिमनान और सिमनान से क़ज़वीन पहुँचे।

पादशाह के क़ज़वीन पहुँचने से कुछ दिन पूर्व शाह यीलाक़ सलक[1] की ओर इस आशय से रवाना हो गया कि पादशाह के मनोरंजन हेतु शिकार की व्यवस्था कराये। जब शाह उसके समीप पहुँच गया तो समाचार प्राप्त हुए कि पादशाह ने नव्वाब बैरम बेग[2] को शाह की सेवा में भेजा है। वह शाह की सेवा में उपस्थित हुआ और हज़रत पादशाह का पत्र प्रस्तुत किया। उसी मंज़िल पर उसे उत्तर प्राप्त हो गया और वह लौट गया।

प्रथम क़मरग़ह शिकार

कुछ दिन उपरान्त पादशाह तथा शाह की उसी पड़ाव पर एक दूसरे से भेंट हुई। दोनों मिल कर शिकार गाह की ओर रवाना हुए। पादशाह के आगमन से पूर्व बड़े बड़े काज़ियान[3] को आदेश दे दिया गया था कि वे १० दिन के मार्ग से शिकार का हंका कर ले आयें। उस चदमे पर, जिसे सावूक यीलाक कहते हैं और जो यीलाक सल्क की प्रथम मंज़िल है[4] इतने अधिक वन-पशु एकत्र हो गए कि उनका उल्लेख सम्भव नहीं। पशुओं का क़मरग़ह[5] करके वे लोग शिकार खेलने लगे। वे लोग एक सप्ताह तक उस मंज़िल पर रहे यहां तक कि उस मंज़िल की खाद्य सामग्री (३३) एवं शिकार का मांस समाप्त हो गया।

द्वितीय क़मरग़ह की तैयारी

वहां से दूसरे शिकार की व्यवस्था के उद्देश्य से सेना को १० दिन के लिए इस बात की अनुमति दे दी गई कि वे शिकार का हंका कर लायें और तख़्त सुलैमान में क़मरग़ह की व्यवस्था की जाय। जब क़मरग़ह पूरा हो गया तो वे शिकार खेलने लगे। वन पशु एवं पक्षी इतनी अधिक संख्या में एकत्र हो गए थे कि उनकी संख्या का उल्लेख इस मुख़्तसर में सम्भव नहीं। कुछ मुर्गा मृग क़मरग़ह से निकल कर रूद-ख़ाने[6] में जो क़मरग़ह के पीछे थी कूद पड़े। सेना के क़ूरचियों एवं क़ल्लचियों[7] ने बाणों एवं तलवारों से उनकी हत्या कर दी। कोई भी जीवित न बच सका। इसके बावजूद जिस ओर से शिकार बाहर निकल गए थे और जो लोग बन्द की ओर थे उनमें से कुछ अधिकारियों की हत्या करा दी गई।

१ डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार 'सलक सूलाक', किन्तु मूल में यीलाक़ सलक ही है।
२ बैरम खाँ खाने खानाँ।
३ यह शब्द, शब्द कोशों में नहीं मिलता। सम्पादक का विचार है कि यह काज चरान होगा। काज चरान का अर्थ हंस चराने वाला होता है किन्तु यहाँ शिकार हँकाने वालों से तात्पर्य है।
४ देखिये **अकबर नामा भाग १**, पृ० २१८ हिन्दी अनुवाद पृ० १६१।
५ घेरा बनाकर।
६ रूद-ख़ाने का अर्थ नदी का पाट होना है किन्तु यहां रूद ख़ाना नामक झील से तात्पर्य है।
७ रक्षकों से अभिप्राय है।

द्वितीय कमरगह शिकार

(३४) जब कमरगह तैयार हो गया तो हजरत पादशाह एव शाह तथा नव्वाव साम मीर्जा, वहराम मीर्जा, और शाह के अमीरो में से अब्दुल्लाह खा इस्तजलू, जो शाह इस्माईल का जामाता था, सून्दक[1] सुल्तान कूरची बाशी अफशार, वद्र खा इस्तजलू, शाह कुली सुल्तान मुहरदार एव हजरत पादशाह के सेवको में से ख्वाजा मुअज्जम बैरम वेग, हाजी मुहम्मद कोका[2], रोशन कोका तथा हसन कोका एव शाह तथा हजरत पादशाह के खान लोग आदेशानुसार कमरगह में प्रविष्ट हो गए। जो शिकार उन्हे अच्छा लगता उसकी वाण द्वारा हत्या करने लगे।

मनोरंजन

शिकार के उपरान्त वे लोग उसी पडाव पर शिविरो में उतर पडे। हजरत पादशाह के सम्मान हेतु जश्न के लिए वहाँ पडाव किया गया। लगभग १० १२ दिन तक हौज तथा तरते सुलेमान पैगम्बर के समीप कवक[3] का आयोजन हुआ। दूसरे दिन वे जिन्दान[4] तथा हजरत सुलेमान के तवेले की सैर के लिए रवाना हुए। इस मजिल पर पडाव के तीन दिन उपरान्त वे चौगान खेलने तथा कबक पर निशाना लगाने के लिये रवाना हुए। उसी दिन जब कबक पर निशाना लगाया जा रहा था, बैरम वेग का खान की उपाधि तथा हाजी मुहम्मद कोकी को सुल्तान की उपाधि प्रदान की गई।

हुमायूं को कुमक

(३५) उसी दिन १०,००० अश्वारोहियो[5] की सूची एव मीर्जा मुराद को, जो शाह का पुत्र था और हजरत पादशाह की सहायता हेतु नियुक्त किया गया था, प्रस्तुत किया गया। बादशाही असबाव की सूची, जो प्रत्येक कारखाने के लिए उपयुक्त दख कर पृथक् की गई थी, पादशाह के वकीलो को सौप दी गई। चीजो का हजरत पादशाह द्वारा निरीक्षण कराया गया। याकूब मीर्जा को, जो सुल्तान मुहम्मद खुदा वन्दा वल्द हजरत शाह का तग ई[6] था, पादशाह का मुहरदार नियुक्त किया गया और ख्वाजा रशीदी का दीवान। यह दोनो १०,००० अश्वारोहियो के सरदारो की जो कुमक हेतु नियुक्त किए गए थे, सूची मे सम्मिलित थे। सरदारो का ब्योरा इस प्रकार है —

(१) मीर्जा मुराद वल्द शाह
(२) बुदाग खा कुज[7], उपर्युक्त मीर्जा का लला
(३) शाह कुली सुल्तान अफशार[8]

१ अकबर नामा में 'सौन्दुन्दर सुल्तान कूरची बाशी अफशार'।
२ अन्य स्थानो पर 'हाजी मुहम्मद कोकी'।
३ तुर्की में कद्दू को कहते है। मध्य काल में लकड़ियों में बाधकर कद्दू लगा दिये जाते थे जिन पर निशाना लगाया जाता था।
४ बन्दीगृह, देखिये जौहर तज़किरतुल वाकेआत।
५ अकबर नामा में १२,००० (प्रकाशित भाग १, पृ० २१८, हिन्दी अनुवाद पूर्व पृ० १६०)।
६ तगाई —मामा।
७ अकबर नामा में —"बुदाग खा काचार, मीर्जा का लला"।
८ अकबर नामा के अनुसार किरमान का हाकिम।

(४) अली सुल्तान तक्लू वल्द ऊगली

(५) अहमद सुल्तान शामलू वल्द मुहम्मद खलीफा, सीस्तान का हाकिम

(६) सहाब सुल्तान अफशार[1], फरह का हाकिम

(७) अली सुल्तान बावनी व्यूक तक्लू

(८) अली सुल्तान कूरची बाशी, मुहम्मद खाँ शरफुद्दीन ऊगली तक्लू, हेरी के हाकिम का सम्बन्धी[2]

(९) याकूब ख्वाजा[3] रशीदी मीर्ज़ा, सुल्तान मुहम्मद खुदा बन्दा वल्द शाह तह्मास्प का तगाई

(३६) (१०) हुसन कुली सुल्तान[4] शामलू, अहमद सुल्तान सीस्तान के हाकिम का भाई

(११) आदम मीर्ज़ा[5] वल्द देव सुल्तान

(१२) तहमतन मीर्ज़ा, देव सुल्तान का भाई

(१३) हैदर सुल्तान शैबानी

(१५) अली कुली एव बहादुर उपर्युक्त के पुत्र

(१६) मकसूद मीर्ज़ा आह्ता बेगी वल्द जैन सुल्तान शामलू

(१७) मुहम्मदी मीर्ज़ा, जहान शाह बादशाह का नबीरा (पौत्र)

(१८) सुल्तान हसन रूमलू[6]

अन्य छोटे छोटे बेग एव यक्का जवान।

तीसरा कमरगह शिकार

आतिथ्य के उपरान्त दो दिन ठहर कर पुन शिकार की व्यवस्था हुई। शाह ने आदेश दिया कि आब जियारत में, जो यीलाक सलक की अतिम मंजिल है कमरगह तैयार कराया जाय। पादशाह ने स्वय पहुँच कर तीसरा शिकार समाप्त किया।

दास बायजीद शिकारी एव तख्ते सुलेमान के जश्नों में पादशाह की सेवा में था। शाह के खलीफतुल खुल्फा[7] के परोक्ष[8] से एक बाण लगा और उसकी मृत्यु हो गई।

१ **अकबर नामा** में 'सहाब सुल्तान'।

२ **अकबर नामा** में 'सुल्तान कुली कूरची बाशी, खेशे मुहम्मद खाँ (मुहम्मद खाँ का सम्बन्धी)' किन्तु *बायजीद के ग्रंथ के सम्पादक ने 'अली सुल्तान कूरची बाशी' तथा 'करावये मुहम्मद खाँ शरफुद्दीन ऊगली तक्लू* हाकिमे हेरी' दो पृथक नाम कर दिये हैं।

३ **अकबर नामा** में—"याकूब मीर्ज़ा, सुल्तान मुहम्मद खुदा बन्दा का तगाई।"

४ **अकबर नामा** में 'सुल्तान हुसैन कुली शामलू'।

५ 'अदहम मीर्ज़ा' अधिक शुद्ध है।

६ डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद 'प्रधान मन्त्री' किया है,(पृ० ७८), किन्तु खलीफतुल खुलफा के कर्तव्यों के विषय में निश्चित रूप से कुछ कहना बड़ा कठिन है। इस वाक्य का तात्पर्य यह है कि खलीफतुल खुलफा के किसी अज्ञात दिशा से आकर एक बाण लगा और उसकी मृत्यु हो गई।

७ **अकबर नामा** की सूची में २६ नाम हैं, (**अकबर नामा** प्रकाशित पृ० २१८-२१९, हिन्दी अनुवाद पूर्व पृ० १६२-१६३)।

८ **अकबर नामा** के अनुसार बहराम मीर्ज़ा ने जान बूझकर उसकी बाण द्वारा हत्या की, (**अकबर नामा भाग १,** प्रकाशित पृ० २१८)।

उसी स्थान से हज़रत पादशाह तबरेज़ की ओर सैर के लिए रवाना हुए। तबरेज़ वालों को आदेश दिया गया कि जो प्रथा पूर्व में प्रचलित थी और जिसको बहुत समय से निषेध करा (३७) दिया गया था, पुनः जारी हो अर्थात् गुर्ग दवानी[1], अरमनी मुसल्मान[2], चौगान[3] का खेल इत्यादि। हज़रत पादशाह शाह से विदा होकर तबरेज़ की सैर के लिए रवाना हुए।

हुमायूं का मशहद की ओर प्रस्थान

दास बायज़ीद ने सैयिद मुहम्मद अरब के अधीन, जो कि शाह का इमाम था और जिसे उस वर्ष की इमाम रिज़ा की नज़र[4] सौंपी गई थी और आदेश दिया गया था कि यह नज़र ले जाकर वहाँ वालों को पहुँचा दे, अपने पिता के साथ रौज़े के दर्शन का सम्मान प्राप्त किया। हज़रत पादशाह तबरेज़ की सैर करके वहाँ से काबुल तथा कन्धार की ओर चल दिए। १० ००० व्यक्ति जो उनकी कुमक हेतु नियुक्त हुए थे हलमन्द नदी तट पर विजयी लश्कर के साथ आकर मिल गए।

हुमायूं मशहद में

९५१ हि० (१५४४ ई०) के रमज़ान की ईद[5] के दिन हज़रत पादशाह स्वयं कुतल[6] ज़र्री के मार्ग से मशहदे मुकद्दस पहुँचे। यह दास विद्याध्ययन में व्यस्त था। हज़रत पादशाह उस बाला खाने[7] पर जो हज़रत इमाम (के रौज़े के) गुम्बद के पीछे है, ठहरे। मशहद में हिम पात हो चुका था

१ भेड़ियों की दौड़।

२ यह शब्द स्पष्ट नहीं। प्रकाशित में 'अरमनी मुसल्मान'। डा० बनारसी प्रसाद ने इसे 'मुसल्मान अरमनी' लिखा है (पृ० ७८)। हस्तलिपि में 'अरमनी सनमान'।

३ पोलो।

४ वह चढ़ावा जो हर साल शाह की ओर से इमाम रिज़ा के रौज़े पर चढ़ाया जाता होगा। यह वाक्य भी स्पष्ट नहीं। "बन्दये दरगाह बायज़ीद दर मुलाज़मत सैयिद मुहम्मद अरब कि इमामे शाह बूद कि आँ साल ज़रे नज़रे आस्तानये हज़रत इमाम रिज़ा रा ब ऊ सिपुर्दा बूदन्द कि आवुर्दा ब आँ मर्दुम रसानद, हमराह शुदा ब मुलाज़मत पिदर दर आस्ताना मुशर्रफ शुद"

"بندهٔ درگاه بایزید در ملازمت سید محمد عرب که امام شاه بود که آن سال زر نذر آستانهٔ
حضرت امام رضا را باو سپرده بودند که آورده بآن مردم رساند همراه شده بملازمت پدر در
آستانه مشرف شده"

डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है —

"The humble Baizid followed Sayid Muhammad Arab, the Imam of the Shah (to Tabrez), because he (Imam) had been entrusted that year with the duty of collecting the presents offered at the shrine and to remit the same to those (?) people and there at the threshold he (Baizid) honoured by paying respect to his father" (पृ० ७८)।

डा० बनारसी प्रसाद का विचार है कि सैयिद मुहम्मद अरब को वह चढ़ावा जो इमाम के रौज़े पर चढ़ाया जाता था एकत्र करने का आदेश दिया गया था किन्तु यह ठीक नहीं। इससे अतिरिक्त वह तथा उसका पिता साथ ही साथ गये थे।

५ १ शव्वाल ९५१ हि० (१६ दिसम्बर १५४४ ई०)।

६ डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार 'कतल' किन्तु 'कुतल' शुद्ध है।

७ कोठे।

और बादल छाये हुए थे अतः चन्द्र दर्शन न हो सका था। एक पहर दिन उपरान्त हजरत पादशाह सलामत ने एक समूह का सैयिदो एवं काजी के पास गवाही हेतु भेजा कि उन लोगो ने (३८) कुतल जकी के मार्ग में चाँद देखा था[1]। गवाही के उपरान्त रोजे की पनाहायें निकाली गई और लोग ईदगाह की ओर रवाना हुये। यह तुच्छ बायजीद हजरत पादशाह की सेवा में ईदगाह में था।

मशहद में हुमायूं का विद्वानो के साथ समय व्यतीत करना

हजरत पादशाह कई दिन तक बागे पाईन पा[2] में ठहरे रहे और कुछ असबाब, आदमी एवं लश्कर मशहद के मार्ग से आगे भेज दिया। हजरत पादशाह के कुछ विश्वासपात्र उनके साथ मशहद में उपस्थित रहे। नीशापुर में आदेश हो चुका था कि "अतिरिक्त सेना हलमन्द नदी के तट पर पहुँच जाय। शाह का पुत्र सुल्तान मुराद एवं जो खान लोग कुमक हेतु भेजे गए थे, वे उसी मंजिल पर एकत्र हों।" उन दिनों सैयिद लोग तथा जो बड़े बड़े सरदार शाही गोष्ठी के लिये उपयुक्त थे, उनके साथ हजरत पादशाह वार्तालाप एवं विचार विनिमय करते रहते थे। मुल्ला हैरती ने एक दिन एक गजल हजरत पादशाह की सेवा में प्रस्तुत की। उसके प्रारम्भिक शेर इस प्रकार हैं

शेर

'गह दिल अज इश्के तुता गह जिगरम मी सोजद,
इश्क हर लहजा बदागे दिगरम मी सोजद।
हमचूं परवाना ब शमये सरोकार अस्त मरा,
कि अगर पेश रवम बालो-परम मी साजद[3]।'

हजरत पादशाह ने संशोधन किया और कहा कि यह अच्छा होगा

'मीरवम पेश अगर बाला-परम मी सोजद'

हुमायूं द्वारा इमाम रिजा के रौजे की सेवा

(३९) एक रात्रि में हजरत पादशाह इमाम के पवित्र रौजे का तवाफ कर रहे थे। उनके हृदय में आया कि वे भी रौजे में सेवकों के साथ सेवा करें। मीर अब्दुल अजीम को, जो उस समय खादिम बाशी था, बुलवा कर हजरत पादशाह ने मीर के हाथ से कैंची ले ली। मीर अपने हाथ में जल का प्याला लेकर हजरत पादशाह के पीछे पीछे फिरने लगा। हजरत पादशाह उन मोमबत्तियों के, जो रौजे, दारुल हुफ्फाज[4] दारुस्सयार[5] एवं गुम्बद मीर अली शेर इत्यादि में थीं, गुल काट काट कर जल के प्याले में, जो मीर अब्दुल अजीम के हाथ में था, डालते जाते थे[6]।

१ जौहर ने इस घटना का सविस्तार विवरण दिया है।
२ सम्भवतः रौजे के पीछे के सीनरी उद्यान में ठहरे।
३ इसका अनुवाद पूर्व पृ० १६७ पर देखिये।
४ हाफिजों का कक्ष।
५ यात्रियों का कक्ष।
६ जौहर ने इस घटना का अधिक रोचक ढंग से उल्लेख किया है।

बुस्त नामक किले पर अधिकार

कुछ दिन उपरान्त हज़रत पादशाह विजयी लश्कर की ओर, जो कन्धार में था, रवाना हुए। जब हज़रत पादशाह हलमन्द नदी के तट पर पहुँचे तो उन्होंने अली मुल्तान वाशी व्यूक[1] को, जिसके अधीन ५०० आदमी थे एवं अन्य वीरों को उसके साथ करके, बुस्त नामक किले के विरुद्ध भेजा। दास बायज़ीद उस सेना में था। नव्वाब मीर्ज़ा अस्करी का सेवक दरवेश मुहम्मद खल्ज उस किले का जागीरदार तथा शिकदार था। जब यह सेना उपर्युक्त किले के समीप पहुँची तो उसने उसका अवरोध कर लिया। दरवेश मुहम्मद युद्ध के लिए उद्यत हो गया। युद्ध के समय उपर्युक्त अली मुल्तान के तुफ़ग (की गोली) लगी और तत्काल उसकी मृत्यु हो गई। उसके सेवकों ने उसके १२ वर्षीय पुत्र को उसके पिता के स्थान पर अपना सरदार बना लिया। दूसरे दिन किसी को हानि न पहुँचाने (४०) का आश्वासन देकर किले पर अधिकार जमा लिया गया और उसके विषय में शाह की सेवा में पत्र भेज दिया गया। समार वालों के लिए शाह का फरमान प्राप्त हुआ कि, "हमने उसके पुत्र को जिसे उसके सेवकों ने अपना सरदार बना लिया है, उसके पिता के स्थान पर स्वीकार कर लिया और उसे उसी प्रकार जागीर प्रदान कर दी।"

कन्धार के किले का अवरोध

किले की विजय के दो दिन उपरान्त हज़रत पादशाह ने किले के उपांत में पड़ाव किया। दास हज़रत पादशाह के दरबार के, जो फ़िरिश्तों का निवास स्थान था, सेवकों में सम्मिलित होकर, सर्वदा शुभ-कामना में तल्लीन रहने लगा। उसी पड़ाव में पादशाह ने खानों एवं सुल्तानों के अधीन लगभग ५००० आदमियों की सेना, कन्धार पर अत्यन्त शीघ्र अग्रसर होकर आक्रमण करने के लिये भेजी[2]। कन्धार के किले तथा बुस्त के किले के बीच की दूरी लगभग २० मील[3] होगी। तीसरे दिन यह सेना माशूर नामक द्वार पर पहुँच गयी। उनके पहुँचने की सूचना करावलों ने पूर्व से कर दी थी अतः एक समूह ने (किले के) बाहर निकल कर युद्ध किया। दोनों ओर से कुछ लोग मारे गए तथा आहत हुए किन्तु किसी ऐसे व्यक्ति की हत्या न हुई जिसका उल्लेख इस "तज़किरे" में किया जाय। अन्त में हज़रत पादशाह की ओर से जो लोग कुमक हेतु नियुक्त हुए थे, उनके जोर लगाने से वे लोग भाग कर किले में प्रविष्ट हो गए। मीर्ज़ा अस्करी स्वयं द्वार पर बैठा यह दृश्य देख रहा था। जब (किले से) तोप तथा तुफ़ग अधिक चलने लगी तो वे मुकाबला न कर सके। जो लोग (हज़रत पादशाह की ओर से) कुमक हेतु नियुक्त हुए थे, वे भी भाग कर बागे कामरानी[4] एवं किले

१ अकबर नामा में 'अली सुल्तान तक्लू' (प्रकाशित अकबर नामा भाग १ पृ० २ ७, हिन्दी अनुवाद पूर्व पृ० १७३)।

२ यह वाक्य स्पष्ट नहीं। "जमए अज ख्वानीन व सलातीन रा ब तरीक़ यलगार करीब पंज हज़ार कस बर सर क़िलये कन्धार फ़रस्तादन्द"—डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है "About 5000 Khans and Sultans were despatched from this place to attack the fort of Qandhar" (पृ० ८०)। खानों तथा सुल्तानों के समूह के अधीन ५००० आदमी ही भेजे गये होंगे।

३ डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में 'करोह'। (पृ० ८०)। हस्तलिपि में 'मील' स्पष्ट है।

४. सम्भवत: मीर्ज़ा कामरान का उद्यान।

(४१) के समीप के स्थानों पर उतर पड़े। यह घटना ९४ हि० (?) के अन्त में घटी[१]। पाँच दिन उपरान्त हजरत पादशाह शिविर एवं शेष सेना सहित पहुँच गए। किले को समीप से घेर कर मोर्चे बाँट दिये।

रफी कोका पर हुमायूं के अमीरों का आक्रमण

उन्हीं थोड़े से दिनों में मुईद बेग तथा इस्माईल बेग दूल्दी[२] किले से भाग कर हजरत पादशाह के चरणों के चुम्बन द्वारा सम्मानित हुए। अवरोध के कुछ दिन उपरान्त विजयी शिविर में खाद्य सामग्री की कमी हो गई। इसी बीच में समाचार प्राप्त हुए कि मीर्जा कामरान का कोका रफी, जमीन दावर की ओर एक पर्वत में, जो कि कन्धार के पास अरगदाब नदी तट पर स्थित है, हजारा एवं निक्दोरी कबीलों सहित सकर[३] बनाये हुए है। नव्वाब बैरम खाँ[४], नव्वाब मुहम्मदी मीर्जा जो जहान शाह पादशाह का पौत्र था (नव्वाब बैरम खाँ बारलू अपने आप को इस वंश का बताता है), हैदर सुल्तान शैबानी, अपने पुत्रों अली कुली तथा बहादुर सहित मकसूद मीर्जाई आख्ता बेगी पुनः जैनुद्दीन सुल्तान शामलू, शाह कुली बेग नारजी, सैयिद मुहम्मद पकना एवं एक बहुत बड़े समूह को रफी कोका के सकर के विरुद्ध भेजा गया।

रफी कोका की पराजय

(४२) जब यह सेना पहुँच गयी और युद्ध होने लगा तो दास बायजीद भी उस सेना के साथ था। रफी कोका बन्दी बना लिया गया। जो असबाब एवं चीजें उसके पास थीं, वे सब की सब इस सेना के अधिकार में आ गई। वे सब दो दिन उपरान्त विजयी शिविर में पहुँच गए। असंख्य भेड़ें एवं अत्यधिक मात्रा में अनाज (हजरत पादशाह के) शिविर में पहुँच गया।

कन्धार के किले के लिये युद्ध

एक दिन अहमद सुल्तान शामलू सीस्तान के हाकिम, हैदर सुल्तान शैबानी, अली कुली एवं बहादुर हैदर सुल्तान शैबानी के पुत्र, मकसूद बेग आख्ता बेगी शामलू, जैनुद्दीन सुल्तान का पुत्र, दोस्त बाबा करखेगी, हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी, मेहतर यूसुफ खजीना दार, मीरक मारस्तानी एवं हैदर तबरेजी, हैदर सुल्तान शैबानी के सेवकों इत्यादि सब ने सशस्त्र होकर कन्धार के किले (की विजय) के लिये युद्ध किया और किले के प्यादों से कई बार बड़ी वीरता से युद्ध किया। किले के प्यादों की बहुत बड़ी संख्या नष्ट हो गई। अली कुली बरद हैदर सुल्तान शैबानी तथा

१ ९४ हि० अथवा ९४० हि० दोनों में कोई शुद्ध नहीं। हुमायूं ७ मुहर्रम ९५२ हि० (२१ मार्च १५४५ ई०) को कन्धार के किले के समीप पहुँचा। (अकबर नामा भाग १, पृ० २२१, हिन्दी अनुवाद पूर्व पृ० १७७)। डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में ९५० हि० है (पृ० ८१)।

२ डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में 'दल्दी' (पृ० ८१)। यह शुद्ध नहीं।

३ सकर: सागर अथवा मार्गों या घरों के चारों ओर काटों, पत्थरों इत्यादि से घेरा तैयार कर लिया जाता था ताकि शत्रुओं के आक्रमण से बचाव हो सके। अकबर नामा में सकर का उल्लेख नहीं। (अकबर नामा भाग १, प्रकाशित पृ० २२१, हिन्दी अनुवाद पृ० १७७ १७८)।

४ अन्य ग्रन्थों में 'बैराम खाँ', डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में भी 'नव्वाब बैराम खाँ' है। हस्तलिपि में भी 'बैराम खाँ' है।

मीरक मारस्तानी वाण द्वारा घायल हुए। वावा दोस्त कूरबेगी एव मेहतर यूसुफ शहीद कर दिए गए। इन थोडे से दिनो मे किले के प्यादे निकलते थे और (शाही) लश्कर के अश्वारोहियो से युद्ध करते थे।

बैरम खा तथा हज़ारा का युद्ध

कुछ[1] दिन उपरान्त नव्वाव बैरम खा ने कडुवे बादाम की, लकडी को जिसे वह हजरत इमाम के रौजे मे लाया था, अपना हथियार बना कर आक्रमण किया। मुहम्मदी मीर्ज़ा, सैयिद मुहम्मद पकना एव एक सेना ने, जो नव्वाब की सेवा में थी पर्याप्त पौरुष का प्रदर्शन किया। हजारा (४३) लोगो में बहुत से मारे गए[2]। सजाव सुल्तान के हुसेन आका का मुख वाण द्वारा घायल हो गया। मुहम्मदी मीर्ज़ा कहर[3] रग के एक घोडे पर, जिसका नाम बूरनी जीक था, सवार था। उस (घोडे को) शाह तहमास्प ने मीर्ज़ा सुलेमान को भेजा था। जिस हजारा ने हुसेन आका के वाण मारा था और बहुत से अन्य लोगो को आहत किया था वह उसे भाला मार कर अग्रसर हुआ[4]। जब वह उसके समीप पहुँचा तो एक फटी हुई भूमि मिली। वह उस फटी हुई भूमि को पार कर गया। उसके उस पार मुहम्मदी मीर्ज़ा ने हजारा को भाला मार कर गिरा दिया। जब उपर्युक्त नव्वाब[5] ने उस फटी हुई भूमि को नपवाया तो वह १८ अर्ज़[6] निकली। उसे आश्चर्य हुआ। हज़ारा ने उस वाण को, जो उसके धनुष में था, उस घोडे के सीने पर चलाया। उस घाव में वावजूद घोडा १० मील यात्रा करके गिरा।

दूसरे दिन अस्र की नमाज के समय वे मन्कीर नामक स्थान पर जा गजनी के ग्रामो में से है पहुँचे। उस समय फख्रुद्दीन वल्द शम्सुद्दीन वहाँ का हाकिम था। उसने उचित आतिथ्य करके उनके पधारने के विषय मे मीर्ज़ा कामरान को लिख भेजा। उस दिन वे वही पडाव किए रहे। तीसरे दिन वहाँ से प्रस्थान करके सुल्तान महमूद[7] के रौजे पर पडाव किया। शेख शाही एव रौजे के समस्त सेवको से भेंट करके वे तीन दिन तक रौजे मे ठहर रहे। वहा से प्रस्थान करके शनीर (४४) नामक स्थान पर पडाव किया। वहाँ से रवाना होकर वे मैदान नामक स्थान पर पहुँचे। दूसरे दिन वहाँ से काबुल की ओर रवाना हुए।

बैरम खाँ का काबुल पहुँचना

जब वे उज़बेक कज्बी नामक स्थान के समीप पहुँचे तो यावूस बेग मुल्ला मक्बूल, जो उस समय नव्वाव मीर्ज़ा कामरान का यस्सी बेगी था, एव रमजी हज़ारा, जो मीर्ज़ा

१ बैरम खा के काबुल की ओर प्रस्थान का कोई उल्लेख नही किया गया। हजारा लोगों ने उनके दूत बन कर काबुल जाते हुये उन पर आक्रमण किया था।
२ "चन्दे अज़ हज़ारहा व कत्ल रसीदन्द"।
३ कालिमा लिये हुये लाल घोडा, जिसकी पूछ और अयाल के बाल काले हों।
४ यह वाक्य स्पष्ट नहीं।
५ नव्वाब मुहम्मदी मीर्ज़ा।
६ सम्भवत अर्श, लगभग कुहनी से बीच की अगुली के अन्तिम सिरे तक की दूरी (एक हाथ)।
७ सुल्तान महमूद ग़ज़नवी।

का यसावल था, और लुत्फी सरहिन्दी, जो मीर्ज़ा (कामरान) के यका[1] से था, सहित नव्वाब बैरम खां की सेवा में उपस्थित हुआ और उन्हें ले जाकर ख्वाबान के सिरे पर बागे बल्ख़ी ए-मुल्तान में उतारा। इस बाग से मिला हुआ एक ओर ख्वाजा दोस्त ख़ावन्द का बाग है, दूसरी ओर बागे चगताई मुल्तान एवं अन्य ओर ख्वाजा मुईन का बाग और दूसरी ओर नदी है। ये लोग[2] बाबूस के उपरान्त[3] बाग में इस आशय से शिविर लगाये हुए थे कि मीर्ज़ा कामरान के अमीरों में से कोई बैरम खां से भेंट न करने पाये[4]।

बैरम खां की मीर्ज़ा कामरान से भेंट

तीन दिन उपरान्त जब मार्ग की थकावट के कष्ट दूर हो गए, तो उपर्युक्त मीर्ज़ा[5] एवं खान को (मीर्ज़ा कामरान ने) चहारबाग में बुलवाया। जो लोग नव्वाब बैरम खां की सेवा में थे, अर्थात् ताज[6] पोश उसी प्रथानुसार जो किज़िलबाशों में प्रचलित थी चहारबाग में प्रविष्ट हुए। ख़रगाह में, जहाँ मीर्ज़ा (कामरान) का दीवान-ख़ाना था वे लोग मीर्ज़ा की सेवा में उपस्थित हुए और कुरान शरीफ उपहार स्वरूप भेंट किया। जब मीर्ज़ा कुरान शरीफ के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए खड़ा हुआ तो इसी बीच में बैरम खां ने हज़रत पादशाह एवं शाह के फरमान तथा पत्र उसे दिये[7]। उसने बैठ कर उन्हें पढ़ा। नव्वाब मीर्ज़ा (कामरान) तथा बैरम खां में जो वार्ता हुई उसका किसी को (४५) ज्ञान नहीं। करजा खां[8] मुसाहिब बेग जिसे मीर्ज़ा कामरान उस समय भाई कहा करता था और जिसे उसने पोस्तीने दागू[9] प्रदान की थी, मुबारिज बेग मुसाहिब बेग का भाई, सैयिद अब्बास, बाबूस,

१ अहदी के समान सैनिक।
२ जो लोग स्वागतार्थ भेजे गये थे
३ 'पास' से तात्पर्य है।
४ "एक दिन अहमद सुल्तान ... करने पाये" तक का अनुवाद डा० बनारसी प्रसाद ने प्रकाशित नहीं किया।
५ सम्भवतः मुहम्मदी मीर्ज़ा किन्तु आगे के विवरण से पता चलता है कि केवल मीर्ज़ा कामरान ही वहाँ था।
६ किज़िलबाश।
७ इस प्रकार की युक्ति मध्य-काल में बड़ी प्रचलित थी। **तारीखे मुबारक शाही** के अनुसार जब सुल्तान बलबन तुग़रिल के विरुद्ध रवाना हुआ तो वह नारकीलह की ओर भाग गया। इसी बीच में दिनौज राय ने इस आशय का एक पत्र भेजा कि वह सुल्तान की सेवा में 'ज़मीन बोस' करने के लिये स्वयं आ रहा है और उसमें प्रार्थना की कि वह (सुल्तान) राय के पहुँचने पर खड़े हो कर उसका स्वागत् करे इस बात ने कि एक मुसलमान सुल्तान को एक काफ़िर के प्रति उचित सम्मान नहीं प्रदर्शित करना चाहिये, सुल्तान को चिन्तित किया। मलिक बेक़तर्स ने जो उस समय उपस्थित था, सुल्तान को चिन्ता करने से मना किया और उसे परामर्श दिया कि सुल्तान राय के दरबार में पूर्व ही सिंहासन पर अपने हाथ में एक बाज लेकर विराजमान हो जाय और राय के आने एवं ज़मीन बोस करने के पश्चात् सुल्तान खड़ा हो जाय और हाथ से बाज उड़ा दे। इसपर उपस्थित जन यही समझेंगे कि सुल्तान ने बाज को उड़ाने के उद्देश्य से अपना स्थान छोड़ा था और इस प्रकार सुल्तान राय की प्रार्थना के अनुसार आचरण करेगा। [यहया सिहरिन्दी **तारीखे मुबारक शाही** कलकत्ता १९३१ ई० पृ० ४२, रिज़वी **आदि तुर्क कालीन भारत** (अलीगढ़ १९५६ ई०) पृ० १८६]।
८ डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार 'कराचा सुल्तान (पृ० ८२)। मूल में करजा खां।
९ एक प्रकार की पोस्तीन।

जमील[1], खालिक वीरदी, हैदर दोस्त मुगुल काजी, एव क्लवी इत्यादि, अमीर, दीवान के अधिकारी, यक्का जवान, दीवान में बैठे थे[2]। तीन-चार घडी अपितु एक पहर वार्ता होती रही।

बैरम खां की मीर्ज़ा हिन्दाल से भेंट

बैरम खा ने निवेदन किया कि, "मीर्ज़ाओ के लिए घोडे, सरोपा तथा फरमान लाया हूँ। क्या आदेश होता है ?" (मीर्ज़ा कामरान ने) बाबूस को बुलवा कर आदेश दिया कि, "कल बैरम खा मीर्जाओ से भेंट करने जायगा, तू भी साथ जा।" दूसरे दिन बाबूस उस उद्यान मे, जहाँ नव्वाब बैरम खा पडाव किए हुए था, आकर साथ हो लिया। बैरम खा ने नव्वाब मीर्ज़ा हिन्दाल से, जो ख्वाजा अब्दुस्समद काबुली के समीप दिलदार आगाचा की हवेली मे ठहरा हुआ था, भेंट की। फरमान, घोडा एव सरोपा जो उसके साथ थे उसे भेंट किया। उसने अभिवादन किया। उस समय उपर्युक्त मीर्ज़ा की निगरानी की जाती थी।

बैरम खां की अकबर से भेंट

दूसरे दिन[3] बाबूस के साथ बैरम खा, शाहजादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा की सेवा में, जो बाबर की बहिन खुन्जादा बेगम[4] के घर मे बागे मक्तब मे निवास करते थे, (४६) पहुँचा। सायंकाल एव सोने के समय के मध्य मे माहम बेगह जो कि नव्वाबे ईशा[5] की आगा अनका थी, जीजी अनका जो मीर शम्सुद्दीन मुहम्मद गजनवी की पत्नी एव मीर्ज़ा की अनका थी मीर्ज़ा को उपर्युक्त बेगम[6] के घर मे लाई। बैरम खा तथा जो लोग साथ थे, उन सब ने कोरनिश की। मीर्ज़ा ने सब को सांत्वना दी। अनका[7] ने मीर्ज़ा की ओर से वार्ता की। तस्लीमो के उपरान्त खान को बैठने का आदेश हुआ। खान ने शाहजादे को गोद में लिया। जो लोग साथ थे उन्होने अभिवादन करके शाहजादे के चरणो का चुम्बन किया। दास भी उस समूह में सम्मिलित था। हम लोग एक पहर तक मीर्ज़ा की सेवा मे उपस्थित रहे। जो घोडा, सरोपा एव फरमान लाये थे, उन्हे प्रस्तुत किया। नव्वाब बैरम खा ने पूछा कि, "हमारे मीर्ज़ा कितने बडे हो गए ?" माहम बेगह ने निवेदन किया कि, "शाहजादे का जन्म अमरकोट में सोमवार की रात्रि में ६ तारीख को ९४६ हि० में हुआ था। इस समय तक ३ वर्ष ६ मास के हो गए है[8]।" हज़रत जन्नत आशियानी के हाथ की लिखी हुई भी यही तिथि मैंने काबुल में देखी थी। वहाँ से विदा होकर वह[9] अपने शिविर में पहुँचा।

१ डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार 'खलील, जमील' (पृ० ८२)।

२ डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार —"Other Diwans and Ahadis were also present" (पृ० ८२)।

३ अकबर नामा के अनुसार बैरम खा ने सर्व प्रथम अकबर से भेंट की।

४ खानज़ादा बेगम।

५ अकबर।

६ खानज़ादा बेगम।

७ डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार 'अनका' (पृ० ८३)।

८ अकबर के जन्म के विषय में अकबर नामा का अनुवाद देखिये।

९ बैरम खा।

बैरम खां की मीर्ज़ा सुलेमान से भेंट

(४७) क्योंकि मीर्ज़ा कामरान ने बैरम खां को इस बात की अनुमति दे दी थी कि वह मीर्ज़ा लोगों से भेंट करे अतः मीर्ज़ा सुलेमान को, जिसे किले के भीतर कासिम मुखलिस के घर में बन्दी बना दिया गया था, बाहर लाकर जलालुद्दीन बेग के उद्यान में, जो शहर आरा उद्यान के बगल में है, पहुँचाया गया। नव्वाब बैरम खां उस स्थान पर मीर्ज़ा सुलेमान की सेवा में उपस्थित हुआ और हज़रत पादशाह द्वारा भेजा हुआ सरोपा एवं फ़रमान प्रस्तुत किये और बूरनी[1] जौक घोड़े के विषय में निवेदन किया।

बैरम खां की यादगार नासिर से भेंट

(बैरम खां) विदा होकर दूसरे दिन सियाह सग के जलके[2] में पहुँचा। वहाँ मीर्ज़ा यादगार नासिर की, जो वक्कर में आया हुआ था, सेवा में उपस्थित हुआ। वह तीन पहर रात्रि तक मीर्ज़ा की सेवा में रहा। उसकी सेवा में अधिक रहने का कारण यह था कि उनमें परस्पर बड़ी घनिष्ठता थी[3]।

बैरम खां की काबुल से वापसी

कुछ दिन उपरान्त (मीर्ज़ा कामरान ने) शाह के फ़रमान का उत्तर एवं पत्र लिख कर नव्वाब बैरम खां को सौंप दिया। नव्वाब खुन्ज़ादा बेगम को अपनी ओर से दूत बना कर बैरम खां के साथ हज़रत पादशाह की सेवा में कन्धार भेजा। दारा बायज़ीद उस समय अपने भाई दरवेश बहराम सक्का की सेवा में गिरदौज में था[4]।

मीर्ज़ा कामरान का मीर्ज़ाओं के प्रति व्यवहार

जब काबुल में कन्धार के अवरोध, हज़रत पादशाह की सेना एवं किज़िलबाशों की कुमक के ज़ोर के समाचार काबुल में प्रसिद्ध हो गए तो सैनिक एवं प्रजाजन हज़रत पादशाह की सेवा में सम्मिलित होने की इच्छा करने लगे। मीर्ज़ा की सेना वाले असमंजस में पड़ गए। मीर्ज़ा कामरान ने अपने अमीरों से परामर्श किया कि, "मीर्ज़ा सुलेमान, मीर्ज़ा हिन्दाल तथा मीर्ज़ा उलुग, जो बन्दी हैं, के प्रति क्या व्यवहार करना चाहिये?" मुल्ला अब्दुल खालिक ने जो मीर्ज़ा कामरान (४८) का गुरु था एवं काबुल में जिसका उसकी शासन व्यवस्था में बड़ा हाथ था, निवेदन किया कि, "इन लोगों को घोड़ा, सरोपा एवं शपथ देकर मुक्त कर देना चाहिये।" मीर्ज़ा ने अपने हितैषियों के परामर्श के अनुसार मीर्ज़ा सुलेमान तथा मीर्ज़ा हिन्दाल को बन्दीगृह से निकाल कर एक घोड़ा तथा सरोपा देकर मुक्त कर दिया। मीर्ज़ा उलुग के विषय में आदेश हुआ कि, "उसकी प्रत्येक सप्ताह एक अमीर निगरानी करे।"

१ इसके पूर्व 'बूरनी छौक' लिखा है। इसका उल्लेख पूर्व में हो चुका है।
२ घास का मैदान। 'जलका' तथा 'जुल्गा' भी प्रयुक्त हुआ है।
३ डा० बनारसी प्रसाद ने "क्योंकि मीर्ज़ा कामरान... बड़ी घनिष्ठता थी" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया।
४ "गिरदौज में रखा गया" से तात्पर्य है।

मीर्ज़ा सुलेमान का काबुल पहुँचना

मीर्ज़ा सुलेमान की पत्नी हरम बेगम ने जवाहरात एवं सोना इत्यादि जो कुछ सम्भव हो सका, मीर्ज़ा के उच्च पदाधिकारियो को प्रदान किया और घूस द्वारा सबको उसका सहायक बना दिया। इन लोगो ने मिलकर एक मत होकर निवेदन किया कि, "मीर्ज़ा सुलेमान को बदख्शाँ की ओर विदा कर दिया जाय। यदि कभी कोई दुर्घटना पड गई तो बदख्शाँ पहुँच कर मीर्ज़ा से कुमक एव सेना लेकर काबुल पहुँचा जा सकेगा।" मीर्ज़ा को यह बात पसन्द आ गई कुछ दिन उपरान्त मीर्ज़ा सुलेमान को विदा कर दिया गया। हरम बेगम एव मीर्ज़ा इबराहीम को निगरानी में रख लिया। जब मीर्ज़ा (सुलेमान) काबुल से दो मील पर स्थित पायेमीनार नामक समृद्ध ग्राम मे पहुचा तो मीर्ज़ा कामरान ने मीर्ज़ा सुलेमान को विदा करने पर पश्चाताप करते हुए उसे बुलाने के लिए आदमी भेजा और कहलाया कि, "कुछ बाते मुझे स्वय कहनी थी, वह रह गई है अत उन्हे कहना आवश्यक है।" मीर्ज़ा सुलेमान समझ गया कि "मेरे विदा करने पर पश्चाताप कर रहा है', अत उसने लिखा कि, "क्योकि मैं एक शुभ मुहूर्त में निकला हूँ अत मेरा वापस आना उचित नही। यदि मौखिक बातो का सविस्तार वर्णन लिखकर मुहर लगा कर भेज दें तो आदेश का पालन करूँगा।" मीर्ज़ा सुलेमान वहाँ से रवाना होकर बदख्शाँ की ओर चल दिया। मीर्ज़ा कामरान ने पुन किसी को (४९) उसके पीछे भेजना उचित न समझा। मीर्ज़ा की पत्नी हरम बेगम एव मीर्ज़ा इबराहीम को भी विदा कर दिया।

उलुग मीर्ज़ा का हुमायू के पास प्रस्थान

उलुग मीर्ज़ा को शेर अफगन बेग एव फजायल बेग को सौंप दिया गया था कि एक-एक सप्ताह बारी बारी उसकी रक्षा करते रहे। कुछ दिन उपरान्त वे लोग आपस में मिल गए और मीर्ज़ा को लेकर गिरदीज के मार्ग से कन्धार भाग गए। मीर्ज़ा कामरान, मीर्ज़ा सुलेमान के वापस न आने और शेर अफगन इत्यादि के कन्धार भाग जाने से बडा भयभीत हुआ।

यादगार नासिर मीर्ज़ा का मीर्ज़ा कामरान की सेवा से पृथक् होना

वह इस कष्ट के निवारण की चिन्ता में व्यस्त था कि कुछ दिन उपरान्त मीर्ज़ा यादगार नासिर सैर के बहाने से पायेमीनार की ओर पहुँचा। सोने की नमाज के समय समाचार प्राप्त हुए कि, "मीर्ज़ा बदख्शाँ की ओर चल दिया है। (उसका विचार है कि) कूर के ग्रामो के समीप से गजब एव जमीन दावर के मार्ग से कन्धार पहुँच कर हजरत पादशाह के चरणो का चुम्बन करे।" मीर्ज़ा कामरान को यह समाचार सुन कर अत्यधिक कष्ट पहुँचा।

मीर्ज़ा हिन्दाल का हुमायू की ओर पलायन

वह इस बात का प्रयत्न करने लगा कि काबुल तथा बदख्शा के मध्य में एक सेना भेज दे जो या तो मीर्ज़ा को लौटा लाये और या उसे पराजित कर दे ताकि वह सेना सहित कन्धार न जा सके। अन्त मे मीर्ज़ा कामरान ने मीर्ज़ा हिन्दाल को इस आशय से नियुक्त किया कि वह उसके पीछे जाकर उसे लौटा लाये। मीर्ज़ा हिन्दाल जब कोतल मीनार पार कर चुका तो समाचार प्राप्त हुए कि वह भी मीर्ज़ा यादगार नासिर की भाँति कन्धार की ओर चल दिया है। मीर्ज़ा कामरान के भाग्य ने, इस कारण कि वह हजरत जहाँ आशियानी का विरोध कर रहा था, उसका साथ छोड दिया था अत वह जो कार्य भी करता, उससे उसे कोई भी लाभ न होता।

शेर

'जब मनुष्य का भाग्य अन्धकारमय हो जाता है,
तो जो कुछ वह करता है उससे उसे कोई लाभ नहीं होता।'

मीर्ज़ा हिन्दाल का हुमायूं के पास पहुँचना

जब मीर्ज़ा यादगार नासिर बदख़्शां पहुँच गया तो वह सेना वालों के घोड़ों को आराम देने एवं अन्य सैनिकों को अपने साथ एकत्र करने के लिये वहाँ कुछ दिन ठहर गया। मीर्ज़ा
(५०) हिन्दाल किसी अन्य बात में न फँसा और निरन्तर यात्रा करता हुआ कन्धार की ओर रवाना हो गया। क्योंकि मीर्ज़ा उलुग तथा उसके साथ वाले गिरदीज़ के मार्ग से कन्धार की ओर रवाना हुए थे, अतः वे अल्प समय में हज़रत पादशाह की सेवा में पहुँच गए और शाही कृपाओं द्वारा सम्मानित हुए। ज़मीनदावर का भूभाग मीर्ज़ा उलुग को प्रदान कर दिया गया। मीर्ज़ा हिन्दाल भी तीरी के मार्ग से पहुँचकर चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुआ और हज़रत पादशाह की सेना की संख्या नित्य-प्रति बढ़ने लगी।

मीर्ज़ा अस्करी की पराजय

इसके विपरीत किले वालों के कष्टों में वृद्धि होने लगी[1]। नव्वाब खुन्ज़ादा बेगम ने जो दूत बना कर भेजी गई थी, मीर्ज़ा को अत्यधिक उपदेश दिए और, किला समर्पित कर देने की शर्त पर संधि के लिये तैयार कर लिया। कन्धार का किला शाह के पुत्र एवं तुर्कमान अमीरों को सौंप दिया गया।

हुमायूं द्वारा कन्धार के किले पर अधिकार

कुछ समय उपरान्त शाह के पुत्र मीर्ज़ा मुराद की मृत्यु हो गई। हज़रत पादशाह के हितैषियों ने यही उचित समझा कि, शाह के अमीर लोगों को विदा करके कन्धार पर अधिकार जमा लिया जाय और ऊरक[2] इत्यादि को छोड़ कर काबुल की ओर प्रस्थान करें। शाह को कुछ इस प्रकार लिख दिया जाय कि, 'अभी तक गज़नी एवं काबुल प्राप्त नहीं हो सके हैं। कोई ऐसा स्थान न था, जहाँ हम अपने परिवार तथा असबाब को छोड़ सकते। इस कारण कन्धार को हमारे पास कुछ दिन तक उधार के रूप में रहने दिया जाय। आपके जो अमीर मेरी अनुमति बिना आपकी सेवा
(५१) में पहुँच गए हैं, वे जो कुछ कहें उस पर ध्यान न दिया जाय। हम उन्हीं शर्तों एवं प्रतिज्ञाओं तथा उसी निष्ठा का पालन कर रहे हैं जो हमारी भेंट के समय निश्चित हुई थी।" तदुपरान्त हिन्दाल मीर्ज़ा, उलुग मीर्ज़ा एवं समस्त ख़ान तथा सुल्तान लोग कन्धार के किले के द्वार पर पहुँच गए। क्योंकि किज़िलबाश अमीर कुमक हेतु नियुक्त किए गए थे और उन्हें यह आदेश न था कि वे हज़रत पादशाह के आदमियों से युद्ध करें, अतः वे लोग किले की दूसरी ओर से निकल कर शाह के शिविर की ओर चल दिए।

१ डा० बनारसी प्रसाद ने "उलुग मीर्ज़ा को शेर अफ़गन बेग... होने लगी" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया।

२ ऊरक, अथवा ऊरूक या उगरूक का अर्थ 'लश्करगाह' है। यहाँ भारी माल असबाब से तात्पर्य है।

हुमायूं का बैरम खां को कन्धार का क़िला प्रदान करना

शाह की ओर से जो अमीर लोग हज़रत पादशाह की सहायता हेतु नियुक्त हुए थे, और जिनमें से कुछ लोग अपनी इच्छा से सेवा के उद्देश्य से हज़रत पादशाह के चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुए, उनमें सीस्तान के हाकिम अहमद सुल्तान का भाई हुसेन कुली मीर्ज़ा शामलू था। हज़रत पादशाह ने उसे उसी दरबार में "मुहरदार" नियुक्त कर दिया। शाह कुली नारजी, महमूद मीर्ज़ा आल्ला बेगी शामलू ज़ैनुद्दीन सुल्तान का पुत्र और हज़रत पादशाह स्वयं कन्धार के अरक में पहुँचे। यह विजय ९६१ हि० (१५३४-३५ ई०) में प्राप्त हुई[1]। कुछ दिन उपरान्त कन्धार को नव्वाब बैरम ख़ा भारल्ल का प्रदान कर दिया गया।

(हज़रत पादशाह ने) कलात एवं आसपास के स्थान नव्वाब क़ासिम हुसेन ख़ा शैबानी को प्रदान कर दिए। ज़मीनदावर एवं उस क्षेत्र के स्थान मीर्ज़ा उलुग को, जो इससे पूर्व काबुल से मीर्ज़ा कामरान के पास से भाग आया था, प्रदान कर दिए गए। असबाब एवं परिजन मरियम मकानी को प्रदान करके कन्धार में छोड़ दिये और हज़रत पादशाह स्वयं समस्त विजयी सेना को लेकर काबुल की ओर रवाना हुए। मनइम बेग बदख़्शाँ में था। वह मीर्ज़ा यादगार नासिर के साथ हो लिया। कुछ दिन उपरान्त वे कन्धार पहुँचे। मीर्ज़ा (यादगार नासिर) के अमीरों ने परामर्श (५२) दिया कि कन्धार को बैरम ख़ा से ले लिया जाय। मीर्ज़ा ने यह बात स्वीकार न की। जो मीर्ज़ा एवं अमीर लोग काबुल की ओर प्रस्थान करते समय हज़रत पादशाह की सेवा में थे, उनकी सूची इस प्रकार है[2] —

(१) मीर्ज़ा हिन्दाल
(२) मीर्ज़ा उलुग
(३) मीर्ज़ा अस्करी
(४) ख़्वाजा मुअज़्ज़म
(५) क़ासिम हुसेन सुल्तान शैबानी
(६) शेर अफ़गन वल्द कूच बेग
(७) मुईद बेग दूल्दी
(८) फ़ज़ाएल बेग
(९) इस्माईल बेग
(१०) मीर सैयिद बरका
(११) आक़िल सुल्तान
(१२) हैदर सुल्तान शैबानी
(१३) अली क़ुली तथा बहादुर, हैदर सुल्तान के पुत्र
(१४) हुसेन क़ुली सुल्तान, अहमद सुल्तान शामलू का भाई

१ यह विजय ९५२ हि० (१५४५ ई०) में प्राप्त हुई। बृहस्पतिवार २५ जमादि-उल आख़िर ९५२ हि० (३ सितम्बर १५४५ ई०) को मीर्ज़ा अस्करी कन्धार के क़िले के बाहर निकला। (अकबर नामा, प्रकाशित पृ० २३५, हिन्दी अनुवाद पृ० १८८)।

२ डा० बनारसी प्रसाद ने यह सूची अपने अनुवाद में नहीं प्रकाशित की है।

(१५) शाह कुली बेग, नारजी सुल्तान का सम्बन्धी
(१६) हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी
(१७) मकसूद बेग आख्ता बेगी वल्द जैनुद्दीन सुल्तान शामलू
(१८) मुल्ला अब्दुल बाकी सद्र तुर्किस्तानी,
(१९) मीर नूरुद्दीन मुहम्मद तरखान
(२०) काजी अहमद, लश्कर का काजी
(२१) ख्वाजा जलाल महमूद ओभी
(२२) चपाई[1] उज़बेक
(२३) इबराहीम ईशक आगा
(२४) मुहम्मद कासिम मौजी मीर बख्शी
(२५) ख्वाजा रशीदी दीवान
(२६) बाबा दोस्त बख्शी
(२७) मुहम्मद अली मीर खाका जो बख्शी था
(२८) साकी तूक बेगी
(२९) शेख बहलूल चोली
(३०) नजर शेख चोली
(३१) मीर्ज़ा कुली चोली
(३२) इब्राहिम बेग वल्द बाबा बेग जलायर
(३३) सुलेमान कुली वल्द शेख अली जलायर
(३४) तूलक कूची[2]
(३५) अता बेग, तूलक कूची का भाई
(३६) दरवेश मुहम्मद खल्ज, बुस्त के किले का हाकिम
(३७) अली दोस्त यसावल वल्द हसन अली कुर्द
(५३) (३८) हसन अली ईशक आगा
(३९) सुल्तान मुहम्मद करावल जिसकी उपाधि बकबक थी
(४०) सुल्तान महम्मद काने लाल
(४१) महर मुहम्मद कराकूज
(४२) मुल्ला असद मुशरिफ
(४३) मेहतर वासिल
(४४) मेहतर वकीला
(४५) सैयिद आरिफ तूशकची
(४६) मेहतर सक्काई जिसकी उपाधि फरहाद खा थी
(४७) मेहतर अनीस खज़ीना दार

१ प्रकाशित पुस्तक में 'चगनाई ऊज़बेक'।
२ 'कूरची' से तात्पर्य है।

(४८) मेहतर सभाका[1] रिकाबदार

(४९) मेहतर चोली फर्राश जिसकी जबान[2] में प्रथम सभा में शाह ने हज़रत पादशाह से सिफारिश की थी और जो शाह के विश्वस्त सेवकों में से था

(५०) समुन्दर

(५१) शाह वली बकावल

(५२) ख्वाजा अब्दुल मजीद[3] मुशरिफे बावर्चीखाना जो हिन्दुस्तान में आसिफ खाँ की उपाधि द्वारा सुशोभित हुआ

(५३) कोमश

(५४) कोचक

(५५) अशरफ मलकही[4]

(५६) मुहिब सरताही

(५७) मेहतर बाबा जान फर्राश,

(५८) मेहतर जौहर आफ़ताबची

(५९) मेहतर रफीक तूशक्ची

(६०) दीवान सिलहदार

(६१) मेहतर हरिया आबदार

(६२) बायजीद करनाई

(६३) ईरज

(६४) तरसून[5] बरलास

(६५) शाह कुली मीर्ज़ा अस्करी

(६६) बेग मुहम्मद आखनजी, मुहम्मद कुली आखनजी का तहवीलदार

(६७) गुलाम अली शश-अगश्त

(६८) सुम्बुल मीर हज़ार जिसे सफ्दर खाँ की उपाधि प्राप्त हुई

(६९) मेहतर आतश

(७०) पहलवान मुहिब सफ, कन्धार का कातवाल

(७१) ख्वाजा अम्बर।

इनके अतिरिक्त छोटे छोटे बेगों एवं मक्का जवानों का समूह जिनकी संख्या लगभग २,००० थी हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित थे।

हुमायूं का काबुल के समीप पहुँचना

(५४) जब हज़रत पादशाह काबुल की ओर रवाना हुए तो अल्प समय में दोस्त अली के यूरत[6]

१ पूर्व में 'सबीहा'।
२ प्रकाशित में 'जेफ़ान'।
३ इसे 'ख्वाजा मुहम्मद' भी पढ़ा जा सकता है।
४ यह नाम स्पष्ट नहीं।
५ पूर्व में 'तरशुन' बेग।
६ मंज़िल, पड़ाव।

जो पगमान एवं अरकन्दी के समीप स्थित है और काबुल के ग्रामों में से एक है, पड़ाव किया[1]। यह समाचार मीर्ज़ा कामरान को प्राप्त हुए। क़ासिम बरलास उस समय काबुल का हाकिम था। उसे बुला कर उसने करावली[2] हेतु नियुक्त किया। क़ासिम मुख्लिस तुरबती को, जो मीर्ज़ा कामरान का मीर आतश था, आदेश हुआ कि तोपख़ाने को दौरी नामक जलके में, जो बाबूस बेग के निकट था[3], पहुँचा दें। जो सैनिक तथा आदमी[4] काबुल के किले के बाहर एवं आसपास थे उनके विषय में आदेश हुआ कि सबको किले में ले आया जाय। इन बातों की पूर्ण रूप से व्यवस्था हो जाने के उपरान्त मीर्ज़ा कामरान स्वयं काबुल के किले से निकलकर बाबस बेग के घर के समक्ष उतरा। बख़्शी लोगों ने सेना के मध्य भाग, अग्र भाग, दायें एवं बायें भाग को सुव्यवस्थित करके विभिन्न स्थानों पर नियुक्त कर दिया। दूसरे दिन मीर्ज़ा ने सवार होकर लश्कर का निरीक्षण किया। निरीक्षण के समय लगभग ४०००, ५००० अश्वारोही, जो पूर्ण रूप से सशस्त्र थे, और जिनके समान सैनिक कम ही पादशाहों के लश्कर में होंगे, निकले। सम्मानित वक़्तिया ने उनके नाम पुनः पंजिकाओं में लिखे। प्रत्येक अपने अपने स्थान पर नियुक्त हो गया। दूसरे दिन क़ासिम बरलास, जो करावली के उद्देश्य से गया था, मीर्ज़ा कामरान के शिविर में पहुँचा। हज़रत पादशाह के शेख अली के यूरत पहुँचने के समाचार की पुष्टि हो गई।

मीर्ज़ा कामरान की युद्ध हेतु तैयारी

गिरदीज़[5], नग्ज़ तथा बगस शाह वीरदी ब्यात को प्रदान कर दिये गए थे। काबुल की आईनबन्दी के समय ईश्वर भक्ति के भाव से प्रेरित होकर वह सक्का हो गया और सेना का कार्य त्याग कर अपनी उपाधि बहराम सक्का रख ली। उसने एक दीवान की रचना की है जिसे सर्वसाधारण (५५) एवं विशेष व्यक्ति सभी बड़ा पसन्द करते हैं। फारसी के दीवान में उसने शाह क़ासिम अनवार[6] तथा तुर्की के दीवान में शाह नमीमी[7] का अनुकरण किया है। (तदुपरान्त) वह तुर्किस्तान चला गया। उसके अधीन प्रान्त को उससे लेकर मीर्ज़ा ख़िज़्र ख़ाँ हज़ारा को प्रदान कर दिया गया ताकि वह कन्धार एवं ग़ज़नी के मार्ग की रक्षा करे। उसे[8] गूरबन्द, जहूहाक एवं बामियान भी जो काबुल की विलायत के भाग हैं, बदले में दे दिए गए थे। जब दौरी के जलके में वह मीर्ज़ा कामरान की सेवा में उपस्थित हुआ

१ देखिये अकबर नामा भाग १, पृ० २४३, हिन्दी अनुवाद पूर्व पृ० १६४ १६५।
२ शत्रुओं का (हुमायूं का) पता लगाने।
३ घर के निकट से तात्पर्य है।
४ प्रकाशित पोथी में 'सिपाही व मर्दुम' किन्तु यह सम्भवतः 'माही व मर्दुम (परिवार एवं आदमी)' है।
५ डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में 'गिरदीज़' नहीं है (पृ० ८८)।
६ क़ासिम अनवार मैयिद मुईनुद्दीन अली क़ासिम अनवार फ़ारसी के प्रसिद्ध सूफ़ी कवि हुये हैं। अपनी युवावस्था में शेख सद्रुद्दीन मूसा अर्दबेली के प्रभाव में आकर उन्होंने तसव्वुफ़ का गूढ़ अध्ययन किया। तदुपरान्त वे गीलान पहुँचे। वहाँ उन्हें अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त हो गई। तत्पश्चात् वे ख़ुरासान पहुँचे। जब वे हिरात में थे तो वे इतने अधिक प्रसिद्ध हो गये कि मीर्ज़ा शाहरुख़ को उन्हें राजधानी से निकल जाने का आदेश देना पड़ा। मीर्ज़ा शाहरुख़ के पुत्र बाईसुंगर ने उन्हें पुनः हिरात में बुलवा लिया। उनकी मृत्यु ८३५ हि० (१४३१ ई०) में जाम के ख़रजर्द नामक ग्राम में, जो हिरात के समीप है, हुई।
७ डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार 'शाह नसीमी' (पृ० ८८)।
८ सम्भवतः 'बहराम'।

तो मीर्ज़ा ने आदेश दिया कि वह सेना के सुव्यवस्थित होने तक प्रतीक्षा करे और कूरबन्द[1] न जाय। बाद मे चला जाय।

दास उस समय किसी की सेवा मे न था। अपने भाई सक्का की सेवा मे रहता था[2]। इस सेना में साथ था। दूसरे दिन अब्दुल्लाह नामक जमील बेग का खानाजाद आया और हज़रत पादशाह का फरमान, जो उन्होंने शेख अली के यूर्त से लिखा था, अपने साथ लाया[3]।

जमील बेग का हुमायूं के पास पहुँचना

जब यह समाचार फैल गए कि हज़रत पादशाह कन्धार से काबुल पहुँच गए हैं और यूर्त शेख अली में पड़ाव किए हुये है तो हसन दौला सुल्तान, जिसकी उपाधि आक सुल्तान थी और जो हज़रत फिरदौस मकानी के दामाद खिज्र ख्वाजा सुल्तान[4] का सम्बन्धी था और जिसे मीर्ज़ा कामरान ने अपना जामाता बनाकर गज़नी की विलायत प्रदान कर दी थी, का अतालीक जमील बेग बाबूस बेग का भाई, गज़नी से भाग कर हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ और बाबूस के अपराधों के लिए क्षमा याचना की। हज़रत पादशाह ने कहा, 'यदि वह मीर्ज़ा के अमीरों के आगमन के पूर्व आ जाय तो उसके प्राण एवं धन-सम्पत्ति को कोई हानि न पहुँचाई जायगी। यदि वह कुछ अमीरों के बाद आयगा तो उसकी हत्या न कराऊँगा। किन्तु उसकी धन-सम्पत्ति को न छोड़ूगा।" (५६) जमील ने कासिम मुखलिस मीर आतश के अपराधों को क्षमा करने के विषय में निवेदन किया। उसके लिए भी कृपा-युक्त फरमान प्रदान हुए। सैयिद अब्बास हिसार शादमान की विलायत से सम्बन्धित था। उस समय वह मीर्ज़ा कामरान का मीर अर्ज़ एवं विश्वासपात्र अमीर था। उसे भी कृपा-युक्त फरमान प्रदान हुआ। इन तीनों फरमानों को अब्दुल्लाह तुगलुकची, जिसका ऊपर उल्लेख हो चुका है लाया था।

बाबूस बेग तथा मीर्ज़ा कामरान के अन्य अमीरों का हुमायूं की सेवा में उपस्थित होना

एक पहर[5] रात्रि रह गई थी कि बाबूस ने शाह वीरदी को, जिससे उसकी बड़ी घनिष्ठता थी, अब्दुल्लाह के लाये हुए फरमानों सहित बुलवाया। सैयिद अब्बास एवं कासिम मुखलिस बाबूस बेग के खेमे में उपस्थित हुए और जो फरमान उनके नाम भेजे गये थे उनका ज्ञान प्राप्त किया। सब लोगों ने मिल कर निश्चय किया कि वे हज़रत पादशाह की सेवा मे चले जायें। प्रातःकाल की करावली

१ गूरबन्द।

२ "बदरॉ दरगाह दरॉ वक्त मुलाज़िमे कसे न बूद। दर मुलाज़िमते बिरादरे सक्का मी बूद"—डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है—"And in those days this humble one was not in the service of any body, but his brother Saqqa was serving in the army" (पृ० ८८)।

३ इन फ़रमानों का नीचे विवरण दिया गया है। वहाँ उसे 'अब्दुल्लाह तुगलुकची' लिखा गया है।

४ गुलबदन बेगम का पति।

५ डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार 'बगनशाही'। डा० बनारसी प्रसाद ने (secretly to Kabul) भी कोष्ठ में बढ़ा दिया है।

६ डा० बनारसी प्रसाद का इस स्थान का अनुवाद बड़ा संक्षिप्त है। मूल पुस्तक में "यक पास शब बूद" है। सम्भवतः इसका तात्पर्य यह है कि 'एक पहर रात रह गई थी'।

बाबूस बेग के सिपुर्द थी। हजरत पादशाह ख्वाजा बस्ता[1] नामक दर्रे से निकल कर अरबन्दी के समीप पड़ाव किए हुए थे। बाबूस प्रातःकाल अपनी सेना, शाह बीरदी ब्यात एवं दास बायजीद के साथ रवाना हुआ। जब हम दौरी नामक स्थान पर, जो उस समय कुर्बान करावल की जागीर में था, पहुँचे तो सूर्योदय के समय हजरत पादशाह के करावल दृष्टिगत हुए। हजरत पादशाह के लश्कर के अग्र भाग का एक अन्य दस्ता, जिसमें उलुग मीर्ज़ा, शेर अफगन वल्द कूच बेग, हाजी मुहम्मद मीरम बाबा कश्का, फज़ाएल बेग, नव्वाब मुनइम बेग वल्द मीरम बेग अन्देजानी का भाई, सैयिद बरका एवं खानों तथा मुल्तानों का एक अन्य समूह था, करावलों के पीछे पहुँच गया। बाबूस (५७) चिल्लाया कि, "कौन लोग आ रहे हैं और कहाँ जा रहे हैं?" उत्तर मिला कि, "हम लोग हजरत हुमायूँ पादशाह के आदमी हैं और मीर्ज़ा (कामरान) के विरुद्ध जा रहे हैं।" बाबूस ने उत्तर दिया कि, "क्या हमें हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित होने की अनुमति है?" उन लोगों ने उत्तर दिया कि, "क्यों नहीं।" बाबूस के आगमन से सब को विश्वास हो गया कि काबुल पर अधिकार प्राप्त हो जायगा। बाबूस तत्काल ख्वाजा बस्ता नामक दर्रे में हजरत पादशाह के चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। हजरत पादशाह ने उसे प्रोत्साहन दिया। वह मीर्ज़ा हिन्दाल की सेवा में उपस्थित हुआ।

जब हजरत पादशाह इशराक[2] की नमाज पढ़ चुके तो बाबूस ने निवेदन किया कि प्रतीक्षा करने का समय नहीं है। हजरत पादशाह को सवार हो जाना चाहिये। हजरत पादशाह घोड़ा मँगवा कर सवार हुए। लश्कर को प्रस्थान करने का आदेश हुआ। क्योंकि हैदर सुल्तान शैबानी की शेख अली के यूरत में मृत्यु हो गई थी और उसके पुत्र अली कुली एवं बहादुर अभी तक शोक सबंधी प्रथाओं को पूरा कर रहे थे (अली कुली उस समय सुफरची तथा बहादुर परवानची था), अतः हज़रत पादशाह ने सवार होते समय उन्हें बुलवा कर शाही कृपा-दृष्टि द्वारा सम्मानित किया और शोक-सम्बन्धी प्रथाओं का अन्त कराया।

हुमायूं का युद्ध हेतु अग्रसर होना

लश्कर ने करावल एवं हिरावल के (प्रस्थान-उपरान्त) सेना की पंक्तियाँ सुव्यवस्थित कीं और काबुल की ओर रवाना हुआ। हजरत पादशाह की सेना में तपे सुबुक[3] फैला था। अधिकांश लोग ऊँटों पर सवार थे[4]। जब वे करगा नामक स्थान के समीप पहुँच गए तो हजरत पादशाह की सेना एवं मीर्ज़ा कामरान की सेना में आधे कुरोह से अधिक दूरी न रह गई। हजरत महमूद, ख्वाजा अब्दुल हक, ख्वाजा दोस्त खावन्द एवं समस्त ख्वाजा लोग[5] जो उस समय काबुल में थे, हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुए और मीर्ज़ा कामरान ने जो प्रार्थनायें की थीं, उनके विषय

१ अकबर नामा भाग १ में 'ख्वाजा पुश्त', अकबर नामा भाग १, प्रकाशित पृ० २४३, हिन्दी अनुवाद पृ० १६४-१६५)।

२ सूर्योदय के बाद की नमाज़।

३ एक प्रकार का ज्वर जो महामारी के रूप में फैलता है।

४ डा० बनारसी प्रसाद ने "जब हजरत पादशाह ... सवार थे" तक का अनुवाद नहीं प्रकाशित कराया।

५ सूफी सन्त लोग।

(५८) में निवेदन किया। उनमें से कोई भी प्रार्थना स्वीकार न हुई। ख़्वाजा लोग लौट कर मीर्ज़ा कामरान की सेवा में पहुँचे। दोनो ओर से इस आशय से युद्ध स्थगित था कि सम्भव है कि संधि हो जाय।

संधि का प्रयत्न

हज़रत पादशाह बैठे हुए ख़्वाजा लोगो के उत्तर की प्रतीक्षा करते रहे। दूसरी बार जब ख़्वाजा लोगो ने हज़रत पादशाह की सेवा मे उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया तो उन लोगो ने बताया कि हज़रत पादशाह ने मीर्ज़ा कामरान को जो आदेश दिए थे उन्हे उसने स्वीकार न किया। मीर्ज़ा कामरान ने जो पुन प्रार्थना की थी उसे हज़रत पादशाह ने स्वीकार न किया और यह निश्चय हुआ कि "इस बार ख़्वाजा लोग जायें और यदि मीर्ज़ा आदेश स्वीकार न करे तो वे पुन वापस न आयें।"

मीर्ज़ा कामरान का बक्कर की ओर पलायन

अन्ततोगत्वा जब हज़रत पादशाह को यह ज्ञान हो गया कि उन्होने ख़्वाजा लोगो से जो कुछ कहा था, उसे मीर्ज़ा ने स्वीकार न किया तो वे सवार होकर मीर्ज़ा की सेना की ओर रवाना हुए। जब मीर्ज़ा की सेना संधि की ओर से निराश हो गई तो उनके दल के दल हज़रत पादशाह के चरणो का चुम्बन करने के उद्देश्य से रवाना होने लगे। अस्र की नमाज़ के समय से सायंकाल की नमाज़ के समय तक (यही क्रम चलता रहा)। मीर्ज़ा के साथ जो ५००० आदमी थे, उनमें से बुलबुल आफ्ताबची के अतिरिक्त कोई भी उसके साथ न रह गया। जब शाम हो गई तो मीर्ज़ा पलायन ही को ग़नीमत[1] समझ कर काबुल के अरक में प्रविष्ट हो गया और वहा से अपने पुत्र मीर्ज़ा इब्राहीम को लेकर बीनी हिसार के मार्ग से गज़नी की ओर चल दिया। वहाँ से वह बक्कर पहुँचा।

हुमायूं का काबुल के किले में प्रवेश तथा अकबर से भेंट

जब हज़रत पादशाह को यह समाचार प्राप्त हुए तो उन्होंने बाबूस को बुलवा कर आदेश दे दिया कि "तू नगर में जाकर ढिंढोरा पिटवा दे कि सिपाही इत्यादि लूट मार न करें"। यह विजय १० रमज़ान ९४२ हि० (३ मार्च १५३६ ई०) को[2] प्राप्त हुई। सोने की नमाज़ के समय हज़रत (५९) पादशाह काबुल के किले में पहुँचे। तदुपरान्त शाहज़ादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा को अनकायें हज़रत पादशाह की सेवा में लाईं। बहिनें एवं बेगमें तथा वहाँ के अन्य लोग, जिन्हें हज़रत पादशाह की दासता का सम्मान प्राप्त था, चरणो का चुम्बन करके सम्मानित हुए।

अमीरों का हुमायूं की सेवा में उपस्थित होना

दूसरे दिन वे लोग मीर्ज़ा कामरान के दीवानख़ाने के ख़रगाह में जो अरक में लगाया गया था पहुँचे। मीर्ज़ा के जो अमीर कल हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित होकर सम्मानित हुए थे और जो ख़ान लोग हज़रत पादशाह के साथ थे एवं मीर्ज़ा कामरान के अमीरों का अन्य समूह

१ जब कोई उत्तम राह न जाय तो ख़राब राह को ही चुनकर उस पर आचरण करना।

२ १२ रमज़ान ९५२ हि० (१७ नवम्बर १५४५ ई०) होना चाहिये, (अकबर नामा, भाग १, पृ० २४४, हिन्दी अनुवाद पूर्व पृ० ११७)।

जो हज़रत पादशाह की सेवा में न उपस्थित हो सका था, चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुए। वे नाना प्रकार की कृपाओं एवं आश्रय द्वारा सम्मानित किए गए। शीत ऋतु का शेष समय उन लोगों ने किले के भीतर हज़रत पादशाह के साथ व्यतीत किया।

मुईद बेग की मृत्यु

काबुल विजय को दस दिन, अपितु एक सप्ताह भी व्यतीत न हुआ था कि मुईद बेग दूल्दी की बुर्ज कासिम की हवेली में मृत्यु हो गई। समस्त सैनिक एवं प्रजा का यह मत था कि हुमायूँ के राज्य से झगड़े का अन्त हो गया और अब हिन्द शीघ्र विजय हो जायगा। हिन्दुस्तान की पराजय का कारण उसकी तथा मीर्ज़ाओं की वैमनस्यता थी। जिस समय वह[1] कन्धार के किले से निकल कर हज़रत पादशाह के चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुआ तो सभी लोग यही कहते थे कि "मनुष्यों में यदि किसी का शैतान कहा जा सकता है तो वह मुईद बेग ही है। सम्भव है कि मुनकिर नकीर[2] ने लोगों की बातों पर ध्यान न देकर परिचय प्राप्त कर लिया हो।"

अकबर का ख़तना

बहार के प्रारम्भ में हज़रत पादशाह ने कारखानों के असबाब उरता बाग में भिजवा दिए, अन्तःपुर की बेगमें भी इसी क्रम में अपने अपने उद्यानों में पहुँचीं। हज़रत पादशाह ने उरता बाग के (६०) ऐवान में पड़ाव किया। तदुपरान्त आदेश हुआ कि अमीर लोग चार बाग की आईन बन्दी करें। बेगमें एवं अमीरों की स्त्रियाँ चालीस दिन तक उरता बाग में आईन-बन्दी करती रहीं। उसी समय मरियम मकानी असबाब तथा परिजन एवं मीर्ज़ा यादगार नासिर सहित कन्धार से पधारीं। यह आईन-बन्दी शाहजादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा के ख़तने के जश्न हेतु की गई थी। उस समय मीर्ज़ा की अवस्था चार वर्ष की थी और वे पाँच वर्ष के न हुए थे[3]।

हुमायूँ द्वारा आनन्द मंगल

कुछ दिन उपरान्त हज़रत पादशाह ख़्वाजये रेगे रवाँ की सैर हेतु रवाना हुए। ऊपर की ओर दो दो आदमियों का मल्ल-युद्ध कराया गया। हज़रत पादशाह ने स्वयं इमाम कुली कूरची से मल्ल-युद्ध किया। मीर्ज़ा हिन्दाल एवं मीर्ज़ा यादगार नासिर ने आपस में मल्ल-युद्ध किया। अमीरों तथा सुल्तानों में से दो-दो आदमियों ने मल्ल-युद्ध किया। वहाँ से हज़रत पादशाह अरगवान[4]

१ "दर हीने कि ख़ुद रा अज़ किलये कन्धार अन्दाख़ता व पा बोस मुशर्रफ़ शुदम" का अर्थ हुआ कि "जिस समय मैं कन्धार के किले से निकल कर हज़रत पादशाह के चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुआ", किन्तु यहाँ तात्पर्य मुईद बेग से है अतः 'मैं' के स्थान पर अनुवाद में 'वह' रक्खा गया है।

२ दो फ़रिश्ते जिनके विषय में मुसलमानों का विश्वास है कि वे कब्र में मुर्दे को जिन्दा करके उन कार्यों के विषय में, जो उसने संसार में किये हैं प्रश्न करते हैं।

३ अकबर का जन्म १४ शाबान ९४९ हि० (२३ नवम्बर १५४२ ई०) को हुआ।

४ लाल फूल लाने वाले वृक्षों का उद्यान।

जार की सैर हेतु ख्वाजा सय्यारान[1] की ओर रवाना हुए[2]। आईन-बन्दी[3] ९५३ हि० (१५४६-४७ ई०) के प्रारम्भ में कराई गई।

चग़ताई सुल्तान की मृत्यु

चग़ताई सुल्तान एक मुग़ल सुल्तान था। उसकी सुन्दरता एवं उसके सौजन्य के कारण हज़रत पादशाह उसको हृदय से चाहते थे। मीर्ज़ा हिन्दाल तथा मीर्ज़ा यादगार उससे (इसी कारण) ईर्ष्या[4] रखते थे। उसके सौजन्य के कारण सब लोग उसे हृदय से चाहते थे। बहार के मौसम में उसकी मृत्यु हो गई। मीर्ज़ा लोग एवं समस्त अमीर उसकी अंत्येष्टि में उपस्थित थे। मीर भमानी मुग़बचे[5] ने तारीख़ की रचना की।

शेर

(६१) 'सुल्तान चग़ती[6] सुन्दरता के उद्यान का गुलाब था,
अचानक मृत्यु ने स्वर्ग की ओर उसका पथ प्रदर्शन किया।
बहार के मौसम में उसने इस उद्यान से प्रस्थान का सङ्कल्प किया,
हृदय कली की भांति उसके शोक में रक्त में डूब गया।
उसकी (मृत्यु की) तिथि मैंने दुखी बुलबुल से पूंछी,
उसने रोकर कहा, 'बाग़ से गुल निकल गया'[7]।"

मीर्ज़ा सुलेमान का हुमायूं की सेवा में उपस्थित न होना

हज़रत पादशाह ने कई बार नव्वाब मीर्ज़ा सुलेमान को, जो बदख़्शां में था, फ़रमान भेजे कि आकर काबुल में भेंट करे। वह हर बार वादा करके टालमटोल करता रहा और सेवा में उपस्थित न हुआ। इस विषय में उसके तग़ाई शाह क़ासिम ने तथा मीर्ज़ा अस्करी के कोका मुज़फ़्फ़र ने, जो दोनों काबुल से भाग गए थे, मीर्ज़ा सुलेमान को परामर्श दिया कि, "आप के काबुल पहुँचते ही आपसे बदख़्शां ले लिया जायगा और आपका बन्दी बना दिया जायगा।"

१ ख्वाजा सेह यारान।
२ डा० बनारसी प्रसाद ने 'अन्ततोगत्वा जब हज़रत पादशाह ख्वाजा सय्यारान की ओर रवाना हुये' तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।
३ डा० बनारसी प्रसाद ने इस शब्द का अनुवाद "illuminations" (प्रकाशन, प्रभासन, द्योतन) लिखा है किन्तु आईन बन्दी में हर प्रकार की सजावट सम्मिलित है केवल illuminations ही नहीं।
४ "इज़हारे रक़ाबत मी नमूदन्द"।
५ साक़ी का वह रूपवान् बालक जो मदिरा पिलाता है। डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार 'अमानी मुग़बचा'। पाद टिप्पणी में विद्वान् डा० साहब ने लिखा है कि उसकी मृत्यु १५७३ ई० में हुई, (पृ० ९०)।
६ चुग़ताई सुल्तान।
७ 'गुल अज़ बाग़ बिरूं शुद' "گل از باغ برون شد"। बाग़ के अक्षरों की संख्या १००३ है। इनमें से गुल के अक्षरों के ५० निकाल देने से ९५३ रह जाते हैं।

अध्याय २

९५३ हि० की घटनायें

मीर्ज़ा यादगार नासिर की हत्या

९५३ हि० के अन्त (१५४७ ई० के प्रारम्भ में) हज़रत पादशाह ने मीर्ज़ा यादगार नासिर के लगभग ३० अपराधों को लिखवाया।[1] इन अपराधों में एक अपराध यह था कि "चाम्पानीर में किले की विजय के उपरान्त हम खज़ाने में प्रविष्ट हो गये थे और यह आदेश दे दिया था कि कोई भी बिना आदेश वहाँ प्रविष्ट न हो। तुमने बिना आदेश के प्रविष्ट होकर बकावल द्वारा, जो हमारे लिए भोजन लाया था, कोरनिश भिजवाया। हमने खज़ाने में से हर प्रकार की वस्तु एक ख्वान में लगवाकर तुम्हारे पास आश[2] के रूप में भिजवाई। तुमने धृष्टतापूर्वक उसमें से एक मुज़फ्फरी ले ली और समस्त ख्वान को बकावल को दे दिया। यह भेंट शाही तौरे के अनुसार उद्दंडता थी।"

(६२) एक अपराध यह था कि, "बक्कर में मीर्ज़ा शाह हुसेन ने तुम्हारे पास सन्देश भेजा कि 'यदि तुम सेना तैयार करके पादशाह पर आक्रमण करो और उन्हें भगा दो तो मैं तुम्हें बक्कर दे दूँगा।' तुमने मूर्खतावश यह बात स्वीकार कर ली। तुम्हारी निष्ठुरता के कारण मुझे एराक जाकर तुर्कमानों का आभारी होना पड़ा और उनसे कुमक लेकर कन्धार एवं काबुल पर आक्रमण करना पड़ा।" इस प्रकार के अपराध लिखे गए थे। अन्त में यह निश्चय हुआ कि इस बार मीर्ज़ा को किसी प्रकार छोड़ा नहीं जा सकता। काबुल के हाकिम मुहम्मद अली तग़ाई को आदेश हुआ कि मीर्ज़ा की हत्या कर दी जाय। मुहम्मद अली ने कहा, 'मैंने अभी तक किसी गौरय्ये की भी हत्या नहीं की है, मीर्ज़ा नासिर की किस प्रकार हत्या करूँ?' मुनइम बेग ने निवेदन किया कि, मुहम्मद कासिम मौजी को आदेश दिया जाय।" जब कासिम मौजी को आदेश हुआ तो उसने उसी रात्रि में मीर्ज़ा की बाण द्वारा हत्या कर दी। कोल[3] की ओर अरक के द्वार के बराबर एक ऊँचाई थी। मीर्ज़ा की लाश वहीं दफन कर दी गई। कुछ समय उपरान्त (लाश को) वहाँ से निकाल कर कज़वीन में नासिर मीर्ज़ा के कब्रिस्तान में दफन कर दिया गया।

ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को हज़रत पादशाह का परामर्श

एक रात्रि में हज़रत पादशाह ने एक समूह के साथ उरता बाग़ के ऐवान में यूसुफी[4] खाई। उस गोष्ठी में ख्वाजा दोस्त खावन्द, मीर बरका, मुल्ला अब्दुल बाकी सद्र, करजा खान[5] एवं ख्वाजा कलाँ बेग के पुत्र मुसाहिब बेग एवं मुबारिज़ बेग, हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार, ख्वाजा

१ सूची तैयार कराई। इस घटना के लिये अकबर नामा का अनुवाद देखिये।

२ वह भोजन जो बादशाह लोग अपने खाने में से किसी अमीर को सम्मानित करने के लिये उपहार स्वरूप भेजते थे

३ डा० बनारसी प्रसाद ने इसे 'कोह (पर्वत)' पढ़ा है।

४ मूल में — 'हज़रत बजमये दर ऐवाने उरता बाग़ यूसुफी तनावुल फ़रमूदन्द", यूसुफी सम्भवत कोई नशे की वस्तु हो। डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद से 'उरता बाग़ यूसुफी' स्थान का नाम ज्ञात होता है —"One night H M held a dinner in the Avortah Bagh Yusufi" (पृ० ९३)।

५ मूल में 'जान'।

(६३) अय्यूब तथा बालू बेग उपस्थित थे। आधी रात्रि व्यतीत हो चुकी थी कि हजरत पादशाह तहारत[1] के लिए उठे। उनका पाँव लडखडा गया और वे थोडी देर तक ऐवान से पीठ को टेक कर खडे रहे। ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद मीर सामान ने निवेदन किया कि, "खेद है कि आप सरीखा उत्कृष्ट पादशाह ऐसी वस्तु का सेवन करे जिससे बालका के समान पाव लडखडाने लगे।" हज़रत पादशाह ने कहा 'धन्य है! अब फिर न खाऊँगा।" वे फिर ऐसी गोष्ठी मे न बैठे। प्रात काल मुल्ला अब्दुल बाकी तथा मीर बरका के पास शिकायत भेजी कि 'जलालुद्दीन महमूद ने जो यह बात हमसे कही वह तुम लोगों को कहनी चाहिये थी।" उस तिथि से जब तक हज़रत पादशाह जीवित रहे उन्होंने ऐसी वस्तु जिसमे नशा हो न खाई।[3] हजरत पादशाह के सौजन्य एव न्यायकारिता का अनुमान ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद के परामर्श से हो सकता है।

हुमायू का बदख्शा की ओर प्रस्थान

अन्ततोगत्वा जब यह ज्ञात हो गया कि मीर्ज़ा सुलैमान किसी प्रकार हज़रत पादशाह के चरणो का चुम्बन करने न आयेगा तो वे उसी वर्ष मिथुन राशि[4] में बदख्शाँ की ओर रवाना हुए। काबुल से निकल कर ख्वाजा रीवास मे पडाव किया। दूसरे दिन हज़रत ख्वाजा खान महमूद ने उसी पडाव पर पधार कर फातेहा पढा और हज़रत पादशाह को बदख्शाँ की ओर विदा कर दिया।

शाह रुस्तम की हत्या

शाह रुस्तम लग[5], शाह बुदाग तथा मस्ती फिराक बदख्शाँ चले जाना चाहते थे। शाह बुदाग को यक्का लोगों[6] ने छिपा दिया। शाह रुस्तम एव मस्ती फिराक को दौलत-खाने के समक्ष (६४) पहुँचाया गया। इस अपराध तथा उन अपराधों के कारण जो उन्होंने हिन्द में किए थे, हज़रत पादशाह ने पेशखाने से निकल कर एक बाण शाह रुस्तम की ओर चलाया और कहा "जो कोई मेरा मित्र हो वह इसकी हत्या कर दे।' ख्वाजा मुअज्जम तथा हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार ने, जो निकट थे, तलवार द्वारा उसकी हत्या कर दी। मस्ती फिराक के विषय मे आदेश हुआ कि उसे मीर्ज़ा यादगार के हाथी के पाव के नीचे फेंक दिया जाय। वह चिल्लाया कि "मेरी बगल मे कुरान शरीफ है। इसे ले लिया जाय।" हज़रत पादशाह ने आदेश दिया कि,'देखो वह सच बोलता है अथवा नही।" जब उसकी बगल में हाथ डाला गया तो कुरान शरीफ मिल गया। कुरान शरीफ के आशीर्वाद से उसे हत्या से मुक्ति मिल गई। हिन्दुस्तान की विजयोपरान्त कम्बर दीवाना ने बदायूँ में उसकी हत्या कर दी।

१ डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार 'हाथ धोने' किंतु तहारत में शौच, इस्तिंजा, स्नान इत्यादि सम्मिलित हैं। हाथ धोने को तहारत से पृथक् नहीं किया जा सकता किंतु उस समय हाथ धोने का कोई अवसर न था। सम्भवत यहा पेशाब करने से तात्पर्य है।

२ सम्भवत यह यूसुफ़ी के कुप्रभाव की ओर सकेत है।

३ सम्भवत लेखक ने अफ़ीम को नशे की वस्तुओं से पृथक कर दिया है।

४ अकबर नामा के अनुसार ९५३ हि० के प्रारम्भ (मार्च १५४६ ई०) में। (**अकबर नामा भाग १, पृ० २५१,** हिन्दी अनुवाद पृ० २०५)।

५ डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में 'लेकाह अथवा लेगाह' (पृ०६३)। हस्तलिपि में 'लग'।

६ डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार 'अहदी'।

इसके उपरान्त हजरत पादशाह ने ख्वाजा रीवाश से प्रस्थान करके करा बाग में पड़ाव किया। वहाँ से वे कूरबन्द[१] नदी के तट पर उतरे। मछली मारने वालों ने एकत्र होकर मछली का शिकार किया। वहाँ से प्रस्थान करके हजरत पादशाह ने हिन्दू कोह के दर्रे से होते हुए नए मार्ग[२] से अन्दराब में अली कुली अन्दराबी के चार बाग में पड़ाव किया। दर्रा पार करते समय थोड़ा बहुत रसूस[३] हुआ किन्तु कुशल रही।

शाह के दूत का आगमन

इसी वर्ष वलद बेग कूरची तकलू हजरत पादशाह के लिए शाह के पास से घोड़ा एवं सरोपा[४] लाया था। हजरत पादशाह ने काबुल के कोह दामन के ग्रामों में से इस्तालीफ[५] के उद्यान में खिलअत पहिना। वलद बेग के भाई वली कासिम ने कुछ कूरचियों, उदाहरणार्थ जाफर बेग, हसन बेग तथा तूगान बेग इत्यादि, सहित शाह के समक्ष तलवार चलाने का दावा किया था। शाह ने उन्हें वलद बेग को सौंप दिया और कहा, "जाकर मेरे भाई हुमायूँ पादशाह के सामने तलवार चलाओ। (६५) वे जिसके विषय में जो कुछ लिखेंगे उसके तलवार चलाने का हाल उनकी सिफारिश से ज्ञात हो जायगा।" जिस दिन हाजी मुहम्मद कोकी का मीर्ज़ा सुलेमान की सेना से अन्दराब में युद्ध हुआ उससे एक दिन पूर्व कूरचियों ने युद्ध किया। इन कूरचियों का सरदार मीर्ज़ा जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर का तगाई[६] ख्वाजा मुअज्जम था। कूरचियों ने मीर्ज़ा सुलेमान की सेना के अग्र भाग से कई बार युद्ध किया। कुछ लोग आहत हुए। बदख्शाँ की विजय उपरान्त हजरत पादशाह ने कूरचियों की सिफारिश करके विलायत जफर से विदा कर दिया। वलद बेग को इस्तालीफ नामक स्थान से, जिसका ऊपर उल्लेख हो चुका है, जब उसने घोड़ा प्रस्तुत कर दिया तो, पादशाहाना इनामों द्वारा सम्मानित करके विदा कर दिया।

मीर सैयिद अली एवं मुल्ला अब्दुस्समद को बुलाने को पत्र

उसके विदा होते समय उसे दो फरमान दिए गए। एक के द्वारा मीर सैयिद अली तथा मुल्ला अब्दुस्समद मुसव्विर[७] को बुलवाया गया था और एक अन्य काजी अली बख्शी के पिता मुल्ला कुतुबुद्दीन को भेजा गया था। मुल्ला किन्हीं आवश्यकताओं के कारण शाही सेवा में उपस्थित न हो

१ कूरबन्द काबुल के उत्तर में।

२ 'राहे नव'। सम्भवतः किसी स्थान से तात्पर्य नहीं।

३ "दर महल्ले गुज़श्तने कोतल ब कदरे रसूस शुद अम्मा ब खैर गुज़श्त"—इसमें रसूस शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं। वसूस अथवा किसी प्रकार डर जाना रसूस के स्थान पर पढ़ा जा सकता है किन्तु वाक्य में वह ठीक नहीं बैठता। डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है —"When they were crossing, the river rose a little but all passed off quietly" (पृ० ६४)।

४ खिलअत।

५ कोहे दामन के उत्तरी सिरे पर जहाँ फूलों की बहुतायत है।

६ मामा।

७ चित्रकार।

सका।[1] मीर सैयिद अली एवं मुल्ला अब्दुस्समद फरमान को पढ़ कर उसी दिन अपितु तत्काल शाही चरणों का चुम्बन करने के लिए रवाना हो गए। मुल्ला मुहम्मद शिरवानी एवं मुल्ला फख्र मुजल्लिद[2] भी उनके साथ हो लिये। जब वे कन्धार पहुँचे तो उनके प्रार्थना-पत्र काबुल में सम्मानित राजसिंहासन के पाये के समक्ष पहुँचे।

मीर सैयिद अली, मुल्ला अब्दुस्समद तथा फख्र मुजल्लिद का काबुल पहुँचना

ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद ओभी को, जिसे उस समय मीर सामान के पद से उन्नति देकर बख्शी बेगी बना दिया गया था, कन्धार के मार्ग में खतरा होने के कारण उन लोगों को काबुल (६६) लाने के लिए नियुक्त किया गया। हज़रत पादशाह ने मुल्ला महमूद शिरवानी को काबुल आने की अनुमति न दी, कारण कि उसे गणित का, जिसकी हज़रत पादशाह को आवश्यकता थी, अधिक ज्ञान न था। वह कन्धार में ठहर गया और बैरम खाँ का सेवक हो गया। मीर सैयिद अली, मुल्ला अब्दुस्समद तथा मुल्ला फख्र मुजल्लिद, बल्ख से पादशाह की सेना के लौटने के ४० दिन उपरान्त, ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद के साथ काबुल पहुँच कर हज़रत पादशाह के चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुए और नाना प्रकार की कृपाओं द्वारा प्रतिष्ठित किए गए।

मुल्ला दोस्त की चित्र-कला

उस युग में चित्रकारों में सर्वश्रेष्ठ मुल्ला दोस्त था। शाह[3] के मदिरापान से तौबा कर लेने के कारण वह उसके साथ न रह सका। वह बिना आज्ञा के मीर्ज़ा कामरान की सेवा में आ गया था। जिन लोगों को इस कला का ज्ञान था उनका मुल्ला दोस्त के विषय में मत था कि वह पर्वत तथा वृक्ष[4] मानी[5] से अच्छे बना लेता था। (ईश्वर को ही सब ज्ञान है)

मुल्ला फख्र मुजल्लिद की कला

मुल्ला फख्र मुजल्लिद ने सह्हाफी[6] के गुण के अतिरिक्त जिसका उसे बड़ा उत्तम ज्ञान था, चावल[7] पर एक अश्वारोही का चित्र खोदा था। (सवार की) जीन के समक्ष एक तब्ल बजाने

१ "न तवानिस्त कि पहरामे मुलाज़िमत बन्दद—सेवा का पेहराम (हाजियों का वस्त्र, दो चादरें जो बिना सिली हुई एक बाँधी तथा एक ओढ़ी जाती है) न बाँध सका" अर्थात् सेवा में उपस्थित न हो सका। डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है जो उचित नहीं —"could not adorn himself with the dress of honour" (पृ० ६५)।

२ जिल्दसाज़।

३ शाह तहमास्प।

४ लैंडस्केप अथवा भूदृश्य से तात्पर्य है।

५ ईरान का प्रसिद्ध चित्रकार जो Manes (मेन्स) कहलाता है। वह अर्दशेर के पुत्र शाहपुर के राज्य काल में लगभग २७७ ई० में हुआ है। वह उच्चकोटि का कलाकार होने के साथ-साथ एक धर्म का संस्थापक भी हुआ है।

६ जिल्दसाज़ी।

७ बिरिंज का अर्थ—'पीतल, ताँबा अथवा पित्तल, जस्ता, और ताँबे के योग से बनी हुई एक धातु' होता है। डा० बनारसी प्रसाद ने भी इस शब्द का अनुवाद 'पीतल' ही किया है —"He engraved on a sheet of brass a mounted soldier" (पृ० ६६)। किंतु पीतल के पत्तर पर सवार का चित्र खोदना कोई कमाल नहीं। बिरिंज का अर्थ चावल भी होता है और यहाँ चावल ही से तात्पर्य है। चावल पर चित्र बनाना एवं कुरान

इसके उपरान्त हज़रत पादशाह ने ख्वाजा रीवास से प्रस्थान करके करा बाग में पड़ाव किया। वहाँ से वे कूरबन्द[1] नदी के तट पर उतरे। मछली मारने वालों ने एकत्र होकर मछली का शिकार किया। वहाँ से प्रस्थान करके हज़रत पादशाह ने हिन्दू कोह के दर्रे से होते हुए नए मार्ग[2] से अन्दराब में अली कुली अन्दराबी के चार बाग में पड़ाव किया। दर्रा पार करते समय थोड़ा बहुत रसूस[3] हुआ किन्तु कुशल रही।

शाह के दूत का आगमन

इसी वर्ष वलद बेग कूर्ची तकलू हज़रत पादशाह के लिए शाह के पास से घोड़ा एवं सरापा[4] लाया था। हज़रत पादशाह ने काबुल के कोह दामन के ग्रामों में से इस्तालीफ़[5] के उद्यान में खिलअत पहिना। वलद बेग के भाई दरवेश कासिम ने कुछ कूरचियों, उदाहरणार्थ जाफ़र बेग, हसन बेग तथा तूगान बेग इत्यादि, सहित शाह के समक्ष तलवार चलाने का दावा किया था। शाह ने उन्हें वलद बेग को सौंप दिया और कहा, "जाकर मेरे भाई हुमायूँ पादशाह के सामने तलवार चलाओ। (६५) वे जिसके विषय में जो कुछ लिखेंगे उसके तलवार चलाने का हाल उनकी सिफारिश से ज्ञात हो जायगा।" जिस दिन हाजी मुहम्मद कोकी का मीर्ज़ा सुलेमान की सेना से अन्दराब में युद्ध हुआ उससे एक दिन पूर्व कूरचियों ने युद्ध किया। इन कूरचियों का सरदार मीर्ज़ा जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर का तगाई[6] ख्वाजा मुअज्ज़म था। कूरचियों ने मीर्ज़ा सुलेमान की सेना के अग्र भाग से कई बार युद्ध किया। कुछ लोग आहत हुए। बदख्शाँ की विजय उपरान्त हज़रत पादशाह ने कूरचियों की सिफारिश करके किलये जफर से विदा कर दिया। वलद बेग को इस्तालीफ नामक स्थान से, जिसका ऊपर उल्लेख हो चुका है, जब उसने घोड़ा प्रस्तुत कर दिया तो, पादशाहाना इनामों द्वारा सम्मानित करके विदा कर दिया।

मीर सैयिद अली एवं मुल्ला अब्दुस्समद को बुलाने को पत्र

उसके विदा होते समय उसे दो फ़रमान दिए गए। एक के द्वारा मीर सैयिद अली तथा मुल्ला अब्दुस्समद मुसव्विर[7] को बुलवाया गया था और एक अन्य काज़ी अली बख्शी के पिता मुल्ला कुतुबुद्दीन को भेजा गया था। मुल्ला किन्हीं आवश्यकताओं के कारण शाही सेवा में उपस्थित न हो

१ कूरबन्द काबुल के उत्तर में।

२ 'राहे नव'। सम्भवतः किसी स्थान से तात्पर्य नहीं।

३ "दर महल्ले गुज़श्तने कोतल व कदरे रसूस शुद अम्मा व खैर गुज़श्त"—इसमें रसूस शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं। वसूस अथवा किसी प्रकार डर जाना रसूस के स्थान पर पढ़ा जा सकता है किन्तु वाक्य में वह ठीक नहीं बैठता। डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है—"When they were crossing, the river rose a little but all passed off quietly" (पृ० ६४)।

४ ख़िलअत।

५ कोहे दामन के उत्तरी सिरे पर जहाँ फूलों की बहुतायत है।

६ मामा।

७ चित्रकार।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1 [illegible] —could [illegible] with the dews of [illegible]" [illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
5 [illegible]
6 [illegible]
7 [illegible]

इसके उपरान्त हज़रत पादशाह ने ख़्वाजा रीवास से प्रस्थान करके करा बाग में पड़ाव किया। वहाँ से वे कूरवन्द[1] नदी के तट पर उतरे। मछली मारने वालों ने एकत्र होकर मछली का शिकार किया। वहाँ से प्रस्थान करके हज़रत पादशाह ने हिन्दू कोह के दर्रे से होते हुए नए मार्ग[2] से अन्दराब से चली कुली अन्दराबी के चार बाग में पड़ाव किया। दर्रा पार करते समय थोड़ा बहुत रसूस[3] हुआ किन्तु कुशल रही।

शाह के दूत का आगमन

इसी वर्ष वलद बेग क़ूरची तकलू हज़रत पादशाह के लिए शाह के पास से घोड़ा एवं सरापा[4] लाया था। हज़रत पादशाह ने काबुल के कोह दामन के ग्रामों में से इस्तालीफ़[5] के उद्यान में खिलअत पहिना। वलद बेग के भाई दल्व क़ासिम ने कुछ क़ूरचियों, उदाहरणार्थ जाफ़र बेग, हसन बेग तथा तूग़ान बेग इत्यादि सहित शाह के समक्ष तलवार चलाने का दावा किया था। शाह ने उन्हें वलद बेग को सौंप दिया और कहा, "जाकर मेरे भाई हुमायूँ पादशाह के सामने तलवार चलाओ। (६५) वे जिसके विषय में जो कुछ लिखेंगे उसके तलवार चलाने का हाल उनकी सिफ़ारिश से ज्ञात हो जायगा।' जिस दिन हाजी मुहम्मद कोकी का मीर्ज़ा सुलेमान की सेना से अन्दराब में युद्ध हुआ उससे एक दिन पूर्व क़ूरचियों ने युद्ध किया। इन क़ूरचियों का सरदार मीर्ज़ा जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर का तग़ाई[6] ख़्वाजा मुअज़्ज़म था। क़ूरचियों ने मीर्ज़ा सुलेमान की सेना के अग्र भाग से कई बार युद्ध किया। कुछ लोग आहत हुए। बदख़्शाँ की विजय उपरान्त हज़रत पादशाह ने क़ूरचियों की सिफ़ारिश करके किलये ज़फ़र से विदा कर दिया। वलद बेग को इस्तालीफ़ नामक स्थान से, जिसका ऊपर उल्लेख हो चुका है, जब उसने घोड़ा प्रस्तुत कर दिया तो, पादशाहाना इनामों द्वारा सम्मानित करके विदा कर दिया।

मीर सैयिद अली एवं मुल्ला अब्दुस्समद को बुलाने का पत्र

उसके विदा होते समय दो फ़रमान दिए गए। एक के द्वारा मीर सैयिद अली तथा मुल्ला अब्दुस्समद मुसव्विर[7] को बुलवाया गया था और एक अन्य क़ाज़ी अली बख़्शी के पिता मुल्ला क़ुतुबुद्दीन को भेजा गया था। मुल्ला किन्हीं आवश्यकताओं के कारण शाही सेवा में उपस्थित न हो

१ कूरवन्द काबुल के उत्तर में।
२ 'राहे नव'। सम्भवतः किसी स्थान से तात्पर्य नहीं।
३ "दर महल्ले गुज़श्तने कोतल क़दरे रसूस शुद अम्मा ब ख़ैर गुज़श्त"—इसमें रसूस शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं। वसूस अथवा किसी प्रकार डर जाना रसूस के स्थान पर पढ़ा जा सकता है किन्तु वाक्य में वह ठीक नहीं बैठता। डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है —"When they were crossing, the river rose a little but all passed off quietly" (पृ० ६४)।
४ ख़िलअत।
५ कोहे दामन के उत्तरी सिरे पर जहाँ फूलों की बहुतायत है।
६ मामा।
७ चित्रकार।

सका।[1] मीर सैयिद अली एवं मुल्ला अब्दुस्समद पुरस्कार का पद कर उसी दिन अविलम्ब बादशाह के चरणों का चुम्बन करने के लिए रवाना हो गए। मुल्ला मुहम्मद सिन्वानी एवं मुल्ला फ़रुख़ मुजल्लिद[2] भी उनके साथ हो लिये। जब वे कन्धार पहुँचे तो उनके प्रार्थना-पत्र काबुल में सम्मानित राजसिंहासन के पाये के समक्ष पहुँचे।

मीर सैयिद अली, मुल्ला अब्दुस्समद तथा फ़रुख़ मुजल्लिद का काबुल पहुँचना

ख़्वाजा जलालुद्दीन महमूद ओमी को, जिसे उस समय मीर सामान के पद से उन्नति देकर बख़्शी बेगी बना दिया गया था, कन्धार के मार्ग में सुरक्षा होने के कारण उन लोगों को काबुल (६६) लाने के लिए नियुक्त किया गया। हज़रत बादशाह ने मुल्ला महमूद सिन्वानी को काबुल आने की अनुमति न दी, कारण कि उस गणित का जिसकी हज़रत बादशाह को आवश्यकता थी, अधिक ज्ञान न था। वह कन्धार में ठहर गया और बैरम ख़ाँ का सेवक हो गया। मीर सैयिद अली, मुल्ला अब्दुस्समद तथा मुल्ला फ़रुख़ मुजल्लिद, बल्ख़ से बादशाह की सेना के लौटने के ८० दिन उपरान्त, ख़्वाजा जलालुद्दीन महमूद के साथ काबुल पहुँच कर हज़रत बादशाह के चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुए और नाना प्रकार की कृपाओं द्वारा प्रतिष्ठित किए गए।

मुल्ला दोस्त की चित्र-कला

उस युग में चित्रकारों में सर्वश्रेष्ठ मुल्ला दोस्त था। शाह[3] के मदिरापान से नाता जोड़ लेने के कारण वह उनके साथ न रह सका। वह बिना आज्ञा के मीर्ज़ा कामरान की सेवा में आ गया था। जिन लोगों को इस कला का ज्ञान था उनका मुल्ला दोस्त के विषय में मत था कि वह पर्वत तथा वृक्ष[4] मानी[5] से अच्छे बना लेता था। (ईश्वर को ही सब ज्ञान है)

मुल्ला फ़रुख़ मुजल्लिद की कला

मुल्ला फ़रुख़ मुजल्लिद ने मस्हाफ़ी[6] के ग्रंथ के अतिरिक्त जिसका उस काल उत्तम ज्ञान था, चावल[7] पर एक अश्वारोही का चित्र बनाया था। (सवार की) जीन के समक्ष एक [illegible]

१ "ना सर्वानिस्त कि ख़िलअते [illegible] — मैला का पैराहन (हाशिये का कपड़ा, जो बिना किसी [illegible] एक बाजी तथा एक चोटी लगी है) न पहन सका" अर्थात् मैला ने [illegible] न हो सका। डा० बेनी प्रसाद ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है जो ठीक नहीं — 'could not adorn himself with the dress of honour" (पृ० ५५)।

२ जिल्दसाज़।

३ शाह तहमास्प।

४ शब्द का अर्थ पूर्णरूप से अस्पष्ट है।

५ ईरान का प्रसिद्ध चित्रकार जो Manes (मैनीज़) कहलाता है। [illegible] ई० में हुआ था। वह [illegible] है।

६ [illegible]।

७ बिरिंज का अर्थ—पीतल, [illegible] डा० बेनी प्रसाद ने भी [illegible] 'पीतल' ही किया है —"He engraved on a sheet of brass a mounted soldier" (पृ० ६६)। किन्तु पीतल के [illegible] चित्र [illegible]। बिरिंज का अर्थ चावल भी होता है और यही [illegible] से स्पष्ट है। चावल पर चित्र बनाना एक कुशल [illegible]

वाला और सवार के हाथ में एक पक्षी[1] बनाया था। उसने पोस्ते के दाने में २५ छेद कर दिए थे और सब में से चाँदी का तार पिरो दिया था। लोग उसका निरीक्षण करते समय चाँदी के तारों को अलग अलग गिन लेते थे।

शेख़ अबुल कासिम अस्तराबादी का आगमन

उसी वर्ष हज़रत पादशाह ने शेख अबुल कासिम अस्तराबादी के, जिसे गणित का बड़ा अच्छा ज्ञान था, बुलाने के लिए फरमान भेजा था। मुल्ला अब्दुस्समद तथा उसके साथियों के आगमन के कुछ दिन बाद वह अपने भाई सहित, जिसे दर्शन-शास्त्र[2] का उत्तम ज्ञान था, उपस्थित हुआ। हज़रत पादशाह ने शेख़ अबुल कासिम के प्रति अत्यधिक आदर-सम्मान प्रदर्शित किया कारण कि उन्होंने उसका शिष्य होना निश्चय कर लिया था। अन्त में हज़रत पादशाह ने जैसा निश्चय कर (६७) लिया था, उसी के अनुसार आचरण किया। दार्शनिक, सैनिकों के समूह में सम्मिलित हो गया और हिन्द में उत्तम जागीर द्वारा सम्मानित हुआ।

मीर अब्दुल करीम जफरी एवं मुल्ला बुर्ज अली

बल्ख के आक्रमण के पूर्व, मीर अब्दुल करीम जफरी[3], जिसे कीमिया का भी ज्ञान था, एवं मुल्ला बुर्ज अली, जो ज्योतिष से अवगत था, काबुल पहुँच कर बल्ख के आक्रमण हेतु जो सेना गई थी, उसके साथ साथ हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित थे। उन लोगों ने दरबार में मावराउन्नहर विजय के सम्बन्ध में कुछ बढ़ बढ़ कर बातें की थीं जो बाद में असत्य निकलीं। बल्ख की वापसी के उपरान्त मुल्ला बुर्ज अली का पता न चला कि वह कहाँ चला गया। मीर अब्दुल करीम बदख्शाँ में कुछ समय तक मीर्ज़ा सुलेमान की पत्नी हरम बेगम की सेवा में रहा। उसने वहाँ भी कुछ असत्य बातें कहीं जिनका बाद में पता चल गया। उसे बधवा कर कक्चा नदी में फिंकवा दिया। वह अपने आप को सैयिद कहता था। वह इधर उधर झूठ बकता फिरता था। झूठा, ईश्वर का शत्रु होता है। हरम बेगम ने इस शेर के अनुसार आचरण किया।

'तू उपकार कर और जल में डाल'।

शरीफ के वाक्य लिखना अभी तक प्रचलित है। अलीगढ़ विश्वविद्यालय में वहाँ के भूतपूर्व उप-कुलपति डा० जियाउद्दीन का चावल पर बना हुआ एक रंगीन चित्र अभी तक मौजूद है।

१ "तब्ल बाज़े दर पेशे ज़ीन व नानवरे दर दस्ते सवार"—डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है—"The drum was in front of the saddle, and the reins in the hands of the sawar"।

२ 'हिकमत' का अनुवाद डा० बनारसी प्रसाद ने Medicine किया है। यह भी अशुद्ध नहीं किन्तु प्रायः हिकमत का अर्थ दर्शन शास्त्र ही समझा जाता है।

३ जफर वेत्ता—हज़रत अली द्वारा ऊँट की खाल पर लिखे हुए एक लेख के अनुसार जिसमें भूत, वर्तमान एवं भविष्य की सभी घटनायें लिखी हैं, परोक्ष की बातें बताने की कला जफर कहलाती है। कुछ लोगों के अनुसार हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (शीओं के छठे इमाम, निधन ७६५ ई०) के नियमों के अनुसार भविष्य

मीर सैयिद अली, मुल्ला अब्दुस्समद शीरीं कलम एवं फ़क्र की कलाओं के नमूने

मीर सैयिद अली, मुल्ला अब्दुस्समद शीरीं कलम एवं फ़क्र ने इस बीच में जो जिल्द-बन्दी एवं कलात्मक वस्तुयें तैयार की थीं, हज़रत पादशाह की कीमिया सरीखी दृष्टि के समक्ष उन्हें प्रस्तुत किया गया। हज़रत पादशाह का यद्यपि काशगर के पादशाह नव्वाब रशीद खां[1] से साक्षात न था किन्तु वे उससे प्रभावित थे, अतः जो कुछ उन लोगों ने हज़रत पादशाह की सेवा में प्रस्तुत किया, वह उन्होंने रशीद खां को भेजना उचित समझ कर उसके पास भेज दिया। जो पत्र हज़रत पादशाह ने खान को सामान सहित काबुल से भेजा था, मुल्ला अब्दुस्समद शीरीं कलम ने ९९९ हि० (१५९०-९१ ई०)[2] में इस 'मुख्तसर' के लेखक बायज़ीद को दिया। लेखक उस पत्र को मूल रूप से इस (६८) "मुख्तसर" में उद्धृत करता है।

कलाकारों के सम्बन्ध में काशगर के नव्वाब रशीद खां को पत्र

इस युग के कलाकारों एवं अद्वितीय व्यक्तियों का एक समूह, जो एराक तथा खुरासान में मेरी सेवा में उपस्थित हुआ था और अपार कृपाओं द्वारा सम्मानित किया गया था, शव्वाल ९५९ हि० (सितम्बर-अक्तूबर १५५२ ई०) में मेरी सेवा में उपस्थित हुआ। वे इस समय पुनः नाना प्रकार की कृपाओं द्वारा सम्मानित किए गए। उन्हें दरबार में उनके समकालीनों की अपेक्षा सर्वदा अधिक सम्मानित किया जाता है। उनमें से सर्वप्रसिद्ध सैयिद, सर्वश्रेष्ठ तथा अद्वितीय मीर सैयिद अली मुसव्विर है। चित्र कला में वह अद्वितीय है। उसने[3] एक चौगान के खेल के मैदान का चित्र बनाया और उसमें दो अश्वारोही दिखाये। उनमें से एक सवार घोड़ा दौड़ाता हुआ आता है। एक सिरे पर दूसरा सवार खड़ा है। एक प्यादा उसके हाथ में चौगान[4] देता है। प्रत्येक बिरिंज के सिरे पर उसने दो चौगान के खम्भे[5] बनाये और बिरिंज के प्रत्येक कोने पर यह शेर लिख दिया —

शेर

'एक दाने के भीतर सैकड़ों खलिहान निकले,
पूरा संसार बाजरे के एक दाने के हृदय में निकला।'

नीचे "हस्ताक्षर" इस प्रकार है—"अल अब्द सैयिद अली, रजब ९५९ हि० (जून-जुलाई १५५२ ई०)।

इसके अतिरिक्त सर्वश्रेष्ठ एवं संसार में अद्वितीय मौलाना अब्दुस्समद शीरीं कलम मुसव्विर है जो अपने समस्त समकालीनों से बाज़ी ले गया है। उसने एक बिरिंज पर एक बड़े लम्बे चौड़े मैदान का चित्र बनाया जिसमें लोगों को चौगान खेलते दिखाया। इसकी एक ओर दो खम्भे और

१ मीर्ज़ा हैदर ने तारीखे रशीदी उसी को समर्पित की थी। उसे कला एवं साहित्य से बड़ी रुचि थी।
२ डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में ९९५ हि० (१५८७ ई०)।
३ "हर यक मैदाने चौगान बाज़ी साख्ता"। यक के बाद सम्भवतः बिरिंज छूटा हुआ है। डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में —"In one piece he has painted" (पृ० ६०)।
४ पोलो खेलने की हाकी।
५ गोल के खम्भों के समान।

वाला और सवार के हाथ मे एक पक्षी[1] बनाया था। उसने पोस्ते के दाने में २५ छेद कर दिए थे और सब में से चाँदी का तार पिरो दिया था। लोग उसका निरीक्षण करते समय चाँदी के तारों को अलग अलग गिन लेते थे।

शेख अबुल कासिम अस्तराबादी का आगमन

उसी वर्ष हजरत पादशाह ने शेख अबुल कासिम अस्तराबादी के, जिसे गणित का बड़ा अच्छा ज्ञान था, बुलाने के लिए फरमान भेजा था। मुल्ला मुहम्मद तथा उसके साथियों के आगमन के कुछ दिन बाद वह अपने भाई सहित जिसे दर्शन-शास्त्र[2] का उत्तम ज्ञान था, उपस्थित हुआ। हजरत पादशाह ने शेख अबुल कासिम के प्रति अत्यधिक आदर सम्मान प्रदर्शित किया कारण कि उन्होंने उसका शिष्य होना निश्चय कर लिया था। अन्त में हजरत पादशाह ने जैसा निश्चय कर (६७) लिया था, उसी के अनुसार आचरण किया। दार्शनिक, सैनिकों के समूह में सम्मिलित हो गया और हिन्द में उत्तम जागीर द्वारा सम्मानित हुआ।

मीर अब्दुल करीम जफरी एवं मुल्ला बुर्ज अली

बल्ख के आक्रमण के पूर्व, मीर अब्दुल करीम जफ़री[3], जिसे कीमिया का भी ज्ञान था, एवं मुल्ला बुर्ज अली, जो ज्योतिष से अवगत था, काबुल पहुँच कर बल्ख के आक्रमण हेतु जो सेना गई थी, उसके साथ-साथ हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित थे। उन लोगों ने दरबार में मावराउन्नहर विजय के सम्बन्ध में कुछ बढ बढ कर बातें की थीं जो बाद में असत्य निकली। बल्ख की वापसी के उपरान्त मुल्ला बुर्ज अली का पता न चला कि वह कहाँ चला गया। मीर अब्दुल करीम बदख्शाँ में कुछ समय तक मीर्जा सुलेमान की पत्नी हरम बेगम की सेवा में रहा। उसने वहाँ भी कुछ असत्य बातें कहीं जिनका बाद मे पता चल गया। उसे बधवा कर कक्चा नदी में फिकवा दिया। वह अपने आप को सैयिद कहता था। वह इधर उधर झूठ बकता फिरता था। झूठा, ईश्वर का शत्रु होता है। हरम बेगम ने इस शेर के अनुसार आचरण किया।

'तू उपकार कर और जल में डाल'।

शरीफ़ के वाक्य लिखना अभी तक प्रचलित है। अलीगढ़ विश्वविद्यालय में वहाँ के भूतपूर्व उप-कुलपति डा० जियाउद्दीन का चावल पर बना हुआ एक रंगीन चित्र अभी तक मौजूद है।

१ "तब्ल बाजे दर पेशे जीन व जानवरे दर दस्ते सवार"—डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है—"The drum was in front of the saddle, and the reins in the hands of the sawar"।

२ 'हिकमत' का अनुवाद डा० बनारसी प्रसाद ने Medicine किया है। यह भी अशुद्ध नहीं किन्तु प्राय. हिकमत का अर्थ दर्शन शास्त्र ही समझा जाता है।

३ जफ़र वेत्ता—हजरत अली द्वारा ऊँट की खाल पर लिखे हुए एक लेख के अनुसार जिसमें भूत, वर्तमान एवं भविष्य की सभी घटनायें लिखी हैं, परोक्ष की बातें बताने की कला जफ़र कहलाती है। कुछ लोगों के अनुसार हजरत इमाम जाफ़रे सादिक (शीओं के छठे इमाम, निधन ७६५ ई०) के नियमों के अनुसार भविष्य वाणी तथा तावीज इत्यादि लिखने की कला।

मीर सैयिद अली, मुल्ला अब्दुस्समद शीरीं क़लम एवं दूसरों की कलाओं के नमूने

मीर सैयिद अली, मुल्ला अब्दुस्समद शीरीं क़लम एवं दूसरों ने इस बीच में जो चित्रकारी एवं कलापूर्ण वस्तुयें तैयार की थीं, हज़रत बादशाह की कीमिया प्रभावी दृष्टि के समक्ष उन्हें प्रस्तुत किया गया। हज़रत बादशाह का यद्यपि काशग़र के बादशाह नव्वाब रशीद ख़ाँ[1] से परिचय न था किन्तु वे उनसे प्रभावित थे, अतः जो कुछ इन लोगों ने हज़रत बादशाह की सेवा में प्रस्तुत किया, वह उन्होंने रशीद ख़ाँ को भेजकर उचित मूल्य पर उनसे प्राप्त कर लिया। जो पत्र हज़रत बादशाह ने इन कलाकारों के सम्बन्ध में काबुल से भेजा था, मुल्ला अब्दुस्समद शीरीं क़लम ने ९७८ हि० (१५७०-७१ ई०)[2] में इस "मुरक्क़ा" के लेखक बायज़ीद को दिया। लेखक उस पत्र को पूरा का पूरा इस (६८) "मुरक्क़ा" में उद्धृत करता है।

कलाकारों के सम्बन्ध में काशग़र के नव्वाब रशीद ख़ाँ को पत्र

इस युग के कलाकारों एवं अद्वितीय व्यक्तियों का एक समूह, जो ईराक़ तथा ख़ुरासान से मेरी सेवा में उपस्थित हुआ था और बादशाह हुमायूँ द्वारा सम्मानित किया गया था, ९५९ हि० (सितम्बर-अक्टूबर १५५२ ई०) में मेरी सेवा में उपस्थित हुआ। वे इस समय पुनः नाना प्रकार की कृपाओं द्वारा सम्मानित किये गये। उन्हें दरबार में उनके समकालीनों की अपेक्षा सर्वदा अधिक सम्मानित किया जाता है। उनमें से सर्वप्रसिद्ध सैयिद सर्वश्रेष्ठ तथा अद्वितीय मीर सैयिद अली मुसव्विर हैं। चित्रकला में वह अद्वितीय है। उसने[3] एक चौगान के खेल के मैदान का चित्र बनाया और उसमें दो अश्वारोही दिखाये। उनमें से एक सवार घोड़ा दौड़ाता हुआ आता है। एक सिरे पर दूसरा सवार खड़ा है। एक प्यादा उसके हाथ में चौगान[4] देता है। प्रत्येक खिलाड़ी के सिरे पर उसने दो चौगान के बल्ले[5] बनाये और मैदान के प्रवेश करने पर यह शेर लिख दिया —

शेर

एक दाने के भीतर सैकड़ों खलिहान छिपे

पूरा संसार बाजरे के एक दाने के हृदय में छिपा है।

नीचे "हस्ताक्षर" इस प्रकार है—'अल अब्द मीर सैयिद अली, रजब ९५९ हि० (जून-जुलाई १५५२ ई०)।

उसके अतिरिक्त सर्वश्रेष्ठ एक व्यक्ति जो अद्वितीय ख़्वाजा अब्दुस्समद शीरीं क़लम मुसव्विर है जो अपने समस्त समकालीनों से बाज़ी ले गया है। उसने एक खशख़ाश पर एक बड़े लम्बे चौड़े मैदान का चित्र बनाया जिसमें लोगों को चौगान खेलते दिखाया। इसकी एक ओर दो घोड़े और

1. [illegible]
2. डा० [illegible] के अनुवाद में [illegible]।
3. [illegible] डा० [illegible] के अनुवाद में —"In one piece he has painted" (पृ० [illegible])।
4. गेंद खेलने का डंडा।
5. गेंद के बल्ले के समान।

दूसरी ओर दो खम्बे थे। उसमे सात अश्वारोही गेंद खेल रहे थे। पीछे पीछे प्यादे सवारो को (६९) चौगान देते जाते थे। मैदान के मध्य मे कबक की लकडी लगी थी।

एक बिरिंज पर उसने एक बडे सुन्दर तालार[१] का चित्र बनाया। तालार के भीतर दो आदमियो के चित्र बनाये जो हौज के उस ओर अपने सामने अगीठी रक्खे थे। इनमें से एक मुर्ग का कबाब तैयार करता था। तालार के पीछे चार आदमी खडे और तालार के पीछे चार बैठे हुए दिखाये गए थे। दो खडे हुए आदमियो के चित्र बने थे। ऊपर की ओर निकलने का स्थान एव कोठे के चक्कर मे एक विचित्र प्रवेश-स्थान था। हौज के भीतर एक नारगी थी।[२]

एक पोस्ते के दाने पर उसने एक सवार का चित्र बनाया था।

अन्य कलाकारो मे मौलाना फख्र सहहाफ है। उसने पोस्ते के एक दाने में २५ छेद किये।

अद्वितीय एव आश्चर्यजनक कलाकार उस्ताद वैस जरकश[३] ने सोने एव चाँदी के ऐसे (बारीक) तार तैयार किये है कि मुल्ला फख्र ने चादी के २५ तार पोस्ते के दाने के छेद से पिरो दिए। इन कलाकारो के कुछ नमूने भेजे जाते हैं।

जगिया का बनाया हुआ एक गहरे दौड का एक चित्र भेजा जाता है।[४] प्रतिष्ठित एव अपने युग के अद्वितीय मौलाना दोस्त मुहम्मद चित्रकार जो हमारा प्राचीन सेवक है और जो चित्रकारी में अपने युग के मानी एव सोना चढाने में अद्वितीय, तथा खते बरी[५] एव लिखने मे जिसके बराबर कोई अन्य नही है के कलम की चित्रकला का एक नमूना भेजा जाता है।

मीर सैयिद अली की कला के नमूने का एक पृष्ठ तथा मौलाना अब्दुस्समद की कला के नमूने का एक पृष्ठ, जिसने नवरोज का चित्र बनाया था मौलाना दरवेश मुहम्मद की चित्र-कला के नमूने का एक पृष्ठ, तथा मौलाना यूसुफ की चित्र कला के नमूने का एक पृष्ठ भेजा जाता है। ईश्वर ने चाहा तो इसके बाद कलाकारो की कलाओ एव हुनरमदो के हुनर के अद्वितीय नमूने भेजे जाते रहेंगे।

मीर्ज़ा सुलेमान की पराजय

(७०) मीर्ज़ा सुलेमान लगभग २० ००० सैनिक एव अस्त्र शस्त्र इत्यादि तैयार करके तीरे गरा पर, जो अन्दराब के अधीनस्थ एक स्थान है, उतर पडा और पक्तियाँ सुव्यवस्थित की।

१ एक प्रकार का लकडी का कमरा जो चार खम्भों पर टिका कर बनाया जाता था। साधारण कमरों को भी 'तालार' कहते है।

२ इस पैरे के वाक्य स्पष्ट नहीं है। डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद से भी कोई सहायता नहीं मिल सकी।

३ सोने का तार खींचने वाला।

४ यह वाक्य स्पष्ट नहीं।

५ यह शब्द स्पष्ट नहीं। खत्ते बरी अथवा खते बरी के नाम से कोई लिपि नहीं होती। यदि इसे 'खत बरी' अथवा 'खत बरी' पढा जाय तो भी कोई अर्थ नहीं निकलता। सामान्य रूप से किसी प्रकार की लिपि का उल्लेख समझना चाहिये। यदि बरी بری में बा ب और बढा दिया जाय तो खत्ते बाबरी بابری हो जायगा जो उस समय का प्रसिद्ध आविष्कार था।"

हज़रत पादशाह की सेना में भी लगभग ५-६ हज़ार व्यक्ति थे जिन्होंने पंक्तियां सुव्यवस्थित कीं। अभी हज़रत पादशाह सवार भी न हुए थे कि हाजी मुहम्मद सुल्तान बाबा कश्का एवं कुछ अन्य सुल्तान तथा अमीर और यक्का जवान जो कि अग्र भाग की सेना के सरदार थे मीर्ज़ा की सेना के एक बाज़ू की ओर बढ़े और अल्प समय में मीर्ज़ा की सेना को पराजित कर दिया। मीर्ज़ा थोड़े से आदमियों को लेकर नारीन, इश्किमीश तथा तालीकान के मार्ग से बदख़्शाँ के दर्रों की ओर रवाना हुआ। मीर्ज़ा बेग बरलास जो गूरी का हाकिम था, तथा कुछ अन्य लोग उदाहरणार्थ माऊम सुल्तान[1], जो कि कज़ाक सुल्तान था, मीर्ज़ा सुलैमान के अमीर तथा मुहम्मद कुली बरलास भी उसी मंज़िल पर हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुए और पादशाहाना कृपाओं द्वारा सम्मानित किए गए। लश्कर वालों ने घोड़े एवं अस्त्र शस्त्र इत्यादि पर अधिकार जमाकर बन्दियों को हज़रत के सदके में छोड़ दिया। किसी की हत्या न कराई। बायज़ीद ब्यात ने एक क़तार ऊँट असबाब सहित लूट में प्राप्त करके काबुल भेज दिये। हज़रत पादशाह के सेवकों में से मीरक हकिया के एक बाण लगा और उसकी मृत्यु हो गई।

हुमायूं की वापसी

(७१) दो दिन उपरान्त हज़रत पादशाह शाशान[2] दर्रे से ख़ुस्त घाटी में पहुँचे। कुछ दिन तक नानहाये ख़ुस्त के समक्ष गोष्ठी आयोजित किए रहे। उस घाटी के सिरे पर मुर्गाबी, चकार एवं मछली का शिकार करके वे लोग बरस्क की ओर रवाना हुए।[3] बरस्क पहुँच कर गौरय्ये के शिकार हेतु जाल लगाया गया।

गौरय्यों का जाल द्वारा शिकार

जाल द्वारा गौरय्ये के शिकार की यह विधि है —दर्रे के मध्य में दीवार बना दी जाती है। पर्वत के पार्श्वों में जो दीवार की ओर होते हैं दो आदमी हाथ में चादरें लेकर खड़े रहते हैं, एक इस पर्वत में और दूसरा उस पर्वत में। दीवार के उस ओर की गौरय्यों के झुंड के ठहरने का स्थान वहीं होता है। जब गौरय्ये वहां पहुँच जाती हैं तो दोनों आदमी जो खड़े होते हैं वे चादर हिलाते हैं। वे लोग जो दीवार के इस ओर सकरे मार्ग की तरफ बैठे होते हैं, जब चादर को घुमाते हुए देखते हैं तो एक साथ सकरे मार्ग की ओर खटखटाते हैं। गौरय्ये १०००-२००० के झुंड में होती हैं। कुछ निकल जाती हैं और कुछ गौरय्ये सकरे मार्ग में फस जाती हैं।

हुमायूं का किश्म में पहुँचना

बायज़ीद ब्यात उन दिनों में हुसेन कुली सुल्तान ख़ान मुहरदार के सेवकों में सम्मिलित था। हज़रत पादशाह ने भोजन मंगवाया। देग[4] बरतन तथा रकाब[5] आगे भेज दिए गए थे। नदी के तट का

१ अकबर नामा के अनुसार 'उवैस सुल्तान', देखिये अकबर नामा भाग १, पृ० २५२, हिन्दी अनुवाद पृ० २०७।
२ अकबर नामा में 'शाशान'।
३ डा० बनारसी प्रसाद ने "मीर्ज़ा सुलैमान ... रवाना हुए" तक का अनुवाद नहीं प्रकाशित किया है।
४ खाना पकाने के देग के प्रकार का कोई बरतन।
५ बावर्चीख़ाना, वह स्थान जहां भोजन बनता हो।

मार्ग जिधर से लश्कर जा रहा था, इतना सकरा था कि तवाची लोग देग करन तथा रकेब न ला सकते थे। बायजीद ने निवेदन किया कि, "चकोर, बटेर एवं मुर्गाबी के कबाब सुल्तान[1] के रकेब में तैयार हैं।" हजरत पादशाह ने कहा कि, "ले आओ।" भोजन के उपरान्त बायजीद को भी सरोपा प्रदान किया। तदुपरान्त वहाँ से फरखार पहुँच कर पडाव किया। वहाँ के मेवे खाये। दूसरे (७२) दिन कलावकान मे पडाव किया। इसके बाद वे किश्म पहुँचे। ३-४ मास किश्म में ठहरे रहे।

ईरानियों को दंड

खुसरा पादशाह जिसका दास कासिम चगी था शाह तहमास्प के पास से भाग कर चला आया था। जाहिरा उसने एक गोष्ठी में शाह की निन्दा की थी। लगभग १०-१२ कूरचियो ने शाह की सेवा मे तलवार चलाने का दावा किया था। हजरत शाह ने उन्हें हजरत पादशाह की सेवा में भेज दिया था कि जो कोई उनकी सेवा में अधिक योग्यता दिखाये, उसके विषय में हजरत पादशाह जो सच बात हो उसे शाह के पास लिख भेजें। इनमें से जाफर बेग, हुसेन बेग, तथा तूगान बेग, इन तीन व्यक्तियों ने किश्म के बाजार में खुसरो को तलवार के घाट उतार दिया। कुछ दिनों तक हजरत पादशाह ने इन तीनों व्यक्तियों को बन्दी रक्खा। कुछ दिन उपरान्त हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार ने इन लोगों के अपराध को क्षमा कर दिए जाने के विषय में सिफारिश की। हजरत पादशाह ने शाह की खातिर उन्हे क्षमा कर दिया।[2]

हुमायू का रुग्ण होना

इसके उपरान्त यह निश्चय हुआ कि हजरत पादशाह स्वयं किल्ये जफर में शीत ऋतु व्यतीत करें। आदेश हुआ कि सैनिकों को अनाज इत्यादि जिस चीज की आवश्यकता हो उसकी व्यवस्था कर लें और रहने के लिये स्थान इत्यादि का ठीक करे।[3] कुछ दिन उपरान्त हजरत पादशाह किल्ये जफर की ओर रवाना हो गए। जब वे किल्ये जफर एवं किश्म के नीचे शाखदान[4] नामक एक स्थान पर पहुँचे तो रुग्ण हो गए। इस कारण वे उस पडाव पर दो मास ठहरे रहे। एक मास तक वे रुग्ण रहे। उनकी रुग्णावस्था के कारण अन्य बाते ही प्रसिद्ध हो गईं। मीर्जा (७३) हिन्दाल जो रुस्ताक मे सेना के आगे था, लौट कर यसर के पुल पर, जो किल्ये जफर की खाई है, पहुँच चुका था किन्तु उसे पता चला कि हजरत पादशाह अच्छे हो गए। वह लज्जित हो कर लौट गया। वे पुनः रुस्ताक पहुँचे।

हुमायू के रुग्ण होने का कुप्रभाव

बाबूस, जिसके अधिकार मे तालीकान का किला था, एवं कुछ अन्य अमीर जिनको बदख्शाँ सौंप दिया गया था, आकर अन्दराब में एकत्र हो गए थे। मीर्जा सुलेमान के अमीर जो

१ हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार।
२ इसके बाद के एक वाक्य में से कुछ छूट गया है और वह स्पष्ट नहीं। उसका अनुवाद नहीं किया गया।
३ डा० बनारसी प्रसाद ने "तदुपरान्त वहाँ से... ठीक करे" का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।
४ डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में '[illegible]' ([illegible])।

इधर उधर भाग गए थे, सिर उठाने लगे। जब हज़रत पादशाह के स्वस्थ होने के समाचार शीघ्र ही सबको प्राप्त हो गए तो वे पुनः इधर उधर भाग गए। बाबूस तथा वे लोग जो एकत्र हुए थे, दरबार में उपस्थित हुए।[1] करजा खान तथा हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार ने इस परेशानी के समय अत्यधिक निष्ठा प्रदर्शित की। मीर्ज़ा अस्करी को सावधानी पूर्वक बन्दी बनाये रखा गया। उसी मंजिल से मुनइम बेग के भाई फज़ाएल बेग को काबुल की कुमक हेतु नियुक्त किया गया। मुल्ला बायज़ीद तबीब जो मीर्ज़ा, जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर का शिक्षक था, बदख्शाँ के अभियान में साथ था। उसने हज़रत पादशाह की बीमारी के समय उनकी बड़ी सेवा की। बीबी फातेमा ने भी, जो महल की उर्दूबेगी[2] थी, सेवा में कोई कमी न की। जब हज़रत पादशाह में थोड़ी बहुत ताकत आ गई तो उन्होंने पालकी में बैठ[3] कर किलये ज़फर की ओर प्रस्थान किया और वहाँ पहुँच कर पड़ाव किया। वे पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गए।

जाड़े के मध्य में हज़रत पादशाह की गोष्ठियों के लिए जलालुद्दीन महमूद ओबी ने, जो कि मीर बयूतात था, एक कानी[4] का निर्माण कराया। हज़रत पादशाह ने मनोरंजन (७४) हेतु ख्वाजा को आदेश दिया कि भोजन बनाने की सामग्री लाई जाय ताकि बुग़रा[5] पकाया जाय। ख्वाजा ने समस्त सामग्री एकत्र करके उपस्थित की। मीर अब्दुल हई, ख्वाजा हुसेन मर्वी, ख्वाजा अय्यूब, अबुल बरका, मीर अब्दुल्लाह, बख्शी एहसन, नज़र बेग तथा आरिफ बेग, जो हज़रत पादशाह के मुसाहिब थे, बुग़रा का मसाला साफ करने लगे। ख्वाजा अय्यूब के अंडकोश के बढ़ जाने का रोग था। वह दाल साफ कर रहा था। हज़रत पादशाह उससे जो कोई बात पूछते तो वह उसका उत्तर देता जाता था और कभी कभी अपने अंडकोश खुजलाता जाता था। हज़रत पादशाह ने अपनी नाज़ुक मिज़ाजी[6] के कारण ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को आदेश दिया कि "यह दाल ख्वाजा के पास से हटा ली जाय और दूसरी दाल तैयार की जाय।" हज़रत पादशाह महल के भीतर चले गए और यह आदेश दे गए कि खास का हिस्सा[7] भीतर भेज दिया जाय, और शेष (भोजन) अमीरों को बाँट दिया जाय। उन लोगों ने पादशाह के आदेश का पालन किया।

१ डा० बनारसी प्रसाद ने "उनकी रुग्णावस्था ...उपस्थित हुए" तक का अनुवाद नहीं किया है।

२ लश्कर की मुख्य सेविका।

३ "दर मिहफ़्फ़ा दर आमद, मिहफ़्फ़ा का अर्थ एक प्रकार की पालकी होता है। डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में —"When H. M recovered he held a banquet" (पृ० १००)।

४ कानी घर, सम्भवतः 'कान' के स्थान पर 'काह' पढ़ना उचित होगा, जिसका अर्थ घास फूस अथवा छप्पर का घर होगा। देखिये **अकबर नामा भाग १**, पृ० २५५, हिन्दी अनुवाद पूर्व पृ० २१०। डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार यह "कानी" खान रूपी अथवा Underground apartment (पृ० १००)।

५ विभिन्न वस्तुओं को मिलाकर बनाई गई खिचड़ी।

६ "हज़रत अज़ नज़ाकते कि दाश्तन्द"—डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है — "H. M very politely asked Jalaluddin " (पृ० १००)।

७ हज़रत पादशाह का हिस्सा।

ख्वाजा रशीदी की हत्या

(उसी वर्ष रमज़ान मास की रात्रि की घटना)

ख्वाजा मुअज्ज़म, करचा हुसेन वरद मर्दान बेग शाह इस्माईल हुसेन का जिलौदार वाशी[1] जो राम मीर्ज़ा का मीर आखूर वाशी था, उस समय से जब से वह कन्धार की कुमक हेतु नियुक्त हुआ था, इस समय तक हज़रत पादशाह की सेवा में बराबर रहा। उसका बड़ा भाई हमज़ा बेग, हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार का मुसाहिब था। वे तथा मीर मुहम्मद करावूज़ ख्वाजा रशीदी के घर में प्रविष्ट हो गए और जिस समय वह भोजन कर रहा था, तलवार द्वारा उसे परलोक पहुँचा दिया।[2] इस गोष्ठी में ख्वाजा अम्बिया ख्वाजा, कासिम व्यूनान, ख्वाजा अबुल कासिम मशहदी, असद मुशरिफ एवं अन्य लोग उपस्थित थे। उसी रात्रि में वे लोग भाग गए और काबुल की ओर (७५) चल दिए। उन लोगों ने शाह तहमास्प की पेशकश में से चत्र तथा एक बहुत बड़ा ख़ेमा, जो अन्य सामग्री सहित तख्ते सुलेमान में प्रस्तुत किए गए थे, किले के बाहर निकाल कर करांचा पुल के उस पार ले जाकर खुमलशान के समक्ष जो, कि किलये जफ़र का अरक है, एक उद्यान में लगवा दिया।

कूच बेग के पुत्र शेर अफ़गन का रुष्ट होना एवं उसे प्रोत्साहन

हज़रत पादशाह ने रमज़ान मास के बाद की शुभ ईद[3] उसी शुभ पड़ाव पर व्यतीत की। एक दिन उसी पड़ाव पर कूच बेग का पुत्र शेर अफ़गन दरीख़ाने[4] में नशे की अवस्था में प्रविष्ट हो गया। हज़रत पादशाह ने चीक[5] के पीछे से उसे देखा और उसके नशे में होने के विषय में अवगत हो गए। मेहतर वकीला द्वारा यह संदेश भेजा कि, "मुझे तेरे मदिरापान का ज्ञान हो गया। तेरे लिए यह आवश्यक है कि तू इस दशा में दरीख़ाने में प्रविष्ट न हो।" क्योंकि कूच बेग का पुत्र प्रतिष्ठित अमीर था अतः इस बात से रुष्ट होकर अपना जुलचा[6] उठा कर अपने डेरे की ओर चल दिया और कुछ दिन तक दरीख़ाने में न आया। हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार, जिससे उसकी बड़ी घनिष्ठता थी, उसे उपदेश देकर अपने साथ दरीख़ाने में लाया। हज़रत पादशाह ने चीक के पीछे से उसे दरीख़ाने में आते देख कर उसके लिए उलूश भिजवाया और कहलाया कि, "मीर्ज़ा कामरान ने मीर्ज़ा सुलेमान पर जब आक्रमण किया और तूने किलये ज़फ़र में बन्द होकर जो युद्ध किया उसके विषय में मुझे ज्ञात हुआ है। मैं तुझसे उसका सच सच हाल जानना चाहता हूँ।" हज़रत पादशाह अस्र की नमाज़ पढ़ कर निकले। जिस स्थान पर युद्ध हुआ था वह उस स्थान के समक्ष था। हज़रत पादशाह ने आदेश दिया कि, 'बताओ किस प्रकार युद्ध हुआ?" उसने निवे-

१ वह व्यक्ति जो पादशाहों तथा अमीरों के घोड़ों के साथ साथ रहता है।
२ अबुलफ़ज़ल ने उसकी हत्या के कारणों का सविस्तार उल्लेख किया है। (अकबर नामा भाग १, पृ० २६४, हिन्दी अनुवाद पूर्व पृ० २०९-२१०)।
३ १ शव्वाल ९५३ हि० (२५ नवम्बर १५४६)।
४ दरबार-कक्ष।
५ चिक़।
६ कालीन अथवा बिछौना इत्यादि से तात्पर्य है। इसे 'जीलूचा' भी लिखा गया है।

दन किया कि, "खिज्र ख्वाजा सुल्तान के सम्बन्धी इस्हाक सुल्तान ने एक बहुत बडी सेना सहित ककचा नदी पार करके इस चट्टान के समक्ष युद्ध किया। इस्हाक सुल्तान का (७६) घोडा उसे गिरा कर तेज़ी से भाग चुका था। इस्हाक सुल्तान पैदल चट्टान के नीचे आ गया था। किले के प्यादों ने उसे चारों ओर से घेर लिया था। मैं समझ गया कि जब तक उसे कुमक न पहुँचेगी वह मुक्त न होगा। मैं भी उसी मार्ग से जिससे कि वे लोग गए थे, किले के प्यादों तक पहुँच गया। सुल्तान के सेवकों ने घोडा खींच कर उसे सवार करा दिया। मैं उसको लेकर लौट आया।" हजरत पादशाह ने कहा, 'तेरे पिता पर ईश्वर की कृपा हो। तूने बडा ही महान् कार्य किया।" हजरत पादशाह का इन बातों से उद्देश्य यह था कि उसकी इच्छानुसार उसको सान्त्वना दी जाय।

शेर

'स्वामी की दया एवं क्षमा को तो देखो,
पाप दास करता है, और लज्जित वह होता है।'

इससे हजरत पादशाह की दया, कृपा एवं सौजन्य का अनुमान लगाया जा सकता है।

तदुपरान्त हजरत पादशाह ने उसे जहाक, बामियान, कहमर्द, यक्का उलग तथा ईमान एहशाम, जो उस क्षेत्र में थे, जागीर में प्रदान कर दिए और उसे इस बात का आश्वासन दिलाया कि जब वे काबुल पहुँचेंगे तो कूरबन्द को, जो उसके पिता के अधिकार में था, उसे प्रदान कर देंगे। घोडा तथा सरोपा देकर उसे विदा कर दिया।[1]

उस मंज़िल पर मेहतर वकीला तथा समुन्दर को हजरत पादशाह ने आदेश दिया कि "बायजीद से, जो उस समय सुल्तान हुसेन कुली मुहरदार की सेवा में था, कहो कि वह हमारी सेवा में क्यों नहीं आ जाता?" बायजीद ने निवेदन किया कि, 'मैंने ख़ुरासान में शाह[2] के लश्कर में हजरत पादशाह के चरण पकडे थे। उस समय से अब तक विजयी रिकाब के साथ हूँ और हजरत पादशाह के मुहर[3] की सेवा कर रहा हूँ। इस समय हजरत पादशाह ने जो अपनी सेवा का आदेश दिया इससे बडी निराशा हुई।"[4] हजरत पादशाह ने मेरे उत्तर को पसन्द किया और मेरी बडी प्रशंसा की। हुसेन कुली सुल्तान को मुझसे और भी स्नेह हो गया।

शिकारे तुस्कावल

(७७) हजरत पादशाह इस पडाव से शिकारे कहलम हेतु जिसे शिकारे तुस्कावल कहते[5] हैं

१ "ख्वाजा मुअज्जम, करचा हुसेन कन्द मर्दान बेग उसे विदा कर दिया" तक का अनुवाद डा० बनारसी प्रसाद ने प्रकाशित नहीं किया।
२ शाह तहमास्प।
३ मुहरदार से तात्पर्य है।
४ इसका तात्पर्य यह है कि "मैं तो आपकी सेवा कर ही रहा था, इस समय आपके आदेश से मुझे धक्का पहुँचा"।
५ देखिये **अकबर नामा** भाग १ पृ० २८५, (हिन्दी अनुवाद पूर्व पृ० २११)।
"नीम शब बूद कि व आ कोह कि तुस्कावल बूद रसीदन्द, सुबह बूद कि ब नौये आहू रेज़ कर्द, हेच यक रा फ़ुरसत तीर अन्दाख्तन न शुद, चुनांकि मर्दुम दस्त दराज़ कर्दा आहू रा ज़िन्दा मी गिरिफ़्तन्द"—इस वाक्य से यह पता चलता है कि तुस्कावल का अर्थ जानवर नहीं अपितु किसी प्रकार के शिकार का घेरा है।

और बदख्शा की भाषा मे नहलम कहते हैं रवाना हुए। हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार ने इस शिकार का नेतृत्व करके हज़रत पादशाह को ककचा नदी से पार कराया। आधी रात में वे उस पर्वत पर, जहाँ तुस्कावल था, पहुँच गए। प्रातःकाल मृग इस प्रकार भागे कि किसी को वाण चलाने का अवकाश न मिला और लोग हाथ बढा बढा कर मृगा के पाँव पकडने लगे। पर्वत इतना अधिक ढालू था कि इसका उल्लेख सम्भव नही। दास बायजीद ने भी इसी प्रकार एक मृग पकडा। एक पहर दिन चढ जाने के उपरान्त शिकार खेल कर हज़रत पादशाह किलये ज़फ़र की ओर चल दिए।

काबुल पर मीर्ज़ा कामरान का अधिकार

दूसरे दिन काबुल की ओर से समाचार प्राप्त हुए कि मीर्ज़ा कामरान वक्कर से शीघ्रातिशीघ्र बढता हुआ गजनी पहुँचा है। अब्दुर्रहमान कस्साब तथा अन्य कस्साबो ने मिलकर किले के भीतर से मीर्ज़ा कामरान को किले के ऊपर खीच लिया। गजनी के हाकिम जाहिद बेग को उसी रात्रि में किले के अरक से निकाल कर बन्दी बना लिया गया और काबुल ले जाकर तुफग का निशाना बना दिया गया। कुछ लोगो का मत यह है कि गजनी मे ही शहीद कर दिया गया। जब (मीर्ज़ा कामरान) प्रातःकाल ताकिया-शाज़ा के बाज़ार मे पहुँचा तो उसे समाचार प्राप्त हुए कि मुहम्मद अली तगाई, जो काबुल का हाकिम था, तरदी गाव के हम्माम में है। अली कुली लाल[1], जो मीर्ज़ा (कामरान) का एक कूरची था, हम्माम मे प्रविष्ट हो कर मीर को लुगी सहित बाहर ले आया। मीर्ज़ा ने (७८) उसकी हत्या करा दी। पहलवान गुलाम तनक्तार ने, जिसकी उपाधि उश्तर थी और जो आहिनी द्वार का रक्षक था, द्वार खोल कर मीर्ज़ा को किले के भीतर प्रविष्ट करा दिया। मीर्ज़ा कामरान ने ९५४ हि० के अन्त[2] (१५४७ ई० के अन्त) में वक्कर से पहुँच कर काबुल पर अधिकार जमा लिया।

मीर्ज़ा कामरान द्वारा अत्याचार

मीर्ज़ा कामरान ने अरक में पहुँच कर शाहज़ादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा एव उनके तगाई मुअज्ज़म सुल्तान का, जिसने ख्वाजा रशीदी की हत्या की थी, बन्दी बना लिया। फज़ाएल बेग, मेहतर वकीला एव मेहतर वासिल की आखो में नश्तर लगवा कर उन्हे अधा करा दिया। मुहम्मद कासिम मीर्ज़ा, जिसे हज़रत पादशाह कुमक हेतु नियुक्त कर गए थे, जाला की ओर भाग गया।

हुमायू की मीर्ज़ा सुलेमान से सधि

जब मीर्ज़ा (कामरान) के इन समाचारो की बेगमो एव अमीरो के, जो काबुल में थे, प्रार्थना-पत्रो द्वारा पुष्टि हो गई तो हज़रत पादशाह ने मीर असग़र मुशी को तत्काल बुलवा कर मीर्ज़ा सुलेमान को फरमान लिखवाया कि, "कुन्दुज के अतिरिक्त, जो मीर्ज़ा हिन्दाल की जागीर है, बदख्शाँ की समस्त विलायत तुझे प्रदान करता हूँ। क्योकि इस समय तुम्हे सकोच है अत जब सन्तुष्ट हो जाना तो काबुल में पहुँच कर सवा में उपस्थित होना।"

१ अकबर नामा, पृ० २५६ २५८ (प्रस्तुत अनुवाद पृ० २११ २१४) देखिये।
२ ९५३ हि० (१५४७ ई०) होना चाहिये।

प्रात काल हज़रत पादशाह किलये जफर से निकल कर काबुल की ओर चल दिए। कुछ दिन तक तालीकान में बरफ एव वर्षा के कारण ठहरे रहे। वहाँ से वे कुन्दुज़ की ओर रवाना हुए। कुछ दिन तक कुन्दुज में मीर्जा हिन्दाल के आतिथ्य के कारण मीर खुसरो शाह के उद्यान मे ठहरे रहे। ईदे कुर्बान[1] वही करके शेरतू दर्रे के मार्ग से काबुल की ओर रवाना हुए। बहार के प्रारम्भ (७९) में रेकक दर्रे से जो चारीक कार[2] के ऊपर स्थित है, ख्वाजा सय्यारान[3] मे पडाव किया। दूसरे दिन उस स्थान से शीघ्रातिशीघ्र बढते हुए काबुल के किले के समीप पहुँचे। उस रात्रि मे पुश्तये सियाह सग में ठहरे रहे।

शेर अफगन की हत्या

प्रात काल पोस्तीन दोजों[4] की ओर से होते हुए बीबी माहरू (नामक स्थान) को पार करके देहे अफगानान में, जहाँ एक मजार है जिसे बाबा शेर कहते हैं, पहुँच गए। शेर अफगन नमक हराम की उस समय जागीर कहमर्द में थी, और वह किलये जफर मे विदा होकर अपनी जागीर को चला गया था। जानी बेग ऊज़बेक ने, जिससे उसकी मित्रता थी, उसे शकाओ में डाल दिया। काबुल से मीर्जा कामरान ने भी उसे फरमान भेजा और उसे बहुत कुछ आश्वासन दिलाया। शैतान ने उसका गरीबान पकड कर उसे काबुल पहुँचा दिया। मीर्जा कामरान ने तुमन, तोग एव नक्कारा[5] देकर उसे अपनी ओर मिला लिया। वह तरदी गाव के हम्माम में नशे मे था, कि उसे हजरत पादशाह के बढने से आगमन के समाचार प्राप्त हुए। वह तत्काल हम्माम से निकल कर मीर्जा कामरान को सूचित किए बिना हजरत पादशाह से युद्ध हेतु रवाना हो गया। वह बाजार बाबा लूली में पहुँचा ही था कि उसके दुर्भाग्य मे उसकी पताका बाजार मे लकडी से टकरा कर टूट गई। जब वह बाबा शश पर के निकट हजरत पादशाह की सेना के अग्र भाग के समीप पहुँचा तो सैयिद अली कूरची ने मियान से तलवार निकाल कर उसपर आक्रमण कर दिया और उसे (८०) तत्काल बन्दी बनाकर हजरत पादशाह की सेवा में ले गया। करजा खा उससे रुष्ट होने के कारण उसे जीवित रहने का समय देना उचित न समझता था। हजरत पादशाह ने उन लोगो को, जो भाग्यशाली रिकाब के साथ थे, आदेश दिया कि उसे मार डाला जाय। क्षण भर में उस नमक हराम को परलोक पहुँचा दिया गया। उसके बन्दी बनाये जाने के विषय में उलुग मीर्जा के भाई शाह मीर्जा एव बाबूस के छोटे भाई जमील बेग मे वाद विवाद होने लगा। अन्ततोगत्वा सैनिकों की गवाही पर जमील बेग का प्रयत्न प्रमाणित हुआ।

हुमायूं द्वारा काबुल विजय का प्रयत्न

हजरत पादशाह ख्वाबाम के मार्ग से काबुल के किले की ओर रवाना हुए। हजरत की

१ १० जिलहिज्जा ९५३ हि० (१ फरवरी १५४७ ई०)।
२ अकबर नामा में 'चारीकारान'।
३ ख्वाजा सेह यारान, (अकबर नामा देखिये)।
४ पोस्तीन सीने वालों, स्थान का नाम है।
५ सम्मानी चिह्न।

सेना के अग्रभाग ने मीर्ज़ा के आदमियों से युद्ध किया। वे लोग स्यागान द्वार से शहर बन्द[१] में प्रविष्ट हो गए और युद्ध करते हुए किले के आहिनी द्वार के पास पहुँच गए। खिज्र ख़ाँ हज़ारा एवं कुछ अरगून अमीर, जो बक्खर से मीर्ज़ा (कामरान) के साथ आये थे, नदी के मार्ग द्वारा बागे शहर आरा के पीछे से हज़ारजात की ओर चल दिये।

हुमायूं द्वारा मोर्चों का वितरण

मीर्ज़ा कामरान को भी सूचना प्राप्त हो गई कि हज़रत पादशाह अदरानों में पहुँच गए और शेर अफ़गन की भी हत्या हो गई है। हज़रत पादशाह ने उकाबैन पर्वत पर पहुँच कर पड़ाव किया। किले के चारों ओर बारक द्वार[२] के आगे सैनिकों को मोर्चे बाँट दिए। आहिनी द्वार (मोर्चा) हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार एवं जमील बेग को प्राप्त हुआ। मोर्चे ठीक करते समय जमील बेग अपना सिर मोर्चे से निकाल कर अपना नाम बता रहा था कि किले के ऊपर से गोली आकर उसके मत्थे पर लगी और तत्काल उसकी मृत्यु हो गई। सब लोग अपने अपने मोर्चों (८१) में काम करते रहे। देहली द्वार की ओर का मोर्चा मीर्ज़ा हिन्दाल के सिपुर्द हुआ। खाना दश्ती की ओर का मोर्चा करजा खान तथा चावस को सौंपा गया। जल्का[३] की ओर का मोर्चा मुसाहिब बेग वल्द ख्वाजा कलाँ बेग उसके भाई मर्ज़ारिज बेग एवं हाजी मुहम्मद सुल्तान तथा खाना यदका को सौंपा गया। क्योंकि काल[४] की ओर कोई शरण का स्थान न था और शाही आदमियों में भी कोई ऐसा न रह गया था जिसे उस ओर मोर्चा दिया जा सकता तथा काल में जल भी न रहा था अतः प्रति दिन मीर्ज़ा कामरान के अश्वारोही उधर पहुँच कर हज़रत पादशाह के आदमियों से युद्ध करते थे।

मुहम्मद कासिम तथा मुहम्मद हुसेन का हुमायूं की सेवा में पहुँचना

मुहम्मद कासिम तथा मुहम्मद हुसेन, जो पहलवान दोस्त मीर बर[५] के भागिनेय थे, आहिनी द्वार एवं कासिम बरलास के घर के मध्य के बुर्ज से किले के बाहर कूद पड़े। क्योंकि बायजीद ब्यात उन दिनों हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार की सेवा में था और आहिनी द्वार की रक्षा किया करता था, अतः वह उन लोगों को अपने साथ लेकर उकाबैन में हज़रत पादशाह के चरणों का चुम्बन करने पहुँचा। उन लोगों की प्रथम सेवा यही थी।

मीर्ज़ा सजर का बन्दी बनाया जाना

मीर्ज़ा कामरान के आदमी जब जब बारक द्वार के बाहर आते थे, पादशाही आदमी उन्हें भगाते हुए ख्वाजा खिज्र के आबरू तक ले जाते थे। एक दिन सुल्तान जुनैद बरलास के पुत्र मीर्ज़ा सजर ने, जो किले में था आक्रमण किया। उसका घोड़ा उसके अधिकार में न रहा और वह बनफ़्शे के बाग के दर्रे में पहुँचा था कि चाकर अहमदार एवं कुछ लोगों ने निकल कर उसे

१ वह स्थान जो नगर की प्रतिरक्षा हेतु तैयार किया जाता है।
२ अकबर नामा के अनुसार 'यारक द्वार'।
३ मैदान।
४ झील।
५ नगरों का प्रबन्ध करने वाले।

(८२) घोड़े की लगाम पकड़ ली और हज़रत पादशाह की सेवा में पर्वत में पहुँचा दिया। उसे वन्दी वना दिया गया। वह लाल रंग के घोड़े पर सवार था जिसे मीर्ज़ा यादगार नासिर कन्धार से लाया था। मीर्ज़ा यादगार नासिर की हत्या हो जाने के उपरान्त उसने उसे मीर्ज़ा के आदमियों से क्रय कर लिया था। हज़रत पादशाह ने उसे ख्वाजा कला वेग के अलमदार[1] कोचक को जो उस समय करजा खान का सेवक था प्रदान कर दिया।

शेर अली की हत्या

दूसरे दिन शेर अली, जो इससे पूर्व मीर्ज़ा यादगार नासिर का सेवक था, किले से वाहर निकला। घोर युद्ध हुआ यहां तक कि वावा शम्मू के मज़ार तक पादशाही आदमियों को भगा दिया गया। ताश वक्स ने, जो मीर्ज़ा यादगार नासिर के तगाई यूसुफ का पुत्र था और उस समय हज़रत पादशाह के यक्का लोगों में से था, कब्रिस्तानों के मध्य में युद्ध किया। अन्त में मार डाला गया और उसका सिर काट कर किले में पहुँचा दिया गया।

मीर्ज़ा कामरान के एक दस्ते की पराजय

एक दिन मीर्ज़ा कामरान को समाचार प्राप्त हुए कि वल्ख से ५०० घोड़े आ गये हैं और चारीक में पड़ाव किए हैं। उसने शेर अली को १०० उत्तम आदमियों सहित इस आशय से नियुक्त किया कि वे जाकर व्यापारियों के घोड़े किले में ले आयें। यह समाचार हज़रत पादशाह को प्राप्त हो गए। उन्होंने ख्वाजा कला वेग मे पुनः मुसाहिब बेग तथा इस्माईल बेग दूल्दी एवं कुछ सरदारों तथा यक्का जवानों को शेर अली के पीछे नियुक्त किया। जब शेर अली को यह समाचार प्राप्त हुए तो वह न तो चारीक पहुँच सका और न किले में प्रविष्ट हो सका। वहाँ से गज़नी की ओर चल दिया। मुसाहिब वेग एक सेना सहित सजावन्द के दर्रे में उसके पास पहुँच गया और युद्ध होने लगा। अन्त में शेर अली भाग कर मीर्ज़ा ख़िज्र ख़ा हज़ारा के घर की ओर भाग गया। मीर्ज़ा के आदमियों में से लगभग २० आदमी वन्दी बना लिये गए। दो दिन उपरान्त वन्दी लोग हज़रत पादशाह की सेवा में प्रस्तुत किए गए। उनके विषय में आदेश हुआ कि (८३) किले के समक्ष उन लोगों की हत्या कर दी जाय। तरदी गाव के पुत्र मीर्ज़ा के समक्ष उन लोगों की हत्या कर दी गई। जवीं अगूलुक वावूस उन लोगों के साथ था। आदेश हुआ कि जब तक इस समूह की हत्या की जाय उस समय तक वावूस खुला रहे।

मीर्ज़ा कामरान की इस प्रकार की पराजय हुई। इसके उपरान्त जब मीर्ज़ा कामरान को किसी ओर से कुमक न पहुँची तो उसने अत्याचार करना प्रारम्भ कर दिया ताकि इस प्रकार वाहर के आदमियों को किले के भीतर ले आये। वावूस[2] के दो पुत्रों की, जिनकी अवस्था १०-१२ वर्ष की थी हत्या करा दी। उनकी माता को किसी अनुचित आदमी को सौंप दिया। मुहम्मद कासिम मौजी की पत्नी को आहिनी द्वार में स्तन बंधवा कर लटकवा दिया। हज़रत पादशाह के जितने आदमी किले में थे, उन्हें इसी प्रकार के कष्ट पहुँचाये।

१ युद्ध में पताका ले जाने वाला।
२ वावूस बेग।

हुमायूं की सहायता हेतु एक सेना का पहुँचना

कुछ दिन उपरान्त नव्वाब उलुग़ मीर्ज़ा, जो ज़मीनदावर का हाकिम था, नव्वाब कासिम हुसैन खाँ शैबानी जो कलात का हाकिम था एवं ख़्वाजा ग़ाज़ी जो कुछ कार्यवश शाह के लश्कर में रह गया था, बैरम खाँ का जो कन्धार में था, सम्बन्धी शाह कुली सुल्तान संक्षेप में ये लोग लगभग १००० सैनिकों सहित दावन दर्रे के बाग में, जो ख़्वाजा शम्मू एवं तख़्ते शाह के दामन के मध्य में है, उतर पड़े। सब लोगों ने पर्वत पर उकाबैन में हज़रत पादशाह के चरणों का चुम्बन किया।

मीर्ज़ा कामरान का पलायन

दूसरे दिन हज़रत पादशाह ने पर्वत से उतर कर बारक द्वार की ओर, जो देहली एवं नख्ख़ास[1] के मध्य में है, का मोर्चा जो इससे पूर्व किसी को न दिया गया था इस समूह (८४) को दे दिया। पहलवान दोस्त मीर बर ने समस्त बेलदारों को एकत्र करके उसी रात्रि में खाई खुदवाई। लोगों ने अपने मोर्चों में शामियाने लगवाये।[2] इसके उपरान्त किले वाले खोल एवं मुहब्बत मैदान में युद्ध हेतु न निकल सकते थे। मीर्ज़ा (कामरान) ने सरदार बेग करद करजा[3] खाँ को किले में उकाबैन पर्वत के सामने बन्दी बना दिया और कहलाया कि "मैं तेरे पुत्र की हत्या कर दूँगा अन्यथा तू ऐसा उपाय कर कि मैं किले के बाहर निकल जाऊँ अथवा तू आकर मुझसे मिल जा और या ऐसा कर कि हज़रत पादशाह प्रस्थान कर जायें।" करजा खाँ ने उत्तर भिजवाया कि, "मैं हज़रत पादशाह के प्रति निष्ठावान् हूँ। मेरे आदमियों की ओर कौन निगाह कर सकता है? इस समय तुम काबुल के किले में मेरे चंगुल में हो। जो कुछ तुम मेरे पुत्रों के साथ करोगे वही मैं तुम्हारे एवं तुम्हारे पुत्रों के साथ करूँगा। तुमने क्या समझ रक्खा है?" मीर्ज़ा जब किले की रक्षा की ओर से प्रत्येक उपाय करके एवं हर प्रकार से निराश हो गया तो उसने मीर्ज़ा हिन्दाल से, जिसका मोर्चा देहली द्वार की ओर था, सम्पर्क स्थापित किया। मीर्ज़ा हिन्दाल को भाई के प्रति दया आ गई। चार घड़ी रात्रि रह गई थी कि मीर्ज़ा कामरान द्वार खोल कर मुसाहिब बेग के जंगले की ओर भाग गया। जो प्यादे उस क्षेत्र में पहरा दे रहे थे उन्होंने मीर्ज़ा को पकड़ लिया और पहचान कर कोई निशानी[4] के रूप में लेकर उसे छोड़ दिया। मीर्ज़ा कामरान वहाँ से मस्जिद घाटी की ओर रवाना हुआ। उस स्थान के दर्वेश[5] ने मीर्ज़ा को एक घोड़ा प्रदान कर दिया।

१ कसाइयों तथा बन्दी दासों का बाज़ार।

२ डा० बनारसी प्रसाद ने "हज़रत पादशाह इस पहाड़ से (पृ० ७१) ... शामियाने लगवाये" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।

३ क़राचा [illegible] था।

४ "पयादहा कि दर आँ जा पासबानी मी करदन्द मीर्ज़ा रा शिनाख़्ता शिनाख़्ता तूरमियान रा निशानी दि[illegible] गुज़ाश्तन्द"—यह वाक्य स्पष्ट नहीं। सम्भवतः तूरमियान अथवा कोई घूस के रूप में ली गई होगी। डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है —"The foot-soldiers who were keeping vigil there recognised him, but let him go after receiving the watch words" (पृ० १०७)।

५ दर्वेश।

मीर्जा कामरान द्वारा बदख्शा की विजय

यह वहाँ से बल्ख की ओर चल दिया और पीर मुहम्मद खा से भेंट करके यह प्रतिज्ञा की कि काबुल की विजय के उपरान्त वह उसके लिए बदख्शाँ छोड देगा। गूरी एवं बक़लान पर अधिकार जमाने के समय तक पीर मुहम्मद खा (मीर्जा कामरान के) साथ रहा। तदुपरान्त विदा हो गया। मीर्जा कामरान तालीकान की ओर रवाना हुआ। मीर्जा सुलेमान तथा मीर्जा इब्राहीम उसका मुक़ाबला न कर सके और वे लोग बदख्शा की घाटियों की ओर भाग गए। बदख्शाँ का क़िला एवं आस-(८५) पास के समस्त स्थान मीर्जा कामरान के अधिकार में आ गए।

क़रजा खा इत्यादि प्रतिष्ठित अमीरों का बदख्शाँ की ओर प्रस्थान

करजा खा एवं अमीरों के एक समूह ने उसी वर्ष स्वामीभक्ति प्रदर्शित की थी [illegible] उन्हे अपनी सेवा का अभिमान था। हजरत पादशाह करजा खा को पिता कहते थे। लम्बे आदमी के [illegible] बुद्धि नही होती। करजा खा की दाढी भी लम्बी थी, अत उसे जो सम्मान प्राप्त हुआ [illegible] उसे बडा अभिमान हो गया। उसने हजरत पादशाह से निवेदन किया कि, "ख्वाजा [illegible] को, जिसे आपने दीवान का मुशरिफ[1] बना दिया है, मेरे पास भेज दें, ताकि मैं उसकी [illegible] दूँ। [illegible] कासिम ब्यूतात[2] को दीवान नियुक्त कर दें।" हजरत पादशाह ने कहा कि, "यदि [illegible] का कोई अपराध सिद्ध हो जायगा तो हम उसकी हत्या करा देंगे। यदि ख्वाजा [illegible] रहेगा तो उसे दीवान बना देंगे।" जब करजा खा का प्रस्ताव स्वीकार न हुआ [illegible] कहा कि, "तूने भूल की और अनावश्यक बात कही, तुझे इससे हानि [illegible]," [illegible] 'क्या करना चाहिए ?" मुसाहिब बेग, इस्माईल बेग दूल्दी, बाबूस, हैदर [illegible] अन्य लोगों ने जो आपस में मिले थे, यह निश्चय किया कि "हम [illegible] दें।" बाबूस ने कहा कि, "पादशाह बडे प्रतिष्ठित व्यक्ति है। बहुत [illegible] उधर उपस्थित रहते है। यह प्रस्ताव अच्छा नही।" करजा खा के [illegible] निश्चय किया कि "हजरत पादशाह के गल्ले[3] को, जो ख्वाजा [illegible] बदख्शाँ पहुँचा दिया जाय और मीर्जा कामरान को भेंट कर [illegible] लेकर काबुल आया जाय।"

हुमायूं द्वारा उनका पीछा करने में विलम्ब

एक पहर दिन चढ जाने पर करजा उस समूह [illegible] (८६) हुआ था, गल्ले को हकाता हुआ बदख्शाँ की [illegible] को उरता बाग में यह समाचार प्राप्त हुए तो सवार [illegible] करने में चार-पाँच घडी का विलम्ब किया गया। [illegible] शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा हो रही थी। हुसेन कुली [illegible]

१ 'मुशरिफ़े दीवान,' डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार [illegible]
२ अकबर नामा के अनुसार 'क़ासिम तूली'।
३ सम्भवत घोडों का झुन्ड।

सलामत ! वे हरामखोर दूर निकल गए।" हजरत पादशाह ने कहा, 'हुसेन कुली खां ! इन लोगों ने मुझे पादशाह नहीं बनाया है। चले जाने दो।"

अकबर का ईश्वर में विश्वास

इस प्रकार की बात लगभग ३० वर्ष हुए कि हजरत जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह से देहली में माहम बेगम ने, जो उनकी आगा अनका थी, महल में दाम बायजीद ब्यात ने सुनी थी। उस समय खाने खाना मुनइम खां एवं ख्वाजये जहाँ ने निवेदन किया कि, "खाने जमां से युद्ध करना है, जिस प्रकार आदेश हो युद्ध की व्यवस्था की जाय।" शाहंशाह अकबर ने कहा "तुम मेरे पिता तुल्य हो। जैसा उचित समझो, व्यवस्था कर लो किन्तु यह समझ लो कि खाने जमाँ एवं अन्य लोगों ने मुझे पादशाह नहीं बनाया है।' खाने खानाँ एवं ख्वाजये जहाँ ने जब यह बात शाहंशाह के मुंह से सुनी तो राज्य के लिए जिस प्रकार उचित था, खाने जमा के अभियान की व्यवस्था कर ली और फरमान जारी कर दिए।

हुमायूं द्वारा करजा खां इत्यादि का पीछा न करना

हजरत पादशाह ने अपने राजदूत मीर्जा अरब जरगर को विदा कर दिया। लगभग दो पहर तथा एक घड़ी उपरान्त जब शुभ मुहूर्त आ गया तो हजरत पादशाह स्वयं सवार हुए। जो अमीर विद्रोहियों से सहमत न थे उदाहरणार्थ तरदी बेग अतावा मुनइम बेग वल्द मीरम बेग अन्देजानी, मुहम्मद कुली बरलास, कासिम बरलास का दामाद अब्दुल्लाह सुल्तान, हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार, बालू बेग तवाची बेगी, ताश्ची बेग काशगरी मुहम्मद कासिम मौजी, हैदर सुल्तान शैबानी (८७) के पुत्र अली कुली एवं बहादुर, हैदर सुल्तान का भाई कासिम हुसेन खां शैबानी, हैदर कासिम, मुहम्मद कासिम कोह बर, बम्बर बेग ईशक आगाई काशगरी एवं कुछ अन्य खान तथा सुल्तान और बचा जवान जो काबुल में थे सशस्त्र होकर शत्रुओं के पीछे रवाना हुए। करावाग में हजरत पादशाह की सेना के अग्र भाग ने उन दुष्ट विद्रोहियों की सेना के पिछले भाग से युद्ध प्रारम्भ कर दिया। वे किसी को बन्दी न बना सके और (शत्रु) भागते चले गए। सायंकाल की नमाज के समय करजा खां से मोरी नदी पर थोड़ा बहुत युद्ध हुआ। मोरी नदी कूरबन्द के पुल के समीप है जिसे पार करके चाहे खाम्‌ उश्त्र के दर्रे को चले जाय और चाहे पंजहीर दर्रे को। क्योंकि रात्रि हो गई थी अतः (८८) शत्रुओं ने कूरबन्द का पुल पार करके उसे नष्ट कर डाला[1]। हजरत पादशाह की सेना के अग्र भाग वाले करावाग में उनकी सेवा में उपस्थित हो गए। *यह निश्चय हुआ कि 'काबुल वापस हो जायें। एक मास तक सैनिकों की व्यवस्था करके वे बदख्शां की ओर रवाना हों'।*

हुमायूं द्वारा बदख्शां पर आक्रमण की तैयारी

दूसरे दिन हजरत पादशाह ने पुनः उश्तर बाग में पड़ाव किया और सेना की व्यवस्था करने में व्यस्त हो गए। करजा खां एवं उसके सहायक पंजहीर व मार्ग से बदख्शां की ओर चल दिए। उसने अपने आगूचह[2] तिमुर कुली शिगाली को पंजहीर में इस आशय से छोड़ दिया कि वह काबुल

१ इस स्थान के वाक्य स्पष्ट नहीं।
२ सामुदृर

के दैनिक समाचार लिख कर भेजता रहे। वे स्वय किश्म में मीर्ज़ा कामरान की सेवा में पहुँच गए। हज़रत पादशाह एक मास तक काबुल में युद्ध की व्यवस्था करके बदख्शा की ओर रवाना हुए[1]।

मीर्ज़ा इबराहीम की तिमुर शिगाली पर विजय

जब हज़रत पादशाह ने करावाग जलके में पडाव किया तो नव्वाब मीर्ज़ा वल्द मीर्ज़ा सुलेमान ख़ूस्त के दर्रों से होता हुआ परियान किले के मार्ग में नावा नामक स्थान पर जहाँ तिमुर अली शिगाली था, पहुँच गया। परियान का किला सीमान्त पर स्थित है। इसका निर्माण हज़रत साहब किरानी ने कतूर के काफिरों से युद्ध करने के लिए कराया था और वहा हाकिम नियुक्त कर दिया था। नव्वाब मीर्ज़ा ने तिमुर अली शिगाली के विषय में समाचार पाकर उसपर आक्रमण करके उसकी हत्या कर दी और उसका सर काट कर उपहार स्वरूप हज़रत पादशाह की सेवा में लाया, और मलिक मुहम्मद सहित हज़रत पादशाह के चरणो का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। मीर्ज़ा इबराहीम की हज़रत पादशाह के प्रति प्रथम सेवा यही थी। हज़रत पादशाह ने तिमुर अली का सिर शिविर के चारो ओर घुमवाया। पादशाह ने मीर्ज़ा इबराहीम को फर्जन्दी में लेते हुए[3] जामाता बनने का सम्मान प्रदान किया। मलिक मुहम्मद अतका के साथ उसे भी घोडा एव सरोपा देकर इज्ज़त बख्शी और उसी पडाव पर विदा कर दिया।

हुमायू का तालीकान की ओर पहुँचना

(८९) मीर्ज़ा सुलेमान को आदेश हुआ कि बदख्शा के लश्कर एव ईमाको[4] को एकत्र करके तैयार रहे। जब हज़रत पादशाह तालीकान के समीप पहुँचे तो मीर्ज़ा सुलेमान भी उपस्थित होकर लश्कर में सम्मिलित हो जाय।' हज़रत पादशाह एक पडाव से दूसरा पडाव पार करते हुए पजहीर दर्रे से होकर अन्दराब में पहुँचे। नव्वाब मीर्ज़ा हिन्दाल तथा कुन्दुज की सेना हज़रत पादशाह के चरणो का चुम्बन करके सम्मानित हुई। कुछ मजिल और पार करके विजयी लश्कर का तालीकान के समीप पडाव हुआ।

हुमायू की सेना के अग्र भाग की पराजय

दूसरे दिन मीर्ज़ा हिन्दाल, हाजी मुहम्मद कोकी एव एक अन्य समूह तथा यक्का जवानो की सेना के अग्र भाग म भेज कर वे तालीकान के किले की ओर रवाना हुए। जब प्रात काल सेना के अग्र भाग ने तालीकान नदी पार कर ली तो लश्कर ने भी बिना जाने नदी पार की। हज़रत पादशाह प्रात काल की नमाज के लिए ठहरे हुए थे। मीर्ज़ा कामरान, करजा का तथा वह सेना जो काबुल से भाग कर किश्म में आ गई थी, प्रात काल हलक नार मे, जो तालीकान नदी के तट पर एक जल्का है[5], पहुँची। मीर्ज़ा अब्दुल्लाह मुगुल, जो तालीकान का हाकिम था, मीर्ज़ा के लश्कर

१ डा० बनारसी प्रसाद ने "खाने खाना एव रवानये जग ... और रवाना हुये" तक का अनुवाद नहीं प्रकाशित किया।

२ मीर्ज़ा इबराहीम।

३ इसका तात्पर्य भी जामाता बनाने से है।

४ कबीलों।

५ जुलका अथवा जलका का अर्थ स्टेनगस के फारसी अंग्रेजी शब्द के कोश में "territory, level ground, plain" है। इस्न अमीद के फरहगे नव नामा आधुनिक फारसी शब्द कोश में इसका अर्थ "जमीने पस्त व

वालों से मिल गया। मीर्जा हिन्दाल तथा हाजी मुहम्मद सुल्तान ने मक़ाबला किया। उन लोगों ने मीर्जा हिन्दाल तथा हाजी मुहम्मद सुल्तान का हलक़ नाक से भगा कर नदी के किनारे पहुँचा दिया। हजरत पादशाह के शिविर पर मीर्जा कामरान के आदमियों ने छापा मारा और वे अपनी इच्छानुसार लूट मार करके तालीक़ान की ओर चल दिए। हजरत पादशाह ने, जो कुछ लोगों के साथ नदी के इस पार नमाज पढ रहे थे यह सब कुछ देखा। जब वे नमाज पढ चुके तो नदी के उस पार जाना चाहते थे। कुछ लोगों ने उपस्थित होकर निवेदन किया कि "नदी में उस (९०) ओर जमजमा[1] है। सवार होकर नदी पार नहीं कर सकते। ऊपर की ओर चक्की एवं चट्टान है। लश्कर सुगमतापूर्वक गुजर सकता है।' हजरत पादशाह उसी मार्ग की ओर, जो कि उत्तम था, रवाना हुए। लगभग आधे कुरोह की यात्रा करके नदी पार की।

शेखीम ख्वाजा खिज्री को दंड

हजरत पादशाह उस चक्की के समीप पहुँचे ही थे कि शेखीम ख्वाजा खिज्री, जो उस समय ख्वाजा खिज्रियों का सरदार था और जिसने करजा खा के साथ विद्रोह कर दिया था, पादशाह की सेना के अग्र भाग द्वारा बन्दी होकर हजरत पादशाह की सेवा में प्रस्तुत किया गया। हजरत पादशाह ने आदेश दिया कि उसे मारा जाय। जो प्यादे पीछे थे, उन्होंने इतनी तलवारें लकडी तथा तुफग के कुदे उसके सिर पर मारे कि सब लोगों का विचार था कि उसकी मृत्यु हो गई। क्योंकि वह गिर चुका था अतः शाही सेना की पंक्ति उसे रौंदती हुई निकल गई। उसके थोडी थोडी सास आ रही थी। चक्की वाला उसे अपने घर उठा ले गया और उसका उपचार करने लगा। इसके उपरान्त उसने कई वर्षों तक ख्वाजा खिज्रियों की सरदारी की। कुछ समयोपरान्त उसकी मृत्यु हो गई।

शेर

यदि ससार भर की तलवारें चलें,
तो जब तक ईश्वर न चाहेगा एक नस भी न कट सकेगी।'

इस्माईल बेग दूल्दी का बन्दी बनाया जाना

हजरत पादशाह थोडी ही दूर आगे गए थे कि इस्माईल बेग दूल्दी वल्द इब्राहीम अहमद जानी, जो कि हजरत पादशाह का एक प्रतिष्ठित अमीर था एवं जिसने करजा खा के साथ विद्रोह कर (९१) दिया था, बन्दी बना कर लाया गया और राजसिंहासन के समक्ष प्रस्तुत किया गया। हजरत पादशाह ने तुर्की में कहा, हे दीवानये कुल्तान[2]! हमने तेरे साथ कौन सी बुराई की थी? "उसने

हमवार" लिखा है। इसका भी अर्थ मैदान होता है। डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद hillock (पहाडी) किया है जो शुद्ध नहीं। "They also arrived at Halquaq, a hillock on the Taliqan river" (पृ० १०४)।

१ जमजमा —इस शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं। स्टेनगास के फ़ारसी अग्रेजी शब्द कोश में इसका अर्थ "a well dug in a brackish place" लिखा है। बहारे अजम में इसका अर्थ "चाहे कि दर शोरिस्तान बाशद" अर्थात् वह कुआ जो दलदल में हो। डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद 'Marsh' (दलदल) ही किया है। (पृ० १०४)

२ 'हे दुष्ट पागल'।

उत्तर दिया कि, "जिस दिन से मैं काबुल से बदख्शाँ की ओर रवाना हुआ उस दिन से फिर काबुल की ओर किसी बुराई से मुख न किया। हज़रत पादशाह का इस उत्तर से हंसी आ गई। इसी बीच में मुनइम बेग ने निवेदन किया, 'हे पादशाह आपका यह प्रतिष्ठित अमीर है। जब कभी आप चाहेंगे इसे दंड दिया जा सकेगा।" हज़रत पादशाह[1] ने उसके अपराध के विषय में मुनइम बेग को अधिकार दे दिया और उसकी निगरानी करने का आदेश दे दिया।

मीर्ज़ा कामरान की पराजय

तदुपरान्त वे हल्क़ नाक की ओर रवाना हुए। रामन कोका का भाई फ़तहुल्लाह बेग शाही सेना के अग्र दल के एक भाग का सरदार था। दास बायज़ीद उस दल में सम्मिलित था। (वे लोग) लगभग ५० आदमी रहे होंगे। जब सेना के अग्र भाग वाले हल्क़ नाक के ऊपर पहुँचे तो मीर्ज़ा कामरान अपनी पताका लेकर ६०-७० व्यक्तियों सहित दृष्टिगत हुआ। जब उन लोगों ने देखा कि इनके पीछे (हमारी) सेना आ रही है तो वे लोग अपने झंडे को मोड़कर उस ओर रवाना हुए। मीर्ज़ा की सेना में से कुछ लोगों ने पृथक् होकर उनपर आक्रमण किया। यकबारगी दोनों ओर के अग्र दल वाले तलवारें चलाने लगे। फ़तहुल्लाह कोका, जो हज़रत पादशाह की सेना के अग्र भाग का सरदार था, घोड़े से गिर पड़ा। कुछ लोग उसे सवार करने का प्रयत्न करने लगे। इसी बीच में हज़रत पादशाह की पताकायें दृष्टिगत हो गईं। जब मीर्ज़ा ने हज़रत पादशाह की पताकायें देखीं तो वह मुक़ाबला न कर सका और भागना निश्चय करके तालीक़ान के क़िले की ओर चल दिया। जिस प्रकार मीर्ज़ा के आदमियों ने हज़रत पादशाह के आदमियों को नष्ट भ्रष्ट किया था, उसी प्रकार हज़रत पादशाह के आदमियों ने मीर्ज़ा के आदमियों का नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। (९२) लूट की धन-सम्पत्ति पर वाद विवाद होने लगा। हज़रत पादशाह ने कहा, "हुरल हो[1]।" उन्हीं लोगों में बहुत से ऐसे थे जिनके २००० रुपए चले गए थे किन्तु उन्हें एक रुपया भी न प्राप्त हुआ था और कुछ ऐसे थे जिनके पास १० रुपया भी न थे और १०,००० रुपए हो गए। अली कुली वल्द हैदर सुल्तान शैबानी को साधारण सा घाव लग गया। सेना वालों में से अन्य किसी को कोई हानि न हुई।

मुबारिज़ बेग की हत्या

उस दिन हज़रत पादशाह ने हल्क़ नाक पर पड़ाव किया। दूसरे दिन तालीक़ान के क़िले को घेर कर मार्चे बाँट दिए। एक दिन उस द्वार के मार्चे से, जो मुनइम बेग, हैदर कुली बरलास तथा हुसेन अली सुल्तान मुहरदार के अधीन था, क़िले पर तुफ़ंग चलाई गई। मुबारिज़ बेग वल्द ख़्वाजा कला बेग के क़िले के ऊपर तुफ़ंग (की गोली) लगी। वह उन लोगों में से था, जो करजा खाँ से मिल गए थे। उसकी मृत्यु हो गई। हज़रत पादशाह को उसकी हत्या का बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने कहा, "काश मुसाहिब बेग की उसके स्थान पर हत्या हो जाती[2]।"

१ अक्बर नामा में हुरल की व्याख्या करते हुये लिखा गया है कि "हुरल अर्थात् जिसे जो कुछ प्राप्त हुआ हो उसे वह ले ले" (पृ० २७७, हिन्दी अनुवाद पूर्व पृ० २३८)।

२ अक्बर नामा में "काश उसका भाई मुसाहिब बेग उसके स्थान पर मार डाला जाता"। (अकबर नामा भाग १, प्रकाशित पृ० २७८, हिन्दी अनुवाद पूर्व पृ० २३९)।

हुमायूं के पास अन्य अमीरों का पहुँचना

कुछ दिन उपरान्त मीर्ज़ा सुलेमान तथा मीर्ज़ा इबराहीम बदख्शाँ से दर्रे में आकर हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित हो गए। उन्हें भी किले के अवरोध हेतु एक मोर्चा दे दिया गया। कुछ दिन उपरान्त चाकर खाँ वल्द सुल्तान उवैस किबचाक उत्तम सैनिकों सहित (९३) कोलाब से उपस्थित हुआ और चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। उसको उसे योग्यतानुसार भी मोर्चा प्रदान कर दिया गया।

मीर्ज़ा कामरान को पीर मुहम्मद द्वारा कुमक न प्राप्त होना

जब मोर्चे पूरे हो गए तो मीर्ज़ा कामरान पादशाह की कृपा की ओर से निराश हो गया। उसने बल्ख के हाकिम पीर मुहम्मद खाँ के पास आदमी भेज कर कुमक माँगी। उसने वृद्ध ऊज़बेकों को बुलवा कर कुमक के विषय में उनसे परामर्श किया। ऊज़बेकों ने निवेदन किया कि, 'ये लोग हज़रत बाबर पादशाह के पुत्र हैं और सारा हमारे शत्रु हैं। उनको कुमक भेजने का क्या प्रश्न ? वे जितना अधिक आपस में युद्ध करें उसी में हमारा लाभ है।'

मीर्ज़ा कामरान द्वारा क्षमा-याचना

जब मीर्ज़ा कामरान ऊज़बेकों की सहायता की ओर से निराश हो गया तो उसने हज़रत पादशाह के समक्ष विनय-पूर्वक खेद प्रकट करते हुए निवेदन कराया कि, 'आप मेरे अपराधों को क्षमा कर दें और मुझे मक्का जाने की अनुमति प्रदान कर दें।" हज़रत पादशाह सर्वदा अपने भाइयों विशेष रूप से मीर्ज़ा कामरान के प्रति कृपा एवं दया प्रदर्शित करते रहते थे अतः उन्होंने मीर्ज़ा की प्रार्थना स्वीकार कर ली और आदेश दिया कि, करजा खाँ एवं उस समूह को, जिन्होंने मिल कर विद्रोह कर दिया था, मीर्ज़ा हमारे पास भेज दे। तदुपरान्त उसे मक्का जाने की अनुमति प्रदान कर दी जायगी।" उन लोगों में से बाबूस के विषय में मीर्ज़ा (कामरान) ने निवेदन कराया कि "मेरे ऊपर कृपा करके उसे मेरे साथ मक्का जाने की अनुमति दे दी जाय ताकि वह मेरी सेवा करता रहे। वह प्रारम्भ से मेरा आश्रित है, चूँकि मैंने काबुल में उसके पुत्रों की हत्या करा दी है, अतः मैं उससे अपने अपराध क्षमा कराऊँगा।"

विद्रोही अमीरों का हुमायूं के दरबार में प्रस्तुत किया जाना

हज़रत पादशाह ने मीर्ज़ा की प्रार्थना स्वीकार कर ली। इससे पूर्व हज़रत पादशाह ने अपने हाथ से लिखा था कि, 'करजा बदबख्त[1], मुसाहिब-मुनाफ़िक तथा बाबूस-दब्बूस," अतः उन्होंने (९४) आदेश दिया कि 'दब्बूस मेरे लश्कर में न रहे।" दूसरे दिन मीर्ज़ा ने करजा एवं मुसाहिब इत्यादि को जिन्होंने विद्रोह किया था, बाबूस के अतिरिक्त, शाही आदमियों के सिपुर्द करके किले के बाहर भेज दिया। पाँच घड़ी रात्रि व्यतीत हो चुकी थी कि हज़रत पादशाह दौलत खाने से निकले। मीर तोलक के उद्यान में पेश खाना लगवा दिया गया था। वहाँ कुर्सी रख दी गई, वे उसपर बैठे। यसावलों एवं मीर अर्ज़ को समझा दिया गया था कि उन लोगों को लाकर किस प्रकार से चरणों का चुम्बन कराया जाय। करजा खाँ की ग्रीवा में तलवार लटका कर उसे लाया गया। जब वह मशाल

१ अकबर नामा में 'करावख्त'।

के समीप, जो दरबार में थी, पहुँचा तो आदेश हुआ कि, 'क्योंकि उसकी दाढ़ी सफ़ेद हो चुकी है और मैं उसे पिता भी कह चुका हूँ अतः उसकी गरदन से तलवार निकाल दी जाय।" उसे लाकर चरणों के चुम्बन द्वारा सम्मानित कराया गया। हज़रत पादशाह ने उसका अपराध क्षमा करते हुए कहा कि, 'सैनिकों के जीवन में यह तो होना ही रहता है[1]।" इस वाक्य को हज़रत पादशाह ने तुर्की में कहा। दरबार में तरदी बेग अतावा के हाथ के नीचे की ओर खड़े होने का आदेश हुआ। तदुपरान्त मुसाहिब बेग को प्रस्तुत किया गया। जिस स्थान पर करजा खां की गरदन से तलवार निकाली गई थी उसी स्थान पर उसकी ग्रीवा से निषंग खोल कर तलवार लटका कर लाया गया। (९५) हज़रत पादशाह ने उसके अपराध भी क्षमा कर दिए और करजा खां के नीचे की ओर स्थान प्रदान कर दिया। तदुपरान्त सरदार बेग वल्द करजा खां को (गरदन में) निषंग एवं तलवार लटका कर लाया गया। जब उसे उस मुकाम के पास जो निश्चित की गई थी[2] लाया गया तो हज़रत पादशाह ने कहा कि, "जो कुछ अपराध किया है वह बड़ों ने किया है, छोटों ने कौन सा अपराध किया है?" उसके अपराध को क्षमा करके निषंग एवं तलवार को उसकी ग्रीवा से निकाल दिया गया और उसे चरणों के चुम्बन का सम्मान प्रदान किया गया। मुसाहिब बेग के समीप उसे स्थान दे दिया गया। तदुपरान्त हैदर बेग मुगुल काज़ी एवं कुछ अन्य लोगों को जो करजा खां के सहायक थे, निषंग एवं तलवार गले में लटकवा कर लाया गया। हज़रत पादशाह ने सबको क्षमा कर दिया। तदुपरान्त हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार ने यह शेर पढ़ा —

शेर

'जिस दीपक को परमेश्वर प्रज्वलित करता है,
जो कोई उसपर फूंक मारता है, अपनी दाढ़ी जला लेता है।'

क्योंकि करजा खां की दाढ़ी बड़ी लम्बी थी अतः यह शेर समयानुकूल सिद्ध हो गया और हज़रत पादशाह इस बात से बड़े प्रसन्न हुए। जिन लोगों ने हरामखोरी की थी, वे इससे बड़े खिन्न हुए। तदुपरान्त कुर्बान करावल चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। हज़रत पादशाह ने करावल से पूछा, "तूने ऐसा क्यों किया[3]?" उसने उत्तर दिया, "हज़रत पादशाह! जिस समूह का ईश्वर ने मुह काला कर दिया हो, उन लोगों से इन बातों का पूंछने से क्या लाभ?" यह प्रश्नोत्तर तुर्की में हुआ। हज़रत पादशाह मुस्कुराये और दीवान के अधिकारियों को आदेश हुआ कि, 'यदि उसकी जागीर ले ली गई हो तो उसे हम उसको प्रदान करते हैं।'

मीर्ज़ा कामरान का मक्का की ओर प्रस्थान

इसके पश्चात् हज़रत पादशाह मीर तालब की मंज़िल की ओर, जो उसी उद्यान में थी, (९६) रवाना हुए। दूसरे दिन अली दोस्त यसावल, अब्दुल वहहाब, सैयिद मुहम्मद पकना, मुहम्मद कुली शेख कमान, लुत्फी सरहिन्दी एवं कुछ थोड़े से तवाचियों[4] को आदेश हुआ कि वे तालीकान द्वार

१ "आलमे सिपाह गरी अस्त"।
२ जहां बन्दी लाकर प्रथम बार खड़े किये जाते थे।
३ 'क्यों भागा'?
४ पहरेदारों।

पर खड़े हो जायें और जिस समूह ने विद्रोह किया था उसे हज़रत बादशाह की सेवा में ले आयें, तदुपरान्त मीर्ज़ा (कामरान) को मक्का चले जाने दिया जाय। मीर्ज़ा आदेशानुसार किले से असवार सहित निकल कर बगी[1] नदी की ओर रवाना हुआ। इसी बीच में मीर्ज़ा इबराहीम के सेवक के एक घोड़े पर मीर्ज़ा (कामरान) का एक सेवक सवार होकर जा रहा था। उसने मीर्ज़ा इबराहीम से कहा कि, "मेरे अमुक घोड़े पर मीर्ज़ा (कामरान) का एक सेवक सवार है।" मीर्ज़ा इबराहीम ने कहा 'ले लो।" वह घोड़ा ले लिया गया। जब हज़रत बादशाह को यह समाचार प्राप्त हुए तो वे इस बात पर बड़े रुष्ट हुए और कहा कि, मीर्ज़ा कामरान हमारा चाहे जितना बड़ा शत्रु क्यों न हो, किन्तु हमारा भाई है। एक घोड़े का क्या मूल्य है कि तुमने उसके सेवक को पैदल कर दिया?" क्योंकि मीर्ज़ा इबराहीम ने यह कार्य अज्ञानतावश किया था, अतः लज्जित होकर आज्ञा बिना किश्म की ओर चला गया।

मीर्ज़ा कामरान का हुमायूं की सेवा में उपस्थित होना

उस दिन मीर्ज़ा कामरान ने अपने असबाब एवं आदमियों सहित बगी नदी के तट पर पड़ाव किया। दो पहर रात्रि के उपरान्त मीर्ज़ा कामरान का प्रार्थना पत्र प्राप्त हुआ कि, "मेरे प्रति जो अधिक से अधिक कृपा हो सकती थी, वह आपने प्रदर्शित की। इस समय मेरी आकांक्षा यह है कि मैं आपकी सेवा में उपस्थित हूँ। क्योंकि हज़रत बादशाह पिता के स्थान पर हैं अतः चाहता हूँ कि क्षमा प्राप्त करके मक्का की ओर प्रस्थान करूँ।" हज़रत बादशाह ने हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार का तत्काल बुलवा कर मीर्ज़ा कामरान से भेंट के सम्बन्ध में परामर्श किया। उसने निवेदन (९७) किया कि, "जो इच्छा हो। विलम्ब करने की आवश्यकता नहीं।"

मिसरा

'दर कार खैर हाजते हेच इस्तिख़ारा[2] नीस्त'।

हज़रत बादशाह ने स्वयं अपनी कलम से लिख कर भेजा कि, "यदि तुम्हें इतमिनान हो गया हो तो सेवा में उपस्थित होने में कोई आपत्ति नहीं।' यह निश्चय हुआ कि "यदि मीर्ज़ा (कामरान) आये तो कौन कौन स्वागतार्थ जायगा?' लोगों की तीन टोलियाँ बनाई गई। पहली से मीर असग़र मुंशी, हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार, तरदी बेग अतावा, मुनइम बेग वल्द मीरम[3] बेग अन्देजानी, वाल्तू बेग[4] तवाची बाशी एवं ताल्ची बेग काशग़री, दूसरी में क़ासिम हुसेन सुल्तान शैबानी, खिज्र ख्वाजा सुल्तान, इस्कन्दर सुल्तान और अली कुली एवं बहादुर हैदर सुल्तान शैबानी के पुत्र, तथा तीसरी में मीर्ज़ा सुलैमान, मीर्ज़ा अस्करी, मीर्ज़ा हिन्दाल। तीनों टोलियों ने मीर्ज़ा का स्वागत किया। उसकी सेवा में उपस्थित हुए। मीर्ज़ा पहुँच कर लश्कर में प्रविष्ट हो गया।

मीर्ज़ा के स्वागत हेतु दौलतखाने के द्वार पर शामियाने लगवाये गए थे। दीवान के पास अन्य मीर्ज़ाओं एवं अमीरों के लिए शामियाने लगवाये गए। सब लोग अपने अपने शामियाने

१ इसे 'बग़ी' भी लिखा गया है, अन्य स्थानों पर 'नेक़ी' भी।

२ अच्छे काम के लिये इस्तिख़ारे (किसी कार्य के विषय में यह जानना कि यह शुभ होगा अथवा नहीं) की आवश्यकता नहीं।'

३ डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में 'बैरम बेग' (पृ० ११०)।

४ डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में 'उलुग बेग तवाची बाशी'।

नीचे ठहर गए थे। हजरत पादशाह स्वयं शामियाने एवं चत्र के नीचे चार पायों के सिंहासन पर आसीन थे कि मीर्जा ने भाग्य ने उसकी सहायता की। वह ५-६ आदमियों सहित उस शामियाने (९८) के नीचे, जो उसके लिए लगाया गया था, बैठने का इरादा कर रहा था कि हजरत पादशाह ने जो उस ओर देख रहे थे हसन अली ईशक आगा को आदेश दिया कि, "मीर्जा को बुला लाओ।" वह आदेशानुसार रवाना हो गया। अली दोस्त एवं अब्दुल वहहाब यसावल[1] दूर खड़े थे। हसन अली के जाने के कारण वे समझ गए कि मीर्जा को बुलवाया गया है। वे लोग भी चल खड़े हुए। जब वे मीर्जा के पास पहुँचे तो वह एक पाँव का जूता उतार चुका था। वह उसे पुनः पहन कर हज़रत पादशाह की सेवा में रवाना हो गया। मीर्जाओं एवं अमीरों ने जैसा कि निश्चित हुआ था, विभिन्न स्थानों पर अभिवादन किया। वे अपने अपने शामियाने के नीचे थे। मीर्जा (कामरान) ने फर्श के समीप पहुँच कर कोरनिश की। हजरत पादशाह ने तुर्की में कहा, 'कीलशक' अर्थात् आओ।" मीर्जा ने तीन बार तस्लीम की। जिस सिंहासन पर हजरत पादशाह आसीन थे, उसके पाँव के पास मीर्जा ने जानू मोड़ कर हजरत पादशाह का चरण पकड़ना चाहा। हजरत पादशाह ने कृपा पूर्वक उसे आलिंगन करके सिंहासन पर खींच लिया और अत्यधिक विलाप किया। समस्त दरबारी एवं उच्च पदाधिकारी, जो उपस्थित थे, रोने लगे।

इसके उपरान्त मीर्जा ने वापस होकर अपने जूते पहने और जाकर जिस स्थान पर सर्वप्रथम तीन तस्लीमें की थी वहीं खड़ा हो गया और पुनः तीन तस्लीमें की। हजरत पादशाह ने कहा, "आओ बैठो।" मीर्जा ने तस्लीम की। हजरत पादशाह ने बाईं ओर बैठने का आदेश दिया। जब मीर्जा बैठ गया तो हजरत पादशाह ने आदेश दिया, और निकट। हजरत पादशाह ने तीन बार आदेश दिया, हर बार मीर्जा तस्लीम करके और निकट बैठ जाता था। मीर्जाओं तथा अमीरों का दरबार में बुलाये जाने का आदेश हुआ। सर्व प्रथम मीर्जा सुलेमान आया और दायीं ओर बैठ गया (९९) किन्तु मीर्जा कामरान से दूर बैठा। तदुपरान्त मीर्जा अस्करी को बुलवाया गया और उसके पश्चात् मीर्जा हिन्दाल को। मीर्जा लोगों को जिस क्रम से बुलवाया गया था वे दायीं ओर अपने अपने स्थान पर बैठ गए। तत्पश्चात् ऊजबेग सुल्तानों[2] को बुलवाया गया। कासिम हुसैन सुल्तान मीर्जा कामरान की ओर नीचे दूर जाकर बैठा। तदुपरान्त खिज्र ख्वाजा सुल्तान, इस्कन्दर सुल्तान, अली कुली बहादुर, बैरम ऊगलून के भाई कून्दुक को और इसके बाद चगताई खानों एवं सुल्तानों तथा अमीरों में से जो लोग दीवान में उपस्थित थे तथा दरबार (में सम्मिलित होने) के योग्य थे उन्हें बुलाया गया। वे दायीं और बायीं ओर अपने अपने स्थानों पर बैठ गए। हुसैन कुली सुल्तान मुहरदार, मीर असगर मुंशी, हैदर, मकसूद बेग आख्ता[3] एवं अन्य बेग एक दूसरे के समीप[4] बैठे। दरबार के उपरान्त भोजन मंगवाया गया। भोजन पश्चात् नाना प्रकार के मेवे इतनी अधिक मात्रा में लाये गए कि समस्त दरबारियों एवं दीवान वालों की आवश्यकता से अधिक हो गए। कूर बेगियों में से, जो कूर के पीछे

१ यसावल पहरेदार, चोबदार अथवा दरबार के जश्नों के प्रबंधक को कहते थे।
२ शाहजादों को।
३ मकसूद बेग आख्ता बेगी।
४ 'दर दिगर'। (देखिये **अकबर नामा** पृ० २८१, हिन्दी अनुवाद पृ० २४४)।

बैठे थे इस प्रकार थे — बायज़ीद बेग का पुत्र सुल्तान हुसेन बेग, मुहम्मद बेग वल्द शाह बेग जलायर, और यक्का लोगों में से काकर अली बेग वल्द सैयिद अली बेग, शाहम बेग जलायर वल्द शेख अली बेग, तोलक कूरची, शाह मुहम्मद बाबा कश्का, मुहम्मद जान तुर्कमान, लुत्फी सरहिन्दी, अता बेग, (१००) एवं वादकों में से मुस्लिम कुबसी[१], मुहम्मद जान कानूनी, कजक गिचकी[२], तूफान खानी, कासिम चगी, तूफानी नै (बजाने वाला) एवं गायकों में हाफिज सुल्तान मुहम्मद शाल्दा, हाफिज कमालुद्दीन हुसेन, हाफिज मेहरी, मुल्ला मीर जान पैवन्दी जलायरान बैठे। दरबार में जो बातें हुईं उनमें से एक इस "तज़किरे" में लिखी जाती है[३]।

मीर्ज़ा कामरान से धर्म के विषय में वाद विवाद

हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार ने मीर्ज़ा कामरान से पूंछा कि, "उबैदुल्लाह खां के दरबार में यह चर्चा हुई थी कि यदि किसी के हृदय में अली इब्ने तालिब के प्रति तारगी के बराबर भी कपट न हो तो उसे मुसलमान नहीं कहा जा सकता। यही बात एक बार आपके दरबार में कही गई तो आपने कहा कि, खुदा का दास वह है जिसके हृदय में वह कें बराबर हो।" मीर्ज़ा ने उत्तर दिया, "क्या लोग मुझे खारजी समझते हैं ? हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार ने निवेदन किया कि, "दास ने जो कुछ सुना था, वह कह दिया। कुफ्र की नक्ल कुफ्र नहीं[४]।"

हुसेन कुली सुल्तान द्वारा बल्ख के आक्रमण का विरोध

यह गोष्ठी अस्र की नमाज के समय तक चलती रही। जिसके हृदय में जो कुछ आया वह कहता रहा। अस्र की नमाज के उपरान्त मीर्ज़ा लोग एवं अमीर प्रत्येक अपने अपने स्थान को चले (१०१) गए। तदुपरान्त हजरत पादशाह ने आदेश दिया कि "दीर्घकाल से मैं मीर्ज़ा (कामरान) से पृथक् हूँ। मीर्ज़ा के निवास हेतु खेमा लाकर दरगाह[५] के पास लगाया जाय ताकि हम लोग एक दूसरे के समीप रहें।' मीर्ज़ा के लश्कर के विषय में आदेश हुआ कि जहाँ मीर्ज़ा कहें वहाँ ठहरें। तीन दिन तक वे उसी पडाव पर ठहरे रहे। चौथे दिन बल्ख के आक्रमण के विषय में परामर्श होने लगा। मीर्ज़ा सुलेमान ने कहा कि, 'बल्ख का भूभाग काबू में है ?" मीर्ज़ा हिन्दाल ने कहा, "बड़ी अच्छी तरह काबू में है।" हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार ने जो सामने बैठा था, निवेदन किया, "हजरत पादशाह कुशलतापूर्वक रहें, मैं मीर्ज़ा लोगों की बात नहीं समझा।" हजरत पादशाह ने कहा, "मीर्ज़ा लोगों से ही पूछो।" मीर्ज़ा लोगों ने उत्तर दिया, 'इस बीच में हम सब भाई सगठित न हो सके थे। इस समय जब कि हम सगठित हो गए हैं, वे काबू में ज्ञात होते हैं।" हुसेन कुली सुल्तान ने निवेदन किया कि, "इस कारण कि हम लोग सगठित हो गए हैं वे यदि वही उज़बेक हैं जिन्हें मैं देख चुका हूँ तो यह काबू का कारण नहीं। मेरे पिता ने हेरी के समीप बैरम उगलून[६] में युद्ध किया और पराजित हुआ तथा मार डाला गया। मैं कूनूर बहादुर द्वारा बन्दी बना

१ **अकबर नामा** के अनुसार 'कानूनी'।
२ **अकबर नामा** में 'कोचक गिचकी'।
३ डा० बनारसी प्रसाद ने "कूर बगियों में से जो कूर के पीछे बैठे थे ... जलायरान' तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।
४ "नक्ले कुफ्र, कुफ्र न बाशद"।
५ "बादशाह के निवास हेतु खेमे" से तात्पर्य है।
६ **अकबर नामा** में 'बैरम उगलान'।

लिया गया था। मुझे मैमना व जचक्तू[1] में किस्तन करा[2] सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया गया। मैंने ऊजबेकों एवं बल्ख की सेना की वीरता देखी है। इस समय तक किसी बाहरी सेना ने उनपर आक्रमण नहीं किया है। नित्य-प्रति उनकी संख्या में वृद्धि होती रही है। इस समय तक (१०२) किसी पादशाह ने एक चढ़ाई के साथ दूसरी चढ़ाई नहीं की है। हम लोग (मीर्ज़ा) कामरान के अभियान पर आये थे। उसका निर्णय हो गया। राज्य के हित में अब यही उचित है कि हम लोग काबुल लौट जायें और सेना की व्यवस्था करके दूसरे वर्ष बल्ख पर आक्रमण करें?" हज़रत पादशाह ने (हुसेन कुली) सुल्तान की बात सुन कर उसकी प्रशंसा की और आदेश दिया कि, "जब सब लोग नारीन पहुँच जायेंगे तो पुनः परामर्श करेंगे और जो कुछ उचित होगा उसके अनुसार कार्य करेंगे।" नारीन बदख्शाँ की विलायत में एक स्थान है जहाँ से एक मार्ग खस्त की ओर जाता है और एक काबुल की ओर।

दूसरे दिन हज़रत पादशाह प्रस्थान करके रात्रि के उपरान्त वन्द-कुशा के झरने पर जो इश्किमीश के समीप है, पहुँच गए। कुशल लोहारों को फौलाद के कलम बनवाने के लिए बुलवाया और कहा कि, 'फिरदौस मकानी ने समरकन्द से लौटते समय अपने आगमन की तारीख एवं उन लोगों के नाम लिखे जो उस आक्रमण में उनके साथ थे। यह उचित होगा कि हम भी आज उसी प्रकार तारीख लिखें कि हमारे साथ भाइयों एवं अमीरों में से कौन कौन है?" हज़रत पादशाह ने तारीख एवं अन्य विवरण अपने पवित्र हाथों से स्वयं खोदा। तीसरे दिन कूच करके एक रात्रि पश्चात् वे नारीन पहुँच गए।

मीर्ज़ा कामरान को जागीर प्रदान करने के विषय में विचार विमर्श

क्योंकि ताशीकान के परामर्श में यह निश्चय हो गया था कि इस वर्ष बल्ख पर आक्रमण नहीं हो सकता अतः हज़रत पादशाह ने हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार को बुलवा कर कहा कि "यद्यपि मीर्ज़ा कामरान ने हमसे मक्का जाने की अनुमति ले ली है किन्तु यदि मैं कृपा प्रदर्शित करते हुए उसे जागीर न प्रदान करूँ और मक्का चला जाने दूँ तो संसार वाले मेरे विषय में क्या कहेंगे? वे यही सोचेंगे कि मैं उससे शत्रुता रखता था अतः मक्का जाने की अनुमति माँगते ही (१०३) वहाँ भेज दिया।" हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार ने निवेदन किया कि, "यदि हज़रत पादशाह इस सेवा हेतु किसी अन्य को मेरे साथ न करें तो मैंने मीर्ज़ा के लिए जागीर ढूँढ ली है।" हज़रत पादशाह ने कहा, "मैं सर्वदा तुझे अकेले ही सेवा करने का आदेश देता हूँ और अब भी दे रहा हूँ, किन्तु ऐसा होना चाहिये कि मीर्ज़ा संतुष्ट होकर हमारे लश्कर से जाय।"

बायज़ीद द्वारा अकबर की सेवा

बायज़ीद को भी जब जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह ने बकावल बेगी एवं अतःपुर की देख भाल प्रदान की और हकीम अबुल फतह ने परवाना पहुँचाया तो उसने[3] भी प्रार्थना की थी कि 'जिस सेवा का हज़रत पादशाह मुझे अकेले आदेश देंगे उसकी उपेक्षा सम्भव नहीं।"

१ अकबर नामा में 'नजरतू एवं मैमना'।
२ अकबर नामा में 'कीसन'।
३ बायज़ीद ने।

हकीम ने बायजीद की प्रार्थना हजरत पादशाह तक पहुँचाई। ९९९ हि० (१५९०-९१ ई०) में जब कि हजरत पादशाह (अकबर) वरकम में थे, तो बायजीद को मसब, सरोपा एव अमा[1] प्रदान किया और कहा कि, "जो मेवा भी तुझे प्रदान की जायगी, तुझे अकेले ही प्रदान होगी[2]।"

मीर्जा कामरान को कोलाब प्रदान करने का प्रस्ताव

हुसेन कुली मुल्तान ने निवेदन किया कि, 'मीर असगर मुशी तथा वाल्लू बेग को मेरे साथ कर दिया जाय ताकि मैं जो कुछ मीर्जा से कहूँ और मीर्जा जो उत्तर दे तथा मैं जो कुछ आपसे निवेदन करूँ उसके विषय में ये लोग गवाह रहे।" हजरत पादशाह ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। हुसेन कुली मुल्तान ने निवेदन किया कि, 'कोलाब के हाकिम चाकर अली खा की जागीर मीर्जा (कामरान) को प्रदान कर दी जाय कारण कि न तो वह हजरत पादशाह का ही सेवक है और न मीर्जा सुलेमान का। राज्य के हित में यही उचित है। चाकर अली को मीर्जा के अधीन कर दिया जाय ताकि वह उसे अपना सेवक बना ले अथवा मीर्जा का जो जी चाहे वह करे। उस विलायत में घोड़े, भेड़े एव आदमी बहुत बड़ी सख्या में है।" हजरत पादशाह ने (यह प्रस्ताव) स्वीकार कर लिया। नारीन की मजिल में मीर्जा कामरान लश्कर से आधे कुराह की दूरी पर उतरा हुआ था।

मीर्जा कामरान का कोलाब स्वीकार करना

(१०४) दूसरे दिन मध्याह्न में हुसेन कुली मुल्तान, मीर असगर मुशी तथा वाल्लू बेग कोलाब की बधाई हेतु मीर्जा कामरान के शिविर में पहुँचे। मीर्जा मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज़ के उपरान्त बाहर आया। इन लोगो ने अभिवादन करके कोलाब का परवाना पहुँचाया। मीर्जा ने उत्तर दिया, "मैं काबुल एव बदख्शाँ का स्वामी था। कोलाब बदख्शाँ का एक परगना ही है। इस जागीर को लेकर मैं नौकरी क्या स्वीकार करूँ? हुसेन कुली मुल्तान ने निवेदन किया कि, "मैंने सुना था कि आप बुद्धिमान् शाहजादे हैं। मै जानता हूँ कि आप इतने अपराध करके भी निश्चिन्त घूम रहे हैं। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि इस जागीर के प्रदान होने के बावजूद आप आपत्ति प्रकट कर रहे हैं।" मीर्जा कामरान इस बात से बड़ा प्रभावित हुआ और समझ गया कि, "जो कुछ वह कहता है, सत्य है।" खड़े होकर हजरत पादशाह की दिशा मे तस्लीम की[3]। दूसरे दिन कूच के समय मीर्जा, हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ और घोड़ा, सरोपा एव कोलाब की विलायत प्राप्त करके सम्मानित हुआ। मीर्जा अस्करी एव चाकर खा को मीर्जा के अधीन कोलाब मे नियुक्त कर दिया गया —

शेर

'तू है और एक प्राचीन सराय मार्ग मे है,
जिससे जो चाहे ले और जिसे जो चाहे दे।'

१ हडा।
२ डा० बनारसी प्रसाद ने "बायजीद को भी जब·· होगी' तक का अनुवाद नहीं प्रकाशित किया।
३ "बरखास्ता व जानिबे हजरत तस्लीम कर्द"—इसका अनुवाद डा० बनारसी प्रसाद ने इस प्रकार किया है — "He got up and bowed down towards the Qiblah" (पृ० ११५)। किबला की ओर झुकने का कोई प्रश्न नहीं।

मीर्ज़ाओं का अपनी जागीरों की ओर प्रस्थान

चाकर (अली) खां के अतिरिक्त सेवक दस मंजिल से उससे पृथक् होकर मीर्ज़ा कामरान से मिल गए। मीर्ज़ा प्रसन्नतापूर्वक विदा होकर कोलाब की ओर रवाना हुआ। इन समस्त अपराधों के बावजूद वह सम्मानित किया गया और उसे जागीरें प्रदान हुईं। हज़रत पादशाह विजयी लश्कर सहित काबुल की ओर रवाना हुए। मीर्ज़ा सुलेमान किश्म की ओर रवाना हुआ और मीर्ज़ा (१०५) हिन्दाल कुन्दुज़ की ओर।

हुमायूं द्वारा परियान के किले की मरम्मत

जब हज़रत पादशाह अन्दराब के अधीनस्थ सरआब नामक एक ग्राम में पहुँचे तो उनके जी में आया कि वे परियान के किले की सैर करें। जिस समय हज़रत साहब किरानी ने कतूर के काफ़िरों से युद्ध किया उसी समय सीमान्त पर पंजहीर दर्रे में इस किले का निर्माण कराया था। दूसरे दिन जब वे किले में पहुँचे तो कुछ घर ममूजरा के घरों की भांति जिन्हें जंगली लोग अपने माल असबाब के लिए पर्वतों में बना लेते हैं, दृष्टिगत हुए। किले का निरीक्षण किया गया। दूसरे दिन हज़रत पादशाह ने किले में पड़ाव किया। क्योंकि वहां बड़ी अधिक मात्रा में जल बह रहा था, और जलवायु बड़ी उत्तम थी अतः हज़रत पादशाह के हृदय में आया कि उस किले की मरम्मत करायें और साहब किरान की भांति वहां जागीरदार एवं हाकिम नियुक्त कर दें। पहलवान दोस्त मीर बर ने मेमारों, मिट्टी खोदने वालों एवं बेलदारों को एकत्र किया। आदेश हुआ कि उन्हें अमीरों को बाँट दिया जाय। दस दिन में उसकी मरम्मत पूरी हो गई। शाह बायज़ीद ने भी उस किले में कार्य किया था। बेग मीरक को उस किले का जागीरदार एवं हाकिम नियुक्त किया गया और उसकी सहायता हेतु एक सेना वहां नियुक्त कर दी गई। खूस्त, अन्दराब एवं पंजहीर के ग्रामों से खाद्य सामग्री की व्यवस्था का आदेश दिया गया।

चांदी की खान में पहुँचना

हज़रत पादशाह ११वें दिन प्रस्थान करके चांदी की खान की ओर रवाना हुए। किले से दो-तीन कुरोह पर दायीं ओर काबुल का मार्ग था। जब वे खान में पहुँचे तो वहां पहलवान दोस्त को बुलवा कर आदेश दिया कि कुछ बेलदार काम करने के लिए बुलवाये जायें। जिन लोगों को खान की आय का ज्ञान था, उन्होंने निवेदन किया कि खान की आय से व्यय पूरा नहीं हो सकता[1]।

हुमायूं का मार्ग भूल जाना तथा बाद में काबुल पहुँचना

(१०६) हज़रत पादशाह एक पहर रात उपरान्त उस स्थान से रवाना हुए। जब वे प्रातःकाल उस्तुर ग्राम दर्रे पर पहुँचे तो मार्ग भूल गए। अली दोस्त एवं अब्दुल वहहाब नामक यसावलों ने, जो कि साथ थे, बड़ा परिश्रम किया किन्तु मार्ग का पता न चल सका। घड़ी भर उपरान्त एक प्यादा

[1] डा० बनारसी प्रसाद ने "जब हज़रत पादशाह अन्दराब के अधीनस्थ- --पूरा नहीं हो सकता" तक का अनुवाद नहीं किया है।

दिखाई पड़ा। हजरत पादशाह ने पूँछा कि "तू कौन है ?" उसने उत्तर दिया कि, "बन्दये खुदा[१]।" हजरत पादशाह ने कहा, "सभी लोग खुदा के बन्दे हैं। अपना नाम बता।" उसने उत्तर दिया, "खाकी[२]।" हजरत पादशाह ने कहा, "अपना नाम बता। खाकी के क्या माने ?" तदुपरान्त उस आदमी ने कहा, "जो इच्छा हो।" क्योंकि मार्ग भूल चुके थे और हजरत पादशाह को क्रोध था अत उन्होंने कहा, "गीदी[३] अथवा कोह दल्लाल,[४] तुझे क्या कहूँ ?" बायजीद बयात ५—६ वर्ष से हज़रत पादशाह की सेवा कर रहा था, वे इतना क्रोधित कभी न हुए थे। तत्पश्चात् एक प्यादे ने मार्ग दर्शा कर उन्हें उस्तुर ग्राम नामक स्थान तक पहुँचा दिया। हज़रत पादशाह ने पजहीर नदी के तट पर पड़ाव किया। वहाँ से प्रस्थान करके वे करा बाग और दूसरे दिन काबुल पहुच गये। वह ९५५ हि० (१५४८-४९ ई०) का तीर मास[५] था।

हुमायूं का बल्ख की ओर प्रस्थान

हज़रत पादशाह ने शीत ऋतु काबुल में व्यतीत की और बल्ख की चढ़ाई की तैयारी करके बहार के प्रारम्भ में बल्ख की ओर रवाना हुए[६]। मीर्जाओं के नाम फरमान भेजे गए कि मीर्जा कामरान तथा (१०७) मीर्जा अस्करी कोलाब से, मीर्जा सुलेमान तथा मीर्जा इबराहीम किश्म से एव मीर्जा हिन्दाल कुन्दुज से नारीन होते हुए विजयी लश्कर में पहुँच जायें। जब हज़रत पादशाह नारीन पहुँचे तो मीर्जा सुलेमान, मीर्जा हिन्दाल तथा मीर्जा इबराहीम हज़रत पादशाह की सेवा द्वारा सम्मानित हुए। मीर्जा सुलेमान ने निवेदन किया कि, "मीर्जा इबराहीम को अनुमति दे दी जाय कि वह बदख्शाँ की कुछ आवश्यक सेवाओं के लिये किश्म में रहे और हिरावली[७] भी करे।" हजरत पादशाह ने अनुमति दे दी। वहाँ से वे बल्ख की ओर रवाना हुए। ख्वाजा दोस्त खावन्द[८] को इससे पूर्व हज़रत पादशाह ने मीर्जा कामरान तथा मीर्जा अस्करी को बुलवाने के लिए कोलाब भेज दिया था। उसका प्रार्थना पत्र उसी मंजिल पर प्राप्त हुआ कि मीर्जा लोग अपना लश्कर तैयार करके शीघ्र सेवा में पहुँच जायेंगे। जब यह प्रार्थना-पत्र प्राप्त हो गया तो हज़रत पादशाह बिना प्रतीक्षा किए निरतर यात्रा करते हुए बल्ख की ओर रवाना हो गए।

चीते की हत्या का अशकुन

जब वे खुर्रम एव सार बाग ग्राम[९] में पहुँचे तो हज़रत पादशाह वुज़ू करने के लिए मार्ग मे

१ खुदा का दास; प्राणी।
२ भूमि का।
३ ठग, लुटेरा।
४ मूर्ख, भ्रष्ट, धूर्त।
५ एक ईरानी महीना जो हिन्दी हिसाब से 'सावन' होता है।
६ अकबर नामा में ९५६ हि० के प्रारम्भ (जनवरी १५४९ ई०) में। (देखिये अनुवाद पूर्व पृ० २५२)।
७ सेना के अग्र भाग की सेवा, सम्भवत: करावली से तात्पर्य है।
८ अकबर नामा में 'बाल्तू बेग'।
९ मूल में "चूं बदहनये ([illegible]) खुर्रम व सार बाग रसीदन्द"। सम्भवत: बदहनये के स्थान पर बदेहे ([illegible]) अधिक उचित है। ये स्थान खुल्म नदी पर खुल्म तथा काहमर्द के मध्य में स्थित है। बाबर ने ९३३ हि० (१५२६-१५२७ ई०) की घटनाओं के विवरण में मावराउन्नहर के समाचारों के प्रसंग में इनका उल्लेख किया है। (बाबर नामा, पृ० २२५)। डा० बनारसी प्रसाद ने भी 'देह' ही पढ़ा है (पृ० ११७)।

किनारे पर उतर पड़े। शेर मुहम्मद पक्ना हज़रत पादशाह का एक तवाची था। उसने एक चीते की बाण द्वारा हत्या कर दी थी। वह उसे लाया। हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार ने निवेदन किया कि, 'जिस समय मुझे बैरम ऊगलून[1] बन्दी बना कर बल्ख के हाकिम किस्तन करा सुल्तान[2] के पास ले गया था तो वह जचक्तू व मैमना[3] में था और खुरासान[4] पर आक्रमण करना चाहता था कि एक (१०८) आदमी इसी प्रकार एक चीता मार कर लाया। ऊज़बेकों ने जानू के बल झुक कर निवेदन किया कि, 'हमारे लिए इस लश्कर के साथ जाना उचित नहीं' और अभियान भंग कर दिया गया।" हज़रत पादशाह ने कहा कि, "वे लोग शत्रु हैं। जो कुछ उनके लिए अशकुन है, हमारे लिए शकुन है।" फिर किसी को कुछ कहने का साहस न हुआ।

हुमायूं द्वारा ऐबक पर अधिकार

करजा खां का खेमा लगा हुआ दिखाई पड़ा, हज़रत पादशाह बड़े रुष्ट हुए। दो-तीन कुरोह आगे बढ़ कर उतर पड़े। दूसरे दिन हज़रत पादशाह स्वयं ऐबक की ओर रवाना हुए। जब उनकी सेना का अग्र भाग ऐबक के समीप पहुँचा तो मीर मुहम्मद खां का अतालीग[5] ख्वाजा बाग अतालीग[6] तथा ईल मीर्ज़ा, तूती मीर्ज़ा, सुल्तान मुहम्मद मीर आब, कूरी दीवान बेगी, नवराज़ बेग[7], खुदा बीरदी ऊगलून, आक कोचक के दरमन, मुहम्मद कुली, अरब के, हैदर कुली के खान मीर्ज़ा एवं ऊगलूनों का एक अन्य समूह, तथा पीर मुहम्मद खां के अमीर ऐबक के किले में प्रविष्ट हो चुके थे और ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें पता न था कि हज़रत पादशाह इतने शीघ्र बल्ख की ओर रवाना हो जायेंगे। (शाही) सेना के अग्र भाग वालों ने किले को घेर कर हज़रत पादशाह की सेवा में आदमी भेजे कि, 'ये लोग किले में हैं। इन लोगों को किले से बाहर निकलने का अवसर न मिले।" हज़रत पादशाह ने तत्काल पहुँच कर किले का निकट से अवरोध कर लिया। क्योंकि किले में जल एवं खाद्य सामग्री न थी और उन लोगों को ज्ञात था कि न तो पीर मुहम्मद खां ही आ सकेगा (१०९) और न कुमक ही पहुँच सकेगी अतः दूसरे दिन वे क्षमा-याचना करके चरणों के चुम्बन द्वारा सम्मानित हुए। हज़रत पादशाह के आदेशानुसार वे करजा खां के खेमे के बराबर उतर पड़े।

बल्ख विजय के सम्बन्ध में ऊज़बेक बंदियों से परामर्श

एक दिन उन्हें[8] हज़रत पादशाह ने अपने अन्य अमीरों के साथ बुलवा कर परामर्श किया कि, 'बल्ख को किस प्रकार विजय करें?" ख्वाजा बाग अतालीग ने निवेदन किया कि, "हम लोग आपके शत्रु हैं। आप हमसे क्या परामर्श कर रहे हैं?" हज़रत पादशाह ने कहा, 'ऊज़बेक लोग सच्चे

१ अकबर नामा में 'बैरम ऊगलान', (हिन्दी अनुवाद पूर्व पृ० २५३)।
२ पीर मुहम्मद का बड़ा भाई जो उससे पूर्व बल्ख का शासक था।
३ अकबर नामा में 'जजक्तू व मैमना'।
४ अकबर नामा के अनुसार 'हेरी पर आक्रमण की तैयारी हो रही थी'।
५ अतालीक गुरु।
६ अकबर नामा के अनुसार 'ख्वाजा बाक़,' (देखिये हिन्दी अनुवाद पूर्व पृ० २५४)।
७ खान, (देखिये अनुवाद पूर्व पृ० २५४)।
८ ऊज़बेकों को।

होते हैं। हमने तेरे विषय में सुना है कि तू ऊजबेकों में सबसे बढ कर सच्चा है। इस परामर्श गोष्ठी में परीक्षा ले रहा हूँ।" उसने उठ कर निवेदन किया कि, "यदि आप की बल्ख पर अधिकार जमाने की अभिलाषा है तो आप हमारी हत्या करा दें। शीघ्रातिशीघ्र बढते चले जायें। बल्ख आपका है।" हजरत पादशाह ने कहा, "तुम लोग मुसलमान हो। इतने सब मुसलमानों की किस प्रकार हत्या कराऊँ?" तदुपरान्त अतालीग ने निवेदन किया कि, "आप यह बात स्वीकार नही करते तो एक अन्य उपाय है। यदि आदेश हो तो निवेदन करूँ। पीर मुहम्मद खा मेरी बात का विरोध न करेगा। खुल्म से इस ओर के स्थान आपकी सेवा में प्रस्तुत कर दिए जाये। आपके सम्मानित नाम का खुत्बा एव सिक्का समरकन्द, बुखारा एव बल्ख में चलवा दिया जाय। जिस समय आप हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करें, तो समरकन्द, बुखारा एव बल्ख के १००० चुने हुए आदमी आपके साथ रहे।" हजरत पादशाह ने यह प्रार्थना भी स्वीकार न की।

हुमायूं का बल्ख की ओर प्रस्थान

आख बोचक बे दरमन, मुहम्मद कुली बे, अरब बे, हैदर कुली बे, नवरोज बे कूजी, खान मीर्ज़ा,
(११०) तूती मीर्ज़ा, ईल मीर्ज़ा, सुल्तान मुहम्मद मीर आब, बुदुश ऊगलान, बूरी दीवान बेगी तथा जो समूह ऐबक के किले में बन्दी बनाया गया था और जिनके नामों का ऊपर उल्लेख हो चुका है काबुल भेज दिए गए। अतालीग़ को शिविर में ही निगरानी में रक्खा गया। हजरत पादशाह ने खुल्म के मार्ग से बल्ख की ओर प्रस्थान किया। खुल्म नामक स्थान को पार करके बाबा शामू[1] नामक स्थान पर उतरे। उस रात्रि में घोडे तैयार एव सैनिक अस्त्र-शस्त्र लगाये तथा कवच धारण किए रहे।

शाह मुहम्मद सुल्तान द्वारा हुमायू के शिविर पर आक्रमण

क्योकि करावलो ने ऊजबेका की सियाही[2] देख ली थी अत लश्कर को उतरने का आदेश न हुआ। प्रात काल करावलो ने समाचार पहुँचाये कि "यद्यपि पीर मुहम्मद खाँ बल्ख से रवाना हो चुका है किन्तु उसने अभी तक तख्तये पुल नही पार किया है।" हजरत पादशाह शाह औलिया के मजार की जियारत हेतु रवाना हुए। एक पहर दिन तक वे वहाँ रहे। मजार के मुजाविरो को नजर देकर लश्कर की ओर रवाना हुए। अभी उचित रूप से इस प्रकार बारगाह न लगाई गई थी कि बैठा जा सकता अत हजरत पादशाह ग़ुमुलखाने में पहुँच कर स्नान करते रहे। लश्कर एव बाजार ने मजार की नहर एव फालीज[4] के किनारे पडाव कर दिया। लश्कर वाले शत्रु की ओर से असावधान[5] थे कि शिविर एव बाजार की ओर से शोर गुल होने लगा। सैनिको का एक दल सवार हो गया ज्ञात हुआ कि शाह मुहम्मद वल्द बरुन्दूक सुल्तान हिसारी ने कुछ आदमियो सहित शिविर के बाजार पर आक्रमण कर दिया है। मुहम्मद कासिम मौजी के भाई काबुली, सैयिद मुहम्मद पक्ना एव मुहम्मद जान तुर्कमान ने कुछ सैनिको को लेकर (शाह मुहम्मद सुल्तान) से युद्ध किया

१ मूल में 'बाबा शाहू' किन्तु 'बाबा शामू' उचित है। देखिये डा० बनारसी प्रसाद का अनुवाद (पृ० ११६)।
२ सेना।
३ चग़ता।

(१११) काबुली युद्ध में मारा गया। (शत्रु) उसका सिर काट कर बल्ख ले गए। शाह मुहम्मद सुल्तान के सेवकों में से ऊतकुन बहादुर[1] को बन्दी बना कर हजरत पादशाह की सेवा में लाया गया। उसकी नाक पर तलवार का घाव लगा था। जिस समय ऊतकुन को हज़रत पादशाह की सेवा में प्रस्तुत किया गया तो हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार का सेवक बायजीद उस अवसर पर उपस्थित था। हजरत पादशाह ने ऊतकुन से पूछा कि, "शिविर पर किसने आक्रमण किया था?" ऊतकुन ने निवेदन किया कि "शाह मुहम्मद सुल्तान, बरन्दूक सुल्तान हिसारी के पुत्र ने।" हजरत पादशाह ने पूछा, "क्या वह पागल हो गया था?" उसने निवेदन किया कि, "वह जवान है और अभिमानी भी। हिसार से रवाना होकर पीर मुहम्मद खां से भेंट किए बिना लूट मार करके वह बल्ख जाना चाहता था।" ऊतकुन को घोड़े से गिराने के विषय में मुहम्मद जान तुर्कमान एवं सैयिद मुहम्मद पकना झगड़ा कर रहे थे। हज़रत पादशाह ने ऊतकुन से पूछा कि, "तुझे किसने घोड़े से गिराया?" उसने मुहम्मद जान[2] की ओर संकेत करके कहा कि, "इसने सर्वप्रथम मेरे ऊपर तलवार का वार किया। मैंने प्रयत्न किया कि उसकी तलवार मेरे न लगे किन्तु उसकी तलवार की हवा से मैं घोड़े से गिर पड़ा। उठकर मैं अपने घोड़े के समक्ष खड़ा था कि इस दूसरे जवान ने पहुँच कर मुझपर तलवार चलाई। मुझे जो घाव लगा वह इसकी तलवार से।" हजरत पादशाह ने सैयिद मुहम्मद को सम्बोधित करते हुए कहा कि, "जब वह मुहम्मद जान की तलवार की हवा[3] से गिर पड़ा था और प्यादा होकर खड़ा था तो तूने बड़ी धृष्टता की जो उसपर तलवार चलाई।" अन्त में इसका श्रेय हजरत पादशाह (११२) ने मुहम्मद जान की वीरता को प्रदान किया। पीर, मुहम्मद आख्ता[4] से, जो निकट था, कहा कि, "ऊतकुन को अपने ख़ेमे में ले जाओ और उसका घाव सियो तथा उसकी रक्षा करते रहो।" ऊतकुन के पास करोबा के यराक[5] में से बक्तर एवं हाथ पाँव पर दस्त बन्द[6], ज़ानू बन्द[7] एवं जिरह बची थी। वे उस रात्रि को उसी पड़ाव पर रहे।

हुमायूं की सेना के अग्र भाग की विजय

दूसरे दिन हज़रत पादशाह दामने कोह एवं दर्रये सूफ से बल्ख की ओर रवाना हुए। हजरत पादशाह ने मार्ग में जो कुछ दिन देर की तो वह मीर्ज़ा कामरान के आगमन हेतु थी। इस मंज़िल पर पता चल गया कि मीर्ज़ा नहीं आ रहा है। मीर्ज़ा के लश्कर में न आने से लोगों को भय हुआ कि कहीं मीर्ज़ा कामरान काबुल पर चढ़ाई न कर दे। मीर्ज़ा के प्रति शंका ऊज्बेकों के भय में भी अधिक व्याकुलता का कारण बन गई। उसी दिन अस्र की नमाज़ के समय तख्ते पुल पर पीर मुहम्मद से युद्ध

१ अकबर नामा में 'ऊर्क़न उगलान' (अनुवाद पूर्व पृ० २५८)।
२ अकबर नामा में 'मुहम्मद खां', (देखिये पूर्व पृ० २५६)।
३ अकबर नामा में, 'भय', (देखिये पूर्व पृ० २५६)।
४ डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में 'पीर मुहम्मद अतका' (पृ० १२१)। हस्तलिपि में भी 'आख्ता' है।
५ अस्त्र-शस्त्र।
६ उसे हाथ की रक्षा हेतु बांधा जाता था।
७ उसे पाँव की रक्षा हेतु बांधा जाता था।

हुआ। जब हज़रत पादशाह जावचीन[1] हो गए, इसी बीच में समाचार प्राप्त हुए कि मीर्ज़ा सुलेमान, मीर्ज़ा हिन्दाल, हाजी मुहम्मद सुल्तान काबो एव अन्य लोगो ने, जो पादशाह की सेना के अग्र भाग में थे, ऊज़बेकों को पराजित करके तम्नये पुल से बल्ख की ओर भगा दिया। उस समय इस्कन्दर सुल्तान के पुत्र अब्दुल्लाह सुल्तान एव खुसरो सुल्तान, पीर मुहम्मद की सेना के अग्र भाग में थे। अब्दुल्लाह के विषय में कहा जाता है कि वह २५ वर्षीय था। उस युद्ध को हुए ४३ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं।

हाजी मुहम्मद का खान नियुक्त किया जाना

हाजी मुहम्मद सुल्तान ने वापस होकर सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। क्योंकि हजरत पादशाह हाजी मुहम्मद के परिश्रम को देख चुके थे अत उन्होंने हुसेन कुली सुल्तान (११३) मुहरदार को आदेश दिया कि, 'हाजी मुहम्मद सुल्तान को खान बनाये जाने का परवाना पहुँचा दो।' उसने शाही आदेशानुसार परवाना पहुँचा दिया। हाजी मुहम्मद ने खान की उपाधि द्वारा सम्मानित होकर तस्लीमे की।

हुमायूँ का काबुल वापस जाने के विषय में निश्चय करना

शाम की नमाज के समय हजरत पादशाह बल्ख की नदी के समीप, जो बल्ख से आधे कुरोह पर है, पहुँच गए। उस नदी के किनारे तरबूज की फसल तैयार थी। समस्त सैनिक तरबूज खा कर बडे प्रसन्न हुए। सोने के समय की नमाज़ के वक्त हजरत पादशाह ने अमीरो को एकत्र करके परामर्श-गोष्ठी आयोजित की। जो अमीर ऊज़बेको से युद्ध न करना चाहते थे, उन्होने निवेदन किया कि, 'मीर्ज़ा कामरान अभी तक सेवा में उपस्थित नही हुआ। वह काबुल पर आक्रमण हेतु चला गया होगा।" उन लोगो ने यह भी निवेदन किया कि 'यदि न गया होगा तो अब जा सकता है।" जब हजरत पादशाह को इस तथ्य का पता चला तो उन्होने इस विषय में परामर्श किया। लोगो ने कहा कि, 'ऊज़बेको से युद्ध प्रारम्भ हो जाने पर जब तक हमारे उद्देश्य की पूर्ति न हो जाय, लौटना उचित नही। अच्छा तो यह होगा कि हज़रत पादशाह काबुल चले जायें कारण कि यदि मीर्ज़ा कामरान काबुल पर अधिकार जमा लेगा तो बडी कठिनाई हो जायगी।" हजरत पादशाह ने उसी रात्रि मे काबुल की ओर प्रस्थान करने का सकल्प कर लिया।

पीर मुहम्मद के विलम्ब करने का कारण

जिस समय पीर मुहम्मद अमू नदी को पार करना चाहता था, अब्दुल अजीज़ खा का प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ कि यह बुखारा से प्रस्थान कर चुका है और कुमक के लिए आ रहा है। पीर मुहम्मद खा के अमू नदी पार न करने का कारण यही था। आधी रात उपरान्त अमीर लोग हजरत पादशाह की सेवा से अपने खेमा में पहुँचे और गज दर्रे के मार्ग से काबुल के लिए रवाना हो गए। नव्वाब मीर्ज़ा सुलेमान एव हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार सेना के पीछे के भाग में नियुक्त थे। हुसेन कुली सुल्तान का सेवक बायजीद भी उसी दस्ते के साथ था।

१ इस शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं। पुस्तक में 'जावचीन शुदन्द' है। डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है —" The Emperor also became anxious " (पृ० १२१)।

हुमायूं की सेना की पराजय

(११४) प्रात काल की नमाज के समय शाही लश्कर गंज नदी के तट पर बडी अव्यवस्थित दशा में[1] पहुँचे। ऊज़बेक लोग भी उसी समय पीछे से पहुँच गए। पादशाह की सेना के पिछले भाग ने ऊज़बेकों से थोडा सा युद्ध किया किन्तु मुकाबला न कर सके और प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी कोने में भाग गया। ऊज़बेको ने शाही लश्कर बाज़ार पर छापा मारा। हज़रत पादशाह नदी के उस पार कुछ सेवको सहित खडे थे। समाचार प्राप्त हुए कि मीर्ज़ा हिन्दाल ऊज़बेकों के निकट था। यह भी निवेदन किया गया कि सभवत वह बन्दी बना लिया गया होगा। हज़रत पादशाह इस समाचार से बड़े दुखी हुए। हुसेन कुली मुल्तान ने निवेदन किया कि, "मीर्ज़ा हिन्दाल बच्चे नही हैं। बडे और जवान हैं। जिस ओर से मौका पायेंगे निकल जायेंगे।' हज़रत पादशाह ने शाह कुली नारजी को, जो निकट खडा था, आदेश दिया कि, "जाकर मीर्ज़ा (हिन्दाल) के विषय में प्रामाणिक रूप से पता लगाकर आये।" हज़रत पादशाह नदी पार करने के लिए बढे। ऊज़बेका का जो समूह नदी के सरकोब[2] के पास था, उसने हज़रत पादशाह पर बाण चलाने प्रारम्भ कर दिए। दास बायजीद, हज़रत पादशाह की ओर ढाल किए हुए था कि एक बाण आकर हज़रत पादशाह के घोडे के सीने मे लगा। घोडा धुधले काले रग का था जिसे सुल्तान मुहम्मद मीर्ज़ा के लला शरफुद्दीन मुहम्मद खा (११५) ऊगली ने उन्ह हेरी जाते समय उपहार स्वरूप भेंट किया था और उसका नाम नजरुन्नाजेरीन[3] था। जब हज़रत पादशाह (नदी) पार कर रहे थे तो जो लोग साथ थे, वे युद्ध करके ऊज़बेका को इस आशय से रोके रहे कि हज़रत पादशाह निकल जाये।

काबुल की ओर हुमायूं की वापसी

जब वे कुछ दूर चले गए तो हुसेन कुली मुल्तान को आदेश दिया कि "जो लोग भाग गए हैं उनको एकत्र करके लौटा लाये ताकि वे ऊज़बेका से युद्ध कर सकें।' उसने निवेदन किया कि, "जो लोग भागे जा रहे हैं वे सब आपको देख रहे हैं और लौट नही रहे हैं। इस समय कोई भी मेरी बात न सुनेगा।" हज़रत पादशाह ने कहा, 'तू इस समय मेरे आदेश का पालन नही करता।" उसने निवेदन किया, "पादशाहे आलम! मुझे क्षमा करें।" यह कह कर चल दिया और अपने सेवक बायजीद को आदेश दिया कि, "तू मेरे साथ आ। ये अन्य सेवक हज़रत पादशाह की सेवा में रहें।" जब वह खिज़्र ख्वाजा मुल्तान, मुसाहिब बेग, मुहम्मद कासिम मौजी, शाहम बेग जलायर इत्यादि सरीखे जिस किसी (अमीर) के पास पहुँचता तो यही कहता कि "हज़रत पादशाह स्वय खडे युद्ध कर रहे हैं।" किन्तु उसके अत्यधिक आग्रह पर भी किसी में वापस होने का सामर्थ्य न रह गया था। उस समय प्रत्येक व्यक्ति तेजी पर था, एक दूसरे का घोडा खीच-खीच कर सवार हो रहा था। हुसेन कुली मुल्तान मुहरदार यह देख कर मार्ग से किनारे हो गया[4]। मध्याह्न के समीप

१ "शिकस्त हाय लवे आबे गज"।
२ टीले से तात्पर्य है।
३ अकबर नामा में 'तमरुन्नाजेरीन'।
४ "ब किनार गिरिफ्त—किनारे हो गया अथवा अलग हो गया।" डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है "Husain Quli himself saw this and returned to the bank" (पृ० १२३)।

हजरत पादशाह् एक ऊँचाई पर दृष्टिगत हुए। जब वह[1] हजरत पादशाह की सेवा में पहुँचा तो उसने बडा खेद प्रकट किया। हजरत पादशाह ने नाना प्रकार से सांत्वना देते हुए कहा कि, "सैनिकों के जीवन मे ऐसा होता ही रहता है। कोई आपत्ति नही।" हजरत पादशाह का जो घोडा आहत हो गया था, उसी स्थान पर हजरत पादशाह पर न्योछावर[2] हो गया। हैदर मुहम्मद आख्ता (११६) बेगी के पास एक तुर्की[3] घोडा था। उसने उसे हजरत पादशाह की सेवा में प्रस्तुत किया। हजरत पादशाह उसी घोडे पर सवार होकर अनिश्चित मार्ग[4] से सूफ दर्रे की ओर रवाना हुए। मध्याह्नोपरान्त दर्रे में पहुँच गए। वे लगभग एक कुरोह आगे बढे थे कि सामने से बाहर जाने का मार्ग न पाकर लौट पडे। कुछ वीर लोगो ने, जिन्हे वीरता का दावा था, पहुँच कर दर्रे का मार्ग इस भय से रोक लिया कि कही ऊजबेगो ने मार्ग न रोक रक्खा हो[5]।

हुमायूं के कुछ सैनिकों का मार्ग में उनके पास पहुँचना

जब हजरत पादशाह इस दर्रे को छोड कर दूसरे दर्रे की ओर जहाँ से मार्ग होने की कल्पना की जाती थी रवाना हुए तो वे एक कुवें पर पहुँचे जहाँ जगली लोग अपने मवेशियो को जल पिलाते थे। दो सैनिक ककक[6] द्वारा जल खीच रहे थे। हजरत पादशाह ने उनसे जल माँगा। उन लोगो ने न तो हजरत पादशाह को पहचाना और न जल दिया और न उत्तर। हुसेन कुली सुल्तान का सेवक बायजीद उस समय कुवें पर पहुँच गया। हजरत पादशाह ने कहा, "मैने इन लोगो से जल माँगा, इन्होने नही दिया। तू जल ले आ।" जब मुझे पता चला कि उन लोगो ने हजरत पादशाह को पानी नही पिलाया तो मैंने ककक के स्वामी की हत्या करके ककक छीन लिया और उसमें जल भर कर हजरत पादशाह की सेवा मे ले गया। हजरत पादशाह ने पानी पीकर मुझे आशीर्वाद दिया। कासिम हुसेन खा गुर्ग अन्दाज[7] हजरत पादशाह से दूर खडा था। उन्होंने (११७) कहा कि, "मेरी करौती मे जल भर कर शेष जल कासिम हुसेन खा को दे दो।" हरिया नामक आबदार के हाथ में करौती थी, भर कर उसे सौंप दी गई। इसी बीच मे जो लोग छिन्न भिन्न हो गए थे, वे हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित हो गए। हजरत पादशाह चल खडे हुए।

बायजीद की घोडे की समस्या

इस बीच में मीर्जा सुलेमान के खानाजाद अल्लाह का करातक घाडा जिसे उसने खिज्र ख्वाजा सुल्तान को दे दिया था, और सुल्तान ने जिसे बायजीद को प्रदान कर दिया था, थक गया। हजरत पादशाह ने बायजीद से कहा कि, "धैर्य धारण कर। तुझे घाडा प्राप्त हो जायगा।"

१ हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार।
२ मर गया।
३ सम्भवत तुर्की से तात्पर्य है।
४ "हजरत हमा अस्प सवार शुद। अज बेराहा व जानिब दरये सूफ मुतवज्जेह शुदन्द"। 'बेराहा' का प्रयोग इस प्रकार हुआ है कि यह स्थान का नाम ज्ञात होता है।
५ डा० बनारसी प्रसाद ने 'हजरत पादशाह का जो घोडा ... मार्ग न रोक रक्खा हो" तक का अनुवाद नहीं प्रकाशित किया है।
६ सम्भवत कद्दू का बना हुआ डोल।
७ हस्तलिपि में 'यक गज अन्दाज', प्रकाशित में 'गुर्ग अन्दाज'। डा० बनारसी प्रसाद ने 'यक गज अन्दाज के

थोडी देर उपरान्त एक सिपाही हुसेन कुली सुल्तान के रकेब के खच्चर पर सवार दिखाई पडा। नदी तट पर रिकाबदार के दास ने उसे खुर्जियों[१] सहित छोड दिया था और उस सैनिक ने उसे पकड लिया था। बायज़ीद ने हुसेन कुली सुल्तान से कहा कि, "हुसेन कुली खा[२] के रकेब के खच्चर पर एक सिपाही सवार होकर आ रहा है।" हजरत पादशाह ने सुन कर कहा, "ले लो।" क्योकि उस सवार को कुछ पता न था अत जब वह निकट आ गया तो बायज़ीद ने उसे खच्चर से उतार कर खच्चर ले लिया। जब वह आपत्ति प्रकट करने लगा तो हजरत पादशाह ने उसके एक छडी मार कर कहा, "वह अपना खच्चर ले रहा हूँ। तू क्यो आपत्ति प्रकट करता है?" जब बायज़ीद को हज़रत पादशाह की कृपा के कारण खच्चर प्राप्त हो गया तो उसने थके हुये घोडे को वहीं छोड दिया। काबुल द्वार पर उसे किसी अन्य घोडे की आवश्यकता न हुई।

हुमायू द्वारा अपरिचित मार्ग से काबुल की ओर प्रस्थान

सायंकाल के समीप इस प्रकार कुछ अन्य लोग कुवे पर पहुँच गए। लगभग ८००-९०० आदमी हजरत पादशाह की सेवा मे एकत्र हो गए। हजरत पादशाह ने इस समूह को अपने साथ रखना उचित न समझा और कहा, "आज रात्रि में मैं इस मंजिल पर रहूँगा।" जब लोग घोडो को (११८) जल पिलाने लगे तो हज़रत पादशाह ने हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी को बुलवाया और आदेश दिया कि, "शाह बाबा तोलकची से कहो कि कोई मार्ग-दर्शक लाये जो अपरिचित मार्ग[३] से काबुल पहुँचा सके।" जब शाह बाबा हज़रत पादशाह की सेवा मे उपस्थित हुआ तो वह खुदा बख्शी लौलही नामक एक व्यक्ति, जो ईलायहक के ईमाक से सम्बन्धित था और काना था, को लाया और कहा कि, "यह मार्ग से भली भाँति परिचित है।" हज़रत पादशाह ने शाह बाबा को जुब्बा एव तूक प्रदान किया और मार्ग-दर्शक का भी शाहाना (इनाम) का आश्वासन दिलाया। सोने के वक्त की नमाज का समय निकल चुका था कि हज़रत पादशाह ने एक भाले पर दाहा[४] बाँध कर बायज़ीद को दिया और कहा कि "मार्ग-दर्शक के पीछे पीछे चलो।" हजरत पादशाह भाले को देखते हुए पीछे पीछे रवाना हुए। इन ७००-८०० आदमियो में से ५० आदमी इसकी सूचना पाकर हजरत पादशाह के साथ हो लिये। शेष लोग कुवो पर ही रह गए। हम लोग २-३ कुरोह चले होगे कि एक दर्रा दिखाई पडा जो टेढा मेढा था। घहा उतर पडे। वह टेढा मेढा दर्रा ऊपर चला गया था। जब वे उस दर्रे को पार कर चुके तो एक पहर रात तक समतल मार्ग पर यात्रा करते रहे। तदुपरान्त मार्ग-दर्शक ने कहा कि, 'ऐबक ग्राम समीप है। घोडो के मुह बाँध लिए जायें ताकि कहीं ऐबक वालों को पता न चल जाये।" दूसरे दिन जल न प्राप्त हुआ। तीसरे दिन, अस्र की नमाज के समय चार चश्मे के कोतल पर पहुँच गये। वहाँ दो कुयें थे [५]। वहाँ से रवाना होने

१ सामान के थैलों सहित।

२ सम्भवत हुसेन कुली सुल्तान।

३ बेराहा।

४ फरहगे आनन्द राज नामक शब्द-कोश के अनुसार यारून एव मोतियों की लडी।

५ इन कुओं के विषय में लिखा है कि वे "दर ईलाक व ईमाके साया गुन्चा अस्त"। इस वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं। सम्भवत उनके अत्यधिक महत्वपूर्ण होने से तात्पर्य है।

के तीन दिन उपरान्त उस मंजिल पर पड़ाव हुआ जहाँ केवल दो कुवें थे जिनका उल्लेख हो चुका है। एक कुवें में लोग प्रविष्ट हो जाते थे। दूसरे कुवें में ५-६ गज रस्सी लगती थी। जिस कुवें (११९) में लोग प्रविष्ट हो कर जल निकाल लाते थे उसका जल मैला हो गया था अतः हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार तथा तोलक कूरची उस कुवें पर पहुँचे जिसमें रस्सी डाली जाती थी। हज़रत पादशाह का एक सेवक सैयिद वाल्ू नामक उस कुवें में जल निकाल रहा था। हुसेन कुली सुल्तान ने कहा, "जल्दी करो। हम भी पानी पियेंगे।" उसने (हुसेन कुली) सुल्तान की बात पर आपत्ति प्रकट करते हुए कहा कि, "जो आदमी सैनिक सेवा करता है, उसे अपना प्रबन्ध रखना चाहिये।" हुसेन कुली सुल्तान ने कहा, "मैं नहीं समझा कि तू क्या कहता है?" तोलक कूरची ने कहा, "आपको भी अपने पास कवर रखना चाहिये ताकि ऐसे अवसर पर वह काम आये।" (हुसेन कुली) सुल्तान को इस बात से बड़ा दुःख हुआ। उसने कहा 'मुझे क्या मालूम था कि इतनी आयु समाप्त करने के उपरान्त मैं काबुल पहुँच कर हुमायूँ पादशाह का सेवक बनूँगा और वे बल्ख पहुँच कर पराजित हो जायेंगे। मुझमें इतना चमत्कार (दूरदर्शिता) न था कि आज के दिन के लिए अपने पास डोल रख लेता।" हुसेन कुली सुल्तान ने तोलक कूरची के समक्ष शपथ ली कि, "जब तक मैं बहते हुए जल पर न पहुँचूँगा और अपने चलने में जल न पियूँगा, किसी से जल न माँगूँगा।" बायज़ीद यद्यपि उस दिन उसे जल देने का अत्यधिक प्रयत्न करता रहा किन्तु उसने जल न पिया।

हुमायूं द्वारा अफ़ीम का सेवन

इसी बीच में हज़रत पादशाह ने पूँछा कि 'किसी के पास कोई रोटी का टुकड़ा है? मैं अफ़ीम खाना चाहता हूँ।' बायज़ीद ने पराजय के दिन मुरब्बे का एक डिब्बा एवं तदूरी रोटी का थैला ख़्वाजा कासिम ब्यूतात के ख़ेमे से ले लिया था। उसने दोनों हज़रत पादशाह की सेवा में प्रस्तुत किये। हज़रत पादशाह ने तदूरी रोटी के थैले में से कुछ चुन कर खाया। टुकड़ों को थैले सहित बायज़ीद को वापस करके पूँछा कि, 'डिब्बे में क्या है?' मैंने उत्तर दिया कि, मुरब्बा है किन्तु (१२०) यह ज्ञात नहीं कि किस चीज का मुरब्बा है?" जब डिब्बा खोला गया तो आलू बालू का मुरब्बा निकला। हज़रत पादशाह ने पूरा डिब्बा ले लिया।

वापसी की कठिनाइयाँ

इसी पड़ाव पर मुहम्मद कुली शेख़ कमान, जो सीधे मार्ग से जा रहा था, हज़रत पादशाह के समाचार पाकर उनसे मिल गया। उसने कहा कि, "मीर असग़र मुंशी तथा अली मुहम्मद कुन्दुज़ी, जो उस समय कुन्दुज के सैनिकों में सर्वश्रेष्ठ थे, आ रहे हैं।' बैरम उगलून एवं उज़बेकों का एक अन्य समूह, जो लश्कर के पीछे आ रहा था हमारे आगे से निकल गया। उन्होंने यह निश्चय किया है कि वे दाढ़ी तथा सिल्की चले जायें। उसी समय मुहम्मद कुली शेख़ कमान का घोड़ा मरने के करीब पहुँच गया। हज़रत पादशाह ने आदेश दिया कि उसे हलाल करके उसका मांस लोगों को बाँट दिया जाय। मुहम्मद हुसेन नाज़िर ने उस घोड़े के माँस का वितरण किया। उसमें से रान का एक भाग मुसाहिब बेग तथा हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार को प्राप्त हुआ। उन लोगों को इतना माँस मिल गया कि उसके कबाब बना सकते थे। बायज़ीद ने उन काँटों से, जो कि साही के काँटों के समान होते हैं किन्तु भूमि से निकलते हैं और जिनमें कोयला नहीं होता और जो एराक़ की विलायत में कोद कहलाते हैं, आग जलाई। माँस जैसे ही आग पर डाला जाता, आग राख हो जाती

और मांस उसी प्रकार कच्चा रह जाता था। तीन दिन से अन्न-जल न प्राप्त हुआ था। मुसाहिब बेग ने कच्चा मांस यद्यपि अपने दांतों से बहुत कुछ काटा किन्तु उससे उसकी भूख समाप्त न हुई। हुसेन कुली सुल्तान ने जब देखा कि अत्यधिक प्रयत्न करने पर भी कुछ प्राप्त नहीं होता तो वह अपना सिर रख कर[1] सो गया और कूच के समय तक सोता रहा। बायजीद इस सेवा के उपरान्त हुसेन कुली सुल्तान के घोड़े के रिकाब अपने खच्चर की रिकाब से और अपने खच्चर की रिकाब कामरान (१२१) कुली के घोड़े की रिकाब से बाँध कर सो गया। बायजीद कई रातों से सोया न था और अभी उसने सोना प्रारम्भ भी न किया था कि उसने आँख खोल कर देखा कि खच्चर नहीं है। कामरान कुली को जगा कर (हुसेन कुली) सुल्तान के घोड़े की लगाम उसे देकर स्वयं खच्चर ढूँढ़ने में व्यस्त हो गया। उस कुवें पर जिसमें लोग प्रविष्ट होकर जल निकाल लाते थे खच्चर मिला किन्तु जीन एवं लगाम न थी। खच्चर के कान एवं बाल न थी जिसे पकड़ कर उसे लाया जा सकता। बायजीद अपनी पगड़ी के ऊपर एक यश्मी[2], इस आशय से बाँधे था कि यदि उसपर तलवार लगे तो उसका प्रभाव न हो। क्योंकि उसके पास दवलगा[3] न था अतः उस यश्मी का सिर से खोल कर खच्चर की गरदन में बाँध दिया और हुसेन कुली सुल्तान के समक्ष लाया। हुसेन कुली सुल्तान खच्चर की जीन खो जाने पर रुष्ट हुआ। क्योंकि हजरत पादशाह समीप ही थे, अतः उन्हें इस बात का पता चल गया और उन्होंने इस विषय में हुसेन कुली सुल्तान से पूछा। हुसेन कुली (सुल्तान) ने जो बात सब थी उसका उल्लेख हजरत पादशाह से कर दिया। उन्होंने रुष्ट होकर कहा कि, "जिस व्यक्ति ने ऐसे समय पर यह कार्य किया है उसपर लानत हो।" हजरत पादशाह ने प्रातःकाल वहाँ से कूच कर दिया। ईलानचका के ईमाक के सरदार जुलू खाँ को उसके भाइयों सहित उनका कबीला निकट होने के कारण विदा कर दिया। उसे सरदारी का फरमान जागीर एवं उलूफा[4] की वृद्धि सहित प्रदान हुआ। जब बायजीद के पास मुहर के लिए फरमान लाया गया तो उसने उससे खच्चर के लिए एक जीन माँगी जिस मुहराने[5] के हिसाब में मुजरा करने के लिए कहा। उसने अपने भाइयों को बुलवा कर बड़ी कठिनाई से उन लोगों से घोड़े की जीन ली जो ऐसा ज्ञात होता था कि मानो चिंगीज के काल के पूर्व बनाई गई हो। बायजीद ने (१२२) उसे सैकड़ों सोने एवं चाँदी की जीन से बढ़ कर समझते हुए अत्यधिक कृतज्ञता प्रकट की। सूर्य चमक ही रहा था कि वे चार चश्मे पर पहुँच कर उतर पड़े। हुसेन कुली सुल्तान ने झरने के जल से हाथ मुँह धोकर जल पिया और परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और कहा कि ईश्वर को धन्य है। मैंने जो प्रतिज्ञा की थी, उसे पूरा कर दिया।"

अकबर के नाम फरमान

हाजी मुहम्मद सुल्तान तथा हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी, जो कोतल के ऊपर से तोक-

१ सम्भवतः भूमि अथवा ढाल इत्यादि किसी चीज पर रख कर।
२ यश्मी —सम्भवतः कोई कपड़ा।
३ दवलगा सम्भवतः जीन के नीचे बिछाने का मोटा कपड़ा।
४ वृत्ति।
५ मुहर लगाने की फीस।

के तीन दिन उपरान्त उस मंजिल पर पड़ाव हुआ जहाँ वैसे ही दो कुवें थे जिनका उल्लेख हो चुका है। एक कुवें में लोग प्रविष्ट हो जाते थे। दूसरे कुवें में ५-६ गज रस्सी लगती थी। जिस कुवें (११९) में लोग प्रविष्ट हो कर जल निकाल लाते थे उसका जल मैला हो गया था अतः हुसैन कुली सुल्तान मुहरदार तथा तोलक कूरची उस कुवें पर पहुँचे जिसमें रस्सी डाली जाती थी। हजरत पादशाह का एक सेवक सैयिद वारतू नामक उस कुवें से जल निकाल रहा था। हुसैन कुली सुल्तान ने कहा, जल्दी करो। हम भी पानी पियेंगे।" उसने (हुसैन कुली) सुल्तान की बात पर आपत्ति प्रकट करते हुए कहा कि जो आदमी सैनिक सेवा करता हैं, उसे अपना प्रबन्ध रखना चाहिये।" हुसैन कुली सुल्तान ने कहा, 'मैं नहीं समझा कि तू क्या कहता है?" तोलक कूरची ने कहा, "आपको भी अपने पास कवर रखना चाहिये ताकि ऐसे अवसर पर वह काम आये।' (हुसैन कुली) सुल्तान को इस बात से बड़ा दुःख हुआ। उसने कहा, मुझे क्या मालूम था कि इतनी आयु समाप्त करने के उपरान्त मैं काबुल पहुँच कर हुमायूँ पादशाह का सेवक बनूँगा और वे बक्खर पहुँच कर पराजित हो जायेंगे। मुझमें इतना चमत्कार (दूरदर्शिता) न था कि आज के दिन के लिए अपने पास डोल रख लेता। हुसैन कुली सुल्तान ने तोलक कूरची के समक्ष शपथ ली कि, 'जब तक मैं बहते हुए जल पर न पहुँचूँगा और अपने चल्लू से जल न पियूँगा, किसी से जल न माँगूँगा।" बायज़ीद यद्यपि उस दिन उसे जल देने का अत्यधिक प्रयत्न करता रहा किन्तु उसने जल न पिया।

हुमायूं द्वारा अफीम का सेवन

इसी बीच में हजरत पादशाह ने पूँछा कि "किसी के पास कोई रोटी का टुकड़ा है? मैं अफीम खाना चाहता हूँ।' बायज़ीद ने पराजय के दिन मुरब्बे का एक डिब्बा एवं तदूरी रोटी का थैला ख्वाजा कासिम ब्यूतात के रसोई से ले लिया था। उसने दोनों हजरत पादशाह की सेवा में प्रस्तुत किये। हजरत पादशाह ने तदूरी रोटी के थैले में से कुछ चुन कर खाया। टुकड़ा का थैले सहित बायज़ीद को वापस करके पूँछा कि 'डिब्बे में क्या है?" मैंने उत्तर दिया कि, मुरब्बा है किन्तु (१२०) यह ज्ञात नहीं कि किस चीज़ का मुरब्बा है?" जब डिब्बा खोला गया तो आलू बालू का मुरब्बा निकला। हजरत पादशाह ने पूरा डिब्बा ले लिया।

वापसी की कठिनाइयाँ

इसी पड़ाव पर मुहम्मद कुली शेख कमान, जो सीधे मार्ग से जा रहा था, हजरत पादशाह के समाचार पाकर उनसे मिल गया। उसने कहा कि, 'मीर असग़र मुंशी तथा अली मुहम्मद कुन्दुजी, जो उस समय कुन्दुज के सैनिकों में सर्वश्रेष्ठ थे, आ रहे हैं।' बैरम उगल्न एवं ऊजबेकों का एक अन्य समूह, जो लश्कर के पीछे आ रहा था, हमारे आगे से निकल गया। उन्होंने यह निश्चय किया है कि वे काशी तथा किर्ची चले जायें। उसी समय मुहम्मद कुली शेख कमान का घोड़ा मरने के करीब पहुँच गया। हजरत पादशाह ने आदेश दिया कि उसे हलाल करके उसका माँस लोगों को बाँट दिया जाय। मुहम्मद हुसैन नाजिर ने उस घोड़े के माँस का वितरण किया। उसमें से रान का एक भाग मुसाहिब बेग तथा हुसैन कुली सुल्तान मुहरदार को प्राप्त हुआ। उन लोगों को इतना माँस मिल गया कि उसके कबाब बना सकते थे। बायज़ीद ने उन काँटों से, जो कि झाड़ी के काँटों के समान होते हैं किन्तु भूमि में निकलते हैं और जिनमें कोयला नहीं होता और जो एराक की विलायत में कोट कहलाते हैं, आग जलाई। माँस जैसे ही आग पर डाला जाता आग राख हो जाती

और मांस उसी प्रकार कच्चा रह जाता था। तीन दिन से अन्न-जल न प्राप्त हुआ था। मुसाहिब बेग ने कच्चा मांस यद्यपि अपने दाँतों से बहुत कुछ काटा किन्तु उससे उसकी भूख समाप्त न हुई। हुसेन कुली सुल्तान ने जब देखा कि अत्यधिक प्रयत्न करने पर भी कुछ प्राप्त नहीं होता तो वह अपना सिर रख कर[1] सो गया और कूच के समय तक सोता रहा। बायजीद इस सेवा के उपरान्त हुसेन कुली सुल्तान के घोड़े के रिकाब अपने खच्चर की रिकाब से और अपने खच्चर की रिकाब कामरान (१२१) कुली के घोड़े की रिकाब से बाँध कर सो गया। बायजीद कई रात से सोया न था और अभी उसने सोना प्रारम्भ भी न किया था कि उसने आँख खोल कर देखा कि खच्चर नहीं है। कामरान कुली को जगा कर (हुसेन कुली) सुल्तान के घोड़े की लगाम उसे देकर स्वयं खच्चर ढूँढने में व्यस्त हो गया। उस कुवें पर जिसमें लोग प्रविष्ट होकर जल निकाल लाते थे खच्चर मिला किन्तु जीन एवं लगाम न थी। खच्चर के बाल एवं याल न थी जिसे पकड़ कर उसे लाया जा सकता। बायजीद अपनी पगड़ी के ऊपर एक यज्जी[2], इस आशय से बाँधे था कि यदि उसपर तलवार लगे तो उसका प्रभाव न हो। क्योंकि उसके पास दवलगा[3] न था अतः उस यज्जी को सिर से खोल कर खच्चर की गरदन में बांध दिया और हुसेन कुली सुल्तान के समक्ष लाया। हुसेन कुली सुल्तान खच्चर की जीन ले जाने पर रुष्ट हुआ। क्योंकि हजरत पादशाह समीप ही थे, अतः उन्हें इस बात का पता चल गया और उन्होंने इस विषय में हुसेन कुली सुल्तान से पूँछा। हुसेन कुली (सुल्तान) ने जो बात सच थी उसका उल्लेख हजरत पादशाह से कर दिया। उन्होंने रुष्ट होकर कहा कि, "जिस व्यक्ति ने ऐसे समय पर यह कार्य किया है उसपर लानत हो।' हजरत पादशाह ने प्रातःकाल वहाँ से कूच कर दिया। ईलानचका के ईमाक के सरदार जुल्या को उसके भाइयों सहित उनका कबीला निकट होने के कारण विदा कर दिया। उसे सरदारी का फरमान जागीर एवं उलूफा[4] की वृद्धि सहित प्रदान हुआ। जब बायजीद के पास मुहर के लिए फरमान लाया गया तो उसने उससे खच्चर के लिए एक जीन मांगी जिसे मुहराने[5] के हिसाब में मुजरा करने के लिए कहा। उसने अपने भाइयों को बुलवा कर बड़ी कठिनाई से उन लोगों से घोड़े की जीन ली जो ऐसा ज्ञात होता था कि मानो चिंगीज के काल के पूर्व बनाई गई हो। बायजीद ने (१२२) उसे सैकड़ों सोने एवं चाँदी की जीन से बढ़ कर समझते हुए अत्यधिक कृतज्ञता प्रकट की। सूर्य चमक ही रहा था कि वे चार चश्मे पर पहुँच कर उतर पड़े। हुसेन कुली सुल्तान ने झरने के जल से हाथ मुँह धोकर जल पिया और परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और कहा कि "ईश्वर को धन्य है! मैंने जो प्रतिज्ञा की थी, उसे पूरा कर दिया।"

अकबर के नाम फरमान

हाजी मुहम्मद सुल्तान तथा हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी, जो कोतल के ऊपर से तोड़-

१ सम्भवतः भूमि अथवा ढाल इत्यादि किसी चीज पर रख कर।
२ यज्जी —सम्भवतः कोई कपड़ा।
३ दवलगा सम्भवतः जीन के नीचे बिछाने का मोटा कपड़ा।
४ वृत्ति।
५ मुहर लगाने की फ़ीस।

बचिया के घर जा चुके थे, चार वस्नी[1] भेड़ें लाये। हजरत पादशाह ने उनमें से थोडी सी सा कर दो। लोगो को बाँट दी। कुछ लोगो को उलुश भी प्रदान किया। शाहज़ादये आलमियान मीर्जा जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर एव बेगमा तथा अन्त पुर की स्त्रियो को, जो काबुल में थी, पत्र लिख कर बेग मुहम्मद आख्ता बेगी के सिपुर्द कर दिया गया और उसे विदा कर दिया गया। उनमें लिखा गया कि, 'तुम लोग निश्चिन्त रहो। हम लोग कुशलतापूर्वक आ रहे हैं।" हजरत पादशाह सवार होकर कहमर्द नामक दर्रे से काबुल की ओर चल दिये।

हुसेन कुली सुल्तान को हुमायू द्वारा प्रोत्साहन

जब हजरत पादशाह कुछ आगे बढे तो हुसेन कुली सुल्तान कोरनिश करके प्रथानुसार साथ हो गया। हजरत पादशाह ने पूँछा कि, तून कश्म पर जो बातें कही उनके विषय में भली भाँति यह ज्ञात नहीं कि तू मुझसे खिन्न था या किसी अन्य से। बता कि तेरा अभिप्राय किससे था और (१२३) बात का क्या प्रसग था?" हुसेन कुली सुल्तान ने निवेदन किया कि तोलक कूरची को उन बातो के प्रसग का पता है। वह निवेदन करेगा।' तोलक हजरत पादशाह की दूसरी ओर जा रहा था। हजरत पादशाह ने उससे इस विषय म पूँछा। उसने कुवें पर जो कुछ हुआ था और डाल का किस्सा, ठीक ठीक सुना दिया। हजरत पादशाह ने कृपापूर्वक हुसेन कुली सुल्तान से क्षमा के रूप मे कहा कि, 'इस प्रकार की बाते ऐसे अवसर पर सुनने मे आती रहती है। मै चाहता हूँ कि तू सकेत द्वारा मुझसे कह दिया कर।" उस मजिल से काबुल तक हुसेन कुली सुल्तान पुन हजरत पादशाह की सेवा में न गया यद्यपि उन्होने उसे कई बार याद किया[2]।

बायज़ीद को जीन वापस प्राप्त होना

हजरत पादशाह के मध्याह्नोपरान्त की प्रथम नमाज के समय कहमर्द दर्रे पर पहुँच जाने के कारण जो ईमाक वहाँ शीत ऋतु व्यतीत कर रहे थे, वे हजरत पादशाह के आगमन से भयभीत होकर छिन्न भिन्न हो गए। उन लोगो का अनाज विभिन्न स्थानो पर था। वह सैनिको को प्राप्त हो गया। दास बायजीद को थोड़े से बैगन एव कराही[3] प्राप्त हो गए। मैंने खच्चर की जीन, जो उस मजिल पर कोई उठा ले गया था, पहचान कर शाह वली अतका के भाई से ले ली। पुरानी जीन, जो मैंने कुकूना के भाई से ले ली थी, अत्यधिक कृतज्ञता प्रदर्शित करते हुए उसे वापस कर दी। हम लोग महपज नामक कोतल के नीचे, जो हिन्दू शाह का कोतल है, उतर पड़े।

बायज़ीद द्वारा हुमायू के भोजन की व्यवस्था

हजरत पादशाह ने कहा कि, कई दिन से मैं सो नहीं सका हूँ।' बहादुर सुल्तान वल्द सुल्तान हैदर बैरानी ने हजरत पादशाह का सिर अपने जानू पर रख लिया। हजरत पादशाह

१ प्रकाशित ग्रथ में 'बस्नी' किन्तु हस्तलिपि में 'बग्नी'। 'बस्नी' अथवा 'बगरी' ब्रवरना के अनुसार बल्ख का प्राचीन नगर है। बुग्नी का अर्थ, "बन्ना मज़बूत" भी होता है। सम्भवत बग्नी अथवा मजबूत भेडों से तात्पर्य हो।

२ इस वाक्य के शब्द स्पष्ट नहीं। इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि हुसेन कुली सुल्तान के अतिरिक्त कोई अन्य पादशाह की सेवा में न गया क्योंकि उन्होंने उसे कई बार याद किया।

३ इस शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं।

ने उससे कहा "तुझे जो आता हो, वह गा ताकि मुझे नींद आ जाय।" उसने निवेदन किया कि, (१२४) "आदेश हो कि बायज़ीद भी मेरे साथ गाये।" बायज़ीद ने आदेश का पालन किया। क्योंकि हज़रत पादशाह ने कहा था कि उन्हें भूख लगी है अतः बायज़ीद भोजन की व्यवस्था का प्रयत्न करने लगा। एक ढाल किसी आदमी की छूट गई थी। उससे जल निकाल कर घोड़ों को पिलाया गया था। क्योंकि उसका बीच का भाग फौलाद का था, अतः उसे साफ करके रख लिया था। घोड़े का जो मास दर्रे पर बाँटा गया था और यखनी से, जो दर्रे मे मिली थी, ढाल के बीच के भाग मे भोजन तैयार किया। जब हज़रत पादशाह जागे तो उन्होंने वह भोजन खाया। काबुल में उन्होंने अनेक बार यह कहा कि, "मैंने इतना स्वादिष्ट भोजन कभी न किया था।" उस रात्रि में पीर मुहम्मद आख्ता ने बड़ी उत्तम सेवायें की। वह जा जा कर घाटी से सूखा ईंधन लाता था और आग जलाता था जिससे हज़रत पादशाह को ज़रा भी जाड़ा न लगा। वह भोजन की देग के नीचे भी आग जला देता था।

हुमायूं का काबुल के किले में पहुँचना

हज़रत पादशाह प्रातःकाल की नमाज के समय सवार होकर कोतल की ओर रवाना हुए। हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी को तोलकची के ईमाक की ओर जाने की अनुमति दे दी कारण कि वह (ईमाक) कूरबन्द के समीप था, और कूरबन्द उस समय उसकी जागीर मे था। मध्याह्नोपरान्त की दूसरी नमाज के समय हज़रत कूरबन्द के किले मे उतरे। उस रात्रि के उपरान्त हज़रत पादशाह ने ख्वाजा सय्यारान[1] में पड़ाव किया। वहाँ से करा बाग और वहाँ से मामूरे में[2]। वहाँ से सवार होकर हज़रत पादशाह १ रमज़ान ९५९ हि० (२१ अगस्त १५५२ ई०) को काबुल के किले में पहुँच गए[3]।

हुमायूं द्वारा उरता बाग में बहार व्यतीत करना

(१२५) उस वर्ष शीत ऋतु हज़रत पादशाह ने कुशलतापूर्वक काबुल के किले मे व्यतीत की। बहार के प्रारम्भ में प्रथानुसार उरता बाग में तशरीफ ले गए। बेगमें भी अपने अपने महल में ठहरीं।

हुसेन कुली सुल्तान तथा बायज़ीद के पुत्रों का जन्म

उसी वर्ष शव्वाल मास में हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार के यहाँ ईश्वर की कृपा से पुत्र का जन्म हुआ। उसका नाम अबू तुराब रक्खा गया। २७ शव्वाल को ईश्वर ने बायज़ीद को पुत्र प्रदान किया। हुसेन कुली सुल्तान ने उसका नाम सआदत यार रक्खा। सआदत यार बेग का जन्म हरीफ बेग वल्द मुल्ला अब्दुल खालिक के घर में, जो मीर्ज़ा कामरान के आखुन्द के घर के समीप काबुल के अरक के नीचे है, हुआ।

१ ख्वाजा सेहयारान।

२ डा० बनारसी प्रसाद ने "उस रात्रि में - मामूरे में" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया। बाद का अनुवाद भी बड़ा संक्षिप्त दिया है।

३ अकबर नामा के अनुसार यह घटना ९६० हि० (१५५२-५३ ई०) में घटी क्योंकि हुमायूं इसी वर्ष काबुल से पुनः रवाना हो गया। बायज़ीद ने आगे पृ० १३३ पर तिबराह की विजय एवं उसके ग्राम की पराजय दोनों के विषय में लिखा है कि वे ९६० हि० में प्राप्त हुई।

अध्याय ३

मीर्ज़ा कामरान तथा मीर्ज़ा अस्करी का कोलाव से निकलना और हज़रत पादशाह के समाचार पाना। हज़रत पादशाह का काबुल से निकल कर मीर्ज़ा कामरान को परास्त करने के लिये किबचाक दर्रे की ओर प्रस्थान

मीर्ज़ा कामरान पर ऊज़बेकों द्वारा छापा

मीर्ज़ा कामरान ने मीर्ज़ा अस्करी को कोलाब में छोड़ कर स्वयं वहाँ से प्रस्थान करके पुनः विद्रोह कर दिया और उपद्रव एवं षड्यन्त्र प्रारम्भ कर दिया तथा बदख्शां के अधिकांश स्थानों पर अधिकार जमा लिया। मीर्ज़ा सुलेमान तथा मीर्ज़ा इब्राहीम दर्रों की ओर भाग गए। चाकर अली खाँ वल्द सुल्तान वैस बेग अपने भाइयों एवं कोलाव निवासियों सहित मीर्ज़ा अस्करी के विरुद्ध पहुँच गया और कोलाब को घेर लिया। मीर्ज़ा कामरान कोलाब पहुँच कर मीर्ज़ा अस्करी को असबाब एवं परिजनों सहित कोलाब से निकाल लाया और उसे अपने साथ लेकर कक्चा नदी के उपान्त में पड़ाव (१२६) कर दिया। दूसरे दिन मीर ताउल उज़बेक ने जो बदख्शां पर आक्रमण हेतु आया था, अज्ञानता के कारण मीर्ज़ा के लश्कर पर आक्रमण कर दिया। मीर्ज़ा को इतना अवकाश भी न मिला कि वह अपने असबाब एवं परिजन को भी अपने साथ ले जा सके। वह मीर्ज़ा अस्करी, मीर्ज़ा अब्दुल्लाह एवं थोड़े से अन्य लोगों के साथ जरीदा[१] भाग खड़ा हुआ। ऊज़बक लोग बसाहो[२] एवं शिविर पर अधिकार जमा कर बल्ख की ओर चल दिये। बल्ख के हाकिम पीर मुहम्मद खाँ ने सूचना पाकर बसाहो मीर ताउल से लेकर उसे विदा कर दिया। शिविर के असबाब को वह मीर ताउल से किस प्रकार ले सकता था। संक्षेप में मीर्ज़ा ने जो हाल ही में विद्रोह किया था, उसका बदला उसे तत्काल मिल गया।

मीर्ज़ा कामरान का बक्कर की ओर प्रस्थान

यह समाचार मीर्ज़ा सुलेमान तथा मीर्ज़ा इब्राहीम को, जो दर्रे के पास थे, तथा मीर्ज़ा हिन्दाल को, जो कुन्दुज़ में था प्राप्त हुए। सब लोग मिल कर मीर्ज़ा कामरान के विरुद्ध, जो तालीक़ान पहुँच चुका था, रवाना हुए। मीर्ज़ा कामरान को मीर्ज़ा लोगों के आगमन के समाचार प्राप्त हो गए। वह उनका मुकाबला न कर सका। तालीक़ान से बसाहो सहित निकल कर हिन्दूकोह के कोतल की ओर रवाना हुआ। जिस मार्ग में बरफ़ कम थी, वहां से होता हुआ हज़ारा के मध्य में पहुँचा, वहाँ से बक्कर की ओर रवाना हुआ।

१ थोड़े से साथियों सहित।
२ परिवार।

हुमायू का किबचाक दर्रे की ओर प्रस्थान

जब हजरत पादशाह को यह समाचार प्राप्त हुए तो व स्वय काबुल से रवाना होकर कूरबन्द पहुँचे। मीर्जा लोगो ने मीर्जा कामरान का पीछा किया। हजरत पादशाह ने हाजी मुहम्मद खाँ काकी तथा ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को, जिसके पास उस समय सैनिक एव सेना बडी अच्छी थी, और एक अन्य सेना को जुहाक एव बामियान के मार्ग से भेजा। मुकीम बेग अतावा को (१२७) सारू उलग की ओर प्रतिरक्षा हेतु रवाना किया। तरदी बेग अतावा एव एक अन्य दस्ते को पजहीर कोतल की ओर नियुक्त किया। करजा खा एव मुसाहिब बेग इत्यादि जो तालीकान के किले से आये थे, यद्यपि बल्ख की चढाई के समय साथ थे किन्तु अभी तक दड भोग रह थे, और लश्कर में थे।[१] हजरत पादशाह ने मीर असगर मुशो वाल्दू बेग एव तारची बेग काशगरी को प्रतिरक्षा हेतु किबचाक दर्रे की ओर भेज दिया और वे स्वय एक सेना सहित कोतल की ओर रवाना हुए। वे चुनारे सोल्ना के समीप, जो दर्रये किबचाक एव राहे मव क मध्य मे है पडाव किए हुए थे कि करजा खा ने मीर्जा के पास गुप्तचर भेज कर यह सूचना कराई कि किबचाक के दर्रे से बढ कर काई ऐसा मार्ग नही है जो इतना अधिक एकान्त मे हो। उपर्युक्त दर्रे मे वर्फ के कम हाने की भी समाचार मीर्जा (कामरान) को प्राप्त हो गए थे। वह अन्दराव नदी के तट से किबचाक दर्रे की ओर रवाना हुआ।

मीर्जा कामरान का किबचाक दर्रे की ओर अग्रसर होना

मीर मुशी एव जो सेना किबचाक दर्रे मे थी उनके प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए कि, मीर्जा लोग इस दर्रे एव उस कोतल की ओर जहाँ हम है, आ रहे हैं। हजरत पादशाह उस पडाव पर ठहर गए। दूसरे दिन एक पहर उपरान्त मीर मुशी का सेवक भागता और हाफ्ता हुआ पहुँचा और निवेदन किया कि मीर्जा (कामरान) आ गया। लश्कर वाले व्याकुल हो उठे। हजरत पादशाह ने रुष्ट होकर उस 'कर्दनी एव कतक'[२] कहा। उन्होने तत्काल कूर खाने[३] मे जो जीबे थे वह यकरा लोगो को बाट दिये। मस्त अली करची को जो शेवीम ख्वाजा खिज्री के दामो मे था करान सा जीबा प्राप्त हुआ था। उसने उसे न पहना। हजरत पादशाह सवार होकर रवाना हो गए। लश्कर ने पीछे पीछे प्रस्थान किया। पडाव तथा किबचाक दर्रे के मध्य में एक कुरोह से अधिक दूरी न थी। वे तत्काल उस दर्रे पर पहुँच गए। मीर मुशी, वाल्दू बेग तथा तारची भी आ कर मिल गए। (१२८) मीर्जा की सेना के अग्र भाग के भी चिह्न दृष्टिगत हो गए।

मीर्जा कामरान तथा हुमायू की सेनाओ के अग्र भाग में युद्ध

जब हजरत पादशाह दर्रे के भीतर एक बाण के पहुँचने की दूरी तक प्रविष्ट हो चुके थे

१ बन्दी होने से तात्पर्य है।
२ अपशब्द कहे।
३ शस्त्रागार।

तो उन्हें एक बाण के पहुँचने की दूरी पर एक अन्य पर्वत दर्रे के मध्य में दिखाई पड़ा। मीर्ज़ा (कामरान) की सेना के अग्र भाग वाले उदाहरणार्थ आक सुल्तान, बाबा सईद किबचाक एवं अन्य लोग उस "नाक"[१] के पीछे थे और नाक के सामने एक चट्टान थी। हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार, बैरम ऊग़लन का भाई बून्दुक सुल्तान, मीर्ज़ा कुली चोली, पीर मुहम्मद आख्ता, नव्वाब हकीम मीर्ज़ा का तगाई फरीद एवं कुछ अन्य लोगों ने मीर्ज़ा की सेना के अग्र भाग पर आक्रमण किया। उस स्थान के ऊबड़ खाबड़ होने के कारण वे सेना के अग्र भाग तक न पहुँच सके। वे बाणों की वर्षा करने लगे। पीर मुहम्मद के एक बाण लगा और वह शहीद हो गया। मीर्ज़ा कुली का घोड़ा लुढ़क गया और उसका पाँव टूट गया। उसका पुत्र इमाम कुली[२] हजरत पादशाह का कूरची था। वह अपने पिता की ओर लपका ताकि उसे सवार कर दे। वह भी शहीद कर दिया गया। एक बाण हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार के घोड़े के लगा। वह अपने घोड़े से लुढ़क गया। उसके सेवक बायजीद ने घोड़ा लाकर उसे सवार कराया और हजरत पादशाह की सेना की पंक्ति में पहुँचा दिया। हजरत पादशाह भी पुश्ते[३] पर पहुँचे।

हुमायूँ का घायल होना

इसी बीच में मीर्ज़ा कामरान पर्वत की नाक के ऊपर से होता हुआ सरखोब की ओर पहुँचा[४]। मीर्ज़ा की पत्नियाँ एवं पुत्रियाँ भी पगड़ी बाँध कर मीर्ज़ा के आदमियों के साथ दृष्टिगत हुई। जो तोपची हजरत पादशाह की सवारी के साथ थे, उन्होंने अपनी तुफ़ंग में गोलियाँ न भरी थीं। उनमें से अधिकांश तोपची मीर्ज़ा के सेवक रह चुके थे जो काबुल में हजरत पादशाह की सेवा में प्रविष्ट हो गए थे। क्योंकि मीर्ज़ा सरकाब पर पहुँच चुका था। अतः उसने दो तीन बार बाणों की वर्षा की। अधिकांश घोड़े एवं पादशाही सेना की पंक्ति के आदमी आहत हो गए। इसी बीच में (१२९) हजरत पादशाह ने मस्त अली कूरची से कहा कि, 'तू जवान मर्द है। इस अवसर पर क्या खड़ा है?" उस अभागे ने उत्तर दिया कि 'आपने जिन लोगों को उत्तम जीवे दिए हैं वही आक्रमण करें।' कासिम हुसेन खाँ नदी के उस ओर अपने दस्ते को लिये खड़ा था। उसके समक्ष आक्रमण करने का स्थान था। उसने मीर्ज़ा की सेना के अग्र भाग पर आक्रमण न किया और इस कार्य की ओर उपेक्षा प्रदर्शित की। अन्य सरदारों में से किसी के पास सेना का कोई ऐसा दस्ता न था जो मीर्ज़ा से युद्ध कर सकता। मीर्ज़ा (कामरान) पादशाह के लश्कर की शोचनीय दशा

१ पर्वत का ऐसा स्थान जो नाक के समान हो।

२ पुस्तक में "इमाम कुली व पिसरे मुशारुन इलैह", जिसका अर्थ है 'इमाम कुली एवं उसका पुत्र' किन्तु इसके स्थान पर "इमाम कुली पिसरे मुशारुन इलैह" पढ़ा गया है। डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में भी यही है (पृ० १२७)।

३ मूल में, "बर सर कुश्तहा रसीद" जिसका अर्थ हुआ कि 'लाशों पर पहुँचे' किन्तु 'बर सरे पुश्ता रसीद—पुश्ते पर पहुँचे' अधिक उचित ज्ञात होता है। डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में यही है (पृ० १२७)।

४ यह वाक्य स्पष्ट नहीं। सम्भवतः ऐसे स्थान पर पहुँचने से तात्पर्य है जिसके ऊँचाई पर होने के कारण वे हुमायूँ की सेना को सुगमतापूर्वक हानि पहुँचा सकते थे।

देख कर सरकोब मे नीचे उतरा और (हजरत पादशाह की) पताकाओ की ओर अग्रसर हुआ। पताका उठाने वाले उसके आक्रमण का सामना न कर सके। वे झडा को लपेट कर भाग गए। कासिम हुसेन खा सेना के उसी दस्ते को जिसे लिए हुए वह खडा था, लौट गया। हजरत पादशाह अपने आदमियो सहित भाग कर उस दर्रे की ओर जहाँ से लश्कर आया था रवाना हुए। मुकद्दम बेग के सेवक बाबा हरामजादा ने हजरत पादशाह के पीछे से पहुँच कर उनके ताज पर तलवार का वार किया। हजरत पादशाह के कान के नीचे का भाग तक आहत हो गया। उसने दूसरी तलवार उठाई ही थी कि हजरत पादशाह पलटे और बडे क्रोध मे उसे डाँटा कि, 'दुष्ट कजकची कुल्ताक'। शाही ऐश्वर्य के कारण वह पुन तलवार न चला सका। हजरत पादशाह का तुशकची मेहतर सकाई[1] इसी समय बीच मे आ गया। वह हरामजादा भाग गया। करजा खा ने भी बिना जाने हुए रणक्षेत्र मे उसके सर पर तलवार का वार किया था। एक मास तक उसके घाव पर मलहम लगाया जाता रहा। हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार तथा ताल्ची बेग (मीर्जा कामरान) द्वारा बन्दी बना लिए गए। (१३०) मीर्जा (कामरान) ने दोनो को शहीद करा दिया।

हुमायूं की सेना का पलायन

पराजित सेना तीन मार्गो से भागी। मीर्जा (कामरान) ने हजरत पादशाह का कूरबन्द की ओर कुछ दूर तक पीछा किया। कुछ लोग काबुल के मार्ग की ओर और कुछ उस दर्रे के मार्ग की ओर जो इस्तालीफ की ओर जाता था, भागे। बायजीद उस दल के साथ था जो इस्तालीफ जा रहा था। उस दल में प्रतिष्ठित लोगो मे सरदार बेग वल्द करजा, इबराहीम ईशक आगा, ख्वाजा कासिम ब्यूतात, मस्त अली कूरची, इमाम कुली कूरची एव कुछ अन्य लोग थे। इमाम कुली तथा इबराहीम घायल हो गए थे। हजारा लोगो ने भी मार्ग रोक लिया। इनमें से भी बहुत से लोग घायल हो गए। हजारा लोगो ने उनके घोडे एव असबाब छीन लिये। दूसरे दिन इस दल मे से कुछ लोग पैदल इस्तालीफ पहुँचे। पता चला कि इमाम कुली एव इबराहीम उसी घाव के कारण परलोक सिधार गए । [2] हवा के गरम होने के कारण बायजीद ने चकरी के पत्ता के वस्त्र जगली काँटो मे सी कर पहने और इस प्रकार अपने आप को इस्तालीफ पहुँचा दिया। वहाँ के रईस[3] पीर मुहम्मद इस्तालीफ ने बायजीद को पहचान लिया और उसके लिए सरोपा एव जूते लाकर उसे पहनाया। दूसरे दिन बेहजादी, जो हुसेन कुली सुल्तान एव ताल्ची बेग की जागीर था, दिखाई पडने लगा। इसके बाद के दिन हम लोग काबुल में ख्याबान मे पहुँचे।

मीर्जा कामरान का काबुल पर अधिकार

मीर्जा सुलेमान का यसावल बाबा दोस्त, जो उस समय मीर्जा कामरान के साथ था,

१ अकबर नामा के अनुसार 'मेहतर सकाई' जो 'फरहत खा' के नाम से प्रसिद्ध था।
२ इसके पूर्व के दो शब्द स्पष्ट नहीं।
३ हाकिम।

हुसेन कुली सुल्तान के घोडे पर सवार और उसके ताज को पहने तथा उसका खंजर कमर में बाँधे दिखाई पड़ा। इससे पता चला कि वह हुसेन कुली सुल्तान का घोड़े से गिरा कर मीर्ज़ा (कामरान) के पास ले गया था। मीर्ज़ा कामरान ने दास्त नवराश के मज़ार पर, जो उकाबैन पर्वत के दामन (१३१) में है, पड़ाव किया। कासिम बरलास, जिसके सिपुर्द हज़रत पादशाह ने काबुल कर दिया था, और शाहज़ादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा किले में थे। वे कई दिन तक किले की प्रतिरक्षा करते रहे। अन्त में दुर्भाग्यवश मीर्ज़ा कामरान से प्रतिज्ञा कराके किला उसे सौंप दिया। मीर्ज़ा (कामरान) ने शाहज़ादये आलमियान को बन्दी बना दिया। वह सेना एकत्र करने का प्रयत्न करने लगा और दो मास तक लश्कर के सामान की व्यवस्था करता रहा।

हुमायूँ द्वारा सेना की तैयारी

हज़रत पादशाह भी अन्दराब पहुँच गए। मीर्ज़ा लोग यह शोकमय समाचार पाकर अपनी जागीर को गए बिना हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित हो गए। जो अमीर लोग हिन्दू कोह के मार्ग से प्रतिरक्षा हेतु भेजे गए थे वे सब अन्दराब में हज़रत पादशाह के चरणों का चुम्बन करके सम्मानित हुए। इसी बीच में बल्ख से १००० घोड़े काबुल जा रहे थे। यह मीर सैयिद अली सब्ज़धारी का कारवान था। हज़रत पादशाह ने ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद एवं कुछ लोगों को भेज कर घोड़े मँगवा लिये और उनका मूल्य निश्चित करके सैनिकों को बाँट दिये और यह तमस्सुक लिख दिया कि 'ईश्वर ने चाहा तो काबुल की विजय के उपरान्त इसका उत्तर भेजा जायगा।'[१] लगभग दो मास तक हज़रत पादशाह अन्दराब में लश्कर की व्यवस्था करते रहे। अन्दराब की नदी पर पुल बंधवाया। अली दोस्त समाचक को पुल पर इस आशय से नियुक्त कर दिया कि वह किसी को भी आज्ञा बिना पुल न पार करने दे। ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद जब वहाँ पहुँचा तो उसने देखा कि हाजी मुहम्मद खाँ बाबा कश्का पुल पार करके सैर कर रहा है। उसने तथा अली दोस्त ने कुछ आलोचना करते हुए कहा कि, 'हर आदमी इस पुल के पार निकल गया। लोकोक्ति है कि हाजी, हाजी को मक्का में देखता है।'[२] हाजी मुहम्मद खाँ इस बात से बड़ा रुष्ट हुआ। उसके रुष्ट होने के समाचार हज़रत पादशाह को प्राप्त हुए। हज़रत पादशाह ने ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को बुलवा कर आदेश दिया कि, 'हाजी मुहम्मद खाँ के घर जाकर क्षमा-याचना कर, कारण कि यह बड़ा नाज़ुक समय है।' (१३२) ख्वाजा ने निवेदन किया कि 'हाजी मुहम्मद खाँ असयमी है। मेरा अपमान करेगा।' हज़रत पादशाह ने कहा कि, 'क्योंकि हम भेज रहे हैं अतः वह इस बात का ध्यान रक्खेगा।' जब ख्वाजा ने खान के घर पर पहुँच कर क्षमा-याचना की तो हाजी मुहम्मद खाँ ने उसे लम्बी अयाल का एक लाल रंग का घोड़ा, जो उस कारवान से उसने लिया था, ख्वाजा को देकर प्रोत्साहित किया।

१ मूल्य अदा किया जायगा।
२ सम्भवतः तात्पर्य यह है कि 'हाजी मुहम्मद खाँ को देखकर सभी पुल के उस पार चले जायेंगे'।

तदुपरान्त दोनो में सर्वदा घनिष्ठता रही। उस घोडे को उस्तुरगीराम[1] के युद्ध एव काबुल की विजय के उपरान्त ख्वाजा (जलालुद्दीन महमूद) ने बायजीद को, जिसे हज़रत बादशाह ने उसकी सेवा मे कर दिया था, प्रदान कर दिया। वह घोडा जीकन[2] था और इतना अधिक दौड सकता था कि काबुल मे कोई दूसरा घोडा उसका मुकाबला न कर सकता था।

मीर्ज़ा कामरान की पराजय

जब मीर्ज़ा (कामरान) को हज़रत पादशाह के प्रस्थान के समाचार प्राप्त हुए तो वह बाबा चोचक एव मुल्ला शफाई को काबुल में छोडकर लश्कर सहित बारान नदी की ओर रवाना हुआ। करजा खा को पिता वह कर लश्कर का सिपहसालार नियुक्त कर दिया। शाहज़ादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अक्बर मीर्ज़ा को उस लश्कर मे अपने साथ ले गया। जब मीर्ज़ा कामरान बारान नदी के तट पर पहुँचा तो उस ओर से मीर्ज़ा इबराहीम, मीर्ज़ा हिन्दाल, हाजी मुहम्मद कोकी एव हज़रत पादशाह की सेना के अग्र भाग का दस्ता तथा मीर्ज़ा सुलेमान भी पहुँच गए। उनका युद्ध करने का विचार न था। उसी दिन मध्याह्नोपरान्त की दूसरी नमाज़ के समय नदी-तट पर मीर्ज़ा (कामरान) से युद्ध हो गया। क्योकि हज़रत पादशाह का सौभाग्य नित्य प्रति उन्नति पर था अत मीर्ज़ा पराजित होकर माही पराजाला भाग गया। उस (१३३) युद्ध में करजा खा मीर्ज़ा हिन्दाल के सेवको द्वारा जीवित बन्दी बना लिया गया। उसके सिर को उपहार स्वरूप हज़रत पादशाह के घोडे की ठोकरो मे पहुँचा दिया गया। हज़रत पादशाह ने आदेश दिया कि उसे ले जाकर आहिनी द्वार[3] पर लटका दिया जाय। युद्ध के तीन चार दिन पूर्व तक कोई शान्ति न थी। कून्दुक सुल्तान के सजावल एव बायजीद दर्रे नव में मीर शिहाब के घर के आस पास छिप गए थे। जिस सुबह को करजा खा का सिर आहिनी फाटक से लटकाया गया तो वे छिपने एव भागने के कष्ट से मुक्त हो गए। जब बायजीद उस घर से जिसमे वह छिपा था, निकला तो सर्व प्रथम जिस व्यक्ति से उसकी भेंट हुई वह करजा खा का सम्बन्धी अबुल हसन दीवाना था जो मीर्ज़ा की बारान नदी की पराजय के समय भाग गया था। क्योकि बायजीद के पास घोडा न था, अत उसने अपना घोडा बायजीद को देकर मुक्ति प्राप्त कर ली। हज़रत पादशाह के हितैषी हर स्थान पर प्रसन्न एव शत्रु कष्ट में पड गए।[4]

क्विचाक की पराजय एव उश्तुर ग्राम की विजय ९५७ हि० (१५५० ई०)[5] में हुई। दोनो युद्धो के मध्य की अवधि ६० दिन से अधिक तथा ७० दिन से कम थी। हज़रत पादशाह पुन काबुल पहुँच गए। मीर्ज़ा पीर बुदाग वल्द जहाँन शाह पादशाह का यह क़तआ स्थिति के अनुकूल सिद्ध हुआ -

१ अक्बर नामा में 'उश्तुर कराम', अन्य स्थानों पर 'उश्तुर ग्राम'।

२ जीकून इसका अर्थ ज्ञात न हो सका।

३ काबुल का लोहे का द्वार।

४ डा० बनारसी प्रसाद ने "हज़रत पादशाह भी अन्दराब पहुँच गए शत्रु कष्ट में पड गए' का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।

५ इससे पूर्व बायज़ीद ने क्विचाक की पराजय के विषय में लिखा है कि वह ९५६ हि० में प्राप्त हुई जो शुद्ध नहीं।

कतआ

'वापस आ गए हम और राज्य का सिक्का हमारे नाम है,
इक्बाल हमारा मित्र और सौभाग्य हमारा दास है।
(१३४) मेरा नाम बुदाग है, मैं हैदर का दागा हुआ दास हूँ,[1]
हमारी हर जगह बादशाही है, और संसार भर हमारा दास है।'

विद्रोहियों को दंड

इसके उपरान्त दीनदार बेग, हैदर दोस्त, मुगुल कानी एवं मस्त अली कूरची की, जो उश्तुर ग्राम के युद्ध में बन्दी बनाये गए थे, काबुल नदी के किनारे बागे सूरत खाना के पीछे हत्या करा दी गई। दीनदार बेग की उसके हिन्दुस्तान के अपराधों के कारण हत्या कराई गई। हैदर दोस्त के विषय में यह समझा जाता था कि करजाखा के षड्यन्त्र का कारण वही है, और मस्त अली का अपराध यह था कि हजरत बादशाह ने किपचाक दर्रे में उसे आदेश दिया था कि वह मीर्जा कामरान के आदमियों पर आक्रमण करे किन्तु उसने उत्तर दिया था कि, "वे लोग आक्रमण करें जिन्हे आपने उत्तम जीवे प्रदान किए हैं।'

मीर्जा कामरान का महमन्द एवं खलील अफ़ग़ानों की ओर पलायन

हजरत बादशाह अभी मार्ग की थकावट से आराम भी न कर पाये थे कि समाचार प्राप्त हुए कि मीर्जा कामरान, जो माही पर[2] की ओर चला गया था, कोतल बादीज[3] के मार्ग से मलिक मुहम्मद मदरावली[4] के घर पहुँचा। क्योंकि वह मदरावल वालों का सरदार था अतः यह भय हुआ कि कहीं मीर्जा कामरान उस तूमान के आदमियों को एकत्र करके विद्रोह न कर दे। बहादुर सुल्तान वल्द हैदर सुल्तान शैबानी, मुहम्मद कुली बरलास, बैरम उगलून का भाई कून्दुकी सुल्तान, जान मुहम्मद बेहसूदी एवं सरदारों तथा यक्का जवानों को मीर्जा कामरान के विरुद्ध भेजा गया। मीर्जा ने अभी तक अपनी सेना एकत्र न की थी। ये लोग शीघ्र ही पहुँच गए थे अतः मीर्जा उनका मुकाबला न कर सका। हजरत बादशाह के लश्कर ने मीर्जा को पराजित करके अलकार एवं अली सग दर्रों की ओर, जो मदरावल के ऊपर स्थित है, भगा दिया। मीर्जा समझ गया कि अब कोई ऐसा स्थान नहीं जहाँ उसे सफलता प्राप्त हो सके अतः वह महमन्द एवं खलील अफ़ग़ानों के (१३५) पास चला गया। शाही लश्कर काबुल वापस आ गया।

बहादुर सुल्तान का कून्दुक सुल्तान को उत्तर

एक रोज दीवान में सभी लोग अपने अपने कारनामा का उल्लेख कर रहे थे। कून्दुक सुल्तान ने कहा कि, "बहादुर (सुल्तान) हमसे अधिक से अधिक एक कदम आगे था।" बहादुर सुल्तान ने कहा, 'ठीक कहते हो। मसल है कि मर्दी से नामर्दी की दूरी एक कदम होती है।" हजरत

१ दासों की पहचान के लिए उन्हें दागने की भी प्रथा थी।
२ पूर्व पृष्ठ में 'माही परोजाला'।
३ सम्भवतः 'बादज' अथवा 'बादपज'।
४ अकबर नामा के अनुसार 'मदरौर के मलिक मुहम्मद के पास पहुँचा'। (देखिए अनुवाद पूर्व पृ० २६४)।

पादशाह को भी यह बातें ज्ञात हो गई कि काम तो बहादुर (सुल्तान) ने किया किन्तु नाम बून्दुक सुल्तान का हुआ।

ख्वाजा जलालुद्दीन का मीर्जा अस्करी को नीबू का शरबत न देना

इसके उपरान्त मीर्जा अस्करी को, जो उश्तुर ग्राम में बन्दी बना लिया गया था,[1] ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को इस आशय से सौंप दिया गया कि उसे बदख्शाँ में मीर्जा सुलेमान के सिपुर्द कर दिया जाय। ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद ने मीर्जा अस्करी को रिकाबखाने[2] के समक्ष खरगाह लगवा कर रक्खा। मीर्जा हर रोज मेहतर सबहाका रिकाबदार से नीबू का शरबत माँगा करता था। हजरत पादशाह को भी नीबू के शरबत से बड़ी रुचि थी। उस समय बल्ख से कारवान नहीं आये थे। नीबू बहुत कम मिलता था। ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद ने, जो मीर सामान था, रकेब दारों[3] से कह दिया कि, "मीर्जा के लिए अब नीबू का शरबत न तैयार किया जाय। जब कभी मीर्जा नीबू के शरबत के लिए आग्रह करे तो कह दिया जाय कि ख्वाजा ने बोतलों पर मुहर लगवा दी है।' रिकाबदार लोग यही बहाना किया करते थे। जब मीर्जा (अस्करी) को यह समाचार प्राप्त हुए तो वह ख्वाजा (जलालुद्दीन महमूद) की प्रतीक्षा करने लगा। जब ख्वाजा उरता बाग से हजरत पादशाह की सेवा से वापस आया और मीर्जा की दृष्टि ख्वाजा पर पड़ी तो उसने रुष्ट होकर कहा, "हे मर्दक[4]! तू मेरा सेवक था, तूने मेरा नमक खाया, फिर तूने रिकाबदारों को कैसे आदेश दिया कि (१३६) हमें शरबत न दिया जाय?" क्योंकि मीर्जा ने एक झूठे इल्जाम के कारण ख्वाजा की नाक कटवा ली थी अत ख्वाजा ने उत्तर दिया, 'आपका नमक मेरे पास कब था, यदि रहा भी होगा तो आपने मेरी नाक से निकाल लिया।" उन लोगों ने अन्य बातें भी कहीं जिनका लिखना इस "तजकिरे" में उचित नहीं। यह बातें मीर अब्दुल्लाह बख्शी अखस[5] ने हजरत पादशाह से कहीं। हजरत पादशाह ने ख्वाजा को बुलवा कर पूछा कि, "मीर्जा ने जो कुछ तुझसे कहा और तूने जो उत्तर दिया, उसे बता।" ख्वाजा ने जिन बातों का ऊपर उल्लेख हो चुका है हजरत पादशाह को बताई। हजरत पादशाह मुस्कुराये। जो बुद्धिमान् दरबार में उपस्थित थे उन्होंने इसे मीर्जा की मूर्खता बताया। जब उसने एक आदमी की नाक कटवा ली थी और वह उसी की कैद में था, तो ऐसी बातें करने का क्या अवसर था?

मीर्जा अस्करी का मीर्जा सुलेमान के पास भेजा जाना

तदुपरान्त हजरत पादशाह ने ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को आदेश दिया कि, 'तू मीर्जा सुलेमान के पास राजदूत बन कर जा रहा है, मीर्जा को भी साथ लेता जा ताकि मीर्जा सुलेमान, मीर्जा अस्करी को पीर मुहम्मद के पास बल्ख भेज दे।' ख्वाजा जलालुद्दीन ने उसे बायजीद के सिपुर्द कर दिया ताकि वह किश्म तक मीर्जा (अस्करी) की रक्षा एवं सेवा करता रहे।

१ डा० बनारसी प्रसाद ने "इसके उपरान्त दीनदार बेग हैदर दोस्त . बन्दी बना लिया गया था" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।

२ वह स्थान जहां भोजन का प्रबन्ध होता हो।

३ रिकाबदार —भोजन का प्रबन्ध करने वालों।

४ नीच।

५ प्रकाशित ग्रन्थ में 'एहमन'।

मीर्ज़ा सुलेमान के पास हुमायू द्वारा राजदूत भेजा जाना

(१३७) हजरत पादशाह ने मीर्जा सुलेमान की पुत्री शाहजादा खानम से विवाह करने का प्रस्ताव रक्खा। बीवी फातेमा को इस कार्य हेतु ख्वाजा (जलालुद्दीन महमूद) के साथ कर दिया। छल्ला,[१] अगूठिया, सरोपा, वस्त्र, मिश्री इत्यादि जिनकी निकाह के लिए आवश्यकता होती है (ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद) द्वारा भेजी। वे काबुल से प्रस्थान करके निरतर यात्रा करते हुए पजहीर कोतल से अन्दराब एव खूस्त तथा वरस्क[२] के मार्ग द्वारा फरखार और फरखार से कलावकान, जो किश्म से १० कुरोह पर होगा, पहुँचे। मीर्जा इबराहीम, हरम बेगम, मीर्जा इबराहीम का तगाई हैदर अली एव उवैस सुल्तान किवचाक का पुत्र हम लोगो के पहुँचने के पूर्व उपयुक्त स्थान पर पहुँच चुके थे। ख्वाजा (जलालुद्दीन महमूद) मीर्जा (इबराहीम) की सेवा मे उपस्थित हुआ। बीबी फातेमा बेगम को ज्ञात हुआ कि "मीर्जा हिन्दाल के सेवक महम्मद ताहिर मीरक ने मीर्जा हिन्दाल के कुन्दुज मे घेर लिये जाने के कारण प्रार्थना-पत्र भेज कर मीर्जा सुलेमान को कुन्दुज समर्पित कर दिया। मीर्जा इबराहीम तथा हरम बेगम कुन्दुज मे प्रवेश के उद्देश्य से जा रहे हैं।" क्योंकि उनकी सख्या कम थी और ख्वाजा (जलालुद्दीन) के साथ ८० सशस्त्र जवान थे, अत सेवको ने मिल कर यह निश्चय किया कि मीर्जा को बन्दी बना ले और शीघ्रातिशीघ्र काबुल पहुँचा दे। क्योंकि वह विलायत मध्य मे थी और ख्वाजा ताजीक[३] था अत ख्वाजा को यह कार्य पसन्द न आया। उन लोगो ने[४] उस स्थान से ख्वाजा को मीर्जा सुलेमान के पास किश्म की ओर विदा कर दिया। मीर्जा इबराहीम ने कहा कि, 'बेगम कुन्दुज से लौटकर तुम्हारी समस्त समस्याओ का समाधान कर देगी, और तुम्हे विदा कर देगी।' आधी रात के समय मीर्जा इबराहीम तथा हरम बेगम कुन्दुज की ओर चली गई। ख्वाजा तथा बीबी फातेमा किश्म पहुँचे और मीर्जा सुलेमान की सेवा मे उपस्थित हुये। जो फरमान और पत्र उनके पास थे, (१३८) मीर्जा की सेवा में प्रस्तुत किए। मीर्जा ने कहा 'ठहरो। बेगम कुन्दुज से आ जाय तो उनसे परामर्श के उपरान्त उत्तर देकर विदा करेगे।" ख्वाजा मुईन वल्द ख्वाजा महमूद खा ने उद्यान मे, जो किश्म नदी के तट पर था, ख्वाजा (जलालुद्दीन महमूद) को ठहराया। मीर्जा अस्करी को मीर नवराश के घर में जो उस उद्यान एव करावूज बेगम के घर से मिला था, ठहराया। कुछ दिन उपरान्त बेगम, मीर्जा इबराहीम को कुन्दुज सौपकर किश्म आ गई। जब यह समाचार काबुल पहुँचे तो (हजरत पादशाह ने) कुन्दुज के स्थान पर गजनी, गिरदीज एव उनके अधीनस्थ तथा आस पास के स्थान मीर्जा हिन्दाल को दे दिए।

१ कान के छल्लों से तात्पर्य है।

२ मूल में 'लूरक' किन्तु 'वरस्क' शुद्ध है। डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में 'वरस्क' ही है (पृ० १३२)।

३ डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में इस प्रकार है —"But we were in a strange place, and the Khwajah was a coward, the suggestion could not materialise" (पृ० १३२)।

४ मीर्जा इबराहीम एवं हरम बेगम।

ख्वाजा जलालुद्दीन एवं मीर्ज़ा सुलेमान की वार्ता

उन लोगों ने कई बार परामर्श किया कि ख्वाजा (जलालुद्दीन महमूद) को बन्दी बना लिया जाय। ख्वाजा समझ गया और उसने अपने आदमियों को छिन्न-भिन्न कर दिया। कुछ लोगों को किसी न किसी बहाने से काबुल भिजवा दिया। कुछ लोगों को बदख्शा के अमीरों के पास जिनको सरोपा प्रेषित किए गए थे भेज दिया। प्रत्येक का सरोपा तीन-तीन चार-चार लोगों के सिपुर्द करके भेजा और आदेश दिया कि वहाँ से वे काबुल चले जायें। उसके साथ लगभग २० आदमी बालक एवं बड़े मिला कर रह गए। एक दिन काजी ज़ुज़बून ने, जो मीर्ज़ा सुलेमान के सम्बन्ध से हाजी मुहम्मद खां का रिश्तेदार था, ख्वाजा से कहा कि, "हुमायूं पादशाह के ताज की कलगी हिन्दूकुश के कोतल से दृष्टिगत होती है। सर्व प्रथम जो व्यक्ति उनकी सेवा में जायगा, वह मैं हूँगा।" इसके बावजूद हर रात में उसके आदमी किश्म नदी के इस ओर एवं उस ओर पहुँच कर ख्वाजा की निगरानी करते थे। पता चला कि ख्वाजा की निगरानी का मीर्ज़ा सुलेमान को ज्ञान न था और वह निष्ठा प्रदर्शित करते हुए निफ़ाक़ कर रहा था। एक मास अथवा चालीस दिन तक ख्वाजा को न बुलवाया गया। इसके उपरान्त ख्वाजा ने मीर्ज़ा को प्रार्थना-पत्र लिखा (१३९) कि, 'मैंने हुमायूं पादशाह के दरबार में आपकी सेवायें की थी। मुझे आशा थी कि यदि मैं कभी बदख्शा पहुँचा तो मेरा आतिथ्य होगा। मैं लगभग दो मास से आया हूँ। मुझे रोजाना ज्ञात होता रहता है कि मुझे बन्दी बनाकर खमलकान में, जो क़िलये ज़फ़र का अरक है, भेज दिया जायगा, अथवा ककचा नदी में डलवा दिया जायगा।" वाक़ीद ने मीर्ज़ा सुलेमान के पास यह प्रार्थना-पत्र पहुँचाया। मीर्ज़ा ने तत्काल ख्वाजा को बुलवाया और बार बार शपथ ली कि "यह बात तेरे पास स्वार्थियों ने पहुँचाई है। मैं हजरत पादशाह का दास हूँ। इस प्रकार का कार्य किस तरह कर सकता हूँ?" ख्वाजा (जलालुद्दीन) कुरान शरीफ भी बगल में दबा कर ले गया था। उसने मीर्ज़ा सुलेमान के प्रति निष्ठावान् रहने की शपथ ली और कहा, "मैं इसमें कोई कसर न उठा रक्खूँगा।" मीर्ज़ा सुलेमान ख्वाजा की ओर से सतुष्ट था ही किन्तु इसमें और भी वृद्धि हो गई। ख्वाजा ने निवेदन किया कि, मैं समय-समय पर काबुल समाचार भेजता रहता हूँ। यदि यहाँ कोई बात निष्ठा के विरुद्ध हो गई हो अथवा हो जाय तो मैं उसके विषय में निवेदन करूँ अथवा नहीं?" मीर्ज़ा ने कहा, "भली-भाति कहो।" उसने निवेदन किया कि, "कुछ दिन पूर्व जब काज़ी ज़ुज़बून ने आकर कहा कि जब हुमायूँ पादशाह के ताज की चोटी किसी दिशा से जाहिर होगी तो सर्व प्रथम मीर्ज़ा सुलेमान को नष्ट करके जो हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित होगा, वह मैं हूँगा।" मीर्ज़ा ने कहा, "ईश्वर ने चाहा तो कोई ऐसी बात न होगी जिसके कारण हजरत पादशाह को यहाँ आने की आवश्यकता पड़े और वह मुझे नष्ट करके हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित हो। उसका इन बातों से, जो तुमसे की हैं, उद्देश्य षड्यन्त्र है। इस प्रकार के षड्यन्त्रकारी को बन्दी बना लेना चाहिये।" निश्चय हुआ कि प्रात काल काज़ी ज़ुज़बून कासिम बन्दी बना लिया जाय।"

कासिम काज़ी ज़ुज़बून की हत्या

(१४०) दूसरे दिन ख्वाजा ने मीर्ज़ा को लिखा कि "सुना जाता है कि उस कृतघ्न को बन्दी बना लिया गया है। उसके पास एक बूलाक[1] यातू है। बूलाक मेरे लिए उपयुक्त होता है। आशा

[1] बूलाक का अर्थ ज्ञात न हो सका।

है कि मुझे प्रदान कर दिया जायगा।" यह पत्र भी बायजीद मीर्जा के पास हरम बेगम के महल की हवेली में ले गया था। कासिम जूजबून को बुलवाया गया। हैदर अली आकर उसके दायें हाथ की ओर बैठ गया। मीर जैनुल आबेदीन, जो मीर्जा का एक प्रतिष्ठित अमीर था, बायें हाथ की ओर बैठा। उसके हाथ पकड़ कर उससे चाकू ले लिया गया और मीर जैनुल आबेदीन को सौंप दिया गया। बायजीद उस सभा में उपस्थित था। उसकी हवेली तथा असबाब (को अधिकार में करने) के लिए आदमी नियुक्त कर दिए गए। उसका भाई सूचना पाकर जिस बाग में था, वहाँ से पैदल बाग से भाग गया। जब ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद का पत्र मीर्जा सुलेमान को प्राप्त हुआ तो उसने अपने तवाची बाशी तोलक को बुलवा कर कहा कि, "बायजीद को कासिम जूजबून के तवेले में ले जाओ और जो बूज कररारी बूलाक यावू उसके पास हो उसमें लेकर बायजीद को दे दो।" तोलक ने बायजीद के साथ पहुँच कर घोड़ा तत्काल बायजीद को सौंप दिया। कुछ दिन उपरान्त मीर्जा सुलेमान स्वयं कासिम जूजबून का उसके खतरनाक हो जाने के कारण बन्दी बनाकर किलये जफर की ओर इस आशय से रवाना हुआ कि उसे खमलंकान में बन्दी बना दे। मीर्जा के निष्ठावानों ने इस प्रकार के षड्यन्त्रकारी का बन्दी रखना उचित न समझा। क्योंकि उसकी हत्या कर देना निश्चय कर लिया गया था, अतः संसार की शुद्धतम वस्तु जल अर्थात् कोकचा नदी में उसे डुबा दिया गया।

विवाह के प्रस्ताव पर बेगम की आपत्ति

जिस समय मीर्जा सुलेमान किलये जफर की ओर रवाना होने लगा तो किश्म के पुल पर (१४१) उसने ख्वाजा को विदा करके कहा कि, "तुम्हे जो काम हो उसे बेगम से निश्चय करा लेना। तुम्हें बेगम विदा कर देंगी।" ख्वाजा दूसरे दिन किश्म में बेगम के महल में पहुँचा और विदा चाही। रमजान (मास) निकट था। बेगम ने कहा कि, "आगा पीर अली नामक ख्वाजासरा को मैंने कोलाब में चाकर खां के पास भेज दिया है। वहाँ से उत्तर आ जाने पर विदा कर दिया जायगा। उस समय तक यहीं इफ्तार[2] करो। तदुपरान्त चले जाना। घबड़ाहट क्या है?" तत्पश्चात् (बेगम ने) हैदर अली तथा मीर दाद को, जो इस घर में बड़े बूढ़े थे, ख्वाजा के पास भेजा और कहलाया कि 'यह छल्ला तथा अंगूठी इत्यादि जो तुम लाये हो उनके विषय में मैं यह चाहती हूँ कि हजरत पादशाह के प्रताप से मैं अपनी पुत्री के जाजमा[3] में इन रत्नों से उत्तम रत्न सिऊँ। बजाजे की दूकान के जो टुकड़े तुम मेरे सरोपा के लिए लाये हो क्या मैं इसी योग्य हूँ?' मैंने, मीर्जा सुलेमान तथा मीर्जा इब्राहीम ने सेवायें की हैं, विशेष रूप से उश्तुर ग्राम की चढ़ाई के अवसर पर जब (हजरत हुमायूँ पादशाह) मीर्जा कामरान पर आक्रमण हेतु जा रहे थे, मैंने स्वयं सवार होकर सफ़आवली[4] करते हुए लश्कर भेजा था। यदि हजरत पादशाह अपना नीमचा[5] मुझे प्रदान कर देते तो इस सरो-

१ डा० बनारसी प्रसाद ने "उसने निवेदन किया कि कुछ दिन पूर्व ...बेगम विदा कर देंगी" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।

२ रोज़ा खोले।

३ बिछौना अथवा कालीन।

४ नेतृत्व करते हुए, (देखिए गुलबदन बेगम हुमायूँ नामा)।

५ छोटी तलवार।

से अच्छा था। यदि वे मेरी पुत्री से विवाह करना चाहते थे तो ख्वाजा दोस्त खावन्द अथवा मीर
बरका को भेजना चाहिये था।" ख्वाजा ने उत्तर दिया कि "हजरत पादशाह ने मुझे अधिक विश्वास-
पात्र समझा। यदि आप लोग उन्हे चाहते हैं तो मुझे विदा कर दें ताकि वे लोग आ जायें।" बीबी
फातेमा भीतर बेगम के पास थी। उससे भी बेगम ने इसी प्रकार आलोचना की कि "तुझे काबुल
में इस उद्देश्य से नियुक्त किया गया है कि तू लोगो की पुत्रियों को फुसला करके ले जाये। क्या
(१४२) मेरी पुत्री को भी वैसा ही समझ लिया है। बेगमें एव आगाचायें किस कारण न आईं?
यदि मेरी पुत्री को कोई सम्मान नही प्राप्त है तो हजरत पादशाह का नाम तो बडा है। तुम्हारी
सरीखी स्त्रियाँ किस प्रकार भगनी करके निकाह करवा सकती हैं?" बीबी फातेमा ने भी यही उत्तर
दिया कि, "मुझे विदा कर दिया जाय। बेगमों में से जिसे भी बुलवायें आ जायेंगी।"

कुछ देर के बाद जब वे शान्त हो गईं तो ख्वाजा को उलुश के रूप मे कोलाब का खरबूजा
एव अगूर भिजवाये। बीबी फातेमा को सांत्वना दी और कहा कि, 'आगा पीर अली के आने
पर विदा कर दूँगी।" उनके विदा के सामान की व्यवस्था कराने लगी। अगूठी, कपडे सरोपा एव
मिश्री इत्यादि, जो हजरत पादशाह ने निकाह के शरबत के लिये भेजी थी, ले ली। बीबी फातेमा
से क्षमा-याचना करते हुए कहा कि, "क्योंकि मैंने अत्यधिक सेवायें की है, अत यह बातें शिकायत
के रूप में थी। आप कुछ ख्याल न करें। मैं हजरत पादशाह की दाह हूँ[1]।" उसने मुहम्मद अमीन
शीराजी के पास आदमी भेज कर कहलाया कि, 'तेरे पास जो काला घोडा है, उसे ले आ। ख्वाजा
जलालुद्दीन महमूद ने उसे हमसे माँगा है। मैं उसे मोल लेकर उसको प्रदान कर दूँगी।" तीन चार
दिन पश्चात् मुहम्मद अमीन उस घोडे को लेकर आया। उसे बेगम ने ५०० भेडें देकर उससे
क्रय कर लिया। अन्य ५०० भेडे, खाल के थैले, पर्वत की ढाल के चाकू, मुलाइम की हुई पोस्तीने
तथा बदख्शा की अन्य उत्तम वस्तुएं जो उस समय प्राप्य थी, ख्वाजा को दी गई। बीबी
(१४३) फातेमा का भी घोडा, भेडे एव अन्य सामग्री प्रदान की। आगा पीर अली कोलाब से आकर
चाकर अली खा का उत्तर लाया। जब कोई और बहाना न रहा तो १२ रमजान[2] की रात्रि मे ख्वाजा को
बुलवा कर रोजा खुलवाया। कोलाब का खरबूजा, करबार के अगूर, पाल्दा, फिरनी सभी अधिक
मात्रा मे दावत मे लाई गई। उनकी सुन्दरता एव उनके गुणो की प्रशसा सम्भव नही। बेगम ने
सबको अपने सामने तैयार करके उत्तम ख्वाजा-सराओ के हाथ भेजा था[3]। ख्वाजा (जलालुद्दीन
महमूद) ने कुछ शकाओ के कारण अपना असबाब व्यापारियों इत्यादि द्वारा काबुल भेज दिया
था। उसके पास कुछ सामान न रह गया था। घोडे को जिस बरतन में दाना दिया जाता था उसमें
वह भोजन करता था। घोडे का नीरव[4] बिछा कर सो जाता था। इस प्रकार समय व्यतीत करके
बन्दी होने से मुक्त हो सका।

१ सेविका।
२ सम्भवत १२ रमजान ६५८ हि० (१३ सितम्बर १५५१ ई०)।
३ डा० बनारसी प्रसाद ने "आगा पीर अली के आने पर विदा कर दूँगा - ख्वाजा-सराओं के हाथ भेजा था"
तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।
४ सम्भवत जीन के नीचे का कपडा।

ख्वाजा जलालुद्दीन एवं बीबी फातेमा का विदा होना

उसी रात्रि में ख्वाजा एवं बीबी फातेमा सीधे बलाववान पहुँचे, वहाँ से नमक-आब के दर्रे तक जहाँ चपकून जलायर एवं समस्त जलायर लोग रहते थे और वहाँ से ख्वाजा बन्दकुशा और वहां से नारन और नारन से यरम एवं रजदामवान पहुँचे। वहाँ से अली कुली अन्दराबी के चार बाग में पहुँचे। उस समय अली कुली अन्दराब का हाकिम था। दो रात तक वह ख्वाजा को इफ्तार के लिए ठहराये रहा। तदुपरान्त उसने ख्वाजा एवं बीबी फातेमा का घोड़ा एवं व्यय प्रदान किया और उसी स्थान से ख्वाजा से विदा हो गया। वहाँ से वे खजान नामक स्थान पर, जहाँ दर्रये कोतले नव में प्रविष्ट होते हैं पहुँचे। दूसरे दिन दर्रे को पार करके एक आदमी (१४४) एवं तबी मुहम्मद काफिरस्तान के सरदार के पास जा गूरबन्द दर्रे में चुनारे सोख्ता के समीप है उतरे। वहां से चारीकार, चारीकार से मामूरा तथा मामूरा से काबुल में हजरत पादशाह के चरणों के चुम्बन द्वारा सम्मानित हुए और वदख्शा का हाल सुनाया। मीर्जा सुलेमान एवं हरम बेगम के प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किए[1]।

हरम बेगम का हुमायूं को पत्र

मीर्जा सुलेमान ने लिखा था कि पुत्री के विषय में माता को अधिकार प्राप्त है। हरम बेगम ने लिखा था कि, मीर्जा सुलेमान आपका दास है और मैं आपकी दासी। मेरा पुत्र गुलाम बच्चा तथा मेरी पुत्री आपकी दासी बच्ची है। *क्योंकि हम लोग उज़बेकों के समीप हैं अतः* यह हमारी मर्यादा का प्रश्न है। आप बहुत बड़े पादशाह हैं। यदि आपको मेरी पुत्री की इच्छा है तो आशा है कि आप स्वयं हिन्दूकुश दर्रे को पार कर और बेगमें एवं काबुल के अमीर सभी सेवा में उपस्थित रहें। मैं प्रत्येक के लिए वदख्शा के उत्तम घोड़ा भेड़ा एवं सरोपा हेतु वस्त्रों का प्रबन्ध कर रही हूँ। अपनी पुत्री का निकाह करके आपको सौंप दूँगी। इससे हम सबके सम्मान में वृद्धि होगी। जो शत्रु निकट हैं, उन्हें भी ज्ञात हो जायगा कि आपने इतनी अधिक कृपा दृष्टि प्रदर्शित की।'

हिन्दू कोह नाम पड़ने का कारण

वास्तव में उस स्थान का नाम हिन्दूकुश है। ९९४ हि० (१५८५–८६ ई०) में हजरत जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह ने उसका नाम हिन्दू कोह रक्खा। इस नाम का यह कारण था कि उन्हें ज्ञात हो गया कि यह पर्वत बंगाल की सीमा से तबरेज की सीमा तक फैला है और उसके दामन में तबरेज़ वालों के मजार हैं। वे सब हिन्दू कोह में सम्मिलित हैं। ईश्वर ही को सत्य बात का ज्ञान है।

हुमायूं द्वारा हरम बेगम का प्रस्ताव स्वीकार करना

हजरत पादशाह ने उसकी[2] सब बातें स्वीकार करके कहा कि यदि ईश्वर ने चाहा

१ डा० बनारसी प्रसाद ने "उसी रात्रि में ख्वाजा ... प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किए" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।

२ हरम बेगम की।

तो यही करूँगा[१]।"

हुमायू का मीर्ज़ा कामरान के विरुद्ध प्रस्थान

(१४५) जब मीर्ज़ा कामरान के विषय में ज्ञात हुआ कि वह महमन्द एव खलील के मध्य में ठहरा हुआ है और नित्य प्रति उसकी सख्या बढती जा रही है तो उन्हे उस विवाह का अवसर न मिला। क्योकि हजरत पादशाह सियाह-आब गन्दमक पर पडाव किए हुए थे, हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी एव एक समूह को सेना के अग्र दस्ते के रूप में नियुक्त किया। वे लोग सियाह आब पार करके पडाव किए हुए थे। मीर्ज़ा कामरान महमन्द एव खलील के साथ किरा-सू में था। यह सफेद कोह का दामन है। इसके उस ओर बगश है और इस ओर जलालाबाद। जब उसने हजरत पादशाह के आगमन के समाचार सुने तो महमन्द एव खलील के लश्कर से थोडी सी सेना अपने साथ लेकर रात्रि में छापा मारने के विचार से हजरत पादशाह के शिविर की ओर प्रस्थान किया। क्योकि शिविर-सियाह आब के उस ओर था और रात्रि का समय था, अत उसे मार्ग का पता न चल सका। उसने हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी के, जो अग्र भाग में था, शिविर पर आक्रमण कर दिया। मीर्ज़ा स्वय उसके खेमे के पास पहुँच गया। शाह बुदाग एव कुछ यक्का लोगों ने हैदर मुहम्मद पर तलवार का वार किया। उसका हाथ चुलाक[२] हो गया। क्योकि हजरत पादशाह निकट थे अत मीर्ज़ा किरा सू न पहुँच सका। महमन्द एव खलील कबीले के अफगानो के साथ जलालाबाद तथा हिन्दाल-पुर से होता हुआ बारीक-आब में अफगानो के कबीले में ठहर गया। हजरत पादशाह उसके पीछे पीछे रवाना हुए और चीर यार तथा हिन्दाल पुर के मध्य म उतर पडे। शिविर के चारो ओर मोर्चे बाँट कर खाई खुदवा दी[३]।

हिन्दाल मीर्ज़ा का घायल होना

हजरत पादशाह ने ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को काबुल का दारोगा नियुक्त कर दिया था। दाम बायजीद ख्वाजा (जलालुद्दीन) की सेवा मे था। कुछ दिन उपरान्त मीर्ज़ा कामरान तथा (१४६) अफगानो ने मिल कर शाही शिविर पर रात्रि में छापा मारा[४]। नव्वाब मीर्ज़ा हिन्दाल तथा अब्दुल वहहाब यसावल रात्रि के उस छापे मे शहीद हो गए। जिस समय उस हरामजादे एव दस्त बुरीदा[५] अफगान ने मीर्ज़ा पर तलवार चलाई तो मीर्ज़ा ने ढाल के स्थान पर अपना बायाँ हाथ ऊपर उठा लिया। सम्भवत उसकी तलवार बरकी[६] थी और उस पर नई सान धरी गई थी। बायें हाथ के अँगूठे के बाद की अगुली पर इस प्रकार तलवार लगी कि उसने उसे दो भागो में इस

१ डा० बनारसी प्रसाद ने, 'वास्तव में उस स्थान यही करूगा" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।
२ सम्भवत, कट जाने से तात्पर्य है।
३ डा० बनारसी प्रसाद ने "जब मीर्ज़ा कामरान के विषय में ...खाई खुदवा दी" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।
४ अकबर नामा के अनुसार 'रविवार २१ जीकाद ९५८ हि० (२० नवम्बर १५५१ ई०) को रात्रि में' (पूर्व पृ० २८४)।
५ 'ईश्वर करे उसका हाथ कट जाय'।
६ बरकी : इस शब्द का अर्थ भी ज्ञात न हो सका। तलवार की कोई किस्म।

तरह विभाजित कर दिया कि मानो परकार द्वारा विभाजन हुआ हो[1]। दूसरी तलवार उसके मुह पर इस प्रकार लगी कि इस कान से उस कान तक का भाग पृथक् हो गया। अब्दुल वहहाब के मुह पर ऐसा बाण लगा कि उसके सिर के पीछे से निकल गया। अफ़गानों ने इतना अधिक शोर गुल मचाया कि हज़रत पादशाह घबरा कर दौलतख़ाने से निकले और घोड़े पर सवार हो गए। शिविर के मध्य में एक टीला था। वे वहाँ पहुँच कर उसपर खड़े हो गए।

हुमायूं की घबराहट

मुनइम बेग अपने मोर्चे में इस बात की सूचना पाकर हज़रत पादशाह की सेवा में पहुँचा। हज़रत पादशाह को रोते हुए देखा। उसने पूछा कि, "रोने का क्या कारण है?" हज़रत पादशाह ने कहा, "क्या तूने नहीं सुना कि मीर्ज़ा हिन्दाल शहीद हो गया?" मुनइम बेग ने निवेदन किया कि, "आपकी बला रोये। एक दास कम हो गया।" हज़रत पादशाह ने रोना बन्द कर दिया। तदुपरान्त उसने हज़रत पादशाह से सवार होने का कारण पूछा। हज़रत पादशाह ने बताया कि, "शत्रुओं के इस शोर गुल के कारण।" मुनइम बेग ने निवेदन किया कि, "सम्भव है कि आपके सवार होने के समाचार पाकर लोग मोर्चों को छोड़ कर चल दें और मीर्ज़ा कामरान एवं अफ़गानों की विजय (१४७) हो जाय।" हज़रत पादशाह को यह बात बड़ी पसन्द आई और वे उतर कर दौलत-ख़ाने में पहुच गये। क्योंकि मीर्ज़ा हिन्दाल का मोर्चा द्वार के निकट था अतः अफ़गान लोग उस स्थान से दूसरे मोर्चे पर न पहुच सके। वापस होकर अपने कबीले में चले गये[2]।

अकबर का मीर्ज़ा हिन्दाल की जागीर प्राप्त करना

दूसरे दिन ग़जनी, गिरदीज एवं जो कुछ मीर्ज़ा हिन्दाल की जागीर में था, वह सब शाहज़ादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा को प्रदान कर दिया गया। मीर्ज़ा हिन्दाल के सेवकों में से बाक़ी परवानची, मुहिब अली एवं नासिर अली कूज़ी को (पादशाह ने) अपना सेवक बना कर शेष लोगों को मीर्ज़ा को प्रदान कर दिया। मीर्ज़ा हिन्दाल ९५८ हि० (१५५१ ई०) में शहीद हुआ। मीर्ज़ा की मृत्यु की तारीख़ भी "शबखून" (शब्द के अक्षरों) से निकलती है।

अकबर की पढ़ने से अरुचि

उसी वर्ष शाहज़ादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा मुल्लाज़ादा के पास, जो मुल्ला हुसामुद्दीन का पुत्र था, नव्वाब मरियम मकानी के बाग़ के ख़रगाह में पढ़ा करते थे। समरकन्द में हुसामुद्दीन के समकालीनों में कोई भी उसके बराबर न था। मुनइम बेग ने शाहज़ादये आलमियान[3] के लिए शुभ कामनायें करते हुए, अभिवादन करके विदा ली। अदहम से, जो मीर्ज़ा का कोका था, शाहज़ादे ने कहा कि, "मुनइम से कहो कि हमें आज छुट्टी दिला दे।" उसने आदेशानुसार मुल्ला

१ यह वाक्य स्पष्ट नहीं। डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है —"It cut through right upto the navil, and fell like a pair of compasses on the left middle finger separating it into two halves" (पृ० १३६)। सम्भवतः तात्पर्य यही है।

२ डा० बनारसी प्रसाद ने "तदुपरान्त उसने हज़रत पादशाह ..चले गए" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया और बाद के अनुवाद में कहीं-कहीं शब्द छोड़ दिये हैं।

३ अकबर।

जादे से निवेदन किया। क्योंकि मुनइम बेग हजरत हुमायूं पादशाह का वकील था और उसकी (१४८) बात सैनिक एवं प्रजाजन सभी मानते थे, अतः उसे स्वीकार करके मुल्लाजादे ने शाहजादये आलमियान को सैर की अनुमति प्रदान कर दी। हजरत पादशाह को यह समाचार प्राप्त हो गए। दूसरे दिन मुनइम बेग प्रथानुसार हजरत पादशाह की सेवा में था। शम्सुद्दीन मुहम्मद अतका शाहजादे को हजरत पादशाह की सेवा में कोरनिश हेतु लाया। हजरत पादशाह ने कहा कि, "कल तुमने हाजी मुहम्मद सुल्तान से कहा था कि, 'हमें आखुन्द से कह कर छुट्टी दिला दो। ऐसी बात फिर न करना।" तदुपरान्त जब शाहजादा मकतब की ओर चला गया तो हजरत पादशाह ने कहा, "मुनइम! मैंने सुना है कि तूने (शाहजादे) को छुट्टी दिलाई थी। मैंने हाजी मुहम्मद का नाम इस कारण लिया था कि मीर्जा अभी बालक है। सम्भव है कि यह बात उसके हृदय में बैठ जाय कि मुनइम ने मुझे छुट्टी दिलाने के उपरान्त जाकर हजरत पादशाह से कह दिया। कहीं ऐसा न हो कि किसी समय मैं न रहूँ तो वह तुझे हानि पहुँचाये। हाजी मुहम्मद धृष्ट है। उसे जो भी हानि पहुँचाई जाय वह उसके योग्य है।"

शाहजादों से व्यवहार के नियम

जब बंगाले पर आक्रमण के विषय में जौनपुर में ९७८ हि० (१५७०-७१ ई०) में विचार विनिमय हो रहा था तो शाहंशाह अकबर ने कासिम अली खां से यह कहानी मुनइम खां के समक्ष बताई। बायजीद ब्यात उस समय सरकार बनारस में नियुक्त था, और मुनइम खां वर्षा पूर्व से खान बाबा की उपाधि द्वारा सम्मानित था[१]। इस तारीख में जब कि यह 'मुख्तसर" पूरा हुआ तो बायजीद को यह बात याद रह गई। उसने इसे इसमें इस कारण लिख दिया कि हर पादशाह के खान एवं सेवक लोग जब शाहजादा की सेवा में रहे तो इस बात को ध्यान में रक्खें कि वे शाहजादे से बाल्यावस्था में जैसा व्यवहार करेंगे वह उसे याद रक्खेगा। मीर्जाई के समय वे जैसा व्यवहार करेंगे, उसका उन्हें फल भोगना पड़ेगा।

मीर्जा कामरान का हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान

(१४९) कुछ दिन उपरान्त हजरत पादशाह ने मीर्जा कामरान एवं अफगानों के विरुद्ध प्रस्थान किया। क्योंकि उनकी सेना की संख्या अधिक थी और मीर्जा कामरान की सेना की संख्या कम थी अतः वह इतने बड़े पादशाह का मुकाबला न कर सका। वह भाग कर सलीम खां वल्द शेर खां अफगान के पास, जो उस समय हिन्दुस्तान का पादशाह था, चल दिया।

हुमायूं की काबुल को वापसी

इस घटना के पूर्व हाजी मुहम्मद बाबा कश्का के अत्यधिक अपराधों की सूची तैयार की गई। उसे उसके भाई शाह मुहम्मद सहित, उसकी कृतघ्नता के कारण और इस कारण कि उसने इस युद्ध में भी, मीर्जा कामरान का साथ दिया था, नरक भेज दिया गया। बैरम खां उसे गजनी से सांत्वना देकर अपने साथ लाया था। जिस समय उसके अपराध लिखे जाने लगे तो वह उसकी सहायता न कर सका। खान को भी उन्हीं दिनों में कन्धार विदा कर दिया गया। अफगान लोग

१ मूल में यह वाक्य स्पष्ट नहीं।

नष्ट-भ्रष्ट होकर दर्रा एवं शीत ऋतु के शिविरों में चले गए। हज़रत पादशाह काबुल लौट गए। तीर मास[1] उरता बाग़ में व्यतीत किया।

हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान

९४९ हि० (१५४२-४३ ई०) की शीत[2] ऋतु में हज़रत पादशाह हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुए। तूमान उक़र के अधीनस्थ पाकशाद शहना नामक स्थान पर पड़ाव किया। शाह अबुल (१५०) मआली अली कुली वल्द हैदर सुल्तान शैबानी इस्कन्दर ख़ाँ क़ज़ाक़, क़ासिम बरलास का जामाता अब्दुल्लाह ख़ाँ क़ज़ाक़, इस्माईल बेग दूल्दी, ख़्वाजा जलालुद्दीन महमूद, बाबूस, एवं कुछ अन्य अमीर एवं यक्का जवानों को आगे रवाना कर दिया। ये लोग शाही लश्कर से पृथक् होकर गिरदीज़ कोतल के मार्ग से नग्ज़ की ओर रवाना हुए। जब वे नग्ज़ पहुँचे तो उन्हें समाचार प्राप्त हुए कि अब्दुर्रहमान अफ़ग़ान जो दक, एवं बूनफ़ीज़ तथा उस क्षेत्र में थे, अपने असबाब इत्यादि लेकर बलन्द ख़ेल की ओर चल दिये हैं। उन लोगों ने नग्ज़ में पड़ाव करना उचित न समझा और बलन्द ख़ेल की ओर चल दिए। एक पहर दिन चढ़ने पर अब्दुर्रहमान अफ़ग़ान अपने असबाब इत्यादि को लेकर अपने योग्य आदमियों सहित कोतल में जो अनावा कहलाता है और जो बंगश, नग्ज़, दौर एवं सुम्बुला की सरहद है, पहुँच गए। क्योंकि अली कुली एवं यक्का लोगों का दस्ता आगे था, अतः उन्होंने उनपर आक्रमण किया। शाही दरबार का दास बायज़ीद भी उस सेना के साथ था। अफ़ग़ानों को भगा दिया गया। अली कुली एवं बाकर अली को थोड़े से घाव लगे। साद बिन शाह जो पादशाह का एक यक्का जवान (अहदी) था और जो अबुल मआली को सौंप दिया गया था, बुरी तरह घायल हुआ। अफ़ग़ानों में से बहुत से लोग मारे गए। किन्तु उनके मवेशी, दास एवं असबाब न प्राप्त हुए। ख़्वाजा जलालुद्दीन ने अमीरों से कहा कि, 'हम लोगों को आगे भेजने का उद्देश्य यह था कि भेड़ एवं माल असबाब शाही लश्कर में पहुँच जाय। करगूली[3] भी पृथक् हो जाय। ख़ाली हाथ शिविर में जाना तथा लौटना उचित नहीं। दर्रये समन्द नामक स्थान के निवासियों को कोई पता नहीं चल सका है। यदि कुछ लोग मेरे साथ कर दिये जायें तो मैं जाकर इन पर आक्रमण करूँ।' सब लोगों की इच्छा यही थी कि विजयी शिविर में कुछ पहुँच जाय। (१५१) सभी अमीरों ने उसकी बात मान ली।

हुमायूं के सैनिकों द्वारा समन्द दर्रये पर आक्रमण

इस्कन्दर सुल्तान क़ज़ाक़, इस्माईल बेग दूल्दी, बाबूस, अबुल क़ासिम ईशक आगा एवं कुछ चुने हुए यक्का जवान, मुग़ल ख़्वानजियान[4], क़ुर्बान क़रावल एवं उसके भाई तथा एक अन्य समूह

१ ईरानियों का (सूर्य के हिसाब से सवत् का) चौथा मास जब सूर्य कर्क राशि में होता है।

२ यह तारीख़ अशुद्ध है। बायज़ीद ने इस स्थान पर बहुत सी घटनायें गड़बड़ कर दी हैं। **अकबर नामा** के अनुसार हुमायूं ने ज़िलहिज्जा ६६१ हि० के मध्य (लगभग १२ नवम्बर १५५४ ई०) में हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान किया (पूर्व पृ० ३१६), किन्तु यह घटना वास्तव में बंगश की ओर प्रस्थान तथा कामरान के बन्दी बनाये जाने के पूर्व की है। **अकबर नामा** में इसे ६५१ हि० के अन्त (नवम्बर १५५२ ई०) में लिखा गया है। (देखिये पूर्व पृ० २६७)।

३ करगूली : इसका अर्थ स्पष्ट नहीं।

४ **अकबर नामा** में 'मुग़ल काज़ी'।

की वख्शी ने उसी गोष्ठी में सूची तैयार की। तवाचियो[1] को सूचना कर दी गई। मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय घोड़ा को दाना देकर वे लोग समन्द दर्रे की ओर रवाना हुए। वाद वायजीद भी उसी लश्कर में था। प्रात काल वे लोग समन्द दर्रे में पहुँच गए। उपर्युक्त स्थान वालो को कोई सूचना न हुई। समन्द दर्रा पर्वत के आचल में स्थित है। उसके एक ओर तीरा और एक ओर वगश है, दूसरी ओर दौर एव मुम्बुला एव अन्य ओर दनकोट। हर दिशा से पहुँच कर वे लोग नारे लगाने लगे। उस समूह को कोई अन्य उपाय न दिखाई पड़ा। अपना माल असबाव लेकर मार्ग न होने के कारण, पर्वत पर पहुँच गए और (वहाँ से) लौट कर युद्ध किया। शत्रुओ मे से कुछ लोग मारे गए। उनके सिर काट लिये गए। कुछ लोग अपने असवाव सहित पर्वत के नीचे उतर कर भाग गए। शाही सेना वालो ने वहा के लोगो के मवेशियो तथा असवाव इत्यादि पर जो, कुछ वहा था, अपना अधिकार जमा लिया। वे तीन दिन तक वहाँ ठहरे रहे।

शाह अवुल मआली का आगमन

शाह अवुल मआली एव जो सेना पीछे रह गई थी, वह भी पहुँच गई। मुनइम वेग, जिसकी जागीर तूमान नेकनहार[2] में थी तीरा के मार्ग से विजयी शिविर की ओर आ रहा था। जव वह तीरा मे फतह शाह के घर मे जो चिराग कुशा धर्म का अनुयायी था पहुँचा तो वह (१५०) सूचना पाकर भाग खड़ा हुआ। उसकी सम्पत्ति को सिपाहियो ने लूट लिया। जब इन लोगो को पता चला कि हजरत पादशाह यूतग जी म, जो वगश के नीचे के ग्रामो में है, पडाव किए हुए है तो वे मवेशियो एव असवाव सहित, जो उन्होने अपने अधिकार मे कर लिये थे विजयी शिविर की ओर रवाना हो गए। मुनइम वेग भी फतह शाह के असवाव सहित आकर हजरत पादशाह के चरणो का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। उसने जो उत्तम असवाव प्राप्त किया था उसमें से भी उत्तम असवाव जो हजरत पादशाह एव शाहजादये आलमियान हजरत जलालुद्दीन मुहम्मद अकवर मीर्जा के योग्य था उन्हे भेंट कर दिया।

ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद की काबुल में नियुक्ति

उसी मंजिल पर ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को काबुल का हाकिम नियुक्त किया गया और अली कुली लाल को, जो काबुल के हाकिम मुहम्मद अली तगाई का कातिल एव मीर्जा कामरान के कूरचियो में से था, वन्दी वनाने के लिये उस सिपुर्द कर दिया गया। हजरत पादशाह शाहजादा जलालुद्दीन मुहम्मद ने अकवर मीर्जा एवं विजयी लश्कर सहित हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुए। ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद शाही लश्कर से विदा होकर (मध्याह्नोत्तर) की दूसरी नमाज के समय मतेये जरमी के काट में, जो ऊपरी वगश के ग्रामो की सरहद था, पडाव किया। वहाँ से प्रस्थान करके उसने अरयाव दर्रे के मार्ग से, जो सफेद गाह किले मे गिरदीज से सम्बन्धित है पड़ाव किया। वहाँ से प्रस्थान करके उसने तरा चश्मे में, जो गिरदीज कोतल के नीचे काबुल की ओर है, पडाव किया। वहाँ से उसने वायजीद का इस आशय स विदा कर दिया कि वह उसके आगमन के समाचार सैनिको एव काबुल

१ तवाची रक्षक, प्रबन्ध करने वाले।
२ 'नीनगनहार तूमान' (देखिये वावर नामा, पृ० १९-२०)।

वालो को पहुँचा दे और कासिम बरलास के बुर्ज को, जो काबुल के किले में हाकिम का निवास स्थान था, खाली करा दे। ख्वाजा ने वहा से हजारा लागरी के मुकाबले में, जो दिह एवं रुस्तम (१५३) कोहहा के मैदान के मध्य में था, पडाव किया। उसने उन लोगो पर आक्रमण किया। उनमे से बहुत से लोग मारे गए। उनकी भेडे तथा माल असबाब लेकर शीत ऋतु में काबुल पहुँचा। वह तीन-चार दिन उपरान्त काबुल में प्रविष्ट हो गया।

पराना की पराजय

हजरत पादशाह एवं शाही लश्कर पाले दनकोट एवं नीलाब के मध्य से पार हुए। वहाँ उन्हें समाचार प्राप्त हुए कि पराना नामक एक जमीदार ने भीरा के पर्वतों में से एक पर्वत में मकर[1] बना लिया है। उन्होंने उसपर आक्रमण किया। युद्ध करके शाही लश्कर ने मकर तोड डाला। पराना उस युद्ध में मारा गया[2]। इस ओर से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की हत्या न हुई। हजरत पादशाह के आगमन के समाचार रोहतास के किले एवं सियालकोट के थाने के मध्य के ३०,००० अफगानो[3] को प्राप्त हुए। उन लोगो को विजयी लश्कर पर आक्रमण करने का साहस न हुआ।

हुमायूं की कश्मीर आक्रमण की योजना

सलीम खा भी हजरत पादशाह के प्रस्थान के समाचार पाकर धावे मारता हुआ आगरा मे रवाना हुआ। जब हजरत पादशाह को सलीम खा के प्रस्थान के समाचार प्राप्त हुए तो वे इस बार उससे युद्ध करना उचित न देख कर रोहतास के किले की सैर करके नीलाब नदी से काबुल की ओर रवाना हुए। मीनारये कजवा एवं सवात के मध्य मे पडाव किया। कश्मीर के प्रस्थान के विषय में परामर्श किया गया। क्योंकि सभी अमीर यह जानते थे कि हजरत पादशाह कश्मीर जाना चाहते हैं, अत उन लोगों ने निश्चय किया कि मम्बर के मार्ग से कश्मीर पहुँचा जाये। जब प्रात काल प्रस्थान किया गया तो कलकची लोग काबुल की ओर चल खडे हुए। हजरत पादशाह बडे रुष्ट हुए। यसावलों एवं तवाचियों को आदेश हुआ कि कुछ लोगो की हत्या कर दी जाय। मुनइम बेग ने निवेदन किया कि, "हे पादशाह! लोगों की हत्या कराने से कोई लाभ न होगा। मैं इनको जिस दशा में देख रहा हूँ, उससे पता चलता है कि ये इस प्रकार कश्मीर न जायेंगे।"[4]

हुमायूं की काबुल की ओर वापसी

उसी समय कुर्बान करावल ने, जो शाह बेग खा के पास से पृथक् हो गया था और इस (१५४) समय हजरत पादशाह का करावल था, उपस्थित होकर निवेदन किया, "हज़रत पादशाह!

१ इसकी व्याख्या **तज़किरतुल वाकेआत** में कर दी गई है।

२ डा० बनारसी प्रसाद ने "इस घटना के पूर्व पराना इस युद्ध में मारा गया" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है। इसके उपरान्त "काबुल में प्रविष्ट हो गया" के भाग में से केवल कुछ ही वाक्यों का अनुवाद किया है।

३ सम्भवत २,०००।

४ **अकबर नामा** के अनुसार कश्मीर जाने की योजना मीर्ज़ा कामरान को अंधा बना देने के उपरान्त ९६० हि० के अन्त (नवम्बर-दिसम्बर १५५३ ई०) में बनाई गई थी। (देखिये **अकबर नामा**, अनुवाद पूर्व पृ० ३०४)।

आप क्या कार्य सोच रहे हैं ? आप जो कश्मीर जा रहे हैं और शाहज़ादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा को काबुल भेज रहे हैं तो इससे कोई बात भी न हो सकेगी। इस सूबे के लोग बड़े दुष्ट हैं। हज़रत बाबर पादशाह एवं मीर्ज़ा कामरान ने इन लोगों पर हाथ नहीं डाला। हिन्द विजय हेतु यह उचित है कि यूसुफ़ज़ई तथा सवात एवं बजौर के अफ़ग़ान लोग, जो अधिक संख्या में होने के कारण चौकन्ने रहते हैं, (संतुष्ट रक्खे जायें)। जो बादशाह विलायत[1] से आकर हिन्दुस्तान पर अधिकार जमाता है, इन लोगों को हिन्दुस्तान में परगने एवं जागीरें दे देता है।" अतः हज़रत पादशाह विवश होकर सवार हुए और काबुल की ओर चल दिये।

मीर्ज़ा कामरान का बन्दी बनाया जाना

जब हज़रत पादशाह परहाला के समीप से गुज़रे तो सुल्तान आदम गक्कर उनकी सेवा में उपस्थित हुआ। मीर्ज़ा कामरान सलीम ख़ाँ की कैद से भाग कर तिब्बत के सीमान्त तक काशग़र जाने के उद्देश्य से पहुँचा था किन्तु बाद में उसने अपनी राय बदल दी और परहाला में सुल्तान आदम के घर पहुँच गया। सुल्तान आदम ने मीर्ज़ा की सिफ़ारिश करते हुए उसके अपराधों को क्षमा करने एवं मीर्ज़ा को आश्रय प्रदान करने की प्रार्थना की। हज़रत पादशाह ने मुनइम बेग को इस आशय से नियुक्त किया कि वह मीर्ज़ा को सान्त्वना देकर ले आये। क्योंकि मीर्ज़ा ने समझ लिया था कि सुल्तान आदम के घर से किसी अन्य स्थान पर किसी प्रकार जाना सम्भव नहीं अतः उसने विवश होकर हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित होना स्वीकार कर लिया और उपर्युक्त बेग के साथ शाही शिविर के (१५५) समीप पहुँच गया तथा निवेदन किया कि, "यदि हज़रत पादशाह अपने शिविर से निकल कर मेरी ओर कुछ कदम चल कर आ जायेंगे तो यह मेरे सम्मान में वृद्धि का कारण होगा।" हज़रत पादशाह शिविर से निकले। वहाँ एक पुश्ता था। यह निश्चय हुआ कि हज़रत पादशाह वहाँ तक आयेंगे और मीर्ज़ा वहाँ सेवा में उपस्थित होगा। हज़रत पादशाह निश्चित स्थान से थोड़ा-सा पीछे उतर पड़े। मुनइम बेग ने निवेदन किया कि इससे आगे जाने के लिए निश्चय हुआ है। हज़रत पादशाह मुनइम बेग से थोड़ा सा रुष्ट होकर सवार हो गए और बोले, "चलो! मीरज़ादा जहाँ ले जायगा, जाऊँगा।" जब हज़रत पादशाह एवं मीर्ज़ा की निश्चित स्थान पर भेंट हो गई तो वे मीर्ज़ा को लेकर अपने शिविर में पहुँचे। मुनइम बेग अपने ख़ेमे में चला गया। हज़रत पादशाह समझ गए कि मुनइम बेग को उस बात से कष्ट पहुँचा है। मुहम्मद हुसेन नाज़िर को, जिसे बाद में जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह ने लश्कर ख़ाँ की उपाधि द्वारा सम्मानित किया, आदेश दिया कि "मुनइम बेग को बुला ला।" जब मुहम्मद हुसेन आदेशानुसार मुनइम बेग को बुलाने पहुँचा तो उसने दर्द-पीड़ा का बहाना कर दिया और न गया। हज़रत पादशाह समझ गए कि उसे अत्यधिक दुःख हुआ है। वे जानते थे कि ख़्वाजा सुल्तान अली दीवान की मुनइम बेग से बड़ी घनिष्ठता है। उन्होंने उसे आदेश दिया कि, "मुनइम बेग को बुला ला।" जब ख़्वाजा सुल्तान अली दीवान मुनइम बेग के घर पहुँचा तो अत्यधिक घनिष्ठता पर भी उसने दरबार में जाना स्वीकार न किया। दूसरे दिन हज़रत पादशाह ने अपने हाथ से पत्र लिखा कि, "क्योंकि मैंने तुझे कष्ट पहुँचाया है अतः आ जा कि तुझे मना लूँ।" वह उसी पत्र का चुम्बन करके तथा आँखों पर रख कर चल दिया।

१ काबुल की ओर के प्रदेशों से तात्पर्य है।

मीर्ज़ा कामरान का अंधा बनाया जाना

उसी दिन हज़रत पादशाह ने मीर्ज़ा कामरान के अत्यधिक अपराधों की सूची दीवान में भिजवा दी (और पुछवाया) कि, "किसी ने इतने अपराध किए हों, तो क्या करना चाहिये ?" (१५६) अली कुली दीवानी ने लिखा कि, 'इस प्रकार के आदमी को टुकड़े-टुकड़े कर डालना चाहिये।" अधिकांश अमीरों ने पत्र लिखे कि मीर्ज़ा की हत्या करा देनी चाहिये। लश्कर के काज़ी, हामिद ने इस प्रकार लिखा —

मिसरा

'मैं भी वही चाहता हूँ जिसे सब लोग चाहते हैं।'

जब यह लेख तैयार हो गया और हज़रत पादशाह के समक्ष प्रस्तुत हुआ तो हज़रत पादशाह ने कहा कि, "चाहे जो कुछ हो वह भाई है। मैं उसकी हत्या के पक्ष में नहीं हूँ।" आवश्यकतावश आदेश दिया कि, 'मीर्ज़ा की आखों में नश्तर लगा दिये जायें।' अली दोस्त ईशक आगा, सैयिद मुहम्मद पकना, गुलाम अली शश अंगुश्त तथा मुहम्मद अली शेख कमाल को आदेश हुआ कि, "वे लोग (इस कार्य हेतु) जायें। मीर्ज़ा की एक आंख में अली दोस्त नश्तर लगाये और दूसरी आँख में सैयिद मुहम्मद पकना, अन्य लोग मीर्ज़ा के हाथ पकड़े रहें।' जब ये लोग मीर्ज़ा के खेमे में प्रविष्ट हुए तो मीर्ज़ा ने सोचा कि उसकी हत्या का आदेश हुआ है। यह समझ कर मीर्ज़ा उनकी ओर मुक्का तान कर बढ़ा। अली दोस्त ने कहा, 'हे मीर्ज़ा! अब हत्या का आदेश नहीं हुआ है तो फिर इस प्रकार क्या व्यवहार कर रहे हो ?" मीर्ज़ा ने पूछा, 'फिर क्या आदेश हुआ है ?" उन लोगों ने जो कुछ निश्चय हुआ था, उसे मीर्ज़ा से कहा। मीर्ज़ा ने तकिया मंगवाया और अपने सिर के नीचे (१५७) रख कर कहा, "जिस प्रकार आदेश हुआ है, पालन करो।" उन लोगों ने मीर्ज़ा का जो अत्यधिक धैर्य देखा था, उसके विषय में हज़रत पादशाह से निवेदन किया।

बेग मुलूक का मीर्ज़ा कामरान की सेवा में पहुँचना

उसी समय मीर्ज़ा ने अपनी आँखों पर रूमाल बाँध लिये और मुनइम बेग के पास आदमी भेजकर कहलाया कि, "बेग मुलूक के विषय में अनुमति प्राप्त करके भेज दो ताकि पूर्व की भाँति वह मेरी सेवा करता रहे।" हज़रत पादशाह ने तत्काल बेग मुलूक को अनुमति प्रदान कर दी। मीर्ज़ा ने बेग मुलूक के प्रति अत्यधिक स्नेह के कारण उसके पहुँचते ही उसके हाथ पकड़ कर अपनी आँखों पर मले।[1] यह बात भी हज़रत पादशाह से कही गई।

मीर्ज़ा कामरान द्वारा मक्का जाने की अनुमति मांगना

दूसरे दिन मीर्ज़ा ने मुनइम बेग को बुलवा कर कहा, "तुम लोगों को ज्ञात है कि मैं काबुल में एक अन्य रूप में जीवन व्यतीत कर चुका हूँ। वहाँ मैं किस प्रकार जाऊँ? मैं तो इस योग्य था कि मेरी हत्या करा दी जाती। क्योंकि मुझे मुक्त कर दिया गया है अतः मुझे मक्का जाने की

१ इस अवसर पर मीर्ज़ा कामरान ने जो शेर पढ़ा उसका उल्लेख भी अकबर नामा में प्रकाशित हुआ है। (देखिये अनुवाद पृ॰ पृ॰ ३०४)।

वह सब मेरी दुष्टता एवं विश्वासघात का परिणाम है। यदि लोगों का यह विचार हो कि हजरत पादशाह ने मेरे प्रति कठोरता की तो मैं उन्हे क्षमा करता हूँ।" हजरत पादशाह ने रोते हुए कहा कि, "हम फातेहा पढते है।" तत्पश्चात् मीर्जा ने अपने पुत्रों एवं सम्बन्धियों की सिफारिश की। हज़रत पादशाह ने कहा, "तुम उन सब से निश्चिन्त रहो। वे मेरे पुत्र हैं।" तदुपरान्त फातेहा पढ कर मीर्जा को विदा कर दिया। यूसुफ, मीर्जा का हाथ पकड कर उसी स्थान पर ले गया जहाँ वह सर्व प्रथम स्वागतार्थ ले गया था। इसके उपरान्त जब हज़रत पादशाह दौलतखाने को चले गए तो मीर्जा फूट-फूट कर रोने लगा। यहाँ तक कि लोगों ने खेमे से मीर्जा के विलाप की आवाज़ सुनी।

मीर्ज़ा कामरान का मक्का की ओर प्रस्थान

दूसरे दिन चिलमा कोका से हज़रत पादशाह ने पूछा कि, 'हमारी सेवा मे रहेगा अथवा मीर्ज़ा के साथ मक्का जायेगा ?" चिलमा कोका को बाद में हज़रत जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह ने खाने आलम की उपाधि द्वारा सम्मानित किया और वह दहरपुर के युद्ध में दाऊद के विरुद्ध खाने खाना मुनइम खां की सेना के अग्र भाग का सरदार था और उसी युद्ध में मारा गया। उसने निवेदन किया कि, 'मैं मीर्जा के साथ जाऊँगा।" हजरत पादशाह ने कहा कि, 'तू धन्य है।" उन्होंने आदेश दिया कि, "मीर्ज़ा की मक्का की यात्रा हेतु जो असबाब हमने पृथक् किया है वह लाया (१६०) जाय और चिलमा कोका को सौंप दिया जाय।" मीर्जा ने मक्कये मुअज्जमा की ओर प्रस्थान कर दिया और हज़रत पादशाह काबुल की ओर चल दिये। अभागा बेग मुलूक कुछ मंजिल तक मीर्ज़ा के साथ गया। बाद में आज्ञा बिना वापस चला आया। हज़रत पादशाह इस बात से अत्यधिक रुष्ट हुए। उसने मीर्ज़ा के प्रति जो विश्वासघात किया उसके कारण यद्यपि वह अत्यधिक विश्वास-पात्र था किन्तु सभी खास व आम की घृणा का पात्र बन गया। यह शेर उसकी दशा के अनुकूल लिखा गया —

शेर

> 'हम भली भांति जानते हैं कि माशूका की प्रथा विश्वासघात करना है,
> माशूकों में निष्ठा का गुण नहीं, यह हमें खूब ज्ञात है।[1]'

मुल्ला अली को दंड

नीलाब[2] नदी के हिन्द की ओर के तट से १२ प्यादे करावलों द्वारा बन्दी बना कर लाये गए। हज़रत पादशाह ने आदेश दिया कि, "नदी के उस ओर लाओ ताकि ठीक से छानबीन उपरान्त उन्हें मुक्त किया जा सके।" वे मुल्ला अब्दुल बाकी सद्र तुर्किस्तानी के भाई मुल्ला अली को सौंप दिए गए। जब लश्कर पार करने लगा तो वह अकेला और ये १२ व्यक्ति रह गए। उसने भय के कारण सभी की हत्या करा दी और उनके सिर तबरा[3] में डाल कर दरबार में पहुँचा।

१ डा० बनारसी प्रसाद ने "दूसरे दिन चिलमा ... हमें खूब ज्ञात है" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।
२ प्रकाशित पुस्तक में 'सैनाब', डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में 'नीलाब' (पृ० १४३), यही शुद्ध है।
३ तोबड़ा अथवा थैला।

हजरत पादशाह को इस बात का पता चल गया। वे उससे तथा मौलाना अब्दुल बाकी से अत्यधिक (१६१) रुष्ट हुए। जब उन्हें ज्ञात हो गया कि वह कितना निष्ठुर है तो आदेश दिया कि, "उस तारीख से लश्कर की जल्लादी उसके सिपुर्द कर दी जाये।" कुछ समय उपरान्त इस प्रकार की निष्ठुरता के कारण वह हिन्दुस्तान में उस दुर्दशा को प्राप्त हो गया कि उस खाने की रोटी तथा पहिनने को वस्त्र प्राप्त न होते थे।[1] वह देखने में फिरंगी के समान था। उसकी आँखें नीली एवं मूँछ भूरी थी।

बिक्राम के किले का पूरा होना

जब हजरत पादशाह पिशूर, जिसे बिकराम का किला कहा जाता है, पहुँचे तो पहलवान दोस्त मीर बर को आदेश हुआ कि अमीरों को मोर्चे बाँट दिये जायें और किले की मरम्मत की जाय। कई दिन तक वे किले को घेरे रहे। क्योंकि कुछ लोगों के मोर्चे अपूर्ण रह गए थे, और हवा गरम हो गई थी अतः तरदी बेग अतावा एवं मुनइम बेग को शाहजादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्जा की सेवा में किले को पूरा कराने के उद्देश्य से छोड़ दिया और उसे इस्कन्दर खाँ कज़ाक की जागीर में दे दिया। किले के पूरा होने के समय तक (खाद्य सामग्री का) भंडार भी एकत्र हो गया।

हुमायूं का जलालाबाद पहुँचना

दो दिन उपरान्त हजरत पादशाह जू-शाही नामक किले पर, जिसे आजकल जलालाबाद कहते हैं, पहुँचे। मुनइम बेग ने इस किले का निर्माण कराया था। कासिम अरसलान ने इस घटना की तारीख "बानीये ऊ मुनइम खाँ"[2] के अक्षरों से निकाली। जब मुनइम खाँ ने १० वर्ष उपरान्त जौनपुर का पुल तैयार कराया तो इसी कासिम अरसलान ने आगरा में पुल की तारीख 'बानीये ईं मुनइम खाँ"[3] के अक्षरों से निकाली। गनी बेग वल्द मुनइम बेग ने उचित रूप से आतिथ्य किया। क्योंकि वह उसके पिता की जागीर थी अतः उसने मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय किले से आधे कुरोह पर नदी तट पर हजरत पादशाह के लिए स्नान का स्थान तैयार कराया था। मुहिब अली एवं (१६२) नासिर अली, जो इससे पूर्व मीर्जा हिन्दाल के सेवक थे, हजरत पादशाह की सेवा में थे[4]।

बायजीद का काबुल से बरफ लेकर जलालाबाद पहुँचना

ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद का सेवक बायजीद ख्वाजा का प्रार्थना पत्र लेकर काबुल से पहुँचा। उसके साथ एक गधे के बोझ के बराबर अस्तरकी यख[5], एक गधे के बोझ के बराबर दाऊचा[6],

१ मूल में यह वाक्य स्पष्ट नहीं।

२ "उसका निर्माता मुनइम खाँ", इससे ९२१ निकलते हैं जो अशुद्ध है।

३ 'इसका निर्माता मुनइम खाँ", इससे ९७८ निकलते हैं।

४ डा० बनारसी प्रसाद ने "जब हजरत पादशाह पिशूर ... की सेवा में थे" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।

५ एक प्रकार की बरफ।

६ दाऊचा का अर्थ स्पष्ट नहीं।

रीवाज[1], नीबू जल एवं मिश्री[2] इस आशय से थी कि जहां कहीं भी वह हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित हो, शरबत तैयार कर सके। हजरत पादशाह ने बायजीद को दूर से पहिचान लिया और नासिर अली से कहा कि, "जा कर देखो खच्चरों पर क्या है ?" उसने कहा कि, "एक पर यख है।" हजरत पादशाह ने इतना सुनकर दूसरे खच्चर के विषय में पूछने की प्रतीक्षा न की। वे बूजकदा अरगून घोड़े पर, जो मीर्जा कामरान से उस युद्ध में प्राप्त हुआ था जिसमें मीर्जा कामरान ने किला बन्द कर लिया था, सवार थे। वे उसे बढ़ा कर आगे आये और प्रसन्नता प्रकट की। बायज़ीद ने भी चरणों के चुम्बन का सम्मान प्राप्त करके ख्वाजा का प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया[3]। प्रार्थना-पत्र में लिखा था कि 'जब हजरत पादशाह काबुल में पधारें तो उनके निकटवर्तियों को भोजन कराना मेरे लिए आवश्यक है। उरता बाग अथवा अरक अथवा दास के घर जहां कहीं भी आदेश हो, भोजन तैयार कराया जाय।" हजरत पादशाह ने कहा, 'ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद हमारे दास के समान है। हम उनके घर में उतरेंगे[4]। किन्तु काबुल की इस समय क्या दशा है ?" बायजीद ने निवेदन किया कि, "बागे शहर आरा में एक एक गुल प्यादा[5] खिल चुका है।" हजरत पादशाह ने कहा कि, 'इस दशा में उरता बाग में भोजन की व्यवस्था की जाय। तू साथ रह। प्रार्थना-पत्र का उत्तर लिख कर देता हूँ।" आदेश हुआ कि, 'यख के खच्चर को, जहां स्नान कर रहा हूँ, ले आ।' बायजीद एवं मुहम्मद हुसेन ने सन्दूक का ढक्कन खोला। क्योंकि सन्दूक में नमदा लगा था और भूसी पड़ी हुई थी, अतः (१६३) जलालाबाद की गरमी के बावजूद यख पर कोई प्रभाव न पड़ा था। हजरत पादशाह ने उसमें से एक टुकड़ा बरफ लेकर अपने शुभ हाथों से जल में डाल कर धोया और खाया तथा प्रसन्नता प्रकट की। आबदारों ने भी एक टुकड़ा तोड़ कर खासे के कूजे[6] में डाला। इसी बीच में बहादुर सुल्तान वल्द हैदर सुल्तान शैबानी, मीर्जा अब्दुल्लाह मुग़ल मनइम बेग का दामाद तथा कम्बर अली वल्द सुल्तान उवैस कोलाबी आ गए। हजरत पादशाह ने मुहम्मद हुसेन नाजिर से कहा कि, "अमीरों से कह दो कि यख का उलुश तुम्हें भी देना चाहता हूँ। क्योंकि हवा गरम है अतः यख का जमा रहना परमावश्यक है। मार्ग में जब यख का जल पियूंगा तो तुम लोगों को भी उलुश

१ देखिये अनुवाद पूर्व पृ० ५६६।

२ डा० बनारसी प्रसाद ने इस वाक्य का अनुवाद इस प्रकार किया है —"He also brought a camel-load of ice, and another of dry-fruits, lemon-water and sugar candy, so that wherever he might have an audience of the Emperor the ingredients for the syrup may be at hand" (पृ० १४३)।

३ डा० बनारसी प्रसाद ने "हजरत पादशाह ने बायजीद को दूर से पहिचान लिया ... "प्रस्तुत किया" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।

४ "ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद हमचू गुलामे मा अस्त कि दर मंजिले ऊ फुरूद मी तवानेम आमद, अम्मा चे हाल काबुल अस्त"—डा० बनारसी प्रसाद ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है —His Majesty said, "Khwajah Jalaluddin is like our servant, How can we stay at his place ? But what about Kabul ?" (पृ० १४०)।

५ सम्भवतः किसी प्रकार का गुलाब। गुलप्यादः एक प्रकार का जंगली फूल भी होता है जो छोटे-छोटे पौधों पर खिलता है।

६ सुराही।

प्रदान करूँगा।" मुहम्मद हुसेन को आदेश दिया कि "दाऊचा, रीवाज, नीबू जल एवं मिश्री में से उन्हें भी उलुग भेजो।" बायज़ीद को आदेश दिया कि, "सन्दूक का ढक्कन बन्द करके खच्चर पर लदवाकर, अपने साथ रख और हमारे साथ रह कारण कि तुझसे हम काबुल, बल्ख, गजनी, कन्धार एवं बैरम खाँ इत्यादि के समाचार पूछेंगे।" हज़रत पादशाह स्वयं स्नान करने लगे। बायज़ीद उन लोगों के पास, जिनका उल्लेख ऊपर हो चुका है, पहुँच गया। क्योंकि सब लोगों का उसके प्रति स्नेह था अतः वे उससे समाचार पूछते रहे।

हुमायूं का बागे वफ़ा में पहुँचना

हज़रत पादशाह सायंकाल एवं सोने के समय के मध्य में सवार होकर अदीनापुर, जो नेकनहार[1] के तूमान से सम्बन्धित है और जहाँ हज़रत फ़िरदौस मकानी बाबर पादशाह ने एक बाग लगवाकर उसका नाम बागे वफ़ा[2] रखा था और जो अब तक स्वर्ग के उद्यान के समान है, की ओर रवाना हुए। बायज़ीद को इस आशय से बुलाया कि उस बाग तक उससे बल्ख के हाकिम पीर (१६४) मुहम्मद, मीर्ज़ा खिज्र खाँ हज़ारा, नव्वाब बैरम खाँ, कन्धार, समरकन्द, बुखारा इत्यादि के समाचार पूछते रहें। बायज़ीद को इस विषय में जो कुछ ज्ञात था वह उसने बताया। रात्रि के अंतिम भाग में वे बाग में उतरे और आदेश दिया कि, 'कहीं न जाना। हम ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद का उत्तर लिखेंगे" और स्वयं सोने के लिए चल दिए। जागने के उपरान्त प्रातःकाल की नमाज पढ़कर वे पुनः सो गए। एक पहर दिन उपरान्त जाग कर ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद के पत्र का उत्तर लिखा और घोड़ा तथा सरोपा बायज़ीद को प्रदान किया[3]। मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय तक बायज़ीद राज्य के उच्च पदाधिकारियों के पत्रों की प्रतीक्षा में लश्कर में ठहरा रहा। वह सबसे उत्तर लेकर सायंकाल की नमाज के समय काबुल की ओर रवाना हो गया।

१ बाबर ने लिखा है —"काबुल के पूर्व में लमगानात हैं जिनमें ५ तूमान तथा २ बुलूक कृषि-योग्य भूमि के हैं। सबसे बड़ा तूमान नीनगनहार है। कुछ इतिहासों में इसे 'नगरहार' भी लिखा गया है। इसके दारोगा का निवास स्थान अदीनापुर में है जो काबुल से पूर्व की ओर लगभग १३ यीगाच (८२ मील) पर है"। (**बाबर नामा, पृ० १८**)।

२ बाबर ने लिखा है: "९१४ हि० (१५०८-९ ई०) में मैंने एक चार बाग का निर्माण कराया जो बागे वफ़ा के नाम से प्रसिद्ध है। यह एक पुश्ते पर अदीनापुर के किले के समक्ष दक्षिण की ओर है। इसके मध्य में सुर्खरूद है। यहाँ भी संतरे, चकोतरे तथा अनार बड़ी अधिक संख्या में होते हैं। जिस वर्ष मैंने पहाड़ खाँ को परास्त करके लाहौर तथा दीपालपुर को विजय किया तो मैंने केले लाकर यहाँ लगवाये। वे भली-भाँति उन्नति कर गये। इस वर्ष के पूर्व मैंने यहाँ गन्ने लगवाये थे। वे भी बड़े अच्छे हो गये। उनमें से कुछ बुखारा तथा बदख्शाँ भेज दिये गये थे। बाग ऊँचाई पर स्थित है और निकट ही जल बहता है तथा हलकी ठंड पड़ती है। बाग के मध्य में एक छोटा सा पुश्ता है। बाग के बीच में इसी पुश्ते से होकर एक पनचक्की के योग्य जल धारा बहती है। उद्यान के मध्य में जो चार चमन हैं, वे इसी पुश्ते के ऊपर स्थित हैं। बाग के दक्षिण-पश्चिम में एक हौज है जो १०×१० के आयतन में है। इसके चारों ओर संतरे के और कुछ अनार के वृक्ष हैं। यह पूरा बाग एक तिपत्ती के आकार के घास के चौरस मैदान से घिरा हुआ है। यह उद्यान का सबसे अधिक उत्तम भाग है। जब संतरे पक जाते हैं तो यहाँ का दृश्य बड़ा ही रमणीक हो जाता है। निःसन्देह यह बाग बड़े ही उत्तम स्थान पर लगा हुआ है।" (**बाबर नामा, पृ० १९**)।

३ डा० बनारसी प्रसाद ने "तू साथ रह ... बायज़ीद को प्रदान किया" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।

हुमायूं का उरता बाग में पहुँचना

१५ शाबान ९५९ हि० (६ अगस्त १५५२ ई०) को जब कि काबुल वाग ने अभी शब बरात के दीप भी न जलाये थे कि बायजीद ख्वाजा की सेवा में (काबुल) पहुँच गया। सभी पुराने सैनिकों ने उसकी तीव्र गति से यात्रा को पसन्द किया। अदीनापुर एवं काबुल के बीच के मार्ग में भी खतरा था और वह अकेला इस मार्ग की यात्रा करके आया था। बायजीद ने, मीर सामान होने के कारण हजरत पादशाह ने जिस प्रकार आदेश दिया था भोजन सामग्री उरता बाग में ले जाकर कबाबे शश लमा एवं मेवे कमाज[1] इत्यादि की व्यवस्था की। रात्रि के उपरान्त हजरत पादशाह ने मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज के समय जब उरता बाग में पड़ाव किया तो जो भोजन तैयार किया गया था प्रस्तुत किया गया। हजरत पादशाह ने बायजीद को आदेश दिया कि, 'खासे का दस्तरख्वान और कबाब अलग कर। खासे के लिए कबरगा का एक कूल[2] पृथक् करके शेष ख्वाजा अम्बर के सिपुर्द कर दिया और आदेश दिया कि बेगमों के लिए ले जा। उसने आदेश का पालन किया। हजरत (१६५) पादशाह ने कूल कबरगा एवं मेवे कमाज में से थोड़ा सा खाया। इस स्थान पर भी बायजीद को सरोपा प्रदान हुआ।

अकबर को गज़नी भेजना

कुछ दिन उपरान्त शाहजादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा खाना एवं लश्कर सहित, जो पीछे रह गया था, पधारे[3]। कुछ दिन उपरान्त ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को मीर्ज़ा का अतालीग[4] बना कर गजनी भेज दिया। मीर्ज़ा हिन्दाल के समस्त सेवकों को आदेश हुआ कि मीर्ज़ा की सेवा में रहे। वे रवाना हो गए। इससे कुछ पूर्व हजरत पादशाह ने मुनइम बेग को मीर्ज़ा का अतालीग नियुक्त किया था किन्तु उस दरबार के कुछ कार्यों के कारण रोक दिया।

हुमायू का कन्धार की ओर प्रस्थान

९५९ हि०[5] (१५५२ ई०) के उसी जाड़े में हजरत पादशाह चोर्क, तरवार एवं गजनी की ओर से कन्धार की ओर रवाना हुए। जिस रात्रि में लश्कर खरवार में पड़ाव किए हुए था इतनी बरफ पड़ी और इतना जाड़ा हुआ कि उसका उल्लेख सम्भव नहीं। काबुल एवं गज़नी के राज्य का सबसे अधिक ठंडा भाग खरवार है। इसके बावजूद मुनइम बेग ने उस दिन खेमे में तीन बार बाल कटवाये।

हुजवेरी के मज़ार के दर्शन

दूसरे दिन जब वे शनीर नामक स्थान पर पहुँचे तो नव्वाब जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा, ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद, गज़नी के प्रतिष्ठित लोगों, सुल्तान महमूद गाज़ी के रौज़े के सेवकों, (१६६) लश्कर वालों, मलिकों एवं रईसों के साथ हजरत पादशाह के चरणों का चुम्बन करके

१ विभिन्न प्रकार के भोजन। निश्चित रूप से इनका कोई ज्ञान प्राप्त नहीं हो सका।
२ इसका अर्थ स्पष्ट नहीं।
३ डा० बनारसी प्रसाद ने "अभी तक पुराने सैनिकों ने उसकी तीव्र गति से यात्रा ...जो पीछे रह गये थे, पधारे" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।
४ अतालीक, गुरु जो हर प्रकार से शाहज़ादे की शिक्षा-दीक्षा का ज़िम्मेदार होता था।
५ अकबर नामा के अनुसार '९६१ हि० की शीत ऋतु में'।

सम्मानित हुए। हजरत पादशाह वहाँ से मीर्जा ख्वाजा उस्मान मरवा वादी[१], 'कश्फुल महजूब' के लेखक, के मजार के तवाफ हेतु तशरीफ ले गए। लश्कर वाले किले तथा हुजवेरी के मजार के मध्य में उतर पडे। दूसरे दिन वहा से प्रस्थान करके वे मनीकर में रईस फख्रुद्दीन वल्द रईस शम्सुद्दीन के घर में उतरे। एक दो दिन वहाँ ठहर कर तीसरे दिन कन्धार के लिए रवाना हुए।

शाह अबुल मआली से वार्तालाप

जिस समय हजरत पादशाह रईस फख्रुद्दीन के घर से प्रस्थान करना चाहते थे तो कुछ समय के लिए ठहर गए और शाह अबुल मआली के साथ वार्तालाप में समय व्यतीत किया। शाहम वल्द हैदर बेग सारबान था, जो हजरत पादशाह का कूर्ची था, आदेश हुआ कि यदि कोई बात हो तो तू मत सुन। उस ओर दीवान वाले समझेंगे कि तू सेवा हेतु खड़ा है। इसी बीच मे हजरत पादशाह ने कोई बात कही। शाह अबुल मआली ने निवेदन किया कि, शाहम यह बात सुन रहा है।' हजरत पादशाह ने पूछा, "शाहम! तू जानता है कि हमने क्या कहा?" उसने उत्तर दिया

मिसरा

'वह क्या जानें जो ऊँट चराता हो।

हुमायूं की बाबा पलास से भेंट

उस दिन से शाहम की सूझ-बूझ की प्रसिद्धि हो गई। हजरत पादशाह बाबा पलास से भेंट करना नहीं चाहते थे। अत उन्होंने अली दोस्त ईशक आगा को आदेश दिया कि, किसी (१६७) ऐसे मार्ग से ले चल जो कि बाबा के घर के समीप न हो।' उसने बाबा के घर के मुहल्ले मे एक दूर का मार्ग निकाला। बाबा के मुरीदो को पता चल गया। वे बाबा को लेकर उस द्वार के निकट, जहाँ से कन्धार की ओर मार्ग जाता था पहुँच गए। जब हजरत पादशाह बाबा के पास एक बाण के मार की दूरी तक पहुँच गए तो मार्ग के सीधा होने के कारण हजरत पादशाह की दृष्टि बाबा पर पड गई। वे घोडे से उतर पडे और डडा लेकर बाबा के समक्ष पहुँचे। मुरीदो ने बाबा को सूचना दे दी कि, "हजरत पादशाह तशरीफ ला रहे है।' बाबा ने कहा, हुमायूँ (स्वागतम्) शाह! तूने हाजी मुहम्मद की, फिर बाबा ने तत्काल कहा कि इस कारण कि उसने अपराध किया था, फिर कहा कि, 'बडा अच्छा किया जो हत्या करा दी। अब इस समय तू क्या कन्धार जा रहा है?" हजरत पादशाह ने कहा, जी हाँ, बाबा।' बाबा ने कहा 'जा! ईश्वर तेरी इच्छा पूरी करे। हजरत पादशाह बडे प्रसन्न हुए और कुछ मिस्काल बाबा को भेंट करके द्वार से निकल और सवार होकर कन्धार की ओर रवाना हो गए। (हजरत पादशाह ने) हजरत शाहजादये आलीमयान को ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद एव गजनी वालो के साथ मनीकर के आधे कुरोह से विदा कर दिया। उस दिन थोडा सा हिमपात भी हुआ।

चारपा के हजारा लोगो से युद्ध की तैयारी

हजरत पादशाह ने उस वर्ष अली कुली अन्दराबी को काबुल का हाकिम बना कर विदा कर दिया था। ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को जो गिरदीज का जागीरदार था, बगश एव नग्ज

१ हुजवेरी।

की मालगुजारी वसूल करने के लिए इस आशय से भेजा गया कि वह इस धन को वसूल करके मीर्ज़ा के सिपाहियों को पहुँचा दे। उसने अल्प समय में उन दो महालों की तहसील को वे बाक कर दिया। जब वह गिरदीज लौटा तो गजनी वालो के प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुए कि "चारपा के हजारा (१६८) लोगों ने विद्रोह कर दिया है और जागीरदार को मालगुजारी अदा करने में टाल-मटोल कर रहे हैं। उनके खरगाह तासान एवं कलगाज नामक स्थानों के मध्य में हैं। यह स्थान गजनी के किले से चार-पाँच कुरोह पर होगा। उस समूह के कलांतर[1] मस्ती, कूज बेग तथा जती थे। एक बार जब नासिर मीर्ज़ा गजनी का हाकिम था तो उसने इस समूह पर आक्रमण किया था। इसके उपरान्त कोई भी इस समूह का कुछ नहीं बिगाड़ सका। उन सबके ५०० घर से अधिक नहीं हैं किन्तु वे मीर्ज़ा मुराद से सम्बन्धित १०,००० घरों से रोजाना मुकाबला एवं युद्ध करते रहते हैं और विजय प्राप्त कर लेते हैं।" ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद ने गजनी वालों एवं मीर्ज़ा के उच्च पदाधिकारियों के प्रार्थना पत्र के उत्तर में लिखा कि, 'हम सूर्योदय से पूर्व उस पुश्ते के पीछे में, जो तासान एवं रामक नामक स्थान के मध्य में स्थित है पहुँचेंगे और वहाँ छिपे रहेंगे। तुम लोग गजनी के बाहरी एवं भीतरी लश्कर सहित निकल कर नक्कारे एवं शाहजादे की पताकाओं को भी साथ लाओ।'

ख्वाजा जलालुद्दीन का पुश्ते पर पहुँचना

ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद प्रथम रात्रि में यूनान से, जो गिरदीज के अधीन है, निश्चित पुश्ते तक अत्यधिक दूरी के बावजूद रवाना हुआ। आधी रात्रि के समय कलाल्कू नामक स्थान पर जो उस समय गिरदीज के मलिक कोचक नजी के पिता मलिक अली के अधीन था, पहुँच गया। मलिक कोचक अली तथा मलिक बन्द अली दोनों भाई मार्ग दर्शक बने। प्रातःकाल उस पुश्ते के पीछे, जिसका ऊपर उल्लेख हो चुका है पहुँच गए। पर्वत की ऊँचाई में घोड़ों से उतर कर हजारा लोगों के खरगाह की करावली एवं गजनी के लश्कर, पताका तथा नक्कारे की प्रतीक्षा करने लगे।

हजारा लोगों की पराजय

(१६९) जब दो-तीन घड़ी दिन चढ़ गया तो गजनी के अमीरों ने पहुँच कर वहीं पताकायें खोल दीं और नक्कारा बजाते हुए आने लगे। हजारा लोग नक्कारे की आवाज से अवगत हो गए कि कोई सेना उनपर आक्रमण कर रही है। उन्हें ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद एवं उन लोगों की, जो पर्वत के पीछे घात लगा कर बैठे थे, सूचना न थी उन्होंने अपने असबाब, मवेशी इत्यादि सरे देह, करावाग एवं किलये संगीन की ओर भेज दिए और स्वयं जरीदा[2] शीघ्रातिशीघ्र गजनी के लश्कर के विरुद्ध रवाना हुए। ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद हजारा लोगों के पीछे की ओर पहुँच गया। हजारा लोगों को जब पता चला कि दोनों ओर से लश्कर आ गया है तो वे अपने असबाब एवं मवेशियों की ओर चल दिए। गजनी के अमीर तथा ख्वाजा एक दूसरे से मिल गए और हजारा लोगों से युद्ध होने

१ सरदार।
२ बिना किसी असबाब के प्रस्थान करने से तात्पर्य है।

लगा। गजनी के जो प्यादे आये थे उनमें से कुछ को एक एक खरगाह प्राप्त हो गया।[१] उनका थोड़ा सा अनाज एवं कुछ दुर्बल मवेशी, जो वे अपने साथ न ले जा सकते थे, रह गए थे। उन्हें लूट लिया गया। मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय तक कई बार हजारा लोगों ने उन्हें पराजित किया और कई बार अन्य सैनिकों ने हजारा लोगों को पराजित किया। दोनों ओर से आदमियों एवं घोड़ों की बहुत बड़ी संख्या मारी गई। जब रात हो गई तो हजारा लोग अपने असबाब इत्यादि की ओर चले गए। सिपाही लोग गजनी पहुँच गए। शाहजादये आलमियान गजनी के अरक में ठहर गए।[२]

हुमायूं द्वारा दरवेशों का आदर सम्मान

जब हजरत पादशाह कन्धार के समीप एक मंजिल पर पहुँच गए तो बैरम खां ने कन्धार के लश्कर सहित पहुँच कर हजरत पादशाह के चरणों का चुम्बन किया। हजरत पादशाह कन्धार के अरक में ठहर गए। उन्हीं दिनों में मौलाना जैनुद्दीन महमूद कमानगर बदायूनी[३] ने, जो अपने युग के गौस[४] थे, हजरत पादशाह से भेंट की। हजरत पादशाह ने दरवेशों के प्रति निष्ठा के कारण जिस सभा में हजरत मुहम्मद के नाम पर भोजन दिया जा रहा था उनके हाथ पर जल डाला। कई (१७०) बार हजरत पादशाह बागे गलचक तथा बाबा हसन अब्दाल की सैर के लिए तशरीफ ले गए।

मुनइम बेग को कन्धार प्राप्त होना

हजरत पादशाह ने ९६० हि०[५] (१५५३ ई०) की पूरी शीत ऋतु शान्तिपूर्वक एवं आनन्द-मंगल मनाते हुए व्यतीत की। बैरम खां ने जो घोड़े एवं असबाब हजरत पादशाह के योग्य थे पेशकश के रूप में प्रस्तुत किए। हजरत पादशाह ने कन्धार को मुनइम बेग वल्द मीरम बेग को प्रदान किया। मीरम बेग जिस समय मीर्ज़ा अस्करी का अतका था, कन्धार को अपने अधीन रख चुका था। जब वह मीर्ज़ा के साथ काबुल आ रहा था, तो हजारा लोगों ने कन्धार एवं गजनी के मध्य में उसका मार्ग रोक लिया। मीरम ने यह देख कर कि दोनों नहीं निकल सकते मीर्ज़ा से कहा कि, "मैं युद्ध करता हूँ, आप निकल जाइये।' मीर्ज़ा निकल कर गजनी पहुँचा। मीरम उस युद्ध में मारा गया।

कन्धार को बैरम के अधीन रहने देना

मुनइम बेग ने अभिवादन करके निवेदन किया कि "लोग सोचेंगे कि बैरम खां कन्धार से नहीं निकल रहा था। हजरत पादशाह के आगमन का यही उद्देश्य था कि किसी अन्य को उसके

१ "अज़ प्यादाहाय गज़नी आ मेरदुम आमदा बूदन्द कि हर चन्द कस रा यक खरगाह रसीद"—इस वाक्य का तात्पर्य स्पष्ट नहीं।
२ डा० बनारसी प्रसाद ने "लश्कर वाले किले तथा...गजनी के अरक में ठहर गए" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।
३ डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार 'बदायूं के' (पृ० १४५)।
४ वह सूफी जो वली से बड़ा हो। साधारणतः प्रतिष्ठित सूफी 'गौस' कहलाते थे।
५ अकबर नामा के अनुसार ९६१ हि० (१५५४ ई०)।

स्थान पर नियुक्त कर दे और उसे काबुल ले जायें। क्योंकि यह निश्चय हो चुका है कि ९६० (१७१) हि०[1] की शीत ऋतु में हज़रत पादशाह हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करेंगे और बैरम खां साथ जायगा अत जिस समय हज़रत पादशाह हिन्द के आक्रमण की तैयारी हेतु काबुल पहुँचे[2] और बैरम खां काबुल जाय तो उस समय मुझे अथवा किसी अन्य को नियुक्त कर दें। राज्य के हित मे यही उचित ज्ञात होता है।" मुनइम बेग यह भी जानता था कि, 'कन्धार का कोई ठीक नहीं। किज़िलबाश कन्धार पर अधिकार जमा ही लेंगे। हज़रत पादशाह भी अपनी भेंट के समय उसे शाह को प्रदान कर चुके हैं।' अत वह कन्धार में न रहना चाहता था। उसने बैरम खां को भी आभारी बना कर खूब घोड़े एवं असबाब वसूल किये।

हुमायूं का कन्धार से वापस होना

हज़रत पादशाह को यह सलाह पसन्द आ गई। नग्ज़ की मंज़िल तक बैरम खां विजयी रिकाब के साथ साथ गया। दो तीन दिन तक वहां पड़ाव हुआ। कुछ हज़ारा लोग, जो इन दिनों शाही लश्कर में चोरी के लिए आये थे, बन्दी बना लिए गए थे। कूच के दिन उनकी हत्या करा दी गई। हज़रत पादशाह ने ज़मीनदावर को तरदी बेग अताबा से लेकर बहादुर सुल्तान शैबानी को प्रदान कर दिया। नव्वाब बैरम खां तथा बहादुर सुल्तान शैबानी को क्रमश कन्धार एवं ज़मीनदावर की ओर विदा कर दिया और स्वयं काबुल की ओर रवाना हुए।

अकबर की ओर से हुमायूं को मेवों का उपहार

ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद के सेवक बायज़ीद द्वारा शाहज़ादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा ने कुछ ककनों[3] में हज़रत पादशाह के लिए सेब तथा अंगूर भेजे थे। बायज़ीद ग़ज़नी से किलये सगीन पहुँचा। दूसरे दिन किलये सगीन से शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करके उसने न ज से दो-तीन कुरोह पर हज़रत पादशाह के चरणों के चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया और मेवे प्रस्तुत किए। हज़रत पादशाह ने रिकाबी मंगवाकर घोड़े पर उन मेवों को खाया और शाह अबुल मआली को भी उलुश प्रदान किया।

बैरम खां को मेवा एवं ज्योतिष सम्बन्धी ग्रंथ भेजना

इसी बीच हाकिम हीनी[4] ने, जो कि दारोगा था, निवेदन किया कि 'बैरम खां को खगोल (१७२) विद्या सम्बन्धी ग्रंथ का एक खंड प्रदान करने का आदेश हुआ था। विदा होते समय स्मरण न रहा।" हज़रत पादशाह ने कहा, "ले आ।" उसे किताबखाने का ऊंट शिविर में मिला और वह सन्दूक से पुस्तक निकाल कर लाया। हज़रत पादशाह ने घोड़े पर बैठे-बैठे १२ पंक्तियां का एक पत्र उस खंड के पीछे लिखा और आदेश दिया कि, 'हम इस मेवे में से भी बैरम खां को उलुश के रूप में भेजते हैं।" बायज़ीद को आदेश दिया कि, क्योंकि तू मेवा लाया है अत मेवा

१ अकबर नामा के अनुसार ज़िलहिज्जा ९६१ हि० के मध्य (लगभग १२ नवम्बर १५५४ ई०) में हुमायूं हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुआ। (देखिये अनुवाद पूर्व पृ० ३१९)

२ 'काबुल से प्रस्थान करें' होना चाहिये।

३ ककना :—इस शब्द का अर्थ ज्ञात न हो सका।

४ डा० बनारसी प्रसाद के अनुवाद में 'जौनी'।

तथा पुस्तक बैरम खा को पहुँचा दे।" बाकी परवानची, जो पूर्व मे स्वर्गीय नव्वाब मीर्जा हिन्दाल का परवानची था, निकट खडा था। हजरत पादशाह ने उसे आदेश दिया कि, "बायजीद के साथ जाकर मीर्जा खिज्र खा हजारा तथा मुनइम बेग को जो सेना के पीछे के भाग में है, परवाने पहुँचा दे कि वे विश्वस्त आदमी उसके[1] साथ कर दे। ताकि वे उसे बैरम खा के पास पहुँचा कर लश्कर मे वापस ले आयें।" बायजीद को विदा कर दिया गया। खिज्र खा एव मुनइम बेग ने आदेशानुसार मीर्जा खिज्र खा के उगूलग[2] मीर अहमद को मार्ग-दर्शक के रूप मे साथ कर दिया। बायजीद शीघ्रातिशीघ्र बैरम खा के पीछे रवाना हुआ। मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय क्ये शादी एव ताजी मे बैरम खा की सेना के पीछे के भाग वालो के पास पहुँच गया। उसने शाह वीरदी बेग को, जो उस दस्ते का सरदार था, सूचना कराई कि 'हजरत पादशाह का पत्र एव मवे का उलुश लाया हूँ। मेरे घोड़े थक गए हैं। खान को सूचना कर दो कि वह ठहर जाय अथवा धीरे धीरे प्रस्थान करे?"

बायजीद की बैरम खा से भेंट

बायजीद जब खान की ओर पहुँचा तो वह कन्धार की ओर चल चुका था। तदुपरान्त वापस हुआ। बायजीद खान की ओर रवाना हुआ। बायजीद घोडे से उतर पडा। बैरम खा, बहादुर सुल्तान के साथ सवार होकर आ रहा था। बायजीद ठहर गया। खान ने कहा 'तू क्या नही आ रहा है?" बायजीद ने निवेदन किया कि, "हजरत पादशाह का पत्र एव मेवे का उलुश मेरे पास है।" (१७३) बैरम खा घोडे से उतर पडा। बहादुर सुल्तान तथा समस्त सैनिक घोडे से उतर पडे। बैरम खा ने बायजीद से कहा "तूने सूचना क्यो न कराई कि तेरे पास हजरत पादशाह का पत्र है?" उसने उत्तर दिया कि, मैंने शाह बीरदी से कह दिया था। सम्भवत उसने सूचना न दी होगी।' तदुपरान्त उसने पत्र तथा उलुश लिया और हजरत पादशाह जिस दिशा मे थे, उस दिशा मे तस्लीमे करके, सवार हो गया। बायजीद के घोडे थक गए थे, अत वह वहा से न लौट सका। बैरम खा भी चाहता था कि वह बायजीद को कन्धार ले जाकर विदा करे। उस रात्रि मे हजारा लोगो के रात्रि के छापे के भय से दोना पर्वतो के मध्य में शिविर के बाहर रहा। दूसरे दिन प्रात काल वहाँ से एक दस्ते को प्रतिरक्षा हेतु पीछे छोड कर कन्धार की ओर रवाना हुआ।[3]

अब्दालियो पर आक्रमण

जब वह गुम्बदे सरजाज[4] पहुँचा तो शाह[5] का राजदूत उलुग बेग वल्द बुलबुल सुल्तान भी पहुँच गया। उसके साथ यज्द एव काशान इत्यादि उत्तम के कपडा के थान थे, जिन्हे शाह तहमास्प ने हजरत पादशाह के लिये भेजा था, शाह ने बैरम खा के लिये भी घोडा एव सरोपा भेजा था। मार्ग मे खतरे के कारण, बैरम खा ने राजदूत को घोडे एव सरोपा सहित लौटा कर कलात में किलये चश्मा के समक्ष, जिसे नहर कलात[6] कहते हैं, ठहराया, सूचना प्राप्त हुई कि अब्दाली

१ बायजीद के।
२ उगूलग —इस शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं।
३ डा० बनारसी प्रसाद ने "हजरत पादशाह ने उसे आदेश दिया रवाना हुआ।" तक का अनुवाद प्रकाशित नहीं किया है।
४ डा० बनारसी प्रसाद के अनुसार 'सरवार', किन्तु हस्तलिपि में 'सरदाज' ही है।
५ शाह तहमास्प।
६ 'कलात का कोष'।

अफगान निकट ही पडाव किए हैं। बहादुर सुल्तान के अधीन बन्दूक वालो को करके, हबीब अली, शाह कुली महरम, बाबा जम्बूर, हाजी करा, तीमूर यक्का, हुसैन कुली बेग वल्द वली बेग जुलकदर, जिसकी उस समय अवस्था १०-११ वर्ष की थी, को अब्दालियो पर आक्रमण करने के लिये भेज दिया।

बैरम खां का क़न्धार पहुँचना तथा बायजीद की वापसी

(१७४) मध्याह्नोत्तर की दूसरी नमाज के समय खान ने अपने घोडों को दाना दिलवाया। दूसरे दिन वे एक पहर दिन चढे उन कबीलो के पास पहुँच गए। बायजीद भी उस लश्कर मे था। सिपाहियों एव अफ़गानों ने बडी वीरता से युद्ध किया। अन्ततोगत्वा हज़रत पादशाह के प्रताप से बहादुर मुल्तान ने स्वय आक्रमण करके अफगानो को भगा दिया। भेडे एव अन्य मवेशी इतनी अधिक सख्या मे कलात में एकत्र हो गए कि उनमें से जितने हो सके कन्धार ले जाये गए और शेष (पशु) करगात एव हज़ारा की प्रजा, जो उस क्षेत्र में थी, ले गई। खान मुहम्मद एव अली खान, खिज्र खा के भागिनेय साथ थे। राजदूत को उन लोगो के सिपुर्द करके अजूरिस्तान एव मालिस्तान के मार्ग से विदा कर दिया। बायजीद भी खान एव बहादुर सुल्तान से विदा हुए बिना हजरत पादशाह की सेवा में चल दिया। बैरम खा एव (बहादुर सुल्तान) दूसरी रात्रि मे सोने की नमाज के पूर्व कन्धार के किले में प्रविष्ट होना चाहते थे, कारण कि सोने की नमाज के बाद की घडी के विषय में कहा जाता था कि वह अच्छी नही है।

बायजीद का नूर पहुँचना

शाह का राजदूत, खिज्र खा के भागिनेय तथा बायजीद उस रात्रि में कलात के किले मे रहे। प्रात काल वहाँ से वे अजूरिस्तान की ओर रवाना हुए। वहाँ अली खा एव खान मुहम्मद के घर थे। वे प्रात काल एक उत्तम चुलके[1] में पहुँचे जिसका नाम देगदानहा था। राजदूत को ठहरा कर दोनो हज़ारा अपने अपने घरो को चले गए। कुछ घोडे, भेडे एव कुत्ते राजदूत एव बायजीद को भी प्रदान किए। वे वहाँ से प्रस्थान करके मालिस्तान की ओर रवाना हुए। दोनों मजिलो के मध्य में एक गरम चश्मे पर, जिसे गरमावा कहते हैं, पहुँचे। जल के गरम होने के कारण उसमें बडी कठिनाई से हाथ डाला जा सकता था। दूसरे दिन उन्होने मालिस्तान में पडाव किया। वहाँ मीर्जा खिज्र खा तथा (१७५) मीर्जा सजर के घर थे। उसी समय मीर्जा खिज्र खा, जो हज़रत पादशाह से विदा होकर आया था और जिसे हज़रत पादशाह ने बूज-कदा अरगूत घोडा प्रदान कर दिया था, पहुँचा। दो-तीन दिन तक राजदूत एव इस समूह को अपना अतिथि रक्खा। घोडे, भेडें एव कुत्ते प्रदान करके विदा कर दिया। एक रात्रि पडाव करके नूर पहुँचे। वहा एक झील है जिसके चारो ओर चुलका है और उसके किनारे पर्वत से मिले हैं। गरमी मे समस्त हज़ारा लोग अपने मवेशियो एव असबाव को लेकर उस झील के चारो ओर उतर पडते हैं। उसमें एक नहर थी। राजदूत वहाँ उतर पडा।

शीत ऋतु के कारण वहाँ की जमीन में दरारें पड गई थी। उस चुलका के चारा ओर बडे बडे पर्वत थे। वहाँ से एक रात ठहर कर गजनी पहुँचा जा सकता है।[1]

बायज़ीद तथा राजदूत का हुमायूं की सेवा में पहुँचना

जब राजदूत गजनी पहुँच गया तो बायज़ीद राजदूत के पूर्व हज़रत पादशाह की सेवा मे रवाना हुआ और हज़रत पादशाह से उरता बाग में भेंट की। राजदूत ने घोडो एव पादशाही सामान के भेजे जाने के समाचार हज़रत पादशाह को पहुँचाये। जब हज़रत पादशाह को ज्ञात हुआ कि बायज़ीद कन्धार नही गया और न बैरम के घोडे एव सरोपा की चिन्ता की, तो उन्होंने उसे तत्काल घोडा एव सरोपा प्रदान किए। कुछ दिन उपरान्त राजदूत भी चरणो का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। जो घोडा एव वस्त्र लाया था, उन्हे हज़रत पादशाह की सेवा मे प्रस्तुत किया। राजदूत को उचित स्थान पर ठहरवाया गया।

हुमायूं के पुत्रो का जन्म

उस बहार एव तीर[2] मास मे हज़रत पादशाह उरता बाग में आनन्द-मगल मे समय व्यतीत करते रहे। यह ९६० हि० (१५५२–५३ ई०) वर्ष था। उस बहार में दो शाहज़ादो का जन्म (१७६) हुआ और दोनो का एक ही मास में एक—नव्वाब मुहम्मद हकीम मीर्ज़ा[3] जिसकी माता चोचक बेगम थी और दूसरा मुहम्मद फर्रुख फाल जिसकी माता का नाम खानश था जो चोचक मीर्ज़ा ख्वारज़्मी की पुत्री थी। मुहम्मद फर्रुख फाल मीर्ज़ा की उन्ही थोडे से दिना मे मृत्यु हो गई।

हुमायूं का हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान

उसी वर्ष ज़िलहिज्जा[4] मास में हज़रत पादशाह ने मीर असगर मुंशी के बाग मे, जो सियाह सग के चुलके मे मिला है और मेहतर दोस्त वल्द मेहतर कप्सा की सराय के समीप है, पडाव किया। आशूर ९६१ हि०[5] को उस बाग में आशूरे[6] के भोजन का वितरण किया गया। मुनइम बेग को काबुल का हाकिम बना कर वे स्वय हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुए।

१ डा० बनारसी प्रसाद ने "शाह का राजदूत गजनी पहुँचा जा सकता" तक का अनुवाद है प्रकाशित नहीं किया है।

२ एक ईरानी महीना जो हिन्दी हिसाब से सावन होता है।

३ उसका जन्म १५ जमादि उल अव्वल ९६१ हि० (१८ अप्रैल १५५४ ई०) को हुआ। (अकबर नामा, हिन्दी अनुवाद पूर्व पृ० ३०६)।

४ ज़िलहिज्जा ९६० हि० (नवम्बर दिसम्बर १५५३ ई०)। इसे ज़िलहिज्जा ९६१ हि० (नवम्बर दिसम्बर १५५४ ई०) होना चाहिये।

५ १० मुहर्रम ९६१ (१६ दिसम्बर १५५३ ई०)। इसे १० मुहर्रम ९६२ हि० (५ दिसम्बर १५५४ ई० होना चाहिये।

६ वह भोजन जो विशेष अवसरों पर बाँटा जाता है।

अध्याय ४

हिन्दुस्तान की विजय[1]

हज़रत पादशाह का हिन्दुस्तान पहुँचना, अधिकाश प्रदेशो की विजय एव जो लोग हज़रत पादशाह के साथ थे—शाहज़ादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा सेवको सहित, नव्वाब बैरम खा सेवको सहित, खानो, सुल्तानो, अमीरो, दीवान वालों, बख्शियो, बेगचो और यकका जवानो इत्यादि सहित, निम्नाकित ब्योरानुसार शाहज़ादे के सेवको सहित

(१) शाहज़ादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा
(२) मीर्ज़ा अबुल कासिम वल्द मीर्ज़ा कामरान
(३) ख्वाजा मुअज्ज़म, तग़ाई मीर्ज़ा जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर
(४) ख्वाजा खिज्र सुल्तान मुग़ुल
(५) इस्कन्दर सुल्तान कज़ाक पमूर का हाकिम
(६) मुहम्मद यार सुल्तान, उपर्युक्त का भाई
(१७७) (७) नव्वाब बैरम खा भारलू कन्धार का हाकिम
(८) मीर्ज़ा अब्दुल्लाह मुग़ुल, मुनइम खा का जामाता
(९) ख्वाजा मुहम्मद ज़करिया वल्द ख्वाजा दोस्त खावन्द
(१०) शाह अबुल मआली अबुल मआली का, जिसकी उपाधि शाहे ख्वन्दान थी, बडा भाई
(११) ख्वाजा अब्दुल मुनइम कज़ाक जिसकी उपाधि ख्वाजा पादशाह थी
(१२) ख्वाजा मुल्तान, उपर्युक्त का भाई
(१३) ख्वाजा शाह, अब्दुल मुनइम कज़ाक का भाई
(१४) मीर अब्दुल हई
(१५) मौलाना अलाउद्दीन लारी जो हज़रत पादशाह के कारण मक्का मदीना की ज़ियारत से सम्मानित हुआ और जिसकी यमन में मृत्यु हुई
(१६) शैख अबुल कासिम अस्तराबादी
(१७) मौलाना इलियास
(१८) मौलाना वेकसी
(१९) मौलाना सैयिद अली मुसव्विर (चित्रकार)
(२०) मौलाना अब्दुस्समद मुसव्विर (चित्रकार)
(२१) मौलाना दोस्त मुसव्विर (चित्रकार)

१ डा० बनारसी प्रसाद ने केवल पहले तीन अध्यायों का अनुवाद किया है।

(२२) ख्वाजा अब्दुल्लाह वल्द ख्वाजा मुहम्मद जकरिया
(२३) हैदर, मीर्ज़ा कामरान का बख्शी
(२४) आक़िल सुल्तान,
(२५) ख्वाजा हिज्री जामी
(२६) मुल्ला दरवेश माएली
(२७) हाशिम हीनी, किताबखाने का दारोगा
(२८) मीर अब्दुल्लाह बख्शी, मीर अब्दुल हई का भाई
(२९) ख्वाजा हुसेन मर्वी
(३०) मौलाना अब्दुल बाकी सद्र तुर्किस्तानी
(३१) क़ासिम बरलास
(३२) तरदी बेग तुर्किस्तानी, अताबा का हाकिम
(३३) कियाई गुग
(३४) अली कुली सुल्तान सुफरची वल्द हैदर सुल्तान शैबानी
(३५) बहादुर सुल्तान मुहरदार, उपर्युक्त का भाई
(३६) कून्दुक सुल्तान, बैरम ऊगलून का भाई
(३७) कून्दुक ऊगलून, उपर्युक्त का भाई
(३८) करा बहादुर मीर्ज़ा, मीर्ज़ा हैदर कश्मीरी का सम्बन्धी
(३९) मुहम्मद अली बरलास, कासिम बरलास का जामाता
(४०) मुसाहिब बेग वल्द ख्वाजा कलां बेग अन्देजानी
(४१) मुहिब अली बेग, मीर खलीफा अन्देजानी फिरदौस मकानी बाबर पादशाह के वकील का पुत्र
(४२) इस्माईल बेग अहमद जानी दूल्दी
(४३) मीर असगर मुंशी
(४४) मुसाहिब अली
(४५) याल्रू बेग तवाची बाशी
(१७८) (४६) पहलवान दोस्त मीर बरवा
(४७) मीर्ज़ा खिज्र खा हजारा
(४८) काजी तवालसी, लश्कर का काजी
(४९) अब्दुर्रहमान वल्द मुईद बेग
(५०) मुहम्मद कासिम कोह बर
(५१) मीर शिहाब नीशापुरी, मीर सामान
(५२) कम्बर बेग बारबेगी काशगरी
(५३) मीर्ज़ा जलालुद्दीन वल्द मीर्ज़ा हसन बरका
(५४) शीरोया वल्द शेर अफगन, कूच बेग अन्देजानी का पौत्र
(५५) मुहम्मद मुराद वल्द अमीर बेग, बेग मीरक मुगुल का पौत्र

(५६) मुहम्मद नूयान, उपर्युक्त का भाई

(५७) मीर मुहम्मद गजनवी, शम्सुद्दीन मुहम्मद अतका का भाई

(५८) बाबा सईद क़िबचाक़

(५९) मुहम्मद ताहिर मीर वीरदी बेग, फ़िरदौस मकानी बाबर पादशाह के अमीर का पुत्र

(६०) मौलाना नूरुद्दीन मुहम्मद तरखान

(६१) मीर महमूद मुंशी

(६२) मुहम्मद हुसेन ममती

(६३) ख्वाजा जलालुद्दीन मुहम्मद ओमी

(६४) हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी, करबन्द का हाकिम

(६५) ख्वाजा सुल्तान अली दीवान जिसे हिन्दुस्तान में हज़रत पादशाह ने अफ़ज़ल खां की उपाधि द्वारा सम्मानित किया था

(६६) ख्वाजा मीर्ज़ा मरवारीदे गल्ला जो हिन्द में हज़रत पादशाह का दीवान था

(६७) मुहम्मद कासिम मौजी जो काबुल के मार्ग में हज़रत पादशाह का वार्शी बेगी था

(६८) ख्वाजा हसन जिसकी उपाधि खाल्दार थी और जो ख्वाजा नक्शबद की सतान से था

(६९) ख्वाजा मुहिब अली बख्शी, ख्वाजा अमीना, हज़रत जलालुद्दीन अकबर मीर्ज़ा के बख्शी बेगी, का भाई

(७०) ख्वाजा अब्दी बख्शी

(७१) ख्वाजा मक़सूद अली, मीर्ज़ा कामरान का दीवान

(७२) ख्वाजा कासिम अली, उपर्युक्त का भाई

(७३) ख्वाजा अबुल कासिम मशहदी, मीर्ज़ा कामरान का दीवान जो काबुल में हज़रत पादशाह का भी दीवान था

(१७९) (७४) ख्वाजा नूरुद्दीन मुहम्मद

(७५) मुहम्मद सजिस्तानी, मीर्ज़ा कामरान का दीवान

(७६) ख्वाजा कासिम ब्यूतात, मीर्ज़ा कामरान का दीवान

(७७) ख्वाजा गाजी शीराजी जिसे शाह ने तख्ते सुलेमान में हज़रत पादशाह का दीवान नियुक्त किया था

(७८) मीर शरीफ़ सीस्तानी, बख्शीये वहूश[1], जो मेजबान लिखा जाता था

(७९) हसन अली, हकीम मीर्ज़ा का मुंशी, उपर्युक्त का भतीजा

(८०) मुहम्मद हुसेन नाजिर जिसे हज़रत पादशाह ने लश्कर खां की उपाधि प्रदान की थी

(८१) ख्वाजा रूहुल्लाह मुस्तौफ़ी

(८२) ख्वाजा अब्दुल मजीद मुस्तौफ़ी जिसे हज़रत पादशाह ने आसफ़ खां की उपाधि प्रदान की थी

१ वन पशुओं का बख्शी।

(८३) ख्वाजा मुल्तान अली, उपर्युक्त का भाई जिसे हजरत जलालुद्दीन अकबर पादशाह द्वारा दीवानी का मसब प्राप्त हुआ

(८४) मीर सैयिद मुहम्मद, दारुल अदालत का मुशी

(८५) शेख नजर चोली तुर्किस्तानी जिसे हजरत पादशाह ने हिन्द की विजयोपरान्त मीर अद्ल नियुक्त कर दिया था

(८६) ख्वाजा मुहम्मद ताहिर वख्शी जो हजरत पादशाह के कारण मक्का निवासी हो गया था

(८७) मीर आरिफ

(८८) मीर हाशिम, शिहाब खा का भाई

(८९) ख्वाजा अताउल्लाह मजिस्तानी, बावर्ची-खाने का मुशरिफ

(९०) ख्वाजा अताउल्लाह यज्दी दीवाने खास

(१८०) (९१) मौलाना असद मुशरिफ

(९२) मीर्जा कुली, हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी का भाई

(९३) मजनूं काकशाल

(९४) मीर्जा कुली चोली

(९५) बाबा दोस्त चोली जो एराक की यात्रा मे हजरत पादशाह का वख्शी था

(९६) खालिक बीरदी

(९७) शेख यूसुफ चोली

(९८) मुहम्मद अली मीर खाक

(९९) लाल खा बदख्शी, मीर्जा सुलेमान का अमीर

(१००) अली बेग वल्द सुल्तान उवैस कोलाबी,

(१०१) खजर बेग, तरदी बेग अताबा का सम्बन्धी

(१०२) हकीम जम्बल

(१०३) हाशिम हीनी, शाह अबुल मआली का भाई

(१०४) अबुल कासिम ईशक आगा

(१०५) अली दोस्त ईशक आगा

(१०६) बाकी बगलानी

(१०७) साकी, तरदी बेग अताबा का भाई

(१०८) बाबा परवानची

(१०९) आरिफ बेग

(११०) अमीर बेग वल्द जमील बेग, उपर्युक्त के भाई का वज़ीर

(१११) शाह कुली, नारजी सुल्तान का सम्बन्धी

(११२) बाकी बेग, मीर्जा हिन्दाल का परवानची

(११३) माकी बेग, उपर्युक्त का भाई

(११४) मुज़फ्फर किताबदार

(११५) बारुक बीबी फातेमा उर्दू बेगी

(११६) मीर खावन्द, हजरत पादशाह का विशेषकातिब
(११७) सालेह वल्द मुल्ला किताबदार
(११८) जान मुहम्मद किताबदार
(११९) कासिम मुखलिस तुरबती, मीर्जा कामरान का मीर आश
(१२०) मुहम्मद हुसेन गुग, फिरदौस मकानी बाबर पादशाह का यक्का
(१२१) मुहम्मद बेग किबचाक मीर्जा कामरान का सेवक, बाबा किबचाक का ससुर
(१२२) मुहम्मद अली, हज़रत फिरदौस मकानी का रिकाबदार– काबुली ख्वाजा बस्ता
(१२३) कोचक, उपर्युक्त का पुत्र
(१२४) मीरकी जग जग जिसे हिन्द में हजरत पादशाह ने सरहिन्द की सरकार का हाकिम बना दिया था
(१२५) उल्तून कुलीज आना कुर्बानी
(१२६) मीर कलीज, उपर्युक्त का भाई
(१२७) जान कलीज, उपर्युक्त का भाई
(१८१) (१२८) बाद बहार मुहम्मद वल्द मुहम्मद कासिम मौजी
(१२९) पायन्दा मुहम्मद मुग़ल, हाजी मुहम्मद खा कश्का का सम्बन्धी
(१३०) शादमान, उपर्युक्त का भाई
(१३१) सुल्तान मुहम्मद खा काने लाल, काने लाल का दारोगा
(१३२) साकी तूक बेगी
(१३३) मुहम्मद मोमिन खुश, मीर मञ्जिल
(१३४) मीरक कारलुग
(१३५) अली मुहम्मद कुन्दुजी
(१३६) ख्वाजा मुहम्मद सुल्तान तुरबती, ख्वाजा सुल्तान अली दीवान का भाई
(१३७) मीर कुतुबुद्दीन तुरबती साहिबे तौजीह
(१३८) खाक अली कलातर ईमाक अफलानजक
(१३९) मीर तूकपाई, तूकपाइयान का सरदार
(१४०) करसान करावल, शाही बेग खा का करावल
(१४१) बख्शी बख्शी (?) हजरत फिरदौस मकानी के बख्शी मुहम्मद का सम्बन्धी
(१४२) मीरम (अथवा मीरीम) शकावल बेगी
(१४३) जान मुहम्मद बेहसूदी
(१४४) मीर मुहम्मद मौजी
(१४५) हसन अली मौजी अजीज वकावल
(१४६) सुल्तान हुसेन बेग, सुल्तान बायजीद बेग, फिरदौस मकानी के अमीर, का पुत्र
(१४७) काफ़र अली बेग वल्द सैयिद बेग
(१४८) बेग मुहम्मद जलायर वल्द बाबा जलायर
(१४९) शाहम बेग वल्द बाबा बेग जलायर

(१५०) जान मुहम्मद बेग वल्द शेख अली बेग जलायर,
(१५१) खुशहाल
(१५२) शाहीन
(१५३) जमशेद — हज़रत पादशाह के कूरची
(१५४) मकसूद
(१५५) कासिम आब बारानी
(१५६) खाक अली अचलाफूक
(१५७) हसन खा, उपर्युक्त का पुत्र
(१५८) जीकून जलायर
(१५९) ख्वाज़ा अब्दुल्लाह मरवारीद
(१६०) ख्वाजा मुहम्मद सालेह, उपर्युक्त का भाई
(१६१) अबू सईद तुरती
(१६२) सुलेमान कुली बेग, उपर्युक्त का भाई
(१६३) तोलक कूरची
(१६४) अताउल्लाह बेग, उपर्युक्त का भाई जो हेमू के युद्ध में मारा गया
(१८२) (१६५) सुलेमान उलुग मीर्ज़ा
(१६६) मुहम्मद जान तुर्कमान
(१६७) लुत्फी सरहिन्दी
(१६८) सैयिद मुहम्मद पकना
(१६९) बाकी शेख कमान, उपर्युक्त का भाई
(१७०) मुहम्मद कुली शेख कमान अफ़शार
(१७१) हुसेन कुली अफशार
(१७२) सैयिद आरिफ तूशकची
(१७३) मेहतर वकीला
(१७४) मेहतर वासिल
(१७५) मेहतर अनीस खज़ीना-दार
(१७६) मेहतर मुम्बुल मीर हज़ार
(१७७) मेहतर सवाका रिकाबदार
(१७८) तीमूर शरबती
(१७९) मौलाना किताबदार
(१८०) रुस्तम अली क़रह क़राग
(१८१) हसन खां, उपर्युक्त का पुत्र
(१८२) मुहिब सुरनाई
(१८३) रफीक खुन्ज़ादा बेगम का सेवक जिसकी उपाधि 'चहार मसत्र' थी
(१८४) मेहतर हरिया आबदार

(१८५) नूह, उपर्युक्त का पुत्र जो अभी तक जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर शाह का आबदारे खासा है

(१८६) मेहतर रफ़ीक तूशकची

(१८७) क़िया बेग जवान, माहम बेगा का सम्बन्धी

(१८८) शेख़ हमीद सम्भली

(१८९) दरवेश मुहम्मद ऊज़बेग

(१९०) कीतिमुश ख़लीलुल्लाह दूल्दी

(१९१) एमादुद्दीन हसन, क़ासिम का भाई

(१९२) अली दोस्त तवाची, हैदर बख़्शी का भाई

(१९३) यारी, मीर्ज़ा कामरान का तूशक बेग जो हिन्दुस्तान में तवाची बाशी नियुक्त कर दिया गया था

(१९४) मीर्ज़ा अस्करी का सेवक शाह कुली

(१९५) अलम शाह वल्द मीर पहलवान

(१९६) मीर्ज़ा अली, उपर्युक्त का भाई

(१९७) जान बाबी ऊगलुक निशन ख़ा

(१९८) ख़्वाजा ख़ान

(१९९) रुस्तम अली करह कराग

(२००) मेहतर वशामदा

(२०१) मेहतर जौहर आफ़तावची

(२०२) मेहतर कोचक फ़तह वफ़ादार वल्द कोचक जो इस समय तक शाहज़ादये आलमियान शाह सलीम की सेवा में है।

गायक एव वादक

(१) मीर सैयिद अली गिचकी

(२) बाबा दोस्त बूनक्तार (तूनक्तार)

(३) जान मुहम्मद अरग़ात

(४) यार मुहम्मद, उपर्युक्त का भाई

(५) बहराम गिचकी

(६) तूफ़ान रबाबी

(१८३) (७) मुल्ला ताहिर बुख़ारी, बहादुर सुल्तान शैबानी का सद्र

(८) मस्तूर बेग बकावल

(९) रहमान कुली ख़ुश बेगी

(१०) ईरज तरमून वरलाम

(११) बायजीद करनाई

(१२) मुहम्मद जान कानूनी
(१३) कजक गिचकी
(१४) कासिम चगी, ख़ुसरो बादशाह का दास
(१५) गैबुल्लाह, शाह का चगी
(१६) मुख़लिस कुबसी
(१७) तूफान नई (नाई)
(१८) अरबे बई
(१९) हाफ़िज़ सुल्तान मुहम्मद आल्ता
(२०) हाफ़िज कमालुद्दीन हुसैन
(२१) हाफ़िज़ मेहरी जिसे बकावली के पद का सम्मान प्राप्त था
(२२) हाफ़िज नासिर, उपर्युक्त का भाई जो इस समय मक्का निवासी है
(२३) मौलाना सिपहरी पुन नसवी
(२४) ख्वाजा मुहिब अली बख्शी
(२५) मौलाना बजमी कवि, मुल्ला सिपहरी का मुसाहिब
(२६) मौलाना मीर जान पैवन्दी जलायरान जिसकी उपाधि ज़र्वजन थी
(२७) महमूद किरकीराक वल्द सुल्तान मुहम्मद किरकीराक
(२८) साकी दराज
(२९) तरसून अली कराबल, उपर्युक्त का भाई।

शाहज़ादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा के सेवक जो विजयी रिकाब के साथ थे

(१) मीर शम्सुद्दीन मुहम्मद अतका गजनवी
(२) मौलाना अब्दुल कादिर आखुन्दी हरवी
(३) मुहम्मद बाकी कोका जो खान की उपाधि द्वारा सम्मानित था
(४) यूसुफ मुहम्मद कोका जो खान की उपाधि द्वारा सम्मानित था
(५) अदहम कोका, मुहम्मद बाकी का भाई जिसे खान की उपाधि प्राप्त थी और जिसने दीवान शम्सुद्दीन मुहम्मद अतका की हत्या की और फिर हजरत बादशाह ने कोका की हत्या की
(१८४) (६) सैफ कोका जिसे खान की उपाधि प्राप्त हुई और जो गुजरात में शहीद हुआ
(७) जैन कोका, सैफ कोका का भाई
(८) सआदत यार कोका, जिसने हज़रत बादशाह के सेवक के रूप में मक्का मदीना का तवाफ किया
(९) जीवन कोका जो युवावस्था में मृत्यु को प्राप्त हुआ
(१०) कुतुबुद्दीन मुहम्मद अतका गजनवी, शम्सुद्दीन मुहम्मद अतका का भाई
(११) मीर शरीफ गजनवी, उपर्युक्त का भाई

(१२) शाह मुहम्मद गजनवी, उपर्युक्त का भाई जो खान की उपाधि द्वारा सम्मानित हुआ

(१३) फाजिल मुहम्मद, मुहम्मद गजनवी का पुत्र

(१४) फर्रुख मुहम्मद उपर्युक्त का भाई

(१५) नारग मुहम्मद वल्द मीर कुतुबुद्दीन मुहम्मद गजनवी

(१६) बाज़ बहादुर वल्द मीर शरीफ मुहम्मद

(१७) गूजर वल्द कुतुबुद्दीन मुहम्मद

(१८) मीर इबराहीम बदख्शी

(१९) मीर अब्दुल्लाह सद्र फरीवनी

(२०) ख्वाजा अमीना बख्शी बेगी हरवी जो ख्वाजये जहाँ की उपाधि द्वारा सम्मानित था

(२१) ख्वाजा मुईन, ख्वाजा निजामुल मुल्क का, जो मीर्जा सुल्तान हुसेन बाईकरा का दीवान था, सम्बन्धी

(२२) खलीफा आरिफ, खालिद वलीद की संतान

(२३) मेहतर सानी हरवी

(२४) रुस्तम

(२५) हसन अली तुर्कमान आख्ता बेगी जिसे हजरत पादशाह ने चुनार का किला प्रदान कर दिया था

(२६) तरदी मुहम्मद वल्द बेग मुहम्मद आख्ता बेगी

(२७) कूरची यवी

(२८) कुतलू कदम काबुली, चार आस्तानी का सेवक

(२९) जलालुद्दीन मसऊद दीवान

(३०) कमालुद्दीन हुसेन दीवान वल्द ख्वाजा मक्सूद

(१८५) (३१) अली, मीर्ज़ा कामरान का दीवान

(३२) मुहिब अली कूशजी, उपर्युक्त मुहिब अली खा का भाई

(३३) कुबूल परवानची, मीर्ज़ा कामरान के मीर बख्शी का भाई

(३४) ख्वाजा मुहम्मद सुल्तान मुस्तौफी जिसे हजरत पादशाह ने मुसिफ खा की उपाधि प्रदान की थी

(३५) दोस्त सहारी

(३६) कम्बर अली सहारी

(३७) मेहतर अरगून वल्द आशिक अरगन, बुस्त के किले का हाकिम

(३८) अबुल हसन दीवाना, करजा खा का सम्बन्धी

(३९) मीरक अली तनल बरची

(४०) खान मुहम्मद तुगपाई जो पूर्व मे मीर्ज़ा हिन्दाल का कूरची था

(४१) मुल्ला कासिम काही

(४२) मीर कासिम दीवाना उपर्युक्त का भागिनेय

(४३) खालिद बिन बारबेगी, तूगपाई
(४४) पामाई काकशाल
(४५) मीर्ज़ा बेग काकशाल
(४६) मुहिब काकशाल
(४७) ममाजीन मुग़ुल, हाजी मुहम्मद बाबा कश्का का सम्बन्धी
(४८) शाह अली ईशक आगा
(४९) मक़सूद दमना जिसे सुल्तान की उपाधि प्राप्त हुई और जो टकसाल का दारोगा नियुक्त हुआ
(५०) मुल्ला बायज़ीद, जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा का आखुन्द
(५१) मुल्ला मीर कला आखुन्द
(५२) मुल्ला मुहम्मद अमीन, उपर्युक्त का भाई
(५३) सैयिद जलाल दफ्तरदार
(५४) मक़सूद बंगाली
(५५) मेहतर वाली
(५६) मन्सूर अफ़शावा तवाची।

नव्वाब बैरम ख़ाँ भारलू के सेवक जो शुभ रिकाब के साथ थे

(१) वली ख़ाँ, बैरम ख़ाँ का सम्बन्धी
(२) मुहम्मद सईद वल्द याकूब बेग, जहाँगीर कुली बेग का भाई
(३) अब्दुर्रहीम, उपर्युक्त का भाई
(४) मासूम, उपर्युक्त का भाई
(५) मुहम्मद करा सुल्तान
(६) मुहम्मद कासिम नीशापुरी
(१८६) (७) मौलाना पीर मुहम्मद शीरवानी
(८) तरसून मुहम्मद, सैफुल मुलूक का भागिनेय जिसे ख़ान की उपाधि प्राप्त थी
(९) वली बेग जुलक़दर
(१०) मुहम्मद बेग, बैरम ख़ाँ का सम्बन्धी
(११) शाह बीरदी बेग, उपर्युक्त का सम्बन्धी
(१२) हबीब अली
(१३) सिकन्दर बेग वल्द शादी बेग, हजरत शाह का सेवक
(१४) ख़्वाजा बाक़िर वल्द मुहम्मद आदिल ख़ाँ
(१५) हुसैन बेग वल्द मुहम्मद अली, फ़िरदौस मकानी का रिकाबदार
(१६) शाह कुली महरम

(१७) बाबाये जम्बूर, उपर्युक्त का भाई
(१८) हुसेन कुली बेग वल्द वली बेग ज़ुलक्दर
(१९) इस्माईल कुली, उपर्युक्त का भाई
(२०) हाजी मुहम्मद सीस्तानी, उसे भी ख़ान की उपाधि प्राप्त थी
(२१) मुहम्मद सादिक वल्द मुहम्मद ख़्वाजा बाकिर, बैरम ख़ा का मीर सामान
(२२) करा ताक, इब्राहीम का दास
(२३) ख़्वाजा मुज़फ़्फ़र अली दीवान
(२४) अहमदी महमूदी, उपर्युक्त का भाई
(२५) ख़्वाजा ताहिर महमूद दीवान
(२६) मक्मूद अली
(२७) बकावल शाही
(२८) मुहम्मद कासिम वल्द ख़्वाजा मुहिब अली तमगाची
(२९) हाजी हुसेन, उपर्युक्त का भाई
(३०) यार हाजी, उपर्युक्त का भाई
(३१) मुहम्मद वफा, बैरम ख़ा का दास
(३२) ज़ाहिद उपर्युक्त का दास
(३३) जमाल उपर्युक्त व्याख्यानुसार
(३४) हाजी करा आख़्ता बेगी
(३५) हाजी आरिफ
(३६) तमर यक्का
(३७) आका जान मीर शिकार
(३८) इस्कन्दर सुल्तान
(३९) शाह वीरदी बेग, बैरम ख़ा का सम्बन्धी
(४०) हबीब अली
(४१) उस्ताद यूसुफ तब्बूरह
(४२) मीर कुली उपर्युक्त का पुत्र
(४३) गोसाई नायब
(४४) ताहिर कुक्सी, उलाम बेग का ख़ाना-ज़ाद
(४५) ख़ानतक वीरदी
(४६) मुहम्मद अमीन दीवाना, उपर्युक्त का पुत्र
(४७) मीर कलन्दर
(१८७) (४८) फरीदूं, मशहद का सैयिद
(४९) याकूब हमदानी
(५०) ख़्वाजा उबैद
(५१) मौलाना साले़ह, अस्तबल का मुशरिफ
(५२) मक्मूल बेग

(५३) मीर हाजी रूग
(५४) हैंदर गाव मीश।

इनके अतिरिक्त हज़रत शाहजादये आलमियान एवं नव्वाव बैरम खां भारलू के सेवक, लगभग ५००० व्यक्ति, हज़रत पादशाह की सेवा में थे, जो हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुए।

वायज़ीद का अली शैवानी की सेवा में पहुँचना

अली कुली शैवानी कारवान को पार कराने के लिये विदा होकर बगश चला गया था। वायजीद उस समय ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद का सेवक था। ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद के भाई से रुष्ट होने के कारण ख्वाजा से आज्ञा लिए बिना वह अली कुली शैवानी के पास बगश इस कारण चला गया कि बाल्यावस्था में तबरेज़ में वे दोनों पड़ोसी रह चुके थे। जब वह कारवान वालों का नेतृत्व करके उन्हें उतरने के स्थान में पार कराके काबुल पहुँचा तो उस समय तक हज़रत पादशाह नेकनहार तूमान तक पहुँच चुके थे।

मुनइम बेग का वायज़ीद को काबुल से जाने की अनुमति न देना

उपर्युक्त मुल्तान[1] उन्हीं दिनों में आकर बुतख़ाक में ठहर गया। सुल्तान के सज़ावल नगर में प्रबन्ध करके लोगों को पीछे से भेजते जाते थे। क्योंकि वायजीद का घर किले के भीतर कासिम बरलास के बुर्ज के समीप था, और उस समय उस बुर्ज में काबुल का हाकिम मुनइम बेग रहता था, अतः वायजीद अपना असबाब लाद कर एवं निपग बाँध कर मीर[2] की सेवा में विदा होने के उद्देश्य से पहुँचा। उस दिन बुधवार था। मीर ने कहा कि, "इस दिन कोई इस प्रकार की यात्रा करने के लिए नहीं निकलता। मैं नेमत लीग[3] नव्वाब बैरम खां कैफ़ियत लीग[4] अली कुली शैवानी, (१८८) एवं ख्वाजा सुल्तान अली इत्यादि को, जिनसे मेरी घनिष्ठता है, पत्र लिखूँगा, तू उन्हें ले जाकर पहुँचा दे और उत्तर भिजवा दे। इस समय निपग खोल कर मेरे साथ रह।" क्योंकि यह बड़ा प्रतिष्ठित अमीर था, और वायजीद भी चाहता था कि शुभ मुहूर्त में रवाना हो अतः उसने उसके आदेश का पालन किया। वह उस दिन ठहर गया। दूसरे दिन जब वह विदा हेतु पहुँचा तो उसने कहा कि, "वास्तव में मेरा उद्देश्य यह है कि तुझे अपने पास रोक लूं। जिस समय से तू हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार का सेवक था, उस समय से आज तक जब कि तू ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद और उसके उपरान्त कैफ़ियत लीग की सेवा में पहुँचा, मेरी अभिलाषा यही रही है कि तू मेरी सेवा में रहे।" किले के द्वारा मैं वायजीद का प्रस्थान रुकवा दिया। जब अली कुली के, जो बुतख़ाक में ठहरा था, सज़ावल वायजीद (को बुलाने) के लिए मुनइम बेग के पास आए तो मीर ने कह दिया कि, "मुझमें तथा कैफ़ियत लीग में इतनी घनिष्ठता है कि उसका एक सेवक जो मुझे अच्छा लग गया है, उसे जाने की अनुमति नहीं देता।" सज़ावलों ने कहा कि, "इस आशय का हमें एक पत्र दे दिया जाय।" मीर ने पत्र दे दिया, और इस प्रकार वायजीद को अपने पास रख लिया। अली कुली

१ यह स्पष्ट नहीं, सम्भवतः 'ख्वाजा सुल्तान अली'।
२ मुनइम बेग।
३ बैराम खां की उपाधि।
४ अली कुली शैवानी की उपाधि।

के प्रथम पहर मे ही ३०,००० व्यक्ति ईश्वर की कृपा एव हजरत पादशाह के प्रताप से पराजित हो गए। विजयी सेना को अत्यधिक हाथी एव धन-सम्पत्ति प्राप्त हो गयी। प्रात काल कुछ हाथी एव सिर मुहब्बत खा गजनवी के सिपुर्द कर दिए गए। वह उन्हें हजरत पादशाह की सेवा में ले गया। इससे पूर्व जब हजरत पादशाह हिन्दुस्तान मे पराजित हो गए थे तो मुहब्बत खा गजनवी अफगानो के मध्य में रह गया था। इस समय वह उन लोगो से पृथक् होकर बैराम खा की सेवा मे उपस्थित हुआ था। बैराम खा ने उसके द्वारा हजरत पादशाह से प्रार्थना कराई कि, "यह उचित होगा कि हजरत पादशाह भी लाहोर से इस्कन्दर के विरुद्ध प्रस्थान करें।"

हुमायू का इस्कन्दर से युद्ध

जब हाथी, सिर एव प्रार्थना-पत्र हजरत पादशाह की सेवा मे पहुँचे और मुहब्बत खा ने भी जो कुछ उसे अफगानो के विषय में ज्ञात था, निवेदन किया तो नित्य प्रति विजय एव सफलता की उषा उदय होने लगी। हजरत पादशाह ने मेहतर सकहाई को फरहाद खा की उपाधि देकर, लाहौर में हाकिम नियुक्त कर दिया और स्वय देहली की ओर रवाना हुए। जो लश्कर आगे पीछे रह गया था, वह भी शाही शिविर मे पहुच गया। जब हजरत पादशाह सरहिन्द पहुँचे तो उस ओर से इस्कन्दर भी एक लाख अफगान एव अत्यधिक हाथी लेकर आ गया। हजरत पादशाह की सेना में मुगुल, जमींदार एव लाहौरी मिला कर कुल १०,००० अपितु इसमें भी कम लोग रहे होंगे। हजरत (१९३) पादशाह ने सरहिन्द के किले के समक्ष पडाव किया। सिकन्दर भी किले के समीप पक्तिया सुव्यवस्थित करके एव खाई खुदवा कर उतर पडा। कई बार दोनो ओर से वीरता पूर्वक युद्ध हुआ। बैरम खा के सम्बन्धी तुरमती खान एव बाकी परवानची ने, जो पूर्व में स्वर्गीय मीर्जा हिन्दाल का सेवक था वीरतापूर्वक युद्ध किया और शहीद हुए। खिज्र ख्वाजा सुल्तान, नव्वाब बैरम खा, तरदी बेग, तुर्किस्तानी, अली कुली शैबानी खिज्र खां हजारा, इस्कन्दर सुल्तान, अब्दुल्लाह सुल्तान कजाक, लाल बेग बदख्शी, हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी, खालिक बीरदी, मीरक कोलाबी, खाक अली ईलान चूक, शाह बाबा तोलकची, कुर्बान बीरदी करावल, मीरीम तूगबाई, उसके भाइयो, मजनूं काकशाल, बाबा मीर्जा बेग, मुहब्बत, उसके भाइयो, सुल्तान मुहम्मद काने लाल, सुल्तान मुहम्मद करावल जिसकी उपाधि क्वक थी, जीकून जलायर, कम्बर अली सहारी, खालिक बीरदी महारी, उसके भाइयो, मुहिब्ब अली, नासिर अली कूशजी, कुबूल परवानची, दारत सहारी, सुल्तान हुसेन बेग वल्द सुल्तान बायजीद, सलीम खा, उलुग मीर्जा, काफर अली, सैयिद अली बेग, तोलक कूरची, अता बेग, उपर्युक्त का भाई, मुहम्मद बेग, शाहीम बेग, मीर्जा मुहम्मद बेग, जान मुहम्मद, सुलेमान कुली जलायरान, ऊल्लून कलीज, मीरीम कलीज, जान कलीज, उसके भाई जाना कुर्बानी, मुहम्मद अमीन दीवाना वल्द खालिक बीरदी, मुहम्मद कासिम कोहबर, मुहम्मद जान तुर्कमान, वली बेग और उसके भाई, मुहम्मद कुली शेख कमान, हुसेन कुली अफशार, सैयिद मुहम्मद पक्ना, साकी शेख कमान, उसके भाई, ईमाकात एव एहशाम के कलांतरा मे कोई ऐसा न था जिसने (१९४) सरहिन्द के युद्ध मे पूर्ण परिश्रम एव पौरुष प्रदर्शित न किया हो। खिज्र ख्वाजा सुल्तान, नव्वाब बैरम खा, तरदी बेग अताका, अली कुली शैबानी, खिज्र खा हजारा ने विशेष रूप से परिश्रम एव पौरुष प्रदर्शित किया।

इस्कन्दर की पराजय

इस्कन्दर एक मास अपितु इससे अधिक युद्ध सम्बन्धी अत्यधिक प्रयत्न करता रहा, किन्तु भाग्यशाली न होने के कारण पराजित हो गया। उसके हाथियों एवं धन-सम्पत्ति में बहुत कुछ विजयी सैनिकों को प्राप्त हो गया। इस्कन्दर थोड़े से आदमियों को लेकर मानकोट के किले एवं लाहौर के पर्वत के आँचल में चला गया। हज़रत पादशाह निरन्तर यात्रा करते हुए देहली की ओर रवाना हुए और विजय एवं सफलता प्राप्त करके देहली के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुए। तरदी बेग अतका को एक सेना सहित लाहौर की ओर नियुक्त कर दिया। इस्कन्दर सुल्तान क़ज़ाक़ को एक सेना सहित आगरा और अली कुली सुल्तान शैबानी को एक सेना सहित सम्भल एवं उस क्षेत्र की ओर नियुक्त किया।

हुमायूं की मृत्यु

हज़रत पादशाह सर्वदा यह सोचा करते थे कि इस कमीने संसार को त्याग दें। उन्होंने शपथ ली थी कि हिन्दुस्तान के अपने पैतृक राज्य पर जो भाइयों के पारस्परिक विरोध के कारण हाथ से निकल गया था, अधिकार जमाकर सब कुछ त्याग देंगे और सल्तनत शाहज़ादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा को सौंप कर स्वयं दरवेशों, आलिमों एवं विद्वानों की गोष्ठी में समय व्यतीत किया करेंगे। ईश्वर ने उनकी आत्मा की पवित्रता के कारण यह उचित न समझा कि उन्हें इस अंधकारमय संसार में एवं कृतघ्न आकाश के नीचे अधिक समय तक रक्खे, अतः उनकी आत्मा को स्वर्ग में पहुँचा दिया। जिस तिथि में वे हिन्द में आये, और देहली से परलोकगामी (९९५) हुए उस बीच की अवधि दो मास से अधिक थी कम न थी। यह दुर्घटना १५ रबी उल-अव्वल ९६२ हि०[1] (७ फरवरी १५५५ ई०) को घटी और पादशाही उनके सौभाग्यशाली पुत्र हज़रत जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा पादशाह को प्राप्त हो गई।

अकबर का सिंहासनारोहण

इससे पूर्व हज़रत पादशाह ने बैरम खां को शाहज़ादे का अतालीक़[2] बना कर अभागे सिकन्दर के विरुद्ध, जो मानकोट के किले में प्रविष्ट हो गया था, नियुक्त कर दिया था। शाह अबुल मआली को एक बहुत बड़ी सेना सहित मीर्ज़ा की कुमक हेतु रहने का आदेश दिया था। इसी समय यह शोक-मय समाचार लेकर बालू बेग तवाची बेगी तुर्किस्तानी, पादशाही चिह्न एवं असबाब सहित शाह-ज़ादये आलमियान के पास पहुँचा। हज़रत पादशाह को समाचार प्राप्त हुए कि अबुल मआली विरोध करने का विचार कर रहा है। दरबार में तोलक कूर्ची को आदेश हुआ कि उसे बन्दी बना लिया जाय। उसे वली बेग ज़ुल्कदर को सौंप दिया। तदुपरान्त कलानूर नामक परगने में सिंहासनारूढ़ होने के पश्चात् सर्वप्रथम जिस व्यक्ति को सम्मानित किया वह मुनइम बेग था जिसे हज़रत पादशाह ने काबुल में शाहज़ादे का अतालीक़ नियुक्त किया था।

---

१ हस्तलिपि में ९६२ हि० (पृ० ८१ अ), किन्तु सम्भवतः लेखक ने ९६२ हि० लिखा होगा। वास्तव में इसे ९६३ हि० होना चाहिये। प्रकाशित ग्रंथ में इसे १५ रबी-उल अव्वल ९६३ हि० (२८ जनवरी १५५६ ई०) छापा गया है।

२ अतालीक़।

मुख्य सहायक ग्रन्थों की सूची

फ़ारसी

अफ़ीफ़, शम्स सिराज	तारीख़े फ़ीरोज़शाही (कलकत्ता १८९० ई०)
अबुलफ़ज़्ल	अकबर नामा (कलकत्ता १८७३-८७ ई०)
	आईने अकबरी (नवल किशोर प्रेस १८९२ ई०)
अब्दुल बाक़ी निहावन्दी	मआसिरे रहीमी (कलकत्ता १९१०–३१ ई०)
अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी	अख़बारुल अख़यार (देहली १३३२ हि०)
	तारीख़े हक़्क़ी (अलीगढ़ हस्तलिपि)
अब्दुल्लाह	तारीख़े दाऊदी (अलीगढ़ १९५४ ई०)
अब्बास ख़ाँ सरवानी	तोहफ़ये अकबरशाही अथवा तारीख़े शेरशाही (अलीगढ़, इलाहाबाद, डा० परमात्मा शरण एवं बाडलीएन की हस्तलिपियाँ)
अमीन अहमद राज़ी	हफ़्त इक़लीम (अलीगढ़ हस्तलिपि)
अमीर ख़ुर्द, सैयिद मुहम्मद मुबारक अलवी	सियरुल औलिया (देहली १८८५ ई०)
अमीर ख़ुसरो	वस्तुल हयात (अलीगढ़)
	ख़ज़ायनुल फ़ुतूह (अलीगढ़ १९२७ ई०)
	क़ेरानुस्सादैन (अलीगढ़ १९१८ ई०)
	दिवल रानी तथा ख़िज़्र ख़ाँ (अलीगढ़ १९१७ ई०)
	मिफ़्ताहुल फ़ुतूह (अलीगढ़ १९२७ ई०)
	नुह सिपेहर (इस्लामिक रिसर्च एसोसिएशन १९५०ई०)
	तुग़लुक़ नामा (हैदराबाद १९३३ ई०)
अमीर महमूद बिन ख़्वान्द मीर	तारीख़े अमीर महमूद (ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)
अलाउद्दौला क़ज़वीनी	नफ़ायसुल मआसिर (अलीगढ़ हस्तलिपि, एवं रामपुर रिज़ा पुस्तकालय हस्तलिपि)
अली कुली ख़ाँ वालेह दाग़िस्तानी	रियाज़ुश्शुअरा (अलीगढ़ हस्तलिपि)
आज़ाद, मीर गुलाम अली	सर्वे आज़ाद (लाहौर १९१३ ई०)
	ख़ज़ानये आमेरा (कानपुर १८७१ ई०)
आरिफ़ क़न्धारी, मुहम्मद	तारीख़े अकबरी (रामपुर रिज़ा पुस्तकालय हस्तलिपि)

१ 'अलीगढ़ हस्तलिपि' का अर्थ 'अलीगढ़ विश्वविद्यालय पुस्तकालय हस्तलिपि' है।

अहमद बिन बहबल	मादने अख़बारे अहमदी (इंडिया आफ़िस लन्दन हस्तलिपि)
अहमद, मुल्ला, इत्यादि	तारीख़े अलफ़ी (अलीगढ़ हस्तलिपि)
अहमद यादगार	तारीख़े शाही (कलकत्ता १९३९ ई०)
इबराहीम बिन जरीर	तारीख़े इबराहीमी (अलीगढ़ हस्तलिपि)
इस्कन्दर मुंशी	तारीख़े आलम आराये अब्बासी (तेहरान १३१३-१४ हि०/१८९६-९७ ई०)
एसामी	फ़ुतूहुस्सलातीन (मद्रास १९४८ ई०)
कबीर	अफ़सानये शाहान (ब्रिटिश म्युज़ियम, लन्दन हस्तलिपि)
काज़ी अहमद बिन मुहम्मद अल गफ्फारी	नुस्ख़े जहाँ आरा (ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)
कामगार हुसैनी, ख़्वाजा	मआसिरे जहाँगीरी (अलीगढ़ हस्तलिपि)
क़ासिम गूनाबादी, मीर्ज़ा	शाहनामये क़ासिमी (ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)
केवल राम	तज़किरतुल उमरा (हबीबगंज, अलीगढ़, हस्तलिपि)
ख़ाने ख़ाना, अब्दुर्रहीम	बाबर नामा, मासूम व तुज़ुके बाबरी व फ़ुतूहाते बाबरी (बम्बई १३०८ हि०/१८९० ई०) अलीगढ़ हस्तलिपि
ख़ाफ़ी ख़ाँ	मुन्तख़बुल्लुबाब (कलकत्ता १८६०-७४, १९०९-१९२५ ई०)
ख़्वान्द मीर, गयासुद्दीन इब्ने हुमामुद्दीन मुहम्मद	हबीबुस्सियर (तेहरान १२७१ हि०/१८८५ ई०)
	हुमायूं नामा अथवा क़ानूने हुमायूनी (कलकत्ता १९४० ई०)
ख़ुरशाह बिन क़ुबाद अल हुसैनी	तारीख़े एलचीये निज़ाम शाह (ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)
ख़्वाफ़ी, शेख़ ज़ैनुद्दीन, वफ़ाई	तुज़ुके बाबरी (रामपुर रिज़ा पुस्तकालय हस्तलिपि)
गुलबदन बेगम	हुमायूं नामा (लन्दन १९०२ ई०)
गुलाम हुसैन सलीम	रियाज़ुस्सलातीन (कलकत्ता १८९० ई०)
जहाँगीर	तुज़ुके जहाँगीरी (ग़ाज़ीपुर तथा अलीगढ़ १८६३-६४ ई०)
जौहर, मेहतर, आफ़ताबची	तज़किरतुल वाक़ेआत (अलीगढ़ तथा ब्रिटिश म्युज़ियम, हस्तलिपि)
तक़ी औहदी	अरफ़ातुल आरेफ़ीन (ख़ुदाबख़्श बाँकीपुर पटना पुस्तकालय हस्तलिपि)
* * *	तज़किरये शाह तहमास्प (कलकत्ता)

ताहिर नसबादी	तज्किरये ताहिर नसबादी (तेहरान १२१६–१७ हि०)
ताहिर मुहम्मद हसन	रौजतुत्ताहिरीन (रामपुर हस्तलिपि)
तीमूर, सुल्तान (?)	मल्फ़ूजाते तीमूरी (अलीगढ़, हस्तलिपि)
दौलत शाह समरकन्दी	तज्किरतुश्शुअरा (बम्बई १८८७ ई०)
निज़ामुद्दीन अहमद	तबकाते अकबरी (कलकत्ता १९२७ ई०)
नूरुल हक देहलवी	जुब्दतुत्तवारीख (ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)
पायन्दा हसन गज़नवी तथा मुहम्मद कुली मुगुल हिसारी	तुज़ुके बाबरी (ब्रिटिश म्युज़ियम, रियु, भाग २, ७९९ ब)
फ़िरिश्ता, मुहम्मद क़ासिम हिन्दू शाह	तारीखे फ़िरिश्ता (नवल किशोर प्रेस)
फ़ीरोज़ शाह तुग़लुक़	फ़ुतूहाते फ़ीरोज़शाही (अलीगढ़)
फ़ैज़ी सरहिन्दी	हुमायूंशाही (कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी तथा इंडिया आफ़िस लन्दन की हस्तलिपियाँ)
* * *	जवाहरशाही (इंडिया आफ़िस हस्तलिपि, ईथे २११, आई-ओ ३९४६)
बदायूनी, अब्दुल कादिर	मुन्तखबुत्तवारीख (कलकत्ता १८६८ ई०)
बरनी, ज़ियाउद्दीन	तारीखे फ़ीरोज़शाही (कलकत्ता १७६०–६३ ई०)
	तारीखे फ़ीरोज़शाही (रामपुर हस्तलिपि)
	फ़तावाये जहाँदारी (इंडिया आफ़िस लन्दन, हस्तलिपि)
	सहीफ़ये नाते मुहम्मदी (रामपुर हस्तलिपि)
बायज़ीद ब्यात	तारीखे हुमायूं व अकबर (कलकत्ता १९४१ ई०)
माहरू	इन्शाये माहरू (अलीगढ़)
मीर्ज़ा बेग बिन हसन, हुसैनी जुनाबादी	रौज़तुस्सफ़विया (ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)
मुतहर कड़ा	दीवान (प्रोफ़ेसर मसऊद हसन रिज़वी अदीब, *लखनऊ की हस्तलिपि*)
मुश्ताक़ी, शेख़ रिज़्कुल्लाह	वाक़ेआते मुश्ताक़ी (ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)
मुहम्मद बख़्तावर ख़ाँ	मिरआते आलम (अलीगढ़ हस्तलिपि)
मुहम्मद बिहामद ख़ानी	तारीखे मुहम्मदी (ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)
मुहम्मद मासूम	तारीखे सिन्ध (पूना १९३७ ई०)
मुहम्मद सादिक	सुबहे सादिक (अलीगढ़ हस्तलिपि)
मुहसिन फ़ानी	दबिस्ताने मज़ाहिब (बम्बई)
मोतमद ख़ाँ	इक़बाल नामये जहाँगीरी (लखनऊ १८७० ई०)
यज़्दी, शरफ़ुद्दीन अली	ज़फ़र नामा भाग ३ (कलकत्ता १८८५–८८ ई०)
यहया बिन अब्दुल्लतीफ़	लुब्बुत्तवारीख (अलीगढ़ हस्तलिपि)
यहया बिन अहमद सिहरिन्दी	तारीखे मुबारकशाही (कलकत्ता १९३१ ई०)

रफीउद्दीन शीराजी	तजकिरतुल मुलूक (सालार जंग हैदराबाद हस्तलिपि
राय चतुरमन	चहार गुलशन (अलीगढ़ हस्तलिपि)
शरफ खां	शरफ नामा (सेंट पीटर्सबर्ग १८६०–६२ ई०)
शाह नवाज़ खां	मआसिरुल उमरा (कलकत्ता १८८८–९१ ई०)
शेर खां लोदी	मिरआतुल ख्याल (कलकत्ता १८९१ ई०)
सरखुश	कलेमातुश्शुअरा (रामपुर रिज़ा पुस्तकालय एव अलीगढ़ हस्तलिपि)
साम मीर्ज़ा	तोहफ़ये सामी (तेहरान १९३६ ई०)
सिकन्दर इब्ने मुहम्मद उर्फ मझू	मिरआते सिकन्दरी (बम्बई १३०८ हि०/१८९०-९१ ई०)
सुजान राय भंडारी	खुलासतुत्तवारीख (देहली १९१८ ई०)
हमीद कलन्दर	खैरुल मजालिस (अलीगढ़)
हसन, अमीर, सिजज़ी	फवाएदुल फुआद (देहली १२७२ हि०)
हसन बेग रूमलू	एहसनुत्तवारीख (बड़ोदा १९३१ ई०)
हाजी अब्दुल हमीद मुहर्रिर	दस्तूरुल अलबाब फी इल्मिल हिसाब (हस्तलिपि—रामपुर)
हैदर मीर्ज़ा	तारीखे रशीदी (अलीगढ़ हस्तलिपि)
* * *	अफ़ज़लुत्तवारीख (ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)

अरबी

इब्ने बतूता	यात्रा का विवरण (परिस १९४९ ई०)
कलकशन्दी	सुबहुल आशा फी सिनाअतिल इन्शा (काहिरा १९१५ ई०)
शिहाबुद्दीन अल उमरी	मसालिकुल अबसार फी ममालिकुल अमसार
हाजी-उद्-दबीर	ज़फरुल वालेह (लन्दन १९१० ई०)

तुर्की

बाबर, जहीरुद्दीन मुहम्मद	बाबर नामा (लेईडेन तथा लन्दन १९०५ ई०, गिब मेमोरियल सीरीज़, १)

उर्दू

सरसैयिद अहमद खां	आसारुस्सनादीद (कानपुर १९०४ ई०)

हिन्दी

रिज़वी, सैयिद अतहर अब्बास — आदि तुर्क कालीन भारत (अलीगढ़ १९५६ ई०)
खलजी कालीन भारत (अलीगढ़ १९५४ ई०)
तुग़लुक कालीन भारत भाग १ (अलीगढ़ १९५६ ई०)
तुग़लुक कालीन भारत भाग २ (अलीगढ़ १९५७ ई०)
उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग १ (अलीगढ़ १९५८ ई०)
उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग २ (अलीगढ़ १९५९ ई०)
मुग़ल कालीन भारत—बाबर (अलीगढ़ १९६० ई०)

ENGLISH

Ahmad, M B — *The Administration of Justice in Medieval India* (Aligarh 1941)

Arberry, A J — *Classical Persian Literature* (London 1958)

Ashraf, K M — *Life and Conditions of the People of Hindustan* (Delhi 1959)

Banerji, S K — *Humayun Badshah* Vol I (Oxford University Press 1938), Vol II (Lucknow 1941)

Bayley, E C — *History of Gujrat* (London 1886)

Bellew — *Journal of a Political Mission to Afghanistan* (London 1857)

Beni Prasad — *History of Jehangir* (Allahabad 1930)

Beveridge, A S — *Humayun Nama* (London 1902)

The Babur Nama in English (London (1921)

Notes on the Manuscripts of the Turki Text of the Babar's Memoirs (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1900, pp 439-480)

Further Notes on the Manuscripts of the Turki Text of Babar's Memoirs (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1902, pp 635-659)

The Haydarabad Codex of the Babar Nama or Waqiat-i-Babari (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1905, pp 741-762)

The Haydarabad Codex of the Babar Nama or Waqiat-i-Babari (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1906, pp 79-93)

Further Notes on the Babar Nama Manuscripts (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1907, pp 131-144)

The Babar Nama —The Material Now Available for a Definitive Text of

this Book (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1908, pp 73-98)

Beveridge, H — *The Akbarnama of Abul Fazl* (Calcutta 1897-1921)

Note on the Tarikh-i Salatin i-Afaghinah (Journal of the Asiatic Society of Bengal 1916, pp 297-298)

The Memoirs of Bayazid Biyat (Journal Asiatic Society Bengal 1898, pp 296-316)

Blochmann, H — *Contributions to the Geography and History of Bengal (Muhammadan Period)* [Journal Asiatic Society Bengal, XIII, Part I, pp 209 310, (1873)]

Badaoni and His Works (Journal Asiatic Society Bengal 1869 Part I, pp 105-144)

Blochmann, H and Jarret, H S — *The Ain i-Akbari by Abul Fazl Allami* (Calcutta 1868-1894)

Browne, E G — *Literary History of Persia*, 4 Volumes

Burgess, J — *The Ahmadabad Architecture* Part I (London 1900)

The Muhammadan Architecture of Bharaoch, Cambay, Dholka, Champanir and Mahmdabad in Gujrat (London 1896)

Burnes, Sir Alexander — *Cabool* (London 1842)

Chardin, Sir John — *The Travels of Sir John Chardin into Persia and the East Indies*, 2 parts (London 1686)

Travels in Persia with an introduction by Sir Percy Sykes (London 1927)

Codrington, O — *Coins of the Bahmani Dynasty*, Numismatic Chronicle, 3rd Series, Vol XVIII

Crooke W — *The Tribes and Castes of N W Provinces and Oudh* (Calcutta 1896)

The North Western Provinces of India, their History, Ethnology and Administration (London 1897)

Natives of Northern India (London 1907)

Rural and Agricultural Glossary of the

N. W. Provinces and Oudh (1888)

Curzon, George N. — *Persia and the Persian Questions*, 2 Vols (London 1892)

Dames, Mansel Longworth — *The Book of Duarte Barbosa*, Vols I and II (Hakl Society, 1918, 1921)

Ebtehah, G H — *Guide Book on Persia* (Tehran 1933)

Elias, N, and Ross, E D — *The Tarikh e-Rashidi* (London 1895)

Elliot, H — *History of India as told by its historians*, Edited by John Dowson, 8 Vols (London 1867-77)

Bibliographical Index

Erskine, William — *Memoirs of Zehir-ud-Din Muhammad Baber, Emperor of Hindustan* (London 1826)

Erskine, W — *History of India, (Baber and Humayun)* (London 1854)

Ethe, H — *Catalogue of the Persian Manuscripts in the Library of India Office*

Faridi — *English Translation of Mirat-i-Sikandari*

Fergusson, J — *History of Indian and Eastern Architecture*, 2 Vols (London 1910)

Forbes, A K — *Ras Mala, or Hindoo Annals of the Province of Goozerat in Western India*, 2 Vols (London 1856)

An Historical and Descriptive account of Persia, from the earliest ages to the present time (Edinburgh 1834)

Narrative of a Journey into Khorasan (London 1825)

Ghani, Muhammad Abdul — *A History of Persian Language and Literature at the Mughal Court*, 3 parts (Allahabad)

Gibb, H A R — *Ibn Battuta* (London 1929)

Goldsmaid, F J — *Eastern Persia*, 2 Vols (London 1876)

Hadi Hasan — *The Unique Diwan of Humayun Badshah*

Haig, M R — *The Indus Delta Country* (London 1894)

Haig, Sir Wolseley — *The Cambridge History of India*, Vol IV, (Cambridge 1928)

Muntakhab-ut-Tawarikh (Calcutta 1925)

The Historic Landmarks of the Deccan (Allahabad 1919)

Haig, T. W — *The Chronology and the Genealogy of the Muhammadan Kings of Kashmir* [Journal Royal Asiatic Society Bengal, pp 451-468 and a table, (1918)]

Some Notes on the Bahmani Dynasty, Part I, Extra No, pp 1-15

Herklots, G A — *Islam in India* (London 1921)

Hodivala, S H — *Studies in Indo-Muslim History*, Vols I, II (Bombay)

Hughes, T P. — *Dictionary of Islam* (London 1935) Supplement, Volumes II (Bombay 1957)

Ibn Hasan — *The Central Structure of the Mogul Empire* (Bombay 1936)

Ibbetson, Sir D — *A Glossary of the Tribes and Castes of the Punjab and North West Frontier Province* (Lahore 1919)

Irvine, W — *The Army of the Indian Moghuls* (London 1903)

Ishwari Prasad — *The Life and Times of Humayun* (Calcutta 1956)

Khosla, R P — *The Mughal Kingship and Nobility* (Allahabad 1934)

King, Major J S — *History of the Bahmani Dynasty* (Indian Antiquary 1899)

King, Sir Lucas — *Memoirs of Zahir ed-Din Muhammad Babur* Translated by J Leyden (Annotated and revised)

Kinneir, J M — *A Geographical Memoir of the Persian Empire* (London 1813)

Leyden, L, and Erskine, W — *Life of Babar, Emperor of Hindostan* (London 1844)

MacGregor, Sir Charles M — *Narrative of a journey through the province of Khorasan and of the N W Frontiers of Afghanistan in* 1872, 2 Vols (London 1879)

Minorsky, V — *Hudud-al-Alam* (London 1937)

Mirza, M W — *The Life and Works of Amir Khusrau* (Calcutta 1935)

Moreland, W H — *The Agrarian System of Moslem India* (Cambridge 1929)
India at the death of Akbar (London (1920)

Morier, J — *A Journey through Persia, Armenia and Asia Minor, to Constantinople in the year* 1808 *and* 1809 (London 1812)

Nassau Lees, W — *Materials for the history of India for the six hundred years of Mohammadan rule* (Journal Royal Asiatic Society 1868, pp 414-477)

Pandey, A B — *The First Afghan Empire in India* (Calcutta 1956)

Qureshi, I H — *The Administration of the Sultanate of Delhi* (Lahore 1944)
Notes on Afghanistan (London 1888)

Raverty, H G — *The Mihran of Sind and its tributaries, a Geographical and Historical Study* [Journal Asiatic Society Bengal, LXI, Pt I, pp 155-508,9 plates (1892-93)]

Ray, Sukumar — *Humayun in Persia* (Calcutta 1948)

Rieu, C — *Catalogue of the Persian Manuscripts in the British Museum London*

Rodgers, C J — *The square silver coins of the Sultans of Kashmir* [Journal Asiatic Society Bengal, LIV, Pt I, pp 92-139, 3 pts (1885)]

Rodgers, A , and Beveridge, H — *Memoirs of Jahangir* (London 1904-1914)

Rushbrook Williams, L F — *An Empire Builder of the Sixteenth Century* (Longmans Green & Co 1918)
A new Persian Authority on Babur (Journal of the Asiatic Society of Bengal, 1916, pp 297-298)

Saran, P — *Islamic Polity* (Allahabad)
Studies in Medieval Indian History (Delhi 1959)
The Provincial Government of the Mughals (Allahabad 1914)

Sarda, H B — *Maharana Sanga* (Ajmer 1918)

Sarkar, J N — *The India of Aurangzib (topography, statistics and roads) compared with the India of Akbar with extracts from the Khulasat ut-Tawarikh and the Chahar Gulshan* (Calcutta 1901)

Saxena, B P — *Memoirs of Baizid* (Allahabad University Studies, Vol VI, Pt I, 1930, pp 71-148)

Scott, J — *History of Deccan* (London 1794)

Sewell, R — *A Forgotten Empire* (Vijayanagar), (London 1900)

Sewell, Robert and Diksit, S B — *Indian Calendar* (London 1896)

Spranger, A — *A Catalogue of the Arabic, Persian And Hindustani Manuscripts*, Vol I (Calcutta 1854)

Smith, V A — *Akbar—The Great Mogul* (Oxford 1917)

Stein, Sir Aurel — *Kalhana's Rajatarangini*, Vols I, II (West minister 1900)

Stewart, C — *The History of Bengal* (London 1913)

Stewart, Major C — *The Tezkereh-al Vakiat* (London 1832)

Storey, C A — *Persian Literature—A Bio bibliographical Survey*

Strange, G Le — *The Lands of the Eastern Caliphate* (Cambridge 1903)

Sykes, Sir Percy — *A History of Persia*, 2 Vols (London 1930)

Tara Chand — *Influence of Islam on Indian Culture* (Allahabad 1936)

Thomas, E — *The Chronicles of the Pathan Kings of Delhi* (London 1871)

Thornton, E — *A Gazetteer of the Territories under the Government of the East India Company* (London 1857)

Tod, Col J — *Annals and Antiquities of Rajasthan* (Oxford 1950)

Tripathi, R P — *Rise and Fall of the Mughal Empire* (Allahabad 1960)

Some Aspects of Muslim Administration (Allahabad 1956)

Wood, Captain John — *A Journey to the Source of the River Oxus* (London 1872)

Wright, H N — *The Coinage and Metrology of the Sultans of Delhi* (Delhi 1936)

पारिभाषिक शब्दों की अनुक्रमणिका

(आ)

(इ)

(ग)

(च)

(ज)

(त)

(द)

(स)

(ह)

नामानुक्रमणिका

(इ)

(ई)

(ग)

(घ)

(च)

(छ)

(ज)

(झ)

(ट)

(ड)

(फ)

(भ)

(य)

(र)

(ल)

(व)

(स)

(ह)